

धम्मकहाणुओगो

(धर्मकथानुयोग)

संकलन-
अनुयोग प्रवर्तक
मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'
पण्डित दलसुखभाई मालवणिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैनागम अनुयोग ग्रन्थमाला नं. १

अर्हम्

धम्मकहाणुओगो

धर्मकथानुयोग

मूलमात्र

(अंगादि जिनागमों के मूलपाठ में प्ररूपित धर्मकथाओं का वर्गीकृत संकलन)

संकलन

अनुयोग प्रवर्तक मुनि कन्हैयालाल "कमल"

पण्डित दलसुख मालवणिया

प्रकाशक

आगम अनुयोग ट्रस्ट

अहमदाबाद-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :

आगम अनुयोग ट्रस्ट
१५, स्थानकवासी सोसायटी,
नारायणपुरा क्रोसिंग
अहमदाबाद–३८० ०१३ (गुजरात)

प्रेरक :
श्री विनयमुनिजी 'वागीश'

प्रथम संस्करण

वीर सम्वत् २५०९ मौन एकादशी
विक्रम सम्वत् २०३९

संशोधित मूल्य : रु. ५००/-

मुद्रक :
प्रथम स्कन्ध
राजरतन प्रेस, अहमदाबाद
शेष स्कन्ध
नईदुनिया प्रिंटरी,
६०/१, बाबू लाभचन्द छजलानी मार्ग,
इन्दौर–४५२ ००९ (म. प्र.)
फोन नं. ५००० एवं २१४००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jainagama Anuyoga Series–1

DHAMMAKAHĀNUOGO

(A Catagorised Collection of all stories from the Jaina Canon)

Compiled by
Anuyogapravartaka Muni Kanhaiyalal 'Kamal'
Dalsukh Malvania

Āgama Anuyoga Trust

AHMEDABAD – 13

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Published by

Agama Anuyoga Trust
15, Sthanakavasi Society,
Naranpura,
AHMEDABAD-380 013

NEW PRICE : Rs. 500/-

Printed by

Part I—by Rajaratan Press,
AHMEDABAD

Rest—by Naidunia Printery,
INDORE.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समप्पणं - अब्भत्थणा य

वंदामि वंदणिज्जे ठाणयवासीण पढमआयरिए ।
आगमसज्झाययरे कंठट्ठियआगमे पायं ।।१।।
अत्तारामम्मि ठिए सिरि-**'अत्तारामजी'ति** णामधरे ।
सुयपुरिसे सुयभत्ते दिवंगए तिविहजोएणं ।।२।। जुम्मं
तेसिं आयरियाणं संपइ सयवरिसउस्सवं पप्प ।
करकमलकोसमज्झे पुण्णे पुण्णोदएण **अहं** ।।३।।
मुणि-'कमलो' पारोक्खं भत्तिब्भरनिब्भरंगलट्ठीओ ।
धम्मकहाणऽणुओगं एयं पणओ समप्पेमि ।।४।। जुम्मं ।।

किंच–
धम्मकहाणं एयं विविहजिणागमवरट्ठियाण खलु ।
संकलणं एत्थ कयं अप्पसुएणं, न मे किंची ।।१।।

अब्भत्थणा–
उवरिं निरूवियाणं आयरियाणं भद्दतपवराणं ।
दिव्वाण दिव्वलोयट्ठियाण पुज्जाण ताणाणं ।।१।।
उवओगप्पा संपयकालाणं समणसुविहियाण वरो ।
सज्झायसीलविसए देउ सया पेरणं, भद्दं ।।२।। जुम्मं ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

आगम अनुयोग ट्रस्ट की स्थापना एवं उसके प्रकाशन :

चार अनुयोगों में विभाजित जैनागमों की नामावली से प्रायः सभी स्वाध्यायशील सुपरिचित हैं। उन्हें यह जानकार प्रसन्नता होगी की समस्त जैनागमों में से संकलित तथा वर्गीकृत प्रत्येक अनुयोग का सानुवाद प्रकाशन हो रहा है।

अनुयोग प्रवर्तक मुनि श्री कन्हैयालालजी "कमल" कुछ वर्षों पहले अहमदाबाद आये थे। उनके आगमन का उद्देश्य विद्वानों से सम्पर्क साधने का था। सम्पर्क में आने पर यह ज्ञात हुआ कि वे कई वर्षों से चारों अनुयोगों के विभाजन, संकलन एवं वर्गीकरण के भगीरथ कार्य में लगे हुये हैं और सांडेराव–राजस्थान से हिन्दी अनुवाद सहित गणितानुयोग का प्रकाशन भी हुआ है। किन्तु उसकी प्रतियां अब अनुपलब्ध हैं।

गणितानुयोग के प्रकाशन को कई विद्वानों ने उपयोगी बताया और शेष अनुयोगों के प्रकाशन की आवश्यकता भी बतायी। धर्मप्रेमी सहयोगी बन्धुओं से अनुयोगों के प्रकाशन के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया। सभी ने सहर्ष सहयोग देने का आश्वासन दिया।

"सांडेराव–राजस्थान से प्रकाशित होने वाले अनुयोग प्रकाशन जिज्ञासु जगत् के लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनें तथा उनका व्यापक प्रचार प्रसार हो" इस भावना से आगम अनुयोग ट्रस्ट की स्थापना अहमदाबाद में की गई।

प्रस्तुत प्रकाशन :

कुछ विद्वानों का प्रारम्भ में यह सुझाव रहा कि चारों अनुयोगों का सर्वप्रथम मूलमात्र का संस्करण प्रकाशित किया जावें। हिन्दी तथा गुजराती अनुवाद के संस्करण क्रमशः प्रकाशित किये जावें। तदनुसार धर्मकथानुयोग का प्रस्तुत संस्करण प्रकाशित किया गया है। किन्तु कुछ आगम प्रेमी बन्धुओं का यह विचार रहा कि मूलमात्र का संस्करण केवल विद्वानों के लिए उपयोगी रहता है और अनुवाद सहित संस्करण जिज्ञासुओं के लिए अधिक उपयोगी रहता है।

यह विचार ट्रस्टी महानुभावों को अधिक उपयुक्त लगा। अतः हिन्दी अनुवाद सहित धर्मकथानुयोग का तथा हिन्दी अनुवाद सहित गणितानुयोग का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

आभार प्रदर्शन :

अनुयोग प्रकाशन परिषद् सांडेराव–राजस्थान के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने अनुयोगों के प्रकाशन की सहर्ष अनुमति प्रदान करके और प्रकाशन के प्रारम्भ में सहयोग प्रदान करके उदारता प्रदर्शित की। इसके लिए उन सभी बन्धुओं का चिरकृतज्ञ हूं।

श्री हिम्मतभाई अनुयोग प्रकाशनों की प्रकाशन व्यवस्था संभालकर श्रुत-सेवा का महान् कार्य कर रहे हैं वे मेरे मित्र हैं उनके सक्रिय सहयोग के लिए मैं सदैव आभारी हूं।

नईदुनिया प्रिन्टरी, इन्दौर के प्रबन्धक श्री छजलानी बन्धु, व्यवस्थापक श्री हीरालालजी झांझरी, श्री महेन्द्र डांगी आदि के श्रमपूर्ण सहयोग से ही धर्मकथानुयोग का मुद्रण कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हो सका है अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रूफ रीडिंग आदि का महत्वपूर्ण कार्य श्री रमेशभाई मालवणिया ने हार्दिक लगन से करके एक प्रशंसनीय कार्य किया है।

बम्बई निवासी पं. श्री जगदीशचन्द्रजी ने इस ग्रन्थ की महत्वपूर्ण अंग्रेजी प्रस्तावना लिखी हैं। अतः मैं उनका आभारी हूँ।

नये प्रकाशन :

धर्मकथानुयोग का हिन्दी अनुवाद सहित प्रथम संस्करण तथा गणितानुयोग का हिन्दी अनुवाद सहित द्वितीय संस्करण आगरा में मुद्रित हो रहे हैं। अग्रिम ग्राहकों एवं अर्थ सहयोगियों को अनुवाद सहित संस्करण ही अर्पित एवं प्रेषित किये जावेंगे।

नये आयोजन :

धर्मकथानुयोग और गणितानुयोग का गुजराती भाषा में अनुवाद योग्य विद्वान् कर रहे हैं। कार्य सम्पूर्ण होने पर ही मुद्रण के लिये दिये जा सकेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशनों में देरी के दो कारण :

१. प्रेसों में बिजली की कटौती। श्रमिक आन्दोलन। प्राकृत भाषा के कम्पोज की कठिनाइयां आदि।

२. मुनिश्री का प्रतिकूल स्वास्थ्य।

इन कारणों से आपकी उत्सुकता के अनुरूप प्रकाशन प्रेषित करने में हम असमर्थ हैं। अतः क्षमाप्रार्थी हैं।

कार्य के अनुरूप धैर्य आवश्यक है :

अनुयोगों के संकलन एवं वर्गीकरण का कार्य कितना कठिन है। पाठकों को यह समझाना भी मेरे लिए बड़ा कठिन है। क्योंकि यह अनुभव का विषय है।

समस्त जैनागमों में से प्रत्येक अनुयोग के सूत्रों का संकलन करना तथा उनका वर्गीकरण करना श्रमसाध्य कार्य है। साथ ही– **"श्रेयांसि बहु विघ्नानि"** अच्छे कार्यों में अनेक विघ्न आते हैं। फिर भी श्रद्धा एवं धैर्यपूर्वक मुनिश्री इस कार्य में लगे हुए हैं। आशा है पाठक वर्ग की ज्ञान-पिपासा एक न एक दिन अवश्य परिपूर्ण होगी।

अन्त में इस महान् ज्ञान यज्ञ में जिन्होंने श्रद्धा समन्वित संविभाग किया है उन सबका हृदय से आभारी हूं।

विनीत,

बलदेवभाई डोसाभाई पटेल
अध्यक्ष
आगम अनुयोग ट्रस्ट
अहमदाबाद

स्वाध्यायियों के लिए अनमोल अवसर

अनुयोग प्रवर्तक पं. रत्न मुनिश्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' के सान्निध्य में आयोजित––

गणितानुयोग––जैनागमों में वर्णित भूगोल खगोल का वर्णन।

द्रव्यानुयोग––जैनागमों में वर्णित कर्म, लेश्या, जीव, अजीव का वर्गीकृत वर्णन।

चरणानुयोग––जैनागमों में वर्णित श्रावक एवं साधु का आचार पांच समिति आदि का वर्णन।

धर्मकथानुयोग––जैनागमों में वर्णित धर्मकथाओं का वर्गीकृत संकलन।

मूल एवं हिन्दी अनुवाद।
मूल एवं गुजराती अनुवाद।

चारों अनुयोगों का सेट प्राप्त करने हेतु ५००/– पाँचसौ रुपये प्रदानकर अग्रिम ग्राहक अवश्य बनिये।

मन्त्री,
आगम अनुयोग ट्रष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ अर्हम् ॥

अनुयोग की व्याख्या और ऐतिहासिक पर्यवेक्षण

अनुयोग का तात्पर्य है—शब्दों का अभिधेय के साथ योग-संबंध, बता देना, अथवा प्राकृत शब्द "अणुजोग" में "अणु" का अर्थ सूत्र है क्योंकि व्याख्या की अपेक्षा से सूत्र 'अणु' होता है, उस अणु-सूत्र का अभिधेय के साथ योग करना 'अणुजोग' है ।

तात्पर्य यह है कि जैन आगमों की व्याख्या को अणुजोग (अनुयोग) कहा जाता है ।

अनुयोगद्वार सूत्र में अनुयोग किस पद्धति से करना? यह विस्तार से निर्दिष्ट है और उसका निरूपण विस्तार से 'महावीर विद्यालय द्वारा प्रकाशित' नंदि-अनुयोगद्वार सूत्र की प्रस्तावना में किया गया है अतएव यहाँ विस्तार से लिखना आवश्यक नहीं है। जिज्ञासु वहीं से देख लें।

धर्मकथानुयोग आदि अनुयोग चार प्रकार के हैं—यह बात सर्वप्रथम आवश्यक निर्युक्ति से ज्ञात होती है और उसका स्पष्टीकरण सर्वप्रथम विशेषावश्यक भाष्य में[१] किया गया है।

वेदों की व्याख्या के विषय में प्रश्न उपस्थित हुआ था कि उनकी व्याख्या ऐतिहासिक दृष्टि से, आध्यात्मिक दृष्टि से या केवल क्रियाकाण्ड की दृष्टि से की जाय?

प्रश्न इसलिए उपस्थित हुआ था कि वेदों को मीमांसकों ने अपौरुषेय अर्थात् नित्य माना है अतएव उनका तात्पर्य यह है कि जिन इन्द्रादि का, जिन घटनाओं का और जिन जातियों का उल्लेख वेदों में आता है—उनका संबंध किसी काल से जोड़ने पर वेदों को नित्य मानने में बाधा उपस्थित होगी, अतएव माना गया कि वेदों की व्याख्या इतिहास परक न की जाय ।

मीमांसकों ने वेदों की व्याख्या केवल विधिवादपरक करना माना है अर्थात् किस समय क्या करना उपयुक्त है, वेद इसी का उपदेश देते हैं।

अध्यात्मवादियों ने वेदों की व्याख्या अध्यात्मपरक और आज के वैज्ञानिक युग में उनकी व्याख्यायें इतिहासपरक की जाने लगी है।

जैनागमों को श्री नन्दीसूत्र में ध्रुव और नित्य कहा है—

यथा—

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णाऽऽसी ण कयाइ ण भवति। ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च भवति य भविस्सति य धुवे, णिअए, सासए, अक्खए, अव्वए, अव्वट्ठिए, णिच्चे।[२]

यही पाठ समवायांग सूत्र में भी उपलब्ध है।[३]

नंदी की टीका में श्री मलयगिरि ने आगमान्तर्गत इतिहास से संबद्ध व्यक्तियों के विषय में आगमों की नित्यता के साथ संगति बिठाने का कोई प्रयत्न नहीं किया है और चूर्णिकार ने भी कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है ।

समवायांग मूल में जहाँ आगमों को नित्य बताया गया है वहाँ उसकी टीका में भी श्री अभयदेव सूरि ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है, अतः इस विषय में ऐसा समझना चाहिए कि जैनागमों को जो ध्रुव एवं नित्य आदि कहा है वह भरत-ऐरावतादि क्षेत्रों की अपेक्षा से नहीं किन्तु पंच महाविदेह क्षेत्रों की अपेक्षा से कहा है क्योंकि वहाँ यहाँ के समान अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी आदि काल विभाग नहीं है अपितु वहाँ सदा समान काल रहता है।

अंग आगमों में अशाश्वत ग्राम नगर व्यक्ति आदि के नामों में तो परिवर्तन होता रहता है किन्तु जीवादि शाश्वत पदार्थों के नाम ध्रुव हैं अतः वे सदा अपरिवर्तित रहते हैं। उनकी अपेक्षा से ही पंच महाविदेहों में गणिपिटक नित्य है।

अनुयोगों के अनुसार व्याख्या करने पर नयों का भी प्रयोग करना आवश्यक माना जाता था किन्तु अनुयोगों का पार्थक्य होने पर वह वैकल्पिक हो गया अर्थात् अनुयोगों का पार्थक्य होने पर किसी एक अनुयोग द्वारा, किसी एक सूत्र की व्याख्या की जाने पर शेष तीन अनुयोगों का प्रयोग नहीं होता था और नयों का प्रयोग भी श्रोता की बुद्धि-शक्ति देखकर किया जाता था।

---

१. *विशेषावश्यक भाष्य, गाथा २७५० ला० द०*

२. *नंदिसुत्तं–११८, महावीर विद्यालय, बम्बई।*

३. *समवाय २२७, सुत्तागमे।*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुयोगों का पार्थक्य कब से हुआ? इसका स्पष्टीकरण निर्युक्ति में है ।[१]

प्राचीनकाल में नय विचारणा किस सूत्र में है और किस में नहीं है—इसकी चर्चा करते हुए आवश्यक निर्युक्ति में कहा है—

"एतेहि दिट्ठिवाते परूवणा सुत्त-अत्थकथणा य ।
इहपुण अणब्भुवगमो, अधिकारो तीहि उस्सण्णं ।।

तात्पर्य यह है कि दृष्टिवाद नामक अंग के सूत्रों की व्याख्या करते समय सातों नयों से विचार किया जाता था किन्तु कालिक श्रुतों की व्याख्या में सातों नयों की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी और केवल तीन नयों से काम लिया जाता था।

इस निर्युक्ति की व्याख्या करते हुए भाष्यकार जिनभद्र ने स्पष्टीकरण किया है कि लोक में तीन नय प्रायः उपयोगी है और उनका ही उपयोग कालिक श्रुत की व्याख्या में करना चाहिए ।

वे तीन हैं—१. नैगम, २. संग्रह, ३. व्यवहार।[२]

एक और कालिकश्रुत की व्याख्या में सातों नयों की आवश्यकता नहीं है—ऐसा कहा और पुनः कहा कि तीन नयों का प्रयोग किया जा सकता है इसकी संगति बताते हुए निर्युक्तिकार ने इस प्रकार स्पष्टीकरण किया है ।

"सूत्र और अर्थ किसी न किसी नय के अन्तर्गत आ जाता है । कोई भी ऐसा सूत्र नहीं है जो नय विहीन हो । अतएव श्रोता की प्रज्ञा को देखकर नयविशारद नयों का प्रयोग कर सकता है वह चाहे तो सातों नयों का प्रयोग भी कर सकता है।[३]

नयों का प्रयोग करके सूत्रों की व्याख्या करना जरूरी मानकर भी यह स्पष्ट किया गया कि कालिक श्रुत में नयों का प्रयोग करना आवश्यक नहीं है—इस बात का स्पष्टीकरण करने के लिए आवश्यक निर्युक्ति में[४] कहा गया है कि कालिक श्रुत मूढ़नयिक है अर्थात् उसमें नयों का समवतार होता नहीं है साथ ही यह स्पष्ट किया गया है कि अनुयोग का जब तक पृथक्करण नहीं था तब तक प्रत्येक सूत्र की व्याख्या में चारों अनुयोगों का प्रयोग होता था । किन्तु अनुयोग का पृथक्करण होने पर चारों का प्रयोग नहीं किया गया।

अनुयोग का पृथक्करण किस रूप में हुआ? इसका स्पष्टीकरण यह है कि अनुयोग चार प्रकार का है—

१. चरणानुयोग २. धम्माणुयोग (धम्मकहाणुयोग) ३. संखाणुयोग (गणितानुयोग) ४. द्रव्यानुयोग ।[५]

अनुयोगों का पृथक्करण किस आचार्य ने किया उसकी चर्चा करते हुए आवश्यक निर्युक्ति में[६] स्पष्टीकरण है कि आर्यवज्र जो श्रुतधरों में अपश्चिम थे उनके शिष्य आर्यरक्षितसूरि ने यह पृथक्करण किया है—

"देविंदवंदिएहिं महाणुभागेहिं रक्खिअज्जेहिं ।
जुगमासज्ज विभतो, अणुओगो तो कओ चउहा ।।"[७]

महाभाग आयरक्षित ने जो देवेन्द्रों द्वारा वंदित थे। समय को देखकर अनुयोगों का चार विभाग में पृथक्करण किया। किस रूप में वह पृथक्करण किया गया—इसका स्पष्टीकरण मूल भाष्यकार जिनभद्र ने किया है—

१, *क—आवश्यक, निर्युक्ति गाथा.* ५४५ ।
ख—विशेषावश्यक भाष्य—२७५०-२७५४ ।
२. *विशेषावश्यक भाष्य गाथा*—२७४७ ।
३. *क—आवश्यक निर्युक्ति गाथा* ५४४ ।
ख—विशेषावश्यक भाष्य गाथा, २७४८-२७४९ ।
४. *क—आवश्यक निर्युक्ति गाथा*, ५४५ ।
ख—विशेषावश्यक भाष्य, गाथा २७५० ।
५. *विशेषावश्यक भाष्य गाथा* २७५२ ।
६. *आवश्यक निर्युक्ति गाथा* ७६९ ।
७. *आवश्यक निर्युक्ति गाथा* ७७४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"कालियसुयं च इसिभासियाइं तइओ य सूरपण्णत्ती ।
सव्वो य दिट्ठिवाओ, चउत्थओ होई अणुओगो ।।"[१]
"जं च महाकप्पसुयं, जाणि य सेसाणि छेयसुत्ताणि ।
चरणकरणाणुओगोत्ति, कालियत्थे उवगयाणि ।।"[२]

सूर्यप्रज्ञप्ति का गणितानुयोग में और दृष्टिवाद का द्रव्यानुयोग में समावेश होता है।

कथानुयोग में कथावाले आगमों का समावेश स्वयं ज्ञेय होने से उनके नाम नहीं दिये हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में सभी जैन आगमों में से कथाओं का संकलन किया गया है और उसका नाम "धम्मकहाणुओग" दिया गया है। अनुक्रमणिका को देखने से पता चल जाएगा कि प्रथम तीर्थंकर भ० ऋषभदेव से लेकर भ० महावीर तक के श्रमण, श्रमणी, उपासक, उपासिकाओं का क्रमशः संकलन किया गया है, और अन्य तीर्थंकों की कथाओं का भी समावेश इसमें किया गया है।

वाचक को सर्वप्रथम आगमों की सभी कथाओं का संग्रह प्रस्तुत संकलन में उपलब्ध होगा, जिन्हें कथाओं में रस है उनके लिए प्रस्तुत कथानुयोग में आगमों की सम्पूर्ण कथा सामग्री उपलब्ध हो जायगी।

पं० दलसुख मालवणिया
अहमदाबाद

---

१. क–मूलभाष्य गाथा १२४।
ख–विशेषावश्यक भाष्य, गाथा २७७६ ।

२. क–आवश्यक निर्युक्ति गाथा, ७७७ ।
ख–विशेषावश्यक भाष्य गाथा, २७७७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकलनकर्ता का संकल्प :

पं. जगदीशचन्द्र जैन शोधनिबन्धों के सिद्धहस्त लेखक हैं। उनके अनेक निबंध-ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। जिनका वाँचन करके अनेक स्वाध्यायशील पाठकों ने अपने ज्ञानकोष को समृद्ध किया है। धर्मकथानुयोग की भूमिका उन्होंने अंग्रेजी में लिखी है। उसमें धर्मकथाओं के सभी पहलुओं का समीक्षात्मक चिन्तन मनन प्रस्तुत किया है। फिर भी यहाँ लिखने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है स्वाध्यायशील साधक हेय, ज्ञेय उपादेय को त्रिपदी के त्रिनेत्र से इन धर्मकथाओंके आलोक में अपने आदर्श जीवन का स्वयं प्रत्यक्ष दर्शन कर सकेंगे।

धर्मकथाओं के पाठक तथा श्रोता दो वर्गों में विभाजित हैं—एक वर्ग है श्रद्धालु साधकों का और दूसरा वर्ग है चिन्तन-मननशील विद्वज्जनों का।

प्रथम वर्ग तर्क-वितर्क से सदा विरक्त रहता है। वह वर्ग श्रमण या श्रमणियों का हो तथा श्रावक या श्राविकाओं का हो। यह वर्ग धर्मकथाओं को सर्वज्ञ भाषित मानता है।

उनका आदर्श मंत्र है:—**"तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पवेइयं,"** जिन भगवान् ने जो कहा है वही सत्य है एवं संशय-रहित है।

द्वितीय वर्ग; धर्मकथा के प्रमुख आदर्श भाव को ही महत्व देता है। उस वर्ग की दृष्टि में धर्मकथा के पात्र, पात्रों के नाम और उनके साथ घटित होने वाली घटनाएँ कल्पित हों या वास्तविक। पात्रों के आचरण उनके आदर्श जीवन के अनुरूप हों या प्रतिरूप, उनकी महत्वाकांक्षायें धार्मिक सिद्धान्तों के अविरुद्ध हों या विरुद्ध। उक्त वर्ग के व्यक्ति इन बातों पर ध्यान देना उचित ही नहीं मानते हैं। उनका सिद्धान्त है—**"विवेगे धम्ममाहिए"**। "धर्म विवेक में कहा गया है"।

कथा का भाव धर्म आराधना के लिए या आसक्ति की समाप्ति के लिए कितना प्रेरक है?

धर्मकथाओं के कौन-कौन से अंश हेय, ज्ञेय या उपादेय हैं?

साधक स्वयं यह सोचे कि इन धर्मकथाओं से मैंने क्या ग्रहण किया है। और इनसे मेरे जीवन में कितना परिवर्तन आया है?

मैंने प्रमत्तभाव का कितना परित्याग किया है और अप्रमत्त भाव को कितना अपनाया है?

विषय कषायों से विरक्त होकर संयम में मैं कितना अनुरक्त हुआ हूँ?

उक्त वर्ग प्रभात से पूर्व प्रमाद छोड़कर धर्म जागरण के लिए स्वयं को इस प्रकार संबोधित करता रहता है—

यथा—किं मे कडं किं च किच्च सेसं,
किं सक्कणिज्जं न समायरामि।
किं मे परो पासइ किं व अप्पा,
किं वाहं खलियं न विवज्जयामि॥

धर्मकथानुयोग की संकलन पद्धति—

धर्मकथानुयोग के आगम :

१. ज्ञाताधर्मकथा
२. उपासकदशा
३. अन्तकृद्दशा
४. अनुत्तरोपपातिकदशा
५. विपाकश्रुत
६. राजप्रश्नीय
७. निरयावलिका—कल्पिका
८. कल्पावतंसिका
९. पुष्पिका
१०. पुष्पचूलिका
११. वृष्णिदशा।

उपरोक्त ग्यारह आगमों में केवल धर्मकथानुयोग है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. आचारांग	२. सूत्रकृतांग
३. स्थानांग	४. समवायांग
५. भगवती सूत्र	६. औपपातिक
७. उत्तराध्ययन	८. दशवैकालिक
९. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	१०. कल्पसूत्र।

इन १० आगमों में कहीं-कहीं धर्मकथानुयोग के अध्ययन, शतक, उद्देशक तथा गद्य-पद्य पाठ हैं।

शेष आगमों में धर्मकथानुयोग नहीं है।

प्रारम्भ में यह संकल्प रहा कि इन सब आगमों के मूलपाठ शुद्ध करने के लिए प्रयत्न किया जाय। बाद में धर्मकथाओं का संकलन एवं वर्गीकरण किया जाय।

इस कार्य के लिए विभिन्न प्रकाशन संस्थाओं से प्रकाशित एक-एक आगम की पाँच-पाँच प्रतियाँ एकत्रित की गई और सर्वप्रथम मूलपाठ मिलाने का कार्य प्रारम्भ किया गया।

इस कार्य में नीचे लिखी समस्याएँ सामने आईं :—

१. प्रत्येक आगम की विभिन्न प्रतियों के सूत्रांक विभिन्न थे। किस प्रति के सूत्रांक सही हैं और किसके गलत हैं? इसका निर्णय करना अत्यन्त कठिन प्रतीत हुआ क्योंकि सूत्रांक देने का मानक कहीं से प्राप्त नहीं हुआ है।

२. वाचनान्तर के पाठों में से किस वाचना के पाठ को प्रमुख स्थान देना और किस वाचना के पाठ को गौण मानकर कहाँ स्थान देना? मेरे जैसे अल्पज्ञ के लिए यह निर्णय करना असंभव सा हो गया।

३. प्रत्येक आगम की विभिन्न प्रतियों में संक्षिप्त वाचना सूचक 'जाव' आदि वाक्य असमान लगे हुए हैं।

४. किसी प्रति में 'जाव' आदि वाक्य उचित आवश्यक स्थान पर भी नहीं हैं और किसी प्रति में अनुचित अनावश्यक स्थान पर भी जाव आदि वाक्य हैं।

५. संक्षिप्त वाचना सूचक वाक्यों के अनुसार कितना पाठ किस आगम से लेना—इसका निर्णय करने में इतना समय व्यतीत हो जाता है कि कार्य से मन विरत होने लगता है। क्योंकि समय और श्रम लगने पर भी कार्य नगण्य हो पाता है।

६. आगमों की प्रतियों में अनेक जगह एक-एक वाक्यांश के आगे (०) शून्य सूचक बिन्दु लगे अनेक पाठ मिलते हैं।

शून्य बिन्दु से कितना पाठ किस प्रति से लेकर उसकी पूर्ति करना, कितना श्रम साध्य है? क्योंकि पूरे पाठवाली प्रतियाँ अनुपलब्ध हैं।

किसी प्रति में शून्य बिन्दु है और किसी में नहीं है—ऐसा पाठ देखकर दुविधा हो जाती है।

७. किसी प्रति में एक पाठ मिलता है तो किसी प्रति में उसी पाठ का पाठान्तर मिलता है। प्रस्तुत संकलन में पाठ लेना या पाठान्तर लेना—यह भी कठिन समस्या है।

८. किसी प्रति में कुछ गाथाएँ या कुछ गद्यपाठ अधिक मिलता है तो किसी प्रति में कम मिलता है।

९. संक्षिप्त वाचना सूचक "जाव" आदि प्रायः कथा के आधे वाक्य के आगे लगे हुए होते हैं और 'जाव' आदि के आगे भी कथा का आधा वाक्य रहता है। इससे कथा का क्रम टूट जाता है इसलिए संक्षिप्त वाचना सूचक वाक्यों का इस प्रकार प्रयोग हो—जिससे कथा का क्रम न टूटे, अनुवाद भी रोचक हो और पाठक को धर्मकथा का पूर्वापर सम्बन्ध समझने में सुविधा हो।

एक ओर इन सब समस्याओं को सुलझाकर मूलपाठ को व्यवस्थित करने का कार्य द्रौपदी के चीर की तरह लम्बा लम्बा होता गया।

दूसरी ओर गुरुदेवों का वियोग, संकलन एवं वर्गीकरण के कार्य में सक्रिय सहयोग देने वाले सहयोगियों का अभाव। लम्बे-लम्बे विहार, प्रतिदिन व्याख्यान देना और दर्शनार्थियों का आवागमन बना रहने से अनुयोग लेखन कार्य योग्य समय का अभाव होता गया। इस प्रकार बहुत लम्बे समय तक अनुयोग लेखन अवरुद्ध-सा रहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहमदाबाद में अनुयोग ट्रस्ट :

आगम अनुयोग प्रकाशन परिषद् सांडेराव राजस्थान की ओर से गणितानुयोग का प्रकाशन सम्पन्न होने के बाद पं० दलसुखभाई मालवणिया एवं अमृतभाई भोजक आदि विद्वानों से सम्पर्क साधने के लिए अहमदाबाद आना पड़ा।

धर्मकथानुयोग के संकलन के सम्बन्ध में विद्वानों से कई दिनों तक विचार-विमर्श होता रहा।

पं० दलसुखभाई मालवणिया का मन्तव्य यह था कि 'सभी आगमों के मूलपाठ व्यवस्थित करने का कार्य अनेक वर्षों तक निरन्तर करते रहने पर भी यथेष्ट पद्धति के अनुसार सम्पन्न नहीं हो सकेगा। क्योंकि योग्य विद्वानों का पर्याप्त सहयोग मिलने की सम्भावना नहीं है।

मेरा भी स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है। मोतिया बन रहा है, रक्तचाप भी रहता है। इसलिए पर्याप्त श्रम करने में तथा पर्याप्त समय देने में सर्वथा असमर्थ हूँ।

यदि अल्प समय में धर्मकथानुयोग का संकलन एवं वर्गीकरण करना चाहें तो सुत्तागमे तथा अंगसुत्ताणि के कटिंग बनाकर कर सकते हैं। दोनों प्रकाशनों की प्रतियाँ सुलभ हैं।'

मैंने कहा—'सुत्तागमे के सम्पादक श्री पुप्फभिक्खु ने अपनी मान्यता से विपरीत पाठों को सुत्तागमे में स्थान नहीं दिया है। किन्तु यही एक ऐसा संस्करण है जिसमें पूरे बत्तीस आगम केवल दो पुस्तकों में उपलब्ध हैं।

अंगसुत्ताणि की तीन पुस्तकें हैं। सम्पादकों की निर्धारित नीति के अनुसार इग्यारह अंग आगमों के मूल पाठ हैं।

अन्यान्य प्रकाशनों से प्रकाशित आगमों के मूल पाठों से इन संस्करणों के मूलपाठ अक्षरशः नहीं मिलते हैं'—यह सब कुछ होते हुए भी धर्मकथानुयोग का संकलन सुत्तागमे एवं अंगसुत्ताणि के कटिंग बनाकर ही किया गया है।

धर्मकथानुयोग का संक्षिप्त परिचय :

इंग्लिश में लिखी हुई भूमिका में लेखक ने इस धर्मकथानुयोग का विस्तृत परिचय दिया है किन्तु हिन्दी भाषी पाठकों को इस मूल मात्र संस्करण का विषयबोध सरलतापूर्वक हो इसलिए हिन्दी में भी संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

धर्मकथानुयोग के छह स्कन्ध हैं पृष्ठ ६४६।[1]

स्कन्ध	विषय	प्रारम्भ पृष्ठ	समाप्त पृष्ठ	स्कन्ध पृष्ठ
पहला स्कन्ध	उत्तमपुरुषकथानक	१	१४४	१४४
दूसरा स्कन्ध	श्रमण कथानक	१	१७५	१७५
तीसरा स्कन्ध	श्रमणी कथानक	१७६[2]	२३९	६४
चौथा स्कन्ध	श्रमणोपासक कथानक	२४०[3]	३७७	१३८
पाँचवाँ स्कन्ध	निन्हव कथानक	३७८[4]	४१८	४०
छठा स्कन्ध	प्रकीर्णक कथानक	४१९	५०२	८४

---

१ क. पहला स्कन्ध राजरत्न प्रेस, अहमदाबाद में मुद्रित हुआ है। इसकी पृष्ठ संख्या १४४ है।

ख. दूसरे स्कन्ध से छठे स्कन्ध पर्यन्त नईदुनिया प्रिंटरी, इन्दौर में छपे हैं। इनकी पृष्ठ संख्या ५०२ है।

ग. छहों स्कन्धों की संयुक्त पृष्ठ संख्या ६४६ है।

२, ३, ४ पृष्ठ १७६, २४० और ३७८ सर्वथा रिक्त हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्कन्ध संख्या	अध्ययन संख्या	सूत्र संख्या[1]
प्रथम स्कन्ध	११	६४०
द्वितीय स्कन्ध	४७	६५६
तृतीय स्कन्ध	९	२९५
चतुर्थ स्कन्ध	२३	३४६
पंचम स्कन्ध	३	११७
षष्ठ स्कन्ध	२१	३६१
———	———	———
	११४	२४२५

पहले स्कन्ध के इग्यारह अध्ययनों का विषय निर्देश :—

			प्रारम्भ पृष्ठांक	समाप्त पृष्ठांक	अध्ययन पृष्ठ
पहला	अध्ययन	कुलकरों का संक्षिप्त वर्णन	४	५	२
दूसरा	अध्ययन	ऋषभ चरित्र	५	२५	२१
तीसरा	अध्ययन	मल्ली भगवति चरित्र	२६	४८	२२
चौथा	अध्ययन	अरिष्ठनेमि चरित्र	४८	५०	३
पाँचवाँ	अध्ययन	पार्श्व चरित्र	५१	५३	३
छठा	अध्ययन	महावीर चरित्र	५४	८८	३२
सातवाँ	अध्ययन	पद्म चरित्र	८९	९२	४
आठवाँ	अध्ययन	तीर्थंकर सामान्य[2]	९२	११३	२१
नौवाँ	अध्ययन	भरत चक्रवर्ती चरित्र	११४	१३८	२४
दसवाँ	अध्ययन	चक्रवर्ती सामान्य[3]	१३८	१४१	४
इग्यारहवाँ	अध्ययन	बलदेव-वासुदेव आदि सामान्य[4]	१४२	१४४	३

दूसरे स्कन्ध के सैंतालीस अध्ययनों का विषय-निर्देश :—

(क) पहले अध्ययन में भ० विमलनाथ के तीर्थ में हुए श्रमणों के कथानक पृ० ३ से ११ पर्यन्त।

(ख) दूसरे और तीसरे अध्ययन में भ० मुनिसुव्रत के तीर्थ में हुए श्रमणों के कथानक पृ० १२ से १६ पर्यन्त।

(ग) चौथे अध्ययन से बारहवें अध्ययन पर्यन्त भ० अरिष्टनेमि के तीर्थ में हुए श्रमणों के कथानक पृ० १७ से ४८ पर्यन्त।

(घ) तेरहवें और चौदहवें अध्ययन में भ० पार्श्वनाथ के तीर्थ में हुए श्रमणों के कथानक पृ० ४९ से ५५ पर्यन्त।

(ङ) पन्द्रहवें अध्ययन से सैंतालीसवें अध्ययन पर्यन्त भ० महावीर के तीर्थ में हुए श्रमणों के कथानक पृ० ५५ से १७५ पर्यन्त।

तीसरे स्कन्ध के नो अध्ययनों का विषय-निर्देश :—

(क) पहले और दूसरे अध्ययन में भ० अरिष्टनेमि के तीर्थ में हुई श्रमणियों के कथानक पृ० १७९ से २११ पर्यन्त।

(ख) तृतीय अध्ययन में पोट्टिला श्रमणी का कथानक पृ० २११ से २१८ पर्यन्त।

(ग) चौथे अध्ययन से सातवें अध्ययन पर्यन्त भ० पार्श्वनाथ के तीर्थ में हुई श्रमणियों के कथानक पृ० २१९ से २३३ पर्यन्त

(घ) आठवें और नोवें अध्ययन में भ० महावीर के तीर्थ में हुई श्रमणियों के कथानक पृ० २३३ से २३९ पर्यन्त।

---

१. यह सूत्र संख्या संकलनकर्ता ने अपनी ओर से दी है।

२. जैनागमों में तीर्थंकरों से सम्बन्धित विकीर्ण सूत्रों का संकलन एवं वर्गीकरण।

३. जैनागमों में चक्रवर्तियों से सम्बन्धित विकीर्ण सूत्रों का संकलन एवं वर्गीकरण।

४. जैनागमों में बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेवों आदि से सम्बन्धित सूत्रों का संकलन एवं वर्गीकरण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथे स्कन्ध के तेवीस अध्ययनों का विषय-निर्देश :—

(क) पहले और दूसरे अध्ययन में भ० पार्श्वनाथ के तीर्थ में हुए श्रमणोंपासकों के कथानक पृ० २४३ से २८८ पर्यन्त।

(ख) तीसरे अध्ययन से तेवीसवें अध्ययन पर्यन्त भ० महावीर के तीर्थ में हुए श्रमणोपासकों के और श्रमणोंपासिकाओं के कथानक पृ० २८९ से ३७७ पर्यन्त।

पाँचवें स्कन्ध के तीन अध्ययनों का विषय-निर्देश :—

पहले अध्ययन में सात प्रवचन निन्हवों के कथानक । पृ० ३८१।

दूसरे अध्ययन में जमाली निन्हव का कथानक। पृ० ३८१ से ३९२ पर्यन्त ।

तीसरे अध्ययन में गोशालक का कथानक पृ० ३९३ से ४१८ पर्यन्त ।

छठे स्कन्ध के तेवीस अध्ययनों का विषय-निर्देश :—

(क) पहले अध्ययन में श्रेणिक और चेलणा के शृंगार को भोग वैभव को देखकर साधु-साध्वियों के "निहाणा" करने का कथानक। पृ० ४२१ से ४२३ पर्यन्त।

(ख) दूसरे तीसरे और चौथे अध्ययन में रथमुसल और महाशिला कंटक युद्ध का कथानक। पृ० ४२४ से ४३६ पर्यन्त।

(ग) पाँचवें अध्ययन में विजय चोर का कथानक। पृ० ४३६ से ४४४ पर्यन्त।

(घ) छठे से नोवें अध्ययन पर्यन्त चार रूपक। पृ० ४४४ से ४५९ पर्यन्त।

(ङ) दसवें अध्ययन से गुन्नीसवें अध्ययन पर्यन्त, मृगापुत्र आदि के कथानक। पृ० ४५९ से ४९६ पर्यन्त।

(च) बीसवें अध्ययन में पूरण बाल तपस्वी का कथानक। पृ० ४९६ से ५०१ पर्यन्त ।

(छ) इक्कीसवें अध्ययन में देवताओं द्वारा मन से किये गये प्रश्न और भ० महावीर द्वारा मन से दिये गए उत्तर। पृ० ५०२।

प्रस्तुत संकलन एवं वर्गीकरण :

पूर्वोक्त समस्याएँ अल्प समय में असमाहित रहीं अतः धर्मकथानुयोग का संकलन एवं वर्गीकरण यथेष्ट आयोजन के अनुरूप अशक्य रहा। फिर भी यह प्रथम प्रयास पूर्ण सफल है।

प्रस्तुत संकलन-वर्गीकरण से जिज्ञासुओं को एक पुस्तक में जैनागमों की सभी धर्मकथाएँ और उनसे सम्बन्धित विकीर्ण सामग्री संकलित एवं वर्गीकृत उपलब्ध हो रही हैं।

इस धर्मकथानुयोग में कुछ धर्मकथाएँ हैं, कुछ धर्मकथाओं के कथांश हैं, कुछ रूपक हैं, कुछ संवाद हैं, कुछ प्रश्नोत्तर हैं, और कुछ उदाहरण हैं—इस प्रकार यह एक श्रीदामगंड के रूप में अनुपम है।

धर्मकथाओं पर भक्तिवाद का अमित प्रभाव :

प्रारम्भ में इन धर्मकथाओं का प्रस्तुतिकरण जिस रूप में हुआ था। उसी रूप में ये धर्मकथाएँ आज हमारे सामने हैं ?

निर्विकल्प रूप में यह मानना उचित प्रतीत नहीं होता। क्योंकि अनेक शताब्दियों से वीतराग दर्शन पर भक्तिवाद का असीम प्रभाव चला आ रहा है। वह सहसा समाप्त होने वाला नहीं है । इन धर्मकथाओं भक्तिवाद इतना व्यापक है कि इनका मूल स्वरूप कैसा था? यह भी समझ में नहीं आता।

पाठकों का कर्त्तव्य :

धर्मकथानुयोग के संकलन एवं वर्गीकरण का यह प्रथम प्रयास है—स्वाध्याय शील साधक इस दृष्टि से ही इसका स्वाध्याय करें।

यदि आप आगमों के अभ्यासी हैं? पूर्वापर का अनुसन्धान आपकी स्मृति में सदैव बना रहता है? तो आप इस संकलन में संशोधन के लिए अपने मौलिक मन्तव्य अनुयोग ट्रस्ट अहमदाबाद के पते पर अवश्य भेजें। उचित संशोधनों पर अवश्य विचार किया जाएगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुश्रुतों से सविनय प्रार्थना है—वे वर्गीकरण में रही हुई असावधानियाँ कहाँ-कहाँ हैं? और उनका संशोधन किस प्रकार किया जाय? यह सूचित करने की कृपा करें।

आपके इस सहयोग के लिए संकलनकर्ता सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

अविस्मरणीय सहयोग :

पं० मुनिश्री मिश्रीमलजी म० "मुमुक्षु" तथा सेवाभावी मुनि श्री चाँदमलजी ने राजस्थान में विचरण करते हुए भी मेरे स्वास्थ्य के लिए शुभ-कामना की है और अनुयोग का कार्य शीघ्र पूर्ण करने के लिए सदा उत्साहित किया है एवं प्रेरणा दी है।

पं० मुनिश्री रोशनलालजी "सिद्धान्तशास्त्री" ने अहमदाबाद और हैदराबाद में संयुक्त चातुर्मास करके प्रत्येक सेवा कार्य में तथा शासन सेवा के व्याख्यानादि कार्यों में सहयोगी बनकर अनुयोग संकलन के कार्य में अनुकरणीय योगदान किया है।

अन्तेवासी श्री विनयमुनि "वागीश" ने अनुयोग संकलन एवं वर्गीकरण के प्रत्येक कार्य में विवेकपूर्वक सक्रिय सहयोग देकर तथा मेरे स्वास्थ्य लाभ के लिए सतत जागरुक रह कर अनिर्वचनीय आत्म-समर्पण किया है।

श्री मुक्तिप्रभाजी श्री दिव्यप्रभाजी एवं उनकी सभी शिष्याओं ने दादर में हुई शल्यचिकित्सा के समय आत्मीय भाव से सेवा-सुश्रूषा करके तथा बालकेश्वर बम्बई और नासिक रोड़ में हुए चातुर्मास में अनुयोग संकलन एवं वर्गीकरण से सम्बन्धित अनेक कार्यों में चिन्तन मननपूर्वक लेखनादि कार्य कर के अविस्मरणीय सहयोग किया है।

पं० श्री दलसुखभाई मालवणिया ने धर्मकथानुयोग के संकलन एवं वर्गीकरण के कार्य का दिशा-निर्देशन करके तथा सुत्तागमे और अंगसुत्ताणि के कटिंगों को क्रमबद्ध करके महान् योगदान किया है।

पं० श्री अमृतभाई भोजक ने अनेक संदिग्ध पाठों को संशोधित करने का श्रम करके श्रुतसेवा का अपूर्व लाभ लिया है।

श्री रमेशभाई मालवणिया ने समय-समय पर आवश्यक कार्यों की सफलता के लिए उत्साहपूर्वक प्रयत्न किया है।

श्री लालभाई दलपतभाई विद्या मन्दिर के प्रबन्धकों ने आवश्यक आगमादिग्रन्थ उदारतापूर्वक अवलोकनार्थ प्रदान करके श्रुत-सेवा का महान् पुण्योपार्जन किया है।

वैरागिन उषाबेन ने वर्णानुक्रम के कार्ड लिखने का कार्य विद्युत् गति से करके तथा कांदावाड़ी जैन चिकित्सालय में हुई शल्यचिकित्सा के समय स्वास्थ्य समृद्धि के लिए अनुकूल व्यवस्थाएँ करके आदर्श सेवा कार्य किया है।

इन सब मुनिजनों, महासतियों एवं विद्वानों आदि के हार्दिक सश्रम योगदान से ही यह धर्मकथानुयोग सम्पन्न हुआ है।

अतः इन सबका मैं आजीवन आभारी हूँ।

अनुयोगप्रवर्तक

मुनि कन्हैयालाल "कमल"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मकथानुयोग की सांकेतिक शब्द-सूचि

अ.–	अध्ययन	प.	पद, पर्व
अणु.	अनुत्तरौपपातिक सूत्र	पडि.	प्रतिपत्ति
अणुत्त.	अनुत्तरौपपातिक सूत्र	पण्ण.	प्रज्ञापना
आया.	आचारांग सूत्र	पण्ण. प.	प्रज्ञापना पद
आया. सु.	आचारांग श्रुतस्कंध	पा.	पाहुड (प्राभृत)
आव.	आवश्यक सूत्र	पुप्फि.	पुप्फिया (पुष्पिता)
उ.	उद्देशक	प्रव.	प्रवचन सारोद्धार:
उत्त.	उत्तराध्ययन सूत्र	भा.	भाग
उत्तर.	उत्तराध्ययन सूत्र	भग.	भगवती सूत्र
उवा.	उपासकदशांग सूत्र	भग. स.	भगवती सूत्र शतक
उवं.	उपांग	महा. प.	महावीरचरियं पर्व
ओव.	औपपातिक सूत्र	रायप.	राजप्रश्नीय सूत्र
अंत.	अन्तकृद्दशा सूत्र	व.	वर्ग, वक्षस्कार
अंत. व.	अन्तकृद्दशा वर्ग	वण्हि.	वण्हिदशा सूत्र
कप्प.	कल्पसूत्र	विवाग सु.	विपाक सूत्र श्रुतस्कंध
कप्पव.	कल्पावतंसिका (कप्पवडंसिया)	विसे.	विशेषावश्यक भाष्य
गा.	गाथा	श.	शतक
चू.	चूर्णि	स.	समवाय, शतक
जीवा.	जीवाभिगम सूत्र	सम.	समवायांग सूत्र
जम्बु.	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति	सम. स.	समवायांग–समवाय
जम्बू. व.	जम्बूद्वीप वक्षस्कार	सत्त. स्था.	सप्ततिशतस्थानप्रकरणम्
ठाणं	स्थानांग सूत्र	सप्त. स्था.	सप्ततिशतस्थानप्रकरणम्
ठा.	स्थानांग सूत्र	संव.	संवरद्वार
णाया.	ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र	सु.	सुयखंध (श्रुतस्कंध)
दस.	दशवैकालिक सूत्र	सुत्त. सु.	सूत्र
दसा सुय.	दशाश्रुतस्कंध सूत्र	सूय. सु.	सूत्रकृतांग श्रुतस्कंध
द्वा.	द्वार	सूरि.	सूर्यप्रज्ञप्ति
नि.	निर्युक्ति	ज्ञाता	ज्ञाताधर्मकथांग
निर.	निरयावलिका सूत्र		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

INTRODUCTION

Dr. Jagdishchandra Jain

India has been a land of tales *(kathā)* from time immemorial. Folk-lore which contains elements from nature such as magic, sorcery, spirits, ghosts, animals and birds, incorporating traditional beliefs, practices, legends and the tales of the common, uneducated people, transmitted orally, is the earliest form of stories throughout the world. Folk-lore has given rise to short narratives which might be called story germs.

The stories are divided into various categories: stories pertaining to righteousness *(dharma),* attainment of wealth *(artha)* or desire for sensual enjoyments *(kāma).* The *dharmakathā* is further divided into four types: pleasant or catching *(ākṣepiṇi),* unpleasant or distracting *(vikṣepiṇī),* leading to knowledge or enlightenment *(saṃvega-jananī)* and leading to detachment or renunciation *(nirveda-jananī).* Jain authors though have dealt with *artha* and *kāma* stories as well, they have given prominence to stories pertaining to *dharma.* We come across *kathakas* or story-tellers associated with jesters, ballad singers and bards, who assembled at a city-garden or a sacred shrine[1] and entertained people by telling fascinating tales and anecdotes. In order to make their narratives fascinating, the story-tellers repeated them, exaggerated them and dramatised them.

Innumerable tales and stories have been composed by Indian writers from ancient times, out of which the *Bṛhatkathā,* a great store-house of Indian tales and possessed of wonderful meaning *(abdhutārtha)* by celebrated Guṇāḍhya, has been lost to us. It is stated that listening to stories is a meritorious deed and it leads to happiness as it causes the emerging of suppressed emotions. The author of the *Vetāla-pañcaviṃśatikā* (25, p.222) has stated that that the narrator or the listener of even a part of stories narrated in his work, becomes free from sins and is not afflicted by evil. Later on this goal was achieved by composing didectic narrations in Prakrit and Sanskrit literature.

Jain writers employed all types of media such as fables, fairy tales, parables, riddles, similies, illustrations, examples and so on from the rich store-house of popular folk-tales. Jain ascetics in order to preach their sermons, travelled from country to country, engaging themselves in religious discussions, thereby propagating their creed. Since the monks were drawn from different section of society, they were well-acquainted with local popular tales and anecdotes, related to workers, artisans, tradesmen, witch-doctors, fortune-tellers, beggars, mendicants and so on. These folk-tales were simple and endoweed with secular elements, therefore were devoid of any moral teaching. As they were free from any sectional or religious touch, they could be accomodated by any religious teacher according to his requirement. It is to be noted that such tales and stories had been in existence among the people before they found entry into literature and according to scholars they found their place first of all in Prakrit literature.[2] Gradually as the folk-tales and anecdotes were transformed into the tales of marality, the narrative literature started growing fast. For example, the stories from the *Nāyādhammakahāo,* believed to be narrated by Mahavira himself, are tinged with religious and moral preaching. The story of two eggs of a peahen *(Mayūrī-aṇḍaṇāyaṃ)* supports the fact that the monks and nuns must not entertain any doubt about the usefulness of self-restraint. Another story of two turtles

1. Read the description of Punnabhadda shrine situated in Campā, *Ovāiya* 2.
2. Winternitz, *A History of Indian Literature,* III, 1,302

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Kummanāyaṃ) goes to illustrate that monks and nuns most not yield to worldly temptations. In this way canonical and post-canonical literature is full of stories coloured with religious teaching.

The present work the *Dhammakahāṇuoga* is divided into six Sections: (i) Narratives of the Excellent Men *(Uttamapurisa-kahāṇagāṇi)*, (ii) of the Ascetics *(Samaṇakahānagāṇi)*, (iii) of the Female Ascetics *(Samaṇī-kahāṇagāṇi)*, (iv) of the devotees of the ascetics *(Samanovāsaga-kahāṇagāṇi)*, (v) of the Schisms *(niṇhava-kahāṇagāṇi)* and (vi) Miscellaneous Narratives *(Paiṇṇaya-kahāṇagāṇi)*. All these narratives have been collected from the *Aṅgas*, the *Upāṅgas*, the *Chedasūtras* and the *Mūlasūtras*.[1] The canonical literature of the Śvetāmbaras consists of twelve *Aṅgas*, twelve *Upāṅgas*, ten *Prakīrṇakas*, Six *Chedasūtras*, four *Mūlasūtras* and *Nandi* and *Aṇuyoga*. This literature is valuable since it consists of the teachings of Mahavira and his disciples. It has undergone various modifications as it has passed through different versions from time to time. The first exposition of the canonical literature was organised in Pataliputra (Patna) after about 160 years of Mahavira's death (about 367 B.C.), the second one in Mathura after about 827-840 years of Mahavira's death (about 300-313 A.D.) and the final one in Valabhi after about 980-993 years of Mahavira's death (453-466 A.D.). In the last meeting an attempt was made to reconcile the different readings of the two earlier meetings of the monks. However, as far as the antiquity of the canonical literature is concerned, each *āgama* is to be determined by the nature of its contents. This literature is composed in Ardhamāgadhī, the dialect spoken in Magadha (modern Bihar).

The style of ancient canonical texts is simple and straight which is a distinctive feature of ancient literature. The author goes on narrating the topic in a natural unaffected style with abundant repetition of words, phrases and sentences. He tells his narrative slowly and leisurely so that the mind of the listener is not distracted and he gains confidence. In order to make his account serious the narrator adds set 'descriptions' in-between his narration. This style is also noticed in the Pali canon of the Buddhists. Commenting on the style of the Pali ancient texts, Winternitz has rightly observed that these continual repetitions served the double purpose impressing the instructions more deeply on the memory and of making them rhetorically more effective.[2]

Here we find that the narratives are presented in a steriotyped pattern with the same framework. In the narratives of the ten lay disciples of Mahavira, described in the *Uvāsagadasāo*, there is a homogeneity of description. A heavenly deity causes trouble to householder Kāmadeva but he is not disturbed and remains steadfast in his vows. The same thing happens with other lay disciples. There is so much similarity in the framework of the description that only a catch-phrase is given by way of allusion to the earlier stories. Further, being questioned about the contents of the second part of the *Nāyādhammakahāo*, by his pupil Jambu, venerable Suhamma narrates the account of Kālī and instructs him that the accounts of the remaining chapters of the remaining

1. They include (i) *Āyāra, Sūyagaḍa, Thāṇā, Samavāya, Bhagavatī, Nāyādhammakahāo, Uvāsaga, Antagada, Anuttarovavāiya*, and *Vivāgasūya*--all *Aṅgas*, (ii) *Ovāiya, Rāyapaseṇiya, Niryāvaliyāo, Pupphiāo*, and *Vaṇhidasāo*--all *Upāṅgas*, (iii) *Dasāsuyakkhandha* (the eighth chapter of this text is known as *Kalpasūtra*)—the only *Chedasūtra*, (iv) *Uttarajjhayaṇa*--the only *Mūlasūtra*.

2. *History of Indian Literature*, II, 68. Pointing out the efficacy of repetition, Axel Olric has said, "It is necessary not only to build tension, but to fill out the body of the narrative; Alan Dundes, *The Story of Folk-lore*, 1965, p.131

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

sections should be understood on the same pattern. The same thing is noticed in the *Antagaḍ*-adasāo. The accounts narrated in the first four divisions of the text, barring a few, have been described on the same pattern, the model being the story of prince Goyama. The last four divisions contain the accounts of the wives of Kṛṣṇa Vāsudeva and the king Śreṇika Bimbasāra and some lay disciples. The accounts have been presented in a steriotyped pattern and an allusion is made to the earlier stories. These accounts are monotonous and it appears that the gaps have been filled in somehow.

These steriotyped patterns are often presented merely with a skeleton and the rest is left to be filled in with a set of words and phrases, ending with the word *'Jāva' (yāvat).* For instance, the *Ovāiya,* the first *Upāṅga,* gives full description of the city of Campā, shrine Puṇṇabhadda and a forest. Now if some other city, or a shrine or a forest is to be described in some other canonical text, the description is to be inserted from this canon.[1]

Such descriptions, known as *vaṇṇaa (varṇaka)* when given in full are characterised by long compounds and belong to the earlier portions of the Jain canon. These descriptions are related to a king, a queen, a merchant, a caravan leader, a rich householder, a warrior, a pious man, dreams, pregnancy-whim, birth, wedding, marriage gifts, monk's visit to a town, listening to his sermons, seeking permission of parents to enter the ascetic order, renunciation ceremony, practising penence and so on. and are always described in exactly the same words.[2]

Prakrit Jain narrative literature is also rich with motifs which reflect a state of culture through which it has passed. The study of these motifs is helpful in tracing the common origin of world-wide story literature. Traditional beliefs such as the fruit of past deeds, recollection of previous birth, claiming the reward of the penitential acts *(nidana),* the kindness rewarded and cruelty punished, good luck and bad luck, omens, superstitions, cure by spells and incantations, the pregnancy-whim of eating the flesh from one's own husband's belly and its satisfaction by artificial means, flying of horses, abandonment of born children, washing forehead of maid-servants, smelling of head and so on, not only reveal a prehistory of tale-types but also add to the beauty of narrative.[3] These motifs are recorded not only in Sanskrit and Apabhraṃśa but also in medieval literature of Indian languages such as Jyotirīśvara's *Varṇaratnākara* (14th century A.D.), *Varṇasamuccaya* (edited by B.J. Sandesara) and others.

1. Such descriptions of steriotyped pattern are compared with certain phrases and descriptions of situations occuring again and again exactly in the same words in the *Avadāna-Śataka* of the Buddhists. One such longest steriotyped piece can be seen in the description of the simile with which the Buddha utters the prophecy that somebody will become a Buddha, Winternitz, ibid, 280f.

2. The following descriptions can be noted:

(i) The conception etc. of prince Goyama described in the *Antagaḍa* (1. 1-10) is to be inserted from that of Mahabbala in the *Bhagavatī* (11. 11), *Dhammakahānuoga,* II, 20

(ii) The departure of prince Goyama to visit Aristanemi, narrated in the *Antagaḍa* (1. 1-10) is to be inserted from that of Megha in the *Nāyā* (1), *Dhamma,* p.21

(iii) The performance of austerities of the householder Makāi, described in the *Antagaḍa* is to be inserted from that of Khandaga in the *Bhagavatī* (2.1), *Dhamma,* 92

(iv) Listening to the sermons of *Tīrthaṅkara* Vimala in the *Bhagavatī* (11.11) is to be inserted from that of Jamāli in the *Bhagavatī* (9.33), *Dhamma, 10*

(v) The initiation of Aimuttakumāra mentioned in the *Bhagavatī* (5.4) is to be inserted from that of a similar description elsewhere, *Dhamma, 67*

(vi) The description of the city of Rāyagiha and the shrine Gunasilaya in the *Nāyā* (1) is to be inserted from a similar description elsewhere, *Dhamma,* 68

3. See Jagdishchandra Jain, *Prakrit Narrative Literature.* 1981, ch.II pp. 41-85

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SECTION ONE

Narratives of the EXCELLENT MEN *(Uttamapurisa Kahāṇagāṇi)*

In the Jain tradition there have been twenty-four *Tīrthaṅkaras* (bridge builders).[1] They are enumarated as follows: Usabha, Ajiya, Sambhava, Abhinandana, Sumati, Paumappabha, (Suppabha in *Bhagavatī*), Supāsa, Candappabha (Sasi in *Bhagavatī*), Pupphadanta, Sīyala, Sejjaṃsa, Vāsupujja, Vimala, Aṇanta, Dhamma, Santi, Kunthu, Ara, Malli, Muṇisuvvaya, Nami, Nemi, Pāsa, Vaddhamāṇa or Mahāvīra. Out of them, Ara is called Nandyāvarta, *(arahato Nandiāvatasa Pratimā)*[2] in the Mathura inscriptions. The *stūpa* in which the standing figure of the *Arhat* belongs, was supposed to have been the work of divine gods *(deva-nirmita)*. No symboles are recorded on Jain images in Mathura inscriptions, they are mentioned only in later Jain works. It is to be noted that the *yakṣas* or *yakṣiṇīs*, known as *śāsana-devatā* or guardian deities, are associated with each *Tīrthaṅkara*. We are told of Jinaśekhara *yakṣa*, who is said to have projected a pearl image of himself with the image of Usabha on his crest.[3] Similarly the image of Pāsa is noticed on the head of goddess Padmāvatī.

1. The life History of Usabha

Usabha or Usaha (Vṛṣabha), the first *Tīrthaṅkara* of the Jains, was born in the descending age *(osappiṇī)* in the house of king Nābhi by his queen Marudevī. As he was born in Kosala[4] he was known as Kosaliya. He is called the first king, the first *Jina*, the first omniscient being *(kevalī)*, the first *Tīrthaṅkara* and the first sovereign of Religion of the earth *(dhammavara-cāuranta-cakkavaṭṭī)*. Immediately after the Tīrthaṅkara was born, alarmed by the shaking of their thrones, several groups of the *disākumarī* goddesses appeared in the birth-house of Usabha. First of all, appear the eight *disākumarīs* of the under-world *(ahologīya)*[5], each of them accompanied by numerous retinue of dignitaries, officials, troups etc. They paid their reverential homage to the *Tīrthaṅkara* and his mother and praised the latter by a hymn. Then they effected the 'world-wide storm' *(samvaṭṭaga-vāyā)* by their magic power, with the help of which they cleared the ground around the birth-house of grass-blades, leaves, fragments of wood and dirt and then remained singing and rejoicing by the side of the mother and child. Then appear a group of eight *disākumārīs* living in the upper-world *(uḍḍhalogīya)*[6] and greeted the mother and the child exactly in the same manner as the first group. They created clouds *(abbhavaddala)* by their magic power, effecting a rain of scented water falling from them,

---

1. Twenty-four Buddhas are referred to in the *Dīgha* II, Mahāpadāna Sutta. Makkhali Gosāla is considered as twenty-fourth *Tīrthaṅkara* of the Ājīvika sect.
2. See W. Schubring, *The Doctrine of the Jainas*, p.49
3. *Kuvalayamālā*, 120, 15–17
4. The *Āvaśyaka Cūrṇi* (337) identifies Kosala with Aojjhā (Ayodhyā). In the *Vividha tīrthakalpa* (24), Aujjhā, Avajjhā, Kosala, Vinīyā, Sākeya, Ikkhāgabhūmi and Rāmapurī are identical.
5. They are enumerated as follows:
(a) *bhogaṃkarā bhogavaī subhoga bhogamālinī toyadhārā vicittā pupphamālā aṇindiyā*
The identical list is given in the *Vasudevahiṇḍi*, 159, 22–23 and the *Āvaśyaka Cūrṇi*, 136. In the *Ṭhāṇa* (8.643) the names given are different:
bhogankarā bhogavaī subhoga bhogamāliṇī suvacchā vacchamittā ya vāriseṇā Balāhagā
6. They are:
(b) *mehaṃkarā mehavaī sumehā mehamālinī suvacchā vacchamittā ya vāriseṇā Balāhagā*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

pacifying the dust. They also caused a rain of flowers to fall from flower-clouds *(pupphavaddala),* likewise created by them and then remained singing and rejoicing. After that arrived successively the four groups of eight *diśākumarīs,* each residing on the eastern,[1] southern[2], western[3] and northern[4] Rucaka region.

---

cont.

The same is noted in the *Vasudevahindi,* 159, 28—29 and the *Āvaśyaka Cūrni,* 137 except that they mention *suvatthā* and *vatthamittā* in place of *suvacchā* and *vacchamittā* respectively.

The names in the *Ṭhāṇa* (8.643) are noted differently in the following manner:

meghaṃkarā meghavaī sumeghā meghamālinī toyadhārā vicittā ya pupphamālā anindiyā

Here, while comparing the names of the eight *disākumārīs* residing in the under-world, stated in the previous *gāṭhā* (a), we notice that the second line of (a) and the second line of (b) have been exchanged. But as the names *toyadhārā, vicitrā, vāriṣeṇā,* and *Balāhagā* positively are cloud-names, they belong to the first half of (b) and not to the serpent-names *(bhoga)* of the first half of (a), therefore the *Ṭhāṇā* version should be treated as the correct one. See Alsdorf, Further contribution of the History of Jaina Cosmography, *New Indian Antiquary* April June 1947.

1. The eight *disākumārīs* residing on the eastern Rucaka are enumerated as follows:

Ṇanduttarā ya ṇandā āṇandā ṇandivaddhaṇā vijayā ya vejayantī jayantī aparājiyā

These names are also noted in the *Vasudevahiṇḍi, (=VH)* 160, 1—2, *Āvaśyaka Cūrṇi, (=Āva Cū),* 138 and the *Triṣaṣṭisalākāpuruṣacarita, (=TSP)* 1.2.288

As pointed out by Alsdorf, Buddhist works such as *Mahāvastu (=MV;* Senart's edition, Vol III, pp 305—310,316) and the *Lalitavistara (=LV;* Lefmann's ed., pp. 387—391) also provide a list of these goddesses as follows:

MV/LV:

Nandottarā nandisenā nandinī nandivardhinī Jayantī vijayantī ca siddhārthā aparajitā

(for different readings see Alsdorf, ibid, 114)

2. The eight *disākumārīs* residing in the southern side of Rucaka are as follows:

samāhārā suppaiṇṇā suppabuddhā jasoharā lacchimaī sesavaī cittaguttā vasuṇdharā

The *Vasudevahiṇḍi,* 160, 5—6 notes *suppasiddhā* in place of *suppabuddhā; Āva Cū,* 138 has the same list as *Jambuddivapannatti (=Jambu); TSP,* (12.291) notes *supradattā* instead of *suppaiṇṇā,*

The *MV/LV* provide the following names:

Laksmīmatī yaśamatī yāsaprāptā yaśodharā suutthita suprabhātā suprabuddhā sukhāvahā

(for different readings see Alsdorf, *ibid,* 115)

3. The eight *disākumārīs* residing in the western side of Rucaka are named as follows:

ilādevī surādevī puhavi paumavaī eganāsa ṇavāmiyā bhaddā siya ya atthamā

The same list is noted in *Ṭhāṇā* (8.643), *VH,* 160, 8—9, *Āva Cū,* 138 and *TSP,* 1.2.294

The *MV/LV* provide the following names:

alambusā miśrakeśī puṇḍarikā tathāruṇā ekānamsā navamikā sītā kṛṣṇā ca draupadī

(for other readings see Alsdorf, *ibid,* 115)

4. The eight *disākumārīs* on the northern side of Rucaka are as follows:

alambusā missakesī puṇḍarīyā ya vāruṇī hāsā savvappabhā ceva hirī sirī ceva uttarāo

The *VH,* 160, 12—13 gives the identical list except that it mentions *puṇḍarigiṇi* in place of *puṇḍarīyā; Thānā* (8.643) gives *poṇḍarigī* for *puṇḍarīyā, āsā* for *hāsā* and *savvagā* for *savvappabhā.* The list given in *Āva Cū,* 138 and *TSP,* 1.2.297 is identical with that of *Jambu.*

The list given by *MV/LV* is as follows:

ilādevī surādevī pṛthivi padumāvatī upasthitā mahārajā āśā sraddhā hirī sirī

(for other readings see Alsdorf, *ibid,* 115)

It is to be noted that the *Angavijjā,* a non-canonical work of the 4th century A.D. provides an important list of goddesses, including *śrī, pṛthivī, ekanāsā, navamikā, nāgī, diśā, buddhi, hrī, śrī, laksṃī, kīrti, medhā, smṛtī, dhṛtī, dhī, ilā, sītā, vidyā, vijjatā, candralekhā, utkośā, ahodevī, devī, devakanyā, airikā, bhagavatī, alambuśā, miśrakesī, apalā, anāditā, airāṇī, timiśrakesī, tidhinī, śālimālinī, citrārathā, citralekhā* and so on. (51, 205f; 9.69). Out of these goddesses some of them appear to be of foreign origin and interestingly, Motichandra has identified *apalā* with Greek goddess Pallas Athene, *aṇāditā* with Avestic goddess Anahita, *airāṇī,* with the Roman goddess Irene, *timisrakeśī* with the numph Themis and *śālimālinī* with Moon-goddess Selene (Introduction, 42).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

They greeted the mother and the child like their predecessors and ranged themselves singing and rejoicing. They carried in their hands mirrors, vases, fans, and flying-whisks respectively. Then appeared the four *disākumārīs,* residing at the intermediate points of Ruyaga *(vidisi-ruyaga-vatthavvāo)*[1], singing and rejoicing, carrying lamps in their hands. They were followed by the last group of four *disākumārīs,* residing in the central Ruyaga *(majjhimaruyaga-vāsī)*[2]. They cut off the naval-cord and buried it in the earth. Then one plantain arbour each to the east, south and the north of the bath-house was created by magic power. Each arbour contained a hall *(cāusālā),* in whose centre there was a lion-throne. They carried the mother and the child first to the southern arbour, made them seated on the lion-throne and then anointed and massaged them with precious oils and fragrant essences. Then they carried them on the lion-throne in the eastern arbour and gave them threefold bath with scented water *(gandhodaya)* flower-water *(pupphodaya)* and pure water *(suddhodaya).* Then they dressed them and put on all kinds of ornaments on their body. Then both of them carried to the throne in the northern arbour. The *ābhioga* gods are called and ordered to fetch *gosisa* sandalwood from the Cullahimavanta. When this was done, the four *disākumāris* stirring fire by rubbing two pieces

---

cont.

For the list of *dikkumārīs* also see *VH,* appendix IV, under Number 39.

Alsdorf in his above-mentioned article on Jaina Cosmography and Mythology, has made the following important observations:

(a) The list of 32 deities, eight each of the four quarters, mentioned in the Jain and Buddhist traditions is corrupt to some extent. In the Buddhist tradition they are represented as Buddhist protective charms for the journey to the four quarters.

(b) Out of 32 names 20 are still completely identical.

(c) The antiquity of the list cannot be doubted as it goes back to the set of memorial stanzas, quoted in the *Ṭhāṇā.*

(d) *Vāruṇī* by her very name refers to the west and the Jainas seem to be wrong in placing her in the north. The line in which she appears, therefore belongs to where it is found almost identical form in *MV/LV* and has been exchanged by mistake for the line *ilādevī surādevī* etc. in footnote 4 mentioned above.

(e) Jinasena in his *Harivaṃśapurāṇa (JHP)* has enumerated the names of the goddesses thrice (5.705-717; 8. 106-113; 38-31-35). It is remarkable that the names given here are identical with Buddhist names, as opposed to the *Jambu,* belonging to Śvetāmbara tradition. This tradition seems to be independent of and anterior to the canonical tradition maintained in the *Jambu.*

(f) The list of above goddesses as a whole seems to be a motely collection of divergent names with no underlying relation to the nature of goddesses or to the four quarters: (i) some of them such as *nandā* etc. indicate the names of *tithis (a lunar day),* (ii) *nandā, ekānamśā, vijayā* and *aparājitā* are surnames of *Durgā,* (iii) *alambusā* is a well-known nymph, (iv) *Śrī, śraddhā, āśā,* and *hrī* are four daughters of Indra, (v) *Vijaya, vaijayanta, jayanta* and *aparājita* are the four *vimānas* of the highest celestial regions of the Jainas, and so on, *ibid,* 116-119.

1. They are: *cittā cittakannagā saterā sodāmiṇī.* The *Ṭhāṇā* (4.1.259), the *VH,* 160,16 and the *Āva Cū, 138* have identical names. The *JHP* (38.36) gives *Kanakacitrā* in place of *citrakanakā; TŚP* gives *seyamsā* in place of *saterā;* Haribhadra in his *Āva* commentary gives *sudāmiṇī, TŚP sautrāmaṇī* and *JHP sutrāmanī* in place of *sodāmiṇī, Saterā* and *soyāmanī* have been mentioned as chief queens of Dharaṇendra; *Nāyā,* II, 3.2-6; *VH* 305,25.

2. They are:

Ruya ruāsia ceva srūā ruyagāvaī

The *Thāṇā* (4.1.259; 6.507) gives 6 *disākumārīs* as follows:

Rūvā, rūvaṃsā surūvā rūvavaī rūvakantā rūvappabhā

The *VH* (160,19) has the following:

ruyaṅgā ruyaṃsā surūvā rūyagāvatī

The *Āva Cū* (139) has the following:

ruyā ruyamsā suruyā ruyagāvatī.

The *TŚP* has *rūpā rūpāśikā cāpi surūpā rūpakāvatī;* and the *JHP* (38.37) the following:

rucakaprabhā rucakā rucakābhā rucakojjvalā

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

of sticks, *(araṇiṃ ghaṭṭenti ghattittā saraeṇaṃ araṇiṃ mahinti mahittā aggiṃ pādenti),*[1] kindled a blazing flame and performed *agnihoma* (putting oblation into fire)[2] and *bhutikarma*[3] (Then of the ashes of this fire they made a protective amulet *(rakkhapoṭṭaliya)*[4] and hang it round the child's neck. Then they beat together at his ear two balls of stone wishing him that his life may last as long as the rocks *(pavvayāue).* Finally, the four *disākumārīs* carried the mother and the child back to the birth-house from where they had brought them.

The birth-consecration does not stop here. The throne of Sakka (śakra)[5], the king of divine gods, the Indra of Saudharma heaven, shakes; he descends from his throne, kneels down, praises the new-born *jina* and commands *ābhioga* god Pālaka[6] to build a fantastic *Jāna-vimana* (travelling *vimāna*) described in great detail.[7] Then Sakka accompanied by his large retinue mounts the *vimāna* and flies to the birth-house. He greets the mother and the child with similar words uttered by *disākumārīs.* Then employing the sleeping spell *(osovaṇī)* he puts the mother to sleep, creates double of the child and puts it at her side. Then he creates five sakkas out of himself: one carries the child, one holds the umbrella over him, one each go at his two sides carrying fly-whisks and one carries *vajra* (thunder-bolt) in his hand. Thus all the divine gods take him to the *paṇḍaga* grove on the summit of Mt. Meru where Sakka sits down facing east on the consecration-throne, placed on the consecration-rock *(abhiseya-silā).* This is followed by the arrival of the rest of the Indras of all celestial regions and class of gods with their retinues. Then the *abhioga* gods collect all the material for a gorgeous *abhiṣeka* of a *Tīrthaṅkara.* They create by magic power 1008 jars of gold, silver etc., 1008 each of vases *(bhṛṅgāra),*mirrors *(ātaṃsa)* etc. Water and all kinds of lotuses are brought from the ocean ksiroda and puṣkaroda and water and soil from the holy places Magadha, Varadāma and Prabhāsa; water and soil from the banks of the Ganga and Sindhu rivers; flowers, garlands, herbs and fragrant soil from the Cullahimavanta, and so on. Thus the great *abhiṣeka* ceremony was performed to the accompaniment of rejoicing of the gods. Finally, Sakka carries back the *Jina* to the birth-house and lay him down by his mother's side. The Sakka commands Kubera perform a shower of treasures. Finally Sakka issues a proclamation saying that if anybody thought of ill *(asubhaṃ maṇe pahārei)* towards the *Tīrthaṅkara* his head would split into hundred pieces.[8]

---

1. *araṇi* means 'turning round' The Vedic Aryans used to kindle fire in this manner by creating friction.
2. It has been mentioned in the *Kātyāyana Śrautasūtra,*Monier William, Sanskrit-English Dictionary.
3. It is besmearing the body with consecrated ashes as a protective charm. Some time the damp earth was applied or a piece of thread tied in place of ashes, *Niśītha Sū,* 13.17-27; *Bhāṣya* 4287-4291. The rite is performed at a birth, marriage etc., *Grhyasūtras,* Monier William, *ibid.*
4. Also see *Āva Cū,* 140. *Rakṣāpaṭṭolikā* or a cluster of amulets has been referred in the *Bhaviṣya Purāna. Rakṣāvidhi* for a child is described in the *Caraka,* Śarīrasthāna, 1.8.51, pp 729ff, Haridatta Shastri, Lahore, 1940.
5. He is also called *vajjapāṇī* (wielding a thunderbolt), *purandara* (destroyer of strongholds), *satakkatu* (having hundredfold power), *sahassakkha* (thousand-eyed), *maghavam* (bountiful) and *pākasāsaṇa* (instructor of the ignorant); also *sūlapāṇī* (having a spear in hand). and *vasaha-vāhaṇa* (riding a bull) in the *Jambu,* 55.115; 2.33; *Dhammakahāṇuoga,* p.10,24
6. Pālaka is the name only of a *yānavimāna* and not of its master, *VH,* 160,30
7. The description of *jāṇavimāna* of Suriyabha god reurs *verbatim* in the *Rāyapaseṇiya.*
8. *Jambu,* 5.112-123; *Dhammakahāṇuoga,* I.6-19

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The birth-ceremony of Usabha or Ṛsabhadeva has been described by Jinasena in his *Ādipurāṇa* (AP) in the 13th *parva* and in the *JHP* in the 8th *sarga* and by other Digambra authors. In this version, though *dikkumāris* (same as *disākumarīs*) are mentioned in the *JHP*(8.106—116), the role played by Śakra is more important. Śakra does not fly to the birth-house of *Jina* in a *vimāna* but mounts on his mighty elephant Airāvata(8.142—144) and performs the whole *abhiṣeka* himself, while the other divine gods are mere spectators.[1] To this account is added the celebration of descending from heaven *(svargāvataraṇa)* which forms the 12th chapter of the *AP.* Here against the Svetāmbara version, a large number of *dikkumārīs* are sent by Śakra to attend upon the mother six months before the *Tīrthaṅkara* enters the womb. They perform various duties, including purification of mother's womb.[2] by various materials brought with them. They acted as attendants and guardians to the mother and made her happy and cheerful in all possible ways.[3]

It is significant that the tradition of descending of divine gods from heaven at the time of birth of a *Tīrthaṅkara* is common with Buddhists. It is said that when Bodhisattva, after descending from heaven, enters into the mother's womb, light is caused throughout the world and the ten thousand regions of the world *(lokadhātu)* shake. During the course of concepton the child and the mother both are protected by four divine gods in all the four quarters. No sooner Bodhisattva is born unsoild by phlegm and blood, he is held by divine gods. The child and the mother are washed by a stream of cold and hot water falling from heaven.[4] During the course of delivery of the child 5000 *apsarās* appear each with divine ointments *(divyānulepana),* divine jars full of scented water *(divyagandhodaka-paripūrṇa-ghaṭa),* divine garments for the child *(divyadāraka-cīvara)* and splendorous music coming out from divine musical instruments.[5] It is stated that in order to dispel the doubts of gods, Buddha rises in the air, then stands beside his 'throne' looking towards the East and remains standing thus for a week, without blinking his eyes.[6] Further, in his *Sumaṅgalavilāsinī*(I, 45ff), the commentary of Brahmajāla-sutta, *Dīghanikāya* I, Buddhaghoṣa has stated that while going out begging for alms, soft winds clean the ground before Buddha, clouds lay the dust with a light shower of rain and then spread themselves above him like a canopy, rough places become even, and lotus flowers spring forth under his footsteps, rays of six different colours shine forth from his body and so on.[7]

---

1. This represents the older version in the opinion of Alsdorf. He contends that the agreement of the story of Sakra's *janmābhiseka* forming the base of *Jambu* with the Digambara version in the most characteristic points such as exchange of the child for a double created by Śakra while the mother is put to sleep, performing the *abhiseka* on Mt. Meru shows that this tradition goes back at least to the time before the separation of the Digambara and Svetāmbara order, *ibid,* 112.
2. This tradition is supported by Buddhist legends. Compare the description with the *Lalitavistara* (2.6) where heavenly gods create a jewelled palace in the womb of the mother of Bodhisattva so that he shall not be defiled during the period of conception. Here he has a beautiful soft seat and his body radiates in glorious beauty, Winternitz *Ibid,* II. 250.
3. See *AP,* 12.166-255
4. Majjhima N., Acchariyadhamma Sutta; *Nidānakathā,* Section II. Compare the list of 34 miracles *(atiśaya)* enumerated in the *Samavāya,* 34; *Dhammakahāṇuoga,* I, 102-103; *amṛtavarṣā* (shower of nector), the sky decorated with wheel, umbrella, and fly-whisks etc. are mentioned *(Dhamma,* I, 66,82).
5. See *L.V.,* 96
6. Winternitz, *ibid,* 188
7. *ibid,* 197

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

It is the noteworthy in this connection that there are several occasions in the *AP* which indicate the influence of Brahmanic tradition on Jinasena. While describing the birth-consecration *(jātakarma-utsava)* of Ṛsabha in the *AP* the author designates him as creator of the universe *(jagatāṃ sraṣṭā),* Vāmadeva (name of Śiva), of tawny colour *(piśaṅga),* having eight forms *(aṣṭamūrti;* five elements, mind, egotism and matter) and the last of ten incarnations *(daśāvatāra-carama)*[1]. Needless to point out that these designations are applicable to God Śiva in the Brahmanic tradition. Besides, the consecrations *(saṃskāra)* beginning from the conception until death of an individual are in agreement with the corresponding Brahmanical rites. We also have a reference to fire worship here customary with the Vedic Brāhmaṇas (see chapter 38-40).).

It is significant to note that the *Jambu* though provides a detailed description of Usabha's birth-consecration, makes no reference with regard to his childhood, youth, education, marriage, coronation and so on[2]. Immediately after the heavenly gods return to their respective places after celebrating the birth-consecration, we have brief instructions imparted by Usabha while leading household life. The instructions are extremely brief and simply make a mention of 74 arts of men, 64 of women, 100 arts and handicrafts *(sippa)* and 3 *karmas* (any kind of work without wages, such as grass-cutting etc[3]. That is all. Then straight away we come to renunciation *(pavvajjā)* when the *Tīrthaṅkara* giving up worldly pleasures such as gold, silver, treasury, army, wives of the female apartment and so on, and enters the monastic order. An excellent palanquin is brought in which he was made to sit. He was applauded by people wishing him victory and good luck in surmounting the difficult path accepted by him. Thus passing through the streets of Vinītā, surrounded by train of gods and men he reached the park known as Siddhārthavana. There he himself took off all his ornaments from his body and pulled his hair with four handfuls *(cauhiṃ mutthihiṃ)*[4]. Then after fasting for two days and a half, he put on divine robe *(devadūsa)* and became a mendicant. He put on the robe for more than a year and then went about naked *(saṃvacchara-sāhiyaṃ cīvaradhārī hotthā, teṇa paraṃ acelaye).* Then neglecting his body, never caring for food and drink, he roamed about from place to place, engrossed in meditation for a number of years. In course of time he arrived at the Sagaḍamuha park, situated outside the town Purimatāla and after fasting for three days and a half, attained the highest knowledge, *kevala* (omniscience) under the excellent nyagrodha tree.[5] Now he was known as omniscient *(kevalī),* knowing all *(savvannu)* and seeing all *(savvadarisi).*[6]

1. 14.26,37,44,47,51
2. *VH* provides a very sketchy account of his marriage (162,8), progeny (162,9-11) and coronation (162,12-163,15); also see *Āva Cū,* 152-53,153 and 153-54 for the same.
3. See also *VH* (163,7-11) and *Āva Cū* (156). The *VH* has the following five *sippas:* potter *(kumbhakāra),* blacksmith *(lohakara),* weaver *(kuvinda),* carpenter *(vardhaki)* and barber *(snāpita).* The *Āva Cū.* has provided somewhat different names. There are other dissimilarities in the biographical account of Usabha in both these texts.
4. Compare the account in *VH* (163, 16-23) and *Āva Cū* (157). The *Nāyā* (Malliṇāyaṃ, p.118, Vaidya ed., p.118 mentions *pañcamutthiloyaṃ.* It is said that at Indra's request, Usabha abstained from the fifth muṭṭhi (*TSP,* 1,3, 69-71, Schubring, *The Doctrine,* 250n.
5. The same steriotyped expression is used in the case of Malli (p.47), Ariṭṭhanemi (49), Pasa (52), Mahavira (70), Prince Megha (II, 80-84) and others. Here the dialogues between the person who was to join the ascetic order and the parents or guardians, (see almost the common dialogues between Gajasukumāla and Devakī, II, 28; Thāvaccāputta and Kṛṣṇa Vāsudeva, II, 36; Meghakumāra and Dhāriṇī, II, 80-8; Rājīmatī and her mother, Uttarādhyayana, 20, p 279a, Ṭīkā by Nemicandra), the palanquin carrying the aspirant to the teacher, pulling out hair *(pañcamuṭṭhiloya)* are brought into prominence.
6. It is stated in the *Āva Cū,* 181 that after Usabha's attainement of omniscience, his hair, moustaches, short hair on the body and nails were removed but his twisted locks of hair were allowed to remain.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Like the birth-consecration, the *nirvāṇa*-consecration was also celebrated by heavenly gods. The heavenly gods descended to the Mt. Aṣṭāpada and waited upon the *Tīrthaṅkara.* A pyre *(ciigā)* was prepared out of *gosīsa* sandlwood, the *Tīrthaṅkara* was given a bath of *ksīrodaka* water, his body was anointed with *gosīsa* sandalwood paste and then he was elegantly dressed with beautiful cloth and ornamented properly. Then the body was placed in a specially prepared palanquin which was put on pyre and was set fire to. After the body was burnt and the fire extinguished, the bones *(sakaha)* were shared by heavenly gods, the upper sothern portion was given to one, the upper left to another, the lower southern to the third and lower left to the fourth, and whatever remained was shared by other gods. Then the memorial mounds *(ceiathūbha)* were built in memory of the *Tīrthaṅkara.* After returning to their respective places the heavenly gods preserved the bones and worshipped them.[1]

This is a brief biographical sketch of Usabha, the first and foremost *Tīrthaṅkara* of the Jains. The emphasis here seems to be on the celebration of the birth-consecration *(janmakalyāṇaka)* which is said to be attended by divine gods and goddesses. Obviously, we know very little about the happenings of his life. The author is silent even on some important events of life such as what made him relinquish the worldly life and join the ascetic order? Whether he followed the religious preachings of his predecessors or founded the religion of his own? He must have travelled from place to place and initiated people into his faith, but no such reference is made. Then why did he choose the mountain Aṣṭāpada *(Kailas),* supposed to be the abode of Brāhmaṇic God Śiva, for practising penance and attaining *nirvāṇa?* These are some of the points which need further research.

These descriptions consist of supernatural events, obviously, to make the hero exceptionally great and super-human. Such is not the case only with a *Tīrthaṅkara* of the Jains, but also with Buddha, Jesus Christ, Judah or Jarthustra and others. It is also remarkable that the description of one *Tīrthaṅkara* is equally applicable to other *Tīrthaṅkaras.* It has been stated, for example, the description of birth-consecration of Malli could be inserted from that of Usabha from the *Jambu* . At another place we are told to insert the description of birth-consecration of Usabha from that of Mahavira. It is also noteworthy that the pattern of the classical canonical biography of *Tīrthaṅkaras* as stated in the *Jambu,* is not followed by other writers such as that of *Kalpasūtra,* a chapter of the *Dasāsuyakkhandha,* while dealing with the biography of the *Tīrthaṅkaras.*

Another significant point in this connection is of erecting *stūpas* on the relics of a *Tīrtahṅkara* in the Jain tradition. It is mentioned with the Śvetāmbaras and not with the Digambaras, though the ancient Jain *stūpa* at Mathura which was common to both the sects, is

---

1. *Jambu,* 2. 30-33; *Āva Cū,* 222-23 has the same description. In *VH,* 185. 1-19, Indra was given the bones, the kings the other parts of the body, and some people and the Brāhmaṇas preserved fire. If anybody suffered from bodily pain he was said to be cured by the application of ashes. The fire was conserved by adding sandalwood to it. The relics of Buddha were shared by various persons on which the memorial *stupas* were erected in Vaiśāli, Kapilavastu, Pāvā, Kuśinārā and other places.

2. *jahā usahassa jammaṇussavaṃ, navaraṃ mihilāe Kumbhassa Pabhāvaīe abhilāvo saṃjoeyavvo-jāva Nandīsaravaradīve mahimā, Nāyā,* 8.94; *Dhammakahāṇuoga,* I,28

3. See *Āva Cū,* 136. Also see the description of the parts of the body of Mahavira *(Ovāiya,* 16; *Dhammakahāṇuoga,* I,80-81); compare with that of Usabha and Vajjajaṅgha in the *VH,* 162, 1-7 and 175,29-176-6 respectively.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

mentioned in Hariṣeṇa's *Kathākosa* and Rājamalla's *Jambusvāmicarita.* We know that the erecting of *stūpas* on the relics of Buddha was a common practice among Buddhists. But this practice does not seem to be quite old. Though the mention of Buddha's relics and the erection of *stupas* is referred to in the Buddhist canonical text, the Mahāparinivvāṇa Sutta of the *Dīgha Nikāya,* Winternitz holds that the final redaction of this Sutta is of comparatively late date.[1] As a matter of fact, the cult of *stūpas* does not seem to be in vogue till the time of Aśoka. Later in the *Nidānakathā* (Section III), a non-canonical work, we are told that the first lay-disciple of Buddha received a few hairs from the Buddha, over which a shrine was erected. We also have a reference here to the erection of non-blinking shrine *(animisacetiya).*

2. The Life History of Malli

We come to Malli, the nineteenth *Tīrtahaṅkara* of the Jains. There is nothing special about her except that she was a female according to Śvetāmbaras, and a male according to Digambaras. It appears that the Śvetāmbaras are not very happy about Malli being a *Tīrthaṅkara.* According to them, as she practised duplicity *(māyā)* in her previous life, she was born as a female *Tīrthaṅkara.* It is stated that in the birth of prince Mahābala, after joining the ascetic order together with six associates, though all of them decided to practise certain accepted austerities, the ascetic Mahābala, in order to acquire more merit, practised more austerities than the rest. According to religious precepts, although it was a meritorious deed, yet it was considered a sort of double dealing on the part of Mahābala. Consequently, Mahābala has to be born as a woman, supposed to be lower in *grade than a man.* It is also noteworthy that the *Tīrthaṅkara* hood of a female is considered one of the ten wonders *(accharia)* of the world *(Ṭhāṇā, 10).* The commentator Abhayadevasūri, commenting on the Malliṇāya, the 8th chapter of the *Nāyā,* has stated: Though Malli is a feminine, she is hailed by a masculine word *arahā* (p.114). In the text of *Nāyā* (p.117), the divine gods hail her as *Bhagavān loga-nāhā.* Then the author of *Lokaprakāśa* (32.1007) has stated that only a male is entitled to be a *Tīrthaṅkara.* The *Kalpasūtra* has provided us with the life - history of Mahavira, Parsva, Nemi and Ṛṣabha, and not of Malli.

3. The Life - History of Aritthanemi

The life—history of Ariṣṭanemi or Nemi, the twenty-second *Tīrthaṅkara* is extremely sketchy. It is important as this legend is related to the story of Kṛṣṇa Vāsudeva in Jain tradition. Aristanemi was Kṛṣṇa Vasudeva's cousin. The biographical account of Aristanemi is given in the *Kalpasūtra* of Bhadrabāhu, Later, Kṛṣṇa Vasudeva left Mathura and migrated to Western India where the city of Dvāraka was made a centre of activities of the yadavas. Gradually, Jain monks also made the western India a centre of their activities. It is significant to note that out of 63 Great Men *(śalākāpuruṣa)*[2] of the Jains, 27 (i.e. 9 Baladeva, 9 Vāsudeva and 9 Prativāsudeva) are related to Krsna only, which indicates the dominance of Krsna mythology in the world history of the Jains. According to Jacobi, the formation of the Jain *Harivaṃśapurāna* goes back

1. Winternitz, *ibid,*41

2. The *Samavaya* and the *Cauppannamahāpurisacariya* of Śīlaṅka enumerate only 54 *Mahāpuruṣa* excluding 9 Baladevas. Bhadreśvara in his *Kahāvali,* however, adds 9 Nārada making the number 72.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

to the 3rd century B.C., although the whole mythology concerning the Kṛṣṇa legend was given its final shape about the beginning of the Christain era.[1] It was round about this time or a little later that the works like the *Vasudevahiṇḍi,* dealing with Harivaṃśa by Saṅghadāsagaṇi Vācaka, were composed. The *Vasudevahiṇḍi* has dealt with the origin of the Harivaṃsa clan (356, 27—358,6; 111, 1—7; 77, 12—18) and it is interesting that its origin is also counted among the ten wonders of the world *(Ṭhāṇā, 10).* Later, Jinasena (783 A.D.) in his *Harivaṃśapurāṇa,* also known as *Ariṣṭanemipurāṇasaṅgraha,* deals with the legends of Kṛṣṇa Vāsudeva and Balarāma in a Jain setting. Then Maladhāri Hemacandra (1123 A.D.) in his *Bhavabhāvanā* narrates the biographical account of Neminātha in detail.[2] It is noteworthy that in the present work while describing the life-history of Ariṣṭanemi, only his renunciation *(pavvajjā)* and attainment of omniscience *(kevalanāṇa)* are mentioned, and nothing else. It is only in the *Uttarādhyayana* (22) that his betrothal with Rajimati, daughter of king Ugrasena of Mathura, finds a mention. Later on, commentators like Nemicandra added a good deal of material related to the legend of Ariṣṭanemi and Kṛṣṇa Vāsudeva in their commentaries.

4. The Life – History of Pāsa (Pārśva)

Historical Jainism begins with Pāsa, the twenty-third *Tīrthaṅkara* of the Jains. He is the immediate predecessor of Mahāvīra, who flourished some 250 years before the latter. He was known as *purisādāṇīya* (distinguished), *lokapūjita* (honoured by people), *sambuddha* (enlightened), sarvajña (omniscient), *dharma-tīrthaṅkara* (prophet of the law) and *Jina* (victor)[3]. He lived thirty years as a householder and after leading an ascetic life for seventy years, attained liberation at Mt. Sammeya (Pārasnāth Hill, in the district of Hazaribagh on the Bengal-Bihar border). It is stated in the *Ācārāṅga* (2.3. 401, p.389) that the parents of Mahāvīra were the adherents of Pāsa. We come across a number of Pārsva's desciples *(pāsāvaccijja=Pārśvāpatya)* referred to in the Jain canon. Many of them are said to have given up the *cāujjāmadhamma* (the doctrine of fourfold restraint)[4] and accepted the *Pañcamahavvaya* (the five great vows) enunciated by Mahāvira. The *Uttarādhyayana* (23) refers to an important conference between Kesī, representative of Pārśva and Gautama Indrabhūti, representative of Mahāvira, held in Śrāvastī. A number of questions were discussed in this conference and ultimately Kesī is said to have accepted the five vows preached by Mahāvira. Besides, on the basis of the study of Buddhist texts, Jacobi has shown the existence of the *niggantha* (unattached) order founded by Pārśva

1. *ZDMG,* 42, 1888, p.494, after *The Vasudevahiṇḍi,* 26f
2. Aslo see Guṇabhadra's *Uttarapurāṇa* (70.200.211); *TSP* (8.2.15-20); *Mahāpurāṇa* (lxxxii) by Puṣpadanta
3. *Uttarā, 23.1*
4. According to the *Ṭhāṇā* (4.266), except the first and the last *Tīrthaṅkaras,* all the rest are said to have preached the doctrine of *cāujjāmadhamma;*
(i) to abstain from committing all kinds of violence *(savvāo pāṇativāyāo veramaṇaṃ,*
(ii) to abstain from all kinds of telling lies *(savvāo musāvāyāo veramaṇaṃ),*
(iii) to abstain from accepting all kinds of things which are not given *(savvāo adiṇṇādāṇāo veramaṇaṃ),*
(iv) to abstain from all kinds of external possession *(savvāo bahiddhādāṇao veramaṇaṃ).* To these fourfold vows was added the vow of *bambhacera* (to abstain from indulgence in sex) by Mahāvira. However, the commentator Abhayadeva explains the word *bahiddhādāṇa (bahirdhādāṇa)* as 'accepting *(ādāna)* from outside' which corresponds to Mahāvira's both the fourth and the fifth vow, according to him.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

before Mahāvīra which indicates that Jainism was prevalent before the 8th century B.C. and Mahāvīra was no more than a reformer of the order.[1]

We know very little regarding the details of the doctrine enunciated by Pārśva, except that he made fourfold restraint binding on his followers. It is noteworthy that the rules of conduct preached by Kesī in the *Rāyapaseṇiya* (Su 149) tally *verbatim* with those practised by the disciples of Mahāvira as recorded in the *Ovāiya* (Sū 16, p.61). It is stated that Pārśva is merely a copy of Mahāvira's biography with the exception that he was born in Vārāṇasī and died on the Mt. Sammeya.[2]

Like Ariṣṭanami, the biographical account of Pārśva also is very sketchy, nevertheless, the following points can be noted about him:

1. His order was divided into four *gaṇa,* i.e. monks, nuns, laymen and laywomen.
2. Women were allowed to join the order of nuns.
3. The ascetics belonging to Pārśva order were allowed to wear an under and upper garment, whereas Mahāvira's ascetics went about naked *(acelao)*[3].
4. Pārśva seems to have preached his religion to the non-Aryan tribes in the region of Bengal-Bihar border. The worship of Manasā, the serpent deity, is quite popular among these tribes. This worship is performed during the four months of rainy season *(cāturmāsa)* this season also has a special significance for Jains. The Pārasnāth Hill, the place of attainment of *nirvāṇa* of Pārśva, is called Maranga Buru (Bad-pahadī or mountain-deity) by Santhalas which is still worshipped in the region by offering the deity a buffalo.[4] A large number of idols of Pārśva in this and the surrounding region indicates that his cult was popular in this area.

5. The Life – History of Mahāvīra

Mahāvīra or Vardhamana, the last and the twenty-fourth *Tīrthaṅkar* of the Jains, was a senior contemporary of Buddha. He became the leader of the Jain *saṅgha* after Pārśva. He was born in Kundapura or Khattiyakuṇḍaggāma, a suburb of Vaiśālī. He belonged to the *nāyā (jñātṛ)* tribe of which his father Siddhārtha of Kāśyapa *gotra* was a chief. His mother Triśalā of Vasiṣṭha *gotra* hailed from the Licchavis. She was sister of Cetaka, the head of tribal confederacy. According to another legend, Mahāvīra was originally conceived by a Brāhmaṇa lady called Devānandā, wife of Ṛṣabhadatta, but it is said that god Indra reflecting that no great man, including a *Tīrthaṅkara,* are ever born in low, miserly, beggarly or Brāhmaṇa families,[5] commanded his chief Harinegamesī or Negamesi to transform the embryo from the womb of Devānandā to that of Triśalā *(naigameṣāpahṛta)*[6].

---

1. *Jain Sutras,* 45, xiv-xxi
2. *Jiṇacarita,* 149f after Schubring, *the Doctrine,* 29
3. *Uttarā,* 23.29
4. S.C.Roy, *the Mundas and their Country,* 51f
5. *na eyam bhūyaṃ, na eyam bhavvaṃ, na eyaṃ bhavissaṃ, jaṃ naṃ arahantā vā cakkavaṭṭī va, baladevā vā, vāsudevā vā, antakulesu vā, pantakulesu vā, tucchakulesu vā, dariddakulesu vā, kivinakulesu vā, bhikkhāyakulesu vā, māhaṇakulesu vā, āyāiṃsu vā, āyāiṇti vā, āyāissanti vā; Kalpsūtra 2; Dhammakahāṇuoga,* I,57 n; also see *Nidānakathā.* I,65
6. Also known as Nāyagāmesa, Naigamarṣi, Hari or Hāri, one of the most ancient deities of the Jains. His various

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mahāvira or Vīra is an attribute given to him for his heroic deeds. His parents called him Vardhamāna (the prosperous one) As he was a member of the *nāya* tribe he was called Nāyaputta (jnātrputra). He was born in Vaiśālī therefore he was known Vaiśāliya and also Videhadinna after the name of his native country Videha. Like other *Tīrthankaras* not much is known about Mahāvīra. We are told little about his childhood, youth, education and household life; whatever is described is on the whole in a steriotyped form. Like other *Tīrthankaras,* he too is depicted as a super-human endowed with miraculous power.[1] These miraculous powers and exaltedness on the part of Mahāvīra may be considered a later insertion by posterior writers.

It has been stated that Mahāvīra was endowed with three types of knowledge even when he was already in the womb, yet he was sent to school when eight years old. The occasion was celebrated with great rejoicing. We are told that under the guise of an old Brāhmana, Indra led the child to school. After reaching the school Vardhamāna put various questions to the teacher which it is said that the latter was unable to answer. Thereupon Vardhamāna is said to have occupied the teacher's seat and explained the answers to him.[2] However, we are told that Vardhamāna completed studying the school-curriculum comprising the study of the *Rgveda,* the *Yajurveda,* the *Sāmaveda,* the *Atharvaveda, Itihāsa* (Purāna), *Nighantu;* six *Vedāṅgas* containing *saṅkhāṇa* (Arithmetic), *sikkhā* (phonetics), *kappa* (ritual), *vāgaraṇa* (grammer) *chanda* (metre), *Nirutta* (exegesis), *Joisa* (astrolgy) and also *Saṣṭhitantra,* a treatise on the Samkhya school.[3]

It is not certain whether or not Mahāvīra entered into matrimonical alliance. There are contradictory statements regarding his marriage both by the Śvetāmbaras and the Digambaras. In the second section of the *Ācārāṇga* (II. 3.400) which is said to be the later part of the work,

---

cont.

figures have been discovered at Mathura (in the Mathura inscriptions he is called *Bhagavā nemeso),* Angai Kheda, Shahbad, Kauśāmbī and Ahicchatrā. These figures possess the head of a bull; the right hand of the deity is raised with a mark of safety and the left hand carries a child. The figures are in a sitting posture, Kasturchand Jain; 'Jain Devlok kā Astamgata Nakshatra,' *Prāchya Pratibhā,* Vol III, No.1, Jan.,1975, pp69-77, Bhopal, after *The Vasudevahiṇḍi,* pp733f. In Vedic literature he is depicted with the head of a deer, and in the *Mahābhārata* he is called *ajāmukha.* A.K.Coomaraswamy, *Yaksas,* 12. *Naigameṣāpahṛta* is mentioned in the *Suśruta-Samhitā,* Sarirasthāna. 10.61 (Ghanekar Bhasker Govind, Lahore, 1936; 1941) as a disease of pregancy caused by bodily wind, also known as *nāgodara* or *upaśuṣkaka* which suspends the embroys growth, *The Vasudeva,* 159nf

1. It stands comparison with Buddha. His worship and deification is foreign in the earliest texts of the *Tripitaka,* though it stands at its height in the Buddhist Sanskrit literature, espcially the Mahāyāna literature, Winternitz, *ibid,*162. In the *Mahāvastu,* which is a text of the Lokottaravādins, the Buddhas are depicted as 'exalted above the world' *(lokottara),* they adapt themselves to the worldly life only externally. Similarly, in the *Lalitavistara* which corresponds to Mahāyānistic ideas, the life and work of Buddha on earth is termed "the sport" *(lalita)* of a supernatural being.

2. Compare the Bodhisattva's first day at the school described in the *Lalitavistara* (x):
With a following of 1000 boys, with tremendous pomp with all the gods participating and with 8000 divine maidens, scattering flowers before him, the little Bodhisattva makes his entry into the writing school. The poor school master cannot bear the glory of Bodhisattva and falls to the ground. A god raises him and calms him by saying that the Bodhisattva, though omniscient and having no need to learn anything, yet following the course of the world, has come to school, after Winternitz, *ibid,*251.

3. It should be taken as a steriotyped description; some of these works did not exist at the time of Mahāvīra.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and in the *Kalpasūtra* (5.109) only the name of Jasoyā (Yasodā) of Kodinna *gotra* as Mahāvīra's wife is mentioned. Further, it is state that she had a daughter named Aṇojjā or Piyadaṃsaṇa. The name of Mahavira's daughter's husband is neither referred to in the *Acārānga* nor in the *Kalpasūtra,* but we learn from the *Āvaśyaka* tradition that it was Jamāli.

Mahāvīra renounced the wordly life at the age of thirty. It has been stated that for a period of one month and a year *(samvaccharaṃ sahiyaṃ māsaṃ)*[1] he went about with a robe and then roamed about naked.[2] He preached severe asceticism for over a period of twelve years and wandered naked and homeless. He travelled on foot from place to place unmindful of hunger and thirst, cold and heat and rough and rugged pathways. It is stated that for more than two years he neither drank nor used cold water. While passing the region of the country of Ladha (in West Bengal), he had to undergo severe hardships. The inhabitants of this country were violent by nature. They had an aversion for ascetics and often harassed them if ever they passed through their land. They hit them with sticks, fists or lances, cut their flesh, tore their hair, threw dust on their bodies and set their dogs upon them. Looking at Mahāvīra's nude body, the children ran away in fright and people drove him out of village.[3]

After twelve long years of hard ascetic life Mahāvīra attained omniscience *(kevalajñāna)* at the age of forty-two and lived thereafter for thirty years to preach religious sermons. According to the *Kalpasūtra,* since the time Mahāvīra renounced his household life, he spent forty-two rainy seasons in the following places:
First rainy season in Aṭṭhiyagāma
Next three rainy seasons in Campā and Piṭṭhicampā
Next twelve rainy seasons in Vesālī and Vāṇiyagāma
Next fourteen rainy seasons in Rājagiha and Nālandā
Next six rainy seasons in Mithilā
Next two rainy seasons in Bhaddiyā
Next one rainy season in Ālabhiyā
Next one rainy season in Paṇiyabhūmi[4]
Next one rainy season in Sāvatthi
the last rainy season in Pāvā[5]

This roughly corresponds to modern Bihar, a part of North - West of Bengal and a part of Eastern Uttar Pradesh. This indicates that during the life time of Mahāvīra Jainsm did not seem to have spread roughly beyond the boundaries of Anga-Magadha where the Teacher Principally dwelt and preached. There is a tradition according to which Mahāvīra is said to have visited Vīibhaya, the capital of Sindhu-Sovīra in order to ordain king Uddāyana. Though this

1. The same expression is used in the case of Usabha, see Infra, *Dhammakahāṇuoga,* I,20
2. *Kalpasūtra* (5.117); also *Ācārāṅga* (II, Cūlikā 3). In this connection Aparājitasūri in his commentary on the *Bhagavatī-Ārādhanā* (421, pp 611—15) has quoted the Śvetāmbara canonical literature in support of Mahāvīra's moving about naked. Quoting the statement *"varisam cīvarādharī teṇa paramacelago jino"* from the Bhāvanā, the 24th section of the Ācārāṅga, he has pointed out certain contradictions and difference of views in this connection, See Jagdishchandra Jain, *Life in Ancient India,* revised edition. Ch.I; Nathuram Premi, *Jain Sāhitya aur Itihās* p.64
3. The account seems to be somewhat exaggarared; It is provided in the first section of the *Ācārāṅga.*
4. Situated in Vajjabhūmi in the country of Lādha, *Kalpasūtra,* 5.123 Com.
5. *Ibid,* Sū, 5.122

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

tradition is referred to in the *Bhagavati* (13.6) and also in the *Āva Cū* (II, 171f), it appears to be a later insertion with the idea of popularising Jainism in far-off countries and to bid the support of the royal families. This view is supported by a statement of the *Bṛhatkalpasūtra* (1.50). During his sojourn in Sāketa, restricting the movement of the Jain monks and nuns, Mahāvīra declared that they should not travel in the east beyond Anga-Magadha, in the south beyond Kauśāmbī, in the west beyond Sthūṇā and in the north beyond Kuṇālā (Uttar Kosala). He affirmed that these were the Aryan countries where their religious practices can remain intact.

Mahavira attained liberation at the age of 72. During this period he travelled from place to place preaching non-violence and truth. Ultimately he arrived at Pāvā, he cut asunder the ties of birth, old age and death and attained *nirvāna* in the year in 527 B.C. The occasion was celebrated by the eighteen confederate kings of Kāśī and Kosala and the nine Mallakīs and nine Licchavīs by observing fast and lightening the lamp throughout. It is stated by Jinasena that the divine gods celebrated this happy occasion by lightening a row of lamp in the city and it was from this time that the people started solemnising the festival of Dīpālikā (Divālī) every year *(Harivaṃśapurāṇa* 66. 19—21).

Life—History of Sovereign King Bharaha

Cakravartin, or a ruler of *cakra,* is a sovereign of the world. There are twelve *cakravartins:* 1 Bharaha, 2 Sagara, 3 Maghavam, 4 Saṇakkumāra, 5 Santi, 6 Kunthu, 7 Ara, 8 Subhūma, 9 Mahāpauma, 10 Hariseṇa, 11 Jaya (seṇa) and 12 Bambhadatta.[1] As indicated, like the twenty-four *Tīrthaṅkaras,* the twelve *Cakravartins* are also counted among sixty-three Excellent Men. Like most of the *Tīrthaṅkaras* they have a long span of life and have enormous physcial size. The *Cakravartins* are endowed with nine divine treasures *(navanidhi)*[2], eight kākiṇī jewels[3] and fourteen imperial crown treasures *(ratna)*[4]. Barring a few the rest of the *Cakravartins* are said to have attained liberation at Mt. Sammeya. Out of twelve *Cakravartins,* Santi, Kunthu and Ara became *Tīrthaṅkaras.* The *VH* gives an account of the nine *Cakravartins,* out of whom Maghavaṃ and Jaya are just mentioned only once. Usabha, the first *Tīrthaṅkara,* is called *dhammacakkavaṭṭi* or the religious *Cakravartin* as mentioned earlier.

Sovereign King Bharata and Naravāhanadatta

It is interesting to make a comparision between Bharata as depicted in the *Jambu* and Naravāhanadatta, the hero of the *Bṛhatkathā* of Guṇāḍhya, who attained the status of a *vidyādhara-cakravartin* as represented in the *Kathāsaritsāgara (Kss),* a Kashmirian version of the *Bṛhatkathā.* Here is a brief account of the Universal Conquest of Bharta:

---

1. *Samavāya* 12; *Ṭhāṇā,* 10.718; *Āva Niryukti,* 374f
2. They are: *naisarpa, pāṇḍuka, piṅgala, sarvaratna, mahāpadma, kāla, mahākāla, māṇavaka* and *śankha (Ṭhāṇā,* 673,602.). The nine divine treasures belonging to Kubera in the Brahmanic tradition are *padma, mahāpadma, śankha, makara, kacchapa, mukunda, nanda, nīla* and *kharva,* Monier William's *Sanskrit-English Dictionary*
3. See *Ṭhāṇā,* 633
4. They are (a) *cakra* (the wheel), *chatra* (the parasol), *cāmara* (the flying-whisk), *daṇḍa* (the rod), *asi* (the sword), *maṇi* (the gem) and *kākiṇī* (the cowrie); (b) *senāpati* (the general), *gāhāpati* (the steward), *vardhakī* (the architect), *purohita* (the household priest), *strī* (the wife), *aśva* (the horse) and *hasti* (the elephant), *ibid,*558; *Samavāya,* 14; also see *The Vasudevahiṇḍi, 36n*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

When Bharta was ruling in the city of Vīnitā there appeared the *cakra*-jewel in his armoury hall.[1] Directed by this jewel, with the ambition of conquering the region of Bharta, by travelling through the holy places of Magadha, Varadāma and Prabhāsa, he arrived at the bank of the Sindhu river. He crossed the river with the help of the *carma*-jewel which served him as a ship. Then advanced by the north-east he arrived at Mt. Veyaḍḍha and entered the cave Timsā[2] which was guarded by god Kṛtamāla.[3] The *cakra*-jewel proceeded in the direction of the cave. He struck the door of the cave with the *daṇḍa*-jewel and it opened automatically. Then the sovereign king mounted the *hasti*-jewel and entered the cave with his *maṇi*-jewel which dispelled the darkness like the sun. There he came across the people of Āvāḍa-cilāya (Āpāta-kirāta) who caused a tempest to rage over for seven days which Bharata resisted by means of his *chatra*-jewel. Having conquered the enemy, Bharta marched to the Mt. Culla-Himavanta and arrived at Mt. Ṛṣabhakūṭa[4] where on a stone-slab he inscribed his name with the *kākiṇī*-jewel, stating "I am Bharata, the first sovereign king of the continent of the whole of Bharata region." Then he proceeded towards the Mt. Vaitāḍhya[5], sent an arrow to the *vidyādhara*-lords Nami and Vinami, making an anouncement of his arrival. Then there ensued a terrible fight between the two armies. Ultimately, the *vidyādhara*-lords surrendered, offering the sovereign king the *strī*-jewel, Subhadrā. Thereupon they were assigned the two sides of the Vaitādhya, in the northern and southern halves of Bharata. Then having crossed the Gaṅgā river he arrived at the Khaṇḍappavāya cave and received nine objects of priceless value *(navanidhi)*. Then attended by fourteen imperial crown treasures, he returned to Vinītā where the consecration ceremony was held with great pomp, with Subhadrā as his consort. The sovereign king Bharata ruled the entire continent of the Bharata region for a long time. It is stated that once after his bath, King Bharata entered his mirror-house *(āyaṃsa-ghara)* and while looking at his body he attained omniscience.[6] He achieved salvation at the Mt. Aṣṭāpada.[7]

Vidyādhara—Cakravartin Naravāhanadatta

The emperor Naravāhanadatta was told by a hermit named Vāmadeva that there were certain jewels in the inner cave of his hermitage and if he could manage to obtain them, he would have an easy victory over Mandaradeva, the lord of the *vidyādharas*. The emperor

---

1. Bharata while marching on the conquest, was already in possession of the fourteen jewels, whereas Naravāhanadatta, first attained sovereignty over the *vidyādharas* and then come into possession of the seven jewels.
2. Timisā also in the *Ṭhāṇā* and *VH;* Tamisra in *JHP* and Tamisrā in *TSP*. Alsdorf has drawn similarity between Timisā and Triśīrsa (name of Siva). According to him, Timisā has developed from Trisīsa by misreading or a similar misunderstanding. Zur Geschichte der Jaina-Kosmographie und Mythologie, *ZDMG*,92 (1938), p.488; *The Vasudevahiṇḍi*, 36n
3. Devamāyā in the *KSS*
4. Ṛṣabaha in *KSS*. This mountain plays an important role in the *Bṛhatkathā* where the *Vidyādhara-Cakravartins* are Crowned. Alsdorf, *ibid, p.489*
5. Vedyardha in *KSS*
6. It is said that once he noticed his finger devoid of ring which looked ugly and it made him renounced the worldly pleasures, *Uttarā*, Com.,18,232a
7. For similarity in accounts of other *Cakravartina*, particularly, of Santi, Kunthu and Ara see *VH* Keumatī-lambha.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

entered the cave where he was encountered with various obstacles. Ultimately, he succeeded in obtaining the following jewels: (a) *mahāhasti-ratna* (the great elephant-jewel), (b) *khaḍga-ratna,* (the sword-jewel), (c) *candrikā-ratna* (the moonlight-jewel), (d) *kāminī-ratna,* (the wife-jewel), (e) *vidyā-ratna* (the jewel of *charms),* (f) *sarasā* (lake) and *candana* (sandalwood tree). Then he proceeded to conquer Mandaradeva on the northern side of Kailās. he reached his camp on the Mt. Govindakūta. Then passing through various regions he arrived at the foot of Kailās and encamped on the bank of Mandākinī. Thereupon appeared Mandaradeva asking the emperor not to advance over the Mt. Kailas, the abode of Śiva, but pass on to the other side of the mountain by the cave known as Triśīrṣa which was guarded by king Devamāya. A fierce battle ensued on the mountain between the two armies when Devamāya was taken captive. According to Devamāya, pleased with the austeriries of certain Ṛṣabaha[1], God Śiva tore asunder Kailās and made a cave-like opening for Ṛṣabaha to pass over to the northern side of the mountain. Thereupon at the request of Kailās, God Śiva appointed guards of the cave. He declared: The cave shall be open at both ends by the one who had obtained the jewels and was an emperor of the *vidyādharas.*

Devamāya further told Naravāhanadatta that since he had conquered him (Devamāya), now he was the sole emperor of both the sides of Kailās, and that since he had passed over the Triśīrṣa cave, he was in a position to conquer the rest of his enemies. Naravāhanadatta, while encamping at the mouth of the cave, saw that the underground passage was deep and there was darkness without any light either of the sun or the moon. He mounted his chariot and entered into the cave assisted by glorious jewels. He dispelled the darkness by the *candrikā-ratna* and conquered the guards of the cave, the deadly poisonous snake by *candana,* the elephants of the quarters by *hasti-ratna,* the *guhyakas* by *khaḍga-ratna* and over powered other obstructions with the help of other jewels. Thus having conquered the northern and southern mouth of the cave, he marched against Mandaradeva. Then followed a fierce fight between the two armies in which Naravāhanadatta came out successful. Thus the emperor conquered the northern and the southern territories *(vedyardha)* and acquired the high dignity of an emperor over all the *vidyādharas* of both divisions. Then he was told to proceed to the Mt. Kailās, which is supposed to be a sacred place for the celebration of the coronation festival in honour of the *Cakravartins.* The ceremony was held with great pomp, with the consort Madanamanjukā, occupying half of the throne.[2]

Here we come across much similarity between Jain consmography and the pertinent description of the Himalaya mountain recorded in the *KSS.* As there has been no common source known to us for the above narration, it has been surmised that Jain mythology seems to have been influenced by the *Bṛhatkathā* of Guṇādhya.[3]

1. He is the first *Cakravartin* of the *vidhyādharas* and can be compared with Ṛṣabha of the Jains, who is said to be the master of magic arts.
2. KSS, 109, 1-152; 110
3. Alsdorf, *ibid,* 479, 491

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SECTION TWO

Narratives of the Ascetics *(Samaṇa-kahāṇagāṇi)*

1. The Ascetic Gajasukumāla

Gajasukumāla was the eighth and the last son of Devakī, the mother of Kṛṣṇa Vāsudeva. According to the Jain legend, the god Hariṇegamesī made Sulasā, the wife of Nāga of Bhaddilapura and Devakī preganant at the same time. Both of them delivered simaltaneously, Sulasā giving birth to dead children and Deveki to live children. Later Hariṇegamesī transferred the seven living sons of Devakī to Sulasā. Thereupon Kṛṣṇa Vāsudeva evoked Hariṇegamesī and by his favour Devakī gave birth to Gajasukumāla, his younger brother.

Once Kṛṣṇa Vāsudeva along with Gajasukumāla, mounting his elephant, proceeded to pay homage to Ariṭṭhanemi. On the way he happened to see the beautiful daughter of Brāhmaṇa Somila. Thinking that she could be a suitable match for his younger brother, he brought her to his palace and kept her in the female apartment. In the meantime, Gajasukumāla, inspired by religious sermons of Ariṭṭhanemi, renounced the world and became an ascetic. When Somila learnt that the prince had abandoned his daughter and become a recluse, he was very furious. He proceeded to the crematorium of Mahakāla where Gajasukumāla was practising penance. He looked around, took moist earth from the ground, prepared an earthen boundary wall on Gajasukumāla's head and put burning coal into it. Having done this the Brāhmaṇa returned quitely. It is stated that the ascetic Gajasukumāla bore the unbearable pain without having any ill feeling towards the oppressor. While undergoing the agony the ascetic achieved the supreme state of perfection and attained liberation.[1] Somila died a premature death. His body was removed by Pāṇas (outcasts) and after the body was removed the place was purified by water.

2. The Ascetic Thāvaccāputta

After listening to the sermons of Ariṭṭhanemi when Thāvaccāputta, a merchant's son resolved to join the Teacher's order, his mother approached Kṛṣṇa Vasūdeva, the ruler of Bārāvaī (Dvārakā). She requested him to lend her the royal umbrella, crown and fly-whisk so that the renunciation ceremony of her son could be solemnised. Kṛṣṇa Vasūdeva told her not to worry as he himself was going to initiate the ceremony on behalf of the royalty. Then he made a royal declaration that whosoever wished to enter the monastic order, would be looked after by the royal authority. After becoming a recluse, Thavāccāputta observed the rules of conduct, and roamed about from place to place delivering his sermons.

At that time in the town of Sogandhiyā there lived a mendicant named Suka with his one thousand followers. The mendicant was well-versed in the four *Vedas,* the *Ṣaṣṭhitantra* and the Sāṃkhya system. He was an adherent of Sāṃkhya philosophy and parctised five kinds of restraints *(yama)* and observances *(niyama),* considering purification as the basis of his cult. He

1. Gajasukumāla's account is recorded in the *Bhagavatī-Ārādhanā* with other ascetic heroes, who by undergoing severe penance, died and said to have achieved the highest goal of emancipation.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

propounded the doctrine of charity, purity and bathing at holy places. He wore clothes dyed with red-clay and carried triple staves *(tidaṇḍa),* water-pot *(kuṇḍī),* umbrella *(chatra),* teapoy *(channālaya),* hook *(aṅkusa),* copper ring *(pavittaya),* and sweeping duster *(kesariyā).* In the same town there lived a rich man named Sudarśana. Śuka preached him his religion, expounding the doctrine of *dravya-śauca* and *bhāva-śauca.* The former was to be practised by employing earth and water, while the latter by *Kusa* grass and citing *mantras* (magic formulae). Sudarśana became the follower of Śuka. Once the mendicant Śuka had a meeting with Thāvaccāputta and had a long discussion with him. Thāvaccāputta while criticising the Sāṃkhya view of life, propounded his cult based on purity of conduct *(vinaya).* Śuka put him a number of querries. He asked him: Are you one, two or many, or whole, imperishable or firm? Thāvaccāputta replied: I am one from substantial point of view *(dravyārthika),* two as I am endowed with knowledge *(jñāna)* and vision *(darśana),* whole from the point of view of space *(pradeśa)* and imperishable and firm from the point of view of consciousness *(upayoga).*

Śuka along with his adherents was admitted into the religion of Thāvaccāputta. Once the mendicant Śuka happened to visit the town of Selagapura which was reigned by king Selaga. After imparting religious instructions to the king, he converted him to monkhood. The ascetic Selaga started practising penance. In course of time, on account of living on coarse, tasteless, cold and stale food, he suffered intensly from burning itch and billions fever. The monk was treated by physicians with proper medicines, pills, herbs, drugs, wholesome diet and alcohol. The monk Selaga was cured but he became addicted to delicious food and drink. Consequently, he showed his carelessness and negligence towards his conduct. Later, he was enlightened and by observing the rules of asceticism, achieved liberation at the Mt. Puṇḍarīka.

3. The Ascetic Rahanemi

This important dialogue noted in early Jain canonical literature seems to be unique. In this narrative a woman being coveted by a man, tempted by her nude beauty, not only controls her passions, but by her determined will puts the man on the right path. Ariṭṭhanemi was going to be married to princess Rājīmatī but learning from his charioteer that numerous animals were going to be slaughtered for his marriage feast, he returned and joined the ascetic order. hearing this Rājīmatī also felt disgusted with the wordly pleasures; she tore off her well-combed *(kucca-phaṇaga-sāhiye)* lovely black hair and entered the order of a nun. One day while practising penance on the Mt. Revaya, caught by heavy rains, she took refuge in a cave. Thinking that she was alone, she took off her wet clothes. Now Rahanemi, Ariṭṭhanemi's elder brother, who also turned to be a monk, happened to be in the same cave. Seeing Rājīmatī in her nude beauty he could not control himself and proposed to her to enjoy pleasures. He spoke to her: O dear good-looking beautiful lady, I am Rahanemi, avail of me, you shall have no cause for any trouble. Come, let us enjoy pleasures. Human life is very difficult to obtain. Afterwards we shall follow the path of the Jinas." But the virtuous nun resisted his attempt and preserving the presence of her mind, admonished the monk saying: "Fie upon you, O kṣatriya *(jaso-kāmī)*[1],

1. *Jaso-kāmino khattiyā, bhaṇṇati, Daśavaikālika Cūrṇi,* See Alsdorf, 'vāntam āpātum', *Sunitikumar Chatterji Jubilee vol.,* p.21, Poona, 1955

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

who wants to abandon his vows and re-enter worldly life *(vāntum icchasi āveum)*[1]; It would be better for you to die. I am the daughter of a Bhoja king and you are an Andhakavṛṣṇi. Being born in noble families let us not become like *gandhana* snake, let us practise self-control. If you fall in love with every woman you see, you will be wavering like a plant being blown about by the wind.

Thus listening to the well-said words of the nun, Rahanemi returned to his religion like an elephant, quickened by the goad, He was protected in thoughts, words and deeds; subduing his senses and keeping his vows, he practised asceticism throughout. After practising severe austerities, having completely annihilating their *karmas,* both attained the sublimity of perfection.

4. The Royal Sage Nami

The present discourse between Indra and the royal sage Nami is a beautiful example of ascetic poetry. The ascetic poetry comprised the doctrines of renunciation and contempt of the world, of self-sacrifice and love for all beings. It contained legends of saints, fables. parables, fairy-tales and moral stories, illustrating the philosophy and ethics of the ascetics by means of examples.[2]

When King Nami after relinquishing his kingdom of Mithilā, retired from wordly life, Indra in the disguise of a Brāhmaṇa put him to test by a series of questions:

Indra: Here is fire and storm and this palace of yours is on fire. O revered Sir *(bhayavaṃ)*[3], why do you not look after your queens?

Nami: We live happily for we possess nothing. If Mithilā is on fire, nothing of ours burns.[4] A monk who has abandoned his wife and children and has no occupation, there is nothing pleasant or unpleasant to him.

Indra: Construct a rampart, gates and battlements, moat *(usūlagā)* and *śataghnīs* then you join ascetic order.

Nami: Having made faith *(śraddhā)* his city, penance *(tapa)* and self-control *(saṃvara)* the gate-bolts, patience *(kṣānti)* its perfect rampart, which is impregnable in three restraints *(guptis);* making zeal *(parākrama)* his bow, carefulness in walking *(iriyā)* as string, content *(dhii)* its middle part (which is grasped in the hand), he should bind his bow with truth *(satya),* fastening with the arrow of penance *(tapa),* pierce the mail of *karman* — thus a sage free from fight (i.e. exempt from fighting because his defences are so strong)[6] is replaced from existence.

Indra: O king, there are kings who do not acknowledge you; first of all, you bring them under your subjugation, then you join the order.

---

1. *ibid,* p.28
2. See Winternitz, 'Ascetic Literature in Ancient India', *Some Problems of Indian Lit.,* New Delhi, 1978
3. Alsdorf takes *'bhaya-vat'* in the sense of fearful or frightened, Namipavvajjā, p.11, *Indological Studies in Honor of W. Norman Brown,* New Haven, 1962
4. Compare a similar declaration in the *Mahābhārata* (Śānti Parva, 12.178) and the *Sona Jātaka* (529),5, pp 337-38
5. It was ornamented with bells and was bright and hollow; it was flung by hand, Hopkins, Journal of American Oriental Society, 13, p.300
6. Translation by Alsdorf, *ibid,* pp 15-6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Nami: Fight but yourself! When the self is conquered, everything is conquered. He who conquered his self which is (so) difficult to conquer, will obtain happiness.[1]

Indra: How strange! Wonderful enjoyments you are giving up, O king, unreal pleasures you seek – you are foiled by imagination.[2]

Nami: A thorn are pleasures, poison are pleasures, pleasures are like a venomous snake; those who seek pleasures go to hell unpleasantly. Down (to hell) one goes through anger, deep down one goes through pride, delusion is an obstruction to (decent) rebirth, from greed there is danger in both worlds.[3]

5. The Ascetic Meghakumāra

Meghakumāra was the son of king Śreṇika of Rājagṛha. He was so named as his mother had a pregnancy—longing to enjoy the rain clouds out of season. When he was born there was a great rejoicing in the state. When he grew up he learnt seventy-two arts. He married eight beautiful princesses.

Once Mahāvīra arrived in Rājagṛha. Meghakumāra was delighted to learn about his arrival. He visited him and after listening to his religious sermons, was inspired to relinquish the wordly pleasures. He returned to his parents and expressed his desire to enter the ascetic order of Mahāvīra. On hearing her son's proposal the mother got a shock and fell unconscious. After regaining her consciousness she tried to dissuade him from the path of renunciation. She explained the difficulties in accepting the path of asceticism. When all her attempts failed to hold him back, the parents requested him to enjoy the pleasures of royalty at least for a day. After the ceremony, a barber was called forth for hair-cut, the prince was given a bath, his body anointed with sandalwood paste, then he was richly dressed and ornamented. Then he was made to sit on a palanquin and applauded with the cries of congratulations, was led to the shrine where revered Mahāvīra was sojourning.

Meghakumāra accepted the vows of a monk in the presence of the Teacher and started practising penance, spending his time in reading holy scriptures and engaging himself in meditation. Now in the hall of residence of the monks, there were numerous resting-places *(sejja)* for the use of monks. The resting-place of ascetic Meghakumāra was located near the entrance of the hall. Here as his fellow-monks, engaged in their religious duties, used to come and go, Meghakumāra was disturbed and could not sleep well. While walking up and down, the ascetics collided with his head or stomach. Under the circumstances, Meghakumāra said to himself: "As long as I occupied the status of a prince, people respected me, honoured me and sought my consultation in various matters, but now nobody bothers about me. Therefore, it would be better if after obtaining the permission of the Teacher, I return to the household life."

With these ideas in mind, ascetic Meghakumāra approached Mahāvīra and sought his permission to return to household life. Thereupon Mahāvīra narrated him a story of his previous birth: "In his previous life he was reborn as an elephant and was roaming about in jungle. Once a hare came running and took refuge below his foot which was lifted up *(pae ukkhitte)*[4]. At this time, having pity on the hare, he kept on lifting his foot and bore physical and

1-2-3 Translation by Alsdorf, *ibid,* pp 15-6

4. The chapter is known as Ukkhitta.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

mental agony patiently." On hearing this story of his previous birth, ascetic Meghakumāra was enlightened and re-established himself in his monkhood. He started practising severe penance, as a result of which his body was emaciated, as if containing no flesh or blood. It was with great exertion that the ascetic could walk or sit, and when he tried to get up his bones cracked like a dried leaf or a piece of wood.[1] He attained the highest state of perfection and achieved liberation at the Mt. Vipula.

6. The Ascetic Arjunaka

In the reign of king Śrenika, there lived a garland-maker, named Arjunaka in the city of Rājagṛha, Bandhumatī was his wife. He had a big flower-garden outside the city which looked beautiful with flowers. Not far from the garden there was a shrine dedicated to the *yakṣā* called Mudgarapāṇi (equipped with iron mace). He was a family-deity of the gardener. Arjunaka got up in the morning, took his flower-basket and proceeded to the garden. He plucked flowers, offered *pūjā* to the deity and maintained his livelihood by selling flowers on the city road.

Once a festival was going to be celebrated in the town. The gardener went out with his wife to his flower-garden. After gathering flowers both proceeded to worship the deity. When both were engaged in worship, there appeared a gang of six debauched persons, who were hiding behind the doors. No sooner they got an opportunity, they fastened the gardner tightly and raped his wife.

The gardener stood as a helpless spectator. He reflected in his mind, "Look, I have been a faithful devotee of this deity from my childhood. Had he possessed power, he could not have been indifferent seeing the act of debauchery. He appears to be simply a log of wood."

It is said that realising the inner feelings of his devotee, the deity entered the body of the gardener and unfastened his ties. Then holding his mace he proceeded towards the city. First of all, he killed the six gangsters and the garderner's wife. Then he killed numerous citizens and started roaming about freely in the city.

At this time a pious layman named Sudarśana was going along to pay homage to Mahāvīra. As soon as the deity happened to see him he attacked him with his iron mace. But it is said that as Sudarśana was a virtuous man, no harm could be done to him. In the meantime, the deity left the body of the gardener and went away. The gardener accepted the vows of a Jain ascetic under the guidance of Mahāvīra. However, when the ascetic roamed about in the city for collecting alms, people recognised him and got angry with him talking that it was he who was responsible for the death of their kiths and kins. As a result he was not treated gently by the citizens and often had to remain without food and drink. He had to bear the agony with equanity of mind. In course of time he died without food and achieved the sublimity of perfection.

---

1. Compare 'extreme emaciation of Dhanya's body, *Anuttarovavāiya,* 3.1; *Dhammakahāṇuoga,* II, 100-102

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

7. The Ascetic Harikeśabala

Harikeśā, who was born in an outcaste tribe *(śvapāka-kula),* became a monk of highest virtue. He observed the rules of asceticism, had control over his senses and was careful while walking, begging and speaking etc.

Once he approached the sacrificial enclosure *(yajña-vāṭa)* of a Brāhmaṇa teacher for begging alms. Seeing the ascetic coming dressed in dirty clothes, the Brāhmaṇas, proud of their superiority of caste, abused him, humiliated him and asked him to go away. The ascetic undisturbed in his mind by their abuses, spoke as follows:

"I am a monk, practising chastity and self-restraint, devoid of any attachment whatsoever for worldly pleasures. I do not accept food specially prepared for me. If you have something already prepared for others, it may be offered to me."

The Brāhmaṇas replied, "This food is prepared only for Brāhmaṇas, who would be arriving soon, therefore it cannot be offered to you. O you ascetic, you get away, why are you standing here?"

The monk retorted, "The Brāhmaṇa possessed of anger, deceit, violence, falsehood and is owning what is not given to him, is deprived of superiority of caste and learning.

On hearing such words from the ascetic, the Brāhmaṇa teachers got annoyed. They retaliated, "O you shameless creature, you are talking impulisively in the presence of our teachers. Let all the food be destroyed rather than to be granted to you."

Saying this words the pupils started hitting the ascetic with sticks and pieces of wood; they caught hold of him by neck and drove him away.

It is said that at this time a deity appeared on the scene. He struck the Brāhmaṇa boys so hard that their bodies were shattered and they started vomitting blood. Thereupon the Brāhmaṇas requested the sage again and again for pardon. The ascetic explained them the true meaning of sacrifice as follows:

"O Brāhmaṇas, the executors of sacrifice, why are you wasting your time in search of external purity by means of water? In your performance you are using grass, sacrificial pole, wood and fire in vain, you are washing your body with water every morning and evening without any purpose, and out of sheer ignorance you are killing animals. But you do not realise that these actions of yours add to your further sins." He exhorted them saying, "the real fire was penance *(tava),* the real fire-place was life *(jīva),* the real laddle *(suyā)* was right exertion *(joga),* the real cowdung was body *(śarīra),* the real fire-wood was *karma,* the real oblation was self-control *(saṃjama),* right exertion *(yoga)* and tranquility *(sānti),* the sacred pond was law *(dharma),* and the real bathing place was celibacy *(brahmacarya)."*[1]

The *Uttarādhyayana* contains numerous beautiful dialogues related to ascetic poetry. Obviously such dialogues cannot be included under *dharmakathānuyoga* unless *dharmakathā* stands for the sermons delivered by Mahāvīra. Similar to the aforesaid dialogue a splendid dialogue is recorded in chapter XIV of the *Uttarādhyayana* where the ascetic ideal of life is

1. Compare the story in the *Mātanga Jātaka* (497)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

praised as opposed to the Brāhmaṇic ideals.[1] In the end, the parents and both the sons join the ascetic order. There is a similar thought-provoking dialogue in chapter XXV where the Jain sage Jayaghoṣa goes to the house of a Brāhmaṇa named Vijayaghoṣa for begging alms. On being turned out from the house of the Brāhmaṇa, Jayaghoṣa characterises the qualities of a true Brāhmaṇa in the following words:

"The one who has succeeded in overcoming love, hatred and fear, who is virtuous, practises austerities, has control over his senses, does not indulge in violence, does not speak untruth, does not take anything which is not given to him and who is not defiled by sensual pleasures, is called a Brāhmaṇa."

8. The Ascetic Skandhaka

Once a Brāhmaṇa mendicant named Khandaya (Skandhaka) of Kātyāyana *gotra,* a disciple of Gaddabhāli, was sojurning in Śrāvastī. The mendicant was well-versed in the four *Vedas, Itihāsa-Purāṇa,* the fifth *Veda,* and *Nighaṇṭu,* the sixth *Veda;* six *Vedāṅgas* comprising *saṅkhāna* (mathematics), *sikkhā* (phonetics), *kappa* (rituals), *vāgarana* (grammer), *chanda* (metre), *nirutta* (exegesis), *joisa* (astronomy) and also the Satthitanta, an authoritative treatise on Sāṃkhya philosophy.[2]

In the same town there lived a layman named Piṅgalaka, a follower of Mahāvīra *(vesāliya-sāvaka).* He approached the mendicant Skandhaka and asked him questions about finiteness and infiniteness of the world, the soul, liberation *(siddhi),* liberated souls *(siddha)* and wise *(paṇḍita)* and unwise *(bāla)* death. We are told that the mendicant could not reply the said questions and thought of visiting Mahāvīra, who was moving about in the town of Kayangalā.[3] The mendicant took his ritualistic paraphernalia such as triple staves, water-pot, rosary *(kañcaniyā),* earthen bowl *(karoḍiyā),* seat *(bhisiyā),* sweeping duster, teapoy, hook, copper ring and the forearm armament *(ganettiyā).* He wore clothes dyed with red-clay and put on umbrella over his head and set off to pay homage to Māhavīra.

A long dialogue is recorded between Skandhaka and Mahāvīra. Mahāvīra propounded his doctrine of manysidedness of truth, explaining that from certain aspect, the world may be considered as limited *(sa-ante)* and from other aspect unlimited *(aṇanta).* He further explained the importance of four points of views: *dravya* (substance), *ksetra* (existence), *kāla* (time) and *bhāva* (phenomenon). In other words, from the point of view of substance and existence the world is limited and from the point of view time and phenomenon it is unlimited.

In the end inspired by the teachings of Mahāvīra, the mendicant Skandhaka was initiated into his order. He led a spiritual career and undertaking the vowed *sallekhanā* (fast unto death)

---

1. A similar dialogue between father and son is noted in the *Mahābhārata* (XII.175) in which the father presents the point of view of a Brāhmaṇa and the son that of an ascetic. Almost every verse uttered by the son here could just as well occur in a Buddhist or Jain text. Compare XII.174,177-179 of the *Mahābhārata* with the *Uttarā* (14-21-23) and XII.174,13 with the Buddhist *Dhammapada,* 47f. A similar dialogue occurs in the *Jātaka,* No.509; Winternitz, *History of Indian Lit.,* I,417n

2. The following fourteen subjects of study *(vijjāṭṭhāṇa)* are mentioned in the *Uttarā* Com., 3,56a: the four *Vedas,* six *Vedāṅgas, Mīmāmsā, Nyāya, Purāna* and *Dharmaśāstra.*

3. Identified with Kankjol in Santhal Pargana in Bihar.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

died at the Mt. Vipula. He was reborn in heaven. He is entitled to achieve liberation in near future.

9. The Ascetic Jinapālita

In the city of Campā there lived two brothers Jinapālita and Jinarakṣita, the sons of the merchant Mākandī. Both had made a voyage across the Lavana ocean several times. But as they were not satisfied, they undertook another voyage. This time as they were going along, there appeared an untimely storm as a result of which the sky was covered with clouds and the sound of thunder was produced followed by flesh of lightening. The vessel hit by violent tides of the high sea whirled around and broke. The passengers aboard the ship were terribly frightened and started crying. The merchandise and all personnel manning the ship were drowned into the sea.

Luckily the two brothers got hold of a large wooden plank and with that arrived in a fairy land of Ratnadvīpa. There lived a presiding deity of the island. As soon as she learnt about the arrival of the new comers she appeared there and warned them to live in her palace enjoying pleasures with her, otherwise she said she would cut them to pieces with her sword. Both agreed to obey the command of the deity.

After some time as the deity had to go out, she instructed them to enjoy their stay in that island during her absence and never to go to the southern portion of the palace, where there was a danger to be swallowed by a dreadful cobra. But after the deity left the palace, both decided to visit the southern garden.

When they reached there, they noticed a foul smell emitting from there. They covered their nose with a piece of cloth and proceeded further. Here they noticed a place of execution with a large heap of bones and skeletons. A man was seen groaning with pain hanging on the gallows. He told them to be very careful of the deity as it was her usual practice to enjoy pleasures with the new comer and then execute him after her lust was gratified. He told them if they wanted to get rid of the wicked deity they could seek the help of the *yakṣa* named Śailaka.

They approached the *yakṣa* and invoked him for assistance. The *yakṣa* got ready to rescue them provided they remained firm and steadfast, undisturbed by the temptations offered by the deity. After they agreed to obey him, the *yakṣa* assumed the form of a horse, made them ride on his back and galloped towards the city of Campā with speed.

In the meantime, when the deity returned to her palace, not finding the new comers there, she got furious and rushed towards them. Seeing them going on a horseback, she scolded them and threatened them with dire consequences. When she found that her words did not produce any effect, she started coaxing and cajoling them, trying to seduce them by means of amorous gestures, When she found that that too was not a successful device, she resorted to creating dissention amongest them. She praised one and despised the other. This produced the desired effect and as a result Jinarakṣita felt prey to the deity being fascinated by her charming words and coquetish glances. Knowing that his mind was tottering and shacky the *yaksa* immediately threw him down into the sea. The wicked deity caught hold of him and cut him to pieces with her sword. On the other hand, Jinapālita, who remained steady and restrained, unaffected by

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

the allurement created by the deity, reached home safely. Finally he accepted the vows of a monk, practised penance and achieved liberation.

10. The Ascetic Dhanya (the Nandi-fruit narrative)

In the city of Campā there lived a rich merchant Dhanya by name. Once he said to himself that in order to earn wealth he should make a journey to Ahicchatrā (Ramnagar in Barelly district in Uttar Pradesh). He loaded his carts and waggons with various merchandise and made an announcement, saying that in order to earn wealth he proposed to make a voyage to Ahicchatrā, and if any tradesman or recluse was interested in accompanying him he was most welcome. He also reported that he would be furnished with an umbrella, shoes, a water-pot and food and drink, if needed and every care would be taken in case one fell sick or due to infirmity was unable to walk.

Then an auspicious day and time was chosen, relatives and friends were called for dinner, their permission was obtained for undertaking the journey, and the merchant Dhanya, with loaded carts of merchandise, accompanied by numerous merchants set out for his destination.

After travelling a little distance, he came across a forest. He told his fellow-travellers "O travellers, this forest is full of trees, leaves, flowers and fruits. Amongst them you will notice a beautiful tree called *nandiphal,* providing a cool shadow. You should never be tempted to taste its fruits nor take rest under its shadow. If it is not possible for you to control yourself, and you are induced to eat the fruits, you are bound to perish.

But some travellers, not heeding his warning, being tempted by the fruits, proceed towards the trees. They plucked the fruits, ate them and died instantaneously. On the other hand, who listened to the warning of their leader, avoided the fruits, remained healthy and were able to reach their destination safe and sound.

The merchant Dhanya arrived safely at Ahicchatra. He offered gifts to the king and was exempted from paying taxes. After disposing his merchandise and making profit he returned to Campā. In course of time, after listening to the religious discourse of an ascetic, he renounced the worldly pleasures and joined the order of monks. He practised penance and was released from pleasure and pain and achieved salvation.

11. The Ascetic Dhanya

In the city of Rājagṛha there lived a merchant named Dhanya with his wife Bhadrā. He had five sons and a daughter named Suṃsumā. The father engaged a servant,named Cilāya to take care of his daughter. The servant played with her and made her play with other children. Since Cilāya was a quarrelsome boy, the children's parents made a complaint against him as a result of which he was dismissed from service.

Cilāya wandered as a vagabond from place to place. One day, he was introduced to Vijaya, the leader of five hundred robbers of Sīhaguhā, and he joined his gang. He was appointed as a body-guard of Vijaya and always guarded him with a sword in his hand. When the leader went

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

out for his robbery campaign, the body-guard Cilāya was put in charge of the village robbers. The robber-leader taught him various useful spells and incantations pertaining to robbery. In course of time, Vijaya died and Cilāya was consecrated in his place with great pomp. Once after consultation with his colleagues, Cilāya proposed to commit daçoity in the house of his previous master Dhanya. Receiving instructions from their leader, the robbers wore wet leather, clad in male coats, tightened the leather strap on hand, put on a chain around their neck and displayed other special marks. Thus getting ready with arms, weapons, arrows and quivers, with their shanks armed with hanging bells, they set out to their destination amidst the tumult of musical instruments and beating of drums. When they reached the city-gate, the ring-leader recited the spell which caused the door open. Then they entered the house of Dhanya in order to commit robbery. Dhanya was terribly frightened and he fled with his five sons, living his daughter Suṃsumā behind. The robbers seized huge amount of wealth from his house, abducted Suṃsumā and returned to the forest.

Next morning, Dhanya approached the city-police with a large amount of gifts and lodged complaint about the robbery in his house. The police officers clad in male coats, set out in serach of the offenders. In order to catch them they rushed to the forest. When the robbers came to know that they were being followed by police, they abandoned the wealth, and their leader Cilāya entered into the think forest, carrying Suṃsumā with him. After a while when he was unable to carry her further, he behaded her and took her head away with him.

Now after a long hunt, Dhanya and his five sons were very tired. They were unable to get anything to eat in the forest. Having a pity on his sons, the father offered his own flesh and blood to his sons so that they could satisfy their hunger and thirst and return to the city safely. But how the sons could accept such an offer from their revered father? In return, each of them offered his own flesh and blood to their loving father, suggesting that his life was more valuable than theirs. In the end, at the suggestion of their father, they agreed to feed upon the flesh and blood of Suṃsuma's corpse. Then all of them returned home.

In course of time, after listening to the religious discourse of Mahāvīra Dhanya joined the ascetic order and after practising penance, got rid of pleasant and unpleasant *karmas* and achieved salvation.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SECTION THREE

The Narratives of the Female Ascetics (Samaṇī-kahāṇagāṇi)

Before we actually come to the narratives of female ascetics, who have attained *nirvāṇa,* let us examine the position of women in Jain religion.

First of all, if a man is entitled to attain the highest goal of life, why should a woman be deprived of the same? Mahāvīra does not seem to have made a distinction of caste, colour, creed or sex in his teachings and has declared that whosoever practises right faith, right knowledge and right conduct, is entitled to attain the summum bonum.

We come across two different traditions amongst Jains, one represented by the Digambara sect, another by the Śvetāmbara one. In the Digambara (sky-clad) tradition, as the very name indicates, nudity is an absolute prerequisite for monkhood, and as it was not considered virtuous that nuns, like monks, should move about naked, thus women were denied the right of achieving the highest goal of life, i.e *nirvāṇa.* One can say that the right of attaining *nirvāṇa* was not denied to women because they were inferior to their brothers, but because of nudity, which everyone assumed, applied more rigidly to women than to men. Digambaras believed that a woman lacks the admantine body necessary to attain liberation, hence she is entitled to attain this goal only when she is reborn as a man.[1] Śvetāmbaras (white-clad) do not consider nudity as an absolute prerequisite for monkhood, they assert the optional nature of this practise, of course they disapprove attachment to clothing.

It may be mentioned that before the bifurcation of Jainism into Digambaras and Śvetāmbaras in the first century A.D. there seemed to be no hard and fast rules regarding wearing clothes for monks. Some wore clothes and others moved about naked. As a matter of fact, emphasis was laid down on self-purification rather than the external symbols such as clothes etc.

A point that arises about woman is that inspite of sanctioning the highest goal of perfection to them, why have they been condemned by Jain writers? A monk has been instructed to keep at a distance from women if he wanted to accomplish his goal of perfection. It is stated that as a pot filled with lac catches fire in no time so a monk is lost through the association of a woman. It has been stated in canonical literature, "A monk of three years standing could become a teacher of a nun of thirty years standing, and that a monk of five years standing could become a teacher of a nun of sixty years standing."[2] It seems Jains were alive to such wholesome criticism.

---

1. It is to be noted that Vīrasena (9th century A.D.) a Digambara, in his commentary of *Ṣaṭkhandāgama (Sūtra 2)* has supported the view of salvation to women. According to him, she is entitled to have fouteen *gunasthānas* (stages of purification) in her internal state *(bhāvastrī): katham punastāsu caturdaśa gunasthānāniti cet? na bhāvastrīviśiṣṭa manuṣya gatau tat sattvāvirodhāt,* after *Prakrit Sahitya ka Itihas,* p.279. Then Śākaṭāyana (8th century A.D.), a renowned grammarian and the head of the Yāpaniya *Saṅgha,* in his *Strīnirvāna-kevalibhukti-Prakarana* (with his self-composed commentary) has advocated the achievement of salvation to women in the same birth, Ed. Muni Jambuvijaya, Bhavnagar, 1974

2. *Vya Bhā,* 7.15-16;7.407. For more or less a similar statement see *Cullavagga,* 10,1,2, p.374

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In the *Vasudevahindi* we come across a Jain monk condemning Sāmadattā for her treacherous deeds towards her benefactor. Dhammilla, the hero of the tale, questioned the monk, "O revered one, are all women of such a nature as Sāmadattā? There must have been some noble-minded and virtuous women too." Thereupon the monk narrated the story of another woman Dhārinī, who remained virtuous for twelve long years without her husband. It has been argued that if a woman is a progenitor of great men like the *Tīrthaṅkaras* and other Excellent Men, how could she be despised and looked down upon? When Ariṣṭanemi made up his mind to renounce the worldly pleasures and join the ascetic order, his parents tried to dissuade him from his resolve of becoming a monk. They cited examples of Ṛṣabha and other *Tīrthaṅkaras* who enjoyed a married life, raised children, gave charity to poor, ruled over the earth for the welfare of the subjects, and then at last, in their ripe age, relinquish the world.[1] That indicates that the Jains could not simply overlook the important role played by women in our social structure. It is true that the ascetic philosophy could not afford to favour women, as in that case it would have been difficult for monks to stick to their vows of celibacy. Here we are going to have narratives of female ascetics who are said to have succeeded in achieving their goal of *nirvāna.*

1. The Female Ascetic Draupadī

Draupadī was daughter of king Drupada of Kampilyapura[2] by his wife Cūḷanī.[3] When she became of marriagable age, her father convened a *svayaṃvara* (self-choice) marriage for her. The festival was attended by numerous kings, princes and distinguished personalities arriving from far off places. They were received with great pomp and rejoicing and arrangements were made for their entertainment. Then with the beat of drum the commencement of the ceremony was proclaimed, requesting the guests to assemble in the *svayaṃvara*-hall, especially built for the purpose on the bank of the Gangā. It was cleaned and sprinkled with perfumed water and was odorous with flowers of various colours, black alowood, olibanum and other fragrant substances. The seats were arranged for the visitors, marked with their names. All were waiting for princess Draupadi to arrive. In the meantime the princess was given bath, she performed lustratory rites, wore festive clean garments, paid homage to the deity by offering *pūjā.* After that she was gayly dressed and adorned with ornaments. Then accompanied by her maid-servants, riding in a beautiful chariot, she stepped into the hall. She was holding a pretty charming garland, made of fragrant flowers, emitting excellent smell. She was moving about in the hall in the company of her play-nurse,[4] holding a bright mirror in her hand. The play-nurse was pointing out with her right hand the family, the valour, the *gotra,* the power, the beauty, the learning, the grandeur, the youth and the character of kings and princes who were present there and whose refleaction was cast in the mirror. All of them were enamoured of princes' charm and beauty, each jealous of the other, and every single individual hoped to win her. At last she

1. See Jagdishchandra Jain, *Prakrit Narrative Lit.,* pp.115ff
2. Kampil in farrukhabad district in Uttar Pradesh. Makandī in Jinasena's *Harivaṃśa purāṇa,* 45.121
3. Bhogavatī in Jinasena's *Harivaṃśapurāna, ibid*
4. In the *Mahābhārata,* Dhṛṣṭadyumna, the brother of Draupadī, accompanied her.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

arrived to the place where the five Pāṇḍava brothers were seated and put the garland around their neck and chose them as their husbands.[1]

It seems the idea of polyandrous marriage was not appreciated by Jains, like Brāhmaṇas. They made Draupadī herself responsible for such an unsanctified marriage which resulted of her impious deeds in previous life. It has been stated that in her previous birth of Nāgasirī, a Brāhmaṇa woman, she had offered poisonous food to a monk, Dharmaruci. Noticing that numerous ants were dying after tasting that food, the monk himself swallowed the food and preferred to die. Nāgasirī was stricken and was driven out of the house. In her following birth she was reborn as a merchant's daughter, named Sukumāliyā. She got married, but her husband unable to bear the touch of her body, deserted her. She became a nun and started practising penance. Once when she was roaming about as a nun, she happened to see a courtesan, attended by her five wooers, one was making her sit on his lap, another holding an umbrella over her, one was dressing her with a crown of flowers, another was busy in decorating her feet with red-dye and another was waving the fly-whisks over her. On seeing this the nun was greatly excited and she claimed the reward of the penitential acts *(nidāna)* in her following birth. As a result of this *nidāna* she was born as Draupadī.[2]

2. The Female Ascetic Poṭṭilā

In the town of Teyalipura there lived a king named Kanakaratha. Teyaliputra was his minister; he was well-versed in four types of political wisdom, i.e. conciliation, bribery, punishment and discord. One day while he was going out for horse-riding, he happened to see a beautiful daughter of a goldsmith. He felt enamoured of her beauty and thought of marrying her. The minister approached the goldsmith and told him what he had thought about. He inquired about the price he had to pay for marrying his daughter. The goldsmith was happy to know the minster's offer. He told him that it was more than enough that a minister wanted to marry his daughter therefore he need not worry about the payment.

In course of time, Poṭṭilā was given a bath and richly dressed and adorned. She was made to sit in a palanquin and the goldsmith, accompanied by his friends and relatives reached the house of the minister. There the bride and the bridegroom were made to sit on a board, they

---

1. It seems Jinasena does not approve Draupadī's marriage with five persons. He advocates that she was married only to Arjuna; she was considered a daughter-in-law of Yudhiṣṭhira and Bhīma and Nakula and Sahadeva considered her to be their mother (45.150). His explanation is that when Drupadī was putting garland around Arjuna's neck, blown away by the force of wind, it fell on the body of his four brothers, therefore she was, in fact, married only to one man and not to four (45.135-36). In the *Mahābhārata,* Arjuna is said to have declared in the presence of his mother and brothers that though he had won Draupadī for himself alone, but in accordance with the ancient custom of the family, she must become the wife of all five brothers. Later on to justify the marriage to five husbands, various legends were invented: (i) A maiden who could not obtain a husband, cried five times 'give me a husband'. God Śiva granted her request promising her five husbands in a future birth. This maiden was reborn as Draupadī; (ii) Pāndavas when coming home announced to their mother that they had brought 'the alms', which they had collected while gone for begging. The mother replied, 'enjoy it altogether'; (iii) Indra, as a punishment for having offended Śiva, is reborn on earth in five parts and an incarnation of Lakṣmī is destined to be his wife. See Winternitz, *History of Indian Lit.,* I 337n

2. The Jain version of Draupadī's story is a corruption of *Mahābhārata* legend of Draupadī's marriage with five Pāṇḍavas, Winternitz, *History of Indian Lit.* II,448

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

were given a bath by white and yellow water pitchers, oblation was offered to the fire and the wedding ceremony was performed with great rejoicing.

After marriage both passed their time in enjoying worldly pleasures. After some time as the luck would have it, Poṭṭilā lost her husband's love and her husband started hating her and did not even like to hear her name. Poṭṭilā was worried and greatly upset. She spent her time in giving charity to mendicants and ascetics while performing religious duties.

One day a nun, named Suvratā arrived in her house for bigging alms. Poṭṭilā welcomed her and after giving her alms, talked to her about her husband's displeasure. She bowed to the nun submitting that as learned and experienced she was, she might be able to advise her in the matter. She continued that she would be obliged to her if the revered nun suggested some charm, incantation, powder, medicine or application so that she could regain her husband's love. On hearing this the nun closed her ears with both hands, saying that it was most sinful for her even to listen to such talks.

After some time Poṭṭilā joined the nun's order. In the meantime, king Kanakaratha died and the prince Kanakadhvaja succeeded to the throne. For some time the minister Teyaliputra was in the good books of the king and was consulted in every important state affair. But later, some differences arose between them, as a result of which the minister got scared and said to himself that some day the king might put him to death. The minister came home but nobody showed him any respect. Thereupon he tried to end his life employing various means, but could not succeed. Now, as had been stipulated earlier, his wife Poṭṭilā, who was reborn as a heavenly god, descended from her abode and preached him the teachings of Jina. On hearing those teachings Teyaliputra was enlightened. He joined the ascetic order and in course of time achieved liberation.

3. The Female Ascetic Subhadrā

In the city of Vārānasī there lived a merchant named Bhadra with his wife Subhadrā. As she had no issue she used to brood over and was constantly thinking of those mothers who were blessed with children.

Once a nun arrived in the town and happened to visit Subhadrā's house. After entertaining the nun, Subhadrā asked her if she was in a position to prescribe her some spell, magical incantation, medicine or herb so that she could give birth to a child. The nun preached her religious sermons instead, as a result of which Subhadrā accepted the vows of a Jain laywoman. Later in order to join the ascetic order, she went to her husband and asked his permission. The husband tried to disuade her from her resolve by giving various arguments, but it was of no effect. Ultimately, the friends and relatives were invited for dinner, Subhadrā was given bath, lustratory rites were performed and she was led to nun Suvratā to be initiated.

After Subhadrā became a nun, she became fond of children. She fondled them, nursed them and dressed them nicely. Subhadrā was reprimanded for her behaviour but it was in vain. Subhadrā said to herself, "When she was a householder, she was free to do things and nobody interferred in her work, but now the nuns criticised her and disapproved her actions." With these ideas in her mind, she relinquished the order and returned to the household life.

In course of time she died and was reborn as Somā, the daughter of a Brāhmaṇa. Within few

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

years she gave birth to thirty-two children. She was greatly harassed and tormented by them and thought how nice it would have been if she were sterile. She accepted the vows of a Jain lay-woman. Later she became a nun and achieved the highest end of life by practising austerities.

4. The Female Ascetic Jayantī

In the city of Kauśāmbī there ruled the king Udayana, who was a son of king Śatānika by his queen Mṛgāvatī and the grandson of Sahasrānika. Jayantī, a devotee of Jain monks, was the daughter of Śahasrānika, the sister of Śatānika and the aunt (father's sister) of Udayana. During the era of Mahāvīra, Jayantī gave refuge to Jain monks and Jain devotees, therefore she was known as the first *śayyātarī (sejjātarī).*

Once Mahavira arrived in Kauśāmbī and sojourned in the shrine of Candovatarana. As soon as king Udayana heard the news of Mahāvīra's arrival he was extremely happy and ordered his attendants to clean, to sweep and to sprinkle the city. Jayantī, a devotee of *śramaṇas,* too felt delighted to learn of Mahāvīra's arrival. She immediately approached queen Mṛgāvatī and conveyed the news to her, telling her that even to hear the name of such revered teacher causes happiness, delight and pleasure, not only in this life but also in future lives. Therefore a personal homage must be paid to such a personality, she said Mṛgāvatī too felt joyous and ordered her attendants to prepare for the pilgrimage to Mahāvīra.

Mṛgāvati and Jayanti had their baths, made offering to the house-deity, performed auspicious and expiatory rites, properly dressed and adorned with ornaments, and accompained by other queens and female attendants, set out to pay homage to revered Teacher. They waited upon the *Tirthaṅkara* and after paying due reverence, listened to his religious discourses. Then king Udayana and his mother queen Mṛgāvatī returned home. Jayantī who stayed behind, put her querries to Mahāvīra:

Jayantī: Revered Sir, how does the soul become burdensome?

Teacher: By taking recourse to violence, telling lies, stealing, indulging in sensual activities, possesiveness, anger, egoism, deceit, greed, desire, aversion, quarrel, accusation, pleasure *(rati)* or displeasure *(arati),* etc.

Jayantī: O revered one, sleepiness is good or keeping awake is good?

Teacher: O Jayantī, sleepiness is good for some, whereas keeping awake is also good for others. It is good to sleep for those who are on unrighteous path so that they are unable to inflict pain on others and do not get mixed up with wicked deeds. But it is good to keep awake for those who are on the righteous path. If such persons keep awake and remain vigilant they can be of immense service to others and show righteous path to many.

Jayantī: O revered sir, which is better? Strength of weakness? which has a better quality? Strenuousness or laziness?

Teacher: O Jayantī, it is good to possess strength or strenuousness for those who are morally respectable and virtuous, whereas it is good to be weak and lazy for those who are irreligious and wicked.

After being satisfied with the answers given by Mahāvīra, Jayantī was initiated into Mahāvīra's order and was entrusted to the care of Candanā, the head of the nuns. In course of time, Jayantī practised penance and after cutting asunder the ties of *karmas,* achieved *nirvāṇa.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SECTION FOUR

Narratives of the Devoties of the Ascetics (Samaṇovāsaga—kahāṇagāṇi)

1. The Narrative of Paesi

When the heavenly god Sūriyābha presented himself to pay homage to Mahāvīra, the latter narrated the glory of the god to his pupil Goyama. He told him about his previous life in the birth of king Paesi of Seyaviyā. Paesi's charioteer Citta was well-versed in four types of political wisdom. Once the king sent his minister to king Jitaśatru of Śrāvasti with presents to be delivered to him. At that time the monk Kesi, the desciple of Pārśva, was sojourning in the town. The minister happened to visit him and being inspired by his sermons, invited the monk to visit Seyaviyā.

Paesi, the ruler of Seyaviyā, was harsh and cruęl having no respect for virtuous people. He used to harass his subjects by charging them heavy taxes. When Kesī arrived in Seyaviyā, Citta persuaded the king to visit the monk.

An interesting dialogue is recorded here between the king Paesi and the monk Kesī, the subject of the dialogue being the existence of soul different from body. In the opinion of King Paesi the soul does not exist as a separate entity different from the body. In support of his view, he cited an example of a thief, sentenced to death, whose body was cut off and torn to pieces, but there was no trace of soul anywhere.

The monk Kesī refuted his argument by citing a counter—illustration of a hall which is well-protected from all sides with its doors tightly closed so that there was not the least chance for the air to enter. Now if somebody entered into the hall with a drum and a stick, and after closing the doors tightly, beat the drum, would the sound be heard outside the hall? Yes, it would be heard, though there had been no hole in the hall for the sound to pass out. In the same way, O Paesi, the movement of the soul is free and it is difficult to obstruct it. It passes through the earth, rock or mountain without being hindered. Therefore soul is different from body and is invisible.

Further, explaining the nature of soul, Kesi stated that it remained of the size of the body it dwelt in. Though soul was non-material but at the same time it was subject to contraction and expansion in its mundane state. But king Paesi argued that under those conditions soul would lose weight when transformed from a large body to a smaller one and that process might result in destruction of soul. The monk Kesī explained that soul contained a special quality whereby there was neither gain *(guru)* nor loss *(laghu)* in the inherent nature of a soul when it underwent transformation. This quality of soul is known as *agurulaghu. This is further* illustrated by the example of a piece of cloth, which retains its original form whether it is folded or spread out.

The king Paesi was converted and became a Jain adherent. He started devoting his time in practising meditation and austerity. But his queen did not like that leaving her alone he should devote his time to such things, therefore she poisoned him. But the king who had accepted the vows of a monk, did not cultivate any ill-feeling against his wife. After his death he was reborn as a heavenly god and eventually will attain *nirvāna.*[1]

1. See P.S.Jaini, *ibid,* pp 57-59

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2. The Narrative of Nanda Maṇiyāra

In the city of Rājagṛha there lived a jeweller *(maṇiyāra)* named Nanda. He had accepted the vows of a Jain layman from Mahāvīra. Later, as he fell in a bad company he neglected his religious duties. Once in summer time he had undertaken a fast and was staying in his fasting-hall. At that time he suffered from extreme hunger and thirst which upset him. He thought of constructing a pond for the public use so that the travellers and others could quench their thirst and pause there.

Next morning, he got up and in order to obtain the king's permission for digging the pond approached him with gifts. After obtaining permission, near the Mt. Vaibhāra, at the sight approved by architects, he got a beautiful pond constructed. The pond looked charming with coloured flowers and chattering and chirping of acquatic animals and birds. In order to make it more attractive, he planted a grove of trees in the four corners of the pond. Then a picture - gallery *(cittasabhā)* was constructed on the east, a kitchen-house *(mahaṇasasālā)* on the south, a hospital *(cikitsālaya)* on the west and a barber's shop *(alankāriya-sabhā)* in the north. When the pond was ready various people such as travellers, wayfarers, manual workers, orphans, beggars and mendicants arrived there and reposed themselves. They were also provided with many other facilities. By this charitable deed the jeweller Nanda became known all over and people started talking about his selfless service. Nanda was very happy to hear people talking about his glorious deeds. But this applaud proved to be unfavourable as now he was not able to observe his vows so carefully as before.

After some time Nanda fell ill and suffered from various diseases. When the physicians could not cure him he made a public declaration that whosoever would cure him, would be honoured with as much wealth as he desired. Many tried their luck but no one was able to cure him.

Nanda died and as he was too much attached to his pond, he was reborn there as a frog. At that time Mahāvīra was sojourning in the shrine of Guṇasila in Rājagṛha. The frog is said to have realised his guilt of his previous life so he thought of paying homage to Mahāvira. He was toddling to the shrine slowly and slowly when he got crushed under the hoof of a horse. His entrails were thrown out and he was unable to go further. At this time, with all his strength he tried to recite the sacred formula *'namotthu ṇaṃ arahantāṇaṃ'* (salutations to the *arhantas*) and died. After death the frog was reborn as a heavenly god.[1]

3. The Jain Adherent Ānanda

Ānanda was a rich householder of Vāniyagāma owning huge land and a large number of cattle. He possessed forty million measures of gold buried in a safe place and another forty thousand put out on interest.

Once when venerable ascetic Mahāvīra arrived in the town, Ānanda thought of making a pilgrimage to him. He bathed and adorned himself with fine clothing and ornaments and

1. A similar story is narrated in Samantabhadra's *Ratnakarandaśrāvakācāra* (4.30)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

surrounded by his large retinue, approached Mahāvīra. Mahāvīra interpreted the law to him, and Ānanda having accepted the five gross vows of a layman, became his disciple. After returning home, Ānanda explained the efficaciousness of the vows to his wife and convinced her of their importance. Thus both husband and wife became devotees of the *niggantha* ascetics.

One day he called his son and told him that he was not to consult him any more on worldly matters. Thus deputing his son he devoted himself fully in his religious commitments. He walked into the fasting-hall, swept the ground, spread a bed of grass and sat down to meditate. Thus confirming to the scriptures he observe eleven *pratimās* (stages of renunciation for a layman) and carried out his fast. In course of time, he renounced all food and drink and patiently waited for his end.

Ānanda during the course of his austerities, gained supernatural sight *(avadhijñāna)* with Which he could view an area of five hundred *yojanas* (one *yojana* = 8 or 9 miles) across the earth, as well as upwards to the first heaven and downwards to the first hell. Now it so happened that Goyama, the first *gaṇdhara* (the chief disciple) happened to visit the town. When he heard about the great austerities of Ānanda, he decided to meet him. He proceeded to the place where Ānanda was dwelling. But as Ānanda was feeling extremely weak and ematiated and was unable to go forward towards the venerable *gaṇadhara,* he requested him to come near him. Ānanda told him about his attainment of supernatural sight and that he could view things upto five hundred *yojanas.* But Goyama would not believe such a claim was possible on the part of a householder. He approached venerable Mahavira, who was sojourning in the town then and asked him if the claim of Ānanda was right. Mahāvīra replied in affirmative and Goyama had to undergo expiation for doubting the statement of Ānanda.

Ānanda died after undertaking *sallekhanā* (fast unto death) for one month and was reborn as a heavenly god. Eventually he would achieve salvation.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SECTION FIVE

Naratives of the Schisms (Niṇhava—kahāṇagāṇi)

The Narrative of Gosāla, the Ājīvika—Tīrthaṅkara

Gosāla Maṅkhaliputta was born in the settlement Saravaṇa in the cow-shed of a Brāhmaṇa named Gobahula. Gosāla's father was called maṇkhali, *maṇkha*[1] being a mendicant, who went begging alms from place to place exhibiting the picture which he carried in his hand. Once along with his pregnant wife Bhaddā he came to Saravaṇa settlement and took refuge in the cow-shed where his wife bore him a son. Since the child was born in a cow-shed *(gosālā)* he was named as Gosāla. Gosāla grew up and having learnt the profession of a mankha went about begging. Once he arrived in a weaver's shed in Nālandā where Mahāvīra was sojourning during the monsoon. Gosāla is said to have observed divine phenomena in the presence of Mahāvīra and paid extraordinary respects to him. Gosāla is said to have expressed his desire to become Mahāvīra's desciple and the permission was granted. They travelled together.

Once while travelling they came across the ascetic Vesāyaṇa who was practising penance with upraised arms and upturned face in the glaring sun. Gosāla made fun of him which annoyed the ascetic who hit him with his magic power *(tejoleśyā)*. Thereupon using his own magic power, Mahāvīra saved him. At the request of Gosāla, Mahāvīra explained the way to attain the magic power. Over a period of time arose a difference of opinion between them and Gosāla separated from Mahāvīra. Gosāla is said to have followed Mahāvīra's path of asceticism and after six months acquired the magical power. Gosāla then professed himself as a *Jina* and became the head of the Ājīvika sect. The centre of activities of this sect. was Sāvatthi, where lived Hālāhalā, a potter woman, a lay disciple of the Ājīvikas. Once Gosāla in the twenty-fourth year of his ascetic life, was staying in her shed and at the same time Mahāvīra was also sojourning in the same town. When Mahāvīra heard about Gosāla's account of his life, he denied his claim to *Jina*hood. On hearing this Gosāla was enraged. He called Ānanda, a disciple of Mahāvīra, and told him that if his teacher came in his way, he would destroy him by his miraculous power. Ānanda reported this to Mahāvīra. The latter admitted the validity of Gosāla's claim and said that it was capable of destroying sixteen *janapadas* such as Aṅga, Vaṅga, Magadha etc. but added that it could have no effect on an *Arhat* because his own miraculous power was still greater. In the meantime Gosāla approached Mahāvīra and explained to him in detail his theories and enumerated his own seven births. Thereupon Mahāvīra compared him with a thief who imagines himself to be concealed though he is not, and thinks that he would not be recognised. On hearing these words Gosāla was enraged and he started calling Mahāvīra bad names and he destroyed two of his disciples by his miraculous power when they tried to oppose him. Then he turned to Mahāvīra himself declaring that as a result of his magic power he would die of bilious fever within

1. The *maṅkha* mendicants were of four types: (i) they begged alms by showing pictures *(maṅkha)* without speaking (ii) they did not show pictures but recited verses, (iii) they neither showed pictures nor recited verses but spoke something (iv) they showed pictures and expalined the meaning of the verses they recited, *Bṛh Bhā Pī*, 200

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

six months. Mahāvīra retorted that he would live for another sixteen years, whereas Gosāla's magic power would rebound on him and he would perish within seven days.[1] The rumour of this dispute spread far and wide.

Now Mahāvīra told his followers to worry Gosāla with questions and querries. Thereafter Gosala returned to Hālāhalā's workshop where in the delirium of fever he is said to have given himself up to drinking, singing, dancing, soliciting Hālāhalā and sprinkling himself with cold muddy water. Knowing that his end was approaching he is said to have called his elderly monks and asked them to tie his left foot with a chord[2] and express contempt by spitting thrice into his mouth and then carry him around the city and bury him with every mark of dishonour and publicly proclaiming shame. On the other hand, though Mahāvīra did fall ill due to the effects of Gosāla's magic power, he was able to cure himself by taking medicine. It is stated that Gosala was reborn in heaven and eventually he would attain salvation.[3]

It seems from the Jain and Buddhist records that the Ājīvika was an important sect which exercised considerable influence in Indian social and religious life. It is to be noted that the contents of the *Diṭṭhivāya* recorded in the *Nandī*[4] refer to eighty-eight *Sūtras,* out of which twenty-two are said to have followed the Ājīvika tradition, and twenty-two those of the Terāsiyas, the disciples of Gosāla, according to the commentator Abhayadeva.[5] In the opinion of H. Jacobi, as Mahāvīra and Gosāla practised austerities together for quite some time, the former seems to have been influenced by the doctrines of the latter.[6] Unfortunately, no independent authentic records of Gosāla's doctrines have come forth so far for which we have to depend solely on the Jain and the Buddhist sources. In the Buddhist sources, Gosāla, the leader of the Ājīvikas, is spoken of as the successor of Nanda Vacca and Kisa Samkicca and of his sect Acelaka Paribbajakas, as a long established order of monks. The order of the Ājīvikas is thrice mentioned in the edicts of Emperor Āśoka, whose grandson Daśaratha gave them some cave-dwellings at the Nāgārjuna and Barabar Hills. Varāhamihira (about 550 A.D.) mentions this sect as one of the seven sects of his time.

---

1. As Śvetāmbaras find it difficult to justify this episode, they have classified the whole occurance as an extra-ordinary happening *(āścarya),* an unheard of calamity *(upasarga),* and an event so astonishing that it could happen only once in billion of years. In the Digambara tradition, the ascetic surrounding of a Tīrthaṅkara is dominated by peace and good feelings. In this tradition, in the period of *huṇḍāvasarpiṇī* there may occur certain extraordinary events such as a calamity befalling a *Tīrthaṅkara,* P.S.Jaini, *ibid,* p.25n

2. *Vāme pāde sumbena bandhanti (Bhagavati,* 15; *Dhammakahānuoga,* V, 410). The same expression is used in the case of the mendicant Moriyaputta Tāmali *(Bhagavati,* 3.1; *Dhammakahāṇuoga,* II, 63

3. A.F.R.Hoernle, Appendix to *Uvāsagadasāo,* Vols I & II, Calcutta, 1888-1890

4. *Su* 57

5. *Samavāya* Com., 22, p.38 a. However, according to the *Kalpsūtra* (8, p.228a), the Terāsiyas were the descendants of Mahāgiri. For variants of twenty-two *Sutra* see *Nandisuttaṃ Anuogadārāiṃ,* p.44, notel, Ed. by Muni Punyavijaya.

6. *Jain Sūtra,* XLV, intro., XXIX-XXX: (i) the expression *sabbe sattā sabbe pānā sabbe bhūtā sabbe jīvā* is common to both, (ii) the division of animals into *ekendriya, dvīndriya* etc. is common in Jain texts and also accepted by Gosāla, (iii) the doctrine of six *leśyas* of the Jains clearly resemble Gosāla's division of mankind into six classes, (iv) Similarity of various rules of conduct in both. A.L.Basham has found out a number of Ājīvika terms and concepts common with Jain and Buddhist texts, *History and Doctrine of the Ājīvikas,* pp 240ff. However, it seems both these sects exerted influence on each other, see N.N.Bhattacharya, *Jain Philosophy Historical Outline,* pp 177f.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SECTION SIX

The Miscellaneous Narratives (Paiṇṇaya—kahāṇagāṇi)

1. The Narrative of Peahen Eggs

Once upon a time two young merchant boys of Campā went for an outing. There they noticed in a grove that a peahen had laid eggs. On hearing the footsteps of the young boys, the peahen got frightened and flew away and perched on a tree. When the young boys entered the grove they noticed two beautiful eggs. Facinated by their beauty they brought them home and kept them along with other eggs for hatching.

In order to ensure that a young beautiful peacock would emerge out of the egg, the first boy often shook and moved it to and fro in order to hear its sound inside the shell. Because of this repeated shaking the egg lost its life and no young peacock emerged out of the egg. The second boy was sure that a young peacock would emerge out of the egg so he never moved it or shock it to hear its sound, but let it grow in its natural way. In the course of time, a young beautiful peacock was seem emerging out of the egg. The boy took proper care of the young peacock and later entrusted it to a peacock tamer to teach him dancing. Very soon the peacock became a skilled dancer.

2. The Narratives of Two Turtles

In the depths of a pool in the Gaṅgā at Vārāṇasī there lived two turtles. And in the nearby grove resided two vultures greedy of flesh.

Once two turtles came out of the pool in search of food. At the same time the two vultures were also hovering around the area. They noticed the turtles moving around and pounced on them. Seeing the vultures approaching them both the turtles withdraw themselves under their shell and remained still. Thereupon both the vultures came closer to them and started shaking them and piercing them with their talons. But the turtles remained still and did not move. The vultures tried to hit them a couple of times and became tired, left them and retired to their place.

Now thinking that the vultures had gone away, one of the turtles put its one leg out of its shell. Seeing this, one of the vultures, sitting at a distance, pounced upon the turtle, seized its leg and crushed it with teeth. The vulture also gulped down the other parts of its body.

Then the two vultures went near the other turtle. They moved, shook and turned it to end fro. When nothing came out, seeing the turtle motionless, they left it and went away. Knowing that the vultures have moved far away, the turtle slowly took out his neck and looked around. On seeing no one around it took out its four legs slowly and moved fast to its pool where it lived happily with its kith and kin.

3. The Narrative of Rohiṇi

Once upon a time there lived a merchant named Dhanya in Rājagṛha. He had four sons. One day Dhanya called his four daughters-in-law, named Ujjhikā, Bhogavaiyā, Rakkhiyā and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Rohinī, and entrusted them with five grains of rice each, telling them that he would call for them after some time.

Ujjhiyā (meaning throwing away) threw away the grains thinking that her father-in-law had plenty of them in his store-house. Bhogavaiyā (one who eats) swallowed them. Rakkhiyā (one who preserves) put them carefully in her casket and preserved them. But Rohiṇi (one who cultivates) planted them and reaped a rich harvest year after year.

After lapse of four years Dhanya called his daughters-in-law and asked for the five grains of rice. On hearing from each one of them what they had done with the grains he entrusted Ujjhikā with the job of cleaining and sweeping the house, and Bhogavaiyā with the kitchen work. He rewarded Rakkhiyā by appointing her as the head of the treasury and Rohiṇī was made the mistress of the house.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ERRATA

Page	Line	Read	For
1	10	ākṣepiṇī	ākṣepiṇi
,,	37	morality	marality
,, footnote	1	Puṇṇabhadda	Punnabhadda
2	1	must	most
,,	5	Samaṇaka-hāṇagāṇi	Samaṇaka-hānagāṇi
,,	6	Samaṇovā-saga	Samanovā-saga
,,	13	Pāṭaliputra	Pataliputra
,, footnote	1	Ṭhāṇā	Thāṇā
,, ,,	,,	Antagaḍa	Antagada
3 f.n 2(i)		,,	,,
,, ,,	7	Dhammaka-hāṇuoga	Dhammaka-hānuoga
,, f.n2. (ii)	8	Ariṣṭanemi	Aristanemi
,, ,,	,,	Antagaḍa	Antagada
,, ,,	9	Nāyā	Naya
,, f.n (vi)	16	Guṇasilaya	Gunasilaya
4	4	Abhinandaṇa	Abhinandana
,,	21	disākumārī	disākumarī
,,	22	,,	,,
,,	25	saṃvaṭṭaga	samvattaga
,, f.n 5(a)	8	subhogā	subhoga
,, ,,	,,	bhogamāliṇī	bhogamālinī
,, ,,	9	Ṭhāṇā	Ṭhāṇa
,, ,,	11	subhogā	subhoga
,, f.n 6(b)	13	mehamāliṇī	mehamālinī
5 f.n	2	Vasudevahi-ṇḍi	Vasudevahi-ndi
,, ,,	,,	Cūṇi	Cūrni
,, ,,	4	Ṭhāṇā	Ṭhāṇa
,, ,,	5	meghamāliṇī	meghamālinī
,, ,,	,,	aṇindiyā	anindiyā
,, ,,	7	gāthā	gāṭhā
,, ,,	10	add, p. 119	after 1947
,, ,,	14	Triṣaṣṭiśalākā	Triṣaṣṭisalākā
,, ,,	,,	TṢP	TSP
5 ,,	18	Nandiṣeṇā	nandisenā
,, ,,	,,	nandivard-hanī	nandivarad-hinī
,, ,,	25	Lakṣmīmatī	Laksmīmatī
,, ,,	,,	yaśaprāptā	yasaprāptā
,, ,,	,,	suuthitā	suutthita
,, ,,	28	paumāvaī	paumavaī
,, ,,	,,	eganāsā	eganāsa
,, ,,	,,	ṇavamiyā	ṇavāmiyā
,, ,,	,,	sīyā	sīya
,, ,,	,,	aṭṭhamā	atthamā
,, ,,	,,	TṢP	TSP
,, ,,	31	puṇḍarīkā	puṇḍarikā
,, ,,	,,	ekānaṃśā	ekānamsā
,, ,,	35	puṇḍarīyā	pundarīyā
,, ,,	,,	Ṭhāṇā	Ṭhānā
,, ,,	36	puṇḍarīyā	pundarīyā
,, ,,	,,	TṢP	TSP
,,	39	mahārājā	mahārajā
,,	,,	śraddhā	sraddhā
,,	41	Aṅgavijjā	Angavijja
,,	42	Lakṣmī	Laksmī
,,	43	alambuṣā	alambuśā
,,	,,	Miśrakeśī	miśrakesī
,,	44	aṇāditā	anāditā
,,	,,	airāṇī	airānī,
,,	,,	timiśrakeśī	timiśrakesī
,,	,,	tidhiṇī	tidhinī
,,	,,	citrarathā	citrārathā
,,	46	airāṇī	airāṇi,
,,	47	nymph	numph
6	13	were carried	carried
,,	14	gosisa	gosisa
,,	,,	ekānaṃśā	ekānamśā
,, f.n	19	alambuṣā	alambusā
,, ,,	22	cittakaṇṇagā	cittakannagā
,, ,,	23	seyaṃsā	seyamsā
,, ,,	24	sutrāmaṇi	sutrāmani

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Page	Line	Read	For
,, ,,	25	soyāmaṇi	soyāmani
,, ,,	28	Rūyā	Ruya
,, ,,	,,	rūāsiyā	ruāsiā
,, ,,	,,	surūā	srūā
,, ,,	,,	rūyagāvai	ruyagāvai
,, ,,	30	Rūvā	Rūvā,
,, ,,	34	ruyaṃsā	ruyamsā
,, ,,	35	cāpi	capi
7	1	ghaṭṭitā	ghattitā
,,	,,	pāḍenti	pādenti
,,	2	bhūtikarma.	bhutikarma(
,,	3	rakkhapoṭṭ-aliyā	rakkhapoṭṭaliya
,,	9	Jāṇa	Jāna
,,	19	ābhioga	abhioga
,,	21	kṣīroda	ksiroda
,,	23	Gaṅgā	Gangā
,, f.n	5	Gṛhyasūtras	Grhyasūtras
,, ,,	13	Sūriyābha	Sūriyabha
,, ,,	,,	recurs	reurs
8	8	Śvetāmbaras	Svetāmbaras
,, f.n	2	Śakra's	Sakra's
,, ,,	,,	janmābhiṣeka	janmābhiseka
,, ,,	4	abhiṣeka	abhiseka
,, ,,	5	Śvetāmbara	Svetāmbara
9	22	muṭṭhihiṃ	mutthihiṃ
,, f.n	5	lohakāra	lohakara
,, ,,	8	muṭṭhiloyaṃ	mutthiloyaṃ
,, ,,	10	Pāsa	Pasa
,, ,,	13	Kṛṣṇa	Kṛṣṇa
10	3	kṣīroda	ksīroda
,,	7	southern	sothern
,,	24	Zarthustra	Jarthustra
,,	27	Jambu[2]	Jambu
,,	28	Mahāvīra[3]	Mahavira
11	1	Kathākośa	Kathākosa
,,	26	Pārśva	Parsva
,,	31	Ariṣṭanemi	Aristanemi
,,	32	Yādavs	Yadavas
,,	35	Kṛṣṇa	Krsna
,, f.n	2	Samavāya	Samavaya
,, ,,	,,	Śīlāṅka	Śīlaṅka

Page	Line	Read	For
12	12	Rājīmatī	Rajimati
12	26 27, 29	Mahāvīra	Mahavira
12 f n	2	Also	Aslo
,, ,,	,,	TSP	TSP
,, ,,	6	pāṇāti	pāṇati
13	9	Ariṣṭanemi	Ariṣṭanemi
,,	17	(cāturmāsa),	(cāturmāsa)
,,	19	Baḍ-pahāḍī	Bad-pahadī
,,	23	Vardhamāna	Vardhamana
,,	,,	Tīrthaṅkara	Tīrthaṅkar
,,	27	Kuṇḍapura	Kundapura
,,	29	Ceṭaka	Cetaka
,,	33	Harīṇega	Harīnega
,,	,,	Negamesī	Negamesi
,, f.n	5	eyaṃ	eyam
,, ,,	9	Nāyagāmeṣa	Nāyagāmesa
14	3	jñātṛputra	Jñātrputra
,,	4	Tīrthaṅkaras	Tīrthankaras
,,	16	Ṛgveda	Rgveda
,,	17	Purāṇa	Purāna
,,	17	Nighaṇṭu	Nighantu
,,	18	astrology	astrolgy
,,	19	Sāṃkhya	Samkhya
,,	22	Ācārāṅga	Ācārāṇga
,, f.n	2	Aṅgai Kheḍā	Angai Kheda
,, ,,	5	Astaṃgata	Astamgata
,, ,,	7	Yakṣas	Yaksas
,, ,,	,,	Saṃhitā	Samhitā
,, ,,	8	Śarīra.	Sarira
,, ,,	9	embroy's	embroys
15	1	Yaśodā	Yasodā
,,	,,	Koḍinna	Kodinna
,,	2	stated	state
,,	,,	Piyadaṃsaṇā	Piyadamsaṇa
,,	3	Ācārāṅga	Acārānga
,,	6	saṃvac-charaṃ	samvac-charam
,,	10	Lāḍha	Ladha
,,	32	Aṅga	Anga
,, f.n	4	varisaṃ	varisam
,, ,,	,,	cīvaradhārī	civarādharī

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Page	Line	Read	For
15 ,,		,, jiṇo	jino
,, ,,	8	Lāḍha	Lādha
16	1	Bhagavati	Bhagavati
,,	5	Aṅga	Anga
,,	10	nirvāṇa	nirvāna
,,	18	Maghavam	Maghavam
,,		,, Saṇakkumāra	Sanakkumāra
,,	23	ratna	ratna
17	1	Bharata	Bharta
,,	5	Timisā	Timsā
,,	17	Vaitāḍhya	Vaitādhya
,, f.n	4	TŜP	TSP
18	5	He	he
,,	6	Govindakūṭa	Govindakūta
,,	30	mañjukā	manjukā
,,	35	Guṇāḍhya	Guṇādhya
19	16	Mahākāla	Mahakāla
,,	30	Thāvaccā-putta	Thavāccāputta
,,	32	Śuka	Suka
20	6	Kuśa	Kusa
,,	9	Sāṃkhya	Sāmkhya
,,	18	bilious	billions
,,	28	Hearing	hearing
,, f.n	1	vāntum	vāntum
,, ,,		,, āpātum	āpātum
21	24	sataghnīs[5]	śataghnīs
22	27	sejjā	sejja
23	8	Śreṇika	Śrenika
23 f.n	1	100–102	00–102
24	2	Harikeśa	Harikeśā
,,	20	these	this
,,	33	śānti	sānti
,, f.n	1	Mātaṅga	Mātanga
25	14	vāgaraṇa	vāgarana
,,		,, grammar	grammer
,,		,, saṅkhāṇa	saṅkhāna
,,	15	Saṭṭhitanta	Satthitanta
,,	20	Kayaṅgalā	Kayangalā
,,	22	kañcaṇiyā	kañcaniyā
,,	23	gaṇettiyā	ganettiyā
,,	28	kṣetra	ksetra

Page	Line	Read	For
25	32	vow of	vowed
,, f.n	7	Vedāṅgas	Vedāṅgas
,, ,,		,, Mīmāṃsā	Mīmāmsā
,, ,,		,, Purāṇa	Purāna
26	5	Lavaṇa	Lavana
,,	38	yakṣa	yaksa
27	17	nandiphala	nandiphal,
,,	20	proceeded	proceed
,,	24	Ahicchatrā	Ahicchatra
,,	28	salvation	sālvation
28	11	leaving	living
,,	18	thick	think
,,	19	beheaded	behaded
29 f.n	1	Saṭkhaṇḍā-gama	Saṭkhandāgama
,, ,,	2	guṇasthāna	gunasthāna
,, ,,	3	katham	katham
,, ,,		,, guṇasthāna	gunasthāna
,, ,,	5	Strīnirvāṇa	Strīnirvāna
,, ,,	6	Prakaraṇa	Prakarana
30	1	Vasudeva-hiṇḍi	Vasudevahindi
,,	5	Dhāriṇī	Dhārinī
,,	6	Tīrthaṅkaras	Tīrthaṇkaras
,,	7	Ariṣṭanemi	Aṛiṣṭanemi
,,	11	relinquished	relinquish
,,	16	nirvāṇa	nirvāna
,,	18	Kāmpilya-pura	Kampilyapura
,,		,, Cūrṇi	Cūrnī
,,	29	gaily	gayly
,,	35	princess'	princes'
,, f.n.	2	Farrukhābād	farrukhabad
,, ,,	3	Harivaṃśa-purāṇa	Harivaṃśa-purāna
,,	4	Dhṛṣṭadyu-mna	Dhṛṣṭadyumna
31 f.n	3	Draupadī	Drupadī
,, ,,	10	Pāṇḍavas	Pāndavas
,, ,,	13	I, 337n	I 337n
32	25	Vārāṇasi	Vārānasi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Page	Line	Read	For
33	6	Mṛgāvatī	Mrgāvatī
,,	10	Candova-taraṇa	Candovatarana
,.	16	said.	said
,,	18	Mrgāvatī	Mṛgāvati
,,	,,	Jayantī	Jayanti
,,	35	Strength or	Strength of
,,	,,	Which	which
34	8	Kesī	Kesi
,, f.n	1	*The Jain Path of Purification* 1977	ibid
35	13	mahāṇasa-sālā	mahaṇasasālā
,,	14	alaṅkāriya	alankāriya
,,	33	Vāṇiyagāma	Vāniyagāma
,, f.n	1	Ratnakar-aṇḍa	Ratnakaranda
36	9	observed	observe
,,	13	which	Which
36	15	gaṇadhara	gaṇdhara
37	9	maṅkha	mankha
,, f.n	2	speaking,	speaking
38	12	Gosāḷa	Gosala
,,	22	Saṃkicca	Samkicca
,,	23	Paribbājakas	Paribbajakas
,, f.n	3	area	ascetic
,, ,,	6	sumbeṇa	sumbena
,, ,,	8	Uvāsaga-dasāo	Uvasagadasāo
,, ,,	10	Samavāya	Samavāya a
,, ,,	11	Sūtra	Sutra
,, ,,	,,	note 1	note1
,, ,,	12	pāṇā	Pānā
39	22	withdrew	withdraw
,,	30	and	end
,,	35	Rohiṇī	Rohiṇi
40	1	Rohiṇī	Rohini
,,	5	Rohiṇī	Rohiṇi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-सूची

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
	प्रथम स्कंध	१-६४०	१-१४४
	उत्तम पुरुष कथानक	१-६४०	१-१४४
	मंगलसूत्र	१-४	३
१	**कुलकर**	५-१७	३-४
२	**ऋषभ जिन-चरित्र**	१८-१४१	५-२५
	१ कल्याणक नक्षत्र	१८	५
	२ गर्भोत्पत्ति	१९	५
	३ जन्म-कल्याणक	२०	५
	४ अधोलोकवासी दिशाकुमारीकृत जन्म-महिमा	२१-२५	६-७
	५ ऊर्ध्वलोकवासी दिशाकुमारीकृत जन्म-महिमा	२६-२७	७
	६ रुचकपर्वतवासी दिशाकुमारीकृत जन्म-महिमा	२८-३२	७-८
	७ मध्यमरुचकपर्वतवासी दिशाकुमारीकृत नाभिनालकर्तन	३३	९
	८ दिशाकुमारीकृत माता-पुत्र का मज्जनादि कृत्य	३४-३५	९-१०
	९ देवेन्द्र शक्र का तीर्थंकरके जन्म नगर में गमन	३६-६६	१०-१४
	१० ईशानेन्द्र कृत-जन्म-महिमा	६७-७३	१४-१५
	११ असुरेन्द्र चमर कृत जन्म-महिमा	७४	१५
	असुरेन्द्रबलि आदि कृत जन्म-महिमा	७५-७९	१५
	अच्युत-देवेन्द्र कृत तीर्थकराभिषेक	८०-९६	१६-१७
	ईशानेन्द्रादि कृत तीर्थकराभिषेक	९७-९९	१८
	देवेन्द्र शक्र कृत तीर्थकराभिषेक	१००-१०७	१८-१९
	भ. ऋषभद्वारा लेखनादि कलाओं का उपदेश.	१०८	१९
	भ. ऋषभदेव की प्रव्रज्या	१०९-१११	१९-२०
	भ. ऋषभदेव का अचेलकत्व और उपसर्ग-सहन	११२-११३	२०
	भ. ऋषभदेव का अनगार-स्वरूप	११४	२०-२१
	भ. ऋषभदेव के प्रतिबन्ध का अभाव	११५	२१
	भ. ऋषभदेव का विहार	११६	२१
	भ. ऋषभदेव को केवलज्ञान	११७-११८	२१-२२
	भ. ऋषभदेव का तीर्थ-प्रवर्तन	११९	२२
	भ. ऋषभदेव की गणधरादि संपदा	१२०-१२१	२२
	भ. ऋषभदेव के काल में होने वाले सिद्ध	१२२	२३
	भ. ऋषभदेव के अणगारों का वर्णक	१२३	२३
	अन्तकृत्भूमि	१२४	२३
	भ. ऋषभदेव के संघयणादि, कुमारवासादि और निर्वाण	१२५-१२६	२३
	शक्रादि देवेन्द्र कृत निर्वाण-महिमा	१२७-१४१	२३-२५
३	**मल्लीभगवति–चरित्र**	१४२-२४१	२६-४८
	१ महबल राजा और उसके छ बाल मित्र	१४२-१४५	२६
	२ महबल आदि की प्रव्रज्या	१४६	२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
३	महबल की तप सम्बन्धी माया	१४७	२७
४	तीर्थंकर नामकर्म-उपार्जन के हेतु	१४८	२७
५	महबल आदि का विविध तपाचरण	१४९	२७
६	महबल आदि का पुनर्जन्म	१५०	२७
७	भगवती मल्ली का गर्भ में आगमन	१५१-१५३	२८
८	भ. मल्ली तीर्थंकर का जन्म	१५४-१५७	२८
९	भ. मल्ली द्वारा मोहनघर का निर्माण करवाना	१५८-१६०	२८-२९
१०	प्रतिबुद्धि राजा और पद्मावतीदेवी द्वारा नाग-यज्ञ	१६१-१६५	२९-३०
११	भ. मल्ली के श्री दामगण्ड (पुष्पहार) की प्रशंसा	१६६	३०
१२	भ. मल्ली के रूप की प्रशंसा	१६७	३०
१३	प्रतिबुद्धिराजा के दूत का मिथिला में आगमन	१६८	३०
१४	अर्हन्नक वणिक की समुद्रयात्रा	१६९-१७१	३०-३१
१५	ताल-पिशाचादि के उत्पातों का प्रादुर्भाव	१७२-१७३	३१-३२
१६	अर्हन्नक को पिशाच का उपसर्ग	१७४	३२
१७	अर्हन्नक की धार्मिक दृढता	१७५-१७६	३२-३३
१८	देव का पिशाच रूप-संहरण और स्ववृत्तांत कथन	१७७	३३
१९	अर्हन्नक का मिथिला में आगमन	१७८	३४
२०	अर्हन्नक का चम्पा में आगमन	१७९-१८०	३४
२१	भ. मल्ली के रूप की प्रशंसा	१८१	३४
२२	चन्द्रच्छाय राजा के दूत का मिथिला में आगमन	१८२	३४-३५
२३	रुक्मी राजा	१८३	३५
२४	सुबाहु (कन्या) का स्नान	१८४-१८५	३५
२५	भ. मल्ली के स्नान की प्रशंसा	१८६	३५
२६	चन्द्रच्छाया राजा के दूत का मिथिला-गमन	१८७	३५
२७	शंख राजा	१८८	३६
२८	भ. मल्ली के कुंडल-युगल का संधिविघटन	१८९	३६
२९	सुवर्णकारों को देशनिकाले का दण्ड	१९०	३६
३०	सुवर्णकारों का वाराणसी में आगमन	१९१	३६
३१	भ. मल्ली के रूप की प्रशंसा. शंख राजा के दूत का मिथिला में आगमन	१९२-१९३	३७
३२	अदीन शत्रु राजा	१९४	३७
३३	मल्लदिन्न का चित्रसभा कराना	१९५-१९६	३७
३४	चित्रकार द्वारा भ. मल्ली के समान रूप का चित्रण	१९७-१९९	३८
३५	चित्रकार को देश निष्कासन का दण्ड	२००	३८
३६	चित्रकार का हस्तिनापुर में आगमन	२०१	३८-३९
३७	अदीनशत्रु राजा को भ. मल्ली के चित्र का दर्शन कराना	२०२	३९
३८	अदीनशत्रु राजा के दूत का मिथिला में आगमन	२०३-२०४	३९
३९	जितशत्रु राजा	२०५	३९
४०	चोखा परिव्राजिका	२०६	३९
४१	भ. मल्ली द्वारा चोखा के मत का निरसन	२०७-२०८	३९-४०
४२	चोखा परिव्राजिक का कम्पिलपुर में आगमन	२०९-२१०	४०
४३	चोखा परिव्राजिका कथित कूपमण्डूक का दृष्टान्त	२११	४०-४१
४४	भ. मल्ली के रूप की प्रशंसा	२१२	४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
४५	जितशत्रु राजा का मिथिला में आगमन	२१३	४१
४६	दूत का संदेश निवेदन	२१४	४१
४७	कुम्भराजा द्वारा दूत का असत्कार	२१५	४१
४८	जितशत्रु प्रमुख राजाओं से कुम्भ राजा का युद्ध	२१६-२१८	४१-४२
४९	भ. मल्ली ने चिंता का कारण पूछा	२१९	४२
५०	कुम्भराजा ने चिन्ता का कारण कहा	२२०	४२
५१	भ. मल्ली ने उपाय कहा	२२१	४३
५२	भ. मल्ली ने जितशत्रु प्रमुख राजाओं को बोध दिया	२२२-२२५	४३
५३	जितशत्रु प्रमुख राजाओं को जातिस्मरण ज्ञान	२२६-२२७	४४
५४	भ. मल्ली और जितशत्रु प्रमुख राजाओं का प्रव्रज्या संकल्प	२२८	४४
५५	भ. मल्ली का निष्क्रमण महोत्सव	२२९-२३७	४४-४७
५६	भ. मल्ली को केवलज्ञान	२३८	४७
५७	जितशत्रु प्रमुख राजाओं की प्रव्रज्या	२३९	४७
५८	भ. मल्ली की शिष्य सम्पदा	२४०	४७-४८
५९	भ. मल्ली का निर्वाण	२४१	४८
४	**भ. अरिष्ट नेमि-चरित्र**	**२४२-२५२**	**४८-५०**
१	कल्याणक	२४२	४८
२	गर्भ में आगमन और स्वप्नदर्शन	२४३	४८
३	जन्मादि	२४४	४९
४	प्रव्रज्या	२४५	४९
५	केवलज्ञान	२४६	४९
६	गणधरादि-सम्पदा	२४७-२५०	४९-५०
७	अन्तकृत्भूमि	२५१	५०
८	कुमारवास आदि और निर्वाण	२५२	५०
५	**भ. पार्श्वनाथ-चरित्र**	**२५३-२६६**	**५१-५३**
१	कल्याणक	२५३	५१
२	गर्भ में आगमन	२५४-२५५	५१
३	जन्मादि	२५६	५१
४	प्रव्रज्या	२५७-२५८	५१-५२
५	उपसर्ग-सहन	२५९	५२
६	केवलज्ञान	२६०	५२
७	गणधरादि–सम्पदा	२६१-२६४	५२-५३
८	अन्तकृत भूमी	२६५	५३
९	आगारवासादि और निर्वाण	२६६	५३
६	**भ. महावीर–चरित्र**	**२६७-३७४**	**५४-८८**
१	पूर्वभव में पोट्टिल	२६७	५४
२	कल्याणक	२६८	५४
३	देवानन्दा के गर्भ में आगमन	२६९	५४-५६
४	गर्भ में तीन ज्ञान	२७०	५७
५	गर्भ-साहरण	२७१-२७२	५७-५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
६	जन्मकल्याणक काल	२७३	५९-६४
७	जन्म-काल में देवकृत उद्योत	२७४	६५
८	देवकृत अमृतादि की वर्षा	२७५	६६
९	देवकृत तीर्थंकर जन्माभिषेक	२७६	६६
१०	सिद्धार्थकृत जन्मोत्सव	२७७-२७९	६६-६७
११	वर्द्धमान नामकरण	२८०	६७
१२	बालसंवर्धन	२८१	६७
१३	यौवन	२८२	६७
१४	तीन नाम	२८३	६८
१५	माता-पिता की देवगति	२८४	६८
१६	भ. वर्धमान के स्वजन	२८५	६८
१७	अभिनिष्क्रमण का अभिप्राय और संवत्सरदान	२८६	६८-६९
१८	देवेन्द्र शक्रकृत देवछंदक मज्जनादि और शिविका की रचना	२८७-२९१	६९-७०
१९	अभिनिष्क्रमण	२९२	७०
२०	पंचमुष्टिलोच करना	२९३-२९४	७०-७१
२१	सामायक चारित्र ग्रहण करना	२९५	७१
२२	मनःपर्यवज्ञान की उत्पत्ति	२९६	७२
२३	तेरह मास के अनन्तर अचेलकत्व	२९७	७२
२४	अणगार स्वरूप की प्रशंसा	२९८	७२
२५	प्रतिबंध का अभाव	२९९	७२
२६	भ. महावीर का अभिग्रह	३००	७३
२७	भ. महावीर का विहार	३०१	७३
२८	परीषह-विजय	३०२	७३
२९	दस स्वप्नों का फल	३०३-३०४	७३-७४
३०	स्वप्नफल	३०५	७४-७५
	भगवान का दीर्घ तप	**३०६-३२६**	**७५-७७**
३१	भगवान् की चर्या	३०६-३१३	७५-७६
३२	भगवान् की शय्या	३१४-३१८	७६
३३	भगवान् के परीषह-उपसर्ग	३१९-३२१	७६-७७
३४	भगवान् का चिकित्सा-निषेध	३२२	७७
३५	भगवान् की आहार चर्या	३२३-३२६	७७
३६	केवलज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति	३२७	७८
३७	देवताओं का आगमन	३२८	७८
३९	भवनवासी देवों का आगमन	३२९-३३०	७८-७९
३९	वाणव्यन्तर देवों का आगमन	३३१	७९
४०	ज्योतिष्क देवों का आगमन	३३२	७९
४१	वैमानिक देवों का आगमन	३३३-३३४	७९-८०
४२	अप्सराओं का आगमन	३३५	८०
४३	भ. महावीर का वर्णक	३३६-३३९	८०-८२
४४	भ. महावीर के अन्तेवासी अनेक श्रमण-भगवन्त	३४०-३५१	८२-८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
४५	भ. महावीर ने एक आसन पर बैठे हुए चौपन प्रश्नों के समाधान कहे	३५२	८४
४६	भ. महावीर कृत पर्युषण	३५३	८५
४७	वर्षावास-गणना	३५४	८५
४८	निर्वाण समय देवों का उद्योत करना	३५५-३५८	८५-८६
४९	भ. महावीर की आयुकाल गणना और अन्तिम उपदेश	३५९	८६
५०	गौतमस्वामी को केवल ज्ञान	३६०	८६
५१	गणराजाओं द्वारा कृत उद्योत	३६१	८६
५२	निर्वाण के अनन्तर भस्मराशि-ग्रह और उसका प्रभाव	३६२-३६४	८७
५३	निर्वाण के अनन्तर संयम का दुराराधन	३६५	८७
५४	भ. महावीर की श्रमणादि सम्पदा	३६६-३६९	८७-८८
५५	भ. महावीर के अनुत्तरदेवलोकगामी शिष्य	३७०	८८
५६	भ. महावीर की अन्तकृत भूमी	३७१	८८
५७	भ. महावीर से दीक्षित राजा	३७२	८८
५८	भ. महावीर के तीर्थ में तीर्थंकर-कर्म बांधने वाले	३७३	८८
५९	भ. महावीर के तीर्थ में प्रवचन-निन्हव	३७४	८८
७	**भ. महापद्म-चरित्र**	**३७५-४०४**	**८९-९२**
१	श्रेणिक का नरक गमन	३७५	८९
२	आगामी उत्सर्पिणी में नरक से निकलकर श्रेणिक का कुलकर-गृह में जन्म	३७६	८९
३	महापद्म नामकरण	३७८	८९
४	राज्याभिषेक	३७९-३८०	८९
५	द्वितीय नाम-देवसेन	३८१-३८२	८९
६	तृतीयनाम-विमलवाहन	३८३	९०
७	भ. महापद्म की प्रव्रज्या	३८४	९०
८	उपसर्ग सहन करना	३८५	९०
९	प्रतिबंध का अभाव	३८६	९०
१०	केवल ज्ञान और केवल दर्शन	३८७-३८८	९०-९१
११	भ. महावीर और भ. महापद्म की देशना में साम्य	३८९-४०१	९१-९२
	गणधरादि की समान सम्पद।	४०२	९२
	आयु की समानता	४०३	९२
	अरहन्त महापद्म से आठ राजा दीक्षित होंगे	४०४	९२
८	**तीर्थंकरों का सामान्य (संक्षिप्त) कथन**	**४०५-४९३**	**९२-११३**
१	अढाई द्वीप में अर्हन्तादि वंशों की उत्पत्ति	४०५-४०९	९२
२	अढाई द्वीप में अर्हन्तादि की उत्पत्ति	४१०-४१५	९३
३	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्रों में उत्तम पुरुष	४१६	९३
४	धातकी खण्ड में उत्तम पुरुष	४१७-४१८	९३
५	पुष्करवर द्वीपार्ध में उत्तम पुरुष	४१९-४२०	९३
६	जम्बूद्वीप के महाविदेह में अर्हन्तादि की उत्पत्ति	४२१-४२२	९३-९४
७	जम्बूद्वीप के ऐरवत क्षेत्र में (इस अवसर्पिणी में हुए) तीर्थंकर	४२३	९४
८	जम्बूद्वीप के ऐरवत क्षेत्र में भावी तीर्थंकर	४२४	९४
९	जम्बूद्वीप में होने वाले तीर्थंकर	४२५	९४
१०	जम्बूद्वीप के तीर्थंकरों की उत्कृष्ट संख्या	४२६	९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
११	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में (इसी अवसर्पिणी में हुए) तीर्थंकरों के नाम	४२७	९४
१२	(इस अवसर्पिणी में हुए तीर्थंकरों के) पिता	४२८	९५
१३	(इस अवसर्पिणी में हुए तीर्थंकरों की) मातायें	४२९	९५
१४	(इस अवसर्पिणी में हुए तीर्थंकरों के) पूर्वभव (के नाम)	४३०	९५
१५	पूर्वभव का श्रुतज्ञान	४३१	९५
१६	पूर्वभव की पदवियां	४३२	९५
१७	तीर्थंकरों के वर्ण	४३३	९५
१८	तीर्थंकरों के (देह) की ऊंचाई	४३४	९६-९७
१९	(तीर्थंकरों का) गृहस्थावास (काल)	४३५	९७
२०	(तीर्थंकरों का) कुमारकाल	४३६	९७
२१	(तीर्थंकरों का) गृहवास	४३७	९८
२२	(तीर्थंकरों का) सर्वायु	४३८	९८-९९
२३	भ. चन्द्रप्रभ का छद्मस्थ काल	४३९	९९
२४	कल्याणक	४४०	९९
२५	शिविका और शिवि का वाहक	४४१	१००
२६	दीक्षानगर	४४२	१००
२७	दीक्षाकाल में एक (वस्त्र) दूष्य	४४३	१००
२८	सह दीक्षितों की संख्या	४४४	१०१
२९	दीक्षा के पूर्व किया हुआ तप	४४५	१०१
३०	सर्व प्रथम भिक्षा देने वाले	४४६	१०१
३१	प्रथम भिक्षा का काल	४४७	१०१
३२	चैत्यवृक्ष	४४८	१०१
३३	प्रथम शिष्य	४४९	१०१-१०२
३४	प्रथम शिष्या	४५०	१०२
३५	केवलज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति का काल	४५१	१०२
३६	तीर्थंकरों के अतिशय	४५२-४५३	१०२-१०३
३७	चातुर्यामधर्म (चार महाव्रत) के उपदेशक	४५४	१०३
३८	कृष्णादि भावी तीर्थंकर चातुर्यामधर्म के उपदेशक होंगे	४५५	१०४
३९	आगामी उत्सर्पिणी के तीर्थंकरों के नाम	४५६	१०४
४०	पूर्व भव के नाम	४५७	१०४
४१	तीर्थंकरों के माता-पिता आदि	४५८	१०४
४२	तीर्थंकरों के उपदेश की दुर्गमता एवं सुगमता	४५९	१०४
४३	श्रमण-सम्पदा	४६०	१०५
४४	श्रमणी-सम्पदा	४६१	१०५
४५	श्राविका-सम्पदा	४६२	१०६
४६	लब्धि सम्पन्न-सम्पदा	४६३	१०६
४७	वैक्रिय लब्धि-सम्पन्न-श्रमण-सम्पदा	४६४	१०६
४८	चौदह पूर्वधारी श्रमण-सम्पदा	४६५	१०६-१०७
४९	अवधिज्ञानी श्रमण-सम्पदा	४६६	१०७
५०	मनःपर्यवज्ञानी-सम्पदा	४६७	१०७
५१	तीर्थंकरों की जिन-सम्पदा	४६८	१०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
५२	अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले श्रमणों की सम्पदा	४६९	१०८
५३	तीर्थंकरों का अन्तर काल	४७०	१०८
५४	ऋषभादि तीर्थंकरों से पर्युषण-कल्प-स्थापन-समय-निरूपण	४७१	१०८-११०
५५	गण और गणधर[1]	४७२	११०-१११
५६	भ. महावीर के गणधरों से प्राप्त वाचनावाले श्रमणों की संख्या	४७३	१११
५७	भ. महावीर के गणधरों का गृहवास काल	४७४	१११-११२
५८	मण्डितपुत्र गणधर का श्रमणपर्याय काल	४७५	११२
५९	भ. महावीर के गणधरों का सर्वायु	४७६	११२
६०	राजगृह में भ. महावीर का आगमन	४७७-४७९	११२
६१	इन्द्रभूती गौतम	४८०-४८१	११२-११३
	आश्चर्य (दस)	४९३	११३
९	**भरत चक्रवर्ती-चरित्र**	**४९४-५८५**	**११४-१३८**
१	भरतचक्रवर्ती का वर्णक	४९४	११४
२	राजा का वर्णक (द्वितीय वर्णक)	४९५	११४
३	चक्ररत्न की उत्पत्ति	४९६-४९७	११४-११५
४	चक्ररत्न का अष्टाह्निका महोत्सव	४९८-५०१	११५-११६
५	चक्ररत्न का मागधतीर्थ की ओर प्रयाण	५०२	११६
६	अभिषिक्त-हस्तिरत्न-आरूढ-भरत का चक्ररत्नानुगमन	५०३-५०४	११६-११७
७	मागधतीर्थ में भरत ने अष्टमभक्त पौषध किया	५०५	११७
८	अश्वरथारूढ भरत का लवण समुद्र-स्पर्श	५०६-५०७	११७
९	भरत द्वारा चलाये हुए बाण का मागधतीर्थाधिपति देव के भवन में गिरना	५०८	११७
१०	नामांकित बाण को देखकर मागधतीर्थाधिपति का भरत के सन्मुख आना	५०९-५११	११८
११	भरत के अष्ठम भक्त का पारणा और मागधतीर्थाधिपदेव का प्रसन्न होकर अष्टाह्निक महोत्सव का आदेश देना	५१२	११८
१२	चक्ररत्न का वरदाम तीर्थ की ओर प्रयाण	५१३	११८
१३	भरत का वरदाम तीर्थ की ओर गमन	५१४-५१६	११९-१२०
१४	भरत का प्रभास तीर्थदेव पर विजय प्राप्त करना	५१७	१२०
१५	भरत का सिन्धुदेवीकृत भेंट ग्रहण	५१८-५१९	१२०
१६	भरत का वैताढ्यगिरिकुमार देवकृत भेंट ग्रहण करना	५२०	१२१
१७	भरत का तिमिसगुफाधिप-कृतमालदेव द्वारा अर्पित भेंट ग्रहण करना	५२१	१२१
१८	नौकारूप चर्मरत्न द्वारा ससैन्य सुसेण-सेनापति के साथ भरत का सिन्धु नदी पार करना	५२२-५२३	१२१
१९	सुसेण सेनापति द्वारा सिंहल आदि देशों पर विजय प्राप्त करना	५२४	१२२
२०	विजय प्राप्त कर आये हुए सुसेण सेनापति द्वारा भरत के सन्मुख भेंट अर्पण करना	५२५	१२२
२१	सुसेण सेनापति कृत तिमिसगुफा-द्वार का उद्घाटन	५२६-५२७	१२२
२२	मणिरत्न सहित भरत का तिमिसगुफा-द्वार की ओर प्रयाण	५२८-५२९	१२३
२३	काकिणी रत्न सहित भरत का तिमिसगुफा में प्रवेश	५३०	१२४
२४	तिमिसगुफा के मध्यभाग में उन्मग्न-जलानिमग्न-जला महानदियां	५३१	१२४
२५	उन्मग्न-जला और निमग्न-जला महानदियों में वर्धकी रत्न द्वारा सेतु का निर्माण तथा ससैन्य भरत का (नदियों को) पार करना	५३२	१२४

१ क-पृष्ठ ११३ पर सूत्रांक ४८२ से ४९२ पर्यन्त इसी शीर्षक के अन्तर्गत समझें ।
ख. पृष्ठ १११ पर सूत्रांक ४७३ का सारा मूलपाठ पृष्ठ ११३ पर सूत्रांक ४८४ में आ गया है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
२६	तिमिसगुफा के उत्तर द्वार के कपाटों द्वारा स्वयमेव मार्गदान	५३३	१२४
२७	उत्तरार्ध भरत में सुसेन सेनापति कृत आपात-चिलात-पराजय	५३४-५३७	१२४-१२६
२८	आपात-चिलातों की प्रार्थना से भरत की सेना पर नागकुमार देव कृत महामेघ वर्षा	५३८-५४१	१२६
२९	भरत द्वारा छत्र रत्न से आच्छादन	५४२	१२७
३०	गाथापतिरत्न कृत भरत-सेना की सप्त दिवशीय व्यवस्था	५४३	१२७
३१	हजारों देवों ने नागकुमार को भरत की शरण में जाने के लिए कहा	५४४	१२७
३२	नागकुमार के कहने से चिलात भरत की शरण में गये	५४५-५४८	१२८
३३	क्षुद्र हिमवान् गिरिकुमार देव पर विजय प्राप्त किया	५४९-५५०	१२८-१२९
३४	भरत चक्रवर्ती ने काकिणी रत्न से ऋषभकूट पर्वत के पूर्वी किनारे पर अपना नाम लिखा	५५१	१२९
३५	चक्र का अनुगमन करते हुए भरत का वैताढ्यगिरि के उत्तरापार्श्व की ओर गमन	५५२-५५३	१२९
३६	विद्याधरों के राजा नमि-विनमि ने भरत को स्त्री रत्न आदि समर्पित किये	५५४	१२९
३७	भरत को गंगादेवी ने दो स्वर्ण-सिंहासन समर्पित किये	५५५	१३०
३८	खण्डप्रपातगुफा में नृत्यमालदेव ने भरत को पारितोषिक दिया	५५६	१३०
३९	भरत ने सुसेन सेनापति का सत्कार किया	५५७	१३०
४०	जिस मार्ग से भरत का आगमन हुआ उसी मार्ग से वह वापिस गया	५५८	१३०
४१	नवनिधियों की उत्पत्ति	५५९-५६०	१३०-१३१
४२	विनिता राजधानी की ओर लौटना	५६१-५६८	१३१-१३३
४३	भरतने देवादिका सत्कार किया और उनका विसर्जन किया	५६९	१३३-१३४
४४	भरत का राज्याभिषेक संकल्प	५७०-५७१	१३४
४५	देवों द्वारा अभिषेक मण्डप की रचना	५७२-५७३	१३४-१३५
४६	सिंहासन की रचना	५७४	१३५
४७	भरत ने अभिषेक मण्डप में प्रवेश किया	५७५-५७६	१३५
४८	भरत का महाराज्याभिषेक	५७७	१३५-१३६
४९	नगर में द्वादश वर्षीय महोत्सव की घोषणा	५७८	१३६
५०	प्रासाद प्रवेश	५७९-५८०	१३६
५१	रत्नमहानिधियों का उत्पत्ति स्थान	५८१	१३६
५२	भरत का शासन	५८२	१३७
५३	भरत को आदर्श घर में केवलज्ञान	५८३	१३७
५४	भरत का अष्टापदगमन और वहाँ निर्वाण	५८४-५८५	१३७-१३८
१० चक्रवर्ती-सामान्य		**५८६-६१४**	**१३८-१४१**
१	अढाईद्वीप में चक्रवर्ती-विजय	५८६-५९१	१३८-१३९
२	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में बारह चक्रवर्तियों के और उनके माता-पिता तथा स्त्री रत्नों के नाम	५९२-५९४	१३९
३	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले चक्रवर्तियों के नाम	५९५-५९६	१३९
४	जम्बूद्वीप के ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले चक्रवर्ती आदि की संख्या	५९७	१३९
५	जम्बूद्वीप में चक्रवर्ती आदि	५९८	१३९
६	तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती हुये	५९९	१४०
७	सुभूम और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती नरक में गये	६००	१४०
८	दस चक्रवर्ती मुक्त हुए	६०१-६०२	१४०
९	सगर चक्रवर्ती मुक्त हुआ	६०३	१४०
१०	हरिषेण चक्रवर्ती मुक्त हुआ	६०४	१४०
११	भरतादिके शरीर की ऊँचाई	६०५	१४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१२	चक्रवर्ती का हार	६०६	१४०
१३	चक्रवर्ती के ग्राम-पुर-पट्टण की संख्या	६०७	१४०-१४१
१४	निधि-रत्न	६०८-६०९	१४१
१५	चक्रवर्ती के चौदह रत्न	६१०-६११	१४१
१६	काकिणी रत्न की आकृति	६१२	१४१
१७	जम्बूद्वीप में एकेन्द्रिय रत्नों की संख्या और उनके परिभोग का निरूपण	६१३	१४१
१८	जम्बूद्वीप में पंचेन्द्रिय रत्नों की संख्या और उनके परिभोग का निरूपण	६१४	१४१
११	**बलदेव-वासुदेव सामान्य**	**६१५-६४०**	**१४२-१४४**
१	बलदेव-वासुदेवों के माता-पिता आदि	६१५-६२२	१४२-१४३
२	जम्बूद्वीप में आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले बलदेव-वासुदेव सम्बन्धी विविध प्ररूपण	६२३-६२५	१४३
३	बलदेवों की ऊँचाई और सर्वायु	६२६-६३१	१४३-१४४
४	वासुदेव प्रकीर्णक	६३२-६४०	१४४

—० ० ०—

द्वितीय स्कंध		**१-६५६**	**१-१७५**
	श्रमण-कथानक		
	अध्ययन १-४८		
१	**भ. विमलनाथ के तीर्थ में महब्बल श्रमण**	**१-४९**	**३-११**
१	वाणिज्य ग्राम में भ. महावीर का आगमन	१-२	३
२	सुदर्शन सेठ ने धर्म-श्रवण किया	३-४	३
३	सुदर्शन सेठ ने काल के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे	५-१६	३-५
४	सुदर्शन सेठ ने पल्योपमादि के क्षय और अपचय आदि के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे	१७	५
५	भ. महावीर ने सुदर्शन सेठ के पूर्व भव के वर्णन में महब्बल की कथा कही	१८-१९	५
६	प्रभावतीदेवी ने स्वप्न में सिंह देखा	२०-२१	५-६
७	बलराजा ने स्वप्न-फल कहा	२२-२४	६
८	स्वप्न-लक्षण पाठकों ने स्वप्न-फल कहा	२५-२७	६-७
९	बलराजा ने प्रभावती देवी को पुनः स्वप्न-फल कहा	२८	७
१०	बल राजा को महब्बल के जन्म की सूचना दी	२९-३२	७-८
११	जन्म महोत्सव	३३-३४	८
१२	महब्बल का नामकरण और अन्य संस्कार	३५-३६	८
१३	शिक्षाग्रहण और पाणिग्रहण	३७-४०	८-१०
१४	धर्मघोष अणगार का आगमन	४१	१०
१५	महब्बल ने धर्म-श्रवण किया	४२	१०-११
१६	महब्बल ने प्रव्रज्या ग्रहण करने की इच्छा प्रगट की	४३-४४	११
१७	महब्बल की प्रव्रज्या, देवभव, और सुदर्शन के रूप में जन्म	४५-४७	११
१८	सुदर्शन को जातिस्मरण ज्ञान और प्रव्रज्या ग्रहण	४८-४९	११
२	**भ. मुनिसुव्रत के तीर्थ में कार्तिक शेठ आदि के कथानक**	**५०-६०**	**१२-१३**
१	भ. महावीर के समवसरण में शक्र की नृत्य विधि	५०	१२
२	शक्र का पूर्व-भव के सम्बन्ध में प्रश्न	५१	१२
३	शक्र पूर्वभव में कार्तिक श्रेष्ठी था	५२	१२
४	भ. मुनिसुव्रत का हस्तिनापुर में आगमन	५३	१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
५	कार्तिक श्रेष्ठी का प्रव्रज्या संकल्प	५४-५७	१२-१३
६	एक हजार व्यापारियों के साथ कार्तिक श्रेष्ठी का प्रव्रज्या ग्रहण	५८	१३
७	कार्तिक का शक्र होना और भविष्य में सिद्ध होना	५९-६०	१३
३	**भ. मुनिसुव्रत के तीर्थ में गंगदत्त श्रमण**	**६१-६७**	**१४-१५**
१	गंगदत्त देव के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न	६१-६२	१४
२	हस्तिनापुर में भ. मुनिसुव्रत का आगमन और गंगदत्त का धर्मश्रवण	६३-६४	१४
३	गंगदत्त की प्रव्रज्या और देवत्व	६५-६६	१४-१५
४	गंगदत्त की सिद्धी	६७	१५
४	**भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में चित्त संभूति का कथन**	**६८-७६**	**१५-१६**
१	ब्रह्मदत्त और चित्त का जन्म कथन	६८	१५
२	कम्पिलपुर में चित्तसंभूति का आगमन और पूर्वभव कथन	६९	१५
३	कर्म-फल का चिन्तन	७०	१५
४	ब्रह्मदत्त ने चित्त को भोग भोगने के लिए आमन्त्रित किया	७१	१६
५	चित्तमुनि ने काम भोग की निन्दा की	७२	१६
६	ब्रह्मदत्त ने अपने निदान का वर्णन किया	७३	१६
७	चित्तमुनि ने आर्यकर्म करने का उपदेश दिया	७४	१६
८	ब्रह्मदत्त का नरक निवास	७५	१६
९	चित्त श्रमण की सिद्ध गति	७६	१६
५	**भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में निषढादि श्रमण**	**७७-९७**	**१७-२०**
१	निषढादि बारह श्रमण	७७	१७
२	द्वारिका में श्रीकृष्ण वासुदेव	७८	१७
३	द्वारिका में बलदेव राजा	७९	१७
४	बलदेव की रेवती देवी का पुत्र निषढ कुमार	८०	१७
५	भ. अरिष्टनेमि तीर्थंकर का आगमन और श्रीकृष्ण की पर्युपासना	८१-८२	१८
६	निषढ ने श्रावक धर्म ग्रहण किया	८३	१८
७	वरदत्त अणगार ने निषढ के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा. और भ. अरिष्टनेमि ने पूर्वभव कहा	८४	१८
८	निषढ पूर्वभव में वीरांगद कुमार था	८५	१८
९	सिद्धार्थ आचार्य के उपदेश से विरांगद का प्रव्रज्या ग्रहण करना और ब्रह्मलोक में उत्पन्न होना.	८६-८७	१८-१९
१०	ब्रह्मलोक से च्यवकर निषढ कुमार हुआ	८८-९१	१९
११	निषढ की भ. अरिष्टनेमि के दर्शन की इच्छा	९२	१९
१२	निषढ की इच्छा को जानकर भ. अरिष्टनेमि का आगमन	९३	१९
१३	निषढ की प्रव्रज्या और समाधिमरण	९४-९५	१९
१४	भ. अरिष्टनेमि से वरदत्त ने निषढ की गति के सम्बन्ध में पूछा-भगवान् ने सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न होने का कहा	९६	१९-२०
१५	भ. अरिष्टनेमि ने निषढ के महाविदेह में उत्पन्न होकर सिद्ध होने की कही	९७	२०
६	**भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में गौतम आदि अणगार**	**९८-१०६**	**२०-२१**
१	संग्रहणी गाथा	९८	२०
२	द्वारिका में श्रीकृष्ण वासुदेव	९९-१०१	२०
३	अंधकवृष्णि राजा का पुत्र गौतम कुमार		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
४	भ. अरिष्टनेमि का धर्मोपदेश और गौतम की प्रव्रज्या	१०२	२१
५	शत्रुञ्जय पर्वत पर गौतम की सिद्धी	१०३	२१
६	समुद्रादि	१०४	२१
७	अक्षोभादि कुमार अणगार		
८	संग्रहणी गाथा	१०५-१०६	२१
७	**भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में अणीयस कुमार और अन्य अणगार**	**१०७-११२**	**२२**
१	अणीयसादि अणगारों के नाम	१०७	२२
२	भद्दिलपुर में नाग गाथापति का पुत्र "अणीयस"	१०८-१०९	२२
३	भ. अरिष्टनेमि के समीप अणीयस की प्रव्रज्या और शत्रुञ्जय पर्वत पर सिद्धी	११०	२२
४	अनन्तसेन आदि कुमार अणगार	१११	२२
५	सारण कुमार श्रमण	११२	२२
८	**भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में गजसुकुमार आदि अणगार**	**११३-१५९**	**२३-३३**
१	छह अणगारों का तप संकल्प भ. अरिष्टनेमि की आज्ञा	११३-११४	२३
२	छहों का क्रमशः देवकी के घर में प्रवेश	११५-११८	२३-२४
३	देवकी को एक संघाटक के ही पुनरागमन की शंका	११९	२४
४	देवकी का शंका-समाधान	१२०	२४
५	देवकी के मन में अतिमुक्त कुमार के वचनों में शंका	१२१	२४
६	भ. अरिष्टनेमि ने सुलसा का चरित्र कहकर शंका का समाधान किया	१२२-१२४	२५
७	छ सहोदर अणगार देवकी के ही पुत्र हैं यह जानकर देवकी हर्षित हुई	१२५	२५
८	देवकी के मन में पुत्र के लालन-पालन की अभिलाषा और चिन्ता	१२६	२५
९	श्रीकृष्ण ने चिन्ता का कारण पूछा	१२७	२६
१०	देवकी ने चिन्ता का कारण कहा	१२८	२६
११	श्रीकृष्ण द्वारा देवाराधन और देव ने लघुभ्राता होने के लिये कहा	१२९-१३१	२६
१२	श्रीकृष्ण ने देवकी को अश्वासन दिया	१३२	२६
१३	गजसुकुमार का जन्म	१३३	२६
१४	गजसुकुमार की भार्या करने के लिये सोमिल ब्राह्मण की लड़की को कुमारिकाओं के अन्तःपुर में रखा	१३४-१३६	२७
१५	भ. अरिष्टनेमि ने धर्मदेशना दी.	१३७	२७
१६	गजसुकुमार का प्रव्रज्या संकल्प.	१३८	२७
१७	गजसुकुमार का माता-पिता को निवेदन.	१३९-१४०	२७-२८
१८	देवकी की शोकाकुल दशा.	१४१	२८
१९	देवकी और गजसुकुमार का परिसंवाद	१४२-१४६	२८-२९
२०	गजसुकुमार के प्रति श्रीकृष्ण का राज्य ग्रहण प्रस्ताव.	१४७	२९-३०
२१	गजसुकुमार का एक दिवस का राज्य	१४८	३०
२२	गजसुकुमार की प्रव्रज्या	१४९	३०
२३	गजसुकुमार का महाप्रतिमा स्वीकार करना.	१५०	३०
२४	सोमिलकृत उपसर्ग.	१५१	३१
२५	गजसुकुमार की सिद्धगति.	१५२	३१
२६	श्रीकृष्ण ने वृद्ध की सहायता की.	१५३	३१
२७	श्रीकृष्ण की गजसुकुमार-दर्शनाभिलाषा.	१५४	३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
२८	भ. अरिष्टनेमि ने गजसुकुमार की सिद्धगति कही.	१५५	३१-३२
२९	उपसर्ग श्रवण से श्रीकृष्ण का क्रुद्ध होना.	१५६	३२
३०	उपसर्ग करने वाले ने सहायता ही की है यह जानकर क्रोध शान्त हुआ	१५७	३२
३१	उपसर्ग करने वाले को कृष्ण ने जाना.	१५८	३२-३३
३२	सोमिल की अकाल मृत्यु.	१५९	३३
९	**भ. अरिष्टनेमि तीर्थ में सुमुख आदि कुमार श्रमण**	**१६०-१६१**	**३३**
१०	**जालि आदि श्रमण**	**१६२**	**३४**
११	**भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में थावच्चापुत्र और अन्य श्रमण**	**१६३-२१०**	**३४-४६**
१	द्वारिका में श्रीकृष्ण वासुदेव	१६३	३४
२	गाथापत्नी थावच्चा और उसका पुत्र थावच्चापुत्र	१६४	३५
३	भ. अरिष्टनेमि का समवसरण	१६५	३५
४	श्रीकृष्ण की पर्युपासना	१६६	३५
५	थावच्चापुत्र का प्रव्रज्या-संकल्प	१६७	३६
६	श्रीकृष्ण और थावच्चापुत्र का परिसंवाद	१६८	३६
७	श्रीकृष्ण की योगक्षेम-घोषणा	१६९	३६
८	थावच्चापुत्र का अभिनिष्क्रमण	१७०	३७
९	शिष्यरूपभिक्षा का दान	१७१	३७
१०	थावच्चापुत्र का प्रव्रज्या-ग्रहण	१७२	३७
११	थावच्चापुत्र की अणगार-चर्या	१७३	३७
१२	थावच्चापुत्र का जनपद विहार और सेलगपुर में समवसरण	१७४	३७-३८
१३	सेलगराजा का आगमन	१७५	३८
१४	सेलग का गृहस्थ धर्म स्वीकार करना	१७६	३८
१५	सेलग की श्रमणोपासक चर्या	१७७	३८
१६	सौगंधिका में सुदर्शन श्रेष्ठी	१७८	३८
१७	सौगंधिका में शुक परिव्राजक का आगमन	१७९	३८
१८	शुक परिव्राजक ने शौचमूलक धर्म का उपदेश दिया	१८०	३८
१९	सुदर्शन का शौचमूलक धर्म स्वीकार करना	१८१	३९
२०	शौचमूलक धर्म के सम्बन्ध में थावच्चापुत्र का सुदर्शन से संवाद और चातुर्यामिक धर्म का उपदेश	१८२-१८३	३९
२१	सुदर्शन का विनयमूल धर्म स्वीकार करना	१८४	३९
२२	शुक ने सुदर्शन को प्रतिबोध दिया	१८५-१८६	३९-४०
२३	शुक का थावच्चापुत्र के साथ संवाद	१८७	४०
२४	यात्रादि पदों की विचारणा[१]	—	४०
२५	सरिसवों की भक्ष्याभक्ष्य विचारणा	१८८	४१
२६	कुलथों की भक्ष्याभक्ष्य विचारणा	१८९	४१
२७	माषों की भक्ष्याभक्ष्य विचारणा	१९०	४१
२८	एक अक्षयादि पदविचारणा	१९१	४२
२९	शुक का हजार परिव्राजकों के साथ प्रव्रजित होना	१९२	४२
३०	शुक का जनपद विहार	१९३	४३
३१	थावच्चापुत्र का परिनिर्वाण	१९४	४३

१. सूत्रांक नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
३२	शुक का शैलकपुर में आगमन और सेलक की अभिनिष्क्रमण-अभिलाषा	१९५-१९६	४३
३३	शैलक पुत्र मंडुक का राज्याभिषेक	१९७	४३
३४	शैलक की प्रव्रज्या	१९८	४४
३५	शुक का पुंडरीक पर्वत पर निर्वाण	१९९	४४
३६	शैलक का रोग से आतंकित होना	२००	४४
३७	मंडुक ने शैलक की चिकित्सा करवाई	२०१	४४-४५
३८	शैलक का प्रमत्त विहार	२०२	४५
३९	पंथक अणगार को सेवा के लिए रखकर शैलक शिष्यों का विहार करना	२०३	४५
४०	मद्य से प्रमत्त शैलक का पंथक से चातुर्मासिक क्षमापना	२०४	४५
४१	शैलक का कुपित होना और पंथक की क्षमा याचना	२०५	४५
४२	शैलक का पुनः अभ्युद्यत विहार	२०६	४५
४३	शैलक कथा के उपसंहार से उपदेश	२०७	४६
४४	शैलक के समीप शैलक शिष्यों का पुनः आगमन	२०८	४६
४५	पुंडरीक पर्वत पर शैलकादि सबका निर्वाण	२०९	४६
४६	वृत्तिकार उद्धृत निगमन गाथा	२१०	४६
१२	**रहनेमी श्रमण का राजमती द्वारा उद्धार**	**२११-२१४**	**४७-४८**
१३	**भ. पार्श्वनाथ के तीर्थ में अंगई सुप्रतिष्ठ और पूर्णभद्रादि श्रमण**	**२१५-२२६**	**४९-५०**
१	दस अध्ययनों के नाम	२१५	४९
२	भ. वर्धमान के समवसरण में ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र ने नृत्य किया	२१६	४९
३	ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के पूर्वभव वर्णन में अंगई की कथा	२१७	४९
४	चन्द्र की स्थिति और उसकी महाविदेह में सिद्धी	२१८	४९
५	भ. वर्धमान के समवसरण में सूर्य ने नृत्य किया	२१९	५०
६	सूर्य का पूर्वभव	२२०	५०
७	भ. वर्धमान की परिषद् में पूर्णभद्र देव ने नृत्य किया	२२१	५०
८	पूर्णभद्र देव का पूर्वभव	२२२-२२३	५०
९	भ. वर्धमान के समवसरण में माणिभद्र देव ने नृत्य किया	२२४	५०
१०	माणिभद्र देव का पूर्वभव	२२५	५०
११	दत्तआदि अन्य अणगार	२२६	५०
१४	**जितशत्रु और सुबुद्धि का कथानक**	**२२७-२४६**	**५१-५५**
१	चम्पा नगरी में जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य	२२७	५१
२	परिखा के उदक का वर्णक	२२८	५१
३	जितशत्रु ने पान-भोजन की प्रशंसा की	२२९	५१
४	सुबुद्धि ने पुद्गल का शुभाशुभ परिणमन कहा	२३०	५१
५	जितशत्रु ने परिखोदक की निन्दा की	२३१	५२
६	सुबुद्धि ने पुनः पुद्गल स्वभाव का वर्णन किया	२३२	५२
७	जितशत्रु ने विरोध किया	२३३	५२
८	सुबुद्धि ने जल का शोधन किया	२३४	५२-५३
९	सुबुद्धि ने जल प्रेषित किया	२३५	५३
१०	जितशत्रु ने उदकरत्न की प्रशंसा की	२३६	५३
११	जितशत्रु ने पानी लाने वाले से पूछा	२३७	५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१२	सुबुद्धि ने उत्तर दिया	२३८	५३
१३	जितशत्रु ने जल शोधन करवाया	२३९	५४
१४	जितशत्रु का प्रश्न	२४०	५४
१५	सुबुद्धि का उत्तर	२४१	५४
१६	जितशत्रु का श्रमणोपासक होना	२४२	५४
१७	जितशत्रु और सुबुद्धि की प्रव्रज्या	२४३-२४५	५४-५५
१८	वृत्तिकार उद्धृत निगमन गाथा	२४६	५५
१५	**नमिराजर्षि**	**२४७-२४९**	**५५-५७**
१	मिथिला के राजा नमी और उसका अभिनिष्क्रमण	२४७	५५
२	शक्र के साथ नमिराजर्षि का संवाद	२४८-२४९	५५-५६
१६	**भ. महावीर के तीर्थ में ऋषभदत्त और देवानन्दा का चरित्र**	**२५०-२५९**	**५७-५९**
१	ब्राह्मण कुण्ड ग्राम में ऋषभदत्त ब्राह्मण	२५०	५७
२	ऋषभदत्त की भार्या देवानन्दा[1]	—	५७
३	ऋषभदत्त और देवानंदा की महावीर-दर्शनाभिलाषा[2]	२५१	५७
४	ऋषभदत्त और देवानन्दा का दर्शनार्थ आगमन	२५२	५८
५	पूर्वपुत्र भ. महावीर के दर्शन-स्नेह एवं राग से देवानन्दा के स्तनों में दूध आ गया	२५३	५८
६	देवानन्दा का यह रूप देखकर गौतमस्वामी ने प्रश्न किया और भ. महावीर ने समाधान किया	२५४	५८
७	भ. महावीर ने धर्म कहा	२५५	५९
८	ऋषभदत्त की प्रव्रज्याभिलाषा	२५६	५९
९	भ. महावीर ने ऋषभदत्त को प्रव्रज्या दी	२५७	५९
१०	ऋषभदत्त की सिद्धगति	२५८	५९
११	देवानन्दा की भी प्रव्रज्या और सिद्धगति	२५९	५९
१७	**बालतपस्वी मौर्यपुत्र तामली अणगार**	**२६०-२७५**	**६०-६३**
१	भ. महावीर के समवसरण में ईशान देवेन्द्र ने नृत्य किया	२६०	६०
२	देवद्युति के प्रवेश के सम्बन्ध में प्रश्न और समाधान	२६१	६०
३	ईशान देवेन्द्र का पूर्वभव	२६२	६०
४	मौर्यपुत्र तामली गाथापति और उसकी प्रव्रज्या ग्रहणाभिलाषा	२६३	६०-६१
५	तामली ने प्रणामा प्रव्रज्या ग्रहण की	२६४	६१
६	प्रणामा प्रव्रज्या का विवरण	२६५	६१
७	तामली ने पादोपगमन संलेखनाग्रहण की	२६६	६१-६२
८	बलिचंचा राजधानिवासी असुरकुमार देवों ने इन्द्र होने के लिए प्रार्थना की और तामली का निदान न करना	२६७-२६८	६२
९	तामली का ईशानेन्द्र के रूप में उत्पन्न होना	२६९-२७०	६२
१०	ईशानेन्द्र के रूप में उत्पन्न हुआ जानकर असुर कुमार देवों को रोष आया और तामली के शरीर की हीलना की	२७१	६२-६३
		२७१	६२-६३
११	तामली के शरीर की हीलना जानकर ईशानेन्द्र ने बलिचंचा राजधानी को भस्मीभूत कर दिया	२७२	६३
१२	असुर कुमार देवों ने ईशानेन्द्र से प्रार्थना की और क्षमायाचना की	२७३	६३

१. सूत्रांक देना छूट गया है।

२. सूत्रांक पृष्ठ ५८ पर दिया है; किन्तु इस शीर्षक के नीचे देना उचित था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
	१३ तदनन्तर असुर कुमार ईशानेन्द्र की आज्ञा मानने लगे	२७४	६३
	१४ ईशानेन्द्र की स्थिति और महाविदेह में सिद्धी	२७५	६३
१८	**आर्द्रक का अन्यतीर्थिक के साथ वाद**	**२७६-२८३**	**६४-६६**
	१ भ. महावीर की जीवनचर्या के सम्बन्ध में गोशालक का आक्षेप	२७६	६४
	२ आर्द्रक का उत्तर	—	६४
	३ गोशालक ने कहा-शीतोदग आदिके सेवन में पाप नहीं है	२७७	६४
	४ आर्द्रक का उत्तर	—	६४
	५ वाद करने वालों की परस्पर (एक दूसरे की) निन्दा करते हो। गोशालक का आक्षेप	२७८	६४
	६ आर्द्रक का उत्तर	—	६४
	७ मेधावी पुरुषों के प्रश्नों के भय से महावीर आरामगृह में नहीं ठहरता है। गोशालक का आक्षेप	२७९	६४
	८ आर्द्रक का उत्तर	—	६४
	९ महावीर वणिक जैसा है—गोशालक का आक्षेप[1]	—	६४
	१० आर्द्रक का उत्तर	—	६५
	११ बुद्ध भिक्षुओं की हिंसा-अहिंसा के विषय में शाक्यवादियों का मत	२८०	६५
	१२ आर्द्रक का उत्तर	—	६५
	१३ स्नातकों को भोजन कराने से पुण्यार्जन होता है—यह वेदवादियों का मत है	२८१	६५
	१४ आर्द्रक का उत्तर	—	६५
	१५ सांख्य परिव्राजकों के अव्यक्त पुरुष-सम्बन्धि मन्तव्य	२८२	६५
	१६ आर्द्रक का उत्तर	—	६६
	१७ हस्ति तापसों के अभिप्रायका निरुपण	२८३	६६
	१८ आर्द्रक का उत्तर	—	६६
१९	**भ. महावीर के तीर्थ में अतिमुक्त कुमार श्रमण**	**२८४-२८९**	**६६-६८**
	१ पोलासपुर के राजा का पुत्र अतिमुक्त कुमार	२८४	६६
	२ गौतम की भिक्षाचर्या	२८५	६६
	३ गौतम और अतिमुक्त कुमार का संवाद	२८६	६६-६७
	४ अतिमुक्त कुमार की प्रव्रज्या	२८७	६७
	५ अतिमुक्त कुमार श्रमण की क्रीड़ा	२८८-२८९	६८
२०	**भ. महावीर के तीर्थ में अलक्षराजर्षि**		
	१ अलक्षराजा की प्रव्रज्या	२९०	६९
२१	**भ. महावीर के तीर्थ में मेघकुमार श्रमण**	**२९१-३७६**	**६९-९२**
	१ राजगृह में श्रेणिक राजा	२९२	६९
	२ श्रेणिक-भार्या धारिणी	२९२	६९
	३ धारिणी का स्वप्न-दर्शन	२९३	६९-७०
	४ श्रेणिक को स्वप्न-निवेदन	२९४	७०
	५ श्रेणिक ने स्वप्न की महिमा कही	२९५	७०
	६ धारिणी की स्वप्न-जागरणा	२९६	७०
	७ स्वप्नपाठकों को निमंत्रण दिया	२९७	७०-७१
	८ श्रेणिक ने स्वप्न-फल पूछा	२९८	७१
	९ स्वप्न-फल कथन	२९९	७१

१. सूत्रांक लगाना छूट गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१०	स्वप्नपाठकों का विसर्जन	३००	७१-७२
११	श्रेणिक ने स्वप्न-प्रशंसा की	३०१	७२
१२	धारिणी का दोहद	३०२	७२-७३
१३	धारिणी की चिन्ता	३०३	७३
१४	परिचारिकाओं ने चिन्ता का कारण पूछा	३०४	७३
१५	परिचारिकाओं ने श्रेणिक को कहा	३०५	७३
१६	श्रेणिक ने चिन्ता का कारण पूछा	३०६	७३
१७	धारिणी ने चिन्ता का कारण कहा	३०७	७३-७४
१८	श्रेणिक ने आश्वासन दिया	३०८	७४
१९	अभय कुमार ने श्रेणिक को चिन्ता का कारण पूछा	३०९	७४
२०	श्रेणिक ने चिन्ता का कारण कहा	३१०	७४
२१	अभयकुमार ने आश्वासन दिया	३११	७४
२२	अभयकुमार ने एक देव की आराधना की	३१२	७५
२३	देव का आगमन हुआ	३१३	७५
२४	देव ने अकाल (वर्षाकाल के अभाव में) मेघ की रचना की	३१४	७५-७६
२५	धारणी का दोहद पूर्ण हुआ	३१५-३१६	७६
२६	अभय कुमार ने देव को विदाई दी	३१७	७७
२७	धारिणी की गर्भचर्या	३१८	७७
२८	मेघकुमार का जन्म होने पर बधाई दी	३१९-३२०	७७
२९	मेघकुमार का जन्मोत्सव	३२१	७७
३०	मेघकुमार के नामकरण आदि संस्कार	३२२	७७-७८
३१	मेघकुमार का लालन-पालन	३२३-३२४	७८
३२	मेघकुमार का कला-ग्रहण	३२५-३२६	७८
३३	मेघकुमार का पाणिग्रहण	३२७	७८-७९
३४	प्रीतिदान	३२८	७९
३५	भ. महावीर का समवसरण	३२९	७९
३६	मेघकुमार की जिज्ञासा	३३०	७९
३७	कंचुकी पुरुष द्वारा निवेदन	३३१	७९
३८	मेघकुमार का भ. महावीर के समीप जाना	३३२	७९-८०
३९	धर्मदेशना	३३३	८०
४०	मेघकुमार का प्रव्रज्या ग्रहण करने का संकल्प	३३४	८०
४१	मेघकुमार का माता-पिता को निवेदन	३३५	८०
४२	धारिणी की शोकाकुल दशा	३३६	८०
४३	धारिणी और मेघकुमार का परिसंवाद	३३७-३३८	८०-८२
४४	मेघकुमार का एक दिवस का राज्य	३३९	८२
४५	मेघकुमार के निष्क्रमण प्रायोग्य उपकरण	३४०	८२-८३
४६	काश्यप (नापित) ने मेघकुमार के बालों के अग्रभाग कतर दिये	३४१-३४२	८३
४७	मेघकुमार का अलंकरण किया गया	३४३	८३
४८	मेघकुमार का अभिनिष्क्रमण महोत्सव	३४४-३४६	८३-८४
४९	शिष्य रूप भिक्षा का दान	३४७-३४८	८४-८५
५०	मेघकुमार का प्रव्रज्या-ग्रहण	३४९-३५०	८५
५१	मेघकुमार का मानसिक-संक्लेश	३५१	८५-८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
५२	मेघकुमार का सम्यक् बोध	३५२	८६
५३	भगवान् द्वारा पूर्वभव में हुए सुमेरुप्रभ नामक हाथी के भव का निरूपण	३५३-३५५	८६-८७
५४	भगवान् द्वारा मेरुप्रभ नामक हाथी के भव का निरूपण	३५६-३५७	८७
५५	मेरुप्रभ ने मण्डल का निर्माण किया	३५८	८७-८८
५६	दवाग्नि से भयभीत श्वापदों का और मेरुप्रभ का मण्डल प्रवेश	३५९	८८
५७	मेरुप्रभ का पैर ऊँचा रखना	३६०-३६१	८८-८९
५८	मेघकुमार का भव और उसमें तितिक्षा का उपदेश	३६२	८९
५९	मेघकुमार को जातिस्मरण	३६३	८९
६०	मेघकुमार की पुनः प्रव्रज्या	३६४	८९
६१	मेघकुमार की निर्ग्रन्थ चर्या	३६५	८९
६२	भ. महावीर का राजगृह से बाहर जनपद-विहार	३६६	८९
६३	मेघकुमार-श्रमण की भिक्षु-प्रतिमा-आराधना	३६७	९०
६४	मेघकुमार-श्रमण द्वारा गुणरत्नसंवत्सर तप का आराधन	३६८	९०
६५	मेघकुमार-श्रमण की शारीरिक स्थिति	३६९	९०
६६	मेघकुमार-श्रमण का विपुलगिरि पर्वत पर अनशन	३७०-३७२	९०-९१
६७	मेघकुमार श्रमण का समाधि-मरण	३७३	९१
६८	स्थविरों ने मेघकुमार श्रमण के आचार भाण्ड समर्पित किये	३७४	९१
६९	गौतम का प्रश्न. भगवान का उत्तर	३७५	९२
७०	वृत्तिकार-उद्धृत-निगमन (निष्कर्ष) गाथा	३७६	९२
२२	**भ. महावीर के तीर्थ में मकाई आदि श्रमण**	**३७७-३७९**	**९२**
१	संग्रहणी गाथा	३७७	९२
२	मकाई श्रमण और किंकिम श्रमण	३७८-३७९	९२
२३	**भ. महावीर के तीर्थ में अर्जुनमालाकार**	**३८०-३९३**	**९३-९६**
१	राजगृह में मुद्गर पाणि यक्ष का आयतन	३८०	९३
२	अर्जुन की यक्ष-पर्युपासना	३८१	९३
३	गोष्ठिकों ने अर्जुनमालाकार को बांधा और बन्धुमति भार्या के साथ अनाचार किया	३८२	९३
४	अर्जुन की चिन्ता और उसके शरीर में मुद्गरपाणि यक्ष का प्रवेश	३८३	९४
५	राजगृह में आतंक	३८४	९४
६	भगवान् का समवसरण	३८५	९४
७	सुदर्शन का वन्दनार्थ-गमन	३८६	९४-९५
८	सुदर्शन को अर्जुन कृत उपसर्ग	३८७	९५
९	उपसर्ग-निवारण	३८८	९५
१०	सुदर्शन और अर्जुन ने भगवान् की पर्युपासना की	३८९	९५
११	अर्जुन की प्रव्रज्या	३९०	९६
१२	अर्जुन अणगार की तितिक्षा	३९१-३९२	९६
१३	अर्जुन अणगार की सिद्धगति	३९३	९६
२४	**भ. महावीर के तीर्थ में काश्यपादि श्रमण**	**३९४**	**९७**
२५	**भ. महावीर के तीर्थ में श्रेणिकपुत्र जाली आदि श्रमण**	**३९५-३९८**	**९७-९८**
१	संग्रहणी गाथा	३९५	९७
२	जाली अणगार	३९६-३९७	९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
	३ मयाली आदि श्रमण	३९८	९८
	भ. महावीर के तीर्थ में दीर्घसेन आदि श्रमण[1]	**३९९-४००**	**९८**
	१ संग्रहणीगाथायें[2]	३९९	९८
	२ दीर्घसेन श्रमण[3]	४००	९८
२६	**भ. महावीर के तीर्थ में सार्थवाह पुत्र धन्य अणगार**	**४०१-४१६**	**९८-१०३**
	१ संग्रहणी गाथायें	४०१	९८
	२ धन्य का गृहवास	४०२	९८-९९
	३ धन्य की प्रव्रज्या	४०३-४०४	९९
	४ धन्य की तपश्चर्या	४०५-४०८	९९-१००
	५ धन्य का तपजनित शरीर लावण्य	४०९-४१२	१००-१०२
	६ श्रेणिक ने महान् दुष्कर तप करने वाले के सम्बन्ध में पूछा[4]	४१३	१०२-१०३
	७ भगवान् का उत्तर	४१४	१०३
	८ श्रेणिक ने धन्य अणगार की स्तुति की	४१५	१०३
	९ धन्य अणगार का सर्वार्थ सिद्धगमन और महाविदेह में उत्पत्ति तथा सिद्धगति	४१६	१०३
२७	**भ. महावीर के तीर्थ में सुनक्षत्र आदि श्रमण**	**४१७-४२०**	**१०४**
	१ सुनक्षत्र श्रमण[5]	४१७-४१९	१०४
	२ ऋषिदास आदि की कथानकों का निर्देश	४२०	१०४
२८	**भ. महावीर के तीर्थ में सुबाहुकुमार श्रमण**	**४२१-४३२**	**१०४-१०७**
	१ संग्रहणी गाथा	४२१	१०४
	२ सुबाहुकुमार का जन्म और परिणय	४२२-४२३	१०४-१०५
	३ सुबाहुकुमार का गृहस्थ धर्म स्वीकार करना	४२४	१०५
	४ सुबाहुकुमार के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न	४२५	१०५
	५ सुबाहुकुमार के 'सुमुखभव' का कथानक	४२६	१०५-१०६
	६ अणगार की भिक्षा वेला में पांच दिव्यों का प्रादुर्भाव	४२७	१०६
	७ सुमुख का सुबाहु भव	४२८	१०६
	८ सुबाहुकुमार की प्रव्रज्या	४२९-४३०	१०६-१०७
	९ सुबाहुकुमार के आगामी भव और महाविदेह में सिद्धि	४३१-४३२	१०७
२९	**भ. महावीर के तीर्थ में भद्रनंदी आदि श्रमणों के कथानक**	**४३३-४४१**	**१०७-१०८**
	१ भद्रनंदी 'श्रमण'	४३३	१०७
	२ सुजात 'श्रमण'	४३४	१०७
	३ सुवासव 'श्रमण'	४३५	१०८
	४ जिनदास 'श्रमण'	४३६	१०८
	५ धनपति 'श्रमण'	४३७	१०८

१. अध्ययन का क्रमांक और अध्ययन का शीर्षक लिखना छूट गया है। यहां केवल अध्ययन के शीर्षक का हिन्दी अनुवाद दिया है।

२. मूल 'गाहा' एकवचन है किन्तु गाथायें हैं–इसलिये "गाथायें" बहुवचन दिया है।

३. यहां शीर्षक छूट गया है।

४. यहां शीर्षक में "भगवओ समाहाणं च" अनावश्यक है।

५. शीर्षक छूट गया है

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
६	महबल 'श्रमण'	४३८	१०८
७	भद्रनंदी 'श्रमण'	४३९	१०८
८	महचन्द 'श्रमण'	४४०	१०८
९	वरदत्त 'श्रमण'	४४१	१०८
३० भ. महावीर के तीर्थ में श्रेणिक का पौत्र पद्म श्रमण और महापद्म श्रमण		**४४२-४४५**	**१०८-१०९**
१	संग्रहणीगाथा	४४२	१०८
२	पद्मकुमार का जन्म	४४३	१०८-१०९
३	पद्मकुमार की प्रव्रज्या	—	१०९
४	भ. महावीर के तीर्थ में श्रेणिक के पोते महापद्म आदि श्रमण	४४४-४४५	१०९
३१ भ. महावीर के तीर्थ में हरिकेशबल श्रमण		**४४६-४५५**	**११०-११२**
१	यज्ञवाडे में भिक्षार्थ गमन	४४६	११०
२	हरिकेशी को देखकर ब्राह्मणों को रोस आया	४४७	११०
३	यक्ष ने हरिकेशी की प्रशंसा की	४४८	११०
४	यक्ष का ब्राह्मणों से संवाद	४४९	११०
५	कुमारों ने हरिकेशी को पीटा	४५०	११०
६	भद्रा (राजकुमारी) ने उनको रोका और मुनि की प्रशंसा की	४५१	१११
७	यक्षों ने भी उनको रोका और असुरों ने कुमारों को पीटा	४५२	—
८	भद्रा ने मुनि की पुनः प्रशंसा की	४५३	
९	ब्राह्मणों ने क्षमायाचना की	४५४	१११
१०	मुनि ने यज्ञ स्वरूप का प्ररूपण किया	४५५	१११
३२ भ. महावीर के तीर्थ में अनाथी महा निर्ग्रन्थ		**४५६-४६१**	**१११-११४**
१	श्रेणिक ने मुनि-दर्शन किया	४५६	११२
२	मुनि ने अपना अनाथत्व प्ररूपित किया	४५७	११३
३	अनाथपने को जानकर प्रव्रज्या का संकल्प किया और इससे वेदना का क्षय हुआ	४५८	११३
४	प्रव्रज्याग्रहण करने से सनाथत्व प्राप्त हुआ	४५९	११३
५	कुशीलाचरण निरूपण पूर्वक संयम पालन का उपदेश दिया	४६०	११३-११४
६	श्रेणिक का प्रसन्न होना और क्षमायाचना करना	४६१	११४
३३ भ. महावीर के तीर्थ में समुद्रपालीय का कथानक		**४६२-४६५**	**११४-११५**
१	पालित श्रावक	४६२	११४
२	समुद्र में जन्म और परिणय आदि	४६३	११४-११५
३	वध्य पुरुष के दर्शन से वैराग्य और प्रव्रज्या	४६४	११५
४	परीषह-सहन और सिद्धी	४६५	११५
३४ भ. महावीर के तीर्थ में मृगापुत्र बलश्री श्रमण		**४६६-४७३**	**११५-११८**
१	बलश्री मृगापुत्र	४६६	११५
२	श्रमण को देखकर जातिस्मरण ज्ञान हुआ	४६७	११५
३	मृगापुत्र का प्रव्रज्या-संकल्प और माता-पिता से निवेदन	४६८	११५
४	माता-पिता ने श्रमण जीवन दुष्कर कहा और प्रव्रज्या लेने से रोका	४६९	११६
५	मृगापुत्र ने नरक के दुखों का वर्णन किया और श्रमण जीवन की दुष्करता का निराकरण किया	४७०	११६-११७
६	माता-पिता ने कहा-श्रमण जीवन में चिकित्सा निषिद्ध है	४७१	११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
७	मृगापुत्र का उत्तर	४७२	११७-११८
८	मृगापुत्र की प्रव्रज्या	४७३	११८
३५	**भ. महावीर के तीर्थ में गर्दभाली और संजय राजा**	**४७४-४८१**	**११८-१२०**
१	संजय राजा ने मुनि के समीप मृगवध किया	४७४	११८
२	संजय ने क्षमायाचना की	४७५	११९
३	गर्दभाली मुनि ने उपदेश दिया	४७६	११९
४	मुनि के समीप राजा की प्रव्रज्या	४७७	११९
५	क्षत्रियमुनि के प्रश्न	४७८	११९
६	संजय मुनि ने आत्मकथा कही.	४७९	११९
७	क्षत्रिय मुनि ने अपना पूर्वभव कहा	४८०	११९
८	क्षत्रिय मुनि ने पूर्व प्रव्रजित भरतादिक का निरूपण किया	४८१	१२०
३६	**भ. महावीर के तीर्थ में इषुकार राजा आदि छ श्रमण**	**४८२-४८७**	**१२०-१२२**
१	इषुकार नगर में पुरोहित तथा उसके पुत्रादि	४८२	१२०
२	जातिस्मरण ज्ञान से पुरोहित पुत्रों को विरति, प्रव्रज्या का संकल्प और निवेदन	४८३-४८६	१२०-१२१
३	राजा आदि की प्रव्रज्या	४८७	१२२
३७	**भ. महावीर के तीर्थ में स्कंदक परिव्राजक**	**४८८-५११**	**१२३-१३०**
१	कृतंगला नगरी में भ. महावीर का समोसरण	४८८	१२३
२	श्रावस्ती नगरी में स्कंदक परिव्राजक	४८९	१२३
३	पिंगल निर्ग्रन्थ ने लोकादि के सम्बन्ध में प्रश्न किये	४९०	१२३
४	स्कंदक का उत्तर देने में असामर्थ्य	४९१	१२३
५	अनेकजन कृतंगला नगरी गये	४९२	१२३
६	भ. महावीर के दर्शनार्थ स्कंदक का कृतंगला जाना	४९३	१२३-१२४
७	भ. महावीर ने गौतम को स्कंदक के आगमन की सूचना दी	४९४	१२४
८	गौतम ने स्कंदक का स्वागत किया और स्कंदक ने अपने आने का कारण कहा	४९५	१२४
९	भ. महावीर के ज्ञान के सम्बन्ध में स्कन्दक को आश्चर्य हुआ	४९६	१२४
१०	स्कन्दक की महावीर-पर्युपासना	४९७	१२४-१२५
११	भ. महावीर ने स्कन्दक के मनोगत भाव कहे	४९८	१२५
१२	भ. महावीर ने चार प्रकार से लोक की प्ररूपणा की	४९९	१२५
१३	चार प्रकार से जीव की प्ररूपणा की	५००	१२५
१४	चार प्रकार से सिद्धि की प्ररूपणा की	५०१	१२६
१५	चार प्रकार से सिद्धों की प्ररूपणा की[1]	—	१२६
१६	(अनेक प्रकार से) मरण की प्ररूपणा की	५०२	१२६-१२७
१७	स्कन्दक का धर्म-श्रमण	५०३	१२७
१८	स्कन्दक की प्रव्रज्या	५०४	१२७-१२८
१९	भ. महावीर का जनपद विहार	५०५	१२८
२०	स्कन्दक ने भिक्षु-प्रतिमा ग्रहण की	५०६	१२८
२१	स्कन्दक ने गुणरत्नसंवत्सर तप किया	५०७	१२८-१२९
२२	राजगृह में भ. महावीर का समवसरण और स्कन्दक का समाधिमरण का संकल्प	५०८	१२९
२३	स्कन्दक की संलेखना	५०९	१२९-१३०

१. सूत्रांक देना छूट गया है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
	२४ स्कन्दक के पात्र-वस्त्र ले आना	५१०	१३०
	२५ स्कन्दक का अच्युतकल्प में उपपात और महाविदेह में सिद्धि	५११	१३०
३८	**भ. महावीर के तीर्थ में मोद्गल परिव्राजक**	**५१२-५१८**	**१३१-१३२**
	१ आलभिका नगरी में मोद्गल परिव्राजक	५१२	१३१
	२ मोद्गल का विभंगज्ञान	५१३	१३१
	३ देव-स्थिति के सम्बन्ध में मोद्गल का विभंगज्ञान	५१४	१३१
	४ भ. महावीर का समवसरण और देव-स्थिति के सम्बन्ध में यथार्थ कथन	५१५	१३१
	५ मोद्गल के विभंगज्ञान का पतन और भ. महावीर के समीप गमन	५१६	१३२
	६ मोद्गल की प्रव्रज्या	५१७	१३२
	७ सिद्ध होने वाले के संहनन के सम्बन्ध में गौतम के प्रश्न	५१८	१३२
३९	**भ. महावीर के तीर्थ में शिवराज ऋषि**	**५१९-५३०**	**१३३-१३७**
	१ हस्तिनापुर में शिवराजा	५१९	१३३
	२ शिव का दिशाप्रोक्षिक-तापस-प्रव्रज्या का संकल्प	५२०	१३३
	३ शिवभद्रकुमार का राज्याभिषेक.	५२१	१३३-१३४
	४ शिव की दिशाप्रोक्षिक-तापस-प्रव्रज्या	५२२-५२३	१३४-१३५
	५ शिव का सात द्वीप विषयक विभंगज्ञान	५२४-५२५	१३५
	६ भ. महावीर के समवसरण में शिव के विभंगज्ञान के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर	५२६	१३५-१३६
	७ भ. महावीर द्वारा असंख्य द्वीप-समुद्र की प्ररूपणा	५२७-५२८	१३६
	८ शिव को अपने ज्ञान के सम्बन्ध में शंका और भ. महावीर की पर्युपासना	५२९	१३६-१३७
	९ शिव की प्रव्रज्या और निर्वाणगमन	५३०	१३७
४०	**भ. महावीर के तीर्थ में उदायन राजा का कथानक**	**५३१-५४०**	**१३७-१४०**
	१ चम्पा नगरी में भ. महावीर का समवसरण	५३१	१३७
	२ वीतीभय नगर में उदायन राजा	५३२	१३७-१३८
	३ उदायन की महावीर वन्दनाभिलाषा	५३३	१३८
	४ भ. महावीर ने अभिलाषा जानी	५३४	१३८
	५ वीतीभय नगर में भ. महावीर का समवसरण	५३५	१३८
	६ उदायन का प्रव्रज्या-संकल्प	५३६	१३८
	७ अपने पुत्र अभिजितकुमार को छोड़कर केशीकुमार (भाणेज) का राज्याभिषेक	५३७	१३८-१३९
	८ उदायन की प्रव्रज्या	५३८	१३९
	९ अभिजितकुमार का उदायन के प्रति वैर भाव और कौणिक के समीप गमन	५३९	१३९-१४०
	१० अभिजितकुमार की असुर देवों में उत्पत्ति	५४०	१४०
४१	**भ. महावीर के तीर्थ में जिनपाल जिनरक्षित का उदाहरण**	**५४१-५५९**	**१४०-१४७**
	१ चम्पा में माकंदी सार्थवाह के पुत्र	५४१	१४०
	२ जिनपाल-जिनरक्षित की समुद्र यात्रा	५४२	१४०-१४१
	३ नावा-भंग	५४३	१४१
	४ माकंदी-पुत्र फलक खण्ड से रतन द्वीप पहुंचे	५४४	१४१-१४२
	५ रत्नद्वीप की देवी के साथ भोग भोगे	५४५	१४२
	६ रत्नद्वीप की देवी का लवणसमुद्र को स्वच्छ करने के लिए जाना और वनखंड में रमण करने का आदेश देना	५४६	१४२-१४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
७	रत्नद्वीप की देवी का माकंदी पुत्रों को दृष्टिविष सर्प के समीप जाने का निषेध	५४७	१४३
८	माकंदी पुत्रों का वनखण्ड में गमन	५४८	१४३
९	माकंदी पुत्रों का देवी-निषिद्ध स्थान में गमन	५४९	१४३
१०	वनखण्ड में देवी द्वारा सुलीपर आरोपित पुरुष के दर्शन	५५०	१४३-१४४
११	माकंदी पुत्रों ने संकट-मुक्त होने के संबंध में पूछा	५५१	१४४
१२	माकंदी पुत्रों ने शैलक यक्ष की उपासना की	५५२	१४४
१३	शैलक यक्ष ने रक्षण का उपाय कहा	५५३	१४४
१४	माकंदी-पुत्रों का शैलक यक्ष के पृष्ठ पर आरोहण करना	५५४	१४५
१५	रत्नद्वीप की देवी ने प्रतिकूल उपसर्ग किये	५५५	१४५
१६	रत्नद्वीप की देवी ने अनुकूल उपसर्ग किये	५५६	१४५-१४६
१७	जिनरक्षित की मृत्यु	५५७	१४६
१८	जिनपालित का चम्पागमन	५५८	१४६
१९	जिनपालित की प्रव्रज्या	५५९	१४७
४२	**भ. महावीर के तीर्थ में कालाशवैश्यपुत्र**	**५६०-५६१**	**१४७**
१	कालाशवैश्यपुत्र श्रमण का चातुर्याम धर्म से पंचमहाव्रत धर्म स्वीकार करना	५६०-५६१	१४७
४३	**भ. महावीर के तीर्थ में उदक पेढाल पुत्र**	**५६२-५८७**	**१४८-१५६**
१	नालंदा में लेप नाम का श्रमणोपासक था	५६२	१४८
२	लेप की उदक शाला के समीप गौतम ठहरे हुए थे	५६३	१४८
३	गौतम के समीप प्रश्न के लिए पार्श्वापत्यश्रमण उदकपेढाल पुत्र का आना	५६४	१४८
४	उदकपेढालपुत्र का श्रमणोपासक के प्रत्याख्यान के सम्बन्ध में प्रश्न	५६५	१४८
५	भगवान गौतम का उत्तर	५६६	१४९
६	उदकपेढाल पुत्र का प्रति प्रश्न	५६७	१४९
७	"त्रस भूत प्राणी त्रस हैं, और त्रस प्राणी त्रस हैं. ये दोनों वाक्य समान अर्थ वाले हैं" ऐसा गौतम ने कहा	५६८	१४९
८	उदकपेढाल पुत्र का स्वपक्ष स्थापन	५६९	१४९-१५०
९	भगवान गौतम का प्रत्युत्तर	५७०	१५०
१०	श्रमण का दृष्टान्त	५७१-५७३	१५०-१५१
११	प्रत्याख्यान के विषय दिखाना	५७४-५८२	१५१-१५३
१२	नो भागों में प्रत्याख्यान के विषय-दिखाना	५८३	१५३-१५५
१३	त्रस-स्थावर प्राणियों के व्यवच्छेद (विनाश) का अभाव	५८४	१५५
१४	उपसंहार	५८५-५८६	१५५-१५६
१५	उदक का चार यामधर्म से पंचमहाव्रत धर्म ग्रहण करना.	५८७	१५६
४४	**भ. महावीर के तीर्थ में नन्दीफल का उदाहरण**	**५८८-५९५**	**१५६-१५८**
१	चम्पानगरी में धनसार्थवाह	५८८	१५६
२	धन (सार्थवाह) की अहिच्छत्रा जाने की घोषणा	५८९	१५६-१५७
३	धन (सार्थवाह) ने नन्दीफल वृक्षों के उपभोग का निषेध किया	५९०	१५७-१५८
४	निषेध के अनुसरण का फल	५९१	१५८
५	निषेध का पालन न करने पर मृत्यु	५९२-५९३	१५८
६	धन (सार्थवाह) का अहिच्छत्रा जाना	५९४	१५८
७	धन (सार्थवाह) का प्रव्रजित होना	५९५	१५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
४५	**धनसार्थवाह का कथानक.**	**५९६-६२२**	**१५९-१६४**
१	राजगृह में धन सार्थवाह की पुत्री सुसुमा	५९६	१५९
२	चिलातदासपुत्र ने कुमार कुमारिकाओं को क्रीड़ाकाल में मारा-पीटा	५९७-५९८	१५९
३	चिलात को घर से निकाल दिया	५९९	१५९
४	चिलात की दुर्व्यसनों में प्रवृत्ति	६००	१६०
५	राजगृह के समीप चोरपल्ली और उसमें विजय चोर सेनापति	६०१-६०३	१६०
६	चिलात का चोरपल्ली में गमन और चोर सेनापति विजय ने उसे चोर विद्यायें सिखाई	६०४	१६०
७	चोर सेनापति विजय की मृत्यु	६०५	१६०
८	चिलात का चोर सेनापति होना	६०६	१६०-१६१
९	चिलात का धन सार्थवाह का घर लूटना और सुसुमा का अपहरण करना	६०७-६०९	१६१
१०	नगररक्षकों ने चोरों का निग्रह किया	६१०	१६२
११	चिलात का चोरपल्लि से सुसुमा को लेकर भागना और सुसुमा को मार देना	६११-६१४	१६२
१२	धन सार्थवाह का सुसुमा के लिये क्रन्दन करना	६१५	१६२
१३	उस अटवी में भूख से व्याकुल धन सार्थवाह आदि ने सुसुमा के मांस रक्त का आहार किया	६१६-६२०	१६३
१४	धन सार्थवाह का प्रव्रजित होना	६२१	१६३
१५	अंगवंश के सितंतर राजा दीक्षित हुये	६२२	१६४
४६	**कालोदाई (आदि अनेक अन्यतीर्थियों) के कथानक**	**६२३-६३७**	**१६४-१६६**
१	राजगृह-स्थित कालोदाई आदि का अस्तिकाय के विषय में सन्देह	६२३-६२४	१६४
२	कालोदाई आदि का गौतम के प्रति अस्तिकाय सम्बन्धि शंका का निरूपण	६२५	
३	गौतम ने कालोदाई आदि की शंकाओं का समाधान किया	६२६	१६५
४	कालोदायी के पंचास्तिकाय संबंधी-विविध प्रश्नों के ज्ञातपुत्र-भ. महावीर कृत समाधान	६२७-६२९	१६५
५	कालोदाई का निग्रन्थ प्रव्रज्या ग्रहण और विहरण	६३०	१६५
६	भ. महावीर का जनपद विहार	६३१	१६५
७	कालोदाई के पापकर्म फलविपाक संबंधी और कल्याणकर्म (धर्म) फल विपाक संबंधी प्रश्नों का भ. महावीर ने समाधान किया	६३२-६३३	१६५-१६६
८	कल्याण कर्मों के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर	६३४	१६६
९	कालोदाई के अग्निकाय जलाने और बुझाने से होने वाले कर्मबन्ध संबन्धी प्रश्नों का भ. महावीर ने समाधान किया	६३५	१६६
१०	कालोदाई के अचित्त पुद्गलों के प्रकाश उद्योतादि संबंधी प्रश्नों का (भ. महावीर) ने समाधान किया	६३६	१६६
११	कालोदाई का निर्वाण गमन	६३७	१६६
४७	**पुंडरीक-कंडरीक कथानक**	**६३८-६५०**	**१६७-१७०**
१	महाविदेह में पुण्डरीकिणी नगरी में राजपुत्र पुण्डरीक और कण्डरीक	६३८	१६७
२	महापद्म राजा की प्रव्रज्या और पुण्डरीक का अभिषेक	६३९	१६७
३	कंडरीक की प्रव्रज्या	६४०	१६७
४	कंडरीक की वेदना	६४१	१६८
५	कंडरीक की चिकित्सा	६४२	१६८
६	कंडरीक का प्रमत्त विहार	६४३	१६८
७	पुंडरीक ने (कंडरीक को) प्रतिबोध दिया	६४४	१६८-१६९

१. धनसार्थवाह के कथानक से यह सूत्र सर्वथा भिन्न है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
८	कंडरीक का प्रव्रज्या परित्याग	६४५	१६९
९	पुंडरीक की प्रव्रज्या	६४६	१६९
१०	कंडरीक की मृत्यु	६४७-६४८	१६९-१७०
११	पुंडरीक की आराधना	६४९-६५०	१७०
४८	**भ. महावीर के तीर्थ में स्थविरावली**	**६५१-६५६**	**१७१-१७५**
१	इग्यारह गणधर	६५१	१७१
२	आर्य सुधर्मा के श्रमण-निर्ग्रन्थों की परम्परा	६५२	१७१
३	आर्य सुधर्मा से आर्य जसभद्र पर्यन्त स्थविरावली	६५३	१७१
४	आर्य जसभद्र से संक्षिप्त स्थविरावली	६५४	१७१
५	आर्य जसभद्र से विस्तृत स्थविरावली	६५५	१७२-१७४
६	नन्दीसूत्रान्तर्गत स्थविरावली	६५६	१७५
	तृतीय-स्कंध	**१-२९५**	**१७७-२३९**
	श्रमणियों के कथानक		
	अध्ययन १-१०		
१	**भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में द्रोपदी का कथानक**	**१-१४६**	**१७९-२०७**
१	द्रौपदी के पूर्वभव	१	१७९
२	नागश्री का कथानक	२	१७९
३	नागश्री ने तीक्ष्णरस के तुंबे का व्यंजन बनाया और उसे छिपाकर रखा	३-४	१७९
४	धर्मरुचि को तीक्ष्णरस के तुंबे का व्यञ्जन दिया	५-७	१७९-१८०
५	धर्मरुचि ने तीखे तुम्बे का व्यञ्जन (भूमि पर) डाला और उससे कीडियां मरी	८-९	१८०
६	अहिंसा के लिए धर्मरुचि ने तीखे तुंबे का व्यञ्जन खाया	१०	१८०
७	धर्मरुचि का समाधिमरण	११	१८०-१८१
८	साधुओं ने धर्मरुचि की खोज की	१२	१८१
९	साधुओं ने धर्मरुचि का समाधि-मरण कहा	१३	१८१
१०	धर्मरुचि का अनुत्तर देवरूप में उपपात और नागसिरी की निन्दा	१४-१५	१८१
११	नागसिरी को घर से निकालना	१६-१७	१८१-१८२
१२	नागसिरी का भवभ्रमण	१८-१९	१८२
१३	नागसिरी का सुकुमालिका का भव	२०	१८२
१४	सुकुमालिका का सागर के साथ विवाह	२१-२६	१८२-१८३
१५	सागर का पलायन	२७-३०	१८३-१८४
१६	सुकुमालिका की चिन्ता	३१-३२	१८४
१७	सागरदत्त ने जिनदत्त को उपालम्भ दिया	३३	१८४
१८	समझाने पर भी सागर ने सुकुमालिका के साथ रहना नहीं चाहा	३४	१८५
१९	सुकुमालिका का गरीब के साथ पुनर्विवाह	३५-३८	१८५
२०	गरीब भी भाग गया	३९-४१	१८५-१८६
२१	सुकुमालीका को पुनः चिन्ता	४२-४३	१८६
२२	सुकुमालीका का दानशाला. निर्माण	४४	१८६
२३	आर्याओंका संघाटक भिक्षा के लिए सागरदत्त के घर आया	४५	१८६-१८७
२४	सुकुमालिका ने सागर के प्रसन्न होने के उपाय पूछा	४६	१८७
२५	आर्याओं ने धर्मोपदेश दिया	४७	१८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
२६	सुकुमालिका का श्रमणोपासिका होना	४८	१८७
२७	सुकुमालिका का प्रव्रज्या स्वीकार करना	४९	१८७-१८८
२८	सुकुमालिका का चम्पा नगरी के बाहर आतापना लेना	५०	१८८
२९	सुकुमालिका ने गणिका के भोगमय जीवन को देखकर नियाणा किया	५१-५२	१८८
३०	सुकुमालिका का बाकुशिक (सदोष) निर्ग्रन्थित्व	५३-५४	१८८-१८९
३१	सुकुमालिका का पृथक् विहार और देवलोक में उपपात	५५-५६	१८९
३२	द्रौपदी-भव के कथानक में द्रौपदी का तारुण्य भाव	५७-५८	१८९
३३	द्रुपद राजा ने द्रौपदी के स्वयम्वर का संकल्प किया	५९	१८९
३४	द्वारिका को दूत भेजा	६०-६१	१९०
३५	श्रीकृष्ण का प्रस्थान	६२-६३	१९१
३६	हस्तिनापुर को दूत भेजा	६४-६५	१९१
३७	चम्पानगरी को दूत भेजा	६६	१९१
३८	हजारों राजाओं का प्रस्थान	६७	१९१-१९२
३९	द्रुपद राजा ने वासुदेव आदि का सत्कार किया	६८-६९	१९२
४०	द्रौपदी का स्वयम्वर	७०-७६	१९२-१९३
४१	द्रौपदी का पाण्डवों को वरण करना	७७	१९३-१९४
४२	पाणि-ग्रहण	७८	१९४
४३	पण्डु राजा ने वासुदेव आदि को निमन्त्रण दिया	७९-८०	१९४
४४	पण्डु राजा ने वासुदेव आदि का सत्कार किया	८१-८२	१९४
४५	कल्याण कारक उत्सव किया	८३	१९४-१५
४६	नारद का आगमन	८४-८५	१८५
४७	द्रौपदी ने नारद का अनादर किया	८६	१९५
४८	नारद का अपरकंका जाना और पद्मनाभ राजा से मिलना	८७-८८	१९५-१९६
४९	पद्मनाभ का अपने अन्तःपुर के सम्बन्ध में गर्व	८९	१९६
५०	कूपदर्दुर का दृष्टान्त कहकर नारद ने द्रौपदी के रूप की प्रशंसा की	९०-९१	१९६
५१	पद्मनाभ के लिये द्रौपदी का देवता ने अपहरण किया	९२-९४	१९६-१९७
५२	द्रौपदी को चिन्ता	९५	१९७
५३	पद्मनाभ ने आश्वासन दिया	९६-९७	१९७
५४	युधिष्ठिर ने पण्डुराजा को द्रौपदी के अपहरण की सूचना दी	९८	१९७
५५	पण्डुराजा ने कुन्ती को श्रीकृष्ण के पास भेजा और द्रौपदी अन्वेषण के लिए कहा	९९-१०१	१९८
५६	श्रीकृष्ण का द्रौपदी की गवेषणा के लिये आदेश	१०२	१९८
५७	नारद से द्रौपदी का वृत्तान्त मिलना	१०३	१९९
५८	पाण्डव सहित श्रीकृष्ण का द्रौपदी को लाने के लिये धातकी खण्ड की ओर प्रयाण	१०४	१९९
५९	श्रीकृष्ण का देव आराधन	१०५	१९९
६०	श्रीकृष्ण की आज्ञा से सुस्थित देव ने लवण समुद्र के मध्य में मार्ग बनाया	१०६-१०७	१९९-२००
६१	पद्मनाभ के समीप श्रीकृष्ण ने दूत भेजा	१०८-१०९	२००
६२	पद्मनाभ ने दूत का अपमान किया	११०	२००
६३	दूत का श्रीकृष्ण के समीप आना	१११	२००
६४	पद्मनाभ का पाण्डवों से युद्ध	११२-११३	२०१
६५	पाण्डवों का पराजय	११४	२०१
६६	श्रीकृष्ण ने पराजय कारण कहा और युद्ध किया	११५-११७	२०१-२०२
६७	पद्मनाभ का पलायन	११८	२०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
६८	श्रीकृष्ण का नृसिंह रूप बनाना	११९	२०२
६९	पद्मनाभ का श्रीकृष्ण का शरण स्वीकार करना	१२०-१२१	२०२
७०	द्रौपदी सहित पाण्डव और श्रीकृष्ण का आगमन	१२२	२०२
७१	धातकी खण्ड के कपिल वासुदेव और भरत क्षेत्र के श्रीकृष्ण वासुदेव का शंख-शब्द से मिलना	१२३-१२७	२०२-२०३
७२	कपिल ने पद्मनाभ को निर्वासित कर दिया	१२८	२०३
७३	अपरिक्षणीय श्रीकृष्ण की पाण्डवों ने परीक्षा की	१२९-१३२	२०४
७४	श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को निर्वासित कर दिया	१३३-१३७	२०४-२०५
७५	पाण्डु-मथुरा बसाना	१३८	२०५
७६	पण्डुसेन का जन्म	१३९	२०५
७७	पाण्डव और द्रौपदी की प्रव्रज्या	१४०-१४१	२०५-२०६
७८	भ. अरिष्टनेमि का निर्वाण	१४२-१४३	२०६
७९	पाण्डवों का निर्वाण	१४४	२०७
८०	द्रौपदी की देवगति	१४५-१४६	२०७
२	**भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में पद्मावती आदि श्रमणियों के कथानक**	**१४७-१६०**	**२०८-२११**
१	संग्रहणी-गाथा	१४७	२०८
२	श्रीकृष्ण वासुदेव की देवी पद्मावती		२०८
३	अर्हन्त अरिष्टनेमि ने चारयाम धर्म की देशना दी	१४८	२०८
४	श्रीकृष्ण ने द्वारिका के विनाश का कारण पूछा	१४९	२०८
५	श्रीकृष्ण को द्वारिका के विनाश से चिन्ता	१५०	२०८
६	निदान करने से सभी वासुदेव प्रव्रजित नहीं होते ऐसा स्पष्टीकरण	१५१	२०८-२०९
७	श्री कृष्ण का अनन्तर भव में पाताल लोक में निवास	१५२	२०९
८	आगामी उत्सर्पिणी में श्रीकृष्ण का अमम भव में तीर्थंकर पद	१५३	२०९
९	श्रीकृष्ण ने अन्य के प्रव्रज्या ग्रहण में सहाय की घोषणा	१५४	२०९
१०	पद्मावती देवी का प्रव्रज्या संकल्प	१५५	२०९-२१०
११	पद्मावती की प्रव्रज्या	१५६-१५७	२१०
१२	पद्मावती की सिद्धगति	१५८	२१०
१३	गोरी प्रभृति के कथानक संक्षेप	१५९	२१०-२११
१४	मूलसिरि-मूलदत्ता के कथानक	१६०	२११
३	**पोट्टिला का कथानक**	**१६१-१९३**	**२११-२१८**
१	तेतलीपुर में तेतलीपुत्र अमात्य	१६१	२११
२	स्वर्णकार की पुत्री पोट्टिला	१६२	२११
३	तेतलीपुत्र की पोट्टिला में आसक्ति	१६३	२१२
४	पोट्टिला का वरण	१६४-१६६	२१२
५	पोट्टिला का पाणि-ग्रहण	१६७	२१२
६	कनकरथ राजा की राज्यासक्ति और पुत्र का अंग-छेदन	१६८	२१२
७	पद्मावती ने पुत्र की रक्षा के लिए तेतली पुत्र की स्वीकृति	१६९	२१३
८	पद्मावती का पुत्र और पोट्टिला की पुत्री का जन्म के बाद परस्पर परावर्तन	१७०	२१३
९	पुत्री का मृतक कार्य	१७१	२१३
१०	अमात्य-पुत्र का जन्मोत्सव और कनकध्वज नामकरण	१७२	२१४
११	अमात्य की पोट्टिला से विरक्ति	१७३	२१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१२	पोट्टिला का दानशाला चालु करना	१७४	२१४
१३	आर्या-संघाटक का भिक्षा के लिए आगमन	१७५	२१४
१४	पोट्टिला ने अमात्य के प्रसन्न होने का उपाय पूछा	१७६	२१४
१५	आर्या संघाटक ने धर्मोपदेश दिया	१७७	२१४-२१५
१६	पोट्टिला ने श्राविका-धर्म ग्रहण किया	१७८	२१५
१७	पोट्टिला का प्रव्रज्या-ग्रहण संकल्प	१७९	२१५
१८	तेतलीपुत्र को धर्म का बोध कराने के लिये वचन बद्ध पोट्टिला का प्रव्रज्या ग्रहण और देवलोक में उपपात	१८०-१८१	२१५
१९	कनकरथ की मृत्यु	१८२	२१५-२१६
२०	कनकध्वज का राज्याभिषेक	१८३	२१६
२१	तेतली-पुत्र का सम्मान	१८४	२१६
२२	तेतली-पुत्र को धर्म-बोध कराने के लिए पोट्टिल देव कृत उपाय	१८५-१८६	२१६-२१७
२३	तेतली-पुत्र की मरण चेष्टा का विफलीकरण	१८७	२१७
२४	तेतली-पुत्र को विस्मय	१८८	२१७-२१८
२५	पोट्टिलदेव का संवाद	१८९	२१८
२६	जातिस्मरण के अनन्तर तेतली-पुत्र का प्रव्रज्या-ग्रहण	१९०	२१८
२७	तेतली-पुत्र अणगार को केवलज्ञान	१९१	२१८
२८	कनकध्वज का श्रावक धर्म-ग्रहण करना.	१९२	२१८
२९	तेतली-पुत्र केवली की सिद्धि	१९३	२१८
४	**भ. पार्श्वनाथ के तीर्थ में काली आदि श्रमणियों के कथानक**	**१९४-२०८**	**२१९-२२२**
१	धर्मकथा के दस वर्ग	१९४-१९५	२१९
२	चमर चंचा में काली देवी	१९६	२१९
३	भ. महावीर के समीप काली देवी की नृत्य-विधि	१९७-१९८	२१९-२२०
४	गौतम ने काली देवी के पूर्वभव की पृच्छा की	१९९	२२०
५	काली देवी का पूर्वभव में भी काली नाम था	२००	२२०
६	काली ने भ. पार्श्वनाथ के दर्शन किये और धर्म-श्रवण किया	२०१-२०२	२२०
७	काली का प्रव्रज्या-संकल्प	२०३	२२०-२२१
८	काली की प्रव्रज्या	२०४	२२१-२२२
९	काली का बाकुशिक चारित्र	२०५	२२२
१०	काली का पृथक् विहार	२०६	२२२
११	काली की मृत्यु और देवी होना	२०७	२२२
१२	काली देवी की स्थिति और सिद्धि	२०८	२२२
५	**भ. पार्श्वनाथ के तीर्थ में राई आदि श्रमणियों के कथानक**	**२०९-२३३**	**२२३-२२६**
१	राई के कथानक में राई देवी का नृत्य	२०९	२२३
२	राई देवी का पूर्वभव	२१०	२२३
३	रजनी का कथानक	२११	२२३
४	विज्जू का कथानक	२१२	२२३
५	मेधा का कथानक	२१३	२२३
६	शुंभा का कथानक	२१४	२२३-२२४
७	१ निसुंभा, २ रंभा. ३ निरंभा ४ मदना इन चारों के कथानक	२१५	२२४
८	अला का कथानक	२१६	२२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
९	१ कमा, २ सतेरा, ३ सोयामणी, ४ इन्दा, ५ घनविद्युता-इनके कथानक	२१७	२२४
१०	शेष दाक्षिणात्य इन्द्र की अग्रमहिषियों के कथानकों की सूचना	२१८-२१९	२२४
११	उत्तरीय इन्द्र की रुया आदि अग्रमहिषियों के कथानक	२२०-२२२	२२४
१२	दाक्षिणात्य पिशाचकुमारेन्द्र की कमला आदि अग्रमहिषियों के कथानक	२२३-२२५	२२५
१३	उत्तरीय पिशाचेन्द्र की महाकाली आदि अग्रमहिषियों के कथानक	२२६	२२५
१४	सूर्य की अग्रमहिषियों के कथानक	२२७-२२८	२२५
१५	चन्द्र की अग्रमहिषियों के कथानक	२२९-२३०	२२५
१६	शक्र की पद्मावती आदि अग्रमहिषियों के कथानक	२३१	२२५-२२६
१७	ईशानेन्द्र की कृष्णा आदि अग्रमहिषियों के कथानक	२३२-२३३	२२६
६	**भ. पार्श्वनाथ के तीर्थ में भूता आदि श्रमणियों के कथानक**	**२३४-२४१**	**२२६-२२८**
१	संग्रहणी गाथा	२३४	२२६
२	भ. महावीर के समवसरण में श्रीदेवी की नृत्य विधि	२३५	२२६
३	श्रीदेवी के पूर्वभव में भूता का कथानक	२३६	२२६
४	भ. पार्श्वनाथ के समवसरण में गमन	२३७	२२६-२२७
५	भूता की प्रव्रज्या	२३८	२२७
६	भूता निर्ग्रन्थी का शरीर बाकुशिकत्व. (सदोष चरित्र)	२३९	२२७
७	भूता का देवी होना	२४०	२२७-२२८
८	भ. पार्श्वनाथ की ह्री आदि श्रमणियों के कथानक	२४१	२२८
७	**पार्श्वस्था (शिथिलाचारिणी) सुभद्रा श्रमणी का कथानक.**	**२४२-२६४**	**२२८-२३३**
१	भ. महावीर के समवसरण में बहुपुत्रिका देवी की नृत्य-विधि	२४२	२२८
२	बहुपुत्रिका देवी का पूर्वभवरूप सुभद्रा का कथानक	२४३	२२८
३	सुभद्रा को अपने बंध्यत्व की चिन्ता	२४४	२२८
४	आर्याओं से पुत्र होने का उपाय पूछा	२४५	२२९
५	आर्याओं ने धर्म कहा	२४६	२२९
६	सुभद्रा ने गृहीधर्म स्वीकार किया	२४७	२२९
७	सुभद्रा का प्रव्रज्या संकल्प	२४८	२२९
८	सुभद्रा की प्रव्रज्या	२४९	२२९-२३०
९	बालकों से स्नेह रखने वाली सुभद्रा निर्ग्रन्थी की विविध प्रकार की बालक्रीड़ायें	२५०	२३०
१०	आर्या सुभद्रा को बालक्रीड़ाओं का निषेध करना	२५१	२३०
११	सुभद्रा का पृथक् वास	२५२	२३०
१२	सुभद्रा की संलेखना. बहुपुत्रिकादेवी के रूप में उपपात	२५३	२३०-२३१
१३	बहुपुत्रिका नाम का तात्पर्य	२५४	२३१
१४	बहुपुत्रिका देवी की स्थिति का कथन, और भावी जन्म काकथानक.	२५५	२३१
१५	बहुपुत्रिका देवी का सोम भव	२५६	२३१
१६	बत्तीस सन्तानों से सोमा की मनोपीड़ा	२५७	२३१
१७	सोमा की वंध्यत्व-प्रशंसा	२५८	२३१
१८	सोमा का धर्म-श्रवण	२५९	२३२
१९	सोमा का प्रव्रज्या-संकल्प	२६०	२३२
२०	राष्ट्रकूट ने प्रव्रज्या लेने का निषेध किया	२६१	२३२
२१	सोमा का श्रावक धर्म-ग्रहण करना	२६२	२३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
२२	सोमा की प्रव्रज्या	२६३	२३२-२३३
२३	सोमा का देव होना और सिद्धगति का प्राप्त होना	२६४	२३३
८	**भ. महावीर के तीर्थ में नन्दा आदि के कथानक**	**२६५-२६६**	**२३३**
१	संग्रहणी गाथायें	२६५	२३३
२	श्रेणिक राजा की नन्दा आदि देवियों का श्रमणी होना और सिद्ध गति प्राप्त करना	२६६	२३३
९	**भ. महावीर के तीर्थ में काली आदि श्रमणियों के कथानक**	**२६७-२८१**	**२३४-२३६**
१	संग्रहणी गाथा.	२६७	२३४
२	कोणिक राजा की लघुमाता काली	२६८	२३४
३	काली की प्रव्रज्या और रत्नावली तप	२६९	२३४
४	काली की संलेखना और सिद्धगति	२७०	२३४
५	सुकाली का कनकावली तप और सिद्धगति	२७१	२३४
६	महाकाली का लघुसिंहनिष्क्रीडित तप और सिद्धगति	२७२	२३५
७	कृष्णा का महासिंहनिष्क्रुडित तप और सिद्धगति	२७३	२३५
८	सुकृष्णा की भिक्षु प्रतिमा और सिद्धगति	२७४-२७५	२३५
९	महाकृष्णा की लघु सर्वतोभद्रप्रतिमा और सिद्धगति	२७६	२३५
१०	वीरकृष्णा की महासर्वतोभद्रप्रतिमा और सिद्धगति	२७७	२३५
११	रामकृष्णा की भद्रोत्तर प्रतिमा और सिद्धगति	२७८	२३५
१२	पितृसेनकृष्णा का मुक्तावली तप और सिद्धगति	२७९	२३६
१३	महासेनकृष्णा का आयम्बिल वर्धमान तप. और सिद्धगति	२८०	२३६
१४	संग्रहणी गाथा	२८१	२३६
१०	**भ. महावीर के तीर्थ में जयन्ती का कथानक**	**२८२-२९५**	**२३६-२३९**
१	कोशाम्बी नगरी में उदयन आदि. का धर्म-श्रवण	२८२-२८५	२३६-२३७
२	जयन्ती के प्रश्न और समाधान.	२८६-२९५	२३७-२३९
	चतुर्थ स्कन्ध	**१-३४६**	**२४१-३७७**
	श्रमणोपासकों के कथानक		
	१–२३ अध्ययन		
१	**भ. पार्श्वनाथ के तीर्थ में सोमिल ब्राह्मण का कथानक**	**१-१२**	**२४३-२४६**
१	भ. महावीर के समवसरण में शुक्र महाग्रहदेव ने नृत्य विधि की	१	२४३
२	शुक्रदेव के पूर्वभव वर्णन में सोमिल ब्राह्मण का कथानक	२	२४३
३	भ. पार्श्वनाथ के समीप सोमिलका श्रावक धर्म-ग्रहण करना	३	२४३
४	सोमिल का मिथ्यात्व	४	२४३
५	सोमिल ने आम्र-आराम आदि का निर्माण कराया	५	२४३
६	नाना प्रकार के तापसों का वर्णक और सोमिल का दिशा प्रोक्षिक-तापस जीवन	६	२४३-२४४
७	दिशाप्रोक्षिक तापसचर्या	७	२४४
८	सोमिल का काष्ठ मुद्रा से मुखबन्धन करके महाप्रस्थान करना	८	२४४-२४५
९	"तेरी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है" इस प्रकार देव के कहने पर भी सोमिल को बोध प्राप्त नहीं हुआ	९	२४५
१०	देव के पुनः पुनः बोध देने पर सोमिल ने अणुव्रत आदि ग्रहण किये–	—	२४५
११	सोमिल को बोध प्राप्त हुआ	१०	२४५-२४६

१. सूत्रांक देना छूट गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१२	सोमिल का संलेखना करना और शुक्र महाग्रह देवरूप में होना	११	२४६
१३	शुक्र देवलोक से च्यवन के अनन्तर सोमिल के जीव की सिद्ध गति का प्ररूपण	१२	२४६
२	**भ. पार्श्वनाथ के तीर्थ में राजा प्रदेशी का कथानक**	**१३-६१**	**२४६-२८८**
१	आमलकप्पा में भ. महावीर का समवसरण	१३	२४६
२	सूर्याभदेव का महावीर वंदन के लिए संकल्प. और उचित कार्य करने के लिए आभियोगिक देव को भेजना	१३-१५	२४६-२४७
३	आभियोगिक देव ने महावीर वंदन आदि किये	१६-१७	२४७
४	आभियोगक देव ने भ. महावीर के समवसरण की भूमिका का संप्रमार्जन किया	१८	२४८
५	सूर्याभदेव के आदेश से उसके विमानवासी देव-देवियों का उसके समीप आगमन	१९	२४८-२४९
६	सूर्याभदेव के आदेश से आभियोगिक देव ने दिव्ययान विमान का निर्माण किया और दिव्ययान विमान का वर्णक	२०	२४९-२५२
७	सूर्याभ का भ. महावीर के समीप आगमन. और दिव्य विमान आरोहण का वर्णक	२१	२५२-२५३
८	सूर्याभ ने नृत्य-विधि का आयोजन किया	२२	२५३-२५४
९	नृत्य-विधि का वर्णक	२३	२५४-२५६
१०	नृत्य की समाप्ति और सूर्याभ का गमन	२४	२५६
११	सूर्याभदेव की देव ऋद्धि आदि का शरीरान्तर्गत होने का निरूपण	२५	२५६-२५७
१२	सूर्याभविमान के स्थान आदि का विस्तार से निरूपण	२६	२५७-२६३
१३	सूर्याभदेव का विस्तार से अभिषेक वर्णन.	२७	२६३-२६८
१४	सूर्याभदेव और उसके सामानिक देवों की स्थिति का प्ररूपण.	२८	२६८
१५	प्रदेशी राजा का दृढ़ प्रतिज्ञ चरित्र. सूर्याभदेव का पूर्वभव और अनन्तरभव का प्ररूपण, प्रदेशी राजा, सूर्यकंतादेवी, सूर्यकान्त कुमार, चित्तसारथि आदि के नामों का निरूपण	२९	२६८-२६९
१६	प्रदेशी राजा ने जितशत्रु राजा के समीप चित्तसारथि को भेजना	३०	२६९
१७	श्रावस्ति नगरी में केशिकुमार श्रमण का आगमन.	३१	२७०
१८	केशिकुमार श्रमण के आगमन का वृत्तान्त ज्ञात होने पर चित्तसारथि का केशिकुमार श्रमण की वंदना के लिये जाना, धर्म-श्रवण करना और गृहस्थ धर्म स्वीकार करना.	३२-३५	२७०-२७१
१९	श्वेताम्बिका नगरी जाते हुए चित्त सारथि ने केशिकुमार श्रमण को श्वेताम्बिका नगरी आने के लिए प्रार्थना की और केशिकुमार श्रमण ने स्वीकृति दी	३६	२७१-२७२
२०	चित्त सारथि का श्वेताम्बिका नगरी में आगमन	३७-३८	२७२-२७३
२१	उद्यान पालक के कहे अनुसार चित्त सारथि का केशिकुमार श्रमण को वंदन करने के लिए जाना और धर्म-श्रवण करना	३९-४१	२७३
२२	धर्म के अलाभ एवं लाभ के संबंध में चार निर्देश.	४२	२७४
२३	अश्व परीक्षा के लिए निकले हुए चित्त सारथि सहित प्रदेशी राजा का केशिकुमार श्रमण के समीप आना–१	४३	२७४-२७५
२४	प्रदेशी राजा को प्रतिबोध देने के लिए केशिमुनि के प्ररूपण में पांच प्रकार के ज्ञान का निरूपण	४४	२७५-२७६
२५	केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में जीव और शरीर का अन्यत्व प्ररूपण "आजकल में उत्पन्न नैरयिक का मनुष्यलोक आगमन विषयक निषेध-प्ररूपक चार निर्देश"	४५	२७६-२७७
२६	"आजकल में उत्पन्न देव का मनुष्य लोक आगमन विषयक निषेध निरूपक चार निर्देश"	४६	२७७-२७८
२७	केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में "जीव की अप्रतिहत गति का समर्थन"	४७-४८	२७८-२७९

१. मूलपाठ पर दिये गये शीर्षक का यह अनुवाद है किन्तु आगम पाठ के भावानुसार शीर्षक भिन्न होना चाहिए और उसका अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए–"अश्व परीक्षा के बहाने चित्त सारथि का प्रदेशी राजा को केशिकुमार श्रमण के समीप लाना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
२८	केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में–"जीव और शरीर के अन्यत्व समर्थन में अपर्याप्त उपकरण हेतु का निरूपण"	४९-५०	२७९-२८०
२९	केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में–"जीव का अगुरुलघुत्व"	५१	२८०
३०	केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में–"काष्ठगत अग्नि के दृष्टान्त से जीव का अदर्शन"	५२	२८१-२८२
३१	केशिकुमार श्रमण निर्दिष्ट–"प्रदेशी राजा का व्यावहारिक जीवन"	५३	२८२
३२	केशिकुमार निर्दिष्ट "जीव की अदृश्यता"	५४	२८२-२८३
३३	केशिकुमार श्रमण निर्दिष्ट–"जीव प्रदेशों की शरीर प्रमाण अवस्थिति"	५५	२८३
३४	केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में–"लोह (धातु) धारक का दृष्टान्त पश्चात्ताप के निषेध का प्ररूपण	५६	२८३-२८४
३५	प्रदेशी राजा का गृहस्थ धर्म स्वीकार करना और रमणीय-अमरणीय होने के सम्बन्ध में वन खण्ड आदि के दृष्टान्त.	५७-५८	२८४-२८६
३६	सूरीकन्ता ने विष प्रयोग किया, प्रदेशी राजा का समाधिमरण और सूर्याभदेव के रूप में उपपात	५९-६०	२८६-२८७
३७	सूर्याभदेव के भव के बाद प्रदेशी राजा को जीव दृढ़प्रतिज्ञ के भव में मोक्ष गमन का निरूपण	६१	२८७-२८८
३	**भ. महावीर के तीर्थ में तुंगिया नगरी निवासी श्रमणोपासक**	**६२-६४**	**२८९-२९०**
१	श्रमणोपासक वर्णक	६२	२८९
२	तुंगिया नगरी में पार्श्वापत्य स्थविरों का आगमन	६३	२८९
३	श्रमणोपासकों ने स्थविरों की पर्युपासना की	६४	२८९-२९०
४	**भ. महावीर के तीर्थ में नन्द मणियार का कथानक**	**६५-८३**	**२९०-२९४**
१	भ. महावीर के समवसरण में दर्दुर देव ने नृत्यविधि की	६५	२९०
२	गौतम के पूछने पर भ. महावीर ने दर्दुरदेव के पूर्व भव का नन्द मणियार का कथानक कहा	६६-६७	२९०
३	नन्द का धर्म-ग्रहण करना	६८	२९०
४	नन्द का मिथ्यात्व-ग्रहण करना	६९	२९०
५	नन्द ने पुष्करणी का निर्माण करवाया	७०	२९१
६	नन्द ने वनखण्ड का निर्माण करवाया	७१	२९१
७	नन्द ने चित्र सभा का निर्माण करवाय।	७२	२९१
८	नन्द ने महानसशाला का निर्माण करवाया	७३	२९१
९	नन्द ने चिकित्साशाला का निर्माण करवाया	७४	२९२
१०	नन्द ने आलंकारिक सभा का निर्माण करवाया	७५	२९२
११	अनेक लोगों ने नन्द की प्रशंसा की और वह हर्षित हुआ	७६	२९२
१२	नन्द के रोगोत्पति	७७	२९२
१३	नन्द के रोगों की वैद्यों द्वारा की गई चिकित्सा निष्फल गई	७८	२९२-२९३
१४	नन्द मणियार का दुर्दर भव	७९	२९३
१५	दर्दुर का जातिस्मरण और श्रावक-व्रतों का पालन	८०	२९३
१६	भ. महावीर का राजगृह में समवसरण	८१	२९३
१७	दर्दुर का समवसरण में जाना	८२	२९४
१८	दर्दुर का महाव्रत ग्रहण-संकल्प	८३	२९४
१९	दर्दुर का देव होना	—	२९४
५	**भ. महावीर के तीर्थ में आनन्द गाथापति का कथानक**	**८४-१०८**	**२९५-३०४**
१	संग्रहणी गाथा	—	२९५
२	वाणिज्य ग्राम में आनन्द गाथापति	८४	२९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
३	भ. महावीर का समवसरण	८५	२९५
४	भ. महावीर के समवसरण में आनन्द का जाना और धर्म श्रवण करना	८६	२९५
५	आनन्द का गृहीधर्म ग्रहण करना	८७	२९६
६	आनन्द गाथापति के श्रावक धर्म का विवरण	८८	२९६
७	सम्यक्त्व आदि के अतिचार	८९	२९७
८	आनन्द का अभिग्रह और शिवानन्दा को गृहीधर्म पालन के लिए प्रेरणा देना	९०	२९८
९	शिवानन्दा का भगवान को वंदन करने के लिए जाना और धर्म श्रवण करना	९१	२९९
१०	शिवानन्दा का गृहीधर्म ग्रहण करना	९२	२९९
११	आनन्द के प्रव्रज्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न और भगवान का समाधान	९३	२९९
१२	भगवान का जनपद विहार	९४	३००
१३	आनन्द की श्रमणोपासक चर्या	९५	३००
१४	शिवानन्दा की श्रमणोपासिका चर्या	९६	३००
१५	आनन्द की धर्म जागरिका और गृही व्यापार का त्याग	९७-९९	३००
१६	आनन्द का उपासक प्रतिमा स्वीकार करना	१००	३०१
१७	आनन्द का अनशन	१०१	३०१
१८	आनन्द को अवधिज्ञान की उत्पत्ति	१०२	३०१
१९	गोचरचर्या के लिए निकले हुए गौतम का आनन्द के समक्ष आना	१०३	३०१-३०२
२०	अवधिज्ञान के सम्बन्ध में आनन्द और गौतम का संवाद	१०४	३०२
२१	भगवान ने गौतम की शंका का निराकरण किया	१०५	३०२
२२	गौतम द्वारा क्षमा याचना	१०६	३०३
२३	भगवान का जनपद विहार	१०७	३०३
२४	आनन्द का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति. और उसके बाद सिद्धगति का निरूपण	१०८	३०४
६	**कामदेव गाथापति का कथानक**	**१०९-१२९**	**३०४-३११**
१	चम्पानगरी में कामदेव गाथापति	१०९	३०४
२	भ. महावीर का समवसरण	११०	३०४
३	कामदेव का समवसरण में गमन और धर्म श्रवण	१११	३०४-३०५
४	कामदेव का गृहीधर्म स्वीकार करना	११२	३०५
५	भगवान का जनपद विहार	११३	३०५
६	कामदेव की श्रमणोपासक चर्या	११४	३०५
७	भद्रा की श्रमणोपासिका चर्या	११५	३०५
८	कामदेव की धर्म-जागरिका और गृह व्यापार का त्याग	११६	३०५
९	कामदेव ने पिशाचरूप से किया गया मारणांतिक उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	११७	३०६
१०	कामदेव ने हाथीरूप से किया गया उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	११८	३०७
११	कामदेव ने सर्परूप से किया गया उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	११९	३०७-३०८
१२	देव ने स्वाभाविक रूप धारण करके कामदेव की प्रशंसा की और क्षमायाचना की	१२०	३०८
१३	कामदेव ने प्रतिज्ञा की	१२१	३०८
१४	कामदेव ने भगवान् की पर्युपासना की	१२२	३०८-३०९
१५	भगवान ने कामदेव के उपसर्ग का स्पष्टीकरण किया	१२३	३०९-३१०
१६	भगवान ने कामदेव की प्रशंसा की	१२४	३१०
१७	कामदेव का लौटना	१२५	३११
१८	भगवान का जनपद विहार	१२६	३११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१९	कामदेव ने उपासक प्रतिमायें ग्रहण की	१२७	३११
२०	कामदेव का अनशन	१२८	३११
२१	कामदेव का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति और बाद में सिद्धगति का निरूपण	१२९	३११
७	**चुलणीपिता गाथापति का कथानक**	**१३०-१४७**	**३१२-३१६**
१	वाराणसी नगरी में चुलनीपिता गाथापति	१३०	३१२
२	भ. महावीर का समवसरण	१३१	३१२
३	चुलनीपिता गाथापति का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना	१३२	३१२
४	चुलनीपिता का गृही धर्म स्वीकार करना	१३३	३१२-३१३
५	भगवान का जनपद विहार	१३४	३१३
६	चुलनीपिता की श्रमणोपासक चर्या	१३५	३१३
७	शामा की श्रमणोपासिका चर्या	१३६	३१३
८	चुलनीपिता की धर्म जागरिका और गृह व्यापार का त्याग	१३७	३१३
९	चुलनीपिता ने देवता द्वारा किये गये अपने बड़े पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया.	१३८	३१३-३१४
१०	चुलनीपिता ने देवता द्वारा किये गये अपने मझले पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	१३९	३१४
११	चुलनीपिता ने देवता द्वारा किये गये अपने छोटे पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	१४०	३१४
१२	चुलनी पिता को देवता के कहे हुए अपनी माता को मारने के वचन श्रवण का उपसर्ग सहन न होने पर कोलाहल करना. और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना	१४१	३१५
१३	भद्रा का प्रश्न	१४२	३१५
१४	चुलनीपिता का उत्तर	१४३	३१५-३१६
१५	चुलनीपिता का प्रायश्चित्त करना	१४४	३१६
१६	चुलनी का उपासक प्रतिमा स्वीकार करना.	१४५	३१६
१७	चुलनीपिता का अनशन.	१४६	३१६
१८	चुलनीपिता का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति का निरूपण	१४७	३१६
८	**सुरादेव गाथापति का कथानक**	**१४८-१६५**	**३१७-३२२**
१	वाराणसी नगरी में सुरादेव गाथापति	१४८	३१७
२	भगवान महावीर का समवसरण	१४९	३१७
३	सुरादेव गाथापति का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना	१५०	३१७
४	सुरादेव का गृही धर्म स्वीकार करना	१५१	३१७-३१८
५	भगवान का जनपद विहार	१५२	३१८
६	सुरादेव की श्रमणोपासक चर्या	१५३	३१८
७	धन्ना भार्या की श्रमणोपासिका चर्या	१५४	३१८
८	सुरादेव की धर्मजागरिका और गृही व्यापार का त्याग	१५५	३१८
९	सुरादेव ने देवता द्वारा किये गये अपने बड़े पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	१५६	३१८-३१९
१०	सुरादेव ने देवता द्वारा किये गये अपने मझले पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	१५७	३१९
११	सुरादेव ने देवता द्वारा किये गये अपने छोटे पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	१५८	३१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१२	देव कथित रोगांतक सहन न होने पर सुरादेव का कोलाहल करना और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना	१५९	३२०
१३	धन्ना भार्या का प्रश्न	१६०	३२०
१४	सुरादेव का उत्तर	१६१	३२०
१५	सुरादेव का प्रायश्चित्त करना	१६२	३२१
१६	सुरादेव का उपासक प्रतिमा स्वीकार करना	१६३	३२१
१७	सुरादेव का अनशन	१६४	३२२
१८	सुरादेव का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण	१६५	३२३
९	**चुल्लशतक गाथापति का कथानक**	**१६६-१८४**	**३२२-३२७**
१	आलभिका नगरी में चुल्लशतक गाथापति	१६६	३२२
२	भगवान महावीर का समवसरण	१६७	३२२
३	चुल्लशतक का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना	१६८	३२३
४	चुल्लशतक का गृहीधर्म स्वीकार करना	१६९	३२३
५	भगवान का जनपद विहार	१७०	३२३
६	चुल्लशतक की श्रमणोपासक चर्या	१७१	३२३
७	बहुलाभार्या की श्रमणोपासिका चर्या	१७२	३२३
८	चुल्लशतक की धर्मजागरिका	१७३-१७४	३२३-३२४
९	चुल्लशतक ने देवता द्वारा किये गये अपने बड़े पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	१७५	३२४
१०	चुल्लशतक ने देवता द्वारा किये गये अपने मझले पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	१७६	३२४
११	चुल्लशतक ने देवता द्वारा कियेगये अपने छोटे पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	१७७	३२५
१२	देवकथित अपनी स्वर्ण-राशि को बिखरने रूप उपसर्ग सहन न होने पर चुल्लशतक का कोलाहल करना और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना	१७८	३२५
१३	बहुला का प्रश्न	१७९	३२५
१४	चुल्लशतक का उत्तर	१८०	३२६
१५	चुल्लशतक का प्रायश्चित्त	१८१	३२६
१६	चुल्लशतक का उपासक प्रतिमा आराधन करना	१८२	३२६
१७	चुल्लशतक का अनशन	१८३	३२७
१८	चुल्लशतक का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति और सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण	१८४	३२७
१०	**कुण्डकोलिक गाथापति का कथानक**	**१८५-२०४**	**३२७-३३१**
१	कंपिलपुर में कुण्डकोलिक गाथापति	१८५	३२७
२	भ. महावीर का समवसरण	१८६	३२८
३	कुण्डकोलिक गाथापति का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना	१८७	३२८
४	कुण्डकोलिक का गृही धर्म ग्रहण करना	१८८	३२८
५	भगवान का जनपद विहार	१८९	३२८
६	कुण्डकोलिक की श्रमणोपासक चर्या	१९०	३२८
७	पूसा भार्या की श्रमणोपासिका चर्या	१९१	३२९
८	देवता ने नियतिवाद का समर्थन किया	१९२	३२९
९	कुण्डकोलिक ने नियतिवाद का निरसन किया	१९३	३२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१०	देवता ने नियतिवाद का समर्थन किया	१९४	३२९
११	कुण्डकोलिक ने नियतिवाद का निरसन किया	१९५	३२९
१२	देव का लौट जाना	१९६	३२९
१३	भ. महावीर के समवसरण में जाना और धर्मश्रवण करना	१९७	३३०
१४	भ. महावीर द्वारा पूर्व वृतान्त का प्ररूपण	१९८	३३०
१५	भ. महावीर ने कुण्डकोलिक की प्रशंसा की	१९९	३३०
१६	भगवान का जनपद विहार	२००	३३१
१७	कुण्डकोलिक की धर्मजागरिका	२०१	३३१
१८	कुण्डकोलिक का उपासक प्रतिमा आराधना करना	२०२	३३१
१९	कुण्डकोलिक का अनशन	२०३	३३१
२०	कुण्डकोलिक का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण	२०४	३३१
११	**सद्दालपुत्र कुंभकार का कथानक**	**२०५-२३१**	**३३२-३४१**
१	पोलासपुर में सद्दालपुत्र	२०५	३३२
२	सद्दालपुत्र के सामने देवता ने भ. महावीर की प्रशंसा की	२०६	३३२
३	सद्दालपुत्र का गोशालक-वंदन संकल्प	२०७	३३२
४	भ. महावीर का समवसरण और सद्दालपुत्र का धर्म-श्रवण	२०८	३३२
५	भ. महावीर ने देवता द्वारा की गई प्रशंसा का निरूपण किया	२०९	३३३
६	सद्दालपुत्र का निवेदन	२१०	३३३
७	भ. महावीर ने सद्दालपुत्र को बोध दिया	२११	३३३-३३४
८	सद्दालपुत्र का गृहीधर्म ग्रहण करना	२१२	३३४
९	अग्निमित्रा का भ. महावीर की वंदना के लिए जाना और धर्म-श्रवण करना	२१३	३३५
१०	अग्निमित्रा का गृहीधर्म ग्रहण करना	२१४	३३५
११	भगवान का जनपद विहार	२१५	३३५
१२	सद्दालपुत्र की श्रमणोपासक चर्या	२१६	३३६
१३	अग्निमित्रा की श्रमणोपासिका चर्या	२१७	३३६
१४	गोशालक का आगमन	२१८	३३६
१५	गोशालक ने भ. महावीर के गुणगान किये	२१९	३३६-३३७
१६	भ. महावीर के साथ विवाद करने में गोशालक का असामर्थ्य और उसका लौट जाना	२२०	३३७
१७	सद्दालपुत्र की धर्मजागरिका	२२१	३३८
१८	सद्दालपुत्र ने देवता द्वारा किये गये अपने बड़े पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	२२२	३३८
१९	सद्दालपुत्र ने देवता द्वारा किये गये अपने मझले पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	२२३	३३८
२०	सद्दालपुत्र ने देवता द्वारा किये गये अपने छोटे पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया	२२४	३३९
२१	सद्दालपुत्र द्वारा देव कथित अपनी भार्या का मारण रूप उपसर्ग सहन न होने पर कोलाहल करना और मायावी देव का आकाश में ऊपर चले जाना	२२५	३३९
२२	अग्निमित्रा का प्रश्न	२२६	३४०
२३	सद्दालपुत्र का उत्तर	२२७	३४०
२४	सद्दालपुत्र ने प्रायश्चित्त किया	२२८	३४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
२५	सद्दालपुत्र का उपासक प्रतिमा आराधन	२२९	३४१
२६	सद्दालपुत्र का अनशन	२३०	३४१
२७	सद्दालपुत्र का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति, और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण	२३१	३४१
१२	**महाशतक गाथापति का कथानक**	**२३२-२५६**	**३४२-३४७**
१	राजगृह में महाशतक गाथापति	२३२	३४२
२	भगवान महावीर का समवसरण	२३३	३४२
३	महाशतक का समवसरण में जाना और धर्मश्रवण करना	२३४	३४२
४	महाशतक का गृहीधर्म ग्रहण करना	२३५	३४२
५	महाशतक की श्रमणोपासक चर्या	२३६	३४३
६	भगवान का जनपद विहार	—	३४३
७	भोगाभिलासिणी रेवती की चिन्ता	२३७	३४३
८	रेवती का सपत्नियों को मार देना	२३८	३४३
९	रेवती का मांस मद्य सेवन	२३९	३४३
१०	अमारी की घोषणा होने पर भी रेवती का मांस-मद्य सेवन	२४०	३४३
११	महाशतक की धर्मजागरिका	२४१	३४४
१२	रेवती ने महाशतक को अनुकूल उपसर्ग किया	२४२	३४४
१३	महाशतक का उपासक प्रतिमा आराधन	२४३	३४४
१४	महाशतक का अनशन	२४४	३४५
१५	महाशतक को अवधिज्ञान की उत्पत्ति	२४५	३४५
१६	रेवति ने महाशतक को पुनः अनुकूल उपसर्ग किया	२४६	३४५
१७	विक्षेप से कुपित महाशतक ने रेवती का मरण के बाद नरक गमन कहा	२४७	३४५
१८	भ. महावीर का समवसरण	२४८	३४६
१९	महाशतक के पास गौतम को भेजना	२४९	३४६
२०	गौतम का महाशतक के पास जाना	२५०	३४६
२१	महाशतक का गौतम को वंदन करना	२५१	३४६
२२	गौतम ने महाशतक को 'प्रायश्चित्त करने का' भगवन्त का कथन कहा	२५२	३४६
२३	महाशतक का प्रायश्चित्त करना	२५३	३४७
२४	गौतम का लौट जाना	२५४	३४७
२५	भगवान का जनपद विहार	२५५	३४७
२६	महाशतक का समाधिमरण देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण,	२५६	३४७
१३	**नन्दिनीपिता गाथापति का कथानक**	**२५७-२६८**	**३४७-३४९**
१	श्रावस्तिनगरी में नन्दिनीपिता गाथापति	२५७	३४७
२	भ. महावीर का समवसरण	२५८	३४८
३	नन्दिनीपिता का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना	२५९	३४८
४	नन्दिनीपिता का गृहीधर्म स्वीकार करना	२६०	३४८
५	भगवान का जनपद विहार	२६१	३४८
६	नन्दिनीपिता की श्रमणोपासकचर्या	२६२	३४८
७	अश्विनी भार्या की श्रमणोपासिकाचर्या	२६३	३४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची.	सूत्रांक	पृष्ठांक
८	नन्दिनीपिता की धर्मजागरिका	२६४-२६५	३४९
९	नन्दिनीपिता की उपासक प्रतिमा आराधना	२६६	३४९
१०	नन्दिनीपिता का अनशन	२६७	३४९
११	नन्दिनीपिता का समाधिमरण देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त होने का निरूपण	२६८	३४९
१४	**लेतिकापिता गाथापति का कथानक**	**२६९-२७९**	**३५०-३५२**
१	श्रावस्ति नगरी में लेतिका पिता गाथापति	२६९	३५०
२	भगवान् महावीर का समवसरण	२७०	३५०
३	लेतिकापिता गाथापति का समवसरण में जाना और धर्मश्रवण करना	२७१	३५०
४	लेतिकापिता का गृही धर्म ग्रहण करना	२७२	३५०-३५१
५	भगवान का जनपद विहार	२७३	३५१
६	लेतिकापिता की श्रमणोपासक चर्या	२७४	३५१
७	फाल्गुनी भार्या की श्रमणोपासिका चर्या	२७५	३५१
८	लेतिकापिता की धर्मजागरिका	२७६	३५१
९	लेतिकापिता का उपासक प्रतिमा आराधन करना	२७७	३५१
१०	लेतिकापिता का अनशन	२७८	३५२
११	लेतिकापिता का समाधिमरण देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण	२७९	३५२
१५	**ऋषिभद्रपुत्रादिक श्रमणोपासक**	**२८०-२८४**	**३५२-३५४**
१	आलभिका नगरी में ऋषिभद्रपुत्रादिक श्रमणोपासक	२८०	३५२
२	देवस्थिति विषयक विवाद	२८१	३५२
३	भ. महावीर का समवसरण	२८२	३५३
४	भ. महावीर ने (देवस्थिति विषयक) समाधान किया	२८३	३५३
५	ऋषिभद्रपुत्र सम्बन्धित गौतम का प्रश्न और भ. महावीर का उत्तर	२८४	३५३-३५४
१६	**शंख और पोक्खली श्रसणोपासक**	**२८५-२९७**	**३५४-३५७**
१	श्रावस्ती नगरी में शंख और पोक्खली	२८५	३५४
२	भ. महावीर का समवसरण	२८६	३५४
३	शंख का पौषध करना	२८७	३५४-३५५
४	शंख के कहे अनुसार श्रावस्ती के श्रमणोपासकों ने पौषध के पहले विपुल अशनादि बनाये	२८८	३५५
५	अशनादिका आहार करने के लिये पोक्खली ने शंख को निमंत्रण दिया	२८९	३५५
६	शंख ने निमंत्रण स्वीकार नहीं किया	२९०	३५५
७	अन्य श्रमणोपासकों ने पौषध के पहले अशनादि का आहार किया	२९१	३५६
८	शंख ने पारणा के पूर्व भ. महावीर की पर्युपासना की	२९२	३५६
९	श्रमणोपासकों ने शंख की हीलना की	२९३	३५६
१०	भ. महावीर ने शंख की हीलना न करने के लिए कहा	२९४	३५६
११	भ. महावीर ने जागरिका के प्रकार कहे	२९५	३५६
१२	"कषाय का फल कर्मबंधन है" यह जानकर श्रमणोपासकों की शंख से क्षमायाचना	२९६	३५७
१३	शंख की देवगति और सिद्धगति	२९७	३५७
१७	**वरुण नाग नप्तृक श्रमणोपासक**	**२९८-३००**	**३५८-३६०**
१	"संग्राम में मरने वाला देवता होता है" इस सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न	२९८	३५८
२	भ. महावीर के उत्तर में "वरुण का कथानक"	—	३५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची.	सूत्रांक	पृष्ठांक
३	वरुण का रथ-मुसल-संग्राम में जाना	—	३५८
४	संग्राम में वरुण का अभिग्रह	—	३५८
५	वरुण ने संलेखना की	—	३५९
६	वरुणनाग नप्तृक के मित्र ने भी वरुण का अनुसरण किया	—	३५९
७	वरुण के मरने पर देवकृत वृष्टि	—	३५९
८	वरुण की देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण	२९९	३५९-३६०
९	वरुण का मित्र भी सुकुल में उत्पन्न हुआ	३००	३६०
१८	**सोमिल ब्राह्मण श्रमणोपासक**	**३०१-३०४**	**३६०-३६२**
१	वाणिज्य ग्राम में सोमिल ब्राह्मण और भ. महावीर का समवसरण	३०१	३६०
२	सोमिल ब्राह्मण का समवसरण में जाना	३०२	३६०
३	सोमिल के यात्रादि प्रश्नों का भगवान ने समाधान किया	३०३	३६१
४	सोमिल का श्रावक धर्म ग्रहण करना	—	३६२
५	सोमिल की देवगति और सिद्धगति का निर्देश	३०४	३६२
१९	**भ. महावीर के श्रमणोपासकों की देवलोक स्थिति का निरूपण**	**३०५**	**३६२**
२	**कूणिक का भ. महावीर के समवसरण में जाना और धर्मश्रवण करना**	**३०६-३२७**	**३६३-३७१**
१	चम्पानगरी-वर्णक	३०६	३६३
२	पूर्णभद्र चैत्य का वर्णक	३०७	३६३
३	वनखण्ड-वर्णक	३०८	३६३-३६४
४	अशोक वृक्ष-वर्णक	३०९	३६४
५	पृथ्वीशिला पट्ट-वर्णक	३१०	३६४
६	चम्पा में कूणिक राजा	३११	३६४
७	कूणिक की धारिणी देवी	३१२	३६५
८	भ. महावीर की प्रवृत्ति के निवेदक पुरुष की कूणिक ने स्थायी नियुक्ति की	३१३	३६५
९	कोणिक का सुखपूर्वक विहरण	३१४	३६५
१०	भगवान की प्रवृत्ति के निवेदक पुरुष ने कोणिक के समक्ष चम्पा में आगमन का निवेदन किया	३१५	३६५
११	भगवान को कौणिक के नमस्कारादि	३१६	३६५-३६६
१२	चम्पा में भ. महावीर का समवसरण	३१७	३६६
१३	चम्पानगरी निवासी जनों का समवसरण में जाना और पर्युपासना करना	३१८	३६६-३६७
१४	भगवान की प्रवृत्ति के निवेदक पुरुष ने कोणिक के समक्ष भगवान के आगमन का निवेदन (१)	३१९	३६७
१५	कोणिक का भ. महावीर के दर्शन का संकल्प और सर्व ऋद्धि से समवसरण में जाने के लिए प्रस्थान	३२०	३६७-३६९
१६	कूणिक का समवसरण की ओर प्रयाण	३२१	३६९-३७०
१७	कूणिक का समवसरण में आगमन और पर्युपासना	३२२	३७०
१८	सुभद्रादि कौणिक की भार्याओं का समवसरण में आना और पर्युपासना करना	३२३	३७०
१९	भ. महावीर की धर्मदेशना	३२४	३७१
२०	परिषदा की धर्माराधना और स्वगृहगमन	३२५	३७१
२१	कौणिक ने धर्मदेशना की प्रशंसा की और अपने भवन को गया	३२६	३७१
२२	सुभद्रादि कौणिक की भार्याओं ने धर्मदेशना की प्रशंसा की और अपने निवास (अन्तःपुर) को गयी	३२७	३७१

१. सूत्रांक ३१५ में और इस ३१९ सूत्रांक में विशेष अन्तर नहीं है। केवल वाचना भेद का अन्तर है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची.	सूत्रांक	पृष्ठांक
२१	**अम्बड परिव्राजक का कथानक**	**३२८-३३७**	**३७२-३७५**
१	भगवति सूत्र में अम्बड परिव्राजक का निर्देश	३२८	३७२
२	अम्बड के अन्तेवासियों के कथानक	—	३७२
३	सात सौ अम्बड शिष्यों का संचित जल अटवी में समाप्त हो गया	३२९	३७२
४	अदत्त न लेने का व्रत पालने वाले सात सौ परिव्राजकों का संलेखना-पूर्वक समाधिमरण और देवलोक में उत्पत्ति	३३०	३७२-३७३
५	अम्बड का वसति के सौ घरों से आहार लेने का निरूपण	३३१	३७३
६	अम्बड का श्रमणोपासक होना	३३२	३७३-३७४
७	अम्बड का देव भव	३३३	३७४
८	अम्बड का दृढप्रतिज्ञ भवनिरूपण और दृढ़प्रतिज्ञ का जन्म	३३४	३७४
९	अम्बड का दृढ़प्रतिज्ञ-भव	—	३७४
१०	दृढ़प्रतिज्ञ का कला ग्रहण	३३५	३७४-३७५
११	युवा दृढ़प्रतिज्ञ को वैराग्य	३३६	३७५
१२	दृढ़प्रतिज्ञ की प्रव्रज्या तथा सिद्धगति प्राप्त होने का निरूपण	३३७	३७५
२२	**उदायी हस्तिराजा और भूतानंद हस्तिराजा**	**३३८-३३९**	**३७६**
१	राजगृही में उदायी हस्तिराजा और भूतानन्द हस्तिराजा	३३८	३७६
२	हस्तिराजा भूतानन्द	३३९	३७६
२३	**मद्रुक श्रमणोपासक कथा**	**३४०-३४६**	**३७६-३७७**
१	राजगृही में अन्यतीर्थिक और मद्रुक श्रमणोपासक	३४०	३७६
२	भ. महावीर का राजगृह में समवसरण	३४१	३७६
३	समवसरण में जाते हुए मद्रुक का अन्य तीर्थियों के साथ अस्तिकाय विषयक संलाप	३४२	३७६-३७७
४	भ. महावीर ने मद्रुक की प्रशंसा की	३४३-३४५	३७७
५	मद्रुक के अनन्तर भवों का निरूपण	३४६	३७७

पंचम स्कन्ध

	निन्हव-कथानक	**१-११७**	**३८१-४१८**
१	**सात प्रवचन-निन्हवों के नाम धर्माचार्य और उनके नगरों का निर्देश**	**१**	**३८१**
२	**जमालि निन्हव का कथानक**	**२--४३**	**३८१-३९२**
१	क्षत्रिय कुण्ड में जमालिकुमार	२	३८१
२	ब्राह्मण कुण्ड में भ. महावीर का विहार	३-४	३८१-३८२
३	जमालिकुमार ने भ. महावीर की पर्युपासना की	५	३८२
४	भ. महावीर की धर्मकथा	६	३८२
५	जमालि कुमार का प्रव्रज्या संकल्प	७	३८२-३८३
६	माता-पिताओं ने प्रव्रज्या ग्रहण करने से रोका और जमाली ने प्रव्रज्या ग्रहण करने का समर्थन किया	८-१२	३८३-३८५
७	माता-पिताओं ने प्रव्रज्या ग्रहण करने की अनुमति दी	१३	३८५
८	प्रव्रज्या ग्रहण करने से पूर्व किये जाने वाले कार्य	१४-२५	३८५-३८८
९	माता-पिताओं ने भ. महावीर को शिष्य भिक्षा का दान दिया	२६	३८८
१०	जमाली की प्रव्रज्या	२७-२८	३८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
११	जमाली ने जनपद में विहार करने के लिए प्रार्थना की किन्तु भ. महावीर मौन रहे	२९	३८९
१२	जमाली का जनपद विहार और श्रावस्ती में आगमन	३०	३८९
१३	भ. महावीर का चम्पा में आगमन	३१	३९०
१४	जमाली को रोग के आतंक से पीड़ा और शय्या संस्तारक के लिए आज्ञा प्रदान करना	३२	३९०
१५	जमाली और उसके शिष्यों का शय्या करने में -"कृत-कार्यमाण" के विषयों में प्रश्नोत्तर	३३	३९०
१६	"चलमान चलित है" इत्यादि भगवंत की प्ररूपणा से जमाली का विरोध	३४	३९०
१७	जमाली के प्ररूपण पर श्रद्धा न करने वाले कुछ श्रमणों का भगवान के समीप आना	३५	३९०
१८	चम्पा में भ. महावीर के समक्ष जमाली ने अपने को केवली घोषित किया	३६	३९०-३९१
१९	लोक और जीव के विषय में गौतम के प्रश्न करने पर जमाली का चुप रहना	३७	३९१
२०	भगवंत प्ररूपित लोक और जीवों का शास्वतपन तथा अशास्वतपन	३८	३९१
२१	जमाली का श्रद्धा न करना और मरने पर लांतक कल्प में किल्विषी देव होना	३९-४०	३९१-३९२
२२	किल्विषी देवों के भेदों का प्ररूपण	४१-४२	३९२
२३	जमाली के अन्यभव और सिद्ध गति की प्राप्ति	४३	३९२
३	**आजीविक तीर्थंकर गोशालक का कथानक**	**४४-११७**	**३९३-४१८**
१	सावत्थी नगरी में रहने वाली "हालाहला" नामकी कुंभारी की हाट में "गोशालक"	४४	३९३
२	छ दिशाचरों ने पूर्व में से (दस प्रकार के निमित्तों का) निर्यूहण किया	४५	३९३
३	गोशालक ने छ अनतिक्रमणीयों का प्ररूपण किया	४६	३९३
४	गोशालक ने अपने आपको जिन कहा	४७	३९३
५	भ. महावीर का समवसरण और गौतम का गौचरी जाना	४८	३९३-३९४
६	गौतम का गौशालक की चर्या जानने के लिए कहना	४९	३९४
७	भ. महावीर ने गौतम को गौशालक के चरित्र का पूर्व भाग कहा		३९४
८	"मंखली की भद्रा भार्या का गर्भिणी होना'	५०	३९४
९	मंखली और भद्रा का गौशाला में निवास	५१	३९४
१०	मंखली और भद्राने अपने पुत्र का नाम "गौशालक" दिया	५२	३९५
११	गौशालक की मंखचर्या	५३	३९५
१२	भ. महावीर का नालंदा की तन्तुशाला में विहरण	५४	३९५
१३	गौशालक का भी तन्तुशाला में आगमन	५५	३९५
१४	भ. महावीर के प्रथम मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे	५६	३९५-३९६
१५	शिष्य बनाने के लिए गौशालक की प्रार्थना और भ. महावीर की उदासीनता	५७	३९६
१६	भ. महावीर के द्वितीय मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे	५८	३९६
१७	शिष्य बनाने के लिए गौशालक की पुनः प्रार्थना और भ. महावीर की उदासीनता	५९	३९६
१८	भ. महावीर के तृतीय मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे	६०	३९६-३९७
१९	शिष्य बनाने के लिए गौशालक की पुनः प्रार्थना और भ. महावीर की उदासीनता	६१	३९७
२०	भ. महावीर के चतुर्थ मासखमण के पारणे में पांच दिव्य प्रगटे	६२	३९७
२१	शिष्य बनाने के लिए गौशालक ने पुनः प्रार्थना की और भगवान ने अनुमति दी-गौशालक का साथ विहरण	६३	३९७-३९८
२२	तिल के पौधे के सम्बन्ध में भगवान के वचन गौशालक की अश्रद्धा	६४	३९८
२३	गौशालक के वचन से क्रुद्ध वैश्यायन बाल-तपस्वी ने गौशालक के ऊपर तेजोलेश्या फेंकी	६५	३९८
२४	भ. महावीर ने गौशालक की रक्षा के लिए शीतलेश्या फेंकी	६६	३९९
२५	तेजोलेश्या की सिद्धि के उपाय	६७	३९९
२६	भ. महावीर कथित तिल के पौधे को देखकर गौशालक का चले जाना	६८	३९९-४००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग-विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
२७	गौशालक की तेजोलेश्या सिद्धि	६९	४००
२८	भ. महावीर कथित गौशालक का अजिनत्व	७०	४००
२९	गौशालक का ईर्ष्याभाव	७१	४००
३०	गौशालक का आनन्द स्थविर के समक्ष अर्थलुब्धवणिक का दृष्टांत कहकर आक्रोश दिखाना	७२-७४	४०१-४०२
३१	आनन्द स्थविर का भगवान के समक्ष गौशालक के वचनों का कथन और भगवान का किया हुआ समाधान	७५	४०२-४०३
३२	भ. महावीर ने गौशालक को छेड़ने का निषेध किया	७६	४०३
३३	गौशालक का भगवान के प्रति आक्रोश वचन कहकर स्वसिद्धान्त निरूपण करना	७७	४०३-४०५
३४	भ. महावीर ने गौशालक के वचनों का प्रतिकार किया	७८	४०५
३५	भगवान के प्रति गौशालक का पुनः आक्रोश	७९	४०५
३६	गौशालक ने सर्वानुभूति मुनि को भस्म कर दिया	८०	४०५-४०६
३७	गौशालक ने सुनक्षत्र मुनि को भी मार दिया	८१	४०६
३८	भ. महावीर ने गौशालक को हितशिक्षा के वचन कहे	८२	४०६
३९	क्रुद्ध गौशालक द्वारा फेंकी गई निष्फल तेजोलेश्या ने गौशालक को ही जलाया	८३	४०६
४०	गौशालक और भ. महावीर ने परस्पर एक दूसरे की मरणकाल मर्यादा का निरूपण किया	८४	४०६
४१	श्रावस्ती के लोगों में चर्चा	८५	४०६
४२	भगवान के कहने से गौशालक से प्रश्न किये	८६	४०७
४३	गौशालक का पृथक संघ	८७	४०७
४४	तेजोलेश्या के दाह से पीड़ित गौशालक ने मद्यपान आदि किये	८८	४०७
४५	भगवान ने गौशालक की तेजोलेश्या का सामर्थ्य और गौशालक का सिद्धान्त कहा	८९	४०७-४०८
४६	आजीविक स्थविरों ने "अयंपुल" को आजीविक उपासक रूप में स्थिर किया अयंपुल अजीविकोपासक हो गया	९०-९३	४०८
४७	गौशालक का अपने मरने के बाद निहरण के सम्बन्ध में निर्देश	९४	४०९-४१०
४८	गौशालक का सम्यक्त्व परिणाम-पूर्वक कालधर्म	९५	४१०
४९	गौशालक का निहरण	९६	४१०
५०	भगवान् के देह में रोग के आतंक का प्रादुर्भाव	९७	४१०-४११
५१	सिंहमुनि का मानसिक दुःख	९८	४११
५२	भगवान् ने सिंहमुनि को आश्वासन दिया	९९-१००	४११
५३	सिंहमुनि रेवती के घर से भैषज्य लाया	१०१-१०४	४११-४१२
५४	भगवान् का आरोग्य	१०५	४१२
५५	सर्वानुभूति और सुनक्षत्रमुनि की देवलोक में उत्पत्ति और सिद्धगति प्राप्त होने का निरूपण	१०६-१०७	४१२
५६	गौशालक के जीव की देवलोक में उत्पत्ति	१०८	४१३
५७	गौशालक का महापद्मभव में जन्म और राज्याभिषेक	१०९	४१३
५८	महापद्म के देवसेन और विमलवाहन ये दो नाम	११०-१११	४१४
५९	विमलवाहन का निर्ग्रन्थों के प्रतिकूल आचरण	११२	४१४
६०	विमलवाहन ने सुमंगल अणगार को उपसर्ग किया	११३	४१४-४१५
६१	सुमंगल मुनि की तेजोलेश्या से विमलवाहन का मरण	११४	११५
६२	सुमंगल मुनि की देवगति और पश्चात् सिद्धगति निरूपण	११५	४१५
७३	गौशालक जीव विमलवाहन के अनेक दुःख प्रचुर भव और बाद में देव भव	११६	४१५-४१८
६४	गौशालक जीव के दृढ़प्रतिज्ञ भव से सिद्धगति का निरूपण	११७	४१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
	छटा स्कन्ध	१-३६१	४२१-५०२
	प्रकीर्णक कथानक अध्ययन १-२१		
१	**भ. महावीर के तीर्थ में श्रेणिक और चेलना के अवलोकन से साधु-साध्वियों के निदान करने का प्रसंग**	१-१३	४२१-४२३
	१ राजगृह में श्रेणिक राजा	१	४२१
	२ भ. महावीर का आगमन -वृत्तान्त जानने के लिए श्रेणिक का कोटुम्बिक पुरुष को आदेश	२-३	४२१
	३ भ. महावीर का समवसरण	४	४२१
	४ महत्तर (नियुक्त कौटुम्बिक) पुरुषों ने श्रेणिक के समक्ष भगवान् के आगमन का निवेदन किया	५	४२१-४२२
	५ श्रेणिक का राजगृह नगर को सुशोभित करने का आदेश और यान आदि लाने का आदेश	६	४२२
	६ चेलना सहित श्रेणिक का समवसरण में जाना और भगवान् की पर्युपासना करना	७-९	४२२-४२३
	७ भगवान् की धर्मदेशना और बाद में श्रेणिक आदि की परिषद् का लौटना	१०	४२३
	८ साधु-साध्वियों का निदान करना	११	४२३
	९ भगवान का निदान करने का निषेध रूप उपदेश सुनकर साधु-साध्वियों का प्रायश्चित्तादि करना	१२-१३	४२३
२	**रथ-मुशल संग्राम**	१४-२०	४२४-४२५
	१ रथ-मुशल-संग्राम में वज्जियों की विजय हुई-इसका निरूपण	१४	४२४
	२ कूणिक का युद्ध के लिए प्रस्थान	१५	४२४
	३ कूणिक को इन्द्र की सहायता	१६	४२४
	४ कूणिक की विजय	१७	४२४
	५ रथ-मुशल संग्राम का स्वरूप	१८	४२४
	६ संग्राम में मृत मनुष्यों की संख्या	१९	४२५
	७ कूणिक की सहायता के लिए इन्द्र के आने का हेतु	२०	४२५
३	**रथ-मुशल संग्राम में काल आदि कुमारों के मरण की कथा**	२१-६४	४२५-४३५
	१ काल आदि दस कुमारों के नामों का कथन	२१	४२५
	२ चम्पानगरी में श्रेणिक राजा का पुत्र कालकुमार	२२	४२५
	३ कूणिक सहित कालकुमार का रथ-मुशल संग्राम में जाना	२३	४२५
	४ भ. महावीर के समवसरण में काली रानी का प्रश्न	२४-२६	४२५-४२६
	५ काली रानी के प्रश्न के उत्तर में भगवान् ने कालीरानी के पुत्र कालकुमार का मरण कहा और कालीरानी स्वस्थान गई	२७-२८	४२६
	६ कालकुमार की नरक गति	२९	४२६
	७ कूणिक चरित्र के अन्तर्गत कालकुमार के नरक गमन के हेतु का भगवान् द्वारा निरूपण	३०	४२७
	८ चेलणा के श्रेणिक मांस-भक्षण दोहद से श्रेणिक की चिन्ता	३१	४२७
	९ अभयकुमार की युक्ति से चेलणा के दोहद की पूर्ति	३२	४२८
	१० चेलणा के गर्भ-पात प्रयत्न की निष्फलता	३३	४२८
	११ चेलणा ने उकरडि पर शिशु को डलवा दिया	३४	४२८
	१२ श्रेणिक के उपालम्भ से चेलणा ने अपने पुत्र का संरक्षण किया	३५	४२९
	१३ श्रेणिक ने पुत्र की वेदना का निवारण किया	३६	४२९
	१४ पुत्र का कूणिक नाम दिया और कूणिक का तारुण्य आदि	३७	४२९
	१५ श्रेणिक को कारागृह में बन्द करके कूणिक ने राज्य श्री प्राप्त की	३८	४२९-४३०
	१६ कूणिक ने अपने पर श्रेणिक का स्नेह चेलणा से जाना	३९	४३०
	१७ श्रेणिक का बंधन छेदन करने के लिए कूणिक का जाना	४०	४३०
	१८ श्रेणिक का तालपुट विषभक्षण और मरण	४१	४३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१९	कूणिक को शोक, शोक मुक्ति और अपने भाइयों में राज्य का विभाजन	४२	४३०
२०	कूणिक सहोदर वेहल्ल ने सेचनक गंध हस्ति-क्रीड़ा की प्रशंसा की	४३	४३१
२१	अपनी भार्या पद्मावती के आग्रह से कूणिक का वेहल्ल से पुनः पुनः हाथी और हार मांगना	४४	४३१
२२	कूणिक के भय से वेहल्ल का चेड़ा राजा के शरण में वैशाली जाना	४५	४३१-४३२
२३	कूणिक ने चेडा के समीप सेचनक गंध हस्ति आदि को लौटाने के लिए दूत भेजा	४६-४७	४३२
२४	चेडा ने वेहल्ल के लिए आधा राज्य मांगा	४८	४३२
२५	कूणिक ने पुनः दूत भेजा	४९	४३२
२६	चेडा ने फिर भी आधा राज्य मांगा	५०	४३२
२७	कूणिक ने युद्ध के लिए पुनः दूत भेजा	५१	४३३
२८	चेडाका युद्ध के लिए सुसज्जित होना	५२	४३३
२९	कूणिक आदि के लिए काल आदिकुमारों का युद्ध के लिए मिलना	५३-५४	४३३
३०	काल आदि कुमारों सहित कूणिक का युद्ध के लिए वैशाली की ओर प्रस्थान	५५	४३३
३१	मल्लकी लेच्छकी सहित चेडा का युद्ध के लिए अपने देश की सीमा पर स्थित होना	५६-५८	४३४
३२	कूणिक और चेडा का युद्ध	५९-६०	४३४
३३	युद्ध में कालकुमार का मरण	६१	४३४
३४	नारक भव के बाद कालकुमार की सिद्धगति का निरूपण	६२	४३५
३५	कालकुमार के अनुसार सुकाल आदि नो कुमारों के कथन का निर्देश	६३-६४	४३५
४	**महाशिलाकंटक संग्राम का कथानक**	**६५-७०**	**४३५-४३६**
१	भगवान् महावीर प्ररूपित कूणिक की जय	६५	४३५
२	शक्र सहित कूणिक का युद्ध में आना	६६-६२०	४३५-४३६
३	मल्लकी और लेच्छकीयों की पराजय	६८	४३६
४	महाशिलाकंटक संग्राम का शब्दार्थ और संग्राम में मरे मनुष्यों की गति	६९-७०	४३६
५	**विजय चौर का उदाहरण**	**७१-१०५**	**४३६-४४४**
१	राजगृह में धन सार्थवाह और भद्राभार्या	७१-७२	४३६-४३७
२	राजगृह में विजय तस्कर	७३	४३७
३	भद्रा का संतान प्राप्ति मनोरथ	७४	४३७-४३८
४	भद्रा ने नाग आदि की पूजा की	७५	४३८
५	भद्रा के दोहद (गर्भ की इच्छा) पूर्ण	७६-७७	४३८-४३९
६	पुत्र जन्म और देवदिन्न नामकरण	७८	४३९
७	देवदिन्न की बालक्रीड़ा	७९	४३९
८	देवदिन्न का विजय चौर ने अपहरण किया	८०	४३९
९	देवदिन्न की गवेषणा	८१-८३	४३९-४४०
१०	विजय चौर का पकडा जाना	८४	४४०
११	देवदिन्न की मृत्यु	८५	४४०
१२	धनसार्थवाह का पकड़ा जाना	८६	४४१
१३	धनसार्थवाह केलिए भोजन घर से जाता था	८७	४४१
१४	विजय चौर ने आहार का भाग मांगा	८८	४४१
१५	धन सार्थवाह ने आहार का भाग नहीं दिया	८९	४४१
१६	मल-मूत्र के वेग से पीड़ित धनसार्थवाह को विजय चौर के सहयोग की अपेक्षा हुई	९०	४४१
१७	विजय चौर ने सहयोग देने के लिए मना कर दिया	९१	४४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मकथानुयोग—विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१८ धनसार्थवाह के पुनः कहने पर विजय चौर ने अपने लिए आहार का भाग मांगा	९२	४४१-४४२
१९ धनसार्थवाह ने विजय चौर को आहार का भाग दिया	९३	४४२
२० पंथक ने भद्रा से विजय चौर को आहार का भाग देने की बात कही	९४	४४२
२१ भद्रा कुपित हो गई	९५	४४२
२२ धनसार्थवाह की कारागृह से मुक्ति	९६	४४२
२३ धनसार्थवाह का सन्मान	९७	४४२
२४ भद्रा ने कोप उपशान्त होने पर सन्मान किया	९८-९९	४४२-४४३
२५ विजय चौर के उदाहरण का निष्कर्श	१००	४४३
२६ धनसार्थवाह के उदाहरण का निष्कर्ष	१०१	४४३
२७ राजगृह में स्थविरों का आगमन	१०२	४४३
२८ धनसार्थवाह की प्रव्रज्या	१०३	४४३-४४४
२९ धनसार्थवाह की महाविदेह से मुक्ति	१०४	४४४
३० धनसार्थवाह के उदाहरण का पुनः निष्कर्ष	१०५	४४४
६ मयूरी के अण्डे का उदाहरण	**१०६-१२१**	**४४४-४४७**
१ चम्पानगरी में मयूरी के अण्डे का संरक्षण स्थान	१०६	४४४
२ चम्पानगरी में सार्थवाह सुपुत्र जिनदत्त और सागरदत्त	१०७	४४५
३ चम्पा नगरी में देवदत्ता गणिका	१०८	४४५
४ सार्थवाह पुत्रों की गणिका के साथ उद्यान क्रीड़ा	१०९-११२	४४५-४४६
५ सार्थवाह पुत्र मयूरी के अण्डे लाये	११३-११४	४४६
६ सागरदत्त के संदेह से अण्डा नष्ट हो गया और इस उदाहरण से शंका अतिचार की सिद्धि	११५-११७	४४६-४४७
७ श्रद्धालु जिनदत्त को मयूर की प्राप्ति हुई और इस उदाहरण से सम्यक्त्व की सिद्धि	११८-१२१	४४७
७ कूर्म का उदाहरण	**१२२-१३१**	**४४८-४४९**
१ वाराणसी से कुछ दूर मृतांगद्रह के समीप मालुका कच्छ के किनारे दो पापी श्रृगाल	१२२-१२३	४४८
२ मृतंगद्रह के किनारे पर दो कछुए	१२४	४४८
३ पापी श्रृगाल शिकार खोजने लगे	१२५	४४८
४ श्रृगालों को देखकर कछुओं ने अपने अंगों को संकुचित कर लिए	१२६	४४८
५ श्रृगालों ने अंग संकुचित न करने वाले कछुये को मार डाला	१२७-१२८	४४८-४४९
६ अंग संकोचन न करने वाले कछुये के उदाहरण से अगुप्तेन्द्रिय के फल का सूचन	१२९	४४९
७ गुप्तेन्द्रिय कूर्म का सुख	१३०	४४९
८ गुप्तेन्द्रिय कूर्म के उदाहरण से गुप्तेन्द्रिय के फल का सूचन	१३१	४४९
८ रोहिणी का उदाहरण	**१३२-१५३**	**४५०-४५४**
१ राजगृह में धनसार्थवाह	१३२	४५०
२ धन सार्थवाह ने चारों पुत्रवधुओं की परीक्षा की	१३३	४५०
३ उज्झिता ने शाली के ५ दाणे फेंक दिये	१३४	४५०
४ भोगवति का ने शाली के ५ दाणे खालिये	१३५	४५१
५ रक्षिता ने शाली के ५ दाणे सुरक्षित रख दिये	१३६	४५१
६ रोहिणी ने शाली के ५ दाणे बढ़ाये	१३७-१४१	४५१-४५२
७ पांच संवत्सर के बाद धनसार्थवाह ने (चारों पुत्रवधुओं से) शाली के ५-५ दाणे मांगे	१४२	४५२
८ उज्झिता को बाहर डालने के कार्य करने का आदेश दिया	१४३-१४४	४५२
९ उज्झिता के उदाहरण से महाव्रत परित्याग के फल का निर्देश	१४५	४५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१०	भोगवति को घर के अन्दर के कार्य करने का आदेश दिया	१४६	४५३
११	भोगवति के उदाहरण से महाव्रत दूषित करने के फल का निर्देश	१४७	४५३
१२	रक्षिता को भण्डार की सुरक्षा का आदेश दिया	१४८-१४९	४५३
१३	रक्षिता के उदाहरण से महाव्रतों की सुरक्षा के फल का निर्देश	१५०	४५३
१४	रोहिणी को सारे अधिकार देने के आदेश दिये	१५१-१५२	४५३-४५४
१५	रोहिणी के उदाहरण से महाव्रतों की वृद्धि के फल का निर्देश	१५३	४५४
९	**अश्वों का उदाहरण**	**१५४-१७३**	**४५५-४५९**
१	हस्तिशीर्ष नगर में सांयात्रिक (नौका द्वारा व्यापार करने वाले वणिक)	१५४	४५५
२	सांयात्रिकों (नावावणिकों) को समुद्र के मध्य में उपद्रव हुआ	१५५	४५५
३	नावानिर्यामक की दिग्मूढ़ता और दिशाबोध	१५६-१५७	४५५
४	सांयात्रिक (नावावणिकों) को कालिक द्वीप में घोड़ों का दिखाई देना	१५८-१५९	४५५
५	सांयात्रिकों (नावावणिकों) का पुनरागमन	१६०	४५६
६	कनककेतु के आदेश से अश्व लाना	१६१-१६३	४५६-४५७
७	अनासक्त अश्वों का स्वायत्त विहार	१६४	४५७
८	अनासक्त अश्वों के उदाहरण से श्रमणादि की अनासक्ति के फल का निर्देश	१६५	४५७
९	आसक्त अश्वों की परवशता	१६६-१७०	४५७-४५८
१०	आसक्त अश्वों के उदाहरण से श्रमणादि की आसक्ति के फल का निर्देश	१७१	४५८
११	सम्यक् दृष्टान्त की उपनय गाथायें	१७२-१७३	४५८-४५९
१०	**मृगापुत्र कथानक**	**१७४-२०४**	**४५९-४६५**
१	मृग गांव में विजय राजा का पुत्र मृगापुत्र	१७४-१७५	४५९
२	मृगापुत्र की जन्मान्धता आदि	१७६	४५९-४६०
३	भ. महावीर के समवसरण में गौतम का जन्मान्ध पुरुष के सम्बन्ध में प्रश्न	१७७-१८१	४६०
४	भगवान ने मृगापुत्र के स्वरूप का निरूपण किया	१८२	४६०
५	गौतम ने मृगापुत्र को देखा	१८३-१९०	४६०-४६१
६	गौतम ने मृगापुत्र के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा	१९१	४६२
७	मृगापुत्र के पूर्वभव की की एक्काइ" नामक राष्ट्रकूट कथा	१९२	४६२
८	"इक्काइ" नामक राष्ट्रकूट का प्रजा-पीड़न	१९३	४६२
९	"इक्काइ" का असाध्य रोगों से पीड़ित होना	१९४-१९५	४६२-४६३
१०	"इक्काइ" का नरकगमन	१९६	४६३
११	मृगापुत्र के वर्तमान भव के वर्णन में मृगादेवी की वेदना और गर्भपात कराने का विचार	१९७-१९८	४६३
१२	गर्भपातजन्य मृगापुत्र का रोगों से पीड़ित होना	१९९	४६३-४६४
१३	मृगापुत्र का जन्मान्ध आदि रूप देखकर मृगावती का उसे उकरडी पर फिकवाने का संकल्प	२००-२०१	४६४
१४	मृगापुत्र का भूमि घर में स्थापन	२०२-२०३	४६४
१५	मृगापुत्र के आगामि भव का वर्णन	२०४	४६४-४६५
११	**उज्झितक का कथानक**	**२०५-२३१**	**४६५-४७०**
१	वाणिज्य ग्राम में सार्थवाह पुत्र उज्झितक	२०५-२०७	४६५
२	भ. महावीर का समवसरण	२०८	४६६
३	गौतम ने उज्झितक के पूर्व भव के सम्बन्ध में पूछा	२०९-२११	४६६
४	उज्झितक के गोत्रास भव का कथानक	२१२	४६६
५	हस्तिनापुर में "भीम" कूटग्राह	२१३-२१४	४६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
६	भीम की भार्या उत्पला का मांस-भक्षण-दोहद	२१५-२१६	४६७
७	भीम ने दोहद पूर्ण किया	२१७	४६७-४६८
८	पुत्र जन्म	२१८	४६८
९	पुत्र का 'गोत्रास' नाम दिया	२१९	४६८
१०	भीम के मरने के बाद गोत्रास को कूटग्राह-पद	२२०	४६८
११	गोत्रास का मांस-भक्षण और नरक आदि के भव	२२१	४६८
१२	उज्झितक के वर्तमान भव का वर्णन	२२२	४६८-४६९
१३	पुत्र का उज्झितक नाम दिया	२२३	४६९
१४	विजय मित्र का लवण समुद्र में मरण	२२४	४६९
१५	सुभद्रा सार्थवाही के मरने पर उज्झितक को घर से निकाल दिया गया	२२५	४६९
१६	उज्झितक का गणिका से सहवास	२२६	४६९
१७	गणिका में आसक्त मित्र राजा ने उज्झितक को प्राण दण्ड दिया	२२७	४६९-४७०
१८	उपसंहार	२२८	४७०
१९	उज्झितक के आगामिभव का वर्णन	२२९-२३१	४७०
१२	**अभग्नसेन का कथानक**	**२३२-२५७**	**४७१-४७६**
१	पुरिमताल नगर के समीप चोर पल्ली में चोर सेनापति विजय का पुत्र अभग्नसेन	२३२-२३५	४७१
२	भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने अभग्नसेन के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा	२३६-२३७	४७१-४७२
३	अभग्नसेन के निन्नक भव की कथा	२३७-२३९	४७२
४	अण्डवणिक निन्नक का जीवन और उसकी नरक में उत्पत्ति	२४०	४७२
५	अभग्नसेन के वर्तमान भव का वर्णन	२४१	४७२
६	स्कंद श्री का दोहद	२४२	४७२-४७३
७	विजय ने दोहद पूर्ण किया	२४३-२४४	४७३
८	पुत्र का अभग्नसेन नाम दिया वह युवा हो गया	२४५	४७३
९	विजय के मरने के बाद अभग्न सेन का चौर-सेनापति होना	२४६	४७३
१०	अभग्नसेन को प्राणदण्ड देने की महब्बलराजा की आज्ञा	२४७-२५०	४७४
११	अभग्नसेन ने राजा की सेना को परास्त कर दी	२५१	४७४
१२	राजा ने दस रात्रि का उत्सव घोषित किया	२५२	४७५
१३	अभग्नसेन का पुरिमताल में राजा के अतिथि रूप में जाना	२५३	४७५
१४	राजा ने अभग्नसेन को पकड़वाया	२५४-२५५	४७५-४७६
१५	उपसंहार	२५६	४७६
१६	अभग्नसेन के आगामी भव की कथा	२५७	४७६
१३	**शकट का कथानक**	**२५८-२७१**	**४७६-४७८**
१	साहंजणी नगरी में सार्थवाह पुत्र शकट	२५८	४७६
२	भ. महावीर के समवसरण में शकट के पूर्व भव की कथा	२५९	४७६
३	शकट के छन्निक छागलिक के भव का वर्णन	२६०-२६१	४७७
४	छन्निक मांसाहार करना और मांस का व्यापार करना	२६२	४७७
५	छन्निक का मरण और उसकी नरक में उत्पत्ति	२६३	४७७
६	शकट के वर्तमान भव की कथा	२६४	४७७
७	पुत्र का शकट नाम रखना, उसे घर से निकालना और उसका वेश्या के वश हो जाना	२६५-२६६	४७७-४७८
८	अमात्य नेशकट को गणिका के घर से निकाला और उसे प्राणदण्ड दिया	२६७-२६९	४७८
९	उपसंहार	२७०	४७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
१०	शकट के आगामी भव की कथा	२७१	४७८
१४	**बृहस्पतिदत्त का कथानक**	**२७२-२८१**	**४७९-४८०**
१	कौशाम्बि में पुरोहित पुत्र बृहस्पतिदत्त	२७२	४७९
२	भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने बृहस्पतिदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा	२७३	४७९
३	बृहस्पतिदत्त के महेश्वरदत्त भव की कथा	२७४	४७९
४	महेश्वरदत्त ने शान्तिहोम में ब्राह्मण आदि के बच्चों की बलि दी	२७५	४७९
५	महेश्वरदत्त का नरक में उत्पन्न होना	२७६	४७९
६	बृहस्पतिदत्त के वर्तमान भव का वर्णन	२७७	४८०
७	बृहस्पतिदत्त का उदयन राजा की राजमहिषी के साथ भोग भोगना	२७८	४८०
८	राजा ने बृहस्पतिदत्त को प्राण दण्ड दिया	२७९	४८०
९	उपसंहार	२८०	४८०
१०	बृहस्पतिदत्त के आगामी भव की कथा	२८१	४८०
१५	**नन्दिवर्धनकुमार की कथा**	**२८२-२९१**	**४८१-४८३**
१	मथुरा में नन्दिवर्धन कुमार	२८२	४८१
२	भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने नन्दिवर्धन के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा	२८३	४८१
३	नन्दिवर्धन के दुर्योधन भव की कथा	२८४	४८१
४	चरक पाल बना दुर्योधन	२८५	४८१-४८२
५	दुर्योधन की चर्या	२८६	४८२
६	नन्दिवर्धन के वर्तमान भव की कथा	२८७	४८३
७	नन्दिवर्धन का पिता को मारने का संकल्प	२८८	
८	राजा ने नन्दिवर्धन को प्राणदण्ड दिया	२८९	४८३
९	उपसंहार	२९०	४८३
१०	नन्दिवर्धन के आगामी भव का वर्णन	२९१	४८३
१६	**उम्बरदत्त का कथानक**	**२९२-३०८**	**४८४-४८७**
१	पाटलिपुत्र में उम्बरदत्त	२९२	४८४
२	भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने उम्बरदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा	२९३-२९७	४८४-४८५
३	उम्बरदत्त के धन्वन्तरी भव की कथा	२९८	४८५
४	धन्वन्तरी वैद्य ने मांसाहार से चिकित्सा कार्य किया	२९९	४८५
५	नरक में उत्पत्ति	३००	४८५
६	उम्बरदत्त के वर्तमान भव की कथा	३०१	४८५-४८६
७	गंगदत्त ने उम्बरदत्त यक्ष की पूजा की	३०२	४८६
८	गंगदत्ता का दोहद	३०३-३०४	४८६-४८७
९	पुत्र का "उम्बरदत्त" नाम दिया और वह युवा हुवा	३०५	४८७
१०	माता-पिता के मरने के बाद उम्बरदत्त को घर से निकाल दिया गया	३०६	४८७
११	उपसंहार	३०७	४८७
१२	उम्बरदत्त के आगामी भव का प्ररूपण	३०८	४८७
१७	**सूर्यदत्त का कथानक**	**३०९-३१९**	**४८८-४९०**
१	सूर्यपुर में सूर्यदत्त	३०९	४८८
२	भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने सूर्यदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा	३१०	४८८
३	सूर्यदत्त के श्री भव की कथा	३११-३१४	४८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धर्मकथानुयोग–विषय-सूची	सूत्रांक	पृष्ठांक
४	सूर्यदत्त के वर्तमान भव की कथा	३१५	४८९
५	सूर्यदत्त की दुश्चर्या	३१६-३१७	४९०
६	उपसंहार	३१८	४९०
७	सूर्यदत्त के आगामी भव का प्ररूपण	३१९	४९०
१८	**देवदत्ता का कथानक**	**३२०-३३६**	**४९०-४९४**
१	रोहिड नगर में देवदत्ता	३२०	४९०
२	भ महावीर के समवसरण में गौतम ने देवदत्ता के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा	३२१	४९०
३	देवदत्ता के सीहसेन भव की कथा	३२२	४९०-४९१
४	सीहसेन राजा की श्यामा राणी में आसक्ति	३२३	४९१
५	श्यामा का कोप घर में प्रवेश	३२४	४९१
६	सीहसेन ने श्यामा की १०० सपत्नियों को आग में जला दी	३२५	४९१-४९२
७	सीहसेन की नरक में उत्पत्ति	३२६	४९२
८	देवदत्ता का वर्तमान भव	३२७	४९२
९	वैश्रमणदत्त राजा ने युवराज के लिए देवदत्ता की याचना की	३२८-३३०	४९२-४९३
१०	देवदत्ता और पुष्यनन्दिका का पाणिग्रहण	३३१	४९३
११	पिता का मरण और पुष्यनन्दि को राज्य	३३२	४९३-४९४
१२	देवदत्ता ने पुष्यनन्दि की मां को मार दिया	३३३	४९४
१३	पुष्यनन्दि ने देवदत्ता को प्राण दण्ड दिया	३३४	४९४
१४	उपसंहार	३३५	४९४
१५	देवदत्ता के आगामी भव का प्ररूपण	३३६	४९४
१९	**अंजू का कथानक**	**३३७-३४३**	**४९५-४९६**
१	वर्धमानपुर में अंजू	३३७	४९५
२	अंजू के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न	३३८	४९५
३	अंजू के पृथ्वी श्री भव की कथा	३३९	४९५
४	अंजू के वर्तमान भव की कथा	३४०-३४१	४९५
५	उपसंहार	३४२	४९६
६	अंजू के आगामी भव का प्ररूपण	३४३	४९६
२०	**पूरण बालतपस्वी का कथानक**	**३४४-३५८**	**४९६-५००**
१	बेभेल सन्निवेश में पूरण गाथापति	३४४	४९६
२	पूरण की दानामा प्रव्रज्या	३४५	४९६-४९७
३	पूरण की संलेखना	३४६	४९७
४	महावीर का छद्मस्थ काल में सुसुमारपुर में विहार	३४७	४९७
५	पूरण का चमरचंचा में असुरेन्द्र के रूप में उपपात	३४८	४९७
६	शकेन्द्र के वैभव से चमरेन्द्र को ईर्ष्या उत्पन्न हुई	३४९	४९८
७	भ. महावीर की निश्रा में चमरेन्द्र का शकेन्द्र को अपमानित करने के लिए जाना	३५०	४९९
८	शक्रेन्द्र ने चमरेन्द्र पर वज्र फेंका	३५१	४९९
९	चमरेन्द्र ने भ. महावीर के चरणों की शरण ली	३५२	४९९
१०	शक्रेन्द्र का भी भ. महावीर के समीप आना और वज्र को रोकना	३५३	४९९
११	शक्रेन्द्र ने भगवान से क्षमायाचना की और असुरेन्द्र को निर्भय कर दिया	३५४	४९९-५००
१२	शक्रादि की गति के विषय में गौतम के प्रश्न और भगवान के समाधान	३५५	५००-५०१
१३	भ. महावीर के समीप चमरेन्द्र का पुनरागमन	३५६-३५८	५०१
२१	**महाशुक्र कल्प के देवों का भ. महावीर के समीप आने का प्रसङ्ग**	**३५९-३६१**	**५०२**
१	देवताओं के मन से किये गये प्रश्नों का भ. महावीर ने मन से ही उत्तर दिया	३५९	५०२
२	भ. महावीर ने गौतम के मनोगत भाव कहे	३६०	५०२
३	गौतम का देवताओं के समीप जाना	३६१	५०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमो खंधो

उत्तमपुरिस-कहाणगाणि

अज्झयणा

मंगलसुत्ताणि

१ कुलगरा

२ उसह-चरियं

३ मल्ली-चरियं

४ अरिट्ठनेमि-चरियं

५ पास-चरियं

६ महावीर-चरियं

७ पउम-चरियं

८ तित्थयर-सामण्णं

९ भरहचक्कवट्टी-चरियं

१० चक्कवट्टी-सामण्णं

११ बलदेव-वासुदेवसामण्णं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्हं

मंगलसुत्ताणि

१ णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ।।[1]

भग० स० १, उ० १, सु० १ ।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।[2]

आव०नि०गा० १०१८ ।

२ १. अरिहंता मंगलं, २. सिद्धा मंगलं, ३. साहू मंगलं,
४. केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ।

३ १. अरिहंता लोगुत्तमा, २. सिद्धा लोगुत्तमा, ३. साहू लोगुत्तमा,
४. केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।

४ १. अरिहंते सरणं पवज्जामि, २. सिद्धे सरणं पवज्जामि, ३. साहू सरणं पवज्जामि,
४. केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

आव० अ० ४, सु० १२, १३, १४ ।

१. कुलगरा

५ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीयाए ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, तं जहा–

संगहणी-गाहा
मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे । विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ।।१।।

सम० सु० १५७ । ठाणं० अ० ७. सु० ५५६ ।

६ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा होत्था, तं जहा–

१ सूरि० पा० १, सु० १ । आव० अ० १, सु० १ ।
२ विसे० गा० ३९२५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संगहणी-गाहा
सयंजले सयाऊ य, अणंतसेणे य अजितसेणे य । कक्कसेणे भीमसेणे, महाभीमसेणे य सत्तमे ।।१।।
दढरहे, दसरहे, सयरहे ।। ठाणं० अ० १०, सु० ७६७ । सम० सु० १५७ ।

७ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति, तं जहा–
मित्तवाहणे सुभूमे य, सुप्पभे य सयंपभे । दत्ते, सुहूमे, सुबंधू य, आगमेस्साण होक्खति ।।१।।
ठाणं० अ० ७, सु० ५५६ । सम० सु० १५८ ।

८ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति, तं जहा–
सीमंकरे, सीमंधरे, खेमंकरे, खेमंधरे, विमलवाहणे, संमुती, पडिसुते, दढधणू, दसधणू, सतधणू ।।
ठाणं० अ० १०, सु० ७६७ । सम० सु० १५९ ।

९ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए आगमिस्साए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति, तं जहा–
विमलवाहणे, सीमंकरे, सीमंधरे, खेमंकरे, खेमंधरे । दढधणू, दसधणू, सयधणू, पडिसूई, संमुइ त्ति ।।१।।
सम० सु० १५८ ।

१० विमलवाहणे णं कुलकरे णव धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ।। ठाणं० अ० ९ सु० ६९६ ।

११ विमलवाहणे णं कुलकरे सत्तविधा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिसु, तं जहा–
मत्तंगया य भिगा, चित्तंगा चेव होंति चित्तरसा । मणियंगा य अणियणा, सत्तमगा कप्परुक्खा य ।।१।।[1]
ठाणं० अ० ७, सु० ५५६ ।

१२ अभिचंदे णं कुलगरे छ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।। ठाणं० अ० ६, सु०५१८ । सम० सु० १०९, ५ ।

१३ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, तं जहा–
पढमेत्थ विमलवाहण, चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे । तत्तो य पसेणइए, मरुदेवे चेव नाभी य ।।१।।

१४ एतेसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारियाओ होत्था, तं जहा–
चंदजस चंदकंता, सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य । सिरिकंता मरुदेवी, कुलगरइत्थीण णामाइं ।।१।।
ठाणं० अ० ७, सु० ५५६ । सम० सु० १५७ ।

१५ तीसे णं समाए पच्छिमे तिभाए पलिओवमट्ठमभागावसेसे एत्थ णं इमे पण्णरस कुलगरा समुप्पज्जित्था तं जहा-
१. सुमइ २. पडिस्सुइ ३. सीमंकरे ४. सीमंधरे ५. खेमंकरे ६. खेमंधरे ७. विमलवाहणे ८. चक्खुमं ९. जसमं
१०. अभिचंदे ११. चंदाभे १२. पसेणइ १३. मरुदेवे १४. णाभी १५. उसभे त्ति ।। जंबु० व०२ सु० २८ ।

१६ सत्तविधा दंडनीति पण्णत्ता, तं जहा– हक्कारे, मक्कारे, धिक्कारे, परिभासे, मंडलबंधे, चारए, छविच्छेदे ।।
ठाणं० अ० ७, सु० ५५७ ।

१७ तत्थ णं सुमइ-पडिस्सुइ-सीमंकर-सीमंधर-खेमंकराणं एएसिं पंचण्हं कुलगराणं हक्कारे दंडणीई होत्था-
ते णं मणुआ हक्कारेणं दंडेणं हया समाणा लज्जिया विलज्जिया वेड्डा भीया तुसिणिया विणओणया चिट्ठंति ।
तत्थ णं खेमंधर-विमलवाहण-चक्खुमं-जसमं-अभिचंदाणं-एएसि णं पंचण्हं कुलगराणं मक्कारे णामं दंडणीई होत्था-
ते णं मणुया मक्कारेणं दंडेणं हया समाणा-जाव-चिट्ठंति ।
तत्थ णं चंदाभ-पसेणइ-मरुदेव-नाभि-उसभाणं एएसिणं पंचण्हं कुलगराणं धिक्कारे णामं दंडणीई होत्था-
ते णं मणुया धिक्कारेणं दंडेणं हया समाणा - जाव - चिट्ठंति ।। जंबु० व० २ सु० २९ ।

---

१ ठाणं० अ०१०, सु०७६६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. उसह-चरियं

कल्लाणग-नक्खत्ताइं

१८ तेणं कालेणं तेणं समएणं उसहे णं अरहा कोसलिए चउ-उत्तरासाढे अभीइ-पंचमे होत्था, तं जहा –

१. उत्तरासाढाहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
२. उत्तरासाढाहिं जाए,
३. उत्तरासाढाहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,
४. उत्तरासाढाहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे किसिणे पडिपुन्ने केवलवर-नाण-दंसणे समुप्पन्ने,
५. अभिइणा परिणिव्वुए ।[1]

कप्प० सु० १९० ।

गब्भवक्कंती

१९ णाभिस्स णं कुलगरस्स मरुदेवीए भारियाए कुच्छिंसि एत्थ णं उसभे णामं अरहा कोसलिए पढमराया पढमजिणे पढमकेवली पढमतित्थयरे पढमधम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टी समुप्पज्जित्था ।[2]

जंबु० व० २ सु० ३० ।

जम्म-कल्लाणयं

२० तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभे अरहा कोसलिए जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुले तस्स णं चित्तबहुलस्स अट्ठमीपक्खेणं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं - जाव- आसाढाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं आरोग्गा आरोग्गं पयाया ।[3]

कप्प० सु० १९३ ।

---

१ उसभे णं अरहा कोसलिए पंचउत्तरासाढे अभीइछट्ठे होत्था, तं जहा--

१. उत्तरासाढाहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
२. उत्तरासाढाहिं जाए,
३. उत्तरासाढाहिं रायाभिसेयं पत्ते,
४. उत्तरासाढाहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,
५. उत्तरासाढाहिं अणंते - जाव - केवल-वर-नाण-दंसणे समुप्पन्ने,
६. अभिइणा परिणिव्वुए । जंबु० वक्ष० २ सु० ३२ ।

२ तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभे णं अरहा कोसलिए जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे आसाढबहुले तस्स णं आसाढबहुलस्स चउत्थी पक्खेणं सव्वट्ठसिद्धाओ महाविमाणाओ तेत्तीससागरोवमट्ठितीयाओ अणंतर चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इक्खागभूमीए नाभिस्स कुलगरस्स मरुदेवीए भारियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि आहारवक्कंतीए - जाव-गब्भत्ताए वक्कंते ।। कप्प० सु० १९१ ।।
उसभे अरहा कोसलिए तिन्नाणोवगए होत्था तं जहा - चइस्सामि त्ति जाणइ - जाव - सुमिणे पासइ, तं जहा- गाहा - गय उसह - जाव - सिहिं च ।
सव्वं तहेव, नवरं सुविणपाढगा णत्थि । नाभी कुलगरो वागरेइ ।।कप्प० सु० १९२।।
उसभे णं कोसलिए कासवगुत्तेणं, तस्स णं पंच नामधिज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा--
उसभे इ वा, पढमराया इ वा, पढमभिक्खाचरे इ वा, पढमजिणे इ वा, पढमतित्थकरे इ वा ।।कप्प० सु० १९४।।

३ तं चेव - जाव - देवा देवीओ य वसुहारवासं वासिसु सेसं तहेव चारगसोहणं, माणुम्माणवड्ढणं, उस्सुक्कमाईयं, ठिइपडियवज्जं सव्वं भाणियव्वं ।। कप्प० सु० १९३ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहोलोगीय-दिसाकुमारी-कय-जम्म-महिमा

२१ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहोलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरीआओ सएहिं सएहिं कूडेहिं, सएहिं सएहिं भवणेहिं, सएहिं सएहिं पासायवडेंसएहिं, पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं य महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसएहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं य बहूहिं भवणवइ-वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडाओ महया हय-णट्ट-गीय - वाइय - जाव - भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति, तं जहा –

गाहा– १ भोगंकरा, २ भोगवई, ३ सुभोगा, ४ भोगमालिणी।
५ तोयधारा, ६ विचित्ता, ७ पुप्फमाला, ८ अणिंदिया[1] ॥१॥

२२ तए णं तासिं अहेलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारीणं महत्तरियाणं पत्तेयं पत्तेयं आसणाइं चलंति।

तए णं ताओ अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ पत्तेयं पत्तेयं आसणाइं चलियाइं पासन्ति, पासित्ता ओहिं पउंजंति, पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएंति आभोइत्ता अण्णमण्णं सद्दाविंति, सद्दावित्ता, एवं वयासी –

"उप्पण्णे खलु भो ! जम्बुद्दीवे दीवे भयवं तित्थयरे तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पण्णमणागयाणं अधोलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारीमहत्तरियाणं भगवओ तित्थगरस्स जम्मण-महिमं करेत्तए",

तं गच्छामो णं अम्हे वि भगवओ जम्मणमहिमं करेमो त्ति कट्टु एवं वयंति, एवं वइत्ता पत्तेयं पत्तेयं आभिओगिए देवे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी –

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखम्भसयसण्णिविट्ठे लीलट्ठियसालभंजिआकलियं एवं विमाणवण्णओ भाणियव्वो- जाव- जोयणवित्थिण्णे दिव्वे जाणविमाणे विउव्वह विउव्वित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह त्ति।"

२३ तए णं ते आभियोगा देवा अणेगखम्भसय-सण्णिविट्ठे - जाव- पच्चप्पिणंति,

तए णं ताओ अहेलोग-वत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारी-महत्तरियाओ हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिया -जाव- पायपीढाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं -जाव- अण्णेहिं बहूहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडाओ ते दिव्वे जाणविमाणे दुरूहंति,

दुरूहित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुईए घण-मुइंग-पणव-पवाइय-रवेणं ताए उक्किट्ठाए -जाव- देवगईए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मण-णगरे जेणेव तित्थयरस्स जम्मण-भवणे तेणेव उवागच्छन्ति,

उवागच्छित्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए ईसिं चउरंगुलमसंपत्ते धरणियतले दिव्वे जाणविमाणे ठविंति,

ठवित्ता पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं -जाव- सद्धिं संपरिवुडाओ दिव्वेहिंतो जाणविमाणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता सव्विड्ढीए -जाव- दुंदुहि-निग्घोस-णाइएणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करित्ता पत्तेयं पत्तेयं करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी –

२४ "णमोऽत्थु ते रयणकुच्छिधारिए जगप्पईवदाईए सव्वजगमंगलस्स चक्खुणो य मुत्तस्स सव्वजग-जीव-वच्छलस्स हियकारग-मग्ग-देसिय-वागिद्धि-विभु-पभुस्स जिणस्स णाणिस्स णायगस्स बुहस्स बोहगस्स सव्वलोग-णाहस्स सव्वजगमंगलस्स-णिम्ममस्स पवरकुलसमुइभवस्स जाइए खत्तियस्स जंसि लोगुत्तमस्स जणणी धण्णासि तं पुण्णासि कयत्थासि।

---

१ अट्ठ अहोलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
गाहा- भोगंकरा भोगवई सुभोगा भोगमालिणी ॥ सुवच्छा वच्छमित्ता य वारिसेणा बलाहगा ॥ १ ॥
ठाणं० अ० ८, सु० ६४३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अम्हे णं देवाणुप्पिए! अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ भगवओ तित्थगरस्स जम्मण-महिमं करिस्सामो । तण्णं तुब्भेहिं ण भाइयव्वं" ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमन्ति ।

२५ अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं डंडं णिसिरंति, तं जहा- रयणाणं -जाव- संवट्टगवाए विउव्वंति, विउव्वित्ता तेणं सिवेणं मउएणं मारुएणं अणुद्धुएणं भूमितलविमलकरणेणं मणहरेणं सव्वोउय-सुरहि-कुसुम-गंधाणुवासिएणं पिण्डिम-णीहारिमेणं गंधुद्धुएणं तिरियं पवाइएणं भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमण्डलं ।

से जहा णामए - कम्मगरदारए सिया -जाव- तहेव जं तत्थ तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, कयवरं वा, असुइमचोक्खं पूइयं दुब्भि-गंधं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय एगंते एडेंति, एडित्ता जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयर-मायाए य अदूरसामंते आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ।।

जंबु० व० ५, सु० ११२ ।

उड्ढलोगीय-दिसाकुमारी-कय-जम्म-महिमा

२६ तेणं कालेणं तेणं समएणं उड्ढलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ सएहिं सएहिं कूडेहिं, सएहिं सएहिं भवणेहिं, सएहिं सएहिं पासायवडेंसएहिं पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं एवं तं चेव पुव्ववण्णियं -जाव- विहरंति, तंजहा–

गाहा – १ मेहंकरा, २ मेहवई, ३ सुमेहा, ४ मेहमालिणी,
५ सुवच्छा, ६ वच्छमित्ता य, ७ वारिसेणा, ८ बलाहगा[1] ।।१।।

२७ तए णं तासिं उड्ढलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारीमहत्तरियाणं पत्तेयं पत्तेयं आसणाइं चलन्ति,

एवं तं चेव भाणियव्वं - पुव्ववण्णियं -जाव- अम्हे णं देवाणुप्पिए! उड्ढलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ जेणं भगवओ तित्थगरस्स जम्मण-महिमं करिस्सामो तेणं तुब्भेहिं ण भाइयव्वं ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता -जाव- अब्भवद्दलए विउव्वन्ति, विउव्वित्ता- जाव– तं णिहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं पसंतरयं उवसंतरयं करेंति, करित्ता खिप्पामेव पच्चुवसमंति ।

एवं पुप्फवद्दलंसि पुप्फवासं वासंति, वासित्ता -जाव- कालागरुपवर -जाव- सुरवराभिगमणजोग्गं करेंति, करित्ता जेणेव भयवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता- जाव- आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ।।

जंबु० व० ५, सु० ११३

रुयगवासी-दिसाकुमारी-कय-जम्म-महिमा

२८ तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरत्थिम-रुयग-वत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ सएहिं सएहिं कूडेहिं तहेव -जाव- विहरंति, तं जहा –

गाहा– १ णंदुत्तरा य, २ णंदा, ३ आणंदा, ४ णंदिवद्धणा ।
५ विजया य, ६ वेजयंती, ७ जयंती, ८ अपराजिया ।।१।।

---

१ अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा-

गाहा - मेघंकरा मेघवई सुमेघा मेघमालिणी । तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिया ।।१।।ठाणं० अ० ८, सु० ६४३ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेसं तहेव-जाव-तुब्भाहिं ण भाइयव्वं ति कट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमायाए य पुरित्थिमेणं आयंस-हत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति।

२९ तेणं कालेणं तेणं समएणं दाहिण-रुयग-वत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ तहेव -जाव- विहरंति, तं जहा –

गाहा – १ समाहारा, २ सुप्पइण्णा, ३ सुप्पबुद्धा, ४ जसोहरा।
५ लच्छिमई, ६ सेसवई, ७ चित्तगुत्ता, ८ वसुंधरा ॥१॥

तहेव -जाव- तुब्भाहिं ण भाइयव्वं ति कट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरस्स माऊए य दाहिणेणं भिंगारहत्थगयाओ आगाय-माणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति।

३० तेणं कालेणं तेणं समएणं पच्चत्थिम-रुयग-वत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ सएहिं सएहिं कूडेहिं -जाव- विहरंति, तं जहा –

गाहा – १ इलादेवी, २ सुरादेवी, ३ पुहवी, ४ पउमावई।
५ एगणासा, ६ णवमिया, ७ भद्दा, ८ सीया य अट्ठमा[1] ॥१॥

सेसं तहेव -जाव- तुब्भाहिं ण भाइयव्वं ति कट्टु-जाव-भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य पच्चत्थिमेणं तालियंटहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति।

३१ तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरिल्ल-रुयग-वत्थव्वाओ -जाव- विहरंति, तं जहा –

गाहा – १ अलंबुसा, २ मिस्सकेसी, ३ पुण्डरीया य, ४ वारुणी।
५ हासा, ६ सव्वप्पभा, ७ चेव हिरि, ८ सिरि, चेव उत्तराओ[2] ॥१॥

तहेव - जाव - वंदित्ता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य उत्तरेणं चामरहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति।

३२ तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसि-रुयग-वत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ - जाव - विहरंति, तंजहा –

गाहा – १ चित्ता य, २ चित्तकणगा, ३ सतेरा, ४ य सोदामिणी[3]।

तहेव - जाव - ण भाइयव्वं ति कट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयर-माऊए य चउसु विदिसासु दीविया-हत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्ति त्ति।

---

१ ठाणं० अ० ८, सु० ६४३।

२ तत्थ णं अट्ठदिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ -जाव- पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति, तं जहा-
गाहा--अलंबुसा मितकेसी पोंडरिगी य वारुणी। आसा य सव्वगा चेव, सिरि हिंरी चेव उत्तरओ ॥१॥
ठाणं० अ० ८, सु० ६४३।

३ इमाइं चत्तारि नामाइं ठाणंगे चउत्थे ठाणे पढमे उद्देसे विज्जुकुमारिमहत्तरियाणं संति,
चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा--१ चित्ता, २ चित्तकणगा, ३ सएरा, ४ सोयामणी ॥
ठाणं०अ० ४, उ० १, सु० २५९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्झिम-रुयगवासी-दिसाकुमारी-महत्तरिया-कय-णाभि-णालकत्तणं

३३ तेणं कालेणं तेणं समएणं मज्झिम-रुयग-वत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारी-महत्तरियाओ सएहिं सएहिं कूडेहिं तहेव -जाव- विहरंति, तं जहा –

गाहा – १ रूया, २ रूआसिया, चेव, ३ सुरूआ, ४ रुयगावई[1] ।

तहेव -जाव -तुब्भाहिं ण भाइयव्वं ति कट्टु भगवओ तित्थयरस्स चउरंगुलवज्जं णाभि-णालं कप्पन्ति, कप्पेत्ता वियरगं खणन्ति खणित्ता वियरगे णाभिं णिहणंति, णिहणित्ता रयणाण य, वइराण य पूरेंति, पुरित्ता हरियालियाए पेढं बंधंति, बंधित्ता तिदिसिं तओ कयलीहरए विउव्वंति ।

तए णं तेसिं कयलीहरगाणं बहुमज्झदेसभाए तओ चाउस्सालए विउव्वंति,

तए णं तेसिं चाउस्सालगाणं बहुमज्झदेसभाए तओ सीहासणे विउव्वंति,

तेसि णं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते । सव्वो वण्णगो भाणियव्वो ।।

जंबु० व० ५, सु० ११४ ।

दिसाकुमारी-कय-माया-पुत्ताणं मज्जणाइ-किच्चं

३४ तए णं ताओ मज्झ-रुयग-वत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तराओ जेणेव भयवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं करयल-संपुडेणं गिण्हन्ति । तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हन्ति, गिण्हित्ता जेणेव दाहिणिल्ले कयलीहरए जेणेव चाउस्सालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छन्ति उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेंति णिसीयावित्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेंति, अब्भंगित्ता सुरभिणा गंधवट्टएणं, उवट्टेंति, उवट्टित्ता भगवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं तित्थयरमायरं च बाहासु गिण्हन्ति, गिण्हिता जेणेव पुरत्थिमिल्ले कयलीहरए जेणेव चाउस्सालए, जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेंति णिसियावेत्ता तिहिं उदएहिं मज्जावेंति, तंजहा–

१ गन्धोदएणं, २ पुप्फोदएणं, ३ सुद्धोदएणं मज्जावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति करित्ता भगवं तित्थयरं करयल-पुडेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हन्ति, गिण्हित्ता जेणेव उत्तरिल्ले कयलीहरए जेणेव चाउस्सालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेंति, णिसीयावित्ता आभिओगे देवे सद्दाविन्ति, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चुल्लहिमवन्ताओ वासहरपव्वयाओ गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरह ।"

तएणं ते आभिओगा देवा ताहिं मज्झरुयगवत्थव्वाहिं चउहिं दिसाकुमारीमहत्तरियाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-तुट्ठ-जाव-विणएणं वयणं पडिच्छन्ति पडिच्छित्ता खिप्पामेव चुल्लहिमवन्ताओ वासहरपव्वयाओ सरसाइं गोसीसचन्दणकट्ठाइं साहरन्ति ।

तए णं ताओ मज्झिम-रुयग-वत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सरगं करेन्ति, करित्ता अरणिं घट्टेंति घट्टित्ता सरएणं अरणिं महिंति महित्ता अग्गिं पाडेंति, पाडित्ता अग्गिं संधुक्खंति, संधुक्खित्ता गोसीसचन्दणकट्ठे पक्खिवन्ति, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालंति, उज्जालित्ता, समिहाकट्ठाइं पक्खिवंति, पक्खिवित्ता, अग्गिहोमं करेंति, करित्ता भूइकम्मं,[2] करेंति, करित्ता

---

१ छ दिसाकुमारि महत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा- १ रूवा, २ रूवंसा, ३ सुरूवा, ४ रूववई, ५ रूवकंता, ६ रूवप्पभा ।।
ठाणं० अ० ४ उ० १ सु० २५९; ठाणं० अ० ६, सु० ५०७ ।

२ जेण कम्मेण कट्ठाइं भस्सरूवाइं भवंति तं तारिसं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रक्खा[1]-पोट्टलियं[2] बंधन्ति बंधित्ता णाणा-मणि-रयण-भत्तिचित्ते दुविहे पाहाणवट्टगे गहाय भगवओ तित्थयरस्स कण्णमूलंमि टिट्टियाविन्ति भवउ भयवं पव्वयाउए पव्वयाउए।

३५ तए णं ताओ मज्झ-रुयग-वत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ भयवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हन्ति, गिण्हित्ता जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणे तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता तित्थयरमायरं सयणिज्जंसि णिसीयाविंति, णिसीयावित्ता भयवं तित्थयरं माऊए पासे ठवेंति, ठवित्ता आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्ती त्ति।।

जंबु० व० ५, सु० ११४।

देविन्द-सक्कस्स तित्थयर-जम्मनगरे गमणं

३६ तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के णामं देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे सतक्कतू सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढ-लोगाहिवई बत्तीसविमाणावाससय-सहस्साहिवई एरावण-वाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइय-मालमउडे णवहेम-चारु-चित्त-चंचलकुण्डल-विलिहिज्जमाणगंडे भासुरबोंदी पलम्बवणमाले महिड्ढीए महज्जुईए महाबले महायसे महाणुभागे महासोक्खे सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसाह-स्सीणं, चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं, सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं चउरासीणं आयरक्ख-देव-साहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं सोहम्मकप्प-वासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महया हय-णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुपडह-वाइय-रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

३७ तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणं चलइ।
तए णं से सक्के-जाव-आसणं चलियं पासइ, पासइत्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएई, आभोइत्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्ते आणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहय-कयंब-कुसुम-चंचुमालइय-ऊसविय-रोमकूवे वियसिय-वर-कमल-णयण-वयणे पयलियवरकडग-तुडिय-केऊर-मउडे, कुण्डलहार-विरायंत-वच्छे, पालम्ब-पलम्ब-माण-घोलंत-भूस-णधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेरुलिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-अंजण-णिउणोविय-मिसिमिसित-मणि-रयण-मंडियाओ पाउआओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करित्ता अंजलिमउलियग्गहत्थे तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठ-पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेई, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणीयलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि णिवेसेइ, णिवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडगतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी –

३८ "णमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवन्ताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं,
पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुण्डरीयाणं पुरिसवरगन्धहत्थीणं,
लोगुत्तमाणं लोगणाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं,
अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं, बोहिदयाणं,
धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरन्तचक्कवट्टीणं,
दीवो ताणं सरणं-गई-पइट्ठा अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं वियट्टछउमाणं,
जिणाणं जावयाणं, तिण्णाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं,
सिवमयलमरुयमणन्तमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं णमो जिणाणं जियभयाणं।

---

१ भस्सेति वा भप्पेति वा भूईति वा रक्खाति वा एगट्ठा।

२ जीयंति काऊण बंधिज्जंती भस्सपोट्टलिया तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णमोऽत्थु णं भगवओ तित्थगरस्स आइगरस्स-जाव-संपाविउकामस्स ।

वदामि णं भगवन्तं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भयवं ! तत्थगए इहगयं"

त्ति कट्टु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।

३९ तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो य अयमेयारूवे - जाव - संकप्पे समुप्पज्जित्था । उप्पण्णे खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भगवं तित्थयरे तं जीयमेयं तीय-पच्चुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं तित्थयराणं जम्मणमहिमं करेत्तए,

तं गच्छामि णं अहंपि भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेमि त्ति कट्टु एवं संपेहेई, संपेहित्ता हरिणेगमेसिं पायत्ताणीयाहिवइं देवं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघ-रसिय-गंभीर-महुरयर-सद्दं जोयणपरिमण्डलं सुघोसं सूसरं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयाहि –

"आणवेइ णं भो ! सक्के देविंदे देवराया, गच्छइ णं भो ! सक्के देविंदे देवराया जम्बुद्दीवे दीवे भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-महिमं करित्तए, तं तुब्भे वि णं देवाणुप्पिया! सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वणाडएहिं सव्वोवरोहेहिं सव्व-पुप्फ-गंध-मल्लालंकार-विभूसाए सव्व-दिव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं महया इड्ढीए जाव रवेणं णियय-परियाल-संपरिवुडा सयाइं सयाइं जाणविमाण-वाहणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं चेव सक्कस्स-जाव-अंतियं पाउब्भवह ।"

४० तए णं से हरिणेगमेसी देवे पायत्ताणीयाहिवई सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा -जाव- एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ -जाव- एवं देवे त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमई पडिणिक्खमित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए मेघोघ-रसिय-गम्भीर-महुरयरसद्दा जोयण-परिमण्डला सुघोसा घण्टा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं मेघोघ-रसिय-गम्भीर-महुरयर-सद्दं जोयण-परिमण्डलं सुघोसं घण्टं तिक्खुत्तो उल्लालेई ।

तए णं तीसे मेघोघ-रसिय-गम्भीर-महुरयर-सद्दाए जोयण-परिमण्डलाए सुघोसाए घण्टाए तिक्खुत्तो उल्लालियाए समाणीए सोहम्मे कप्पे अण्णेहिं एगूणेहिं बत्तीस-विमाणावास-सयसहस्सेहिं अण्णाइं एगूणाइं बत्तीसं घण्टा-सय-सहस्साइं जमगसमगं कणकणारावं काउं पयताइं हुत्था इति ।

तए णं सोहम्मे कप्पे पासाय-विमाण-णिक्खुडावडिय-सद्द-समुट्ठिय-घण्टा-पडिसुय-सय-सहस्ससंकुले जाए यावि होत्था ।

४१ तए णं तेसिं सोहम्मकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगन्त-रइ-पसत्त-णिच्च-प्पमत्त-विसय-सुह-मुच्छिआणं सूसर-घण्टारसिय-विउल-बोल-पूरिय-चवल-पडिबोहणे कए समाणे घोसण-कोऊहल-दिण्ण-कण्ण-एगग्ग-चित्त-उवउत्त-माणसाणं से पायत्ताणीयाहिवई देवे तंसि घण्टारवंसि णिसंतपडिसंतंसि समाणंसि तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयासी –

"हन्त ! सुणंतु भवंतो बहवे सोहम्मकप्पवासी वेमाणियदेवा देवीओ य सोहम्मकप्पवइणो, इणमो वयणं हियसुहत्थं आणावइ णं भो ! सक्के तं चेव-जाव-अंतियं पाउब्भवह त्ति ।"

४२ तए णं ते देवा देवीओ य एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ - जाव - हियया अप्पेगइया वन्दणवत्तियं, णमंसणवत्तियं एवं, पूअणवत्तियं सक्कारवत्तियं, सम्माणवत्तियं, दंसणवत्तियं जिणभत्तिरागेणं । अप्पेगइया सक्कस्स वयणमणुवट्टमाणा, अप्पेगइया अण्णमण्णमणुयत्तमाणा । अप्पेगइया तं जीयमेयं एवमाइ त्ति कट्टु- जाव -पाउब्भवंति त्ति ।

४३ तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते वेमाणिए देवे देवीओ य अकालपरिहीणं चेव अंतियं पाउब्भवमाणे पासइ पासइत्ता हट्ठे पालयं णामं आभिओगिप्पं देवं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी –

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेग-खम्भ-सय-सण्णिविट्ठं लीलट्ठिय-सालभंजियाकलियं ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइर-वेइया-परिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयल-जंत-जुत्तं-पिव अच्ची-सहस्स-मालिणीयं रुवग-सहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घण्टावलि-चलिय-महुर-मणहर-सरं सुहं कन्तं दरिसणिज्जं णिउणोविय-मिसिमिसिंत-मणि-रयण-घंटिया-जाल-परिक्खित्तं जोयण-सहस्स-वित्थिण्णं पंच-जोयण-सयमुव्विद्धं सिग्घं तुरियं जइणणिव्वाहिदिव्वं जाणविमाणं विउव्वाहि विउव्वित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि"

जंबु०व० ५, सु० ११५।

४४ तए णं से पालयदेवे सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-जाव-वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणित्ता तहेव करेइ त्ति।

४५ तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवगा वण्णओ,

४६ तेसिं णं पडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं तोरणा वण्णओ -जाव- पडिरूवा।

४७ तस्स णं जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे। से जहा णामए आलिंग-पुक्खरेइ वा -जाव- दीविय-चम्मेइ वा अणेग-संकु-कीलग-सहस्स-वियए आवड-पच्चावड-सेढि-पसेढि-सुत्थिय-सोवत्थिय-वद्धमाण-पूसमाणव-मच्छंडग-मगरंडग-जार-मार-फुल्लावलि- पउमपत्त- सागरतरंग-वसंतलय-पउमलय-भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं णाणाविह-पंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए उवसोभिए।

४८ तेसि णं मणीणं वण्णे गन्धे फासे य भाणियव्वे,[1]

४९ तस्स णं भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए पेच्छाघरमण्डवे अणेगखम्भसयसण्णिविट्ठे, वण्णओ -जाव- पडिरूवे।

५० तस्स उल्लोए पउमलय-भत्तिचित्ते -जाव- सव्व-तवणिज्जमए -जाव- पडिरूवे।

५१ तस्स णं मण्डवस्स बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागंसि महं एगा मणिपेढिया अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खम्भेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई वण्णओ।

५२ तीए उवरिं महं एगे सीहासणे वण्णओ।

५३ तस्सुवरिं महं एगे विजयदूसे सव्वरयणामए वण्णओ।

५४ तस्स मज्झदेसभाए एगे वइरामए अंकुसे। एत्थ णं महं एगे कुम्भिक्के मुत्तादामे, से णं अण्णेहिं तदद्धुच्चत्त-प्पमाण-मित्तेहिं चउहिं अद्धकुम्भिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वओ समन्ता संपरिक्खित्ते।

ते णं दामा तवणिज्ज-लंबूसगा सुवण्ण-पयरग-मण्डिया णाणा-मणि-रयण-विविह-हारद्धहार-उवसोभिया समुदया ईसिं अण्ण-मण्णमसंपत्ता पुव्वाइएहिं वाएहिं मन्दं मन्दं एइज्जमाणा एइज्जमाणा-जाव-निव्वुइकरेणं सद्देणं ते पएसे आपूरेमाणा आपूरेमाणा -जाव- अईव अईव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति त्ति।

५५ तस्स णं सीहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउरासीए सामाणिय-साहस्सीणं चउरासीइ-भद्दासणसाहस्सीओ पुरत्थिमेणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं।

---

१ जहा रायप्पसेणइज्जे (कंडिका ३४–४०) इति मूले पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भिंतरपरिसाए दुवालसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणेणं मज्झिमाए चउदसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए सोलसण्हं देवसाहस्सीणं पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं ति ।

तए णं तस्स सोहासणस्स चउद्दिसिं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं ।
एवमाई विभासियव्वं सूरियाभगमेणं-जाव-पच्चप्पिणन्ति त्ति ।

जंबु० व० ५, सु० ११६ ।

५६ तए णं से सक्के - जाव - हट्ठ-हियए दिव्वं जिणेंदाभिगमण-जुग्गं सव्वालंकार-विभूसियं उत्तरवेउव्वियं रूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं णट्टाणीएणं गन्धव्वाणीएण य सद्धिं तं विमाणं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे अणुप्पयाहिणीकरेमाणे पुव्विल्लेणं तिसोवाणेणं दुरूहइ, दुरूहित्ता-जाव-सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे त्ति ।

५७ एवं चेव सामाणिया वि उत्तरेणं तिसोवाणेणं दुरूहइ दुरूहित्ता पत्तेयं पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति ।
अवसेसा य देवा देवीओ य दाहिणिल्लेणं तिसोवाणेणं दुरूहइ दुरूहित्ता तहेव -जाव- णिसीयंति ।

५८ तए णं तस्स सक्कस्स तंसि दुरूढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

५९ तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा य दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेजयन्ती य समूसिया गगणतलमणुलिहंति पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

६० तयणन्तरं च णं छत्तभिंगारं ।

६१ तयणंतरं च णं वइरामयवट्ट-लट्ठ-संठिय-सुसिलिट्ठ-परिघट्ट-पट्ट -सुपइट्ठिए विसिट्ठे अणेगवरपंचवण्णकुडभी-सहस्स-परिमण्डियाभिरामे वाउद्धुय-विजय-वेजयन्ती-पडागा-छत्ताइच्छत्त-कलिए तुंगे गयण-तलमणुलिहंत-सिहरे जोयण-सहस्समूसिए महइमहालए महिंदज्झए पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिए त्ति ।

६२ तयणन्तरं च णं सरूव-णेवत्थ-परियच्छिय-सुसज्जा सव्वालंकारविभूसिया पंच अणिया पंच अणियाहिवइणो -जाव- संपट्ठिया ।

६३ तयणन्तरं च णं बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य सएहिं सएहिं रूवेहिं- जाव -णिओगेहिं सक्कं देविंदं देवरायं पुरओ य मग्गओ य पासओ अ अहाणुपुव्वीए संपलिए त्ति ।

तयणन्तरं च णं बहवे सोहम्मकप्पवासी देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए-जाव-दुरूढा समाणा मग्गओ य - जाव - संपट्ठिया ।

६४ तए णं से सक्के तेणं पंचाणियपरिक्खित्तेणं -जाव- महिंदज्झएणं पुरओ पकड्ढिज्जमाणेणं चउरासीए सामाणिय-जाव-परिवुड़े । सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झं मज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढिं-जाव-उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जोयणसयसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे ओवयमाणे ताए उक्किट्ठाए -जाव- देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे तिरियमसंखिज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव णंदीसरवरे दीवे जेणेव दाहिणपुरत्थिमिल्ले रइकरग-पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं जा चेव सूरियाभस्स वत्तव्वया । णवरं सक्काहिगारो वत्तव्वो -जाव- तं दिव्वं देविड्ढिं -जाव- दिव्वं जाणविमाणं पडिसाहरमाणे पडिसाहरमाणे -जाव- जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-णगरे जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता भगवओ.तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभागे चउरंगुलमसंपत्तं धरणियले तं दिव्वं जाणविमाणं ठवेइ ठवित्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं दोहिं अणीएहिं गन्धव्वाणीएण य णट्टाणीएण य सद्धिं ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति,

अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति त्ति ।

६५ तए णं से सक्के देविन्दे देवराया चउरासीए समाणियसाहस्सिएहिं-जाव-सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहिणिग्घोसणाइय-रवेणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता आलोए चेव पणामं करेइ, करित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता करयल -जाव- एवं वयासी-

"णमोऽत्थु ते रयणकुच्छिधारिए एवं जहा दिसाकुमारीओ -जाव- धण्णासि पुण्णासि-तं कयत्थाऽसि,

"अहण्णं देवाणुप्पिए! सक्के णामं देविंदे देवराया तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामि, तं णं तुब्भाहिं ण भाइयव्वं"-ति कट्टु ओसोवणिं दलयइ, दलयित्ता तित्थयरपडिरूवगं विउव्वइ, विउव्वित्ता तित्थयरमाउयाए पासे ठवेइ, ठवित्ता पंच सक्के विउव्वइ ।

विउव्वित्ता एगे सक्के भगवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं गिण्हइ,
एगे सक्के पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ,
दुवे सक्का उभओ पासिं चामरुक्खेवं करेन्ति,
एगे सक्के पुरओ वज्जपाणी पकड्ढइ त्ति ।

६६ तए णं से सक्के देविन्दे देवराया अण्णेहिं बहूहिं भवणवइ-वाणमन्तर-जोइस-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-णाइएणं ताए उक्किट्ठाए-जाव-वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेव मन्दरे पव्वए जेणेव पंडगवणे जेणेव अभिसेयसिला जेणेव अभिसेयसीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे त्ति ।।

जंबु० व० ५, सु० ११७ ।

ईसाणाइ-इंद-कय-जम्म-महिमा

६७ तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविन्दे देवराया सूलपाणी वसभवाहणे सुरिन्दे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे एवं जहा सक्के ।

इमं णाणत्तं-महाघोसा घण्टा लहुपरक्कमो पायत्ताणियाहिवई, पुप्फओ विमाणकारी, दक्खिणे निज्जाणमग्गे, उत्तरपुरत्थिमिल्ले, रइकरगपव्वओ मन्दरे समोसरिओ - जाव - पज्जुवासइ त्ति ।

६८ एवं अवसिट्ठा वि इंदा भाणियव्वा - जाव - अच्चुओ त्ति ।
इमं णाणत्तं -
गाहा - चउरासीइ असीई, बावत्तरि सत्तरी य सट्ठी य । पण्णा चत्तालीसा, तीसा वीसा दस सहस्सा ।। १ ।।

६९ एए सामाणियाणं :-
गाहा - बत्तीसट्ठावीसा, बारसट्ठ चउरो सयसहस्सा । पण्णा चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ।। १ ।।

७० आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयाऽऽरणच्चुए तिण्णि ।

७१ एए विमाणाणं इमे जाणविमाणकारी देवा, तंजहा --
गाहा - १ पालय, २ पुप्फे, य ३ सोमणसे, ४ सिरिवच्छे य, ५ णंदियावत्ते ।
६ कामगमे, ७ पीइगमे, ८ मणोरमे, ९ विमल, १० सव्वओभद्दे ।। १ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७२ सोहम्मगाणं सणंकुमारगाणं बंभलोयगाणं महासुक्कयाणं पाणगाणं इंदाणं सुघोसा घण्टा, हरिणेगमेसी पायत्ताणीयाहिवई, उत्तरिल्ला णिज्जाणभूमी, दाहिणपुरत्थिमिल्ले रइकरग-पव्वए ।

७३ ईसाणगाणं माहिंद-लंतग-सहस्सार-अच्चुयगाण य इंदाण महाघोसा घण्टा, लहुपरक्कमो पायत्ताणीयाहिवई, दक्खिणिल्ले णिज्जाणमग्गे, उत्तरपुरत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए ।

सेसं तं चेव परिसाओ[1] आयरक्खा सामाणियचउग्गुणा, सव्वेसिं जाणविमाणा सव्वेसिं जोयणसयसहस्सवित्थिण्णा उच्चत्तेणं सविमाणप्पमाणा, महिंदज्झया सव्वेसिं जोयणसाहस्सिया, सक्कवज्जा मन्दरे समोयरंति-जाव-पज्जुवासंति त्ति ।।

जंबु० व० ५, सु० ११८ ।

असुरिंद-चमर-कय-जम्म-महिमा

७४ तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिन्दे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं, तायतीसाए तायत्तीसेहिं, चउहिं लोगपालेहिं, पचहिं अग्गमहिसीहिं, सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, चउहिं चउसट्ठीहिं आयरक्खदेव-साहस्सीहिं, अण्णेहि य जहा सक्के ।

णवरं-इमं णाणत्तं-दुमो पायत्ताणीयाहिवई, ओघस्सरा घण्टा, विमाणं पण्णासं जोयणसहस्साइं, महिन्दज्झओ पंचजोयणसयाइं, विमाणकारी आभिओगिओ देवो, अवसिट्ठं त्तं चेव-जाव-मन्दरे समोसरइ पज्जुवासइ त्ति ।

जंबु० व० ५, सु० ११९ ।

आसुरिंदबली-आइ-कय-जम्म-महिमा

७५ तेणं कालेणं तेणं समएणं बली असुरिन्दे असुरराया एवमेव
णवरं सट्ठी सामाणियसाहस्सीओ, चउगुणा आयरक्खा, महादुमो पायत्ताणीयाहिवई, महाओहस्सरा घण्टा सेसं तं चेव परिसाओ[2]

७६ तेणं कालेणं तेणं समएणं धरणे तहेव ।

७७ णाणत्तं-छ सामाणियसाहस्सीओ, छ अग्गमहिसीओ, चउग्गुणा आयरक्खा, मेघस्सरा घण्टा, भद्दसेणो पायत्ताणीयाहिवई, विमाणं पणवीसं जोयणसहस्साइं, महिंदज्झओ, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं । एवमसुरिन्दवज्जियाणं भवणवासिइंदाणं ।

णवरं असुराणं ओघस्सरा घण्टा, णागाणं मेघस्सरा, सुवण्णाणं हंसस्सरा, विज्जूणं कोंचस्सरा, अग्गीणं मंजुस्सरा, दिसाणं मंजुघोसा, उदहीणं सुस्सरा, दीवाणं महुरस्सरा, वाऊणं णंदिस्सरा, थणियाणं णंदिघोसा ।

गाहा- चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च सहस्सा उ असुरवज्जाणं । सामाणिया उ एए चउग्गुणा आयरक्खा उ ।। १ ।।

७८ दाहिणिल्लाणं पायत्ताणीयाहिवई भद्दसेणो, उत्तरिल्लाणं दक्खो त्ति ।

७९ वाणमन्तर-जोइसिया णेयव्वा एवं चेव ।

णवरं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ, चत्तारि अग्गमहिसीओ, सोलस आयरक्खसहस्सा, विमाणा सहस्सं, महिन्दज्झाया पणवीसं जोयणसयं, घण्टा दाहिणाणं मंजुस्सरा, उत्तराणं मंजुघोसा, पायत्ताणीयाहिवई विमाणकारी य आभिओगा देवा । जोइसियाणं सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसाओ घण्टाओ, मन्दरे समोसरणं- जाव -पज्जुवासंति त्ति ।।

जंबु० व० ५, सु० ११९ ।

---

१ जहा जीवाभिगमे-जीवा० पडि० ३, उ० ३, सु० २०८ ।

२ जहा जीवाभिगमे-जीवा० पडि० ३, उ० १, सु० ११८, ११९, १२० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्चुय-देविंद-कय-तित्थयराभिसेओ

८० तए णं से अच्चुए देविन्दे देवराया महं देवाहिवे आभिओगे देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! महत्थं महग्घं महरिहं विउलं तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह ।"

८१ तए णं ते आभिओगा देवा हट्ठतुट्ठ-जाव-पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमन्ति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं-जाव-समोहणित्ता अट्ठसहस्सं सोवण्णियकलसाणं ।

एवं रुप्पमयाणं मणिमयाणं सुवण्णरुप्पमयाणं सुवण्णमणिमयाणं रुप्पमणिमयाणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं, अट्ठसहस्सं भोमिज्जाणं, अट्ठसहस्सं चन्दणकलसाणं ।

एवं भिंगाराणं आयंसाणं थालाणं पाईणं सुपइट्ठगाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं वायकरगाणं पुप्फचंगेरीणं एवं जहा सूरिआभस्स सव्व चंगेरिओ सव्व पडलगाइं विसेसियतराइं भाणियव्वाइं ।

सीहासण-छत्त-चामर-तेल्लसमुग्ग-जाव-सरिसवसमुग्गा तालियंटा-जाव-अट्ठसहस्सं कडुच्छुगाणं विउव्वंति विउव्वित्ता साहाविए वेउव्विए य कलसे- जाव -कडुच्छुए य गिण्हित्ता जेणेव खीरोदए समुद्दे तेणेव आगम्म खीरोदगं गिण्हन्ति, गिण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं पउमाइं- जाव -सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति ।

एवं पुक्खरोदाओ-जाव-भरहेरवयाणं मागहाइतित्थाणं उदगं मट्टियं च गिण्हन्ति ।

एवं गंगाईणं महाणईणं-जाव-चुल्लहिमवन्ताओ सव्वतुवरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले-जाव-सव्वोसहीओ सिद्धत्थए य गिण्हिन्ति, गिण्हित्ता पउमद्दहाओ दहोदगं उप्पलाईणि य ।

८२ एवं सव्वकुल-पव्वएसु वट्टवेयड्ढेसु सव्वमहद्दहेसु सव्ववासेसु सव्वचक्कवट्टिविजएसु वक्खार-पव्वएसु अंतरणईसु विभासिज्जा-जाव-उत्तरकुरूसु-जाव-सुदंसण-भद्दसालवणे सव्वतुवरे-जाव-सिद्धत्थए य गिण्हन्ति ।

८३ एवं णंदणवणाओ सव्वतुवरे -जाव- सिद्धत्थए य सरसं गोसीसचन्दणं दिव्वं च सुमणदामं गेण्हंति ।
एवं सोमणस-पंडगवणाओ य सव्वतुवरे -जाव- सुमणदामं दद्दर-मलय-सुगन्धे य गिण्हंति गिण्हित्ता एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव सामी तेणेव उवागच्छन्ति उवागच्छित्ता महत्थं-जाव-तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेंति त्ति ।

जंबु० व० ५, सु० १२० ।

८४ तए णं से अच्चुए देविन्दे दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं, तावत्तीसाए तायत्तीसएहिं, चउहिं लोगपालेहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे तेहिं साभाविएहिं वेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चन्दणकयचच्चाएहिं आविद्धकण्ठेगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं करयलसुकुमालपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं-जाव-अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं-जाव-सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं--जाव-सव्वोसहि-सिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए-जाव- रवेणं महया महया तित्थयराभिसेएणं अभिसिंचइ ।

८५ तए णं सामिस्स महया महया अभिसेयंसि वट्टमाणंसि इंदाइया देवा छत्त-चामर-धूव-कडुच्छुअ-पुप्फ-गंध-जाव-कलसहत्थगया हट्ठतुट्ठ-जाव-वज्जसूलपाणी पुरओ चिट्ठंति पंजलिउडा इति ।
एवं विजयाणुसारेण -जाव-अप्पेगइया देवा आसियसंमज्जिओवलित्तसित्तसुइसम्मट्ठरत्थंतरावणवीहियं करेन्ति-जाव-गन्धवट्टिभूयं ति ।
अप्पेगइया हिरण्णवासं वासिंति ।
एवं सुवण्ण-रयण-वइर-आभरण-पत्त-पुप्फ-फल-बीय-मल्ल-गन्ध-वण्ण जाव चुण्णवासं वासंति ।
अप्पेगइया हिरण्णविहिं भाइंति ।
एवं-जाव-चुण्णविहिं भाइंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८६ अप्पेगइया चउव्विहं वज्जं वाएन्ति, तं जहा- १ ततं, २ विततं, ३ घणं, ४ झुसिरं ।

८७ अप्पेगइया चउव्विहं गेयं गायन्ति, तं जहा - १ उक्खित्तं, २ पायत्तं, ३ मन्दाइयं ४ रोइयावसाणं ।

८८ अप्पेगइया चउव्विहं णट्टं णच्चन्ति , तं जहा- १ अंचियं, २ दुयं, ३ आरभडं, ४ भसोलं ।
अप्पेगइया चउव्विहं अभिणयं अभिणयंति, तं जहा - १ दिट्ठंतियं, २ पाडिस्सुइयं, ३ सामण्णोवणिवाइयं, ४ लोगमज्झावसाणियं ।
अप्पेगइया बत्तीसइविहं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेन्ति ।
अप्पेगइया उप्पयनिवयं निवयउप्पयं संकुचियपसारियं -जाव- भन्तसंभन्तणामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंती ति ।

८९ अप्पेगइया पीणेन्ति, एवं बुक्कारेन्ति, अप्पेगइया तंडवेंति, अप्पेगइया लासेन्ति, अप्फोडेन्ति, वग्गन्ति, सीहणायं णदन्ति, अप्पेगइया सव्वाइं करेन्ति,

९० अप्पेगइया हयहेसियं । एवं हत्थिगुलुगुलाइयं, रहघणघणाइयं, अप्पेगइया तिण्णि वि, अप्पेगइया उच्छोलन्ति, अप्पेगइया पच्छोलन्ति अप्पेगइया तिवइं छिदन्ति, पायदद्दरयं करेन्ति, भूमिचवेडे दलयन्ति, अप्पेगइया महया महया सद्देणं रावेंति । एवं संजोगा विभासियव्वा ।
अप्पेगइया हक्कारेन्ति । एवं पुक्कारेन्ति थक्कारेन्ति ओवयंति उप्पयंति परिवयंति जलन्ति तवंति पतवंति गज्जंति विज्जुयायंति वासिंति अप्पेगइया देवुक्कलियं करेंति । एवं देवकहकहगं करेंति, अप्पेगइया दुहुदुहुगं करेंति ।

९१ अप्पेगइया विकियभूयाइं रूवाइं विउव्वित्ता पणच्चंति ।

९२ एवमाइ विभासेज्जा जहा विजयस्स -जाव- सव्वओ समन्ता आधावेंति परिधावेंति त्ति ।

जंबु० व० ५, सु० १२१ ।

९३ तए णं से अच्चुइंदे सपरिवारे सामिं तेणं महया महया अभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं-जाव-मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता ताहिं इट्ठाहिं- जाव -जयजयसद्दं पउंजइ, पउंजित्ता- जाव -पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गन्धकासाईए गायाइं लूहेइ, लूहित्ता–

९४ एवं- जाव - कप्परुक्खगं पिव अलंकियविभूसियं करेइ, करित्ता - जाव - णट्टविहिं उवदंसेइ, उवदंसित्ता अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसतण्डुलेहिं भगवओ सामिस्स पुरओ अट्ठट्ठमंगलगे आलिहइ, तंजहा :–
गाहा- १ दप्पण, २ भद्दासण, ३ वद्धमाण, ४ वरकलस, ५ मच्छ, ६ सिरिवच्छा ।
७ सोत्थिअ, ८ णन्दावत्ता, लिहिआ अट्ठट्ठमंगलगा ।। १ ।।

९५ लिहिऊण करेइ उवगारं, किं ते ? पाडल-मल्लिअ-चंपग-असोग-पुन्नाग-चुअमंजरि-णवमालिअ-बउल-तिलय-कणवीर-कुंद-कुज्जक-कोरंटक-पत्त-दमणग-वर-सुरभिगंध-गंधिअस्स कयग्गाहगहिअ-करयल-पब्भट्ठ-विप्पमुक्कस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमणिअरस्स तत्थ चित्तं जण्णुस्सेहप्पमाणमित्तं ओहिनिकरं करेत्ता चंदप्पभ-रयण-वइर-वेरुलिय-विमलदण्डं, कंचण-मणि-रयण-भत्तिचित्तं, कालागुरु-पवर-कंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-गंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुअंतं वेरुलियमयं कडुच्छुअं पग्गहित्तु पयत्तेण धूवं दाऊण जिणवरिंदस्स सत्तट्ठपयाइं ओसरित्ता दसंगुलियं अंजलिं करिय मत्थयंमि पयओ अट्ठसयविसुद्धगन्धजुत्तेहिं महावित्तेहिं अपुणरुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं संथुणइ ।

९६ संथुणित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता - जाव - करयलपरिग्गहियं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–
"णमोऽत्थु ते सिद्ध-बुद्ध-णीरय-समण-समाहिय-समत्त-समजोगि-सल्लगत्तण-णिब्भय-णीरागदोस-णिम्मम-णिस्संग-णीसल्ल-माणमूरण-गुणरयण-सीलसागरमणंतमप्पमेय-भविय-धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टी !
"णमोऽत्थु ते अरहओ त्ति" कट्टु एवं वन्दइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे- जाव -पज्जुवासइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईसाणाइ-कय-तित्थयराभिसेओ

९७ एवं जहा अच्चुयस्स तहा - जाव - ईसाणस्स भाणियव्वं ।

९८ एवं भवणवइ-वाणमन्तर-जोइसिया य सूरपज्जवसाणा सएणं परिवारेणं पत्तेयं पत्तेयं अभिसिंचंति ।

९९ तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया पंच ईसाणे विउव्वइ, विउव्वित्ता--
एगे ईसाणे भगवं तित्थयरं करयल-संपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।
एगे ईसाणे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ ।
दुवे ईसाणा उभओ पासिं चामरुक्खेवं करेन्ति ।
एगे ईसाणे पुरओ सूलपाणी चिट्ठइ ।

देविंदसक्क-कय-तित्थयराभिसेओ

१०० तए णं से सक्के देविन्दे देवराया आभिओगे देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एसो वि तह चेव अभिसेयाणत्तिं देइ तेऽवि तह चेव उवणेन्ति ।

१०१ तए णं से सक्के देविन्दे देवराया भगवओ तित्थयरस्स चउद्दिसिं चत्तारि धवल-वसभे विउव्वेइ सेए संखदल-विमल-णिम्मल-दधि-घण-गोखीर-फेण-रययणिगर-प्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।
तए णं तेसिं चउण्हं धवल-वसभाणं अट्ठहिं सिंगेहिंतो अट्ठ तोअधाराओ णिगच्छंति ।
तए णं ताओ अट्ठ तोयधाराओ उड्ढं वेहासं उप्पयन्ति, उप्पित्ता एगओ मिलायन्ति, मिलाइत्ता भगवओ तित्थयरस्स मुद्धाणंसि णिवयंति ।

१०२ तए णं से सक्के देविन्दे देवराया चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं एयस्स वि तहेव अभिसेओ भाणियव्वो - जाव - णमोऽत्थु ते अरहओ त्ति कट्टु वन्दइ णमंसइ - जाव - पज्जुवासइ ।

जंबु० व० ५, सु० १२२ ।

१०३ तए णं से सक्के देविंदे देवराया पंच सक्के विउव्वइ, विउव्वित्ता--

एगे सक्के भयवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं गिण्हइ ।
एगे सक्के पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ ।
दुवे सक्का उभओ पासिं चामरुक्खेवं करेंति ।
एगे सक्के वज्जपाणी पुरओ पकड्ढइ ।

१०४ तए णं से सक्के चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं - जाव -अण्णेहि य भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए - जाव - णाइयरवेणं ताए उक्किट्ठाए जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-णयरे जेणेव जम्मण-भवणे जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं माऊए पासे ठवेइ, ठवित्ता तित्थयरपडिरूवगं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता ओसोवणिं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता एगं महं खोमजुअलं कुंडलजुअलं च भगवओ तित्थयरस्स उस्सीसगमूले ठवेइ, ठवित्ता एगं महं सिरिदामगंडं तवणिज्जलंबूसगं सुवण्णपयरगमंडियं णाणामणि-रयण-विविह-हारद्धहार-उवसोहियसमुदयं भगवओ तित्थयरस्स उल्लोयंसि णिक्खिवइ । तण्णं भगवं तित्थयरे अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणे देहमाणे सुहंसुहेणं अभिरममाणे अभिरममाणे चिट्ठइ ।

१०५ तए णं से सक्के देविंदे देवराया वेसमणं देवं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी -

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बत्तीसं हिरण्णकोडीओ, बत्तीसं सुवण्णकोडीओ, बत्तीसं णंदाइं, बत्तीस भद्दाइं सुभगे सुभगरूव-जुव्वण-लावण्णे य भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणंसि साहराहि, साहरित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।"
तए णं से वेसमणे देवे सक्केणं-जाव-विणएणं वयणं पडिसुणेइ पडिसुणेइत्ता जंभए देजे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बत्तीसं हिरण्णकोडीओ -जाव- भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणंसि साहरह, साहरित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।"
तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्टतुट्ठ- जाव -खिप्पामेव बत्तीसं हिरण्णकोडीओ - जाव - भगवओ तित्थगरस्स जम्मणभवणंसि साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव- जाव -पच्चप्पिणंति ।
तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया- जाव -पच्चप्पिणइ ।

१०६ तए णं सक्के देविंदे देवराया आभिओगे देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-णयरंसि सिंघाडग - जाव - महापहपहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदह-
"हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा य, देवीओ य जे णं देवाणुप्पिया ! तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए वा असुभं मणं पधारेइ, तस्स णं अज्जगमंजरिया इव सयहा मुद्धाणं फुट्टउ त्ति कट्टु घोसणं घोसेह, घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह" त्ति ।
तए णं ते आभिओगा देवा- जाव -एवं देवोत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता खिप्पामेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणणगरंसि सिंघाडग - जाव - एवं वयासी-
"हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवइ - जाव - जे णं देवाणुप्पिया ! तित्थयरस्स-जाव-फुट्टिही" ति कट्टु घोसणगं घोसेंति, घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

१०७ तए णं ते बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा भगवओ तित्थगरस्स जम्मण-महिमं करेंति, करित्ता जेणेव नंदिस्सरे दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेंति, करित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।

जंबु० व० ५, सु. १२३ ।

उसहेण लेहाइ-उवएसो :

१०८ तए णं उसभे अरहा कोसलिए वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसइ, वसित्ता तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झे वसइ,

तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झे वसमाणे लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ[1] चोसट्ठिं महिलागुणे[2] सिप्पसयं च[3] कम्माणं तिण्णि[4] वि पयाहियाए उवदिसइ, त्ति ।

उसहस्स पव्वज्जा :

१०९ उवदिसित्ता पुत्तसयं[5] रज्जसए[6] अभिसिंचइ,
अभिसिंचित्ता तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झे वसइ,
वसित्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे, पढमे पक्खे चित्तबहुले तस्स णं चित्तबहुलस्स णवमीपक्खेणं दिवसस्स पच्छिमे भागे

---

१. सम० स० ७२, सु० ७ ।
२. जम्बु० व० २, सु० ३०, टीका ।
३. जम्बु० व० २, सु० ३०, टीका ।
४. जीवाभि० पडि० ३, उ० ३ सु० १११ ।
५. जंबु० व० २ सु० ३०, टीका ।
६. जंबु० व० २, सु० ३०, टीका ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चइत्ता हिरण्णं, चइत्ता सुवण्णं, चइत्ता कोसं, चइत्ता कोट्ठागारं, चइत्ता बलं, चइत्ता वाहणं, चइत्ता पुरं, चइत्ता अंतेउरं, चइत्ता जणवयं, चइत्ता विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्त-रयण-संतसार-सावइज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दायं दाइया णं परिभाएत्ता सुदंसणाए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे संखिय-चक्किय-णंगलिय-मुहमंगलिय-पूसमाणग-वद्धमाणग-आइक्खग-लंख-मंख-घंटिय-गणेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरियाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं गंभीराहिं कण्णमण-णिव्वुइकराहिं अट्ठसइयाहिं अपुणरुत्ताहिं वग्गूहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता य एवं वयासी–

"जय जय नंदा ! जय जय भद्दा ! धम्मेणं अभीए परीसहोवसग्गाणं खंतिखमे भय-भेरवाणं धम्मे ते अविग्घं भवउ," त्ति कट्टु अभिणंदंति य अभिथुणंति य ।

११० तए णं उसभे अरहा कोसलिए णयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे एवं- जाव -णिग्गच्छइ,- जाव -आउलबोलबहुलं णभं करेंते विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ ।

१११ आसिय-सम्मज्जिय-सित्त-सुइक-पुप्फोवयार-कलियं सिद्धत्थवणविउलरायमग्गं करेमाणे हय-गय-रह-पहकरेण पाइक्कचड-करेण य मंदं मंदं उद्धयरेणुयं करेमाणे करेमाणे जेणेव सिद्धत्थवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठावेइ ।
ठावित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ,
पच्चोरुहित्ता सयमेवाभरणालंकारं ओमुयइ,
ओमुइत्ता सयमेव चउहिं अट्ठाहिं (मुट्ठिहिं) लोयं करेइ, करित्ता छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं आसाढाहिं णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उग्गाणं भोगाणं राइन्नाणं खत्तियाणं चउहिं सहस्सेहिं सद्धिं एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

जंबु० व० २, सू० ३० ।

उसहस्स अचेलयत्तं उवसग्गसहणं य

११२ उसभे णं अरहा कोसलिए संवच्छर-साहियं चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेलए ।

११३ जप्पभिइं च णं उसभे अरहा कोसलिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए तप्पभिइं च णं उसभे अरहा कोसलिए णिच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा - दिव्वा वा - जाव - पडिलोमा वा अणुलोमा वा । तत्थ पडिलोमा वेत्तेण वा - जाव - कसेण वा काए आउट्टेज्जा, अणुलोमा वंदेज्ज वा - जाव -पज्जुवासेज्ज वा,
ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे समाणे अणाइले अव्वहिते अदीणमाणसे तिविहमण-वयण-कायगुत्ते सम्मं सहइ- जाव -अहियासेइ ।

उसहस्स अणगारसरूवं

११४ तए णं से भगवं समणे जाए ईरियासमिए - जाव - पारिट्ठावणिआसमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते - जाव - गुत्तबंभयारी अकोहे - जाव - अलोहे । संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे ।

जंबु० व० २, सु० ३१ ।

१ सुविमल-वर-कंस-भायणं व मुक्कतोए[2],
२ संखे विव निरंजणे विगय-राग-दोस-मोहे,
३ कुम्मो इव इंदिएसु गुत्ते,
४ जच्चकंचणगं व जायरूवे,
५ पोक्खरपत्तं व निरुवलेवे,
६ चंदो इव सोमभावयाए,

१. कप्प० सु० १९५ ।

२. समणस्सोवमाकमे उवमासंखासु य एगरूवया नत्थि । एत्थ पण्हावागरण(संव० ५, सु० १)पाढो दिण्णो । दट्ठव्वा–उववाइय. सु० २७ । जंबु० व० २ सु० ३१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७ सूरो व्व दित्ततेए,
८ अचले जह मंदरे गिरिवरे,
९ अक्खोभे सागरो व्व थिमिए,
१० पुढवी व सव्वफासविसहे,
११ तवसा वि य भासरासिछन्नि व्व जाततेए,
१२ जलियहुयासणो विव तेयसा जलंते,
१३ गोसीसचंदणं पि व सीयले, सुगंधे य
१४ हरयो विव समियभावे,
१५ उग्घोसिय सुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं व पागडभावेण सुद्धभावे,
१६ सोंडीरे कुंजरोव्व,
१७ वसभेव्व जायथामे,
१८ सीहे वा जहा मिगाहिवे होति दुप्पधरिसे,
१९ सारयसलिलं व सुद्धहियए,
२० भारंडे चेव अप्पमत्ते,
२१ खग्गिविसाणं व एगजाते,
२२ खाणुं चेव उड्ढकाए,
२३ सुन्नागारे व्व अप्पडिकम्मे,
२४ सुन्नागारावणस्संतो निवाय-सरणप्पदीपज्झाणमिव निप्पकंपे,
२५ जहा खुरो चेव एगधारे,
२६ जहा अही चेव एगदिट्ठी,
२७ गगणमिव निरालंबे,
२८ विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के,
२९ कय-परनिलए जहा चेव उरए,
३० अनिलो व्व अप्पडिबद्धे,
३१ जीवो व्व अप्पडिहय-गइ त्ति ।

उसहस्स पडिबंधाभावो

११५ णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे । से पडिबंधे, चउव्विहे भवइ तं जहा-
१ दव्वओ, २ खित्तओ, ३ कालओ, ४ भावओ ।
दव्वओ–इह खलु माया मे, पिया मे, भाया मे, भगिणी मे, - जाव -संगंथसंथुआ मे, हिरण्णं मे, सुवण्णं मे- जाव -उवगरणं मे अहवा–समासओ सच्चित्ते वा, अचित्ते वा, मीसए वा दव्वजाए–सेवं तस्स ण भवइ ।
खित्तओ–गामे वा, णयरे वा, अरण्णे वा, खेत्ते वा, खले वा, गेहे वा, अंगणे वा–एवं तस्स ण भवइ ।
कालओ–समए वा, आवलियाए वा, आणापाणुए वा, थोवे वा, लवे वा, मुहुत्ते वा, अहोरत्ते वा, पक्खे वा, मासे वा, उऊए वा, अयणे वा, संवच्छरे वा, अन्नयरे वा दीहकाले पडिबंधे–एवं तस्स ण भवइ ।
भावओ–कोहे वा- जाव -मिच्छादंसणसल्ले वा–एवं तस्स ण भवइ ।

उसहस्स विहारो

११६ से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए, णयरे पंचराइए ववगय-हास-सोग-अरइ-भय-परित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अदुट्ठे चंदणाणुलेवणे अरत्ते लेट्ठुम्मि कंचणम्मि य समे इहलोए परलोए य अपडिबद्धे जीविय-मरणे निक्कंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए विहरइ ।

उसहस्स केवलनाणं

११७ तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वास-सहस्से विइक्कंते समाणे पुरिमतालस्स नयरस्स बहिया सगडमुहंसि उज्जाणंसि णिग्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरियाए वट्टमाणस्स फग्गुणबहुलस्स इक्कारसीए पुव्वण्हकालसमए अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरासाढाणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अणुत्तरेणं णाणेणं - जाव - अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं अणुत्तराए भावणाए खंतीए गुत्तीए, मुत्तीए, तुट्ठीए अणुत्तरेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सुचरियसोवचिय-फल-निव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।

११८ जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स णेरइय-तिरिय-नरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तं जहा--
आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं भुत्तं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहो कम्मं तं तं कालं मणवयकाए जोगे एवमादी जीवाण वि सव्वभावे अजीवाण वि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसिं च जीवाणं हिय-सुह-णिस्सेयस-करे सव्वदुक्ख-विमोक्खणे परमसुहसमाणणे भविस्सइ[1]।

उसहेण तित्थपवत्तणं

११९ तए णं से भगवं समणाणं निग्गंथाण य निग्गंथीण य महव्वयाइं सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसेमाणे विहरइ, तं जहा--
पुढवीकाइए भावणागमेणं पंच महव्वयाइं सभावणगाइं भाणियव्वाइं[2] ति ।

जम्बु० व० २ सु० ३१ ।

उसभेणं अरहा कोसलिएणं इमीसे ओसप्पिणीए णवहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं बीइक्कंताहिं तित्थे पवत्तिते ।।

।। ठाणं अ० ९, सु० ६९७ ।

उसहस्स गणहराइसंपया

१२० उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासी गणा गणहरा होत्था ।
उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स उसभसेण-पामोक्खाओ चुलसीइं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ।
उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स बंभी-सुंदरी-पामोक्खाओ तिण्णि अज्जिया सयसाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया-संपया होत्था ।
उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स सेज्जंस-पामोक्खाओ तिण्णि समणोवासगसयसाहस्सीओ पंच य साहस्सीओ उक्कोसिया समणोवासगसंपया होत्था ।
उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स सुभद्दा-पामोक्खाओ पंच समणोवासिया सयसाहस्सीओ चउपण्णं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासिया संपया होत्था ।

१२१ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खर-संनिवाईणं जिणो विव अवितह वागरमाणाणं चत्तारि चउद्दसपुव्वीसहस्सा अद्धट्ठमा य सया उक्कोसिया चउद्दसपुव्वी संपया होत्था ।
उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स णव ओहिणाणि-सहस्सा उक्कोसिया ओहिणाणिसंपया होत्था ।
उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीसं जिणसहस्सा,
वीसं वेउव्विय-सहस्सा छच्च सया उक्कोसिया जिणसंपया वेउव्वियसंपया य होत्था ,
बारस-विउलमइ-सहस्सा छच्च सया पण्णासा,
बारस-वाइसहस्सा छच्च सया पण्णासा ।
उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसि भद्दाणं बावीसं अणुत्तरोववाइयाणं सहस्सा णव य सया उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था ।

---

१. उसभे णं अरहा कोसलिए एगं वाससहस्सं निच्चं वोसट्ठकाये चियत्तदेहे-जाव-अप्पाणं भावेमाणस्स एक्कं वाससहस्सं विइक्कंतं तओ णं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे फग्गुणबहुले तस्स णं फग्गुणबहुलस्स एक्कारसीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि पुरिमतालस्स नयरस्स बहिया सगडमुहंसि उज्जाणंसि नग्गोहवरपायवस्स अहे अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं आसाढाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते- जाव -जाणमाणे पासमाणे विहरइ ।। कप्प० सु० १९६ ।।

२. आया० सु० २ अ० १५, सु० ७३३--७९२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसहकाले सिद्धा

१२२ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीसं समणसहस्सा सिद्धा,
चत्तालीसं अज्जियासहस्सा सिद्धा, सट्ठि अंतेवासिसहस्सा सिद्धा[1]।

उसहअणगाराणं वण्णओ

१२३ अरहओ णं उसभस्स बहवे अंतेवासी अणगारा भगवंतो अप्पेगइया मासपरियाया - जाव - उड्ढं जाणू अहो सिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।[2]

अंतकरभूमि

१२४ अरहओ णं उसभस्स दुविहा अंतकरभूमी होत्था तं जहा–१ जुगंतकरभूमी य, २ परियाअंतकरभूमी य।
जुगंतकरभूमी - जाव - असंखेज्जाइं पुरिसजुगाइं।
परियाअंतकरभूमी अंतोमुहुत्तपरियाए अंतमकासी[3]॥

जंबु० व० २, सू० ३१।

उसहस्स संघयणाइं कुमारवासाइं णिव्वाणं च

१२५ उसभेणं अरहा कोसलिए वज्जरिसहनारायसंघयणे समचउरंस-संठाणसंठिए पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था[4]।

१२६ उसभेणं अरहा वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता तेसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारज्जवासमज्झे वसित्ता[5] तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[6]।
उसभेणं अरहा एगं वाससहस्सं छउमत्थ-परियायं पाउणित्ता एगं पुव्वसयसहस्सं वास-सहस्सूणं केवलिपरियायं पाउणित्ता एगं पुव्वसयसहस्सं बहुपडिपुण्णं सामण्णपरियायं पाउणित्ता चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता[7]–
जे से हेमंताणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे माहबहुले, तस्स णं माहबहुलस्स तेरसी पक्खेणं दसहिं अणगारसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अट्ठावय-सेलसिहरंसि चोद्दसमेणं भत्तेणं अपाणएणं संपलियंक-निसण्णे पुव्वण्हकाल-समयंसि अभीइणा णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं सुसमदूसमाए समाए एगूणणवउईहिं पक्खेहिं सेसेहिं कालगए वीइक्कंते - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणे[8]॥

सक्काइदेविंद-कय-निव्वाणमहिमा

१२७ जं समयं च णं उसभे अरहा कोसलिए कालगए वीइक्कंते समुज्जाए छिण्ण-जाइ-जरा-मरणबंधणे सिद्धे बुद्धे - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणे तं समयं च णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणे चलिए।
तए णं से सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भयवं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता एवं वयासी–
"परिणिव्वुए खलु जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए–तं जीयमेयं तीय-पच्चुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं

---

१. कप्प० सु० १९७।
२. जहा उववाइए (सु० १४) सव्वो अणगारवण्णओ।
३. कप्प० सु० १९८।
४. ठाणं अ० ५, उ० २, सु० ४३५। सम० स० ५०० सु० ३।
५. सम० स० ६३, सु० १।
६. सम० स० ८३, सु० ४।
७. सम० स० ८४, सु० २।
८. सम० स० ८९, सु० १। कप्प. सु. १९९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवराईणं तित्थगराणं परिनिव्वाणमहिमं करेत्तए ।
तं गच्छामि णं अहं पि भगवओ तित्थगरस्स परिनिव्वाणमहिमं करेमि त्ति" कट्टु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं - जाव - चउहिं चउरासीईहिं आयरक्ख-देवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं सोहम्मकप्प-वासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे ताए उक्किट्ठाए- जाव-तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव अट्ठावयपव्वए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स सरीरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विमणे णिराणंदे अंसुपुण्ण-णयणे तित्थयरसरीरयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता णऽच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे - जाव - पज्जुवासइ ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीस-विमाण-सयसहस्साहिवई सूलपाणी वसहवाहणे सुरिंदे अरयंबर-वत्थधरे-जाव-विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।

१२८ तए णं तस्स ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणं चलइ,
तए णं से ईसाणे - जाव -देवराया आसणं चलियं पासइ, पासइत्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भगवं तित्थगरं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता जहा सक्के नियगपरिवारेणं भाणेयव्वो - जाव - पज्जुवासइ ।

१२९ एवं सव्वे देविंदा - जाव - अच्चुए णियग-परिवारेणं आणेयव्वा,
एवं-जाव-भवणवासीणं वीस इंदा, वाणमंतराणं सोलस, जोइसियाणं दोण्णि, णियग-परिवारा णेयव्वा ।

१३० तए णं सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिए देवे एवं वयासी-
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! णंदणवणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्ठाइं साहरह, साहरित्ता तओ चिइगाओ रएह-१ एगं भगवओ तित्थगरस्स, २ एगं गणहराणं, ३ एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।
तए णं ते भवणवइ- जाव -वेमाणिया देवा णंदणवणाओ सरसाइं गोसीस-वर-चंदणकट्ठाइं साहरंति, साहरित्ता तओ चिइगाओ रएंति, १ एगं भगवओ तित्थगरस्स, २ एगं गणहराणं, ३ एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।

१३१ तए णं से सक्के देविंदे देवराया आभिओगे देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदगं साहरह ।"
तए णं ते आभिओगा देवा खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदगं साहरंति ।
तए णं से सक्के देविंदे देवराया तित्थगरसरीरगं खीरोदगेणं ण्हाणेइ, ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीस-वर-चंदणेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता हंसलक्खणं पडसाडयं णियंसेइ, णियंसइत्ता सव्वालंकार-विभूसियं करेइ ।
तए णं ते भवणवइ - जाव - वेमाणिया गणहर-सरीरगाइं अणगार-सरीरगाइं पि खीरोदगेणं ण्हावेंति, ण्हावित्ता सरसेणं गोसीस-वर-चंदणेणं अणुलिपंति अणुलिंपित्ता अहयाइं दिव्वाइं देवदूसजुयलाइं णियंसेंति, णियंसित्ता सव्वालंकारविभूसियाइं करेंति ।

१३२ तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणवइ - जाव - वेमाणिए देवे एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! ईहामिग-उसभ-तुरय- जाव -वणलय-भत्तिचित्ताओ तओ सिवियाओ विउव्वह,
"१ एगं भगवओ तित्थगरस्स, २ एगं गणहराणं, ३ एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।"
तए णं ते बहवे भवणवई- जाव -वेमाणिया तओ सिवियाओ विउव्वंति–
१ एगं भगवओ तित्थगरस्स, २ एगं गणहराणं, ३ एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।

१३३ तए णं से सक्के देविंदे देवराया विमणे णिराणंदे अंसुपुण्ण-णयणे भगवओ तित्थगरस्स विणट्ठ-जम्म-जरा-मरणस्स सरीरगं सीयं आरुहेइ, आरुहित्ता चिइगाए ठवेइ ।
तए णं ते बहवे भवणवइ- जाव -वेमाणिया देवा गणहराणं, अणगाराण य विणट्ठ-जम्म-जरा-मरणाणं सरीरगाइं सीयं आरुहेंति, आरुहित्ता चिइगाए ठवेंति ।

१३४ तए णं से सक्के देविंदे देवराया अग्गिकुमारे देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचिइगाए- जाव -अणगारचिइगाए अगणिकायं विउव्वह, विउव्वित्ता एयमाणत्तियं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चप्पिणह ।"
तए णं ते अग्गिकुमारा देवा विमणा णिराणंदा अंसुपुण्णणयणा तित्थगरचिइगाए - जाव - अणगारचिइगाए अगणिकायं विउव्वंति ।

१३५ तए णं से सक्के देविंदे देवराया वाउकुमारे देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचिइगाए- जाव -अणगारचिइगाए अ वाउक्कायं विउव्वह, विउव्वहइत्ता अगणिकायं उज्जालेह, तित्थगरसरीरगं गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाइं च झामेह ।"
तए णं ते वाउकुमारा देवा विमणा णिराणंदा अंसुपुण्ण-णयणा तित्थगरचिइगाए - जाव - विउव्वंति अगणिकायं उज्जालेंति तित्थगरसरीरगं - जाव - अणगारसरीरगाणि अ झामेंति ।

१३६ तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणवई - जाव - वेमाणिए देवे एवं वयासी –
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचिइगाए - जाव - अणगारचिइगाए अगुरुतुरुक्कघयमधुं च कुंभग्गसो अ भारग्गसो अ साहरह ।"
तए णं ते भवणवइ- जाव -तित्थगर-जाव-भारग्गसो अ साहरंति ।

१३७ तए णं से सक्के देविंदे देवराया मेहकुमारे देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी –
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! तित्थयरचिइगं–जाव--अणगारचिइगं च खीरोदगेणं णिव्वावेह ।"
तए णं ते मेहकुमारा देवा तित्थगरचिइगं - जाव - णिव्वावेंति ।

१३८ तए णं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थगरस्स उवरिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ, ईसाणे देविंदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गेण्हइ, चमरे असुरिंदे असुरराया हिट्ठिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ, बली वइरोअणिंदे वइरोअणराया हिट्ठिल्लं वामं सकहं गेण्हइ, अवसेसा भवणवइ - जाव - वेमाणिआ देवा जहारिहं अवसेसाइं अंगमंगाइं, केई जिणभत्तीए केई जीअमेअं ति कट्टु केइ धम्मो त्ति कट्टु गेण्हंति ।

१३९ तए णं से सक्के देविंदे देवराया बहवे भवणवइ - जाव - वेमाणिए देवे जहारिहं एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! सव्वरयणामए महइमहालए तओ चेइअथूभे करेह, एगं भगवओ तित्थगरस्स चिइगाए, एगं गणहरचिइगाए, एगं अवसेसाणं अणगाराणं चिइगाए ।"
तए णं ते बहवे - जाव - करेंति ।

१४० तए णं ते बहवे भवणवइ -जाव- वेमाणिआ देवा तित्थगरस्स परिणिव्वाणमहिमं करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे दीवे तेणेव उवागच्छन्ति ।

१४१ तए णं से सक्के देविंदे देवराया पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए अट्ठाहिअं महामहिमं करेति ।
तए णं सक्कस्स देविंदस्स चत्तारि लोगपाला चउसु दहिमुहगपव्वएसु अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरिल्ले अंजणगे अट्ठाहिअं तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहगेसु अट्ठाहिअं चमरो अ दाहिणिल्ले अंजणगे तस्स लोगपाला दहिमुहगपव्वएसु बली पच्चत्थिमिल्ले अंजणगे तस्स लोगपाला दहिमुहगेसु ।
तए णं ते बहवे भवणवइ-वाणमंतर- जाव -अट्ठाहिआओ महामहिमाओ करेंति, करित्ता जेणेव साइं साइं विमाणाइं, जेणेव साइं साइं भवणाइं, जेणेव साओ साओ सभाओ सुहम्माओ, जेणेव सगा सगा माणवगा चेइअखंभा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिण-सकहाओ पक्खिवंति, पक्खिवित्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि अ मल्लेहि अ अच्चेंति, अच्चित्ता विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ।

जंबु० व० २ सु० ।। ३३ ।।

। इइ उसह-जिण-चरियं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. मल्ली-चरियं

महब्बले राया तस्स य छ बालवयंसा

१४२ तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, निसढस्स वासहर-पव्वयस्स उत्तरेणं, सीओदाए महानदीए दाहिणेणं, सुहावहस्स वक्खार-पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिम-लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सलिलावई नामं विजए पण्णत्ते । तत्थ णं सलिलावई विजए वीयसोगा नामं रायहाणी नव-जोयण-वित्थिण्णा - जाव - पच्चक्खं देवलोगभूया । तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे । तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले नामं राया । तस्स धारिणी-पामोक्खं देवी-सहस्सं ओरोहे होत्था । तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा - जाव - महब्बले दारए जाए उम्मुक्क-बालभावे - जाव-भोग-समत्थे । तए णं तं महब्बलं अम्मा-पियरो सरिसियाणं कमलसिरि-पामोक्खाणं पंचण्हं रायवर-कन्ना-सयाणं एग-दिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति । पंच पासाय-सया पंच-सओ दाओ - जाव - माणुस्सए काम-भोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ।

१४३ तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा । परिसा निग्गया । बलो वि निग्गओ । धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–
"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं - जाव - नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेमि । तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।"
'अहासुहं देवाणुप्पिया' ! - जाव - एक्कारसंग-वी । बहूणि वासाणि परियाओ । जेणेव चारु-पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मासिएणं भत्तेणं सिद्धे ।

१४४ तए णं सा कमलसिरी अण्णया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा - जाव - बलभद्दो कुमारो जाओ । जुवराया यावि होत्था ।

१४५ तस्स णं महब्बलस्स रण्णो इमे छ-प्पिय-बाल-वयंसगा रायाणो होत्था, तं जहा –१ अयले, २ धरणे, ३ पूरणे, ४ वसू ५ वेसमणे ६ अभिचंदे–सह-जायया, सह-वड्ढियया, सह-पंसुकीलियया, सह-दार-दरिसी, अण्णमण्णमणुरत्तया, अण्णमण्णमणुव्वयया, अण्णमण्णच्छंदाणुवत्तया, अण्णमण्ण-हियइच्छिय-कारया, अण्णमण्णेसु रज्जेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति । तए णं तेसिं रायाणं अण्णया कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं, सण्णिसण्णाणं, सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहो-कहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था--'जण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पवज्जा वा विदेस-गमणं वा समुप्पज्जइ, तण्णं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा नित्थरियव्वे' त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति ।

महब्बलादीणं पव्वज्जा

१४६ तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा । परिसा निग्गया । महब्बले णं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठे । जं नवरं - छ-प्पिय-बाल-वयंसए आपुच्छामि, बलभद्दं च कुमारं रज्ज ठावेमि, - जाव - ते छ-प्पिय-बालवयंसए आपुच्छइ । तए णं ते छ-प्पिय-बाल-वयंसगा महब्बलं रायं एवं वयासी--'जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पव्वयह, अम्हं के अण्णे आहारे वा आलंबे वा ? अम्हे वि य णं पव्वयामो ।
तए णं से महब्बले राया ते छ-प्पिय-बाल-वयंसए एवं वयासी–
'जइ णं तुब्भे मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह, जेट्ठ-पुत्ते सएहिं-सएहिं रज्जेहिं ठावेह, पुरिससहस्स-वाहिणीओ सीयाओ दुरुढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह ।' तेवि तहेव पाउब्भवंति । तए णं से महब्बले राया छ-प्पिय-बाल-वयंसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठे कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ– जाव-बलभद्दस्स अभिसेओ । - जाव - बलभद्दं राय आपुच्छइ । तए णं से महब्बले छहिं बाल-वयंसगेहिं सद्धिं महया इड्ढीए पव्वइए । एक्कारसंगावी । बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मास-खमणेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महब्बलस्स तवविसये माया

१४७ तए णं तेसिं महब्बल-पामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो-कहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था--'जण्णं अम्हं देवाणुप्पिया ! एगे तवो-कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवो-कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए' त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमास-खमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । तए णं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थि-नाम-गोयं कम्मं निव्वत्तिसु--जइ णं ते महब्बल-वज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तओ से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । जइ णं ते महब्बल-वज्जा छ अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तओ से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । एवं--अह अट्ठमं तो दसमं, अह दसमं तो दुवालसमं ।

तित्थयरनामकम्मनिव्वत्तणं

१४८ इमेहि य णं वीसाए णं कारणेहिं आसेविय-बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु, तं जहा--
संगहणी-गाहा

अरहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुय-तवस्सीसु । वच्छल्लया य तेसिं, अभिक्ख नाणोवओगे य ।। १ ।।
दंसण-विणए आवस्सए य सीलव्वए निरइयारो । खणलवतवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीए ।। २ ।।
अपुव्वनाणगहणे, सुयभत्ती पवयण-पहावणया । एएहिं कारणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ सो उ ।।३ ।।

महब्बलादीणं विविहतवचरणं

१४९ तए णं ते महब्बल-पामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खु-पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति--जाव- एगराइयं । तए णं ते महब्बल-पामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं 'सीहनिक्कीलियं तवो-कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति । तए णं ते महब्बल-पामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवो-कम्मं दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठवीसाए अहो-रत्तेहिं अहा-सुत्तं - जाव - आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--'इच्छामि णं भंते ! महालयं सीहनिक्कीलियं तवो-कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।'[1] तए णं ते महब्बल-पामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहा-सुत्तं-जाव- आराहित्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदिता नमंसित्ता बहूणि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमास-खमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

तए णं ते महब्बल-पामोक्खा सत्त अणगारा तेणं उरालेणं तवो-कम्मेणं सुक्का, भुक्खा, निम्मंसा, किडिकिडियाभूया, अट्ठिचम्मावणद्धा, किसा, धमणिसंतया जाया या वि होत्था । जहा खंदओ नवरं--थेरे आपुच्छित्ता चारु-पव्वयं सणियं सणियं दुरुहंति - जाव - दो-मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता,सवीसं भत्त-सयं अणसणाए छेएत्ता, चतुरासीइं वास-सय-सहस्साइं सामण्ण-परियागं पाउणित्ता, चुलसीइं पुव्व-सय-सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववण्णा । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं महब्बल-वज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई । महब्बलस्स देवस्स य पडिपुण्णाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई ।

महब्बलादीणं पच्चायाति

१५० तए णं ते महब्बल-वज्जा छप्पि देवा जयंताओ देवलोगाओ आउ-क्खएणं, भव-क्खएणं, ठिति -क्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता, इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विसुद्ध-पिइ-माइ-वंसेसु रायकुलेसु पत्तेयं-पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायाया, तं जहा--
१ पडिबुद्धो इक्खागराया, २ चंदच्छाए अंगराया, ३ संखे कासिराया,
४ रुप्पी कुणालाहिवई, ५ अदीणसत्तू कुरुराया, ६ जियसत्तू पंचालाहिवई ।

---

१. खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स महासीहनिक्कीलियस्स य तवस्स वण्णओ चरणाणुओगस्स तवायारे पेक्खियव्वो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्लिस्स गब्भावक्कमणं

१५१ तए णं से महब्बले देवे तिहिं नाणेहिं समग्गे उच्च-ट्ठाण-गएसुं गहेसुं, सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु, जइएसु सउणेसु, पयाहि-णाणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुयंसि पवायंसि, निप्फण्ण-सस्स-मेइणीयंसि कालंसि, पमुइय-पक्कीलिएसु जणवएसु अद्धरत्त-काल-समयंसि, अस्सिणी-नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं, जे से हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे, तस्स णं फग्गुण-सुद्धस्स चउत्थी-पक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीसं सागरोवमठिइयाओ अणंतरं चयं चइत्ता, इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, मिहिलाए रायहाणीए, कुंभस्स रण्णो पभावतीए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए, भववक्कंतीए, सरीरवक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कंते ।

१५२ जं रयणिं च णं महब्बले देवे पभावतीए देवीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते, तं रयणिं च णं सा पभावती देवी चोद्दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा । भत्तार-कहणं । सुमिणपाढग-पुच्छा - जाव - विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ।

१५३ तए णं तीसे पभावईए देवीए तिण्हं मासाणं बहु-पडिपुण्णाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूए–'धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं जल-थलय-भासर-प्पभूएणं दसद्धवण्णेणं मल्लेणं अत्थुय-पच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सण्णिसण्णाओ, निवण्णाओ य विहरंति, एगं च महं सिरि-दाम-गंडं पाडल-मल्लिय-चंपग-असोग-पुन्नाग-नाग-मरुयग-दमणग-अणोज्जकोज्जय-पउरं, परम-सुह-फासं, दरिसणिज्जं, महया गंधद्धणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ डोहलं विणेंति' । तए णं तीसे पभावईए इमं एयारूवं डोहलं पाउब्भूयं पासित्ता अहा-सण्णिहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जल-थलय-भासर-प्पभूयं दसद्ध-वण्णं मल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभस्स रण्णो भवणंसि साहरंति, एगं चणं महं सिरि-दाम-गंडं - जाव - गंधद्धणिं मुयंतं उवणेंति । तए णं सा पभावई देवी जल-थलय-भासर-प्पभूएणं, दसद्ध-वण्णेणं मल्लेणं दोहलं विणेइ । तए णं सा पभावई देवी पसत्थ-दोहला, सम्माणिय-दोहला, विणीय-दोहला, संपुण्ण-दोहला संपत्त-दोहला विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरइ ।

मल्ली-तित्थयर-जम्मणं

१५४ तए णं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं बहु-पडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं, जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे, तस्स णं एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्त-काल-समयंसि अस्सिणी-नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं, उच्चट्ठाण-गएसुं गहेसुं- जाव - पमुइय-पक्कीलिएसु जणवएसु आरोयारोयं एगूणवीसइमं तित्थयरं पयाया ।

१५५ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोग-वत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारी-महत्तरियाओ - जहा - उसहस्स जम्मणुस्सवं, नवरं–मिहिलाए कुंभस्स पभावईए अभिलाओ संजोएयव्वो - जाव - नंदीसरवरदीवे महिमा ।

१५६ तया णं कुंभए राया बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिएहिं देवेहिं तित्थयर-जम्मणाभिसेय-महिमाए कयाए समाणीए, पच्चूस-काल-समयंसि नगर-गुत्तिए सद्दावेइ, जायकम्मं - जाव - नामकरणं–'जम्हा णं अम्हं इमीसे दारियाए माऊए मल्ल-सयणिज्जंसि डोहले विणीए, तं होउ णं अम्हं दारिया नामेणं मल्ली ।

१५७ तए णं सा मल्ली पंचधाईपरिक्खित्ता - जाव - सुहंसुहेणं परिवड्ढई ।
तए णं सा मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना उम्मुक्क-बालभावा विण्णय-परिणय-मेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा जाया यावि होत्था ।

मल्लिणा मोहणघर–निम्माणं

१५८ तए णं सा मल्ली देसूण-वास-सय-जाया ते छ-प्पिय-रायाणो विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी-आभोएमाणी विहरइ, तंजहा-पडिबुद्धि इक्खागरायं, चंदच्छायं अंगरायं, संखं कासिरायं, रुप्पिं कुणालाहिवइं, अदीणसत्तुं कुरुरायं, जियसत्तुं पंचालाहिवइं ।

१५९ तए णं सा मल्ली कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एगं महं मोहण-घरं करेह अणेग-खंभ-सय-सण्णिविट्ठं । तस्स णं मोहण-घरस्स बहु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्झ-देसभाए छ गब्भ-घरए करेह । तेसिं णं गब्भ-घरगाणं बहु-मज्झ-देस-भाए जाल-घरयं करेह । तस्स णं जाल-घरयस्स बहु-मज्झ-देस-भाए मणि-पेढियं करेह । एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।' तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ।

१६० तए णं सा मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं, सरि-त्तयं, सरि-व्वयं, सरिस-लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं, कणगामइं, मत्थय-च्छिड्डुं-पउमुप्पल-पिहाणं पडिमं करेइ, करेत्ता जं विउलं असण-पाण-खाइमं-साइमं आहारेइ, तओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगामईए, मत्थय-छिड्डाए, पउमुप्पल-पिहाणाए पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी-पक्खिवमाणी विहरइ । तए णं तीसे कणगामईए, मत्थय-छिड्डाए पउमुप्पल-पिहाणाए पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे तओ गंधे पाउब्भवेइ ।
से जहा णामए – अहि-मडे इ वा, गो-मडे इ वा, सुणह-मडे इ वा, मज्जार-मडे इ वा, मणुस्स-मडे इ वा, महिस-मडे इ वा, मूसग-मडे इ वा, आस-मडे इ वा, हत्थि-मडे इ वा, सीह-मडे इ वा, वग्घ-मडे इ वा, विग-मडे इ वा, दीविग-मडे इ वा, । मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवावण्ण-दुब्भिगंधे किमि-जालाउल-संसत्ते असुइ-विलीण-विगय-बीभत्स-दरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ? नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव ।

पडिबुद्धिरण्णो पउमावईए देवीए नाग-जण्णए

१६१ तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसला नामं जणवए । तत्थ णं सागेए नामं नयरे । तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे दिसी-भाए, एत्थ णं महेगे नाग-घरए होत्था–दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे । तत्थ णं सागेए नयरे पडिबुद्धी नामं इक्खागराया परिवसइ । पउमावई देवी । सुबुद्धी अमच्चे साम-दंड-भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नय-विहण्णू विहरई ।

१६२ तए णं पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ नाग-जण्णए यावि होत्था ।
तए णं सा पउमावई देवी नाग-जण्णमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं दस-णहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी–
"एवं खलु सामी ! मम कल्लं नाग-जण्णए भविस्सइ । तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी नाग-जण्णयं गमित्तए । तुब्भे वि णं सामी ! मम नाग-जण्णयंसि समोसरह ।
तए णं पडिबुद्धी पउमावईए एयमट्ठं पडिसुणेइ ।
तए णं पउमावई पडिबुद्धिणा रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी, हट्ठ-तुट्ठा कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम कल्लं नाग-जण्णं भविस्सइ, तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वदाह–"एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नाग-जण्णए भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जल-थलय-भासरप्पभूयं दसद्ध-वण्णं मल्लं नाग-घरयंसि साहरह, एगं च णं महं सिरि-दाम-गंडं उवणेह ।"
तए णं जल-थलय-भासर-प्पभूएणं दसद्ध-वण्णेणं मल्लेणं नाणाविह-भत्ति-सुविरइयं, हंस-मिय-मयूर-कोंच-सारस-चक्कवाय-मयणसाल-कोइल-कुलोववेयं, ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किंनर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्तं, महग्घं, महरिहं, विउलं, पुप्फ-मंडवं विरएह । तस्स णं बहु-मज्झ-देस-भाए एगं महं सिरि-दाम-गंडं - जाव - गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह, पउमावइं देविं पडिवालेमाणा चिट्ठह । तए णं ते कोडुंबिया - जाव - पउमावतिं देविं पडिवालेमाणा चिट्ठंति ।

१६३ तए णं सा पउमावई देवी कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए, - जाव - उट्ठियम्मि सूरे, सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते, कोडुंबिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नयरं सब्भिंतर-बाहिरियं आसिय-सम्मज्जि-ओवलित्तं - जाव - गंधवट्टिभूयं करेह, कारवह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।' ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।
तए णं सा पउमावई देवी दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहु-करण-जुत्तं - जाव - धम्मियं जाण-प्पवरं उवट्ठवेह ।" ते वि तहेव उवट्ठवेंति ।

१६४ तए णं सा पउमावई देवी अंतो अंतेउरंसि ण्हाया - जाव - धम्मियं जाणं दुरूढा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा पउमावई देवी नियग-परियाल-संपरिवुडा सागेयं नयरं मज्झंमज्झेणं निज्जाइ, जेणेव पोक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोक्खरणिं ओगाहति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ - जाव - परम-सुइभूया उल्ल-पड-साडया, जाइं तत्थ उप्पलाइं- - जाव - ताइं गेण्हइ, जेणेव नाग-घरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तए णं पउमावईए देवीए दासचेडीओ बहूओ पुप्फपडलग-हत्थगयाओ, धूवकडच्छुय-हत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छंति ।

तए णं पउमावई देवी सव्विड्ढीए जेणेव नाग-घरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नाग-घरं अणुप्पविसइ, लोमहत्थगं परामुसइ - जाव - धूवं डहइ, पडिबुद्धिं पडिवालेमाणी-पडिवालेमाणी चिट्ठइ ।

१६५ तए णं से पडिबुद्धी ण्हाए हत्थि-खंध-वर-गए स-कोरेंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, सेय-वर-चामराहिं विइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे, महया भड-चडगर-रह-पहकर-विंद-परिक्खित्ते सागेयं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव नाग-घरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थि-खंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ, करेत्ता पुप्फ-मंडवं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पासइ तं एगं महं सिरि-दाम-गंडं ।

मल्लीए सिरिदामगंडस्स पसंसा

१६६ तए णं पडिबुद्धी तं सिरि-दाम-गंडं सुचिरं कालं निरिक्खइ । तंसि सिरि-दाम-गंडंसि जाय-विम्हए सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–

'तुमं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहुणि गामागर - जाव - सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर-जाव-सत्थवाह-पभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरि-दाम-गंडे दिट्ठ-पुव्वे, जारिसए णं इमे पउमावईए देवीए सिरि-दाम-गंडे ?'

तए णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वयासी–

'एवं खलु सामी ! अहं अण्णया कयाइ तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गए । तत्थ णं मए कुंभयस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छर-पडिलेहणगंसि दिव्वे सिरि-दाम-गंडे दिट्ठ-पुव्वे । तस्स णं सिरि-दाम-गंडस्स इमे पउमावईए देवीए सिरि-दाम-गंडे सय-सहस्सइमं पि कलं न अग्घइ ।'

मल्ली-रूव-पसंसा

१६७ तए णं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–

'केरिसिया णं देवाणुप्पिया.! मल्ली विदेहराय-वर-कन्ना, जस्स णं संवच्छरपडिलेहणयंसि सिरि-दाम-गंडस्स पउमावईए देवीए सिरि-दाम-गंडे सय-सहस्सइमंपि कलं न अग्घइ ?'

तए णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं इक्खागरायं एवं वयासी–

'एवं खलु सामी ! मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना सुपइट्ठिय-कुम्मुण्णय-चारुचरणा - जाव - पडिरूवा ।'

तए णं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म सिरि-दाम-गंड-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

'गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं । तत्थ णं कुंभगस्स रण्णो धूयं पभावईए अत्तयं मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं मम भारियत्ताए वरेहि जइ वि य णं सा सयं रज्ज-सुंका ।

पडिबुद्धि-रण्णो दूयस्स मिहिलागमणं

१६८ तए णं से दूए पडिबुद्धिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे, हट्ठतुट्ठे पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे, जेणेव चाउग्घंटे आस-रहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं-आस-रहं पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावेत्ता दुरूढे हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भड-चडगरेणं साएयाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव विदेह-जणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अरहण्णग-वाणियगस्स समुद्द-जत्ता

१६९ तेणं कालेणं तेणं समएणं अंग-नामं जणवए होत्था । तत्थ णं चंपा नामं नयरी होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए चंदच्छाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगराया होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहण्णग-पामोक्खा बहवे संजत्ता-नावा-वाणियगा परिवसंति--अड्ढा - जाव - बहुजणस्स अपरिभूया । तए णं से अरहण्णगे समणोवासए या वि होत्था--अहिगयजीवाजीवे--वण्णओ ।

१७० तए णं तेसिं अरहण्णग-पामोक्खाणं संजत्ता-नावा-वाणियगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो-कहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था--

'सेयं खलु अम्हं गणिमं च, धरिमं च, मेज्जं च, पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-सागडियं सज्जेंति, सज्जेत्ता गणिमस्स, धरिमस्स, मेज्जस्स, पारिच्छेज्जस्स य भंडगस्स सगडी-सागडियं भरेंति, भरेत्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं भोयणवेलाए भुंजावेंति, भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडी-सागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव गंभीरए पोय-पट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडी-सागडियं मोयंति, पोय-वहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता य गणिमस्स धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य भंडगस्स भरेंति, तंदुलाण य, समियस्स य, तेलस्स य, घयस्स य, गुलस्स य, गोरसस्स य, उदगस्स य, भायणाण य, ओसहाण य, भेसज्जाण य, तणस्स य, कट्ठस्स य, आवरणाण य, पहरणाण य अण्णेसिं च बहूणं पोय-वहण-पाउग्गाणं दव्वाणं पोय-वहणं भरेंति ।

सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं भोयणवेलाए भुंजावेंति, भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आपुच्छंति, जेणेव पोय-ट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति ।

१७१ तए णं तेसिं अरहण्णग-पामोक्खाणं बहूणं संजत्ता-नावा-वाणियगाणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणा ताहिं इट्ठाहिं, कंताहिं, पियाहिं, मणुण्णाहिं, मणामाहिं, ओरालाहिं, वग्गूहिं अभिनंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी--'अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणेज्ज ! भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जमाणा अभिरक्खिज्जमाणा चिरं जीवह, भद्दं च भे, पुणरवि लद्धट्ठे, कयकज्जे, अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो' त्ति कट्टु ताहिं सोमाहिं, निद्धाहिं दीहाहिं, सप्पिवासाहिं, पप्पुयाहिं, दिट्ठीहिं निरिक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति ।

तओ समाणिएसु पुप्फ-बलि-कम्मेसु, दिन्नेसु सरस-रत्त-चंदण-दद्दर-पंचंगुलि-तलेसु अणुक्खित्तंसि धूवंसि, पूइएसु समुद्द-वाएसु, संसारियासु वलयासु, ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पडु-प्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु, महया उक्किट्ठ-सीहनाय-बोल-कलकल-रवेण पक्खुभिय-महासमुद्द-रव-भूयं पिव मेइणिं करेमाणा, एगदिसिं एगाभिमुहा अरहण्णग-पामोक्खा संजत्ता-नावा-वाणियगा नावाए दुरूढा । तओ पुस्स-माणवो वक्कमुदाहु--'हं भो ! सव्वेसिमेव भे अत्थसिद्धि, उवट्ठियाइं कल्लाणाइं, पडिहयाइं सव्व-पावाइं जुत्तो पूसो, विजओ मुहुत्तो अयं देसकालो' ।

तओ पुस्समाणवेणं वक्कमुदाहिए हट्ठतुट्ठा कण्णधार-कुच्छिधार-गब्भिज्ज-संजत्ता-नावा-वाणियगा-वावारिंसु, तं नावं पुण्णुच्छंगं पुण्ण-मुहिं बंधेणेहिंतो मुंचंति ।

तए णं सा नावा विमुक्क-बंधणा पवण-बल-समाहया ऊसिय-सिया, वितत-पक्खा इव गरुल-जुवई, गंगा-सलिल-तिक्ख-सीय-वेगेहिं संखुब्भमाणी संखुब्भमाणी उम्मी-तरंग-माला-सहस्साइं समइच्छमाणी समइच्छमाणी कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवण-समुद्दं अणेगाइं जोयण-सयाइं ओगाढा ।

तालपिसायादीणं उप्पायाणं पाउब्भावो

१७२ तए णं तेसिं अरहण्णग-पामोक्खाणं संजत्ता-नावा-वाणियगाणं लवण-समुद्दं अणेगाइं जोयण-सयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूइं उप्पाइय-सयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा--

अकाले गज्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले थणियसद्दे, अब्भिक्खणं-अब्भिक्खणं आगासे देवयाओ नच्चंति । तए णं ते अरहण्णग-वज्जा संजत्ता-नावा-वाणियगा एगं च णं महं ताल-पिसायं पासंति--

ताल-जंघं, दिवंगयाहिं बाहाहिं फुट्ट-सिरं, भमर-निगर-वरमासरासि-महिस-कालगं, भरिय-मेह-वण्णं, सुप्प-णहं, फाल-सरिस-जीहं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लंबोट्ठं, धवलवट्ट-असिलिट्ठ-तिक्ख-थिर-पीण-कुडिल-दाढोवगूढ-वयणं, विकोसिय-धारासिजुयल-समसरिस-तणुय-चंचल-गलंतरस-लोल-चवल-फुरुफुरेंत-निल्लालियग्गजीहं, अवयत्थिय-महल्ल-विगय-बीभच्छ-लालपगलंत-रत्ततालुयं, हिंगुलय-सगब्भ-कंदर-बिलं व अंजण-गिरिस्स अग्गिज्जालुग्गिलंत-वयणं, आऊसिय-अक्खचम्म-उइट्ठ-गंडदेसं, चीण-चिमिढ-वंक-भग्ग-नासं, रोसागय-धमधमेंत-मारुय-निट्ठुर-खर-फरुस-झुसिरं ओभुग्ग-नासियपुडं-धाडुब्भड-रइय-भीसण-मुहं, उद्ध-मुह-कण्ण-सक्कुलियं-महंत-विगय-लोम-संखालग-लंबंत-चलिय-कण्णं, पिंगल-दिप्पत-लोयणं, भिउडि-तडि-निडालं, नर-सिर-माल-परिणद्धचिंधं, विचित्तगोणस-सुबद्धपरिकरं, अवहोलंत फुप्फुयायंत-सप्प-विच्छुय-गोधुंदुर-नउल-सरड-विरइय-विचित्त-वेयच्छ-मालियागं, भोग-कूर-कण्हसप्प-धमधमेंत-लंबंत-कण्णपूरं, मज्जार-सियाल-लइय-खंधं, दित्त-घुघुयंत-घूय-कय-भुंभर-सिरं, घंटारवेणं भीम-भयंकरं, कायर-जण-हियय-फोडणं दित्तं अट्टट्ट-हासं विणिम्मुयंतं, वसा-रुहिर-पूय-मंस-मल-मलिण-पोच्चड-तणुं, उत्तासणयं, विसाल-वच्छं, पेच्छंताभिन्न-नख-मुह-नयण-कण्ण-वर-वग्ध-चित्त-कत्ती-णियंसणं, सरस-रुहिर-गयचम्म-वियय-ऊसविय-बाहुजुयलं, ताहि य खर-फरुस-असिणिद्ध-दित्त-अणिट्ठ-असुभ-अप्पिय-अकंत-वग्गूहि य तज्जयंतं–

तं तालपिसाय-रूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता भीया, तत्था, तसिया, उव्विग्गा, संजायभया अण्णमण्णस्स कायं समतुरंगेमाणा-समतुरंगेमाणा, बहूणं इंदाण य, खंदाण य, रुद्दाण य, सिवाण य, वेसमणाण य, नागाण य, भूयाण य, जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइयसयाणि उवाइमाणा चिट्ठंति ।

१७३ तए णं से अरहण्णए समणोवासए तं दिव्वं पिसाय-रूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए, अतत्थे, अचलिए, असंभंते, अणाउले, अणुव्विग्गे, अभिण्ण-मुह-राग-नयण-वण्णे, अदीण-विमण-माणसे, पोय-वहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासि–

'नमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं - जाव - सिद्धि-गइ-नामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं ।

जइ णं हं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि तो मे कप्पइ पारित्तए, अह णं एत्तो उवसग्गाओ न मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे' त्ति कट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाइ ।

अरहण्णगस्स पिसाय-बाहा

१७४ तए ण से पिसाय-रूवे-जेणेव अरहण्णगे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहण्णगं एवं वयासी–

'हंभो अरहण्णगा ! अपत्थिय-पत्थया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीण-पुण्ण-चाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ–कित्ति-परिवज्जिया ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा, खोभित्तए वा, खंडित्तए वा, भंजित्तए वा, उज्झित्तए वा, परिच्चइत्तए वा ।

तं जइ णं तुम सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं न चालेसि, न खोभेसि, न खंडेसि, न भंजेसि, न उज्झसि; न परिच्चयसि, तो ते अहं एयं पोय-वहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हामि, गेण्हित्ता-सत्तट्ठ-तल-प्पमाण-मेत्ताइं उड्ढं वेहासं उव्विहामि, अंतोजलंसि निब्बोलेमि, जेणं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहि-पत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।'

अरहण्णगस्स दढधम्मत्तं

१७५ तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी –

'अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए अहिगय-जीवाजीवे । नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा, दाणवेण वा, जक्खेण वा, रक्खसेण वा, किन्नरेण वा, किंपुरिसेण वा, महोरगेण वा, गंधव्वेण वा, निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा, खोभित्तए वा, विपरिणामित्तए वा । तुमं णं जा सद्धा तं करेहि' त्ति कट्टु अभीए, - जाव - अभिन्न-मुह-राग-नयण-वण्णे अदीण-विमण-माणसे, निच्चले, निप्फंदे, तुसिणीए, धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–

'हंभो अरहण्णगा ! - जाव - धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

१७६ तए णं से दिव्वे पिसाय-रूवे अरहण्णगं धम्म-ज्झाणोवगयं पासइ, पासित्ता बलियतरागं आसुरत्ते तं पोय-वहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठ-तल-प्पमाण-मेत्ताइं उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता अरहण्णगं एवं वयासी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हंभो अरहण्णगा ! अपत्थिय-पत्थया ! नो खलु कप्पइ तव-सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा, खोभित्तए वा, खंडित्तए वा, भंजित्तए वा, उज्झित्तए वा, परिच्चइत्तए वा ।

तं जइ णं तुमं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं न चालेसि, न खोभेसि, न खंडेसि, न भंजेसि, न उज्झसि, न परिच्चयसि तो ते अहं एयं पोय-वहणं अंतो-जलंसि निब्बोलेमि, जेणं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहि-पत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।'

तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी–

'अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए–अहिगय-जीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा, दाणवेण वा, जक्खेण वा, रक्खसेण वा, किन्नरेण वा, किंपुरिसेण वा, महोरगेण वा, गंधव्वेण वा, निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा, खोभित्तए वा, विपरिणामित्तए वा । तुमं णं जा सद्धा तं करेहि' त्ति कट्टु अभीए, - जाव - अभिन्न-मुह-राग-नयण-वण्णे, अदीण-विमण-माणसे, निच्चले, निप्फंदे, तुसिणीए, धम्म-ज्झाणोवगए विहरइ ।

देवस्स पिसाय-रूव-साहरणं स-वुत्तंत-कहणं

१७७ तए णं से पिसायरूवे अरहण्णगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा, खोभित्तए वा, विपरिणामित्तए वा, ताहे संते, तंते, परितंते, निव्विण्णे तं पोयवहणं सणियं-सणियं उवरिं जलस्स ठवेइ, ठवेत्ता तं दिव्वं पिसाय-रूवं पडिसाहरेइ, पडिसाहरेत्ता दिव्वं देव-रूवं विउव्वइ अंतलिक्ख-पडिवन्ने सखिंखिणीयाइं दसद्ध-वण्णाइं वत्थाइं पवर-परिहिए अरहण्णगं समणोवासगं एवं वयासी–

'हं भो अरहण्णगा ! समणोवासया ! धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! पुण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कय-लक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्म-जीविय-फले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया ।

एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के, देविंदे, देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडिंसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, बहूणं देवाणं मज्झगए, महया-महया सद्देणं एवं आइक्खइ, एवं भासेइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ –

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, चंपाए नयरीए, अरहण्णए समणोवासए अभिगय-जीवाजीवे । नो खलु सक्के केणइ देवेण वा, दाणवेण वा, जक्खेण वा, रक्खसेण वा, किन्नरेण वा, किंपुरिसेण वा, महोरगेण वा, गंधव्वेण वा, निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा, खोभित्तए वा, विपरिणामित्तए वा ।"

तए णं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स, देविंदस्स, देवरण्णो नो एयमट्ठं सद्दहामि, पत्तियामि, रोएमि ।

तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–

"गच्छामि णं अहं अरहण्णगस्स अंतियं पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं अरहण्णगं–किं पियधम्मे, नो पियधम्मे ? दढधम्मे, नो दढधम्मे ? सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं किं चालेइ, नो चालेइ ? खोभेइ, नो खोभेइ ? खंडेइ, नो खंडेइ ? भंजेइ, नो भंजेइ ? उज्झइ, नो उज्झइ ? परिच्चयइ, नो परिच्चयइ ?" त्ति कट्टु एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता ओहिं पउंजामि, पउंजित्ता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अव्वक्कमामि उत्तर-वेउव्वियं रूवं विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए देवगईए जेणेव लवणसमुद्दे, जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुपियस्स उवसग्गं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिए भीए तत्थे, चलिए, संभंते, आउले, उव्विग्गे, भिण्ण-मुह-एग-नयण-वण्णे, दीण-विमण-माणसे जाए ।

तं जं णं सक्के, देविंदे, देवराया एवं वयइ, सच्चे णं ! एसमट्ठे । तं दिट्ठे णं देवाणुप्पियस्स इड्ढी, जुई, जसो, बलं, वीरियं, पुरिसकार-परक्कमे लद्धे, पत्ते, अभिसमण्णागए ! तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमेसु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहसि णं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवं करणयाए' त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ,

अरहण्णगस्स य दुवे कुंडलजुयले दलयइ, दलइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए ।

तए णं से अरहण्णए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरहण्णगस्स मिहिला-आगमणं

१७८ तए णं ते अरहण्णग-पामोक्खा संजत्ता-नावा-वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोय-ट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेंति, लंबेत्ता सगडि-सागडं सज्जेंति, तं गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडि-सागडं संकामेंति, संकामेत्ता सगडि-सागडं जोवेंति, जोवित्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं, महग्घं, महरिहं, विउलं, रायारिहं पाहुडं, दिव्वं कुंडलजुयलं च गेण्हंति, गेण्हित्ता मिहिलाए रायहाणीए अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महत्थं, महग्घं महरिहं, विउलं, रायारिहं पाहुडं, दिव्वं कुंडल-जुयलं च उवणेंति । तए णं कुंभए राया तेसिं संजत्ता-नावा-वाणियगाणं तं महत्थं, महग्घं, महरिहं, विउलं, रायारिहं पाहुडं, दिव्वं कुंडल-जुयलं च पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लिं विदेह-वर-राय-कन्नं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता तं दिव्वं कुंडल-जुयलं मल्लीए विदेहराय-कन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ ।

तए णं से कुंभए राया ते अरहण्णग-पामोक्खे संजत्ता-नावा-वाणियगे विपुलेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढे य आवासे वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ।

अरहण्णगस्स चंपाए आगमणं

१७९ तए णं अरहण्णग-पामोक्खा संजत्ता-नावा-वाणियगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भंडवहरणं करेंति, पडिभंडे गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-सागडं भरेंति, भरेत्ता जेणेव गंभीरए पोय-पट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोय-वहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता भंडं संकामेंति, संकामेत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव चंपाए पोय-ट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेंति, लंबेत्ता सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तं गणिमं, धरिमं, मेज्जं, परिच्छेज्जं च सगडी-सागडं संकामेंति, संकामेत्ता सगडि-सागडं जोवेंति, जोवित्ता जेणेव चंपा-नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चंपाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं, महग्घं, महरिहं, विउलं, रायारिहं पाहुडं, दिव्वं च कुंडल-जुयलं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं, महरिहं, विउलं, रायारिहं पाहुडं, दिव्वं च कुंडल-जुयलं उवणेंति ।

१८० तए णं चंदच्छाए अंगराया तं महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते अरहण्णग-पामोक्खे एवं वयासी– 'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर - जाव - सण्णिवेसाइं आहिंडह, लवण-समुद्दं च अभिक्खणं-अभिक्खणं पोय-वहणेहिं ओगाहेह तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ? '

मल्ली-रूव-पसंसा

१८१ तए णं ते अरहण्णग-पामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी–

'एवं खलु सामी ! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहण्णग-पामोक्खा बहवे संजत्तगा-नावा-वाणियगा परिवसामो । तए णं अम्हे अण्णया कयाइ गणिमं च, धरिमं च, मेज्जं च, परिच्छेज्जं च गेण्हामो, तहेव अहीण-अइरित्तं - जाव - कुंभगस्स रण्णो उवणेमो । तए णं से कुंभए मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए तं दिव्वं कुंडल-जुयलं पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ । तं एस णं सामी ! अम्हेहिं कुंभगराय-भवणंसि मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना अच्छेरए दिट्ठे । तं नो खलु अण्णा का वि तारिसिया देव-कन्ना वा, असुर-कन्ना वा, नाग-कन्ना वा, जक्ख-कन्ना वा, गंधव्व-कन्ना वा, राय-कन्ना वा जारिसिया णं मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना ।'

तए णं चंदच्छाए अरहण्णग-पामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ।

चंदच्छाय-रण्णो दूयस्स मिहिला-गमणं

१८२ तए णं चंदच्छाए वाणियग-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया - जाव - मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्ज-सुंका' तए णं से दूए चंदच्छाएणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे - जाव - पहारेत्थ गमणाए ।।

रुप्पी राया

१८३ तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नाम जणवए होत्था । तत्थ णं सावत्थी नाम नयरी होत्था । तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नाम राया होत्था । तस्स णं रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहू नाम दारिया होत्था सुकुमाल-पाणिपाया रूवेण य, जोव्वणेण य, लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ।

सुबाहुए मज्जणए

१८४ तीसे णं सुबाहूए दारियाए अण्णया चाउम्मासिय-मज्जणए जाए यावि होत्था । तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहूए दारियाए चाउम्मासिय-मज्जणयं उवट्ठियं जाणइ, जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहूए दारियाए कल्लं चाउम्मासिय-मज्जणए भविस्सइ, तं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि जल-थलय-दसद्धवण्णं मल्लं साहरह - जाव - एगं महं सिरि-दाम-गंडं गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह ।' ते वि तहेव ओलयंति ।
तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवण्णगार-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फ-मंडवंसि नाणाविह-पंचवण्णेहिं तंदुलेहिं नगरं आलिहह, तस्स बहु-मज्झ-देस-भाए पट्टयं रएह, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।' ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।

१८५ तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थि-खंध-वरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भड-चडगर-रह-पहकर-विंद-परिक्खित्ते अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे, सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु, जेणेव रायमग्गे, जेणेव पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थि-खंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फ-मंडवे अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सीहासण-वर-गए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।
तए णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं-दारियं पट्टयंसि दुरुहेंति, दुरुहेत्ता सेयापीयएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति, ण्हाणेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करेत्ता पिउणो पाय-वंदियं उवणेंति । तए णं सुबाहू दारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाय-ग्गहणं करेइ ।

मल्ली-मज्जणग-पसंसा

१८६ तए णं से रुप्पी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहूए दारियाए रूवेण य, जोव्वणेण य, लावण्णेण य, जायविम्हए वरिसधरं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'तुमं णं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चे णं बहूणि गामागर-नगर-जाव-सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर - जाव - सत्थ-वाहपभिईणं गिहाणि अणुप्पविससि, तं अत्थियाइ ते कस्सइ रण्णो वा, ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमीसे सुबाहूए दारियाए मज्जणए ?'
तए णं से वरिसधरे रुप्पिं रायं करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–
'एवं खलु सामी ! अहं अण्णया तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं गए । तत्थ णं मए कुंभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नगाए मज्जणए दिट्ठे । तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहूए दारियाए मज्जणए सय-सहस्सइमं पि कलं न अग्घइ ।'

चंदच्छायस्स दूयस्स मिहिलागमणं

१८७ तए णं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म मज्जणग-जणिय-हासे' दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! - जाव - मल्लिं विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ।'
तए णं से दूए रुप्पिणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे - जाव - जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संख–राया

१८८ तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नामं जणवए होत्था । तत्थ णं वाणारसी नामं नयरी होत्था । तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था ।

मल्लीए कुंडल-जुयलस्स संधिविघडणं

१८९ तए णं तीसे मल्लीए विदेह-वर-राय-कन्नाए अण्णया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडल-जुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था । तए णं से कुंभए राया सुवण्णगार-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुंडल-जुयलस्स संधि संघाडेह ।"
तए णं सा सुवण्णगार-सेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दिव्वं कुंडल-जुयलं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवण्णगार-भिसियासु निवेसेइ, निवेसेत्ता बहूहिं आएहि य, उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य, वेणइयाहि य, कम्मयाहि य, पारिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडल-जुयलस्स संधिं घडित्तए, नो चेव णं संचाएइ घडित्तए ।
तए णं सा सुव्वण्णगार-सेणी जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेत्ता एवं वयासी–
"एवं खलु सामी ! अज्ज तुम्हे अम्हे सद्दावेह, - जाव - संधिं संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।
तए णं अम्हे तं दिव्वं कुंडल-जुयलं गेण्हामो, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवगच्छामो - जाव - नो संचाएमो संधिं संघाडेत्तए ।
तए णं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडल-जुयलस्स अण्णं सरिसयं कुंडल-जुयलं घडेमो ।"

सुवण्णगारसेणीए निव्विसय-करणं

१९० तए णं से कुंभए राया तीसे सुव्वण्णगार-सेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते, रुट्ठे, कुविए, चंडिक्किए, मिसि-मिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी–
'केस णं तुब्भे कलायाणं भवह, जे णं तुब्भे इमस्स दिव्वस्स कुंडल-जुयलस्स नो संचाएह संधिं संघाडित्तए ?' ते सुवण्णगारे निव्विसए आणवेइ ।

सुवण्णगारसेणीए वाणारसीए आगमणं

१९१ तए णं ते सुवण्णगारा कुंभगेणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडमत्तोवगरण-मायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं - जाव - पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखे कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता पाहुडं उवणेंति, उवणेत्ता एवं वयासी–
"अम्हे णं सामी ! मिहिलाओ कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा इह हव्वमागया. । तं इच्छामो णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छाया-परिग्गहिया निब्भया, निरुव्विग्गा, सुहंसुहेणं परिवसिउं ।"
तए णं संखे कासीराया ते सुवण्णगारे एवं वयासी–
'किं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता ?'
तए णं ते सुवण्णगारा संखं कासीरायं एवं वयासी–
"एवं खलु सामी ! कुंभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए कुंडल-जुयलस्स संधी विसंघडिए । तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणिं सद्दावेइ - जाव - निव्विसया आणत्ता । तं एएणं कारणेणं सामी! अम्हे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता ।"
तए णं से संखे कासीराया सुवण्णगारे एवं वयासी–
'केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स रण्णो धूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना ?'

मल्ली-रूव-पसंसा संखदूयस्स मिहिलागमणं

१९२ तए णं ते सुवण्णगारा संखं कासीरायं एवं वयासी –
"नो खलु सामी ! अण्णा का वि तारिसिया देव-कन्ना वा, असुर-कन्ना वा, नाग-कन्ना वा, जक्ख-कन्ना वा, गंधव्व-कन्ना वा, राय-कन्ना वा जारिसिया णं मल्ली विदेह-वर-राय-कन्ना ।"
तए णं से संखे कासीराया कुंडल-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! - जाव - मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ।"

१९३ तए णं से दूए संखेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे - जाव - जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अदीणसत्तु-राया

१९४ तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरुनामं जणवए होत्था । तत्थ णं हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था । तत्थ णं अदीणसत्तू नामं राया होत्था - जाव - रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।

मल्लदिन्न चित्त-सभा-कारवणं

१९५ तत्थ णं मिहिलाए तस्स णं कुंभगस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए मल्लीए अणुमग्ग-जायए मल्लदिन्ने नामं कुमारे सुकुमाल-पाणि-पाए - जाव - जुवराया यावि होत्था ।

१९६ तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्त-सभं करेह अणेग-खंभ-सय-सण्णिविट्ठं––एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह' । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।
तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! चित्त-सभं हाव-भाव-विलास-बिब्बोय-कलिएहिं रूवेहिं चित्तेह, चित्तेता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ?"
तए णं सा चित्तगर-सेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तूलियाओ वण्णए य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चित्त-सभा तेणेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता भूमि-भागे विरचति, विरचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तसभं हाव-भाव-विलास-बिब्बोय-कलिएहिं रूवेहिं चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था ।

चित्तगरेण मल्ली-पडिरूव-निव्वत्तणं

१९७ तए णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर-लद्धी लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया–'जस्स णं दुपयस्स वा, चउप्पयस्स वा, अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेइ ।'
तए णं से चित्तगरे मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ । तए णं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए - जाव - समुप्पज्जित्था 'सेयं खलु ममं मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं सरित्तयं सरिव्वयं सरिस-लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए'–एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता भूमि-भागं सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं - जाव - रूवं निव्वत्तेइ ।

१९८ तए णं सा चित्तगर-सेणी चित्त-सभं हाव-भाव-विलास-बिब्बोय-कलिएहिं रूवेहिं चित्तेइ, चित्तेत्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ।
तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ।
तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे ण्हाए अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे अम्म-धाईए सद्धिं जेणेव चित्त-सभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता हाव-भाव-विलास-बिब्बोय-कलियाइं रूवाइं पासमाणे पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

१९९ तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तियं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए - जाव - समुप्पज्जित्था–'एस णं मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ने' त्ति कट्टु लज्जिए विलिए, वेड्डे सणियं सणियं पच्चोसक्कइ ।
तए णं तं मल्लदिन्नं कुमारं अम्म-धाई-सणियं सणियं पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वयासी–
'किण्णं तुमं पुत्ता ! लज्जिए, विलिए, वेड्डे सणियं सणियं पच्चोसक्कसि ?'
तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे अम्म-धाइं एवं वयासी–
'जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरू-देवय-भूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तसभं अणुपविसित्तए ?'
तए णं अम्म-धाई मल्लदिन्नं कुमारं एवं वयासी–
'नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना । एस णं मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए चित्तगरएणं तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए'।

चित्तगरस्स निव्विसयकरणं

२०० तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे अम्म-धाईए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते एवं वयासी–
'केस णं भो ! से चित्तारए अपत्थिय-पत्थए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीण-पुण्ण-चाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जे णं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरु-देवय-भूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्त-सभाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए' त्ति कट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ ।
तए णं सा चित्तगर-सेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी–
'एवं खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर-लद्धी लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया–जस्स णं दुपयस्स वा, चउप्पयस्स वा, अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तेइ । तं मा णं सामी ! तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह । तं तुब्भे णं सामी ! तस्स चित्तगरस्स अण्णं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह ।'
तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ, छिंदावेत्ता निव्विसयं आणवेइ ।

चित्तगरस्स हत्थिणाउरे आगमणं

२०१ तए णं से चित्तगरे मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ नयरीओ निक्खमइ, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुरु-जणवए जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंड-निक्खेवं करेइ, करेत्ता चित्त-फलगं सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेण रूवं निव्वत्तेइ, निव्वत्तेता कक्खंतरंसि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थं - जाव - पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता हत्थिणाउरस्स नयरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी–
'एवं खलु अहं सामी ! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रण्णो पुत्तेण पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इहं हव्वमागए । तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छाया-परिग्गहिए निब्भए, निरुव्विग्गे, सुहं-सुहेणं परिवसिसए ।
तए णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वयासी–
'किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मल्लदिन्नेणं निव्विसए आणत्ते ?'
तए णं से चित्तगरे अदीणसत्तुं रायं एवं वयासी –
'एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं हाव-भाव-विलास-बिब्बोय-कलिएहिं रूवेहिं चित्तेह" तं चेव सव्वं भाणियव्वं - जाव -

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मम संडासगं छिंदावेंइ, छिंदावेत्ता निव्विसयं आणवेइ। एवं खलु अहं सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते ।'

अदीणसत्तुणो मल्ली-पडिरूव-दरिसणं

२०२ तए णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वयासी–
'से केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ?'
तए णं से चित्तगरे कक्खंतराओ चित्तफलगं नीणेइ, नीणेत्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी–
'एस णं सामी ! मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार-भाव-पडोयारे निव्वत्तिए । नो खलु सक्का केणइ देवेण वा, दाणवेण वा, जक्खेण वा, रक्खसेण वा, किन्नरेण वा, किंपुरिसेण वा, महोरगेण वा, गंधवेण वा, मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तित्तए ।'

अदीणसत्तुणो दूयस्स मिहिलागमणं

२०३ तए णं से अदीणसत्तू पडिरूव-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! - जाव - मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ।'

२०४ तए णं से दूए अदीणसत्तूणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे - जाव - जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

जियसत्तु राया

२०५ तेणं कालेणं तेणं समएणं पंचाले जणवए । कंपिल्लपुरे नयरे । जियसत्तू नामं राया पंचालाहिवई । तस्स णं जियसत्तुस्स धारिणी-पामोक्खं देवी-सहस्सं ओरोहे होत्था ।

चोक्खा परिव्वाइया

२०६ तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया–रिउव्वेय-यजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहास-पंचमाणं निघंटु-छट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा - जाव - बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था । तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर - जाव - सत्थवाह-पभिईणं पुरओ दाण-धम्मं च, सोय-धम्मं च, तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी, पण्णवेमाणी, परूवेमाणी, उवदंसेमाणी विहरइ । तए णं सा चोक्खा अण्णया कयाइं तिदंडं च कुंडियं च - जाव - धाउ-रत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल-परिव्वाइया-सद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव कन्नंतेउरे, जेणेव मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदय-परिफोसियाए दब्भोवरि-पच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ, निसीइत्ता मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए पुरओ दाण-धम्मं च सोय-धम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी, पण्णवेमाणी, परूवेमाणी, उवदंसेमाणी विहरइ ।

मल्लीए चोक्खामय-निरासो

२०७ तए णं मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी–
'तुब्भण्णं चोक्खे ! किं मूलए धम्मे पण्णत्ते ?' तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं एवं वयासी–
'अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोय-मूलए धम्मे पण्णत्ते । जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य, मट्टियाए य सुई भवइ । एवं खलु अम्हे जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छामो ।
तए णं मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी–
'चोक्खे ! से जहा नामए केइ पुरिसे रुहिर-कयं वत्थं रुहिरेणं चेव धोवेज्जा, अत्थि णं चोक्खे ! तस्स रुहिर-कयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काइ सोही ?'
'नो इणट्ठे समट्ठे ।'
'एवामेव चोक्खे ! तुब्भण्णं पाणाइवाएणं -जाव- मिच्छादंसण-सल्लेणं नत्थि काइ सोही, जहा तस्स रुहिर-कयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०८ तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए एवं वुत्ता समाणी, संकिया, कंखिया, वितिगिंछिया, भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था, मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए नो संचाएइ किंचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए, तुसिणीया संचिट्ठइ ।
तए णं तं चोक्खं मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए बहुओ दास-चेडीओ हीलेंति, निंदंति, खिंसंति, गरिहंति, अप्पेगइयाओ हेरुयालेंति, अप्पेगइयाओ मुहमक्कडियाओ करेंति, अप्पेगइयाओ वग्घाडियाओ करेंति, अप्पेगइयाओ तज्जेमाणीओ, तालेमाणीओ निच्छुहंति ।।

चोक्खाए कंपिल्लपुरे आगमणं

२०९ तए णं सा चोक्खा मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए दास-चेडियाहिं हीलिज्जमाणी, निंदिज्जमाणी, खिंसिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, आसुरुत्ता - जाव - मिसिमिसेमाणी, मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नयाए पओसमावज्जइ, भिसियं गेण्हइ, गेण्हित्ता कन्नंतेउराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता, परिव्वाइया-संपरिवुडा जेणेव पंचाल-जणवए, जेणेव कंपिल्लपुरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं राईसर - जाव - सत्थवाहपभिईणं पुरओ दाण-धम्मं च सोय-धम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी, पण्णवेमाणी, परूवेमाणी, उवदंसेमाणी विहरइ ।

२१० तए णं से जियसत्तू अण्णया कयाइ अंतो अंतेउर-परियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासण-वर-गए यावि विहरइ ।
तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया-संपरिवुडा जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो भवणे, जेणेव जियसत्तू राया, तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जियसत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेइ ।
तए णं से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता चोक्खं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ताआ सणेणं उवनिमंतेइ ।
तए णं सा चोक्खा उदग-परिफोसियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए निविसइ, निविसित्ता जियसत्तुं रायं रज्जे य, रट्ठे य, कोसे य, कोट्ठागारे य, बले य, वाहणे य, पुरे य, अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ।
तए णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाण-धम्मं च, सोय-धम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी, पण्णवेमाणी, परूवेमाणी, उवदंसेमाणी विहरइ ।

चोक्खा कहिओ अगड-दद्दुर दिट्ठंतो

२११ तए णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाय-विम्हए चोक्खं एवं वयासी–

'तुमं णं देवाणुप्पिया !. बहूणि गामागर -जाव- सण्णिवेसंसि आहिंडसि, बहूण य राईसर-सत्थवाह-प्पभिईणं गिहाइं-अणुप्पविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ रण्णो वा, ईसरस्स वा कहिंचि एरिसए ओरोहे दिट्ठ-पुव्वे, जारिसए णं इमे मम ओरोहे ?'
तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया 'जियसत्तुणा एवं वुत्ता समाणी ईसिं विहसियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी–
'सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगड-दद्दुरस्स । 'के णं देवाणुप्पिए ! से अगड-दद्दुरे ?'
'जियसत्तू ! से जहा-नामए अगड-दद्दुरे सिया । से णं तत्थ जाए, तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा, तलागं वा, दहं वा, सरं वा, सागरं वा अपासमाणे मण्णइ–"अयं चेव अगडे वा, तलागे वा, दहे वा, सरे वा, सागरे वा ।"
तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए ।
तए णं से कूव-दद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी– "से के तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?"
तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कुव-दद्दुरं एवं वयासी–"एवं खलु देवाणुप्पिया! अहं सामुद्दए दद्दुरे ।"
तए णं से कूव-दद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी–"के-महालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?"
तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूव-दद्दुरं एवं वयासी–"महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे ।"
तए णं से कूव-दद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एवं वयासी–"ए-महालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?"
"नो इणट्ठे समट्ठे । महालए णं से समुद्दे ।"

तए णं से कूव-दद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं पच्चत्थिमिल्लं तीरं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी–
"ए-महालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"नो इणट्ठे समट्ठे ।"
एवामेव तुमं पि जियसत्तू अण्णेसिं बहूणं राईसर - जाव - सत्थवाह-प्पभिईणं वा, भज्जं वा, भगिणिं वा, धूयं वा, सुण्हं वा अपासमाणे जाणसि जारिसए मम चेव णं ओरोहे, तारिसए नो अण्णेसिं ।

मल्ली-रूव-पसंसा

२१२ तं एवं खलु जियसत्तू ! मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूया पभावईए अत्तया मल्ली नामं विदेह-राय-वर-कन्ना रूवेण य, जोव्वणेण य, लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा, नो खलु अण्णा काइ तारिसिया देव-कन्ना वा, असुर-कन्ना वा, नाग-कन्ना वा, जक्ख-कन्ना वा, गंधव्व-कन्ना वा, राय-कन्ना वा जारिसिया मल्ली, विदेह-राय-वर-कन्नाए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सय-सहस्सइमंपि कलं न अग्घइ त्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

जियसत्तुमिहिलागमणं

२१३ तए णं से जियसत्तू परिव्वाइया-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी –
- जाव - 'मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ।'
तए णं से दूए जियसत्तुणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे -जाव- जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

दूयाणं संदेस-निवेदणं

२१४ तए णं तेसिं जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।
तए णं छप्पि दूयगा जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुजाणंसि पत्तेयं-पत्तेयं खंधावार-निवेसं करेंति, करेत्ता मिहिलं रायहाणिं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेयं करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु साणं-साणं राईणं वयणाइं निवेदेंति ।

कुंभएण दूयाणं असक्कारे

२१५ तए णं से कुंभए तेसिं दूयाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते, रुट्ठे, कुविए, चंडिक्किए, मिसिमिसेमाणे, तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी–
'न देमि णं अहं तुब्भं मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं' ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्कारिय, असम्माणिय, अवद्दारेणं निच्छुभावेइ ।
तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रण्णा असक्कारिय, असम्माणिय, अवद्दारेणं निच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा-सगा जणवया, जेणेव सयाइं-सयाइं नगराइं, जेणेव सया-सया रायाणो, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–
'एवं खलु सामी ! अम्हे जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमग-समगं चेव जेणेव मिहिला, तेणेव उवागया, - जाव - अवद्दारेणं निच्छुभावेइ । तं न देइ णं सामी ! कुंभए मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं' साणं-साणं राईणं एयमट्ठं निवेदेंति ।

जियसत्तु-पामोक्खाणं कुंभएणं जुज्झं

२१६ तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म आसुरुत्ता, रुट्ठा, कुविया, चंडिक्किया, मिसिमिसेमाणा, अण्णमण्णस्स दूय-संपेसणं करेंति, करेत्ता एवं वयासी–
'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमग-समगं चेव मिहिला तेणेव उवागया - जाव - अवद्दारेणं निच्छूढा । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तए' त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ण्हाया, सण्णद्धा हत्थि-खंध-वर-गया, सकोरेंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, सेय-वर-चामराहिं वीइज्जमाणा, महया हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपुरिवुडा, सव्विड्ढीए - जाव - दुंदुभि-नाइय-रवेणं सएहिंतो - सएहिंतो नगरेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता एगयओ मिलायंति, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बल-वाउयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'खिप्पामेव हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सन्नाहेहि, सन्नाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि' । से वि - जाव - पच्चप्पिणति । तए णं कुंभए राया ण्हाए सण्णद्धे, हत्थि-खंध-वर-गए, सकोरेंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेय-वर-चामराहिं वीइज्जमाणे, महया हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे, सव्विड्ढीए -जाव- दुंदुभिनाइय-रवेणं मिहिलं मज्झंमज्झेणं निज्जाइ, निज्जावेत्ता विदेह-जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव खंधावार-निवेसं करेइ, करेत्ता जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि य रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झ-सज्जे पडिचिट्ठइ ।

२१७ तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभएणं रण्णा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।
तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हय-महिय-पवर-वीर-धाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागं किच्छोवगय-पाणं दिसोदिसिं पडिसेहेंति ।
तए णं से कुंभए जियसत्तु-पामोक्खेहिं छहिं राईहिं हय-महिय-पवर-वीर-धाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागे किच्छोवगय-पाणे दिसोदिसिं पडिसेहिए समाणे अत्थामे, अबले, अवीरिए, अपुरिसक्कारपरक्कमे, अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं, तुरियं, चवलं, चंडं, जइणं, वेइयं जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिलं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहेत्ता रोह-सज्जे चिट्ठइ ।

२१८ तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं निरुच्चारं, सव्वओ समंता ओरुंभित्ता णं चिट्ठंति । तए णं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं ओरुद्धं जाणित्ता अब्भिंतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि य, छिद्दाणि य, विवराणि य, मम्माणि य अलभमाणे बहूहिं आएहि य, उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य, वेणइयाहि य, कम्मयाहि य, पारिणामियाहि य, बुद्धीहिं परिणामेमाणे परिणामेमाणे किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहय-मण-संकप्पे करतल-पल्हत्थ-मुहे अट्ट-ज्झाणोवगए झियायइ ।

मल्लीए चिंताहेउ-पुच्छा

२१९ इमं च णं मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना ण्हाया कय-बलि-कम्मा, कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता, सव्वालंकार-विभूसिया, बहूहिं खुज्जाहिं संपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाय-ग्गहणं करेइ ।
तए णं कुंभए मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं नो आढाइ, नो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।

तए णं मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना कुंभगं एवं वयासी–
'तुब्भे णं ताओ ! अण्णया ममं एज्जमाणिं पासित्ता आढाह, परियाणाह, अंके निवेसेह । इयाणिं ताओ ! तुब्भे ममं नो आढाह, नो परियाणाह, नो अंके निवेसेह । किण्णं तुब्भं, अज्ज ओहय-मण-संकप्पा करतल-पल्हत्थ-मुहा अट्टज्झाणोवगया झियायह ?'

कुंभगस्स चिंताहेउ-कहणं

२२० तए णं कुंभए मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं एवं वयासी–
'एवं खलु पुत्ता ! तव कज्जे जियसत्तु-पामोक्खेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया । ते णं मए असक्कारिय, असम्माणिय अवद्दारेणं निच्छूढा ।
तए णं जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं, निरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ता णं चिट्ठंति ।
तए णं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य, मम्माणि य अलभमाणे - जाव - अट्टज्झाणोवगए झियामि ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्लीए उवायनिरूवणं

२२१ तए णं सा मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना कुंभगं रायं एवं वयासी–
'मा णं तुब्भे ताओ ! ओहय-मण-संकप्पा करतल-पल्हत्थ-मुहा अट्ट-ज्झाणोवगया झियायह । तुब्भे णं ताओ ! तेसिं जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं-पत्तेयं रहस्सिए दूय-संपेसे करेह, एगमेगं एवं वयह–
"तव देमि मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं" ति कट्टु संझ-काल-समयंसि पविरल-मणूसंसि निसंत-पडिनिसंतंसि पत्तेयं-पत्तेयं मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिहेह, पिहेत्ता रोहा-सज्जा चिट्ठह ।' तए णं कुंभए तेसिं जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं-पत्तेयं रहस्सिए दूय-संपेसे करेइ - जाव - रोहा-सज्जे चिट्ठइ ।

मल्लीए जियसत्तुपामोक्खाणं संबोहो

२२२ तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए - जाव - उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते, जालंतरेहिं कणगमइं, मत्थय-छिड्डुं, पउमुप्पल-पिहाणं पडिमं पासंति–'एस णं मल्ली विदेह-राय-वर-कन्नत्ति' कट्टु मल्लीए राय-वर-कन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया, गिद्धा, गढिया, अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा-पेहमाणा चिट्ठंति ।

तए णं सा मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना ण्हाया, कयबलिकम्मा, कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता, सव्वालंकार-विभूसिया, बहूहिं खुज्जाहिं - जाव - परिक्खित्ता, जेणेव जालघरए, जेणेव कणगमई, मत्थयछिड्डा, पउमुप्पल-पिहाणा पडिमा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तीसे कणगमईए मत्थयछिड्डाए, पउमुप्पल-पीहाणाए पडिमाए मत्थयाओ तं पउमुप्पल-पिहाणं अवणेइ । तओ णं गंधे निद्धावेइ, से जहा-णामए– अहिमडे इ वा - जाव - एत्तो असुभतराए चेव ।

२२३ तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइं पिहेंति, पिहेत्ता परम्मुहा चिट्ठंति ।

तए णं सा मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना ते जियसत्तु-पामोक्खे एवं वयासी–
'किण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइं पिहेत्ता परम्मुहा चिट्ठह ?'
तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा मल्लिं विदेह-राय-वर-कन्नं एवं वयंति–
'एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइं पिहेत्ता चिट्ठामो ।'

२२४ तए णं मल्ली विदेह-राय-वर-कन्ना ते जियसत्तु-पामोक्खे एवं वयासी–
'जइ ताव देवाणुप्पिया ! इमीसे कणगमईए, मत्थय-छिड्डाए, पउमुप्पल-पिहाणाए पडिमाए-कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे असुभे पोग्गल-परिणामे, इमस्स पुण ओरालिय-सरीरस्स, खेलासवस्स, वंतासवस्स, पित्तासवस्स, सुक्कासवस्स, सोणिय-पूयासवस्स, दुरुय-ऊसास-नीसासस्स, दुरुय-मुत्त-पूइय-पुरीस-पुण्णस्स, सडण-पडण-छेयण-विद्धंसण-धम्मस्स केरिसए य परिणामे भविस्सइ ? तं मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु काम-भोगेसु सज्जह, रज्जह, गिज्झह, मुज्झह, अज्झोववज्जह । एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे, अवर-विदेह-वासे, सलिलावतिंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए, महब्बल-पामोक्खा सत्त वि य बाल-वयंसया रायाणो होत्था-- सहजाया - जाव - पव्वइया ।

२२५ तए णं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेणं इत्थी-नाम-गोयं कम्मं निव्वत्तेमि–जइ णं तुब्भे चउत्थं उवसंपज्जित्ता णं विहरह, तए णं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि सेसं तहेव सव्वं । तए णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! काल-मासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा । तत्थ णं तुब्भं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई । तए णं तुब्भे ताओ देव-लोगाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे - जाव - साइं-साइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरह । तए णं अहं ताओ देव-लोगाओ आउक्खएणं - जाव - दारियत्ताए पच्चायाया ।
गाहा-
किं थ तयं पम्हुट्ठं, जं थ तया भो ! जयंत-पवरम्मि । वुत्था समय-णिबद्धा, देवा तं संभरह जाइं ॥१॥'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जियसत्तुपामोक्खाणं जाइसरणं

२२६ तए णं तेसिं जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं मल्लीए विदेह-राय-वर-कन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं परिणामेणं, पसत्थेणं अज्झवसाणेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं, ईहापूहमग्गण-गवेसणं करेमाणाणं सण्णि-पुव्वे जाइ-सरणे समुप्पण्णे, एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति ।

२२७ तए णं मल्ली अरहा जियसत्तु-पामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्ण-जाइसरणे जाणित्ता गब्भ-घराणं दाराइं विहाडेइ । तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मल्ली अरहा, तेणेव उवागच्छंति । तए णं महब्बल-पामोक्खा सत्त वि य बाल-वयंसा एगयओ अभिसमण्णागया वि होत्था ।

मल्लीए जियसत्तुपामोक्खाणं रण्णं य पव्वज्जासंकप्पो

२२८ तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तु-पामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी–

'एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गा - जाव - पव्वयामि । तं तुब्भे णं किं करेह ? किं ववसह ? किं वा भे हियइच्छिए सामत्थे ?'

तए णं जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिं अरहं एवं वयासी–

'जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिए ! संसार-भउव्विग्गा - जाव - पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलंबणे वा, आहारे वा, पडिबंधे वा ? जह चेव णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे अम्हं इओ तच्चे भवग्गहणे बहूसु कज्जेसु य मेढी पमाणं - जाव - धम्म-धुरा होत्था, तह चेव णं देवाणुप्पिया ! इण्हिं पि - जाव - धम्म-धुरा भविस्सह । अम्हे वि णं देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गा, भीया जम्मण-मरणाणं देवाणुप्पिया-सद्धिं मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयामो ।'

तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तु-पामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी–

'जइ णं तुब्भे संसार-भउव्विग्गा - जाव - मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं-सएहिं रज्जेहिं जेट्ठ-पुत्ते ठावेह, ठावेत्ता पुरिस-सहस्स-वाहिणीओ सीयाओ दुरुहह मम अंतियं पाउब्भवह ।'

तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति ।

तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो गहाय जेणेव कुंभए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ ।

तए णं कुंभए ते जियसत्तु-पामोक्खे विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।

तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं-साइं रज्जाइं जेणेव साइं-साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइं-सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

मल्लीए निक्खमणमहोच्छवो

२२९ तए णं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्स आसणं चलइ ।

तए णं से सक्के, देविंदे, देवराया आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ । इमेयारूवे अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए, संकप्पे समुप्पज्जित्था –

'एवं खलु जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, मिहिलाए नयरीए, कुंभगस्स रण्णो धूया पभावईए देवीए अत्तया मल्ली अरहा निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ । तं जीयमेयं तीय-पच्चुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलइत्तए, तं जहा–

संगहणी-गाहा– तिण्णेव य कोडि-सया, अट्ठासीइं च हुंति कोडीओ ।
असिइं च सय-सहस्सा, इंदा दलयंति अरहाणं ॥१॥'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, मिहिलाए रायहाणीए, कुंभगस्स रण्णो धूया, पभावईए देवीए अत्तया मल्ली अरहा निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ - जाव - इंदा दलयंति अरहाणं । तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं, भारहं वासं, मिहिलं रायहाणिं, कुंभगस्स रण्णो भवणंसि इमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।'
तए णं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं, देवरण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे करयल–परिग्गहियं दस-णहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जंभए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं, भारहं वासं, मिहिलं रायहाणिं, कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिण्णि कोडि-सया अट्ठासीइं च कोडीओ असीइं सय-सहस्साइं-इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं साहरह, साहरित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।'

२३० तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा - जाव - पडिसुणेत्ता उत्तर-पुरत्थिमं दिसी-भागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, - जाव - उत्तर-वेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए - जाव - देवगईए वीईवयमाणा-वीईवयमाणा, जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिण्णि कोडिसया - जाव - साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं दस-णहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।
तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे, देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं - जाव - तमाण-त्तियं पच्चप्पिणइ ।

२३१ तए णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं - जाव - मागहओ पायरासो त्ति बहूणं सणाहाण य, अणाहाण य, पंथियाण य, पहियाण य, करोडियाण य, कप्पडियाण य, एगमेगं हिरण्ण-कोडिं अट्ठ य अणूणाइं सय-सहस्साइं–इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं दलयइ ।
तए णं कुंभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ-तत्थ, तहिं-तहिं, देसे-देसे बहूओ महाणस-सालाओ करेइ। तत्थ णं बहवे मणुया दिण्ण-भइ-भत्त-वेयणा विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति । जे जहा आगच्छंति, तं जहा–पंथिया वा, पहिया वा, करोडिया वा, कप्पडिया वा, पासंडत्था वा, गिहत्था वा, तस्स य तहा आसत्थस्स, वीसत्थस्स, सुहासण-वर-गयस्स तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं परिभाएमाणा, परिवेसेमाणा विहरंति ।
तए णं मिहिलाए नयरीए सिंघाडग–तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहु-जणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ–
'एवं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्व-काम-गुणियं, किमिच्छियं, विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं बहूणं समणाण य, माहणाण य, सणाहाण य, अणाहाण य, पंथियाण य, पहियाण य, करोडियाण य, कप्पडियाण य, परिभाइज्जइ, परिवेसिज्जइ ।
संगहणी-गाहा– वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं ।
सुर-असुर देव-दाणव-नरिंद-महियाण निक्खमणे।।१।।'

२३२ तए णं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिण्णि कोडि-सया अट्ठासीइं च कोडीओ असीइं सय-सहस्साइं–इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं दलइत्ता निक्खमामि त्ति मणं पहारेइ ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पे, रिट्ठे विमाण-पत्थडे, सएहिं-सएहिं विमाणेहिं, सएहिं-सएहिं पासाय-वडिंसएहिं, पत्तेयं-पत्तेयं चउहिं सामाणिय-साहस्सीहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्ख-देव-साहस्सीहिं, अण्णेहि य बहूहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरिवुडा महयाऽऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडु-प्पवाइय-रवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, तं जहा–
संगहणी-गाहा– सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ।।१।।

२३३ तए णं तेसिं लोगंतियाणं देवाणं पत्तेयं-पत्तेयं आसणाइं चलंति तहेव - जाव - तं जीयमेयं लोगंतियाणं देवाणं अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करित्तए त्ति । तं गच्छामो णं अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करेमो त्ति कट्टु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसी-भागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइ दंडं निसिरंति, एवं - जहा - जंभगा - जाव - जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मल्ली अरहा, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णा सखिंखिणियाइं दसद्ध-वण्णाइं वत्थाइं पवर-परिहिया, करयल-परिग्गहियं दस-णहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं, मणामाहिं, वग्गूहिं एवं वयासी –

'बुज्झाहि भगवं लोग-णाहा ! पवत्तेहि धम्मतित्थं, जीवाणं हिय-सुह-निस्सेयस-करं भविस्सइ' त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयंति, मल्लिं अरहं वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया ।

२३४ तए णं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे, जेणेव अम्मापियरो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल परिग्गहियं दस-णहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

'इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।' 'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।'

तए णं कुंभए राया कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठ-सहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं - जाव - अट्ठ-सहस्सेणं भोमेज्जाणं कलसाणं अण्णं च महत्थं, महग्घं, महरिहं, विउलं, तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह । ते वि - जाव - उवट्ठवेंति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे - जाव - अच्चुय-पज्जवसाणा आगया ।

तए णं सक्के देविंदे, देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठ-सहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं - जाव - अण्णं च महत्थं, महग्घं, महरिहं, विउलं तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह ।' ते वि - जाव - उवट्ठवेंति । ते वि कलसा 'तेसु चेव कलसेसु' अणुपविट्ठा ।

तए णं से सक्के, देविंदे, देवराया, कुंभए य राया मल्लिं अरहं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं निवेसेंति, अट्ठ-सहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं - जाव - तित्थयराभिसेयं अभिसिंचंति ।

तए णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च सब्भिंतर-बाहिरियं - जाव - सव्वओ समंता आधावंति परिधावंति ।

२३५ तए णं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेइ, - जाव - सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मणोरमं सीयं उवट्ठवेह ।' ते वि उवट्ठवेंति ।

तए णं सक्के देविंदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेग-खंभ-सय-सण्णिविट्ठं - जाव - मणोरमं सीयं उवट्ठवेह, ते वि - जाव - उवट्ठवेंति । सा वि सीया तं चेव सीयं अणुप्पविट्ठा ।

तए णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव मणोरमा सीया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरमं सीयं अणुपयाहिणीकरेमाणे मणोरमं सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासण-वर-गए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।

तए णं कुंभए अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया - जाव - सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह ।' ते वि - जाव - परिवहंति ।

तए णं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए सीयाए दक्खिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं, अवसेसा देवा जहारिहं मणोरमं सीयं परिवहंति ।

संगहणी-गाहा–पुव्विं उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्ठ-रोम-कूवेहिं । पच्छा वहंति सीयं, असुरिंद-सुरिंद-नागिंदा ।।१।।

चल-चवल-कुंडल-धरा, सच्छंद-विउव्वियाभरण-धारी । देविंद-दाणविंदा, वहंति सीयं जिणिंदस्स ।।२।।

तए णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरुढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठ-मंगला पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया– एवं निग्गमो जहा जमालिस्स ।

तए णं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पेगइया देवा मिहिलं रायहाणिं अब्भिंतर-बाहिरं आसिय-संमज्जिय-संमट्ठ-सुइ-रत्थंतरावण-वीहियं करेंति - जाव - परिधावंति ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३६ तए णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोग-वर-पायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, आभरणालंकारं ओमुयइ ।
तए णं पभावई हंस-लक्खणेणं पडसाडएणं आभरणालंकारं पडिच्छइ ।
तए णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ।
तए णं सक्के, देविंदे, देवराया, मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता खीरोदग-समुद्दे साहरइ ।
तए णं मल्ली अरहा 'नमोत्थु णं सिद्धाणं' ति कट्टु सामाइय-चरित्तं पडिवज्जइ । जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइय-चरित्तं पडिवज्जइ, तं समयं च णं देवाण माणुसाण य निग्घोसे, तुडिय-णिणाए, गीय-वाइय-निग्घोसे य सक्क-वयण-संदेसेणं निलुक्के यावि होत्था । जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइय-चारित्तं पडिवण्णे, तं समयं च मल्लिस्स अरहओ माणुस-धम्माओ उत्तरिए मणपज्जव-णाणे समुप्पण्णे ।

२३७ मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे, चउत्थे पक्खे, पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं, पुव्वण्हकाल-समयंसि, अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं, अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं, तिहिं इत्थीसएहिं—अब्भितरियाए परिसाए, तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए । मल्लि अरहं इमे अट्ठ नायकुमारा अणुपव्वइंसु, तं जहा —
गाहा—नंदे य नंदिमित्ते, सुमित्त-बलमित्त-भाणुमित्ते य । अमरवइ अमरसेणे, महसेणे चेव अट्ठमए ।।१।।
तए णं ते भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा मल्लिस्स अरहओ निक्खमण-महिमं करेंति, करेत्ता जेणेव नंदीसरे दीवे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियं महिमं करेंति, करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया ।

मल्लीए केवलणाणं

२३८ तए णं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वइए, तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्ह-काल-समयंसि, असोग-वर-पायवस्स अहे पुढवि-सिलापट्टयंसि सुहासण-वर-गयस्स सुहेणं परिणामेणं, पसत्थाहिं लेसाहिं, तयावरण-कम्मरय-विकरण-करं अपुव्व-करणं अणुपविट्ठस्स अणंते, अणुत्तरे, निव्वाघाए, निरावरणे, कसिणे, पडिपुण्णे, केवल-वर-नाण-दंसणे समुप्पण्णे ।
तेणं कालेणं, तेणं समएणं, सव्वदेवाणं आसणाइं चलेंति, समोसढा, धम्मं सुणेंति, सुणेत्ता जेणेव नंदीसरे दीवे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियं महिमं करेंति, करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया । कुंभए वि निग्गच्छइ।

जियसत्तुपामोक्खाणं पव्वज्जा

२३९ तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो जेट्ठ-पुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिस-सहस्स-वाहिणीयाओ सीयाओ दुरुढा समाणा सव्वि-ड्ढीए जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति - जाव - पज्जुवासंति ।
तए णं मल्ली अरहा तीसे महइ-महालियाए परिसाए, कुंभगस्स रण्णो तेसिं च जियसत्तु-पामोक्खाणं छण्हं राईणं धम्मं परिकहेइ । परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया । कुंभए समणोवासए - जाव - पडिगए, पभावई य ।
तए णं जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—
'आलित्तए णं भंते ! लोए, पलित्तए णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्तए णं भंते ! लोए जराए, मरणेण य - जाव - पव्वइया - जाव - चोद्दसपुव्विणो । अणंते वर-नाण-दंसणे केवले समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा ।

मल्लिजिणस्स सिस्स-संपदा

२४० तए णं मल्ली अरहा सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ ।
मल्लिस्स णं अरहओ भिसग-पामोक्खा अट्ठावीसं गणा, अट्ठावीसं गणहरा होत्था ।
मल्लिस्स णं अरहओ चत्तालीसं समण-साहस्सीओ उक्कोसिया समण-संपया होत्था, बंधुमइ-पामोक्खाओ पणपन्नं अज्जिया-साहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था,
सावयाणं एगा सय-साहस्सी चुलसीइं सहस्सा, सावियाणं तिण्णि सय-साहस्सीओ पण्णट्ठिं च सहस्सा, छस्सया चोद्दसपुव्वीणं, वीसं सया ओहिनाणीणं, बत्तीसं सया केवल-नाणीणं, पणतीसं सया वेउव्वियाणं अट्ठ-सया मणपज्जव-नाणीणं, चोद्दस-सया वाईणं, वीसं सया अणुत्तरोववाइयाणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्लिस्स णं अरहओ दुविहा अंतकर-भूमी होत्था, तं जहा— जुगंतकर-भूमी परियायंतकर-भूमी य - जाव - वीसइमाओ पुरिस-जुगाओ जुगंतकर-भूमी दुवास-परियाए अंतमकासी ।

मल्लिजिणस्स निव्वाणं

२४१ मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, वण्णेणं पियंगु-सामे, सम-चउरंस-संठाणे, वज्ज-रिसह-नाराय-संघयणे मज्झदेसे, सुहंसुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सम्मेय-सेल-सिहरे पाओवगमणं-णुवन्ने । मल्ली णं अरहा एगं वास-सयं अगार-वास-मज्झे, पणपण्णं वास-सहस्साइं वास-सयऊणाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, पणपण्णं वास-सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता, जे से गिम्हाणं पढमे मासे, दोच्चे पक्खे, चेत्तसुद्धे, तस्स णं चेत्त-सुद्धस्स चउत्थीए पक्खेणं, भरणीए नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अद्धरत्त-काल-समयंसि, पंचहिं अज्जिया-सएहिं—अब्भितरियाए परिसाए, पंचहिं अणगार-सएहिं-बाहिरियाए परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं, वग्घारियपाणी पाए साहट्टु खीणे वेयणिज्जे, आउए, नाम-गोए, सिद्धे । एवं परिनिव्वाण-महिमा भाणियव्वा जहा उसहस्सतित्थयरस्स नंदीसरे अट्ठाहियाओ पडिगयाओ ।[1]

णाया० सु० १, अ०८ ।

४. अरिट्ठनेमिचरियं

कल्लाणगाणि

२४२ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी पंचचित्ते होत्था, तं जहा—
चित्ताहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते - जाव - चित्ताहिं परिनिव्वुए[2] ।

गब्भवक्कंती सुमिणदंसणाइं य

२४३ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी जे से वासाणं चउत्थे मासे, सत्तमे पक्खे, कत्तियबहुले तस्स णं कत्तियबहुलस्स बारसीपक्खेणं[3] अपराजियाओ महाविमाणाओ बत्तीसं सागरोवमट्ठितीयाओ[4] अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सोरियपुरे नगरे[5] समुद्दविजयस्स रन्नो[6] भारियाए सिवाए देवीए[7] पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि -जाव- चित्ताहिं गब्भत्ताए वक्कंते[8], सव्वं तहेव, सुमिण-दंसण-दविण-संहरणाइयं एत्थ भणियव्वं[9] ।।

कप्प० सु० १६२ ।

---

१ वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—
उग्गतवसंजमवओ, पगिट्ठफलसाहगस्स वि जयिस्स । धम्मविसए वि सुहमा वि, होइ माया अणत्थाय ।।१।।
जह मल्लिस्स महाबल-भवम्मि तित्थयरनामबंधे वि । तव-विसय-थोवमाया जाया जुवइत्त-हेउत्ति ।।२।।

२. ठाणं० अ० ५ उ० १, सु० ४११ ।
३. सप्त० स्था० १४, गा० ६२ ।
४. सप्त० स्था० १३, गा० ५८ ।
५. सप्त० स्था० २८, गा० ९४ ।
६. सप्त० स्था० ३०, गा० ९८ ।
७. सप्त० स्था० २९, गा० ९६ ।
८. ठाणं० अ० ५, उ० १, सु० ४११।
९. कप्प० सु० ३३-८४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्माइं

२४४ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी जे से वासाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे सावणसुद्धे तस्स णं सावणसुद्धस्स पंचमीपक्खेणं नवण्हं मासाणं - जाव - चित्ताहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[2] अरोगा अरोगं पयाया । जम्मणं समुद्दविजया-भिलावेणं नेतव्वं - जाव[3] - तं होउ णं कुमारे अरिट्ठनेमी नामेणं ।।

कप्प० सु० १६३ ।

पव्वज्जा

२४५ अरहा अरिट्ठनेमी दक्खे -जाव- विणीए तिन्नि वाससयाइं अगारवासमज्झे वसित्ता[4] णं पुणरवि लोयंतिएहिं जीयकप्पिएहिं देवेहिं तं चेव सव्वं भाणियव्वं - जाव - दायं दाइयाणं परिभाएत्ता[5] जे से वासाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे सावणसुद्धे तस्स णं सावण-सुद्धस्स[6] छट्ठीपक्खेणं[7] पुव्वण्हकालसमयंसि[8] उत्तरकुराए सीयाए[9] सदेवमणुयासुराए परिसाए अणुगम्ममाणमग्गे -जाव- बारवईए नगरीए[10] मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवयउज्जाणे[11] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठावेइ, सीयं ठावित्ता सीयाए पच्चोरुहइ, सीयाए पच्चोरुहित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं[12] चित्ताहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[13] एगं देवदूसमादाय[14] एगेणं पुरिससहस्सेणं सद्धिं मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[15] ।।

कप्प० सु० १६४ ।

केवलनाणं

२४६ अरहा णं अरिट्ठनेमी चउप्पन्नं राइंदियाइं[16] निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे तं चेव सव्वं -जाव[17]- पणपन्नइमस्स राइंदियस्स अंतरा वट्टमाणे, जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे अस्सोयबहुले तस्स णं अस्सोयबहुलस्स पन्नरसीपक्खेणं[18] दिवसस्स पच्छिमे भागे[19] उर्प्पि उज्जितसेलसिहरे[20] वडपायवस्स अहे[21] अट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं[22] चित्ताहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[23] झाणंतरियाए वट्टमाणस्स -जाव- अणंते अणुत्तरे -जाव - सव्वलोए सव्वजीवाणं भावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ ।।

कप्प० सु० १६५ ।

गणहराइसंपया

२४७ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस गणा गणहरा होत्था ।

अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स वरदत्त-पामोक्खाओ अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समण-संपया होत्था[24] ।

---

१. सप्त० स्था० २१, गा० ८१ ।
२. सप्त० स्था० २२, गा० ८२।
३. कप्प० सु० ९३-१०३ ।
४. कप्प० सु० ११०।
५. कप्प० सु० ११०-१११।
६. सप्त० स्था० ५९, गा० १४५।
७. सप्त० स्था० ५९, गा० १४७।
८. सप्त० स्था० ७१ गा० १५७।
९. सप्त० स्था० ६४, गा० १५२।
१०. सम० स० १५७। सु० १०।
११. सप्त० स्था० ६७, गा० १५६।
१२. सम० स० १५७, सु० १४।
१३. ठाणं० अ० ५, उ० १, सु० ४११।
१४. सप्त० स्था० ७२, ७३, गा० १५८।
१५. सप्त० स्था० ६५, गा० १५३ ।
१६. सप्त० स्था० ८४, गा० १७३।
१७. कप्प० सु० ११६-१२० ।
१८. सप्त० स्था० ८७, गा० १८३।
१९. सप्त० स्था० ९५, गा० १९०।
२०. सप्त० स्था० ९०, गा० १८४।
२१. सप्त० स्था० ९१, गा० १८५।
२२. सप्त० स्था० ९४, गा० १८९।
२३. सप्त० स्था० १४८, गा.० ३१२।
२४. सम० स० १८, सु० २।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अज्ज-जक्खिणि-पामोक्खाओ चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया संपया होत्था[1]।
अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नंद-पामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी अउणत्तरिं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासगसंपया होत्था[2]।
अरहओ अरिट्ठनेमिस्स महासुव्वया-पामोक्खाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ छत्तीसं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियाणं संपया होत्था[3]।

२४८ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खर-जाव-होत्था[4]।
पण्णरस-सया ओहिनाणीणं[5], पन्नरस-सया केवलनाणीणं[6]।

२४९ पन्नरस-सया वेउव्वियाणं[7], दस-सया विउलमतीणं[8],
अट्ठ-सया वाईणं[9],

२५० सोलस-सया अणुत्तरोववाइयाणं[10],
पन्नरस समणसया सिद्धा, तीसं अज्जियासयाइं सिद्धाइं।

कप्प० सु.० १६६।

अंतकडभूमी

२५१ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स दुविहा अंतकडभूमी होत्था, तं जहा--
१. जुगंतकडभूमी य, २. परियायंतकडभूमी य - जाव - अट्ठमाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकडभूमी, दुवासपरियाए अंतमकासी[11]।

कप्प० सु० १६७।

कुमारवासाइं निव्वाणं य

२५२ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी तिन्नि वाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता[12], चउप्पन्नं राइंदियाइं छउमत्थपरियागं पाउणित्ता[13], देसूणाइं सत्त वाससयाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता[14], पडिपुन्नाइं सत्त वाससयाइं सामन्नपरियागंपाउ णित्ता, एगं वाससहस्सं सव्वाउयं पालइत्ता[15], खीणे वेयणिज्जाउयनामगोत्ते इमीसे ओसप्पिणीए दुसमसुसमाए समाए बहुवीइक्कंताए जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स अट्ठमीपक्खेणं उप्पिं उज्जितसेलसिहरंसि पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं चित्ताहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि नेसज्जिए कालगए - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

कप्प० सु० १६८।

---

१ सम० स० ४०, सु०१।
२ सप्त० स्था०११४, गा० २४२।
३ सप्त० स्था० ११५, गा० २४५।
४ ठाणं, अ० ४, उ० ४, सु० ३८१।
५ सप्त० स्था०११८, गा० २५७।
६ सप्त० स्था० ११६,गा० २४९।
७ सप्त० स्था० १२०, गा० २६३।
८ सप्त० स्था० ११७, गा० २५४।
९ ठाणं० अ० ८, सु० ६५१।
१० सप्त० स्था० १२३ गा० २६९।
११ क-ठाणं० अ० ८, सु० ६२०।
ख-सप्त० स्था० १५८, १५९ गा० ३२३, ३२४।
१२ सप्त० स० ३० सु०२।
१३ सम० स० ५४, सु० २।
१४ सम० स० ७०० सु०४।
१५ सम० स० १०००, सु०७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. पास-चरियं

कल्लाणगाणि

२५३ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए पंचविसाहे होत्था, तं जहा–
१ विसाहाहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
२ विसाहाहिं जाए,
३ विसाहाहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,
४ विसाहाहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने,
५ विसाहाहिं परिनिव्वुए[1] ।

कप्प० सु० १४८।

गब्भवक्कन्ती

२५४ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुले तस्स णं चित्तबहुलस्स चउत्थीपक्खेणं[2] पाणयाओ कप्पाओ वीसं सागरोवमट्ठितीयाओ[3] अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वाणारसीए नयरीए[4] आससेणस्स रन्नो वम्माए देवीए[5] पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि विसाहाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[6] आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते।

कप्प० सु० १४९।

२५५ पासे णं अरहा पुरिसादाणीए तिण्णाणोवगए यावि होत्था। चइस्सामि त्ति जाणइ, चयमाणे न जाणइ, चुए मि त्ति जाणइ, तेणं चेव अभिलावेणं सुविणदंसणविहाणेणं सव्वं - जाव - नियगं गिहं अणुप्पविट्ठा - जाव - सुहं सुहेणं तं गब्भं परिवहइ[7] ।

कप्प० सु० १५०।

जम्माइं

२५६ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए जे से हेमंताणं दोच्चे मासे तच्चे पक्खे पोसबहुले तस्स णं पोसबहुलस्स दसमीपक्खेणं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि विसाहाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[8] अरोगा अरोगं पयाया,

जम्मणं सव्वं पासाभिलावेण भाणियव्वं - जाव - तं होउ णं कुमारे पासे नामेणं ।।

कप्प० सु० १५१।

पव्वज्जा

२५७ पासे णं अरहा पुरिसादाणीए दक्खे दक्खपइण्णे पडिरूवे अल्लीणे भद्दए विणीए तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता[9] णं पुणरवि लोयंतिएहिं जियकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं - जाव - एवं वयासी–
जय जय नंदा, जय जय भद्दा, भद्दं ते - जाव - जय जय सद्दं पउंजंति ।

कप्प० सु० १५२।

---

१. ठाणं अ० ५, उ० १, सु० ४११।
२ सप्त० स्था० १४, गा० ६३।
३ सप्त० स्था० १३, गा० ५६, ५८।
४ सप्त० स्था० २८, गा० ९४।
५ क-सप्त० स्था० २९, ३० । गा०९६,९८।
५ ख-सम० स० १५७, सु० ५-६।
६ ठाणं० अ० ५, उ०१, सु० ४११।
७ कप्प० सु० ३, ३३-९२ ।
८ ठाणं० अ०५, उ०१, सु० ४११।
९ सम० स० ३०, सु० ६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५८ पुव्वि पि णं पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स माणुस्सगाओ गिहत्थधम्माओ अणुत्तरे आहोहियए तं चेव सव्वं - जाव - दायं दाइयाणं परिभाएत्ता जे से हेमंताणं दोच्चे मासे तच्चे पक्खे पोसबहुले तस्स णं पोसबहुलस्स एक्कारसीदिवसेणं पुव्वण्हकालसमयंसि विसालाए सिवियाए सदेवमणुयासुराए परिसाए तं चेव सव्वं। नवरं वाणारसिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता, जेणेव आसमपए उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठावेइ, ठावित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, सीयाओ पच्चोरुहित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, पंचमुट्ठियं लोयं करित्ता अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं[1] विसाहाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[2] एगं देवदूसमायाय[3] तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए[4] ।।

कप्प० सु० १५३।

उवसग्गसहणं

२५९ पासे णं अरहा पुरिसादाणीए तेसीइं राइंदियाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा– दिव्वा वा, माणुस्सा वा, तिरिक्खजोणिया वा, अणुलोमा वा, पडिलोमा वा ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे - जाव - सम्मं सहइ तितिक्खइ खमइ अहियासेइ ।

कप्प० सु० १५४।

केवलनाणं

२६० तए णं से पासे भगवं अणगारे जाए इरियासमिए - जाव - अप्पाणं भावेमाणस्स तेसीइं राइंदियाइं विइक्कंताइं चउरासीइमस्स राइंदियस्स अंतरा वट्टमाणे जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुले तस्स णं चित्तबहुलस्स चउत्थीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि धायति-पायवस्स अहे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं विसाहाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे- जाव-केवल-वर-नाण-दंसणे समुप्पन्ने - जाव - जाणमाणे पासमाणे विहरइ ।

कप्प ० सु० १५५।

गणहराइसंपया

२६१ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा–

गाहा-संभे य अज्जघोसे य, वसिट्ठे बंभयारि य । सोमे सिरिहरे चेव वीरभद्दे जसे वि य[5] ।

कप्प० सु० १५६।

पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अज्जदिण्ण-पामोक्खाओ सोलस्स समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था[6] ।

पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स पुप्फचूला-पामोक्खाओ अट्ठत्तीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपदा होत्था[7] ।

पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स सुनंद-पामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी चउसट्ठिं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासगसंपया होत्था[8] ।

पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स सुनंदा-पामोक्खाणं समणोवासिगाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियाणं संपया होत्था[9] ।

२६२ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धट्ठसया चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खर - जाव - चोद्दसपुव्वीणं संपया होत्था[10] ।

पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स चोद्दस सया ओहिनाणीणं[11],

दस सया केवलनाणीणं[12],

---

१ सम० स० १५७, सु० १४।
२ ठाणं० अ० ५, उ०१, सु० ४११।
३ सम० स० १५७, सु० ११।
४ सम० स० १५७, सु० १३।
५ ठाणं अ० ८, सु० ६१७। सम० स० ८, सु० ८।
६ सम० स० १६, सु० ४।
७ सम० स० ३८, सु० १।
८ सप्त० स्था० ११४ गा० २४२।
९ सम० स० १२६ सु० १।
१० सम० स० १०५, सु० १।
११ सप्त० स्था० ११८ गा० २५७।
१२ सम० स० ११३, सु० ८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६३ एक्कारस सया वउव्वियाणं[1],
अद्धट्ठमसया विउलमईणं[2], छस्सया वाईणं[3],
छ सया रिउमईणं[4],

२६४ बारस सया अणुत्तरोववाइयाणं संपया होत्था[5] ।

कप्प सु० १५७।

अंतकडभूमी

२६५ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स दुविहा अंतकडभूमी होत्था, तं जहा–
जुयंतकडभूमी य, परियायंतकडभूमी य। - जाव - चउत्थाओ पुरिसजुगाओ जुयंतकडभूमि तिवासपरियाए अंतमकासी ।[6]

कप्प सु० १५८।

अगारवासाइं निव्वाणं य

२६६ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता[7], तेसीतिं राइंदियाइं छउमत्थपरियायं पाउणित्ता[8], देसूणाइं सत्तरिं वासाइं केवलिपरियायं पाउणित्ता[9], बहुपडिपुन्नाइं सत्तरिं वासाइं सामन्नपरियायं पाउणित्ता[10], एक्कं वाससयं सव्वाउयं[11] पालित्ता खीणे वेयणिज्जाउयनामगोत्ते इमीसे ओसप्पिणीए दूसमसूसमाए समाए बहुवीइक्कंताए जे से वासाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे सावणसुद्धे तस्स णं सावणसुद्धस्स अट्ठमीपक्खेणं उप्पिं सम्मेयसेलसिहरंसि अप्पचोत्तीसइमे[12] मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं[13] विसाहाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं पुव्वण्हकालसमयंसि[15] वग्घारियपाणी कालगए - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणे ।

कप्प० सु० १५९।

---

१ सम० स० ११४, सु० २।
२ सत्त० स्था० ११७, गा० २५४
३ क० ठाण० अ० ६ सु० ५२०।
ख० सम० १०९, सु० ४।
४ सत्त० स्था० ११७, गा० २५४।
५ सत्त० स्था० १२३, गा० २६९।
६ सत्त० स्था० १५८-५९, गा० ३२३-२४।
७ सम० स० ३०, सु० ६।
८ आव० नि० चु० गा० २३९।
९ आव० नि० चु० गा० ३०२।
१० सम० स० ७०, सु० १।
११ प्रव० द्वा० ३२, गा० ३८७।
१२ आव० नि० चु० गा० ३०८।
१३ सत्त० स्था० १५३, गा० ३१७।
१४ ठाण० अ० ५, उ० १, सु० ४११।
१५ सत्त० स्था० १५५, गा० ३२२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. महावीर-चरियं

पुव्वभवे पोट्टिलो

२६७ समणे भगवं महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठे विमाणे देवत्ताए उववण्णे[1] ।

सम० स० १३४।

कल्लाणयाणि

२६८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे यावि होत्था–

१. हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
२. हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए,
३. हत्थुत्तराहिं जाए,
४. हत्थुत्तराहिं सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,
५. हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अव्वाघाए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवल-वर-नाण-दंसणे समुप्पण्णे ।

साइणा भगवं परिनिव्वुए ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९८८।
कप्प० सु० १।

देवाणंदागब्भागमणं

२६९ समणे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए–सुसमसुसमाए समाए वीइक्कंताए, सुसमाए समाए वीतिक्कंताए, सुसमदुसमाए समाए वीतिक्कंताए, दुसमसुसमाए समाए बहु वीतिक्कंताए–पण्णहत्तरीए वासेहिं, मासेहि य अद्धणवमेहिं सेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे, अट्ठमे पक्खे–आसाढसुद्धे, तस्स णं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं, महाविजयसिद्धत्थ-पुप्फुत्तर-पवर-पुंडरीय-दिसासोवत्थिय-वद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं सागरोवमाइं आउयं पालइत्ता आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहणकुंड-

---

१ वीरस्स पुव्वभवा :

ओसप्पिणी इमीए, पढमं चिय गामचिंतग-भवंमि१ ।। नीसेस सोक्खमूलं, सम्मत्तमणुत्तमं पत्तो ।।१।।-१७।।
तत्तो पाविय देवत्तमुत्तमं२ भरहचक्कवट्टिस्स ।। मिरिइत्ति सुओ३ होउं, काउं जिणदेसियं दिक्खं ।।२।।-१८।।
दुस्सहपरिसहनिम्महियमाणसो पयडिउं तिदंडिवयं ।। मिच्छत्तविलुत्तमई, कविलस्स कुदेसणं काउं ।।३।।-१९।।
तद्दोसेण अयराणं४, वड्ढिउं कोडकोडि संसारं ।। १८छब्भवगहणे पुणरवि, पारिवज्जं पवज्जित्ता ।।४।।-२०।।
दीहं संसारं हिंडिऊण, रायगिहंमि रायसुओ ।। होऊण विस्सभूई१९, घोरं संजममणुचरित्ता ।।५।।-२१।।
मरणे नियाणबंधं, निव्वत्तिय सुरसुहं२० च भोत्तूणं ।। पोयणपुरे तिविट्ठू२१, परिपालिय वासुदेवत्त ।।६।।-२२।।
मूयाए पियमित्तो२२ चक्कित्तं२३ संजमं च अणुचरिअं ।। छत्तग्गाए नंदण२४, नरनाहत्तं२५ च पव्वज्जं ।।७।।-२३।।
परिपालिय वीसइकारणेहिं, तित्थाहिवत्तमज्जिणिउं ।। पाणयकप्पा चविउं२६, कुंडग्गामंमि नयरंमि ।।८।।-२४।।
सिद्धत्थरायपुत्तो२७, होउं जंतूणमुद्धरणहेउं ।। सव्वविरइं पवज्जिय, दुव्विसहपरीसहे सहिउं ।।९।।-२५।।

गुणचंदरइयं महा० प० १ गा० १७-२५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरसन्निवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए सीहोब्भवभूएणं अप्पाणेणं कुच्छिसि गब्भं वक्कंते[1] ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९८९

---

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भयवं महावीरे जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरीयाओ महाविमाणाओ वीसं सागरोवमट्ठियाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे इमीसे ओसप्पिणीए--

सुसममुसमाए समाए विइक्कंताए सुसमाए समाए विइक्कंताए

दुस्समसुसमाए समाए बहुविइक्कंताए सागरोवमकोडाकोडीए बायालीसवाससहस्सेहिं ऊणियाए पंचहत्तरीए वासेहिं अद्धनवमेहिं य मासेहिं सेसेहिं-

इक्कवीसाए तित्थयरेहिं इक्खागकुलसमुप्पन्नेहिं कासवगुत्तेहिं

दोहि य हरिवंसकुलसमुप्पन्नेहिं गोतमसगुत्तेहिं,

तेवीसाए तित्थयरेहिं वीइक्कंतेहिं–समणे भगवं महावीरे चरिमे तित्थकरे पुव्वतित्थकरनिद्दिट्ठे माहणकुण्डग्गामे नगरे उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते ।

जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते तं रयणिं च णं सा देवाणंदा माहणी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमेयारूवे ओराले कल्लाणे सिवे धन्ने मंगल्ले सस्सिरीए चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा । तंजहा–

१गय, २वसह, ३सीह, ४अभिसेय, ५दाम, ६ससि, ७दिणयरं, ८ झयं, ९कुंभं ।

१० पउमसर, ११सागर, १२विमाण-भवण, १३ रयणुच्चय, १४सिहिं च ।।

तए णं सा देवाणंदा माहणी इमेतारूवे ओराले - जाव-सस्सिरीए चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणसिया हरिसवसविसप्पमाणहियया धाराहयकलंबुयं पिव समुस्ससिय रोमकूवा सुमिणोग्गहं करेइ, सुमिणोग्गहं करित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए रायहंससरिसीए गईए जेणेव उसभदत्ते माहणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उसभदत्तं माहणं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता भद्दासणवरगया आसत्था वीसत्था करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमे एयारूवे ओराले-जाव-सस्सिरीए चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा तं जहा–गय-जाव-सिहिं च ।

एएसि णं देवाणुप्पिया ! ओरालाणं-जाव-चोद्दसण्हं महासुमिणाणं के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ।

तए णं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए धाराहयकलंबुयं पिव समुस्ससियरोमकूवे सुमिणोग्गहं करेइ, करित्ता ईहं अणुपविसइ, ईहं अणुपविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तेसिं सुमिणाणं अत्थोग्गहं करेइ, करित्ता देवाणंदा-माहणिं एवं वयासी–

"ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्ठा, कल्लाणा णं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणा दिट्ठा एवं सिवा धन्ना मंगल्ला सस्सिरीया आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारगा णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्ठा । तं जहा–

अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोग लाभो देवाणुप्पिए !

पुत्त लाभो देवाणुप्पिए! सोक्खलाभो देवाणुप्पिए !

एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमाल-पाणि-पायं अहीण-पडिपुन्न-पंचिंदिय-सरीरं लक्खण-वंजणगुणोववेयं माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्णं सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगं ससि-सोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं देवकुमारोवमं दारयं पयाहिसि ।

से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते १ रिउव्वेय, २ जउव्वेय, ३ सामवेय, ४ अथव्वणवेय, इतिहासपंचमाणं, निघंटुछट्ठाणं, संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेयाणं सारए पारए धारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए संखाणे सिक्खाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अण्णेसु य बहुसु बंभन्नएसु परिव्वायएसु नएसु परिनिट्ठिएयावि भविस्सइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्ठा-जाव-आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-मंगल-कल्लाणकारगा णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्ठा ।"

तए णं सा देवाणंदा माहणी उसभदत्तस्स माहणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु उसभदत्तं माहणं एवं वयासी—

"एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं देवाणुप्पिया ! अवितहमेयं देवाणुप्पिया ! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! सच्चे णं एसमट्ठे से जहेयं तुब्भे वयह"— त्तिकट्टु ते सुमिणे सम्मं पडिच्छइ, ते सुमिणे सम्मं पडिच्छित्ता उसभदत्तेणं माहणेणं सद्धिं ओरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे सतक्कतू सहस्सक्खे मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढ-लोगाहिवई बत्तीसविमाण-सय-सहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबर-वत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेम-चारु-चित्तचंचल-कुंडल-विलिहिज्जमाणगंडे भासुर-बोंदी पलंब-वणमालधरे सोहम्मकप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सुहम्माए सभाए सक्कंसि सीहासणंसि निसण्णे ।।

से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावास-सयसाहस्सीणं, चउरासीए सामाणिय-साहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं, सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं चउरासीए आयरक्ख-देवसाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं सोहम्मकप्प-वासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्टगीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुपडह-वाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।।

इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे २ विहरइ,

तत्थ णं समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे माहणकुंडग्गामे नगरे उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंतं पासइ,

पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए परमाणंदिए पीइमणे परम-सोमणसिए हरिस-वस-विसप्पमाण-हियए धाराहय-नीव-सुरहि कुसुम-चचुमालइय-ऊससियरोमकूवे वियसिय-वर-कमल-नयण-वयणे पयलिय-वर-कडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंत-वच्छे पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ,

सीहासणाओ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेरुलिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-अंजण-निउणोविय-मिसिमिसित मणि-रयण-मंडियाओ पाउयातो ओमुयइ,

ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ,

एगसाडियं उत्तरासंगं करित्ता अंजलिमउलियग्गहत्थे तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ,

अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, वामं जाणुं अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ,

तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ,

पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

"नमोत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं,
आइगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं
पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं
अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं
धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं
दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा, (णं) अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं
जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं
सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गब्भगयस्स तिण्णि णाणाइं

२७० समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था। चइस्सामि त्ति जाणइ, चुएमि त्ति जाणइ, चयमाणे न जाणेइ, सुहुमे णं से काले पण्णत्ते ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९८९।

गब्भ-साहरणं

२७१ तओ णं समणे भगवं महावीरे अणुकंपएणं देवेणं "जीयमेयं," ति कट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे, पंचमे पक्खे–आसोयबहुले, तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेहिं जोगमुवागएणं बासीतिहिं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं[1] तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे[2] दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसाओ उत्तरखत्तियकुंडपुर-सन्निवेसंसि णायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठ-सगोत्ताए असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करेत्ता, सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं करेत्ता कुच्छिंसि गब्भं साहरइ ।
जे वि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे, तंपि य दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए कुच्छिंसि साहरइ ।

२७२ समण भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था। साहरिज्जिस्सामि त्ति जाणइ, साहरिएमि त्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे वि जाणइ, समणाउसो ![3]

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९८९।९९०।

नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स चरिमतित्थयरस्स पुव्वतित्थयरनिद्दिट्ठस्स-जाव-संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगये पासउ मे भगवं तत्थगए, इहगयं,"-ति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने ।।
तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--
-न एयं भूयं, न एयं भव्वं, न एयं भविस्सं, जं नं अरहंता वा, चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, पंतकुलेसु वा, तुच्छकुलेसु वा, दरिद्दकुलेसु वा, किविणकुलेसु वा, भिक्खायकुलेसु वा, माहणकुलेसु वा, आयाइंसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा,
एवं खलु अरहंता वा, चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा, उग्गकुलेसु वा, भोगकुलेसु वा, राइण्णकुलेसु वा, इक्खाग-कुलेसु वा, खत्तियकुलेसु वा, हरिवंसकुलेसु वा, अन्नतरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्ध-जाति-कुल-वंसेसु आयाइंसु वा आयाइंति वा आयाइस्संति वा ।
अत्थि पुण एसे वि भावे लोगच्छेरयभूए अणंताहिं ओसप्पिणीउस्सप्पिणीहिं वीइक्कंताहिं समुप्पज्जति, नामगोत्तस्स वा कम्मस्स अक्खीणस्स अवेइयस्स अणिज्जिण्णस्स उदएणं जन्नं अरहता वा, -जाव-माहणकुलेसु वा, आयाइंसु वा आयाइंति वा आया-इस्संति वा कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कमिंसु वा, वक्कमंति वा, वक्कमिस्संति वा,
नो चेव णं जोणीजम्मणनिक्खमणेणं निक्खमिंसु वा, निक्खमंति वा, निक्खमिस्संति वा ।
अयं च णं समणे भगव महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारिआए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते ।।

कप्प० सु० २।४-१९

१ सम० स० ८२, सु०२। २ सम० स० ८३, सु०१।

३ क—भग० स०५, उ० ४, सु० ७६,७७।
ख—तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं अरहंते भगवंते तहप्पगारेहिंतो अंतकुलेहिंतो वा-जाव-किविणकुलेहिंतो वा तहप्पगारेसु उग्गकुलेसु वा-जाव-अण्णतरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजातिकुलवंसेसु वा साहरावित्तए । तं सेयं खलु मम वि समणं भगवं महावीरं चरिमतित्थयरं पुव्वतित्थयरनिद्दिट्ठं माहणकुंडग्गामाओ नयराओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए कुच्छीओ खत्तियकुंडग्गामे नयरे नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगोत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरावित्तए,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे वि य णं से तिसलाए खत्तियाणीए गब्भे तं पि य णं देवाणंदाए माहणीए, जालंधरसगोत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरावित्ताए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता हरिणेगमेसिं पायत्ताणियाहिवइं देवं सद्दावेइ, हरिणेगमेसिं पायत्ताणियाहिवइं देवं सद्दावित्ता एवं वयासी—

एवं खलु देवाणुप्पिया ! न एयं भूयं, न एयं भव्वं, न एवं भविस्सं, जन्नं अरहंता वा-जाव-भिक्खागकुलेसु वा आयाइंसु वा आयाइंति वा, आयाइस्संति वा ।

एवं खलु अरहंता वा-जाव-हरिवंसकुलेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवंसेसु आयाइंसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा ।

अत्थि पुण एस भावे लोगच्छेरयभूए अणंताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं विइक्कंताहिं समुप्पज्जति, नामगोत्तस्स वा कम्मस्स अक्खीणस्स अवेइयस्स अणिज्जिन्नस्स उदएणं जन्नं अरहंता वा- जाव -भिक्खागकुलेसु वा, आयाइंसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा नो चेव णं जोणीजम्मणनिक्खमणेणं निक्खमिंसु वा, निक्खमंति वा, निक्खमिस्संत्ति वा ।

अयं च णं समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए वक्कंते ।

तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं अरहंते भगवंते तहप्पगारेहिंतो वा, अंतकुलेहिंतो वा -जाव-हरिवंसकुलेसु वा अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजातिकुलवंसेसु साहरावित्तए ।

तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं माहणकुंडग्गामाओ नयराओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए कुच्छिओ खत्तियकुंडग्गामे नयरे नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवसगोत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगोत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहराहि, साहरित्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पमेव पच्चप्पिणाहि ।।

तए णं से हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई देवे सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-जाव-हयहियए करयल-जाव-त्ति कट्टु एवं जं देवो आणवेइ त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ,

वयणं पडिसुणित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ

पडिनिक्खमित्ता उत्तरपुरच्छिमदिसीभागं अवक्कमइ,

अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ,

वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइत्ता, संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ, तं जहा—

रयणाणं वयराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलयाणं सोगंधियाणं जोइरसाणं अंजणाणं अंजणपुलयाणं रययाणं जायरूवाणं सुभगाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परियादियति ।

परियादित्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ,

समोहणित्ता उत्तरवेउव्वियं रूवं विउव्वइ,

उत्तरवेउव्वियं रूवं विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जयणाए उद्धुयाए सिग्घाए दिव्वाए देवगईए वीयीवयमाणे वीतीवयमाणे तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाण मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव उसभदत्तस्स माहणस्स गिहे जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छइ,

तेणेव उवागच्छित्ता आलोए समणस्स भगवओ महावीरस्स पणामं करेइ,

करित्ता देवाणंदाए माहणीए सपरिजणाए ओसोवणिं दलयइ,

ओसोवणिं दलइत्ता असुहे पोग्गले अवहरइ,

अवहरित्ता सुहे पोग्गले पक्खिवइ,

सुहे पोग्गले पक्खिवइत्ता 'अणुजाणउ मे भगवं !' ति कट्टु समणं भगवं महावीरं अव्वाबाहं अव्वाबाहेणं करयलसंपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव खत्तियकुंडग्गामे नयरे, जेणेव सिद्धत्थस्स खत्तियस्स गिहे, जेणेव तिसला खत्तियाणी तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता तिसलाए खत्तियाणीए सपरिजणाए ओसोवणिं दलयइ,

ओसोवणिं दलयित्ता असुहे पोग्गले अवहरइ,

असुहे पोग्गले अवहरित्ता सुहे पोग्गले पक्खिवइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्म-कल्लाणयकालो

२७३ **तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसला खत्तियाणी अह अण्णया कयाइ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं, अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीतिक्कंताणं, जे से गिम्हाणं पढमे मासे, दोच्चे पक्खे—चेत्तसुद्धे, तस्सणं चेत्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं, हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया ।**[1]

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९१।

सुहे पोग्गले पक्खिवइत्ता समणं भगवं महावीरं अव्वाबाह अव्वाबाहेणं तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरइ । जे वि य णं ते तिसलाए खत्तियाणीए गब्भे तं पि य णं देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरइ, साहरित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।

उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जइणाए उद्धुयाए सिग्घाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं-मज्झेणं जोयणसाहस्सीएहिं विग्गहेहिं उप्पयमाणे २ जेणामेव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सक्कंसि सीहासणंसि सक्के देविंदे देवराया तेणामेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणइ ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले तस्स णं आसोय बहुलस्स तेरसीपक्खेणं बासीइराइंदिएहिं विइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स अंतरा वट्टमाणे हियाणुकंपएणं देवेणं हरिणेगमेसिणा सक्कवयणसंदिट्ठेणं माहणकुंडग्गामाओ नयराओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंधर सगोत्ताए कुच्छीओ खत्तियकुंडग्गामे नयरे नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवसगोत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगोत्ताए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अव्वाबाहं अव्वाबाहेणं कुच्छिसि साहरिए ।

समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए आवि होत्था, साहरिज्जिस्सामि त्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे जाणइ, साहरिएमि, त्ति जाणइ ।

कप्प० सु० २०—३१।

१. जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदाए माहणीए जालधरसगोत्ताए कुच्छीओ तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगोत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरिए तं रयणिं च णं सा देवाणंदा माहणी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमे एयारूवे ओराले-जाव-सस्सिरीए चोद्दस महासुमिणे तिसलाए खत्तियाणीए हडे त्ति पासित्ता णं पडिबुद्धा। जं रयणिं च णं समणे भगव महावीरे देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए कुच्छीओ तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगोत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरिए तं रयणिं च णं सा तिसला खत्तियाणी तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भितरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमियघट्टमट्ठे विचित्तउल्लोयतले मणि-रयण-पणासियंधयारे बहुसम-सुविभत्त-भूमिभागे पंचवण्ण-सरस-सुरहि-मुक्क-पुप्फ-पुंजोवयारकलिए कालागरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-डज्झंत-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधगंधिए गंधवट्टिभूए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे उभओ उन्नये मज्झे णयगंभीरे गंगा-पुलिण-वालु-उद्दाल -सालिसए-तोय-वियखोभिय-दुगुल्ल-पट्ट-पडिच्छन्ने सुविरइय-रयत्ताणे रत्तंसुय-संवुए सुरम्मे आयीणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सुगंध-वर-कसुम-चुण्णसयणोवयारकलिए पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमेयारूवे ओराले चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तं जहा--

गय-वसह-सीह-अभिसेय, दाम-ससि-दिणयरं झयं-कुंभं । पउमसर-सागर-विमाण-भवण-रयणुच्चय-सिहिं च ।।१।।

तए णं सा तिसला खत्तियाणी तप्पढमयाए-तओ य चउद्दंतमूसिय-गलिय-विपुल-जलहर-हार-निकर-खीरसागर-ससंक-किरण-दगरय-रयय-महासेल-पंडरतरं समागय-महुयर-सुगंध-दाणवासिय-कवोलमूलं, देवराय-कुजरं वरप्पमाणं पेच्छइ, सजलघण-विपुल -जलहर-गज्जिय-गंभीर-चारु-घोसं इभं सुभं सव्वलक्खणकयंबियं वरोरुं ।१।

तओ पुणो धवल-कमलपत्त-पयराइरेगरूवप्पभं पहासमुदओवहारेहिं सव्वओ चेव दीवयंतं अइसिरिभर-पिल्लणा-विसप्पत-कंत-सोहंत- चारु-ककुहं तणुसुइ-सुकुमाल-लोमनिद्धच्छविं थिर-सुबद्ध-मंसलोवचिय-लट्ठ-सुविभत्त-सुंदरंगं पेच्छइ, घण-वट्ट-लट्ठ-उक्किट्ठ -विसिट्ठ-तुप्पग्ग-तिक्खसिगं दंतं सिवं समाणसोभंतसुद्धदंतं वसभं अमियगुण-मंगलमुहं ।२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तओ पुणो हार-निकर-खीरसागर-ससंक-किरण-दगरय-रयय-महासेल-पडरगोरं रमणिज्ज-पेच्छणिज्जं थिर-लट्ठ-पउट्ठं वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्ख-दाढा-विडंबियमुहं परिकम्मिय-जच्च-कमल-कोमल-भाइय-सोभंत-लट्ठउट्ठं रत्तोप्पल-पत्त-मउय-सुकुमाल तालु-निल्लालियग्गजीहं मूसागय-पवर-कणग-ताविय-आवत्तायंत-वट्ट-विमल-तडिसरिसनयणं विसाल-पीवर-वरोरुं पडिपुन्न-विमलखंधं मिउविसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ-विच्छिन्न-केसराडोवसोहिय-ऊसिय-सुनिम्मिय-सुजाय-अप्फोडिय-नंगूलं सोम्मं सोम्माकार लीलायंतं नहयलाओ ओवयमाणं नियगवयणमइवयंतं पेच्छइ सा गाढ-तिक्खनहं सीहं वयणसिरी-पल्लव-पत्त-चारु-जीहं ।३।

तओ पुणो पुण्णचंद-वयणा उच्चागय-ठाण-लट्ठसंठियं पसत्थरूवं सुपइट्ठिय-कणग-कुम्भ-सरिसोवमाणचलणं अच्चुन्नय-पीण-रइय-मंसल-उन्नय-तणु-तब-निद्धनहं कमल-पलास-सुकुमाल-कर-चरण-कोमल-वरंगुलिं कुरुविंदावत्त-वट्टाणु-पुव्वजंघं निगूढ-जाणुं गयवर-कर-सरिस-पीवरोरुं चामीकर-रइय-मेहला-जुत्त-कंत-विच्छिन्न-सोणि-चक्कं जच्चंजण-भमर-जलय-पकर-उज्जुय-सम-संहिय-तणुय-आदेज्ज-लडह-सुकुमाल-मउय-रमणिज्ज-रोमराइं नाभी-मंडल-विसाल-सुंदर-पसत्थ-जघणं करयलमाइय-पसत्थ-तिवलीय-मज्झं नाणा-मणि-रयण-कणग-विमल-महातवणिज्जाहारण-भूसण-विराइयंगमंगिं हारविरायंत-कुंदमाल-परिणद्ध-जलजलित-थणजुयल-विमल-कलसं आइय-पत्तिय-विभूसिएण य सुभग-जालुज्जलेण मुत्ता-कलावएणं उरत्थ-दीणारमालियविरइएणं कंठमणिसुत्तएण य कुंडल-जुयलुल्ल-संत-अंसोवसत्त-सोभंत-सप्पभेणं, सोभागुण-समुदएणं आणण-कुडुंबिएण कमलामल-विसाल-रमणिज्ज-लोयणं कमल-पज्जलंत-करगहिय-मुक्कतोयं लीलावाय-कय-पक्खएणं सुविसय-कसिण-घण-सण्ह-लंबंत-केसहत्थं, पउमद्दह-कमल-वासिणिं सिरिं भगवइं पिच्छइ हिमवंत-सेलसिहरे दिसागइंदोरु-पीवर-कराभिसिच्चमाणिं ।४।

तओ पुणो सरस-कुसुम-मंदार-दाम-रमणिज्जभूयं चंपगासोग-पुण्णाग-नाग-पियंगु-सिरीस-मोग्गरग-मल्लिया-जाइ-जूहियं-कोल्ल-कोज्ज-कोरिंट-पत्त-दमणय-नवमालिय-बउल-तिलय-वासंतिय-पउमुप्पल-पाडल-कुंदाइमुत्त-सहकार-सुरभिगंधिं अणुवम-मणोहरेणं गंधेणं दस दिसाओ वि वासयंतं सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-मल्ल-धवल-विलसंत-कंत-बहुवन्न-भत्तिचित्तं छप्पय-महुयरि-भमरगण-गुमगुमायंत-मिलंत-गुंजंत-देसभागं दामं पेच्छइ नभंगण-तलाओ ओवयंतं ।५।

ससिं च गोखीर-फेण-दगरय-रयय-कलस-पंडरं सुभं हियय-नयणकंतं पडिपुन्नं तिमिर-निकर-घणगहिर-वितिमिरकरं पमाण-पक्ख-तराय-लेहं कुमुद-वण-विबोहयं निसासोभगं सुपरिमट्ठ-दप्पण-तलोवमं हंसपडुवन्नं जोइसमुहमंडगं तमरिपुं मयणसरापूरं समुद्द-दगपूरगं दुम्मणं जणं दत्तियवज्जियं पायएहिं सोसयंतं पुणो सोम्मचारुरूवं पेच्छइ सा गगण-मंडल-विसाल-सोम्म-चंकम्ममाण-तिलगं रोहिणि-मण-हियय-वल्लहं देवी पुन्नचंदं समुल्लसंतं ।६।

तओ पुणो तमपडलपरिप्फुडं चेव तेयसा पज्जलंतरूवं रत्तासोग-पगास-किंसुय-सुग-मुह-गुंजद्ध-राग-सरिसं कमलवणालंकरणं अंकणं जोइसस्स अंबरतलपईवं हिम-पडल-गलग्गहं गहगणोरुनायगं रत्तिविणासं उदयत्थमणेसु मुहुत्तसुहदंसणं दुन्निरिक्खरूवं रत्तिमुद्धा-यंतदुप्पयार-पमद्दणं सीयवेगमहणं पेच्छइ मेरुगिरि-सयय-परियट्टयं विसालं सूरं रस्सी-सहस्स-पयलिय-दित्त-सोहं ।७।

तओ पुणो जच्च-कणग-लट्ठि-पइट्ठियं समूह-नील-रत्त-पीय-सुक्किल्ल-सुकुमालुल्लसिय-मोरपिंछ-कयमुद्धयं धयं अहियसस्सिरीयं फालिय-संखंक-कुंद-दगरय-रयय-कलसपंडरेण मत्थयत्थेण सीहेण रायमाणेणं रायमाणं भेत्तुं गगणतलमंडलं चेव ववसिएण पेच्छइ सिव-मउय-मारुय-लया-हय-पकंपमाणं अतिप्पमाणं जणपिच्छणिज्जरूवं ।८।

तओ पुणो जच्च-कंचणुज्जलंतरूवं निम्मल-जल-पुन्नमुत्तमं दिप्पमाणसोहं कमल-कलावपरिरायमाणं पडिपुण्ण-सव्वमंगल-भेय-समागमं पवररयणपरायंतकमलट्ठियं नयण-भूसणकरं पभासमाणं सव्वओ चेव दीवयंतं सोमलच्छी-निभेलणं सव्वपावपरिवज्जियं सुभं भासुरं सिखिरं सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-आसत्त-मल्लदामं पेच्छइ सा रययपुन्नकलसं ।९।

तओ पुणो रविकिरण-तरुण-बोहिय-सहस्सपत्त-सुरहितर-पिंजरजलं जलचर-पहगर-परिहत्थग-मच्छ-परिभुज्जमाण-जलसंचयं महंतं जलंतमिव कमल-कुवलय-उप्पल-तामरस-पुंडरीय-उरुसप्पमाण-सिरिसमुदएहिं रमणिज्ज-रूवसोभं पमुइयंत-भमरगण-मत्तमहुकर-गणोक्करोलिब्भमाण-कमलं कादंबग-बलाहग-चक्काक-कलहंस-सारस-गव्विय-सउणगण-मिहुण-सेविज्ज-माण-सलिलं पउमिणिपत्तोवलग्ग-जलबिंदुमुत्तचित्तं च पेच्छइ सा हियय-णयणकंतं पउमसरं नाम सरं सररुहाभिरामं ।१०।

तओ पुणो चंदकिरणरासि-सरिस-सिरिवच्छसोहं चउगमण-पवड्ढमाण-जलसंचयं चवल-चंचलुच्चायप्पमाण-कल्लोल-लोलंतोय-पडुपवणाहय-चालिय-चवल-पागड-तरंग-रंगंत-भंग-खोखुब्भमाण-सोभंत-निम्मल-उक्कड-उम्मीसह-संबंध-धावमाणोनियत्त-भासुर-तराभिरामं महामगर-मच्छ-तिमिर-तिमिंगिल-निरुद्ध-तिलितिलियाभिधायं कप्पूर-फेण-पसर-महानई-तुरियवेग-समागयभम-गंगावत्त-गुप्पमाणुच्चलंत-पच्चोनियत्त-भममाण-लोलसलिलं पेच्छइ खीरोय-सागरं सरय-रयणिकर-सोम्मवयणा ।११।

तओ पुणो तरुणसूरमंडलसमप्पभं उत्तम-कंचण-महामणि-समूह-पवर-तेय-अट्ठसहस्स-दिप्पंत-नभप्पईवं कणग-पयर-पलंबमाण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुत्तासमुज्जलं जलंतदिव्वदामं ईहामिग-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-संसत्त-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं गंधव्वोपवज्जमाण-संपुण्णघोसं निच्चं सजलघण-विउल-जलहर-गज्जिय-सद्दाणुणादिणा देवदुंदुहि-महारवेणं सयलमवि जीवलोयं पपूरयंतं कालागरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-डज्झंत-धूव-मघमघंत-गंधुद्धुयाभिरामं निच्चालोयं सेयं सेयप्पभं सुरवराभिरामं पिच्छइ सा सातोवभोगं विमाणवर-पुंडरीयं ।१२।

तओ पुणो पुलग-वेरिंदनील-सासग-कक्केयण-लोहियक्ख-मरगय-मसारगल्ल-पवाल-फलिह-सोगंधिय-हंसगब्भ-अंजण-चंदप्पभ-वररयण-महियलपइट्ठियं गगणमंडलं तं पभासयंतं तुंगं मेरुगिरि-सन्निगासं पिच्छइ सा रयणनिययरासिं ।१३।

सिहिं च सा विउलुज्जल-पिंगल-मद्दु-धय-परिसिच्चमाण-निद्धूम-धगधगाइय-जलंत-जालुज्जलाभिरामं तरतमजोगेहिं जालपयरेहिं अण्णमण्णमिव अणुपइण्णं पेच्छइ जालुज्जलणगं अंबरं व कत्थइपयंतं अइवेगचंचलं सिहिं ।१४।

एमेते एयारिसे सुभे सोमे पियदंसणे सुरूवे सुविणे दट्ठूण सयणमज्झे पडिबुद्धा अरविंदलोयणा हरिसपुलइयंगी ।

गाहा—एए चोद्दस सुमिणे, सव्वा पासेइ तित्थयरमाया ।जं रयणि वक्कमई, कुच्छिसि महायसो अरहा ।।१।।

तए णं सा तिसला खत्तियाणी इमेयारूवे ओराले चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठ-जाव-हयहियया धाराहयकलंबपुप्फगं पिव समूससियरोमकूवा सुमिणोग्गहं करेइ,

सुमिणोग्गहं करित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ,

सयणिज्जाओ अब्भुट्ठित्ता पायपीढातो पच्चोरुहइ,

पच्चोरुहित्ता अतुरियं अचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव सयणिज्जे जेणेव सिद्धत्थे खत्तिएं तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता सिद्धत्थं खत्तियं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरियाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मिय-महुर-मंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी संलवमाणी पडिबोहेइ ।

तए णं सा तिसला खत्तियाणी सिद्धत्थेणं रन्ना अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणि-रयण-भत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइ,

निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया सिद्धत्थं खत्तियं ताहिं इट्ठाहिं -जाव -संलवमाणी संलवमाणी एवं वयासी — एवं खलु अहं सामी ! अज्ज तंसि तारिसयंसि सयणिज्जंसि वन्नओ-जाव-पडिबुद्धा । तं जहा—गाहा—गयवसह -जाव- सिहिं च । तं एतेसिं सामी ! ओरालाणं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

तए णं से सिद्धत्थे राया तिसलाए खत्तियाणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्ते आणंदिए पीइमणे परमसोमणसिए हरिस-वस-विसप्पमाण-हियए धाराहय-नीव-सुरहि-कुसुम-चुंचुमालइय-रोमकूवे ते सुमिणे ओगिण्हति,

ते सुमिणे ओगिण्हित्ता ईहं अणुपविसइ,

ईहं अणुपविसित्ता अप्पणो साहाविएणं मइपुव्वएण बुद्धिविन्नाणेणं तेसिं सुमिणाणं अत्थोग्गहं करेइ,

अत्थोग्गहं करित्ता तिसलाखत्तियाणीं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-मंगल्लाहिं मियमहुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी—

"ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्ठा, कल्लाणा णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणा दिट्ठा, एवं सिवा धन्ना मंगल्ला सस्सिरीया आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारगा णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्ठा ! तं जहा—

अत्थलाभो देवाणुप्पिए! भोगलाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए! सोक्खलाभो देवाणुप्पिए! रज्जलाभो देवाणुप्पिए! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं अम्हं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं कुलतिलयं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं कुलदिणयरं कुलआहारं कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमाल-पाणिपायं अहीण-संपुन्न-पंचेंदियसरीरं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं माणुम्माण-पमाण-पडिपुन्न-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियं सुदंसणं दारयं पयाहिसि" ।।

से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्न-विउल-बलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, तं जहा-

ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणा दिट्ठा-जाव-दोच्चं पि तच्चं पि अणुवूहइ ।

तए णं सा तिसला खत्तियाणी सिद्धत्थस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा-जाव-हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

"एवमेयं सामी ! तहमेयं सामी ! अवितहमेयं सामी ! असंदिद्धमेयं सामी ! इच्छियमेयं सामी ! पडिच्छियमेयं सामी ! इच्छियपडिच्छियमेयं सामी !

सच्चे णं एसमट्ठे से जहेयं तुब्भे वयह" त्ति कट्टु ते सुमिणे सम्मं पडिच्छइ । ते सुमिणे सम्मं पडिच्छित्ता सिद्धत्थेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणि-रयण-भत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंस-सरिसीए गईए, जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता एवं वयासी–

"मा मे ते उत्तमा पहाणा मंगला महासुमिणा अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्संति" त्ति कट्टु देवय-गुरु-जणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं लट्ठाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं जागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ ।

तए णं सिद्धत्थे खत्तिए पच्चूस-कालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ कोडुंबियपुरिसे सद्दावित्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेसं बाहिरिज्जं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं सुगंध-वर-पंचवन्न-पुप्फोवयार-कलियं कालागरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-डज्झंत-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह, कारवेह, करेत्ता कारवेत्ता य सीहासणं रयावेह, सीहासणं रयावित्ता ममेयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सिद्धत्थेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-जाव-हियया करलय-जाव-कट्टु 'एवं सामि!' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति,

एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणित्ता सिद्धत्थस्स खत्तियस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति,

पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छंति,

तेणेव उवागच्छित्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्त-जाव-सीहासणं रयावेंति,

सीहासण रयावित्ता जेणेव सिद्धत्थे खत्तिए तेणेव उवागच्छंति,

तेणेव उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सिद्धत्थस्स खत्तियस्स तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

तए णं सिद्धत्थे खत्तिए कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिल्लियम्मि अह पंडरे पहाए रत्तासोय-पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्ध-राग-सरिसे कमलायर-संडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते य सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ ।

सयणिज्जाओ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ,

पायपीढाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ,

अट्टणसालं अणुपविसित्ता अणेग-वायाम-जोग-वग्गणवा-मद्दण-मल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते सयपाग-सहस्सपागेहिं सुगंधवरतेल्ल-माइएहिं पीणणिज्जेहिं जिंघणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिज्जेहिं अब्भंगिए समाणे तेल्लचम्मंसि णिउणेहिं पडिपुन्न-पाणि-पाय-सुकुमाल-कोमल-तलेहिं पुरिसेहिं अब्भंगण-परिमद्दणुव्वलण-करण-गुणनिम्माएहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेधावीहिं जियपरिस्समेहिं १ अट्ठिसुहाए, २ मंससुहाए, ३ तयासुहाए, ४ रोमसुहाए, चउव्विहाए सुहपरिकम्मणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ ।

अट्टणसालाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ,

तेणेव उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ,

अणुप्पविसित्ता समुत्तजालकलावाभिरामे विचित्त-मणि-रयण-कोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि नाणा-मणि-रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसन्ने पुप्फोदएहि य गंधोदएहि य उण्होदएहि य सुहोदएहि य सुद्धोदएहि य कल्लाण-करण-पवर-मज्जण-विहीए मज्जिए ।

तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणग-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासातिय-लूहियंगे अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवुए

सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणाणुलित्त-गत्ते सुइमालावन्नगविलेवणे

आविद्धमणिसुवन्ने कप्पिय-हार-द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्तय-कयसोहे पिणद्धगेविज्जे अगुलिज्जग-ललिय-कयाभरणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरकडग-तुडिय-थंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थयसुकयरइयवच्छे मुद्दियापिंगलंगुलीए पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे णाणामणि-कणग-रयण-विमल-महरिह-निउणोविय-मिसिमिसिंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-आविद्ध-वीरवलए ।

किं बहुणा ? कप्परुक्खते चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं मंगलजयसद्दकयालोए अणेग-गणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-णगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिपालसद्धिं संपरिवुडे धवलमहामेह-निग्गए इव गहगणदिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससि व्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ ।

मज्जणघराओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ,
तेणेव उवागच्छित्ता सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ,

निसीइत्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठभद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं सिद्धत्थय-कय-मंगलोवयाराइं रयावेइ,
रयावित्ता अप्पणो अदूरसामंते णाणामणि-रयण-मंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घवर-पट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसतचित्तमाणं ईहामिय-उसह-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं अब्भितरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता णाणामणि-रयण-भत्तिचित्तं अत्थरयमिउमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चत्थुयं सुमउयं अंगसुह-फरिसगं विसिट्ठं तिसलाए खत्तियाणीए भद्दासणं रयावेइ ।
भद्दासणं रयावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंग-महानिमित्त-सुत्तत्थपारए विविह-सत्थ-कुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह ।
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सिद्धत्थेणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठा-जाव-हयहियया करयल-जाव-पडिसुणेंति पडिसुणित्ता सिद्धत्थस्स खत्तियस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता कुंडग्गामं नगरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सुमिण-लक्खण-पाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता सुविण-लक्खण-पाढए सद्दावेंति ।
तए णं ते सुविण-लक्खण-पाढगा सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ-जाव-हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवराइं परिहिया अप्प-महग्घाभरणालंकिय-सरीरा सिद्धत्थक-हरियालिय-कय-मंगलमुद्धाणा सएहिं सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति ।
निग्गच्छित्ता खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सिद्धत्थस्स रन्नो भवण-वर-वडिंसग-पडिदुवारे तेणेव उवागच्छंति,
तेणेव उवागच्छित्ता भवण-वर-वडिंसग-पडिदुवारे एगयओ मिलंति,
एगयओ मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सिद्धत्थे खत्तिए तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता करतलपरिग्गहियं-जाव-कट्टु सिद्धत्थं खत्तियं जएण विजएणं वद्धावेंति ।
तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा सिद्धत्थेणं रन्ना वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ।

तए णं सिद्धत्थे खत्तिए तिसलं खत्तियाणिं जवणियंतरियं ठावेइ,
ठावित्ता, पुप्फ-फल-पडिपुन्न-हत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणलक्खणपाढए एवं वयासि—
"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज तिसला खत्तियाणी तंसि तारिसगंसि-जाव-सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमेयारूवे ओराले-जाव-चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा । तं जहा—गाहा-गय उसभ-जाव-सिंहं च ।
तं एतेसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं देवाणुप्पिया ! ओरालाणं-जाव-के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?
तए णं ते सुमिणलक्खणपाढगा सिद्धत्थस्स खत्तियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ-जाव-हियया ते सुविणे ओगिण्हंति,

ओगिण्हित्ता ईहं अणुपविसंति,
ईहं अणुपविसित्ता अन्नमन्नेणं सद्धिं संलावेंति,
संलावित्ता तेसिं सुविणाणं लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अहिगयट्ठा सिद्धत्थस्स रन्नो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा उच्चारेमाणा सिद्धत्थं खत्तियं एवं वयासी—
"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थे बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा, बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं देवाणुप्पिया ! अरहंतमातरो वा, चक्कवट्टिमायरो वा, अरहंतंसि वा, चक्कहरसि वा, गब्भं वक्कममाणंसि एतेसिं तोसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—गाहा- गयवसह -जाव-सिंहि च । वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णतरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।

बलदेवमायरो वा, बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्ह महासुविणाण अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।

मंडलियमायरो वा मडलियंसि गब्भं वक्कंते समाणे एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयर एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति । [भग० स० १६ उ० ६, सु० ७६-९० ।]

इमे य णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए खत्तियाणीए सुविणा दिट्ठा,-जाव-मंगल्लकारगा णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए खत्तियाणीए सुविणा दिट्ठा, तं जहा—

अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! -जाव- सुक्खलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया !,

एवं खलु देवाणुप्पिया ! तिसला खत्तियाणी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं-जाव- दारयं पयाहिइ ।

से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिण्ण-विपुल-बलवाहणे चाउरंतचक्कवट्टी रज्जवई राया भविस्सइ, जिणे वा तिलोक्कनायए धम्मवरचक्कवट्टी,

तं ओराला णं देवाणुप्पिया! तिसलाए खत्तियाणीए सुमिणा दिट्ठा-जाव-आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगलकारगा णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए खत्तियाणीए सुमिणा दिट्ठा ।

तए णं से सिद्धत्थे राया तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए करयल-जाव- ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी--

"एवमेयं देवाणुप्पिया ! -जाव- इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया !

सच्चे णं एसमट्ठे से जहेयं तुब्भे वयह त्ति" कट्टु ते सुविणे सम्मं विणएणं पडिच्छइ,

ते सुविणे पडिच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए णं विउलेणं पुप्फ-गंध-वत्थ-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयति, विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइत्ता पडिविसज्जेइ ।

तए णं से सिद्धत्थे खत्तिए सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, सीहासणाओ अब्भुट्ठित्ता जेणेव तिसला खत्तियाणी जवणियंतरिया तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता तिसलं खत्तियाणीं एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा -जाव -एगं महासुविणं सुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।

इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए ! चोद्दस महासुविणा दिट्ठा, तं जहा--गाहा—गयवसह-जाव-सिंहि च । ओराला णं तुमे-जाव-जिणे वा तेलोक्कनायए धम्मवरचक्कवट्टी ।।"

तए णं सा तिसला खत्तियाणी सिद्धत्थस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा-जाव-हियया करयल-जाव- ते सुविणे सम्मं पडिच्छइ ।

सम्मं पडिच्छित्ता सिद्धत्थेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणि-रयण भत्ति-चित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अतुरियं अचवलं असंभंताए अविलंबियाए रायहंस-सरिसीए गईए जेणेव सते भवणे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता सयं भवणं अणुपविट्ठा ।

जप्पभिइं च ण समणे भगव महावीरे तं नायकुलं साहरिए तप्पभिइं च णं बहवे वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा सक्कवयणेणं से जाइं इमाइं पुरापोराणाइं महानिहाणाइं भवंति, तं जहा—

पहीणसामियाइं पहीणसेउयाइं पहीणगोत्तागाराइं उच्छन्नसामियाइं उच्छन्नसेउकाइं उच्छन्नगोत्तागाराइं गामाऽऽगर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संवाह-सन्निवेसेसु सिंघाडएसु वा, तिएसु वा, चउक्केसु वा, चच्चरेसु वा, चउम्मुहेसु वा, महापहेसु वा, गामट्ठाणेसु वा, नगरट्ठासुणे वा, गामनिद्धमणेसु वा, नगरनिद्धमणेसु वा, आवणेसु वा, देवकुलेसु वा, सभासु वा, पवासु वा, आरामेसु वा, उज्जाणेसु वा, वणेसु वा, वणसंडेसु वा सुसाण-सुन्नागार-गिरिकंदर-संति-सेलोवट्ठाण-भवण-गिहेसु वा सन्निक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं सिद्धत्थरायभवणंसि साहरंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्म-काले देवकयोज्जोयाइं

२७४ जण्णं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं राइं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयंतेहि य उप्पयंतेहि य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देवकहक्कहे उप्पिंजलगभूए यावि होत्था ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९२।
कप्प० सु० ९४।

जं रयणिं च णं समणे भगव महावीरे नायकुलंसि साहरिए तं रयणिं च णं नायकुलं हिरण्णेणं वड्ढित्था, सुवण्णेणं वड्ढित्था, एवं धणेणं, धन्नेणं, रज्जेणं, रट्ठेणं, बलेणं, वाहणेणं, कोसेणं, कोट्ठागारेणं, पुरेणं, अंतेउरेणं, जणवएणं, जसवाएणं वड्ढित्था, विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयणमाइएणं संतसारसावएज्जेणं पीइसक्कारसमुदएणं अईव अईव अभिवड्ढित्था ।

तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापिऊणं अयमेयारूवे अज्झात्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—जप्पभिइं च णं अम्हं एस दारए कुच्छिसि गब्भत्ताए वक्कंते तप्पभिइं च णं अम्हे हिरण्णेणं वड्ढामो, सुवन्नेणं वड्ढामो, एवं धणेणं, धन्नेण, रज्जेणं, रट्ठेणं, बलेणं, वाहणेणं, कोसेणं, कोट्ठागारेणं, पुरेणं, अंतेउरेणं, जणवएणं, जसवाएणं वड्ढामो विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्त-रयणमाइएणं संतसारसावएज्जेणं पिइसक्कारसमुदएणं अतीव अतीव अभिवड्ढामो ।

तं जया णं अम्हं एस दारए जाए भविस्सइ तया णं अम्हे एयस्स दारगस्स एयाणुरूवं गोन्न गुणनिप्फन्न नामधिज्जं करिस्सामो 'वद्धमाणो' त्ति ।

तए णं समणे भगवं महावीरे माउ-अणुकंपणट्ठाए निच्चले निप्फंदे निरेयणे अल्लीण-पल्लीणगुत्ते या वि होत्था ।

तए णं तीसे तिसलाए खत्तियाणीए अयमेयारूवे अज्झात्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"हडे मे से गब्भे, मडे मे से गब्भे, चुए मे से गब्भे, गलिए मे से गब्भे, एस मे गब्भे पुव्वि एयति, इयाणिं नो एयति त्ति" कट्टु ओहतमणसंकप्पा चिंतासोगसायरं संपविट्ठा करयलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियायइ । तं पि य सिद्धत्थरायभवणं उवरय-मुइंग-तंती-तल-ताल-नाडइज्ज-जणमणुज्जं दीणविमणं विहरइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे माऊए अयमेयारूवं अज्झात्थियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं समुप्पण्ण विजाणित्ता एगदेसेणं एयइ ।

तए णं सा तिसला खत्तियाणी हट्ठतुट्ठ-जाव-हिययया एवं वयासि—

"नो खलु मे गब्भे हडे-जाव-नो गलिए, मे गब्भे पुव्वि नो एयइ इयाणिं एयइ त्ति कट्टु हट्ठतुट्ठ - जाव - एवं विहरइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे गब्भत्थे चेव इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—

"नो खलु मे कप्पइ अम्मापिएहिं जीवंतेहिं मुंडे भवित्ता अगारवासाओ अणगारियं पव्वइत्तए"।

तए णं सा तिसला खत्तियाणी ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सव्वालंकारभूसिया त गब्भ नाइसीएहिं नाइउण्हेहिं नाइतित्तेहिं नाइकडुएहिं नाइकसाइएहिं नाइअंबिलेहिं नाइमहुरेहिं नातिनिद्धेहिं नातिलुक्खेहिं नातिउल्लेहिं नातिसुक्केहिं उडुभयमाणसुहेहिं भोयण-च्छायण-गंध-मल्लेहिं ववगय-रोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पइरिक्कसुहाए मणोणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुन्नदोहला सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वुच्छिन्नदोहला विणीयदोहला सुहंसुहेणं आसयइ सयति चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइ सुहंसुहेणं तं गब्भं परिवहइ ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स तेरसीदिवसेण नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाण विइक्कंताण उच्चट्ठाणगतेसु गहेसु पढमे चंदजोगे सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु जतिएसु सव्वसउणेसु पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिसि मारुयंसि पवातंसि निप्फण्णमेदिणीयंसि कालंसि पमुदितपक्कीलिएसु जणवएसु पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं आरोग्ग दारयं पयाया ।

कप्प० सु० ३२-९३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवकय-अमयाइवासाइं

२७५ जण्णं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं रयणिं बहवे देवा य देवीओ य-एगं महं अमयवासं च, गंधवासं च, चुण्णवासं च, हिरण्णवासं च, रयणवासं च वासिंसु ।।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९३।
कप्प० सु० ९५।

देवकयतित्थयरजम्माभिसेओ

२७६ जण्णं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं रयणिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स कोउगभूइकम्माइं तित्थयराभिसेयं च करिंसु ।।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९३ ।

सिद्धत्थकयजम्ममुस्सवो

२७७ तए णं से सिद्धत्थे खत्तिए भवणवइ-वाणमन्तर-जोइस-वेमाणिएहिं देवेहिं तित्थयरजम्मणाभिसेयमहिमाए कयाए समाणीए पच्चूसकालसमयंसि नगरगुत्तिए सद्दावेइ नगरगुत्तिए सद्दावित्ता एवं वयासी –

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कुंडपुरे नगरे चारगसोहणं करेह, चारगसोहणं करित्ता, माणुम्माणवद्धणं करेह, माणुम्माणवद्धणं करित्ता कुंडपुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जियोवलेवियं सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सित्तसुइसम्मट्ठरत्थंतरावणवीहियं मंचाइमंचकलियं नाणाविहरागभूसियज्झयपडागमंडियं लाउल्लोइयमहियं गोसीस-सरस-रत्तचंदण-दद्दरदिण्णपंचंगुलितलं उवचियचंदणकलसं चंदण-घड-सुकय-तोरण-पडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्त-विपुल-वट्ट-वग्घारिय-मल्लदाम-कलावं पंचवन्न-सरस-सुरहि-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरु-पवर-कुंदरुक्क-तुरुक्क-डज्झंत-धूव-मघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-पवग-कहग-पढक-लासक-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायराणुचरियं करेह कारवेह,

करेत्ता, कारवेत्ता य जूयसहस्सं च, मुसलसहस्सं च उस्सवेह, उस्सवित्ता य मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेह ।

तए णं ते णगरगुत्तिया सिद्धत्थेणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ - जाव - हियया करयल - जाव - पडिसुणित्ता खिप्पामेव कुंडपुरे नगरे चारगसोहणं - जाव - उस्सवेत्ता जेणेव सिद्धत्थे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल - जाव - कट्टु सिद्धत्थस्स रन्नो एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

२७८ तए णं सिद्धत्थे राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता - जाव - सव्वोरोहेणं सव्वपुप्फगंधवत्थमल्लालंकार-विभूसाए सव्वतुडियसद्दनिनाएणं महया इड्ढीए महया जुतीए महया बलेणं महया वाहणेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमगप्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरव-मुइंग-दुंदुहि-निग्घोसणादितरवेणं उस्सुकं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अडंडकोडंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियसपुरजणजाणवयं दसदिवसट्ठिइपडियं करेइ ।

तए णं से सिद्धत्थे राया दसाहियाए ठिइपडियाते वट्टमाणीए सइए य, साहस्सिए य, सयसाहस्सिए य, जाए य, दाए य, भाए य, दलमाणे य, दवावेमाणे य, सइए य, साहस्सिए य, सयसाहस्सिए य, लंभे पडिच्छेमाणे य, पडिच्छावेमाणे य एवं विहरइ ।

२७९ तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो–

पढमे दिवसे ठिइपडियं करेंति,

तइए दिवसे चंदसूरस्स दंसणियं करिंति,

छट्ठे दिवसे जागरियं करेंति,

एक्कारसमे दिवसे विइक्कंते निव्वत्तिए असुतिजातकम्मकरणे संपत्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारसाहदिवसे विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति,
उवक्खडावित्ता मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरिजणं नायए य खत्तिए य आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं नायएहि य सद्धिं तं विउलं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा विहरंति ।

वद्धमाणनामकरणं

२८० जिमियभुत्तोत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुईभूया तं मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरिजणं नायए य खत्तिए य विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति सक्कारित्ता सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाइनियगसयण-संबंधिपरिजणस्स नायाण य खत्तियाण य पुरओ एवं वयासी–

पुव्विं पि य णं देवाणुप्पिया! अम्हं एयंसि दारगंसि गब्भं वक्कंतंसि समाणंसि इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए-जाव-समुप्पज्जित्था । जप्पभिइं च णं अम्हं एस दारए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते तप्पभिइं च णं अम्हे हिरण्णेणं वड्ढामो सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं-जाव-सावएज्जेणं पीइ सक्कारेणं अईव अईव अभिवड्ढामो सामंतरायाणो वसमागया य तं जया णं अम्हं एस दारए जाए भविस्सए तया णं अम्हे एयस्स दारगस्सं एयाणुरूवं गोण्णं गुणणिप्फण्णं नामधिज्जं करिस्सामो वद्धमाणुत्ति तं होउ णं कुमारे वद्धमाणे नामेणं ।[1]

कप्प० सु० ९६-१०३।

बालसंवड्ढणं

२८१ तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे, तं जहा–१ खीरधाईए, २ मज्जणधाईए, ३ मंडावणधाईए, ४ खेल्लावणधाईए, ५ अंकधाईए, अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले गिरिकंदरमल्लीणे व चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९६।

जोव्वणं

२८२ तओ णं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये विणियत्तबाल-भाव अप्पुस्सुयाइं उरालाइं माणुस्सगाइं पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं परियारेमाणे, एवं च णं विहरइ ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९७ ।

---

१. जओ णं पभिइ समणे भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भं आहुए, तओ णं पभिइ तं कुलं विपुलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ ।।
तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं जाणेत्ता णिव्वत्तदसाहंसि वोक्कंतंसि सुचिभूयंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेंति, मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेत्ता बहवे समण-माहण-किवण-वणिमग-भिच्छुंडग-पंडरगातीण विच्छड्डेंति विगोवेंति विस्साणेंति, दायारे(ए?)सु णं दायं पज्जभाएंति, विच्छड्डित्ता विगोवित्ता विस्साणित्ता दायारे(ए?)सु ण दायं पज्जभाएत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेंति, मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गेणं इमेयारूवं णामधेज्जं कारवेंति—जओ णं पभिइ इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे आहुए, तओ णं पभिइ इमं कुलं, विउलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ, तो होउ णं कुमारे "वद्धमाणे" ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९५।
कप्प० सु० १०३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिण्णि णामाइं

२८३ समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते । तस्स णं इमे तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा–
१. अम्मापिउसंतिए "वद्धमाणे" २. सह-सम्मुइए "समणे" ३. "भीमं भयभेरवं उरालं अचेलयं परिसहं सहइ" त्ति कट्टु देवेहिं से णामं कयं "समणे भगवं महावीरे" ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९८ ।
कप्प० सु० १०४।

अम्मापियराणं देवगई

२८४ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था ।
ते णं बहुइं वासाइं समणोवासगपरियागं पालइत्ता, छण्हं जीवनिकायाणं संरक्खणनिमित्तं आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता पडिक्कमित्ता, अहारिहं उत्तरगुणं पायच्छित्तं पडिवज्जित्ता, कुससंथारं दुरुहित्ता भत्तं पच्चक्खाइंति, भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए मारणंतियाए सरीर-संलेहणाए सोसियसरीरा कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णा ।
तओ णं आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं, चुए चइत्ता महाविदेहवासे चरिमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

आया० सु० २, अ०१५, सु० १००२ ।

वड्ढमाणस्स णियगा

२८५ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिआ कासवगोत्तेणं । तस्स णं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा–
१. सिद्धत्थे ति वा २. सेज्जंसे ति वा ३. जसंसे ति वा ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिट्ठ-सगोत्ता । तीसेणं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा–
१. तिसला ति वा २. विदेहदिण्णा ति वा ३. पियकारिणी ति वा ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए 'सुपासे" कासवगोत्तेणं ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया 'णंदिवद्धणे' कासवगोत्तेणं ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा भइणी 'सुदंसणा' कासवगोत्तेणं ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा 'जसोया' कोडिण्णागोत्तेणं ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं । तीसे णं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा–
१. अणोज्जा ति वा २. पियदंसणा ति वा ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं । तीसे णं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा–
१. सेसवती ति वा २. जसवती ति वा ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० ९९९-१००१।
कप्प० सु० १०५-१०९ ।

अभिणिक्खमणाभिप्पायो संवच्छरदाणं य

२८६ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाते णायपुत्ते णायकुलविणिव्वत्ते विदेहे विदेहदिण्णे विदेहजच्चे विदेहसुमाले तीसं वासाइं विदेहत्ति कट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं समत्तपइण्णे चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा वाहणं, चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-संत-सार-सावदेज्जं, विच्छड्डेत्ता विगोवित्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विस्सारिणित्ता, दायारेसु णं 'दायं पज्जभाएत्ता, संवच्छरं दलइत्ता[1], जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे–मग्गसिरबहुले, तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगएणं अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था–

आया० सु० २, अ० १५, सु० १००३ ।

देविंदसक्ककयदेवच्छंदए मज्जणाइं सिबियाविउव्वणं य

२८७ तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्खमणाभिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं, सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं, सएहिं-सएहिं चिंधेहिं, सव्विड्ढीए सव्वजुतीए सव्वबलसमुदएणं सयाइं-सयाइं जाणविमाणाइं दुरुहंति, सयाइं-सयाइं जाणविमाणाइं दुरुहित्ता अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेंति, अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेत्ता अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइंति, अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइत्ता उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहेणं ओवयमाणा-ओवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुद्दाइं वीतिक्कममाणा-वीतिक्कममाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुर-सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुर-सन्निवेसस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तेणेव झत्तिवेगेण उवट्ठिया ।

आया० सु० २, अ० १५, सु० १०१० ।

२८८ तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेति,
सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेत्ता सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति,
सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरित्ता एगंतमवक्कमेति,
एगंतमवक्कमेत्ता महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहण्णति,
महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणित्ता एगं महं णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वति ।

२८९ तस्स णं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीढं णाणामणिकणय-रयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं सिंहासणं विउव्वइ,
विउव्वित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति,
तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ,
समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति,

२९० वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ,
सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेति,
अब्भंगेत्ता, गंधकसाएहिं उल्लोलेति,
उल्लोलित्ता सुद्धोदएणं मज्जावेइ,
मज्जावित्ता जस्स जंतपलं सयसहस्सेणंति पडोलत्तित्तएणं साहिएणं सीतएणं गोसीस-रत्त-चंदणेणं अणुलिंपति,
अणुलिंपित्ता ईसिंणिस्सासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुग्गयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालापेलवं छेयायरियकणगखचियंतकम्मं हंसलक्खणं पट्टजुयलं णियंसावेइ,

---

१. संगहणी-गाहाओ [आया० २ अ० १५ सु० ७४७–७५२।]
संवच्छरेण होहिति, अभिणिक्खमणं तु जिणवरिंदस्स । तो अत्थ-संपदाणं, पव्वतई पुव्वसूराओ ।।१।।
एगा हिरण्णकोडी, अट्ठेव अणूणया सयसहस्सा । सूरोदयमाईयं, दिज्जइ जा पायरासो त्ति ।।२।।
आव० नि० गा० २१६, २१७ ।
तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ । असितिं च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं।।३ ।।
आव० नि० गा० २२० ।
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिड्ढीया । बोहिंति य तित्थयरं. पण्णरससु कम्म-भूमिसु ।।४।।
बंभंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्झे । लोगंतिया विमाणा, अट्ठसु वत्था असंखेज्जा ।।५।।
एए देवणिकाया, भगवं बोहिंति जिणवरं वीरं । सव्वजग-जीवहियं, अरहं तित्थं पव्वत्तेहि ।।६।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णियंसावेत्ता हारं अद्धहारं उरत्थं एगावलिं पालंबसुत्त-पट्ट-मउड-रयणमालाइं आविंधावेति,
आविंधावेत्ता गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं मल्लेणं कप्परुक्खमिव समालंकेति,

२९१ समालंकेत्ता दोच्चंपि महया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ,
समोहणित्ता एगं महं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं विउव्वइ, तं जहा–

ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मकर-विहग-वाणर-कुंजर-रुरु-सरभ-चमर-सद्दूलसीह-वणलय-विचित्तविज्जाहर-मिहुण-जुयल-जंत-जोग-जुत्तं, अच्चीसहस्समालिणीयं, सुणिरूवित-मिसिमिसिंत-रूवगसहस्सकलियं, ईसिभिसमाणं, भिब्भिसमाणं, चक्खुल्लोयणलेस्सं, मुत्ताहलमुत्तजालंतरोवियं, तवणीय-पवरलंबूस-पलंबंतमुत्तदामं, हारद्धहार-भूसणसमोणयं, अहियपेच्छणिज्जं, पउमलयभत्तिचित्तं, असोगलयभत्तिचित्तं, कंदलयभत्तिचित्तं, णागलयभत्ति-विरइयं सुभं चारुकंतरूवं णाणामणिपंचवण्णघंटापडाय-परिमंडिय-ग्गसिहरं पासादीयं दरिसणीयं सुरूवं ।[1]

अभिणिक्खमणं

२९२ तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे–मग्गसिरबहुले, तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, 'हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं' जोगोवगएणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, एगसाडगमायाए, चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए, सदेवमणुयासुराए परिसाए समण्णिज्जमाणे-समणिज्जमाणे उत्तरखत्तियकुंडपुर-संणिवेसस्स मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ,

णिगच्छित्ता जेणेव णायसंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता ईसिरयणिप्पमाणं अच्छुप्पेणं भूमिभागेणं सणियं-सणियं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ,

ठवेत्ता सणियं-सणियं चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ,

पच्चोयरित्ता सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयइ, आभरणालंकारं ओमुयइ ।

तओ णं वेसमणे देवे जन्नुव्वायपडिए समणस्स भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं आभरणालंकारं पडिच्छइ ।

पंचमुट्ठिलोयकरणं

२९३ तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ।

---

१. संगहणी-गाहाओ

सीया उवणीया, जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स । ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिव्वकुसुमेहिं ।।
सिवियाए मज्झायारे, दिव्वं वररयणरूवचेवइयं । सीहासणं महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ।।
आलइयमालमउडो, भासुरबोंदी वराभरणधारी। खोमयवत्थणियत्थो, जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ।
छट्ठेणं उ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सोहणेण जिणो । लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहइ उत्तमं सीयं ।।
सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहिं । वीयंति चामराहिं, मणिरयणविचित्तदंडाहिं ।।
पुव्विं उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्ठरोमपुलएहिं । पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरगरुलणागिंदा ।।
पुरओ सुरा वहंति, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि । अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे ।।
वणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले । सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ।।
सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा । सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ।
वरपडहभेरिझल्लरि-संखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं । गयणतले धरणितले, तूर-णिणाओ परमरम्मो ।।
ततवितते घणझुसिरं, आउज्जं चउविहं बहुविहीयं। वायंति तत्थ देवा, बहूहिं आणट्ठगसएहिं ।।

आया० सु० २ अ० १५, सु० १०११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९४ तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मुव्वायपडिए वयरामएणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता "अणजाणेसि भंते" त्ति कट्टु खीरोयसायरं साहरइ ।।

सामाइयचरित्त-पडिवज्जणं

२९५ तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाणं णमोक्कारं करेइ, करेत्ता, "सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मं," ति कट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जइ[1], सामाइयं चरित्तं पडिवज्जेत्ता देवपरिसं मणुयपरिसं च आलिक्ख-चित्तभूयमिव ठ्ठवेइ ।[2]

आया० सु० २, अ० १५, सु० १०१२।

---

१. संगहणी गाहाओ
दिव्वो मणुस्सवोसो, तुरियणिणाओ य सक्कवयणेण । खिप्पामेव णिलुक्को, जाहे पडिवज्जइ चरित्तं ।
पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसि सव्वपाणभूतहितं । साहट्टलोमपुलया, पयया देवा निसामिंति ।।

२. समणे भगवं महावीरे दक्खे दक्खपतिन्ने पडिरूवे आलीणे भद्दए विणीए नाए नायपुत्ते नायकुलचंदे विदेहे विदेहदिन्ने विदेहजच्चे विदेहसूमाले तीसं वासाइं विदेहंसि कट्टु अम्मापिईहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुन्नाए समत्तपइन्ने पुणरवि लोयंतिएहिं जियकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-वग्गूहिं अणवरयं अभिनंदमाणा य अभिथुव्वमाणा य एवं वयासी—
"जय जय नंदा! जय जय भद्दा ! भद्दं ते जय जय खत्तियवरवसहा ! बुज्झाहि भगवं लोगनाहा ! पवत्तेहि धम्मतित्थं हियसुहनिस्सेयसकरं सव्वलोए सव्वजीवाणं भविस्सई त्ति" कट्टु जय जय सद्दं पउंजंति ।
पुव्वि पि य णं समणस्स भगवओ महावीरस्स माणुस्साओ गिहत्थधम्माओ अणुत्तरे आहोहिए अप्पडिवाई नाण-दंसणे होत्था ।।
तए णं समणे भगवं महावीरे तेणं अणुत्तरेणं आहोहिएणं नाण-दंसणेणं अप्पणो निक्खमणकालं आभोएइ,
अप्पणो निक्खमणकालं आभोइत्ता चेच्चा हिरण्णं,-जाव- दाइयाणं परिभाएत्ता जे से हेमंताणं पढमे मासे, पढमे पक्खे, मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिनिविट्ठाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, चंदप्पभाए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे संखिय-चक्कियनंगलिय-मुहमंगलिय- वद्धमाणग-पूसमाणग-घंटियगणेहिं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-वग्गूहिं अभिनंदमाणा अभिसंथुवमाणा य एवं वयासी –
"जय जय नंदा ! जय जय भद्दा ! भद्दं ते अभग्गेहिं णाणदंसणचरित्तेहिं अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं च पालेहि समणधम्मं, जिअविग्घो वि य वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्झे निहणाहि रागदोसमल्ले तवेणं धिइधणियबद्धकच्छे महाहि अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च वीर ! तेलोक्करंगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं वरणाणं, गच्छ य मोक्खं परमपयं जिणवरोवदिट्ठेणं मग्गेणं अकुडिलेणं, हंता परीसहचमूं ।
जय जय खत्तियवरवसहा ! बहूइं दिवसाइं, बहूइं पक्खाइं, बहूइं मासाइं, बहूइं उऊइं, बहूइं अयणाइं, बहूइं संवच्छराइं, अभीए परीसहोवसग्गाणं खंतिखमे भयभेरवाणं धम्मे ते अविग्घं भवउ त्ति" कट्टु जय जय सद्दं पउंजंति ।।
तए णं समणे भगवं महावीरे--
नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे,
वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे,
हिययमालासहस्सेहिं अभिनंदिज्जमाणे अभिनंदिज्जमाणे,
मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे,
कंतिरुवसोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे,
अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे दाइज्जमाणे,
दाहिणहत्थेणं बहूणं नरनारिसहस्साणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे,
भवणपंतिसहस्साइं समतिच्छमाणे समतिच्छमाणे,
तंती-तल-ताल-तुडिय-गीय-वाइयरवेणं महुरेण य मणहरेण जयजयसद्दघोसमीसिएणं मंजुमंजुणा घोसेण य पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे, सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्ववाहणेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूतीए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वसंगमेणं सव्वपगतीहिं सव्वणाडएहिं सव्वतालायरेहिं सव्वोरोहेणं सव्व-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकार-विभूसाए सव्वतुडिय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणपज्जवणाणोप्पत्ति

२९६ तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे समुप्पन्ने– अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं दोहि य समुद्देहिं सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं मणोगयाइं भावाइं जाणेइ ।।

आया० सु० २, अ० १५, सु० १०१५।।

तेरसमासाणंतरं अचेले

२९७ समणे भगवं महावीरे संवच्छरं साहियं मासं - जाव - चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेले पाणिपडिग्गहए ।।

कप्प० सु० ११५ ।।

अणगाररूवपसंसणं

२९८ तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए १ इरियासमिए, २ भासासमिए, ३ एसणासमिए, ४ आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समिए, ५ उच्चार-पासवण-खेल-सिंधाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए, ६ मणसमिए, ७ वइसमिए, ८ कायसमिए, १ मणगुत्ते, २ वयगुत्ते, ३ कायगुत्ते, गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अकोहे अमाणे अमाए अलोभे संते पसंते उवसंते परिनिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचए छिन्नगंथे निरुवलेवे, १ विमलवरकंसभायणं व मुक्कतोए-जाव-२१ जीवो व्व अप्पडिहय-गइ त्ति ।[1]

कप्प० सु० ११७ ।।

पडिबंधाभावो

२९९ नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधो भवति । से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–

१ दव्वओ, २ खेत्तओ, ३ कालओ, ४ भावओ ।

१. दव्वओ णं सचित्ताचित्तम्मीसिएसु दव्वेसु ।

२. खेत्तओ णं गामे वा -जाव - णहे वा ।

३. कालओ णं समए वा-जाव-अण्णयरे वा दीहकाल संजोगे वा ।

४. भावओ णं कोहे वा-जाव-मिच्छादंसणसल्ले वा ।

तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ ।

कप्प० सु० ११८ ।

सद्दसण्णि णादेणं महता इड्ढीए महता जुतीए महता बलेणं महता वाहणेणं महता समुदएणं महता वरतुडित-जमग-समग-प्पवादितेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-दुंदुभि-निग्घोस-नादियरवेणं कुंडपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ., निग्गच्छित्ता जेणेव णायसंडवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ ।

जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठावेइ, अहे सीयं ठावित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, सीयाओ पच्चोरुहित्ता सयमेव आहरणमल्लालंकारं ओमुयइ, आहरणमल्लालंकारं ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करित्ता छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं एगं देवदूसमादाय एगे अबीए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

कप्प० सु० ११०-११४।

१. एतेसिं पदाणं इमातो दुन्नि संगहणी गाहाओ

१ कंसे २ संखे ३ जीवे, ४ गगणे ५ वायु य ६ सरयसलिले य । ७ पुक्खरपत्ते ८ कुम्मे, ९ विहगे १० खग्गे य ११ भारंडे ।।१।।

१२ कुंजर १३ वसभे १४ सीहे, १५ णगराया चेव १६ सागरमखोभे । १७ चंदे १८ सूरे १९ कणगे, २० वसुंधरा चेव २१ हूयवहे ।।२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीरस्स अभिग्गहो

३०० तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ–"बारसवासाइं वोसट्ठकाए चत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा–दिव्वा वा, -जाव-पज्जुवासेज्ज वा ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे समाणे अणाइले अव्वहिते अदीणमाणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते सम्मं सहिस्सामि खमिस्सामि अहियासइस्सामि ।। "

आया० सु० २, अ० १५ सु० १०१६।

महावीरस्स विहारो

३०१ तओ णं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता वोसट्ठकाए चत्तदेहे दिवसे मुहुत्तसेसे कम्मारं गामं समणुपत्ते। तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं णाणेणं जाव - अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं, संजमेणं, अणुत्तरेणं पग्गहेणं, अणुत्तरेणं संवरेणं, अणुत्तरेणं तवेणं, अणुत्तरेणं बंभचेरवासेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मोत्तीए, अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए, अणुत्तरेणं ठाणेणं, अणुत्तरेणं कम्मेणं, अणुत्तरेणं सुचरियसोवचइयफलपरिणिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

आया० सु० २, अ० १५, सु०१०१७ ।

परीसहजयो

३०२ एवं विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जिसु–दिव्वा वा-जाव-पज्जुवासेज्ज वा ते सव्वे उवसग्ग समुप्पन्ने समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण-माणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।।

आया० सु० २, अ० १५, सु० १०१८।

दससुविणाणं फलं

३०३ समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा–

१. एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

२. एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

३. एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

४. एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

५. एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

६. एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

७. एगं च णं महं सागरं उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

८. एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

९. एगं च णं महं हरिवेरुलियवण्णाभेणं नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढियं परिवेढियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१०. एगं च णं महं मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

३०४ १. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे मूलाओ उग्घाइए ।

२. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरति ।

३. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे विचित्तं ससमयपरसमइयं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पण्णवेति परूवेति दंसेति निदंसेति उवदंसेति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा–आयारं सूयगडं - जाव - दिट्ठिवायं ।

४. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहे धम्मे पण्णवेति, तं जहा–अगारधम्मं वा, अणगारधम्मं वा ।

५. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे समणसंघे, तं जहा–समणा, समणीओ, सावया सावियाओ ।

६. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, तं जहा–१ भवणवासी, २ वाणमंतरे, ३ जोतिसिए, ४ वेमाणिए ।

७. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सागरं उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं अणादीए अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंते संसारकंतारे तिण्णे ।

८. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवल-वर-नाण-दंसणे समुप्पन्ने ।

९. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं हरिवेरुलियवण्णाभेणं नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढियं परिवेढियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोया सदेवमणुयासुरे लोए परिभमंति—इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे ।

१०. जण्णं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवली धम्मं आघवेति पण्णवेति परूवेति दंसेति निदंसेति उवदंसेति ।[1]

सुविण-फलं

३०५ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हयपंतिं वा गयपंतिं वा नरपंतिं वा किन्नरपंतिं वा किंपुरिसपंतिं वा महोरगपंतिं वा गंधव्वपंतिं वा वसभपंतिं वा पासमाणे पासति, द्रुहमाणे द्रुहति, द्रूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति -जाव- सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं दामिणिं पाईणपडिणायतं दुहओ समुद्दे पुट्ठं पासमाणे पासति, संवेल्लेमाणे संवेल्लेइ, संवेल्लियमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति -जाव- सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं रज्जुं पाईणपडिणायतं दुहओ लोगंते पुट्ठं पासमाणे पासति, छिंदमाणे छिंदति, छिन्नमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति -जाव- सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा नीलसुत्तगं वा लोहियसुत्तगं वा हालिद्दसुत्तगं वा सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे उग्गोवेति, उग्गोवितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति -जाव- सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं अयरासिं वा तंबरासिं वा तउयरासिं वा सीसगरासिं वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हिरण्णरासिं वा सुवण्णरासिं वा रयणरासिं वा वइररासिं वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति -जाव- सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं तणरासिं वा कट्ठरासिं वा पत्तरासिं वा तयरासिं वा तुसरासिं वा भुसरासिं वा गोमयरासिं वा अवकररासिं वा पासमाणे पासति, विक्खिरमाणे विक्खिरति, विक्खिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सरथंभं वा वीरणथंभं वा वंसीमूलथंभं वा वल्लीमूलथंभं वा पासमाणे पासति,

---

१. ठाणं अ० १०, सु० ७५० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उम्मूलेमाणे उम्मूलेति, उम्मूलितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं खीरकुंभं वा दधिकुंभं वा घयकुंभं वा मधुकुंभं वा पासमाणे पासति, उप्पाडेमाणे उप्पाडेति उप्पाडितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सुरावियडकुंभं वा सोवीरवियडकुंभं वा तेल्लकुंभं वा वसाकुंभं वा पासमाणे पासति, भिंदमाणे भिंदति, भिन्नमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं पउमसरं कुसुमियं पासमाणे पासति, ओगाहमाणे ओगाहति, ओगाढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति, - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सागरं उम्मीवीयीसहस्सकलियं पासमाणे पासति, तरमाणे तरति, तिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं भवणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासति, अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसति, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं विमाणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति - जाव - सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।

भग० स० १६, उ० ६, सु० ५७७ ।

भगवओ दीहतवो

भगवओ चरिया

३०६ १. अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय । संखाए तंसि हेमंते, अहुणा पव्वइए रीइत्था ।।

२. णो चेविमेण वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते । से पारए आवकहाए, एयं खु अणुधम्मियं तस्स ।।

३. चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाण-जाइया आगम्म । अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु ।।

४. संवच्छरं साहियं मासं, जं ण रिक्कासि वत्थगं भगवं । अचेलए ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थमणगारे ।।

३०७ ५. अदु पोरिसिं तिरियं भित्तिं, चक्खुमासज्ज अंतसो झाइ । अह चक्खु-भीया सहिया, तं "हंता हंता" बहवे कंदिंसु ।।

६. सयणेहिं वितिमिस्सेहिं, इत्थीओ तत्थ से परिण्णाय । सागारियं ण सेवे, इति से सयं पवेसिया झाति ।।

७. जे के इमे अगारत्था मीसीभावं पहाय से झाति । पुट्ठो वि णाभिभासिंसु, गच्छति णाइवत्तई अंजू ।।

८. णो सुगरमेतमेगेसिं, णाभिभासे अभिवायमाणे । हयपुव्वो तत्थ दंडेहिं, लूसियपुव्वो अप्पपुण्णेहिं ।।

९. फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च मुणी परक्कममाणे । आघाय-णट्ट-गीताइं, दंडजुद्धाइं मुट्ठिजुद्धाइं ।।

१०. गढिए मिहो-कहासु, समयंमि णायसुए विसोगे अदक्खू । एताइं सो उरालाइं, गच्छइ णायपुत्ते असरणाए ।।

३०८ ११. अवि साहिए दुवे वासे, सीतोदं अभोच्चा णिक्खंते । एगत्तगए पिहियच्चे, से अहिण्णायदंसणे संते ।।

१२. पुढविं च आउकायं, तेउकायं च वाउकायं च । पणगाइं बीय-हरियाइं, तसकायं च सव्वसो णच्चा ।।

१३. एयाइं संति पडिलेहे, चित्तमंताइं से अभिण्णाय । परिवज्जियाण विहरित्था, इति संखाए से महावीरे ।।

३०९ १४. अदु थावरा तसत्ताए, तसजीवा य थावरत्ताए । अदु सव्वजोणिया सत्ता, कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. भगवं च एवं मन्नेसिं, सोवहिए हु लुप्पती बाले । कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ।।
१६. दुविहं समिच्च मेहावी, किरियमक्खायणेलिसिं णाणी । आयाण-सोयमतिवाय-सोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा ।।

३१० १७. अइवातियं अणाउट्टे, सयमण्णेसिं अकरणयाए । जस्सित्थीओ परिण्णाया, सव्वकम्मावहाओ से अदक्खू ।।

३११ १८. अहाकडं न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा य अदक्खू । जं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था ।।
१९. णो सेवती य परवत्थं, परपाए वि से ण भुंजित्था । परिवज्जियाण ओमाणं, गच्छति संखडिं असरणाए ।।
२०. मायण्णे असण-पाणस्स, णाणुगिद्धे रसेसु अपडिण्णे । अच्चिंपि णो पमज्जिया, णोवि य कंडूयये मुणी गायं ।।

३१२ २१. अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पं पिट्ठओ उपेहाए । अप्पं बुइए पडिभाणी, पंथपेही चरे जयमाणे ।।
२२. सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने, तं वोसज्ज वत्थमणगारे । पसारित्तु बाहुं परक्कमे, णो अवलंबियाण कंधंसि ।।

३१३ २३. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया । अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा ।।

--त्ति बेमि।।

आया० सु० १, अ० ९, उ० १ ।

भगवओ सेज्जा

३१४ १. चरियासणाइं सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ बुइयाओ । आइक्ख ताइं सयणासणाइं, जाइं सेवित्था से महावीरो ।।
२. आवेसण-सभा-पवासु, पणियसालासु एगदा वासो । अदुवा पलियट्ठाणेसु, पलालपुंजेसु एगदा वासो ।।
३. आगंतारे आरामागारे, गामे णगरे वि एगदा वासो । सुसाणे सुण्णगारे वा, रुक्खमूले वि एगदा वासो ।।
४. एतेहिं मुणी सयणेहिं, समणे आसी पतेरसवासे । राइं दिवं पि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहिए झाति ।।

३१५ ५. णिद्दं पि णो पगामाए, सेवइ भगवं उट्ठाए । जग्गावती य अप्पाणं, ईसिं साई यासी अपडिण्णे ।।
६. संबुज्झमाणे पुणरवि, आसिंसु भगवं उट्ठाए । णिक्खम्म एगया राओ, बहिं चंकमिया मुहुत्तागं ।।

३१६ ७. सयणेहिं तस्सुवसग्गा, भीमा आसी अणेगरूवा य । संसप्पगा य जे पाणा, अदुवा जे पक्खिणो उवचरंति ।।
८. अदु कुचरा उवचरंति, गामरक्खा य सत्तिहत्था य । अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगतिया पुरिसा य ।।
९. इहलोइयाइं परलोइयाइं, भीमाइं अणेगरूवाइं । अवि सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं, सद्दाइं अणेगरूवाइं ।।
१०. अहियासए सया समिए, फासाइं विरूवरूवाइं । अरइं रइं अभिभूय, रीयई माहणे अबहुवाई ।।
११. स जगेहिं तत्थ पुच्छिसु, एगचरा वि एगदा राओ । अव्वाहिए कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिण्णे ।।

३१७ १२. अयमंतरंसि को एत्थ, अहमंसि त्ति भिक्खू आहट्टु । अयमुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए सकसाइए झाति ।।
१३. जंसिप्पेगे पवेयंति, सिसिरे मारुए पवायंते । तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवायमेसंति ।।
१४. संघाडीओ पविसिस्सामो, एहा य समादहमाणा । पिहिया वा सक्खामो, अतिदुक्खं हिमग-संफासा ।।
१५. तंसि भगवं अपडिण्णे, अहे विगडे अहियासए दविए । णिक्खम्म एगदा राओ, चाएइ भगवं समियाए ।।

३१८ १६. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया । अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा ।।

--त्ति बेमि ।।

आया० सु० १, अ० ९, उ० २ ।।

भगवओ परीसह-उवसग्गा

३१९ १. तणफासे सीयफासे य, तेउफासे य दंस-मसगे य । अहियासए सया समिए, फासाइं विरूवरूवाइं ।।
२. अह दुच्चर-लाढमचारी, वज्जभूमिं च सुब्भभूमिं च । पंतं सेज्जं सेविंसु, आसणगाणि चेव पंताइं ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. लाढेहिं तस्सुवसग्गा, बहवे जाणवया लूसिंसु । अह लूहदेसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिंसु णिवतिंसु ।।
४. अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए दसमाणे । छुछुकारंति आहंतु, समणं कुक्कुरा डसंतु त्ति ।।
५. एलिक्खए जणे भुज्जो, बहवे वज्जभूमि फरुसासी । लट्ठि गहाय णालीयं, समणा तत्थ एव विहरिंसु ।।
६. एवं पि तत्थ विहरंता, पुट्ठपुव्वा अहेसि सुणएहिं । संलुंचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि तत्थ लाढेहिं ।।
७. निधाय दंडं पाणेहिं, तं कायं वोसज्जमणगारे । अह गामकंटए भगवं, ते अहियासए अभिसमेच्चा ।।
८. णाओ संगामसीसे वा, पारए तत्थ से महावीरे । एवं पि तत्थ लाढेहिं, अलद्धपुव्वो वि एगया गामो ।।

३२० ९. उवसंकमंतमपडिण्णं, गामंतियं पि अप्पत्तं । पडिणिक्खमित्तु लूसिंसु, एत्तात्तो परं पलेहि त्ति ।।
१०. हयपुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु कुंताइ-फलेणं । अदु लेलुणा कवालेणं, हंता हंता बहवे कंदिंसु ।।
११. मंसूणि छिन्नपुव्वाइं, उट्ठुभंति एगया कायं । परीसहाइं लुंचिंसु, अहवा पंसुणा अवकिरिंसु ।।
१२. उच्चालइय णिहणिंसु, अदुवा आसणाओ खलइंसु । वोसट्ठकाए पणयासी, दुक्खसहे भगवं अपडिण्णे ।।
१३. सूरो संगामसीसे वा, संवुडे तत्थ से महावीरे । पडिसेवमाणे फरुसाइं, अचले भगवं रीइत्था ।।

३२१ १४. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया । अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा ।।

–त्ति बेमि ।।

आया० सु० १, अ० ९, उ० ३ ।

भगवओ तिगिच्छाइवज्जणं

३२२ १. ओमोदरियं चाएति, अपुट्ठे वि भगवं रोगेहिं । पुट्ठे वा से अपुट्ठे वा, णो से सातिज्जति तेइच्छं ।।
२. संसोहणं च वमणं च, गायब्भंगणं सिणाणं च । संबाहणं ण से कप्पे, दंतपक्खालणं परिण्णाए ।।
३. विरए गामधम्मेहिं, रीयति माहणे अबहुवाई । सिसिरंमि एगदा भगवं, छायाए झाइ आसी य ।।

भगवओ आहार–चरिया

३२३ ४. आयावई य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुडुए अभिवाते । अदु जावइत्थ लूहेणं, ओयण-मंथु-कुम्मासेणं ।।
५. एयाणि तिण्णि पडिसेवे, अट्ठ मासे य जावए भगवं । अपिइत्थ एगया भगवं, अद्धमासं अदुवा मासं पि ।।
६. अवि साहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा अपिवित्ता । रायोवरायं अपडिण्णे, अन्नगिलायमेगया भुंजे ।।
७. छट्ठेणं एगया भुंजे, अदुवा अट्ठमेण दसमेणं । दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिण्णे ।।

३२४ ८. णच्चाणं से महावीरे, णो वि य पावगं सयमकासी । अण्णेहिं वि ण कारित्था, कीरंतं पि णाणुजाणित्था ।।
९. गामं पविसे णयरं, वा, घासमेसे कडं परट्ठाए । सुविसुद्धमेसिया भगवं, आयत-जोगयाए सेवित्था ।।
१०. अदु वायसा दिगिंछत्ता, जे अण्णे रसेसिणो सत्ता । घासेसणाए चिट्ठंते, सययं णिवतिते य पेहाए ।।
११. अदु माहणं व समणं वा, गामपिंडोलगं च अतिहिं वा । सोवागं मूसियारं वा, कुक्कुरं वा वि विट्ठियं पुरतो ।।
१२. वित्तिच्छेदं वज्जंतो, तेसप्पत्तियं परिहरंतो । मंदं परक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घासमेसित्था ।। (त्रिभिः कुलकम्)
१३. अवि सूइयं व सुक्कं वा, सीयपिंडं पुराणकुम्मासं । अदु बक्कसं पुलागं वा, लद्धे पिंडे अलद्धए दविए ।।

३२५ १४. अवि झाति से महावीरे, आसणत्थे अकुक्कुए झाणं । उड्ढमहे य तिरियं च, पेहमाणे समाहिमपडिण्णे ।।
१५. अकसाई विगयगेही, सद्दरूवेसऽमुच्छिए झाति । छउमत्थे वि परक्कममाणे, णो पमायं सइं पि कुव्वित्था ।।
१६. सयमेव अभिसमागम्म, आयतजोगमायसोहीए । अभिणिव्वुडे अमाइल्ले, आवकहं भगवं समिआसी ।।

३२६ १७. एस विही अणुक्कंतो, माहणेणं मईमया । अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा ।।

–त्ति बेमि

आया० सु० १, अ० ९, उ० ४ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलणाण-दंसणुप्पत्ति

३२७ तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स बारसवासा वीइक्कंता, तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्स णं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगतेणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए, पोरिसीए, जंभियगामस्स णगरस्स बहिया णईए उजुवालियाए उत्तरे कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि, वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालरुक्खस्स अदूरसामंते, उक्कुडुयस्स, गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं[1], उड्ढंजाणुअहो-सिरस्स, धम्मज्झाणोवगयस्स, झाणकोट्ठोवगयस्स, सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स, निव्वाणे, कसिणे, पडिपुण्णे, अव्वाहए, णिरावरणे, अणंते, अणुत्तरे, केवल-वर-णाण-दंसणे समुप्पण्णे ।।[2]

से भगवं अरिहं जिणे जाए, केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी, सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ, तं जहा—

आगतिं - जाव - रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं जाणमाणे पासमाणे, एवं च णं विहरइ ।।

आया० सु० २, अ० १५, सु० १०२०।

देवागमणं

३२८ जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स णिव्वाणे कसिणे पडिपुण्णे अव्वाहए णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवल-वर-णाण-दंसणे समुप्पण्णे तण्णं दिवसं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयंतेहि य उप्पयंतेहि य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देव-कहक्कहे उप्पिंजलगभूए यावि होत्था ।।

आया० सु० २, अ० १५, सु० १०२२।
कप्प० सु० १२१ ।

भवणवासी देवा आगया

३२९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरकुमारा देवा अंतियं पाउब्भवित्था, काल-महाणील-सरिस-णील-गुलियगवल-अयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तमिव पत्तलनिम्मला ईसीसिय-रत्त-तंबणयणा गरुलायय-उज्जुतुंग-णासा ओयविय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभाहरोट्ठा पंडुर-ससि-सयल-विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण-दगरय-मुणालिया-धवल-दंतसेढी हुयवह-णिद्धंत-धोय-तत्त-तवणिज्जरत्ततल-तालु-जीहा अंजण-घण-कसिण-रुयग-रमणिज्ज-णिद्धकेसा वामेगकुंडल-धरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसी-सिलिंध-पुप्फ-प्पगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता बिइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगय-तुडिय-पवर-भूसण-निम्मल-मणि-रयण-मंडियभुया दस-मुद्दा-

---

१. ठाणं अ० ६, सु० ५३१ ।

२. तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं, अणुत्तरेणं दंसणेणं, अणुत्तरेणं चरित्तेणं, अणुत्तरेणं आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं वीरिएणं, अणुत्तरेणं अज्जवेणं, अणुत्तरेणं मद्दवेणं, अणुत्तरेणं लाघवेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मुत्तीए, अणुत्तराए गुत्तीए, अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तरेणं सच्च-संजम-तव-सुचरिय-सोवचइय-फलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स दुवालस संवच्छराइं विइक्कंताइं। तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वइसाहसुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिनिवट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स बहिया उजुवालियाए नईए तीरे वियावत्तस्स चेईयस्स अदूरसामंते सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनिसिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवल-वर-नाण-दंसणे समुप्पन्ने ।।

कप्प० सु० १२०।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंडियग्ग-हत्था चूलामणि-चिंधगया सुरूवा महड्ढिया महज्जुइया महब्बला महायसा महासोक्खा महाणुभागा हारविराइयवच्छा कडग-तूडिय-थंभिय-भुया अंगयकुंडलमट्ठगंडतला कण्णपविवारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिया कल्लाणग-पवर-मल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंब-वण-मालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं एवं–फासेणं संघाएणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए जुईए पभाए छायाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं आगम्मागम्म रत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेन्ति करित्ता वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता साइं साइं णामगोयाइं सावेन्ति णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति ।।

ओव० सु० ३३ ।

३३० तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अंतियं पाउब्भवित्था णाग-पइणो सुवण्णा विज्जू अग्गी य दीवउदही दिसाकुमारा य, पवणथणिया य, भवणवासी णागफडा-गरुल-वइर-पुण्ण कलसंकिण्ण-उप्फेससीह-हयवर-गयंक-मयरंकवर-मउड-वद्धमाण-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंधगया सुरूवा महिड्ढिया सेसं तं चेव - जाव - पज्जुवासंति ।

ओव० सु० ३४ ।

वाणमंतरा देवा आगया

३३१ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे वाणमंतरा देवा अंतियं पाउब्भवित्था पिसायभूया य जक्ख-रक्खसा किंनर-किंपुरिस-भुयगपइणो य महाकाया गंधव्व-णिकायगणा णिउण-गंधव्व-गीयरइणो अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवादिय-भूयवादिय-कंदिय-महाकंदिया य कुहंड-पययदेवा चंचल-चवल-चित्त-कलिण-दवप्पिया गंभीर-हसिय-भणिय-पीय-गीय-णच्चण-रई वणमालामेल-मउड-कुंडल-सच्छंद-विउव्वियाहरण-चारु-विभूसणधरा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइय-पलंब-सोभंत-कंत-वियसंत-चित्त-वणमाल-रइय-वच्छा कामगमा कामरूवधारी णाणाविह-वण्णरागवर-वत्थ-चित्त-चिल्लय-णियंसणा विविह-देसी-णेवच्छ-गहियवेसा पमुइय-कंदप्प-कलह-केली-कोलाहल-पिया हासबोलबहुला अणेगमणि-रयण-विविह-णिज्जुत्त-विचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढिया -जाव-पज्जुवासंति ।।

ओव० सु० ३५ ।

जोइसिया देवा आगया

३३२ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स (वद्धमाणस्स) जोइसिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था, बिहस्सती चंद-सूर-सुक्क-सणिच्छरा राहू धूमकेतु-बुहा य अंगारका य तत्त-तवणिज्ज-कणग-वण्णा जे य गहा जोइसंमि चारं चरंति केऊ य गइरइया अट्ठावीसतिविहा य णक्खत्तदेवगणा णाणासंठाणसंठियाओ य पंचवण्णाओ ताराओ ठियलेसा चारिणो य अविस्साममंडलगई पत्तेयं णामंक-पागडिय-चिंधमउडा महिड्ढिया–जाव-पज्जुवासंति ।।

ओव० सु० ३६ ।

वेमाणिया देवा आगया

३३३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स वेमाणिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्साराणय-पाणयारण-अच्चुयवई पहिट्ठा देवा जिणदंसणुस्सुयागमण-जणियहासा पालगपुप्फगसोमणस-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-कामगम-पीइगम-मणोगम-विमल-सव्वओभद्द-सरिस-णामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा वंदगा जिणिंदं मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवई-भुयग-खग-उसभंकविडिम-पागडिय-चिंध-मउडा पसिढिल-वर-मउड-तिरीड-धारी कुंडल-उज्जोवियाणणा मउडदित्तसिरया रत्ताभा पउम-पम्हगोरा सेया सुभवण्णगंधफासा उत्तमवेउव्विणो विविह-वत्थ-गंध-मल्ल-धारी महिड्ढिया महज्जुतिया-जाव-पंजलिउडा पज्जुवासंति ।।

ओव० सु० ३७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३४ सामाणिय-तावत्तीस-महिया सलोगपाल-अग्गमहिसि-परिसाणिय-आयरक्खेहिं संपरिवुडा समणुगम्मंत-सस्सिरीया देवसंघजयसद्दक-यालोया मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभंक-विडिम-पागडिय-चिंधमउडा पालग-पुप्फग-सोमणस-सिसिरिवच्छ-नंदियावट्ट-कामगम-पीतिगम-मणोगम-विमल-सव्वओभद्द-नामधेज्जेहिं विमाणेहिं तरुणदिणयरकरअइरेगप्पभेहिं मणि--कणग-रयण-घडिय-जालुज्जल-हेमजाल-पेरंत-परिगएहिं सपयरवरमुत्तदामलंबंतभूसणेहिं पचलियघंटावलि-महुर-सद्द-वंस-तंती-तलताल-गीय-वाइय-रवेणं महुरेणं मणोहरेणं पूरयंता अंबरं दिसाओ य, सोभेमाणा सरियं, संपट्ठिया थिरजसा देविंदा हट्ठतुट्ठमणसा, सेसा वि य कप्पवरविमाणाहिवा सविमाण-विचित्त-चिंध-नामंक-विगड-पागड-मउडाडोवसुभदंसणिज्जा समन्निति,
लोयंतविमाणवासिणो यावि देवसंघा य पत्तेय-विरायमाण-विरइय-मणि-रयण-कुंडल-भिसंत-निम्मल-नियगंकिय-विचित्त-पागडिय-मउडा दायंता अप्पणो समुदयं, पेच्छंता वि य परस्स इड्ढीओ,

जिणिंद-वंदण-निमित्त-भत्तीए चोइयमई जिणदंसणसुयागमणजणियहासा विउल-बलसमूह-पिंडिया संभमेणं गगण-तल-विमल-विउल-गगण-गइ-चवल-चलियमण(पवण)जइणसिग्घवेगा णाणाविह-जाणवाहणगया ऊसियविमलधवलछत्ता विउव्विय-जाण-वाहण-विमाण-देह-रयणप्पभाए उज्जोएंता नहं, वितिमिरं करेंता सव्विड्ढीए हुलियं पयाया। पसिढिलवरमउडतिरीडधारी मउडदित्तसिरया रत्ताभा पउमपम्हगोरा सेया।

ओव० सु० ३७।

अच्छरगणसंघाया आगया

३३५ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अच्छरगणसंघाया अंतियं पाउब्भवित्था। ताओ णं अच्छराओ धंतधोय-कणग-रुयग-सरिसप्पभाओ समइक्कंताओ य बालभावं अणइवरसोमचारुरूवाओ निरुवहय-सरस-जोव्वण-कक्कस-तरुणवयभावं उवगयाओ निच्चं अवट्ठियसहावाओ सव्वंगसुंदरीओ इच्छिय-नेवच्छ-रइय-रमणिज्ज-गहिय-वेसाओ,
किं ते? हारद्धहार-पाउत्त-रयण-कुंडल-वामुत्तग-हेमजाल-मणिजाल-कणगजाल-सुत्तगउरितिय-कडगखुड्डग-एगावलि-कंठसुत्तमगह-ग-धरऽच्छ-गेवेज्ज-सोणिसुत्तग-तिलग-फुल्लग-सिद्धत्थिय-कण्णवालिय-ससि-सूर-उसभ-चक्कय-तलभंगय-तुडिय-हत्थमालय-हरिस-केऊर-वलय-पालंब-पलंब-अंगुलिज्जगवलक्खदीणारमालिया-चंद-सूर-मालिया-कंचिमेहल-कलाव-पयरग-परिहेरग-पायजाल-घंटिया-खिखिणि-रयणोरुजाल-खुड्डियवर-नेउर-चलणमालियाकणग-णिगलजालग-मगरमुह-विरायमाण-नेउर-पचलियसद्दाल-भूसणधारणीओ दसद्धवण्ण-रागरइय-रत्तमणहरे हयलालापेलवाइरेगे धवले कणग-खचियंतकम्मे आगासफालियसरिसप्पहे अंसुएणियत्थाओ आयरेणं तुसार-गोक्खीर-हार-दगरय-पंडुर-दुगुल्ल-सुकुमाल-सुकयरमणिज्ज-उत्तरिज्जाइं पाउयाओ, वरचंदणचच्चियाओ वराभरणभूसियाओ सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-रइय-विचित्त-वरमल्लधारिणीओ सुगंध-चुण्णंगराग-वरवास-पुप्फ-पूरगविराइयाओ अहियसस्सिरीयाओ उत्तमवर-धूव-धूवियाओ सिरीसमाणवेसाओ दिव्व-कुसुम-मल्लदाम-पब्भंजलिपुडाओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमल-लाडाओ चंदाहिय-सोमदंसणाओ उक्काओ विव उज्जोएमाणाओ विज्जुघणमिरीइसूरदिप्पंततेयअहियतरसन्निगासाओ सिंगारागार-चारुवेसाओ संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सलिलय-संलाव-निउण-जुत्तोवयार-कुसलाओ सुंदर-थण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूवजोव्वण-विलास-कलियाओ सुरवधूओ सिरीस-नवणीय-मउय-सुकुमालतुल्लफासाओ ववगयकलिकलुसाओ धोयनिद्धंतरयमलाओ सोमाओ कंताओ पियदंसणाओ सुरूवाओ जिणभत्तिदंसणाणुरागेणं हरिसियाओ ओवइयाओ यावि जिणसगासं दिव्वेणं सेसं तं चेव नवरं ठियाओ चेव।

ओव० सु० ३३-३८।

भगवओ महावीरस्स वण्णओ

३३६ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे
पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी
अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए
दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहय-वर-नाण-दंसणधरे वियट्टछउमे
जिणे जाणए, तिण्णे तारए, मुत्ते मोयए, बुद्धे बोहए, सव्वण्णू सव्वदरिसी
सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३७ अरहा जिणे केवली सत्तहत्थुस्सेहे समचउरंस-संठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे अणुलोमवाउवेगे कंकग्गहणी कवोयपरिणामे सउणिपोसपिट्ठंतरोरुपरिणए, पउमुप्पल-गंध-सरिस-निस्सास-सुरभिवयणे, छवी निरायंक-उत्तम-पसत्थ-अइसेय-निरुवमपले, जल्लमल्ल-कलंक-सेय-रय-दोस-वज्जिय-सरीर-निरुवलेवे, छायाउज्जोइयंगमंगे

घण-निचिय-सुबद्ध-लक्खणुण्णय-कूडागार-निभ-पिंडियग्गसिरए

सामलि-बोंड-घण-निचिय-च्छोडिय-मिउविसय-पसत्थ-सुहुम-लक्खण-सुगंध-सुंदर-भुयमोयग-भिंग-नेल-कज्जल-पहट्ठ-भमरगण-णिद्ध-निकुरुंब-निचिय-कुंचिय-पयाहिणावत्तमुद्धसिरए

दालिमपुप्फ-प्पगास-तवणिज्ज-सरिस-निम्मल-सुणिद्ध-केसंतकेसभूमी (घणनिचियसुबद्धलक्खणुन्नयकूडागारनिभपंडियग्गसिरए) छत्तागारुत्तिमंगदेसे

णिव्वण-समलट्ठ-मट्ठ-चंदद्ध-सम-णिडाले

उडुवइ-पडिपुण्ण-सोमवयणे
अल्लीणपमाणजुत्तसवणे सुस्सवणे
पीणमंसलकवोलदेसभाए
आणामिय-चाव-रुइलकिण्हब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे
अवदालिय-पुंडरीय-णयणे कोयासियधवलपत्तलच्छे
गरुलायय-उज्जु-तुंगणासे
उवचियसिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभाहरोट्ठे

पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दगरय-मुणालियाधवलदंतसेढी, अखंडदंते अप्फुडियदंते अविरलदंते सुणिद्धदंते सुजायदंते एगदंतसेढी विव अणेगदंते

हुयवह-णिद्धंत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहे
अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्तमंसु

मंसल-संठिय-पसत्थसद्दूल-विउल-हणुए
चउरंगुल-सप्पमाण-कंबुवर-सरिसग्गीवे

वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ-नागवर-पडिपुण्ण-विउलक्खंधे जुगसन्निभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ठ-सुसंठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्ध-संधिपुरवर-फलिह-वट्टियभुए
भुयगीसर-विउल-भोग-आयाण-पलिह-उच्छूढ-दीहबाहू
रत्ततलोवइय-मउय-मंसल-सुजाय-लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्दजालपाणी

पीवरकोमलवरंगुली

आयंबतंबतलिणसुइरुइलणिद्धणखे

चंदपाणिलेहे सूरपाणिलेहे संखपाणिलेहे चक्कपाणिलेहे दिसासोत्थियपाणिलेहे चंद-सूर-संख-चक्क-दिसा-सोत्थिय-पाणिलेहे
कणग-सिलायलुज्जलपसत्थ-समतल-उवचिय-विच्छिण्ण-पिहुलवच्छे, सिरिवच्छंकियवच्छे
अकरंडुय-कणग-रुयय-निम्मल-सुजाय-निरुवहयदेहधारी
अट्ठसहस्स-पडिपुण्ण-वर-पुरिस-लक्खणधरे
सण्णयपासे संगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमाइयपीणरइयपासे
उज्जुय-समसहिय-जच्चतणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्जरोमराई
झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी झसोयरे सुइकरणे पउमवियडणाभे
गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरंग-भंगुर-रविकिरण-तरुणबोहिय-अकोसायंत-पउमगंभीर-वियडणाभे साहयसोणंदमुसल-दप्पण-णिकरिय-वर-कणगच्छरु-सरिसवरवइर-वलियमज्झे
पमुइयवरतुरगसीहवरवट्टियकडी
वरतुरगसुजायसुगुज्झदेसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आइण्णहउव्व णिरुवलेवे
वरवारणतुल्ल-विक्कम-विलसियगई
गय-ससण-सुजायसन्निभोरू
समुग्ग-णिमग्ग-गूढजाणू
एणीकुरुविंदावत्त-वट्टाणुपुव्वजंघे
संठियसुसिलिट्ठ (विसिट्ठ) गूढगुप्फे
सुप्पइट्ठियकुम्मचारुचलणे
अणुपुव्वसुसंहयंगुलीए,
उण्णयतणुतंबणिद्धणक्खे रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालकोमलतले
अट्ठसहस्स-वरपुरिस-लक्खणधरे, नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंक-वरंग-मंगलंकिय-चलणे, विसिट्ठरूवे, हुयवह-निद्धूम-जलिय-तडितडिय-तरुण-रवि-किरण-सरिसतेए

३३८ अणासवे अममे अकिंचणे छिन्नसोए निरुवलेवे ववगयपेमरागदोसमोहे निग्गंथस्स पवयणस्स देसए सत्थनायगे पइट्ठावए समणपई समणगविंदपरिवुडिए चउतीसबुद्धवयणाइसेसपत्ते पणतीससच्चवयणाइसेसपत्ते

३३९ आगासगएणं चक्केणं, आगासगएणं छत्तेणं, आगासियाहिं चामराहिं आगासफालियामएणं सपायवीढेणं धम्मज्झएणं पुरओ पकड्ढिज्जमाणेणं चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं, छत्तीसाए अज्जिया-साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडं.....।

ओव० सु० १६।

महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो

३४० तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो अप्पेगइया उग्गपव्वइया भोगपव्वइया राइण्ण-णाय-कोरव्वखत्तियपव्वइया भडा जोहा सेणावईपसत्थारो सेट्ठी इब्भा अण्णे य बहवे एवमाइणो उत्तम-जाइ-कुल-रूव-विणय-विण्णाण-वण्ण-लावण्ण-विक्कम-पहाण-सोभग्ग-कंति-जुत्ता बहुधण-धण्ण-णिचय-परियाल-फिडिया णरवइगुणाइरेगा इच्छियभोगा सुहसंपललिया किंपागफलोवमं च मुणिय विसय-सोक्खं जलबुब्बुयसमाणं कुसग्गजलबिन्दुचंचलं जीवियं य णाऊण अद्धुवमिणं रयमिव पडग्गलग्गं संविधुणित्ताणं, चइत्ता हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा धणं--एवं धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्त-रयणमाइयं संतसार-सावतेज्जं, विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता दाणं च दाइयाणं परिभायइत्ता मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, अप्पेगइया अद्धमासपरियाया, अप्पेगइया मासपरियाया,--एवं दुमास तिमास - जाव - एक्कारस मासपरियाया अप्पेगइया वासपरियाया, दुवास तिवास - जाव - अप्पेगइया अणेगवासपरियाया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

ओव० सु० २३।

३४१ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे निग्गंथा भगवंतो–अप्पेगइया आभिणिबोहियणाणी--जाव-केवलणाणी
अप्पेगइया मणबलिया वयबलिया कायबलिया णाणबलिया दंसणबलिया चारित्तबलिया
अप्पेगइया मणेणं सावाणुग्गहसमत्था एवं वएणं काएणं
अप्पेगइया खेलोसहिपत्ता एवं जल्लोसहि विप्पोसहि आमोसहि सव्वोसहि,
अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी एवं बीयबुद्धी, पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी,
अप्पेगइया संभिन्नसोया, अप्पेगइया खीरासवा, अप्पेगइया महुयासवा, अप्पेगइया सप्पियासवा, अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया,
अप्पेगइया उज्जुमई, अप्पेगइया विउलमई, विउव्वणिड्ढिपत्ता, चारणा विज्जाहरा, आगासाइवाई,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४२ अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा

एवं एगावलिं,

अप्पेगइया खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा, अप्पेगइया महालयं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा, एवं भद्दपडिमं, महाभद्दपडिमं, सव्वओभद्दपडिमं,[1] आयंबिलवद्धमाणं तवोकम्मं पडिवण्णा,

३४३ अप्पेगइया मासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, एवं दोमासियं, पडिमं, तिमासियं पडिमं-जाव-सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, अप्पेगइया पढमं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा -जाव- तच्चंसत्तराइंदियभिक्खुपडियं पडिवण्णा अहोराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, एक्कराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं, अट्ठअट्ठमियं भिक्खुपडिमं णवणवमियं भिक्खुपडिमं, दसदसमियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा खुड्डियं मोयपडिमं पडिवण्णा, महल्लियं मोयपडिमं पडिवण्णा, जवमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा, वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा, विवेगपडिमं विओसग्गपडिमं उवहाणपडिमं पडिसंलीण-पडिमं पडिवण्णा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

ओव० सु० २४।

३४४ तेणं कालेणं तेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा कुलसंपण्णा बलसंपण्णा रूवसं-पण्णा विणयसंपण्णा णाणसंपण्णा दंसणसंपण्णा चरित्तसंपण्णा लज्जासंपण्णा लाघवसंपण्णा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जिइंदिया जियणिद्दा जियपरीसहा जीवियासमरणभयविप्पमुक्का वयप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा णिग्गहप्पहाणा निच्छयप्पहाणा अज्जवप्पहाणा मद्दवप्पहाणा लायवप्पहाणा खंतिप्प-हाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जापहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा चारुवण्णा लज्जातवस्सी जिइंदिया सोही अणियाणा अप्पोसुया अबहिल्लेसा अप्पडिलेस्सा सुसामण्णरया दंता[2] इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति ।

ओव० सु० २५।

३४५ तेसि णं भगवंताणं आयावाया वि विदिता भवंति, परवाया वि विदिता भवंति, आयावायं जमइत्ता नलवणमिव मत्तमा-तंगा अच्छिद्दपसिणवागरणा रयणकरंडगसमाणा कुत्तियावणभूया परवाइपमद्दणा चोद्दसपुव्वी[3] दुवालसंगिणो समत्तगणिपिडगधरा सव्वक्खरसण्णिवाइणो सव्वभासाणुगामिणो अजिणा जिणसंकासा, जिणा इव अवितहं वागरमाणा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

ओव० सु० २६।

३४६ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे अणगारा भगवंतो इरियासमिया-जाव-पारिट्ठा-वणियासमिया, १ मणगुत्ता, २ वयगुत्ता, ३ कायगुत्ता, गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी, अममा अकिंचणा अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुया अणासवा अग्गंथा छिण्णग्गंथा छिण्णसोया निरुवलेवा विमल-वरकंसभायणं व मुक्कतोया -जाव- जीवो व्व अप्पडिहयगइया .....तेयसा जलंता ।

ओव० सु० २७ ।

३४७ नत्थि णं तेसि णं भगवंताणं कत्थइ पडिबंधे भवइ । से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–

१ दव्वओ, २ खेत्तओ, ३ कालओ, ४ भावओ ।

---

१ भद्दपडिमं सुभद्दपडिमं महाभद्दपडिमं सव्वओभद्दपडिमं भद्दतरपडिमं . . . पाठान्तर ।

२ बहूणं आयरिया, बहूणं उवज्झाया बहूणं गिहत्थाणं पव्वइयाणं च दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा ।

३ परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणोद्धंसिज्जमाणा विहरंति अप्पेगइया आयारधरा - जाव - विवागसुयधरा चोद्दसपुव्वी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दव्वओ णं–सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु,
खेत्तओ णं–गामे वा -जाव- णहे वा,
कालओ णं–समए वा -जाव-अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे ।
भावओ णं–कोहे वा, -जाव-मिच्छादंसणसल्लेणं-एवं तेसिं ण भवइ ।

ओव० सु० २४ ।

३४८ ते णं भगवंतो वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतियाणि मासाणि गामे एगराइया, णयरे पंचराइया वासीचंदणसमाणकप्पा समलेट्ठुकंचणा समसुहदुक्खा इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धा संसारपारगामी कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरंति । जं णं जं णं दिसं इच्छंति तं णं तं णं विहरंति सुइभूया लहुभूया अणप्पग्गंथा ।

ओव० सु० २९ ।

३४९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अणगारा भगवंतो अप्पेगइया आयारधरा -जाव- विवागसुयधरा तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे गच्छागच्छिं गुम्मागुम्मिं फड्डाफड्डिं, अप्पेगइया वायंति, अप्पेगइया पडिपुच्छंति, अप्पेगइया परियट्टंति, अप्पेगइया अणुप्पेहंति, अप्पेगइया अक्खेवणीओ विक्खेवणीओ संवेयणीओ णिव्वेयणीओ बहुविहाओ कहाओ कहंति, अप्पेगइया उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

३५० संसारभउव्विग्गा भीया–

जम्मण-जर-मरण-करण-गंभीर-दुक्ख-पक्खुब्भिय-पउर-सलिलं, संजोग-विओग-वीइ-चिंता-पसंग-पसरिय-वह-बंध-महल्ल-विउल-कल्लोल-कलुण-विलविय-लोभ-कलकलंत-बोलबहुलं, अवमाणण-फेण-तिव्व-खिसण-पुलंपुल[पलुंपण]प्पभूय-रोग-वेयणपरिभव-विणिवाय-फरुस-धरिसणा समावडिय-कढिण-कम्म-पत्थर-तरंगरंगंत-निच्च-मच्चुभय-तोयपट्ठं कसाय-पायाल-संकुलं भवसयसहस्स-कलुस-जलसंचयं पइभयं अपरिमिय-महिच्छ-कलुसमइ-वाउवेग-उद्धम्ममाण-दगरय-रयंधआर-वर-फेण-पउर-आसा-पिवास-धवलं, मोहमहावत्त-भोग-भममाण-गुप्पमाणुच्छलंत-पच्चोणियत्त-पाणिय-पमाय-चंड-बहुदुट्ठ-सावय-समाहयुद्धायमाण-पब्भार-घोर-कंदिय-महारवरवंतभेरवरवं, अण्णाण-भमंत-मच्छपरिहत्थ-अणिहुयिंदिय-महामगर-तुरिय-चरियखोखुब्भमाण-नच्चंत-चवल-चंचल-चलंत-घुम्मंत-जलसमूहं, अरइ-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेल-संकडं अणाइसंताण-कम्मबंधण-किलेस-चिक्खल्लसुदुत्तारं अमर-णर-तिरिय-णरयगइ-गमण-कुडिल-परियत्तविउलवेलं चउरंतं महंतमणवयग्गं रुंदं संसारसागरं भीमंदरिसणिज्जं तरंति ।

३५१ धिइधणियनिप्पकंपणे तुरियचवलं संवर-वेरग्ग-तुंग-कूवय-सुसंपउत्तेणं णाण-सिय-विमलमूसिएणं सम्मत्त-विसुद्ध-लद्धणिज्जामएणं धीरा संजम-पोएण सीलकलिया पसत्थज्झाण-तव-वाय-पणोल्लिय-पहाविएणं उज्जम-ववसाय-ग्गहिय-णिज्जरण-जयण-उवओग-णाण-दंसण-चरित्त-विसुद्धवयभंडभरियसारा जिणवर-वयणोवदिट्ठ-मग्गेण अकुडिलेण सिद्धिमहापट्टणाभिमुहा समणवरसत्थवाहा सुसुइसुसंभाससुपण्हसासा
गामे गामे एगरायं णगरे णगरे पंचरायं दूइज्जंता जिइंदिया णिब्भया गयभया सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु विरागयं गया संजया विरता मुत्ता लहुया णिरवकंखा साहू णिहुया चरंति धम्मं ।।

ओव० सु० २३-३२ ।

महावीरेण एगनिसज्जाए चउपण्णाइं वागरणाइं

३५२ समणे भगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसेज्जाए चउप्पण्णाइं वागरणाइं वागरित्था ।

सम० स० ५४, सु० ३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीरकया पज्जुवासणा

३५३ समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे वीतिक्कंते सत्तरिए राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ[1] ॥

सम० स० ७०, सु० १।

वासावासगणणा

३५४ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे–
अट्ठियगामं नीसाए पढमं अंतरावासं वासावासं उवागए ।
चंपं च पिट्ठिचंपं च निस्साए तओ अंतरावासे वासावासं उवागए ।
वेसालिं नगरिं वाणियगामं च निस्साए दुवालस अंतरावासे वासावासं उवागए ।
रायगिहं नगरं नालंदं च बाहरियं निस्साए चोद्दस अंतरावासे वासावासं उवागए ।
छ म्मिहिलाए,
दो भद्दियाए,
एगं आलभियाए,
एगं सावत्थीए,
एगं पणीयभूमीए,
एगं पावाए मज्झिमाए हत्थिवालस्स रन्नो रज्जुगसहाए अपच्छिमं अंतरावासं वासावासं उवागए ।

कप्प० सु० १२२।

णिव्वाणं देवेहिं उज्जोयकरणं य

३५५ एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराणं चरमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

ठाणं० अ० १, सु० ७६।

---

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ?
जतो णं पाएणं अगारीण अगाराइं कडियाइं उक्कंपियाइं छन्नाइं लित्ताइं घट्ठाइं मट्ठाइं संपधूमियाइं खओदगाइं खातनिद्धमणाइं अप्पणो अट्ठाए कयाइं परिभोत्ताइं परिणामियाइं भवंति ।
से एतेण ट्ठेणं एवं वुच्चइ–समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे वीइक्कंते वासावासं पज्जोसवेति ।
जहा णं समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे वीइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ तहा णं गणहरा वि वासाण सवीसइराए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसविंति ।
जहा णं गणहरा वासाणं - जाव - पज्जोसवेंति तहा ण गणहरसीसा वि वासाणं - जाव - पज्जोसविंति ।
जहा णं गणहरसीसा वासाणं-जाव-पज्जोसविंति तहा णं थेरा वि वासाणं -जाव -पज्जोसविंति ।
जहा णं थेरा वासाणं - जाव - पज्जोसविंति तहा णं जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एए वि णं वासाणं - जाव - पज्जोसविंति ।
जहा णं जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसविंति तहा णं अम्हं पि आयरियउवज्झाया वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेंति ।
जहा णं अम्हं आयरियउवज्झाया वासाणं - जाव - पज्जोसवेंति तहा णं अम्हे वि अज्जो ! वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेमो । अंतरा वि य से कप्पइ पज्जोसवित्ताए नो से कप्पइ तं रयणिं उवायणावित्तए ।

कप्प० सु० २२४-२३१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५६ तत्थ णं जे से पावाए मज्झिमाए हत्थिवालस्स रन्नो रज्जुगसभाए अपच्छिमं अंतरावासं वासावासं उवागए, तस्स णं अंतरावासस्स जे से वासाणं चउत्थे मासे, सत्तमे पक्खे, कत्तियबहुले तस्स णं कत्तियबहुलस्स पन्नरसीपक्खेणं जा सा चरिमा रयणी तं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए विइक्कंते समुज्जाए छिन्न-जाइ-जरा-मरण-बंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खपहीणे,

३५७ चंदे नामं से दोच्चे संवच्छरे, पीतिवद्धणे मासे, नंदिवद्धणे पक्खे, अग्गिवेसे नामं से दिवसे, उवसमि त्ति वि पवुच्चइ, देवाणंदा नामं सा रयणी निरइ त्ति पवुच्चइ, अच्चे लवे, मुहुत्ते पाणू, थोवे सिद्धे, नागे करणे, सव्वट्ठसिद्धे मुहुत्ते, साइणा नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं कालगए विइक्कंते-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३५८ जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए -जाव- सव्वदुक्खप्पहीणे सा णं रयणी बहूहिं देवेहिं य देवेहि य ओवयमाणेहि य उप्पयमाणेहि य उज्जोविया यावि होत्था ।
जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे सा णं रयणी बहुहिं देवेहिं य देवीहि य ओवयमाणेहि य उप्पयमाणेहि य उप्पिंजलगभाणभूया कहकहगभूया यावि होत्था ।

महावीरस्सायुकालगणणा अंतिमोवदेसो य

३५९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे–
तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता[1],
साइरेगाइं दुवालस वासाइं छउमत्थपरियागं पाउणित्ता,
देसूणाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता,
बायालीसं वासाइं सामन्न-परियायं पाउणित्ता[2],
बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता[3],
खीणे वेयणिज्जाउय-नाम-गोत्ते इमीसे ओसप्पिणीए दुसमसुसमाए समाए बहुवीइक्कंताए तिहिं वासेहिं अद्धनवमेहि य मासेहिं सेसएहिं[4] पावाए मज्झिमाए हत्थिपालगस्स रन्नो रज्जुगसभाए एगे[5] अबीए छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं[6] साइणा नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं पच्चूसकालसमयंसि संपलियंकनिसन्ने-
पणपन्नं अज्झायणाइं कल्लाणफलविवागाइं
पणपन्नं अज्झायणाइं पावफलविवागाइं,[7]
छत्तीसं च अपुट्ठवागरणाइं वागरित्ता पधाणं नाम अज्झायणं विभावेमाणे विभावेमाणे कालगए वितिक्कंते समुज्जाए छिन्न-जाइ-जरा-मरण-बंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

कप्प० सु० १४६ ।

गोयमस्स केवलं

३६० जं रयणिं च णं भगवं महावीरे कालगए-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे तं रयणिं च णं जेट्ठस्स गोयमस्स इंदभूइस्स अणगारस अंतेवासिस्स नायए पेज्जबंधणे वोच्छिन्ने अणंते अणुत्तरे -जाव- केवल-वर-नाण-दंसणे समुप्पन्ने ।

कप्प० सु० १२६ ।

गणरायकयोज्जोओ

३६१ जं रयणिं च णं समणे -जाव- सव्वदुक्खप्पहीणे तं रयणिं च णं नव मल्लई नव लिच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो अमावसाए पाराभोयं पोसहोववासं पट्ठवइंसु, गते से भावुज्जोए दव्वुज्जोयं करिस्सामो ।

कप्प० सु० १२७।

---

१ सम० स० ३०, सु० ७।
२ सम० स० ४२, सु० १।
३ सम० स० ७२, सु० ३।
४ सम० स० ८९, सु० २।
५ ठाणं, अ० १, सु० ७६।
६ ठाणं, अ० ६, सु० ५३१।
७ सम० स० ५५, सु० ४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्वाणाणंतरं भासरासीग्गहो तप्पभावो य

३६२ जं रयणिं च णं समणे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे तं रयणिं च च णं खुड्डाए भासरासी महग्गहे दोवाससहस्सट्ठिईं समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्खत्तं संकंते ।

कप्प० सु० १२८।

३६३ जप्पभिइं च णं से खुड्डाए भासरासी महग्गहे दो वाससहस्सट्ठिईं समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्खत्तं संकंते तप्पभिइं च णं समणाणं निग्गंथाणं निग्गंथीणं य नो उदिए उदिए पूयासक्कारे पवत्तति ।।

कप्प० सु० १२९।

३६४ जया णं से खुड्डाए-जाव-जम्मनक्खत्ताओ वीतिक्कंते भविस्सइ तया णं समणाणं निग्गंथाणं निग्गंथीण य उदिए उदिए पूयासक्कारे पवत्तिस्सति ।

कप्प० सु० १३०।

निव्वाणाणंतरं संजमदुरारोहणा

३६५ जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे तं रयणिं च णं कुंथू अणुद्धरी नामं समुप्पन्ना
जा ठिया अचलमाणा छउमत्थाणं निग्गंथाणं निग्गंथीण य नो चक्खुफासं हव्वमागच्छइ,
जा अठिया चलमाणा छउमत्थाणं निग्गंथाणं निग्गंथीण य चक्खुफासं हव्वमागच्छइ, जं पासित्ता बहूहिं निग्गंथेहिं निग्गंथीहिं य भत्ताइं पच्चक्खायाइं ।
से किमाहु भंते ! अज्जप्पभिइं दुरारोहए संजमे भविस्सइ ।

कप्प० सु० १३१-१३२।

महावीरस्स समणाइसंपया

३६६ तेणं कालेणं तेणं समएणं–
समणस्स भगवओ महावीरस्स इंदभूइपामोक्खाओ चोद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समण-संपया होत्था[1]
समणस्स भगवओ महावीरस्स अज्जचंदणापामोक्खाओ छत्तीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था[2]।
समणस्स भगवओ महावीरस्स संख-सयगपामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी अउणट्ठिं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासयाणं संपया होत्था ।
समणस्स भगवओ महावीरस्स सुलसा-रेवईपामोक्खाणं समणोवासियाणं तिण्णि सयसाहस्सीओ अट्ठारस य सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियाणं संपया होत्था ।

३६७ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिन्नि सया चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिण-संकासाणं सव्वक्खर-सन्निवाईणं जिणो विव अवितहं वागरमाणाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्वीणं संपया होत्था[3] ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेरस सया ओहिनाणीणं अतिसेसपत्ताणं उक्कोसिया ओहिनाणीणं संपया होत्था ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त सया केवलनाणीणं संभिन्न-वरनाणदंसण-धराणं उक्कोसिया केवलनाणिसंपया होत्था[4]

३६८ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त सया वेउव्वीणं अदेवाणं देविड्ढिपत्ताणं उक्कोसिया वेउव्विसंपया होत्था ।[5]
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पंचसया विउलमईणं अड्ढाइज्जेसु दीवेसु दोसु य समुद्देसु सण्णीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं जीवाणं मणोगए भावे जाणमाणाणं उक्कोसिया विउलमईसंपया होत्था ।

---

१ सम० स० १४, सु० ४। २ सम० स० ३६ सु० ३। ४ सम० स० ७००, सु० २।
३ सम० स० ३००, सु० ४। ठाणं अ० ३, उ० ४, सु० २३०। ५ सम० स० ७००, सु० ३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ।[1]

३६९ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त अंतेवासिसयाइं सिद्धाइं - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणाइं, चउद्दस अज्जियासयाइं सिद्धाइं। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयाणं संपया होत्था ।[2]

कप्प० सु० १४४।

भ० महावीरस्स अणुत्तरदेवलोयगामिणो सिस्सा

३७० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छरपरियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ।

सम० स० ५३, सु० ३।

भ० महावीरस्स अंतगडभूमी

३७१ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स दुविहा अंतकडभूमी होत्था, तं जहा–
जुगंतकडभूमी य परियायंतकडभूमी य - जाव - तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकडभूमी, चउवासपरियाए अंतमकासी ।

कप्प० सु० १४५।

भ० महावीरदिक्खियरायाणो

३७२ समणेणं भगवता महावीरेणं अट्ठ रायाणो मुंडे भवेत्ता अगाराओ अणगारितं पव्वाइया, तं जहा–
संगहणी-गाहा–वीरंगए वीरजसे, संजय एणिज्जए य रायरिसी । सेये सिवे उद्दायणे, तह संखे कासिवद्धणे ॥१॥

ठाणं अ० ८, सु० ६२१ ।

भ० महावीरतित्थे तित्थयरकम्मबंधया

३७३ समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तित्थंसि णवहिं जीवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे णिव्वत्तिते, तं जहा–सेणिएणं, सुपासेणं, उदाइणा, पोट्टिलेणं अणगारेणं, दढाउणा, संखेणं, सतएणं, सुलसाए सावियाए, रेवतीए ॥

ठाणं अ० ९, सु० ६९१ ।

महावीरतित्थे पवयण-निण्हगा :

३७४ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयणणिण्हगा पण्णत्ता, तं जहा–
बहुरता, जीवपएसिया, अवत्तिया, सामुच्छेइया, दोकिरिया, तेरासिया, अबद्धिया ॥
एएसि णं सत्तण्हं पवयणणिण्हगाणं सत्त धम्मायरिया हुत्था, तं जहा–
जमाली, तीसगुत्ते, आसाढे, आसमित्ते, गंगे, छलुए, गोट्ठामाहिले ॥
एतेसि णं सत्तण्हं पवयणणिण्हगाणं सत्त उप्पत्तिणगरा हुत्था, तं जहा–
संगहणी-गाहा–सावत्थी उसभपुरं, सेयविया मिहिल उल्लगातीरं । पुरिमंतरंजि दसपुरं, णिण्हगउप्पत्तिणगराइं ॥१॥

ठाणं, अ० ७, सु० ५८७।

---

१ सम० स० ४००, सु० ५। ठाणं० अ० ४, उ० ४, सु० ३८२। २ सम० स० ८००, सु० ३। ठाणं, अ० ८, सु० ६५३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७ महापउमचरियं

सेणियस्स नरकगमणं

३७५ एस णं अज्जो ! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए नरए चउरासीइ-वास-सहस्स-ट्ठिइयंसि निरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं तत्थ नेरइए भविस्सइ काले कालोभासे - जाव - परमकिण्हे वण्णेणं से णं तत्थ वेयणं वेदिहिइ उज्जलं - जाव - दुरहियासं ।

सेणियस्स नरकाओ आगामि-उस्सप्पिणीए कुलकरगिहे जम्मो

३७६ से णं तओ नरयाओ उव्वट्टेत्ता आगमेस्साए उस्सप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सतदुवारे नयरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिइ ।
तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजण - जाव - सुरूवं दारगं पयाहिइ ।

३७७ जं रयणिं च णं से दारए पयाहिई तं रयणिं च णं सतदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिइ ।

महापउमनामकरणं

३७८ तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे विइक्कंते - जाव - बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुणणिप्फण्णं नामधिज्जं काहिंति ।
जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य, कुंभग्गसो य, पउमवासे य, रयणवासे य वासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे ।
तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिंति महापउमे त्ति ।

रज्जाभिसेओ

३७९ तए णं महापउमं दारगं अम्मापियरो साइरेगं अट्ठवासजायगं जाणित्ता महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति ।
से णं तत्थ राया भविस्सइ महता हिमवंतमहंतमलयमंदरराय वण्णओ - जाव - रज्जं पसाहेमाणे विहरिस्सइ ।

३८० तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णया कयाइ दो देवा महिड्ढिया - जाव - महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति तं जहा-पुण्णभद्दए, माणिभद्दए ।

देवसेणे त्ति दुतीयं नाम

३८१ तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भसेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति एवं वइस्संति ।
जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया - जाव - महेसक्खा सेणाकम्मं करेंति तं जहा-पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य ।
तं होउ णं अम्हं देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे ।
तए णं तस्स महापउमस्स दोच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ ।

३८२ तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेयसंखतलविमलसण्णिकासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिइ ।
तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतलविमलसण्णिकासं चउद्दंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सतदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं अभिक्खणं अइज्जाहि य निज्जाहि य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विमलवाहणे त्ति नाम

३८३ तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राईसरतलवर-जाव-अण्णमण्णं सद्दावेंति एवं वइस्संति–जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेए संखतलविमलसण्णिकासे चउद्दंते हत्थिरयणे तं होउ णं अम्हं देवाणुप्पिया ! देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे ।

तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ विमलवाहणे ।

महापउमस्स पव्वज्जा

३८४ तए णं से विमलवाहणे राया तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापिईहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुण्णाए समाणे उदुंमि सरए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगंतिएहिं जीयकप्पितेहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं धण्णाहिं सिवाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीआहिं वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिथुवमाणे य बहिया सुभूमिभागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिइ ।

उवसग्गसहणं

३८५ तस्स णं भगवंतस्स साइरेगाइं दुवालस वासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिस्संति तं जहा-दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ, अहियासिस्सइ ।

तए णं से भगवं इरियासमिए भासासमिए-जाव-गुत्तबंभयारि अममे अकिंचणे छिण्णगंथे निरुवलेवे कंसपाइ व मुक्कतोए जहा भावणाए-जाव-सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते ।

गाहाओ – कंसे संखे जीवे, गगणे वाए य सारए सलिले । पुक्खरपत्ते कुंमे, विहगे खग्गे य भारंडे ।।१।।
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोभे । चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ।।२।।

पडिबंधविरहो

३८६ नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ । से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा-
अंडएइ वा, पोयएइ वा, उग्गहिएइ वा, पग्गहिएइ वा ।
जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं, अणुत्तरेणं दंसणेणं, अणुत्तरेणं चरिएणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवे मद्दवे लाघवे खंती मुत्ती गुत्ती सच्च-संजम-तव-गुणसुचरियसोवचियफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए-जाव-केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ।

केवलनाणं दंसणं च

३८७ तए णं से भगवं अरहा जिणे भविस्सइ केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणस-वयस-काइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ ।
तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाण-दंसणेणं सदेवमणुआसुरलोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं [३८५ तमसूत्रादारभ्य ३८८ तमसूत्रगत'पंच'पदपर्यन्तपाठसन्दर्भस्थाने वाचनान्तरे इत्थं पाठ उपलभ्यते–"से णं भगवं जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता-जाव-पव्वयाही तं चेव दिवसं सयमेतारूवमभिग्गहं अभिगिण्हिहिति–जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति तं जहा-दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा ते सव्वे सम्मं सहेज्जा, खमेज्जा, तितिक्खिज्जा, अहियासिज्जा
तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ इरियासमिए भासासमिए एवं जहा-वद्धमाणसामी तं चेव निरवसेसं-जाव-अव्वावारविउसजोगजुत्ते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८८ तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं विइक्कंतेहिं तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स णं संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अणुत्तरेणं नाणेणं जहा भावणाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति जिणे भविस्सइ केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सणेरइए - जाव - पंच"] पंच महव्वयाइं सभावणाइं छच्च जीवनिकायधम्मं देसेमाणे विहरिस्सइ ।

महावीरस्स महापउमस्स य देसणासामण्णं

३८९ से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं एगे आरंभठाणे पण्णत्ते, [1]
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं एगं आरंभठाणं पण्णवेहिइ ।

३९० से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं दुविहे बंधणे पण्णत्ते तं जहा - पेज्जबंधणे, दोसबंधणे,
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं दुविहं बंधणं पण्णवेहिइ तं जहा - पेज्जबंधणं च, दोसबंधणं च ।

३९१ से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं तओ दंडा पण्णत्ता तं जहा - मणदंडे - जाव - कायदंडे,
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं तओ दंडे पण्णवेहिइ तं जहा - मणदंडं - जाव - कायदंडं ।

३९२ से जहा णामए एएणं अभिलावेणं चत्तारि कसाया पण्णत्ता तं जहा -
कोहकसाए - जाव - लोहकसाए ।

३९३ पंच कामगुणे पण्णत्ते तं जहा - सद्दे - जाव - फासे ।

३९४ छज्जीवनिकाया पण्णत्ता तं जहा - पुढविकइया - जाव - तसकाइया,
एवामेव पुढविकाइया - जाव - तसकाइया ।

३९५ से जहा णामए एएणं अभिलावेणं सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता तं जहा -
इहलोगभए - जाव - असिलोगभए,
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं सत्त भयट्ठाणा पण्णवेहिइ ।

३९६ एवं अट्ठ मयट्ठाणे नव बंभचेरगुत्तीओ दसविहे समणधम्मे. एवं - जाव - तेत्तीसमासातणाउ त्ति ।[2]

३९७ से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे, मुंडभावे, अण्हाणए, अदंतवणे, अच्छत्तए, अणुवाहणए, भूमिसेज्जा, फलगसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोए, बंभचेरवासे, परघरपवेसे - जाव - लद्धावलद्धवित्तीओ पण्णत्ताओ,
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावं - जाव - लद्धावलद्धवित्तीओ पण्णवेहिइ ।

३९८ से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं आधाकम्मिएइ वा, उद्देसिएइ वा, मीसज्जाएइ वा, अज्झोयरयइ वा, पूइए, कीए, पामिच्चे, अच्छेज्जे, अणिसिट्ठे, अभिहड़े वा, कंतारभत्तेइ वा, दुब्भिक्खभत्तेइ वा, गिलाणभत्तेइ वा, वद्दलियाभत्तेइ वा, पाहुणभत्तेइ वा, मूलभोयणेइ वा, कंदभोयणेइ वा, फलभोयणेइ वा, बीयभोयणेइ वा, हरियभोयणेइ वा पडिसिद्धे,
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं आधाकम्मियं वा - जाव - हरियभोयणं वा पडिसेहिस्सइ ।

३९९ से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं पंचमहव्वइए सपड़िक्कमणे अचेलए धम्मे पण्णत्ते,
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वइयं - जाव - अचेलगं धम्मं पण्णवेहिइ ।

४०० से जहा णामए अज्जो ! मए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए दुवालसविहे सावगधम्मे पण्णत्ते ।
एवामेव महापउमे वि अरहा पंचाणुव्वइयं - जाव - सावगधम्मं पण्णवेस्सइ ।

---

१ आवसग्गस्स चउत्थे पडिक्कमणज्झयणे "पडिक्कमामि एगविहे असंजमे" एयारूवं सुत्तमत्थि ।

२ आव० अ० ४ सु० २०-२६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०१ से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं सेज्जायरपिंडेइ वा, रायपिंडेइ वा पडिसिद्धे,
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सेज्जायरपिंडेइ वा रायपिंडेइ वा पडिसेहिस्सइ ।

संपत्तिसामण्णं

४०२ से जहा णामए अज्जो ! मम नव गणा, एगारस गणधरा ।
एवामेव महापउमस्स वि अरहओ नव गणा, एगारस गणधरा भविस्संति ।

आयुसो सामण्णं

४०३ से जहा णामए अज्जो ! अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भविता - जाव - पव्वइए, दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता, तेरसहिं पक्खेहिं उणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता, सिज्झिस्सं - जाव - सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सं,
एवामेव महापउमे वि अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता - जाव - पव्वहिइ, दुवालस संवच्छराइं - जाव - बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिइ - जाव - सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ
गाहा–जंसीलसमायारो, अरहा तित्थंकरो महावीरो । तस्सीलसमायारो, होइ उ अरहा महापउमे ॥१॥
ठाणं अ० ९, सु० ६९३ ।

अरहया महापउमेण अट्ठरायाणो दिक्खिया भविस्संति

४०४ अरहा णं महापउमे अट्ठ रायाणो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वावेस्सति, तं जहा - १ पउमं, २ पउमगुम्मं, ३ णलिणं, ४ णलिणगुम्मं, ५ पउमद्धयं ६ धणुद्धयं, ७ कणगरहं, ८ भरहं ।
ठाणं अ० ९, सु० ६२५ ।

८. तित्थयर-सामण्णं

अड्ढाइज्जेसु दीवेसु अरहंताइवंससमुप्पत्ती

४०५ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो अरहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

४०६ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो चक्कवट्टिवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

४०७ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो दसारवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ॥
ठाणं० अ० २, उ० ३, सु० ८९ ।

४०८ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीए तओ वंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा–अरहंतवंसे, चक्कवट्टिवंसे, दसारवंसे ।

४०९ एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ।
ठाणं० अ० ३, उ० १, सु० १४३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अड्ढाइज्जसु दीवेसु अरहंताईणमुप्पत्ती

४१० जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो अरहंता उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

४११ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो चक्कवट्टी उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

४१२ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो बलदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

४१३ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

ठाणं० अ० २, उ० ३, सु० ८९ ।

४१४ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा– अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेववासुदेवा ।

४१५ एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमड्ढे ।

ठाणं० अ० ३, उ० १, सु० १४३ ।

जंबुद्दीवे भरहेरवएसु उत्तमपुरिसा

४१६ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु णं वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणीए एगमेगाए उस्सप्पिणीए चउप्पण्णं-चउप्पण्णं उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा–चउवीसं तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा ।

सम० स० ५४, सु० १ ।

धायइसंडे उत्तमपुरिसा

४१७ धायइसंडे णं दीवे उक्कोसपए अट्ठसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा समुप्पज्जंति वा समुप्पज्जिस्संति वा ।

४१८ एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा ।

सम० स० ६८, सु० १–३ ।

पुक्खरवरदीवड्ढे उत्तमपुरिसा

४१९ पुक्खरवरदीवड्ढे णं उक्कोसपए अट्ठसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा समुप्पज्जंति वा समुप्पज्जिस्संति वा ।

४२० एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा ।

सम० स० ६८, सु० ४ ।

जंबुद्दीवे महाविदेहे अरहंताईणमुप्पत्ती

४२१ जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे जहण्णपए चत्तारि अरहंता चत्तारि चक्कवट्टी चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

ठाणं० अ० ४, उ० २, सु० ३०२ ।

४२२ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीताए महाणदीए उत्तरेणं उक्कोसपए अट्ठ अरहंता, अट्ठ चक्कवट्टी, अट्ठ बलदेवा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठ वासुदेवा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

ठाणं० अ० ८, सु० ६३८ ।

जंबुद्दीवे एरवए तित्थयरा

४२३ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तं जहा–

चंदाणणं सुचंदं च, अग्गिसेणं च नंदिसेणं च । इसिदिण्णं वयहारिं, वंदिमो सामचंदं च ।।१।।
वंदामि जुत्तिसेणं, अजियसेणं तहेव सिवसेणं । बुद्धं च देवसम्मं, सययं निक्खित्तसत्थं च ।।२।।
असंजलं जिणवसहं, वंदे य अणंतयं अमियणाणिं । उवसंतं च धुयरयं, वंदे खलु गुत्तिसेणं च ।।३।।
अतिपासं च सुपासं, देवेसरवंदियं च मरुदेवं । णिव्वाणगयं च धरं, खीणदुहं सामकोट्ठं च ।।४।।
जियरागमग्गिसेणं, वंदे खीणरयमग्गिउत्तं च । वोक्कसियपेज्जदोसं, च वारिसेणं गयं सिद्धिं ।।५।।

सम० सु० १५८ ।

जंबुद्दीवे एरवए भावी तित्थयरा

४२४ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थकरा भविस्संति तं जहा–

सुमंगले य सिद्धत्थे, णिव्वाणे य महाजसे । धम्मज्झाए य अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ।।१।।
सिरिचंदे पुप्फकेऊ, महाचंदे य केवली । सुयसागरे य अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ।।२।।
सिद्धत्थे पुण्णघोसे य, महाघोसे य केवली । सच्चसेणे य अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ।।३।।
सूरसेणे य अरहा, महासेणे य केवली । सव्वाणंदे य अरहा, देवउत्ते य होक्खइ ।।४।।
सुपासे सुव्वए अरहा, अरहे य सुकोसले । अरहा अणंतविजए, आगमिस्साण होक्खइ ।।५।।
विमले उत्तरे अरहा, अरहा य महाबले । देवाणंदे य अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ।।६।।
एए वुत्ता चउव्वीसं, एरवयम्मि केवली । आगमिस्साण होक्खंति, धम्मतित्थस्स देसगा ।।७।।

सम० सु० १५८ ।

जंबुद्दीवे तित्थयरा

४२५ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे जहण्णपए वा उक्कोसपए वा केवइया तित्थयरा सव्वग्गेणं पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णपए चत्तारि, उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थयरा सव्वग्गेणं पण्णत्ता ।

जंबु० व० ७ सु० १७३ ।

जंबुद्दीवतित्थयराणं उक्किट्ठा संखा

४२६ जंबुद्दीवे णं दीवे उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थंकरा समुप्पज्जंति ।

सम० स० ३४, सु० ४ ।

जंबुद्दीवे भारहे वासे तित्थयराणं नामाइं

४२७ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कति तित्थगरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउवीसं तित्थगरा पण्णत्ता, तं जहा–उसभ-अजिय-संभव-अभिनंदण-
सुमति-सुप्पभ-सुपास-ससि-पुप्फदंत-सीयल-सेज्जंस-वासुपुज्ज-विमल-अणंत-धम्म-संति-कुंथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-नमि-नेमि-पास-वद्धमाणा ।

भग० स० २०, उ० ८ सु० ६७५ ।
सम० स० २४, सु० १ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पियरो

४२८ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरो होत्था, तं जहा–

संगहणीगाहाओ

णाभी य जियसत्तू य, जियारी संवरे इ य । मेहे धरे पइट्ठे य, महसेणे य खत्तिए ।।१।।
सुग्गीवे दढरहे विण्हू, वसुपुज्जे य खत्तिए । कयवम्मा सीहसेणे य, भाणू विस्ससेणे इ य ।।२।।
सूरे सुदंसणे कुंभे, सुमित्तविजए समुद्दविजये य । राया य आससेणे, सिद्धत्थे च्चिय खत्तिए ।।३।।
उदितोदितकुलवंसा, विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया । तित्थप्पवत्तयाणं, एए पियरो जिणवराणं ।।४।।

मायरो

४२९ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं मायरो होत्था, तं जहा –

संगहणीगाहाओ

मरुदेवा विजया सेणा, सिद्धत्था मंगला सुसीमा य । पुहवी लक्खण रामा, नंदा विण्हू जया सामा ।।१।।
सुजसा सुव्वय अइरा, सिरिया देवी पभावई । पउमा वप्पा सिवा य, वामा तिसला देवी य जिणमाया ।।२।।

पुव्वभवा

४३० एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पुव्वभविया णामधेज्जा होत्था, तं जहा–

संगहणी गाहाओ

पढमेत्थ वइरणाभे, विमले तह विमलवाहणे चेव । तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ।।१।।
सुंदरबाहू तह दीहबाहू जुगबाहू लट्ठबाहू य । दिण्णे य इंददत्ते, सुंदर माहिंदरे चेव ।।२।।
सीहरहे मेहरहे, रुप्पी य सुदंसणे य बोद्धव्वे । तत्तो य नंदणे खलु, सीहगिरी चेव वीसइमे ।।३।।
अदीणसत्तु संखे, सुदंसणे नंदणे य बोद्धव्वे । ओसप्पिणीए एए, तित्थकराणं तु पुव्वभवा ।।४।।

सम० सु० १५७ ।

पुव्वभवसुयणाणं

४३१ जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था, तं जहा–अजिए संभवे अभिणंदणे सुमती पउमप्पभे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे य । उसभे णं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था ।

पुव्वभवा

४३२ जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थगरा पुव्वभवे मंडलियरायाणो होत्था, तं जहा–अजिए संभवे अभिणंदणे सुमती पउमप्पभे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे य । उसभे णं अरहा कोसलिए चक्कवट्टी होत्था ।

सम० स० २३, सु० ३४ ।

तित्थयराणं वण्णो

४३३ दो तित्थगरा णीलुप्पलसमा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा– मुणिसुव्वए चेव, अरिट्ठणेमी चेव ।

दो तित्थगरा पियंगुसामा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा–मल्ली चेव, पासे चेव ।
दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा–पउमप्पहे चेव, वासुपुज्जे चेव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो तित्थगरा चंदगोरा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—चंदप्पभे चेव, पुप्फदंते चेव ।[1]

ठाणं० अ० २, उ० ४ सु० १०८ ।
ज्ञाता० अ० ८ ।

उच्चत्तं

४३४ अजिते णं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ४५०, सु० १ ।

संभवे णं अरहा चत्तारि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ४००, सु० १ ।

अभिनंदणे णं अरहा अद्धुट्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ३५०, सु० २ ।

सुमई णं अरहा तिण्णि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ३००, सु० १ ।

पउमप्पभे णं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० २५०, सु० १ ।

सुपासे णं अरहा दो धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० २००, सु० १ ।

चंदप्पभे णं अरहा दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० १५०, सु० १ ।

सुविही पुप्फदंते णं अरहा एगं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० १००, सु० ३ ।

सीयले णं अरहा नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ९०, सु० १ ।

सेज्जंसे णं अरहा असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ८०, सु० १ ।

वासुपुज्जे णं अरहा सत्तरिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ७००, सु० ३ ।

विमले णं अरहा सट्ठिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ६०, सु० ३ ।

अणंते णं अरहा पण्णासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ५०, सु० २ ।

धम्मे णं अरहा पणयालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ४५, सु० ५ ।

संती णं अरहा चत्तालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ४०, सु० ३ ।

कुंथू णं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ३५, सु० २ ।

अरे णं अरहा तीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ३०, सु० ४ ।

---

१ पउम-वसुपुज्जरत्ता, ससि-सुविहि सेअ नेमि-मुणि काला । मल्ली पासो नीला, कणयनिहा सेाल सेस जिणा ।।१।।
सत्त० ठा० ४६, गा० १२५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्ली णं अरहा पणवीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० २५, सु० २ ।

मुणिसुव्वए णं अरहा वीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० २०, सु० २ ।

णमी णं अरहा पण्णरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० १५, सु० २ ।

णेमी णं अरहा दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, होत्था[1] ।

ठाणं अ० १०, सु० ७३५ ।

पासे णं अरहा नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ९, सु० ४ ।

समणे भगवं महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था[2] ।

सम० स० ७, सु० ३ ।

अगारवासो

४३५ उसभे णं अरहा कोसलिए तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए ।

सम० स० ८३, सु० १ ।

अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए ।

सम० स० ७१, सु० ३ ।

संभवे णं अरहा एगूणसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए ।

सम० स० ५९, सु० २ ।

सीतले णं अरहा पण्णत्तरिं पुव्वसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए ।

सम० स० ७५, सु० २ ।

संती णं अरहा पण्णत्तरिं वाससहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

सम० स० ७५, सु० ३ ।

अरिट्ठनेमी णं अरहा तिण्णि वाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिअं पव्वइए ।

सम० स० ३००, सु० २ ।

ासे णं अरहा तीसं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता [मुंडे भवित्ता ?] अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

सम० स० ३०, सु० ६ ।

समणे भगवं महावीरे तीसं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगराओ अणगारियं पव्वइए ।

सम० स० ३०, सु० ७ ।

कुमारकालो

४३६ पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तं जहा—वासुपुज्जे, मल्ली, अरिट्ठणेमी, पासे, वीरे ।।

ठाणं० अ० ५, उ० ३, सु० ४७१ ।

---

१ सम० स० १०, सु० ४ ।

२ ठा० अ० ७, सु० ५६। ओव० सु० १६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगारवासकालो

४३७ एगूणवीसं तित्थयरा अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइआ ।[1]

सम० स० १९, सु० ५ ।

सव्वायू

४३८ उसभे णं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्व-सयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

सम० स० ८४, सु० २ ।

चंदप्पभे णं अरहा दस-पुव्व-सतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।।

ठाणं० अ० १०, सु० ७३५ ।

सेज्जंसे णं अरहा चउरासीइं वास-सयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

सम० स० ८४, सु० ३ ।

म्मे णं अरहा दस वास-सयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

ठाणं०, अ० १०, सु० ७३५ ।

कुंथू णं अरहा पंचाणउइं वास-सहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

सम० स० ९५, सु० ४ ।

---

१ तित्थयराणं कुमारत्तं रज्जं च :

गाहाओ : १ उसभस्स कुमारत्तं, पुव्वाणं वीसई सयसहस्सा । तेवट्ठी रज्जंमी, अणुपालेऊण णिक्खंतो ।।१।।
२ अजिअस्स कुमारत्तं, अट्ठारस पुव्वसयसहस्साइं । तेवण्णं रज्जंमी, पुव्वंगं चेव बोद्धव्वं ।।२।।
पण्णरस सयसहस्सा, कुमारवासो अ संभवजिणस्स ३ । चोआलीसं रज्जे, चउरंगं चेव बोद्धव्वं ।।३।।
अद्धतेरसलक्खा, पुव्वाणंऽभिणदणे ४ कुमारत्तं । छत्तीसा अद्धं चिअ, अट्ठंगा चेव रज्जंमि ।।४।।
५ सुमइस्स कुमारत्तं, हवंति दस पुव्वसयसहस्साइं । अउणातीसं रज्जे, बारस अंगा य बोद्धव्वा ।।५।।
६ पउमस्स कुमारत्तं, पुव्वाणऽद्धट्ठमा सयसहस्सा । अद्धं च एगवीसा, सोलस अंगा य रज्जंमि ।।६।।
पुव्वसय सहस्साइं, पंच सुपासे ७ कुमारवासो उ । चउदस पुण रज्जंमी, वीसं अंगा य बोद्धव्वा ।।७।।
अड्ढाइज्जा लक्खा, कुमारवासो ससिप्पहे ८ होइ । अद्धं छच्चिय रज्जे, चउवीसंगा य बोद्धव्वा ।।८।।
पण्णं पुव्वसहस्सा, कुमारवासो उ पुप्फदंतस्स ९ तावइअं रज्जंमी, अट्ठावीसं च पुव्वंगा ।।९।।
पणवीससहस्साइं, पुव्वाणं सीअले१० कुमारत्तं । तावइअं परिआओ, पण्णासं चेव रज्जंमि ।।१०।।
वासाण कुमारत्तं, इगवीसं लक्ख हुंति सिज्जंसे ११ । तावइअं परिआओ, बायालीसं च रज्जंमि ।।११।।
गिहवासे अट्ठारस, वासाणं सयसहस्स निअमेणं । चउपण्ण सयसहस्सा, परिआओ होइ वसुपुज्जे १२ ।।१२।।
पण्णरस सयसहस्सा, कुमारवासो अ तीसई रज्जे । पण्णरस सयसहस्सा, परिआओ होइ विमलस्स १३ ।।१३।।
अद्धट्ठमलक्खाइं, वासाणमणंतई१४ कुमारत्ते । तावइअं परिआओ, रज्जंमी हुंति पण्णरस ।१४।
१५धम्मस्स कुमारत्तं, वासाणड्ढाइआइं लक्खाइं ।। तावइअं परिआओ, रज्जे पुण हुंति पंचेव ।।१५।।
१६संतिस्स कुमारत्तं, मंडलिअ चक्कि परिआअ चउसुंपि । पत्तेअं पत्तेअं, वाससहस्साइं पणवीसं ।१६।
एमेव य कुंथुस्स१७ वि, चउसु वि ठाणेसु हुंति पत्तेअं । तेवीस सहस्साइं, वरिसाणद्धट्ठमसया य ।१७।
एमेव अरजिणिंदस्स१८, चउसु वि ठाणेसु हुंति पत्तेअं । इगवीस सहस्साइं, वासाणं हुंति णायव्वा ।१८।
१९मल्लिस्स वि वाससयं, गिहवासे सेसयं तु परिआओ । चउप्पण्णसहस्साइं, नव चेव सयाइं पुण्णाइं ।१९।
अद्धट्ठमा सहस्सा, कुमारवासो उ सुव्वय२०जिणस्स । तावइअं परिआओ, पण्णरससहस्स रज्जंमि ।२०।
नमिणो२१ कुमारवासो, वास सहस्साइं दुण्णि अद्धं च । तावइअं परिआओ, पंचसहस्साइं रज्जंमि ।।२१।।
तिण्णेव य वाससया, कुमारवासो अरिट्ठनेमिस्स२२ । सत्त य वाससयाइं, सामण्णे होइ परिआओ ।।२२।।
पासस्स २३कुमारत्तं, तीसं परिआओ सत्तरी होइ । तीसा य वद्धमाणे २४, बायालीसा उ परिआओ ।।२३।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्ली णं अरहा पणपण्णं वास-सहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

सम० स० ५५, सु. १ ।

णमी णं अरहा दस-वास-सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

ठाणं० अ० १०, सु० ७३५ ।

णेमी णं अरहा दस वास-सयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

ठाणं० अ० १०, सु० ७३५ ।

पासे णं अरहा पुरिसादाणीए एक्कं वास-सयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

सम० सु० १००, सु० ४ ।

समणे भगवं महावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे[1] ।

सम० ७२, सु० ३ ।

चंदप्पभस्स छउमत्थकालो

४३९ **चंदप्पभे णं अरहा छम्मासे छउमत्थे हुत्था[2] ।**

ठाणं० अ० ६, सु० ५२० ।

कल्लाणगाणि

४४० **पउमप्पहे णं अरहा पंचचित्ते हुत्था, तं जहा–**

१. चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते । २. चित्ताहिं जाते । ३. चित्ताहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइए । ४. चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे । ५. चित्ताहिं परिणिव्वुते ।

पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले हुत्था, तं जहा–मूलेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

सीयले णं अरहा पंचपुव्वासाढे हुत्था, तं जहा–पुव्वासाढाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

विमले णं अरहा पंचउत्तराभद्दवए हुत्था, तं जहा–उत्तराभद्दवयाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

अणंते णं अरहा पंचरेवतिए हुत्था, तं जहा–रेवतिहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

धम्मे णं अरहा पंचपूसे हुत्था, तं जहा–पूसेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

संती णं अरहा पंचभरणीए हुत्था, तं जहा–भरणीहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।

कुंथू णं अरहा पंचकत्तिए हुत्था, तं जहा–कत्तियाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

अरे णं अरहा पंचरेवतिए हुत्था, तं जहा–रेवतिहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

मुणिसुव्वए णं अरहा पंचसवणे हुत्था, तं जहा–सवणेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

णमी णं अरहा पंचआसिणीए हुत्था, तं जहा–आसिणीहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

णेमी णं अरहा पंचचित्ते हुत्था, तं जहा–चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

पासे णं अरहा पंचविसाहे हुत्था, तं जहा–विसाहाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते० ।।

---

१ तित्थयराणं सव्वाउ –

गाहाओ–

चउरासीइ१ बिसत्तरि२ सट्ठी३ पण्णासमेव लक्खाइं४ । चत्ता५ तीसा६ वीसा७ दस८ दो९ एगं च पुव्वाणं१० ।।१।।
चउरासीइं११ बावत्तरी१२ य सट्ठी य होइ वासाणं१३ ।। तीसा१४ य दस१५ य एगं च एवमेए सयसहस्सा१६ ।।२।।
पंचाणउइ सहस्सा१७, चउरासीई१८ य पंचपण्णा१९ य ।। तीसा२० य दस२१ य एगं२२, सयं२३ च बावत्तरी२४ चेव।।३।।

२ गाहाओ–वाससहस्सं१ बारस२ चउदस३ अट्ठार४ वीसबरिसा५ य ।। मासा६ छन्नव७ तिन्नि८ य, चउ९ तिग१० दुग११ मिक्कग१२ दुगं१३ च ।।१।। तिय१४ दुग१५ इक्कग१६ सोलस, वासा१७ तिन्नि१८ य तहेवऽहोरत्तं१९ ।। मासिक्कारस२० नवगं२१, चउपण्ण दिगाइं२२ चुलसीइं२३ ।।२।। पक्खऽहिय सड्ढ बारस२४, वासा छउमत्थ-काल-परिमाणे।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था, तं जहा–१. हत्थुत्तराहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। २. हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिते। ३. हत्थुत्तराहिं जाते।[1] ४. हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइए। ५. हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे ।।[2]

ठाणं० अ० ५, उ० १, सु० ४११ ।

सीया सीयावाहया य

४४१ एएसि णं चउवीसाए तित्थकराणं चउवीसं सीयाओ होत्था, तं जहा–

सीया सुदंसणा सुप्पभा यति, सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य। विजया य वेजयंति, जयंति अपराजिया चेव ।।१।।
अरुणप्पभ चंदप्पभ, सूरप्पह अग्गिसप्पभा चेव। विमला य पंचवण्णा, सागरदत्ता य णागदत्ता य ।।२।।
अभयकर णिव्वुतिकरा, मणोरमा तह मणोहरा चेव। देवकुरु उत्तरकुरा, विसाल चंदप्पभा सीया ।।३।।
एयातो सीयाओ, सव्वेसिं चेव जिणवरिंदाणं। सव्वजगवच्छलाणं, सव्वोतुयसुभाए छायाए ।।४।।
पुव्विं उक्खित्ता, माणुसेहि साहट्ठरोमकूवेहिं। पच्छा वहंति सीयं, असुरिंदसुरिंदनागिंदा ।।५।।
चलचवलकुंडलधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी। सुरअसुरवंदियाणं, वहंति सीयं जिणिंदाणं ।।६।।
पुरओ वहंति देवा, नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि। पच्चत्थिमेण असुरा, गरुला पुण उत्तरे पासे ।।७।।[3]

दिक्खानगराइं

४४२ उसभो य विणीयाए, बारवईए अरिट्ठवरणेमी। अवसेसा तित्थयरा, निक्खंता जम्मभूमीसु ।।१।।

दिक्खाकाले एगदूसं

४४३ सव्वे वि एगदूसेण, णिग्गया जिणवरा चउव्वीसं। ण य णाम अण्णलिंगे ण य गिहिलिंगे कुलिंगे व ।।१।।

---

१. दु चउत्थ नवम बारस, तेरस पन्नरस सेस गब्भठिइ। मासा अड नव तदुवरि, उसहाइकमेणिमे दिवसा ।।१।।
चउ पणतीसं छद्दिण, अडवीसं छच्च छच्चिगुणवीसं। सगछव्वीसं छ च्छ य, वीसिगवीसं छ छव्वीसं ।।२।।
छ पण अड सत्त अट्ठय, अट्ठडट्ठ छ सत्त हुंत्ति गब्भ दिणा।

२. क गाहाओ–

एवमेएणं अभिलावेणं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ–
पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स। पुव्वाई आसाढा, सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवया ।।१।।
मुणिसुव्वयस्स सवणो, आसिणि नमिणो य नेमिणो चित्ता। पासस्स विसाहाओ, पंच य हत्थुत्तरो वीरो ।।३।।
रेवइया अणंतजिणो, पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी। कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवइओ य ।।२।।
ख उत्तरसाढा१ रोहिणि२, मियसीस३ पुणव्वसू४ महा५ चित्ता६ ।। वइसाह७ऽणुराहा८ मूल९, पुव्व१० सवणो११ सासयभिसा१२ य ।।१।।
उत्तरभद्दव१३ रेवइ१४, पुस्स१५ भरणि१६ कत्तिया१७ य रेवइ१८ य ।। अस्सिणि१९ सवणो२० अस्सिणि२१ चित्त२२ विसाहु२३ त्तरा२४ रिक्खा ।।२।।

३. तित्थयराणं दिक्खाकालो–

गाहाओ: उसभस्स पुव्वलक्खं, पुव्वंगूणमजिअस्स तं चेव। चउरंगूणं लक्खं, पुणो पुणो जाव सुविहित्ति ।।१।।
पणवीसं तु सहस्सा, पुव्वाणं सीअलस्स परिआओ। लक्खाइं इक्कवीसं, सिज्जंस जिणस्स वासाणं ।।२।।
चउपण्णं पण्णरस, तत्तो अद्धट्ठमाइ लक्खाइं।, अड्ढाइज्जाइं तओ, वाससहस्साइं पणवीसं ।।३।।
तेवीसं च सहस्सा, सयाणि अद्धट्ठमाणि अ हवंति। इगवीसं च सहस्सा, वाससऊणा य पणपण्णा ।।४।।
अद्धट्ठमा सहस्सा, अड्ढाइज्जा य सत्त य सयाइं। सयरी बिचत्तवासा, दिक्खाकालो जिणिंदाणं ।।५।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहदिक्खियाणं संखा

४४४ एक्को भगवं वीरो, पासो मल्ली य तिहिं-तिहिं-सएहिं[1] । भयवंपि वासुपुज्जो, छहिं पुरिससएहिं निक्खंतो ।।१।।
उग्गाणं भोगाणं, राइण्णाणं च खत्तियाणं च । चउहिं सहस्सेहिं उसभो, सेसा उ सहस्सपरिवारा ।।२।।

दिक्खापुव्वं तवो

४४५ सुमइत्थ णिच्चभत्तेण, णिग्गओ वासुपुज्ज चोत्थेणं । पासो मल्ली वि य., अट्ठमेण सेसा उ छट्ठेणं ।।१।।
सम० सु० १५७ ।

पढमभिक्खादायगा

४४६ एएसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमभिक्खादायारो होत्था, तं जहा–
सेज्जंसे बंभदत्ते, सुरिंददत्ते य इंददत्ते य । तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ।।१।।
पुस्से पुणव्वसू पुण्णणंद, सुणंदे जये य विजये य । पउमे य सोमदेवे, महिंददत्ते य सोमदत्ते य ।।२।।
अपराजिय वीससेणे, वीसतिमे होइ उसभसेणे य । दिण्णे वरदत्ते, धन्ने बहुले य आणुपुव्वीए ।।३।।
एते विसुद्धलेसा, जिणवरभत्तीए पंजलिउडा य । तं कालं तं समयं, पडिलाभेई जिणवरिंदे ।।४।।

पढमभिक्खाकालो

४४७ संवच्छरेण भिक्खा, लद्धा उसभेण लोगणाहेण । सेसेहिं बीयदिवसे लद्धाओ पढमभिक्खाओ ।।१।।
उसभस्स पढमभिक्खा, खोयरसो आसि लोगणाहस्स । सेसाणं परमण्णं, अमयरसरसोवमं आसि ।।२।।
सव्वेसिं पि जिणाणं, जहियं लद्धाओ पढमभिक्खातो । तहियं वसुधाराओ, सरीरमेत्तीओ वुट्ठाओ ।।३।।

चेइयरुक्खा

संगहणी गाहाओ–

४४८ एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं चेइयरुक्खा होत्था, तं जहा–
णग्गोह-सत्तिवण्णे, साले पियए पियंगु छत्ताहे । सिरिसे य णागरुक्खे, माली य पिलंखुरुक्खे य ।।१।।
तेंदुग पाडल जंबू, आसोत्थे खलु तहेव दधिवण्णे । णंदीरुक्खे तिलए अंबयरुक्खे असोगे य ।।२।।
चंपय बउले य तहा, वेडसिरुक्खे य धायईरुक्खे । साले य वड्ढमाणस्स, चेइयरुक्खा जिणवराणं ।।३।।
बत्तीसइं धणूइं, चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स । णिच्चोउगो असोगो, ओच्छण्णो सालरुक्खेणं ।।४।।
तिण्णेव गाउयाइं, चेइयरुक्खो जिणस्स उसभस्स । सेसाणं पुण रुक्खा, सरीरतो बारसगुणा उ ।।५।।
सच्छत्ता सपडागा, सवेइया तोरणेहिं उववेया । सुरअसुरगरुलमहिया, चेइयरुक्खा जिणवराणं ।।६।।

पढमसिस्सा

४४९ एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसीसा होत्था, तं जहा–
पढमेत्थ उसभसेणे, बीए पुण होइ सीहसेणे उ । चारू य वज्जणाभे, चमरे तह सुव्वते विदब्भे ।।१।।
दिण्णे वाराहे पुण, आणंदे गोथुभे सुहम्मे य । मंदर जसे अरिट्ठे, चक्काउह सयंभु कुंभे य ।।२।।

---

१. ठाणं अ० ३, उ० ४, सु० २२९ ।
क. मल्ली णं अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तं जहा– मल्ली विदेहरायवरकण्णगा, पडिबुद्धी इक्खागराया, चंदच्छाये अंगराया, रुप्पी कुणालाधिपती, संखे कासीराया, अदीणसत्तु कुरुराया, जितसत्तु पंचालराया ।।
ठाणं० अ० ७, सु० ५६४
नायाधम्मकहाए (८) पुण अट्ठराजकुमारेहिं सह मल्ली दिक्खियति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'भिसए य इंद कुंभे, वरदत्ते दिण्ण इंदभूती य । उदितोदितकुलवंसा, विसुद्धवंसा गुणेहि उववेया ।
तित्थप्पवत्तयाणं, पढमा सिस्सा जिणवराणं ।।३।।

पढमसिस्सिणीओ

४५० एएसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सिणीओ होत्था, तं जहा–

बंभी फग्गू सम्मा, अतिराणी कासवी रई सोमा । सुमणा वारुणि सुलसा, धारिणि धरणी य धरणिधरा ।।१।।
पउमा सिवा सुई अंजू, भावियप्पा य रक्खिया । बंधू-पुप्फवती चेव, अज्जा घणिला य आहिया ।।२।।
जक्खिणी पुप्फचूला य, चंदणऽज्जा य आहिया । उदितोदितकुलवंसा, विसुद्धवंसा गुणेहि उववेया ।
तित्थप्पवत्तयाणं, पढमा सिस्सी जिणवराणं ।।३।।

सम० सु० १५७ ।

केवलनाण-दंसणोप्पत्तिकालो

४५१ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसाए जिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।।

सम० स० २३, सु० २ ।

तित्थयराणं अतिसेसा

४५२ चोत्तीसं बुद्धाइसेसा पण्णत्ता, तं जहा–

१. अवट्ठिए केसमंसुरोमनहे ।
२. निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी ।
३. गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए ।
४. पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ।
५. पच्छन्ने आहारनीहारे, अदिस्से मंसचक्खुणा ।
६. आगासगयं चक्कं ।
७. आगासगयं छत्तं ।
८. आगासगयाओ सेयवरचामराओ ।
९. आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं ।
१०. आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमंडिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ ।
११. जत्थ जत्थ वि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा निसीयंति वा तत्थ तत्थ वि य णं तक्खणादेव संछन्नपत्तपुप्फपल्लव-समाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो सपडागो असोगवरपायवो अभिसंजायइ ।
१२. ईसिं पिट्ठओ मउडठाणंमि तेयमंडलं अभिसंजायइ, अंधकारेवि य णं दस दिसाओ पभासेइ ।
१३. बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे ।
१४. अहोसिरा कंटया भवंति ।
१५. उडुविवरीया सुहफासा भवंति ।
१६. सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जति ।
१७. जुत्तफुसिएण य मेहेण निहय-रय-रेणुयं कज्जइ ।
१८. जल-थलय-भासुर-पभूतेणं बिंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे कज्जइ ।
१९. अमणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं अवकरिसो भवइ ।
२०. मणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं पाउब्भावो भवइ ।
२१. पच्चाहरओवि य णं हियगमणीओ जोयणनीहारी सरो ।
२२. भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ।
२३. सावि य णं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सिरीसिवाणं अप्पणो हिय-सिव-सुहदभासत्ताए परिणमइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. पुव्वबद्धवेरा वि य णं देवासुर-नाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगा अरहओ पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति ।

२५. अण्णउत्थिय-पावयणिया वि य णमागया वंदंति ।

२६. आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणा हवंति ।

२७. जओ जओ वि य णं अरहंतो भगवंतो विहरंति तओ तओ वि य णं जोयणपणवीसाएणं ईती न भवइ ।

२८. मारी न भवइ ।

२९. सचक्कं न भवइ ।

३०. परचक्कं न भवइ ।

३१. अइवुट्ठी न भवइ ।

३२. अणावुट्ठी न भवइ ।

३३. दुब्भिक्खं न भवइ ।

३४. पुव्वुप्पण्णावि य णं उप्पाइया वाही खिप्पामेव उवसमंति ।।[1]

सम० स० ३४, सु० १ ।

४५३ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा पण्णत्ता[2]

सम० स० ३५, सु० १ ।

चाउज्जामधम्मोवदेसगा तित्थयरा

४५४ भरहेरवएसु णं वासेसु पुरिम-पच्छिम-वज्जा मज्झिमगा बावीसं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति, तं जहा—सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ

---

१. चउत्तीसाइसयगाहाओ

रयरोयसेयरहिओ, देहो१ धवलाइं मस-रुहिराइं२ । आहारा नीहारा, अदिस्सा३ सुरहिणो सासा४ ।।१।।
जम्माउ इमे चउरो, एक्कारस कम्मखयभवा इण्हिं । खेत्ते जोयणमेत्ते, तिजयजणो माइ बहुओऽवि५ ।।२।।
नियभासाए नर-तिरि-सुराण धम्मावबोहया वाणी६ । पुव्वभवा रोगा उवसमंति७ न य हुंति वेराइं८ ।।३।।
दुब्भिख९ डमर१० दुम्मारि११, ईइ१२ अइवुट्ठि१३ अणभिवुट्ठीओ१४ । हुंति न बहु जियतरणी, पसरइ भामंडलुज्जोओ१५ ।।४।।
सुररइया इगुवीसा, मणिमयसीहासणं सपयवीढं१६ । छत्तत्तय१७ इंदज्झय१८, सियचामर१९ धम्मचक्काइं२० ।।५।।
सह जगगुरुणा गयणट्ठियाइं पंच वि इमाइं वियरंति । पाउब्भवइ असोओ२१, चिट्ठइ जत्थ प्पहू तत्थ ।।६।।
चउमुहमुत्तिचउक्कं२२, मणि-कंचण-तार-रइय-सालतिगं२३ । नवकणयपंकयाइं२४, अहोमुहा कंटया हुंति२५ ।।७।।
निच्चमवट्ठियमित्ता, पहुणो चिट्ठंति केस-रोम-नहा२६ । इंदिय अत्था पंचवि, मणोरमा२७ हुंति छप्पि रिऊ२८ ।८।।
गंधोदयस्स वुट्ठी२९, कुसुमाणं पंचवन्नाणं३० । दिंति पयाहिण सउणा३१, पहुणो पवणोऽवि अणुकूलो३२ ।।९।।
पणमंति दुमा३३ वज्जंति दुंदुहीओ गहीरघोसाओ३४ । चउतीसाइसया णं, सव्वजिणिंदाण हुंति इमा ।।१०।।

प्रव० गा० ४४१—४५० ।

२. वयणगुणा सग सट्ठे, अत्थे अडवीस मिलिअ पणतीसं । तेहिं गुणेहिं मणुन्न, जिणाण वयणं कमेण इमं ।।१।।
वयणं सक्कार-गभीर-घोस-उवयारुदत्तयाजुत्तं । पडिनायकरं दक्खिन्नसहिअमुवणीअरायं च ।।२।।
सुमहत्थं अव्वाहयमसंसयं तत्तनिट्ठिअं सिट्ठं । पत्थाबुचियं पडिहयपरुत्तरं हिययपीईकरं ।।३।।
अनुन्नसाभिकंखं, अभिजायं अइसिणिद्धमहुरं च । ससलाहापरनिंदावज्जिअमपइन्नपसरजुअं ।।४।।
पयडक्खरपयवक्कं सत्तपहाणं च कारगाइजुअं ।। ठविअविसेसमुआरं अणेगजाई विचित्तं च ।।५।।
परमम्मविब्भमाईविलंबवुच्छेयखेयरहिअं च । अदुअं धम्मत्थजुयं, सलाहणिज्जं च चित्तकरं ।।६।।

सत्त० स्था० ९८, गा० २०३—२०७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहिद्धादाणाओ वेरमणं ।।
सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति, तं जहा–
सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं ।।

ठाणं अ० ४, उ० १, सु० २६६ ।

कण्हाइभावीतित्थयरा चाउज्जामधम्मोवएसगा

४५५ एस णं अज्जो ! कण्हे वासुदेवे, रामे बलदेवे, उदए पेढालपुत्ते, पुट्टिले, सतए गाहावती, दारुए णियंठे, सच्चई णियंठीपुत्ते, सावियबुद्धे अंब[म्म?]डे परिव्वायए, अज्जावि णं सुपासा पासावच्चिज्जा आगमेस्साए उस्सप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पण्णवइत्ता सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति परिणिव्वाइहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति ।।

ठाणं० अ०९, सु० ६९३ ।

आगामि-उस्सप्पिणीए तित्थयरा

तित्थयरनामाइं

४५६ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति, तं जहा–

संगहणी गाहाओ–
महापउमे सूरदेवे, सुपासे य सयंपभे । सव्वाणुभूई अरहा, देवउत्ते य होक्खति ।।१।।
उदय पेढालपुत्ते य, पोट्टिले सतए ति य । मुणिसुव्वए य अरहा, सव्वभावविदू जिणे ।।२।।
अममे णिक्कसाए य, निप्पुलाए य निम्ममे । चित्तउत्ते समाही य, आगमिस्साए होक्खइ ।।३।।
संवरे अणियट्टी य, विजए विमलेति य । देवोववाए अरहा, अणंतविजए ति य ।।४।।
एए वुत्ता चउवीसं, भरहे वासम्मि केवली । आगमेस्साण होक्खंति, धम्मतित्थस्स देसगा ।।५।।

पुव्वभवनामाइं

४५७ एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं पुव्वभविया चउवीसं नामधेज्जा भविस्संति, तं जहा–
सेणिय सुपास उदए, पोट्टिल अणगारे तह दढाऊ य । कत्तिय संखे य तहा, नंद सुनंदे सतए य बोद्धव्वा ।।१।।
देवई चेव सच्चइ, तह वासुदेव बलदेवे । रोहिणि सुलसा चेव, तत्तो खलु रेवई चेव ।।२।।
तत्तो हवइ मिगाली, बोद्धव्वे खलु तहा भयाली य । दीवायणे य कण्हे, तत्तो खलु नारए चेव ।।३।।
अंबडे दारुमडे य, साई बुद्धे य होइ बोद्धव्वे । उस्सप्पिणी आगमेस्साए, तित्थगराणं तु पुव्वभवा ।।४।।

तित्थयरअम्मा-पियरे

४५८ एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पियरो भविस्संति, चउवीसं मायरो भविस्संति, चउवीसं पढमसीसा भविस्संति, चउवीसं पढमसिस्सिणीओ भविस्संति, पढमभिक्खादा भविस्संति, चउवीसं चेइयरुक्खा भविस्संति ।।

सम० सु० १५८ ।

तित्थयरस्स उवदेसस्स दुग्गम-सुगमता

४५९ पंचहिं ठाणेहिं पुरिम-पच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवति, तं जहा–
दुआइक्खं, दुव्विभज्जं, दुपस्सं, दुतितिक्खं, दुरणुचरं ।।
पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुग्गमं भवति, तं जहा–
सुआइक्खं सुविभज्जं, सुपस्सं, सुतितिक्खं, सुरणुचरं ।।

ठाणं० अ० ५, उ०१, सु० ३९६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समण-संपया

४६० उसभस्स णं कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चउरासीइं समणसाहस्सीओ होत्था ।।
सम० स० ८४, सु० १६ ।

विमलस्स णं अरहओ अट्ठसट्ठिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ।।
सम० स० ६८, सु० ५ ।

पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण-संपदा होत्था ।।
सम० स० १६, सु० ४ ।

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसंपया होत्था ।।[1]
सम० स० १४, सु० ४ ।

समणी-संपया

४६१ संतिस्स णं अरहओ एगूणणउई अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जासंपया होत्था ।
सम० स० ८९, सु० ४ ।

मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ पंचासं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।
सम० स० ५०, सु० १ ।

नमिस्स णं अरहओ एक्कचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।।
सम० सु० ४१, सु० १ ।

अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।।
सम० स० ४०, सु० १ ।

पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपा होत्था ।।
सम० स० ३८, सु० १ ।

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीओ होत्था ।।[2]
सम० स० ३६, सु० ३ ।

---

१. गाहाओ—
चुलसीइं च सहस्सा१, एगं च दुवे३ य तिण्णि लक्खाइं४ ।। तिण्णि य बीसऽहियाइं५, तीसऽहियाइं६ च तिन्नेव७ ।।१।।
तिन्नि य अड्ढाइज्जा८, दुवे९ य एगं च सयसहस्साइं १० ।। चुलसीइं च सहस्सा११, बिसत्तरिं१२ अट्ठसट्ठिं च १३ ।।२।।
छावट्ठिं१४ चोवट्ठिं१५, बावट्ठिं१६ सट्ठिमेव१७ पन्नासा१८ । चत्ता१९ तीसा२० वीसा२१, अट्ठारस२२ सोलस सहस्सा२३।।३।।
चोद्दस य सहस्साइं२४, जिणाण जइसीसपमाणं ।
अट्ठावीसं लक्खा, अडयालीसं च तह सहस्साइं । सव्वेसिं पि जिणाणं, जइप्पमाणं विणिदिट्ठं ।।१।।

२. गाहाओ—
तिण्णेव य लक्खाइं१, तिण्णि य तीसाइं२ तिन्नि छत्तीसा३।। तीसा य छच्च४ पंच य, तीसा५ चउरो य वीसाइं६ ।।१।
चत्तारि य तीसाइं७, तिण्णि असीया८ य तिण्णि मित्तो९ य । बीसुत्तरं१० छलऽहियं११, ति-सहस्सऽहियं च लक्खं१२ च।।२।।
लक्खं१३ अट्ठसयाणि य१४, बासट्ठिसहस्स चउसयसमग्गा१५ ।। एगट्ठी छच्च सया१६, सट्ठिसहस्सा सया छच्च१७ ।।३।।
सट्ठि१८ पणपन्न१९ पन्नेग२० चत्त२१ चत्ता२२ सहऽट्ठतीसं२३ च ।। छत्तीसं च सहस्सा२४, अज्जाणं संगहो एसो ।।४।।
अओ अणंतरं सावय-संपयापरूविगाओ इमाओ गाहाओ—
पढमस्स तिन्नि लक्खा, पंचसहस्सा दुलक्ख जा संती (२-१६) ।। लक्खोवरि अडनउई२, तेणउई३ अट्ठसीई४ य ।।१।।
एगासी५ छावत्तरि६, सत्तावन्ना७ य तह य पन्नासा८ ।। एगुणतीस९ नवासी१०, इगुणासी११ पन्नरसऽट्ठे व१३ ।।२।।
छ च्चिय सहस्स१४ चउरो, सहस्स१५ नउई सहस्स संतिस्स१६ ।। तत्तो एगो लक्खो, उवरि(१७-२४) गुणसीय१७
चुलसी१८ य ।।३।।
तेयासी१८ बावत्तरि२०, सत्तरि इगुणत्तरी२२ य चउसट्ठी२३ ।। एगुणसट्ठिसहस्सा२४, य सावगाणं जिणवराणं ।।४।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साविया-संपया

४६२ पासस्स णं अरहओ तिण्णि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्साइं उक्कोसिया साविया-संपया होत्था ।।

सम० सु० १२६ ।

वाइ-संपया

४६३ सुपासस्स णं अरहओ छलसीइं वाइसया होत्था ।।

सम० स० ८६, सु० २ ।

अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सयाइं वाईणं सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ।।[1]

सम० स० ८००, सु० १११ ।

पासस्स णं अरहओ छ सया वाईणं सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजिआणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ।।[2]

सम० स० ६००, सु० १०९ ।

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ।।[3]

सम० स० ४००, सु० १०६ ।

वेउव्विय-संपया

४६४ पासस्स णं अरहओ इक्कारससयाइं वेउव्वियाणं होत्था ।।

सम० स० ११००, सु० ११४ ।

समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया होत्था ।।[4]

सम० स० ७०० सु० ११० ।

चोद्दस-पुव्वि-संपया

४६५ संतिस्स णं अरहओ तेणउइं चउद्दसपुव्विसया होत्था ।।

सम० स० ९३, सु० २ ।

अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसण्णिवाईणं जिणो इव अवितथं वागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था ।।

ठाणं० अ० ४, उ० ४, सु० ३८१ ।

---

१. ठाणं० अ० ८, सु० ६५१ । २. ठाणं अ० ६ सु० ५५० । ३क. ठाणं अ० ४, उ० ४, सु० ३८ ।

३ख. गाहाओ—

सङ्ग छ सया दुवालस१, सहस्स बारस य चउसयऽब्भहिया२ । बारेक्कारस-सहस्सा३,४, दससहस्सा छ सय पन्नासा५ ।।१।।
छन्नउई६ चुलसीई७, छहत्तरी८ सट्ठि९ अट्ठपन्ना१० य । पन्नासा य सयाणं११, सीयाला अहव बायाला१२ ।।२।।
बत्तीसा१३ बत्तीसा१४, अट्ठावीसा१५ सयाण चउवीसा१६। बिसहस्सा१७ सोलसया१८,चउदस१९-बारस२०दस-सयाइं२१।।३।।
अट्ठसया२२ छच्च सया२३, चत्तारि सयाइं हुंति वीरम्मि२४ । वाइमुणीण पमाणं, चउवीसाए जिणवराणं ।।४।।

४. गाहाओ—

वेउव्वियलद्धीणं, वीस-सहस्सा य सयछगऽब्भहिया१ । वीस-सहस्सा चउसय२, इगुणीस-सहस्स अट्ठसया३ ।।१।।
इगुणिस-सहस्स४-अट्ठार, चउसया५ सोल-सहस्स अट्ठसया६ । सतिसय-पनरस७-चउदस८,-तेरस९-बारस-सहस दसमे१० ।।२।।
इक्कारस११-दस१२-नव१३-अट्ठ१४-, सत्त१५-छ-सहस्स१६, एगवन्न-सया१७ । सत्त-सहस्स सतिसया१८, दुन्नि य सहस्सा नवसयाइं१९ ।।३।।
दुन्नि सहस्सा२० पंच य, सहस्स२१ पनरस सयाइं नेमिम्मि२२ । इक्कारस सय पासे२३, सयाइं सत्तेव वीरजिणे२४ ।।४।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धट्ठयाइं चोद्दसपुव्वीणं संपया होत्था ।।

सम० स० ३५० सु० १०५ ।

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिण्णि सयाणि चोद्दसपुव्वीणं होत्था ।।[1]

सम० स० ३०० सु० १०४ ।

ओहिनाणि-संपया

४६६ अजियस्स णं अरहओ चउणउइं ओहिनाणिसया होत्था ।।

सम० स० ९४, सु० २ ।

कुंथुस्स णं अरहओ एक्काणउई आहोहियसया होत्था ।।

सम० स० ९१, सु० ३ ।

मल्लिस्स णं एरहओ अगूणसट्ठिं ओहिनाणिया होत्था ।।

सम० स० ५९, सु० ३ ।

नमिस्स णं अरहओ अगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था ।।[2]

सम० स० ३९, सु० १ ।

मणपज्जवनाणि–संपया

४६७ कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था ।।

सम० स० ८१, सु० २ ।

मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावण्णं मणपज्जवनाणिसया होत्था ।।[3]

सम० स० ५७, सु० ४ ।

---

१. गाहाओ—
चउदसपुव्विसहस्सा, चउरो अद्धऽट्ठमाणि य सयाणि१ । वीसऽहिय सत्ततीसा२, इगवीससया य पन्नासा३ ।।१।।
पनरस४-चउवीससया५, तेवीससया६ य वीससय तीसा७ । दो सहस८ पनरस सया, सय चउदस१० तेरस-सयाइं ११ ।।२।।
सय बारस१२ इक्कारस१३, दस१४, नव१५ अट्ठेव१६ छच्च सय सयरी१७ । दसऽहिय छच्चेव सया१८, छच्च सया अट्ठसट्ठऽहिया१९ ।।३।।
सय पंच२० अद्धपंचम२१, चउरो२२ अद्धऽहिय२३ तिन्नि य सयाइं २४ । उसभाइजिणिंदाणं, चउदस पुव्वीण परिमाणं।।४।।

२ गाहाओ—
अह ओहिनाणि नवई१, चउनवई२ छण्णवइ ३अट्ठणवई४य । एयाइं सयाइं तओ, इगार५ दस६ नव७ अडसहस्सा८ ।।१।।
चुलसी९ बिसयरि१० सट्ठी,११ चउपन्न१२ऽडयाल१३ तह य तेयाला१४ । छत्तीसं१५ तीससया१६, पण१७ वी छव्वीस१८ बावींसा१९ ।।२।।
अट्ठार२० सोल२१ पनरस२२, चउदस२३ तेरस सया२४ अवधिनाणी । लक्खेक तित्तिस सहस चत्तारि सयाइं सव्वंके (१३३४००), ।।३।।

३. गाहाओ—
बारस-सहस्स तिण्हं, सयसड्ढा सत्त१ पंच२ य दिवड्ढं ३ । इगदस सड्ढं छस्सय४, दस-सहस्सा चउसया सड्ढा५ ।।१।।
दस-सहसा तिन्नि सया६, नवदिवड्ढ-सया७ य अट्ठ-सहस्सा८य । पंचसय सत्त-सहस्सा, सुविहिजिणे९ सीयले१० चेव ।।२।।
छसहस्स दोण्हमित्तो११-१२, पंच सहस्सा य पंच य सयाइं१३ । पंच-सहस्सा१४ चउरो, सहस्स सय पंच य ऽब्भहिया१५ ।।३।।
चउरो सहस्स१६ तिन्नि य, तिन्नेव सया हवंति चालीसा१७ । सहसदुगं पंचसया, इगवन्ना अरजिणिंदस्स१८ ।।४।।
सत्तर सयाइ पन्ना१९, पंच दस सया२० य बार सय सट्ठी२१ । सहसो२२ सय अद्धट्ठम२३, पंचेव सया उ वीरस्स२४ ।।५।।
.....सव्वे मणनाणि एगलक्खाय ।। पणयालीस सहस्सा, पंचसया इगनवइअहिया ।।६।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थयराणं जिण-संपया

४६८ सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ पण्णत्तरिं जिणसया होत्था ।।

सम० स० ७५, सु० १ ।

कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसहिया बत्तीसं जिणसया होत्था। ।

सम० स० ३२, सु० ३ ।

पासस्स णं अरहओ दस सयाइं जिणाणं होत्था ।।

स० १०००, सु० ११३ ।

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त जिणसया होत्था ।।[1]

सम० स० ७०० सु० ११० ।

अणुत्तरोववाइय-संपया

४६९ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिआ अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था ।।

ठाणं० अ० ८, सु० ६५३ ।

तित्थयराणमंतरकालो

४७० उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

सम० स० अगको० सु० १३५ ।

संभवाओ णं अरहतो अभिणंदणे अरहा दसहिं सागरोवमकोडिसतसहस्सेहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पण्णे ।।

ठाणं० अ० १०, सु० ७३० ।

अभिणंदणाओ णं अरहओ सुमती अरहा णवहिं सागरोवमकोडिसयसहस्सेहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पण्णे ।।

ठाणं० अ० ९, सु० ६६४ ।

धम्माओ णं अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भागपलिओवमऊणएहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पण्णे ।।[2]

ठाणं० अ० ३, अ० ४, सु० २२८ ।

उसहाइतित्थयरेहिंतो पज्जोसवणाकप्पनिज्जूहणसमयनिरूवणं

४७१ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स कालगयस्स - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणस्स तिन्नि वासा अद्धनवमा य मासा विइक्कंता, तओ वि परं एगा सागरोवमकोडाकोडी तिवासअद्धनवमासाहिएहिं बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया वीइक्कंता, एयम्मि समए समणे भगवं महावीरे परिनिव्वुडे, तओ वि परं नव वाससया वीइक्कंता, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरकाले गच्छइ ।।

---

१. गाहाओ—
वीससहस्सा उसहे१, वीसं बावीस अहव अजियस्स२ । पनरस३ चउदस४ तेरस५, बारस६ इक्कारस७ दसेव८ ।।१।।
अद्धट्ठम९ सत्तेव१० य, छस्सड्ढा११ छच्च१२ पंच सड्ढा य१३ य । पंचेव१४ अद्धपंचम१५,चउ सहसा तिन्नि य सया१६ य।।२।।
बत्तीस सया अहवा, बावीस सयाइं हुंति कुंथुस्स१७ । अट्ठावीसं१८ बावीस१९, तह य अट्ठारस सयाइं२० ।।३।।
सोलस२१ पन्नर२२ दस सय२३, सत्तेव सया हवंति वीरस्स२४ ।।
एवं केवलिनाणं ।।

२. एत्तो जिणंतराइं वोच्छं किल उसभसामिणो अजिओ । पण्णासकोडिलक्खेहिं सायराणं समुप्पण्णो ।।१।।
तीसाए संभवजिणो, दसहि उ अभिनंदणो जिणवरिंदो । नवहि उ सुमइजिणिंदो, उप्पण्णो कोडिलक्खेहिं ।।२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजियस्स णं - जाव - प्पहीणस्स पन्नासं सागरोवमकोडिसयसहस्सा वीइक्कंता, सेसं जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहिय-बायालीसवाससहस्सेहिं इच्चाइयं ।
संभवस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स वीसं सागरोवमकोडिसयसहस्सा वीइक्कंता, सेसं जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनव-मासाहियबायालीसवाससहस्सेहिं इच्चाइयं ।।
अभिनंदणस्स णं -जाव - प्पहीणस्स दस सागरोवमकोडीसयसहस्सा वीइक्कंता, सेसं जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहिय-बायालीसवाससहस्सेहिं इच्चाइयं ।।
सुमइस्स णं - जाव - प्पहीणस्स एगे सागरोवमकोडिसयसहस्से वीइक्कंते, सेसं जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहियबाया-लीसवाससहस्सेहिं इच्चाइयं ।।
पउमप्पभस्स णं - जाव - प्पहीणस्स दससागरोवमकोडिसहस्सा वीइक्कंता, सेसं जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहिय-बायालीसवाससहस्सेहिं ऊणिया वीइक्कंता इच्चाइयं ।।
सुपासस्स णं - जाव - प्पहीणस्स एगे सागरोवमकोडिसहस्से वीइक्कंते, सेसं जहा सीयलस्स, तं च इमं–तिवासअद्धनवमासा-हियबायालीसवाससहस्सेहिं ऊणिया वीइक्कंता इच्चाइ ।।
चंदप्पहस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स एगं सागरोवमकोडिसयं वीइक्कंतं, सेसं जहा सीतलस्स, तं च इमं–तिवासअद्धन-वमासाहियबायालीसवाससहस्सेहिंऊणिगामिच्चाइ ।।
सुविहिस्स णं अरहओ पुप्फदंतस्स काल - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणस्स दस सागरोवमकोडीओ वीइक्कंताओ, सेसं जहा सीअलस्स, तं च इमं-तिवासअद्धनवमासाहिअबायालीसवाससहस्सेहिं ऊणिआ वीइक्कंता इच्चाइ ।।
सीयलस्स णं - जाव - प्पहीणस्स एगा सागरोवमकोडी तिवासअड्ढनवमासाहियबायालीसवाससहस्सेहिं उणिया वीइक्कंता एयम्मि समए वीरे निव्वुए, तओ वि य णं परं नव वाससयाइं वीइक्कंताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरे काले गच्छइ ।।
सेज्जंसस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स एगे सागरोवमसए वीइक्कंते पन्नट्ठिं च, सेसं जहा मल्लिस्स ।।
वासुपुज्जस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स छायालीसं सागरोवमाइं वीइक्कंताइं, सेसं जहा मल्लिस्स ।।
विमलस्स णं - जाव - प्पहीणस्स सोलस सागरोवमाइं वीइक्कंताइं पन्नट्ठिं च, सेसं जहा मल्लिस ।।
अणंतस्स णं - जाहीव - प्पणस्स सत्त सागरोवमाइं वीइक्कंताइं पन्नट्ठिं च, सेसं जहा मल्लिरस ।।
धम्मस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स तिन्नि सागरोवमाइं वीइक्कंताइं पन्नट्ठिं च, सेसं जहा मल्लिस्स ।।
संतिस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स एगे चउभागूणे पलितोवमे वीइक्कंते पन्नट्ठिं च, सेसं जहा मल्लिस्स ।।
कुंथुस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स एगे चउभागपलिओवमे वीइक्कंते पंचसट्ठिं च सयसहस्सा, सेसं जहा मल्लिस्स ।।
अरस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स एगे वासकोडिसहस्से वीतिक्कंते, सेसं जहा मल्लिस्स । तं च एयं–पंचसट्ठिं लक्खा चउरासीइसहस्सा वीइक्कंता तम्मि समए महावीरो निव्वुओ, ततो परं नव वाससया वीइक्कंता, दसमस्स य वाससयस्स

नउईइ सहस्सेहिं कोड़ीणं वोलियाण पउमाभो । नवहिं सहस्सेहिं तओ, सुपासनामो समुप्पण्णो ।।३।।
कोडिसएहिं नवहि उ जाओ चंदप्पहो जणाणंदो । नउईए कोडीहिं सुविहिजिणो देसिओ समए ।।४।।
सीयलजिणो महप्पा, तत्तो कोड़ीहिं नवहिं निद्दिट्ठो । कोडीए सेयंसो ऊणाइ इमेण कालेण ।।५।।
सागरसएण एगेण, तह य छावट्ठिवरिसलक्खेहिं । छव्वीसइसहसेहिं तओ पुरो अंतरेसु त्ति ।।६।।
चउपण्णाअयरेहिं वसुपुज्जजिणो जगुत्तमो जाओ । विमलो विमलगुणोहो, तीसहि अयरेहि रयरहिओ ।।७।।
नवहिं अयरेहऽणंतो, चउहि उ धम्मो उ धम्मवुरधवलो । तिहिं ऊणेहिं संती, तिहि चउभागेहिं पलियस्स ।।८।।
भागेहि दोहिं कुंथू पलियस्स अरो उ एगभागेणं । कोडिसहस्सेगेणं वासाण जिणेसरो भणिओ ।।९।।
मल्ली तिसल्लरहिओ जाओ वासाण कोडिसहस्सेण । चउपण्णवासलक्खेहिं सुव्वओ सुव्वओ सिद्धो ।।१०।।
जाओ छहिं नमिनाहो, पंचहिं लक्खेहिं जिणवरो नेमी । पासो अद्धट्ठमसयसमहियतेसीइसहसेहिं ।।११।।
अड्ढाइज्जसएहिं गएहिं वीरो जिणेसरो जाओ । दूसमअइदूसमाणं दोण्हंपि दुचत्तसहसेहिं ।।१२।।
पुज्जइ कोडाकोडी उसहजिणाओ इमेण कालेण । भणिअं अंतरदारं, एयं समयाणुसारेणं ।।१३।।

प्रव० द्वा० ३५, गा० ३९३–४०५।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयं असीइमे संवच्छरकाले गच्छइ । एवं अग्गओ - जाव - सेयंसो ताव वट्टव्वं ।।
मल्लिस्स णं अरहओ - जाव - प्पहीणस्स पन्नट्ठि वाससयसहस्साइं चउरासीइं वाससहस्साइं नव य वाससयाइं वीइक्कंताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरे काले गच्छइ ।।
मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ कालगयस्स - जाव - प्पहीणस्स एक्कारस वाससयसहस्साइं चउरासीइं च वाससहस्साइं नव य वाससयाइं वीइक्कंताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरे गच्छइ ।।
नमिस्स णं अरहओ कालगयस्सजाव - जाव - प्पहीणस्स पंच वाससयसहस्साइं चउरासीइं च वाससयहस्साइं नव य वाससयाइं विइक्कंताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरे काले गच्छइ ।।
अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स कालगयस्स - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणस्स चउरासीइं वाससहस्साइं वीइक्कंताइं, पंचासीइमस्स य वाससहस्सस्स नव वाससयाइं वीइक्कंताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरेकाले गच्छइ ।।
पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स कालगतस्स - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणस्स दुवालस वाससयाइं वीइक्कंताइं, तेरसमस्स य वाससयस्स अयं तीसइमे संवच्छरकाले गच्छइ ।।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स - जाव - सव्वदुक्खप्पहीणस्स नव वाससयाइं वीइक्कंताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे अंवच्छरकाले गच्छइ । वायणंतरे पुण–अयं तेणउए संवच्छरकाले गच्छइ इति दीसइ ।।

– कप्पसुत्तं

गणा गणहरा य

४७२ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइं गणा, चउरासीइं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ८४, सु० २ ।

अजियस्स णं अरहओ नउइं गणा, नउइं गहणरा होत्था ।।

सम० स० ९०, सु० २।

सुपासस्स णं अरहओ पंचाणउइं गणा, पंचाणउइं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ९५, सु० १।

चंदप्पहस्स णं अरहओ तेणउइं गणा, तेणउइं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ९३, सु० ३।

सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ सलसीइं गणा, सलसीइं गणहरा होत्था ।

सम० स० ८६, सु० १।

सीयलस्स णं अरहओ तेसीति गणा, तेसीति गणहरा होत्था ।।

सम० ८३ ।

सेज्जंसस्स णं अरहओ छावट्ठिं गणा, छावट्ठिं गणहरा होत्था ।।

सम० ६६ ।

वासुपुज्जस्स णं अरहओ बावट्ठिं गणा, बावट्ठिं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ६२, सु० २।

विमलस्स णं अरहओ छप्पण्णं गणा, छप्पण्णं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ५६, सु० २।

अणंतस्स णं अरहओ चउप्पण्णं गणा, चउप्पण्णं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ५४, सु० ४ ।

धम्मस्स णं अरहओ अडयालीसं गणा, अडयालीसं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ४८, सु० २ ।

संतिस्स णं अरहओ नउइं गणा, नउइं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ९०, सु० २ ।

कुंथुस्स णं अरहओ सत्ततीसं गणा, सत्ततीसं गणहरा होत्था ।।

सम० स० ३७, सु० १ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीअस्स अट्ठ गणा, अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा–

सुभे य सुभघोसे य, वसिट्ठे बंभयारि य । सोमे सिरिधरे चेव, वीरभद्दे जसे इ य ।।१।।[1]

सम० स० ८ सु० ८ । कप्प० १५६ ।

समणस्स णं भगवतो महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं जहा– गोदासगणे, उत्तर–बलिस्सहगणे, उद्देहगणे, चारणगणे, उद्दवाइयगणे, विस्सवाइयगणे, कामड्ढियगणे, माणवगणे, कोडियगणे ।।

ठाणं अ०९ सु० ६८० ।

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था, तं जहा– इंदभूती अग्गिभूती वायुभूती विअत्ते सुहम्मे मंडिए मोरियपुत्ते अकंपिए अयलभाया मेतज्जे पभासे ।।[2]

सम० स० ११, सु० ४ ।

महावीरस्स गणा-गणहरा य

४७३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा, एक्कारस गणहरा होत्था ।।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा, एक्कारस गणहरा होत्था ?

समणस्स भगवओ महावीरस्स–

१ जेट्ठे इंदभूई अणगारे गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ,

२ मज्झिमे अणगारे अग्गिभूई नामेणं गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ,

३ कणीयसे अणगारे वाउभूई नामेणं गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ,

४ थेरे अज्जवियत्ते भारद्दाये गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ,

५ थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ,

६ थेरे मंडियपुत्ते वासिट्ठे गोत्तेगं अद्धट्ठाइं समणसयाइं वाएइ,

७ थेरे मोरियपुत्ते कासवगोत्तेणं अद्धट्ठाइं समणसयाइं वाएइ,

८-९ थेरे अकंपिए गोयमे गोत्तेणं, थेरे अयलभाया हरियायणे गोत्तेणं ते दुन्नि वि थेरा तिन्नि तिन्नि समणसयाइं वाइंति,

१०-११ थेरे मेयज्जे, थेरे य पभासे एए दोन्नि वि थेरा कोडिन्ना गोत्तेणं तिन्नि तिन्नि समण-सयाइं वाएंति,

से एतेणं अट्ठेणं जज्जो ! एवं वुच्चइ–समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा, एक्कारस गणहरा होत्था ।

—कप्प सुत्तं

महावीरगणहराणं अगारवासकालो

४७४ थेरे णं अग्गिभूई सत्तचालीसं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।।

सम० स० ४७, सु० २ ।

---

१. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा–सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बंभचारी, सोमे, सिरिधरे, वीरिए, भद्दजसे ।।

ठाणं अ० ८, सु० ६१७ ।

२. गाहाओ–

चुलसीइ १ पंचनउई २ बिउत्तर सोलसुत्तर सयं ३, ४, ५ च । सत्तहिअं ६ पणनउई ७ तेणउई ८अट्ठसीई ९ अ ।।१।।

इक्कासीई १० छावत्तरी ११ अ, छावट्ठि १२ सत्तवण्णा १३ य । पण्णा १४ तेयालीसा १५ छत्तीसा १६ चेव पणतीसा ।।२।।

तित्तीस १८ अट्ठवीसा १९ अट्ठारस २० चेव तहय सत्तरस २१ ।

इक्कारस २२ दस २३ नवगं २४, गणाण माणं जिणिंदाण ।२३।।

आव० नि० गा० २६६–२६८ ।

एक्कारस उ गणहरा, जिणस्स वीरस्स सेसयाणं तु। जावइआ जस्स गणा, तावइआ गणहरा तस्स ।।१।।

आव० नि० गा० २६९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थेरे णं मोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।।

सम० स० ६५, सु० २ ।

मंडियपुत्तस्स सामण्णपरियाओ

४७५ थेरे णं मंडियपुत्ते तीसं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

सम० स० ३०, सु० २।

महावीरगणहराणं सव्वाऊ

४७६ थेरे णं इंदभूती बाणउइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

सम० स० ९२, सु० २।

थेरे णं अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे-जाव-दुक्खप्पहीणे ।।

सम० स० ७४, सु० १।

थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

सम० स० ८३, सु० २।

थेरे णं मोरियपुत्ते पंचाणउइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

सम० स० ९५, सु० ४।

थेरे णं अकंपिए अट्ठहत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

सम० स० ७८, सु० २।

थेरे णं अयलमाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।[1]

सम० सु० ७२, सु० ४।

भगवओ महावीरस्स गोयमगणहरे

रायगिहे महावीरस्सागमणं

४७७ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं णयरे होत्था, वण्णओ, तस्स णं रायगिहस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणसिलए णामं उज्जाणे होत्था, सेणिए राया, चिल्लणा देवी ।।४।।

४७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसुत्तमे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थीए लोगुत्तमे लोगनाहे लोगप्पदीवे लोगपज्जोयगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए [धम्मदए] धम्मदेसए धम्मसारहीए धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जावए बुद्धे बोहए मुत्ते मोयए सव्वन्नू सव्वदरिसी सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामे - जाव - समोसरणं ।।५।।

४७९ परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ।।६।।

इंदभूती गोयमो

४८० तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे गोयमसगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे कणगपुलगणिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेसे चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाई

---

१. गाहाओ— बाणउई चउहत्तरि सत्तरि तत्तो भवे असीई अ । एगं च सयं तत्तो, पणनउई चेव तेसीई ।।१।।
अट्ठत्तरिं च वासा, तत्तो बावत्तरिं च वासाइं । बावट्ठिं चत्ता खलु, सव्वगणहराउयं एयं ।।२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।७।।

४८१ तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोऊहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठइ, उट्ठाए उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ नमंसइ, नमसित्ता णच्चासन्ने णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउड़े पज्जुवासमाणे एवं वयासी ।।

भगवई श० १ उ० १ ।
ओव० सु० ६२, ६३ ।

४८२ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा, इक्कारस गणहरा हुत्था ।।१।।

४८३ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–समणस्स भगवओ महावीस्स नव गणा, इक्कारस गणहरा हुत्था ? ।।२।।

४८४ समणस्स भगवओ महावीरस्स जिट्ठे इंदभूई अणगारे गोयम(स)गुत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, मज्झिमए अग्गिभूई अणगारे गोयमगुत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, कणीयसे अणगारे वाउभूई नामेणं गोयमगुत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे अज्जवियत्ते भारद्दाए गुत्तेणं पंच समणसगाइं वाएइ, थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गुत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे मंडियपुत्ते वासिट्ठसगुत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ, थेरे मोरियपुत्ते कासवगुत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ, थेरे अकंपि गोयमसगुत्तेणं–थेरे अयलभाया हारियायणगुत्तेणं, एए दुण्णि वि थेरा तिण्णि तिण्णि समणसयाइं वाएंति, थेरे अज्जमेयज्जे–थेरे अज्जपभासे, एए दुण्णि वि थेरा कोडिन्ना गुत्तेणं तिण्णि तिण्णि समणसयाइं वाएंति ।

४८५ से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ–समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा, इक्कारस गणहरा हुत्था ।।३।।

४८६ सव्वे वि णं एए समणस्स भगवओ महावीरस्स एक्कारस वि गणहरा दुवालसंगिणो चउदसपुव्विणो समत्तगणिपिडगधारगा रायगिहे नगरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं कालगया -जाव- सव्वदुक्खप्पहीणा ।

४८७ थेरे इंदभूई थेरे अज्जसुहम्मे य, सिद्धिगए महावीरे पच्छा दुण्णि वि थेरा परिनिव्वुया । जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एए णं सव्वे अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा, अवसेसा गणहरा निरवच्चा वुच्छिन्ना ।।४।।

४८८ समणे भगवं महावीरे कासवगुत्तेणं । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स कासवगुत्तस्स अज्जसुहम्मे थेरे अंतेवासी अग्गिवेसायणगुत्ते ।

४८९ थेरस्स णं अज्जसुहम्मस्स अग्गिवेसायणगुत्तस्स अज्जजंबूनामे थेरे अंतेवासी कासवगुत्तेणं ।

४९० थेरस्स णं अज्जजंबूनामस्स कासवगुत्तस्स अज्जप्पभवे थेरे अंतेवासी कच्चायणसगुत्ते ।

४९१ थेरस्स णं अज्जप्पभवस्स कच्चायणसगुत्तस्स अज्जसिज्जंभवे थेरे अंतेवासी मणगपिया वच्छसगुत्ते ।

४९२ थेरस्स णं अज्जसिज्जंभवस्स मणगपिउणो वच्छसगुत्तस्स अज्जजसभद्दे थेरे अंतेवासी तुंगियायणसगुत्ते ।।५।।
इइ गणहराइथेरावली समत्ता ।।[1]

कप्पसुत्तं

अच्छेरगा

४९३ दस अच्छेरगा प०–तं०–उवसग्ग गब्भहरणं इत्थीतित्थं अभाविया परिसा, कण्हस्स अवरकंका उत्तरणं चंदसूराणं ।।१।। हरिवंसकुलुप्पत्ती चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा, असंजएसु पूआ दस वि अणंतेण कालेणं २ ।।

ठाण० अ० १०।

---

१ "अम्हाणमइपाईणायरिसे एत्तिओ चेव पाढो लब्भइ जो 'अज्जभद्दबाहुणा इमस्स रयणा कया' अस्स पुट्ठि करेइ ।"
इति मुनिवरश्रीपुप्फभिक्खुसम्पादिते 'कप्पसुत्त' ग्रन्थे टिप्पनकम् ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९ भरहचक्कवट्टिचरियं

भरहचक्कवट्टिस्स वण्णओ

४९४ तत्थ णं विणीयाए रायहाणीए भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी समुप्पज्जित्था, महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-जाव-रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।

बिइओ गमो रायवण्णगस्स इमो

४९५ तत्थ असंखेज्जकालवासंतरेण उप्पज्जए जसंसी उत्तमे-अभिजाए सत्त-वीरिय-परक्कम-गुणे पसत्थ-वण्ण-सर-सार-संघयण-तणुग-बुद्धि-धारण-मेहा-संठाण-सीलप्पगई पहाण-गारव-च्छायागइए अणेग-वयण-प्पहाणे तेय-आउ-बल-वीरियजुत्ते अझुसिर-घण-णिचिय-लोह-संकल-णाराय-वइर-उसह-संघयण-देहधारी १ झस, २ जुग, ३ भिंगार, ४ वद्धमाणग, ५ भद्दासण, ६ संख, ७ छत्त, ८ वीयणि, ९ पडाग, १० चक्क, ११, णंगल, १२ मुसल, १३ रह, १४ सोत्थिय, १५ अंकुस, १६-१७ चंदाइच्च, १८ अग्गि, १९ जूय, २० सागर, २१ इंदज्झय, २२ पुहवि, २३ पउम २४ कुंजर, २५ सीहासण, २६ दंड, २७ कुम्भ, २८ गिरिवर, २९ तुरगवर, ३० वरमउड, ३१ कुंडल, ३२, णंदावत्त, ३३ धणु, ३४ कोंत, ३५ णागर, ३६ भवणविमाण-अणेग-लक्खण-पसत्थ-सुविभत्त-चित्त-कर-चरण-देसभाए, उड्ढामुह-लोमजाल-सुकुमाल-णिद्ध-मउआवत्त-पसत्थ-लोम-विरइय-सिरिवच्छ-च्छण्ण-विउलवच्छे, देस-खेत्त-सुविभत्त-देहधारी तरुण-रवि-रस्सि-बोहिय-वर-कमल-विबुद्ध-गब्भवण्णे, हय-पोसग-कोस-सण्णिभ-पसत्थ-पिट्ठंत-णिरुवलेवे, पउमुप्पल-कुंद-जाइ-जूहियवर-चंपग-णागपुप्फ-सारंग-तुल्लगंधी छत्तीसाहिय-पसत्थ-पत्थिवगुणेहिं जुत्ते, अव्वोच्छिण्णायवत्ते, पागड-उभय-जोणी, विसुद्ध-णियग-कुलगयण-पुण्णचंदे, चंदे इव सोमयाए णयण-मण-णिव्वुइकरे, अक्खोभे सागरो व थिमिए धणवइ व्व भोग-समुदय-सद्दव्वयाए समरे अपराइए परम-विक्कम-गुणे अमरवइ-समाण-सरिसरूवे, मणुयवई भरहचक्कवट्टी भरहं भुंजइ पण्णट्ठसत्तू ।।४२।।

चक्करयणुप्पत्ती

४९६ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ आउह-घरसालाए दिव्वे चक्करयणे समुप्पज्जित्था ।
तए णं से आउह-घरिए भरहस्स रण्णो आउह-घरसालाए दिव्वं चक्करयणं समुप्पण्णं पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वस-विसप्पमाण-हियए जेणामेव दिव्वे चक्करयणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करइ, करित्ता कयल-जाव-कट्टु चक्करयणस्स परणामं करेइ, करित्ता आउह-घरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणामेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणामेव भरहे राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-जाव-जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी–
"एवं खलु देवाणुप्पियाण आउहघरसालाए दिव्वे चक्करयणे समुप्पण्णे तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेएमि, पियं भे भवउ ।"

४९७ तए णं से भरहे राया तस्स आउहघरियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-जाव-सोमणस्सिए वियसिय-वर-कमल-णयण-वयणे, पयलिअ-वर-कडग-तुडिअ-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइअ-वच्छे पालंबपलंबमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरिअं चवलं णरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउआओ ओमुअइ, ओमुइत्ता एगसाडिअं उत्तरासंगं करेइ, करित्ता अंजलि-मउलिअग्गहत्थे चक्करयणाभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि णिहट्टु करयल-जाव-अंजलिं कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेइ, करित्ता तस्स आउहघरियस्स अहामालियं मउडवज्जं ओमोयं दलयइ, दलइत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्करयणस्स अट्ठाहियमहामहिमाकरणं

४९८ तए णं से भरहे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विणीयं रायहाणिं सब्भिंतर-बाहिरियं आसिय-संमज्जिय-सित्त-सुइग-रत्थंतर-वीहियं मंचाइमंचकलियं णाणाविह-राग-वसण-ऊसिय-झय-पडागाइपडाग-मंडियं लाउल्लोइय-महियं गोसीस-सरस-रत्त-चंदण-कलसं, चंदण-घड-सुकय-जाव-गंधुद्धुयाभिरामं, सुगंधवरगंधियं, गंधवट्टिभूयं करेह, कारवेह, करेत्ता कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।"
तए णं ते कोडुंबिय-पुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल-जाव-'एवं सामि'त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता भरहस्स० अंतियाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता विणीयं रायहाणिं-जाव-करेत्ता कारवेत्ता य तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

४९९ तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे विचित्त-मणिरयण-कुट्टिम-तले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि ण्हाण-पीढंसि सुहणिसण्णे, सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहि य पुण्णे कल्लाणग-पवर-मज्जण-विहीए मज्जिए तत्थ कोउय-सएहिं बहुविहेहिं कल्लाणग-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाइय-लूहियंगे, सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणाणुलित्तंगत्ते, अहय-सुमहग्घ-दूस-रयण-सुसंवुडे, सुइमालावण्णगविलेवणे आविद्ध-मणि-सुवण्णे कप्पिय-हारद्ध-हार-तिसरिय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहे, पिणद्ध-गेविज्जग-अंगुलिज्जग-ललियगय-ललिय-कयाभरणे, णाणा-मणि-कडग-तुडिय-थंभियभुए, अहिय-सस्सिरीए, कुंडल-उज्जोइयाणणे मउड-दित्तसिरए, हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे, पालंब-पलंबमाण-सुकय-पड-उत्तरिज्जे, मुद्दिया-पिंगलंगुलीए, णाणा-मणि-कणग-विमल-महरिह-णिउणोयविय-मिसिमिसिंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीरवलए । किं बहुणा ?, कप्परुक्खए चेव अलंकिय-विभूसिए णरिंदे सकोरंट-जाव-चउ-चामर-वाल-वीइयंगे मंगल-जय-जयसद्द-कयालोए, अणेग-गणणायग-दंडणायग-जाव-दूय-संधिवाल-सद्धिं संपरिवुडे, धवल-महामेह-णिग्गए इव-जाव-ससिव्व पियदंसणे, णरवई धूव-पुप्फ-गंध-मल्ल-हत्थगए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव आउहघरसाला जेणेव चक्करयणे तेणामेव पहारेत्थ गमणाए ।

५०० तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बहवे ईसर-पभिईओ अप्पेगइआ पउमहत्थगया अप्पेगइया उप्पलहत्थगया-जाव-अप्पेगइआ सयसहस्स-पत्त-हत्थगया भरहं रायाणं पिट्ठओ पिट्ठओ अणुगच्छंति ।
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बहुईओ–
गाहाओ–
खुज्जा चिलाइ वामणिवडभीओ बब्बरी बउसियाओ । जोणिय-पल्हविआओ ईसिणिय-थारुगिणियाओ ।।१।।
लासिय-लउसिय-दमिली सिंहलि तह आरबी पुलिंदी य । पक्कणि बहलि मुरुंडी सबरीओ पारसीओ य ।।२।।
अप्पेगइया वंदण-कलस-हत्थगयाओ भिंगार-आदंस-थाल-पाति-सुपइट्ठग-वायकरग-रयणकरंडग-पुप्फचंगेरी-मल्ल-वण्ण-चुण्ण-गंध-वत्थ-आभरण-लोम-हत्थयचंगेरी-पुप्फपडल-हत्थगयाओ-जाव-लोमहत्थगयाओ अप्पेगइआओ सीहासणहत्थगयाओ छत्त-चामर-हत्थगयाओ तिल्ल-समुग्गय-हत्थगयाओ,
गाहा–
तेल्ले-कोट्टसमुग्गे, पत्ते चोए अ तगर मेला य । हरिआले हिंगुलए, मणोसिला सासवसमुग्गे ।।१।।
अप्पेगइआओ तालिअंटहत्थगयाओ, अप्पे० धूवक्कडुच्छुअ-हत्थगयाओ भरहं रायाणं पिट्ठओ पिट्ठओ अणुगच्छंति ।

५०१ तए णं से भरहे राया सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूईए सव्व-वत्थ-पुप्फ-गंध-मल्लालंकार-विभूसाए सव्वतुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं महया इड्ढीए-जाव-महया वर-तुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-मुरय-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोस-णाइएणं जेणेव आउह-घरसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आलोए चक्करयणस्स पणामं करेइ, करित्ता जेणेव चक्करयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता चक्करयणं पमज्जइ पमज्जित्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ,अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अ अच्चिणइ, पुप्फारुहणं मल्ल-गंध-वण्ण-चुण्ण-वत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करित्ता अच्छेहिं सण्हेहिं सेएहिं रययामएहिं अच्छरसातंडुलेहिं चक्करयणस्स पुरओ अट्ठट्ठमंगलए आलिहइ, तंजहा–
१ सोत्थिय, २ सिरिवच्छ, ३ णंदिआवत्त, ४ वद्धमाणग, ५ भद्दासण, ६ मच्छ, ७ कलस, ८ दप्पण । अट्ठमंगलए आलिहित्ता काऊणं करेइ उवयारंति किं ते–
पाडल-मल्लिअ-चंपग-असोग-पुण्णाग-चूअमंजरि-णवमालिअ-बकुल-तिलग-कणवीर-कुंद-कोज्जय-कोरंटय-पत्त-दमणयवर-सुरहि-सुगंध-गंधिअस्स कयग्गह-गहिअ-करयल-पब्भट्ठ-विप्पमुक्कस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमणिगरस्स तत्थ चित्तं जाणुस्सेहप्पमाणमित्तं ओहिनिगरं करेत्ता चंदप्पभ-वइर-वेरुलिअ-विमलदंडं कंचण-मणि-रयण-भत्तिचित्तं कालागुरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-गंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुअंतं वेरुलिअमयं कडुच्छुअं पग्गहेत्तु पयते धूवं दहइ, दहित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता वामं जाणुं अंचेइ - जाव - पणामं करेइ, करित्ता आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चक्करयणं पासइ, पासित्ता आउह-घरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसीयइ, सण्णिसीइत्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणिया-वर-णाडइज्ज-कलिअं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमिलाय-मल्लदामं पमुइय-पक्कीलिय-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं चक्करयणस्स अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करित्ता ममेयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।"
तए णं ताओ अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ भरहेणं रन्ना एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठ-जाव-विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमेंति, पडिणिक्खमित्ता उस्सुक्कं उक्करं - जाव - करेंति य कारवेंति करित्ता कारविता य जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।४३।।

चक्करयणस्स मागहतित्थाभिमुहत्तपयाणं

५०२ तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे जक्ख-सहस्स-संपरिवुडे दिव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं आपूरेंते चेव अंबरतलं विणीयाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं मागहतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।

आभिसेक्कहत्थिरयणारूढस्स भरहस्स चक्करयणाणुगमणं

५०३ तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं मागहतित्थाभिमुहं पयायं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ - जाव - हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, परिकप्पेत्ता हय-गय-रह-पवर-जोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेत्ता सण्णाहेह, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।"
तए णं ते कोडुंबिय - जाव - पच्चप्पिणंति ।
तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्त-जालाकुलाभिरामे तहेव - जाव - धवल-महामेह-णिग्गए इव - जाव - ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता हय-गय-रह-पवर-वाहण-भड-चडगर-पहगर-संकुलाए सेणाए पहियकित्ती जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंजणगिरि-कूड-सण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे ।

५०४ तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे, कुंडल-उज्जोइयाणणे, मउडदित्तसिरए, णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसहे मरुय-राय-वसभकप्पे, अब्भहिय-रायतेय-लच्छीए दिप्पमाणे, पसत्थ-मंगल-सएहिं संथुव्वमाणे जय-जय-सद्दकयालोए हत्थिखंध-वरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं जक्ख-सहस्स-संपरिवुडे वेसमणे चेव धणवई अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संवाह-सहस्स-मंडियं थिमिय-मेइणीयं वसुहं अभिजिणमाणे अभिजिणमाणे अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे तं दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे अणुगच्छमाणे जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे वसमाणे जेणेव मागहतित्थे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मागहतित्थस्स अदूरसामंते दुवालस-जोयणायामं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवजोयण-वित्थिण्णं वर-णगर-सरिच्छं विजय-खंधावार-णिवेसं करेइ, करित्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावइत्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ममं आवासं पोसहसालं च करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि"
तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे - जाव - अंजलिं कट्टु 'एवं सामी ! तह'त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता भरहस्स रण्णो आवाहं पोसहसालं च करेइ, करित्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणइ ।

भरहेण मागहतित्थे अट्ठमभत्त-पोसहकरणं

५०५ तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए इव बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्त-सत्थमुसले दब्भसंथारोवगए एगे अबीए अट्ठमभत्तं पडिजागरमाणे पडिजागरमाणे विहरइ ।

आसरहारूढस्स भरहस्स लवणसमुद्दे ओगाहणं

५०६ तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियं, चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह चाउग्घंटं आसरहं पडिकप्पेह" त्ति कट्टु मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्त - तहेव - जाव धवल-महामेह-णिग्गए - जाव - मज्जण-घराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता हय-गय-रह-पवर-वाहण - जाव - पहियकित्ती जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आस-रहं दुरूढे ।।

५०७ तए णं से भरहे राया चाउग्घंटं आस-रहं दुरूढे समाणे हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए वद्धिं संपरिवुडे महया-भड-चडगर-पहगर-वंद-परिक्खित्ते चक्करयण-देसियमग्गे, अणेग-राय-वर-सहस्साणुयाय-मग्गे, महया उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं पक्खुभिय-महासमुद्द-रव-भूयं पिव करेमाणे पुरत्थिम-दिसाभिमुहे-मागह-तित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहइ, - जाव - से रहवरस्स कुप्परा उल्ला, तए णं से भरहे राया तुरगे निगिण्हइ, निगिण्हइत्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता धणुं परामुसइ ।

भरहनिसट्ठसरस्स मागहतित्थाहिवइदेवभवणे निवडणं

५०८ तए णं तं अइरुग्गय-बालचंद-इंद-धणु-संनिकासं, वर-महिस-दरिय-दप्पिय-दढ-घण-सिंग-रइय-सारं, उरगवर-पवरगवल-पवर-परहुय-भमर-कुल-णीलि-णिद्धंत-धोयपट्टं, णिउणोविय-मिसिमिसिंती-मणि-रयण-घंटिया-जाल-परिक्खित्तं, तडितरुण-संपिणद्ध-किरण-तवणिज्ज-बद्ध-चिंधं दद्दर-मलयगिरि-सिहर-केसर-चामर-वालद्ध-चंदचिंधं काल-हरिय-रत्त-पीय-सुक्किल्ल-बहु-ण्हारुणि-संपिणद्धजीवं जीवियंत-करणं चलजीवं धणुं गहिऊण से णरवई, उसुं च वरवइर-कोडियं वइर-सारतोंडं, कंचण-मणि-कणग-रयण-धोइट्ठ-सुकय-पुंखं, अणेग-मणि-रयण-विविह-सुविरइय-णाम-चिंधं वइसाहं ठाइऊण ठाणं आयय-कण्णाययं च काऊण उसुमुदारं इमाइं वयणाइं तत्थ भाणीअ से णरवई–

गाहाओ : हंदि सुणंतु भवंतो, बाहिरओ खलु सरस्स जे देवा । णागासुरा सुवण्णा, तेसिं खु णमो पणिवयामि ।।१।।
हंदि सुणंतु भवंतो अब्भितरओ सरस्स जे देवा । णागासुरा सुवण्णा सव्वे मे ते विसयवासी ।।२।।
इतिकट्टु उसुं णिसिरइ त्ति ।
परिगरणिगरियमज्झो वाउद्धुयसोभमाणकोसेजो । चित्तेण सोभए धणुवरेण इंदो व्व पच्चक्खं ।।३।।
तं चंचलायमाणं पंचमिचंदोवमं महाचावं । छज्जइ वामे हत्थे, णरवइणो तंमि विजयंमि ।।४।।

तए णं से सरे भरहेणं रण्णा णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं गंता मागहतित्थाहिवइस्स देवस्स भवणंसि निवइए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णामंकियसरं दट्ठूण मागहतित्थाहिवइणो भरहसम्मुहमब्भुवगमणं

५०९ तए णं से मागहतित्थाहिवई देवे भवणंसि सरं णिवइयं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे चंडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं णिडाले साहरइ, साहरित्ता एवं वयासी—
"केस णं भो ! एस अपत्थियपत्थए दुरंत-पंत-लक्खणे हीणपुण्ण-चाउद्दसे हिरि-सिरि-परिवज्जिए जे णं मम इमाए एयाणुरूवाए दिव्वाए देविड्ढीए दिव्वाए देवजुईए दिव्वेणं देवाणुभावेणं लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पिं अप्पुस्सुए भवणंसि सरं णिसिरइ"त्ति कट्टु सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता जेणेव से णामाहयंके सरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं णामाहयंकं सरं गेण्हइ, गेण्हित्ता णामंकं अणुप्पवाएइ, णामंकं अणुप्पवाएमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

५१० "उप्पण्णे खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी तं जीयमेयं तीय-पच्चुप्पण्ण-मणागयाणं मागह-तित्थकुमाराणं देवाणं राईणमुवत्थाणियं करेत्तए । तं गच्छामि णं अहं पि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमि" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता हारं मउडं कुंडलाणि य कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयंकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ,

५११ उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिर-जाव-अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी—
"अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे पुरत्थिमेणं मागहतित्थमेराए, तं अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी, अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्तीकिंकरे, अहण्णं देवाणुप्पियाणं पुरत्थिमिल्ले अंतवाले, तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! ममं इमेयारूवं पीइदाणं" ति कट्टु हारं मउडं कुंडलाणि य कडगाणि य-जाव-मागहतित्थोदगं च उवणेइ ।
तए णं से भरहे राया मागहतित्थकुमारस्स देवस्स इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मागहतित्थकुमारं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ।

भरहस्स अट्ठमभत्तपारणं मागहतित्थाहिवदेवमुद्दिस्स अट्ठाहिय-महिमकरणादेसो य

५१२ तए णं से भरहे राया रहं परावत्तइ, परावत्तित्ता मागहतित्थेणं लवणसमुद्दाओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव विजय-खंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरे अणुपविसइ, अणु-पविसित्ता-जाव-ससि व्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारित्ता भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं - उक्करं - जाव - मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।"
तए णं ताओ अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठ जाव करेंति, करित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

चक्करयणस्स वरदामतित्थाभिमुहप्पयाणं

५१३ तए णं से दिव्वे चक्करयणे वइरामयतुंबे लोहियक्खामयारए जंबूणयणेमीए, णाणा-मणि-खुरप्प-थाल-परिगए, मणि-मुत्ता-जाल-भूसिए, सणंदिघोसे सखिंखिणीए दिव्वे, तरुण-रवि-मंडल-णिभे, णाणा-मणि-रयण-घंटियाजाल-परिक्खित्ते, सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-आसत्त-मल्लदामे अंतलिक्ख-पडिवण्ण-जक्ख-सहस्स-संपरिवुडे, दिव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं, पूरेंते चेव अंबरतलं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णामेण य सुदंसणे णरवइस्स पढमे चक्करयणे मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउह-घरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं वरदामतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।।

भरहस्स वरदामतित्थाणुगमणाइं

५१४ तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं वरदाम-तित्थाभिमुहं पयायं चावि पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हय-गय-रह-पवर० चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह" त्ति कट्टु मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता तेणेव कमेणं-जाव-धवल-महामेह-णिग्गए-जाव-सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं माइय-वर-फलय-पवर-परिगर-खेडय-वरवम्म-कवय-माढी-सहस्स-कलिए उक्कड-वर-मउड-तिरीड-पडाग-झय-वेजयंति-चामर-चलंत-छत्तंधयार-कलिए, असिखेवणिखग्ग-चाव-णाराय-कणय-कप्प-णिसूल-लउड-भिंडिमाल-धणुह-तोण-सर-पहरणेहि य काल-णील-रुहिर-पीय-सुक्किल्ल-अणेग-चिंध-सय-सण्णिविट्ठे अप्फोडिय-सीहणाय-छेलिय-हयहेसिय-हत्थिगुलुगुलाइय-अणेगरह-सयसहस्स-घणघणेंत-णीहम्ममाण-सद्दसहिएण, जमगसमग-भंभा-होरंभ-किणिंत-खरमुहि-मुगुंद-संखिय-परिलि-वच्चग-परिवाइणि-वंसवेणु-विपंचि-महइकच्छभिरिगिसिगिय-कलताल-कंसताल-करधाणुत्थिएण महया सद्द-सण्णिणाएण सयलमवि जीवलोगं पूरयंते बल-वाहण-समुदएणं एवं जक्ख-सहस्स-परिवुडे वेसमणे चेव धणवई अमरवइ-सण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती गामागर-णगर-खेड-कब्बड तहेव सेसं - जाव - विजयखंधावारणिवेसं करेइ, करित्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मम आवसहं पोसहसालं च करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि" ।।

५१५ तए णं से आसम-दोणमुह-गाम-पट्टण-पुरवर-खंधावार-गिहावण-विभागकुसले एगासीइपएसु सव्वेसु चेव वत्थूसु णेगगुण-जाणए पंडिए विहिण्णू पणयालीसाए देवयाणं वत्थुपरिच्छाए णेमिपासेसु भत्तसालासु कोट्टणीसु य वासघरेसु य विभागकुसले छेज्जे वेज्झे य दाणकम्मे पहाणबुद्धी जलयाणं भूमियाण य भायणे जल-थल-गुहासु जंतेसु परिहासु य कालनाणे तहेव सद्दे वत्थुप्पएसे पहाणे गब्भिणि-कण्णरुक्ख-वल्लि-वेढिय-गुण-दोस-वियाणए, गुणड्ढे, सोलस-पासाय-करणकुसले चउसट्ठि-विकप्प-वित्थियमई णंदावत्ते य वद्धमाणे सोत्थिय-रुयग तह सव्वओ भद्दसण्णिवेसे य बहुविसेसे उद्दंडिय-देव-कोट्ठ-दारु-गिरि-खाय-वाहण-विभागकुसले ।

गाहाओ–इय तस्स बहुगुणड्ढे थवईरयणे णरिंदचंदस्स । तवसंजमणिव्विट्ठे 'किं करवाणी'तुवट्ठाई ।।१।।

सो देवकम्मविहिणा खंधावारं णरिंदवयणेणं । आवसह-भवण-कलियं करेइ सव्वं मुहुत्तेणं ।।२।।

करेत्ता पवरपोसहघरं करेइ, करित्ता जेणेव भरहे राया - जाव - एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणइ, सेसं तहेव - जाव - मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ ।।

५१६ तए णं तं धरणितल-गमणलहुं तओ बहुलक्खण-पसत्थं हिमवंत-कंदरंतर-णिवाय-संवड्ढिय-चित्त-तिणिस-दलियं जंबूणय-सुकयकूबरं, कणय-दंडियारं, पुलय-वरिंदणील-सासग-पवाल-फलिह-वर-रयण-लेट्ठु-मणि-विद्दम-विभूसियं, अडयालीसार-रइय-तवणिज्ज-पट्ट-संगहिय-जुत्त-तुंबं, पत्तसिय-पसिय-णिम्मिय-णव-पट्ट-पुट्ठ-परिणिट्ठियं, विसिट्ठ-लट्ठ-णव-लोह-बद्धकम्मं, हरि-पहरण-रयण-सरिसचक्कं, कक्केयण-इंदणील-सासग-सुसमाहिय-बद्धजाल-कडगं, पसत्थ-विच्छिण्ण-समधुरं पुरवरं च गुत्तं, सुकिरण-तवणिज्ज-जुत्त-कलियं, कंकटय-णिजुत्त-कप्पणं, पहरणाणुजायं, खेडग-कणग-धणु-मंडलग्ग-वरसत्ति-कोंत-तोमर-सरसय-बत्तीसतोण-परिमंडियं, कणग-रयण-चित्तं, जुत्तं हलीमुह-बलाग-गयदंत-चंद-मोत्तिय-तण-सोल्लिय-कुंद-कुडय-वरसिंदुवार-कंदल-वर-फेण-णिगर-हारकासप्पगास-धवलेहिं अमर-मण-ववण-जइण-चवल-सिग्घगामीहिं चउहिं चामरा-कणग-विभूसियंगेहिं, तुरगेहिं, सच्छत्तं सज्झयं सघंटं सपडागं सुकयसंधिकम्मं, सुसमाहिय-समर-कणग-गंभीर-तुल्लघोसं, वरकुप्परं सुचक्कं वरणेमीमंडलं, वरवुरातोंडं, वरवइरबद्धतुंबं, वरकंचण-भूसियं वरायरिय-णिम्मियं, वरतुरग-संपउत्तं, वरसारहि-सुसंपग्गहियं, वरपुरिसे वरमहारहं दुरूढे आरूढे पवर-रयण-परिमंडियं कणय-खिंखिणीजाल-सोभियं, अउज्झं सोयामणि-कणग-तविय-पंकय-जासुयण-जलण-जलिय-सुय-तोंडरागं, गुंजद्ध-बंधुजीवग-रत्तहिंगुलग-णिगर-सिंदूर-रुइल-कुंकुम-पारेवग-चलण-णयणकोइल-दसणावरण-रइयाइरेग-रत्तासोगकणग-केसुय-गयतालु-सुरिंदगोवग-समप्पभप्पगासं, बिंबफल-सिलप्पवाल-उट्ठितसूर-सरिसं, सव्वोउय-सुरहि-कुसुम-आसत्त-मल्लदामं, ऊसिय-सेय-ज्झयं, महामेह-रसिय-गंभीर-णिद्ध-घोसं, सत्तु-हियय-कंपणं, पभाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य सस्सिरीयं णामेणं पुहवि-विजय-लंभं ति विस्सुयं लोगविस्सुयजसोऽहयं चाउग्घंटं आसरहं पोसहिए णरवई दुरूढे ।
तए णं से भरहे राया चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे सेसं तहेव दाहिणाभिमुहे वरदामतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहइ - जाव - से रहवरस्स कुप्परा उल्ला - जाव - पीइदाणं से । णवरं चूडामणिं च दिव्वं उरत्थगेविज्जगं सोणियसुत्तगं कडगाणि य तुडियाणि य - जाव - दाहिणिल्ले अंतवाले - जाव - अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, करित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

भरहस्स पभासतित्थविजयो

५१७ तए णं से दिव्वे चक्करयणे वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउह-घरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे - जाव - पूरंते चेव अंबरतलं उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं पभासतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।
तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं - जाव - उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं तहेव - जाव - पच्चत्थिमदिसाभिमुहे पभासतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहेइ, ओगाहित्ता - जाव - से रहवरस्स कुप्परा उल्ला - जाव - पीइदाणं से । णवरं मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडियाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयंकं पभासतित्थोदगं च गिण्हइ, गिण्हित्ता - जाव - पच्चत्थिमेणं पभासतित्थमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी - जाव - पच्चत्थिमिल्ले अंतवाले । सेसं तहेव - जाव - अट्ठाहिया णिव्वत्ता ।।

भरहस्स सिन्धुदेवीकयं उवत्थाणियं

५१८ तए णं से दिव्वे चक्करयणे पभासतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता - जाव - पूरेंते चेव अंबरतलं सिंधूए महाणईए दाहिणिल्ले कूलेणं पुरच्छिमं दिसिं सिंधुदेवीभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।
तए णं भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं सिंधूए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं सिंधूदेवीभवणाभिमुहं पयायं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए तहेव - जाव जेणेव- सिंधूए देवीए भवणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिंधूए देवीए भवणस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वर-णगर-सारिच्छं विजयखंधावार-णिवेसं करेइ - - जाव - सिंधुदेवीए अट्ठमभत्त पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी - जाव - दब्भसंथारोवगए अट्ठमभत्तिए सिंधुदेविं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ ।
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सिंधूए देवीए आसणं चलइ, तए णं सा सिंधुदेवी आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भरहं रायं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--
"उप्पण्णे खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पण्ण-मणागयाणं सिंधूणं देवीणं भरहाणं राईणं उवत्थाणियं करेत्तए । तं गच्छामि णं अहं पि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमि" त्ति कट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणा-मणि-कणग-रयण-भत्ति-चित्ताणि य दुवे कणग-भद्दासणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य - जाव - आभरणाणि य गेण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए - जाव - एवं वयासी--
"अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासिणी, अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्तिकिंकरी, तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! मम इमं एयारूवं पीइदाणं" ति कट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणि-कणग-कडगाणि य - जाव - सो चेव गमो - जाव - पडिविसज्जेइ ।

५१९ तए णं से भरहे राया पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए, कयबलिकम्मे सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं परियादियइ - जाव - सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता - जाव - अट्ठाहियाए महामहिमाए तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेयड्ढगिरिकुमारकया भरहस्स उवट्ठाणिया

५२० तए णं से दिव्वे चक्करयणे सिंधूए देवीए अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउह-घरसालाओ तहेव -जाव- उत्तरपुरच्छिमं दिसिं वेयड्ढपव्वयाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।

तए णं से भरहे राया-जाव-जेणेव वेयड्ढपव्वए जेणेव वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले णियंबे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले णियंबे दुवालसजोयणायामं णवजोयण-वित्थिण्णं वर-णगर-सरिच्छं विजयखंधावारणिवेसं करेइ, करित्ता-जाव-वेयड्ढगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए-जाव-अट्ठमभत्तिए वेयड्ढगिरिकुमारं देवं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ ।

तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि वेयड्ढगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं चलइ । एवं सिंधुगमो णेयव्वो पीइदाणं आभिसेक्कं रयणालंकारं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव- अट्ठाहियं-जाव-पच्चप्पिणंति ।

तिमिसगुहाहिवइकयमालगदेवकया भरहस्स उवट्ठाणिया

५२१ तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए-जाव-पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था । तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं-जाव-पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहं पयायं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्त-माणंदिए-जाव-तिमिसगुहाए अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणवित्थिण्णं-जाव-कयमालस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए इव बंभयारी-जाव-कयमालगं देवं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ ।

तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि कयमालस्स देवस्स आसणं चलइ, तहेव-जाव-वेयड्ढगिरि-कुमारस्स ।

णवरं पीइदाणं हत्थीरयणस्स तिलगचोद्दसं भंडालंकारं कडगाणि य -जाव- आभरणाणि य गेण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ-जाव-भोयणमंडवे । तहेव महामहिमा कयमालस्स पच्चप्पिणंति ।।

भरहस्स सुसेणसेणावइणा ससेणं चम्मरयणनावाभूएण सिंधुनईसमुत्तीरणं

५२२ तए णं से भरहे राया कयमालस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिया ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधु-सागर-गिरि-मेरागं, सम-विसम-णिक्खुडाणि य ओअवेहि, ओअवेत्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि, अग्गाइं० पडिच्छित्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।

५२३ तए णं से सेणावई बलस्स णेया भरहे वासंमि विस्सुय-जसे महाबलपरक्कमे महप्पा ओयंसी तेय-लक्खणजुत्ते मिलक्खु-भासा-विसारए चित्तचारुभासी भरहे वासंमि णिक्खुडाणं णिण्णाण य दुग्गमाण य दुप्पवेसाण य वियाणए अत्थ-सत्थ-कुसले रयणं सेणावई सुसेणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए-जाव-करयल-परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सए आवासे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हय-गय-रह-पवर-जाव-चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह" त्ति कट्टु जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउअमंगलपायच्छित्ते सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए, पिणद्ध-गेविज्ज-बद्ध-आविद्ध-विमल-वर-चिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे अणेग-गणणायग-दंडणायग-जाव-सद्धिं संपरिवुडे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मंगलजय-जय-सद्दकयालोए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढे ।

तए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे, महया-भड-चडगर-पहगर-वंदपरिक्खित्ते, महया उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकल-सद्देणं, समुद्द-रव-भूयं पिव करेमाणे सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं-जाव-निग्घोसनाइएणं जेणेव सिंधू महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चम्मरयणं परामुसइ ।

तए णं तं सिरिवच्छसरिसरूवं मुत्त-तारद्ध-चंद-चित्तं अयलमकंपं अभेज्जकवयं जंतं सलिलासु सागरेसु य उत्तरणं दिव्वं चम्मरयणं सणसत्तरसाइं सव्वधण्णाइं जत्थ रोहंति एगदिवसेण वावियाइं, वासं णाऊण चक्कवट्टिणा परामुट्ठे दिव्वे चम्मरयणे दुवालस जोयणाइं तिरियं पवित्थरइ, तत्थ साहियाइं ।

तए णं से दिव्वे चम्मरयणे सुसेणसेणावइणा परामुट्ठे समाणे खिप्पामेव णावाभूए जाए यावि होत्था ।
तए णं से सुसेणे सेणावई सखंधावार-बलवाहणे णावाभूयं चम्मरयणं दुरूहइ, दुरूहित्ता सिंधुं महाणइं विमलजलतुंगवीइं णावाभूएणं चम्मरयणेणं सबलवाहणे ससेणे समुत्तिण्णे ।

सुसेणसेणावइणा सिंहलाइविजयो

५२४ तओ महाणइमुत्तरित्तु सिंधुं अप्पडिहयसासणे सेणावई कहिंचि गामागर-णगर-पव्वयाणि खेड-कब्बड-मडंबाणि पट्टणाणि सिंहलए बब्बरए य सव्वं च अंगलोयं बलायालोयं च परम-रम्मं जवणदीवं च पवर-मणि-रयण-कणग-कोसागार-समिद्धं आरबए रोमए य अलसंड-विसयवासी य पिक्खुरे कालमुहे जोणए य उत्तरवेयड्ढ-संसियाओ य मेच्छजाई बहुप्पगारा दाहिणअवरेण-जाव-सिंधुसागरंतो त्ति सव्वपवरकच्छं च ओअवेऊण पडिणियत्तो बहुसमरमणिज्जे य भूमिभागे तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे, ताहे ते जणवयाण णगराण पट्टणाण य जे य तहिं सामिया पभूया आगरवई य मंडलवई य पट्टणवई य सव्वे घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि य भूसणाणि रयणाणि य वत्थाणि य महरिहाणि अण्णं च जं वरिट्ठं रायारिहं जं च इच्छियव्वं एयं सेणावइस्स उवणेंति मत्थय-कयंजलि-पुडा, पुणरवि काऊण अंजलिं मत्थयंमि पणया तुब्भे अग्हेऽत्थ सामिया देवयं व सरणागया मो, तुब्भं विसयवासिणो त्ति विजयं जंपमाणा सेणावइणा जहारिहं ठविय सक्कारिय विसज्जिया णियत्ता सगाणि णगराणि पट्टणाणि अणुपविट्ठा ।

पच्चागयसुसेणसेणावइकयं भरहसमक्खं पाहुडऽप्पणं

५२५ ताहे सेणावई सविणओ घत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि भूसणाणि रयणाणि य पुणरवि तं सिंधुणामधेज्जं उत्तिण्णे अणहसासण-बले, तहेव भरहस्स रण्णो णिवेएइ, णिवेइत्ता य अप्पिणित्ता या पाहुडाइं सक्कारियसम्माणिए सहरिसे विसज्जिए सगं पडमंडवमइगए ।

तए णं सुसेणे सेणावई ण्हाए जिमियभुत्तुत्तरागए समाणे - जाव - सरस-गोसीस-चंदणुक्खित्त-गायसरीरे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालि(लभि)ज्जमाणे उवलालि(लभि)ज्जमाणे महया हय-गट्ट-गाइय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंग-पडुप्पवाइय-रवेणं इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरइ ।।

सुसेणसेणावइकयं तिमिसगुहादारुग्घाडणं

५२६ तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ, सदावित्ता एवं वयासी–
गच्छ णं खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि विहाडित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि त्ति ।

तए णं से सुसेणे सेणावई भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए- जाव - करयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु - जाव - पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सए आवासे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भसंथारगं संथरइ - जाव - कयमालस्स देवस्स अट्ठमभत्तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पगिण्हइ पोसहसालाए पोसहिए इव बंभयारी - जाव - अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउअमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तए णं तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय - जाव - सत्थवाहप्पभियओ अप्पेगइआ उप्पलहत्थगया - जाव - सुसेणं सेणावइं पिट्ठओ पिट्ठओ अणुगच्छंति । तए णं तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बहुईओ खुज्जाओ चिलाइयाओ - जाव - इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाओ णिउणकुसलाओ विणीयाओ - जाव - अणुगच्छंति ।

५२७ तए णं से सुसेणे सेणावई सव्विड्ढीए सव्वजुईए - जाव - णिग्घोसणाइएणं जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेइ करित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितले चच्चए दलइ, दलित्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं अ मल्लेहिं अ अच्चिणेइ, अच्चिणित्ता पुप्फारुहणं - जाव - वत्थारुहणं करेइ, करित्ता आसत्तोसत्तविपुलवट्ट - जाव - करेइ, करित्ता अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसातंडुलेहिं तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाणं पुरओ अट्ठट्ठमंगलए आलिहइ, तं जहा—सोत्थिय सिरिवच्छ - जाव - कयग्गह-गहिअकरयलपब्भट्ठचंदप्पभवइरवेरुलिअविमलदंडं -जाव- धूवं दलयइ, दलइत्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता करयल - जाव - मत्थए अंजलिं कट्टु कवाडाणं पणामं करेइ, करित्ता दंडरयणं परामुसइ, तए णं तं दंडरयणं पंचलइयं वइरसारमइयं विणासणं सव्वसत्तुसेण्णाणं खंधावारे णरवइस्स गड्ड-दरि-विसम-पब्भार-गिरिवर-पवायाणं समीकरणं संतिकरं सुभकरं हियकरं रण्णो हिय-इच्छिय-मणोरह-पूरगं दिव्वमप्पडिहयं दंडरयणं गहाय सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ पच्चोसक्कित्ता तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे दंडरयणेणं महया महया सद्देणं तिक्खुत्तो आउडेइ । तए णं तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणसेणावइणा दंडरयणेणं महया महया सद्देणं तिक्खुत्तो आउडिया समाणा महया महया सद्देणं कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाइं सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्किंत्था ।

तए णं से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स - कवाडे विहाडेइ, विहाडित्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता - जाव - भरहं रायं करयलपरिग्गहियं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—

विहाडिया णं देवाणुप्पिया ! तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा, एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियं णिवेएमि, पियं भे भवउ ।

मणिरयणसहियस्स भरहस्स तिमिसगुहादारे पयाणं

५२८ तए णं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए-जाव - हियए सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हय-गय-रह-पवर तहेव जाव अंजणगिरिकुडसण्णिभं गयवरं णरवई दुरूढे ।।

५२९ तए णं से भरहे राया मणिरयणं परामुसइ तोतं चउरंगुलप्पमाणमित्तं च अणग्घं तंसियं छलंसं अणोवमजुइं दिव्वं मणिरयणपइसमं वेरुलियं सव्वभूयकंतं जेण य मुद्धागएणं दुक्खं ण किंचि - जाव - हवइ आरोग्गे य सव्वकालं तेरिच्छिय-देव-माणुसकया य उवसग्गा सव्वे ण करेंति तस्स दुक्खं, संगामेऽवि असत्थवज्झो होइ णरो मणिवरं धरेंतो ठियजोव्वण-केस-अवट्ठिय-णहो हवइ य सव्वभयविप्पमुक्को ।

तं मणिरयणं गहाय से णरवई हत्थिरयणस्स दाहिणिल्लाए कुंभीए णिक्खिवइ ।

तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे - जाव - अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती मणिरयणकउज्जोए चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायसहस्साणुयायमग्गे महया उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं समुद्दरवभूयं पिव करेमाणे जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तिमिसगुहं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अईइ ससि व्व मेहंधयारणिवहं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कागणिरयण-सहियस्स भरहस्स तिमिसगुहापवेसो

५३० तए णं से भरहे राया छत्तलं दुवालसंसियं अट्ठकण्णियं अहिगरणिसंठियं अट्ठसोवण्णियं कागणिरयणं परामुसइ।[1] तए णं तं चउरंगुलप्पमाणमित्तं अट्ठसुवण्णं च विसहरणं अउलं चउरंससंठाणसंठियं समतलं माणुम्माणजोगा जओ लोगे चरंति सव्वजणपण्णवगा। ण इव चंदो ण इव तत्थ सूरे ण इव अग्गी ण इव तत्थ मणिणो तिमिरं णासेंति अंधयारे। जत्थ तयं दिव्वं भावजुत्तं दुवालसजोयणाइं तस्स लेसाओ विवड्ढंति तिमिर-णिगर-पडिसेहियाओ। रत्तिं च सव्वकालं खंधावारे करेइ आलोयं दिवसभूयं जस्स पभावेण चक्कवट्टी तिमिसगुहं अईइ सेण्णसहिए अभिजेतुं बिइयमद्धभरहं रायवरे कागणिं गहाय तिमिसगुहाए पुरत्थिमिल्ल-पच्चत्थिमिल्लेसुं कडएसुं जोयणंतरियाइं पंचधणुसय-विक्खंभाइं जोयणुज्जोयकराइं चक्कणेमीसंठियाइं चंदमंडल-पडिणिगासाइं एगूणपण्णं मंडलाइं आलिहमाणे आलिहमाणे अणुप्पविसइ।

तए णं सा तिमिसगुहा भरहेणं रण्णा तेहिं जोयणंतरिएहिं-जाव- जोयणुज्जोयकरेहिं एगूणपण्णाए मंडलेहिं आलिहिज्जमाणेहिं आलिहिज्जमाणेहिं खिप्पामेव आलोगभूया उज्जोयभूया दिवसभूया जाया यावि होत्था।।

तिमिसगुहामज्झदेसे उम्मग्गणिमग्गजलाओ महाणईओ

५३१ तीसे णं तिमिसगुहाए बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं उम्मग्ग-णिमग्गजलाओ णामं दुवे महाणईओ पण्णत्ताओ, जाओ णं तिमिसगुहाए पुरत्थिमिल्लाओ भित्तिकडगाओ पवूढाओ समाणीओ पच्चत्थिमेणं सिंधुं महाणइं समप्पेंति।

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–उम्मग्ग-णिमग्गजलाओ महाणईओ?

"गोयमा! जण्णं उम्मग्गजलाए महाणईए तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा आसे वा हत्थि वा रहे वा जोहे वा मणुस्से वा पक्खिप्पइ तण्णं उम्मग्गजला महाणई तिक्खुत्तो आहुणिय आहुणिय एगंते थलंसि एडेइ।

जण्णं णिमग्गजलाए महाणईए तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, सक्करं वा-जाव-मणुस्से वा पक्खिप्पइ तण्णं णिमग्गजला महाणई तिक्खुत्तो आहुणिय आहुणिय अंतोजलंसि णिमज्जावेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–उम्मग्ग-णिमग्गजलाओ महाणईओ।"

उम्मग्ग-णिमग्गजलासु महानईसु वड्ढइरयणेण सुहसंकमनिम्माणं ससेणस्स भरहस्स उत्तरणं च

५३२ तए णं से भरहे राया चक्करयण-देसियमग्गे अणेगराय० महया उक्किट्ठ-सीहणाय-जाव-करेमाणे सिंधूए महाणईए पुरित्थिमिल्लेणं कूलेणं जेणेव उम्मग्गजला महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! उम्मग्ग-णिमग्गजलासु महाणईसु अणेग-खंभ-सय-सण्णिविट्ठे अयलमकंपे अभेज्जकवए सालंबणबाहाए सव्वरयणामए सुहसंकमे करेहि, करेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि।

तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए-जाव-विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता खिप्पामेव उम्मग्ग-णिमग्गजलासु महाणईसु अणेग-खंभ-सय-सण्णिविट्ठे-जाव-सुहसंकमे करेइ, करित्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-जाव-एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ।

तए णं से भरहे राया सखंधावारबले उम्मग्ग-णिमग्गजलाओ महाणईओ तेहिं अणेग-खंभ-सय-सण्णिविट्ठेहिं-जाव-सुहसंकमेहिं उत्तरइ।

तिमिसगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडेहिं सयमेव मग्गदाणं

५३३ तए णं तीसे तिमिसगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया महया कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाइं सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था।।

उत्तरड्ढभरहे सुसेणसेणावइकओ आवाडचिलायपराजओ

५३४ तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडा णामं चिलाया परिवसंति। अड्ढा दित्ता वित्ता वित्थिण्ण-

---

१. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए काकणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अधिकरणिसंठिते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णा बहुधण-बहुजायरूवरयया आओग-पओगसंपउत्ता विच्छड्डियपउर-भत्तपाणा बहुदासी-दास-गोमहिस-गवेलग-प्पभूया बहुजणस्स अपरिभूया सूरा वीरा विक्कंता वित्थिण्ण-विउल-बलवाहणा बहूसु समर-संपराएसु लद्धलक्खा यावि होत्था ।

५३५ तए णं तेसिमावाडचिलायाणं अण्णया कयाई विसयंसि बहूइं उप्पाइय-सयाइं पाउब्भवित्था, तंजहा-अकाले गज्जियं, अकाले विज्जुया, अकाले पायवा पुप्फंति, अभिक्खणं अभिक्खणं आगासे देवयाओ णच्चंति ।
तए णं ते आवाडचिलाया विसयंसि बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं पासंति, पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं विसयंसि बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं तंजहा–
अकाले गज्जियं, अकाले विज्जुया, अकाले पायवा पुप्फंति, अभिक्खणं अभिक्खणं आगासे देवयाओ णच्चंति, तं ण णज्जइ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं विसयस्स के मन्ने उवद्दवे भविस्सइ" त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा चिंतासोगसागरं पविट्ठा करयल-पल्हत्थ-मुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया झियायंति ।

५३६ तए णं से भरहे राया चक्करयण-देसियमग्गे-जाव-समुद्दरवभूयं पिव करेमाणे तिमिसगुहाओ उत्तरिल्लेणं दारेणं णीइ ससि व्व मेहंधयारणिवहा ।
तए णं ते आवाडचिलाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता आसुरुत्ता रुट्ठा चंडिक्किया कुविया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"एस णं देवाणुप्पिया ! केइ अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे हिरि-सिरि-परिवज्जिए जे णं अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं हव्वमागच्छइ, तं तहा णं घत्तामो देवाणुप्पिया ! जहा णं एस अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं णो हव्वमागच्छइ" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सण्णद्धबद्धवम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्धगेविज्जा बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टा गहियाउहप्पहरणा जेणेव भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भरहस्स रण्णो अग्गाणीएण सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।
तए णं ते आवाडचिलाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं हय-महिय-पवर-वीरघाइय-विवडिय-चिंध-द्धयपडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिसिं पडिसेहिंति ।।

५३७ तए णं से सेणाबलस्स णेया वेढो-जाव-भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं आवाडचिलाएहिं हयमहियपवरवीर-जाव-दिसोदिसिं पडिसेहियं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे चंडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे कमलामेलं आसरयणं दुरूहइ, दुरूहित्ता तए णं असीइमंगुलमूसियं णवणउइमंगुलपरिणाहं अट्ठसयमंगुलमाययं बत्तीसमंगुलमूसियसिरं चउरंगुलकण्णागं वीसइअंगुलबाहागं चउरंगुलजाणूकं सोलसअंगुलजंघागं चउरंगुलमूसियखुरं मुत्तोलीसंवत्तवलियमज्झं ईसिं अंगुलपणयपट्ठं संणयपट्ठं संगयपट्ठं सुजायपट्ठं पसत्थपट्ठं विसिट्ठपट्ठं एणीजाणुण्णयवित्थयथद्धपट्ठं वित्तलयकस-णिवाय-अंकेल्लणपहारपरिवज्जियंगं तवणिज्जथासगाहिलाणं, वर-कणग-सुफुल्ल-थासग-विचित-रयण-रज्जुपासं, कंचण-मणि-कणग-पयरग-णाणाविह-घंटियाजाल-मुत्तिया-जालएहिं परिमंडिएणं, पट्ठेण सोभमाणेण सोभमाणं कक्केयण-इंदणील-मरगय-मसारगल्ल-मुहमंडण-रइयं, आविद्ध-माणिक्क-मुत्तग-विभूसियं, कणगामय-पउम-सुकय-तिलयं, देवमइ-विगप्पियं, सुरवरिंदवाहणजोग्गावयं सुरूवं, दूइज्जमाण-पंच-चारुचामरामेलगं धरेंतं अणब्भवाहं अभेलणयणं कोकासिय-बहलपत्त-लच्छं सयावरण-णवकणग-तविय-तवणिज्ज-तालुजीहासयं सिरिआभिसेयघोणं पोक्खरपत्तमिव सलिलबिंदुजुयं अचंचलं चंचलसरीरं चोक्खचरगपरिव्वायगो विव हिलीयमाणं हिलीयमाणं खुरचलणचच्चपुड़ेहिं धरणियलं अभिहणमाणं अभिहणमाणं दोवि य चलणे जमगसमगं मुहाओ विणिग्गमंतं व सिग्घयाए मुणाल-तंतु-उदगमवि णिस्साए पक्कमंतं, जाइकुल-रूव-पच्चय-पसत्थ-बारसावत्तग-विसुद्ध-लक्खणं सुकुलप्पसूयं, मेहाविभद्दयविणीयं, अणुय-तणुय-सुकुमाल-लोम-णिद्धच्छविं, सुजाय-अमर-मण-पवण-गरुल-जइण-चवल-सिग्घगामिं इसिमिव खंतिखमए सुसीसमिव पच्चक्खयाविणीयं उदग-हुयवह-पासाण-पंसु-कद्दम-ससक्कर-सवालुइल्ल-तडकडग-विसम-पब्भार-गिरिदरी-सुलंघण-पिल्लण-णित्थारणासमत्थं अचंडपाडियं दंडयाइं अणंसुपाइं अकालतालुं च कालहेसिं जियणिद्दं गवेसगं जियपरिसहं जच्चजाईयं मल्लिहाणिं सुगपत्तसुवण्णकोमलं मणाभिरामं कमलामेलं णामेणं आसरयणं सेणावई कमेण समभिरूढे कुवलयदलसामलं च रयणियर-मंडलणिभं सत्तुजण-विणासणं कणगरयणदंडं णवमालियपुप्फसुरहिगंधिं णाणामणि-लयभत्तिचित्तं च पहोय-मिसिमिसिंत-तिक्खधारं दिव्वं खग्गरयणं लोए अणोवमाणं तं च पुणो वंस-रुक्ख-सिंग-ट्ठिदंत-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालायस-विउल-लोहदंडय-वरवइर-भेयगं -जाव- सव्वत्थअप्पडिहयं किं पुण देहेसु जंगमाणं ।
गाहा–पण्णासंगुलदीहो, सोलस से अंगुलाइं वित्थिण्णो । अद्धंगुलसोणीको, जेट्ठपमाणो असी भणिओ ।।१।।
असिरयणं णरवइस्स हत्थाओ तं गहिऊण जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आवाडचिलाएहिं सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ।
तए णं से सुसेणे सेणावई ते आवाडचिलाए हयमहियपवरवीरघाइय-जाव-दिसोदिसिं पडिसेहेइ ।।

आवाडचिलायपत्थणाए भरहसेणोवरिं नागकुमारदेवकयं महामेहवरिसणं

५३८ तए णं ते आवाडचिलाया सुसेण-सेणावइणा हयमहिय-जाव-पडिसेहिया समाणा भीया तत्था वहिया उव्विग्गा संजायभया अत्थामा अबला अवीरिया अपुरिसक्कारपरक्कमा अधारणिज्जमिति कट्टु अणेगाइं जोयणाइं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता एगयओ मिलायंति, मिलइत्ता जेणेव सिंधू महाणई तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वालुयासंथारए संथरेंति, संथरित्ता वालुयासंथारए दुरूहंति, दुरूहित्ता अट्ठमभत्ताइं पगिण्हंति, पगिण्हित्ता वालुयासंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिया जे तेसिं कुलदेवया मेहमुहा णामं णागकुमारा देवा ते मणसीकरेमाणा मणसीकरेमाणा चिट्ठंति ।

५३९ तए णं तेसिमावाडचिलायाणं अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि मेहमुहाणं णागकुमाराणं देवाणं आसणाइं चलंति, तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा आसणाइं चलियाइं पासंति, पासित्ता ओहिं पउंजंति, पउंजित्ता आवाडचिलाए ओहिणा आभोएंति, आभोइत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे वासे आवाडचिलाया सिंधूए महाणईए वालुयासंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा मणसीकरेमाणा चिट्ठंति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं आवाडचिलायाणं अंतिए पाउब्भवित्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए-जाव-वीइवयमाणा वीइवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे वासे जेणेव सिंधू महाणई जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णा सखिखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिया तं आवाडचिलाए एवं वयासी–

"हं भो आवाडचिलाया ! जण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वालुयासंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा मणसीकरेमाणा चिट्ठह ।

तए णं अम्हे मेहमुहा णागकुमारा देवा तुब्भं कुलदेवया तुम्हं अंतियण्णं पाउब्भूया, तं वदह णं देवाणुप्पिया ! किं करेमो, [?किं आचिट्ठामो] के व भे मणसाइए ।"

५४० तए णं आवाडचिलाया मेहमुहाणं णागकुमाराणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया-जाव-हियया उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठित्ता जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं-जावमत्थए अंजलिं कट्टु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावित्ता एवं वयासी–

"एस णं देवाणुप्पिया ! केइ अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे -जाव- हिरिसिरिपरिवज्जिए जे णं अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं हव्वमागच्छइ, तं तहा णं घत्तेह देवाणुप्पिया ! जहा णं एस अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं णो हव्वमागच्छइ ।"

५४१ तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा ते आवाडचिलाए एवं वयासी–

"एस णं भो देवाणुप्पिया ! भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी महिड्ढिए महज्जुइए -जाव -महासोक्खे, णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा, दाणवेण वा, किण्णरेण वा, किंपुरिसेण वा, महोरगेण वा, गंधव्वेण वा, सत्थप्पओगेण वा, अग्गिप्पओगेण वा, मंतप्पओगेण वा, उदवित्तए पडिसेहित्तए वा, तहा वि य णं तुब्भं पियट्ठयाए भरहस्स रण्णो उवसग्गं करेमो" त्ति कट्टु तेसिं आवाडचिलायाणं अंतियाओ अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणित्ता मेहाणीयं विउव्वंति, विउव्वित्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयक्खंधावारणिवेसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता उप्पिं विजयक्खंधावारणिवेसस्स खिप्पामेव पतणतणायंति, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासिउं पवत्ता यावि होत्था ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरहेण छत्तरयणपवित्थरणं

५४२ तए णं से भरहे राया उप्पिं विजयक्खंधावारस्स जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासमाणं पासइ, पासित्ता चम्मरयणं परामुसइ ।

तए णं तं सिरिवच्छसरिसरूवं वेढो भाणियव्वो-जाव-दुवालसजोयणाइं तिरियं पवित्थरइ, तत्थ साहियाइं ।

तए णं से भरहे राया सखंधावारबले चम्मरयणं दुरूहइ, दुरूहित्ता दिव्वं छत्तरयणं परामुसइ ।

तए णं णवणउइ-सहस्स-कंचण-सलाग-परिमंडियं महरिहं अउज्झं णिव्वण-सुपसत्थ-विसिट्ठ-लट्ठ-कंचण-सुपुट्ठदंडं, मिउरायय-वट्ट-लट्ठ-अरविंद-कण्णिय-समाणरूवं, वत्थिपएसे य पंजरविराइयं, विविहभत्तिचितं, मणि-मुत्त-पवाल-तत्ततवणिज्ज-पंचवण्णिय-धोय-रयण-रूवरइयं, रयण-मरीई-समोप्पणाकप्पकारमणुरंजिएल्लियं, राय-लच्छिचिंधं, अज्जुण-सुवण्ण-पंडुर-पच्चत्थुय-पट्ठदेसभागं, तहेव तवणिज्ज-पट्ट-धम्मंत-परिगयं, अहिय-सस्सिरीयं सारय-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-चंदमंडल-समाणरूवं, णरिंद-वामप्पमाण-पगइवित्थडं, कुमुयसंघधवलं, रण्णो संचारिमं विमाणं सूरायववायवुट्ठिदोसाण य खयकरं तवगुणेहिं लद्धं ।

गाहा :– अहयं बहुगुणदाणं, उऊण विवरीयसुहकयच्छायं । छत्तरयणं पहाणं, सुदुल्लहं अप्पपुण्णाणं ।।१।।

पमाणराईण तवगुणाण फलेगदेसभागं विमाणवासे वि दुल्लहतरं वग्घारिय-मल्ल-दाम-कलावं सारय-धवल-ब्भरयय-णिगरप्पगासं दिव्वं छत्तरयणं महिवइस्स धरणियलपुण्णइंदो ।

तए णं से दिव्वे छत्तरयणे भरहेणं रण्णा परामुट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं पवित्थरइ साहियाइं तिरियं ।।

तए णं से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्सुवरिं ठवेइ, ठवित्ता मणिरयणं परामुसइ वेढो-जाव-छत्तरयणस्स वत्थिभागंसि ठवेइ, तस्स य अणइवरं चारुरूवं सिलणिहिअत्थमंतमेत्त-सालि-जव-गोहूम-मुग्ग-मास-तिल-कुलत्थ-सट्ठिग-निप्फाव-चणग-कोद्दव-कोत्थुंभरि-कंगु-वरग-रालग-अणेग-धण्णावरण-हारियग-अल्लग-मूलग-हलिद्द-लाउय-तउस-तुंब-कालिंग-कविट्ठ-अंब-अंबिलिय-सव्वणिप्फायए सुकुसले गाहावइरयणे त्ति सव्वजणवीसुयगुणे ।

गाहावइरयणकओ भरहसेणाए सत्तदिणणिव्वाहो

५४३ तए णं से गाहावइरयणे भरहस्स रण्णो तद्दिवस-प्पइण्ण-णिप्फाइय-पूइयाणं सव्वधण्णाणं अणेगाइं कुंभसहस्साइं उवट्ठवेइ ।

तए णं से भरहे राया चम्मरयण-समारूढे छत्तरयण-समोच्छण्णे मणिरयण-कउज्जोए समुग्गयभूएणं सुहंसुहेणं सत्तरत्तं परिवसइ ।

गाहा :– ण वि से खुहा ण विलियं, णेव भयं णेव विज्जए दुक्खं । भरहाहिवस्स रण्णो, खंधावारस्स वि तहेव ।।१।।

देवसहस्सेहिं नागकुमारं पइ भरहसरणगमणोवएसो

५४४ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–"केस णं भो ! अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे-जाव-परिवज्जिए जे णं ममं इमाए एयाणुरूवाए-जाव-अभिसमण्णागयाए उप्पिं विजयखंधावारस्स जुगमुसलमुट्ठि-जाव-वासं वासइ ।"

तए णं तस्स भरहस्स रण्णो इमेयारूवं अज्झत्थियं चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं समुप्पण्णं जाणित्ता सोलस देवसहस्सा सण्णज्झिउं पवत्ता यावि होत्था ।

तए णं ते देवा सण्णद्धबद्धवम्मियकवया-जाव-गहियाउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मेहमुहे णागकुमारे देवे एवं वयासी–

"हं भो मेहमुहा णागकुमारा देवा ! अपत्थियपत्थगा-जाव-परिवज्जिया किण्णं तुब्भे ण जाणह भरहं रायं चाउरंतचक्क-वट्टिं महिड्ढियं-जाव-उट्टवित्तए वा, पडिसेहित्तए वा, तहा वि णं तुब्भे भरहस्स रण्णो विजयखंधावारस्स उप्पिं जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमित्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासह, तं एवमवि गए इत्तो खिप्पामेव अवक्कमह, अहव णं अज्ज पासह चित्तं जीवलोगं ।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णागकुमारोवएसेण चिलायेहिं भरहसरणगमणं

५४५ तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा भीया तत्था वहिया उव्विग्गा संजायभया मेहाणीयं पडिसाहरंति, पडिसाहरित्ता जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आवाडचिलाए एवं वयासी–
"एस णं देवाणुप्पिया ! भरहे राया महिड्ढिए-जाव-णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा-जाव-अग्गिप्पओगेण वा--जाव-उद्दवित्तए वा, पडिसेहित्तिए वा । तहावि य णं अम्हेहिं देवाणुप्पिया ! तुब्भं पियट्ठयाए भरहस्स रण्णो उवसग्गे कए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणियच्छा अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय पंजलिउडा पायवडिया भरहं रायाणं सरणं उवेह । पणिवइय-वच्छला खलु उत्तमपुरिसा, णत्थि भे भरहस्स रण्णो अंतियाओ भयमिति कट्टु" एवं वइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।

५४६ तए णं ते आवाडचिलाया मेहमुहेहिं णागकुमारेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठित्ता ण्हाया उल्लपडसाडगा ओचूलगणियच्छा अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं-जाव-मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं उवणेंति, उवणित्ता एवं वयासी–
गाहाओ–"वसुहर गुणहर जयहर, हिरि-सिरि-धी-कित्तिधारग ! णरिंद ! लक्खणसहस्सधारग रायमिदं णे चिरं धारे ।।१।।
हयवइ गयवइ णरवइ णवणिहिवइ भरहवासपढमवई । बत्तीसजणवयसहस्सरायसामी चिरं जीव ।।२।।
पढम-णरीसर ईसर हियईसर महिलियासहस्साणं । देवसयसाहसीसर चोद्दसरयणीसर जसंसी ।।३।।
सागरगिरिमेरागं उत्तरवाईणमभिजियं तुमए । ता अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परिवसामो ।।४।।
अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी एवं चेव-जाव-अभिसमण्णागए, तं खामेमु णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरहंति णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो भुज्जो एवंकरणयाए त्ति" कट्टु पंजलिउडा पायवडिया भरहं रायं सरणं उविंति ।

५४७ तए णं से भरहे राया तेसिं आवाडचिलायाणं अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते आवाडचिलाए एवं वयासी–
"गच्छह णं भो ! तुब्भे ममं बाहुच्छायापरिग्गहिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसह, णत्थि भे कत्तो वि भयमत्थि त्ति" कट्टु सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।

५४८ तए णं से भरहे राया सुसेणं सेणावइं सद्दावइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिया ! दोच्चंपि सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं सम-विसम-णिक्खुडाणि य ओअवेहि, ओअवित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि, पडिच्छित्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि। जहा दाहिणिल्लस ओअवणं तहा सव्वं भाणियव्वं-जाव- पच्चणुभवमाणे विहरइ ।।

चुल्लहिमवंतगिरिकुमारविजयो

५४९ तए णं दिव्वे चक्करयणे अण्णया कयाइ आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे - जाव - उत्तरपुरच्छिमं दिसिं चुल्लहिमवंतपव्वयाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।
तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं-जाव-चुल्लहिमवंत-वासहरपव्वयस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं-जाव-चुल्लहिमवंत-गिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, तहेव जहा मागहतित्थस्स-जाव-समुद्दरवभूयं पिव करेमाणे उत्तरदिसाभिमुहे जेणेव चुल्लहिमवंत-वासहरपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुल्लहिमवंतवासहरपव्वयं तिक्खुत्तो रहसिरेणं फुसइ, फुसित्ता तुरए णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता तहेव - जाव - आयवकण्णायवं च काऊण उसुमुदारं इमाणि वयणाणि तत्थ भाणीअ से णरवई - जाव - सव्वे मे ते विसयवासि त्ति कट्टु उड्ढं वेहासं उसुं णिसिरइ परिगरणिगरियमज्झे - जाव - तए णं से सरे भरहेणं रण्णा उड्ढं वेहासं णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव बावत्तरिं जोयणाइं गंता चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स मेराए णिवइए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५० तए णं से चुल्लहिमवंतगिरिकुमारे देवे मेराए सरं णिवइयं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे-जाव-पीइदाणं सव्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं च कडगाणि - जाव - दहोदगं च गेण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-उत्तरेणं चुल्लहिमवंतगिरिमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी-जाव-अहण्णं देवाणुप्पियाणं उत्तरिल्ले अंतवाले-जाव-पडिविसज्जेइ ।।

कागणिरयणपरामुसणेण भरहेण चक्कवट्टिनामलिहणं

५५१ तए णं से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, परावत्तित्ता जेणेव उसहकूडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उसहकूडं पव्वयं तिक्खुत्तो रहसिरेणं फुसइ, फुसित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता छत्तलं दुवालसंसियं अट्ठकण्णियं अहिगरणिसंठियं सोवण्णियं कागणिरयणं परामुसइ, परामुसित्ता उसभकूडस्स पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लंसि कडगंसि णामगं आउडेइ।

गाहाओ– ओसप्पिणीइमीसे तइयाए समाए पच्छिमे भाए । अहमंसि चक्कवट्टी भरहो इय नामधिज्जेणं ।।१।।

अहमंसि पढमराया अहयं भरहाहिवो णरवरिंदो । णत्थि महं पडिसत्तू जियं मए भारहं वासं ।।२।।

ति कट्टु णामगं आउडेइ ।

चक्काणुमग्गेणं भरहस्स वेयड्ढउत्तरणियंबे गमणं

५५२ णामगं आउडित्ता रहं परावत्तेइ, परावत्तित्ता जेणेव विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता - जाव - चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता-जाव-दाहिणदिसिं वेयड्ढपव्वयाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।।

५५३ तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं-जाव-वेयड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले णियंबे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेयड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले णियंबे दुवालसजोयणायामं-जाव-पोसहसालं अणुपविसए-जाव-णमिविणमीणं विज्जाहरराईणं अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए-जाव-णमि-विणमि-विज्जाहररायाणो मणसी-करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ ।

विज्जाहरराएहि णमि-विणमीहिं भरहस्स रयणाइ–इत्थिरयण–समप्पणं

५५४ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि णमि-विणमिविज्जाहररायाणो दिव्वाए मईए चोइयमई अण्णमण्णस्स अंतियं पाउब्भवंति, पाउब्भवित्ता एवं वयासी–

"उप्पण्णे खलु भो देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पण्णमणागयाणं विज्जाहरराईणं चक्कवट्टीणं उवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हेवि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमो त्ति" कट्टु विणमी–णाऊणं चक्कवट्टिं दिव्वाए मईए चोइयमई माणुम्माणप्पमाण जुत्तं तेयंसिं रूवलक्खणजुत्तं ठियजुव्वणकेसवट्ठियणहं सव्वरोगणासिं बलकरिं इच्छियसीउण्हफासजुत्तं ।

गाहा– तिसु तणुयं तिसु तंबं तिवलीगइउण्णयं तिगंभीरं । तिसु कालं तिसु सेयं तियायतं तिसु य वित्थिण्णं ।।१।।

समसरीरं भरहे वासंमि सव्वमहिलप्पहाणं सुंदर–थण-जहण-वर-कर-चलण-णयण-सिरसिज-दसण-जणहिययरमण-मणहरिं सिंगारागार-जाव-जुत्तोवयारकुसलं अमरवहूणं सुरूवं रूवेणं अणुहरंतिं सुभद्दं भद्दंमि जोव्वणे वट्टमाणिं इत्थीरयणं; णमी य रयणाणि य, कडगाणि य, तुडियाणि य गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए-जाव-उद्धुयाए विज्जाहरगईए जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं अंतलिक्खपडिवण्णा सखिखिणियाइं-जाव-जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावित्ता एवं वयासी–

"अभिजिए णं देवाणुप्पिया ! जाव अम्हे देवाणुप्पियाणं आणत्तिकिंकरा इति कट्टु तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! अम्हं" इमं-जाव-विणमी इत्थीरयणं णमी रयणाणि समप्पेइ ।

तए णं से भरहे राया-जाव-पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता.....भोयणमंडवे-जाव-णमि-विणमीणं विज्जाहरराईणं अट्ठाहियमहामहिमा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंगादेवीकयं भरहस्स कणगसिंहासणजुगसमप्पणं

५५५ तए णं से दिव्वे चक्करयणे आउहघरसालाओ पडिणिक्खमई-जाव-उत्तरपुरत्थिमं दिसिं गंगादेवी-भवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था, सच्चेव सव्वा सिंधुवत्तव्वया-जाव-णवरं कुंभट्ठसहस्सं रयणचितं णाणामणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाइं सेसं तं चेव - जाव - महिम त्ति ।।

खंडप्पवायगुहाए णट्टमालगदेवेण भरहस्स पीइदाणं

५५६ तए णं से दिव्वे चक्करयणे गंगाए देवीए अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउह-घरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता -जाव- गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्लेणं कूलेणं दाहिणदिसिं खंडप्पवायगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था। तए णं से भरहे राया-जाव-जेणेव खंडप्पवायगुहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता०, सव्वा कयमालगवत्तव्वया णेयव्वा। णवरं णट्टमालगे देवे पीइदाणं से आलंकारियभंडं कडगाणि य, सेसं सव्वं तहेव - जाव - अट्ठाहिया महाम० ।
तए णं से भरहे राया णट्टमालगस्स देवस्स अट्ठाहियाए म० णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ, सद्दावित्ता - जाव - सिंधुगमो णेयव्वो - जाव - गंगाए महाणईए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं सगंगासागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओअवेइ, ओअवित्ता अग्गाणि वराणि रयणाणि पडिच्छइ, पडिच्छित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोच्चंपि सक्खंधावारबले गंगामहाणइं विमलजलतुंगवीइं णावाभूएणं चम्मरयणेणं उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं - जाव - अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं उवणेइ ।

सुसेणसेणावइस्स भरहेण सक्कारो

५५७ तए णं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ।
तए णं से सुसेणे सेणावई भरहस्स रण्णो सेसं पि तहेव - जाव - विहरइ ।

अओ परं आगमणकमेण पडिगमणं भरहस्स

५५८ तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ सुसेणं सेणावइरयणं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
गच्छ णं भो देवाणुप्पिया ! खंडगप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि, विहाडित्ता जहा तिमिसगुहाए तहा भाणियव्वं - जाव - पियं भे भवउ । सेसं तहेव - जाव - भरहो उत्तरिल्लेणं दुवारेणं अईइ ससिव्व मेहंधयारणिवहं तहेव पविसंतो मंडलाइं आलिहइ ।
तीसे णं खंडगप्पवायगुहाए बहुमज्झदेसभाए-जाव-उम्मग्ग-णिमग्गजलाओ णामं दुवे महाणईओ तहेव । णवरं पच्चत्थिमिल्लाओ कडगाओ पवूढाओ समाणीओ पुरत्थिमेणं गंगं महाणइं समप्पेंति । सेसं तहेव णवरं पच्चत्थिमिल्लेणं कूलेणं गंगाए संकमवत्तव्वया तहेव त्ति ।
तए णं खंडगप्पवायगुहाए बाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया महया कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाइं सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ।
तए णं से भरहे राया चक्करयणदेसियमग्गे-जाव-खंडगप्पवायगुहाओ दक्खिणिल्लेणं दारेणं णीणेइ ससिव्व मेहंधयार-णिवहाओ ।।

णवणिहिउप्पत्ती

५५९ तए णं से भरहे राया गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्ले कूले दुवालसजोयणायामं णवजोयणवित्थिण्णं-जाव-विजयक्खंधा-वारणिवेसं करेइ, अवसिट्ठं तं चेव-जाव-णिहिरयणाणं अट्ठमभत्तं पगिण्हइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से भरहे राया पोसहसालाए-जाव-णिहिरयणे मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ त्ति । तस्स य अपरिमिय-रत्तरयणा धुयमक्खयमव्वया सदेवा लोकोपचयंकरा उवगया णव णिहओ लोगविस्सुय-जसा तं जहा–

गाहाओ– १णेसप्पे २पंडुयए ३पिंगलए ४सव्वरयण ५महपउमे । ६काले ७य महाकाले ८माणवगे महाणिही ९संखे ।।१।।

णेसप्पंमि णिवेसा गामागर-णगर-पट्टणाणं च । दोणमुह-मडंबाणं खंधावारावण-गिहाणं ।।१।।

गणियस्स उ उप्पत्ती माणुम्माणस्स जं पमाणं च । धण्णस्स य बीयाण य उप्पत्ती पंडुए भणिया ।।२।।

सव्वा आभरणविही पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं । आसाण य हत्थीण य पिंगलगणिहिंमि सा भणिया ।।३।।

रयणाइं सव्वरयणे चउदसवि वराइं चक्कवट्टिस्स । उप्पज्जंते एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ।।४।।

वत्थाण य उप्पत्ती णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं । रंगाण य धोव्वाण य सव्वाएसा महापउमे ।।५।।

काले कालण्णाणं सव्वपुराणं च तिसु वि वंसेसु । सिप्पसयं कम्माणि य तिण्णि पयाए हियकराणि ।।६।।

लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकाले आगराणं च । रुप्पस्स सुवण्णस्स य मणि-मुत्त-सिलप्पवालाणं ।।७।।

जोहाण स उप्पत्ती, आवरणाणं च पहरणाणं च । सव्वा य जुद्धणीई, माणवगे दंडणीई य ।।८।।

णट्टविही णाडगविही, कव्वस्स य चउविहस्स उप्पत्ती । संखे महाणिहिंमी तुडियंगाणं च सव्वेसिं ।।९।।

[1]चक्कट्ठपइट्ठाणा अट्ठुस्सेहा य णव य विक्खंभा । बारसदीहा मंजूससंठिया जण्हवीइ मुहे ।।१०।।

वेरुलिय-मणिकवाडा कणगमया विविह-रयण-पडिपुण्णा । ससि-सूर-चक्क-लक्खण अणुसमवयणोववत्ती या ।।११।।

पलिओवमट्ठिईया णिहिसरिणामा य तत्थ खलु देवा । जेसिं ते आवासा अक्किज्जा आहिवच्चा य ।।१२।।

एए णव णिहिरयणा पभूय-धण-रयण-संचय-समिद्धा । जे वसमुवगच्छंति भरहाहिवचक्कट्टीणं ।।१३।।[1]

तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ ।

एवं मज्जणघरपवेसो-जाव-सेणि-प्पसेणिसद्दावणया-जाव-णिहिरयणाणं अट्ठाहियं महामहिमं करेइ ।

५६० तए णं मे भरहे राया णिहिरयणाणं अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइरयणं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"गच्छ णं भो देवाणुप्पिया! गंगामहाणईए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं दुच्चं पि सगंगासागर-गिरि-मेरागं सम-विसम-णिक्खुडाणि य ओअवेहि, ओअइत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि" त्ति ।

तए णं से सुसेणे तं चेव पुव्ववण्णियं भाणियव्वं-जाव-ओअवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ.....पडिविसज्जेइ-जाव-भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।

विणीयं रायहाणिं पडि गमणं

५६१ तए णं से दिव्वे चक्करयणे अन्नया कयाइ आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्ख-पडिवण्णे जक्ख-सहस्स-संपरिवुडे दिव्वतुडिय-जाव-आपूरेंते चेव विजयक्खंधावार-णिवेसं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं विणीयं रायहाणिं अभिमुहे पयाए यावि होत्था ।

तए णं से भरहे राया-जाव-पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-जाव-कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं-जाव-पच्चप्पिणंति ।।

तए णं से भरहे राया अज्जियरज्जो णिज्जियसत्तू उप्पण्ण-समत्त-रयणे चक्करयणप्पहाणे णव-णिहिवई समिद्धकोसे बत्तीसरायवरसहस्साणुयायमग्गे सट्ठीए वरिससहस्सेहिं केवलकप्पं भरहं वासं ओअवेइ, ओअवेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

---

१. एगमेगे णं महाणिही अट्ठचक्कवालपतिट्ठाणे अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ।
एगमेगे णं महाणिही णव-णवजोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते । एगमेगस्स ण रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णव महाणिहिओ पण्णत्ता, तं जहा—णेसप्पे पंडुयए जाव सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ।।

ठाणं अ० ९, सु० ६७३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं हय-गय-रह-तहेव-जाव-अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे ।"
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा–
सोत्थियसिरिवच्छ-जाव-दप्पणे ।
तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगार दिव्वा य छत्तपडागा-जाव-संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंड-जाव-अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।
तयणंतरं च णं सत्त एगिंदियरयणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तं जहा– १चक्करयणे २ छत्तरयणे ३ चम्मरयणे ४ दंडरयणे ५ असिरयणे ६ मणिरयणे ७ कागणिरयणे ।

५६२ तयणंतरं च णं णव महाणिहिओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तं जहा– णेसप्पे पंडुयए-जाव-संखे,
तयणंतरं च णं सोलस देवसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं बत्तीसं रायवरसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं सेणावइरयणे पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिए ।
एवं गाहावइरयणे वड्ढइरयणे पुरोहियरयणे,
तयणंतरं च णं इत्थिरयणे पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिए ।
तयणंतरं च णं बत्तीसं उडुकल्लाणिया सहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं बत्तीसं जणवयकल्लाणिया सहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं बत्तीसं बत्तीसइबद्धा णाडग-सहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं तिण्णि सट्ठा सूयसया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।[1]
तयणंतरं च णं चउरासीइं आससयससहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं चउरासीइं हत्थि-सयसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं चउरासीइं रह-सयसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं छण्णउई मणुस्सकोडीओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तयणंतरं च णं बहवे राईसर-तलवर-जाव-सत्थवाहप्पभिइओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

५६३ तयणंतरं च णं बहवे असिग्गाहा लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा फलगग्गाहा परसुग्गाहा पोत्थयग्गाहा वीणग्गहा कूयग्गाहा हडप्फग्गाहा दीवियग्गाहा सएहिं सएहिं रूवेहिं,
एवं वेसेहिं चिंधेहिं निओएहिं सएहिं सएहिं वत्थेहिं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

५६४ तयणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकारगा खेड्डुकारगा दवकारगा चाडुकारगा कंदप्पिया कुक्कुइया मोहरिया गायंता य दीवंता य, वायंता य, नच्चंता य, हसंता य, रमंता य, कीलंता य, सासेंता य, सावेंता य, जावेंता य, रावेंता य, सोभेंता य, सोभावेंता य, आलोयंता य, जयजयसद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
एवं उववाइयगमेणं - जाव - तस्स रण्णो पुरओ महआसा आसघरा उभओ पासिं णागा णागधरा पिट्ठओ रहा रहसंगेल्ली अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

---

१ इमाओ अट्ठारस सेणि-पसेणीओ–
कुंभार१ पट्टइल्ला२, सुवण्णकारा३ य सूवकारा य । गंधव्वा५ कासवगा६, मालाकारा७ य कच्छकरा८ ॥१॥
तंबोलिया य एए, नवप्पयारा य नारुआ भणिया । अह णं णवप्पयारे, कारुअवण्णे पवक्खामि ॥२॥
चम्मयर जंतपीलग , गंछिय३ छिंपा य कंसकारे य । सीवग६ गुआर७ भिल्ला८ धीवर९ वण्णाइ अट्ठदस ॥३॥
जम्बु० व० ३, सू० ४३ टीका ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६५ तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थए-सुकय-रइय-वच्छे-जाव-अमरवइ-सण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती चक्करयण-देसियमग्गे अणेग-राय-वर-सहस्साणुयाय-मग्गे-जाव-समुद्द-रवभूयं पिव करेमाणे करेमाणे सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए-जाव-णिग्घोसणाइय-रवेणं गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-जाव-जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे वससाणे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विणीयाए रायहाणीए अदूरसामंते दुवालस-जोयणायामं णवजोयण-वित्थिण्णं-जाव-खंधा-वार-णिवेसं करेइ, करित्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावित्ता-जाव-पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता विणीयाए रायहाणीए अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता जाव-अट्ठमभत्तं पडिजागरमाणे पडिजागरमाणे विहरइ ।

५६६ तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता तहेव-जाव-अंजणगिरि-कूड-सण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे । तं चेव सव्वं जहा हेट्ठा ।
णवरं णव महाणिहओ चत्तारि सेणाओ ण पविसंति ।
सेसो सो चेव गमो-जाव-णिग्घोसणाइएणं विणीयाए रायहाणीए मज्झं-मज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवर-वडिंसग-पडिदुवारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

५६७ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसमाणस्स अप्पेगइया देवा विणीयं रायहाणिं सब्भंतर-बाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं करेंति ।
अप्पेगइया देवा मंचाइमंचकलियं करेंति । एवं सेसेसु वि पएसु अप्पेगया देवा णाणाविह-राग-वसणुस्सिय-धयपडागा-मंडियभूमियं करेंति । अप्पेगइया देवा लाउल्लोइयमहियं करेंति, अप्पेगइया देवा- गंधवट्टिभूयं करेंति, अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासिंति, सुवण्ण-रयण-वइर-आभरण-वासं वासेंति ।

५६८ तए णं तस्सं भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसमाणस्स सिंघाडग-जाव-महापहपहेसु बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया इड्ढिसिया कब्बिसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया णंगलिया मुहमंगलिया पूसमाणया बद्धमाणया लंख-मंखमाइया ताहिं ओरालाहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हियय-गमणिज्जाहिं हियय-पल्हायणिज्जाहिं वग्गूहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता य एवं वयासी–
"जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! भद्दं ते अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि इंदो विव देवाणं, चंदो विव ताराणं,–चमरो विव असुराणं, धरणो विव नागाणं, बहूइं पुव्वसयसहस्साइं बहुईओ पुव्वकोडीओ बहुईओ पुव्वकोडाकोडीओ विणीयाए रायहाणीए चुल्लहिमवंत-गिरि-सागर-मेरागस्स य केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-सण्णिवेसेसु सम्मं पयापालणोवज्जिय-लद्धजसे महया-जाव-आहेवच्चं पोरेवच्चं-जाव-विहराहि" त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ।

भरहेण देवाईणं सक्कारो पडिविसज्जणं य

५६९ तए णं से भरहे राया–
णयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे २
वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे २
हिययमालासहस्सेहिं उण्णंदिज्जमाणे२
मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे२
कंतिरूवसोहग्गगुणेहिं पिच्छिज्जमाणे२
अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे२
दाहिणहत्थेणं बहूणं णर-णारी-सहस्साणं अंजलिमाला-सहस्साइं पडिच्छेमाणे२
भवणपंतीसहस्साइं समइच्छमाणे२
तंती-तल-तुडिय-गीय-वाइय-रवेणं महुरेणं मणहरेणं मंजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्झमाणे२ जेणेव सए गिहे जेणेव सए भवण-वर-वडिंसयदुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ, ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सोलस देवसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता बत्तीसं रायसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता सेणावइरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं गाहावइरयणं वड्ढइरयणं पुरोहियरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता तिण्णि सट्ठे सूअसए सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता अण्णेवि बहवे राईसर-जाव-सत्थवाहप्पभिइओ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ।

इत्थीरयणेणं बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्सेहिं बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्सेहिं बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं णाडयसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे भवणवरवडिंसगं अईइ जहा कुबेरो व्व देवराया केलास-सिहरि-सिंगभूयंति ।

तए णं से भरहे राया मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधिपरियणं पच्चुवेक्खइ, पच्चुवेक्खित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता - जाव - मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारित्ता उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धेहिं णाडएहिं उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवणच्चिज्जमाणे उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे महया-जाव-भुंजमाणे विहरइ ।।

भरहस्स रायाभिसेयसंकप्पो

५७० तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ रज्जधुरं चिंतेमाणस्स इमेयारूवे-जाव-समुप्पज्जित्था–

"अभिजिए णं मए णियग-बलवीरिय-पुरिसक्कारपरक्कमेण चुल्लहिमवंत-गिरिसागरमेराए केवलकप्पे भरहे वासे, तं सेयं खलु मे अप्पाणं महया रायाभिसेएणं अभिसेएणं अभिसिंचावित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं पाउप्पभायाए - जाव - जलंते जेणेव मज्जणघरे-जाव-पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता सोलस देवसहस्से, बत्तीसं रायवरसहस्से सेणाइरयणे-जाव-पुरोहियरयणे तिण्णि सट्ठे सूयसए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ अण्णे य बहवे राईसरतलवर--जाव-सत्थवाहप्पभियओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

" अभिजिए णं देवाणुप्पिया ! मए णियय-बलवीरिय - जाव - केवलकप्पे भरहे वासे तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं महयारायाभिसेयं वियरह ।"

५७१ तए णं ते सोलस देवसहस्सा-जाव-पभिइओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ ० करयल ० मत्थए अंजलिं कट्टु भरहस्स रण्णो एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेंति ।

तए णं से भरहे राया जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-जाव- अट्ठमभत्तिए पडिजागरमाणे पडिजागरमाणे विहरइ ।

देवेहिं अभिसेयमंडवकरणं

५७२ तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एगं महं अभिसेयमण्डवं विउव्वेह, विउव्वित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।"

तए णं ते आभिओगा देवा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ - जाव - 'एवं सामि'त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं णिसिरंति, तं जहा–

रयणाणं-जाव-रिट्ठाणं अहाबायरे पुग्गले परिसाडेंति, परिसाडित्ता अहासुहुमे पुग्गले परियादियंति, परियादिइत्ता दुच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं - जाव - समोहणंति, समोहणित्ता बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वंति ।

से जहाणामए – आलिंगपुक्खरेइ वा० ।

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगं अभिसेयमण्डवं विउव्वंति, अणेग-खंभ-सय-सण्णिविट्ठं - जाव - गंधवट्टिभूयं, पेच्छाघरमंडव-वण्णगो त्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५७३ तस्स णं अभिसेयमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगं अभिसेयपेढं विउव्वंति अच्छं सण्हं० ।
तस्स णं अभिसेयपेढस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवए विउव्वंति ।
तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते - जाव- तोरणा ।
तस्स णं अभिसेयपेढस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ।

सीहासणं

५७४ तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगं सीहासणं विउव्वंति ।
तस्स णं सीहासणस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते - जाव - दामवण्णगं समत्तं ति ।
तए णं ते देवा अभिसेयमंडवं विउव्वंति, विउव्वित्ता जेणेव भरहे राया - जाव - पच्चप्पिणंति ।

भरहेण अभिसेअमंडवपवेसो

५७५ तए णं से भरहे राया आभिओगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, पडिकप्पित्ता हयगय-जाव - सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह-जाव-पच्चप्पिणंति । तए णं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसइ-जाव - अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे ।

५७६ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगला जो चेव गमो विणीयं पविसमाणस्स सो चेव णिक्खममाणस्स वि-जाव-पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ. णिगच्छित्ता जेणेव विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अभिसेयमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभिसेयमंडवदुवारे आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठावेइ, ठावित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता इत्थीरयणेणं बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्सेहिं, बत्तीसाए जणवयकल्लाणियाहस्सेहिं, बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं णाडगसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अभिसेयमंडवं अणुपविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव अभिसेयपेढे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभिसेयपेढं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे अणुप्पयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाण-पडिरूवएणं दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीसं रायसहस्सा जेणेव अभिसेय-मण्डवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अभिसेयमंडवं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता अभिसेयपेढं अणुप्पयाहिणीकरेमाणा अणुप्पयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल-जाव-अंजलिं कट्टु भरहं रायाणं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावित्ता भरहस्स रण्णो णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा -जाव- पज्जुवासंति ।

भरहस्स महारायाभिसेओ

५७७ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावइरयणे-जाव-सत्थवाहप्पभिइओ ते वि तह चेव । णवरं दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं - जाव - पज्जुवासंति ।
तए णं से भरहे राया आभिओगे देवेसद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ममं महत्थं महग्घं महरिहं महारयाभिसेयं उवट्ठवेह ।"
तए णं ते आभिओइया देवा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्त -जाव- उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति ।
एवं जहा विजयस्स तहा इत्थं पि-जाव-पंडगवणे एगओ मिलायंति, एगओ मिलाइत्ता जेणेव दाहिणड्ढभरहे वासे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विणीयं रायहाणिं अणुप्पयाहिणीकरेमाणा अणुप्पयाहिणीकरेमाणा जेणेव अभिसेयमंडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं महारायाभिसेयं उवट्ठवेंति ।
तए णं तं भरहं रायाणं बत्तीसं रायसहस्सा सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-णक्खत्त-मुहुत्तंसि उत्तरपोट्ठवयाविजयंसि तेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साभाविएहि य उत्तरवेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहिं सुरभि-वर-वारि-पडिपुण्णेहिं -जाव- महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति, अभिसेओ जहा विजयस्स, अभिसंचित्ता पत्तेयं पत्तेयं -जाव- अंजलिं कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जहा पविसंतस्स भणिया -जाव- विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ।

नयरे दुवालससंवच्छरियपमोयघोसणं

५७८ तए णं तं भरहं रायाणं सेणावइरयणे -जाव- पुरोहियरयणे तिण्णि य सट्ठा सूयसया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ अण्णे य बहवे -जाव- सत्थवाहप्पभिइओ एवं चेव अभिसिंचंति, तेहिं वरकमलपइट्ठाणेहिं तहेव -जाव- अभिथुणंति य सोलस देवसहस्सा एवं चेव । णवरं पम्हलसुकुमालाए -जाव- मउडं पिणद्धेंति । तयणंतरं च णं दद्दरमलयसुगंधिएहिं गंधेहिं गायाइं अब्भक्खेंति दिव्वं च सुमणोदामं पिणद्धेंति ।
किं बहुणा ?, गंठिम-वेढिम -जाव- विभूसियं करेंति ।
तए णं से भरहे राया महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिखंधवरगया विणीयाए रायहाणीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर -जाव- महापहपहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं -जाव- सपुरजण-जाणवयं दुवालस-संवच्छरियं पमोयं घोसेह, घोसित्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणह त्ति ।"
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा० हरिसवसविसप्पमाणहियया विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव हत्थिखंधवरगया -जाव- घोसेंति, घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

पासायं पडिगमणं

५७९ तए णं से भरहे राया महया महया रायाभिसेएणं अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता इत्थिरयणेणं- -जाव-णाडग-सहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अभिसेय-पेढाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता अभिसेयमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंजणगिरि-कूड-सण्णिभं गयवइं-जाव-दुरूढे ।
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीसं रायसहस्सा अभिसेयपेढाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति ।
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावइरयणे - जाव - सत्थवाहप्पभिइओ अभिसेयपेढाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति ।
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ -जाव- संपट्ठिया । जो वि य अइगच्छमाणस्स गमो पढमो कुबेरावसाणो सो चेव इहंपि कमो सक्कारजढो णेयव्वो -जाव- कुबेरे व्व देवराया केलासं सिहरिसिंगभूयंति ।

५८० तए णं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता -जाव- भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारित्ता भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं -जाव- भुंजमाणे विहरइ ।
तए णं से भरहे राया दुवालस-संवच्छरियंसि पमोयंसि णिव्वत्तंसि समाणंसि जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-जाव-मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-जाव-सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीयित्ता सोलस देवसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ पडिविसज्जेत्ता बत्तीसं रायवरसहस्सा सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता सेणावइरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता-जाव-पुरोहियरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं तिण्णि सट्ठे सूयारसए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता अण्णे य बहवे राईसरतलवर-जाव-सत्थवाहप्पभिइओ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता उप्पिं पासायवरगए-जाव-विहरइ ।।

रयणमहाणिहीणं उप्पत्तिठाणं

५८१ भरहस्स रण्णो चक्करयणे १ दंडरयणे २ असिरयणे ३ छत्तरयणे ४ एए णं चत्तारि एगिंदियरयणा आउहघरसालाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुप्पण्णा,
१ चम्मरयणे २ मणिरयणे ३ कागणिरयणे णव य महाणिहओ एए णं सिरिघरंसि समुप्पण्णा,
१ सेणावइरयणे, २ गाहावइरयणे, ३ वड्ढइरयणे, ४ पुरोहियरयणे एए णं चत्तारि मणुयरयणा विणीयाए रायहाणीए समुप्पण्णा ।
१ आसरयणे २ हत्थिरयणे एए णं दुवे पंचिंदियरयणा वेयड्ढगिरिपायमूले समुप्पण्णा ।
सुभद्दा इत्थीरयणे उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेढीए समुप्पण्णे ।

भरहस्स सासणं

५८२ तए णं से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं, णवण्हं महाणिहीणं, सोलसण्हं देवसाहस्सीणं, बत्तीसाए रायसहस्साणं, बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्साणं, बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्साणं, बत्तीसाए बत्तीसइबद्धाणं णाडगसहस्साणं, तिण्हं सट्ठीणं सूयार-सयाणं, अट्ठारसण्हं सेणिप्पसेणीणं, चउरासीईए आससयसहस्साणं, चउरासीईए दंतिसयसहस्साणं, चउरासीईए रहसयसहस्साणं, छण्णउईए मणुस्सकोडीणं, बावत्तरीए पुरवरसहस्साणं,[1] बत्तीसाए जणवयसहस्साणं, छण्णउईए गामकोडीणं[2] णवणउईए दोणमुहसहस्साणं, अडयालीसाए पट्टणसहस्साणं,[3] चउव्वीसाए कब्बडसहस्साणं, चउव्वीसाए मडंबसहस्साणं, वीसाए आगरसहस्साणं, सोलसण्हं खेडसहस्साणं, चउदसण्हं संवाहसहस्साणं, छप्पण्णाए अंतरोदगाणं, एगूणपण्णाए कुरज्जाणं, विणीयाए रायहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर-जाव-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं भट्टित्तं सामित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे ओहयणिहएसु कंटएसु उद्धियमलिएसु सव्वसत्तूसु णिज्जिएसु भरहाहिवे णरिंदे वरचंदणचच्चियंगे वरहार-रइय-वच्छे, वर-मउड-विसिट्ठए, वर-वत्थ-भूसण-धरे, सव्वोउय-सुरहि-कुसुमवर-मल्ल-सोभिय-सिरे, वर-णाडग-णाडइज्ज-वरइत्थिगुम्मसद्धिं संपरिवुडे सव्वोसहि-सव्वरयण-सव्वसमिइसमग्गे संपुण्णमणोरहे हयामित्तमाणमहणे पुव्वकय-तवप्पभाव-णिविट्ठसंचियफले भुंजइ माणुस्सए सुहे भरहे णामधेज्जे त्ति ।।

भरहस्स आयंसघरंसि केवलनाणं

५८३ तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ जेणेव मज्जणधरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता -जाव- ससि व्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमई, पडिणिक्खमित्ता जेणेव आयंसघरे जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता आयंसघरंसि अत्ताणं देहमाणे देहमाणे चिट्ठइ ।
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सुभेणं परिणामेण पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं विसुज्झमाणीहिं ईहापोह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स तयावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवर-नाण-दंसणे समुप्पण्णे ।

भरहस्स अट्ठावयगमणं तत्थ णिव्वाणं च

५८४ तए णं से भरहे केवली सयमेपाभरणालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता आयंसघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतेउरमज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता दसहिं रायवरसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरइ, विहरित्ता जेणेव अट्ठावए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्ठावयं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहइ, दुरूहित्ता मेघघणसण्णिगासं देवसण्णिवायं पुढविसिलावट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्त-पाण-पडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे अणवकंखमाणे विहरइ ।

---

१. सम० ७२, सु० ६ । २. सम० ९६, सु० १ ।
३. सम० ४८, सु० १ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८५ तए णं से भरहे केवली सत्तत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता[1], एगं वाससहस्सं मंडलियरायमज्झे वसित्ता, छ पुव्वसयसहस्साइं वाससहस्सूणगाइं महारायमज्झे वसित्ता[2], तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता[3], एगं पुव्वसयसहस्सं देसूणगं केवलिपरियायं पाउणित्ता तमेव बहुपडिपुण्णं सामण्णपरियायं पाउणित्ता चउरासीइपुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पाउणित्ता[4] मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं सवणेणं णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं खीणे वेयणिज्जे आउए णामे गोए कालगए वीइक्कंते समुज्जाए छिण्ण-जाइ-जरामरण-बंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परणिव्वुडे अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

इइ भरहचक्किचरियं समत्तं ।। जंबु० व० ३

भरहस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठपुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणाइं तं जहा—१ आइच्चजसे, २ महासच्चे, ३ अइबले, ४ महाबले, ५ तेयवीरिए ६ कित्तविरए । ७ दंडवीरिए, ८ जलवीरिए ।।

ठाणं अ० ८, सु० ६१६ ।।

१० चक्कवट्टिसामण्णं

अड्ढाइज्जेसु दीवेसु चक्कवट्टिविजया

५८६ जंबुद्दीवे णं दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—
बत्तीसं महाविदेहे, दो भरहेरवए ।। सम० स० ३४, सु० २।

५८७ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—
कच्छे, सुकच्छे, महाकच्छे, कच्छगावती, आवत्ते, मंगलावत्ते, पुक्खले, पुक्खलावती ।
जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—
वच्छे, सुवच्छे, महावच्छे, वच्छगावती, रम्मे, रम्मगे, रमणिज्जे, मंगलावती ।
जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—
पम्हे, सुपम्हे, महापम्हे, पम्हगावती, संखे, णलिणे, कुमुए, सलिलावती ।
जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—
वप्पे, सुवप्पे महावप्पे, वप्पगावती, वग्गू, सुवग्गू, गंधिल्ले, गंधिलावती ।

५८८ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
खेमा, खेमपुरी, रिट्ठा, रिट्ठपुरी, खग्गी, मंजूसा, ओसधी, पुंडरीगिणी ।
जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए दाहिणे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
सुसीमा, कुंडला, अपराजिया, पभंकरा, अंकावई, पम्हावई, सुभा, रयणसंचया ।
जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
आसपुरा, सीहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अवराजिता, अरया, असोया, वीतसोगा ।
जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणईए उत्तरे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

---

१ सम० ७७ सु० १।

२ भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइं महाराया हुत्था । ठाणं० अ० ६, सु० ५१९।
भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ् पुव्वसयसहस्साइं रायमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।
सम० सु० १२९।

३ सम० ८३ सु० ४। ४ (क) सम० ८४, सु० २। (ख) चक्कीणं सव्वाउ —
गाहाओ— चउरासीती बावत्तरी य, पुव्वाण सयसहस्साइं । पंच य तिन्नि य एगं च, सयसहस्सा उ वासाणं ।।१।।
पचाणउतिसहस्सा चउरासीती य अट्ठमे सट्ठी । तीसा य दस य तिन्नि य, अपच्छिमे सत्त वाससया ।।२।।
आव० नि० गा० ३९५, ३९६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजया, वेजयंति, जयंती, अपराजिया, चक्कपुरा, खग्गपुरा, अवज्झा, अउज्झा ।
ठाणं अ० ८, सु० ६३७।, जंबु० व० ४ सु० ९३, ९४, ९५, ९६।, जंबु० व० ४ सु० १०२।

५८९ एवं धायइसंडदीवे वि ।

५९० एवं पुक्खरवरदीवड्ढे वि । ठाणं अ० ८, सु० ६४१ ।

५९१ धायइसंडे णं दीवे अट्ठसट्ठिं चक्कवट्टिविजया, अट्ठसट्ठिं रायहाणीओ पण्णत्ताओ । सम० स० ६८, सु० ४ ।
पुक्खरवरदीवड्ढे णं अट्ठसट्ठिं चक्कवट्टिविजया, अट्ठसट्ठिं रायहाणीओ पण्णत्ताओ । सम० स० ६८ सु० ४ ।

जंबुद्दीवे भरहवासे बारसण्हं चक्कवट्टीणं तप्पिउ-माउ-इत्थिरयणाणं च नामाइं

५९२ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिपियरो होत्था तं जहा–
१ उसभे २ सुमित्तविजए, ३ समुद्दविजए य ४ अस्ससेणे य । ५ विस्ससेणे य ६ सूरे, ७ सुदंसणे ८ कत्तवीरिए य ।।१।।
९ पउमुत्तरे १० महाहरी, ११ विजए राया तहेव य । १२ बम्हे बारसमे वुत्ते, पिउनामा चक्कवट्टीणं ।।२।।
जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिमायरो होत्था, तं जहा–
१सुमंगला २जसवती, ३भद्दा ४सहदेवी ५अइर ६सिरिदेवी । ८तारा ९जाला १०मेरा, ११वप्पा १२चुलणी अपच्छिमा ।।१।।

५९३ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी होत्था, तं जहा–
१भरहो २सगरो ३मघवं, ४सणंकुमारो य रायसद्दूलो । ५संती ६कुंथू य ७अरो, हवइ ८सुभूमो य कोरव्वो ।।१।।
९नवमो य महापउमो, १०हरिसेणो चेव रायसद्दूलो । ११जयनामो य नरवई, १२बारसमो बंभदत्तो य ।।२।।

५९४ एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस इत्थिरयणा होत्था, तं जहा–
१पढमा होइ सुभद्दा, २भद्दा ३सुणंदा जया४ य ५विजया य । ६कण्हसिरी, ७सूरसिरी ८पउमसिरी ९वसुंधरा १०देवी ।।१।।
११लच्छिमई १२कुरुमई, इत्थिरयणाण नामाइं । सम० सु० १५८ ।

जंबुद्दीवे भरहे वासे आगमेस्सुस्सप्पिणीए चक्कवट्टिनामाइं

५९५ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टी भविस्संति, तं जहा—
संगहणीगाहा
१भरहे य २दीहदंते, ३गूढदंते य ४सुद्धदंते य । ५सिरिउत्ते ६सिरिभूई, ७सिरिसोमे य सत्तमे ।।१।।
८पउमे य ९महापउमे, १०विमलवाहणे ११विपुलवाहणे चेव । १२रिट्ठे बारसमे वुत्ते, आगमेस्सा भरहाहिवा ।।२।।

५९६ एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस पियरो भविस्संति, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति ।
सम० सु० १५८ ।

जम्बुद्दीवे आगमेस्सुस्सप्पिणीए एरवए वासे चक्कवट्टिआईणं संखा

५९७ जम्बुद्दीवे एरवएवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए–
बारस चक्कवट्टी भविसंस्त, बारस चक्कवट्टिपियरो भविस्संति, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति ।
सम० सु० १५८ ।

जंबुद्दीवे चक्कवट्टी–आई

५९८ जंबुद्दीवे णं भंते ! केवइआ जहण्णपए वा उक्कोसपए वा चक्कवट्टी सव्वग्गेणं पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णपदे चत्तारि,[1] उक्कोसपदे वीसं सव्वग्गेणं पण्णत्ता इति । बलदेवा तत्तिआ चेव जत्तिया चक्कवट्टी ।
वासुदेवा वि तत्तिया चेव त्ति । जंबु० व० ७, सु० १७३ ।

---

१ ठाणं अ० ३, उ० ४, सु० २३२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिण्हं तित्थयराणं चक्कवट्टित्तं

५९९ तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था, तं जहा– संती, कुंथू, अरो । ठाणं, अ० ३, उ० ४, सु० २३२।

सुभूम–बंभदत्ताणं नरयगमणं

६०० दो चक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अपइट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववण्णा, तं जहा– सुभूमे चेव, बंभदत्ते चेव ।[1] ठाणं, अ० २, उ० ४, सु० ११२।

६०१ जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे दस रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–
गाहा– चंपा महुरा वाराणसी य, सावत्थि तह य साएयं । हत्थिणउर कंपिल्लं, मिहिला कोसंबि रायगिहं ।

६०२ एयासु णं दससु रायहाणीसु दस रायाणो मुंडा भवेत्ता-जाव-पव्वइया, तं जहा–
१ भरहो, २ सगरो, ३ मघवं, ४ सणंकुमारो, ५ संती, ६ कुंथू, ७ अरे, ८ महापउमे, ९ हरिसेणे, १० जमणामे ।[2]
ठाणं अ० १०, सु० ७१८।

सगरो चक्कट्टी

६०३ एवं सगरो वि राया चाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व-जाव-पव्वइए त्ति ।। सम० सु० ७१ ।

हरिसेणे चक्कवट्टी

६०४ हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइं वाससयाइं महाराया होत्था । सम० सु० ८९ ।
हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइं वाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं-जाव-पव्वइए ।।१७५।।
सम० सु० ९७।

भरहाईणं सरीरुस्सेहो

भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था[3] बाहुबली णं अणगारे एवं चेव । बंभी णं अज्जा एवं चेव, एवं सुंदरी वि । ठाणं० अ० ५, उ० २, सु० ४३५ ।

६०५ सगरे णं राया चउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सम० ४५० सु० २ ।

चक्कवट्टिस्स हारे

६०६ सव्वस्स वि य णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घे मुत्तामणिमए हारे पण्णत्ते ।
सम० स० ६४, सु० ६

चक्कवट्टिस्स गाम-पुर-पट्टणसंखा

६०७ एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छण्णउइं छण्णउइं गामकोडीओ होत्था । सम० स० ९६, सु० १।

---

१ बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं सत्त य वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे नरए उववण्णे । ठाणं, अ० ७, सु० ५६२ ।

२. उत्त० अ० १८, गा० ३८-४१।

३. क. चक्कीणं उस्सेहो :
गाहाओ-पंच सत अद्धपंचम, बायाला चेव अद्धधणुयं च । चत्ता दिवड्ढधणुयं च, चउत्थे पंचमे चत्ता ।।१।।
पणुतीसा तीसा पुण, अट्ठावीसा य वीस धणुउगाणि । पन्नरस बारसेव य, अपच्छिमा सत्त य धणूणि ।।२।।
ख. सम० स० ५००, सु० ४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिं पुरवरसाहस्सीओ पण्णत्ताओ । सम० स० ७२, सु० ६।
एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा पण्णत्ता । सम० स० ४८, सु० १।

निहिरयणा :

६०८ जंबुद्दीवे दीवे केवइया निहिरयणा सव्वग्गेणं पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि छलुत्तरा णिहिरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ।
जंबुद्दीवे दीवे केवइआ णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! जहण्णपए छत्तीसं, उक्कोसपए दोण्णि सत्तरा णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ।
सम० व० ७, सु० १७३।

६०९ एगमेगे णं महाणिही अट्ठचक्कवालपतिट्ठाणे अट्ठट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ।
ठाणं अ० ८, सु० ६२।

एगमेगे णं महाणिही णव-णव जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ।
एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णव महाणिहिओ पण्णत्ता ।
ठाणं अ० ९, सु० ६९३ ।

चक्कवट्टिस्स चउद्दस-रयणाइं

६१० एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त एगिंदियरतणा पण्णत्ता, तं जहा-
१ चक्करयणे, २ छत्तरयणे, ३ चम्मरयणे, ४ दंडरयणे, ५ असिरयणे, ६ मणिरयणे, ७ काकणिरयणे ।

६११ एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदियरतणा पण्णत्ता, तं जहा-
१ सेणावतिरयणे, २ गाहावतिरयणे, ३ वड्ढइरयणे, ४ पुरोहितरयणे, ५ इत्थिरयणे, ६ आसरयणे, ७ हत्थिरयणे ।[1]
सम० स० १४, सु० ७ ।

काकिणिरयणागिई

६१२ एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए काकणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अधिकरणिसंठिते ।।
ठाणं, अ० ८, सु० ६३३।

जंबुद्दीवे एगिंदियरयणाणं संखा-परिभोगनिरूवणं

६१३ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइआ एगिंदिअरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ?
गोयमा ! दो दसुत्तरा एगिंदिअरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ।
जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया एगिंदियरयणसया, परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! जहण्णपए अट्ठावीसं, उक्कोसेणं दोण्णि दसुत्तरा एगिंदिअरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ।

जंबुद्दीवे पंचिंदियरयणाणं संखा-परिभोगनिरूवणं

६१४ जंबुद्दीवे दीवे केवइया पंचिंदिअरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ?
गोयमा ! दो दसुत्तरा पंचिंदिअरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ।
जंबुद्दीवे दीवे जहण्णपदे वा उक्कोसपदे वा केवइआ पंचिंदिअरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! जहण्णपदे अट्ठावीसं, उक्कोसपए दोण्णि दसुत्तरा पंचिंदिअरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ।
जंबु० व० ७, सु० १७३।

---

१ ठाणं, अ० ७, सु० ५५८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११ बलदेव-वासुदेवसामण्णं

बलदेव-वासुदेवाणं पिउ-माउयाइ

६१५ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेवपितरो होत्था, तं जहा–
गाहा– पयावती य बंभे रोद्दे सोमे सिवे ति य । महसिहे अग्गिसिहे नवमे य वसुदेवे ।।१।।

६१६ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव वासुदेवमायरो होत्था, तं जहा–
गाहा– मियावई उमा चेव, पुहवी सीया य अम्मया । लच्छिमती सेसवती, केकई देवई इ य ।।१।।

६१७ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव बलदेवमायरो होत्था, तं जहा–
गाहा– भद्दा तह सुभद्दा य, सुप्पभा य सुदंसणा । विजया य वेजयंती, जयंती अपराइया ।।१।।
णवमिया रोहिणी, बलदेवाण मायरो ।

६१८ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए नव दसारमंडला होत्था, तं जहा–
उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगमा सव्वजण-णयण-कंता ओहबला अतिबला महाबला अणिहता अपराइया सत्तुमद्दणा रिपुसहस्स-माण-महणा साणुक्कोसा अमच्छरा अचवला अचंडा मियमंजुल-पलाव-हसिया गंभीर-मधुर-पडिपुण्ण-सच्चवयणा अब्भुवगय-वच्छला सरण्णा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजात-सव्वंग-सुंदरंगा ससि-सोमागार-कंत-पिय-दंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पभारा गंभीर-दरिसणिज्जा तालद्धउव्विद्ध-गरुल-केऊ महाधणु-विकड्ढगा महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्ध-कित्तिपुरिसा विउलकुल-समुब्भवा महारयण-विहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुल-वंस-तिलया अजिया अजियरहा हल-मुसल-कणग-पाणी संख-चक्क-गय-सत्ति-नंदगधरा पवरुज्जल-सुक्कंत-विमल-गोत्थुभ-तिरीडधारी कुंडल-उज्जोइयाणणा पुंडरीय-णयणा एकावलि-कंठलइय-वच्छा सिरिवच्छ-सुलंछणा वरजसा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइत-पलंब-सोभंत-कंत-विकसंत-विचित्त-वरमाल-रइयवच्छा अट्ठसय-विभत्त-लक्खण-पसत्थ-सुंदर-विरइयंगमंगा मत्तगयवरिंद-ललिय-विक्कम-विलसियगई सारय-नवथणियमधुर-गंभीर-कोंचनिग्घोस-दुंदुभिसरा कडिसुत्तगनील-पीय-कोसेयवाससा पवरदित्त-तेया नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुयवसभकप्पा अब्भहियं राय-तेय-लच्छीए दिप्पमाणा नीलग-पीतग-वसणा दुवे-दुवे रामकेसवा भायरो होत्था, तं जहा–
संगहणी-गाहाओ– तिविट्ठू य दुविट्ठू य, सयंभू पुरिसुत्तमे । पुरिससीहे तह पुरिसपुंडरीए, दत्ते नारायणे, कण्हे ।।१।।
अयले, विजए भद्दे, सुप्पभे य सुदंसणे । आणंदे णंदणे, पउमे रामे यावि अपच्छिमे ।।२।।

६१९ एतेसि णं णवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया नव-नव नामधेज्जा होत्था, तं जहा–
विस्सभूई पव्वयए, धणदत्त समुद्दत्त इसिवाले । पियमित्त ललियमित्ते, पुणव्वसू गंगदत्ते य ।।१।।
एयाइं नामाइं, पुव्वभवे आसि वासुदेवाणं । एत्तो बलदेवाणं, जहक्कमं कित्तइस्सामि ।।२।।
विसनंदी सुबंधू य, सागर दत्ते असोगललिए य । वाराह धम्मसेणे, अपराइय रायललिए य ।।३।।

६२० एतेसि णं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था, तं जहा–
गाहाओ– संभूत सुभद्दे सुदंसणे, य सेयंसे कण्ह गंगदत्ते य । सागरसमुद्दनामे, दुमसेणे य णवमए ।।१।।
एते धम्मायरिया, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं । पुव्वभवे आसिण्हं, जत्थ निदाणाइं कासी य ।।२।।

६२१ एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नव नियाणभूमीओ होत्था, तं जहा–
महुरा य कणगवत्थू, सावत्थी पोयणं च रायगिहं । कायंदी कोसंबी, मिहिलपुरी हत्थिणपुरं च ।।१।।
एतेसि णं नवण्हं वासुदेवाण नियाणकारणा होत्था,
गावी जुवे य संगामे इत्थी पराइयो रंगे । भज्जाणुराग गोट्ठी,, पराइड्ढी माउयाइ य ।।१।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२२ एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं नव पडिसत्तू होत्था, तं जहा–
अस्सग्गीवे तारए, मेरए मधुकेढवे निसुंभे य । बलि पहराए तह रावणे य नवमे जरासंधे ।।१।।
एए खलु पडिसत्तू, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं । सव्वे वि चक्कजोही सव्वे वि हया[1] सचक्केहिं ।।२।।
एक्को य सत्तमाए, पंच य छट्ठीए पंचमी एक्को । एक्को य चउत्थीए, कण्हो पुण तच्चपुढ़वीए[2] ।।१।।
अणिदाणकडा रामा, सव्वे वि य केसवा नियाणकडा । उड्ढंगामी रामा, केसव सव्वे अहोगामी ।।२।।
अट्ठंतकडा रामा, एगो पुण बंभलोयकप्पंमि । एक्का से गब्भवसही, सिज्झिस्सइ आगमेस्साणं ।।३।।

सम० सु० १५८।

जंबुद्दीवे आगमिस्सुस्सप्पिणीए बलदेव-वासुदेवे पडुच्च विविहं परूवणं

६२३ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए–
नव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्संति । नव वासुदेवमायरो भविस्संति । नव बलदेवमायरो भविस्संति । नव दसारमंडला भविस्संति, तं जहा–
उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा । ओयंसी तेयंसी एवं सो चेव वण्णओ भाणियव्वो-जाव-नीलग-पीतगवसणा दुवे दुवे राम-केसवा भायरो भविस्संति, तं जहा–
गाहाओ– नंदे य नंदमित्ते, दीहबाहू तहा महाबाहू । अइबले महाबले, बलभद्दे य सत्तमे ।।
दुविट्ठू य तिविट्ठू य, आगमिस्साण विण्हुणो । जयंते विजये भद्दे, सुप्पभे य सुदंसणे ।।
आणंदे नंदणे पउमे, संकरिसणे य अपच्छिमे ।।

६२४ एएसि णं नवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्संति ।
नव धम्मायरिया भविस्संति । नव नियाणभूमीओ भविस्संति ।
नव नियाणकारणा भविस्संति । नव पडिसत्तू भविस्संति, तं जहा–
गाहाओ– तिलए य लोहजंघे वइरजंघे, य केसरी पहराए । अपराइए य भीमे, महाभीमे य सुग्गीवे ।।
एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं । सव्वे वि चक्कजोही, हम्मीहिंती सचक्केहिं ।।

६२५ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए णव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्संति । णव वासुदेवमायरो भविस्संति । णव बलदेवमायरो भविस्संति । णस दसारमंडला भविस्संति, तंजहा–
उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा-जाव-दुवे दुवे राम-केसवा भायरो भविस्संति । णव पडिसत्तू भविस्संति । णव पुव्वभवणामधेज्जा । णव धम्मायरिया । णव णियाणभूमीओ । णव णियाणकारणा ।
आयाए एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा । एवं दोसु वि आगमिस्साए भाणियव्वा ।।

सम० सु० १५९।

बलदेवाणमुच्चत्तं सव्वाउयं च

६२६ अयले णं बलदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

सम० स० ८, सु० ३।

६२७ विजए णं बलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

सम० स० ७३ सु० २।

६२८ सुप्पभे णं बलदेवे एकावण्णं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

सम० स० ५१, सु० ४।

---

१. ठाणं० अ० ९, सु० ६७२।
२. अंत० व० ५ अ० १ सु० ९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२९ नंदणे णं बलदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सम० स० ३५. सु० ४।

६३० रामे णं बलदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सम० स० १०. सु ६।

६३१ रामे णं बलदेवे दुवालस वाससयाइं सव्वाउयं[1] पालित्ता देवत्तं गए । सम० स० १२, सु ५।

६३२ तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइं वाससयसहस्साइं महाराया होत्था । सम० स० ८०, सु० ४।

वासुदेव–पइण्णगं

६३३ तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सम० स० ८०, सु० २।

६३४ तिविट्ठे णं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववण्णे । सम० स० ८४, सु० ४।

६३५ सयंभुस्स णं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था । सम० स० ९, सु० ४।

६३६ पुरिसोत्तमे णं वासुदेवे पण्णासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सम० स० ५० सु० ३।

६३७ पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे । सम० सु० १३३।

६३८ पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववण्णे । ठाणं अ० १०, सु० ७५३।

६३९ दत्ते णं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सम० स० ३५, सु० ३ ।

६४० कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं[2], दस य वाससयाइं सव्वाउयं[3] पालइत्ता तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववण्णे । ठाणं अ० १०, सु० ७३५।

पढमो खंधो समत्तो ।

---

१. बलदेवाणं सव्वाउ :

गाहाओ :— पंचासीई१ पण्णत्तरी२ अ, पण्णट्ठि३ पंचवण्णा४ य ।
सत्तरस५ सयसहस्सा, पंचमह आउअं होइ ।।१।।
पंचासीइ सहस्सा७, पण्णट्ठी८ तह य चेव पण्णरस ।
बारस सयाइं९ आउं, बलदेवाणं जहासंखे ।।२।।

आव० नि० चू० गा० ४०६, ४०७।

२. सम० स० १०, सु ५।

३. वासुदेवाणं सव्वाउ—

गाहा — चउरासीइ१ बिसत्तरि२ सट्ठी३ तीसा४ य दस य लक्खाइं५ । पणसट्ठिसहस्साइं६-७ छप्पण्णा बारसेगं च ८-९
विशे० भा० २ गा० १७६२।

गाहा — पढमो धणूणऽसीई सत्तरि सट्ठी अ पण्ण पणयाला । अउणत्तीसं च धणू, छव्वीसा सोलस दसेव ।।
वासुदेवाणमुच्चत्तं ।

विशे० भा० २, गा० १७६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुतीयो खंधो

समणकहाणगाणि

अज्झयणा

१.	विमलतित्थे	महब्बलो
२.	मुणिसुव्वयतित्थे	कत्तियसेट्ठि-आईणं कहाणयं
३.	मुणिसुव्वयतित्थे	गंगदत्तो
४.	अरिट्ठनेमितित्थे	चित्तसंभूइज्जकहाणयं
५.	अरिट्ठनेमितित्थे	निसढो
६.	अरिट्ठनेमितित्थे	गोयमो अण्णे य
७.	अरिट्ठनेमितित्थे	अणीयसो कुमारो अण्णे य
८.	अरिट्ठनेमितित्थे	गजसुकमालाई
९.	अरिट्ठनेमितित्थे	सुमुहाइकुमारा
१०.	अरिट्ठनेमितित्थे	जालिआई समणा
११.	अरिट्ठनेमितित्थे	थावच्चापुत्ते अण्णे य
१२.	अरिट्ठनेमितित्थे	रहनेमिसमणस्स राजीमइए समुद्धारो
१३.	पासतित्थे	अंगई, सुपइट्ठो, पुण्णभद्दाई य
१४.	पासतित्थे	जियसत्तु-सुबुद्धिकहाणयं
१५.	महावीरतित्थे	नमिरायरिसी
१६.	महावीरतित्थे	उसहदत्त-देवाणंदाणं चरियं
१७.	महावीरतित्थे	बालतवस्सी मोरियपुत्ते तामली अणगारे
१८.	महावीरतित्थे	अद्दगस्स अण्णतित्थिएण सह वादो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. महावीरतित्थे अइमुत्तए कुमारसमणे
२०. महावीरतित्थे अलक्करायाा
२१. महावीरतित्थे मेहकुमारे समणे
२२. महावीरतित्थे मकाईआई समणा
२३. महावीरतित्थे अज्जुणमालागारे
२४. महावीरतित्थे कासवाई समणा
२५. महावीरतित्थे सेणियपुत्ता जालिआई समणा
२६. महावीरतित्थे धण्णे सत्थवाहपुत्ते अणगारे
२७. महावीरतित्थे सुणक्खत्ताइसमणा
२८. महावीरतित्थे सबाहुकुमारसमणे
२९. महावीरतित्थे भद्दनंदीआइसमणकहाणगाणि
३०. महावीरतित्थे सेणियनत्तू पउमसमणो
३१. महावीरतित्थे हरिएसबलो
३२. महावीरतित्थे अणाही महानियंठो
३३. महावीरतित्थे समुद्दपालीयस्स कहाणयं
३४. महावीरतित्थे मियापुत्ते बलसिरीसमणे
३५. महावीरतित्थे संजयराया
३६. महावीरतित्थे उसुयाररायाई छ समणा
३७. महावीरतित्थे खंदए परिव्वायगे
३८. महावीरतित्थे पोग्गलपरिव्वायगे
३९. महावीरतित्थे सिवरायरिसी
४०. महावीरतित्थे उद्दायणरायकहाणयं
४१. महावीरतित्थे जिणपालिय-जिणरक्खिय-णायं
४२. महावीरतित्थे कालासवेसियपुत्ते
४३. महावीरतित्थे उदए पेढालपुत्ते
४४. महावीरतित्थे नंदीफलणायं
४५. महावीरतित्थे धम्मसत्थवाहकहाणयं
४६. महावीरतित्थे पुण्डरीय-कुण्डरीय-कहाणयं
४७. महावीरतित्थे थविरावली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. विमलतित्थे महब्बलो

वाणियग्गामे भगवओ महावीरस्सागमणं

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नगरे होत्था -- वण्णओ ।

दूतिपलासे चेइए--वण्णओ - जाव - पुढविसिलापट्टओ ।

तत्थ णं वाणियग्गामे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ-- अड्ढे-जाव - बहुजणस्स अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे - जाव - अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

२ सामी समोसढे-जाव-परिसा पज्जुवासइ ।।

सुदंसणसेट्ठिणा धम्मसवणं

३ तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल--पायच्छित्ते सव्वालंकार-विभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पायविहारचारेणं महयापुरिस-वग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, जहा उसभदत्तो-जाव-तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।

४ तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ-जाव-आणाए आराहए भवइ ।।

सुदंसणसेट्ठिणा कालविसए पुच्छा

५ तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए, उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

६ 'कतिविहे णं भंते ! काले पण्णत्ते ?

सुदंसणा ! चउव्विहे काले पण्णत्ते, तं जहा-- १ पमाणकाले, २ अहाउनिव्वत्तिकाले, ३ मरणकाले, ४ अद्धाकाले ।।[1]

७ से किं तं पमाणकाले ?

पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--१ दिवसप्पमाणकाले, २ राइप्पमाणकाले य । चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसिया राई भवइ ।[2]

उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ,

जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ।।

---

१ ठाणं अ० ४, उ० १, सु० २६४ ।

२ उत्त० अ० २६, गा० ११ और गा० १७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८ जदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?

जदा णं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?

सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ।

जदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ।।

९ कदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?

कदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?

सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ ।[1]

जदा णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिया राई भवई, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ।।[2]

१० कदा णं भते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई ?

कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ?

सुदंसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

पोसपुण्णिमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।।[3]

११ अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति ?

हंता अत्थि ।।

कदा णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति ?

सुदंसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु, एत्थ णं दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति---पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ । चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ । से त्तं पमाणकाले ।।[4]

१२ से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले ?

अहाउनिव्वत्तिकाले---जण्णं जेणं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं निव्वत्तियं ।
से त्तं अहाउ-निव्वत्तिकाले ।।

१३ से किं तं मरणकाले ?

मरणकाले---जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ । से त्तं मरणकाले ।।

१४ से किं तं अद्धाकाले ?

अद्धाकाले–से णं समयट्ठयाए आवलियट्ठयाए-जाव-उस्सप्पिणीट्ठयाए ।

---

१ सम० १८, सु० ८ ।
२ सम० १२, सु० ८ ।
३ सम० २४, सु० ४ । २७, सु० ६ । ३७ सु० ५ । ३६ सु० ४ । ४०, सु० ६, ७ ।
४ सम० १५, सु० ५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एस णं सुदंसणा ! अद्धा दोहाराछेदेणं छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हव्वमागच्छइ, से त्तं समए समयट्ठयाए ।

असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ ।

संखेज्जाओ आवलियाओ ।

जहा सालिउद्देसए–जाव–सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परिमाणं[1]

१५ एएहि णं भंते ! पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पयोयणं ?

सुदंसणा ! एएहिं पलिओवम-सागरोवमेहिं नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाणं आउयाइं मविज्जंति ।।

१६ नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?[2]

एवं ठिइपदं निरवसेसं भाणियव्वं-जाव-

सव्वट्ठगसिद्धगदेवाणं--पज्जत्तयाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ?

गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।[3]

सुदंसणसेट्ठिणा पलिओवमादि खयावचयविसए पुच्छा

१७ अत्थि णं भंते ! एएसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खए ति वा अवचए ति वा ? हंता अत्थि ।।

भगवया महावीरेण सुदंसणसेट्ठिणो पुव्वभववण्णणे महब्बल-कहा-कहणं

१८ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ––अत्थि णं एएसिं पलिओवमसागरोवमाणं 'खएति वा' अवचएति वा ?

१९ एवं खलुसुदंसणा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था–वण्णओ ।

सहस्संबवणे उज्जाणे-वण्णओ । तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे बले नामं राया होत्था-वण्णओ ।

तस्स णं बलस्स रण्णो पभावई नामं देवी होत्था–सुकुमालपाणिपाया-वण्णओ-जाव-पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी विहरइ ।

पभावई-देवीए सुमीणे सीह-दंसणं

२० तए णं सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि...अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी अयमेयारूवं ओरालं-जाव-सस्सिरियं महा सुविणं पासित्ताणं पडिबुद्धा ।

हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पंडुर-तरोरु-रमणिज्जं पेच्छणिज्जं...नहयलाओ ओवयमाणं नियय्वयणमतिवयंतं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा ।

२१ तए णं सा पभावती देवी अयमेयारूवं ओरालं-जाव-सस्सिरियं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया-जाव-धाराहयकलंबगं पिव समूसियरोमकूवा तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गइए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलं रायं इट्ठाहिं-जाव-

---

१ क–अणु० सु० ३६३–३९८ ।
ख–भग० स० ६, उ० ७, सु० ४–७ ।
ग–ठाणं० अ० २, उ० १, सु० ६७, ७४ । अ० २, उ० ४, सु० ९९ । अ० ८, सु० ६१७ ।
घ–भग० स० २५, उ० ५, सु० २–१९

२ अणु० सु० ३८२ ।

३ क–अणु० सु० ३८३–३९१ ।
ख–पण्ण० प० ४, सु० ३३५-३४२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिराहिं संलवमाणी संलवमाणी पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइ, निसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-संलवमाणी संलवमाणी एवं वयासी--"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए तं चेव-जाव-नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स-जाव-महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

बलेण रण्णा सुविणफलकहणं

२२ तए णं से बले राया पभावईए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चंचुमालइयतणुए ऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ, करेत्ता पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं-जाव-मंगल्लाहिं मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे-संलवमाणे एवं वयासी–

ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, ··· पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो देवाणुप्पिए ! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए !

नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं ··· सुरूवं देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिसि ।

२३ से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णाय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विउल-बल-वाहणे रज्जवई राया-भविस्सइ । तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे-जाव-आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे-दिट्ठे त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहति ।।

२४ तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

एवमेयं देवाणुप्पिया ! ··· से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयति, निसीयित्ता एवं वयासी–

'मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अण्णेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइ त्ति कट्टु देवगुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ।।

सुविणलक्खण-पाढगेहिं सुविणफलकहणं

२५ तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं-जाव-गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासणं रएह, रएत्ता ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं-जाव-गंधवट्टिभूयं करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासणं रएत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

२६ तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, अट्टणसालं अणुपविसइ, जहा ओववाइए तहेव मज्जणघरे-जाव-ससिव्व पियदंसणे नरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठभद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं सिद्धत्थगक यमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते नाणा-मणि-रयण-मंडियं-जाव-जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्तं ··· सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि--

'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता · · · हत्थिणपुरं नगरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति ।।

तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया-समाणा-जाव-सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति ।

२७ तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ।।

तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ-फल-पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी--

एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि-जाव-सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स-जाव-महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म · · · बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एवं वयासी--

एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सुविणसत्थंसि · · · मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसि णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति । इमे य णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे-जाव-आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं-जाव-देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिति ।

से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा । तं ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे-जाव-आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे ।।

पभावइए बलेण रण्णा पुणो सुविणफल-कहणं

२८ तए णं से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी--

एवमेयं देवाणुप्पिया-जाव-से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुविणलक्खणपाढए · · · पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं -जाव-मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे-संलवमाणे एवं वयासी--

एवं खलु देवाणुप्पिए ! · · · इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए ! एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे-जाव-रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे-जाव-आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहइ ।।

बलं पडि महब्बलस्स जम्मनिवेयणं

२९ तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

एयमेयं देवाणुप्पिया ! -जाव-तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणा-मणि-रयण-भत्ति-चित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं भवणमणुपविट्ठा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३० तए णं सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा-जाव-सव्वालंकारविभूसिया ''' तं गब्भं सुहंसुहेणं-परिवहति ।।

तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदिय सरीरं लक्खण-वंजणगुणोववेयं माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाया ।।

३१ तए णं तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी---

एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं-जाव-सुरूवं दारगं पयाया । तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं निवेदेमो । पियं भे भवतु ।।

३२ तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चंचुमालइयतणुए ऊसवियरोम-कूवे तासिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयइ, दलयित्ता सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं भिंगारं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता मत्थए धोवइ, धोवित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

जम्ममहुस्सवो

३३ तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेई, सद्दावेत्ता एवं वयासी---

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेह, करेत्ता माणुम्माणवड्ढणं करेह, करेत्ता हत्थिणापुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-संमज्जिओवलित्तं-जाव-गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्सं वा चक्कसहस्सं वा पूयामहामहिमसंजुत्तं उस्सवेह, उस्सवेत्ता ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा-जाव-तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव-जाव-मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे ठिइवडियं करेंति ।।

३४ तए णं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सयए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सयए य साहिस्सिए य सयसाहस्सिए य लंभे पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एवं यावि विहरइ ।।

महब्बल त्ति नामकरणं अण्णे य संखारा

३५ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो-जाव-अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति---जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'महब्बले महब्बले' । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति महब्बले त्ति ।।

३६ तए णं से महब्बले दारए पंचधाईपरिग्गहिए, एवं जहा दढपइण्णस्स-जाव-निव्वाय-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढति ।।

तए णं तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं वा चंदसूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पचंकामणं वा पजेमामणं वा पिंडवद्धणं वा पजंपावणं वा कण्णवेहणं वा संवच्छरपडिलेहणं वा चोलोयणगं वा उवणयणं वा, अण्णाणि य बहूणि गब्भाधाण-जम्मणमादियाइं कोउयाइं करेंति ।।

सिक्खागहणं पाणिगहणं य

३७ तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति, एवं जहा दढप्पइण्णे-जाव-अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।।

३८ तए णं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं-जाव-अलं भोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेंसए कारेंति---अब्भुग्गय-मूसिए-पहसिए इव वण्णओ जहा रायपसेणइज्जे-जाव-पडिरूवे । तेसिं णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महेगं भवणं कारेंति--अणेगखंभसय संनिविट्ठं वण्णओ जहा रायपसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवंसि-जाव-पडिरूवे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय-पसाहण-अट्ठंगतिलग-कंकण-अविहवबहुउवणीयं मंगलसुजंपिएहि य वरकोउयमंगलोवयार-कयसंतिकम्मं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वणगुणोववेयाणं विणीयाणं कयको-उय-मंगलपायच्छित्ताणं सरिसएहिं रायकुलेहिंतो आणिल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु ।

३९ तए णं तस्स महाबलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीइदाणं दलयंति, तं जहा--

अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ–

अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ कुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे, अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एवं मुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ–

अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए ।

अट्ठ खोमजुयलाइं खोमजुयलप्पवराइं ।

एवं वडगजुयलाइं, एवं पट्टजुयलाइं, एवं दुगुल्लजुयलाइं ।

अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ ।

एवं धिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ, लच्छीओ ।

अट्ठ नंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए, नियगवरभवणकेऊ ।

अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे, दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइं, बत्तीसइबद्धेणं नाडएणं ।

अट्ठ आसे आसप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए ।

अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए,

अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं, अट्ठ जुगाइं जुगप्पवराइं, एवं सिबियाओ, एवं संदमाणीओ, एवं गिल्लीओ, थिल्लीओ ।

अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे संगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे ।

अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएणं गामेणं ।

अट्ठ दासे दासप्पवरे, एवं दासीओ, एवं किंकरे, एवं कंचुइज्जे, एवं वरिसधरे, एवं महत्तरए ।

अट्ठ सोवण्णिए ओलंबणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए ओलंबणदीवे ।

अट्ठ सोवण्णिए उक्कंबणदीवे, एवं चेव तिण्णि वि,

अट्ठ सोवण्णिए पंजरदीवे, एवं चेव तिण्णि वि ।

अट्ठ सोवण्णिए थाले, अट्ठ रुप्पामए थाले, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए थाले,

अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ ३, अट्ठ सोवण्णियाइं थासगाइं ३, अट्ठ सोवण्णियाइं मल्लगाइं ३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ ३ ।

अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ ३, अट्ठ सोवण्णिए अवएडए ३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए ३ ।

अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लंके ३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ ३ ।

अट्ठ हंसासणाइं, अट्ठ कोंचासणाइं, एवं गरुलासणाइं, उन्नयासणाइं, पणयासणाइं, दीहासणाइं, भद्दासणाइं, पक्खासणाइं, मगरासणाइं, अट्ठ पउमासणाइं, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं ।

अट्ठ तेल्ल-समुग्गे, जहारायप्पसेणइज्जे अट्ठ कोट्ठ-समुग्गे, एवं पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिंगुलय-मणोसिल-अंजण-समुग्गे, अट्ठ सरिसव-समुग्गे ।

अट्ठ खुज्जाओ जहा ओववाइए-जाव-अट्ठ पारिसीओ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ।
अट्ठ तालियंटे, अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ, अट्ठ करोडियाओ, अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ,
अट्ठ खीरधाईओ, अट्ठ मज्जणधाईओ, अट्ठ मंडणधाईओ अट्ठ खेल्लावणधाईओ, अट्ठ अंकधाईओ,
अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हाबियाओ, अट्ठ पसाहियाओ,
अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ, अट्ठ कीडागारीओ, अट्ठ दवकारीओ,
अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ, अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ,
अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फधरणीओ, अट्ठ पाणिधरणीओ,
अट्ठ बाहिरियाओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भितरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ,
अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधणग-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जं,[1] अलाहि-जाव-आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं परिभाएउं ।।

४० तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ, एवं तं चेव सव्वं-जाव-एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्ण वा सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जं, अलाहि-जाव-आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं परिभाएउं ।।
तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली-जाव-पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।।

धम्मघोसागमणं

४१ तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स-जाव-पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।
तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा-जाव-परिसा पज्जुवासइ ।।

महब्बलकुमारेण धम्मसवणं

४२ तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जणवूहं वा-जाव-जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एवं जहा जमाली तहेव चिंता, तहेव कंचुइज्ज-पुरिसं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी--
किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज हत्थिणापुरे नयरे इंदमहे इ वा-जाव-निग्गच्छंति ।।
तए णं से कंचुइ-पुरिसे महब्बलेणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छिए करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी--

---

१ पीइदाणं गाहाओ:--अट्ठहिरण्ण-सुवन्नयकोडीओ मउडकुंडलाहारा । अट्ठट्ठहार एकावली उ, मुत्तावली अट्ठ ।।१।।
कणगावलि-रयणावलि-कडगजुगा तुडियजोयखोमजुगा । वडजुग-पट्टजुगाइं, दुकूलजुगलाइं अट्ठट्ठ ।।२।।
सिरि-हिरि-धिइ-कित्ती उ, बुद्धी लच्छी य होंति अट्ठट्ठ । नंदा भद्दा य तला, झय-वय-नाडाइं आसेव ।।३।।
हत्थी जाणा जुग्गाओ, सीया तह संदमाणी गिल्लीओ । थिल्ली इ वियड जाणा, रह गामा दास दासीओ ।।४।।
किंकर-कंचुइ-मयहर, वरिसधरे तिविह दीव थाले य । पाई थासग पल्लग, कतिविय अवएड अवपक्का ।।५।।
पावीढ भिसिय करोडियाओ पल्लंकए य पडिसिज्जा । हंसाईहिं विसिट्ठा, आसणभेया उ अट्ठट्ठ ।।६।।
हंसे कुंचे गरुडे ओणय पणए य दीहभद्दे य । पक्खे मयरे पउमे, होइ दिसा सोत्थिए क्कारे ।।७।।
तेल्ले कोट्ठसमुग्गा पत्ते चोए य तगर एला य । हरियाले हिंगुलए, मणोसिला सासवसमुग्गे ।।८।।
खुज्जा चिलाइ वामणि वडभीओ बब्बरीओ वसियाओ । जोणिय पल्हवियाओ, इसिणिया धोरुणिया य ।।९।।
लासिय लउसिय दमिणी, सिंहली तह आरबि पुलिंदी य । पक्कणि वहणि मुरंढी, सबरीओ पारसीओ य ।।१०।।
छत्तधरी चेडीओ, चामरधर-तालियंटधरीओ । सकरोडियाधरीओ, खीराति पंच धावीओ ।।११।।
अट्ठंगमद्दियाओ उम्मद्दिग-विगमंडियाओ य । वण्णय-चुण्णय--पीसीय कीलाकारी य दवगारी य ।।१२।।
उच्छाविया उ तह, नाडइल्ल कोडुंबिणी महाणसिणी । भंडारि अज्जधारि, पुप्फधरी पाणीयधरी य ।।१३।।
वलकारि य सेज्जाकारियाओ, अब्भंतरी उ बाहिरिया । पडिहारी मालारी, पेसणकारी उ अट्ठट्ठ ।।१४।।
णाया० सु० १, अ० १, सु० २१ टीका ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज हत्थिणापुरे नगरे इंदमहे इ वा-जाव-निग्गच्छंति । एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं एते बहवे उग्गा, भोगा-जाव-निग्गच्छंति ।।

महब्बलेण पव्वज्जाभिलासकहणं

४३ तए णं से महब्बले कुमारे तहेव रहवरेणं निग्गच्छति । धम्मकहा जहा केसिसामिस्स ।

सो वि तहेव अम्मापियरं आपुच्छइ, नवरं––धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । तहेव वुत्तपडिवुत्तिया, नवरं––इमाओ य ते जाया ! विउलरायकुलबालियाओ कलाकुसलसव्वकाललालिय-सुहोचियाओ सेसं तं चेव-जाव-ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी––

तं इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ।

तए णं से महब्बले कुमारे अम्मापिउ-वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।

४४ तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो-जाव अभिसिंचति, करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं यवासी––

भण जाया ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव––

महब्बलपव्वज्जा देवभवो सुदंसणरूवेण जम्म य

४५ तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस-वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ, बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंदे कप्पे वीईवइत्ता बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने ।

तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

तत्थ णं महब्बलस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

४६ से णं तुमं सुदंसणा ! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता ताओ चेव देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए ।।

तए णं तुमे सुदंसणा ! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णाय-परिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे निसंते, सेवि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ।

तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा ! इदाणिं पि करेसि ।

४७ से तेणट्ठेणं सुदंसणा ! एवं वुच्चइ––अत्थि णं एतेसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा ।।

सुदंसणस्स जातीसरणं णाणं पव्वज्जाइं य

४८ तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णीपुव्वे जातीसरणे समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति ।।

४९ तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे आणंदंसुपुण्णनयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते !––से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तर पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सेसं जहा उसभदत्तस्स-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं––चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, सेसं तं चेव ।।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।। भग० स० ११, उ० ११ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. मुणिसुव्वयतित्थे कत्तियसेट्ठिआईणं कहाणयं

सक्कस्स महावीरसमोसरणे नट्टविही

५० तेणं कालेणं तेणं समएणं विसाहा नामं नगरी होत्था--वण्णओ । बहुपुत्तिए चेइए--वण्णओ । सामी समोसढे-जाव-पज्जुवासइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे एवं जहा सोलसमसए बिइय उद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगओ । नवरं--एत्थ आभियोगा वि अत्थि-जाव-बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेति उवदंसेत्ता-जाव-पडिगए ।।

सक्कस्स पुव्वभव-पुच्छा

५१ भंते त्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--"जहा तइएसए ईसाणस्स तहेव कूडागार-दिट्ठंतो, तहेव पुव्वभवपुच्छा-जाव-अभिसमन्नागए ?"

सक्कस्स पुव्वभवो कत्तिय सेट्ठी

५२ गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी--

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था--वण्णओ । सहसंबवणे उज्जाणे--वण्णओ ।

तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे कत्तिए नामं सेट्ठी परिवसति अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए नेगमपढमासणिए, नेगमट्ठसहस्सस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुंबेसु य-एवं जहारायप्पसेणइज्जे चित्ते-जाव--चक्खुभूए, नेगमट्ठसहस्सस्स सयस्स य कुडुंबस्स आहेवच्चं-जाव-कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए, अहिगयजीवाजीवे-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

हत्थिणापुरे मुणिसुव्वयागमणं

५३ तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए तहेव-जाव-समोसढे-जाव-परिसा पज्जुवासइ ।।
तए णं से कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे एवं जहा एक्कारसमसए सुदंसणे तहेव निग्गओ-जाव-पज्जुवासति ।।
तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ-जाव-परिसा पडिगया ।।

कत्तियस्स पव्वज्जा-संकप्पो

५४ तए णं से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

एवमेयं भंते !-जाव-से जहेयं तुब्भे वदह जं, नवरं--देवाणुप्पिया ! नेगमट्ठसहस्सं आपुच्छामि, जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।

तए णं से कत्तिए सेट्ठी-जाव-पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गेहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नेगमट्ठसहस्सं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं अहं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गे - जाव-पव्वयामि, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! किं करेह, किं ववसह, किं भे हियइच्छिए, किं भे सामत्थे ?"

५५ तए णं तं नेगमट्ठसहस्सं पि तं कत्तियं सेट्ठिं एवं वयासी–

जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गा-जाव-पव्वयह,

अम्हं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलंबे वा, आहारे वा, पडिबंधे वा ?

अम्हे वि णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मण-मरणाणं देवाणुप्पिएहिं सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामो ।।

तए णं से कत्तिए सेट्ठी तं नेगमट्ठसहस्सं एवं वयासी–

जदि णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मए सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु गिहेसु, विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेह, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेह सम्माणेह, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेह, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहइ, दुरुहित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरिहीणं चेव मम अंतियं पाउब्भवह ।।

५६ तए णं तं नेगमट्ठसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव साइं-साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेति, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्ते य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरिहीणं चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अंतियं पाउब्भवंति ।।

५७ तए णं से कत्तिए सेट्ठी विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति जहा गंगदत्तो-जाव-सीयं दुरूहति, दुरूहित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेणं नेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जहा गंगदत्तो-जाव-आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंत्ते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए-जाव-आणुगामियत्ताए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंते ! नेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वाविय-जाव-धम्ममाइक्खियं ।।

नेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं कत्तियस्स पव्वज्जा

५८ तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं नेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेति-जाव-धम्ममाइक्खइ–-एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं-जाव-संजमियव्वं ।।

तए णं से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं पडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छति-जाव-संजमेति ।।

तए णं से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं अणगारे जाए–-ईरियासमिए-जाव-गुत्तबंभयारी ।।

कत्तियस्स सक्कत्तं भावीकाले सिद्धी य

५९ तए णं से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस-वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेइ, झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए सक्के देविंदत्ताए उववन्ने ।।

६० तए णं से सक्के देविंदे देवराया अहुणोववण्णमेत्तए सेसं जहा गंगदत्तस्स-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति, नवरं–ठिती दो सागरोवमाइं, सेसं तं चेव ।।

सेवं भंत्ते ! सेवं भंत्ते ! त्ति ।।

भग० स० १८, उ० २।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. मुणिसुव्वयतित्थे गंगदत्तो

गंगदत्तस्स पुव्वभव-पुच्छा

६१ अहो णं भंते ! गंगदत्ते देवे महिड्ढिए महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे।

गंगदत्तेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती किण्णा लद्धा-जाव-अभिसमण्णागया ?

६२ गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी--

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था--वण्णओ। सहसंबवणे उज्जाणे--वण्णओ।

तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे गंगदत्ते नाम गाहावती परिवसति--अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए।

हत्थिणाउरे मुणिसुव्वयागमणं, गंगदत्तेण य धम्मसवणं

६३ तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे-जाव-सव्वण्णू सव्वदरिसी-जाव-सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सहसंब-वणे उज्जाणे-जाव-विहरति। परिसा निग्गया-जाव-पज्जुवासति।

६४ तए णं से गंगदत्ते गाहावती इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता मुणिसुव्वयं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ-जाव-तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति।

तए णं मुणिसुव्वए अरहा गंगदत्तस्स गाहावतिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ-जाव-परिसा पडिगया।।

तए णं से गंगदत्ते गाहावती मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए, उट्ठेति, उट्टेत्ता मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं-जाव-से जहेयं तुब्भे वदह, जं नवरं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।

गंगदत्तस्स पव्वज्जा, देवत्तं य

६५ तए णं से गंगदत्ते गाहावई मुणिसुव्वएणं अरहया एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियाओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जहा पूरणे-जाव-जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेति। तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहि-निग्घोसनादितरवेणं हत्थिणागपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता छत्तादिते तित्थगिरातिसए पासति। एवं जहा उद्दायणे-जाव-सयमेव आभरणे ओमुयइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, करेत्ता जेणेव मुणिसुव्वए अरहा एवं जहेव उद्दायणे तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ-जाव-मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि - जाव-गंगदत्तदेवत्ताए उववन्ने ।।

तए णं से गंगदत्ते देवे अहुणोववन्नमेत्तए समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गच्छति, तं जहा--
आहारपज्जत्तीए-जाव-भासा-मणपज्जत्तीए ।

६६ एवं खलु गोयमा ! गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिति पण्णत्ता ?

गोयमा ! सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

गंगदत्तस्स सिद्धी

६७ गंगदत्ते णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।। भग० स० १६, उ० ५

---

४. अरिट्ठनेमितित्थे चित्तसंभूइज्जकहाणयं ।

बंभदत्त-चित्त-संभूआणं जम्मकहणं

६८ जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि । 'चुलणीए बंभदत्तो, उववन्नो पउमगुम्माओ ।।१।।
कंपिल्ले संभूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि । सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ।।२।।

कंपिलम्मि चित्तसंभूयाणमागामणं पुव्वभवकहणं य

६९ कंपिलम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसंभूया । सुह-दुक्ख-फलविवागं, कहेंति ते एक्कमेक्कस्स ।।३।।
चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बंभदत्तो महायसो । भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ।।४।।
आसीमु भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा । अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्न-हिएसिणो ।।५।।
दासा दसण्णे आसी, मिया कालिंजरे नगे । हंसा मयंगतीराए, सोवागा कासिभूमिए ।।६।।
देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया । इमा णो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ।।७।।

कम्मफलचिंता

७० कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय ! विचिंतिया । तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ।।८।।
सच्च-सोय-प्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा । ते अज्ज परिभुंजामो, किं नु चित्ते वि से तहा ? ।।९।।
सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि । अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं, आया ममं पुण्णफलोववेए ।।१०।।
जाणाहि संभूय ! महाणुभागं, महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं । चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं ! इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ।।११।।
महत्थरूवावयणऽप्पभूया, गाहाणुगीया नरसंघमज्झे । जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इहऽज्जयंते समणो मि जाओ ।१२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंभदत्तेण चित्तं पडिभोगासेवणामंतणं

७१ उच्चोयए महु कक्के य बंभे, पवेइया आवसहा य रम्मा । इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं, पसाहि पंचालगुणोववेयं ।।१३।।
नट्टेहि गीएहि य वाइएहि, नारीजणाहिं परिवारयंतो । भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू ! मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ।।१४।।

चित्तमुणिणा कामभोगस्स निन्दणं

७२ तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं, नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं । धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही, चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ।।१५।।
सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडंबियं । सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ।।१६।।
बालाभिरामेसु दुहावहेसु, न तं सुहं कामगुणेसु रायं ! विरत्तकामाण तवोधणाणं, जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ।।१७।।
नरिंद ! जाई अहमा नराणं, सोवागजाई दुहओ गयाणं । जहिं वयं सव्वजणस्स वेसा, वसीय सोवागनिवेसणेसु ।।१८।।
तीसे अ जाईइ उ पावियाए, वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु । सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा, इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ।।१९।।
सो दाणिसिं राय ! महाणुभागो, महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ । चइत्तु भोगाइं असासयाइं, आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ।।२०।।
इह जीविए राय ! असासयम्मि, धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो । से सोयइ मच्चुमुहोवणीए, धम्मं अकाऊण परंसि लोए ।।२१।।
'जहेह सीहो व मियं गहाय', मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले । न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ।।२२।।
न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा । एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं ।।२३।।
चिच्चा दुप्पयं च चउप्पयं च, खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं । सकम्मबीओ अवसो पयाइ, परं भवं सुंदरपावगं वा ।।२४।।
तं एक्कगं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिय उ पावगेणं । भज्जा य पुत्ता वि य नायओ य, दायारमन्नं अणुसंकमंति ।।२५।।
उवणिज्जई जीवियमप्पमायं, वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ! पंचालराया ! वयणं सुणाहि, मा कासि कम्माइ महालयाइं ।।२६।।

बंभदत्तेण अप्पणो नियाणकरणवण्णणं

७३ अहं पि जाणामि जहेइ साहू, जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं । भोगा इमे संगकरा हवंति, जे दुज्जया अज्ज ! अम्हारिसेहिं ।२७।।
हत्थिणपुरम्मि चित्ता ! दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं । कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुहं कडं ।।२८।।
तस्स मे अप्पडिकंतस्स, इमं एयारिसं फलं । जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ।।२९।।
"नागो जहा" पंकजलावसन्नो, दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं । एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ।।३०।।

चित्तमुणिणा अज्जकम्मकरणोवएसो

७४ अच्चेइ कालो तूरंति राइओ, न या वि भोगा पुरिसाण निच्चा । उविच्च भोगा पुरिसं चयंति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ।।३१।।
जई सि भोगे चइउं असत्तो, अज्जाइ कम्माइ करेहि रायं ! धम्मे ठिओ सव्व-पयाणुकंपी, तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ।।३२।।
न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी, गिद्धोसि आरंभ-परिग्गहेसु । मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो, गच्छामि रायं ! आमंतिओसि ।।३३।।

बंभदत्तस्स निरयवासो

७५ पंचालराया वि य बंभदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं । अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे, अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ।।३४।।

चित्तस्स सिद्धी

७६ चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो, उदग्गचारित्ततवो महेसी । अणुत्तरं संजमं पालइत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ।।३५।।

।। त्ति बेमि ।। उत्त० अ० १३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. अरिट्ठनेमितित्थे निसढो

निसढाइया दुवालस समणा

७७ १. निसढे २. माअणि ३. वह ४. वहे ५. पगया ६. जुत्ती ७. दसरहे ८. दढरहे य। ९. महाधणू १०. सत्तधणू ११. दसधणू नामे १२. सयधणू य॥

बारवईए कण्हो वासुदेवो

७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था दुवालसजोयणायामा-जाव-पच्चक्खं देवलोयभूया पासादीया-जाव-पडिरूवा॥

तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं रेवए नामं पव्वए होत्था तुङ्गे गयणयलमणुलिहन्तसिहरे नाणा-विह-रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लया-वल्ली-परिगयाभिरामे हंस-मिय-मयूर-कोञ्च-सारस-काग-मयणसाला-कोइल-कुलोववेए तड-कडग-वियर-उब्भर-पवाल-सिहर-पउरे अच्छर-गण-देवसंघ-विज्जाहर-मिहुण-संनिचिण्णे निच्चच्छणए दसार-वर-वीर-पुरिस-तेल्लोक्क-बलवगाणं सोमे सुभए पियदंसणे सुरूवे पासादीए-जाव-पडिरूवे॥

तस्स णं रेवयगस्स पव्वयस्स अदूरसामन्ते एत्थ णं नन्दणवणे नामं उज्जाणे होत्था सव्वोउयपुप्फ-जाव-दरिसणिज्जे॥

तत्थ णं नन्दणवणे उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था चिराईए-जाव-बहुजणो आगम्म अच्छेइ सुरप्पियं जक्खाययणं॥

से णं सुरप्पिए जक्खाययणे एगेणं महया वणसण्डेणं सव्वओ समन्ता संपरिक्खित्ते जहा पुण्णभद्दे-जाव-सिलावट्टए।

तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया होत्था-जाव-पसासमाणे विहरइ।

से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं,

बलदेवपामोक्खाणं पञ्चण्हं महावीराणं,

उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं,

पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं,

सम्बपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दन्तसाहस्सीणं,

वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं,

महासेणपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं

रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्हं देवीसाहस्सीणं,

अणङ्गसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं

अन्नेसिं च बहुणं राईसर-जाव-सत्थ वाहप्पभिईणं वेयड्ढगिरिसागरमेरागस्स दाहिणड्ढभरहस्स आहेवच्चं-जाव-विहरइ॥

बारवईए बलदेवे राया

७९ तत्थ णं बारवईए नयरीए बलदेवे नामं राया होत्था, महया-जाव-रज्जं पसासेमाणे विहरइ।

बलदेवस्स रेवईदेवीए पुत्तो निसढकुमारो

८० तस्स णं बलदेवस्स रन्नो रेवई नामं देवी होत्था सोमाला-जाव-विहरइ। तए णं सा रेवई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि-जाव-सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा एवं सुमिणदंसणपरिकहणं, कलाओ जहा महाबलस्स, पन्नासओ दाओ, पन्नासराय-कन्नगाणं एगदिवसेणं पाणिग्गहणं...नवरं निसढे नामं-जाव-उप्पिं पासायं विहरइ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरिट्ठनेमितित्थयरागमणं-कण्हस्स पज्जुवासणं च

८१ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी आइगरे दस धणूइं...वण्णओ-जाव-समोसरिए। परिसा निग्गया ।।

८२ तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुम्बियपुरिसं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव, भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाणियं भेरिं तालेहि"।

तए णं से कोडुम्बियपुरिसे-जाव-पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाणिया भेरी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाणियं भेरिं महया-महया सद्देणं तालेइ ।।

तए णं तीसे सामुदाणियाए भेरीए महया-महया सद्देणं तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दसारा, देवीओ भाणियव्वाओ,-जाव-अणङ्गसेणापामोक्खा अणेगा गणियासहस्सा अन्ने य बहवे राईसर-जाव-सत्थवाहप्पभिईओ ण्हाया-जाव-पायच्छित्ता सव्वालंकार-विभूसिया जहाविभवइड्ढीसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया हयगया-जाव-पुरिसवग्गुरा-परिक्खित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल कण्हं वासुदेवं जएण विजएणं वद्धावेन्ति ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुम्बियपुरिसे एवं वयासी-"खिप्पामेव, भो देवाणुप्पिया, आभिसेक्कहत्थिं कप्पेह हयगयरहपवर"–जाव-पच्चप्पिणन्ति।

तए णं से कण्हे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरूढे, अट्ठट्ठ मङ्गलगा, जहा कूणिए, सेयवरचामरेहिं उद्धुव्वमाणेहिं उद्धुव्वमाणेहिं समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं-जाव-सत्थवाहप्पभिईहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं ....सेसं जहा कूणिओ-जाव-पज्जुवासइ ।।

निसढेण सावयधम्मगहणं

८३ तए णं तस्स निसढस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महया जणसद्दं च...जहा जमाली,-जाव-धम्मं सोच्चा निसम्म वन्दइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-"सद्दहामि णं, भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं," जहा चित्तो-जाव-सावगधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता पडिगए ।।

वरदत्तेण निसढस्स पुव्वभवपुच्छा-अरिट्ठनेमिणा पुव्वभवकहणं च

८४ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अन्तेवासी वरदत्ते नामं अणगारे उराले-जाव-विहरइ।

तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं पासइ, जायसड्ढे-जाव-पज्जुवासमाणे एवं वयासी–

"अहो णं, भन्ते, निसढे कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कन्ते कन्तरूवे,

एवं पिए मणुन्नए, मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे।

निसढेणं, भन्ते ! कुमारेण अयमेयारूवा मणुयइड्ढी किणा लद्धा, किणा पत्ता ?" पुच्छा जहा सुरियाभस्स।

निसढस्स पुव्वभवो-वीरंगअकुमारो

८५ "एवं खलु वरदत्ता" !

तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नामं नयरे होत्था, रिद्ध...। मेहवण्णे उज्जाणे । माणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे। तत्थ णं रोहीडए नयरे महब्बले नामं राया, पउमावई नाम देवी, अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सीहं सुमिणे..., एवं जम्मणं भाणियव्वं जहा महाबलस्स, नवरं वीरङ्गओ नामं, बत्तीसओ दाओ, बत्तीसाए रायवरकन्नगाणं पाणिं-जाव-ओगिज्जमाणे ओगिज्जमाणे पाउसवरिसारत्तसारयहेमन्तगिम्हवसन्ते छ प्पि उऊ जहाविभवे समाणे इट्ठे सद्दे-जाव-विहरइ ।।

सिद्धत्थायरिओवएसेण वीरंगअस्स पव्वज्जा बंभलोए उप्पत्ती य

८६ तेणं कालेणं तेणं समएणं सिद्धत्था नाम आयरिया जाइसंपन्ना...जहा केसी, नवरं बहुस्सुया बहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नयरे, जेणेव मेहवण्णे उज्जाणे, जेणेव माणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे, तेणेव उवागए अहापडिरूवं-जाव-विहरइ। परिसा निग्गया ।।

तए णं तस्स वीरङ्गयस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महया जणसद्दं...जहा जमाली, निग्गओ। धम्मं सोच्चा...जे, नवरं, देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि जहा जमाली, तहेव निक्खन्तो-जाव-अणगारे जाए-जाव-गुत्तबम्भयारी।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८७ तए णं से वीरंगए अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अन्तिए सामाइयमाइयाइं-जाव-एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ । अहिज्जित्ता बहूइं -जाव-चउत्थ-जाव-अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं पणयालीसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बम्भलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं वीरंगयस्स वि देवस्स वि दस सागरोवमा ठिई पन्नत्ता ।।

बंभलोगाओ चइत्ता निसढकुमारो जाओ

८८ से णं वीरङ्गए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं-जाव-अणन्तरं चयं चइत्ता इहेव बारवईए नयरीए बलदेवस्स रन्नो रेवईए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने। तए णं सा रेवई देवी तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सुमिणदंसणं,-जाव-उप्पिं पासायवरगए विहरइ ।

८९ तं एवं खलु वरदत्ता ! निसढेणं कुमारेणं अयमेयारूवा उराला मणुयइड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।।

९० पभू णं, भन्ते ! निसढे कुमारे देवाणुप्पियाणं अन्तिए-जाव-पव्वइत्तए?" हन्ता, पभू। से एवं, भन्ते ! इह वरदत्ते अणगारे-जाव-अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

९१ तए णं अरहा अरिट्ठणेमी अन्नया कयाइ बारवईओ नयरीओ-जाव-बहिया जणवयविहारं विहरइ। निसढे कुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे-जाव-विहरइ ।।

निसढस्स अरिट्ठनेमिदंसणेच्छा

९२ तए णं से निसढे कुमारे अन्नया कयाइ जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता-जाव-दब्भसंथारोवगए विहरइ ।

तए णं तस्स निसढस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था– "धन्ना णं ते गामागर-जाव-संनिवेसा जत्थ णं अरहा अरिट्ठणेमी विहरइ । धन्ना णं ते राईसर-जाव-सत्थवाहप्पभिईओ जे णं अरहं अरिट्ठणेमिं वन्दन्ति, नमंसन्ति-जाव-पज्जुवासन्ति। जइ णं अरहा अरिट्ठणेमी पुव्वाणुपुव्विं. . .नन्दणवणे विहरेज्जा, तए णं अहं अरहं अरिट्ठणेमिं वन्दिज्जा-जाव-पज्जुवासिज्जा ।।

निसढेच्छं णाऊणं अरिट्ठनेमिस्सागमणं

९३ तए णं अरहा अरिट्ठणेमी निसढस्स कुमारस्स अयमेयारूवमज्झत्थिय-जाव-वियाणित्ता अट्ठारसहिं समणसहस्सेहिं-जाव-नन्दणवणे समोसढे। परिसा निग्गया।

निसढस्स पव्वज्जा समाहिमरणं च

९४ तए णं निसढे कुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ० चाउग्घण्टेणं आसरहेणं निग्गए जहा जमाली,-जाव-अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वइए, अणगारे जाए इरियासमिए-जाव-गुत्तबम्भयारी।

९५ तए णं से निसढे अणगारे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अङ्गाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता, बहूइं चउत्थ-छट्ठ-जाव-विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं नववासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ।।

वरदत्तपुच्छिएण अरिट्ठनेमिणा निसढस्स सव्वट्ठसिद्धविमाणगमणकहणं

९६ तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी– "एवं खलु देवाणुप्पियाणं अन्तेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए। से णं, भन्ते ! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ?।।

"वरदत्ता" ई अरहा अरिट्ठणेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी–"एवं खलु, वरदत्ता ! ममं अन्तेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए ममं तहारूवाणं थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अङ्गाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चन्दिम-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरिय-गह-गण-नक्खत्ततारारूवाणं सोहम्मीसाणाणं तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धविमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता"।। तत्थ णं णिसढस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमा ठिई पण्णत्ता।

निसढस्स महाविदेहे सिद्धी भावि त्ति अरिट्ठनेमिकहणं

९७ "से णं, भन्ते! निसढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणन्तरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ?" "वरदत्ता! इहेव जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उन्नाए नगरे विसुद्धपिइवंसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिए।

तए णं से उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अन्तिए केवलंबोहिं बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिइ। से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ इरियासमिए-जाव-गुत्तबम्भयारी। से णं तत्थ बहूइं चउत्थ-छट्ठ-ऽट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहि तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिस्सइ। पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिइ, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइहिइ, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुण्डभावे अण्हाणए अदन्तवणए अछत्तए अणोवाहणए फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बम्भचेर-वासे परघरपवेसे पिण्डवाउलद्धावलद्धे उच्चावया य गामकण्टगा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेइ। आराहित्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिइ-जाव-सव्व-दुक्खाणं अन्तं काहिइ"।।

वण्हि० अ० १

---

६. अरिट्ठनेमितित्थे गोयमाइया अणगारा

संगहणी-गाहा

९८ १. गोयम २. मुद्द ३. सागर ४. गंभीरे चेव होइ ५. थिमिए य। ६. अयले ७. कंपिल्ले खलु, ८. अक्खोभ ९. पसेणई १०. विण्हू।।१।।

बारवईए कण्हो वासुदेवो

९९ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था—दुवालस-जोयणायामा नवजोयणवित्थिण्णा धणवति-मइ-णिम्माया चामीकर-पागारा नाणामणि-पंचवण्ण-कविसीसगमंडिया सुरम्मा अलकापुरि-संकासा पमुदिय-पक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया जाव-पडि रूवा।।

तीसे णं बारवईए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं रेवयए नामं पव्वए होत्था—वण्णओ।।

तत्थ णं रेवयए पव्वए नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था—वण्णओ।।

तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था चिराइए पुव्वपुरिस-पण्णत्ते पोराणे।।

से णं एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते।।

तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे असोगवरपायवे।।

१०० तत्थ णं बारवईए णयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ महया, राय-वण्णओ।।

से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, महासेणपामोक्खाणं छप्पण्णाए बलवगसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाए वीरसाहस्सीणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं रायसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं सोलसण्हं देवीसाहस्सीणं अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणिया-साहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं, राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं बारवईए नयरीए अद्धभरहस्स य समं-तस्स आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ।।

१०१ तत्थ णं बारवईए नयरीए अंधगवण्ही नामं राया परिवसइ —महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ।।

अंधगवण्हिरण्णो गोयमो कुमारो

तस्स णं अंधगवण्हिस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—वण्णओ।।

तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि-जाव-नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा

एवं जहा महब्बले, नवरं—गोयमो नामेणं। अट्ठण्हं रायवरकण्णाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति। अट्ठट्ठओ दाओ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरिट्ठनेमिस्स धम्मोवएसो, गोयमपव्वज्जा य

१०२ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे-जाव-संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । चउव्विहा देवा आगया। कण्हे वि निग्गए ।।

तए णं तस्स गोयमस्स कुमारस्स तं महाजणसद्दं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था। जहा मेहे तहा णिग्गए । धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० जं नवरं –देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि। तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।।

तए णं से गोयमे कुमारे एवं जहा मेहे जाव अणगारे जाए—इरियासमिए जाव इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ ।।

तए णं से गोयमे अण्णया कयाइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

गोयमस्स सेत्तुंजे सिद्धी

१०३ 'तए णं' अरहा अरिट्ठनेमी अण्णया कयाइ बारवईओ नयरीओ नंदणवणाओ पडिणिक्खमइ, बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

तए णं से गोयमे अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए। एवं जहा खंदओ तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ। गुणरयणं पि तवोकम्मं तहेव फासेइ निरवसेसं। जहा खंदओ तहा चिंतेइ, तहा आपुच्छइ, तहा थेरेहिं सद्धिं सेत्तुंजं दुरूहइ ।।

तए णं से गोयमे अणगारे बारस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे ।।

समुद्दादि

१०४ एवं जहा गोयमो तहा सेसा।

अंधगवण्ही पिया, धारिणी माया। समुद्दे, सागरे, थमिए, गंभीरे, अयले, कंपिल्ले, अक्खोभे, पसेणई, विण्हू, एए एगगमा ।।

अंत० व० १ अ० १-१०

अक्खोभाइ कुमारा अणगारा

संगहणी-गाहा

१०५ १. अक्खोभ २. सागरे खलु, ३. समुद्द ४. हिमवंत ५. अचलनामे य। ६. धरणे य ७. पूरणे या, ८. अभिचंदे चेव अट्ठमए ।।१।।

१०६ तेणं कालेणं तेणं समएणं 'बारवई नामं नयरी होत्था'। अंधगवण्ही पिया। धारिणी माया। गुणरयणं तवो-कम्मं। सोलस वासाइं परियाओ। सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए सिद्धा ।।

अंत० व० २, अ० १-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. अरिट्ठनेमितित्थे अणीयसो कुमारो अण्णे य

१०७ १. अणीयसे २. अणंतसेणे ३. अजियसेणे ४. अणिहयरिऊ ५. देवसेणे ६. सत्तुसेणे ७. सारणे ८. गए ९. समुद्दे १०. दुम्मुहे ११. कूवए १२. दारुए १३. अणाहिट्ठी ।।

भद्दिलपुरे नागगाहावई तस्स य पुत्तो अणीयसो

१०८ तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नामं नगरे होत्था––वण्णओ ।।

तस्स णं भद्दिलपुरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था––वण्णओ, जियसत्तू राया ।।

तत्थ णं भद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावई होत्था––अड्ढे-जाव-अपरिभूए ।।

तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था–सूमाला-जाव-सुरूवा ।।

१०९ तस्स णं नागस्स गाहावइस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीयसे नामं कुमारे होत्था––सूमाले-जाव-सुरूवे पंचधाइपरिक्खित्ते जहा दढपइण्णे-जाव-गिरकंदरमल्लीणे विव चंपगवरपायवे णिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ।।

तए णं तं अणीयसं कुमारं सातिरेगअट्ठवासजायं जाणित्ता अम्मापियरो कलायरियस्स उवणेंति-जाव-भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।।
तए णं तं अणीयसं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाणित्ता अम्मापियरो सरिसियाणं सरिव्वयाणं सरित्तयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं सरिसएहिंतो इब्भकुलेहिंतो आणिएल्लियाणं बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति ।।
तए णं से नागे गाहावई अणीयसस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ, तं जहा–
बत्तीस हिरण्णकोडीओ जहा महब्बलस्स-जाव-उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।।

अरिट्ठनेमिसकासे अणीयसपव्वज्जा सत्तुंजे सिद्धी य

११० तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी जेणेव भद्दिलपुरे नयरे जेणेव सिरिवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा निग्गया ।।

तए णं तस्स अणीयसस्स कुमारस्स तं महा जणसद्दं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था । जहा गोयमे तहा अणगारे जाए, नवरं–सामाइयमाइयाइं चोद्दस-पुव्वाइं अहिज्जइ । बीसं वासाइं परियाओ । सेसं तहेव-जाव-सेत्तुंजे पव्वए मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे ।।

अंत० व० ३-अ० १

अणंतसेणकुमाराई अणगारा

१११ एवं जहा अणीयसे । एवं सेसा वि । बत्तीसओ दाओ । वीसं वासा परियाओ । चोद्दस पुव्वा । सेत्तुंजे सिद्धा ।

अंत० व० ३, अ० २-६

सारणकुमारसमणो

११२ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए, जहा अणीयसे नवरं–वसुदेवे राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । सारणे कुमारे । पण्णासओ दाओ । चोद्दस पुव्वा । वीसं वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स-जाव-सेत्तुंजे सिद्धे ।

अंत० व-३, अ० ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. अरिट्ठनेमितित्थे गजसुकुमालाइसमणा

११३ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए, अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे ।।

छण्हं अणगाराणं तव-संकप्पस्स अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णा

११४ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो सहोदरा होत्था--सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छंकिय-वच्छा कुसुम-कुंडलभद्दलया नलकूबरसमाणा ।।

तए णं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"इच्छामो णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए ।।"

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ।।

तए णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

छण्हं पि देवईए गिहे कमसो पवेसो

११५ तए णं ते छ अणगारा अण्णया कयाई छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति, बीयाए पोरिसीए झाणं झियायंति, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंता मुहपोत्तियं पडिलेहंति, पडिलेहित्ता भायणवत्थाइं पडिलेहंति, पडिलेहित्ता भायणाइं पमज्जंति, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेंति, उग्गाहेत्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"इच्छामो णं भंते! छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा तिहिं संघाडएहिं बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।।" अहासुहं देवाणुप्पिया ।

तए णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ सहसंबवणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता तिहिं संघाडएहिं अतुरियमचवलमसंभंता जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणा-सोहेमाणा जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडंति ।।

११६ तत्थ णं एगे संघाडए बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ।।

तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण-हियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइं अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया, सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविस्सज्जेइ ।।

११७ तयणंतरं च णं दोच्चे संघाडए बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइं अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीहकेसराण मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ।।

११८ तयाणंतरं च णं तच्चे संघाडए बारवईए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ।।

देवईए एगस्सेव पुणरागमणसंका

११९ तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइं अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—

"किण्णं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए समणा निग्गंथा उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणा भत्तपाणं नो लभंति, जण्णं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो-भुज्जो अणुप्पविसंति ?"

देवईए संका-समाधाणं

१२० तए णं ते अणगारा देवइं देविं एवं वयासी—

"नो खलु देवाणुप्पिए ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए जाव देवलोग-भूयाए समणा निग्गंथा उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति, णो चेव णं ताइं चेव कुलाइं दोच्चं पि तच्चं पि भत्तपाणाए अणुपविसंति ।।

एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे भद्दिलपुरे नगरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छंकिय-वच्छा कुसुम-कुंडलभद्दलया नलकूबर-समाणा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया ।

तए णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वइआ तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामो नमंसामो, इमं एयारूवं अभिग्गहं ओगिण्हामो इच्छामो णं भंत्ते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खत्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

तए णं अम्हे अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरामो । तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेत्ता, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइत्ता, तइयाए पोरिसीए अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा तिहिं संघाडएहिं बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणा तव गेहं अणुप्पविट्ठा । तं णो खलु देवाणुप्पिए ! ते चेव णं अम्हे । अम्हे णं अण्णे—देवइं देविं एवं वदंति, वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।"

देवईमणम्मि अइमुत्तकुमारवयणे संका

१२१ तए णं तीसे देवईए देवीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए · · · संकप्पे समुप्पण्णे-एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिआ—"तुमण्णं देवाणुप्पिए ! अट्ठ पुत्ते पयाइस्ससि सरिसए जाव नलकूबर-समाणे नो चेव णं भरहे वासे अण्णाओ अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्संति ।" तं णं मिच्छा । इमं णं पच्चक्खमेव दिस्सइ—भरहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ खलु एरिसए पुत्ते पयायाओ । तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदामि, वंदित्ता इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामीति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह ।" ते वि तहेव उवट्ठवेंति । जहा देवाणंदा जाव पज्जुवासइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरिट्ठनेमिणा सुलसाचरियकहणेण संका-समाधाण

१२२ तए णं अरहा अरिट्ठणेमी देवइं देविं एवं वयासी–

"से नूणं तव देवई ! इमे छ अणगारे पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए ·· संकप्पे समुप्पण्णे–"एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिआ तं चेव जाव निग्गच्छित्ता मम अंतियं हव्वमागया ।" से नूणं देवई ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ।।

एवं खलु देवाणुप्पिए ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावई परिवसइ–अड्ढे जाव अपरिभूए ।।

तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था ।।

१२३ तए णं सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव नेमित्तिएणं वागरिया–"एस णं दारिया णिदू भविस्सइ ।।"

तए णं सा सुलसा बालप्पभिइं चेव हरिणेगमेसिस्स पडिमं करेइ, करेत्ता कल्लाकल्लिं ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता उल्लपड-साडया महरिहं पुप्फच्चणं करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिया पणामं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा चरइ वा ।।

तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए हरिणेगमेसी देवे आराहिए यावि होत्था ।।

तए णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए सुलसं गाहावइणिं तुमं च 'दो वि समउउयाओ' करेइ ।।

तए णं तुब्भे दो वि समामेव गब्भे गिण्हह, समामेव गब्भे परिवहह, समामेव दारए पयायह ।।

तए णं सा सुलसा गाहावइणी विणिहायमावण्णे दारए पयायइ ।।

१२४ तए णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए विणिहाय-मावण्णे दारए करयल संपुडेणं गेण्हइ, गेण्हित्ता तव अंतियं साहरइ। तं समयं च णं तुमं पि नवण्हं मासाणं सुकुमालदारए पसवसि । जे वि य णं देवाणुप्पिए ! तव पुत्ता ते वि य तव अंतिआओ करयल-संपुडेणं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरइ ।

तं तव चेव णं देवई ! एए पुत्ता । णो सुलसाए गाहावइणीए ।।

छ सहोदरा अणगारा देवईए एव पुत्त त्ति णच्चा देवईए हरिसो

१२५ तए णं सा देवई देवी अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते छप्पि अणगारे वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता आगयपण्हया पप्फुयलोयणा कंचुयपडिक्खित्तया दरियवलय-बाहा धाराहय-कलंब-पुप्फगं विव समूससिय-रोमकूवा ते छप्पि अणगारे अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी पेहमाणी सुचिरं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं नयरिं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागया, धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव सए वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागया सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ ।।

देवईमणम्मि पुत्तस्स लालनपालनाभिलासो चिंता य

१२६ तए णं तीसे देवईए देवीए अयं अज्झत्थिए ·· संकप्पे समुप्पण्णे–"एवं खलु अहं सरिसए जाव नलकूबर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणए समणुब्भूए। एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं-छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ। तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, पुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, जासिं मण्णे णियग-कुच्छि-संभूयाइं थणदुद्ध-लुद्धयाइं महुर-समुल्लावयाइं मम्मण-पजंपियाइं थण-मूलाकक्खदेस-भागं अभिसरमाणाइं मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे णिवेसियाइं देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए। अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एक्कतरमवि ण पत्ता–ओहयमणसंकप्पा करयलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायइ ।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्हस्स चिंताकारणपुच्छा

१२७ इमं च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए देवईए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ ।। तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता देवइं देविं एवं वयासी– "अण्णया णं अम्मो ! तुब्भे ममं पासेत्ता हट्ठतुट्ठा जाव भवह, किण्णं अम्मो ! अज्ज तुब्भे ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह ?"

देवईए चिंताकारण-निवेदणं

१२८ तए णं सा देवई देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी––

एवं खलु अहं पुत्ता ! सरिसए जाव नलकूबर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणे अणुब्भूए । तुमं पि य णं पुत्ता ! छण्हं-छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छसि । तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव झियामि ।

कण्हस्स देवाराहणं देवेण य कणीयसभायरभवणकहणं

१२९ तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं एवं वयासी––

मा णं तुब्भे अम्मो ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह । अहण्णं तहा घत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सति त्ति कट्टु देवइं देविं ताहिं इट्ठाहिं–जाव–वग्गूहिं समासासेइ । तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी हरिणेगमेसिं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ।।

१३० तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे हरिणेगमेसिस्स देवस्स आसणं चलइ जाव अहं इहं हव्वमागए । संदिसाहि णं देवाणुप्पिया ! किं करेमि ? किं दलयामि ? किं पयच्छामि ? किं वा ते हियइच्छियं ?

तए णं से कण्हे वासुदेवे तं हरिणेगमेसिं देवं अंतलिक्खपडिवण्णं पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोसहं पारेइ, पारेत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी––

"इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सहोदरं कणीयसं भाउयं विदिण्णं ।।"

१३१ तए णं से हरिणेगमेसी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी––

"होहिइ णं देवाणुप्पिया ! तव देवलोयचुए सहोदरे कणीयसे भाउए । से णं उम्मुक्क बालभावे विण्णयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ"––

कण्हं वासुदेवं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदइ, वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।

कण्हेण देवईए आसासणं

१३२ तए णं से कण्हे वासुदेवे पोसहसालाओ पडिणिवत्तइ, पडिणिवत्तित्ता जेणेव देवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी––

"होहिइ णं अम्मो ! मम सहोदरे कणीयसे भाउए त्ति कट्टु देवइं देविं ताहिं इट्ठाहिं–जाव–वग्गूहिं आसासेइ, आसासेत्ता जामेव दिवं पाउब्भूए तामेव दिवं पडिगए ।।"

गयसुकुमालस्स जम्मो

१३३ तए णं सा देवई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा जाव गब्भं परिवहइ ।।

तए णं सा देवई देवी नवण्हं मासाणं जासुमण-रत्तबंधुजीवय-लक्खारस-सरसपारिजातक-तरूणदिवायर-समप्पभं सव्वणयणकंत-सुकुमालपाणिपायं जाव सुरूवं गयतालुसमाणं दारयं पयाया । जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए गयतालुसमाणे, तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसुकुमाले ।।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरे नामं करेंति––गयसुकुमालो त्ति ।

सेसं जहा मेहे जाव अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गयसुकुमालभारिया भविस्सइ त्ति सोमिलमाहणधूयाए कण्णंतेउर-पक्खेवो

१३४ तत्थ णं बारवईए नयरीए सोमिले नाम माहणे परिवसइ–अड्ढे–जाव–अपरिभूए रिउव्वेय–जाव–बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिए यावि होत्था ।।

तस्स सोमिल-माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था––सूमालपाणिपाया–जाव–सुरूवा ।।

तस्स णं सोमिलस्स धूया सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया होत्था––सूमालपाणिपाया जाव सुरूवा, रूवेणं जोव्वणेणं लावण्णेणं उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था ।।

तए णं सा सोमा दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया जाव विभूसिया, बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगवंद-परिक्खित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायमग्गंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी चिट्ठइ ।।

१३५ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे । परिसा निग्गया ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए जाव विभूसिए गयसुकुमालेणं कुमारेणं सद्धिं हत्थिखंधवरगए सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं अरहओ अरिट्ठणेमिस्स पायवंदए निग्गच्छमाणे सोमं दारियं पासइ, पासित्ता सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी––

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोमिलं माहणं जायित्ता सोमं दारियं गेण्हह, गेण्हित्ता कण्णंतेउरंसि पक्खिवह । तए णं एसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सइ ।"

तए णं कोडुंबियपुरिसा तहेव पक्खिवंति ।।

१३६ तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासइ ।।

अरिट्ठनेमिणा धम्मदेसणा

१३७ तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा––

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं,
सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहातो वेरमणं ।

कण्हे पडिगए ।।

गयसुकुमालस्स पव्वज्जासंकप्पो

१३८ तए णं से गयसुकुमाले अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, · · · से जहेयं तुब्भे वयह ।
नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि । तओ पच्छा मुंडे भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि ।" अहासुहं देवाणु-प्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।

गयसुकुमालस्स अम्मापिऊणं निवेदणं

१३९ तए णं से गयसुकुमाले अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणामेव हत्थिरयणं तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधवरगए महया भड-चडगर-पहकरेणं बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छए, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी––

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।।"

१४० तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो एवं वयासी--

"धन्नोसि तुमं जाया ! संपुण्णोसि तुमं जाया ! कयत्थोसि तुमं जाया ! कयलक्खणोसि तुमं जाया ! जण्णं तुमे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।।"

तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी--

"एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।"

देवईए सोगाकुलदसा

१४१ तए णं सा देवई देवी तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं असुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म इमेणं एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूया समाणी ···सव्वंगेहिं धस त्ति पडिया ।।

देवईए गयसुकुमालस्स य परिसंवादो

१४२ तए णं सा देवई देवी ···विलवमाणी गयसुकुमालं कुमारं एवं वयासी--

"तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे 'पुत्ते' इट्ठे ···नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए । तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं परिणयवए वड्ढिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।।"

१४३ तए णं से गयसुकुमाले अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वयासी--

तहेव णं तं अम्मो ! जहेव णं तुब्भे ममं एवं वयह--"तुमं सि णं जाया ! अम्हं 'एगे पुत्ते' इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-ऊसासिए हियय-णंदिजणणे उंबरपुप्फं व दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए । तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं परिणयवए वड्ढिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"

एवं खलु अम्मयाओ ! 'माणुस्सए भवे अधुवे अणितिए असासए वसणसओवद्दवाभिभूते विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भरागसरिसे सुविणदंसणोवमे सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे ।'

से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।

१४४ तए णं तं गयसुकुमालं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी--

"इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।।"

तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरं एवं वयासी---

तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह---"इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"

एवं खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे चोरसामण्णे रायसामण्णे दाइयसामण्णे मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे । से के णं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।

१४५ तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति गयसुकुमालं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी--

"एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठिए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं, गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्वयं चरियव्वं ।

नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुमं च णं जाया ! सुहसमुचिए नो चेव णं दुहसमुचिए, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, उच्चावए गामकंटए, बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तओ पच्छा भुत्तभोगी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।।"

१४६ तए णं से गयसुकुमाले कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरं एवं वयासी--

तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे मम एवं वयह--"एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठिए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं, गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्वयं चरियव्वं । नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुमं च णं जाया ! सुहसमुचिए नो चेव णं दुहसमुचिए, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, उच्चावए गामकंटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तओ पच्छा भुत्तभोगी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"

एवं खलु अम्मयाओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स, नो चेव णं धीरस्स । निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्करं करणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।

कण्हस्स गयसुकुमालं पइ रज्जगहणपत्थावो

१४७ तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालं आलिंगइ, आलिंगित्ता उच्छंगे निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी--

'तुमं णं ममं' सहोदरे कणीयसे भाया । तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणिं अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वाहि । अहण्णं तुमे बारवईए नयरीए महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिस्सामि ।

तए णं से गयसुकुमाले कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

तए णं से गयसुकुमाले कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी--

एवं खलु देवाणुप्पिया ! माणुस्सया काम भोगा असुई वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुय-उस्सास-नीसासा दुरुय-मुत्तपुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णा उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवा अधुवा अणितिया असासया सडण-पडण-विद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्स विप्पजहणिज्जा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से के णं जाणइ देवाणुप्पिया ! के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।

गयसुकुमालस्स एगदिवसरज्जं

१४८ तए णं तं गयसुकुमालं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो संचाएइ बहुयाहिं विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामाइं चेव गयसुकुमालं कुमारं एवं वयासी--

तं इच्छामो णं ते जाया ! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ।।

तए णं गयसुकुमाले कुमारे कण्हं वासुदेवं अम्मापियरं च अणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! गयसुकुमालस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह ।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेंति ।

तए णं से कण्हे वासुदेवे गयसुकुमालं कुमारं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! जय-जय नंदा भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, इंदो इव देवाणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं भरहो इव मणुयाणं बारवईए नयरीए अण्णेसिं च बहूणं गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि त्ति कट्टु जय-जय-सद्दं पउंजंति ।।

तए णं से गयसुकुमाले राया जाए जाव-रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।।

तए णं तं गयसुकुमालं रायं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य एवं वयासी--

"भण जाया ! किं दलयामो ? किं पयच्छामो ? किं वा ते हिए-इच्छिय सामत्थे ?"

गयसुकुमालस्स पव्वज्जा

१४९ तए णं से गयसुकुमाले राया कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य एवं वयासी--

इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं च आणियं कासवियं च सद्दावियं । निक्खमणं जहा महब्बलस्स ।।

तए णं से गयसुकुमाले कुमारे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिवज्जइ--तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्टइ, तह भुंजइ, तह भासइ, तह उट्ठाए उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि संजमेणं संजमइ ।।

तए णं से गयसुकुमाले अणगारे जाए--इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ।।

तए णं से गयसुकुमाले जं चेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्ह-कालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।"

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।

गयसुकुमालस्स महापडिमोवसंपज्जणं

१५० तए णं से गयसुकुमाले अणगारे अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाए समाणे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता ईसिं पब्भारगएणं काएणं वग्घारियपाणी अणिमिसनयणे सुक्कपोग्गल-निरुद्धदिट्ठी दो वि पाए साहट्टु एगराइं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमिलकय-उवसग्गो

१५१ इमं च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाए बारवईओ नयरीओ बहिया पुव्वणिग्गए। समिहाओ य दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेण्हइ, गेण्हित्ता तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि गयसुकुमालं अणगारं पासइ, पासित्ता तं वेरं सरइ, सरित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे एवं वयासी--

एस णं भो! से गयसुकुमाले कुमारे अपत्थियपत्थिए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्तिपरिवज्जिए, जेणं मम धूयं सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं अदिट्ठदोसपत्तियं कालवत्तिणिं विप्पजहेत्ता मुंडे जाव पव्वइए। तं सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरनिज्जायणं करेत्तए---एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता दिसापडिलेहणं करेइ, करेत्ता सरसं मट्टियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता जलंतीओ चियाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खइरिंगाले कहल्लेणं गेण्हइ, गेण्हित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।।

गयसुकुमालस्स सिद्धी

१५२ तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पाउब्भूया---उज्जला-जाव-दुरहियासा।।

तए णं से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं अहियासेइ।।

तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थज्झवसाणेणं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुप्पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे केवलवरणाणदंसणे-जाव-समुप्पणे। तओ पच्छा सिद्धे सव्व-दुक्खप्पहीणे।।

तत्थ णं 'अहासंनिहिएहिं देवेहिं सम्मं आराहिए' त्ति कट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए; चेलुक्खेवे कए; दिव्वे य गीयगंधव्वणिणाए कए यावि होत्था।।

कण्हेण वुड्ढस्स साहिज्जकरणं

१५३ तए णं से कण्हे वासुदेवे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं महयाभड-चडगर-पहकरवंद-परिक्खित्ते बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणे एक्कं पुरिसं---जुण्णं जरा जज्जरिय-देहं आउरं झूसियं पिवासियं दुब्बलं किलंतं महइमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं पासइ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगए चेव एगं इट्टगं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेइ।।

तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महालए इट्टगस्स रासी बहिया रत्थापहयाओ अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए।।

कण्हस्स गयसुकुमाल-दंसणाभिलासा

१५४ तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी ---

"कहि णं भंते! से मम सहोदरे कणीयसे भाया गयसुकुमाले अणगारे 'जं णं' अहं वंदामि नमंसामि?"

अरिट्ठनेमिणा गयसुकुमालस्स सिद्धीकहणं

१५५ तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी---

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहिए णं कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी--

कहण्णं भंते ! गयसूमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ?

तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--

एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं ममं कल्लं पच्चावरण्हकालसमयंसि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए जाव एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।।

तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता जलंतीओ चियाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खइरिंगाले कहल्लेणं गेण्हइ, गेण्हित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउब्भए तामेव दिसं पडिगए ।

तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पाउब्भूआ--उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा । तए णं से गयसुकुमाले अणगारे तस्स पुरिसस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं अहियासेइ ।

तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थज्झवसाणेणं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुप्पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे । तओ पच्छा सिद्धे । तं एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ।।

उवसग्गसवणेण कण्हस्स कोहो

१५६ तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी--

"केस णं भंते ! से पुरिसे अपत्थियपत्थिए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जेणं ममं सहोदरं कणीयसं भायरं गयसुकुमालं अणगारं अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ ?

उवसग्गकरणेण साहिज्जमेव दिण्णं ति कोहसमणं

१५७ तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--

मा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि । एवं खलु कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे ।

कहण्णं भंते ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे ?

तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--

से नूणं कण्हा ! तुमं ममं पायवंदए हव्वमागच्छमाणे बारवईए नयरीए एगं पुरिसं जुण्णं जराजज्जरिय-देहं आउरं झूसियं पिवासियं दुब्बलं किलंतं महइमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं पाससि ।

तए णं तुमं तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगए चेव एगं इट्टगं गेण्हसि, गेण्हित्ता बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेससि ।

तए णं तुमे एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महालयाए इट्टगस्स रासी बहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि अणुपवेसिए ।

जहा णं कण्हा ! तुमे तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिण्णे, एवामेव कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभव-सयसहस्स-संचियं कम्मं उदीरेमाणेणं बहुकम्मणिज्जरत्थं साहिज्जे दिण्णे ।।

उवसग्गकत्तारस्स परिण्णाणं कण्हेण

तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी--

"से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५८ तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--

"जे णं कण्हा ! तुमं बारवईए नयरीए अणुप्पविसमाणं पासेत्ता ठियए चेव ठिइभेएणं कालं करिस्सइ, तण्णं तुमं जाणिज्जासि 'एस णं से पुरिसे' ।।"

तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव आभिसेयं हत्थिरयणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिं दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव बारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सोमिलस्स अकालमच्चू

१५९ तए णं तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--"एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं पायवंदए निग्गए। तं नायमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स। तं न नज्जइ णं कण्हे वासुदेवे ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्सइ" त्ति कट्टु भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ। कण्हस्स वासुदेवस्स बारवइं नयरिं अणुप्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसिं हव्वमागए ।।

तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीए-जाव-संजायभए ठियए चेव ठिइभेयं कालं करेइ, धरणितलंसि सव्वंगेहिं 'धस' त्ति सण्णिवडिए ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी--

"एस णं भो ! देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थिए-जाव-सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जेणं ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए" त्ति कट्टु सोमिलं माहणं पाणेहिं कड्ढावेइ, कड्ढावेत्ता तं भूमिं पाणिएणं अब्भोक्खावेइ, अब्भोक्खावेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। सयं गिहं अणुप्पविट्ठे ।।

अंत० व० ३, अ० ८।

---

९. अरिट्ठनेमितित्थे सुमुहाइकुमारा

१६० तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया-जाव-विहरइ ।।

तत्थ णं बारवईए बलदेवे नामं राया होत्था--वण्णओ ।।

तस्स णं बलदेवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था--वण्णओ ।।

तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि-जाव-नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा।

जहा गोयमे, नवरं--सुमुहे कुमारे। पण्णासं कण्णाओ। पण्णासओ दाओ। चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ। वीसं वासाइं परियाओ। सेसं तं चेव-जाव-सेत्तुंजे सिद्धे ।।

१६१ एवं--दुम्मुहे वि। कूवए वि। तिण्णि वि बलदेव-धारिणी-सुया।

दारुए वि एवं चेव, नवरं--वसुदेव-धारिणी-सुए।

एवं--अणाहिट्ठी वि वसुदेव-धारिणी-सुए ।।

अंत० व० ३, अ० ९-१३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. जालिआई समणा

गाहा—१. जालि. २. मयालि. ३. उवयालि, ४. पुरिससेणे य ५. वारिसेणे य ।
६. पज्जुन्न ७. संब ८. अनिरुद्धे, ९ सच्चनेमी य १०. दढनेमी ।।१।।

१६२ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नयरी । तीसे णं बारवईए-नयरीए-जाव-कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं-जाव-कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ।।

तत्थ णं बारवईए नगरीए वसुदेवे राया । धारिणी देवी—वण्णओ जहा गोयमो, नवरं—जालिकुमारे । पण्णासओ दाओ । बारसंगी । सोलस वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स-जाव-सेत्तुंजे सिद्धे ।।

एवं—मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य ।

एवं—पज्जुण्णे वि, नवरं—कण्हे पिया, रुप्पिणी माया ।

एवं—संबे वि, नवरं—जंबवई माया ।

एवं—अणिरुद्धे वि, नवरं—पज्जुण्णे पिया, वेदब्भी माया ।

एवं—सच्चणेमी, नवरं—समुद्दविजए पिया, सिवा माया ।

एवं—दढणेमी वि सव्वे एगगमा ।।

अंत० व० ४, अ० १–१० ।

---

११. अरिट्ठनेमितित्थे थावच्चापुत्ते अण्णे य

बारवईए कण्हो वासुदेवो

१६३ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवती नामं नयरी होत्था—पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिण्णा नवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा धणवइ-मइ-निम्मिया चामीयर-पवर-पागारा नाणामणि-पंचवण्णकविसीसग-सोहिया अलकापुरि-संकासा पमुइय-पक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया ।।

तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे नामं पव्वए होत्था—तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविह-गुच्छ-गुम्म-लया-वल्लिपरिगए हंस-मिग-मयूर-कोंच-सारस-चक्कवाय-मयणसाल-कोइलकुलोववेए अणेगतड-कडग-वियर-उज्झर-पवाय-पब्भारसिहरपउरे अच्छरगण-देवसंघ-चारण-विज्जाहरमिहुणसंविचिण्णे निच्चच्छणए दसारवर-वीरपुरिस-तेलोक्क-बलवगाणं, सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासाईए दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे ।।

तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते, एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे ।।

तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था—दिव्वे वण्णओ ।।

तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ । से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं-जाव-अण्णेसिं च बहूणं ईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईणं, वेयड्ढगिरि-सागरपेरंतस्स य दाहिणड्ढ-भरहस्स, बारवईए नयरीए आहेवच्चं-जाव-पालेमाणे विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहावईणी थावच्चा तीसे य पुत्तो थावच्चापुत्तो

१६४ तत्थ णं बारवईए नयरीए थावच्चा नामं गाहावइणी परिवसइ—अड्ढा-जाव-अपरिभूया ।।

तीसे णं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं सत्थवाहदारए होत्था—सुकुमालपाणिपाए-जाव-सुरूवे ।।

तए णं सा थावच्चा गाहावइणी तं दारगं साइरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेइ-जाव—भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेइ ।

बत्तीसओ दाओ-जाव-बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए भुंजमाणे विहरइ ।।

अरिट्ठनेमि-समवसरणं

१६५ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी आइगरे तित्थगरे सो चेव वण्णओ दसधणुस्सेहे नीलुप्पल-गवलगुलिय अयसिकुसुमप्पगासे अट्ठारसहिं समण-साहस्सीहिं, चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव बारवती नाम नगरी जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।। परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ ।।

कण्हस्स पज्जुवासणा

१६६ तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरमहुरसद्दं कोमुइयं भेरिं तालेह ।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्त-माणंदिया-जाव-मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव कोमुइया भेरी, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गंभीरमहुरसद्दं कोमुइयं भेरिं तालेंति । तओ निद्ध-महुर-गंभीर-पडिसुएणं पिव सारइएणं बलाहएण अणुरसियं भेरीए ।।

तए णं तीसे कोमुइयाए भेरीए तालियाए समाणीए बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चंदर-दरी-विवर-कुहर-गिरिसिहर-नगरगोउर-पासाय-दुवार-भवण-देउल-पडिस्सुया-सयसहस्ससंकुलं करेमाणे बारवतिं नयरिं सब्भितर-बाहिरियं सव्वओ समंता सद्दे विप्पसरित्था ।।

तए णं बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा-जाव-गणियासहस्साइं कोमुइयाए भेरीए सद्दं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया ण्हाया आविद्ध-वग्घारिय-मल्लदाम-कलावा अहयवत्थ-चंदणोकिण्णगायसरीरा अप्पेगइया हयगया एवं गयगया रह-सीया-संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरा-परिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे-जाव-अंतियं पाउब्भवमाणे पासित्ता हट्ठतुट्ठ--चित्तमाणंदिए-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउरंगिणिं सेणं सज्जेह, विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह तेवि तह त्ति उवट्ठवेंति ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे ण्हाए-जाव-सव्वालंकारविभूसिए विजयं गंधहत्थिं दुरूढे समाणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महयाभड-चडगर-वंद-परियाल-संपरिवुडे बारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणे जेणेव असोगवर पायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता विजयाओ गंधहत्थीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ . . . जेणामेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्पो

१६७ थावच्चापुत्ते वि निग्गए । जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा निसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ । जहा मेहस्स तहा चेव निवेयणा ।।

तए णं तं थावच्चापुत्तं थावच्चा गाहावइणी जाहे नो संचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणमणुमन्नित्था ।।

तए णं सा थावच्चा गाहावइणी आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवरपडिदुवार-देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—

एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए—इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ? से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु संवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं । से णं देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहण्णं निक्खमणसक्कारं करेमि । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्त-मउड-चामराओ य विदिन्नाओ ।।
तए णं कण्हे वासुदेवे थावच्चं गाहावइणिं एवं वयासी—

"अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुत-वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि ।।"

कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स य परिसंवादो

१६८ तए णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी—

मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे मम बाहुच्छाय-परिग्गहिए । केवलं देवाणुप्पियस्स अहं नो संचाएमि वाउकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए । अण्णो णं देवाणुप्पियस्स जं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएइ, तं सव्वं निवारेमि ।।

तए णं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

"जइ णं देवाणुप्पिया ! मम जीवियंतकरं मच्चुं एज्जमाणं निवारेसि, जरं वा सरीररूव-विणासिणिं सरीरं अइवयमाणिं निवारेसि, तए णं अहं तव बाहुच्छाय-परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि ।।"

तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे थावच्चापुत्तं एवं वयासी—"एए णं देवाणुप्पिया दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए, नण्णत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं ।।"

तए णं से थावच्चापुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—"जइ णं एए दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए, नण्णत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अण्णाण-मिच्छत्त-अविरइ-कसाय-संचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ।।

कण्हस्स जोगवखेम-घोसणा

१६९ तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं देवाणुप्पिया ! बारवईए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु हत्थिखंधवरगया महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा उग्घोसणं करेह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, तं जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुंबिय-माडंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणु-पव्वयइ, तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ पच्छाउरस्स वि य से मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स जोगक्खेम-वट्टमाणिं पडिवहइ त्ति कट्टु घोसणं घोसेह-जाव-घोसंति ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमणं

१७० तए णं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पत्तेयं-पत्तेयं पुरिससहस्सवाहिणीसु सिबियासु दुरूढं समाणं मित्त-नाइ-परिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्सं अंतियं पाउब्भवमाणं पासइ, पासित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं-जाव-सीयं उवट्ठवेह ।।

तए णं से थावच्चापुत्ते बारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइ-पडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ ।।

सिस्सभिक्खादाणं

१७१ तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"एस णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते" थावच्चाए गाहावइणीए एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु संवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्खं" ।।

तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ।।

तए णं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमइ, सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ ।

तए णं सा थावच्चा गाहावइणी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी रोयमाणी-रोयमाणी कंदमाणी-कंदमाणी विलवमाणी-विलवमाणी एवं वयासी—"जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाएयव्वं । अम्हंपि णं एसेव मग्गे भवउ त्ति कट्टु थावच्चा गाहावइणी अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।"

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहणं

१७२ तए णं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेणं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ-जाव-पव्वइए ।।

थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया

१७३ तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाए—इरियासमिए-जाव-गुत्तबंभयारी अकोहे-जाव-निरुवलेवे, कंसपाईव मुक्कतोए-जाव-कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं विहरइ ।।

तए णं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

थावच्चापुत्तस्स जणवयविहारो सेलगपुरे समोसरणं च

१७४ तए णं अरहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगार-सहस्सं सीसत्ताए दलयइ ।।

तए णं से थावच्चापुत्ते अण्णया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"इच्छामि णं भंते !

तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अणगारसहस्सेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहासुहं देवाणुप्पिया !

तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

सेलगरायागमणं

१७५ तेणं कालेणं तेणं समएणं सेलगपुरे नामं नगरे होत्था। सुभूमिभागे उज्जाणे। सेलए राया। पउमावई देवी। मंडुए कुमारे जुवराया। तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया होत्था–उप्पत्तियाए-जाव-पारिणामियाए उववेया रज्जधुरं चिंतयंति ।।
थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे। राया निग्गए ।।

सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

१७६ तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए धम्मं सोच्चा एवं वयासी–

"जहा णं देवाणुप्पियाणं संअंतिए बहवे उग्गा उग्गपुत्ता मुंडा भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तहा णं अहं नो संचाएमि-जाव-पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं-जाव-गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि।"

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।

तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं-जाव-गिहिधम्मं उवसंपज्जइ ।।

सेलगस्स समणोवासग-चरिया

१७७ तए णं सेलए राया समणोवासए जाए––अभिगयजीवाजीवे अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।
पंथगपामोक्खा पंच मंति-सया समणोवासया जाया ।।
थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

सोगंधियाए सुदंसणे सेट्ठी

१७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं सोगंधिया नामं नयरी होत्था–वण्णओ। नीलासोए उज्जाणे–वण्णओ ।।

तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे-जाव-अपरिभूए ।।

सोगंधियाए सुयपरिव्वायगागमणं

१७९ तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए नामं परिव्वायए होत्था––रिउव्वेय-जजुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय-सट्ठितंतकुसले संखसमए लद्धट्ठे पंचजम-पंचनियमजुत्तं सोयमूलयं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्त-वत्थ-पवर-परिहिए तिदंड-कुंडिय-छत्त-छन्नालय-अंकुस-पवित्तय-केसरि-हत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

तए णं सोगंधियाए नगरीए सिंघाडग तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ––एवं खलु सुए परिव्वायए इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव सोगंधियाए नयरीए परिव्वायगावसहंसि संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।
परिसा निग्गया ! सुदंसणो वि णीति ।।

सुयपरिव्वायगेण सोयमूलय-धम्मोवएसो

१८० तए णं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अण्णेसिं च बहूणं संखाणं परिकहेइ–एवं खलु सुदंसणा ! अम्हं सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते। से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–दव्वसोए य, भावसोए य।

दव्वसोए उदएणं मट्टियाए य। भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य।

जं णं अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवइ तं सव्वं सज्जो पुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ तं असुई सुई भवइ। एवं खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छंति ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुदंसणस्स सोयमूलय-धम्मपडिवत्ती

१८१ तए णं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठतुट्ठे सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणे संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

तए णं से सुए परिव्वायए सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

सोयमूलधम्मविसए थावच्चापुत्तस्स सुदंसणेण संवादो चाउज्जामियधम्मोवएसो य

१८२ तेणं कालेणं तेणं समएणं थावच्चापुत्तस्स समोसरणं। परिसा निग्गया। सुदंसणो वि णीइ। थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—तुम्हाणं किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?

तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वयासी—सुदंसणा ! विणयमूलए धम्मे पण्णत्ते। से वि य विणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अगार-विणए अणगारविणए य।

तत्थ णं जे से अगारविणए, से णं पंच अणुव्वयाइं, सत्त सिक्खावयाइं एक्कारस उवासगपडिमाओ। तत्थ णं जे से अणगारविणए, से णं चाउज्जामा, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं।

इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं आणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणा भवंति ।।

१८३ तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी—तुब्भण्णं सुदंसणा ! किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?

अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते -जाव-

खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छंति ।।

तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी—

"सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा, तए णं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ? नो इणट्ठे समट्ठे।

एवामेव सुदंसणा ! तुब्भं पि पाणाइवाएणं-जाव-बहिद्धादाणेणं नत्थि सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही।

सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जिय-खारेणं आलिंपइ, आलिंपित्ता पयणं आरुहेइ आरुहेत्ता उण्हं गाहेइ, तओ पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा। से नूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जिय-खारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ?

हंता भवइ। एवामेव सुदंसणा ! अम्हं पि पाणाइवायवेरमणेणं-जाव-बहिद्धादाणवेरमणेणं अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही ।।

सुदंसणस्स विणयमूलय-धम्मपडिवत्ती

१८४ तत्थ णं सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए धम्मं सोच्चा जाणित्तए ।।

तए णं थावच्चापुत्ते अणगारे सुदंसणस्स तीसे य महइमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं-जाव-

तए णं से सुदंसणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ।।

सुयेण सुदंसणस्स पडिसंबोधो

१८५ तए णं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था-एवं खलु सुदंसणेणं सोयधम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवण्णे, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता धाउरत्त-वत्थ-पवर परिहिए पविरल-परिव्वायगेणं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ ।।

तए णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ न पच्चुग्गच्छइ नो आढाइ नो वंदइ तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं पासित्ता एवं वयासी –

तुमं णं सुदंसणा ! अण्णया ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि पच्चुग्गच्छसि आढासि वंदसि, इयाणिं सुदंसणा ! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता नो अब्भुट्ठेसि नो पच्चुग्गच्छसि नो आढासि नो वंदसि। तं कस्स णं तुमे सुदंसणा ! इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवण्णे ?

१८६ तए णं से सुदंसणे सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सुयं परिव्वायगं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ। तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवण्णे ।।

तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वयासी–

"तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो। तं जइ मे से इमाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं वागरेइ, तओ णं वंदामि नमंसामि। अह मे से इमाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं नो वागरेइ, तओ णं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं० निप्पट्ठ-पसिणवागरणं करिस्सामि ।।

सुयस्स थावच्चापुत्तेण सह संवादो

१८७ तए णं से सुए परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी–

"जत्ता ते भंते ? जवणिज्जं ते (भंते) ? अव्वाबाहं (ते भंते)? फासुयं विहारं (ते भंते ?)"

तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारे सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वयासी–"सुया ! जत्तावि मे जवणिज्जं पि मे अव्वाबाहं पि मे फासुयं विहारं पि मे" ।।

जत्ताइपदविचारणा

तए णं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वयासी––किं ते भंते ! जत्ता ?

सुया ! जण्णं मम नाण-दंसण-चरित्त-तव-संजममाइएहिं जोएहिं जयणा, से तं जत्ता।

से किं ते भंते ! जवणिज्जं ?

सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा––

इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य।

से किं तं इंदियजवणिज्जे ?

सुया ! जण्णं ममं सोतिंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, से तं इंदियजवणिज्जे।

से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?

सुया ! जण्णं मम कोह-माण-माया-लोभा खीणा उवसंता नो उदयंति, से तं नोइंदियजवणिज्जे।

से किं ते भंते ! अव्वाबाहं ?

सुया ! जण्णं मम वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइया विविहा रोगायंका नो उदीरेंति, से तं अव्वाबाहं।

से किं ते भंते ! फासुयं विहारं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुया ! जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देउलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडग-विवज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरामि, से तं फासुयं विहारं।।

सरिसवयाणं भक्खाभक्खत्तवियारणा

१८८ सरिसवया ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?
सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ?
सुया ! सरिसवया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--मित्तसरिसवया य धण्णसरिसवया य।
तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा--
सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते धण्णसरिसवया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--
सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य।
तत्थ ण जे ते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--
फासुया य अफासुया य। अफासुया णं सुया ! समणाणं निग्गंथाणं नो भक्खेया।
तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--
एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य।
तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--
जाइया य अजाइया य।
तत्थ णं जे ते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--
लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जे ते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया।
एएणं अट्ठेणं सुया ! एवं वुच्चइ--सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि।।

कुलत्थाणं भक्खाभक्खत्तवियारणा

१८९ कुलत्था ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?
सुया ! कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि ?
सुया ! कुलत्था दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--इत्थिकुलत्था य धण्णकुलत्था य।
तत्थ णं जे ते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा--कुलवहुया इ य कुलमाउया इ य कुलधूया इ य। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते धण्णकुलत्था ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--फासुया य अफासुया य। अफासुया णं सुया ! समणाणं निग्गंथाणं नो भक्खेया।
तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य।
तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा जाइया य अजाइया य। तत्थ णं जे ते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जे ते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया।
एएणं अट्ठेणं सुया! एवं वुच्चइ–कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि।।

मासाणं भक्खाभक्खत्तवियारणा

१९० मासा ते भंते! किं भक्खेया? अभक्खेया?
सुया! मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि।
से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि?
सुया! मासा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–कालमासा य, अत्थमासा य धण्णमासा य।
तत्थ णं जे ते कालमासा ते दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा–सावणे भद्दवए आसोए कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चेत्ते वइसाहे जेट्ठामूले आसाढे। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–फासुया य अफासुया य। अफासुया णं सुया! समणाणं निग्गंथाणं नो भक्खेया।
तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–जाइया य अजाइया य। तत्थ णं जे ते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जे ते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया।
एएणं अट्ठेणं सुया! एवं वुच्चइ–मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि।।

एग-अक्खयाइपदवियारणा

१९१ एगे भवं? दुवे भवं? अक्खए भवं? अव्वए भवं? अवट्ठिए भवं? अणेगभूय-भाव-भविए भवं?
सुया! एगे वि अहं, दुवे वि अहं, अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं।
से केणट्ठेणं भंते! एगे वि अहं? दुवे वि अहं? अक्खए वि अहं? अव्वए वि अहं? अवट्ठिए वि अहं? अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं?
सुया! दव्वट्ठयाए एगे वि अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुवे वि अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवओगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं।।

सुयस्स परिव्वायगसहस्सेण सह पव्वज्जा

१९२ एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–
"इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए।।"
तए णं थावच्चापुत्ते अणगारे सुयस्स चाउज्जामं धम्मं कहेइ।।
तए णं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी–इच्छामि णं भंते! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया!।।
तए णं से सुए परिव्वायए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडयं च कुंडियाओ य छत्तए य छन्नालए य अंकुसए य पवित्तए य केसरियाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, सयमेव सिहं उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइए। सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुयस्स जणवयविहारो

१९३ तए णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ ।।

तए णं थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नयरीओ नीलासोयाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

थावच्चापुत्तस्स परिनिव्वाणं

१९४ तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता-जाव-संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओवगमणं णुवन्ने ।।

तए णं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता-जाव-केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

सुयस्स सेलगपुरागमणं सेलगस्स य अभिनिक्खमणाभिलासो

१९५ तए णं से सुए अण्णया कयाइ जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

परिसा निग्गया । सेलओ निग्गच्छइ ।।

तए णं से सेलए सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सुयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं-जाव-नवरं देवाणुप्पिया! पंथगपामोक्खाइं पंच मंतिसयाइं आपुच्छामि, मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि। तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया ।।

तए णं से सेलए राया सेलगपुरं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सण्णिसण्णे ।।

१९६ तए णं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुयस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तए णं अहं देवाणुप्पिया! संसार-भउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं सुयस्स अणगारस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि। तुब्भे णं देवाणुप्पिया! किं करेह? किं ववसह? किं भे हियइच्छिए सामत्थे?
तए णं ते पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया सेलगं रायं एवं वयासी–
"जइ णं तुब्भं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा-जाव-पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया! के अण्णे आहारे वा आलंबे वा? अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा-जाव-पव्वयामो।
जहा णं देवाणुप्पिया! अम्हं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए, तहा णं पव्वइयाण वि समाणाणं बहूसु कज्जेसु य-जाव-चक्खुभूए ।।"
तए णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं वयासी–
"जइ णं देवाणुप्पिया! तुब्भे संसारभउव्विग्गा-जाव-पव्वयह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया! सएसु-सएसु कुडुंबेसु जेट्ठपुत्ते कुडुंबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह"। ते वि तहेव पाउब्भवंति ।।

सेलगपुत्तमंडुयस्स रायाभिसेयो

१९७ तए णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह।
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेंति ।।
तए णं से सेलए राया बहूहिं गणनायगेहि य-जाव-संधिवालेहि य सद्धिं संपरिवुडे मंडुयं कुमारं-जाव-रायाभिसेएणं अभिसिंचइ ।।
तए णं से मंडुए राया जाए–महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे-जाव-रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेलयस्स पव्वज्जा

१९८ तए णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ ।।
तए णं मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुरं नयरं आसिय-सित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्तं-जाव-सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।"
तए णं से मंडुए दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी–
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगस्स रण्णो महत्थं महग्घं महरिहं विउलं निक्खमणाभिसेयं करेह ? जहेव मेहस्स तहेव नवरं– पउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छइ, सच्चेव पडिगहं गहाय सीयं दुरुहइ । अवसेसं तहेव-जाव-
तए णं से सेलगे पंचहिं मंतिसएहिं सद्धिं ? सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव सुए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ-जाव-पव्वइए ।।
तए णं से सेलए अणगारे जाए-जाव-कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं विहरइ ।।
तए णं से सेलए सुयस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

सुयस्स पुंडरीयपव्वए परिनिव्वाणं

१९९ तए णं से सुए सेलगस्स अणगारस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ ।।
तए णं से सुए अण्णया कयाइ सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ ।।
तए णं से सुए अणगारे अण्णया कयाइ तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव पुंडरीयपव्वए-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

सेलगस्स रोगातंका

२०० तए णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य निच्चं पाणभोयणेहि य पयइ-सुकुमालस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला-जाव-दुरहियासा । कंडु-दाह-पित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरइ ।।
तए णं से सेलए तेणं रोगायंकेणं सुक्के भुक्खे जाए यावि होत्था ।।
तए णं से सेलए अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे-जाव-विहरइ ।।
परिसा निग्गया । मंडुओ वि निग्गओ सेलगं अणगारं वंदइ नमंसइ पज्जुवासइ ।।

सेलगस्स मंडुयकया तिगिच्छा

२०१ तए णं से मंडुए राया सेलगस्स अणगारस्स सरीरगं सुक्कं भुक्खं सव्वाबाहं सरोगं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–
"अहण्णं भंते ! तुब्भं अहापवत्तेहिं तेगिच्छिएहिं अहापवत्तेणं ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं तेगिच्छं आउट्टावेमि । तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह, फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरह ।।"
तए णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रण्णो एयमट्ठं तह त्ति पडिसुणेइ ।।
तए णं से मंडुए सेलगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।
तए णं से सेलए कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते स-भंड-मत्तोवगरणमायाए पंथगपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुरमणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव मंडुयस्स रण्णो जाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरइ ।।
तए णं से मंडुए तेगिच्छिए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–
"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! सेलगस्स फासु-एसणिज्जेण ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं तेगिच्छं आउट्टेह ।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते तेगिच्छिया मंडुएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सेलगस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणगं च से उवदिसंति ।।

तए णं तस्स सेलगस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं मज्जपाणएण य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था—हट्ठे मल्लसरीरे जाए ववगयरोगायंके ।।

सेलगस्स पमत्तविहारे

२०२ तए णं से सेलए तंसि रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुले असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए पमत्ते यावि विहरइ, नो संचाएइ फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ।।

पंथगं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ता सेलगसिस्साणं विहारो

२०३ तए णं तेसिं पंथगवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णिसण्णाणं सण्णिविट्ठाणं पुव्व-रत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं -जाव-पव्वइए विउले असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए नो संचाएइ फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्च-प्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरित्तए । नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं निग्गंथाणं ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसीलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउ-बद्ध-पीढ-फलग-सेज्जासंथारए पमत्ताणं विहरित्तए । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलगं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारेणं विहरित्तए— एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव सेलए रायरिसी तेणेव उवागच्छंति, उवा-गच्छित्ता सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेंति, ठावेत्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति ।।

मज्जपमत्तस्स सेलगस्स पंथगेणं चाउम्मासिय-खामणा

२०४ तए णं से पंथए सेलगस्स सेज्जा-संथारय-उच्चार-पासवण-खेल्ल-सिंघाणमत्त-ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ ।।

तए णं से सेलए अण्णया कयाइ कत्तिय-चाउम्मासियंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारमाहारिए सुबहुं च मज्जपाणयं पीए पच्चावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते ।।

तए णं से पंथए कत्तिय-चाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते, चाउम्मासियं पडिक्कमिउकामे सेलगं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ ।।

सेलगस्स कोवो पंथएणं खामणा य

२०५ तए णं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे उट्ठेइ, उट्ठेत्ता एवं वयासी— "से केस णं भो ! एस अपत्थियपत्थए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जे णं ममं सुहप-सुत्तं पाएसु संघट्टेइ ?"

तए णं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी— "अहं णं भंते ! पंथए कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते, चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि ।

तं खामेमि णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरहंति णं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवंकरणयाए" त्ति कट्टु सेलयं अणगारं एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ ।।

सेलगस्स पुणो अब्भुज्जयविहारो

२०६ तए णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था— एवं खलु अहं चइत्ता रज्जं-जाव-पव्वइए ओसन्ने ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए पमत्ते यावि विहरामि। तं नो खलु कप्पइ समणाणं निग्गंथाणं ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसीलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउबद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए पमत्ताणं विहरित्तए। तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारेणं विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जणवय-विहारेणं विहरइ ।।

सेलगकहोवसंहारेणोवएसो

२०७ एवामेव समणाउसो! जे निग्गंथे वा निग्गंथी वा ओसन्ने ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्त-विहारी संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए पमत्ते विहरइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसार कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ ।।

सेलगसमीवे सेलगसिस्साणं पुणो आगमणं

२०८ तए णं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
"एवं खलु देवाणुप्पिया! सेलए रायरिसी पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारेणं विहरइ। तं सेयं खलु देवाणु-प्पिया! अम्हं सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए"—एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति।

पुंडरीयपव्वए सव्वेसिं सेलगाईणं निव्वाणं

२०९ तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा य पंच अणगारसया जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुंडरीयपव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहंति, पडिलेहित्ता-जाव-संलेहणा-झूसणा-झूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगमणं णुवन्ना ।।

तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा य पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता-जाव-केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अंतगडा परिनिव्वुडा सव्वदुक्खप्पहीणा ।।

एवामेव समणाउसो! जो निग्गंथो वा निग्गंथी वा अब्भुज्जएणं जणवय-विहारेणं विहरइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं साविकाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे भवइ ।

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ ।।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

२१० सिढिलिय-संजम-कज्जा वि होइउं उज्जमंति जइ पच्छा। संवेगाओ ते सेलओ व्व आराहया होंति ।।१।।

—णाया० सु० १ अ० ५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. रहनेमिसमणस्स राजीमइए समुद्धारो

२११ सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए। 'वसुदेव' त्ति नामेणं, रायलक्खणसंजुए ।। १ ।।
तस्स भज्जा दुवे आसी, 'रोहिणी-देवई' तहा। तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा 'राम-केसवा' ।। २ ।।
सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए। 'समुद्दविजए' नामं, रायलक्खणसंजुए ।। ३ ।।
तस्स भज्जा 'सिवा' नाम, तीसे पुत्ते महायसे। भगवं 'अरिट्ठनेमि' त्ति लोगनाहे दमीसरे ।। ४ ।।
सोऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खण-स्सर-संजुओ। अट्ठसहस्स-लक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ।। ५ ।।
वज्जरिसह-संघयणो, समचउरंसो झसोदरो। तस्स 'रायमईकन्नं' भज्जं जायइ केसवो ।। ६ ।।
अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी। सव्व-लक्खण-संपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ।। ७ ।।
अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं। इहागच्छऊ कुमारो, जा से कन्नं ददामिऽहं ।। ८ ।।
सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कय-कोउय-मंगलो। दिव्वजुयल-परिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ।। ९ ।।
मत्तं च गंधहत्थिं च, वासुदेवस्स जेट्ठगं। आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणी जहा ।।१०।।
अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिओ। दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ।।११।।
चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं। तुडियाण सन्निनाएणं, दिव्वेणं गगणं फुसे ।।१२।।

२१२ एयारिसीए इड्ढीए, जुईए उत्तमाइ य। नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ।।१३।।
अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए। वाडेहिं पंजरेहिं च, संनिरुद्धे सुदुक्खिए ।।१४।।
जीवियंतं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए। पासित्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ।।१५।।

अरिट्ठनेमी–

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो। वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छिया? ।।१६।।

सारही–

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो। तुज्झं विवाहकज्जम्मि, भोयावेउं बहुं जणं ।।१७।।

अरिट्ठनेमी–

सोऊण तस्स वयणं, बहुपाण-विणासणं। चिंतेइ से महापन्ने, साणुक्कोसे जिए हिओ ।।१८।।
जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिया। न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ।।१९।।
सो कुंडलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो। आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामइ ।।२०।।
मणपरिणामो य कओ, देवा य जहोइयं समोइण्णा। सव्विड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ।।२१।।
देव-मणुस्सपरिवुडो, सिबिया-रयणं तओ समारूढो। निक्खमिय बारगाओ, रेवयम्मि ठिओ भगवं ।।२२।।
उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ। साहस्सीए परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ।।२३।।
अह से सुगंधगंधीए, तुरियं मउअकुंचिए। सयमेव लुंचई केसे, पंचट्ठाहिं समाहिओ ।।२४।।
वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं। इच्छियमणोरहं तुरियं, पावसु तं दमीसरा! ।।२५।।
नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य। खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ।।२६।।
एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहू जणा। अरिट्ठणेमिं वंदित्ता, अइगया बारगापुरिं ।।२७।।

२१३ सोऊण रायकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ। नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुच्छिया ।।२८।।
राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीवियं। जाऽहं तेणं परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ।।२९।।
अह सा भमरसन्निभे, कुच्च-फणग-साहिए। सयमेव लुंचइ केसे, धिइमंती ववस्सिया ।।३०।।
वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसिं जिइंदियं। संसारसागरं घोरं, तर कन्ने! लहुं लहुं ।।३१।।
सा पव्वइया संती, पव्वावेसी तहिं बहुं। सयणं परियणं चेव, सीलवंता बहुस्सुया ।।३२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१४ गिरिं रेवययं जंतो, वासेणुल्ला उ अंतरा। वासंते अंधयारंमि, अंतो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥
चीवराइं विसारंती, जहा जायत्ति पासिया। रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥३४॥
भीया य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं। बाहाहिं काउ संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥३५॥

रहनेमी—

अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ। भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्कमुदाहरे ॥३६॥
'रहनेमी' अहं भद्दे !, सुरूवे ! चारुपेहिणी !। ममं भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सइ ॥३७॥
एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं। भुत्तभोगा पुणो पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥

राइमई—

दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोय-पराजियं। राईमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥३९॥
अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वए। जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए ॥४०॥
जइ सि रूवेण वेसमाणो, ललिएण नल-कूबरो। तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥
पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं। नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा। वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥४२॥
अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो। मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥४३॥
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ। वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४४॥[1]
गोवालो भंडवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो। एवं अणिस्सरो तं पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४५॥
कोहं माणं निगिण्हित्ता, मायं लोभं च सव्वसो। इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे ॥

रहनेमी—

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं। अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥४६॥[2]
मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ। सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥४७॥
उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दुण्णि वि केवली। सव्वं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४८॥
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा। विणियट्टंति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥४९॥[3]

त्ति बेमि ॥

उत्त० अ० २२।

---

१. दस० अ० २ गा० ६–९
२. दस० अ० २ गा० १०
३. दस० अ० २ गा० ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. पासतित्थे अंगई सुपइट्ठो पुण्णभद्दाई य

गाहा– १ चंदे, २. सूरे, ३ सुक्के, ४. बहुपुत्तिय, ५. पुन्न, ६. माणिभद्दे य । ७. दत्ते, ८. सिवे, ९. बले या, १०. अणाढिए चेव बोद्धव्वे ।।१।।

२१५ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा निग्गया ।

चंदेण जोइसिंदेण वड्ढमाणसमवसरणे नट्टविही

२१६ तेणं कालेणं तेणं समएणं चन्दे जोइसिन्दे जोइसराया चन्दवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चन्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहि - जाव-विहरइ । इमं च णं केवलकप्पं जम्बुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे आभोएमाणे पासइ, पासित्ता समणं भगवं महावीरं, जहा सूरियाभे, आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता-जाव-सुरिन्दाभिगमणजोग्गं करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणन्ति । सूसरा घण्टा-जाव-विउव्वणा। नवरं जाणविमाणं जोयणसहस्सवित्थिण्णं अद्धतेवट्ठिजोयणसमूसियं, महिन्दज्झओ पणुवीसं जोयणसूसिओ, सेसं जहा सूरियाभस्स, -जाव- आगओ। नट्टविही, तहेव पडिगओ ।।

"भन्ते" त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं० पुच्छा। सरीरं अणुपविट्ठा० कूडागारसाला, पुव्वभवो–एवं खलु गोयमा !–

चंदस्स जोइसिंदस्स पुव्वभववण्णणे अंगइकहा

२१७ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था। कोट्ठए चेइए। तत्थ णं सावत्थीए अङ्गई नामं गाहावई होत्था अड्ढे -जाव- अपरिभूए। तए णं से अङ्गई गाहावई सावत्थीए नयरीए बहूणं नगरनिगम जहा आणन्दो ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे णं अरहा पुरिसादाणीए आइगरे, जहा महावीरो, नवुस्सेहे सोलसेहिं समण-साहस्सीहिं अट्ठतीसाए अज्जिया-सहस्सेहिं,- जाव-कोट्ठए समोसढे। परिसा निग्गया ।।

तए णं से अङ्गई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठे जहा कत्तिओ सेट्ठी तहा निग्गच्छइ-जाव - पज्जुवासइ। धम्मं सोच्चा निसम्म, जं नवरं, "देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठावेमि । तए णं अहं देवाणुप्पियाणं-जाव-पव्वयामि"। जहा गङ्गदत्ते तहा पव्वइए-जाव-गुत्तबम्भयारी ।।

तए णं से अङ्गई अणगारे पासस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अङ्गाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-जाव-भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणइ । पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा चन्दवडिंसए विमाणे उववाइयाए सभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसन्तरिए चन्दे जोइसिन्दत्ताए उववन्ने ।।

तए णं से चन्दे जोइसिन्दे जोइसराया अहुणोववन्ने समाणे पञ्चविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ, तं जहा–१. आहारपज्जत्तीए, २. सरीरपज्जत्तीए, ३. इन्दियपज्जत्तीए ४. सासोसासपज्जत्तीए, ५. भासामणपज्जत्तीए ।।

चंदस्स ठिई, महाविदेहे सिद्धी य

२१८ "चन्दस्स णं भन्ते ! जोइसिन्दस्स जोइसरन्नो केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ?"

"गोयमा ! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं।

एवं खलु गोयमा ! चन्दस्स-जाव-जोइसरन्नो सा दिव्वा देविड्ढी० ।"

"चन्दे णं भन्ते ! जोइसिन्दे जोइसराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिति ?"

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासतित्थे सुपइट्ठो अणगारो

वड्ढमाणसमोसरणे सूरेण नट्टविही

२१९ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। समोसरणं। जहा चन्दो तहा सूरो वि आगओ, -जाव-नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ।

सूरस्स पुव्वभवो

२२० पुव्वभवपुच्छा। सावत्थी नयरी। सुपइट्ठे नामं गाहावई होत्था अड्ढे-जाव-अपरिभूए जहेव अङ्गई-जाव - विहरइ। पासो समोसढो, जहा अङ्गई तहेव पव्वइए, तहेव विराहियसामण्णे-जाव-महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-अन्तं करेहिइ॥ पुप्फि० उवं० ३, अ० २।

पुण्णभद्दे अणगारे

पुण्णभद्ददेवेण वड्ढमाण-परिसाए नट्टविही

२२१ तेणं कालेणं तेणं समयेणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसरिए। परिसा निग्गया॥
तेणं कालेणं तेणं समयेणं पुण्णभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणिय-साहस्सीहिं, जहा सूरियाभो - जाव-बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। कूडागारसाला।

पुण्णभद्ददेवस्स पुव्वभवो

२२२ पुव्वभवपुच्छा। "एवं खलु गोयमा!-
तेणं कालेणं तेणं समयेणं इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया नामं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा-जाव-वण्णओ। चन्दो राया। ताराइणे चेइए। तत्थ णं मणिवइयाए नयरीए पुण्णभद्दे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे-जाव-अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समयेणं थेरा भगवन्तो जाइसंपन्ना-जाव-जीवियासमरणभयविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पुव्वाणुपुव्वि-जाव-समोसढा। परिसा निग्गया। तए णं से पुण्णभद्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे, हट्ठ-जाव-जहा पण्णत्तीए गङ्गदत्ते, तहेव निग्गच्छइ-जाव-निक्खन्तो-जाव-गुत्तबम्भयारी॥

तए णं से पुण्णभद्दे अणगारे थेराणं भगवन्ताणं अन्तिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अङ्गाइं अहिज्जइ। अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम -जाव-भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणइ। पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइय पडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि-जाव-भासामणपज्जत्तीए॥

२२३ एवं खलु गोयमा! पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी-जाव-अभिसमन्नागया"।
पुण्णभद्दस्स णं भन्ते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता?
गोयमा! दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।
पुण्णभद्दे णं भन्ते! देवे ताओ देवलोयाओ-जाव-कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणं अन्तं काहिइ॥ पुप्फि० उवं० ३, अ० ५।

माणिभद्दे समणे

माणिभद्ददेवेण वड्ढमाण-समोसरणे नट्टविही

२२४ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसरिए॥
तेणं कालेणं तेणं समयेणं माणिभद्दे देवे सभाए सुहम्माए माणिभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा पुण्णभद्दो तहेव आगमणं, नट्टविही।

माणिभद्ददेवस्स पुव्वभवो

२२५ पुव्वभवपुच्छा। मणिवइया नयरी, माणिभद्दे गाहावई, थेराणं अन्तिए पव्वज्जा, एक्कारस अङ्गाइं अहिज्जइ, बहूइं वासाइं परियाओ, मासिया संलेहणा, सट्ठिं भत्ताइं -। माणिभद्दे विमाणे उववाओ, दो सागरोवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्व-दुक्खाणमंतं काहिइ॥ पुप्फि० उवं० ३, अ० ६।

दत्ताई अण्णे अणगारा

२२६ ७ एवं दत्ते, ८ सिवे, ९ बले, १० अणाढिए, सव्वे जहा पुण्णभद्दे देवे। सव्वेसिं दो सागरोवमाइं ठिई। विमाणा देवसरिसनामा। पुव्वभवे दत्ते चन्दणानामाए, सिवे महिलाए, बले हत्थिणपुरे नयरे, अणाढिए काकन्दीए। चेइयाइं जहा संगहणीए॥ पुप्फि० उवं० ३, अ० ७-१०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. जियसत्तु-सुबुद्धिकहाणयं

चंपानयरीए जितसत्तुराया सुबुद्धिअमच्चे य

२२७ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी। पुण्णभद्दे चेइए। जियसत्तू राया। धारिणी देवी। अदीणसत्तू कुमारे जुवराया वि होत्था। सुबुद्धी अमच्चे-जाव-रज्जधुरांचितए, समणोवासए।।

फरिहोदगवण्णओ

२२८ तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमेणं एगे फरिहोदए यावि होत्था—मेय-वसा-रुहिर-मंस-पूय-पडल-पोच्चडे मयग-कलेवर-संछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा गोमडे इ वा - जाव-मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिण-वावण्ण-दुरभिगंधे किमिजालाउले संसत्ते असुइ-विगय-बीभच्छ-दरिसणिज्जे। भवेयारूवे सिया ?
नो इणट्ठे समट्ठे। एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते।।

जियसत्तुणा पाणभोयणपसंसा

२२९ तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए कयबलिकम्मे-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर-जाव-सत्थवाह-पभिईहिं सद्धिं भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए सुहासणवरगए विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तंसि विपुलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि जायविम्हए ते बहवे राईसर-जाव-सत्थवाहपभिईओ, एवं वयासी—
अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए गंधेणं उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए अस्साय-णिज्जे विसायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे।।
तए णं ते बहवे राईसर-जाव-सत्थवाहपभिईओ जियसत्तुं रायं एवं वयासी—
तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वयह—अहो णं इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए-जाव-सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे।।

सुबुद्धिणा पुग्गलस्स सुहासुहपरिणमणकहणं

२३० तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—
अहो णं देवाणुप्पिया सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे-जाव-सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे।।
तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ।।
तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—
अहो णं देवाणुप्पिया सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे-जाव-सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे।।
तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे जियसत्तुं रायं एवं वयासी—"नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि मणुण्णंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि केइ विम्हए।
एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दा वि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति। सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति। सुब्भिगंधा वि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधा वि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति। सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति। सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति, पओग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता।।"
तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा

२३१ तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए आसखंधवरगए महयाभड-चडगर-आसवाहिणिआए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदयस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ।।

तए णं जियसत्तू राया तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूए समाणे सएणं उत्तरिज्जगेणं आसगं पिहेइ, पिहेत्ता एगंतं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहवे ईसर-जाव-सत्थवाहपभियओ एवं वयासी–

अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं - जाव-अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए––अहिमडे इ वा-जाव-अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते ।।

तए णं ते बहवे ईसर-जाव-सत्थवाहपभियओ एवं वयासी–

तहेव णं तं सामी ! जं णं तुब्भे वयह––अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं - जाव-अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए––अहिमडे इ वा-जाव-अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते ।।

तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–अहो णं सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं-जाव-अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए––अहिमडे इ वा-जाव-अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते ।।

सुबुद्धिणा पुणो वि पुग्गलसहाववण्णणं

२३२ तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–

अहो णं सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं-जाव-अमणुण्णे फासेणं,

से जहानामए––अहिमडे इ वा-जाव-अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते ।।

तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी––"नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए। एवं खलु सामी !

सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति-जाव-दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति। पओग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ।।"

जियसत्तुणा विरोधो

२३३ तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–

"मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं च बहूहि य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि" ।।

सुबुद्धिणा जलसोधणं

२३४ तए णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––अहो णं जियसत्तू राया संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे नो उवलभइ। तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूयाणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पच्चइएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडए य पडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता संझाकालसमयंसि विरलमणूसंसि निसंत-पडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता तं फरिहोदगं गेण्हावेइ,
गेण्हावित्ता नवएसु पडएसु गालावेइ,
गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ,
पक्खिवावेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ,
पक्खिवावेत्ता लंछियमुद्दिए कारावेइ,
कारावेत्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ,
परिवसावेत्ता दोच्चं पि नवएसु पडएसु गालावेइ,
गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ,
पक्खिवावेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पक्खिवावेत्ता लंछिय-मुद्दिए कारावेइ,
कारावेत्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ,
परिवसावेत्ता तच्चं पि नवएसु पडएसु गालावेइ,
गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ,
पक्खिवावेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ,
पक्खिवावेत्ता लंछिय-मुद्दिए कारावेइ,
कारावेत्ता सत्तरत्तं संवसावेइ।
एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गालावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतरा य संवसावेमाणे सत्तसत्तयराइंदियाइं परिवसावेइ।
तए णं से फरिहोदए सत्तमंसि सत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था—अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे वण्णेणं उववेए गंधेणं उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए आसायणिज्जे विसायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे।।

सुबुद्धिणा जलपेसणं

२३५ तए णं सुबुद्धी जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलंसि आसादेइ, आसादेत्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं गंधेणं उववेयं रसेणं उववेयं फासेणं उववेयं आसायणिज्जं विसायणिज्जं पीणणिज्जं दीवणिज्जं दप्पणिज्जं मयणिज्जं बिंहणिज्जं सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेइ, संभारेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
"तुमं णं देवाणुप्पिया! इमं उदगरयणं गेण्हाहि, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि।।"

जियसत्तुणा उदगरयणपसंसा

२३६ तए णं से पाणिय-घरिए सुबुद्धिस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं उदगरयणं गेण्हइ, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ।।
तए णं से जियसत्तू राया तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तंसि उदगरयणंसि जायविम्हए ते बहवे राईसर-जाव-सत्थवाहपभिईओ एवं वयासी—
"अहो णं देवाणुप्पिया! इमे उदगरयणे अच्छे-जाव-सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे।"
तए णं ते बहवे राईसर-जाव-सत्थवाहपभिईओ एवं वयासी—
तहेव णं सामी! जण्णं तुब्भे वयह—इमे उदगरयणे अच्छे-जाव-सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे।।

जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा

२३७ तए णं जियसत्तू राया पाणिय-घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
"एस णं तुमे देवाणुप्पिया! उदगरयणे कओ आसादिते?"
तए णं से पाणिय-घरिए जियसत्तुं एवं वयासी—
"एस णं सामी! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते।।"
तए णं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
"अहो णं सुबुद्धी! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे-जाव-अमणामे जेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि? तं एस णं तुमे देवाणुप्पिया! उदगरयणे कओ उवलद्धे?"

सुबुद्धिणा उत्तरं

२३८ तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—एस णं सामी! से फरिहोदए।।
तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी—केणं कारणेणं सुबुद्धी! एस से फरिहोदए?
तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एवं खलु सामी ! तुब्भे तया मम एवमाइक्खमाणस्स-जाव-परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहह। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--अहो णं जियसत्तू राया संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ। तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूयाणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए--एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता तं चेव-जाव-पाणिय-घरियं सद्दावेमि, सद्दावेत्ता एवं वदामि--

तुमं णं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि। तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए ॥"

जियसत्तुणा जलसोधणं

२३९ तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स एवमाइक्खमाणस्स-जाव-परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे अब्भंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवए घडए पडए य गेण्हह - जाव-उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह।" तेवि तहेव संभारेंति, संभारेत्ता जियसत्तुस्स उवणेंति ॥

जियसत्तुस्स पुच्छा

२४० तए णं से जियसत्तू राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएइ, आसाएत्ता आसायणिज्जं-जाव-सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"सुबुद्धी ! एए णं तुमे संता तच्चा तहिया अवितहा सब्भूया भावा कओ उवलद्धा ?"

सुबुद्धिस्स उत्तरं

२४१ तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी--एए णं सामी ! मए संता तच्चा तहिया अवितहा सब्भूया भावा जिणवयणाओ उवलद्धा ॥
तए णं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी--तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामित्तए ॥

जियसत्तुस्स समणोवासयत्तं

२४२ तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स विचित्तं केवलिपण्णत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ।
तए णं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी--

"सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं-जाव-से जहेयं तुब्भे वयह। तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।"

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ॥
तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं-जाव-दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ ॥
तए णं जियसत्तू समणोवासए जाए--अहिगयजीवाजीवे-जाव-पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

जियसत्तु-सुबुद्धीणं पव्वज्जा

२४३ तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं। जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ। सुबुद्धी धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी--जं नवरं-जियसत्तुं आपुच्छामि तओ पच्छा मुंडे भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।
अहासुहं देवाणुप्पिया !

तए णं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-एवं खलु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते। से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तए णं अहं सामी ! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं एवं वयासी--अच्छसु ताव देवाणुप्पिया ! कइवयाइं वासाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो ॥
तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥
तए णं तस्स जियसत्तुस्स रण्णो सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुभवमाणस्स दुवालस वासाइं वीइक्कंताइं। ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४४ तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं। जियसत्तू राया धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी––जं नवरं––देवाणुप्पिया ! सुबुद्धिं अमच्चं आमंतेमि, जेट्ठपुत्तं रज्जे ठावेमि, तए णं तुब्भण्णं अंतिए मुंडे भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

तए णं जियसत्तू राया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––एवं खलु मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते-जाव-पव्वयामि। तुमं णं किं करेसि ?

तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं रायं एवं वयासी–जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा-जाव-पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आहारे वा आलंबे वा ? अहं पि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गे-जाव-पव्वयामि।

तं जइ णं देवाणुप्पिया ! -जाव-पव्वाहि। गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेहि, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहित्ता णं ममं अंतिए पाउब्भवाहि। सो वि तहेव पाउब्भवउ ॥

तए णं जियसत्तू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह।" ते वि तहेव उवट्ठवेंति-जाव-अभिसिंचति -जाव-पव्वइए ॥

२४५ तए णं जियसत्तू रायरिसी एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता-जाव-सिद्धे ॥

तए णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता -जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

२४६ मिच्छत्त-मोहियमणा, पावपसत्ता वि पाणिणो विगुणा। फरिहोदगं व गुणिणो, हवंति वरगुरुपसायाओ ॥ १ ॥

णायाधम्मकहाओ सु. १ अ. १२

---

१५. नमिरायरिसी

मिहिलाए राया नमी तस्स य अभिनिक्खमणं

२४७ चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसंमि लोगंमि। उवसंत-मोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ॥ १ ॥
जाइं सरित्तु भयवं, सह-संबुद्धो अणुत्तरे धम्मे। पुत्तं ठवित्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ॥ २ ॥
सो देवलोगसरिसे अंतेउर-वरगओ वरे भोए। भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ॥ ३ ॥
मिहिलं सपुर-जणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं। चिच्चा अभिनिक्खंतो, एगंतमहिट्ठिओ भयवं ॥ ४ ॥
कोलाहलगब्भूयं, आसी मिहिलाए पव्वयंतंमि। तइया रायरिसिंमि, नमिंमि अभिणिक्खमंतंमि ॥ ५ ॥

सक्केण सह नमिरायरिसिणो संवादो

२४८ अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पव्वज्जाठाणमुत्तमं। सक्को माहणरूवेण, इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥
(१) किं नु भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला। सुव्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥ ८ ॥
मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे। पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहुगुणे सया ॥ ९ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे। दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो! खगा ।।१०।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ।।११।।

(२) एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं। भयवं अंतेउरंतेणं, कीस णं नावपेक्खह ।।१२।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।१३।।
सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं। मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचणं ।।१४।।
चत्तपुत्त-कलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो। पियं न विज्जई किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ ।।१५।।
बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो। सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंतमणुपस्सओ ।।१६।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ।।१७।।

(३) पागारं कारइत्ताणं, गोपुरट्टालगाणि य। ओमूलग-सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।१८।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।१९।।
सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवरमग्गलं। खंतिं निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ।।२०।।
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया। धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेणं पलिमंथए ।।२१।।
तव-नाराय-जुत्तेणं, भित्तूणं कम्म-कंचुयं। मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चई ।।२२।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ।।२३।।

(४) पासाए कारइत्ताणं, वड्ढमाणगिहाणि य। वालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।२४।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।२५।।
संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं। जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्विज्ज सासयं ।।२६।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ।।२७।।

(५) आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे। नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।२८।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।२९।।
असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पउंजए। अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चए कारओ जणो ।।३०।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ।।३१।।

(६) जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमंति नराहिवा! वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।३२।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।३३।।
जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे। एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ।।३४।।
अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ। अप्पणा चेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ।।३५।।
पंचिंदियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च। दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वमप्पे जिए जियं ।।३६।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ।।३७।।

(७) जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण-माहणे। दच्चा भोच्चा य जट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।३८।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।३९।।
जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए। तस्सावि संजमो सेओ, अदितस्स वि किंचणं ।।४०।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ।।४१।।

(८) घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं। इहेव पोसह-रओ, भवाहि मणुयाहिवा! ।।४२।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।४३।।
मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए। न सो सक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ।।४४।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ।।४५।।

(९) हिरण्णं सुवण्णं मणि-मुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं। कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।४६।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।४७।।
सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलास-समा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि, इच्छा हु आगास-समा अणंतिया ।।४८।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह। पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ।।४९।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।।५०।।

(१०) अच्छेरयमब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा। असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहन्नसि ।।५१।।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।५२।।
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा। कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गइं ।।५३।।
अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई। माया गइपडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं ।।५४।।

२४९ अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउरुव्विऊण इंदत्तं। वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ।।५५।।
अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ। अहो ते निरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ ।।५६।।
अहो ते अज्जवं साहु! अहो ते साहु! मद्दवं। अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ।।५७।।
इहं सि उत्तमो भंते, पेच्चा होहिसि उत्तमो। लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ।।५८।।
एवं अभित्थुणंतो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए। पयाहिणं करेंतो, पुणो पुणो वंदए सक्को ।।५९।।
तो वंदिऊण पाए, चक्कं-कुस-लक्खणे मुणिवरस्स। आगासेणुप्पइओ, ललिय-चवल-कुंडल-तिरीडी ।।६०।।
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ। चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ।।६१।।
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा। विणियट्टंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ।।६२।।

।। त्ति बेमि ।।

उत्त० अ० ९।

---

१६. महावीरतित्थे उसहदत्त-देवाणंदाणं चरियं

माहणकुंडग्गामे उसहदत्तो माहणो

२५० तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ। बहुसालए चेइए—वण्णओ। तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे-जाव-अपरिभूए रिव्वेद—जजुव्वेद—सामवेद-अथव्वणवेद—जाव—अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु नयेसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे - जाव - अहा-परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

उसहदत्तस्स भारिया देवाणंदा

तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था—सुकुमालपाणिपाया-जाव-पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगय-जीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।।

उसहदत्त-देवाणंदाणं महावीरदंसणाभिलासो

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा पज्जुवासइ।।

तए णं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए-जाव-हियए जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवा-गच्छति, उवागच्छित्ता देवाणंदं माहणिं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे आदिगरे-जाव - सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं-जाव-सुहंसुहेणं विहर-माणे बहुसालए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं गच्छामो णं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो-जाव-पज्जुवासमो। एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ"।।

२५१ तए णं सा देवाणंदा माहणी उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया - जाव - हरिसवसविसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ।।
तए णं से उसभदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगेहिं, जंबूणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्ठेहिं, रययामयघंटा-सुत्तरज्जुय-पवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं, नीलुप्पलकयामेलएहिं, पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयण-घंटियाजाल-परिगयं, सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियनिम्मियं, पवरलक्खणोववेयं धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवसविसप्पमाणहियया करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासि–सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जाव-धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।।

तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे।।

तए णं सा देवाणंदा माहणी ण्हाया-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं, चिलातियाहिं-जाव-चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा।।

उसहदत्तदेवाणंदाणं दंसणत्थमागमणं

२५२ तए णं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे समाणे नियगपरियालसंपरिवुडे माहणकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तं जहा--

सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए-जाव-तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ।।

महावीरदंसणेण पुव्वपुत्तसिणेहरागेण देवाणंदा आगयपण्हया संजाया

२५३ तए णं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं-जाव-चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उसभदत्तं माहणं पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिकडा पज्जुवासइ।।

तए णं सा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया पप्पुयलोयणा संवरियवलयबाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलंबगं पिव समूसवियरोमकूवा समणं भगवं महावीरं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ।।

देवाणंदाए एवंरूवदंसणेण गोयमपण्हो भ. महावीरकयं समाहाण च

२५४ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--किं णं भंते ! एसा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया पप्पुयलोयणा संवरियवलयबाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलंबगं पिव समूसवियरोमकूवा देवाणुप्पियं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ?

गोयमा ! त्ति समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी--

"एवं खलु गोयमा ! देवाणंदा माहणी ममं अम्मगा, अहण्णं देवाणंदाए माहणीए अत्तए। तण्णं एसा देवाणंदा माहणी तेणं पुव्व-पुत्तसिणेहरागेणं आगयपण्हया - जाव - समूसवियरोमकूवा ममं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ. महावीरेण धम्मकहण

२५५ तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए-जाव-जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ--धम्मं परिकहेइ-जाव-परिसा पडिगया ।।

उसहदत्तस्स पव्वज्जाभिलासो

२५६ तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुतो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी--

एवमेयं भंते ! -जाव--से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य । एवं जहा खंदओ तहेव पव्वइओ ।।

भ. महावीरेण उसहदत्तस्स पव्वायणा

२५७ तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तं माहणं सयमेव पव्वावेइ, सयमेव मुंडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयारगोयरं विणय-वेणइये चरण-करणजायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ-

"एवं देवाणुप्पिया गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीइयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं एवं उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो किंचि वि पमाइयव्वं।"

उसहदत्तस्स सिद्धी

२५८ तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ-जाव-सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे-जाव-तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

देवाणंदाए वि पव्वज्जा सिद्धी य

२५९ तए णं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! एवं जहा उसभदत्तो तहेव-जाव-धम्ममाइक्खियं ।।

तए णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव अज्जचंदणाए अज्जाए सीसिणित्ताए दलयइ ।।

तए णं सा अज्जचंदणा अज्जा देवाणंदं माहणिं सयमेव मुंडावेति, सयमेव सेहावेति।

एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छइ-जाव-संजमेणं संजमति ।।

तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतियं सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धा बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा सव्वदुक्खप्पहीणा ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. बालतवस्सी मोरियपुत्ते तामली अणगारे

भ. महावीरसमोसरणे ईसाणदेविंदेण नट्टविही

२६० तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ नयरीओ नंदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था––वण्णओ-जाव-परिसा पज्जुवासइ ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया ईसाणे कप्पे ईसाणवडेंसए विमाणे-जाव-दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्ता-जाव-जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए ।

देवज्जुतिअणुपविसणविसये पण्हो समाहाणं च

२६१ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता । एवं वदासी––

अहो णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्ढीए-जाव-महाणुभागे । ईसाणस्स णं भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते ? कहिं अणुपविट्ठे ?

गोयमा ! सरीरं गते, सरीरं अणुपविट्ठे ।।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ––सरीरं गते ! सरीरं अणुपविट्ठे ?

गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा । तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलगं वा वासवद्दलगं वा महावायं वा एज्जमाणं पासति, पासित्ता तं कूडा-गारसालं अंतो अणुपविसित्ता णं चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति––सरीरं गते, सरीरं अणुपविट्ठे ।।

ईसाणदेविन्दस्स पुव्वभवो

२६२ "ईसाणेणं भंते ! देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे किणा लद्धे ? किणा पत्ते ? किणा अभिसमण्णागए ?

के वा एस आसि पुव्वभवे ? किंनामए वा ? किंगोत्ते वा ?

कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा-जाव-सण्णिवेसंसि वा ?

किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ?

कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म ?

जं णं ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ?"

मोरियपुत्ते तामली गाहावई तस्स य पाणामा पव्वज्जागहणाभिलासो

२६३ एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलित्ती नामं नयरी होत्था––वण्णओ ।।

तत्थ णं तामलित्तीए नयरीए तामली नामं मोरियपुत्ते गाहावई होत्था––अड्ढे-जाव-अपरिभूए यावि होत्था ।।

तए णं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था––"अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाण-फलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं एगंतसोक्खयं उवेहमाणे विहरामि ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं-जाव-ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि-जाव-अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-संबंधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं विणएणं चेइयं पज्जुवासइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं करेत्ता विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण, संबंधि-परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता, सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं गहाय मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए।

पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि––कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता सुद्धोदणं पडिग्गाहेत्ता तं तिसत्तक्खुत्तो उदएणं पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहारं आहारित्तए त्ति" कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयमेय दारुमयं पडिग्गहगं करेइ, करेत्ता विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता ततो पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासण-वरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं सद्धिं तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

तामलिणा पाणामापव्वज्जागहणं

२६४ जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेइ, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ––"कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं-जाव-आहारित्तए त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडित्ता सुद्धोयणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता तिसत्तक्खुत्तो उदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहारं आहारेइ॥

पाणामापव्वज्जाविवरणं

२६५ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ––पाणामा पव्वज्जा?

गोयमा! पाणामाए णं पव्वज्जाए पव्वइए समाणे जं जत्थ पासइ––इंदं वा खंदं वा रुद्दं वा सिवं वा वेसमणं वा अज्जं वा कोट्टकिरियं वा रायं वा ईसरं वा तलवरं वा माडंबियं वा कोडुंबियं वा इब्भं वा सेट्ठिं सेणावइं वा सत्थवाहं वा काकं वा साणं वा पाणं वा––उच्चं पासइ उच्चं पणामं करेइ, नीयं पासइ नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणामं करेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ पाणामा पव्वज्जा॥

तामलिणा पाओवगमणसंलेहणागहणं

२६६ तए णं से तामली मोरियपुत्ते तेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं सुक्के-जाव-धमणिसंतए जाए यावि होत्था।

तए णं तस्स तामलिस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था––"एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे-जाव-धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता तामलित्तीए नगरीए मज्झंमज्झणं निग्गच्छित्ता पाउग-कुंडिय-मादीयं उवगरणं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडित्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता तामलित्तीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुंडिय-मादीयं उवगरणं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडेइ, एडेत्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मंडलं आलिहइ, आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे ।।

बलिचंचारायहाणिवत्थव्वअसुरकुमारदेवेहिं इन्दत्थं पत्थणा तामलिणा अनियाणकरणं च

२६७ तेणं कालेणं तेणं समएणं बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया यावि होत्था ।।

तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं ओहिणा आभोएंति, आभोएत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासि–

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, अयं च णं देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे नियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता संलेहणाझूसणा-झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तामलिं बालतवस्सिं बलिचंचाए रायहाणीए ठितिपकप्पं पकरावेत्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव रुयगिंदे उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता-जाव-उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा वीईवयमाणा-जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नगरी जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तामलिस्स बालतवस्सिस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेंति, उवदंसेत्ता तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे बलिचंचारायहाणीवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पियं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो । अम्हण्णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचं रायहाणिं आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठं बंधह, निदाणं पकरेह, ठितिपकप्पं पकरेह, तए णं तुब्भे कालमासे कालं किच्चा बलिचंचाए रायहाणीए उववज्जिस्सह, तए णं तुब्भे अम्हं इंदा भविस्सह, तए णं तुब्भे अम्हेहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरिस्सह ।।

तए णं से तामली बालतवस्सी तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं मोरियपुत्तं दोच्चं पि तच्चं पि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति-जाव-अम्हं च णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिआ इंदाहीण-कज्जा, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचं रायहाणिं आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठं बंधह, निदाणं पकरेह, ठितिपकप्पं पकरेह-जाव-दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

२६८ तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाणिज्जमाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

तामलिस्स ईसाणिन्दत्तेण उववाओ

२६९ तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिए यावि होत्था ।।

तए णं से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठिं वाससहस्साइं परियागं पाउणित्ता, दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता कालकासे कालं किच्चा ईसाण कप्पे ईसाणवडेंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणदेविंदविरहियकालसमयंसि ईसाणदेविंदत्ताए उववण्णे ।।

२७० तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तं जहा–आहारपज्जत्तीए-जाव-भासा-मण-पज्जत्तीए ।।

ईसाणिन्दत्तं णच्चा असुरकुमारदेवाणं रोसो तामलिसरीरहीलणं च

२७१ तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं कालगतं जाणित्ता, ईसाणे य कप्पे देविंदत्ताए उववण्णं पासित्ता आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताए उक्किट्ठाए-जाव-जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नयरी जेणेव तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, वामे पाए सुंबेण बंधंति, तिक्खुत्तो मुहे निट्ठुहंति, तामलित्तीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आकड्ढ-विकड्ढि करेमाणा, महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयासि–

केस णं भो ! से तामली बालतवस्सी सयंगहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए ? केस णं से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवराया ? ति कट्टु तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलंति निंदंति खिसंति गरहंति अवमण्णंति तज्जेंति तालेंति परिवहेंति पव्वहेंति, आकड्ढ-विकड्ढि करेंति, हीलेत्ता निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमण्णेत्ता तज्जेत्ता तालेत्ता परिवहेत्ता पव्वेहेत्ता आकड्ढ-विकड्ढि करेत्ता एगंते एडंति, एडित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

तामलिसरीरस्स हीलणं णच्चा ईसाणिन्देण बलिचंचारायहाणिस्स दहणं

२७२ तए णं ते ईसाणकप्पवासी बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलिज्जमाणं निंदिज्जमाणं खिंसिज्जमाणं गरहिज्जमाणं अवमण्णिज्जमाणं तज्जिज्जमाणं तालेज्जमाणं परिवहिज्जमाणं पव्वहिज्जमाणं आकड्ढविकड्ढि कीरमाणं पासंति, पासित्ता आसुरुत्ता-जाव-मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ट जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी––

एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिए कालगए जाणित्ता ईसाणे य कप्पे इंदत्ताए उववण्णे पासेत्ता आसुरुत्ता-जाव-एगंते एडेंति, एडेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

तए णं ईसाणे देविंदे देवराया तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते-जाय-मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचारायहाणिं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएइ ।।

तए णं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइया समाणी तेणं दिव्वप्पभावेणं इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियब्भूया तत्तकवेल्लकब्भूया तत्ता समजोइब्भूया जाया यावि होत्था ।।

असुरकुमारदेवेहिं ईसाणिन्दपत्थणं खमावणं य

२७३ तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तं बलिचंचं रायहाणिं इंगालब्भूयं-जाव-समजोइब्भूयं पासंति, पासित्ता भीआ तत्था तसिआ उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावेंति परिधावेंति, आधावेत्ता परिधावेत्ता अण्णमण्णस्स कायं समतुरंगेमाणा समतुरंगेमाणा चिट्ठंति ।।

तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी––अहो ! णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तं खामेमो णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो एवं करणयाए त्ति कट्टु एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेंति ।।

तदणंतरं असुरकुमारा ईसाणिन्दस्स आणाए ठिया जाया

२७४ तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामिते समाणे तं दिव्वं देविड्ढिं-जाव-तेयलेस्सं पडिसाहरइ । तप्पभितिं च णं गोयमा ! ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति परियाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासंति, ईसाणस्स य देविंदस्स देवरण्णो आणा-उववायवयण-निद्देसे चिट्ठंति ।

एवं खलु गोयमा ! ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।।

ईसाणिन्दस्स ठिई महाविदेहे सिद्धी य

२७५ ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ।।

भग० स० ३, उ० १ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. अद्दगस्स अण्णतित्थिएण सह वादो

महावीरचरियं अहिक्किच्च गोसालगस्स अक्खेवो

२७६ पुराकडं अद्द ! इमं सुणेह, एगंतचारी समणे पुरासी । से भिक्खवो उवणेत्ता अणेगे आइक्खतिण्हि पुढो वित्थरेणं ॥१॥
साऽऽजीविया पडुवियाऽथिरेणं सभागओ गणओ भिक्खुमज्झे । आइक्खमाणो बहुजण्णमत्थं ण संधयाई अवरेण पुव्वं ॥२॥
एगंतमेवं अदुवा वि इण्हि दोऽवण्णमण्णं ण समेंति जम्हा । पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च एगंतमेवं पडिसंधयाइ ॥३॥

अद्दगस्स उत्तरं

समेच्च लोगं तसथावराणं खेमंकरे समणे माहणे वा । आइक्खमाणो वि सहस्समज्झे एगंतयं सारयई तहच्चे ॥४॥
धम्मं कहंतस्स उ णत्थि दोसो खंतस्स दंतस्य जिइंदियस्स । भासाय दोसे य विवज्जगस्स गुणे य भासाय णिसेवगस्स ॥५॥
महव्वए पंच अणुव्वए य तहेव पंचासव संवरे य । विरइं इहस्सामणियम्मि पण्णे लवावसक्की समणे त्ति बेमि ॥६॥

सीओदगादिसेविणो ण पावमिति गोसालो

२७७ सीओदगं सेवउ बीयकायं आहायकम्मं तह इत्थियाओ । एगंतचारिस्सिह अम्ह धम्मे, तवस्सिणो णाभिसमेइ पावं ॥७॥

अद्दगस्स उत्तरं

सीओदगं वा तह बीयकायं आहायकम्मं तह इत्थियाओ । एयाइं जाणे पडिसेवमाणा अगारिणो अस्समणा भवंति ॥८॥
सिया य बीयोदगइत्थियाओ पडिसेवमाणा समणा भवंतु । अगारिणो वि समणा भवंतु सेवंति उ ते वि तहप्पगारं ॥९॥
जे यावि बीओदगभोइ भिक्खू भिक्खं विहं जायइ जीवियट्ठी । ते णाइसंजोगमविप्पहाय काओवगा णंतकरा भवंति ॥१०॥

पावादुयाणं परोप्परं निन्देति गोसालगस्स अक्खेवो

२७८ इमं वयं तु तुम पाउकुव्वं पावाइणो गरहसि सव्व एव । पावाइणो पुढो किट्टयंता सयं सयं दिट्ठि करेंति पाउं ॥११॥

अद्दगस्स उत्तरं

ते अण्णमण्णस्स उ गरहमाणा अक्खंति ऊ समणा माहणा य । सतो य अत्थी असतो य णत्थी गरहामो दिट्ठिं ण गरहामो किंचि ॥१२॥
ण किंचि रूवेणऽभिधारयामो सदिट्ठिमग्गं तु करेमो पाउं । मग्गे इमे किट्टिए आरिएहि अणुत्तरे सप्पुरिसेहि अंजू ॥१३॥
उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु तसा य जे थावर जे य पाणा । भूयाभिसंकाए दुगुंछमाणे णो गरहइ बुसिमं किंचि लोए ॥१४॥

मेहाविपुरिसपण्हभयेण महावीरो आरामगिहे न तिट्ठतीति गोसलो

२७९ आगंतगारे आरामगारे समणे उ भीते ण उवेइ वासं । दुक्खा हु संती बहवे मणुस्सा ऊणातिरित्ता य लवालवा य ॥१५॥
मेहाविणो सिक्खिय बुद्धिमंता सुत्तेहि अत्थेहि य णिच्छयण्णू । पुच्छिसु मा णे अणगार अण्णे इति संकमाणो ण उवेइ तत्थ ॥१६॥

अद्दगस्स उत्तरं

णो कामकिच्चा ण य बालकिच्चा रायाभियोगेण कुओ भएणं ? वियागरेज्जा पसिणं ण वा वि सकामकिच्चेणिह आरियाणं ॥१७॥
गंता व तत्था अदुवा अगंता वियागरेज्जा समियासुपण्णे । अणारिया दंसणओ परित्ता इति संकमाणो ण उवेइ तत्थ ॥१८॥

वणियसदिसो महावीरे त्ति गोसालगस्स अक्खेवो

पण्णं जहा वणिए उदयट्ठी आयस्स हेउं पगरेइ संगं । तओवमे समणे णायपुत्ते इच्चेव मे होइ मई वियक्का ॥१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्दगस्स उत्तरं

णवं ण कुज्जा विहुणे पुराणं चिच्चाऽमइं ताइ य साह एवं। एतावता बंभवति त्ति वुत्ते तस्सोदयट्ठी समणे त्ति बेमि ॥२०॥
समारभंते वणिया भूयगामं परिग्गहं चेव ममायमाणा। ते णाइसंजोगमविप्पहाय आयस्स हेउं पगरेंति संगं ॥२१॥
वित्तेसिणो मेहुणसंपगाढा ते भोयणट्ठा वणिया वयंति। वयं तु कामेहिं अज्झोववण्णा अणारिया पेमरसेसु गिद्धा ॥२२॥
आरंभगं चेव परिग्गहं च अविउस्सिया णिस्सिय आयदंडा। तेसिं च से उदए जं वयासी चउरंतणंताय दुहाय णेह ॥२३॥
णेगंति णच्चंति वओदए से वयंति ते दो वि गुणोदयम्मि । से उदए साइमणंतपत्ते तमुदयं साहयइ ताइ णाई ॥२४॥
अहिंसयं सव्वपयाणुकंपी धम्मे ठियं कम्मविवेगहेउं । तमायदंडेहि समायरंता अबोहिए ते पडिरूवमेयं ॥२५॥

बुद्ध-भिक्खूणं हिंसा-अहिंसाविसये मतनिवेयणं

२८० पिण्णागपिंडीमवि विद्ध सूले केई पएज्जा पुरिसे इमे त्ति। अलाउयं वा वि कुमारग त्ति स लिप्पई पाणिवहेण अम्हं ॥२६॥
अहवा वि विद्धूण मिलक्ख् सूले पिण्णागबुद्धीए णरं पएज्जा। कुमारगं वा वि अलाउए त्ति ण लिप्पई पाणिवहेण अम्हं ॥२७॥
पुरिसं च विद्धूण कुमारगं वा सूलंमि केई पए जायतेए । पिण्णागपिंडि सइमारुहेत्ता बुद्धाण तं कप्पइ पारणाए ॥२८॥
सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए भिक्खुयाणं । ते पुण्णखंधं सुमहऽज्जणित्ता भवंति आरोप्प महंतसत्ता ॥२९॥

अद्दगस्स उत्तरं

अजोगरूवं इह संजयाणं पावं तु पाणाण पसज्झ काउं। अबोहिए दोण्ह वि तं असाहु वयंति जे यावि पडिस्सुणंति ॥३०॥
उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु विण्णाय लिंगं तसथावराणं। भूयाभिसंकाए दुगुंछमाणे वदे करेज्जा वा कुओ विहऽत्थि ॥३१॥
पुरिसे त्ति विण्णत्ति ण एवमत्थि अणारिए से पुरिसे तहा हु। को संभवो पिण्णगपिंडियाए वाया वि एसा बुइया असच्चा ॥३२॥
वायाभिओगेण जमावहेज्जा णो तारिसं वायमुदाहरेज्जा। अट्ठाणमेयं वयणं गुणाणं णो दिक्खिए बूय सुरालमेयं ॥३३॥
लद्धे अट्ठे अहो एव तुब्भे जीवाणुभागे सुविचिंतिते य। पुव्वं समुद्दं अवरं च पुट्ठे ओलोइए पाणितलट्ठिए वा ॥३४॥
जीवाणुभागं सुविचिंतयंता आहारिया अण्णविहीए सोहिं। ण वियागरे छण्णपओपजीवी एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥३५॥
सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए भिक्खुयाणं। असंजए लोहियपाणि से ऊ णियच्छई गरहमिहेव लोए ॥३६॥
थूलं उरब्भं इह मारियाणं उद्दिट्ठभत्तं च पगप्पएत्ता । तं लोणतेल्लेण उवक्खडेत्ता सपिप्पलीयं पगरंति मंसं ॥३७॥
तं भुंजमाणा पिसियं पभूयं णो उवलिप्पामो वयं रएणं। इच्चेवमाहंसु अणज्जधम्मा अणारिया बाल रसेसु गिद्धा ॥३८॥
जे यावि भुंजंति तहप्पगारं सेवंति ते पावमजाणमाणा। मणं ण एयं कुसला करेंति वाया वि एसा बुइया उ मिच्छा ॥३९॥
सव्वेसि जीवाण दयट्ठयाए सावज्जदोसं परिवज्जयंता। तस्संकिणो इसिणो णायपुत्ता उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति ।।४०॥
भूयाभिसंकाए दुगुंछमाणा सव्वेसि पाणाण णिहाय दंडं। तम्हा ण भुंजंति तहप्पगारं एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥४१॥
णिग्गंथधम्मम्मि इमा समाही अस्सि सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा। बुद्धे मुणी सीलगु णोववेए इहच्चणं पाउणई सिलोगं ॥४२॥

सियाणगभोयणेण पुण्णज्जणमिति वेय-वाईणं मतं

२८१ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए माहणाणं। ते पुण्णखंधे सुमहऽज्जणित्ता भवंति देवा इइ वेयवाओ ॥४३॥

अद्दगस्स उत्तरं

सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए कुलालयाणं। से गच्छई लोलुवसंपगाढे तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी ॥४४॥
दयावरं धम्म दुगुंछमाणे वहावहं धम्म पसंसमाणे। एगं पि जे भोययई असीलं णिहो णिसं गच्छइ अंतकाले [1] ॥४५॥

संख-परिव्वायगाणं अव्वत्तरूवपुरिसविसये मतं

२८२ दुहओवि धम्मम्मि समुट्ठियामो अस्सि सुठिच्चा तह एसकालं। आयारसीले बुइएह णाणे ण संपरायम्मि विसेसमत्थि ॥४६॥
अव्वत्तरूवं पुरिसं महंतं सणातणं अक्खयमव्वयं च । सव्वेसु भूएसु वि सव्वओ से चंदो व तारांहि समत्तरूवे ॥४७॥

१. णिवो णिसं जाति कुओ सुरेहिं। इइ पाठंतरं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्दगस्स उत्तरं

एवं ण मिज्जंति ण संसरंति ण माहणा खत्तिय-वेस-पेसा । कीडा य पक्खी सरीसिवा य णरा य सव्वे तह देवलोगा ।।४८।।
लोगं अयाणित्तिह केवलेणं कहिंति जे धम्ममजाणमाणा । णासेंति अप्पाण परं च णट्ठा संसार घोरम्मि अणोरपारे ।।४९।।
लोगं विजाणंतिह केवलेणं पुण्णेण णाणेण समाहिजुत्ता । धम्मं समत्तं च कहिंति जे उ तारेंति अप्पाण परं च तिण्णा ।।५०।।
जे गरहियं ठाणमिहावसंति जे यावि लोए चरणोववेया । उदाहडं तं तु समं मईए अहाउसो विप्परियासमेव ।।५१।।

हत्थितावसाणं साभिप्पाय-निरूवणं

२८३ संवच्छरेणावि य एगमेगं बाणेण मारेउ महागयं तु । सेसाण जीवाण दयट्ठयाए वासं वयं वित्ति पकप्पयामो ।।५२।।

अद्दगस्स उत्तर-पदं

संवच्छरेणावि य एगमेगं पाणं हणंता अणियत्तदोसा । सेसाण जीवाण वहेण लग्गा सिया य थोवं गिहिणो वि तम्हा ।।५३।।
संवच्छरेणावि य एगमेगं पाणं हणंते समणव्वते ऊ । आयाहिए से पुरिसे अणज्जे ण तारिसं केवलिणो भणंति ।।५४।।
बुद्धस्स आणाए इमं समाहिं अस्सि सुठिच्चा तिविहेण ताई । तरिउं समुद्दं व महाभवोघं आयाणवं धम्ममुदाहरेज्जासि ।।५५।।
—त्ति बेमि ।।
सूय. सु. २ अ० ६ ।

---

१९. महावीरतित्थे अइमुत्तए कुमारसमणे

पोलासपुररण्णो अइमुत्तकुमारो

२८४ तेणं कालेणं तेणं समएणं पोलासपुरे नगरे । सिरिवणे उज्जाणे ।।
तत्थ णं पोलासपुरे नयरे विजये नामं राया होत्था ।।
तस्स णं विजयस्स रण्णो सिरी नामं देवी होत्था—वण्णओ ।।
तस्स णं विजयस्स रण्णो पुत्ते सिरीए देवीए अत्तए अतिमुत्ते नामं कुमारे होत्था—सूमालपाणिपाए ।।

गोयमस्स भिक्खायरिया

२८५ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-सिरिवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती अणगारे जाव-पोलासपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ

गोयम-अइमुत्तकुमार-संवादो

२८६ इमं च णं अइमुत्ते कुमारे ण्हाए-जाव-सव्वालंकारविभूसिए बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव उवागए । तेहिं बहूहिं दारएहि य संपरिवुडे अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं भगवं गोयमे पोलासपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ।।

तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागए भगवं गोयमं एवं वयासी--

"के णं भंते ! तुब्भे ? किं वा अडह ?"

तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी--

"अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणा निग्गंथा इरियासमिया-जाव-गुत्तबंभयारी उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडामो ।।"

तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी---

"एह णं भंते ! तुब्भे जा णं अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमि" त्ति कट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए ।।

तए णं सा सिरिदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया। भगवं गोयमं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी---

"कहिं णं भंते ! तुब्भे परिवसह ?"

तए णं से भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे आइगरे -जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तत्थ णं अम्हे परिवसामो ।।"

अइमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा

२८७ तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी---

"गच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदए।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।"

तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवया गोयमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ-जाव-पज्जुवासइ ।।

तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमेइ, पडिक्कमेत्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

तए णं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ ।।

तए णं से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे एवं वयासी---

"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं-जाव-जं नवरं---देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए -जाव-पव्वयामि।"

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।

तए णं से अइमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए-जाव-इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।

तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"बाले सि ताव तुमं पुत्ता ! असंबुद्धे, किं णं तुमं जाणसि धम्मं ?"

तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी--

"एवं खलु अहं अम्मयाओ ! जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि, जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि ।।"

तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी--

"कहं णं तुमं पुत्ता ! जं चेव जाणसि तं चेव न जाणसि ? जं चेव न जाणसि तं चेव जाणसि ?"

तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी--

"जाणामि अहं अम्मयाओ ! जहा जाएणं अवस्स मरियव्वं, न जाणामि अहं अम्मयाओ ! काहे वा कहिं वा कहं वा कियच्चिरेण वा ? न जाणामि णं अम्मयाओ ! केहिं कम्मायणेहिं जीवा नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेसु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मयाओ ! जहा सएहिं कम्मायणेहिं जीवा नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेसु उववज्जंति ।

एवं खलु अहं अम्मयाओ ? जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि, जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए-जाव-पव्वइत्तए ।।"

तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामकाइं चेव अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी--

"तं इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रायसिरिं पासेत्तए ।।"

तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ । अभिसेओ जहा महब्बलस्स निक्खमणं-जाव-सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ । अंत० व० ६ अ० १५ ।

समणअइमुत्तगकुमारस्स कीलणं

२८८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोह-माणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे विणीए ।।

तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे अण्णया कयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गह-रयहरणमायाए बहिया संपट्ठिए विहाराए ।।

तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे वाहयं वहमाणं पासइ, पासित्ता मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता णाविया मे, णाविया मे नाविओ विव णावमयं पडिग्गहगं उदगंसि पव्वाहमाणे-पव्वाहमाणे अभिरमइ । तं च थेरा अद्दक्खु । जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वदासी--

"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे, से णं भंते ! अइमुत्ते कुमार-समणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति ?"

२८९ 'अज्जो ति !' समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी--

"एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे पगइभद्दए-जाव-विणीए, से णं अइमुत्ते कुमार-समणे इमेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति । तं मा णं अज्जो ! तुब्भे अइमुत्तं कुमार-समणं हीलेह निंदह खिंखह गरहह अवमण्णह । तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं वेयावडियं करेह । अइमुत्ते णं कुमार-समणे अंतकरे, चेव, अंतिमसरीरिए चेव ।।"

तए णं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हंति, अगिलाए उवगिण्हंति, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं वेयावडियं करेंति ।।

भग० स० ५ उ० ४ ।

बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, गुणरयणं तवोकम्मं जाव विपुले सिद्धे ।।

अंत० व० ६ अ० १५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. महावीरतित्थे अलक्करायाा

अलक्करायस्स पव्वज्जा

२९० तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नयरी, काममहावणे चेइए ।।

तत्थ णं वाणारसीए अलक्के नामं राया होत्था ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-विहरइ । परिसा निग्गया ।।

तए णं अलक्के राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठतुट्ठे जहा कोणिए-जाव-पज्जुवासइ । धम्मकहा ।।

तए णं से अलक्के राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उद्दायणे तहा निक्खंते, नवरं––जेट्ठपुत्तं रज्जे अभिसिंचइ । एक्कारस अंगाइं । बहू वासा परियाओ-जाव-विपुले सिद्धे ।।

अंत० व० ६ अ० १६ ।

---

२१. महावीरतित्थे मेहकुमारसमणे

रायगिहे सेणिओ राया

२९१. तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नामं नयरे होत्था––वण्णओ ।।
गुणसिलए चेतिए––वण्णओ ।।

तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था––महताहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ ।।
तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था––सूमालपाणिपाया वण्णओ ।।

तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था–अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे-जाव-सेणियस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव समुपेक्खमाणे समुपेक्खमाणे विहरइ ।।

सेणियस्स धारिणी भारिया

२९२. तस्स णं सेणियस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था–जाव-सुकुमाल-पाणिपाया विहरइ ।।

धारिणीए सुमिणदंसणं

२९३ तए णं सा धारिणी देवी अण्णदा कदाइ तंसि तारिसगंसि––छक्कट्ठग-लट्ठमट्ठसंठिय-खंभुग्गय-पवरवर-सालभंजिय-उज्जल-मणि-कणग-रयण-थूभिय-विडंकजालद्धचंद-निज्जूहंतरकणयालिचंदसालियाविभत्तिकलिए सरसच्छधाऊवल-वण्णरइए बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे अब्भंतरओ पसत्त-सुविलिहिय-चित्तकम्मे नाणाविह-पंचवण्ण-मणिरयण-कोट्टिमतले पउमलया-फुल्लवल्लि-वरपुप्फजाइ-उल्लोय-चित्तिय-तले वंदण-वरकणगकलससुणिम्मिय-पडिपूजिय-सरसपउमसोहंतदारभाए पयरग-लंबंत-मणिमुत्तदाम-सुविरइयदारसोहे सुगंध-वर कुसुममउय-पम्हलसयणोवयार-मणहियय निव्वुइयरे कप्पूर-लवंग-मलय-चंदण-कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभि-मघमघेंत-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंधुद्धयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए मणिकिरण-पणासियंधयारे, किंबहुणा ? जुइगुणेहिं सुरवरविमाण-विडंबियवरधरए, तंसि तारिसंगंसि सयणिज्जंसि-जाव-पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी–

एगं महं सत्तुस्सेहं रययकूड-सन्निहं नहयलंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं मुहमतिगयं गयं पासित्ता णं पडिबुद्धा।

सेणियस्स सुमिणनिवेदणं

२९४ तए णं सा धारिणी देवी अयमेयारूवं उरालं महासुमिणं पासित्ताणं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया –जाव–अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-गिराहिं संलवमाणी-संलवमाणी पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणा-मणिकणगरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइ, निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी––

"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए-जाव-नियगवयणमइवयंतं गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा––तं एयस्स णं देवाणुप्पिया ! उरालस्स-जाव-सुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?"

सेणिएण सुमिणमहिम-निदंसणं

२९५ तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चुंचुमालइयतणू ऊसवियरोमकूवे तं सुमिणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेइ, करेत्ता धारिणिं देविं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-वग्गूहिं अणुवूहमाणे-अणुवूहमाणे एवं वयासी––

"उराले णं. तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे-जाव- अत्थलाभो ते देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो ते देवाणुप्पिए ! भोग-सोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए !

एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं-जाव-सुरूवं दारयं पयाहिसि। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विपुल-बलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ।

तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे-जाव- आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे" त्ति कट्टु भुज्जो-भुज्जो अणुवहेइ।

धारिणीए सुमिणजागरिया

२९६ तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी––

"एवमेयं देवाणुप्पिया ! ...-जाव-सच्चे णं एसमट्ठे जं तुब्भे वयह" त्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिकणगरयण-भत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीइत्ता एवं वयासी––

"मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अण्णेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिहि" त्ति कट्टु देवय-गुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ।।

सुमिणपाढग-निमंतणं

२९७ तए णं से सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज सविसेसं परमरम्मं...गंधवट्टिभूयं करेह, कारवेह य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया–जाव–तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।
तए णं से सेणिए राया-जाव- जेणेव अट्टणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणेगवायाम-जोग्ग-बग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते सयपागसहस्सपागेहिं सुगंधवरतेल्लमादिएहिं-जाव-अब्भंगेहिं अब्भंगिए समाणे ...--अवगय-परिस्समे नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजालाभिरामे विचित्त-मणि-रयण-कोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि नाणामणिरयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसण्णे सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं य पुणो पुणो कल्लाणग-पवर-मज्जणविहीए मज्जिए तत्थ-कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणग-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमाल-गंधकासाइ-लूहियंगे अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवुए...-ससि व्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

तए णं से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामंते उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थ-पच्चुत्थुयाइं सिद्धत्थय-मंगलोवयार-कय-संतिकम्माइं रयावेइ, रयावेत्ता नाणामणिरतणमंडियं...सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी---

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थपाढए विविहसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेह, सद्दावेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयल-परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो! तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमेत्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति ।।

सेणिएण सुमिणफल-पुच्छा

२९८ तए णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया ण्हाया कयबलिकम्मा...सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स भवणवडेंसगदुवारे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगयओ मिलंति, मिलित्ता सेणियस्स रण्णो भवणवडेंसगदुवारेणं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, सेणिएणं रण्णा अच्चिय-वंदिय 'पूइय-माणिय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ।। तए णं से सेणिए राया जवणियंतरियं धारिणिं देविं ठवेइ, ठवेत्ता पुप्फफल-पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए एवं वयासी– 'एवं खलु देवाणुप्पिया! धारिणी देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि-जाव-महासुमिणं पासित्ताणं पडिबुद्धा। तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स-जाव-सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ? ।।"

सुमिणफल-कहणं

२९९ तए णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया तं सुमिणं सम्मं ओगिण्हंति ओगिण्हित्ता ईहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता अण्णमण्णेण सद्धिं संचालेंति, संचालेत्ता तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा पुच्छियट्ठा गहियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रण्णो पुरओ सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एवं वयासी– "...इमे य सामी! धारिणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे, तं उराले णं सामी! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे-जाव-आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे। अत्थलाभो सामी! पुत्तलाभो सामी! रज्ज-लाभो सामी! भोगलाभो सामी! सोक्खलाभो सामी! एवं खलु सामी! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं-जाव-दारगं पयाहिइ। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विपुल-बलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा।

तं उराले णं सामी! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे-जाव-आरोग्ग-तुट्ठि-दीहा उय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी! धारणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे" त्ति कट्टु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेंति ।।

सुमिणपाढग-विसज्जणं

३०० तए णं से सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयल परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी---

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एवमेयं देवाणुप्पिया ! -जाव-जं णं तुब्भे वयह त्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ", पडिच्छित्ता ते सुमिणपाढए विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ।।

सेणिएण सुमिणपसंसा

३०१ तए णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव धारिणी देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धारिणिं देविं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिए ! . . . आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्ल-कारए णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे" त्ति कट्टु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ।।

धारिणीए दोहलो

३०२ तए णं सा धारिणी देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति, पडिच्छित्ता जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ।।

तए णं तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भवित्था—

"धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, सपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं मेहेसु अब्भुग्गएसु अब्भुज्जएसु अब्भुण्णएसु अब्भुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जुएसु सफुसिएसु सथणिएसु धंतधोय-रुप्पपट्ट-अंक-संख-चंद-कुंद-सालि-पिट्ठरासिसमप्पभेसु चिकुर-हरियाल-भेय-चंपग-सण-कोरेंट-सरिसव-पउमरयसमप्पभेसु लक्खारस-सरस-रत्तकिंसुय-जासुमण-रत्तबंधुजीवग-जातिहिंगुलय-सरस-कुंकुम-उरब्भससरुहिर-इंदगोवग-समप्पभेसु बरहिण-नील-गुलिय-सुग-चासपिच्छ-भिंगपत्त-सासग-नीलुप्पलनियर-नव-सिरीसकुसुम-नवसद्दलसमप्पभेसु जच्चंजण-भिंगभेय-रिट्ठग-भमरावलि-गवल-गुलिय-कज्जलसमप्पभेसु फुरंत-विज्जुय-सगज्जिएसु वायवस-विपुलगगण-चवलपरिसक्किरेसु, निम्मल-वरवारिधारा-पयलिय-पयंडमारुयसमाहय-समोत्थरंत-उवरुवरितुरियवासं पवासिएसु, धारा-पहकर-निवाय-निव्वावियमेइणितले हरियगगणकंचुए पल्लवियपायवगणेसु वल्लिवियाणेसु पसरिएसु उन्नएसु सोभग्गमुवगएसु वेभारगिरिप्पवाय-तड-कडगविमुक्केसु उज्झरेसु, तुरियपहाविय-पट्टलोट्टफेणाउलं सकलुसं जलं वहंतीसु गिरिनदीसु सज्जज्जुण-नीव-कुडय-कंदल-सिलिंध-कलिएसु उववणेसु, मेहरसिय-हट्ठतुट्ठचिट्ठिय-हरिसवसपमुक्ककंठकेकारवं मुयंतेसु बरहिणेसु उउवस-मयजणिय-तरुणसहयरि-पणच्चिएसु नवसुरभि-सिलिंध-कुडय-कंदल-कलंब-गंधद्धणिं मुयंतेसु उववणेसु, परहुय-रुय-रिभिय-संकुलेसु उद्दाइंत-रत्तइंदगोवय-थोवय-कारुण्णविलविएसु ओणयतणमंडिएसु दद्दुरपयंपिएसु संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरिपहकर-परिलित-मत्त-छप्पय-कुसुमासवलोल-महुर-गुंजंतदेसभाएसु उववणेसु, परिसामिय-चंद-सूर-गहगण-पणट्ठनक्खत्ततारगपहे इंदाउह-बद्ध-चिंधपट्टम्मि अंबरतले उड्डीणबलागपंति-सोभंतमेहवंदे कारंडग-चक्कवाय-कलहंस-उस्सुयकरे संपत्ते पाउसम्मि काले ण्हायाओ कयबलिकम्माओ कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ताओ 'किं ते ?' वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय-कडग-खुड्डुय-विचित्तवरवलयथंभियभुयाओ कुंडलउज्जोवियाणणाओ रयणभूसियंगीओ, नासा-नीसासवाय-वोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिससंजुत्तं हयलालापेलवाइरेयं धवलकणय-खचियंतकम्मं आगासफलिह-सरिसप्पभं अंसुयं पवरपरिहियाओ, दुगूलसुकुमालउत्तरिज्जाओ सव्वोउय-सुरभिकुसुम-पवरमल्लसोभियसिराओ कालागरुधूवधूवियाओ सिरी-समाणवेसाओ, सेयणय-गंधहत्थिरयणं दुरूढाओ समाणीओ, सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चंदप्पभ-वइअवेरुलिय-विमलदंड-संख-कुंद-दगरयअमय-महि-य-फेणपुंजसन्निगास-चउचामरवालवीजियंगीओ सेणिएणं रण्णा सद्धिं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चाउरंगिणीए सेणाए—महया हयाणीएणं गयाणीएणं रहाणीएणं पायत्ताणीएणं-सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्व-विभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि निग्घोसनाइयरवेणं रायगिहं नयरं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु आसित्तसित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्तं पंचवण्ण-सरस-सुरभि-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभि-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवलोएमाणीओ नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणीओ गुच्छ-लया-रुक्ख-गुम्म-वल्लि-गुच्छोच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणिंति।
तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु-जाव-दोहलं विणिज्जामि ।।"

धारिणीए चिंता

३०३ तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि असंपत्तदोहला असंपुण्णदोहला असम्माणियदोहला सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा पमइलदुब्बला किलंता ओमंथियवयण-नयणकमला पंडुइयमुही करयलमलिय व्व चंपगमाला नित्तेया दीणविव-ण्णवयणा जहोचिय-पुप्फ-गंध-मल्लालंकार-हारं अणभिलसमाणी किड्डारमणकिरियं परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगय-दिट्ठीया ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाइ ।।

पडिचारियाहिं चिंताकारणपुच्छा

३०४ तए णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ य धारिणिं देविं ओलुग्गं झियायमाणिं पासंति, पासित्ता एवं वयासी–
"किण्णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा-जाव-झियायसि ?"
तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं अब्भितरियाहिं दासचेडियाहिं य एवं वुत्ता समाणी ताओ दासचेडियाओ नो आढाइ नो परियाणइ, अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया संचिट्ठइ ।।
तए णं ताओ अंगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ य धारिणिं देविं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–
"किण्णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा-जाव-झियायसि ?"
तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं अब्भितरियाहिं दासचेडियाहिं य दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ, अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया संचिट्ठइ ।।

पडिचारियाहिं सेणियस्स निवेदणं

३०५ तए णं ताओ अंगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ य धारिणीए देवीए अणाढाइज्जमाणीओ अपरियाणिज्जमाणीओ तहेव संभंताओ समाणीओ धारिणीए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी–
"एवं खलु सामी ! किंपि अज्ज धारिणी देवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा-जाव-अट्टज्झाणोवगया झियायइ ।।"

सेणिएणं चिंताकारणपुच्छा

३०६ तए णं से सेणिए राया तासिं अंगपडिचारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धारिणिं देविं ओलुग्गं ओलुग्गसरीरं-जाव-अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–
"किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा-जाव-अट्टज्झाणोवगया झियायसि ?"
तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ-जाव-तुसिणीया संचिट्ठइ ।।
तए णं से सेणिए राया धारिणिं देविं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–
"किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओल्लुग्गसरीरा-जाव-अट्टज्झाणोवगया झियासंसि ?"
तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ-जाव-तुसिणीया संचिट्ठइ ।।
तए णं से सेणिए राया धारिणिं देविं सवह-साविय करेइ, करेत्ता एवं वयासी––
"किण्णं देवाणुप्पिए ! अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए ? तो णं तुमं ममं अयमेयारूवं मणोमाणसियं दुक्खं रहस्सीकरेसि ।।"

धारिणीए चिंताकारणनिवेदणं

३०७ तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा सवह-साविया समाणी सेणियं रायं एवं वयासी–
"एवं खलु सामी ! मम तस्स उरालस्स-जाव-महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणिंति। तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु-जाव-दोहलं विणेज्जामि।

तए णं अहं सामी! अयमेयारूवंसि अकालदोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा-जाव-अट्टज्झाणोवगया झियामि।"

सेणिएणं आसासणं

३०८ तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म धारिणिं देविं एवं वयासी–

"मा णं तुमं देवाणुप्पिए! ओलुग्गा-जाव-अट्टज्झाणोवगया झियाहि। अहं णं तह करिस्सामि जहा णं तुब्भं अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ" त्ति कट्टु धारिणिं देविं इट्ठाहिं...वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं बहूहिं आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य––चउव्विहाहिं बुद्धीहिं अणुचिंतेमाणे-अणुचिंतेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा उप्पत्तिं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे-जाव-झियायइ।।

अभयकुमारेण सेणियं पइ चिंताकारणपुच्छा

३०९ तयाणंतरं च णं अभए कुमारे ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए पायवंदए पहारेत्थ गमणाए।।

तए णं अभए कुमारे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं-जाव-झियायमाणं पासइ, पासित्ता अयमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था––"अण्णया ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आढाइ परियाणइ सक्कारेइ सम्माणेइ इट्ठाहिं वग्गूहिं आलवइ संलवइ अद्धासणेणं उवनिमंतेइ मत्थयंसि अग्घाइ। इयाणिं ममं सेणिए राया नो आढाइ नो परियाणइ नो सक्कारेइ नो सम्माणेइ नो इट्ठाहिं...वग्गूहिं आलवइ संलवइ नो अद्धासणेणं उवनिमंतेइ नो मत्थयंसि अग्घाइ, किं पि ओहयमणसंकप्पे-जाव-झियायइ। तं भवियव्वं णं एत्थ कारणेणं। तं सेयं खलु ममं सेणियं रायं एयमट्ठं पुच्छित्तए"––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी–

"तुब्भे णं ताओ! अण्णया ममं एज्जमाणं पासित्ता आढाह परियाणह सक्कारेह सम्माणेह आलवह संलवह अद्धासणेणं उवणिमंतेह मत्थयंसि अग्घायह। इयाणिं ताओ! तुब्भे ममं नो आढाह-जाव-नो मत्थयंसि अग्घायह किं पि ओहयमणसंकप्पा-जाव-झियायह। तं भवियव्वं णं ताओ! एत्थ कारणेणं। तओ तुब्भे मम ताओ! एयं कारणं अगूहमाणा असंकमाणा अनिण्हवमाणा अपच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसंदिद्धं एयमट्ठं आइक्खह। तए णं हं तस्स कारणस्स अंतगमणं गमिस्सामि।।"

सेणिएणं चिंताकारणनिवेदणं

३१० तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे अभयं कुमारं एवं वयासी–

"एवं खलु पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए धारिणीदेवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कंतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे दोहले पाउब्भवित्था––धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं-जाव-वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणिंति। तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु-जाव-दोहलं विणिज्जामि।

तए णं अहं पुत्ता धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य उवाएहि य-जाव-उप्पत्तिं अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे-जाव-झियामि, तुमं आगयं पि न याणामि। तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता! ओहयमणसंकप्पे-जाव-झियामि।।"

अभएण आसासणं

३११ तए णं से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए-जाव- हरिसवस-विसप्पमाणहियए सेणियं रायं एवं वयासी–

"मा णं तुब्भे ताओ! ओहयमणसंकप्पा-जाव-झियायह। अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ" त्ति कट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं...वग्गूहिं समासासेइ।।

तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियए अभयं कुमारं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभएणं देवाराहणं

३१२ तए णं से अभए कुमारे सक्कारिए सम्माणिए पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सए भवणे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे निसण्णे ।।

तए णं तस्स अभयस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–"नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकालदोहलमणोरहसंपत्ति करित्तए, नन्नत्थ दिव्वेणं उवाएणं । अत्थि णं मज्झ सोहम्मकप्पवासी पुव्वसंगइए देवे महिड्ढीए-जाव-महासोक्खे । तं सेयं खलु ममं पोसहसालाए [पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगय-मालावण्णगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबीयस्स दब्भसंथारोवगयस्स] अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणस्स विहरित्तए । तए णं पुव्वसंगइए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकाल-मेहेसु दोहलं विणेहिति"– एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भ संथारगं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता. दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी-जाव-पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ।

देवागमणं

३१३ तए णं तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसंगइयस्स देवस्स आसणं चलइ ।

तए णं से पुव्वसंगइए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ ।

तए णं तस्स पुव्वसंगइयस्स देवस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–"एवं खलु मम पुव्वसंगइए जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नयरे पोसहसालाए पोसहिए अभए नामं कुमारे अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता णं ममं मणसीकरेमाणे–मणसीकरेमाणे चिट्ठइ । तं सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अंतिए पाउब्भवित्तए"––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ, तं जहा––

रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंकाणं अंजणाणं रययाणं जायरूवाणं अंजणपुलगाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे पुव्वभवजणिय-नेह-पीइबहुमाणजायसोगे, तओ विमाणवरपुंडरीयाओ रयणुत्तमाओ धरणियल-गमण-तुरिय-संजणिय-गमणपयारो वाघुण्णिय-विमल-कणग-पयरग-वंडिसगमउड्डक्कडोवदंसणिज्जो अणेगमणि-कणगरयण-पहकर-परि-मंडिय-भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणियहरिसो पिंखोलमाणवरललियकुंडलुज्जलिय-वयणगुणजणियसोम्मरूवो उदिओ विव कोमुदी-निसाए सणिच्छरंगारकुज्जलियमज्झभागत्थो नयणाणंदो सरयचंदो दिव्वोसहिपज्जलुज्जलियदंसणाभिरामो उडुलच्छिसमत्त-जायसोहो पइट्ठगंधुद्धयाभिरामो मेरू विव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसो दीवसमुद्दाणं असंखपरिमाणनामधेज्जाणं मज्झंकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो पभाए विमलाए जीवलोयं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स पासं ओवयइ दिव्वरूवधारी ।

तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे दसद्धवण्णाइं सखिखिणियाइं पवरवत्थाइं परिहिए अभयं कुमारं एवं वयासी–

"अहं णं देवाणुप्पिया ! पुव्वसंगइए सोहम्मकप्पवासी देवे महिड्ढीए जं णं तुमं पोसहसालाए अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता णं ममं मणसी-करेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठसि, तं एस णं देवाणुप्पिया ! अहं इहं हव्वमागए । संदिसाहि णं देवाणुप्पिया ! किं करेमि ? किं दलयामि ? किं पयच्छामि ? किं वा ते हियइच्छियं ?"

तए णं से अभए कुमारे तं पुव्वसंगइयं देवं अंतलिक्खपडिवण्णं पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोसहं पारेइ, पारेत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालदोहले पाउब्भूए––धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं-जाव-वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणिंति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु-जाव-दोहलं विणेज्जामि––तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालदोहलं विणेहि ।।"

देवेण अकालमेहविउव्वणं

३१४ तए णं से देवे अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे अभयं कुमारं एवं वयासी–

"तुमं णं देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुय-वीसत्थे अच्छाहि । अहं णं तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालदोहलं विणेमि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्ति कट्टु अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ, पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उत्तरपुरत्थिमे णं वेभारपव्वए वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ-जाव-दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता खिप्पामेव सगज्जियं, सविज्जुयं सफुसियं पंचवण्णमेहनिणाओवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणामेव अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभयं कुमारं एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया! मए तव पियट्ठयाए सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, तं विणेऊ णं देवाणुप्पिया! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अयमेयारूवं अकालदोहलं ।।

धारिणीए दोहद-पूरणं

३१५ तए णं से अभए कुमारे तस्स पुव्वसंगइयस्स सोहम्मकप्पवासिस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सयाओ भवणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"एवं खलु ताओ! मम पुव्वसंगइएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिया सविज्जुया पंचवण्णमेहनिणाओवसोभिया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया। तं विणेऊ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं ।।"

तए णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! रायगिहं नगरं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आसित्तसित्त-सुइय-संमज्जिओवलित्तं-जाव-सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता करवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्त-माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

तए णं से सेणिए राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सन्नाहेह, सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह।" तेवि तहेव करेंति-जाव-पच्चप्पिणंति ।।

तए णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धारिणिं देविं एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिए! सगज्जिया सविज्जुया सफुसिया दिव्वा पाउससिरी पाउब्भूया। तं णं तुमं देवाणुप्पिए! एयं अकालदोहलं विणेहि ।।"

३१६ तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता अंतो अंतेउरंसि ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता, किं ते वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय-कडग-खुड्डय-विचित्त-वरवलयथंभियभुया जाव-आगास-फालिय-समप्पभं अंसुयं नियत्था, सेयणयं गंधहत्थिं दुरूढा समाणी अभय-महिय-फेणपुंज-सन्निगासाहिं सेयचामरवाल-वीयणीहिं वीइज्जमाणी-वीइज्जमाणी संपत्थिया ।।

तए णं से सेणिए राया ण्हाए कयबलिकम्मे-जाव-सस्सिरिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामराहिं वीइज्जमाणे धारिणिं देविं पिट्ठओ अणुगच्छइ ।।

तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महया भड-चडगर-वंदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए-जाव-दुंदुभिनिग्घोसनाइयरवेणं रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणी-अभिनंदिज्जमाणी जेणामेव वेभारगिरिपव्वए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेभारगिरि-कडग-तडपायमूले आरामेसु य उज्जाणेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य रुक्खेसु य गुच्छेसु य गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कंदरासु य दरीसु य चुंढीसु य दहेसु य कच्छेसु य नदीसु य संगमेसु य विवरएसु य अच्छमाणी य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य पल्लवाणि य गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी य परिभुंजेमाणी य परिभाएमाणी य वेभारगिरिपायमूले दोहलं विणेमाणी सव्वओ समंता आहिंडइ ।।

तए णं सा धारिणी देवी सम्माणियदोहला विणीयदोहला संपुण्णदोहला संपत्तदोहला जाया यावि होत्था ।।

तए णं सा धारिणी देवी सेयणयगंधहत्थिं दुरूढा समाणी सेणिएणं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए-जाव-जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभएण देवस्स पडिविसज्जणं

३१७ तए णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुव्वसंगइयं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

तए णं से देवे सगज्जियं सविज्जुयं पंचवण्णमेहोवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

धारिणीए गब्भचरिया

३१८ तए णं सा धारिणी देवी तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियदोहला तस्स गब्भस्स अणुकंपणट्ठाए-जाव-तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ।।

मेहस्स जम्मवद्धावणं

३१९ तए णं सा धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं अद्धरत्तकालसमयंसि सुकुमालपाणिपायं -जाव-सव्वंगसुंदरं दारगं पयाया ।।

३२० तए णं ताओ अंगपडियारियाओ धारिणिं देविं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं-जाव-सव्वंगसुंदरं दारगं पयायं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं-जाव-सव्वंगसुंदरं दारगं पयाया । तं णं अम्हे देवाणुप्पियाणं पियं निवेएमो, पियं भे भवउ ।।"

तए णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे ताओ अंगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विउलेण य पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, मत्थयधोयाओ करेइ, पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेइ, कप्पेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

मेहस्स जम्मुस्सवो

३२१ तए णं से सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं नड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहकहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायरपरिगीयं करेह, कारवेह य, चारगपरिसोहणं करेह, करेत्ता माणुम्माणवद्धणं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्त-माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्प-माणहियया तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

तए णं से सेणिए राया अट्ठारससेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अब्भितरबाहिरिए उस्सुक्कं उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिम-कुदंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धयमुइंगं अमिलायमल्लदामं गणियावरना-डइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं पमुइय-पक्कीलियाभिरामं जहारिहं ठिइवडियं दसदेवसियं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।"

तेवि तहेव करेंति, तहेव पच्चप्पिणंति ।।

तए णं से सेणिए राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाह-स्सिएहि य दाएहिं दलयमाणे दलयमाणे पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे एवं च णं विहरइ ।।

मेहस्स नामादिसक्कारकरणं

३२२ तए णं तस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठितिपडियं करेंति, बितिए दिवसे जागरियं करेंति, ततिए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति एवामेव निवत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं बलं च बहवे गणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाले आमंतेंति । तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया महइमहालयंसि भोयणमंडवंसि तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलेण य बहूहिं गणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति।
जिमियभुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं बलं च बहवे गणनायग--जाव-संधिवाले विपुलेणं पुप्फ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी--
"जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए, तं होउ णं अम्हं दारए मेहे नामेणं। तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति मेहे इ ।।"

मेहस्स लालणपालणं

३२३ तए णं से मेहे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए, अण्णाहि य बहूहिं--खुज्जाहिं चिलाईहिं वामणीहिं वडभीहिं बब्बरीहिं बउसीहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणियाहिं थारुगिणियाहिं लासियाहिं लउसियाहिं दामिलीहिं सिंहलीहिं आरबीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं बहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं--नानादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहिं सदेस-नेवत्थ-गहिय-वेसाहिं निउण-कुसलाहिं विणीयाहिं, चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कंचुइज्ज-महयरग-वंद-परिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे परिगिज्जमाणे चालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे रम्मंसि मणिकोट्टिमतलंसि परंगिज्जमाणे, निव्वाय-निव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणे व चंपगपायवे सुहंसुहेणं वड्ढइ ।।

३२४ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं नामकरणं च पजेमणगं च पचंकमणगं च चोलोवणयं च महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं करेंसु ।।

मेहस्स कलागहणं

३२५ तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं चेव सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति ।।
तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ, तं जहा--
१. लेहं २. गणियं ३. रूवं ४. नट्टं ५. गीयं ५. वाइयं ७. सरगयं ८. पोक्खरगयं ९. समतालं १०. जूयं ११. जणवायं १२. पासयं १३. अट्ठावयं १४. पोरेकव्वं १५. दगमट्टियं १६. अण्णविहिं १७. पाणविहिं १८. वत्थविहिं १९. विलेवणविहिं २०. सयणविहिं २१. अज्जं २२. पहेलियं २३. मागहियं २४. गाहं २५. गीइयं २६. सिलोयं २७. हिरण्णजुत्तिं २८. सुवण्णजुत्तिं २९. चुण्णजुत्तिं ३०. आभरणविहिं ३१. तरुणीपडिकम्मं ३२. इत्थिलक्खणं ३३. पुरिसलक्खणं ३४. हयलक्खणं ३५. गयलक्खणं ३६. गोणलक्खणं ३७. कुक्कुडलक्खणं ३८. छत्तलक्खणं ३९. दंडलक्खणं ४०. असिलक्खणं ४१. मणिलक्खणं ४२. कागणिलक्खणं ४३. वत्थुविज्जं ४४. खंधारमाणं ४५. नगरमाणं ४६. वूहं ४७. पडिवूहं ४८. चारं ४९. पडिचारं ५०. चक्कवूहं ५१. गरुलवूहं ५२. सगडवूहं ५३. जुद्धं ५४. निजुद्धं ५५. जुद्धाइजुद्धं ५६. अट्ठिजुद्धं ५७. मुट्ठिजुद्धं ५८. बाहुजुद्धं ५९. लयाजुद्धं ६०. ईसत्थं ६१. छरुप्पवायं ६२. धणुवेयं ६३. हिरण्णपागं ६४. सुवण्णपागं ६५. वट्टखेड्डुं ६६. सुत्तखेड्डुं ६७. नलियाखेड्डुं ६८. पत्तच्छेज्जं ६९. कडच्छेज्जं ७०. सज्जीवं ७१. निज्जीवं ७२. सउणरुतं ति ।।[1]
तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ, सेहावेत्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेइ ।।

३२६ तए णं मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो तं कलायरियं महुरेहिं वयणेहिं विउलेण य वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता पडिविसज्जेंति ।।
तए णं से मेहे कुमारे बावत्तरि-कलापंडिए नवंगसुत्तपडिबोहिए, अट्ठारस-विहिप्पगारदेसीभासाविसारए गीयरई गंधव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था ।।

मेहस्स पाणिग्गहणं

३२७ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं बावत्तरि-कलापंडियं-जाव-वियालचारिं जायं पासंति, पासित्ता अट्ठ पासायवडिंसए कारेंति--अब्भुग्गयमूसियपहसिए विव मणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ते वाउद्धुय-विजय-वेजयंती-पडाग-छत्ताइछत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतर-रयणपंजरुम्मिलिए व्व मणिकणगथूभियाए वियसिय-सयवत्त-पुंडरीए तिलयरयणद्धचंदच्चिए नाणामणिमयदामालंकिए अंतो बहिं च सण्हे तवणिज्ज-रुइल-वालुया-पत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए-जाव-पडिरूवे।

१ सम० ७२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगं च णं महं भवणं कारेंति—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं अब्भुग्गयसुकयवइरवेइयातोरण-वररइयसालभंजिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-वेरुलियखंभ-नाणामणिकणगरयण-खचियउज्जलं बहुसम-सुविभत्त-निचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भित्तिचित्तं खंभुग्गयवयरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचणमणिरयणथूभियागं नाणाविह-पंचवण्ण-घंटापडाग-परिमंडियग्गसिहरं धवलमिरिचिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लो-इयमहियं-जाव-गंधवट्टिभूयं पासाईयं-जाव-पडिरूवं ।।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि सरिसियाणं सरिव्वयाणं सरित्तयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं सरिसएहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाणं पसाहणट्ठंग-अविहववहु-ओवयण-मंगलसुजंपिएहिं अट्ठहिं रायवरकन्नाहिं सद्धिं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु ।।

पीइदाणं

३२८ तए णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं पीइदाणं दलयंति—अट्ठ हिरण्ण-कोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण भाणियव्वं-जाव-पेसणकारियाओ, अण्णं च विपुलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं अलाहि-जाव-आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं ।।

तए णं से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ,-जाव-एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं च विउलं धण कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं अलाहि-जाव-आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं दलयइ ।।

तए णं से मेहे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं-जाव- माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ।।

महावीरसमवसरणं

३२९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

मेहस्स पुच्छा

३३० तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु-महया जणसद्दे इ वा-जाव-बहवे उग्गा भोगा-जाव-रायगिहस्स नगरस्स मज्झं-मज्झेणं एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति । इमं च णं मेहे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंग-मत्थएहिं-जाव-माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे रायमग्गं च ओलोएमाणे-ओलोएमाणे एवं च णं विहरइ ।।

तए णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे-जाव-एगदिसाभिमुहे निग्गच्छमाणे पासइ, पासित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"किण्णं भो देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहे इ वा-जाव-एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति ।।"

कंचुइज्जपुरिसेण निवेदणं

३३१ तए णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवित्तीए मेहं कुमारं एवं वयासी—"नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नयरे इंदमहे इ वा-जाव-गिरिजत्ता इ वा जं णं एए उग्गा भोगा-जाव-एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति । एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।"

मेहस्स भगवओ समीवे गमणं

३३२ तए णं से मेहे कुमारे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह।

तहत्ति उवणेंति ।।

तए णं से मेहे ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए चाउग्घंटं आसरहं दुरूढ समाणे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर-वंद-परियाल-संपरिवुडे रायगिहस्स नयरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ। जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासइ ।।

धम्मदेसणा

३३३ तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ--
जह जीवा बज्झंति, मुच्चंति जहा य संकिलिस्संति। धम्मकहा भाणियव्वा जाव परिसा पडिगया ।।

मेहस्स पव्वज्जासंकप्पो

३३४ तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--
"सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं-जाव-देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि। तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि ।।"

मेहस्स अम्मापिऊणं निवेदणं

३३५ तए णं से मेहे कुमारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, दुरूहित्ता महया भड-चडगर-पहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी--
"एवं खलु अम्मयाओ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।।"
तए णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो एवं वयासी--
"धन्नो सि तुमं जाया! संपुण्णो सि तुमं जाया! कयत्थो सि तुमं जया! कयलक्खणो सि तुमं जाया! जन्नं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।।"
तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी--
"एवं खलु अम्मयाओ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।"

धारिणीए सोगाकुलदसा

३३६ तए णं सा धारिणी देवी तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं असुयपुव्वं फरुसं, गिरं सोच्चा निसम्म इमेणं एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूया समाणी सेयागयरोमकूवपगलंत-चिलिणगाया सोयभरपवेवियंगी नित्तेया दीण-विमण-वयणा करयलमलिय व्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीर-लावण्णसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिढिलभूसण-पडंतखुम्मिय-संचु-ण्णियधवलवलय-पब्भट्ठउत्तरिज्जा सूमाल-विकिण्ण-केसहत्था मुच्छावस-नट्ठचेय-गरुई परसुनियत्त व्व चंपगलया निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी विमुक्क-संधिबंधणा कोट्टिमतलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिया ।।

धारिणीए मेहस्स य परिसंवादो

३३७ तए णं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गय-सीयलजलविमलधाराए परिसिंचमाण-निव्वा-वियगायलट्ठी उक्खेवय-तालियंट-वीयणग-जणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउर-परिजणेणं आसासिया समाणी मुत्तावलि-सन्निगास-पवडंत-अंसुधाराहिं सिंचमाणी पओहरे, कलुण-विमण-दीणा रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेहं कुमारं एवं वयासी--
"तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते- कंते इट्ठे पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंड-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णंदि-जणणे उंबरपुप्फं व दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए। तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो। तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं परिणयवए वड्ढिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।।"

तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वयासी–

"तहेव णं तं अम्मताओ ! जहेव णं तुब्भे ममं एवं वयह––'तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते-जाव-पव्वइस्ससि।'

"एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे अणितिए असासए वसणसओवद्दवाभिभूते विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भरागसरिसे सुविणदंसणोवमे सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे। से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि गमणाए, के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।"

तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–

"इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाओ भारियाओ। तं भुंजाहि णं जाया ! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे। पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।।"

तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वयासी–

"तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह–'इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ-जाव-भारियाओ। तं भुंजाहि णं जाया ! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे। पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि।'

"एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुस्सास-नीसासा दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णा उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवा अधुवा अणितिया असासया सडण-पडण-विद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा।

"से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि गमणाए, के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।"

तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–

"इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि-जाव-आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं। तं अणुहोहो ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं। तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।।"

तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वयासी–

"तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह––'इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग-पिउपज्जयागए-जाव-तओ पच्छा अणुभूय-कल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि।'

"एवं खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे -जाव- मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे। से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि गमणाए, के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।"

३३८ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति मेहं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए-जाव- संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठिए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं, गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्वयं चरियव्वं। नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा, उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा।

"तुमं च णं जाया ! सुहसमुचिए नो चेव णं दुहसमुचिए, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, उच्चावए गामकंटए, बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए। भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे। तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि।।'

तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरं एवं वयासी--

"तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह--'एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे पुणरवि तं चेव जाव पव्वइस्ससि।' एवं खलु अम्मयाओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स, नो चेव णं धीरस्स निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्करं करणयाए ?

"तं इच्छामि णं अम्मयाओ तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए।।"

मेहस्स एगदिवसरज्जं

३३९ तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामकाइं चेव मेहं कुमारं एवं वयासी--

"इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए।।"

तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ।।

तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेंति।।

तए णं से सेणिए राया बहूहिं गणनायगेहि य -जाव- संधिवालेहि य -जाव- संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं रुप्पमयाणं कलसाणं मणिमयाणं कलसाणं सुवण्णरुप्पमयाणं कलसाणं, सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं, भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहीहिं सिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं -जाव- दुंदुभि-निग्घोस णाइयरवेणं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--"जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! जय-जय नंदा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, अजियं जिणाहि सत्तुपक्खं, जियं च पालेहि मित्तपक्खं, इंदो इव देवाणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं भरहो इव मणुयाणं रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागर-नगर खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि त्ति" कट्टु जय-जय-सद्दं पउंजंति।।

तए णं से मेहे राया जाए--महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ।।

तए णं तस्स मेहस्स रण्णो अम्मापियरो एवं वयासी--"भण जाया ! किं दलयामो ? किं पयच्छामो? किं वा ते हियइच्छिए सामत्थे ?"

मेहस्स निक्खमणपाओग्ग-उवगरणं

३४० तए णं से मेहे राया अम्मापियरो एवं वयासी--

"इच्छामि णं अम्मयाओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं च आणियं, कासवयं च सद्दावियं।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सय-सहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं च उवणेह, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेह।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय कुत्तियावणाओ दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरणं पडिग्गहं च उवणेंति, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेंति ।।

कासवेणं मेहस्स अग्गकेसकप्पणं

३४१ तए णं से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए -जाव-हरिसवसविसप्पमाणहियए ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी––

"संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं ।।"

तए णं से सेणिए राया कासवयं एवं वयासी–

"गच्छाहि णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुरभिणा गंधोदएणं निक्के हत्थपाए पक्खालेहि, सेयाए चउप्फालाए पोत्तीए मुहं बंधित्ता मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ।।"

तए णं से कासवए सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धवत्थेणं मुहं बंधइ, बंधित्ता परेणं जतेणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेति ।।

३४२ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चाओ दलयइ, दलइत्ता सेयाए पोत्तीए बंधइ, बंधिता रयणसमुग्गयंसि पक्खिवइ, मंजूसाए पक्खिवइ, हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी, रोयमाणी-रोयमाणी, कंदमाणी-कंदमाणी, विलवमाणी-विलवमाणी एवं वयासी––

"एस णं अम्हं मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पधेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य––अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइ" त्ति कट्टु उस्सीसामूले ठवेइ ।।

मेहस्स अलंकरणं

३४३ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, मेहं कुमारं दोच्चं पि तच्चं पि सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावेत्ता पम्हलसुमालाए गंधकासाइयाए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति, अणुलिंपित्ता नासा-नीसासवाय-वोज्झं वरणगरपट्टणग्गयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालापेलवं छेयायरियकणगखचियंतकम्मं हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेंति, हारं पिणद्धेंति, अद्धहारं पिणद्धेंति,

एवं–एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं पालंबं पायपलंबं कडगाइं तुडिगाइं केऊराइं अंगयाइं दसमुद्दियाणंतयं कडिसुत्तयं कुंडलाइं चूडामणिं रयणुक्कडं मउडं--पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेंति ।

मेहस्स अभिनिक्खमणमहुस्सवं

३४४ तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी –

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं लीलट्ठिय-साल-भंजियागं ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं घंटा-वलि-महुर-मणहरसरं सुभ-कंत-दरिसणिज्जं निउणोवियमिसिमिसेंत-मणिरयण-घंटियाजालपरिक्खित्तं अब्भुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामं विज्जाहरजमल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह ।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठतुट्ठा अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं -जाव-सीयं उवट्ठवेंति ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से मेहे कुमारे सीयं दुरूहइ दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।
तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स दाहिणपासे भद्दासणंसि निसीयइ ।।

३४५ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अंबधाई रयहरणं च पडिग्गहं च गहाय सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स वामपासे भद्दासणंसि निसीयइ ।।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयारकुसला आमेलगजमलजुयल-वट्टिय-अब्भुण्णय-पीण-रइय-संठिय-पओहरा हिम-रयय-कुंदेंदुपगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहारेमाणी ओहारेमाणी चिट्ठइ ।।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाओ सीयं दुरूहंति, दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स उभओ पासं णाणामणि-कणग-रयण-महरिहतवणिज्जुज्जल-विचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ संख-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंज-सण्णिगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारेमाणीओ ओहारेमाणीओ चिट्ठंति ।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुरओ पुरत्थिमेणं चंदप्पभवइर-वेरुलिय-विमलदंडं तालियंटं गहाय चिट्ठइ ।।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणेणं सेयं रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगय-महामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ ।।

३४६ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरण-गहिय-निज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेह ।।"
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरण-गहिय-निज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेंति ।।
तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठा ण्हाया-जाव-एगाभरण-गहिय-णिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं एवं वयासी–
"संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं णं अम्हेहिं करणिज्जं ।।"

तए णं से सेणिए राया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वयासी–
"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं परिवहेह ।।"
तए णं तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सेणिएण रण्णा एवं वुत्तं संतं हट्ठं मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं परिवहइ ।।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तं जहा ––सोत्थिय-सिरिवच्छ-नंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणया-जाव-बहवे अत्थत्थिया -जाव-कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमंगलसएहिं अणवरयं अभिनंदंता य अभिथुणंता य एवं वयासी––

"जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! जय-जय नंदा ! भद्दं ते अजियं जिणाहि इंदियाइं, जियं च पालेहि समण-धम्मं, जियविग्घो विय वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्झे, निहणाहि रागदोसमल्ले तवेण धिइ-धणिय-बद्धकच्छो, मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं, गच्छ य मोक्खं परमं पयं सासयं च अयलं, हंता परीसहचमुं णं', अभीओ परीसहोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घं भवउ" त्ति कट्टु पुणो-पुणो मंगल-जयसद्दं पउंजंति ।।

तए णं से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ।।

सिस्सभिक्खादाणं

३४७ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––"एस णं देवाणुप्पिया !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययणंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

"से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्खं ।।"

तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ।।

३४८ तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ । तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी रोयमाणी रोयमाणी कंदमाणी कंदमाणी विलवमाणी विलवमाणी एवं वयासी--

"जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाएयव्वं ।"

'अम्हं पि णं एसेव मग्गे भवउ' त्ति कट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

मेहस्स पव्वज्जागहणं

३४९ तए णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी --

"आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य ।

"से जहानामए-केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमइ--एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य लोए हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ । एवामेव मम वि एगे आयाभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं ।।"

३५० तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ--जाव--धम्ममाइक्खइ--

"एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं -जाव-सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाएयव्वं ।।"

तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिवज्जइ--तमाणाए तह गच्छइ, तह-चिट्ठइ, --जाव--उट्ठाय पाणेहिं--जाव--सत्तेहिं संजमेणं संजमइ ।।

मेहस्स मणो-संकिलेसे

३५१ जद्दिवसं च णं मेहे कुमारे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि समणाणं निग्गंथाणं अहाराइणियाए सेज्जा संथारएसु विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स दारमूले सेज्जा-संथारए जाए यावि होत्था ।।

तए णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए--जाव--धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्टेंति--जाव--अप्पेगइया ओलंडेंति अप्पेगइया पोलंडेंति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुंडियं करेंति । एमहालियं च रयणिं मेहे कुमारे नो संचाएइ खणमवि अच्छि निमीलित्तए ।।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए--जाव--संकप्पे समुप्पज्जित्था--एवं खलु अहं सेणियस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे इट्ठे कंते--जाव--उंबर-पुप्फं व दुल्लहे सवणयाए । तं जया णं अहं अगारमज्झे आवसामि तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति परियाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति, अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं--जाव--वग्गूहिं आल-वेंति संलवेंति । जप्पभिइं च णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभिइं च णं ममं समणा निग्गंथा नो आढायंति--जाव--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति संलवेंति । अदुत्तरं च णं ममं समणा निग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए–जाव–एमहालियं च णं रत्तिं अहं नो संचाएमि अच्छिं निमीलावेत्तए, तं सेयं खलु मज्झ कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झे आवसित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए निरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेइ, खवेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ ।।

मेहस्स संबोधो

३५२ तए णं मेहा ! इ समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं एवं वयासी––

"से नूणं तुमं मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए–जाव–एमहालियं च णं राइं तुमं नो संचाएसि मुहुत्तमवि अच्छिं निमीलावेत्तए ।

"तए णं तुज्झ मेहा ! इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––जया णं अहं अगारमज्झे आवसामि तया णं ममं समणा निग्गंथा आढायंति इट्ठाहिं. . . वग्गूहिं आलवेंति संलवेंति । जप्पभिइं च णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि तप्पभिइं च णं ममं समणा निग्गंथा नो आढायंति जाव नो इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति संलवेंति । अदुत्तरं च णं ममं समणा निग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अप्पेगइया जाव पाय-रय-रेणु-गुंडियं करेंति । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए–जाव–उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झे आवसित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए निरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेसि, खवेत्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए । से नूणं मेहा ! एस अत्थे समत्थे ।"

"हंता, अत्थे समत्थे ।।"

भगवया पुव्वभवसुमेरुप्पभ-भवनिरूवणं

३५३ "एवं खलु मेहा ! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे सेए संख-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीर-फेण-रयणियरप्पयासे सत्तुस्सेहे नवायए दसपरिणाहे सत्तंगपइट्ठिए सोमे सम्मिए सुरूवे पुरओ उदग्गे सुसंठियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अइयाकुच्छी अच्छिद्दकुच्छी अलंबकुच्छी पलंबलंबोदराहरकरे धणुपट्ठागिति-विसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर-सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विंसतिनहे छद्दंते सुमेरुप्पभे नाम हत्थिराया होत्था ।।

"तत्थ णं तुमं मेहा ! बहूहिं हत्थीहि य हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभएहि य कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे हत्थिसहस्सनायए देसए पागट्ठी पट्ठवए जूहवई वंदपरिवड्ढए, अण्णेसिं च बहूणं एकल्लाणं हत्थिकलभाणं आहेवच्चं–जाव–विहरसि ।।

३५४ "तए णं तुमं मेहा ! निच्चप्पमत्ते सइं पललिए कंदप्परई मोहणसीले अवितण्हे कामभोगतिसिए बहूहि हत्थीहि य–जाव–संपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य दरीसु य कुहरेसु य कंदरासु य उज्झरेसु य निज्झरेसु य वियरएसु य गड्डासु य पल्ललेसु य चिल्ललेसु य कडगेसु य कडयपल्ललेसु य तडीसु य वियडीसु य टंकेसु य कूडेसु य सिहरेसु य पब्भारेसु य मंचेसु य मालेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य वणराईसु य नदीसु य नदीकच्छेसु य जूहेसु य संगमेसु य वावीसु य पोक्खरणीसु य दीहियासु य गुंजालियासु य सरेसु य सरपंतियासु य सरसरपंतियासु य वणयरेहिं दिन्नवियारे बहूहिं हत्थीहि य जाव कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे बहुविहतरुपल्लव-पउरपाणियतणे निब्भए निरुव्विग्गे सुहंसुहेणं विहरसि ।।

३५५ "तए णं तुमं मेहा–अण्णया कयाइ पाउस-वरिसारत्त-सरद-हेमंत-वसंतेसु कमेण पंचसु उऊसु समइक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायवघंससमुट्ठिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-संजोगदीविएणं महाभयंकरेणं हुयवहेणं वणदव-जाल-संपलितेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु महावाय-वेगेणं संघट्टिएसु छिण्णजालेसु आवयमाणेसु पोल्लरुक्खेसु अंतो-अंतो झियायमाणेसु मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिय-कद्दम-नईवियरगज्झीणपाणीयंतेसु वणंतेसु भिंगारकदीणकंदिय-रवेसु खरफरुस-अणिट्ठ-रिट्ठ-वाहित्त-विद्दुमग्गेसु दुमेसु तण्हावस-मुक्कपक्ख-पायडियजिब्भतालुय-असंपुडियतुंड-पक्खिसंघेसु ससंतेसु गिम्हुम्हउण्हवाय-खरफरुसचंडमारुय-सुक्कतणपत्तकयवरवाउलि-भमंतदित्तसंभंत-सावयाउल-मिगतण्हाबद्धचिंधपट्टेसु गिरिवरेसु संवट्टिइएसु तत्थ-मिय-पसव-सरीसिवेसु अवदालियवयणविवर-निल्लालियग्गजीहे मंततुंबइय-पुण्णकण्णे संकुचिय-थोर-पीवर-करे ऊसिय-नंगूले पीणाइय-विरसरडिय-सद्देणं फोडयंतेव अंबरतलं, पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं, विणिम्मुयमाणे य सीयारं, सव्वओ समंता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे, रुक्खसहस्साइं तत्थ सुबहूणि नोल्लयंते, विणट्ठरट्ठे व्व नरवरिंदे,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायाइद्धेव्व पोए, मंडलवाएव्व परिब्भमंते, अभिक्खणं-अभिक्खणं लिंडनियरं पमुंचमाणे-पमुंचमाणे बहूहिं हत्थीहि य जाव कलभियाहि य सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ।।

"तत्थ णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे आउरे झंझिए पिवासिए दुब्बले किलंते नट्ठसुइए मूढदिसाए सयाओ जूहाओ विप्पहूणे वणदवजालापरद्धे उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परब्भाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सव्वओ समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं अप्पोदगं पंकबहुलं अतित्थेणं पाणियपाए ओइण्णे ।

"तत्थ णं तुमं मेहा ! तीरमइगए पाणियं असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसण्णे ।

"तत्थं णं तुमं मेहा ! पाणियं पाइस्सामि त्ति कट्टु हत्थं पसारेसि । से वि य ते हत्थे उदगं न पावइ । तए णं तुमं मेहा ! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामि त्ति कट्टु बलियतरायं पंकंसि खुत्ते ।।

"तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ एगे चिरनिज्जूढए गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ कर-चरण-दंत-मुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयपाए समोयरइ । तए णं से कलभए तुमं पासइ, पासित्ता तं पुव्ववेरं सुमरइ, सुमरित्ता आसुरत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठओ उट्ठुभइ, उट्ठुभित्ता पुव्वं वेरं निज्जाएइ, निज्जाएत्ता हट्ठतुट्ठे पाणीयं पिबइ, पिबित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

"तए णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था—उज्जला-जाव-दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरित्था ।

भगवया मेरुप्पभ-भवनिरूवणं

३५६ "तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं-जाव-दुरहियासं सत्तराइंदियं वेयणं वेदेसि, सवीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गंगाए महानईए दाहिणे कूले विंझगिरिपायमूले एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवर-करेणुए कुच्छिंसि गयकलभए जणिए ।।

"तए णं सा गयकलभिया नवण्हं मासाणं वसंतमासंसि तुमं पयाया ।।

"तए णं तुमं मेहा ! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था—रत्तुप्पल-रत्तसुमालए जासुमणाऽऽरत्तपालियत्तय-लक्खारस-सरसकुंकुमसंझब्भरागवण्णे, इट्ठे नियगस्स जूहवइणो, गणियायार-करेणु-कोत्थ-हत्थी अणेगहत्थिसयसंपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेणं विहरसि ।।

"तए णं तुमं मेहा ! उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते जूहवइणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि ।।
"तए णं तुमं मेहा ! वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे सत्तुस्सेहे-जाव-पंडुर-सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसतिनहे चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था । तत्थ णं तुमं मेहा ! सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं-जाव-कारेमाणे पालेमाणे अभिरमेत्था ।।

३५७ "तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायवघंससमुट्ठिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-संजोगदीविएणं महाभयंकरेणं हुयवहेणं वणदव-जाला-पलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु-जाव-मंडलवाएव्व परिब्भमंते भीए-जाव-संजायभए बहूहिं हत्थीहि य-जाव-संपरिवुडे सव्वओ समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ।।

"तए णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—'कहि णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गि-संभमे अणुभूयपुव्वे ?'

"तए णं तव मेहा ! लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं अज्झवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-पूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाईसरणे समुप्पज्जित्था ।।

"तए णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं अभिसमेसि—एवं खलु मया अईए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढ-गिरिपायमूले जाव सुमेरुप्पभे नाम हत्थिराया होत्था । तत्थ णं मया अयमेयारूवे अग्गिसंभमे समणुभूए ।।

"तए णं तुमं मेहा ! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं सद्धिं समण्णागए यावि होत्था ।।
तए णं तुमं मेहा ! सत्तुस्सेहे-जाव-सन्निजाईसरणे चउदंते मेरुप्पभे नामं हत्थी होत्था ।।

मेरुप्पभेण मंडलनिम्माणं

३५८ "तए णं तुज्झं मेहा ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम इयाणिं गंगाए महानईए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विंझगिरिपायमूले दवग्गिसंताणकारणट्ठा सएणं जूहेणं महइमहालयं मंडलं घाइत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता सुहं-सुहेणं विहरसि ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवयंसि गंगाए महानईए अदूरसामंते बहूहिं हत्थीहि य–जाव–कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहिं संपरिवुडे एगं महं जोयणपरिमंडलं महइमहालयं मंडलं घाएसि––जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कंटए वा लया वा वल्ली वा खाणुं वा रुक्खे वा खुवे वा, तं सव्वं तिक्खुत्तो आहुणिय-आहुणिय पाएणं उट्ठवेसि, हत्थेणं गिण्हसि, एगंते एडेसि ।।

"तए णं तुमं मेहा ! तस्सेव मंडलस्स अदूरसामंते गंगाए महानईए दाहिणिल्ले कूले विंझगिरिपायमूले गिरीसु य–जाव–सुहंसुहेणं विहरसि ।।

"तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता दोच्चं पि मंडलघायं करेसि ।

"एवं––चरिमवरिसारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवयमाणंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तच्चं पि मंडलघायं करेसि-जाव-सुहंसुहेणं विहरसि ।।

दवग्गिभीतसावयाणं मेरुप्पभस्स य मंडलपवेसो

३५९ "अह मेहा ! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमाणो कमेणं नलिणिवणविवहणगरे हेमंते कुंदलोद्धउद्धततुसारपउरम्मि अतिक्कंते अहिणवे गिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणेसु वणेसु वणकरेणुविविहदिण्णकयपंसुघाओ तुमं उउयकुसुमकयचामरकन्नपूरपरिमंडियाभिरामो मयवसविगसंतकडतडकिलिन्नगंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरिवारिओ उउसमत्तजणियसोभो काले दिणयरकरपयंडे परिसोसियतरुवरसिहरभीमतरदंसणिज्जे भिंगाररवंतभेरवरवे णाणाविहपत्तकट्ठतणकयवरुद्ध तपइमारुयाइद्धनहयलदुमगणे वाउलियादारुणतरे तण्हावसदोसदूसियभमंतविविहसावयसमाउले भीमदरिसणिज्जे वट्टंते दारुणम्मि गिम्हे मारुतवसपसरपसरियवियंभिएणं अब्भहियभीमभेरवरवप्पगारेणं महुधारापडियसित्तउद्धायमाणधगधगधगंतसद्दुद्धएणं दित्ततरसफुलिंगेणं धूममालाउलेणं सावयसयंतकरणेणं अब्भहियवणदवेणं जालालोवियनिरुद्धधूमंधकारभीयो आयावालोयमहंततुंबइयपुन्नकन्नो आकुंचियथोरपीवरकरो भयवसभयंतदित्तनयणो वेगेण महामेहो व्व पवणोल्लियमहल्लरूवो जेणेव कओ ते पुरा दवग्गिभयभीयहियएणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गिसंताणकारणट्ठाए जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए, एक्को ताव एस गमो ।

"तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ कमेण पंचसु उऊसु समइक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायव-घंससमुट्ठिएणं-जाव-संवट्टिइएसु सियपसुपंखिसरीसिवेसु दिसोदिसिं विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य-जाव-कलभियाहि य सद्धिं जेणेव से मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

"तत्थ णं अण्णे बहवे सीहा य वग्घा य विगा य दीविया य अच्छा य तरच्छा य परासरा य सियाला य विराला य सुणहा य कोला य ससा य कोकंतिया य चित्ता य चिल्ललया य पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविद्दुया एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति ।।

"तए णं तुमं मेहा ! जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तेहिं बहूहिं सीहेहि य–जाव–चिल्ललेहि य एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि ।।

मेरुप्पभस्स पादुक्खेवे

३६० "तए णं तुमे मेहा ! पाएणं गत्तं कंडूइस्सामी ति कट्टु पाए उक्खित्ते । तंसि च णं अंतरंसि अण्णेहिं बलवंतेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे-पणोलिज्जमाणे ससए अणुप्पविट्ठे ।।

"तए णं तुमे मेहा ! गायं कंडूइत्ता पुणरवि पायं पडिनिक्खेविस्सामि त्ति कट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि, पासित्ता पाणाणुकंपयाए-जाव-सत्ताणुकंपयाए से पाए अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं निक्खित्ते ।।

३६१ "तए णं तुमं मेहा ! ताए पाणाणुकंपयाए-जाव-सत्ताणुकंपयाए संसारे परित्तीकए, माणुस्साउए निबद्धे ।।

तए णं से वणदवे अड्ढाइज्जाइं राइंदियाइं तं वणं झामेइ, झामेत्ता निट्ठिए उवरए उवसंते विज्झाए यावि होत्था ।।

तए णं ते बहवे सीहा य-जाव-चिल्ललया य तं वणदवं निट्ठियं उवरयं उवसंतं विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समंता विप्पसरित्था ।

तए णं ते बहवे हत्थी य-जाव-कलभिया य तं वणदवं निट्ठियं उवरयं उवसंतं विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता दिसोदिसिं विप्पसरित्था ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"तए णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे सिढिलवलितय-पिणिद्धगत्ते दुब्बले किलंते जुंजिए पिवासिए अत्थामे अबले अपरक्कमे अचंकमणा वा ठाणुखंडे वेगेण विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहए विव रययगिरि-पब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहिं सण्णिवइए ।।

"तए णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया---उज्जला-जाव-दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरसि ।।

मेहभवो तत्थ य तितिक्खोवदेसो

३६२ "तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं-जाव-दुरहियासं तिण्णि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससयं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणियस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए ।।
तए णं तुमं मेहा ! आणुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खंते समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

"तं जइ ताव तुमे मेहा ! तिरिक्खजोणियभावमुवगएणं अपडिलद्ध-सम्मत्तरयणलंभेणं से पाए पाणाणुकंपयाए-जाव-सत्ताणुकंपयाए अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं निक्खित्ते । किमंग पुण तुमं मेहा ! इयाणिं विपुलकुलसमुब्भवे णं निरुवहयसरीर-दंतलद्ध-पंचिंदिए णं एवं उट्ठाण-बल-वीरिय-पुरिसगार-परक्कमसंजुत्ते णं मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे समणाणं निग्गंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए-जाव-धम्माणुओगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छ-माणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य-जाव-रय-रेणु-गुंडणाणि य नो सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि ?"

मेहस्स जाईसरणं

३६३ तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेहिं परिणामेहिं-जाव-पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णिपुव्वे जाइसरणे समुप्पण्णे, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेइ ।।

मेहस्स पुणो पव्वज्जा

३६४ तए णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसंवेगे आणंदअंसुपुण्णमुहे हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयकलंबकं पिव समूससियरोमकूवे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी---

"अज्जप्पभिती णं भंते ! मम दो अच्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाणं निग्गंथाणं निसट्ठे त्ति कट्टु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी---

"इच्छामि णं भंते ! इयाणिं दोच्चं पि सयमेव पव्वाविय-जाव-सयमेव आयार-गोयरं जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं ।।"

तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ -जाव- जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ "एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं एवं भासियव्वं एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणाणं-जाव-सत्ताणं संजमेणं संज-मियव्वं ।।"

तए णं से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तह गच्छइ-जाव-संजमेणं संजमइ ।।

मेहस्स नियठचरिया

३६५ तए णं से मेहे अणगारे जाए---इरियासमिए -जाव- इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरति ।।
तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

महावीरस्स रायगिहाओ बहिया जणवयविहारो

३६६ तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेहस्स भिक्खुपडिमा

३६७ तए णं से मेहे अणगारे अण्णया कयाइ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––
"इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि।।"

तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।

मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएणं फासेइ-जाव-किट्टेइ, सम्मं काएणं फासेत्ता-जाव-किट्टेत्ता पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

"इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि।"

जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए तच्चाए चउत्थाए पंचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तराइंदियाए दोच्चसत्तराइंदियाए तच्चसत्तराइंदियाए अहोराइयाए एगराइयाए वि।।

मेहस्स गुणरयणसंवच्छरतवो

३६८ तए णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता-जाव-किट्टेत्ता पुणरवि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––"इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं[1] उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि।।"१...

तए णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएणं फासेइ-जाव-किट्टेइ अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएणं फासेत्ता-जाव- किट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

मेहस्स सरीरदसा

३६९ तए णं से मेहे अणगारे तेणं ओरालेणं विपुलेणं सस्सिरीएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारेणं उत्तमेणं महाणुभावेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था––जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ। से जहानामए इंगालसगडिया इ वा कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा तिलसगडिया इ वा एरंडसगडिया इ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं, अवचिए मंससोणिएणं, हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ।।

मेहस्स विपुलपव्वए अणसणं

३७० तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे-जाव-पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था––एवं खलु अहं इमेणं ओरालेण-जाव-तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था––जीवंजीवेणं गच्छामि-जाव-भासं भासिस्सामि त्ति गिलामि। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसकार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसकार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,–जाव–य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताव ता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णायस्स समाणस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहित्ता गोयमादीए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-

---

१. एत्थ मूलपाठगयं गुणरयणसंवच्छरतवोकम्मस्स वण्णणं चरणाणुओगस्स तवायारे दट्ठव्वं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए–एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पायाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।।

३७१ 'मेहा' इ समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वयासी––

"से नूणं तव मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था– एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं तवोकम्मेणं सुक्के-जाव-जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए ।

"से नूणं मेहा ! अट्ठे समट्ठे ?"

"हंता, अत्थि ।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।"

३७२ तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहेत्ता गोयमादीए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं कडादीहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरूहइ, दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी––

"नमोत्थु णं अरहंताणं-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मं भगवं तत्थगए इहगयं" ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

"पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए-जाव-मिच्छादंसणसल्ले-पच्चक्खाए ।

"इयाणिं पि णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि-जाव-मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि, सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।

"जं पि य इमं सरीरं इट्ठं-जाव-विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतीति कट्टु एयं पि य णं चरमेहिं ऊसास-नीसासेहिं वोसिरामि" त्ति कट्टु संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।।

तए णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडियं करेंति ।।

मेहस्स समाहिमरणं

३७३ तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवरिसाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता, आलोइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते अणुपुव्वेणं कालगए ।।

थेरेहिं मेहस्स आयारभंडसमप्पणं

३७४ तए णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं अणुपुव्वेणं कालगयं पासंति, पासित्ता परिनेव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, करेत्ता मेहस्स आयार-ग्गं भंडगं गेण्हंति, विउलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणामेव समणे भगवं महावीरे, तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए, से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरूहइ, सयमेवमेघघणसण्णिगासं पुढविसिलं पडिलेहेइ, भत्तपाण-पडियाइक्खिए अणुपुव्वेणं कालगए ।

"एस णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए ।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तरं

३७५ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे से णं भंते ! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववण्णे ?"

गोयमा ! इ समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वसासी--"एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए, से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बारस भिक्खुपडिमाओ गुणरयण-संवच्छरं तवोकम्मं काएणं फासेत्ता-जाव-किट्टेत्ता, मए अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं कडादीहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरूहित्ता, दब्भसंथारगं, संथरित्ता दब्भसंथारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारेत्ता, बारस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसय-सहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सारानय-पाणयारणच्चुए तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्ज-विमाणवाससए वीईवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

"तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं मेहस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई ।।"

"एस णं भंते ! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ?"

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।" --त्ति बेमि

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

३७६ महुरेहिं निउणेहिं, वयणेहिं चोयंति आयरिया । सीसे कहिंचि खलिए, जह मेहमुणि महावीरो ।।१।। णाया-अ. १

---

२२. महावीरतित्थे मकाइआई समणा

संगहणी-गाहा

३७७ १. मकाइ २. किंकमे चेव, ३. मोग्गरपाणी य ४. कासवे ।
५. खेमए ६. धिइहरे चेव, ७. केलासे ८. हरिचंदणे ।।१।।
९. वारत्त १०. सुदंसण ११. पुण्णभद्द तह १२. सुमणभद्द १३. सुपइट्ठे ।
१४. मेहे १५. अतिमुत्त १६. अलक्के, अज्झयणाणं तु सोलसयं ।।२।।

मकाई समणे किंकिमे य

३७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिह नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ।।

तत्थ णं मकाइ नामं गाहावई परिवसइ-अड्ढे-जाव-अपरिभूए ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिकरे गुणसिलए-जाव- संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा निग्गया ।।

तए णं से मकाई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे जहा पण्णत्तीए गंगदत्ते तहेव इमो वि जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पुरिससहस्स-वाहिणीए सीयाए निक्खंते-जाव-अणगारे जाए - इरियासमिए ।।

तए णं से मकाई अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराण अंतिए समाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ । सेसं जहा खंदगस्स गुणरयणं तवोकम्मं । सोलसवासाइं परियाओ । तहेव विउले सिद्धे ।।

३७९ किंकमे वि एवं चेव-जाव-विउले सिद्धे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. महावीरतित्थे अज्जुणमालागारे

रायगिहे मोग्गरपाणिजक्खाययणे

३८० तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । चेल्लणा देवी ।।

तत्थ णं रायगिहे नयरे अज्जुणए नामं मालागारे परिवसइ––अड्ढे-जाव-अपरिभूए ।।

तस्स णं अज्जुणयस्स मालायारस्स बंधुमई नामं भारिया होत्था––सूमाल-पाणिपाया० ।।

तस्स णं अज्जुणयस्स मालायारस्स रायगिहस्स नयरस्स बहिया, एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था––किण्हे-जाव-महामेहनिउरुंबभूए दसद्धवण्ण-कुसुमकुसुमिए पासाईए-जाव-पडिरूवे ।।

तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते, एत्थ णं अज्जुणयस्स मालायारस्स अज्जयपज्जय-पिइपज्जयागए अणेगकुलपुरिस-परंपरागए मोग्गर-पाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था––पोराणे दिव्वे सच्चे जहा पुण्णभद्दे ।।

तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं गहाय चिट्ठइ ।।

अज्जुणस्स जक्खपज्जुवासणा

३८१ तए णं से अज्जुणए मालागारे बालप्पभिइं चेव मोग्गरपाणि-जक्खभत्ते यावि होत्था । कल्लाकल्लिं पच्छियपिडगाइं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ, करेत्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय, जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणं करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिए पणामं करेइ, तओ पच्छा रायमग्गंसि विंत्ति कप्पेमाणे विहरइ ।।

गोट्ठिल्लेहिं अज्जुणमालायारबंधणं बन्धुमईए सद्धिं अणायारो य

३८२ तत्थ णं रायगिहे नयरे ललिया नामं गोट्ठी परिवसइ––अड्ढा-जाव-अपरिभूता जं कयसुकया यावि होत्था ।।
तए णं रायगिहे नगरे अण्णया कयाइ पमोदे घुट्ठे यावि होत्था ।।

तए णं से अज्जुणए मालागारे कल्लं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जं इति कट्टु पच्चूसकालसमयंसि बंधुमईए भारियाए सद्धिं पच्छियपिडयाइं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ ।।

तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए छ गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अभिरममाणा चिट्ठंति ।।

तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ, पत्थियं भरेइ, भरेत्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय जेणेव मोग्गर-पाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ ।।

तए णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं बंधुमईए भारियाए सद्धिं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता अण्णमण्णं एवं वयासी––

"एस णं देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं इहं हव्वमागच्छइ । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अज्जुणयं मालागारं अवओडय-बंधणयं करेत्ता बंधुमईए भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाणं विहरित्तए" त्ति कट्टु एयमट्ठं अण्ण-मण्णस्स पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता कवाडंतरेसु निलुक्कंति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठंति ।।

तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, आलोए पणामं करेइ, महरिहं पुप्फच्चणं करेइ, जण्णुपायपडिए पणामं करेइ ।।

तए णं छ गोट्ठिल्ला पुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहिंतो निग्गच्छंति निग्गच्छित्ता अज्जुणयं मालागारं गेण्हंति, गेण्हित्ता अवओडय-बंधणं करेंति । बंधुमईए मालागारीए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जुणस्स चिंता तस्स सरीरे मोग्गरपाणिपवेसो य

३८३ तए णं तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--"एवं खलु अहं बालप्पभिइं चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लि-जाव-पुप्फच्चणं करेमि, जण्णुपायपडिए पणामं करेमि, तओ पच्छा रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणे विहरामि। तं जइ णं मोग्गरपाणी जक्खे इह सण्णिहिए होंते, से णं किं मम एयारूवं आवइं पावेज्जमाणं पासंते ? तं नत्थि णं मोग्गरपाणी जक्खे इह सण्णिहिए। सुव्वत्तं णं एस कट्ठे ।।"

तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमेयारूवं अज्झत्थियं-जाव-वियाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरयं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तडतडस्स बंधाइं छिंदइ, छिंदित्ता तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं गेण्हइ, गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ ।।

तए णं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नगरस्स परिपेरंतेणं कल्लाकल्लिं इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे घाएमाणे विहरइ ।।

रायगिहे आतंकं

३८४ तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ--"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहे नयरे बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ ।।"

तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे-जाव-घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ। तं मा णं तुब्भे केइ कट्ठस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सइरं निग्गच्छइ। मा णं तस्स सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोसेह, घोसेत्ता खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह ।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पच्चप्पिणंति ।।

भगवओ समोसरणं

३८५ तत्थ णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ--अड्ढे-जाव-अपरिभूए ।।

तए णं से सुदंसणे समणोवासए यावि होत्था--अभिगयजीवाजीवे-जाव-विहरइ ।।

तेणं कालेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-किमंग पुण विपुलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?

सुदंसणस्स वंदणट्ठं गमणं

३८६ तए णं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--एवं खलु समणे भगवं महावीरे-जाव-विहरइ। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि--एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--"एवं खलु अम्मयाओ ! समणे भगवं महावीरे-जाव-विहरइ। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि ।।"

तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो एवं वयासी--"एवं खलु पुत्ता ! अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नयरस्स परिपेरंतेणं कल्लाकल्लिं बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ। तं मा णं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं महावीरं वंदए निग्गच्छाहि, मा णं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ। तुमण्णं इह गए चेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि ।।"
तए णं से सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं वयासी--"किण्णं अहं अम्मयाओ ! समणं भगवं महावीरं इहमागयं-जाव-इह गए चेव वंदिस्सामि ? तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदए ।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहिं सण्णवणाहिं विण्णवणाहिं परूवणाहिं आघवेत्तए पण्णवेत्तए सण्णवेत्तए विण्णवेत्तए परूवेत्तए ताहे एवं वयासी--"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।"

तए णं से सुदंसणे अम्मापिईहिं अब्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पायविहारचारेणं रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

सुदंसणस्स अज्जुणकय-उवसग्गो

३८७ तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं-वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असंभंते वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"नमोत्थु णं अरहंताणं-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं ।"

"नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स ।"

"पुव्विं पि णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए मुसावाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सदारसंतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छापरिमाणे कए जावज्जीवाए । तं इदाणिं पि णं तस्सेव अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, मुसावायं अदत्तादाणं मेहुणं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं कोहं-जाव-मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जइ णं एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए । अहण्णं एत्तो उवसग्गाओ न मुच्चिस्सामि तो मे तहा पच्चक्खाए चेव" त्ति कट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जइ ।।

तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणव उवागए । नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए ।।

उवसग्गनिवारणं

३८८ तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं सव्वओ समंता परिघोलेमाणे-परिघोलेमाणे जाहे नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दिट्ठीए सुचिरं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं गहाय जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।।

तए णं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं विप्पमुक्के समाणे 'धस' त्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं निवडिए ।।
तए णं से सुदंसणे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ ।।

सुदंसणस्स अज्जुणस्स य भगवओ पज्जुवासणा

३८९ तए णं से अज्जुणए मालगारे तत्तो मुहुत्तंतरेणं आसत्थे समाणे उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी--

"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! के कहिं वा संपत्थिया ?"

तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सुदंसणे नामं समणोवासए--अभिगयजीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदए संपत्थिए ।।"
तए णं से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी--"तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अहमवि तुमए सद्धिं समणं भगवं महावीरं वंदित्तए-जाव-पज्जुवासित्तए ।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।"

तए णं सुदंसणे समणोवासए अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ-जाव-पज्जुवासइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणोवासगस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ । सुदंसणे पडिगए ।।

अज्जुणस्स पव्वज्जा

३९० तए णं से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।"

तए णं से अज्जुणए मालागारे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता-जाव-अणगारे जाए, से णं वासीचंदणकप्पे समतिणमणि-लेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धे जीविय-मरण-निरवकंखे संसारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं विहरइ ।।

अज्जुणअणगारस्स तितिक्खा

३९१ तए णं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं ओगेण्हइ---कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु अयमेयारूवं अभिग्गहं ओगेण्हइ, ओगेण्हित्ता जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए जहा गोयमसामी-जाव-रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ।।

तए ण तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणं बहवे इत्थीओ य पुरिसा य डहरा य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी---"इमेण मे पिता मारिए । इमेण मे माता मारिया । इमेण मे भाया भगिणी भज्जा पुत्ते धूया सुण्हा मारिया । इमेण मे अण्णयरे सयण-संबंधि-परियणे मारिए" त्ति कट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति, अप्पेगइआ हीलंति निंदंति खिंसंति गरिहंति तज्जंति तालेंति ।।

तए णं से अज्जुणए अणगारे तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य आओसिज्जमाणे-जाव-तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अपउस्समाणे सम्मं सहइ सम्मं खमइ सम्मं तितिक्खइ सम्मं अहियासेइ, सम्मं सहमाणे सम्मं खममाणे सम्मं तितिक्खमाणे सम्मं अहियासेमाणे रायगिहे नयरे उच्च-णीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं न लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं न लभइ ।।

तए णं से अज्जुणए अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसादी अपरितंतजोगी अडइ, अडित्ता रायगिहाओ नगराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमेइ, पडिक्कमेत्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अगज्झोववण्णे बिलमिव पण्णग-भूएणं अप्पाणेणं तमाहारं आहारेइ ।

३९२ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

अज्जुणअणगारस्स सिद्धी

३९३ तए णं से अज्जुणए अणगारे तेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेइ, झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे-जाव-सिद्धे ।।

अंतगड व. ६-अ. ३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. महावीरतित्थे कासवाई समणा

३९४ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। कासवे नामं गाहावई परिवसइ। जहा मकाई। सोलस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--खेमए वि गाहावई, नवरं--कायंदी नयरी। सोलस वासा परियाओ। विपुले पव्वए सिद्धे ॥

एवं--धिइहरे वि गाहावई कायंदीए नयरीए। सोलस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--केलासे वि गाहावई, नवरं--साएए नयरे। बारस वासाइं परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--हरिचंदणे वि गाहावई साएए नयरे। बारस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--वारत्तए वि गाहावई, नवरं--रायगिहे नगरे। बारस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--सुदंसणे वि गाहावई, नवरं--वाणियगामे नयरे। दूइपलासए चेइए। पंच वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--पुण्णभद्दे वि गाहावई वाणियगामे नयरे। पंचवासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--सुमणभद्दे वि गाहावई सावत्थीए नयरीए। बहुवासाइं परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--सुपइट्ठे वि गाहावई सावत्थीए नयरीए। सत्तावीसं वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

एवं--मेहे वि गाहावई रायगिहे नयरे। बहूइं वासाइ परियाओ। विपुले सिद्धे ॥[1]

अंतगड व० ६ अ० ४-१४।

---

२५. महावीरतित्थे सेणियपुत्ता जालीआइ-समणा

संगहणी-गाहा

३९५ १. जालि २. मयालि ३. उवयाली, ४. पुरिससेणे य ५. वारिसेणे य।
६. दीहदंते य ७. लट्ठदंते य, ८. वेहल्ले ९. वेहायसे १०. अभए इ य कुमारे ॥१॥

जालि-अणगारे

३९६ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे--रिद्धत्थिमियसमिद्धे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। धारिणी देवी। सीहो सुमिणे। जाली कुमारो। जहा मेहो। अट्ठट्ठओ दाओ ॥

तए णं से जालीकुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं-जाव-माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

सामी समोसढे। सेणिओ निग्गओ। जहा मेहो तहा जाली वि निग्गओ। तहेव निक्खंतो जहा मेहो। एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ। गुणरयणं तवोकम्मं जहा खंदयस्स। एवं जा चेव खंदगस्स वत्तव्वया, सा चेव चिंतणा, आपुच्छणा। थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं तहेव दुरूहइ, नवरं--सोलस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता, कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारा-रूवाण सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सारायय-पाणय-आरणच्चुए कप्पे नव य गेवेज्जविमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीईवइत्ता विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे।

तए णं ते थेरा भगवंतो जालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिणिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, करेत्ता पत्त-चीवराइं गेण्हंति। तहेव उत्तरंति-जाव-इमे से आयारभंडए ॥

---

१. अइमुत्तअकहाणयं ६६ पुट्ठे दट्ठव्वं। अलक्ककहाणयं य ६९ पुट्ठे दट्ठव्वं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९७ भंते ! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जाली नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए। से णं जाली अणगारे कालगए कहिं गए? कहिं उववण्णे?"

"एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी तहेव जहा खंदयस्स-जाव-कालगए उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं-जाव-विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे।।"

"जालिस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?"

"गोयमा! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।।"

"से णं भंते! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?"

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।।

मयालिपभिइसमणा

३९८ एवं सेसाण वि नवण्हं भाणियव्वं, नवरं–सत्त धारिणिसुआ, वेहल्ल वेहायसा चेल्लणाए, अभए नंदाए। सव्वेसिं सेणिओ पिया। आइल्लाणं पंचण्हं सोलस वासाइं सामण्णपरियाओ। तिण्हं बारस वासाइं। दोण्हं पंच वासाइं। आइल्लाणं पंचण्हं आणुपुव्वीए उववाओ विजए वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे। दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे उक्कमेणं सेसा। अभओ विजए। सेसं जहा पढमे।।

अणुत्त० व० १, अ० १-१०।

दीहसेणाइ समणा

संगहणी-गाहा–

३९९ १. दीहसेणे २. महासेणे, ३. लट्ठदंते य ४. गूढदंते य ५. सुद्धदंते य।
६. हल्ले ७. दुमे ८. दुमसेणे, ९. महादुमसेणे य आहिए।।१।।
१०. सीहे य ११. सीहसेणे य, १२. महासीहसेणे य आहिए।
१३. पुण्णसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होइ अज्झयणे।।२।।

४०० तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। धारिणी देवी। सीहो सुमिणे। जहा जाली तहा जम्मं बालत्तणं कलाओ, नवरं–दीहसेणो कुमारो सच्चेव वत्तव्वया जहा जालिस्स-जाव-अंतं काहिइ।।

एवं तेरस वि रायगिहे नयरे। सेणिओ पिया। धारिणी माया। तेरसण्ह वि सोलस वासा परियाओ। आणुपुव्वीए विजए दोण्णि, वेजयंते दोण्णि, जयंते दोण्णि, अपराजिए दोण्णि, सेसा महादुमसेणमादी पंच सव्वट्ठसिद्धे।। अणुत्त० व, २, अ. १-१३।

---

२६. महावीरतित्थे सत्थवाहपुत्ते धण्णे अणगारे

संगहणी-गाहाओ

४०१ १. धण्णे य २. सुणक्खत्ते य, ३. इसिदासे य आहिए।
४. पेल्लए ५. रामपुत्ते य, ६. चंदिमा ७. पिट्ठिमा इ य।।१।।
८. पेढालपुत्ते अणगारे, नवमे पोट्टिले वि य।
१०. वेहल्ले दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया।।२।।

धण्णस्स गिहवासे

४०२ तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नामं नयरी होत्था––रिद्धत्थिमियसमिद्धा। सहसंबवणे उज्जाणे–सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे। जियसत्तू राया।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं काकंदीए नयरीए भद्दा नामं सत्थवाही परिवसइ–अड्ढा-जाव-अपरिभूया ।।

तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धण्णे नामं दारए होत्था–अहीणपडिपुण्ण-पंचेंदियसरीरे-जाव-सुरूवे। पंचधाईपरिग्गहिए जहा महब्बलो-जाव-बावत्तरिं कलाओ अहीए-जाव-अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्मुक्कबालभावं-जाव-अलंभोगसमत्थं वा वि जाणित्ता बत्तीसं पासायवडेंसए कारेइ–अब्भुग्गयमूसिए-जाव-पडिरूवे। तेसिं मज्झे एगं च णं महं भवणं कारेइ–अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं-जाव-पडिरूवं ।।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं धण्णं दारयं बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेइ। बत्तीसओ दाओ ।।

तए णं से धण्णे दारए उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं-जाव-विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ।।

धण्णस्स पव्वज्जा

४०३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। राया जहा कोणिओ तहा निग्गओ ।।

तए णं तस्स धण्णस्स दारगस्स तं महया जणसद्दं वा-जाव-जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––किण्णं अज्ज काकंदीए नयरीए इंदमहे इ वा-जाव-थूभमहे इ वा जण्णं एते बहवे उग्गा भोगा-जाव-निग्गच्छंति–एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कंचुइपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज काकंदीए नयरीए इंदमहे इ वा-जाव-निग्गच्छति ?"

तए णं से कंचुइपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए धण्णं दारयं एवं वयासी––

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगवं महावीरे काकंदीए नयरीए बहिया सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं एते बहवे उग्गा भोगा-जाव-निग्गच्छंति ।।"

तए णं से धण्णे दारए कंचुइपुरिसस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे-जाव-पायचारेणं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।।

तए णं समणे भगवं महावीरे धण्णस्स दारयस्स तीसे य महइमहालियाए इसिपरिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।।

४०४ तए णं से धण्णे दारए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं-जाव-अब्भयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ।।" जहा जमाली तहा आपुच्छइ ।।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं असुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म धस त्ति सव्वंगेहिं संनिवडिया। वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले ।।

तए णं तं धण्णं दारयं भद्दा सत्थवाही जाहे नो संचाएइ-जाव-जियसत्तुं आपुच्छइ–"इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! धण्णस्स दारयस्स निक्खममाणस्स छत्तमउड-चामराओ य विदिन्नाओ ।।"

तए णं जियसत्तू राया भद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी–

"अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुत-वीसत्था, अहण्णं सयमेव धण्णस्स दारयस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि।"

सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेइ, जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो ।।

तए णं से धण्णे दारए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ-जाव-पव्वइए ।।

तए णं से धण्णे दारए अणगारे जाए–इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी ।।

धण्णस्स तवचरिया

४०५ तए णं से धण्णे अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि कप्पइ मे आयंबिलं पडिगाहेत्तए, नो चेव णं अणायंबिलं। तं पि य संसट्ठं, नो चेव णं असंसट्ठं। तं पि य णं उज्झियधम्मियं, नो चेव णं अणुज्झिय-धम्मियं। तं पि य जं अण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा नावकंखंति।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि।।"

तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

४०६ तए णं से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठखमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ,-जाव-जेणेव काकंदी नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकंदीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे आयंबिलं पडिगाहेति, नो चेव णं अणायंबिलं। तं पि य संसट्ठं, नो चेव णं असंसट्ठं। तं पि य उज्झियधम्मियं, नो चेव णं अणुज्झिय-धम्मियं तं पि य जं अण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा नावकंखंति।

तए णं से धण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जयाए पयत्ताए पग्गहियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं न लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं न लभइ।।

तए णं से धण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरितंत-जोगी जयण-घडण-जोगचरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता काकंदीओ नयरीओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जहा गोयमे-जाव-पडिदंसेइ।।

तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ, आहारेत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

४०७ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ कायंदीओ नयरीओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।।

४०८ तए णं से धण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

तए णं से धण्णे अणगारे तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था। जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता वि गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामीति गिलाइ।

से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा पत्त-तिल-भंडग-सगडिया इ वा एरंडकट्ठसगडिया इ वा, इंगालसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव धण्णे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं, अवचिए मंस-सोणिएणं, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेणं, तेएणं, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ।।

धण्णस्स तवजणिय-सरीरलावण्णं

४०९ धण्णस्स णं अणगारस्स पायाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था–

से जहानामए सुक्कछल्ली इ वा कट्ठपाउया इ वा जरग्गओवाहणा इ वा,

एवामेव धणस्स अणगारस्स पाया सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए।।

धण्णस्स णं अणगारस्स पायंगुलियाणं अयमेयारूवे-तवरूव-लावण्णे होत्था–

से जहानामए कलसंगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससंगलिया इ वा तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी-मिलायमाणी चिट्ठति,।

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पायंगुलियाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्मछिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धण्णस्स णं अणगारस्स जंघाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था--

से जहानामए काकजंघा इ वा कंकजंघा इ वा ढेणियालियाजंघा इ वा,-

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स जंघाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

धण्णस्स णं अणगारस्स जाणूणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था--

से जहानामए कालिपोरे इ वा मऊरपोरे इ वा, ढेणियालियापोरे इ वा,

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स जाणू सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

धण्णस्स णं अणगारस्स ऊरूणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था--

से जहानामए सामकरिल्ले इ वा बोरीकरिल्ले इ वा सल्लइकरिल्ले इ वा सामलिकरिल्ले इ वा तरुणए छिण्णे उण्हे दिण्णे सुक्के समाणे मिलायमाणे मिलायमाणे चिट्ठइ,

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स ऊरू सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

धण्णस्स णं अणगारस्स कडिपत्तस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था-

से जहानामए उट्टपादे इ वा जरग्गपाए इ वा महिसपाए इ वा, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स कडिपत्ते सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

४१० धण्णस्स णं अणगारस्स उदर-भायणस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था--

से जहानामए सुक्क-दिए इ वा भज्जणय-कभल्ले इ वा कट्ठ-कोलंबए इ वा,

एवामेव धणस्स अणगारस्स उदरं सुक्कं लुक्खं निम्मंसं चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

धण्णस्स णं अणगारस्स पासुलिय-कडयाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था--

से जहानामए थासयावली इ वा पाणावली इ वा मुंडावली इ वा,

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पासुलिय-कडया सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।

धण्णस्स णं अणगारस्स पिट्ठि-करंडयाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था--

से जहानामए कण्णावली इ वा गोलावली इ वा वट्टयावली इ वा,

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पिट्ठि-करंडया सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

धण्णस्स णं अणगारस्स उर-कडयस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था--

से जहानामए चित्तकट्ठरे इ वा वीयणपत्ते इ वा तालियंटपत्ते इ वा,

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स उर-कडए सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

धण्णस्स णं अणगारस्स बाहाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था-

से जहानामए समिसंगलिया इ वा वाहायासंगलिया इ वा अगत्थियसंगलिया इ वा,

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स बाहाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

धण्णस्स णं अणगारस्स हत्थाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था-

से जहानामए सुक्कछगणिया इ वा वडपत्ते इ वा पलासपत्ते इ वा,

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स हत्था सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

धण्णस्स णं अणगारस्स हत्थंगुलियाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था-

से जहानामए कलसंगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससंगलिया इ वा तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी मिलायमाणी चिट्ठति,

एवामेव धण्णस्स अणगारस्स हत्थंगुलियाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

४११ धण्णस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से जहानामए करगगीवा इ वा कुंडियागीवा इ वा उच्चत्थवणए इ वा,
एवामेव धण्णस्स अणगारस्स गीवा सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।
धण्णस्स णं अणगारस्स हणुयाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था–
से जहानामए लाउफले इ वा हकुवफले इ वा अंबगट्ठिया इ वा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी मिलायमाणी चिट्ठइ,
एवामेव धण्णस्स अणगारस्स हणुया सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।
धण्णस्स णं अणगारस्स उट्ठाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था–
से जहानामए सुक्कजलोया इ वा सिलेस-गुलिया इ वा अलत्त-गुलिया इ वा,
एवामेव धण्णस्स अणगारस्स उट्ठा सुक्का लुक्खा निम्मंसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।
धण्णस्स णं अणगारस्स जिब्भाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था–
से जहानामए वडपत्ते इ वा पलासपत्ते इ वा सागपत्ते इ वा,
एवामेव धण्णस्स अणगारस्स जिब्भा सुक्का लुक्खा निम्मंसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।
धण्णस्स णं अणगारस्स नासाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था–
से जहानामए अंबगपेसिया इ वा अंबाडगपेसिया इ वा माउलुंगपेसिया इ वा तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी-मिलायमाणी चिट्ठइ,
एवामेव धण्णस्स अणगारस्स नासा सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।
धण्णस्स णं अणगारस्स अच्छीणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था–
से जहानामए वीणाछिद्दे इ वा वद्धीसगछिद्दे इ वा पाभाइयतारिगा इ वा,
एवामेव धण्णस्स अणगारस्स अच्छीओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।
धण्णस्स णं अणगारस्स कण्णाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था–
से जहानामए मूलाछल्लिया इ वा वालुंकछल्लिया इ वा कारेल्लयछल्लिया इ वा,
एवामेव धण्णस अणगारस्स कण्णा सुक्का लुक्खा निम्मंसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।
धण्णस्स णं अणगारस्स सीसस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था–
से जहानामए तरुणगलाउए इ वा तरुणगएलालुए इ वा सिण्हालए इ वा तरुणए छिण्णे आयवे दिण्णे सुक्के समाणे मिलायमाणे-मिलायमाणे चिट्ठइ,
एवामेव धण्णस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं लुक्खं निम्मंसं अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायइ, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ।।

४१२ धण्णे णं अणगारे सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा, विगय-तडि-करालेणं कडिकडाहेणं, पिट्ठिमवस्सिएणं उदरभायणेणं, जोइज्जमाणेहिं, पासुलि-कडएहिं, अक्खसुत्तमाला ति व गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरंडगसंधीहिं, गंगातरंगभूएणं उरकडगदेसभाएणं, सुक्कसप्पसमाणाहिं बाहाहिं, सिढिलकडाली विवलंबतेहि य अग्गहत्थेहिं, कंपणवाइओ विव वेवमाणीए सीसघडीए पव्वायवयणकमले उब्भडघडामुहे उब्बुणयणकोसे जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ ।

से जहानामए इंगालसगडिया इ वा कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा तिलंडासगडिया इ वा एरंडसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ,
एवामेव धण्णे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं, अवचिए मंससोणिएणं, हुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णे तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।।

सेणियेण महादुक्करकारय-पुच्छा भगवओ समाहाणं च

४१३ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए। सेणिए राया ।।
तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। सेणिए निग्गए। धम्मकहा। परिसा पडिगया।
तए णं सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"इमासि णं भंते ! इंदभूइपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं कतरे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ?"
"एवं खलु सेणिया ! इमासिं णं इंदभूइपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव।"

"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, इमासिं णं इंदभूइपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ?"

भगवओ उत्तरं

४१४ "एवं खलु सेणिया ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कायंदी नामं नयरी होत्था। धण्णे दारए उप्पिं पासायवडेंसए विहरइ।"

तए णं अहं अण्णया कयाई पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव कायंदी नयरी जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागए। अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरामि। परिसा निग्गया। तहेव-जाव-पव्वइए -जाव-बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ। धण्णस्स णं अणगारस्स सरीरवण्णओ सव्वो-जाव-तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ।

"से तेणट्ठेणं सेणिया ! एवं वुच्चइ 'इमासिं णं इंदभूइपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव।।"

सेणिएण धण्णस्स थवणा

४१५ तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव धण्णे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

"धण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुकयत्थे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयलक्खणे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले" त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए।।

धण्णस्स सव्वट्ठसिद्ध-गमणं-महाविदेहे सिद्धी य

४१६ तए णं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं तवोकम्मेणं धमणिसंतए जाए। जहा खंदओ तहेव चिंता। आपुच्छणं। थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं दुरूहइ। मासिया संलेहणा। नव मासा परियाओ-जाव-कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं-जाव-नव य गेवेज्जविमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। थेरा तहेव ओयरंति-जाव-इमे से आयारभंडए।।

भंते त्ति ! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छति, जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ-जाव-सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववण्णे।।

"धण्णस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?"

"गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।।"

"से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?"

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. महावीरतित्थे सुणक्खत्ताइसमणा

४१७ तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नयरी। जियसत्तू राया।।
तत्थ णं काकंदीए नयरीए भद्दा नामं सत्थवाही परिवसइ–अड्ढा-जाव-अपरिभूया।।

तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुणक्खत्ते नामं दारए होत्था–अहीण-पडिपुण्ण-पंचेंदियसरीरे-जाव-सुरूवे पंचधाइपरिक्खित्ते जहा धण्णो तहेव। बत्तीसओ दाओ-जाव-उप्पिं पासायवडेंसए विहरइ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे-जाव-समोसरणं। जहा धण्णे तहा सुणक्खत्ते वि निग्गए। जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्खमणं-जाव-अणगारे जाए––इरियासमिए-जाव-गुत्तबंभयारी।।

तए णं से सुणक्खत्ते जं चेव दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए तं चेव दिवसं अभिग्गहं तहेव-जाव-बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ, आहारेत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

४१८ सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ। एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

तए णं से सुणक्खत्ते अणगारे तेणं ओरालेणं तवोकम्मेणं जहा खंदओ अईव-अईव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। राया निग्गओ। धम्मकहा। राया पडिगओ। परिसा पडिगया।।

४१९ तए णं तस्स सुणक्खत्तस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स। बहू वासा परियाओ। गोयमपुच्छा। तहेव कहेइ-जाव-सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्व दुक्खाणमंतं काहिइ।। अणुत्त० व० ३ अ० २।

इसिदासादि-कहाणयनिद्देसो

४२० एवं सुणक्खत्तगमेणं सेसा वि अट्ठ अज्झयणा भाणियव्वा, नवरं–आणुपुव्वीए दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साकेते, दोण्णि वणियग्गामे, नवमो हत्थिणपुरे, दसमो रायगिहे। नवण्हं भद्दाओ जणणीओ। नवण्ह वि बत्तीसओ दाओ। नवण्हं निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं। वेहल्लस्स पिया करेइ। छम्मासा वेहल्लए। नव धण्णे। सेसाणं बहू वासा। मासं संलेहणा। सव्वट्ठसिद्धे। सव्वे महाविदेहे सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।। अणुत्त० व० ३, अ० ३-१०।

---

२८. महावीरतित्थे सुबाहुकुमारसमणे

४२१ सुबाहू भद्दनंदी य, सुजाए य सुवासवे।
तहेव जिणदासे य, धणवई य महब्बले।।
भद्दनंदी महच्चंदे, वरदत्ते तहेव य।।१।।

सुबाहुकुमार जम्म-परिणयाइं

४२२ तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था–रिद्धत्थिमियसमिद्धे। वण्णओ।।
तस्स णं हत्थिसीसस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं पुप्फकरंडए नामं उज्जाणे होत्था––सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे वण्णओ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था–दिव्वे० ।।

तत्थ णं हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था––महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे, वण्णओ ।।

तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था ।।

तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे पासइ, जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं ।। तए णं से सुबाहुकुमारे बावत्तरिकलापंडिए-जाव-अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।।

४२३ तए णं तं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो बावत्तरिकलापंडियं-जाव-अलंभोगसमत्थं वा जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडेंसगसयाइं कारेंति– अब्भुग्गयमूसियपहसियाइं। एगं च णं महं भवणं कारेंति एवं जहा महब्बलस्स रण्णो, नवरं–पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति । तहेव पंचसइओ दाओ-जाव-उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं -जाव- माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ।।

सुबाहुकुमारस्स गिहिधम्मपडिवज्जणं

४२४ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। अदीणसत्तू जहा कूणिए तहा निग्गए। सुबाहू वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए-जाव-धम्मो कहिओ। रायपरिसा गया।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ-जाव-एवं वयासी––

"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ सत्थवाहप्पभियओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति नो खलु अहं तहा संचाएमि पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं–दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जामि।" "अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।।"

तए णं से सुबाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं–दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।

सुबाहुपुव्वभवपुच्छा

४२५ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई-जाव-एवं वयासी––

"अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे।

बहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे-जाव-सुरूवे।

साहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे-जाव-सुरूवे।

सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उरालां माणुसिड्ढी किण्णा लद्धा ?-जाव-अभिसमण्णागया ?"

सुबाहुस्स सुमुहभव-कहाणयं

४२६ "गोयमा ! इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी–

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था––रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ ।।

तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ–अड्ढे-जाव-अपरिभूए ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाइसंपण्णा-जाव-पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते नामं अणगारे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरइ ।।

तए णं से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे थेरे आपुच्छइ -जाव-अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहे अणुप्पविट्ठे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायवीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए वि तुट्ठे ।।

अणगारभिक्खावेलाए पंचदिव्वपाउब्भवो

४२७ तए णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं गाहगसुद्धेणं दायगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए, मणुस्साउए निबद्धे, गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुहारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासंसि 'अहो दाणे अहो दाणे' घुट्ठे य । हत्थिणाउरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आइक्खइ एवं भासेइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई पुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे णं सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावइस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।।

तं धण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई पुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे णं सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावइस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।।

सुमुहस्स सुबाहुभवो

४२८ तए णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं पालेइ, पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ।।

तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी तहेव सीहं पासइ, सेसं तं चेव-जाव-उप्पिं पासाए विहरइ । तं एवं खलु गोयमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा उराला माणुसिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।।"

"पभू णं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?"
"हंता, पभू ।।
तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ पुप्फकरंडयउज्जाणाओ कयवणमालपियजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे-जाव-पडिलाभेमाणे विहरइ ।।

तए णं से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारं दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ।।

सुबाहुकुमारस्स पव्वज्जा

४२९ तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—धण्णा णं ते गामागर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह-सण्णिवेसा, जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ ।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति ।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जंति ।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा इह समोसरेज्जा इहेव हत्थीसीसस्स नयरस्स बहिया पुप्फकरंडयउज्जाणे कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा, तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ।।

४३० तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं-जाव-वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव पुप्फकरंडयउज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा, राया निग्गए ।।

तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दं वा-जाव-जणसण्णिवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–एवं जहा जमाली तहा निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा, राया पडिगया ।।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। निक्खमणाभिसेओ तहेव-जाव-अणगारे जाए इरियासमिए-जाव-गुत्तबंभयारी ।।

सुबाहुकुमारस्स आगामिभवा महाविदेहे सिद्धी य

४३१ तए णं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं अप्पाणं भावेत्ता, बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे ।।

से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ ।।

से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णं पाउणिहिइ। आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ।
से णं ताओ माणुस्सं, पव्वज्जा, बंभलोए। माणुस्सं, महासुक्के। माणुस्सं, आणए। माणुस्सं, आरणे। माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे।

४३२ से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जहा दढपइण्णे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।। विवागसुयं सु. २ अ. १ ।

---

२९. महावीरतित्थे भद्दनंदी-आइसमणकहाणगाणि

भद्दनंदी

४३३ तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे नयरे। थूभकरंडउज्जाणे। धण्णो जक्खो। धणावहो राया। सरस्सई देवी।
सुमिणदंसणं, कहणा, जम्मं, बालत्तणं कलाओ य। जोव्वणं, पाणिग्गहणं, दाओ, पासाया, भोगा य ।।

जहा सुबाहुस्स, नवरं––भद्दनंदी कुमारे। सिरिदेवीपामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकण्णयाणं पाणिग्गहणं। सामीसमोसरणं। सावगधम्मं। पुव्वभवपुच्छा। महाविदेहे वासे पुंडरीगिणी नयरी। विजए कुमारे। जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए। मणुस्साउए निबद्धे। इह उप्पण्णे। सेसं जहा सुबाहुस्स-जाव-महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव- सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

सुजाए

४३४ वीरपुरं नयरं। मणोरमं उज्जाणं। वीरकण्हमित्ते राया। सिरी देवी। सुजाए कुमारे। बलसिरीपामोक्खा णं पंचसयकन्ना। सामीसमोसरणं पुव्वभवपुच्छा। उसुयारे नयरे। उसभदत्ते गाहावई। पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए। मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पण्णे -जाव-महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवासवे

४३५ विजयपुरं नयरं। नंदणवणं उज्जाणं। असोगो जक्खो। वासवदत्ते राया। कण्हा देवी। सुवासवे कुमारे। भद्दापामोक्खाणं पंचसया० -जाव-पुव्वभवे। कोसंबी नयरी। धणपाले राय.। वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए। इह उप्पण्णे-जाव-महाविदेहे वासे-जाव-सिद्धे ।।

जिणदासो

४३६ सोगंधिया नयरी। नीलासोगं उज्जाणं। सुकालो जक्खो। अप्पडिहओ राया। सुकण्णा देवी। महचंदे कुमारे। तस्स अरहदत्ता भारिया। जिणदासो पुत्तो। तित्थयरागमणं। जिणदासपुव्वभवो। मज्झमिया नयरी। मेहरहे राया। सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।।

धणवई

४३७ कणगपुरं नयरं। सेयासोयं उज्जाणं। वीरभद्दो जक्खो। पियचंदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरिदेवीयामोक्खा पंचसया कन्ना पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं। धणवई जुवरायपुत्ते-जाव-पुव्वभवो। मणिवइया नयरी। मित्तो राया। संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए-जाव-सिद्धे ।।

महब्बलो

४३८ महापुरं नयरं। रत्तासोगं उज्जाणं। रत्तपाओ जक्खो। बले राया। सुभद्दा देवी। महब्बले कुमारे। रत्तवईपामोक्खाओ पंचसया कन्ना पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं-जाव-पुव्वभवो। मणिपुरं नयरं। नागदत्ते गाहावई। इंदपुत्ते अणगारे पडिलाभिए-जाव-सिद्धे ।।

भद्दनंदी

४३९ सुघोसं नयरं। देवरमणं उज्जाणं। वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। तत्तवई देवी। भद्दनंदी कुमारे। सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया -जाव-पुव्वभवे। महाघोसे नयरे। धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए-जाव-सिद्धे ।।

महचंद

४४० चंपा नयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दे जक्खे। दत्ते राया। रत्तवती देवी। महचंदे कुमारे जुवराया। सिरिकंतापामोक्खा णं पंचसया कन्ना -जाव-पुव्वभवो। तिगिच्छी नयरी। जियसत्तू राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए-जाव-सिद्धे ।।

वरदत्ते

४४१ तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं नामं नयरं होत्था। उत्तरकुरुउज्जाणे। पासमिओ जक्खो। मित्तनंदी राया। सिरिकंता देवी। वरदत्ते कुमारे। वीरसेणापामोक्खा पंच देवीसया। तित्थयरागमणं। सावगधम्मं। पुव्वभवपुच्छा। सयदुवारे नयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए। मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पण्णे। सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स। चिंता-जाव-पव्वज्जा। कप्पंतरिते-जाव-सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे-जाव-सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।

विवागसुयं सु०२, अ० २-१० ।

३०. महावीरतित्थे सेणियनत्तू पउमसमणो अण्णे य

४४२ गाहा— १ पउमे, २ महापउमे, ३ भद्दे, ४ सुभद्दे, ५ पउमभद्दे।
६ पउमसेणे, ७ पउमगुम्मे, ८ नलिणिगुम्मे, ९ आणंदे, १० नंदणे ।।

पउमजम्मणं

४४३ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी। तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था सुउमालपाणिपाया-जाव-सुरूवा। तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था सुउमाल-जाव-सुरूवे। तस्स णं कालस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाला -जाव-सुरूवा-जाव-विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा पउमावई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिन्तरओ सचित्तकम्मे-जाव-सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। एवं जम्मणं, जहा महाबलस्स,-जाव-नामधेज्जं-"जम्हा णं अम्हं इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं पउमे पउमे"। सेसं जहा महाबलस्स। अट्ठओ दाओ। -जाव-उप्पिं पासाय-वरगए विहरइ।

पउमपव्वज्जा

सामी समोसरिए। परिसा निग्गया। कूणिए निग्गए। पउमे वि जहा महाबले, निग्गए। तहेव अम्मापिइआपुच्छणा,-जाव-पव्वइए अणगारे जाए इरियासमिए-जाव-गुत्तबम्भयारी।।

तए णं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अङ्गाइं अहिज्जइ। अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम-जाव-विहरइ।।

तए णं से पउमे अणगारे तेणं ओरालेणं, जहा मेहो, तहेव धम्मजागरिया, चिन्ता। एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता विउले-जाव-पाओवगए समाणे तहारूवाणं थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अङ्गाइं, बहुपडिपुण्णाइं, पंच वासाइं सामण्ण-परियाए। मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं। आणुपुव्वीए कालगए। थेरा ओतिण्णा। भगवं गोयमे पुच्छइ, सामी कहेइ,-जाव-सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ते उड्ढं चन्दिम० सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। दो सागराइं।।

"से णं, भन्ते, पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं"। पुच्छा। "गोयमा, महाविदेहे वासे, जहा दढपइन्नो,-जाव-अन्तं काहिइ"।

कप्पव० अ० १।

महावीरतित्थे सेणियनत्तूणो महापउमाइसमणा

४४४ तेणं कालेणं तेणं समयेणं चम्पा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी। तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेणि-यस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था। तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे। तस्स णं सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था सुउमाल०।

तए णं सा महापउमा देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि, एवं तहेव, महापउमे नामं दारए-जाव-सिज्झिहिइ-जाव-सव्व-दुक्खाणमंतं काहिइ। नवरं ईसाणे कप्पे उववाओ उक्कोसट्ठिईओ।

कप्पव० अ० २।

४४५ एवं सेसा वि अट्ठ नेयव्वा। मायाओ सरिसनामाओ। कालाईणं दसण्हं पुत्ता आणुपुव्वीए—.

दोण्हं च पञ्च चत्तारि तिण्हं तिण्हं च होन्ति तिण्णेव। दोण्हं च दोन्नि वासा सेणियनत्तूण परियाओ।।१।।

उववाओ आणुपुव्वीए-पढमो, सोहम्मे, बिइओ ईसाणे, तइओ सणंकुमारे, चउत्थो माहिन्दे पञ्चमो बम्भलोए, छट्ठो लन्तए, सत्तमो महासुक्के, अट्ठमो सहस्सारे, नवमो पाणए, दसमो अच्चुए। सव्वत्थ उक्कोसट्ठिई भाणियव्वा। महाविदेहे सिद्धे।।

कप्पव० अ० ३-१०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. महावीरतित्थे हरिएसबलो

जन्नवाडे भिक्खट्ठं गमणं

४४६ सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी। हरिएसबलो नाम, आसी भिक्खू जिइंदिओ ।। १ ।।
इरि-एसण-भासाए, उच्चारसमिईसु य। जओ आयाण-निक्खेवे, संजओ सु-समाहिओ ।। २ ।।
मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ। भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि, जन्नवाडमुवट्ठिओ ।। ३ ।।
तं पासिऊणमेज्जंतं, तवेण परिसोसियं। पंतोवहि-उवगरणं, उवहसंति अणारिया ।। ४ ।।
जाईमय-पडिबद्धा, हिंसगा अजिइंदिया। अबंभचारिणो बाला, इमं वयणमब्बवी ।। ५ ।।

हरिएसं दट्ठूणं माहणरोसो

४४७ कयरे आगच्छइ दित्तरूवे? काले विकराले फोक्कनासे। ओमचेलए पंसुपिसायभूए, संकरदूसं परिहरिय कंठे ।। ६ ।।
कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे? काए व आसा इहमागओसि? ओम-चेलया पंसु-पीसायभूया, गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओ सि। ७ ।।

जक्खकया हरिएसपसंसा

४४८ जक्खे तहिं तिंदुयरुक्खवासी, अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स। पच्छायइत्ता नियगं सरीरं, इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ।। ८ ।।
समणो अहं संजओ बंभयारी, विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ। परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ।। ९ ।।
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य, अन्नं पभूयं भवयाणमेयं। जाणेह मे जायण-जीविणो त्ति, सेसावसेसं लहऊ तवस्सी ।।१० ।।

जक्खस्स माहणेहिं संवादो

माहणा—

४४९ उवक्खडं भोयण माहणाणं, अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं। नऊ वयं एरिसमन्नपाणं, दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि? ।।११।।

जक्खो—

थलेसु बीयाइ ववंति कासगा, तहेव निन्नेसु य आससाए। एयाए सद्धाए दलाह मज्झं, आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ।।१२।।

माहणा—

खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहंति पुण्णा। जे माहणा जाइ-विज्जोववेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ।।१३।।

जक्खो—

कोहो य माणो य वहो य जेसिं, मोसं अदत्तं च परिग्गहं च। ते माहणा जाइ-विज्जा-विहीणा, ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ।।१४।।
तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं, अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए। उच्चावयाइं मुणिणो चरंति, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ।।१५।।

माहणा—

अज्झावयाणं पडिकूलभासी, पभाससे किं नु सगासि अम्हं? अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं, न य णं दाहामु तुमं नियंठा! ।।१६।।

जक्खो—

समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइंदियस्स। जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ।।१७।।

माहणा—

के इत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्झावया वा सह खंडिएहिं। एयं खु दंडेण फलेण हंता, कंठंमि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ।।१८।।

कुमारेहिं हरिएसताडणं

४५० अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा। दंडेहि वित्तेहि कसेहि चेव, समागया तं इसिं तालयंति ।।१९।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भद्दाए निवारणं पसंसा य

४५१ रन्नो तंहि कोसलियस्स धूया, 'भद्द त्ति' नामेण अणिंदियंगी। तं पासिया संजय हम्ममाणं, कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥
देवाभिओगेण निओइएणं, दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया। नरिंद--देविंदभिवंदिएणं, जेणम्हि वंता इसिणा स एसो ॥२१॥
एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जिइंदिओ संजओ बंभयारी। जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं, पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥२२॥
महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य। मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं, मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥२३॥

जक्खेहिं निवारणं असुरेहिं कुमारताडणं य

४५२ एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा, पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं। इसिस्स वेयावडियट्ठयाए, जक्खा कुमारे विणिवारयंति ॥२४॥
ते घोररूवा ठिय अंतलिक्खे, असुरा तंहि तं जणं तालयंति। ते भिन्नदेहे रुहिरं वमंते, पासित्तु भद्दा, इणमाहु भुज्जो ॥२५॥

भद्दाए पुणो पसंसा

४५३ गिरिं नहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह। जायतेयं पाएहि हणह, जे भिक्खुं अवमन्नह ॥२६॥
आसीविसो उग्गतवो महेसी, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य। अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा, जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥
सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सव्वजणेण तुब्भे। जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा, लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥२८॥

माहणेण खमाजायणं

४५४ अवहेडिय–पिट्ठि–सउत्तमंगे, पसारिया बाहु अकम्मचेट्ठे। निब्भेरियच्छे रुहिरं वमंते, उड्ढंमुहे निग्गय--जीह--नेत्ते ॥२९॥
ते पासिया खंडियकट्ठभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो सो। इसिं पसाएइ सभारियाओ, हीलं च निंदं च खमाह भंते! ॥३०॥
बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं, जं हीलिया तस्स खमाह भंते! महप्पसाया इसिणो हवंति, न हू मुणी कोवपरा हवंति ॥३१॥

मुणी—

पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च, मणप्पओसो न मे अत्थि कोइ। जक्खा हु वेयावडियं करेंति, तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥

माहणा—

अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा, तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना। तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो, समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥
अच्चेमु ते महाभाग!, न ते किंचि न अच्चिमो। भुंजाहि सालिमं कूरं, नाणा-वंजण-संजुयं ॥३४॥
इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं, तं भुंजसु अम्ह अणुग्गहट्ठा। वाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं, मासस्स ऊ पारणाए महप्पा ॥३५॥
तहियं गंधोदय-पुप्फवासं, दिव्वा तंहि वसुहारा य वुट्ठा। पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं, आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥३६॥
सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो, न दीसइ जाइविसेस कोई। सोवागपुत्तं हरिएससाहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥३७॥

मुणिणा जण्णसरूवपरूवणं

मुणी—

४५५ किं माहणा! जोइसमारभंता, उदएण सोंहि बहिया विमग्गहा? जं मग्गहा बाहिरियं विसोंहिं, न तं सुदिट्ठं कुसला वयंति ॥३८॥
कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं, सायं च पायं उदगं फुसंता। पाणाइ भूयाइ विहेडयंता, भुज्जो वि मंदा! पगरेह पावं ॥३९॥

माहणा—

कहं चरे भिक्खू? वयं जयामो, पावाइ कम्माइ पणुल्लयामो। अक्खाहि णे संजय! जक्खपूइया, कहं सुजट्ठं कुसला वयंति ॥४०॥

मुणी—

छज्जीवकाए असमारभंता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा। परिग्गहं इत्थिओ माण मायं, एयं परिन्नाय चरंति दंता ॥४१॥
सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणवकंखमाणा। वोसट्ठकाया सुइचत्तदेहा, महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥४२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माहणा—
के ते जोई के व ते जोइठाणा ? का ते सुया किं च ते कारिसंगं ? एहा य ते कयरा संति भिक्खू ? कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ।।४३।।

मुणी—
तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं । कम्मं एहा संजमजोग संती, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ।।४४।।

माहणा—
के ते हरए के य ते संतितित्थे ? कहिं सि ण्हाओ व रयं जहासि ? आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया, इच्छामो नाउं भवओ सगासे ।।४५।।

मुणी—
धम्मे हरए बंभे संतितित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे । जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोसं ।।४६।।
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं । जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाण पत्ता ।।४७।।

त्ति बेमि ।।

उत्त० अ० १२ ।

---

३२. महावीरतित्थे अणाही महानियंठो

सेणिएण मुणिदंसणं

४५६ सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ । अत्थ-धम्म-गइं तच्चं अणुसिट्ठं सुणेह मे ।।१।।
पभूयरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो । विहारजत्तं निज्जाओ, मंडिकुच्छिंसि चेइए ।।२।।
नाणा--दुम-लयाइण्णं, नाणा-पक्खि-निसेवियं । नाणाकुसुम-संछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ।।३।।
तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं । निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ।।४।।
तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए । अच्चंतपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ।।५।।
अहो वण्णो अहो रूवं, अहो अज्जस्स सोमया । अहो खंती अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ।।६।।
तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं । नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छइ ।।७।।

सेणियस्स मुणिणा सह संवादो

सेणिओ—
तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया । उवट्ठिओ हि सामण्णे एयमट्ठं सुणेमि ता ।।८।।

मुणी—
अणाहो मि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्जइ । अणुकंपयं सुहिं वा वि, कंचि नाभिसमेमहं ।।९।।

सेणिओ—
तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो । एवं ते इड्ढिमं तस्स, कहं नाहो न विज्जइ ।।१०।।
होमि नाहो भयंताणं, भोगे भुंजाहि संजया ! मित्त-नाइ-परिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।।११।।

मुणी—
अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिवा ! अप्पणा अणाहो संतो, कहं नाहो भविस्ससि ! ।।१२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेणिओ—

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ । वयणं असुयपुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ ।।१३।।
अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे । भुंजामि माणुसे भोए, आणा इस्सरियं च मे ।।१४।।
एरिसे संपयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए । कहं अणाहो भवइ, मा हु भंते ! मुसं वए ।।१५।।

मुणिणा अप्पणो अणाहत्तपरूवणं

४५७ न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं व पत्थिवा ! । जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिवा ! ।।१६।।
सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा । जहा अणाहो भवई, जहा मे य पवत्तियं ।।१७।।
'कोसंबी' नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी । तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूय-धण-संचओ ।।१८।।
पढमे वए महाराय !, अउला मे अच्छिवेयणा । अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ।।१९।।
सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीर-विवरंतरे । पविसिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ।।२०।।
तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडइ । इंदासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ।।२१।।
उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जा-मंत-तिगिच्छया । अबीया सत्थकुसला, मंतमूलविसारया ।।२२।।
ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं । न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ।।२३।।
पिया मे सव्वसारं पि, दिज्जाहि मम कारणा । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।।२४।।
माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिया । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।।२५।।
भायरा मे महाराय ! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ।।२६।।
भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ।।२७।।
भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया । अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचइ ।।२८।।
अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंध-मल्लविलेवणं । मए नायमणायं वा, सा बाला नोवभुंजइ ।।२९।।
खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्टइ । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।।३०।।

अणाहयं णच्चा पव्वज्जासंकप्पो, तओ वेयणाखयो य

४५८ तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो । वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ।।३१।।
सइं च जइ मुच्चिज्जा, वेयणा विउला इओ । खंतो दंतो निरारंभो, पव्वए अणगारियं ।।३२।।
एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा ! परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ।।३३।।

पव्वज्जागहणेण सनाहत्तं

४५९ तओ कल्ले पभायंमि, आपुच्छित्ताण बंधवे । खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओ अणगारियं ।।३४।।
तो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य । सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाण थावराण य ।।३५।।
अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली । अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ।।३६।।
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य । अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ।।३७।।

कुसीलायरणनिरूवणपुव्वं संजमपालणोवएसो

४६० इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा ! तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि । नियंठधम्मं लहियाण वी जहा, सीयंति एगे बहुकायरा नरा ।।३८।।
जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया । अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ बंधणं से ।।३९।।
आउत्तया जस्स न अत्थि काई, इरियाए भासाए तहेसणाए । आयाण-निक्खेव-दुगुंछणाए, न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ।।४०।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे । चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए ।।४१।।
पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे, अंयंतिए कूड-कहावणे वा । राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु ।।४२।।
कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय विंहइत्ता । असंजए संजय लप्पमाणे, विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ।।४३।।
विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं । एसो वि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ।।४४।।
जे लक्खणं सुविणं पउंजमाणे, निमित्त-कोऊहलसंपगाढे । कुहेडविज्जासवदारजीवी, न गच्छई सरणं तम्मि काले ।।४५।।
तमं तमेणेव उ जे असीले, सया दुही विप्परियासुवेइ । संधावई नरगतिरिक्खजोणिं, मोणं विराहित्तु असाहुरूवे ।।४६।।
उद्देसियं कीयगडं नियागं, न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं । अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इतो चुए गच्छइ कट्टु पावं ।।४७।।
न तं अरी कंठछेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पा । से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दयाविहूणे ।।४८।।
निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तमट्ठे विवज्जासमेइ । इमे वि से नत्थि परे वि लोए, दुहओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ।।४९।।
एमेवऽहाछंदकुसीलरूवे, मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं । कूररी विवा भोगरसाणुगिद्धा, निरट्ठसोया परितावमेइ ।।५०।।
सोच्चाण मेहावि ! सुभासियं इमं, अणुसासणं नाणगुणोववेयं । मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महानियंठाण वए पहेणं ।।५१।।
चरित्तमायारगुणन्निए तओ, अणुत्तरं संजम पालियाणं । निरासवे संखवियाण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ।।५२।।
एवुग्गदंते वि महातवोधणे, महामुणी महापइन्ने महायसे । महानियंठिज्जमिणं महासुयं, से काहए महया वित्थरेणं ।।५३।।

सेणियस्स तुट्ठी खमाजायणं च

४६१ तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली । अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ।।५४।।
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ! । तुब्भे सणाहा य सबंधवा य, जं भे ठिया मग्गि जिणुत्तमाणं ।।५५।।
तं सि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया ! । खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउं ।।५६।।
पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घो उ जो कओ । निमंतिया य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ।।५७।।
एवं थुणित्ताण स रायसीहो, अणगारसीहं परमाइ भत्तिए । सओरोहो सपरियणो सबंधवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ।।५८।।
ऊससियरोमकूवो, काऊण य पयाहिणं । अभिवंदिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ।।५९।।
इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरओ य । विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ।।६०।।

त्ति बेमि ।।

उत्तर० अ० २० ।

---

२३. महावीरतित्थे समुद्दपालीयस्स कहाणयं

४६२ चंपाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए । महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ।।१।।
निग्गंथे पावयणे, सावए से वि कोविए । पोएण ववहरंते, पिहुंडं नगरमागए ।।२।।
पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूयरं । तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ।।३।।

समुद्दे जम्मणं परिणयणाइ य

४६३ अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवइ । अह दारए तहिं जाए, समुद्दपालि त्ति नामए ।।४।।
खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं । संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ।।५।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए । जुव्वणेण य संपन्ने, सुरूवे पियदंसणे ।।६।।
तस्स रूववइं भज्जं, पिया आणेइ रूविणिं । पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुंदुओ जहा ।।७।।

वज्झदंसणेण वेरग्गं पव्वज्जा य

४६४ अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ । वज्झमंडणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ।।८।।
तं पासिऊण संविग्गो, समुद्दपालो इणमब्बबी । अहोऽसुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ।।९।।
संबुद्धो सो तहिं भयवं, परमसंवेगमागओ । आपुच्छऽम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ।।१०।।
जहित्तु संगं च महाकिलेसं, महंतमोहं कसिणं भयावहं । परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ।।११।।
अहिंस सच्चं च अतेणगं च, तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च । पडिवज्जिया पंचमहव्वयाणि, चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ।।१२।।
सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी, खंतिक्खमे संजयबंभयारी । सावज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ।।१३।।
कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिय अप्पणो य । सीहो व सद्देण न संतसेज्जा, वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ।।१४।।

परीसहसहणं सिद्धी य

४६५ उवेहमाणो उ परिव्वइज्जा, पियमप्पियं सव्व तितिक्खइज्जा । न सव्व सव्वत्थऽभिरोयइज्जा, न यावि पूयं गरहं च संजए ।।१५।।
अणेगछंदा इह माणवेहिं, जे भावओ से पगरेइ भिक्खू । भयभेरवा तत्थ उईंति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ।।१६।।
परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयंति जत्था बहुकायरा नरा । से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया ।।१७।।
सीओसिणा दंस-मसा य फासा, आयंका विविहा फुसंति देहं । अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइं खेवेज्ज पुराकयाइं ।।१८।।
पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो । मेरु व्व वाएण अकंपमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ।।१९।।
अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूयं गरहं च संजए । से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए, निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ।।२०।।
अरइ-रइसहे पहीणसंथवे, विरए आयहिए पहाणवं । परमट्ठपएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ।।२१।।
विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई, निरोवलेवाइं असंथडाइं । इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं, काएण फासेज्ज परीसहाइं ।।२२।।
सन्नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं । अणुत्तरे नाणधरे जसंसी, ओभासई सूरिए वंऽतलिक्खे ।।२३।।
दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं, निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के । तरित्ता समुद्दं व महाभवोहं, समुद्दपाले अपुणागमं गए ।।२४।।

त्ति बेमि ।।

उत्तर० अ० २१ ।

---

३४. महावीरतित्थे मियापुत्ते बलसिरी समणे

४६६ सुग्गीवे नयरे रंमे, काणणुज्जाणसोहिए । राया बलभद्दि'त्ति, मिया तस्सग्गमहिसी ।। १ ।।
तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते ति विस्सुए । अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ।। २ ।।
नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं । देवो दोगुंदुगो चेव, निच्चं मुइय-माणसो ।। ३ ।।
मणि-रयण-कोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ । आलोएइ नगरस्स, चउक्क-तिय-चच्चरे ।। ४ ।।

समणं दट्ठूण जाईसरणं

४६७ अह तत्थ अइच्छंतं, पासई समण-संजयं । तव-नियम-संजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ।। ५ ।।
तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ । कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा । ।। ६ ।।
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे । मोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ।। ७ ।।
देवलोगचुओ संतो, माणुसं भवमागओ । सन्नि-नाणे-समुप्पन्ने, जाइं सरइ पुराणियं ।। ८ ।।
जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए । सरई पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुराकयं ।। ९ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मियापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्पो अम्मापिउपुरओ निवेयणं च

४६८ विसएहि अरज्जंतो, रज्जंतो संजमंमि य । अम्मा-पियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ।। १० ।।
सुयाणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्ख-जोणिसु । निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ।।११।।
अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा । पच्छा कडुयविवागा, अणुबंधदुहावहा ।। १२ ।।
इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं । असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ।। १३ ।।
असासए सरीरंमि, रइं नोवलभामहं । पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ।। १४ ।।
माणुसत्ते असारंमि, वाहीरोगाण आलए । जरा-मरणघत्थंमि, खणं पि न रमामहं ।। १५ ।।
जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि य । अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ।। १६ ।।
खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवा । चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ।। १७ ।।
जहा किंपागफलाणं, परिणामो न सुंदरो । एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ।। १८ ।।
अद्धाणं जो महंतं तु, अपाहेज्जो पवज्जइ । गच्छंतो सो दुही होइ, छुहा-तण्हाए पीड़िओ ।। १९ ।।
एवं धम्मं अकाऊणं जो गच्छइ परं भवं । गच्छंतो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पीड़िओ ।। २० ।।
अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेज्जो पवज्जइ । गच्छंतो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ।। २१ ।।
एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं । गच्छंतो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ।। २२ ।।
जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू । सारभंडाणि नीणेइ, असारं अवइज्झइ ।। २३ ।।
एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य । अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ।। २४ ।।

सामण्णं दुक्करं ति अम्मापियरेहिं पव्वज्जावारणं

४६९ तं बेंतऽमापियरो, सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं । गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणा ।। २५ ।।
(१) समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे । पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करं ।। २६ ।।
(२) निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं । भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं ।। २७ ।।
(३) दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं । अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ।। २८ ।।
(४) विरई अबंभचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा । उग्गं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं ।। २९ ।।
(५) धण-धन्न-पेसवग्गेसु, परिग्गह-विवज्जणं । सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ।। ३० ।।
(६) चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा । सन्निही-संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ।। ३१ ।।
छुहा तण्हा य सीउण्हं, दंस-मसअवेयणा । अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ।। ३२ ।।
तालणा तज्जणा चेव, वह-बंधपरीसहा । दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ।। ३३ ।।
कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो । दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं अमहप्पणो ।। ३४ ।।
सुहोइओ तुमं पुत्ता !, सुउमालो सुमज्जिओ । न हुसि पभू तुमं पुत्ता, सामण्णमणुपालिया ।। ३५ ।।
जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महब्भरो । गुरुओ लोहभारु व्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ।। ३६ ।।
आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो । बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ।। ३७ ।।
वालुया कवले चेव, निरस्साए उ संजमे । असिधारागमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो ।। ३८ ।।
अहीवेगंतदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त ! दुक्करे । जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ।। ३९ ।।
जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करा । तह दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ।। ४० ।।
जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो । तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ।। ४१ ।।
जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मंदरो गिरी । तहा निहुयनीसंकं, दुक्करं समणत्तणं ।। ४२ ।।
जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो । तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसागरो ।। ४३ ।।
भुंज माणुस्सए भोए, पंचलक्खणए तुमं । भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ।। ४४ ।।

मियापुत्तेण नरयदुक्खवण्णणं सामण्णदुक्करत्तनिराकरणं च

४७० सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं । इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचिवि दुक्करं ।। ४५ ।।
सारीर-माणसा चेव, वेयणाओ अणंतसो । मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि य ।। ४६ ।।
जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे । मया सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ।। ४७ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणो तहिं। नरएसु वेयणा उण्हा, असाया वेइया मए ।। ४८ ।।
जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽणंतगुणं तहिं। नरएसु वेयणा सीया, असाया वेइया मए ।। ४९ ।।
कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो। हुयासणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो ।। ५० ।।
महादवग्गिसंकासे, मरुंमि वइरवालुए। कलंबवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणंतसो ।। ५१ ।।
रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो। करवत्त-करकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणंतसो ।। ५२ ।।
अइतिक्खकंटगाइण्णे, तुंगे सिंबलिपायवे। खेवियं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ।। ५३ ।।
महाजंतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं। पीलिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ।। ५४ ।।
कूवंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य। पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ।। ५५ ।।
असीहिं अयसिवण्णाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य। छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, ओइण्णो पावकम्मुणा ।। ५६ ।।
अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए। चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ।। ५७ ।।
हुयासणे जलंतम्मि, चियासु महिसो विव। दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ।। ५८ ।।
बला संडासतुंडेहिं, लोहतुंडेहिं पक्खिहिं। विलुत्तो विलवंतोऽहं, ढंकगिद्धेहिं णंतसो ।। ५९ ।।
तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरणिं नइं। जलं पाहं ति चिंतंतो, खुरधाराहिं विवाइओ ।। ६० ।।
उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं। असिपत्तेहिं पडंतेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ।। ६१ ।।
मुग्गरेहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि य। गया-संभग्ग-गत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणंतसो ।। ६२ ।।
खुरेहिं तिक्खधाराहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य। कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ।। ६३ ।।
पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं। वाहिओ बद्धरुद्धो य, बहुसो चेव विवाइओ ।। ६४ ।।
गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं। उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसो ।। ६५ ।।
वीदंसएहि जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव। गहिओ लग्गो य बद्धो य, मारिओ य अणंतसो ।। ६६ ।।
कुहाड-फरसु-माईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव। कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणंतसो ।। ६७ ।।
चवेड-मुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव। ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणंतसो ।। ६८ ।।
तत्ताइं तंबलोहाइं, तउयाइं, सीसयाणि य। पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुभेरवं ।। ६९ ।।
तुहं पियाइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि य। खाविओ मि स-मंसाइं, अग्गिवण्णाइं णेगसो ।। ७० ।।
तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य। पाइओ मि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य ।। ७१ ।।
निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य। परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेइया मए ।। ७२ ।।
तिव्वचंडप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा। महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए ।। ७३ ।।
जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेयणा। एत्तो अणंतगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ।। ७४ ।।
सव्वभवेसु असाया, वेयणा वेइया मए। निमेसंतरमित्तं पि, जं साता नत्थि वेयणा ।। ७५ ।।

अम्मापियरेहिं सामण्णे निप्पडिकम्मणं ति कहणं

४७१ तं बितऽम्मापियरो, छंदेणं पुत्त ! पव्वया। नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ।।७६।।

मियापुत्तस्स उत्तरं

४७२ सो बेइ अम्मापियरो ! एवमेवं जहा फुडं। पडिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मियपक्खिणं ।।७७।।
एगब्भूओ अरण्णे वा, जहा उ चरइ मिगो। एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ।।७८।।
जहा मिगस्स आयंको, महारण्णंमि जायइ। अच्छंतं रुक्खमूलंमि, को णं ताहे तिगिच्छई ।।७९।।
को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छइ सुहं ? को से भत्तं व पाणं वा, आहरित्तु पणामए ? ।।८०।।
जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं। भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ।।८१।।
खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य। मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छई मिगचारियं ।।८२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए। मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥८३॥
जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोयरे य। एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥८४॥

मियापुत्तस्स पव्वज्जा

४७३ मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं। अम्मापिऊहिऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८५॥
मियचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं। तुब्भेहिं अंब ! ऽणुन्नाओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥८६॥
एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं। ममत्तं छिंदई ताहे, महानागो व्व कंचुयं ॥८७॥
इड्ढी वित्तं च मित्तं य, पुत्तदारं च नायओ। रेणुयं व पडे लग्गं, निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥८८॥
पंचमहव्वयजुत्तो, पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य। सब्भिंतरबाहिरए, तवोकम्मंमि उज्जुओ ॥८९॥
निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो। समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥९०॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा। समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥९१॥
गारवेसु कसाएसु, दंड-सल्ल-भएसु य। नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबंधणो ॥९२॥
अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ। वासीचंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥९३॥
अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे। अज्झप्प-ज्झाणजोगेहिं, पसत्थ-दमसासणे ॥९४॥
एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य। भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥९५॥
बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया। मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥९६॥
एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा। विणिअट्टंति भोगेसु, मियापुत्ते जहा रिसी ॥९७॥
महप्पभावस्स महाजसस्स, मियाइपुत्तस्स निसम्म भासियं। तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं, गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥९८॥
वियाणिया दुक्ख-विवड्ढणं धणं, ममत्तबंधं च महाभयावहं। सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेह निव्वाण-गुणावहं महं ॥९९॥

त्ति बेमि ॥

उत्तर० अ० १९।

---

३५. महावीरतित्थे गद्दभाली संजयराया य

संजयरण्णा मुणिसमीवे मिअवहो

४७४ कंपिल्ले नयरे राया, उदिण्णबलवाहणे। नामेणं संजए नाम, मिगव्वं उवणिग्गए ॥१॥
हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य। पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥२॥
मिए छुहित्ता हयगओ, कंपिल्लुज्जाणकेसरे। भीए संते मिए तत्थ, वहेइ, रसमुच्छिए ॥३॥
अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे। सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥४॥
अप्फोवमंडवंमि, झायइ खवियासवे। तस्सागए मिए पासं, वहेइ से नराहिवे ॥५॥
अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं। हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासइ ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजएण खमाजायणं

४७५ अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ। मए उ मंदपुण्णेणं, रसगिद्धेण घंतुणा ॥ ७ ॥
आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो। विणएण वंदए पाए, भगवं! एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥
अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए। रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥ ९ ॥
संजओ अहमंसीति, भगवं! वाहराहि मे। कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥१०॥

गद्दभालिमुणिणा उवएसो

४७६ अभओ पत्थिवा! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य। अणिच्चे जीवलोगंमि, किं हिंसाए पसज्जसि? ॥११॥
जया सव्वं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते। अणिच्चं जीवलोगंमि, किं रज्जंमि पसज्जसि? ॥१२॥
जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलं। जत्थ तं मुज्झसि रायं! पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥१३॥
दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा। जीवंतमणुजीवंति, मयं नाणुवयंति य ॥१४॥
नीहरंति मयं पुत्ता, पियरं परमदुक्खिया। पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं! तवं चरे ॥१५॥
तओ तेणज्जिए दव्वे, दारे य परिरक्खिए। कीलंतऽन्ने नरा रायं! हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥१६॥
तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं। कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥१७॥

मुणिसमीवे रण्णो पव्वज्जा

४७७ सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए। महया संवेगनिव्वेयं, समावन्नो नराहिवो ॥१८॥
संजओ चइउं रज्जं, निक्खंतो जिणसासणे। गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥१९॥

खत्तियमुणिपण्हो

४७८ चिच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ। जहा ते दीसइ रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥२०॥
किं नामे किं गोत्ते कस्सट्ठाए व माहणे। कहं पडियरसि बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसि? ॥२१॥

संजयमुणिणा अत्तकहानिवेयणं

४७९ संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो। गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥२२॥
किरियं अकिरियं विणयं, अन्नाणं च महामुणी। एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासइ ॥२३॥
इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए। विज्जा-चरण-संपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥२४॥
पडंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो। दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥
मायावुइयमेयं तु, मुसा भासा निरत्थिया। संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥
सव्वेए विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया। विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

खत्तियमुणिणा अप्पणो पुव्वभवकहणं

४८० अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे। जा सा पाली-महापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥२८॥
से चुए, बंभलोगाओ, माणुस्सं भवमागए। अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥
नाणारुइं च छंदं च, परिवज्जेज्ज संजए। अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥
पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो। अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥
जं च मे पुच्छसी काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा। ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥
किरियं च रोयइ धीरे, अकिरियं परिवज्जए। दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चर सुदुच्चरं ॥३३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खत्तियमुणिणा पुव्वपव्वइयभरहाईणं निरूवणं

४८१ एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ-धम्मोवसोहियं । भरहो वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइं पव्वए ।।३४।।
सगरो वि सागरंतं, भरहवासं नराहिवो । इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाए परिनिव्वुडे ।।३५।।
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महाजसो ।।३६।।
सणंकुमारो मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ।।३७।।
चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ । संति संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ।।३८।।
इक्खागरायवसभो, कुंथू नाम नरीसरो । विक्खायकित्ती भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ।।३९।।
सागरंतं चइत्ताणं, भरहवासं नरेसरो । अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ।।४०।।
चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बलवाहणं । चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमे तवं चरे ।।४१।।
एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माण-निसूरणो । हरिसेणो मणुस्सिंदो, पत्तो गइमणुत्तरं ।।४२।।
अन्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाई दमं चरे । जयनामो जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ।।४३।।
दसण्णरज्जं मुदियं चइत्ताणं मुणी चरे । दसण्णभद्दो निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ।।४४।।
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ।।४५।।
करकंडू कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेसु, गंधारेसु य नग्गई ।।४६।।
एए नरिंदवसभा, निक्खंता जिणसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ।।४७।।
सोवीररायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे । उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ।।४८।।
तहेव कासिराया वि, सेओ सच्चपरक्कमो । कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ।।४९।।
तहेव विजओ राया, अणट्टा कित्ति पव्वए । रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ।।५०।।
तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेणं चेयसा । महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ।।५१।।
कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे ? एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ।।५२।।
अच्चंतनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई । अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ।।५३।।
कहिं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे । सव्वसंग-विणिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ।।५४।।

।।त्ति बेमि।।

उत्तर० अ० १८ ।

---

३६. महावीरतित्थे उसुयाररायाई छ समणा

उसुयारनयरे पुरोहियपुत्ताई

४८२ देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि, केई चुया एगविमाणवासी । पुरे पुराणे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ।।१।।
सकम्मसेसेण पुराकएणं, कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया । निव्विण्ण-संसारभया जहाय, जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ।।२।।
पुमत्तमागम्म कुमार दो वि, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती । विसालकित्ती य तहो सुयारो, रायऽत्थ देवी कमलावई य ।।३।।

जाईसरणेण पुरोहियपुत्ताणं विरत्ती पव्वज्जासंकप्पो णिवेयणं च

४८३ जाई-जरा-मच्चु-भयाभिभूया, बहिं विहाराभिनिविट्ठ-चित्ता । संसार-चक्कस्स विमोक्खणट्ठा, दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ।।४।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पियपुत्तगा दुन्नि वि माहणस्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स । सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं, तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ।।५।।
ते कामभोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा । मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा, तायं उवागम्म इमं उदाहु ।।६।।
असासयं दट्ठु इमं विहारं, बहुअंतरायं न य दीहमाउं । तम्हा गिहंसि न रइं लहामो, आमंतयामो चरिस्सामु मोणं ।।७।।

पुरोहियेण वारणं —

४८४ अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी । इमं वयं वेयविओ वयंति, जहा न होई असुयाण लोगो ।।८।।
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ! । भोच्चा ण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होह मुणी पसत्था ।।९।।

पुरोहिअपुत्ता —

सोयग्गिणा आयगुणिंधणेण, मोहाणिला पज्जलणाहिएणं । संतत्तभावं परितप्पमाणं, लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ।।१०।।
पुरोहियं तं कमसोऽणुणंतं, निमंतयंतं च सुए धणेणं । जहक्कमं कामगुणेहि चेव, कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ।।११।।
वेया अहिया न भवंति ताणं, भुत्ता दिया निंति तमं तमेणं । जाया य पुत्ता न हवंति ताणं, को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ।।१२।।
खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा । संसार-मोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ।।१३।।
परिव्वयंते अणियत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे । अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ।।१४।।
इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं । तं एवमेवं लालप्पमाणं, हरा हरंति त्ति कहं पमाओ ।।१५।।

पुरोहिओ —

धणं पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा । तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ।।१६।।

पुरोहिअपुत्ता —

धणेण किं धम्मधुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहि चेव । समणा भविस्सामु गुणोहधारी, बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ।।१७।।

पुरोहिओ —

जहा य अग्गी अरणी असंतो, खीरे घयं तेल्लमहातिलेसु । एमेव जाया सरीरंसि सत्ता, संमुच्छइ नासइ नावचिट्ठे ।।१८।।

पुरोहिअपुत्ता —

नो इंदियग्गेज्झ अमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो । अज्झत्थहेउं नियओऽस्स बंधो, संसारहेउं च वयंति बंधं ।।१९।।
जहा वयं धम्ममजाणमाणा, पावं पुरा कम्ममकासि मोहा । ओरुब्भमाणा परिरक्खयंता, तं नेव भुज्जो वि समायरामो ।।२०।।
अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए । अमोहाहिं पडंतीहिं, गिहंसि न रइं लभे ।।२१।।

पुरोहिओ—

केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ? । का वा अमोहा वुत्ता ? जाया चिंतावरो हुमि ।।२२।।

पुरोहिअपुत्ता —

मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ । अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय विजाणह ।।२३।।
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ । अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ।।२४।।
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ । धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ।।२५।।

पुरोहिओ —

एगओ संवसित्ताणं, दुहओ सम्मत्तसंजुया । पच्छा जाया ! गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ।।२६।।

पुरोहिअपुत्ता —

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स चऽत्थि पलायणं । जो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ।।२७।।
अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो, जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो । अणागयं नेव य अत्थि किंची, सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ।।२८।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारियं जसं पइ पुरोहिओ--

४८५ पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो, वासिट्ठि ! भिक्खायरियाइ कालो । साहाहि रुक्खो लहए समाहिं, छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ।।२९।।
पंखाविहूणो व जहेव पक्खी, भिच्चव्विहूणो व्व रणे नरिंदो । विवन्नसारो वणिओ व्व पोए, पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ।।३०।।

जसा--

सुसंभिया कामगुणे इमे ते, संपिंडिया अग्गरसप्पभूया । भुंजामु ता कामगुणे पगामं, पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ।।३१।।

पुरोहिओ --

भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ, न जीवियट्ठा पजहामि भोए । लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं, संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ।।३२।।

जसा --

मा हू तुमं सोयरियाण संभरे, जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी । भुंजाहि भोगाइं मए समाणं, दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ।।३३।।

पुरोहिओ --

जहा य भोई तणुयं भुयंगो, निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो । एमेए जाया पयहंति भोए, ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ।।३४।।
छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाए । धोरेयसीला तवसा उदारा, धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ।।३५।।

जसा--

नहे व कुंचा समइक्कमंता, तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा । पलिंति पुत्ता य पई य मज्झं, ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ।।३६।।

कमलावई रायाणं पइ--

४८६ पुरोहियं तं ससुयं सदारं, सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए । कुडुंबसारं विउलुत्तमं च, रायं अभिक्खं समुवाय देवी ।।३७।।
वंतासी पुरिसो रायं ! न सो होई पसंसिओ । माहणेण परिच्चत्तं, धणं आयाउमिच्छसि ।।३८।।
सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वा वि धणं भवे । सव्वं पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव ।।३९।।
मरिहिसि रायं ! जया तया वा, मणोरमे कामगुणे पहाय । एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं, न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ।।४०।।
नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा, संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं । अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा, परिग्गहारंभनियत्तदोसा ।।४१।।
दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जंतुसु । अन्ने सत्ता पमोयंति, रागद्दोसवसं गया ।।४२।।
एवमेव वयं मूढा, काम-भोगेसु मुच्छिया । डज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं ।।४३।।
भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूयविहारिणो । आमोयमाणा गच्छंति, दिया कामकमा इव ।।४४।।
इमे य बद्धा फंदंति, मम हत्थज्जमागया । वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ।।४५।।
सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं । आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ।।४६।।
गिद्धोवमा उ नच्चाणं, कामे संसारवड्ढणे । उरगो सुवण्णपासे व्व, संकमाणो तणुं चरे ।।४७।।
नागो व्व बंधणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए । एयं पत्थं महारायं, उसुयारि त्ति मे सुयं ।।४८।।

रायाईणं पव्वज्जा

४८७ चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए । निव्विसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ।।४९।।
सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चिच्चा कामगुणे वरे । तवं पगिज्झऽहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ।।५०।।
एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा । जम्म-मच्चु-भउव्विग्गा, दुक्खस्संतगवेसिणो ।।५१।।
सासणे विगयमोहाणं, पुव्वि भावणभाविया । अचिरेणेव कालेणं, दुक्खसंतमुवागया ।।५२।।
राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ । माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिनिव्वुडा ।।५३।।

।। त्ति बेमि ।।

उत्तर० अ० १४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. महावीरतित्थे खंदए परिव्वायगे

कयंगलाए महावीरसमोसरणं

४८८ तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइआओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं कयंगला नामं नगरी होत्था––वण्णओ ।।

तीसे णं कयंगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए छत्तपलासए नामं चेइए होत्था––वण्णओ ।।

तए णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्ननाणदंसणधरे - जाव - समोसरणं । परिसा निग्गच्छइ ।।

सावत्थीए खंदए परिव्वायगे

४८९ तीसे णं कयंगलाए नयरीए अदूरसामंते सावत्थी नामं नयरी होत्था––वण्णओ ।।

तत्थ णं सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अंतेवासी खंदए नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ––रिव्वेद-जजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहास-पंचमाणं निघंटुछट्ठाणं–चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए, संखाणे सिक्खा-कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे, अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था ।।

पिंगलेण लोगाईविसए पण्हाई

४९० तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए परिवसइ ।।

तए णं से पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए अण्णया कयाइ जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदगं कच्चायणसगोत्तं इणमक्खेवं पुच्छे---

मागहा ! १. किं सअंते लोए ? अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३. सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?––एतावं ताव आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ।।

खंदअस्स उत्तरदाणे असामत्थं

४९१ तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो संचाएइ पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

तए णं से पिंगलए नियंठे वेसालियसावए खंदयं कच्चायणसगोत्तं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छे––

मागहा ! १. किं सअंते लोए ? अणंते लोए ?-जाव-५. केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?––एतावं ताव आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ।।

तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो संचाएइ पिंगलस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

बहुजणस्स कयंगलं पइ गमणं

४९२ तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग-जाव-महापहेसु महया जणसंमद्दे इ वा जणवूहे-इ-वा । परिसा निग्गच्छति ।।

खंदअस्स महावीरदंसणट्ठं कयंगलागमणं

४९३ तए णं तस्स खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–'एवं खलु समणे भगवं महावीरे कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहरइ। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि। सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता, नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासित्ता इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिदंडं च कुंडियं च कंचणियं च करोडियं च भिसियं च केसरियं च छण्णालयं च अंकुसयं च पवित्तयं च गणेत्तियं च छत्तयं च उवाहणाओ य पाउयाओ य धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तिदंड-कुंडिय-कंचणिय-करोडिय-भिसिय-केसरिय-छण्णालय-अंकुसय-पवित्तय-गणेत्तियहत्थगए, छत्तोवाहणसंजुत्ते, धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कयंगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

महावीरेण गोयमं पइ खंदयआगमणनिद्देसो

४९४ गोयमा! इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी--

"दच्छिसि णं गोयमा! पुव्वसंगइयं।"

कं भंते!? खंदयं नाम। से काहे वा? किह वा? केवच्चिरेण वा?

एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था---वण्णओ।

तत्थ णं सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अंतेवासी खंदए नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ। तं चेव-जाव-जेणेव ममं अंतिए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए। से अदूरागते बहुसंपत्ते अद्धाणपडिवण्णे अंतरा पहे वट्टइ। अज्जेव णं दच्छिसि गोयमा!

भंत्ते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी--

पहू णं भंते! खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए? हंता पभू।।

जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागए।।

गोयमकयं खंदयसुसागयं आगमणकारणकहणं च

४९५ तए णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरागतं जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ, जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी--

"हे खंदया! सागयं खंदया! सुसागयं खंदया! अणुरागयं खंदया! सागयमणुरागयं खंदया! से नूणं तुमं खंदया! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए--मागहा! किं सअंते लोगे? अणंते लोगे? एवं तं चेव-जाव-जेणेव इहं, तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया! अट्ठे समट्ठे?" हंता अत्थि।।

महावीरस्स नाणविसए खंदयस्स अच्छरियं

४९६ तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी--

"से केस णं गोयमा! तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणसि?"

तए णं से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी--

"एवं खलु खंदया! ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं अहं जाणामि खंदया!"

तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी--

"गच्छामो णं गोयमा! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो।"

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह।।

तए णं से भगवं गोयमे खंदएणं कच्चायणसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।।

खंदयस्स महावीरपज्जुवासणा

४९७ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वियट्टभोई यावि होत्था।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणं चिट्ठइ ।।

तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं-जाव-अतीव-अतीव उवसोभेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ-जाव-पज्जुवासइ ।।

महावीरेण खंदयस्स मणोगयस्स कहणं

४९८ खंदया ! ति समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी--

"से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए--

मागहा ! १. किं सअंते लोए ? अणंते लोए ? एवं तं चेव-जाव-जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए ।

से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?" हंता अत्थि ।।

महावीरेण चउव्विहलोयपरूवणं

४९९ जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--किं सअंते लोए ? अणंते लोए ? --तस्स वि य णं अयमट्ठे --एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा--

दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ णं एगे लोए सअंते ।

खेत्तओ णं लोए असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ते, अत्थि पुण से अंते ।

कालओ णं लोए न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ--भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य--धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे, नत्थि पुण से अंते ।

भावओ णं लोए अणंता वण्णपज्जवा, अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।

सेत्तं खंदगा ! दव्वओ लोए सअंते, खेत्तओ लोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते ।।

चउव्विहजीवपरूवणं

५०० जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--

किं सअंते जीवे ? अणंते जीवे ?

तस्स वि य णं अयमट्ठे--एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे जीवे पण्णत्ते, तं जहा--

दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ णं एगे जीवे सअंते ।

खेत्तओ णं जीवे असंखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अंते ।

कालओ णं जीवे न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ--भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य--धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे, नत्थि पुण से अंते ।

भावओ णं जीवे अणंता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता चारित्तपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।

सेत्तं खंदगा ! दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओ जीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउव्विहसिद्धिपरूवणं

५०१ जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--
किं सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ?
तस्स वि य णं अयमट्ठे । एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहा सिद्धी पण्णत्ता, तं जहा--
दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं एगा सिद्धी सअंता ।
खेत्तओ णं सिद्धी पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थि पुण से अंते ।
कालओ णं सिद्धी न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ न कयाइ न भविस्सइ--भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य--धुवा नियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया निच्चा, नत्थि पुण से अंते ।
भावओ णं सिद्धीए अणंता वण्णपज्जवा, अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।
सेत्तं खंदया ! दव्वओ सिद्धी सअंता, खेत्तओ सिद्धी सअंता, कालओ सिद्धी अणंता, भावओ सिद्धी अणंता ।।

चउव्विहसिद्ध-परूवणं

जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--
किं सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ?
तस्स वि य णं अयमट्ठे--एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे सिद्धे पण्णत्ते, तं जहा--
दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं एगे सिद्धे सअंते ।
खेत्तओ णं सिद्धे असंखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अंते ।
कालओ णं सिद्धे सादीए, अपज्जवसिए, नत्थि पुण से अंते ।
भावओ णं सिद्धे अणंता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।
सेत्तं खंदया ! दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते ।।

मरणपरूवणं

५०२ जे वि य ते खंदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए--पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--
केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?
तस्स वि य णं अयमट्ठे--एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा--
बालमरणे य, पंडियमरणे य ।
से किं तं बालमरणे ?
बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा--
१. वलयमरणे २. वसट्टमरणे ३. अंतोसल्लमरणे ४. तब्भवमरण ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७. जलप्पवेसे ८. जलणप्पवेसे ९. विस-भक्खणे १०. सत्थोवाडणे ११. वेहाणसे १२. गिद्धपट्ठे --
इच्चेतेणं खंदया ! दुवालसविहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, अणंतेहिं तिरियभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, अणंतेहिं मणुयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ।
सेत्तं मरमाणे वड्ढइ-वड्ढइ । सेत्तं बालमरणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से किं तं पंडियमरणे ?

पंडियमरणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–पाओवगमणे य, भत्तपच्चक्खाणे य।

से किं तं पाओवगमणे ?

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–नीहारिमे य, अनीहारिमे य। नियमा अप्पडिकम्मे।

सेत्तं पाओवगमणे।

से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ?

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–नीहारिमे य, अनीहारिमे य। नियमा सपडिकम्मे।

सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे।

इच्चेतेणं खंदया ! दुविहेणं पंडियमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरियभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुयभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ।

सेत्तं मरमाणे हायइ-हायइ।

सेत्तं पंडियमरणे।

इच्चेएणं खंदया ! दुविहेणं मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा।।

खंदयस्स धम्मसवणं

५०३ एत्थ णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।।

तए णं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स, तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ। धम्मकहा भाणियव्वा।।

खंदयस्स पव्वज्जा

५०४ तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, -जाव-से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडं च कुंडियं च-जाव-धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"आलित्ते णं भंत्ते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय–विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं।।"

तए णं समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं सयमेव पव्वावेइ-जाव-धम्ममाइक्खइ–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीइयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, एवं उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो किंचि वि पमाइयव्वं ।।

तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ–तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्टइ, तह भुंजइ, तह भासइ, तह उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमेइ, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमायइ ।।

तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाते–इरियासमिए -जाव- गुत्तबंभयारी चाई लज्जू धन्ने खंतिखमे जिइंदिए सोहिए अनियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दंते इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ ।।

महावीरस्स जणवयविहारो

५०५ तए णं समणे भगवं महावीरे कयंगलाओ नयरीओ छत्तपलासाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

खंदएण भिक्खुपडिमागहणं

५०६ तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी–

इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।।

तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठे-जाव-नमंसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।।

तए णं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं अहासम्मं सम्मं काएण फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता पूरेत्ता किट्टेत्ता अणुपालेत्ता आणाए आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।"

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं । तं चेव ।।

एवं तेमासियं, चाउम्मासियं, पंचमासियं, छम्मासियं, सत्तमासियं, पढमसत्तरातिंदियं, दोच्चसत्तरातिंदियं, तच्चसत्तरातिंदियं, रातिंदियं, एगरातियं ।।

तए णं से खंदए अणगारे एगरातियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं-जाव-आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

खंदएण गुणरयणसंवच्छरतवोवसंपज्जणं

५०७ इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।।

तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे-जाव-नमंसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।

तए णं से खंदए अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं अहाकप्पं-जाव-आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं, मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से खंदए अणगारे तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था। जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता वि गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामीति गिलाइ। से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-तिल-भंडगसगडिया इ वा, एरंडकट्ठसगडिया इ वा, इंगाल-सगडिया इ वा–उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं, चिट्ठइ,

एवामेव खंदए अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं अवचिए मंस-सोणिएणं, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेणं तेएणं तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ।।

रायगिहे महावीरसमोसरणं खंदयस्स समाहिमरणे संकप्पो य

५०८ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे-जाव-समोसरणं जाव परिसा पडिगया।।

तए णं तस्स खंदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-समुप्पज्जित्था––

"एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं-जाव-किसे धमणिसंतए जाए। जीवंजीवेणं गच्छामि-जाव-एवामेव अहं पि ससद्दं गच्छामि, ससद्दं चिट्ठामि।

तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे -जाव- य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए, फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे पभाए, रत्तासोयप्पकासे, किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे, कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे पज्जुवासित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरोवेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरूहित्ता मेहघणसंनिगासं देवसन्निवातं पुढवीसिलापट्टयं पडिलेहित्ता, दब्भसंथारगं संथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे पज्जुवासइ।।

खंदया! इ समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी–"से नूणं तव खंदया! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं तवेणं ओरालेणं विउलेणं तं चेव-जाव-कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते' जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए।

से नूणं खंदया! अट्ठे समट्ठे?" हंता अत्थि।

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह।।

खदयस्स संलेहणा

५०९ तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरूहइ, दुरूहित्ता मेहघणसन्निगासं देवसन्निवातं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपास-वणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी––

"नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं-जाव-सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।

नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स-जाव-सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं" ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"पुव्वि पि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए-जाव-मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए।

इयाणिं पि य णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए-जाव-मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए एवं सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं–चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं-जाव-मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइयविविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयं पि णं चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि" त्ति कट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ।।

तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए।।

खंदयस्स पत्त-चीवरसमाणयणं

५१० तए णं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेंति, करेत्ता पत्त-चीवराणि गेण्हंति, गेण्हित्ता विपुलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे विणीए। से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरुहेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता, अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहित्ता-जाव-मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए। इमे य से आयारभंडए।।"

खंदअस्स अच्चुयकप्पे उववाओ महाविदेहे सिद्धी य

५११ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववण्णे?"

गोयमा ! इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी––

"एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी खंदए नामं अणगारे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपण्णे अल्लीणे विणीए, से णं मए अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेत्ता-जाव-मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे।।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं खंदयस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।।"

से णं भंते ! खंदए देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति।।

भग० स० २, उ० १।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. महावीरतित्थे मोग्गलपरिव्वायगे

आलभियाए मोग्गल-परिव्वायगो

५१२ तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था–वण्णओ। तत्थ णं संखवणे नामं चेइए होत्था–वण्णओ। तस्स णं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते मोग्गले नामं परिव्वायए–रिउव्वेद-जजुव्वेद-जाव-बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ।।

मोग्गलस्स विभंगनाणं

५१३ तए णं तस्स मोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं नाणे समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगेणं नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठितिं जाणइ-पासइ।।

देवठिइविसए मोग्गलस्स विभंगनाणं

५१४ तए णं तस्स मोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया-जाव-असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, तिदंडं च कुंडियं च-जाव-धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव आलभिया नगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया,-जाव-असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।।

तए णं मोग्गलस्स परिव्वायगस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–एवं खलु देवाणुप्पिया! मोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया-जाव-असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य। से कहमेयं मन्ने एवं?

महावीरसमोसरणं देवठिइविसए जहत्थकहणं च

५१५ सामी समोसढे, परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया। भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेइ, निसामेत्ता तहेव सव्वं भाणियव्वं-जाव-अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि, एवं भासामि-जाव-परूवेमि–देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया-जाव-असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।।

अत्थि णं भंते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं–सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति? हंता अत्थि।

एवं ईसाणे वि, एवं जाव अच्चुए, एवं गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि-जाव-? हंता अत्थि।।

तए णं सा महतिमहालिया परिसा-जाव-जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ "जण्णं देवाणुप्पिया! मोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया-जाव-असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य। तं नो इणट्ठे समट्ठे। समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ-जाव-देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया-जाव-असंखेज्ज-समयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य" ॥

मोग्गलस्स विभंगनाणपडणं महावीरसमीवे गमणं च

५१६ तए णं से मोग्गले परिव्वायए बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था। तए णं तस्स मोग्गलस्स परिव्वायगस्स संकियस्स कंखियस्स वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स कलुससमावन्नस्स से विभंगे नाणे खिप्पामेव पडिवडिए॥

तए णं तस्स मोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–"एवं खलु समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे-जाव-सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं-जाव-संखवणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि-जाव-पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तिदंडं च कुंडियं च-जाव-धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायगावसहाओ पडि-निक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भंगे आलभियं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिकडे पज्जुवासइ॥

मोग्गलस्स पव्वज्जा

५१७ तए णं समणे भगवं महावीरे मोग्गलस्स परिव्वायगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ-जाव-आणाए आराहए भवइ॥

तए णं से मोग्गले परिव्वायए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ-जाव-उत्तरपुरत्थिमं दिसी-भागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडं च कुंडियं च-जाव-धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्व-इओ, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे॥

गोयमस्स सिज्झमाणस्स संघयणाइपण्हा

५१८ भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–जीवा णं भंते! सिज्झमाणस्स कयरम्मि संघयणे सिज्झंति?

गोयमा! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति, एवं जहेव ओववाइए तहेव।

संघयणं संठाणं, उच्चत्तं आउयं च परिवसणा।

एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा-जाव–

अव्वाबाहं सोक्खं, अणुहुंती सासयं सिद्धा॥

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

भग० श० ११, उ० १२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९. महावीरतित्थे सिवरायरिसी

हत्थिणापुरे सिवराया

५१९ तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था–वण्णओ। तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था–सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निभप्पगासे सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुप्फले अकंटए, पासादीए-जाव-पडिरूवे।।

तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था–महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे–वण्णओ। तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था–सुकुमालपाणिपाया–वण्णओ। तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे नामं कुमारे होत्था-सुकुमालपाणिपाए, जहा सूरियकंते-जाव-रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ।।

सिवस्स दिसापोक्खिय-तावसपव्वज्जासंकप्पो

५२० तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–"अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेणं वड्ढामि, एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संखसिलप्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं एगंतसो खयं उवेहमाणे विहरामि? तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि-जाव-अतीव-अतीव अभिवड्ढामि-जाव-मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता तं सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकुले वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा–होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जहा ओववाइए -जाव-आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति तत्थ णं जे ते दिसापोक्खियतावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइते वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि–कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसावक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए", त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोहीलोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

"खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! हत्थिणापुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं-जाव-सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।" ते वि तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।।

सिवभद्दकुमारस्स रज्जाभिसेओ

५२१ तए णं से सिवे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेंति।।

तए णं से सिवे राया अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिपाल-सद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं, निसियावेइ, निसियावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं-जाव-अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहि-निग्घोसणाइयरवेणं महया-महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपति एवं जहेव जमालिस्स अलंकारो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहेव-जाव-कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं-जाव-वग्गूहिं जयविजयमंगलसएहिं अणवरयं अभिणंदंतो य अभित्थुणंतो य एवं वयासी–

"जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि । इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं बहूइं वाससयसहस्साइं अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स, अण्णेसिं च बहूणं गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि" ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ।।

तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाते–महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे, वण्णओ-जाव-रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।।

सिवस्स दिसापोक्खियतावसपव्वज्जा

५२२ तए णं से सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्तनाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं रायाणो य खत्तिए य आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं राएहि य खत्तिएहि सद्धिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ।

जिमियभुत्तुरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं चेव-जाव-तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति–'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय विहरित्तए'–अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।।

५२३ तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ, पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं-अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य-जाव-हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गेण्हित्ता किढिण-संकाइयगं भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवण-संमज्जणं करेइ, करेत्ता दब्भकलसाहत्थगए जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गंगं महानदिं ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जल-मज्जणं करेइ, करेत्ता जलकीडं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवय-पिति-कयकज्जे दब्भ-कलसाहत्थगए गंगाओ महानदीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदिं रएति, रएत्ता सरएणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्केत्ता समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालेत्ता "अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे", तं जहा–

सकहं वक्कलं ठाणं, सिज्जाभंडं कमंडलुं । दंडदारूं तहप्पाणं, अहेताइं समादहे ।।१।।

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, हुणित्ता चरुं साहेइ, साहेत्ता बलि-वइस्सदेवं करेइ, करेत्ता अतिहिपूयं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहार माहारेति ।।

तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।।

तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता दाहिणगं दिसं पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव-जाव-तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ।।

तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सिवे रायरिसी तच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पच्चत्थिमं दिसं पोक्खेइ, पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव-जाव-तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ।।

तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।।

तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता उत्तरदिसं पोक्खेइ, उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव-जाव-तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ।।

सिवस्स विभंगनाणं सत्तदीवविसयं

५२४ तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाण-मायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं नाणे समुप्पन्ने । से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणइ, न पासइ ।।

तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य–एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुय-तंबियं तावसभंडगं किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए–सत्त दीवा य सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।।

५२५ तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा य सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । से कहमेयं मन्ने एवं ?"

महावीरसमोसरणे सिवविभंगनाणविसए पण्होत्तराइं

५२६ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा–निग्गया । धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ।।

तेणं कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जहा बितियसए नियंठुद्देसए-जाव-घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा य सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । से कहमेयं मन्ने एवं ?

तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे -जाव- समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी–

"एवं खलु भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे हत्थिणापुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा य सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।

से कहमेयं भंते ! एवं ?"

गोयमा ! दि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–

"जण्णं गोयमा ! एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाणे समुप्पन्ने। तं चेव सव्वं भाणियव्वं-जाव-भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा य सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य।

महावीरेण असंखेज्ज-दीवसमुद्दपरूवणं

५२७ तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–"एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा य सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तण्णं मिच्छा! अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि-जाव-परूवेमि–एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा, लवणादीया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवाभिगमे,-जाव-सयंभूरमणपज्जवसाणा अस्सि तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो!"

अत्थि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं–सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि, अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति? हंता अत्थि।।

अत्थि णं भंते! लवणसमुद्दे दव्वाइं–सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति? हंता अत्थि।।

अत्थि णं भंते! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति?

हंता अत्थि। एवं-जाव––

अत्थि णं भंते! सयंभूरमणसमुद्दे दव्वाइं––सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि, अगंधाइं पि, सरसाइं पि, अरसाइं पि, सफासाइं पि, अफासाइं पि, अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति? हंता अत्थि।।

तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।।

५२८ तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर--चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ "जण्णं देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ––अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा य सत्त समुद्दा, तेणं परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तं नो इणट्ठे समट्ठे।

समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ––एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं० तं चेव-जाव-भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ––अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा य सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्णं मिच्छा, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ––एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा०, तं चेव जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो!"

सिवस्स अप्पणो नाणे संका महावीरपज्जुवासणं च

५२९ तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स कलुससमावन्नस्स से विभंगे नाणे खिप्पामेव परिवडिए।।

तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––"एवं खलु समणे भगवं महावीरे तित्थगरे आदिगरे जाव-सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तावसावसहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावभंडगं किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवंडियविब्भंगे हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिकडे पज्जुवासइ ।।

तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव आणाए आराहए भवइ ।।

सिवस्स पव्वज्जा निव्वाणगमणं च

५३० तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ-जाव-उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं किढिण-संकाइयगं च एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

भग० श० ११, उ० ९।

---

४०. महावीरतित्थे उद्दायणरायकहाणयं

चंपाए महावीरसमोसरणं

५३१ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था––वण्णओ। पुण्णभद्दे चेइए––वण्णओ। तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

वीतीभए उद्दायणराया

५३२ तेणं कालेणं तेणं समएणं सिंधूसोवीरेसु जणवएसु वीतीभए नामं नगरे होत्था––वण्णओ। तस्स णं वीतीभयस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं मियवणे नामं उज्जाणे होत्था––सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे––वण्णओ। तत्थ णं वीतीभए नगरे उद्दायणे नामं राया होत्था––महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे––वण्णओ।

तस्स णं उद्दायणस्स पउमावती नामं देवी होत्था–सुकुमाल० वण्णओ। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था–सुकुमाल पाणिपाया––वण्णओ।

तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीयी नामं कुमारे होत्था––सुकुमालपाणिपाए अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजायसव्वंग-सुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे पडिरूवे। से णं अभीयी कुमारे जुवराया वि होत्था––उद्दायणस्स रण्णो-रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ।

तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो नियए भाइणेज्जे केसी नामं कुमारे होत्था--सुकुमालपाणिपाए-जाव-सुरूवे।

से णं उद्दायणे राया सिंधूसोवीरप्पा- मोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं, वीतीभयप्पामोक्खाणं तिण्हं तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं, महसेणप्पा-मोक्खाणं दसण्हं राईणं बद्धमउडाणं विदिन्नछत्त-चामर-वालवीयणाणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ–सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजीवाजीवे-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से उद्दायणे राया अण्णया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, जहा संखे-जाव-पोसहिए बंभचारी ओमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ।।

उद्दायणस्स महावीरवंदणाइम्मि अहिलासो

५३३ तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--"धन्ना णं ते गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संवाहसण्णिवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ, धन्ना णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितयो जे णं समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति-जाव-पज्जुवासंति । जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव वीतीभयस्स नगरस्स बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा, तो णं अहं समणं भगवं महावीरं वंदेज्जा नमंसेज्जा-जाव-पज्जुवासेज्जा ।।"

महावीरेण अहिलासवियाणणा

५३४ तए णं समणे भगवं महवीरे उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवं अज्झत्थियं -जाव-संकप्पं समुप्पन्नं वियाणित्ता चंपाओ नगरीओ पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सिंधूसोवीरे जणवए जेणेव वीतीभये नगरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-जाव-संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

वीतीभए समोसरणं

५३५ तए णं वीतीभये नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु-जाव-परिसा पज्जुवासइ ।।

तए णं से उद्दायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं-जाव-पज्जुवासइ । पउमावतीपामोक्खाओ देवीओ तहेव-जाव-पज्जुवासंति । धम्मकहा ।।

उद्दायणस्स पव्वज्जासंकप्पो

५३६ तए णं से उद्दायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो-जाव-नमंसित्ता एवं वयासी--

एवमेयं भंते ! --जाव-से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु जं नवरं----देवाणुप्पिया ! अभीयिकुमारं रज्जे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।।

तए णं से उद्दायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव आभिसेक्कं हत्थिं दुरूहइ, दुरूहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

अभीयीकुमारं नियपुत्तं हिच्चा केसीकुमारस्स रज्जाभिसेओ

५३७ तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--एवं खलु अभीयीकुमारे ममं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हियय्नंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं जदि णं अहं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि, तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य बले वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, सेयं खलु मे नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए--एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव वीयीभये नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वीयीभयं नगरं मज्झंमज्झेणं० जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, आभिसेक्कं हत्थिं ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुभइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चोरुभित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसियसमज्जिओवलित्तं-जाव-सुगंधिवरगंध गंधियंगंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

तए णं से उद्दायणे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी --

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! केसिस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं एवं रायाभिसेओ-जाव-परमाउं पालयाहि, इट्ठजण-संपरिवुडे सिंधूसोवीरपामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं वीयीभयपामोक्खाणं तिण्णि तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं महसेणपामोक्खाणं दसण्हं राईणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसरसेणावच्चं कारेमाणे, पालेमाणे विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ।।

तए णं से केसी कुमारे राया जाए--महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे-जाव-रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।

उद्दायणस्स पव्वज्जा

५३८ तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायाणं आपुच्छइ ।।

तए णं से केसी राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ--एवं जहा जमालिस्स तहेव सब्भितरबाहिरियं तहेव-जाव-निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेंति ।। तए णं से केसी राया अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिपाल-सद्धिं-संपरिवुडे उद्दायणं रायं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयावेति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं जहा जमालिस्स -जाव-महया-महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी--

भण सामी ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? किणा वा ते अट्ठो ?

तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायं एवं वयासी--

इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणियं, कासवगं च सद्दावियं--एवं जहा जमालिस्स, नवरं--पउमावती अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पयोगदूसहा ।।

तए णं से केसी राया दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, रयावेत्ता उद्दायणं रायं सेया-पीतएहिं कलसेहिं ण्हावेति, ण्हावेत्ता सेसं जहा जमालिस्स-जाव-चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तहेव अम्मधाती, नवरं पउमावती हंस-लक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता उद्दायणस्स रण्णो दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा सेसं तं चेव-जाव-छत्तादीए तित्थगराइसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ ।।

तए णं सा पउमावती देवी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्न-मुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी उद्दायणं रायं एवं वयासी--

जइयव्वं सामी ! घडियव्वं सामी ! परक्कमियव्वं सामी ! अस्सिं च णं अट्ठे नो पमादेयव्वं त्ति कट्टु केसी राया पउमावती य समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

तए णं से उद्दायणे राया समयेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ सेसं जहा उसभदत्तस्स-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

अभीयीकुमारस्स उद्दायणं पइ वेरभावणा कूणियसमीवगमणं य

५३९ तए णं तस्स अभीयीस्स कुमारस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--एवं खलु अहं उद्दायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए णं से उद्दायणे राया ममं अवहाय नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए--इमेणं एयारूवेणं महया अप्प-त्तिएणं मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निग्गच्छित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूणियं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तत्थ वि णं से विउलभोगसमितिसमन्नागए यावि होत्था। तए णं से अभीयीकुमारे समणोवासए यावि होत्था--अभिगयजीवाजीवे-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, उद्दायणम्मि रायरिसिम्मि समणुबद्धवेरे यावि होत्था ।।

अभीयीकुमारस्स असुरदेवेसु उप्पत्ती

५४० तेणं कालेण तेणं समएणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोयट्ठि असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

तए णं से अभीयीकुमारे बहूइं वासइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोयट्ठीए आयावा-असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि आयावाअसुरकुमारावासंसि आयावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगतियाणं आयावगाणं असुरकुमाराणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं अभीयीस्स वि देवस्स एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता।।

से णं भंते! अभीयीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति।।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।।

भग० स० १३, उ० ६।

---

४१. महावीरतित्थे जिणपालिय-जिणरक्खियणायं

चंपाए मायंदीसत्थवाहदारया

५४१ तेणं कालेणं तेणं समएणं चपा नामं नयरी। पुण्णभद्दे चेइए।।

तत्थ णं मायंदी नामं सत्थवाहे परिवसइ--अड्ढे-जाव-अपरिभूए। तस्स णं भद्दा नामं भारिया। तीसे णं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा--जिणपालिए य जिणरक्खिए य।।

जिणपालियजिणरक्खियाणं समुद्दजत्ता

५४२ तए णं तेसिं मागंदिय-दारगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था--"एवं खलु अम्हे लवण-समुद्दं पोयवहणेणं एक्कारसवाराओ ओगाढा। सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! दुवालसमंपि लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी--

एवं खलु अम्हे अम्मयाओ! लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारसवाराओ ओगाढा। सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया। तं इच्छामो णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमंपि लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए।।

तए णं ते मागंदिय-दारए अम्मापियरो एवं वयासी--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"इमे भे जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणिमोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि-जाव-आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोह ताव जाया ! विपुले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए । किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं ? एवं खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोव-सग्गा यावि भवइ । तं मा णं तुब्भे दुवे पुत्ता दुवालसमंपि लवण समुद्दं पोयवहणेणं ओगाहेह । मा हु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ।।" तए णं ते मागंदिय-दारगा अम्मापियरो दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी--"एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारसवाराओ लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाढा । सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया । तं सेयं खलु अम्हं अम्मयाओ ! दुवालसं पि लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए "।।

तए णं ते मागंदिय-दारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुमण्णित्था ।।

तए णं ते मागंदिय दारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, जहा अरहन्नगस्स -जाव-लवणसमुद्दं बहूइं जोयणसयाइं ओगाढा ।।

नावा-भंगो

५४३ तए णं तेसिं मागंदिय-दारगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा---अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे कालियवाए-तत्थ-समुट्ठिए ।।

तए णं सा नावा तेणं कालियवाएणं आहुणिज्जमाणी-आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी-संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी-संखोभिज्जमाणी सलिल-तिक्ख-वेगेहिं आयट्टिज्जमाणी-आयट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि करतलाहते विव तिंदूसए तत्थेव-तत्थेव ओवयमाणी य उप्पयमाणी य,

उप्पयमाणी विव धरणीयलाओ सिद्धविज्जा विज्जाहरकन्नगा,

ओवयमाणी विव गगणतलाओ भट्ठविज्जा विज्जाहरकन्नगा,

विपलायमाणी विव महागरुल--वेग-वित्तासियया भुयगवरकन्नगा,

धावमाणी विव महाजण-रसियसद्द-वित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी,

निगुंजमाणी विव गुरुजण-दिट्ठावराहा सुजणकुलकन्नगा,

घुम्ममाणी विव वीचि-पहार-सय-ताडिया, गलिय-लंबणा विव गगणतलाओ,

रोयमाणी विव सलिलगंथिविप्पइरमाण-थोरंसुवाएहिं नववहू उवरयभत्तुया,

विलवमाणी विव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी,

झायमाणी विव कवड-च्छोम-प्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया,

नीससमाणी विव महाकंतार-विणिग्गय-परिस्संता परिणयवया अम्मया,

सोयमाणी विव तव-चरण-खीण-परिभोगा चवणकाले देववरवहू,

संचुण्णियकट्ठ-कूवरा, भग्गमेढि-मोडिय-सहस्समाला, सूलाइय-वंकपरिमासा, फलहंतर-तडतडेंत-फुट्टंत-संधिवियलंत-लोहकीलिया, सव्वंग-वियंभिया, परिसडियरज्जुविसरंतसव्वगत्ता, आमगमल्लगभूया, अकयपुण्ण-जणमणोरहो विव चिंतिज्जमाणगुरुई हाहाक्कय-कण्णधार-नाविय-वाणियगजण-कम्मकर-विलिविया नाणाविह-रयण-पणिय-संपुण्णा बहूहिं पुरिससएहिं रोयमाणेहिं-जाव-विलवमाणेहिं एगं महं अंतो जलगयं गिरिसिहरमासाइत्ता संभग्गकूवतोरणा मोडियज्झयदंडा वलयसयखंडिया करकरस्स तत्थेव विद्दवं उवगया ।।

तए णं तीए नावाए भिज्जमाणीए ते बहवे पुरिसा विपुल-पणिय-भंडमायाए अंतोजलंमि निमज्जाविया यावि होत्था ।।

मागंदियदारया फलगखंडासादणेण रयणदीवे संपत्ता

५४४ तए णं ते मागंदिय-दारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी निउणसिप्पोवगया बहूसु पोयवहण-संपराएसु कयकरणा लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं महं फलगखंडं आसादेंति ।।

जंसि च णं पएसंसि से पोयवहणे विवण्णे तंसि च णं पएसंसि एगे महं रयणदीवे नामं दीवे होत्था---अणेगाइं जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अणेगाइं जोयणाइं परिक्खेवेणं नाणादुमसंड-मंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाईए-जाव-पडिरूवे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए यावि होत्था--अब्भुग्गयमूसिय-पहसिए-जाव-सस्सिरीयरूवे पासाईए-जाव-पडिरूवे। तत्थ णं पासायवडेंसए रयणदीव-देवया नामं देवया परिवसइ--पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया।

तस्स णं पासायवडेंसयस्स चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा--किण्हा किण्होभासा।।

तए णं ते मागंदिय-दारगा तेणं फलयखंडेणं ओवुज्झमाणा-ओवुज्झमाणा रयणदीवंतेणं संवूढा यावि होत्था।।

तए णं ते मागंदिय-दारगा थाहं लभंति, २ मुहुत्तंतरं आसत्थंति, २ फलगखंडं विसज्जेंति, २ रयणदीवं उत्तरंति, २ फलाणं मग्गण-गवेसणं करेंति, २ फलाइं आहारेंति, २ नालिएराणं मग्गण-गवेसणं करेंति, २ नालिएराइं फोडेंति, २ नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गायाइं अब्भंगेंति, २ पोक्खर-णीओ ओगाहेंति, २ जलमज्जणं करेंति, २ पोक्खरणीओ पच्चुत्तरंति, २ पुढविसिलावट्टयंसि निसीयंति, निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासण-वरगया चंपं नयरिं अम्मापिउआपुच्छणं च लवण-समुद्दोत्तारणं च कालियवायसम्मुच्छणं च पोयवहणविवत्तिं च फलयखंडस्सासायणं च रयण-दीवोत्तारं च अणुचिंतेमाणा-अणुचिंतेमाणा ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया झियायंति।।

रयणदीवदेवयाए सद्धिं भोगभुंजणं

५४५ तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए ओहिणा आभोएइ, असि-फडग-वग्ग-हत्था सत्तट्ठतलप्पमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-देवगईए वीईवयमाणी-वीईवयमाणी जेणेव मागंदिय-दारया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ता ते मागंदिय-दारए खर-फरुस-निट्ठुरवयणेहिं एवं वयासी--

"हंभो मागंदिय-दारया ! अपत्थियपत्थिया ! जइ णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह, तो भे अत्थि जीवियं; अहण्णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो विहरह तो भे इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेणं खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउआहिं उवसोहियाइं तालफलाणि व सीसाइं एगंते एडेमि।।

तए णं ते मागंदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"जण्णं देवाणुप्पिया वइस्ससि तस्स आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठिस्सामो।।"

तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए गेण्हइ, २ जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ, २ असुभपोग्गलावहारं करेइ, २ सुभपोग्गल-पक्खेवं करेइ, तओ पच्छा तेहिं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ, कल्लाकल्लिं च अमयफलाइं उवणेइ।।

रयणदीवदेवयाए लवणसमुद्दसच्छीकरणत्थं गमणं वणसंडे रमणादेसो य

५४६ तए णं सा रयणदीवदेवया सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवण-समुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेयव्वे त्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइ पूइयं दुरभिगंधमचोक्खं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वं ति कट्टु निउत्ता।।
तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए एवं वयासी--

"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा तं चेव-जाव-निउत्ता। तं-जाव-अहं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइ पूइयं दुरभिगंधमचोक्खं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडेंसए सुहंसुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह। जइ णं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरत्थिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा, तं जहा--पाउसे य वासारत्ते य।

गाहा--

तत्थ उ--कंदल-सिलिंध-दंतो, निउर-वरपुप्फपीवरकरो। कुडयज्जुण-नीव-सुरभिदाणो, पाउसउऊ गयवरो साहीणो।।१।।

तत्थ य--सुरगोवमणि-विचित्तो, दद्दुरकुलरसिय-उज्झररवो। बरहिणवंद-परिणद्धसिहरो, वासारत्तउऊ पव्वओ साहीणो।।२।।

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहूसु वावीसु य-जाव-सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य-जाव-कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरिज्जाह। जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा, तं जहा--सरदो य हेमंतो य।

गाहा--

तत्थ उ--सण-सत्तिवण्ण-कउहो, नीलुप्पल-पउम-नलिण-सिंगो। सारस-चक्काय-रवियघोसो, सरयउऊ गोवई साहीणो।।३।।
तत्थ य--सियकुंद-धवलजोण्हो, कुसुमिय-लोद्धवणसंड-मंडलतलो। तुसार-दगधार-पीवरकरो, हेमंतउऊ ससी सया साहीणो।।४।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहूसु वावीसु य-जाव-सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य-जाव-कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरिज्जाह । जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह । तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा तं जहा--वसंते य गिम्हे य ।

गाहा--

तत्थ उ--सहकार-चारुहारो, किंसुय-कणियारासोगमउडो । ऊसियतिलग-बकुलायवत्तो, वसंतउऊ नरवई साहीणो ।।५।।

तत्थ य--पाडल-सिरीस-सलिलो, मल्लिया-वासंतिय-धवलवेलो । सीयलसुरभि-निल-मगरचरिओ, गिम्हउऊ सागरो साहीणो ।।६।।

तत्थ णं बहूसु वावीसु य-जाव-सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य-जाव-कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरेज्जाह ।

रयणदीवदेवयाए मांगदीपुत्ताणं दट्ठीविससप्पसमीवे गमणनिसेहो

५४७ जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह ममं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठेज्जाह, मा णं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह । तत्थ णं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे महाविसे अइकाए महाकाए जहा तेयनिसग्गेसि-महिस-मूसा-कालए नयणविसरोसपुण्णे अंजणपुंज-निरयप्पगासे रत्तच्छे जमल-जुयल-चंचल चलंतजीहे धरणितल-वेणिभूए उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल-कक्खड-वियड-फडाडोव-करणदच्छे लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोसे अणागलिय चंड-तिव्वरोसे समुहिय-तुरिय-चवलं धमधमंते दिट्ठीविसे सप्पे परिवसइ । मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ"--ते मागंदिय-दारए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदति, वदित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए देवगईए लवणसमुद्दं तिसत्त-खुत्तो अणुपरियट्टेउं पयत्ता यावि होत्था ।।

मागंदियपुत्ताणं वणसंडगमणं

५४८ तए णं ते मागंदिय-दारया तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडेंसए सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी--
एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवया अम्हे एवं वयासी--

एवं खलु अहं सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा निउत्ता-जाव-मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्लं वणसंडं गमित्तए--अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति, २ तत्थ णं वावीसु य-जाव-आलीघरएसु य-जाव-सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरंति ।।

तए णं ते मागंदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति, २ तत्थ णं वावीसु य-जाव-आलीघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरंति ।।

तए णं ते मागंदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति, २ तत्थ णं वावीसु य-जाव-आलीघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरंति ।।

मागंदियपुत्ताणं देवयानिसिद्धट्ठाणे गमणं

५४९ तए णं ते मागंदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी--
एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी--
एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा निउत्ता-जाव-मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ । तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं । तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तओ णं गंधे निद्धाइ,
से जहानामए--अहिमडे इ वा-जाव-अणिट्ठतराए चेव ।।

वणसंडे देवयाकयसूलाइयपुरिसदंसणं

५५० तए णं ते मागंदिय-दारगा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइं पिहेंति, पिहेत्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया । तत्थ णं महं एगं आघयणं पासंति--अट्ठियरासि-सय-संकुलं भीम-दरिसणिज्जं । एगं च तत्थ सूलाइयं पुरिसं कलुणाइं कट्ठाइं विस्सराइं कूवमाणं पासंति, भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया जेणेव से सूलाइए पुरिसे तेणेव उवागच्छंति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छित्ता तं सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी--एस णं देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे ? तुमं च णं के ? कओ वा इहं हव्वमागए ? केण वा इमेयारूवं आवइं पाविए ?

तए णं से सूलाइए पुरिसे ते मागंदिय-दारगे एवं वयासी--एस णं देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए आघयणे । अहं णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागंदए आसवाणियए विपुलं पणियभंडमायाए पोयवहणेणं लवणसमुद्दं ओयाए । तए णं अहं पोयवहण-विवत्तीए निब्बुड्ड-भंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि । तए णं अहं ओवुज्झमाणे-ओवुज्झमाणे रयणदीवंतेणं संवूढे । तए णं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ, पासित्ता ममं गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ । तए णं सा रयणदीव-देवया अण्णया कयाइ अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एयारूवं आवइं पावेइ । तं न नज्जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भं पि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ?

मायंदियदारगेहिं नित्थारपुच्छा

५५१ तए णं ते मागंदिय-दारगा तस्स सूलाइगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बलियतरं भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी--

"कहण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थरेज्जामो ?"

तए णं से सूलाइए पुरिसे ते मागंदिय-दारगे एवं वयासी--

"एस णं देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसइ । तए णं से सेलए जक्खे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया-महया सद्देणं एवं वदइ--कं तारयामि ? कं पालयामि ? तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह, करेत्ता जन्नुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा विहरह । जाहे णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वएज्जा--कं तारयामि ? कं पालयामि ? ताहे तुब्भे एवं वदह--अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि । सेलए भे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थारेज्जा । अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ?"

मायंदिय दारएहिं सेलगजक्खपज्जुवासणा

५५२ तए णं ते मागंदिय-दारगा तस्स सूलाइयस्स पुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेंति, करेत्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं-जाव-ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेंति, करेत्ता महरिहं पुप्फच्चणियं करेंति, करेत्ता जन्नुपायवडिया सुस्सूसमाणा नमंसमाणा पज्जुवासंति ।।

तए णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वयासी--कं तारयामि ? कं पालयामि ?

तए णं ते मागंदिय-दारगा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--"अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि ।।"

सेलगजक्खेण रक्खणोवायकहणं

५५३ तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदिय-दारए एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणाणं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं उवसग्गं करेहिइ । तं जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा तो भे अहं पट्ठाओ विहुणामि । अह णं तुब्भे रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढाह नो परियाणह नो अवयक्खह तो भे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थारेमि ।।

तए णं ते मागंदिय-दारगा सेलगं जक्खं एवं वयासी--जं णं देवाणुप्पिया वइस्संति तस्स णं आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठिस्सामो ।

तए णं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहण्णित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ, दोच्चं पि तच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहण्णित्ता एगं महं आसरूवं विउव्वइ, विउवित्ता मागंदिय दारए एवं वयासी--हं भो मागंदिय-दारया ! आरुहह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठिं सि ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मागंदियदारगाणं सेलगपट्ठारोहणं

५५४ तए णं ते मागंदिय-दारया हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति, करेत्ता सेलगस्स पिट्ठं दुरूढा ।।

तए णं से सेलए ते मांगदिय-दारए पिट्ठे दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए दिव्वाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

रयणदीवदेवयाकया पडिलोमा उवसग्गा

५५५ तए णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टइ, जं तत्थ तणं वा-जाव-एगंते एडेइ, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते मागंदिय-दारए पासायवडेंसए अपासमाणी जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छइ-जाव-सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता तेसिं मागंदिय-दारगाणं कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले, एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ, ते मागंदिय-दारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए देवगईए जेणेव मागंदिय-दारया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी--

"हंभो मागंदिय-दारगा ! अपत्थियपत्थया ! किण्णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा ? तं एवमवि गए जइ णं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं । अह णं नावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेणं खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउआहिं अवसोहियाइं तालफलाणि व सीसाइं एगंते एडेमि "।।

तए णं ते मागंदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयण-दीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढंति नो परियाणंति नो अवयक्खंति अणाढामाणा अपरियाणमाणा अणवयक्खमाणा सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयंति ।।

रयणदीवदेवयाकया अणुकूला उवसग्गा

५५६ तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए जाहे नो संचाएइ बहूहिं पडिलोमेहिं उवसग्गेहिं चालित्तए वा लोभित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे महुरेहिं सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं उवसग्गेउं पयत्ता यावि होत्था--हंभो मागंदिय-दारगा ! जइ णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिंडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वाइं अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयह ! ।।

तए णं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता एवं वयासी--

"निच्चं पि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा । निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे । निच्चं पि य णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा । निच्चं पि य णं ममं जिणरक्खिए इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । जइ णं ममं जिणपालिए रोयमाणिं कंदमाणिं सोयमाणिं तिप्पमाणिं विलवमाणिं नावयक्खइ, किण्णं तुमं पि जिणरक्खिया ! ममं रोयमाणिं कंदमाणिं सोयमाणिं तिप्पमाणिं विलवमाणिं नावयक्खसि ?

तए णं--सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं नाऊण उवरिं मागंदियदारगाणं दोण्हं पि दोसकलिया सललिय णाणाविहचुण्णवासमीसं (वासियं) दिव्वं घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी णाणामणिकणगरयणघंटियाखिखि-णिणेऊरमेहलभूसणरवेणं दिसाओ विदिसाओ पूरयंती, वयणमिणं बेति सा सकलुसा--

"होल ! वसुल ! गोल ! णाह ! दइत ! पिय ! रमण ! कंत ! सामिय ! निग्घिण ! णित्थक्क ! छिण्ण ! निक्किय ! अकयण्णुय ! सिढिलभाव ! निल्लज्ज ! लुक्ख ! अकलुण ! जिणरक्खिय ! मज्झं हिययरक्खगा !,

"ण हु जुज्जसि एक्किकयं अणाहं अबंधवं तुज्झ चलणओवायकारियं उज्झिउं अहण्णं,

"गुणसंकर ! अहं तुमे विणा ण समत्था वि जीविउं खणं पि, इमस्स उ अणेग झस-मगर-विविधसावयसयाउलधरस्स रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एहि णियत्ताहि, जइ सि कुविओ खमाहि एक्कावराहं मे,

"तुज्झ य विगयघणविमलससिमंडलागारसस्सिरीयं सारयनय कमलकुमुदकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभं नयणं वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे, अवलोएहि ता इओ ममं णाह ! जा ते पेच्छामि वयणकमलं"

एवं सप्पणयसरलमहुराइं पुणो पुणो कलुणाइं वयणाइं जंपमाणी सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ।

जिणरक्खियविवत्ती

५५७ तए णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणहरेणं तेहि य सप्पणय-सरल-महुर-भणिएहिं संजाय-विउण-राए रयण-दीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोवण्णसिरिं च दिव्वं सरभस-उवगूहियाइं बिब्बोय-विलसियाणि य विहसिय-सकडक्खदिट्ठि-निस्ससिय-मलिय-उवललिय-थिय-गमण-पणयखिज्जिय-पसाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमती अवसे कम्मवसगए अवयक्खइ मग्गतो सविलियं ।।

तए णं जिणरक्खियं समुप्पण्णकलुणभावं मच्चु-गलत्थल्ल-णोल्लियमइं अवयक्खंतं तहेव जक्खे उ सेलए जाणिऊण सणियं-सणियं उव्विहइ नियगपिट्ठाहि विगयसत्थ ।।

तए णं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतं--'दास ! मओ' सि त्ति जंपमाणी अपत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहाहिं आरसंतं, उड्ढं उव्विहइ अंबरतले, ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसि-कुसुमप्पगासेण असिवरेण खंडाखंडिं करेइ, करेत्ता तत्थेव विलवमाणं तस्स य सरस-वहियस्स घेत्तूणं अंगमंगाइं सरुहिराइं उक्खित्तबलिं चउद्दिसिं करेइ, सा पंजली पहिट्ठा ।।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे-जाव-चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ--जहा व से जिणरक्खिए ।

गाहा–

छलिओ अवयक्खंतो, निरावयक्खो गओ अविग्घेणं । तम्हा पवयणसारे, निरावयक्खेण भवियव्वं ।।१।।

भोगे अवयक्खंता, पडंति संसारसागरे घोरे । भोगेहिं निरवयक्खा, तरंति संसारकंतारं ।।२।।

जिणपालियस्स चंपागमणं

५५८ तए णं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ, बहूहिं अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खरएहि य महुरेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

तए णं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पट्ठाओ ओयारेइ, ओयारेत्ता एवं वयासी--एस णं देवाणुप्पिया ! चंपा नयरी दीसइ त्ति कट्टु जिणपालियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

तए णं से जिणपालिए चंपं नयरिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे तिप्पमाणे विलवमाणे जिणरक्खिय-वावत्तिं निवेदेइ ।।

तए णं जिणपालिए अम्मापियरो मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेण सद्धिं रोयमाणा कंदमाणा सोयमाणा तिप्पमाणा विलवमाणा बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करेत्ता कालेणं विगयसोया जाया ।।

तए णं जिणपालियं अण्णया कयाइ सुहासणवरगयं अम्मापियरो एवं वयासी--कहण्णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?

तए णं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवाय-संमुच्छणं च पोयवहण-विवत्तिं च फलहखंड-आसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवयागिण्हणं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवया-आघयणं च सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्ख-आरुहणं च रयणदीवदेवया-उवसग्गं च जिणरक्खियवावत्तिं च लवणसमुद्दउत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेइ ।।

तए णं से जिणपालिए अप्पसोगे-जाए-जाव-विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणपालियस्स पव्वज्जा

५५९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। जिणपालिए धम्मं सोच्चा पव्वइए। एगारसंगवी। मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। दो सागरोवमाइं ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ –जाव–सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।

एवामेव समणाउसो! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे माणुस्सए कामभोगे नो पुणरवि आसायइ पत्थयइ पीहेइ, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे-जाव-चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ––जहा व से जिणपालिए ।।[1]

णायाधम्माकहाओ सु० १ अ-९।

---

४२. महावीरतित्थे कालसवेसियपुत्ते

कालासवेसियस्स चाउज्जामधम्माओ पंचमहव्वइयधम्मउवसंपज्जणा

५६० तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी––सद्दहाहि अज्जो! पत्तियाहि अज्जो! रोएहि अज्जो! से जहेयं अम्हे वयामो ।।

तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वदासी––इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ।।

५६१ तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।।

तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

भग० श० १, उ० ९।

---

१. वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

जह रयणदीवदेवी, तह एत्थं अविरई महापावा। जह लाहत्थी वणिया, तह सुहकामा इहं जीवा ।।१।।
जह तेहिं भीएहिं, दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो। संसारदुक्खभीया, पासंति तहेव धम्मकहं ।।२।।
जह तेण तेसि कहिया, देवी दुक्खाण कारणं घोरं। तत्तो चिय नित्थारो, सेलगजक्खाउ नन्नतो ।।३।।
तह धम्मकहो भव्वाण, साहए दिट्ठअविरइसहावा। हेउभूया, विसया विरयंति जीवाणं ।।४।।
सत्ताण दुहत्ताणं सरणं चरणं जिणिदपण्णत्तं। आणंदरूव-निव्वाण-साहणं तह य दंसेइ ।।५।।
जह तेसिं तरियव्वो, रुद्दसमुद्दो तहेव संसारो। जह तेसि सगिहगमणं, निव्वाणगमो तहा एत्थ ।।६।।
जह सेलगपट्ठाओ, भट्ठो देवीए मोहियमई उ। सावय-सहस्सपउरम्मि, सायरे पाविओ निहणं ।।७।।
तह अविरईइ नडिओ, चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णो। निवडइ अगाह-संसार-सागरं णंतमवि कालं ।।८।।
जह देवीए अक्खोहो, पत्तो सट्ठाण-जीवियसुहाइं। तह चरणठिओ साहू, अक्खोहो जाइ निव्वाणं ।।९।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. महावीरतित्थे उदए पेढालपुत्ते

नालंदाए लेवे समणोवासए

५६२ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धे, वण्णओ-जाव-पडिरूवे ।।

तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं णालंदा णामं बाहिरिया होत्था--अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा पासादीया-जाव-पडिरूवा ।।

तत्थ णं णालंदाए बाहिरियाए लेवे णामं गाहावई होत्था--अड्ढे-जाव-अपरिभूए यावि होत्था ।।

से णं लेवे णामं गाहावई समणोवासए यावि होत्था--अभिगयजीवाजीवे-जाव-णिग्गंथिए पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ते "अयमाउसो ! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परघरदारप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पीढ-फलग-सेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

लेवस्स उदगसालाए समीवे गोयमविहारो

५६३ तस्स णं लेवस्स गाहावइस्स णालंदाए बाहिरियाए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं सेसदविया णाम उदगसाला होत्था--अणेग-खंभसयसण्णिविट्ठा पासादीया-जाव-पडिरूवा ।।

तीसे णं सेसदवियाए उदगसालाए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं हत्थिजामे णामं वणसंडे होत्था--किण्हे०, वण्णओ वणसंडस्स ।। तस्सि च णं गिहपदेसंसि भगवं गोयमे विहरइ, भगवं च णं अहे आरामंसि ।।

उदगपेढालपुत्तस्स पण्हत्थं गोयमससीवे आगमणं

५६४ अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे णियंठे मेदज्जे गोत्तेणं जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी--"आउसंतो ! गोयमा ! अत्थि खलु मे केइ पदेसे पुच्छियव्वे, तं च मे आउसो ! अहासुयं अहादरिसियमेव वियागरेहि ।।"

सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी--"अवियाइ आउसो ! सोच्चा णिसम्म जाणिस्सामो ।।"

उदगपेढालपुत्तस्स समणोवासगपच्चक्खाणविसए पण्हो

५६५ सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी--

"आउसंतो ! गोयमा ! अत्थि खलु कम्मारपुत्तिया णाम समणा णिग्गंथा तुम्हागं पवयणं पवयमाणा गाहावइं समणोवासगं उवसंपण्णं एवं पच्चक्खावेंति--'णण्णत्थ अभिजोगेणं, गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं ।'

एवं ण्हं पच्चक्खंताणं दुप्पच्चक्खायं भवइ । एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं दुपच्चक्खावियं भवइ । एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा अइयरंति सयं पइण्णं ।

कस्स णं तं हेउं ।

संसारिया खलु पाणा--

थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति । तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति ।

थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति । तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेसिं च णं थावरकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं।

एवं ण्हं पच्चक्खंताणं सुपच्चक्खायं भवइ।

एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं सुपच्चक्खावियं भवइ।

एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा णाइयरंति सयं पइण्णं--'णण्णत्थ अभिजोगेणं, गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसभूएहिं पाणेहिं णिहाय दंडं।' एवं सइ भासाए परिकम्मे विज्जमाणे जे ते कोहा वा लोहा वा परं पच्चक्खावेंति। अयं पि णो उवएसे किं णो णेयाउए भवइ? अवि याइं आउसो! गोयमा! तुब्भं पि एयं एवं रोयइ?"

भगवओ गोयमस्स उत्तरं

५६६ सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी--"आउसंतो! उदगा! णो खलु अम्हं एयं एवं रोयइ--जे ते समणा वा माहणा वा एवमाइक्खंति, एवं भासेंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति णो खलु ते समणा वा णिग्गंथा वा भासं भासंति, अणुतावियं खलु ते भासं भासंति, अब्भाइक्खंति खलु ते समणे समणोवासए वा। जेहिं वि अण्णेहिं पाणेहिं-जाव-सत्तेहिं संजमयंति ताणि वि ते अब्भाइक्खंति।

कस्स णं तं हेउं?

संसारिया खलु पाणा--

तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति।

तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति।

तेसिं च णं तसकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं अघत्तं।।"

उदगपेढालपुत्तस्स पडिपण्हो

५६७ सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी--"कयरे खलु आउसंतो! गोयमा! तुब्भे वयह तसपाणा तसा आउ अण्णहा?"

'तसभूया पाणा तसा तसा पाणा तसे' त्ति एकट्ठं इति गोयमवयणं

५६८ सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी--"आउसंतो! उदगा! जे तुब्भे वयह तसभूया पाणा तसा ते वयं वदामो तसा पाणा तसा। जे वयं वयामो तसा पाणा तसा ते तुब्भे वदह तसभूया पाणा तसा। एए संति दुवे ठाणा तुल्ला एगट्ठा। किमाउसो! इमे भे सुप्पणीयतराए भवइ--तसभूया पाणा तसा? इमे भे दुप्पणीयतराए भवइ--तसा पाणा तसा? तओ एगमाउसो! पलिकोसह, एक्कं अभिणंदह। अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।

भगवं च णं उदाहु--संतेगइया मणुस्सा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ--णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। वयं णं अणुपुव्वेणं गोत्तस्स लिस्सिस्सामो। ते एवं संखसावेंति--"णण्णत्थ अभिजोगेणं गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं"। तं पि तेसिं कुसलमेव भवइ।।

तसा वि वुच्चंति तसा तससंभारकडेणं कम्मुणा, णामं च णं अब्भुवगयं भवइ। तसाउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, तसकायट्ठिइया ते ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता थावरत्ताए पच्चायंति। थावरा वि वुच्चंति थावरा थावरसंभारकडेणं कम्मुणा, णामं च णं अब्भुवगयं भवइ। थावराउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, थावरकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता भुज्जो पारलोइयत्ताए पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया।।

उदगपेढालपुत्तस्स सपक्ख-ठावणा

५६९ सवायं उदए पेढालपुत्ते भयवं गोयमं एवं वयासी--"आउसंतो! गोयमा! णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स 'एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते। कस्स णं तं हेउं?

संसारिया खलु पाणा--

थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति ।

थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति ।

तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति ।

तेसिं च णं थावरकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं ।।'

भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तरं

५७० सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी––"णो खलु आउसो ! अस्माकं वत्तव्वएणं तुब्भं चेव अणुप्पवाएणं अत्थि णं से परियाए जे णं समणोवासगस्स सव्वपाणेहिं-जाव-सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते भवइ ।

कस्स णं तं हेउं ?

संसारिया खलु पाणा––

तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति । थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति ।

तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति । थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति ।

तेसिं च णं तसकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं अघत्तं ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––'णत्थि णं से केइ परियाए जंसि जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते' । अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

समणदिट्ठंतो

५७१ भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा––आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु संतेगइया मणुस्सा भवंति । तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ––जे इमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता, एएसिं णं आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते । जे इमे अगारमावसंति, एएसिं णं आमरणंताए दंडे णो णिक्खित्ते ।

केई च णं समणे-जाव-वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता अगारं वएज्जा ?

हंता वएज्जा ।

तस्स णं तमगारत्थं वहमाणस्स से पच्चक्खाणे भग्गे भवइ ?

णो इणट्ठे समट्ठे ।

एवमेव समणोवासगस्स वि तसेहिं पाणेहिं दंडे णिक्खित्ते, थावरेहिं पाणेहिं दंडे णो णिक्खित्ते । तस्स णं तं थावरकायं वहमाणस्स से पच्चक्खाणे णो भग्गे भवइ । सेवमायाणह णियंठा ! सेवमायाणियव्वं ।।

५७२ भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा––आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु गाहावइणो वा गाहावइपुत्ता वा तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म धम्मस्सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा ?

हंता उवसंकमेज्जा ।

तेसिं च णं तहप्पगाराणं धम्मे आइक्खियव्वे ?

हंता आइक्खियव्वे ।

किं ते तहप्पगारं धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वएज्जा––इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेयाउयं संसुद्धं सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं अवितहं असंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं । एत्थ ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ।

इमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो तहा तुयट्टामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठेमो तहा उट्ठाए उट्ठेत्ता पाणाणं-जाव-सत्ताणं संजमेणं संजमामो त्ति वएज्जा ? हंता वएज्जा ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति पव्वावेत्तए ? हंता कप्पंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किं ते तहप्पगारा कप्पंति मुंडावेत्तए ? हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति सिक्खावेत्तए ? हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कंप्पंति उवट्ठावेत्तए ? हंता कप्पंति ।

तेसिं च णं तहप्पगाराणं सव्वपाणेहिं-जाव-सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते ? हंता णिक्खित्ते ।

ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा-जाव-वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता अगारं वएज्जा ? हंता वएज्जा ।

तस्स णं सव्वपाणेहिं सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते ? णो इणट्ठे समट्ठे ।

से जे से जीवे जस्स परेणं सव्वपाणेहिं-जाव-सव्वसत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते । से जे से जीवे जस्स आरेणं सव्वपाणेहिं-जाव-सव्व-सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते । से जे से जीवे जस्स इयाणिं सव्वपाणेहिं-जाव-सव्वसत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ । परेणं अस्संजए, आरेणं संजए, इयाणिं अस्संजए । अस्संजयस्स णं सव्वपाणेहिं-जाव-सव्वसत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ । सेवमायाणह णियंठा ! सेवमाया-णियव्वं ।।

५७३ भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा--आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु परिव्वायया वा परिव्वाइयाओ वा अण्णयरेहिंतो तित्थायतणेहिंतो आगम्म धम्मस्सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा ? हंता उवसंकमेज्जा ।

किं तेसिं तहप्पगाराणं धम्मे आइक्खियव्वे ? हंता आइक्खियव्वे ।

किं ते तहप्पगारं धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वएज्जा--इणमेव णिग्गंथ पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेयाउयं संसुद्धं सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं अवितहं असंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं । एत्थ ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति । इमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो तहा तुयट्टामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठेमो तहा उट्ठाए उट्ठेत्ता पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमामो त्ति वएज्जा ? हंता वएज्जा ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति पव्वावेत्तए ? हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति मुंडावेत्तए ? हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति सिक्खावेत्तए ? हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति उवट्ठावेत्तए ? हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ? हंता कप्पंति ।

ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा-जाव-वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता अगारं वएज्जा ? हंता वएज्जा ।

ते णं तहप्पगारा कप्पंति सभुंजित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ।

से जे से जीवे जे परेणं णो कप्पंति संभुंजित्तए ।

से जे से जीवे जे आरेणं कप्पंति संभुंजित्तए ।

से जे से जीवे जे इयाणिं णो कप्पंति संभुंजित्तए । परेणं अस्समणे, आरेणं समणे, इयाणिं अस्समणे । अस्समणेणं सद्धिं णो कप्पंति समणाणं णिग्गंथाणं संभुंजित्तए । सेवमायाणह णियंठा ! सेवमायाणियव्वं ।।

पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसणं

५७४ भगवं च णं उदाहु--णियंठा खलु पुच्छियव्वा--आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु संतेगइया समणोवासगा भवंति । तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ--णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, वयं णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा विहरिस्सामो । थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो-जाव-थूलगं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो, इच्छापरिमाणं करिस्सामो दुविहं तिविहेणं । मा खलु ममट्ठाए किंचि वि करेह वा कारवेह वा तत्थ वि पच्चक्खाइस्सामो । ते णं अभोच्चा अपिच्चा असि-णाइत्ता आसंदीपेढियाओ पच्चोरुहित्ता ते तह कालगया किं वत्तव्वं सिया ?

सम्मं कालगय त्ति वत्तव्वं सिया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

५७५ भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा--आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु संतेगइया समणोवासगा भवंति। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ--णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा विहरित्तए। वयं णं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया कालं अणवकंखमाणा विहरिस्सामो। सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो, एवं सव्वं मुसावायं सव्वं अदिण्णादाणं सव्वं मेहुणं सव्वं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो तिविहं तिविहेणं मा खलु ममट्ठाए किंचि वि करेह वा कारवेह वा करंतं समणुजाणेह वा, तत्थ वि पच्चक्खाइस्सामो। ते णं अभोच्चा अपिच्चा असिणाइत्ता आसंदीपेढियाओ पच्चोरुहित्ता ते तह कालगया किं वत्तव्वं सिया ?

सम्मं कालगय त्ति वत्तव्वं सिया।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

५७६ भगवं च णं उदाहु--संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा--महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा अहम्मिया-जाव-अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, 'हण' 'छिंद' 'भिंद' विगत्तगा लोहियपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचण-वंचण-माया-णियडि-कूड-कवड-साइसंपओगबहुला दुस्सीला दुव्वया दुप्पडियाणंदा असाहू। सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए-जाव-सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता भुज्जो सगमादाए दोग्गइगामिणो भवंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

५७७ भगवं च णं उदाहु--संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा--अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया-जाव-धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू। सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए-जाव-सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तओ भुज्जो सगमायाए सोग्गइगामिणो भवंति।

ते पाणावि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

५७८ भगवं च णं उदाहु--संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा--अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया-जाव-धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू। एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। -जाव-एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तओ भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५७९ भगवं च णं उदाहु––संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा––आरण्णिया आवसहिया गामंतिया कण्हुईरहस्सिया––जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ––णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विउंजंति––अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा, अहं ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा ।

एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा -जाव-वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं कालमासे कालं किच्चा अण्णयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं ठाणाइं उववत्तारो भवंति । तओ वि विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमोरूवत्ताए पच्चायंति ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते" । अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

५८० भगवं च णं उदाहु––संतेगइया पाणा दीहाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ । ते पुव्वामेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया, ते दीहाउया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

५८१ भगवं च णं उदाहु––संतेगइया पाणा समाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ । ते सममेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते समाउया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

५८२ भगवं च णं उदाहु––संतेगइया पाणा अप्पाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ । ते पुव्वामेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते अप्पाउया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

णवभंगेहिं पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसणं

५८३ भगवं च णं उदाहु––संतेगइया समणोवासगा भवंति । तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ––

णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालित्तए ।

णो खलु वयं संचाएमो अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया कालं अणवकंखमाणा विहरित्तए । वयं णं सामाइयं देसावगासियं––पुरत्था पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं एतावताव सव्वपाणेहिं-जाव-सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते पाणभूयजीवसत्तेहिं खेमंकरे अहमंसि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।

२. तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते, अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।

३. तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ परेणं चेव जे तसा थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।

४. तत्थ आरेणं जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंतए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, से महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।

५. तत्थ आरेणं जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तत्थ आरेणं चेव जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह––"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।

६. तत्थ परेणं जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ परेणं चेव जे तसा थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।

७. तत्थ परेणं जे तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणावि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।

८. तत्थ परेणं जे तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।"अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।

९. तत्थ परेणं जे तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तत्थ परेणं चेव जे तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

तस-थावर-पाणाणं अव्वोच्छित्ती

५८४ भगवं च णं उदाहु--ण एयं भूयं ण एयं भव्वं ण एयं भविस्सं जण्णं--तसा पाणा वोच्छिज्जिहिंति, थावरा पाणा भविस्संति। थावरा पाणा वोच्छिज्जिहिंति, तसा पाणा भविस्संति । अवोच्छिण्णेहिं तसथावरेहिं पाणेहि जण्णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वदह--"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।

उवसंहारो

५८५ भगवं च णं उदाहु--आउसंतो ! उदगा ! जे खलु समणं वा माहणं वा परिभासइ मित्ति मण्णइ आगमित्ता णाणं, आगमित्ता दंसणं, आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए से खलु परलोगपलिमंथत्ताए चिट्ठइ ।

जे खलु समणं वा माहणं वा णो परिभासइ मित्ति मण्णइ आगमित्ता णाणं, आगमित्ता दंसणं, आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए से खलु परलोगविसुद्धीए चिट्ठइ ।।

तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं अणाढायमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पहारेत्थ गमणाए ।।

भगवं च णं उदाहु--आउसंतो ! उदगा ! जे खलु तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा णिसम्म अप्पणो चेव सुहुमाए पडिलेहाए अणुत्तरं जोगखेमपयं लंभिए समाणे सो वि ताव तं आढाइ परिजाणेइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्याणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८६ तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी–"एएसि णं भंते ! पदाणं पुव्वि अण्णाणयाए अस्सवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अदिट्ठाणं अस्सुयाणं अमुयाणं अविण्णायाणं अणिज्जूढाणं अव्वोगडाणं अव्वोच्छिण्णाणं अणिसिट्ठाणं अणिवूढाणं अणुवहारियाणं एयमट्ठं णो सद्दहियं णो पत्तियं णो रोइयं।

एएसि णं भंते ! पदाणं एण्हिं जाणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं मुयाणं विण्णायाणं णिज्जूढाणं वोगडाणं वोच्छिण्णाणं णिसिट्ठाणं णिवूढाणं उवधारियाणं एयमट्ठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि 'एवमेयं जहा णं, तुब्भे वदह'।।

तए णं भगवं गोयमे उदगं पेढालपुत्तं एवं वयासी––"सद्दहाहि णं अज्जो ! पत्तियाहि णं अज्जो ! रोएहि णं अज्जो। एवमेयं जहा णं अम्हे वयामो।।"

उदयस्स चाउज्जामधम्माओ पंचमहव्वयगहणं

५८७ तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी––इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।।

तए णं भगवं गोयमे उदगं पेढालपुत्तं गहाय जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी––"इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।"

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि।।

तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

––त्ति बेमि।।

सूय० सु० २, अ० ७।

४४. महावीरतित्थे नंदीफलणायं

चंपाए धणसत्थवाहो

५८८ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। जियसत्तू राया।।
तत्थ णं चंपाए नयरीए धणे नामं सत्थवाहे होत्था––अड्ढे-जाव-अपरिभूए।।
तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था––रिद्धत्थिमिय-समिद्धा वण्णओ।।
तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था––महया० वण्णओ।।

धणस्स अहिच्छत्तगमणघोसणा

५८९ तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च––चउव्विहं भंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सगडी-सागडं सज्जेइ, सज्जेत्ता सगडी-सागडं भरेइ, भरेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिंघाडग-जाव-महापहपहेसु उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह–एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे विपुलं पणियं आदाय इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए, तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरंगे वा गोयमे वा गोव्वतिए वा गिहिधम्मे वा धम्मचिंतए वा अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावग-रत्तपड--निग्गंथप्पभिई पासंडत्थे वा गिहत्थे वा धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ, तस्स णं धणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ, अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ, अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ, अंतरा वि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ, सुहंसुहेण य अहिच्छत्तं संपावेइ त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा चंपाए नयरीए सिंघाडग-जाव-महापहपहेसु एवं वयासी––हंदि सुणंतु भगवंतो ! चंपानयरीवत्थव्वा ! बहवे चरगा ! वा-जाव-गिहत्था ! वा, जो णं धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ, तस्स णं धणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ-जाव-सुहंसुहेण य अहिच्छत्तं संपावेइ त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

तए णं तेसिं कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा चंपाए नयरीए बहवे चरगा य-जाव-गिहत्था य जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति ।।

तए णं धणे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य-जाव-गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ-जाव-अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, दलयित्ता एवं वयासी––गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह ।।
तए णं ते चरगा य-जाव-गिहत्था य धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि धणं सत्थवाहं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति ।।

धणकओ नंदीफलरुक्खोवभोगनिसेहो

५९० तए णं धणे सत्थवाहे सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्तंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावेत्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडी-सागडं जोयावेइ, जोयावेत्ता चंपाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता नाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे-वसमाणे सुहेहिं वसहि-पायरा–सेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडी-सागडं मोयावेइ, सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एयं वयासी––

तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह––"एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं बहवे नंदिफला नामं रुक्खा––किण्हा-जाव-पत्तिया पुप्फिया फलिया हरिया रेरिज्जमाणा सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति––मणुण्णा वण्णेणं मणुण्णा गंधेणं मणुण्णा रसेणं मणुण्णा फासेणं मणुण्णा छायाए ।

तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति । तं मा णं देवाणुप्पिया ! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा-जाव-हरियाणि वा आहरउ, छायाए वा वीसमउ, मा णं से वि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सउ । तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य-जाव-हरियाणि य आहारेह, छायासु वीसमह" त्ति घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

तए णं धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोएइ, जोएत्ता जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता दोच्चं पि तच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––
तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह––"एए णं देवाणुप्पिया ! ते नंदिफला रुक्खा किण्हा-जाव-मणुण्णा छायाए ।

तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ-जाव-अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ । तं मा णं तुब्भे तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा-जाव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारेह, छायाए वा वीसमह, मा णं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सह, अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य-जाव-आहारेह, छायाए वा वीसमह त्ति कट्टु घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह "। ते वि तहेव घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

निसेहानुसरणस्स फलं

५९१ तत्थ णं अत्थेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणा पत्तियमाणा रोयमाणा तेसिं नंदिफलाणं दूरंदूरेणं परिहरमाणा-परिहरमाणा अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य-जाव-आहारंति, छायासु वीसमंति ।। तेसि णं आवाए नोभद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा सुभरूवत्ताए सुभगंधत्ताए सुभरसत्ताए सुभफासत्ताए सुभछायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचसु कामगुणेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोववज्जइ, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे भवइ, परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थछेयणाणि य कण्णछेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं—हियय उप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व ते पुरिसा ।।

निसेहापालणे विपत्ती

५९२ तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, धणस्स, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य-जाव-आहारंति, छायासु वीसमंति तेसि णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति ।।

५९३ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए-समाणे पंचसु कामगुणेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ, से णं इहभवे-जाव-अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं संसारकंतारं भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व ते पुरिसा ।।

धणस्स अहिच्छत्तागमणं

५९४ तए णं से धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोयावेइ, जोयावेत्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता सगडी-सागडं मोयावेइ ।।

तए णं से धणे सत्थवाहे महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ ।।

तए णं ले कणगकेऊ राया हट्ठतुट्ठे धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं पडिच्छिइ, पडिच्छत्ता धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ, भंडविणिमयं करेइ, करेत्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं अभिसमण्णागए विपुलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणे विहरइ ।।

धणस्स पव्वज्जा

५९५ तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं ।।

धणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ ।।[1]

णायाधम्मकहाओ सु० १ अ० १५

---

१. वृत्तिकता समुद्धता निगमनगाथा—

चंपा इव मणुयगई, धणोव्व भयवं जिणो दएक्करसो । अहिच्छतानयरिसमं, इह निव्वाणं मुणेयव्वं ।।१।।
घोसणया इव तित्थंकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घं । चरगाइणो व्व एत्थं, सिवसुहकामा जिया बहवे ।।२।।
नंदिफलाइ व्व इहं, सिवपहपडिपण्णगाण विसया उ । तब्भक्खणाओ मरणं, जह तह विसएहि संसारो ।।३।।
तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा । परमानंदनिबंधण-सिवपुरगमणं मुणेयव्वं ।।४।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५. धणसत्थवाहकहाणयं

रायगिहेधणसत्थवाहदारिया सुसुमा

५९६ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था--वण्णओ ।।

तत्थ णं धणे नामं सत्थवाहे । भद्दा भारिया ।।

तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा--धणे धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए ।।

तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुसुमा नामं दारिया होत्था--सुमालपाणिपाया० ।।

चिलाय-दासचेडेण कुमार-कुमारीणं कीडणकाले तज्जणं

५९७ तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था--अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था ।।

तए णं से दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था, सुसुमं दारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं दारएहिं य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ।।

तए णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आडोलियाओ अवहरइ, अप्पेगइयाणं तिंदूसए अवहरइ, अप्पेगइयाणं पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं साडोल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ तालेइ ।।

५९८ तए णं ते बहवे दारगा य दारिया य डिंभया य डिंभिया य कुमारया य कुमारिया य रोयमाणा य कंदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य विलवमाणा य साणं साणं अम्मापिऊणं निवेदेंति ।।

चिलायस्स गिहाओ निक्कासणं

५९९ तए णं तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण कुमारयाण य कुमारियाण य अम्मापियरो जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभमाणा य धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं निवेदेंति ।।

तए णं से धणे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो निवारेइ, नो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ ।।

तए णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ अप्पेगइयाणं वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आडोलियाओ अवहरइ, अप्पेगइयाणं तिंदूसए अवहरइ, अप्पेगइयाणं पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं साडोल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ अवहसइ निच्छोडेइ निब्भेच्छेइ तज्जेइ तालेइ ।।

तए णं ते बहवे दारगा य दारिया य डिंभया य डिंभिया य कुमारया य कुमारिया य रोयमाणा य कंदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य विलवमाणा य साणं साणं अम्मापिऊणं निवेदेंति ।।

तए णं ते आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्कया मिसिमिसेमाणा जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं खिज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभमाणा य धणस्स सत्थावाहस्स एयमट्ठं निवेदेंति ।।

तए णं से धणे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं दारियाणं डिंभयाणं डिंभियाणं कुमारयाणं कुमारियाणं अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे चिलायं दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ उद्धंसइ निब्भच्छेइ निच्छोडेइ तज्जेइ उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ साओ गिहाओ निच्छुभइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ती

६०० तए णं चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरएसु य पाणघरएसु य सुहंसुहेणं परिवट्टइ ।।

तए णं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी, मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी जूयप्पसंगी वेसप्पसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था ।।

रायगिहसमीवे चोरपल्ली तत्थ य विजए चोरसेणावई

६०१ तए णं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था––विसम-गिरिकडग-कोलंब-सण्णिविट्ठा वंसीकलंकपागार-परिक्खित्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा एगदुवारा अणेगखंडी विदितजण-निग्गमप्पवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभजल-पेरंता सुबहुस्स वि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ।।

६०२ तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसई––अहम्मिए अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोई अहम्मसीलसमुदायारे अहम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ । हण-छिंद-भिंद-वियत्तए लोहियपाणी चंडे रुद्दे खुद्दे साहस्सिए उक्कंचण-वंचण-माया-नियडि-कवड-कूड-साइ-संपओग-बहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं दुपय-चउप्पय-मियपसु-पक्खि-सरिसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए अहम्मकेऊ समुट्ठिए बहुनगर-निग्गय-जसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही ।।

से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ।।

६०३ तए णं से विजए तक्कर-सेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अण्णेसिं च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ।।

तए णं से विजए चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे, विद्धंसेमाणे-विद्धंसेमाणे नित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ।।

चिलायस्स चोरपल्ली-गमणं चोरसेणावइणा विजयेण चोरियविज्जाए सिक्खा य

६०४ तए णं से चिलाए दासचेडए रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य धणिएहि य जूयकरेहि य परब्भवमाणे-परब्भवमाणे रायगिहाओ नगराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजयं, चोरसेणावइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।।

तए णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्ग-असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था । जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा नगरघायं वा गोग्गहणं वा बंदिग्गहणं वा पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुं पि कूवियबलं हय-महियपवरवीरघाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं पडिसेहेइ, पडिसेहेत्ता पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ ।।

तए णं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं बहूओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ ।।

चोरसेणावइस्स विजयस्स मच्चू

६०५ तए णं से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था ।।

तए णं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया-महया इड्ढीसक्कार-समुदएणं नीहरणं करेंति, करेत्ता, बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करेत्ता कालेणं विगयसोया जाया यावि होत्था ।।

चिलायस्य चोरसेणावइत्तं

६०६ तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते । अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोरनिगडीओ य सिक्खाविए। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता चिलायं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति ।। तए णं से चिलाए चोरसेणावई जाए--अहम्मिए अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणे अहम्मसीलसमुदायारे अहम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ।।

तए णं से चिलाए चोरसेणावई चोरनायगे बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अण्णेसिं च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ।।

से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ।।

तए णं से चिलाए चोरसेणावई रायगिहस्स नयरस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे विद्धंसेमाणे-विद्धंसेमाणे नित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ।।

चिलायस्स धणसत्थवाहगिहविलुंपणं सुन्सुमदारियाहरणं च

६०७ तए णं से चिलाए चोरसेणावई अण्णया कयाइ विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता ते पंच चोरसए आमंतेइ। तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसन्नं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेणं धूव-पुप्फ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी--"एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे धणे नामं सत्थवाहे अड्ढे। तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुंसुमा नामं दारिया---अहीणा-जाव-सुरूवा। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धणस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो। तुब्भं विपुले धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाले ममं सुंसुमा दारिया ।।"

तए णं ते पंच चोरसया चिलायस्स [एयमट्ठं?] पडिसुणेंति ।।

६०८ तए णं ते चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्चावरण्ह-कालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवए उप्पीलिय-सरासणपट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमलवरचिंधपट्टे गहियाउह-पहरणे माइय-गोमुहिएहिं फलएहिं, निक्किट्ठाहिं असिलट्ठीहिं, अंसगएहिं तोणेहिं, सज्जीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं दाहाहिं, ओसारियाहिं ऊरुघंटियाहिं, छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया-महया उक्किट्ठ-सीहनाय-बोल-कलकलरवेणं पक्खुभिय-महासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणे सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता रायगिहस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता दिवसं खवेमाणे चिट्ठति ।।

तए णं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्त-कालसमयंसि निसंत-पडिनिसंतंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइय-गोमुहिएहिं फलएहिं -जाव-मूइयाहिं ऊरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहे नयरे पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उदगवत्थिं परामुसइ आयंते चोक्खे परम सुइभूए तालुग्घाडिणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अच्छोडेइ, अच्छोडेत्ता कवाडं विहाडेइ, विहाडेत्ता रायगिहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं वयासी---"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए नामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागए धणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे। तं जे णं नवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे, से णं निग्गच्छउ" त्ति कट्टु जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिहं विहाडेइ ।।

६०९ तए णं से धणे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमइ ।।

तए णं से चिलाए चोरसेणावई धणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाएत्ता सुबहुं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिनिक्खमई, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नगरगुत्तिएहिं चोरनिग्गहो

६१० तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं धण-कणगं सुंसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं गहाय जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी--"एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता सुबहुं धण-कणगं सुंसुमं च दारियं गहाय रायगिहाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पडिगए। तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुंसुमाए दारियाए कूवं गमित्तए। तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विपुले धण-कणगे, ममं सुंसुमा दारिया ।।"

तए णं ते नगरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया जाव गहियाउहपहरणा महया-महया उक्किट्ठ-सीहनाय-बोल-कलकलरवेणं पक्खुभिय-महासमुद्द-रवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरसेणावई तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।।

तए णं ते नगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइं हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं पडिसेहेंति ।।

तए णं ते पंच चोरसया नगरगुत्तिएहिं हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसिं पडिसेहिया समाणा तं विपुलं धण-कणगं विच्छड्डुमाणा य विप्पकिरमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्था ।।

तए णं ते नगरगुत्तिया तं विपुलं धण-कणगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति ।।

चिलायस्स चोरपल्लीतो सुंसुमासद्धिं पलायणं सुंसुमामारणं च

६११ तए णं से चिलाए तं चोरसेन्नं तेहिं नगरगुत्तिएहिं हय-महिय-पवर-वीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं पडिसेहियं [पासित्ता?] भीए तत्थे सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठे ।।

तए णं से धणे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहिं अवहीरमाणिं पासित्ताणं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवए चिलायस्स पयमग्गविहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ ।।

६१२ तए णं से चिलाए तं धणं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवयं समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे नो संचाएइ सुंसुमं दारियं निव्वाहित्तए ताहे संते तंते परितंते नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता तं गहाय तं अगामियं अडविं अणुप्पविट्ठे ।।

६१३ तए णं से चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाए [छुहाए?] अभिभूए समाणे पम्हट्ठ-दिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए ।।

निगमणपदं

६१४ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स खेलासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवस्स अधुवस्स अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धंसणधम्मस्स पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जस्स वण्णहेउं वा रूवहेउं वा बलहेउं वा विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ--जहा व से चिलाए तक्करे ।।

धणस्स सुंसुमाकए कंदणं

६१५ तए णं से धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं (सद्धिं?) अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे-परिधाडेमाणे संते तंते परितंते नो संचाएइ चिलायं चोरसेणावइं साहत्थिं गिण्हित्तए। से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसुमा चिलाएणं जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुंसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्ते व्व चंपगपायवे निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी विमुक्क-संधिबंधणे धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिए ।।

तए णं से धणे सत्थवाहे [पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं?] अप्पछट्ठे आसत्थे कूवमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया-महया सद्देणं कुहुकुहुस्स परुन्ने सुचिरकालं बाहप्पमोक्खं करेइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अडविपत्तेहिं धणाईहिं छूहाभिभूएहिं सुन्सुमा-मंससोणियाहारो

६१६ तए णं से धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहि [सद्धिं ?] अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परब्भाहते समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे संते तंते परितंते निव्विण्णे तीसे अगामियाए अडवीए उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियाओ ववरोविएल्लिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा नो चेव णं उदगं आसादेमो। तए णं उदगं अणासाएमाणा नो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए। तण्णं तुब्भे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मम मंसं च सोणियं च आहारेह, तेणं आहारेणं अवथद्धा समाणा तओ पच्छा इमं अगामियं अडविं नित्थरिहिह, रायगिहं च संपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ।।"

६१७ तए णं से जेट्ठे पुत्ते धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धणं सत्थवाहं एवं वयासी––"तुब्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरुजणया देवयभूया ठवका पइट्ठवका संरक्खगा संगोवगा। तं कहण्णं अम्हे ताओ। ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं ताओ ! ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं अडविं नित्थरिहिह, रायगिहं च संपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ।।"

तए णं धणं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी––"मा णं ताओ अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तस्स णं मंसं च सोणियं च आहारेमो। तं तुब्भे णं ताओ। ! ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं अडविं नित्थरिहिह, रायगिहं च संपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह।" एवं-जाव-पंचमे पुत्ते ।।

६१८ तए णं से धणे सत्थवाहे पंचपुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते पंचपुत्ते एवं वयासी–"मा णं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो। एस णं सुसुमाए दारियाए सरीरे निप्पाणे निच्चेट्ठे जीवविप्पजढे। तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए। तए णं अम्हे तेणं आहारेणं अवथद्धा समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो ।।"

तए णं ते पंचपुत्ता धणेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति ।।

६१९ तए णं धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करेत्ता सरगं करेइ, करेत्ता सरएणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ संधुक्केत्ता दारुयाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं पज्जालेइ, सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेइ। तेणं आहारेणं अवथद्धा समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमण्णागया, तस्स य विउलस्स धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जस्स आभागी जाया ।।

६२० तए णं से धणे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता कालेणं विगयसोए जाए यावि होत्था ।।

धणस्स पव्वज्जा

६२१ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए समोसढे ।।

तए णं धणे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए। एक्कारसंगवी। मासियाए संलेहणाए सोहम्मे कप्पे उववण्णे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।।

निगमणं

"जहा विय णं जंबू ! धणेणं सत्थवाहेणं नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दारियाए मंससोणिए आहारिए, नन्नत्थ एगाए रायगिह-संपावणट्ठयाए ।।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स [खेलासवस्स ?] सुक्कासवस्स सोणियासवस्स दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवस्स अधुवस्स अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धंसणधम्मस्स पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमण-संपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविया य अच्चणिज्जे जाव चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ––जहा व से सपुत्ते धणे सत्थवाहे ।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।[1]

त्ति बेमि ।।

णायाधम्मकहाओ सु० १ अ. १८ ।

६२२ अंगवंसाओ णं सत्तहत्तरि । रायाणो मुंडे-जाव-पव्वइया ।

सम० ७७ सु० १५५ ।

---

४६. कालोदाइकहाणयं

रायगिहट्ठियाणं कालोदाइआईणं अत्थिकायविसये संदेहो

६२३ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था वन्नओ । गुणसिलए चेइए—वन्नओ,-जाव-पुढविसिलापट्टए—वण्णओ ।

तस्स णं गुणसिलयस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई सेलोदाई सेवालोदाई उदए नामुदए नम्मुदए अन्नवालए सेलवालए संखवालए सुहत्थी गाहावई,

६२४ तए णं तेसिं अन्नउत्थियाणं अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं सन्निविट्ठाणं सन्निसन्नाणं अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-"एवं खलु समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेइ, तं जहा-धम्मत्थिकायं-जाव-आगासत्थिकायं, तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पन्नवेइ, तं जहा-धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं पोग्गलत्थिकायं, एगं च णं समणे णायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकायं पन्नवेइ । तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पन्नवेइ, तं जहा-धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवत्थिकायं, एगं च णं समणे णायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रूविकायं अजीवकायं पन्नवेइ, से कहमेयं मन्ने एवं ?"

कालोदाइआईणं गोयमं पइ अत्थिकायसंकानिरूवणं

६२५ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-गुणसिलए चेइए समोसढे-जाव-परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं एवं जहा बिइयसए नियंठुद्देसए-जाव-भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिगाहित्ता रायगिहाओ-जाव-अतुरियमचवलमसंभंतं-जाव-रियं सोहेमाणे सोहेमाणे तेसिं अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीइवयइ ।

तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासंति पासेत्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्नमन्नं सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा अयं च णं गोयमे अम्हं अदूरसामंतेणं वीइवयइ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयमं एयमट्ठं पुच्छित्तए" त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता ते भगवं गोयमं एवं वयासी—

---

१ वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्ज-पडिबद्धो । धण-पारद्धो पत्तो, महाडविं वसण-सयकलियं ।।१।।
तह जीवो विसय-सुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ । कम्मवसेणं पावइ, भवाडवीए महादुक्खं ।।२।।
धणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी । सुयमंसमिवाहारो, रायगिहं इह सिवं नेयं ।।३।।
जह अडवि-नियर-नित्थरण-पावणत्थं तएहिं सुयमंसं । भुत्तं तहेह साहू, गुरूण आणाइ आहारं ।।४।।
भव-लंघण-सिव-साहणहेउं भुंजंति ण गेहीए । वण्ण-बलरूव-हेउं, च भावियप्पा महासत्ता ।।५।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेइ, तं जहा-धम्मत्थिकायं-जाव-आगासत्थिकायं तं चेव - जाव - रूविकायं अजीवकायं पन्नवेइ से कहमेयं भंते ! गोयमा ! एवं ?"

गोयमकयं कालोयाइआईणं संकाए समाहाणं

६२६ तए णं से भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी---"नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं नत्थि त्ति वयामो नत्थिभावं अत्थि त्ति वयामो, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! सव्वं अत्थिभावं अत्थि त्ति वयामो, सव्वं नत्थिभावं नत्थि त्ति वयामो, तं चेयसा खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खह" त्ति कट्टु ते अन्नउत्थिए एवं वदति, एवं वदित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे एवं जहा नियंठुद्देसए-जाव-भत्तपाणं पडिदंसेइ, भत्तपाणं पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने-जाव-पज्जुवासइ ।

कालोदाइकयाए पंचत्थिकायसंबंधिविविहपुच्छाए णातपुत्तकयं समाहाणं

६२७ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवन्ने यावि होत्था। कालोदाई य तं देसं हव्वमागए।
कालोदाई ति समणे भगवं महावीरे कालोदाइं एवं वयासी---
से नूणं कालोदाई। अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निविट्ठाणं तहेव-जाव-से कहमेयं मन्ने एवं ?
से नूणं कालोदाई ! अट्ठे समट्ठे ?
हंता ! अत्थि।
तं सच्चे णं एसमट्ठे कालोदाई ! अहं पंचत्थिकायं पन्नवेमि, तं जहा-धम्मत्थिकायं-जाव-पोग्गलत्थिकायं, तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजीवत्थिकाए अजीवत्ताए पण्णवेमि तहेव-जाव-एगं च णं पोग्गलत्थिकायं रूविकायं पण्णवेमि।

६२८ तए णं से कालोदाई समणं भगवं महावीरं एवं वयासी---
एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि अधम्मत्थिकायंसि आगासत्थिकायंसि अरूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठइत्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।
कालोदाई ! एगंसि णं पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा-जाव-तुयट्टित्तए वा ।
एयंसि णं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावकम्मफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?
णो इणट्ठे समट्ठे कालोदाई !

६२९ एयंसि णं जीवत्थिकायंसि अरूविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?
हंता ! कज्जंति।

कालोदाइस्स निग्गंथपवज्जागहणं विहरणं च

६३० एत्थ णं से कालोदाई संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी---
इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं धम्मं निसामेत्तए एवं जहा खंदए तहेव पव्वइए तहेव एक्कारस अंगाइं-जाव-विहरइ ।।

भगवओ महावीरस्स जणवयविहारो

६३१ तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

कालोदाइकयाए पावकम्म-कल्लाणकम्मफलविवागपुच्छाए भगवओ समाहाणं

६३२ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे गुणसिलए चेइए। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ-जाव-समोसढे। परिसा पडिगया।

६३३ "तए णं से कालोदाई अणगारे अन्नया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी---
अत्थि णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?
हंता ! अत्थि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहण्णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?

कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं विससंमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुरूवत्ताए दुगंधत्ताए जहा महासवए-जाव-भुज्जो भुज्जो परिणमइ, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवाए-जाव-मिच्छादंसणसल्ले तस्स णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुरूवत्ताए-जाव-भुज्जो भुज्जो परिणमइ, एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ।

कल्लाणकम्मविसये पण्होत्तरं

६३४ अत्थि णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?

हंता ! अत्थि ।

कहन्नं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति ?

कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं ओसहमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवन्नत्ताए-जाव-सुहत्ताए नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे-जाव-परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे-जाव-मिच्छादंसणसल्लविवेगे तस्स णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए-जाव-नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ, एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा-जाव-कज्जंति ।।

कालोदाइकयाए अगणिकायसमारभण-निव्वावणसंबंधियकम्मबंधपुच्छाए भगवओ समाहाणं

६३५ दो भंते ! पुरिसा सरिसया-जाव-सरिसभंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं अगणिकायं समारंभंति तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, एएसि णं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महावेयणतराए चेव, कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव-जाव-अप्पवेयणतराए चेव, जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ ?

कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव-जाव-महावेयणतराए चेव, तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव -जाव-अप्पवेयणतराए चेव ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–तत्थ णं जे से पुरिसे-जाव-अप्पवेयणतराए चेव ?

कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविकायं समारभइ, बहुतरागं आउक्कायं समारभइ, अप्पतरायं तेउकायं समारभइ, बहुतरागं वाउकायं समारभइ, बहुतरायं वणस्सइकायं समारभइ, बहुतरागं तसकायं समारभइ; तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ से णं पुरिसे अप्पतरायं पुढविक्कायं समारभइ, अप्पतरागं आउक्कायं समारभइ, बहुतरागं तेउक्कायं समारभइ, अप्पतरागं वाउक्कायं समारभइ, अप्पतरागं वणस्सइकायं समारभइ, अप्पतरागं तसकायं समारभइ; से तेणट्ठेणं कालोदाई ! -जाव-अप्पवेयणतराए चेव ।।

कालोदइकयाए अचित्तपोग्गलावभासण-उज्जोवणसंबंधियपुच्छाए भगवओ समाहाणं

६३६ अत्थि णं भंते ! अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ?

हंता ! अत्थि ।

कयरे णं भंते ! अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति-जाव-पभासेंति ?

कालोदाई ! कुद्धस्स अणगारस्स तेयलेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गंता दूरं निवयइ, देसं गंता देसं निवयइ, जहिं जहिं च णं सा निवयइ तहिं तहिं च णं ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति-जाव-पभासंति, एएणं कालोदाई ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति जाव-पभासेंति ।।

कालोदाइस्स निव्वाणगमणं

६३७ तए णं से कालोदाई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम-जाव-अप्पाणं भावेमाणे जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

भगवई श. ७ उ. १० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७. पुंडरीय-कंडरीयकहाणयं ।

महाविदेहे पुण्डरीगिणी-नगरीए रायपुत्ता पुण्डरीय-कंडरीया

६३८ तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहे, सीयाए महानईए उत्तरिल्ले कूले, नीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं, एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं पुक्खलावई नामं विजए पण्णत्ते ।। तत्थ णं पुंडरीगिणी नामं रायहाणी पण्णत्ता––नवजोयणवित्थिण्णा दुवालस जोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोगभूया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ।।

तीसे णं पुंडरीगिणीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए नलिणिवणे नामं उज्जाणे ।।

तत्थ णं पुंडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था ।।

तस्स णं पउमावई नामं देवी होत्था ।।

तस्स णं महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं जहा––पुंडरीए य, कंडरीए य–सुकुमालपाणिपाया । पुंडरीए जुवराया ।।

महापउमरण्णो पव्वज्जा पुंडरीयाभिसेओ य

६३९ तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं । महापउमे राया निग्गए । धम्मं सोच्चा पुंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पुंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया । महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ।

तए णं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति ।।

तए णं से महापउमे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता-जाव-सिद्धे ।

तए णं थेरा अण्णया कयाइ पुणरवि पुंडरीगिणीए रायहाणीए नलिणीवणे उज्जाणे समोसढा । पुंडरीए राया निग्गए । कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ । थेरा धम्मं परिकहेंति । पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए ।

तए णं कंडरीए थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह । जं नवरं–पुंडरीयं रायं आपुच्छामि । तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।"

अहासुहं देवाणुप्पिया!

तए णं से कंडरीए थेरे वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ महया-भड-चडगर-पहकरेण पुंडरीगिणीए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसर-हाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।"

कंडरीयस्स पव्वज्जा

६४० तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं एवं वयासी–

"मा णं तुमं भाउया! इयाणिं मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयाहि । अहं णं तुमं महारायाभिसेएणं अभिसिंचामि ।।"

तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी –"मा णं तुमं भाउया ! इयाणिं मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयाहि। अहं णं तुमं महारायाभिसेएणं अभिसिंचामि ।।"

तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं पुंडरीए कंडरीयकुमारं जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य-जाव-ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव-निक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ। पव्वइए। अणगारे जाए। एक्कारसंगवी ।।

तए णं थेरा भगवंतो अण्णया कयाइ पुंडरीगिणीओ नयरीओ नलिणिवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति, बहिया जणवयविहारं विहरंति ।।

कंडरीयस्स वेयणा

६४१ तए णं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य-जाव-दाहवक्कंतीए यावि विहरइ।

तए णं थेरा अण्णया कयाइ जेणेव पोंडरीगिणी नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता नलिणीवणे सभोसढ़ा। पुंडरीए निग्गए। धम्मं सुणेइ ।।

कंडरीयस्स तिगिच्छा

६४२ तए णं पुंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोगं पासइ, पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"अहण्णं भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं तेगिच्छं आउंटामि। तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह ।।"

तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव पुंडरीयस्स रण्णो जाणसाला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता फासुएसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।।

तए णं पुंडरीए राया तेगिच्छिए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––

"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स फासु-एसणिज्जेणं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेणं तेगिच्छं आउट्टेह ।।"

तए णं ते तेगिच्छिया पुंडरीएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणगं च से उवदिसंति ।।

तए णं तस्स कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं मज्जपाणएण य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था––हट्ठे बलियसरीरे जाए ववगयरोगायंके ।।

कंडरीयस्स पमत्तविहारो

६४३ तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयं रायं आपुच्छंति, आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति ।।

तए णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे नो संचाएइ पुंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारेणं विहरित्तए तत्थेव ओसन्ने जाए।

पुंडरीएण पडिबोहो

६४४ तए णं से पुंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी ––

"धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे। सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जे णं तुमं रज्जं च रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च विछड्डेत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइयाणं परिभायइत्ता, मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, अहण्णं अधन्ने अज्झोववण्णे नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। तं धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया। कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे। सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले ।।

तए णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कंडरीए अणगारे पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवसवसे लज्जाए गारवेण य पुंडरीयं आपुच्छइ आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

कंडरीयस्स पव्वज्जा-परिच्चायो

६४५ तए णं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं कंचि कालं उग्गंउग्गेणं विहरित्ता तओ पच्छा समणत्तण-परितंते समणत्तण-निव्विण्णे समणत्तण-निब्भच्छिए समणगुण-मुक्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरीगिणी नयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि निसीयइ, नीसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए झियायमाणे संचिट्ठइ ।।

तए णं तस्स पुंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं रायं एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पियभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ ।।"

तए णं से पुंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता अंतेउर-परियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले-जाव-अगाराओ अणगारियं पव्वइए, अहं णं अधन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे जाव नो संचाएमि पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया !-जाव-सुलद्धं णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले ।।"

तए णं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ। दोच्चंपि तच्चंपि पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठए ।।
तए णं पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी--अट्ठो भते ! भोगेहिं ?

हंता ! अट्ठो ।।

तए णं से पुंडरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचति ।।

पुंडरीयस्स पव्वज्जा

६४६ तए णं से पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयार-भंडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ--

"कप्पइ मे थेरे वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं तओ पच्छा आहारं आहारित्तए त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता णं पुंडरीगिणीए पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

कंडरीयस्स मच्चू

६४७ तए णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अइजागरएण य अइभोय-प्पसंगेण य से आहारे नो सम्मं परिणमइ ।।

तए णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया--उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा। पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ ।।

तए णं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवसवसे कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निगमणं

६४८ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पुणरिव माणुस्सए कामभोए आसाएइ पत्थयइ पीहेई अभिलसइ, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाण बहूण समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य तालणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ--जहा व से कंडरीए राया ।।

पुंडरीयस्स आराहणा

६४९ तए णं से पुंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंति दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए जाव उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता अहापज्जत्तमित्ति कट्टु पडिनियत्तेइ, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए-जाव-बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ ।।

तए णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे नो सम्मं परिणमइ ।।

तए णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा [पाउब्भूया-उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा। पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए विहरइ ।।

तए णं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं । पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव बहिद्धादाणे पच्चक्खाए, इयाणिं पि णं अहं तेसिं चेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव बहिद्धादाणं पच्चक्खामि । सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं तं पि य णं चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि" त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववण्णे। तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महा-विदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।

निगमणं

६५० एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोवज्जइ नो विप्पडिघायमावज्जइ, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं साविया य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जं पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे भवइ ।

परलोए वि य णं नो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य तालणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं वीई-वइस्सइ--जहा व से पुंडरीए अणगारे ।।[1]

णाया. सु. १, अ. १९ ।

---

१. वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा--

वाससहस्संपि जइ, काऊणं संजमं सुविउलंपि । अंते किलिट्ठभावो, न विसुज्झइ कंडरीउ व्व ।।१।।
अप्पेण वि कालेणं, केई जहा गहिय-सील-सामण्णा । साहंति नियय-कज्जं, पुंडरीय-महारिसि व्व जहा ।।२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. महावीरतित्थे थविरावली

६५१ सव्वे एए समणस्स भगवओ महावीरस्स एक्कारस वि गणहरा दुवालसंगिणो चोद्दसपुव्विणो समत्तगणिपिडगधरा रायगिहे नगरे मासिएणं भत्तिएणं अपाणएणं कालगया-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा। थेरे इंदभूई, थेरे अज्जसुहम्मे सिद्धिं गए महावीरे पच्छा दोन्नि वि परिनिव्वुया ॥[1]

समणनिग्गंथाणं अज्जसुहम्मावच्चिज्जत्तं

६५२ जे इमे अज्जत्ताते समणा निग्गंथा विहरंति एए णं सव्वे अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा, अवसेसा गणहरा निरवच्चा वोच्छिन्ना ॥[2]

अज्जसुहम्ममारब्भ अज्जजसभद्दपज्जंता थेरावली

६५३ समणे भगवं महावीरे कासवगोत्तेणं। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स कासवगोत्तस्स अज्ज सुहम्मे थेरे अन्तेवासी अग्गिवेसायणगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जसुहम्मस्स अग्गिवेसायणसगोत्तस्स अज्जजंबुनामे थेरे अंतेवासी कासवगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जजंबुनामस्स कासवगोत्तस्स अज्जप्पभवे थेरे अंतेवासी कच्चायणसगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जप्पभवस्स कच्चायणसगोत्तस्स अज्जसेज्जंभवे थेरे अंतेवासी मणगपिया वच्छसगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जसेज्जंभवस्स मणगपिउणो वच्छसगोत्तस्स अज्जजसभद्दे थेरे अंतेवासी तुंगियायणसगोत्ते ॥

अज्जजसभद्दमारब्भ संखित्तथेरावली

६५४ संखित्तवायणाए अज्जजसभद्दाओ अग्गओ एवं थेरावली भणिया, तं जहा--
थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स तुंगियायणसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा---थेरे अज्जसंभूयविजए माढरसगोत्ते;
थेरे अज्जभद्दबाहू पाइणसगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जथूलभद्दे गोयमसगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा---थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा सुट्ठियसुपडिबुद्धा कोडियकाकंदगा वग्घावच्चसगोत्ता।
थेराणं सुट्ठिसुपडिबुद्धाणं कोडियकाकंदगाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं अंतेवासी थेरे अज्जइंददिन्ने कोसियगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कोसियगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जदिन्ने गोयमसगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स जातिस्सरस्स कोसियगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी चत्तारि थेरा १ थेरे अज्जनाइले, २ थेरे अज्जपोगिले, ३ थेरे अज्जजयंते, ४ थेरे अज्जतावसे।
थेराओ अज्जनाइलाओ अज्जनाइला साहा निग्गया,
थेराओ अज्जपोगिलाओ अज्जपोगिला साहा निग्गया,
थेराओ अज्जजयंताओ अज्जजयंती साहा निग्गया,
थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा निग्गया इति ॥

---

१. परिनिव्वुया गणहरा, जीवंते नायए नव जणाओ। इंदभूइ सुहम्मो य, रायगिहे निव्वुए वीरे ॥१॥

२. क–पंचण्हं पंचसया अद्धट्ठसया य होंति दोण्ह गणा। दोण्ह तु जुयलयाणं, तिसयो तिसयो हवइ गच्छो ॥
तित्थं च सुहम्मातो, निरवच्चा गणहरा सेसा ॥
ख–सम. सु. १५७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जजसभद्दमारिब्भ वित्थिण्णा थेरावली

६५५ वित्थरवायणाए पुण अज्जजसभद्दाओ परओ थेरावली एवं पलोइज्जइ, तं जहा--

थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा--थेरे अज्जभद्दबाहू पाईणसगोत्ते, थेरे अज्ज संभूयविजये माढरसगोत्ते।

थेरस्स णं अज्जभद्दबाहुस्स पाईणगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा--
थेरे गोदासे थेरे अग्गिदत्ते थेरे जण्णदत्ते थेरे सोमदत्ते कासवगोत्ते णं।
थेरेहिंतो णं गोदासेहिंतो कासवगोत्तेहिंतो एत्थ णं गोदासगणे नामं गणे निग्गए,
तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा--
तामलित्तिया कोडीवरिसिया पोंडवद्धणिया दासीखब्बडिया।

थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा--
गाहाओ--नंदणभद्दे उवनंदभद्द तह तीसभद्द जसभद्दे। थेरे य सुमिणभद्दे मणिभद्दे य पुन्नभद्दे य ॥१॥
थेरे य थूलभद्दे उज्जुमती जंबुनामधेज्जे य। थेरे य दीहभद्दे थेरे तह पंडुभद्दे य ॥२॥

थेरस्स णं अज्जसंभूइविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमाओ सत्त अंतेवासिणीओ अहावच्चाओ अभिन्नताओ होत्था, तं जहा--

गाहा--जक्खा य जक्खदिन्ना भूया तह होइ भूयदिन्ना य। सेणा वेणा रेणा भगिणीओ थूलभद्दस्स ॥१॥

थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयमसगोत्तस्स इमे दो थेरा अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा--
थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते, थेरे अज्ज सुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते।

थेरस्स णं अज्जमहागिरिस्स एलावच्छसगोत्तस्स इमे अट्ठ अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा--

१ थेरे उत्तरे, २ थेरे बलिस्सहे, ३ थेरे धणड्ढे, ४ थेरे कोडिन्ने, ५ थेरे नागे, ६ थेरे नागमित्ते, ७ थेरे छलुए, ८ रोहगुत्ते कोसिए गोत्तेणं।

थेरेहिंतो णं छलुएहिंतो रोहगुत्तेहिंतो कोसियगोत्तेहिंतो तत्थ णं तेरासिया नग्गया।
थेरेहिंतो णं उत्तरबलिस्सहेहिंतो तत्थ णं उत्तरबलिस्सहगणे नामं गणे निग्गए।
तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा--१ कोसंबिया, २ सोत्तित्तिया, ३ कोडवाणी, ४ चंदनागरी ॥

थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा--

गाहाओ--थेरे त्थ अज्जरोहण, भद्दजसे मेहगणी य कामिड्ढी। सुट्ठियसुप्पडिबुद्धे, रक्खिय तह रोहगुत्ते य ॥१॥
इसिगुत्ते सिरिगुत्ते, गणी य बंभे गणी य तह सोमे। दस दो य गणहरा, खलु एए सीसा सुहत्थिस्स ॥२॥

थेरेहिंतो णं अज्जरोहणेहिंतो कासवगुत्तेहिंतो तत्थ णं उद्देहगणे नामं गणे निग्गए।
तस्सिमाओ चत्तारि साहाओ निग्गयाओ छच्च कुलाइं एवमाहिज्जंति।
से किं तं साहाओ?
साहाओ एवमाहिज्जंति,--१ उदुंबरिज्जिया, २ मासपूरिया, ३ मतिपत्तिया, ४ सुवन्नपत्तिया, सेत्तं साहाओ।
से किं तं कुलाइं? कुलाइं एवमाहिज्जंति, तं जहा--

गाहाओ--पढमं च नागभूयं, बीयं पुण सोमभूइयं होइ। अह उल्लगच्छ तइयं, चउत्थयं हत्थिलिज्जं तु ॥१॥
पंचमगं नंदिज्जं, छट्ठं पुण पारिहासियं होइ। उद्देहगणस्सेते, छच्च कुला होंति नायव्वा ॥२॥

थेरेहिंतो णं सिरिगुत्तेहिंतो णं हारियसगोत्तेहिंतो एत्थ णं चारणगणे नामं गणे निग्गए।
तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ, सत्त य कुलाइं एवमाहिज्जंति।
से किं तं साहातो?
साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा--
१ हारियमालागारी, २ संकासिया, ३ गवेधूया, ४ वज्जनागरी, से त्तं साहाओ।
से किं तं कुलाइं?
कुलाइं एवमाहिज्जंति, तं जहा--

गाहाओ--पढमेत्थ वच्छलिज्जं, बीयं पुण वीचिधम्मकं होइ। तइयं पुण हालिज्जं, चउत्थगं पूसमित्तेज्जं ॥१॥
पंचमगं मालिज्जं, छट्ठं पुण अज्जचेडयं होइ। सत्तमगं कण्हसहं, सत्त कुला चारणगणस्स ॥२॥

थेरेहिंतो भद्दजसेहिंतो भारद्दायसगोत्तेहिंतो एत्थ णं उडुवाडियगणे नामं गणे निग्गए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ, तिन्नि य कुलाइं एवमाहिज्जंति।
से किं तं साहाओ? साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा--
१ चंपिज्जिया, २ भद्दिज्जिया, ३ काकंदिया मेहलिज्जिया, से त्तं साहाओ।
से किं तं कुलाइं?
कुलाइं एवमाहिज्जंति--
गाहा-भद्दजसियं तह भद्दगुत्तियं, तइयं, च होइ जसभद्दं। एयाइं उडुवाडियगणस्स, तिन्नेव य कुलाइं ।।१।।
थेरेहिंतो णं कामिड्ढीहिंतो कुंडिलसगोत्तेहिंतो एत्थ णं वेसवाडियगणे नामं गणे निग्गए।
तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ, चत्तारि य कुलाइं एवमाहिज्जंति।
से किं तं साहाओ?
साहाओ एवमाहिज्जंति--सावत्थिया रज्जपालिया अन्तरिज्जिया खेमलिज्जिया से त्तं साहाओ।
से किं तं कुलाइं?
कुलाइं एवमाहिज्जंति--
गाहा-गणियं मेहिय कामड्ढियं च, तह होइ इंदपुरगं च। एयाइं वेसवाडियगणस्स चत्तारि उ कुलाइ ।।१।।
थेरेहिंतो णं इसगुत्तेहिंतो णं काकंदएहिंतो वासिट्ठसगोत्तेहिंतो एत्थ णं माणवगणे नामं गणे निग्गए।
तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ, तिण्णि य कुलाइं एवमाहिज्जंति।
से किं तं साहाओ?
सहाओ एवमाहिज्जंति-१ कासविज्जिया, २ गोयमिज्जिया, ३ वासिट्ठिया, ४ सोरट्ठिया। से त्तं साहाओ।
से किं तं कुलाइं?
कुलाइं एवमाहिज्जंति, तं जहा--
गाहा-इसिगोत्तियत्थपढमं, बिइयं इसिदत्तियं मुणेयव्वं। तइयं च अभिजसंतं, तिन्नि कुला माणवगणस्स ।।१।।
थेरेहिंतो णं सुट्ठियसुप्पडिबुद्धेहिंतो कोडियकाकंदिएहिंतो वग्घावच्चसगोत्तेहिंतो एत्थ णं कोडियगणे नामं गणे निग्गए। तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ चत्तारि कुलाइं एवमाहिज्जंति।
से किं तं साहाओ?
साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा--
गाहा-उच्चानागरि विज्जाहरी य, वइरी य मज्झिमिल्ला य। कोडियगणस्स एया, हवंति चत्तारि साहाओ ।।१।।
से किं कुलाइं?
कुलाइं एवमाहिज्जंति, तं जहा-
गाहा-पढमेत्थ बंभलिज्जं, बितियं नामेण वच्छलिज्जं तु। ततियं पुण वाणिज्जं, चउत्थयं पन्नवाहणयं ।।१।।
थेराणं सुट्ठियसुपडिबुद्धाणं कोडियकाकंदाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं इमे पंच थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा--
थेरे अज्जइंददिन्ने थेरे पियगंथे थेरे विज्जाहरगोवाले कासवगोत्ते णं थेरे इसिदत्ते थेरे अरहदत्ते। थेरेहिंतो णं पियगंथेहिंतो एत्थ णं मज्झिमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं विज्जाहरगोवालेहिंतो तत्थ णं विज्जाहरी साहा निग्गया।
थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कासवगोत्तस्स अज्जदिन्ने थेरे अंतेवासी गोयमसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया वि होत्था, तं जहा--
थेरे अज्जसंतिसेणिए माढरसगोत्ते थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते।
थेरेहिंतो णं अज्जसंतिसेणिएहिंतो णं माढरसगोत्तेहिंतो एत्थ णं उच्चानागरी साहा निग्गया।
थेरस्स णं अज्जसंतिसेणियस्स माढरसगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा-
थेरे अज्जसेणिए थेरे अज्जतावसे थेरे अज्जकुबेरे थेरे अज्जइसिपालिते।
थेरेहिंतो णं अज्जसेणितेहिंतो एत्थ णं अज्जसेणिया साहा निग्गया।
थेरेहिंतो णं अज्जकुबेरेहिंतो एत्थ णं अज्जकुबेरा साहा निग्गया।
थेरेहिंतो णं अज्जइसिपालेहिंतो एत्थ णं अज्जइसिपालिया साहा निग्गया।
थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स जातीसरस्स कोसियगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा-
थेरे धणगिरी थेरे अज्जवइरे थेरे अज्जसमिए थेरे अरहदिन्ने।
थेरेहिंतो णं अज्जसमिएहिंतो एत्थ णं बंभदेवीया साहा निग्गया।
थेरेहिंतो णं अज्जवइरेहिंतो गोयमसगोत्तेहिंतो एत्थ णं अज्जवइरा साहा निग्गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोतमसगोत्तस्स इमे तिन्नि थेरा अन्तेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा–
थेरे अज्जवइरसेणिए थेरे अज्जपउमे थेरे अज्जरहे।
थेरेहिंतो णं अज्जवइरसेणिएहिंतो एत्थ णं अज्जनाइली साहा निग्गया।
थेरेहिंतो णं अज्जपउमेहिंतो एत्थ णं अज्जपउमा साहा निग्गया।
थेरेहिंतो णं अज्जरहेहिंतो एत्थ णं अज्जजयंती साहा निग्गया।
थेरस्स णं अज्जरहस्स वच्छसगोत्तस्स अज्जपूसगिरी थेरे अंतेवासी कोसियगोत्ते।
थेरस्स णं अज्जपूसगिरिस्स कोसियगोत्तस्स अज्जफग्गुमित्ते थेरे अंतेवासी गोयमसगुत्ते[1]।।

गाहाओ–वंदामि फग्गुमित्तं च गोयमं धणगिरिं च वासिट्ठं। कोच्छिं सिवभूइं पि य, कोसिय दोज्जितकंटे य ।।१।।
तं वंदिऊण सिरसा चित्तं वंदामि कासवं गोत्तं। णक्खं कासवगोत्तं रक्खं पि य कासवं वंदे ।।२।।
वंदामि अज्जनागं च गोयमं जेहिलं च वासिट्ठं। विण्हुं माढरगोत्तं कालगमवि गोयमं वंदे ।।३।।

[2] गोयमगोत्तमभारं सप्पलयं तह य भद्दयं वंदे। [3] थेरं च संघवालियकासवगोत्तं पणिवयामि ।।४।।
वंदामि अज्जहत्थिं च कासवं खंतिसागरं धीरं। गिम्हाण पढममासे कालगयं चेत्तसुद्धस्स ।।५।।
वंदामि अज्जधम्मं च सुव्वयं सीसलद्धिसंपन्नं। जस्स निक्खमणे देवो छत्तं वरमुत्तमं वहइ ।।६।।
हत्थं कासवगोत्तं धम्मं सिवसाहगं पणिवयामि। सीहं कासवगोत्तं धम्मं पि य कासवं वंदे ।।७।।
सुत्तत्थरयणभरिए खमदममद्दवगुणेहिं संपन्ने। देविड्ढिखमासमणे कासवगोत्ते पणिवयामि ।।८।। –कल्पसूत्र

---

१. अतोऽनन्तरगतगाथायाः पूर्वमर्वाचीनासु प्रतिषु निम्नोद्धृतोऽधिकः पाठ उपलभ्यते–
थेरस्स णं अज्जफग्गुमित्तस्स गोयमसगुत्तस्स। अज्जधणगिरी थेरे अंतेवासी वासिट्ठसगोत्ते ।।३।।
थेरस्स णं अज्जधणगिरिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स। अज्जसिवभूई थेरे अंतेवासी कुच्छसगोत्ते ।।४।।
थेरस्स णं अज्जसिवभूइस्स कुच्छसगोत्तस्स। अज्जभद्दे थेरे अन्तेवासी कासवगुत्ते ।।५।।
थेरस्स णं अज्जभद्दस्स कासवगुत्तस्स। अज्जनक्खत्ते थेरे अन्तेवासी कासवगुत्ते ।।६।।
थेरस्स णं अज्जनक्खत्तस्स कासवगुत्तस्स। अज्जरक्खे थेरे अन्तेवासी कासवगुत्ते ।।७।।
थेरस्स णं अज्जरक्खस्स कासवगुत्तस्स। अज्जनागे थेरे अन्तेवासी गोयमसगोत्ते ।।८।।
थेरस्स णं अज्जनागस्स गोयमसगुत्तस्स। अज्जजेहिले थेरे अन्तेवासी वासिट्ठसगुत्ते ।।९।।
थेरस्स णं अज्जजेहिलस्स वासिट्ठसगुत्तस्स। अज्जविण्हू थेरे अन्तेवासी माढरसगोत्ते ।।१०।।
थेरस्स णं अज्जविण्हुस्स माढरस्सगुत्तस्स। अज्जकालए थेरे अन्तेवासी गोयमसगोत्ते ।।११।।
थेरस्स णं अज्जकालगस्स गोयमसगुत्तस्स। इमे दुवे थेरा अन्तेवासी गोयमसगोत्ता–
थेरे अज्जसंपलिए थेरे अज्जभद्दे ।।१२।।
एएसिं दुण्ह वि थेराणं गोयमसगुत्ताणं। अज्जवुड्ढे थेरे अन्तेवासी गोयमसगुत्ते ।।१३।।
थेरस्स णं अज्जवुड्ढस्स गोयमसगोत्तस्स। अज्जसंघपालिए थेरे अन्तेवासी गोयमसगोत्ते ।।१४।।
थेरस्स णं अज्जसंघपालियस्स गोयमसगोत्तस्स। अज्जहत्थी थेरे अन्तेवासी कासवगुत्ते ।।१५।।
थेरस्स णं अज्जहत्थिस्स कासवगुत्तस्स। अज्जधम्मे थेरे अन्तेवासी सुव्वयगोत्ते ।।१६।।
थेरस्स णं अज्जधम्मस्स सुव्वयगोत्तस्स। अज्जसीहे थेरे अन्तेवासी कासवगुत्ते ।।१७।।
थेरस्स णं अज्जसीहस्स कासवगुत्तस्स। अज्जधम्मे थेरे अन्तेवासी कासवगुत्ते ।।१८।।
थेरस्स णं अज्जधम्मस्स कासवगुत्तस्स। अज्जसंडिल्ले थेरे अन्तेवासी ।।१९।।
––अर्वाचीनासु प्रतिषु पाठः।

२. गोयमगोत्तकुमारं––गोयमगोत्तममारं इतिकल्याणविजय––पट्टावलीपरागे पृ. २९।
गोयमगोत्तभभारं, गोयमगोत्तममारं' इति प्रत्यन्तरद्वयम्।।

३. थेरं च अज्जुवुड्ढं, गोयमगुत्तं नमंसामि ।।४।।
तं वंदिऊण सिरसा थिरसत्तचरित्तनाणसंपन्नं। थेरं च संघवालिय गोयमगुत्तं पणिवयामि ।।५।।
वंदामि अज्जहत्थिं च कासवं खंतिसागरं धीरं। गिम्हाणपढममासे कालगयं चेव सुद्धस्स ।।६।।
वंदामि अज्जधम्मं च सुव्वयं सीललद्धिसंपन्नं। जस्स निक्खमणे देवो छत्तं वरमुत्तमं वहइ ।।७।।
हत्थिं कासवगुत्तं धम्मं सिवसाहगं पणिवयामि। सीहं कासवगुत्तं धम्मं पि अ कासवं वंदे ।।८।।
तं वंदिऊण सिरसा थिरसत्तचरित्तनाणसंपन्नं। थेरं च अज्जजंबुं गोअमगुत्तं नमंसामि ।।९।।
मिउमद्दवसंपन्नं उवउत्तं नाणदंसणचरित्ते। थेरं च नंदिअं पि य कासवगुत्तं पणिवयामि ।।१०।।
तत्तो अ थिरचरित्तं उत्तमसम्मत्तसत्तसंजुत्तं। देसिगणिखमासमणं माढरगुत्तं नमंसामि ।।११।।
तत्तो अणुओगधरं धीरं मइसागरं महासत्तं। थिरगुत्तखमासमणं वच्छसगुत्तं पणिवयामि ।।१२।।
तत्तो य नाणदंसणचरित्ततवसुट्ठिअं गुणमहंतं। थेरं कुमारधम्मं वंदामि गणिं गुणोवेयं ।।१३।।
सुत्तत्थरयणभरिए, खमदममद्दवगुणेहिं संपन्ने। देविड्ढिखमासमणे कासवगुत्ते पणिवयामि ।।१४।।
––अर्वाचीनासु प्रतिषु पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदिसुत्तगता थेरावली

६५६ सुहम्मं अग्गिवेसाणं, जंबूनामं च कासवं । पभवं कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं तहा ।।२५।।
जसभद्दं तुगियं वंदे, संभूयं चेव माढरं । भद्दबाहुं च पाइन्नं, थूलभद्दं च गोयमं ।।२६।।
एलावच्चसगोत्तं, वंदामि महागिरि सुहत्थिं च । तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ।।२७।।
[1] हारियगुत्तं साइं च, वंदिमो हारियं च सामज्जं । वंदे कोसियगोत्तं, संडिल्लं अज्जजीयधरं ।।२८।।
ति-समुद्द-खायकित्तिं, दीवसमुद्देसु गहिय-पेयालं । वंदे अज्जसमुद्दं, अक्खुभिय-समुद्द-गंभीरं ।।२९।।
भणगं करगं झरगं, पभावगं णाण-दंसणगुणाणं । वंदामि अज्जमंगुं, सुयसागरपारगं धीरं ।।३०।।
*वंदामि अज्जधम्मं, तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं च । तत्तो य अज्जवइरं, तव-नियम-गुणेहिं वइरसमं ।।३१।।
*वंदामि अज्जरक्खिय, खवणे रक्खिय-चारित्त सव्वस्से । रयणकरंडगभूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं ।।३२।।
नाणंमि दंसणंमि य, तव-विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं । अज्जं नंदिल-खवणं, सिरसा वंदे पसन्नमणं ।।३३।।
वड्ढउ वायगवंसो, जसवंसो अज्जनागहत्थीणं । वागरण-करण-भंगिय, कम्मपयडीपहाणाणं ।।३४।।
जच्चंजण धाउसमप्पहाणं मुद्दीय-कुवलयनिहाणं । वड्ढउ वायगवंसो, रेवइ-नक्खत्तनामाणं ।।३५।।
अयलपुरा निक्खंते, कालियसुअ-आणुओगिए धीरे । बंभद्दीवग-सीहे, वायगपयमुत्तमं पत्ते ।।३६।।
जेसिं इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहंमि । बहुनयरनिग्गयजसे, ते वंदे खंदिलायरिए ।।३७।।
तत्तो हिमवंत-महंत-विक्कमे, धिइपरक्कममणंते । सज्झायमणंतधरे, हिमवंते वंदिमो सिरसा ।।३८।।
कालिय-सुय-अणुओगस्स-धारए, धारए य पुव्वाणं । हिमवंतखमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए ।।३९।।
मिउमद्दवसंपन्ने, अणुपुव्वि वायगत्तंणं पत्ते । ओहसुयसमायारे, नागज्जुणवायए वंदे ।।४०।।
*गोविंदाणं पि नमो, अणुओगे विउलधारणिंदाणं । णिच्चं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं ।।४१।।
*तत्तो य भूयदिन्नं, निच्चं तव-संजमे अनिव्विण्णं । पंडियजणसामन्नं, वंदामो संजमविहिण्णुं ।।४२।।
वर-कणग-तविय-चंपग-विमउल-वर-कमलगब्भसरिवन्ने । भवियजणहिययदइय, दयागुणविसारए धीरे ।।४३।।
अड्ढभरहप्पहाणे, बहुविह-सज्झाय-सुमुणियपहाणे । अणेओगियवरवसभे, नाइलकुलवंसनंदिकरे ।।४४।।
भूयहियप्पगब्भे, वंदे ऽहं भूयदिन्नमायरिए । भवभयवुच्छेयकरे, सीसे नागज्जुणरिसीणं ।।४५।।
सुमुणियनिच्चानिच्चं, सुमुणियसुत्तत्थधारयं वंदे । सब्भावुब्भावणया, तत्थं लोहिच्च णामाणं ।।४६।।
अत्थमहत्थाक्खाणिं, सुसमणवक्खाणकहणनिव्वाणिं । पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि दूसगणिं ।।४७।।
*तव-नियम-सच्च-संजम-विणयज्जव-खंति-मद्दवरयाणं । सीलगुणगद्दियाणं, अणुओगजुगप्पहाणा णं ।।४८।।
सुकुमालकोमलतले, तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे । पाए पावयणीणं, पापडिच्छयसएहिं पणिवइए ।।४९।।
जे अन्ने भगवंते, कालियसुय-आणुओगिए धीरे । ते पणमिऊण सिरसा, नाणस्स परूवणं वोच्छं ।।५०।।

—नंदी ।

---

१. मेरुतुङ्गस्थविरावली—

सूरि बलिस्सह साई, सामज्जो संडिलो य जीयधरो । अज्जसमुद्दो मंगू, नंदिल्लो नागहत्थी य ।।
रेवईसिहो खंदिल, हिमवं नागज्जुणा य गोविंदा । सिरिभूइदिन्न--लोहिच्च, दूसगणिणो य देवड्ढी ।।
सुत्तत्थ-रयणभरिए, खम-दम-मद्दवगुणेहिं संपन्ने । देवड्ढिखमासमणे, कासवगुत्ते पणिवयामि ।।
एतादृक्चिह्नाङ्कितं गाथा पञ्चकं व्याख्या ग्रन्थेषु नोपलभ्यते ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तईओ खंधो

समणीकहाणगाणि

अज्झयणा

१.	अरिट्ठनेमितित्थे	दोवईकहाणयं
२.	अरिट्ठनेमितित्थे	पउमावई-आईणं समणीणं कहाणगाणि
३.		पोट्टिलाकहाणयं
४.	पासनाहतित्थे	समणीणं काली-आईणं कहाणगाणि
५.	पासनाहतित्थे	राई-आईणं कहाणगाणि
६.	पासनाहतित्थे	समणीणं भूयाईणं कहाणगाणि
७.	पासनाहतित्थे	समणीसुभद्दाकहाणयं
८.	महावीरतित्थे	नंदाईणं कहाणगाणि
९.	महावीरतित्थे	जयन्तीकहाणयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. अरिट्ठनेमितित्थे दोवईकहाणयं

दोवईपुव्वभवा

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था ।।
तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे होत्था ।।

नागसिरी-कहाणगं

२ तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसंति, तं जहा—
सोमे सोमदत्ते सोमभूई—अड्ढा-जाव-अपरिभूया रिउव्वेय-जउव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय-जाव-बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिनिट्ठिया ।।
तेसि णं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था, तं जहा—
नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी—सुकुमालपाणिपायाओ-जाव-तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ, तेहिं माहणेहिं सद्धिं विउले माणुस्सए काम-भोए पच्चणुभवमाणीओ विहरंति ।।

नागसिरीए तित्तालाउयस्स उवक्खडणं एगंते गोवणं च

३ तए णं तेसिं माहणाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं-जाव-इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु देवाणु-प्पिया ! अम्हं इमे विउले धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जे, अलाहि-जाव-आसत्तमाओ कुल-वंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं; तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अण्णमण्णस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेउं परिभुंजेमाणाणं विहरित्तए । अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, कल्लाकल्लिं अण्णमण्णस्स गिहेसु विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, परिभुंजेमाणा विहरंति ।।

४ तए णं तीसे नागसिरीए माहणीए अण्णया कयाइ भोयणवारए जाए यावि होत्था ।।
तए णं सा नागसिरी विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेइ, एगं महं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंजुत्तं नेहावगाढं उवक्खडेइ, एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ, तं खारं कडुयं अखज्जं विसभूयं जाणित्ता एवं वयासी—
"धिरत्थु णं मम नागसिरीए अधन्नाए अपुण्णाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिंबोलियाए, जाए णं मए सालइए तित्तालाउए बहु-संभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए, सुबहुदव्वक्खए नेहक्खए य कए । तं जइ णं ममं जाउयाओ जाणिस्संति तो णं मम खिंसि-स्संति । तं-जाव-ममं जाउयाओ न जाणंति ताव मम सेयं एयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं एगंते गोवित्तए, अण्णं सालइयं महुरालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं उवक्खडित्तए" । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं एगंते गोवेइ, गोवेत्ता अण्णं सालइयं महुरालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता तेसिं माहणाणं ण्हायाणं भोयणमंडवंसि सुहासणवरगयाणं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं परिवेसेइ ।।
तए णं ते माहणा जिमियभुत्तुरागया समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ।।
तए णं ताओ माहणीओ ण्हायाओ-जाव-विभूसियाओ तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारेंति, जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवा-गच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ ।।

धम्मरुइस्स तित्तालाउय-दाणं

५ तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा-जाव-बहुपरिवारा जेणेव चंपा नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिगया ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नामं अणगारे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरइ ।।

६ तए णं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, एवं जहा गोयमसामी तहेव भायणाइं ओगाहेइ, तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ-जाव-चंपाए नयरीए उच्च-नीअ-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे ।।

तए णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं नेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ ।।

७ तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छइ, धम्मघोसस्स अदूर-सामंते अन्नपाणं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ ।।

धम्मरुइणा तित्तालाउय-परिट्ठावणं पिपीलिगामरणं य

८ तए णं धम्मघोसा थेरा तस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ तित्तालाउयाओ बहुसंभारसंभियाओ नेहावगाढाओ एगं बिंदुयं गहाय करयलंसि आसादेंति, तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी--

"जइ णं तुमं देवाणुप्पिया! एयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। तं गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं एगंतमणा-वाए अचित्ते थंडिले परिट्ठवेहि, अण्णं फासुयं एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि।"

९ तए णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता तओ सालइयाओ तित्तालाउयाओ बहुसंभारसंभियाओ नेहाव-गाढाओ एगं बिंदुगं गहाय थंडिलंसि निसिरइ ।।

तए णं तस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाणि। जा जहा य णं पिपीलिगा आहारेइ, सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ ।।

अहिंसट्ठं धम्मरुइणा तित्तालाउय-भक्खणं

१० तए णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--जइ ताव इमस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणगाइं पिपीलिगासहस्साइं ववरोविज्जंति, तं जइ णं अहं एयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं थंडिलंसि सव्वं निसिरामि तो णं बहूणं पाणाणं-जाव-सत्ताणं वहकरणं भविस्सइ। तं सेयं खलु ममेयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं सयमेव आहारित्तए, ममं चेव एएणं सरीरएणं निज्जाउ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ, तं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं बिलमिव पन्नग-भूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ ।।

धम्मरुइस्स समाहिमरणं

११ तए णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया--उज्जला-जाव-दुरहियासा ।।

तए णं से धम्मरुई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसवकारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, थंडिलं पडिलेहेइ, दब्भसंथारगं संथरेइ, दब्भसंथारगं दुरुहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"नमोत्थु णं अरहंताणं-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं। पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए-जाव-बहिद्धादाणे, इयाणिं पि णं अहं तेसिं चेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि-जाव-बहिद्धादाणं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जहा खंदओ-जाव-चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामि" त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ।।

साहूहिं धम्मरुइस्स गवेसणा

१२ तए णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरगयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासक्खमणपारणगंसि सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स निसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए चिरावेइ। तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेह ।।

साहूहिं धम्मरुइस्स समाहिमरण-निवेदणं

१३ तए णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं-जाव-तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिले तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो ! अकज्जमिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता गमणागमणं पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वयासी—

"एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो, सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिले तेणेव उवागच्छामो-जाव-इहं हव्वमागया । तं कालगए णं भंते ! धम्मरुई अणगारे। इमे से आयारभंडए ।।"

धम्मरुइस्स अणुत्तरदेवत्तेण उववाओ नागसिरिगरहा य

१४ तए णं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति, समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुई नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे-जाव-नागसिरीए माहणीए गिहं अणुपविट्ठे। तए णं सा नागसिरी माहणी-जाव-तं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ।

तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ-जाव-समाहिपत्ते कालगए।

से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं -जाव-सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।

१५ तं धिरत्थु णं अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुण्णाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिंबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे मासक्खमणपारणगंसि सालइएणं तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ।।"

तए णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चंपाए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति—"धिरत्थु णं देवाणुप्पिया ! नागसिरीए-जाव-दूभगनिंबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे सालइएणं तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ।।"

तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ "धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए-जाव-जीवियाओ ववरोविए ।।"

नागसिरीए गिहनिव्वासणं

१६ तए णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता-जाव-मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता नागसिरिं माहणिं एवं वयासी—

"हंभो नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए ! दुरंतपंतलक्खणे ! हीणपुण्णचाउद्दसे ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्तिपरिवज्जिए धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुण्णाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिंबोलियाए, जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सालइएणं तित्तालाउएणं-जाव-जीवियाओ ववरोविए।" उच्चावयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, उच्चावयाहिं निब्भंच्छणाहिं निब्भंच्छेंति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेंति, तज्जेंति तालेंति, तज्जित्ता तालित्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति।।

१७ तए णं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी दंडीखंड-निवसणा खंडमल्लय-खंडघडग-हत्थगया फुट्ट-हडाहड-सीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहंगेहेणं देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ।।

नागसिरीए भवभमणं

१८ तए णं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया। तं जहा—

सासे कासे जरे दाहे, जोणिसूले भगंदरे।
अरिसा अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले अकारए।।
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू दउदरे कोढे।।१।।

१९ तए णं सा नागसिरी माहणी सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठाए पुढवीए उक्कोसं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववण्णा। तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीससागरोवमट्ठिईएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

सा णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जइ। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जइ। सा णं तओहिंतो उव्वट्टित्ता तच्चं पि मच्छेसु उववण्णा। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठाए पुढवीए उक्कोसं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

तओणंतरं उव्वट्टिता उरगेसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं-जाव-रयणप्पभाओ पुढवीओ उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववण्णा।

तओ उव्वट्टित्ता असण्णीसु उववण्णा। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं--जाव--अदुत्तरं च खरबायरपुढविकाइयत्ताए, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो।

नागसिरीए सूमालिया भवो

२० सा णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारियं पयाया—सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं।

तए णं तीसे णं दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमालकोमलिया गयतालुयसमाणा, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सुकुमालिया-सुकुमालिया।

तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति सूमालिय त्ति।।

तए णं सा सूमालिया दारिया पंचधाईपरिग्गहिया अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणी रम्मे मणिकोट्टिमतले गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवाय-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ।।

सूमालियाए सागरेण सद्धिं विवाहो

२१ तए णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

२२ तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नामं सत्थवाहे—अड्ढे-जाव-अपरिभूए।।

तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया—सूमाला इट्ठा माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरइ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए--सुकुमालपाणिपाए-जाव-सुरूवे ।।

२३ तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ । इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पिं आगासतलगंसि कणग-तिंदूसएणं कीलमाणी-कीलमाणी विहरइ ।

तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ, पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं वा नामधेज्जं से ?"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए भारियाए अत्तया सूमालिया नामं दारिया--सुकुमालपाणिपाया--जाव-रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा ।।"

२४ तए णं जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए मित्त-नाइ-परिवुडे चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागए ।

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी--"भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ?"

तए णं से जिणदत्ते सागरदत्तं एवं वयासी--"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि । जइ णं जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरदारगस्स । तए णं देवाणुप्पिया । भण किं दलयामो सुंकं सूमालियाए ?"

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया एगा एगजाया इट्ठा-जाव-मणामा-जाव-उंबरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं । तं जइ णं देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, तो णं अहं सागरस्स सूमालियं दलयामि ।"

२५ तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरगं दारगं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे ममं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया --इट्ठा-जाव-मणामा-जाव-उंबरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं । तं जइ णं सागरए दारए मम धरजामाउए भवइ, तो णं दलयामि ।"

तए णं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए [संचिट्ठइ] ।।

२६ तए णं जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्तनाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ,-जाव-सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता सागरं दारगं ण्हायं-जाव-सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरूहावेइ, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं परिवुडे सव्विड्ढीए सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स उवणेइ ।

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता-जाव-सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ, दुरूहावेत्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावेत्ता सागरगं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गेण्हावेइ ।।

सागरस्स पलायणं

२७ तए णं सागरए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेइ, से जहानामए--असिपत्ते इ वा करपत्ते इ वा खुरपत्ते इ वा कलंबचीरिगापत्ते इ वा सत्तिअग्गे इ वा कोंतग्गे इ वा तोमरग्गे इ वा भिंडिमालग्गे इ वा सूचिकलावए इ वा विच्छुयडंके इ वा कविकच्छू इ वा इंगाले इ वा मुम्मुरे इ वा अच्ची इ वा जाले इ वा अलाए इ वा सुद्धागणी इ वा भवे एयारूवे ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो इणट्ठे समट्ठे। एत्तो अणिट्ठतराएगंचेव अकंततराएगं चेव अप्पियतरागं चेव अमणुण्णतरागं चेव अमणामतरागं चेव पाणिफासं संवेदेइ।

तए णं से सागरए अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ।

तए णं सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स अम्मापियरो मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।।

२८ तए णं सागरए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि निवज्जइ। तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, से जहानामए—असिपत्ते इ वा-जाव-एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ।

तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ।

२९ तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निवज्जइ।।

तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ।।

तए णं से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दोच्चं पि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ-जाव-अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ।।

३० तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ, विहाडेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।।

सूमालियाए चिंता

३१ तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—गए णं से सागरए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायइ।।

३२ तए णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए! वहूवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि।।"

तए णं सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहं त्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं ओहयमणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—

"किण्णं तुमं देवाणुप्पिए! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाहिसि?"

तए णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडिं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिए! सागरए दारए ममं सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरदुवारं अवंगुणेइ अवंगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं अहं तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेमि सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासामि, पासित्ता गए णं से सागरए ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायामि।।"

तए णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागर-दत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ।।

सागरदत्तेण जिणदत्तस्स उवालंभणं

३३ तए णं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—

"किण्णं देवाणुप्पिया! एयं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जण्णं सागरए दारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोस-पडियं पइव्वयं विप्पजहाय इहमागए?" बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जणओवरोहे वि सागरस्स सूमालियासहवासनिसेहो

३४ तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—दुट्ठु णं पुत्ता! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागच्छंतेणं। तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे।

तए णं से सागरए दारए जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—

"अवि याइं अहं ताओ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धपट्ठं वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छेज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छेज्जामि।।"

सूमालियाए दमगेण सद्धिं पुणव्विवाहो

३५ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरियाए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामेत्ता लज्जिए विलीए विड्ढे जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—

"किण्णं तव पुत्ता! सागरएणं दारएणं? अहं णं तुमं तस्स दाहामि, जस्स णं तुमं इट्ठा-जाव-मणामा भविस्ससि" त्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता पडिविसज्जेइ।।

३६ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अण्णया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गं ओलोएमाणे-ओलोएमाणे चिट्ठइ।

तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ—खंडिखंड-निवसणं खंडमल्लग-खंडघडग-हत्थगयं फुट्ट-हडाहड-सीसं मच्छियासहस्सेहिं अन्निज्जमाणमग्गं।

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एयं दमगपुरिसं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पलोभेह, गिहं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च से एगंते एडेह, एडेत्ता अलंकारियकम्मं करेह, ण्हायं कयबलिकम्मं कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं करेह, करेत्ता मणुण्णं असण-पाण-खाइम-साइमं भोयावेह, भोयावेत्ता मम अंतियं उवणेह।।"

३७ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं दमगं असण-पाण-खाइम-साइमेणं उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभेत्ता सयं गिहं अणुप्पवेसंति, अणुप्पवेसेत्ता तं खंडमल्लगं खंडघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति।

तए णं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एडिज्जमाणंसि महया-महया सद्देणं आरसइ।

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे तस्स दमगपुरिसस्स तं महया-महया आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—"किन्नं देवाणुप्पिया! एस दमगपुरिसे महया-महया सद्देणं आरसइ?"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयंति—"एस णं सामी! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एडिज्जमाणंसि महया-महया सद्देणं आरसइ।।"

३८ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—

"मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया! एयस्स दमगस्स तं खंड मल्लगं खंडघडगं च एगंते एडेह, पासे से ठवेह जहा अपत्तियं न भवइ।" ते वि तहेव ठवेंति, ठवेत्ता तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति, करेत्ता सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेंति, अब्भंगिए समाणे सुरभिणा गंधवट्टएणं गायं उव्वट्टेंति, उव्वट्टेत्ता उसिणोदग-गंधोदएणं ण्हाणेंति, सीओदगेणं ण्हाणेंति, पम्हल-सुकुमालाइए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता हंसलक्खणं पडगसाडगं परिहेंति, सव्वालंकारविभूसियं करेंति, विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं भोयावेंति, भोयावेत्ता सागरदत्तस्स उवणेंति।

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं ण्हायं-जाव-सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी—"एस णं देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा-जाव-मणामा। एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलयामि, भद्दियाए भद्दओ भवेज्जासि।।"

दमगस्स विपलायणं

३९ तए णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि निवज्जइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमेयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, से जहानामए—असिपत्ते इ वा-जाव-एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ।

तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ।
तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निवज्जइ।।

४० तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दमगपुरिसस्स पासे णुवज्जइ।

तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ-जाव-अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ।।

४१ तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।।

सूमालियाए पुणो चिंता

४२ तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ, दमगपुरिसस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—'गए णं से दमगपुरिसे' त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायइ।।

४३ तए णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए! वहूवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि।

तए णं सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तह त्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं ओहयमणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—

"किण्णं तुमं देवाणुप्पिए! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाहि?"
तए णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडिं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिए! दमगपुरिसे ममं सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरदुवारं अवंगुणेइ, अवंगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं हं तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेमि, दमगपुरिसस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासामि, पासित्ता गए णं से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायामि"।

तए णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ।।

सूमालियाए दाणसालानिम्माणं

४४ तए णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—

"अहो णं तुमं पुत्ता! पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं कडाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणी विहरसि। तं मा णं तुमं पुत्ता! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाहि। तुमं णं पुत्ता! मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य परिभाएमाणी विहराहि"।

तए णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य देवावेमाणी य परिभाएमाणी विहरइ।।

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियाए सागरदत्तगिहागमणं

४५ तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तासिं गोवालियाणं अज्जाण एग संघाडए जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोवालियाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

"इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए चंपाए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए"।

"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि।"

तए णं ताओ अज्जाओ गोवालियाहिं अज्जाहिं अब्भणुण्णायाओ समाणीओ भिक्खायरियं अडमाणीओ सागरदत्तस्स गिहं अणुप्पविट्ठाओ।

सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा

४६ तए णं सूमालिया ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—

"एवं खलु अज्जाओ! अहं सागरस्स अणिट्ठा-जाव-अमणामा! नेच्छइ णं सागरए दारए मम नाम गोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा?

जस्स-जस्स वि य णं देज्जामि तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा-जाव-अमणामा भवामि।

तुब्भे य णं अज्जाओ! बहुनायाओ बहुसिक्खियाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर-णगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईणं गिहाइं अणुपविसह। तं अत्थि याइं भे अज्जाओ! केइ कहिंचि चुण्णजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए व कम्मजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कंदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे, जेणं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता-जाव-मणामा भवेज्जामि?"

अज्जा-संघाडगेण धम्मोवएसो

४७ तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कण्णे ठएंति, ठएत्ता सूमालियं एवं वयासी—

"अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गंथीओ-जाव-गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पगारं कण्णेहिं वि निसामित्तए, किमंग पुण उवदंसित्तए वा आयरित्तए वा अम्हे णं तव देवाणुप्पिए! विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहिज्जामो।"

तए णं सा सूमालिया ताओ अज्जाओ एवं वयासी—"इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए।"

तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियाए विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति।।

सूमालियाए समणोवासियत्तं

४८ तए णं सा सूमालिया धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठा एवं वयासी—

"सद्दहामि णं अज्जाओ! निग्गंथं पावयणं-जाव-से जहेयं तुब्भे वयह। इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए।"

"अहासुहं देवाणुप्पिए!"

तए णं सा सूमालिया तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं-जाव-गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ।।

तए णं सा सूमालिया समणोवासिया जाया-जाव-समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ।।

सूमालियाए पव्वज्जापडिवज्जणं

४९ तए णं तीसे सूमालियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं सागरस्स पुव्विं इट्ठा-जाव-मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा-जाव-अमणामा। नेच्छइ णं सागरए मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा? जस्स-जस्स वि य णं देज्जामि तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा-जाव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमणामा भवामि। तं सेयं खलु ममं गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए"--एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया! मए गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया पव्वइत्तए-जाव-गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइया।

तए णं सा सूमालिया अज्जा जाया--इरियासमिया-जाव-गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

सूमालियाए चंपानयरीए बहिं आतावणा

५० तए णं सा सूमालिया अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी चंपाए नयरीए बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए॥"

तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी--

"अम्हे णं अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ-जाव-गुत्तबंभचारिणीओ। नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स वा-जाव-सण्णिवेसस्स वा छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुहीणं आयावेमाणीणं विहरित्तए। कप्पइ णं अम्हं अंतोउवस्सयस्स वइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपइयाए आयावेत्तए॥"

तए णं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणी अपत्तियमाणी अरोयमाणी सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सुराभिमुही आयावेमाणी विहरइ॥

सूमालियाए गणियाभोगं दट्ठूण नियाणं

५१ तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ नरवइ-दिन्न-पयारा अम्मापिइ-नियग-निप्पिवासा वेसविहार-कय-निकेया नाणाविह-अविणयप्पहाणा अड्ढा-जाव-बहुजणस्स अपरिभूया।

तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था--सूमाला जहा अंड-नाए॥

तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए अण्णया कयाइ पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाण-सिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति।

तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरेइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरगं रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेवं करेइ॥

५२ तए णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणिं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था--अहो णं इमा इत्थिया पुरापोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं कडाणं कल्लाणाणं कम्माणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणी विहरइ। तं जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियम-बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्ति-विसेसे अत्थि, तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरिज्जामि त्ति कट्टु नियाणं करेइ, करेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ॥

सूमालियाए बउसनियंठित्तं

५३ तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था--अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गुज्झंतराइं धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ॥

५४ तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी--

"एवं खलु अज्जे! अम्हे समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ-जाव-बंभचेरधारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए। तुमं च णं अज्जे! सरीरबाउसिया अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेसि, पाए धोवेसि, सीसं धोवेसि, मुहं धोवेसि, थणंतराइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धोवेसि, कक्खंतराइं धोवेसि, गुज्झंतराइं धोवेसि, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि। तं तुमं णं देवाणुप्पिए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि-जाव-अकरणयाए अब्भुट्ठेहि, अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जाहि"।

तए णं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणी अपरियाणमाणी विहरइ।

तए णं तओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलेंति निंदेंति खिंसेंति गरिहंति परिभवंति, अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति।।

सूमालियाए पुढोविहारो देवलोगुप्पाओ य

५५ तए णं तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए-जाव-निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था —"जया णं अहं अगारमज्झे वसामि, तया णं अहं अप्पवसा। जया णं अहं मुंडा भवित्ता पव्वइया, तया णं अहं परवसा। पुव्वि च णं ममं समणीओ आढंति परिजाणंति, इयाणिं णो आढंति नो परिजाणंति। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।।

तए णं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ-जाव-जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ।

५६ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारिणी ओसन्ना ओसन्नविहारिणी कुसीला कुसीलविहारिणी संसत्ता संसत्तविहारिणी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा। तत्थेगइयाणं देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं सूमालियाए देवीए नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।।

दोवईभवकहाणगे दोवईए तारुण्णभावो

५७ तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नयरे होत्था—वण्णओ।

तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था—वण्णओ।

तस्स णं चुलणी देवी। धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया।

तए णं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया।

तए णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल-पाणिपायं-जाव-दारियं पयाया।
तए णं तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं नामं—जम्हा णं एसा दारिया दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे दोवई।

तए णं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—दोवई-दोवई।
तए णं सा दोवई दारिया पंचधाईपरिग्गहिया-जाव-गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवाय-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ।।

५८ तए णं सा दोवई रायवरकण्णा उम्मुक्कबालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।
तए णं तं दोवइं रायवरकण्णं अण्णया कयाइ अंतेउरियाओ ण्हायं--जाव--सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करेत्ता दुवयस्स रण्णो पायवंदियं पेसेंति।
तए णं सा दोवई रायवरकण्णा जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ।।

दुवयरण्णा दोवईए सयंवरसंकप्पो

५९ तए णं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता दोवईए रायवरकण्णाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए दोवइं रायवरकण्णं एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"जस्स णं अहं तुमं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुहिया वा भवेज्जासि। तए णं मम-जावज्जीवाए हिययदाहे भविस्सइ । तं णं अहं तव पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं वियरामि । अज्जआए णं तुमं दिन्नसयंवरा । जं णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि, से णं तव भत्तारे भविस्सइ" त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं-जाव-वग्गूहिं आसासेइ, आसासेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

बारवईए दूयपेसणं

६० तए णं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं । तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे, बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे, उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से, पज्जुन्नपामोक्खाओ अद्धट्ठाओ कुमारकोडीओ, संबपामोक्खाओ सट्ठि दुइंतसाहस्सीओ, वीरसेणपामोक्खाओ एक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ, महासेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिव-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एवं वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुण-कुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ । तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह।"

तए णं से दूए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह।" ते वि तहेव उवट्ठवेंति ।

तए णं से दूए ण्हाए-जाव-अप्पहग्घाभरणालंकियसरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं—सण्णद्ध--बद्ध-वम्मिय-कवएहिं उप्पीलिय-सरासण-पट्टिएहिं पिणद्ध-गेविज्जेहिं आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टेहिं गहियाउहपहरणेहिं—सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसत्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं ठावेइ, ठावेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्सवागुरापरिक्खित्ते पायचारविहारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवं, समुद्दविजय-पामोक्खे य दस दसारे-जाव-'छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयइ—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुण-कुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे अत्थि । तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह।।"

६१ तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए-जाव-हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

कण्हस्स पत्थाणं

६२ तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेह ।।"

तए णं कोडुंबियपुरिसे करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया-महया सद्देणं तालेंति ।

तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा-जाव-'महासेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया-जाव-सव्वालंकारविभूसिया जहाविभवइड्ढिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया हयगया एवं गयगया रह-सीया-संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति ।।

६३ तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।" ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।

तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समत्तजालाकुलाभिरामे विचित्तमणि-रयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं पुणो-पुणो कल्लाणग-पवर–मज्जणविहीए मज्जिए-जाव-अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे ।

तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं-दसारेहिं-जाव-अणंग-सेणापामोक्खाहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहिनिग्घोसनाइयरवेणं बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

हत्थिणाउरे दूयपेसणं

६४ तए णं से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नयरं । तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं—जुहिट्ठिलं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय-समग्गं, गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं कीवं आसत्थामं करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एवं वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए धट्ठज्जुण-कुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ । तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह" ।।

६५ तए णं से दूए जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं सपुत्तयं—जुहिट्ठिलं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय-समग्गं, गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं कीवं आसत्थामं एवं वयइ—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुणकुमारस्स भइणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे अत्थि, तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।"

तए णं से पंडुराया जहा वासुदेवे नवरं—भेरी नत्थि-जाव-जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

चंपाइनयरे दूयपेसणं

६६ एएणेव कमेणं—

तच्चं दूयं एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! चंपं नयरिं । तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं, सल्लं नंदिरायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।" चउत्थं दूयं एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणप्पिया ! सोत्तिमइं नयरिं । तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।"

पंचमं दूयं एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिसीसं नयरिं । तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।"

छट्ठं दूयं एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! महुरं नयरिं । तत्थ णं तुमं धरं रायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।"

सत्तमं दूयं एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! रायगिहं नयरिं । तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।"

अट्ठमं दूयं एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कोडिण्णं नयरं । तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।"

नवमं दूयं एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! विराटं नयरं । तत्थ णं कीयगं भाउसय-समग्गं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।"

दसमं दूयं एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अवसेसेसु गामागर-नगरेसु । तत्थ णं तुमं अणेगाइं रायसहस्साइं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।"

रायसहस्साणं पत्थाणं

६७ तए णं ते बहवे रायसहस्सा पत्तेयं-पत्तेयं ण्हाया सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया हत्थिखंधवरगया हय-गय-रह–पवरजोहकलियाए चाउ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महया भड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता सएहिं-सएहिं नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति, अभिनिग्गच्छित्ता जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

दुवयकयो वासुदेवाईणं सक्कारो

६८ तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह—अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं लीलट्ठिय-सालभंजियागं-जाव-पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।

तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।

तए णं से दुवए राया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमणं जाणेत्ता पत्तेयं-पत्तेयं हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामोक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं पत्तेयं-पत्तेयं आवासे वियरइ ।।

६९ तए णं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिखंधेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं-पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति, करेत्ता सएसु-सएसु आवासेसु अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सएसु-सएसु आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निसण्णा य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य विहरंति ।

तए णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नयरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसन्नं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह ।" ते वि साहरंति ।

तए णं ते वासुदेवपामोक्खा तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसन्नं च आसाएमाणा विसादेमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य विहरंति ।।

दोवईए सयंवरो

७० तए णं से दुवए राया पच्चावरण्ह-कालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए देवीए अत्तयाए, धट्ठज्जुणस्स भगिणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ । तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया-जाव-सव्वालंकारविभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता जेणेव सयंवर-मंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं-पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयह, निसीइत्ता दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह त्ति घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।।"
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव-जाव-पच्चप्पिणंति ।।

७१ तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सयंवरमंडवं आसिय-संमज्जिओवलित्तं पंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभिमघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह कारवेह, करेत्ता कारवेत्ता वासुदेव-पामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं-पत्तेयं नामंकियाइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह, रएत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि -जाव-पच्चप्पिणंति ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७२ तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाया-जाव-सव्वालंकारविभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामरादिं वीइज्जमाणा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता पत्तेयं-पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति ।।

७३ तए णं दुवए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए-जाव-सव्वालंकार-विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामरादिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते कंपिल्लपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं करयल-परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठइ ।।

७४ तए णं सा दोवई रायवरकण्णा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ, करेत्ता जिणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ।।

७५ तए णं तं दोवइं रायवरकण्णं अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति । किं ते ? वरपायपत्तनेउरा-जाव-चेडिया-चक्कवाल-महयरग-विंद-परिक्खित्ता अंतेउराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किडुावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ ।

तए णं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवईए रायवरकण्णाए सारत्थं करेइ ।

तए णं सा दोवई रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किडुावियाए लेहियाए सद्धिं सयंवरामंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ ।।

७६ तए णं सा दोवई रायवरकण्णा एगं महं सिरिदामगंडं-किं ते ? पाडलमल्लिय-चंपय-जाव-सत्तच्छयाईहिं गंधड्ढिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गेण्हइ ।

तए णं सा किडुाविया सुरूवा साभावियघंसं वोद्दहजणस्स उस्सुयकरं विचित्तमणि-रयण-बद्धच्छरुहं वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंब-संदंसिए य से दाहिणेणं दरिसए पवररायसीहे । फुडविसय-विसुद्ध-रिभिय-गंभीर-महुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिउवंस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विक्कंति-कंति-बहुविहआगम-माहप्प-रूढ-कुलसीलजाणिया कित्तणं करेइ । पढमं ताव वण्हि-पुंगवाणं दसारवरवीरपुरिस-तेलोक्कबलवगाणं, सत्तु-सयसहस्स-माणावमद्दगाणं भवसिद्धिय-वरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं बल-वीरिय रूव-जोवण्ण-गुण-लावण्णकित्तिया कित्तणं करेइ ।

तओ पुणो उग्गसेणमाईणं जायवाणं भणइ——सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते होइ हियय-दइओ ।।

दोवईए पंडव-वरणं

७७ तए णं सा दोवई रायवरकण्णगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झंमज्झेणं समइच्छमाणी-समइच्छमाणी पुव्वकयनियाणेणं चोइज्जमाणी-चोइज्जमाणी जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेणं दसद्ध-वण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढिय-परिवेढिए करेइ, करेत्ता एवं वयासी——एए णं मए पंच पंडवा वरिया ।

तए णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूणि रायसहस्साणि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणाइं-उग्घोसेमाणाइं एवं वयंति——सुवरियं खलु भो ! दोवईए रायवरकण्णाए त्ति कट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया-सया-आवासा तेणेव उवागच्छंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं धट्ठज्जुणे कुमारे पंच पंडवे दोवइं च रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं भवणं अणुपविसइ ।।

पाणिग्गहणं

७८ तए णं से दुवए राया पंच पंडवे दोवइं च रायवरकण्णं पट्टयं दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता सेयापीयएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं करावेइ, पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य पाणिग्गहणं कारावेइ ।

तए णं से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णाए इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ, तं जहा—अट्ठ हिरण्णकोडीओ-जाव-पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विपुलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सारसावएज्जं अलाहि-जाव-आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं दलयइ ।

तए णं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूइं रायसहस्साइं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

पंडुरायकयं वासुदेवाइनिमंतणं

७९ तए णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य देवीए कल्लाणकारे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं चेव समोसरह ।।

८० तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं-पत्तेयं ण्हाया सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया हत्थिखंधवरगया-जाव-जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

पांडुकओ वासुदेवाईणं सक्कारो

८१ तए णं से पंडू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह—अब्भुग्गयमूसिय-जाव-पडिरूवे ।
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति-जाव-कारवेंति ।

तए णं से पंडू राया पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हय-गय-रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया-भडचडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ।

तए णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे-अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे कारेह, कारेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।।

८२ तए णं वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ।
तए णं से पंडू राया ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से उवागए जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए-जाव-जहारिहं आवासे दलयइ ।

तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति तहेव-जाव-विहरंति ।
तए णं से पंडू राया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आवासेसु उवणेह । तेवि तहेव उवणेंति ।
तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं-आसाएमाणा तहेव-जाव-विहरंति ।।

कल्लाणकारुस्सवो

८३ तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे दोवइं च देविं पट्टयं दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ, ण्हावेत्ता कल्लाणकारं करेइ, करेत्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूइं रायसहस्साइं पंडुएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं-साइं रज्जाइं जेणेव साइं-साइं नगराइं तेणेव पडिगयाइं।

तए णं ते पंच पंडवा दोवईए देवीए सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति॥

नारदस्स आगमणं

८४ तए णं से पंडू राया अण्णया कयाइं पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवईए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ।

इमं च णं कच्छुल्लनारए—दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो-अंतो य कलुसहियए मज्झत्थ उवत्थिए य अल्लीण-सोमपियदंसणे सुरूवे अमइल-सगलपरिहिए कालमियचम्म-उत्तरासंग-रइयवच्छे दंड-कमंडलु-हत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइय-गणेत्तिय-मुंजमेहला-वागलधरे हत्थकय-कच्छभीए पियगंधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणि-ओवयणुप्पयणि-लेसणीसु य संकामणि-आभिओगि-पण्णत्ति-गमणिथंभिणीसु य बहूसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्न-पईव-संब-अनिरुद्ध-निसढ-उम्मुय-सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहाईण जायवाणं अद्धट्ठाण व कुमारकोडीणं हियय-दइए संथवए कलह-जुद्ध-कोलाहलप्पिए भंडणाभिलासी बहूसु य समर-सयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवर-वीरपुरिस-तेलोक्कबलवगाणं आमंतेऊंण तं भगवइं पक्कमणिं गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टण-संबाह-सहस्समंडियं थिमियमेइणीयं निब्भर-जणपदं वसुहं ओलोइंते रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि झत्ति-वेगेण समोवइए।

८५ तए णं से पंडू राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता निमंसित्ता महरिहेणं अग्घेणं पज्जेणं आसणेण य उवनिमंतेइ।

तए णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ, निसीइत्ता पंडुरायं रज्जे य रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ।

तए णं से पंडू राया कोंती देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति परियाणंति अब्भुट्ठेंति पज्जुवासंति।

दोवईए नारयं पइ अणायरो

८६ तए णं सा दोवई देवी कच्छुल्लनारयं अस्संजयं अविरयं अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मंति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ नो पज्जुवासइ।

तए णं तस्स कच्छुल्लनारयस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"अहो णं दोवई देवी रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अवत्थद्धा समाणी ममं नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ नो पज्जुवासइ, तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करेत्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पंडुरायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता ताए उक्किठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए जइणाए छयाए विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीईवइउं पयत्ते यावि होत्था।

नारदस्स अवरकंका-गमणं पउमनाभरण्णा मिलणं च

८७ तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध-दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरकंका नामं रायहाणी होत्था।

तत्थ णं अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ।

तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सत्त देवीसयाइं ओरोहे होत्था।

तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवराया वि होत्था।

तए णं से पउमनाभे राया अंतोअंतेउरंसि ओरोह-संपरिवुडे सीहासणवरगए विहरइ॥

८८ तए णं से कच्छुल्लनारए जेणेव अवरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि झत्ति-वेगेण समोवइए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेवेत्ता अग्घेणं पज्जेणं आसणेणं उवनिमंतेइ।

तए णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ, निसीइत्ता पउमनाभं रायं रज्जे य रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य अंतेउरे य कुसलोदंतं आपुच्छइ।।

पउमणाभस्स नियओरोहविसओ गव्वो

८९ तए णं से पउमनाभे राया नियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लनारयं एवं वयासी—

तुमं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर-तलवर-मांडंबिय कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइसत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं मम ओरोहे ?

कूवद्दुरदिट्ठंतकहणपुव्वं नारदकया दोवईरूवपसंसा

९० तए णं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—

सरिसे णं तुमं पउमनाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स।

के णं देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ?

पउमनाभा ! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया। से णं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे मण्णइ—अयं चेव अगडे वा तलागे वा दहे वा सरे वा सागरे वा। तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए। तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी—"से के तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?"

तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए दद्दुरे।

तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी—केमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी—महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे।

तए णं से कूवदद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एवं वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे। महालए णं से समुद्दे।

तए णं से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं पच्चत्थिमिल्लं तीरं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे।

एवामेव तुमं पि पउमनाभा ! अण्णेसिं बहूणं राईसर-जाव-सत्थवाहप्पभिईणं भज्जं वा भगिणिं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणसि जारिसए मम चेव णं ओरोहे, तारिसए णो अण्णेसिं।

९१ एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नयरे दुपयस्स रण्णो धूया, चुलणीए देवीए अत्तया, पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई नामं देवी रूवेण य जोवण्णेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा। दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठस्स अयं तव ओरोहे सयं पि कलं न अग्घइ त्ति कट्टु पउमनाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।।

पउमणाभट्ठं दोवईए देवकयं साहरणं

९२ तए णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म दोवईए देवीए रूवे य जोवण्णे य लावण्णे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ।

तए णं पउमनाभस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पुव्वसंगइओ देवो-जाव-आगओ।

भणंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं।।

तए णं से पउमनाभे पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नयरे दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई नामं देवी रूवेण य जोवण्णेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! दोवइं देविं इह हव्वमाणीयं"।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९३ तए णं से पुव्वसंगइए देवे पउमनाभं एवं वयासी—

"नो खलु देवाणुप्पिया। एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूणं अण्णेणं पुरिसेणं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरिस्सइ। तहा वि य णं अहं तव पियट्ठयाए दोवइं देविं इहं हव्वमाणेमि" त्ति कट्टु पउमनाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।।

९४ तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए देवीए सद्धिं उप्पिं आगासतलगंसि सुहप्पसुत्ते यावि होत्था। तए णं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणिं दलयइ, दलइत्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-देवगईए जेणेव अवरकंका जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइं देविं ठावेइ, ठावेत्ता ओसोवणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—

"एस णं देवाणुप्पिया! मए हत्थिणाउराओ दोवई देवी इहं हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ। अओ परं तुमं जाणसि" त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।।

दोवईए चिंता

९५ तए णं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपेच्छमाणी एवं वयासी—

"नो खलु अम्हं एसे सए भवणे, नो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया। तं न नज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अण्णस्स रण्णो असोगवणियं साहरिय" त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायइ।।

पउमनाभेण आसासणं

९६ तए णं से पउमनाभे राया ण्हाए-जाव-सव्वालंकारविभूसिए अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइं देविं ओहयमणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—

"किन्नं तुमं देवाणुप्पिए! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाहि? एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहरिया। तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाहि। तुमं णं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहराहि।।"

९७ तए णं सा दोवई देवी पउमनाभं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ। तं जइ णं से छण्हं मासाणं मम कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए णं अहं देवाणुप्पिया! जं तुमं वदसि तस्स आणा-ओवाय-वयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि।

तए णं से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणेत्ता दोवइं देविं कण्णंतेउरे ठवेइ।

तए णं सा दोवई देवी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं तवो-कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।।

जुहिट्ठिलेण पंडुरायं पइ दोवईअवहरणनिरूवणं

९८ तए णं से जुहिट्ठिल्ले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवइं देविं पासे अपासमाणे सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, करेत्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुं रायं एवं वयासी—

"एवं खलु ताओ! ममं आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा। तं इच्छामि णं ताओ! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए।"

तए णं से पंडु राया कोडंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया! जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा। तं जो णं देवाणुप्पिया! दोवईए देवीए सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्स णं पंडू राया विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह, घोसावेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पच्चप्पिणंति।।

पंडुरायपेसियाए कोंतीए कण्हं पइ दोवइअन्नेसणत्थनिरूवणं

९९ तए णं से पंडू राया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं निवेदेहि—कण्हे णं वासुदेवे दोवईए मग्गण-गवेसणं करेज्जा, अण्णहा न नज्जइ दोवईए देवीए सुई वा खुई वा पवत्ती वा।।

१०० तए णं सा कोंती देवी पंडुणा एवं वुत्ता समाणी-जाव-पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता कुरुजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठाजणवए जेणेव बारवई नयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं, जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स गिहे तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयह—एवं खलु सामी! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इहं हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखइ।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-कहेंति।

तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे हत्थिखंधवरगए बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुप्पविसइ।।

१०१ तए णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं वि य णं समाणिं आयंतं चोक्खं परमसुइभूयं सुहासणवरगयं एवं वयासी—

संदिसउ णं पिउच्छा! किमागमणपओयणं?

तए णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता! हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलए सुहप्पसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ अवहिया निया अवक्खित्ता वा। तं इच्छामि णं पुत्ता! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं कयं।

तए णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं पिउच्छं एवं वयासी—"जं नवरं—पिउच्छा! दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा लभामि, तो णं अहं पायालाओ वा भवगाओ वा अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं देविं साहत्थिं उवणेमि" त्ति कट्टु कोंतिं पिउच्छं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।।

कण्हस्स दोवईगवेसणाएसो

१०२ तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवईए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया! जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा। तं जो णं देवाणुप्पिया! दोवईए देवीए सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्स णं कण्हे वासुदेवे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह, घोसावेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पच्चप्पिणंति।

तए णं से कण्हे वासुदेवे अण्णया अंतोअंतेउरगए ओरोह-संपरिवुडे सीहासणवरगए विहरइ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारयाओ दोवईउदंतलंभो

१०३ इमं च णं कच्छुल्लनारए-जाव-झत्ति-वेगेण समोवइए।

तए णं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठत्ता अग्घेणं पज्जेणं आसणेणं उवनिमंतेइ।

तए णं कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ, निसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ। तए णं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर-जाव-गिहाइं अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिंचि दोवईए देवीए सुई वा खुई वा पवित्ती वा उवलद्धा?

तए णं से कच्छुल्लनारए कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया! अण्णया धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढ-भरहवासं अवरकंका-रायहाणिं गए। तत्थ णं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई-देवी-जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था।"

तए णं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एवं वयासी—"तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया! एवं पुव्वकम्मं।"
तए णं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥

सपंडवस्स कण्हस्स दोवईआणयणट्ठं धायइसंडं पइ पयाणं

१०४ तए णं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं नयरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया! धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभभवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिम-वेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु।

तए णं से दूए भणइ-जाव-पडिवालेमाणा चिट्ठह। तेवि-जाव-चिट्ठंति।

तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सन्नाहियं भेरिं तालेह। तेवि तालेंति।

तए णं तीए सन्नाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा-जाव-छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टा गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया-जाव-पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति॥

कण्हस्स देवाराहणं

१०५ तए णं से कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारनिवेसं करेइ, करेत्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुट्ठियं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ।
तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ-जाव-आगओ—"भणंतु णं देवाणुप्पिया! जं मए कायव्वं।"

कण्हनिद्देसेण सुट्ठियदेवकओ लवणसमुद्दमज्झमग्गो

१०६ तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! दोवई देवी धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभभवणंसि साहिया, तण्णं तुमं देवाणुप्पिया! मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि, जेणाहं अवरकंकं रायहाणिं दोवईए कूवं गच्छामि।

तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया! जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई देवी जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहिया, तहा चेव दोवइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ अवरकंकाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ हत्थिणाउरं साहरामि? उदाहु-पउमनाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि?

१०७ तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया! जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई देवी जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहिया, तहा चेव दोवइं देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ अवरकंकाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ हत्थिणाउरं साहराहि। तुमं णं देवाणुप्पिया! मम लवणसमुद्दे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं मग्गं वियराहि। सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि।

तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं होउ। पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ॥

पउमनाभसमीवे कण्हेण दूयपेसणं

१०८ तए णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणिं सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता पंचहि पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव अवरकंका रायहाणी जेणेव अवरकंकाए रायहाणीए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! अवरकंकं रायहाणिं अणुप्पविसाहि, अणुप्पविसित्ता पउमनाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि, पणामेत्ता तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे एवं वयाहि—हंभो पउमनाभा! अपत्थियपत्थिया! दुरंतपंतलक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसा! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया! अज्ज न भवसि। किण्णं तुमं न याणसि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देविं इहं हव्वमाणेमाणे? तं एवमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स, अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि। एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए॥

१०९ तए णं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अवरकंकं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एस णं सामी! मम विणयपडिवत्ती, इमा अण्णा मम सामिस्स समुहाणत्ति त्ति कट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अक्कमइ, अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेइ, पणामेत्ता तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे एवं वयासी—हंभो पउमनाभा! अपत्थियपत्थिया! दुरंतपंतलक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसा! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया! अज्ज न भवसि। किण्णं तुमं न याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देविं इहं हव्वमाणमाणे? तं एवमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स, अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि। एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए॥

पउमनाभेण दूयस्स अवमाणणं

११० तए णं से पउमनाभे दारुएणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—

"णप्पिणामि णं अहं देवाणुप्पिया! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं। एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जे निग्गच्छामि" त्ति कट्टु दारुयं सारहिं एवं वयासी—

"केवलं भो! रायसत्थेसु दूए अवज्झे"-त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं निच्छुभावेइ॥

दूयस्स कण्हसमीवे आगमणं

१११ तए णं से दारुए सारही पउमनाभेणं रण्णा असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं निच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

एवं खलु अहं सामी! तुब्भं वयणेणं अवरकंकं रायहाणिं गए-जाव-अवदारेणं निच्छुभावेइ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमनाभस्स पंडवेहिं जुद्धं

११२ तए णं से पउमनाभे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह।" तयाणंतरं च णं छेयायरिय-उवदेस-मइ-कप्पणा-विकप्पेहिं सुणिउणेहिं उज्जल-णेवत्थि-हत्थ-परिवत्थियं सुसज्जं-जाव-आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेइ, पडिकप्पेत्ता उवणेति।।

तए णं से पउमनाहे सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवए -जाव-आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुहइ, दुरुहित्ता हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।।

११३ तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमनाभं रायं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता ते पंच पंडवे एवं वयासी—हंभो दारगा ! किण्णं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह उदाहु पेच्छिहिह ?

तए णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—अम्हे णं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह।।

तए णं ते पंच पंडवा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया-जाव-पहरणा रहे दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी—अम्हे वा, पउमनाभे वा राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था।।

पंडवाणं पराजओ

११४ तए णं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हय-महिय-पवर-वीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं पडिसेहेइ।

तए णं ते पंच पंडवा पउमनाभेणं रण्णा हय-महिय-पवर-वीर-घाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसिं पडिसेहिया समाणा अत्थामा अबला अवीरिया अपुरिसक्कारपरक्कमा अधारणिज्जमिति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति।।

कण्हेण पराजय-हेउ-कहणपुव्वं जुज्झं

११५ तए णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच-पंडवे एवं वयासी—कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं संपलग्गा ?

तए णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया-जाव-रहे दुरुहामो, दुरुहेत्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एवं वयामो—अम्हे वा पउमनाभे वा रायत्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा। तए णं से पउमनाभे राया अम्हं खिप्पामेव हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं पडिसेहेइ।।

११६ तए णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी—"जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एवं वयंता—अम्हे, णो पउमनाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गंता तो णं तुब्भे नो पउमनाभे हय-महिय-पवर-वीर-घाइय-विवडयचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं पडिसेहित्था। तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अहं, णो पउमनाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं जुज्झामि।" त्ति रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेयं गोखीरहार-धवलं तणसोल्लिय-सिंदुवार-कुंदेंदु-सण्णिगासं नियस्स बलस्स हरिस-जणणं रिउसेण्ण-विणासणकरं पंचजण्णं संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ। तए णं तस्स पउमनाभस्स तेणं संखसद्देणं बल-तिभाए हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं पडिसेहिए।।

११७ तए णं से कण्हे वासुदेवे—

अइरुग्गयबालचन्द-इंदधणु-सण्णिगासं,
वरमहिस-दरिय-दप्पिय-दढघणसिंगग्गरइयसारं,
उरगवर-पवरगवल-पवरपरहुय-भमरकुल-नीलि-निद्ध-धंत-धोय-पट्ठं,
निउणोविय-मिसिमिसिंत-मणिरयण-घंटियाजालपरिक्खित्तं,
तडितरुणकिरण-तवणिज्जबद्धचिंधं,
दद्दरमलयगिरिसिहर-केसरचामरवाल-अद्धचंदचिंधं,
काल-हरिय-रत्त-पीय-सुक्किल-बहुण्हारुणि-संपिणद्धजीवं,
जीवियंतकरं धणुं परामुसइ, परामुसित्ता धणुं पूरेइ, पूरेत्ता धणुसद्दं करेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बल-तिभाए तेणं धणुसद्देणं हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं पडिसेहिए ।।

पउमनाभस्स पलायणं

११८ तए णं से पउमनाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइणं वेइयं जेणेव अवरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकंकं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता बाराइं पिहेइ, पिहेत्ता रोहासज्जे चिट्ठइ ।।

कण्हस्स नरसिंहरूवविउव्वणं

११९ तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अवरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ एगं महं नरसीह-रूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया-महया सद्देणं पायदद्दरियं करेइ ।

तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं महया-महया सद्देणं पायदद्दरएणं कएणं समाणेणं अवरकंका रायहाणी संभग्ग-पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया ।।

पउमनाभस्स कण्हसरणपडिवत्ती

१२० तए णं से पउमनाभे राया अवरकंकं रायहाणिं संभग्ग-पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरं सरसरस्स धरणियले सण्णिवइयं पासित्ता भीए दोवइं देविं सरणं उवेइ ।

तए णं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी--

"किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इहं हव्वमाणेमाणे ? तं एवमवि गए गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपड-साडए ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय ममं पुरओ काउं कण्हं वासुदेवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु पायवडिए सरणं उवेहि । पणिवइय-वच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा ।।"

१२१ तए णं से पउमनाभे दोवईए देवीए एवं वुत्ते समाणे ण्हाए उल्लपडसाडए ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय दोवइं देविं पुरओ काउं कण्हं वासुदेवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु पायवडिए सरणं उवेइ, उवेत्ता एवं वयासी--"दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे । तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरहंति णं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवंकरणयाए" त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ ।।

सदोवइ-पंडवस्स कण्हस्स पडिआगमणं

१२२ तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमनाभं एवं वयासी--"हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! किण्णं तुमं न जाणसि मम भगिणिं दोवइं देविं इहं हव्वमाणेमाणे ? तं एवमवि गए नत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि" त्ति कट्टु पउमनाभं पडिविसज्जेइ, दोवइं देविं गेण्हइ, गेण्हित्ता रहं दुरुहेइ, दुरुहित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ ।

तए णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहि सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

धायइसंडिल्ल-भरहखेत्तिल्लस्स कविल-कण्ह-वासुदेवजुयलस्स संखसद्देणं मिलणं

१२३ तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे भारहे वासे चंपा नामं नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए ।
तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले नामं वासुदेवे राया होत्था--महताहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे चेइए समोसढे । कविले वासुदेवे धम्मं सुणेइ ।।

१२४ तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतिए धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२५ तए णं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए वियंभइ? कविले वासुदेवे सद्दाइं सुणेइ।

मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी--से नूणं कविला वासुदेवा ! ममं अंतिए धम्मं निसामेमाणस्स [ते?] संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--किमण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए वियंभइ? से नूणं कविला वासुदेवा ! अट्ठे समट्ठे?
हंता ! अत्थि।

तं नो खलु कविला ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं एगखेत्ते एगजुगे एगसमए णं दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा।

एवं खलु वासुदेवा ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं अवरकंकं नयरिं साहरिया। तए णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अवरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए। तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव मुहवायपूरिए इव वियंभइ।।

१२६ तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि।।

तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी--नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं अरहंता वा अरहंतं पासंति, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति, बलदेवा वा बलदेवं पासंति, वासुदेवा वा वासुदेवं पासंति। तहवि य णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासिहिसि।

१२७ तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइणं वेइयं जेणेव वेलाउले तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासइ, पासित्ता एवं वयइ--एस णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ त्ति कट्टु पंचयण्णं संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ।

तए णं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयण्णेइ, आयण्णेत्ता पंचयण्णं संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ।

तए णं दोवि वासुदेवा संखसद्द-सामायारिं करेंति।।

कविलेण पउमनाभस्स निव्वासणं

१२८ तए णं से कविले वासुदेवे जेणेव अवरकंका रायहाणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकंकं रायहाणिं संभग्ग-पागार-गोउर-ट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवर-भवण-सिरिघरं सरसरस्स धरणियले सण्णिवइयं पासइ, पासित्ता पउमनाभं एवं वयासी--किण्णं देवाणुप्पिया ! एसा अवरकंका रायहाणी संभग्ग-पागार-गोउरट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया?

तए णं से पउमनाभे कविलं वासुदेवं एवं वयासी--एवं खलु सामी ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूय अवरकंका रायहाणी संभग्ग-गोउरट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवाडिया।

तए णं से कविले वासुदेवे पउमनाभस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमनाभं एवं वयाणी--हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीण-पुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! किण्णं तुमं न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे?--आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु पउमनाभं निव्विसयं आणवेइ, पउमनाभस्स पुत्तं अवरकंकाए रायहाणीए महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपरिक्खणीयकण्हस्स पंडवकया परिक्खा

१२९ तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे गंगं उवागए ते पंच पंडवे एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह-जाव-ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि।

तए णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता एगट्ठियाए गंगं महानइं उत्तरंति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति—पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगं महानइं बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहू नो पहू उत्तरित्तए ? त्ति कट्टु एगट्ठियं णूमेंति, णूमेत्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति ।।

१३० तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ, पासित्ता जेणेव गंगं महानई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ, एगाए बाहाए गंगं महानइं बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णं उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था।

तए णं से कण्हे वासुदेवे गंगाए महानईए बहुमज्झदेसभाए संपत्ते समाणे संते तंते परितंते बद्धसेए जाए यावि होत्था ।।

१३१ तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था—अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगा महानई बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा। इच्छंतएहिं णं पंचहिं पंडवेहिं पउमनाभे हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं नो पडिसेहिए।

तए णं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं-जाव-जाणित्ता थाहं वियरइ।

तए णं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासासेइ, समासासेत्ता गंगं महानदिं बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णं बाहाए उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी—अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा, जेहिं णं तुब्भेहिं गंगा महानई बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा। इच्छंतएहिं णं तुब्भेहिं पउमनाहे हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं नो पडिसेहिए ।।

१३२ तए णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण-गवेसणं करेमो, करेत्ता एगट्ठियाए गंगं महानइं उत्तरेमो, उत्तरेत्ता अण्णमण्णं एवं वयामो—पहू णं देवाणप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगं महानइं बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु नो पहू उत्तरित्तए ? त्ति कट्टु एगट्ठियं णूमेमो, तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो ।।"

कण्हेण पंडवाणं निव्वासणं

१३३ तए णं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचपंडवाणं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—

"अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सवित्थण्णं वीईवइत्ता पउमनाभं हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं पडिसेहित्ता अवरकंका संभग्गा, दोवई साहत्थिं उवणीया, तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं न विण्णायं, इयाणिं जाणिस्सह त्ति कट्टु लोहदंडं परामुसइ, परामुसित्ता पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेइ, चूरेत्ता पंच पंडवे निव्विसए आणवेइ। तत्थ णं रहमद्दणे नामं कोट्ठे निविट्ठे ।।

तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमण्णागए यावि होत्था।

तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुप्पविसइ ।।

१३४ तए णं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जेणेव पंडू राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! अम्हे कण्हेणं निव्विसया आणत्ता। तए णं पंडू राया ते पंच पंडवे एवं वयासी—"कहण्णं पुत्ता ! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं निव्विसया आणत्ता ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी—"एवं खलु ताओ ! अम्हे अवरकंकाओ पडिनिय्यत्ता लवणसमुद्दं दोण्णि जोयणसयसहस्साइं वीईवइत्था। तए णं से कण्हे वासुदेवे अम्हे एवं वयइ—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह-जाव-ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, एवं तहेव-जाव-चिट्ठामो।

तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं वट्टूण जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छइ तं चेवं सव्वं नवरं कण्हस्स चिंता न बुज्झइ-जाव-निव्विसए आणवेइ ।।"

१३५ तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे एवं वयासी—"दुट्ठु णं पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं।"

तए णं से पंडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एवं निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमे पंच पंडवा निव्विसया आणत्ता। तुमं च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी। तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया। ते पंच पंडवा कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा गच्छंतु ?

१३६ तए णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरुहइ, जहा हेट्ठा-जाव-संदिसंतु णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?

तए णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु तुमे पुत्ता ! पंचपंडवा निव्विसया आणत्ता। तुमं च णं दाहिणड्ढभरहस्स सामी। तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते पंच पंडवा कयरं देसं वा विदिसिं वा गच्छंतु ?

१३७ तए णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एवं वयासी—

"अपूइवयणा णं पिउच्छा ! उत्तमपुरिसा—वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी। तं गच्छंतु णं पंच पंडवा दाहिणिल्लं वयालिं तत्थ पंडुमहुरं निवेसंतु, ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु" त्ति कट्टु कोंतिं देविं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं सा कोंती देवी जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुस्स एयमट्ठं निवेएइ।

तए णं पंडू राया पंच पंडवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेयालिं। तत्थ णं तुब्भे पंडुमहुरं निवेसेह ।।"

पंडुमहुरा-निवेसणं

१३८ तए णं ते पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सबलवाहणा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता हत्थिणाउराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं निवेसंति। तत्थ वि णं ते विपुलभोग-समिति-समण्णागया यावि होत्था ।।

पंडुसेणजम्म

१३९ तए णं सा दोवई देवी अण्णया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था।

तए णं सा दोवई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं-जाव-सुरूवं दारगं पयाया—सूमालकोमलयं गयतालुयसमाणं।

तए णं तस्स णं दारगस्स निव्वत्तबारसाहस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति जम्हा णं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवइए देवीए अत्तए, तं होउ णं इमस्स णं दारगस्स नामधेज्जं 'पंडुसेणे-पंडुसेणे'।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति पंडुसेणत्ति।

तए णं तं पंडुसेणं दारयं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं चेव सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति।

तए णं से कलायरिए पंडुसेणं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ-जाव-अलंभोगसमत्थे जाए। जुवराया-जाव-विहरइ ।।

पंडवाणं दोवईए य पव्वज्जा

१४० तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा समोसढा। परिसा निग्गया। पंडवा निग्गया। धम्मं सोच्चा एवं वयासी—जं नवरं—देवाणुप्पिया ! दोवइं देविं आपुच्छामो। पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो। तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयामो।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे निसंते-जाव-पव्वयामो। तुमं णं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?"

तए णं सा दोवई ते पंच पंडवे एवं वयासी—

"जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गा-जाव-पव्वयह, मम के अण्णे आलंबे वा आहारे वा पडिबंधे वा भविस्सइ ? अहं पि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि ।।"

१४१ तए णं ते पंच पंडवा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पंडुसेणस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेहं उवट्ठवेह।" पंडुसेणस्स अभिसेओ-जाव-राया जाए-जाव-रज्जं पसाहेमाणे विहरइ ।।

तए णं ते पंच पंडवा दोवई य देवी अण्णया कयाइ पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति।

तए णं से पंडुसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेयं करेह-जाव-पुरिससहस्स-वाहिणीओ सिबियाओ उवट्ठवेह"-जाव-सिबियाओ पच्चोरुहंति, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरं भगवंतं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए-जाव-समणा जाया, चोद्दस्स पुव्वाइं अहिज्जंति, अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

तए णं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ-जाव-पव्वइया। सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयंति, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तए णं ते थेरा भगवंतो अण्णया कयाइ पंडुमहुराओ नयरीओ सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरंति ।।

अरिट्ठनेमिस्स निव्वाणं

१४२ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तए णं बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

१४३ तए णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे सुरट्ठाजणवए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं सेयं खलु अम्हं थेरे भगवंते आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए।" अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

"इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए।"

अहासुहं देवाणुप्पिया !

तए णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अब्भणुण्णाया समाणा थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव हत्थकप्पे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थकप्पस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासक्खमणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति, बीयाए झाणं झायंति एवं जहा गोयमसामी, नवरं—जुहिट्ठिलं आपुच्छंति-जाव-अडमाणा बहुजणसद्दं निसामेंति—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जंत-सेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंडवाणं निव्वाणं

१४४ तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थकप्पाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति, पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति, पडिदंसेत्ता एवं वयासी– "एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुज्जं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहित्तए, संलेहणा-झूसणा-झोसियाणं कालं अणवेक्खमाणाणं विहरित्तए त्ति" कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवेत्ता जेणेव सेत्तुज्जे पव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेत्तुज्जं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति दुरुहित्ता संलेहणा-झूसणा-झोसिया कालं अणवकंखमाणा विहरंति।

तए णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे-जाव-तमट्ठमाराहेंति, आराहेत्ता अणंतं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा ।।

दोवईए देवगई

१४५ तए णं सा दोवई अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता आलोइय-पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववण्णा । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं दुवयस्स वि देवस्स दससागरोवमाइं ठिई।

१४६ से णं भंते ! दुवए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता-जाव-महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतंकाहिइ ।।[1]

णाया. सु. १, अ. १६ ।

---

१. वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सुबहू वि तव-किलेसो, नियाण-दोसेण दूसिओ संतो।
न सिवाय दोवईए, जह किल सूमालिया-जम्मे ।।१।।

अथवा—
अमणुण्णमभत्तीए, पत्ते दाणं भवे अणत्थाय।
जह कडुय-तुंब-दाणं, नागसिरि-भवम्मि दोवईए ।।२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. अरिट्ठनेमितित्थे पउमावई-आईणं समणीणं कहाणगाणि

संगहणी-गाहा

१४७ १. पउमावई य २. गोरी, ३. गंधारी, ४. लक्खणा, ५. सुसीमा य ।
६. जंबवइ, ७. सच्चभामा, ८. रुप्पिणी, ९. मूलसिरि, १०. मूलदत्ता वि ॥१॥

कण्हवासुदेवस्स देवी पउमावई

तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नगरी ।
कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं-जाव-कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ।
तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई नाम देवी होत्था--वण्णओ ॥

अरहया अरिट्ठनेमिणा चतुज्जामधम्मदेसणा

१४८ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे-जाव-संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । कण्हे वासुदेवे निग्गए-जाव-पज्जुवासइ ।

तए णं सा पउमावई देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जहा देवई देवी-जाव-पज्जुवासइ ॥
तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए य देवीए तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा--सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं । परिसा पडिगया ॥

कण्हेण बारवईविणासकारणपुच्छा

१४९ तए णं कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--"इमीसे णं भंते ! बारवईए नगरीए नवयोजण-वित्थिण्णाए-जाव-देवलोगभूयाए किंमूलाए विणासे भविस्सइ ?"
कण्हा ! ई अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--"एवं खलु कण्हा ! इमीसे बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए-जाव-देवलोगभूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ ॥

कण्हस्स बारवइविणाससवणेण चिंता

१५० कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--धण्णा णं ते जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेण-वारिसेण-पज्जुण्ण-संब-अणिरुद्ध-दढणेमि-सच्चणेमि-प्पभियओ कुमारा जे णं चइत्ता हिरण्णं-जाव-दाणं दाइयाणं परिभाएत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया । अहण्णं अधण्णे अकयपुण्णे रज्जे य रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए-जाव-अज्झोववण्णे नो संचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

निदाणकरणेणं सव्वेसिं वासुदेवाणं ण पव्वज्जेत्ति फुडीकरणं

१५१ कण्हा ! ई अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--"से नूणं कण्हा ! तव अयं अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--धण्णा णं ते जालिप्पभिइकुमारा-जाव-पव्वइया, अहण्णं अधण्णे-जाव-नो संचाएमि अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । से नूणं कण्हा ! अत्थे समत्थे ?
हंता अत्थि ।
तं नो खलु कण्हा ! एतं भूतं वा भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं-जाव-पव्वइस्संति ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'न एतं भूतं वा भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं-जाव-पव्वइस्संति ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्हा ! ई अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—"एवं खलु कण्हा ! सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा। से एतेणट्ठेणं कण्हा ! एवं वुच्चइ न एतं भूतं वा भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं-जाव-पव्वइस्संति ।।

कण्हस्स अणंतरभवे निरयगई

१५२ तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी—

"अहं णं भंते ! इतो कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि ? कहिं उववज्जिस्सामि ?"

तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

"एवं खलु कण्हा ! तुमं बारवईए नयरीए सुरग्गि-दीवायण-कोव-निदड्ढाए अम्मापिइ-नियग-विप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणवेयालिं अभिमुहे जुहिट्ठिलपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिए कोसंबवणकाणणे नग्गोहवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थ-पच्छाइय-सरीरे जराकुमारेणं तिक्खेणं कोदंड-विप्पमुक्केणं उसुणा वामे पादे विद्धे समाणे कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि। "

तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहयमणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए झियाइ ।।

कण्हस्स आगामिणीए उस्सप्पिणीए अममभवे तित्थयरत्तं

१५३ कण्हा ! ई अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—"मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पे-जाव-झियाह। एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए पंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे बारसमे अममे नामं अरहा भविस्ससि। तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणेत्ता सिज्झिहिसि-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिसि ।।"

कण्हेण अण्णेसिं पव्वज्जागहणे सहायघोसणं

१५४ तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-अप्फोडेइ, अप्फोडेत्ता वग्गइ, वग्गित्ता तिवइं छिंदइ, छिंदित्ता सीहणायं करेइ, करेत्ता अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव आभिसेक्कं हत्थिं दुरुहइ, दुरूहित्ता जेणेव बारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। आभिसेयहत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवईए नयरीए सिंघाडग तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु हत्थिखंधवरगया महयामहया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह--एवं खलु देवाणुप्पिया ! बारवईए नयरीए नवजोयणविच्छिण्णाए-जाव-देवलोगभूयाए सुरग्गि-दीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ; तं जो णं देवाणुप्पिया ! इच्छइ बारवईए नयरीए राया वा जुवराया वा ईसरे वा तलवरे वा माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठी वा देवी वा कुमारो वा कुमारी वा अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, तं णं कण्हे वासुदेवे विसज्जेइ। पच्छातुरस्स वि य से अहापवित्तं वित्तिं अणुजाणइ। महया इड्ढिसक्कारसमुदएण य से निक्खमणं करेइ। दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोसेह, घोसेत्ता ममं एयं पच्चप्पिणह।"

तए णं ते कोडुंबिया-जाव-पच्चप्पिणंति ।।

पउमावईदेवीए पव्वज्जासंकप्पो

१५५ तए णं सा पउमावई देवी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, से जहेयं तुब्भे वयह। जं नवरं—देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि। तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।" अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।

तए णं सा पउमावई देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ, दुरुहित्ता जेणेव बारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–"इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए।"

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि।

तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पउमावईए देवीए महत्थं महग्घं महरिहं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

पउमावईपव्वज्जा

१५६ तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावइं देविं पट्टयं दुरुहेइ, अट्ठसएणं सोवण्णकलसाणं-जाव-महाणिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सिबियं दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवयए पव्वए जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयं ठवेइ, पउमावइं देविं सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"एस णं भंते ! मम अग्गमहिसी पउमावई नामं देवी इट्ठा-जाव-मणाभिरामा -जाव-उंबरपुप्फं पिव दुल्लहा सवणयाए, किमंगपुण पासणयाए ? तण्णं अहं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामि। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं।"

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।

तए णं सा पउमावई उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयइ, ओमुयित्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ करेत्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"आलित्ते णं भंते ! लोए-जाव-तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं धम्ममाइक्खियं॥"

१५७ तए णं अरहा अरिट्ठणेमी पउमावइं देविं सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव जक्खिणीए अज्जाए सिस्सिणित्ताए दलयइ।

तए णं सा जक्खिणी अज्जा पउमावइं देविं सयमेव पव्वावेइ सयमेव मुंडावेइ सयमेव सेहावेति धम्ममाइक्खइ–एवं देवाणुप्पिए ! गंतव्वं-जाव-संजमेणं संजमियव्वं।

तए णं सा पउमावई देवी तमाणाए तह चिट्ठइ-जाव-संजमेणं संजमइ।

तए णं सा पउमावई अज्जा जाया। इरियासमिया-जाव-गुत्तबंभयारिणी।

तए णं सा पउमावई अज्जा जक्खिणीए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

पउमावईए सिद्धी

१५८ तए णं सा पउमावई अज्जा बहुपडिपुण्णाइं वीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे-जाव-तमट्ठं आराहेइ, चरिमुस्सासेहिं सिद्धा-जाव-सव्व-दुक्खप्पहीणा॥

गोरिपभितीणं कहाणगसंखेवो

१५९ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नयरी। रेवयए पव्वए। उज्जाणे नंदणवणे।

तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे वासुदेवे।

तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स गोरी देवी–वण्णओ।

अरहा समोसढे। कण्हे णिग्गए। गोरी जहा पउमावई तहा निग्गया। धम्मकहा। परिसा पडिगया। कण्हे वि।

तए णं सा गोरी जहा पउमावई तहा निक्खंता-जाव-सिद्धा-जाव-सव्व दुक्खप्पहीणा॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं—गन्धारी, लक्खणा, सुसीमा, जंबवई, सच्चभामा, रुप्पिणी। अट्ठ वि पउमावईसरिसाओ ।।[1]

मूलसिरीमूलदत्ताणं कहाणगाइं

१६० तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए रेवयए पव्वए नंदणवणे उज्जाणे कण्हे वासुदेवे।

तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबवईए देवीए अत्तए संबे नामं कुमारे होत्था—अहीणपडिपुण्णपंचेंदियसरीरे। तस्स णं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था—वण्णओ ।।

अरहा समोसढे। कण्हे निग्गए। मूलसिरी वि निग्गया, जहा पउमावई। जं नवरं—देवाणुप्पिया! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि-जाव-सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खपहीणा।

एवं मूलदत्ता वि।

अंत० व० ५, अ० १–१०।

---

३. पोट्टिलाकहाणयं

तेयलिपुरे तेयलिपुत्ते अमच्चे

१६१ तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरे नाम नयरे होत्था। तस्स णं तेयलिपुरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए एत्थ णं पमयवणे नामं उज्जाणे होत्था। तत्थ णं तेयलिपुरे णयरे कणगरहणामं राया होत्था।

तस्स णं कणगरहस्स रण्णो पउमावईणामं देवी होत्था।

तस्स णं कणगरहस्स रण्णो तेयलिपुत्ते नामं अमच्चे—साम-दंड-भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नयविहण्णू विहरइ।

तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था—अड्ढे-जाव-अपरिभूए ।।

तस्स णं भद्दा नामं भारिया होत्था।

कलायस्स पुत्ती पोट्टिला

१६२ तस्स णं कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया होत्था—रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा।

तए णं सा पोट्टिला दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगास-तलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी-कीलमाणी विहरइ ।।

---

१. कण्ह-अग्गमहिसी

कण्हस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स अंतिते मुंडा भवेत्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइया सिद्धाओ बुद्धाओ मुत्ताओ अंतगडाओ परिणिव्वुडाओ सव्वदुक्खप्पहीणाओ, तं जहा—

संगहणी-गाहा

पउमावती य गोरी, गंधारी लक्खणा सुसीमा य।
जंबवती सच्चभामा, रुप्पिणी अग्गमहिसीओ ।।१।।

ठाणं० अ० ८, सु० ६२६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेयलिपुत्तस्स पोट्टिलाए आसत्ती

१६३ इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया-भड-चडगर-आसवाहणियाए निज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ।

तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणग-तिंदूसएणं कीलमाणिं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य-जाव-अज्झोववण्णे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं नामधेज्जा वा ?"

तए णं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी—"एस णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया—रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा ।।"

पोट्टिलाए वरणं

१६४ तए णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिणियत्ते समाणे अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह ।"

तए णं ते अब्भिंतरठाणिज्जा पुरिसा तेयलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा-जाव-करयल परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तेयलिस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहे तेणेव उवागया ।।

१६५ तए णं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ, उवणिमंतेत्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—"संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयणं ?"

तए णं ते अब्भिंतरठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियारदारयं एवं वयासी—"अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो । तं जइ णं जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो वा दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स । तो भण देवाणुप्पिया ! किं दलामो सुंकं ।।"

तए णं कलाए मूसियारदारए ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—"एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुंके जण्णं तेयलिपुत्त मम दारियानिमित्तेणं अणुग्गहं करेइ ।" ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

१६६ तए णं ते अब्भिंतरठाणिज्जा पुरिसा कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनियत्तंति, जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं एयमट्ठं निवेइंति ।।

पोट्टिलाए पाणिग्गहणं

१६७ तए णं कलाए मूसियारदारए अण्णया कयाइ सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं सीयं दुरुहेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयलिपुरं नयरं मज्झमज्झेणं जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ ।

तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं कारेइ, कारेत्ता पाणिग्गहणं करेइ, करेत्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्त-नाई-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।

तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।।

कणगरहस्स रज्जासत्ती पुत्तंगछेयणं च

१६८ तए णं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए जाए पुत्ते विपंगेइ—अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिंदइ अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं अंगोवंगाइं विपत्तेइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमावइपुत्तसंरक्खणत्थं तेयलिपुत्तस्स अणुमई

१६९ तए णं तीसे पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए जाए पुत्ते वियंगेइ—अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं अंगमंगाइं वियत्तेइ। तं जइ णं अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु मम तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियगं चेव सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए जाए पुत्ते वियंगेइ—अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं अंगोवंगाइं वियत्तेइ। तं जइ णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं पयायामि, तए णं तुमं कणगरहस्स रहस्सियगं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि। तए णं से दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ।"

तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता पडिगए॥

पउमावइदारग-पोट्टिलादारियाणं जम्माणंतरं परोप्परं परावत्तण

१७० तए णं पउमावई देवी पोट्टिला य अमच्ची सममेव गब्भं गेण्हंति, सममेव गब्भं परिवहंति सममेव गब्भं परिवड्ढंति।
तए णं सा पउमावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं-जाव-पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया। जं रयणिं च णं पउमावई देवी दारगं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया।

तए णं सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं अम्मो! तेयलिपुत्तं रहस्सियगं चेव सद्दावेहि।"

तए णं सा अम्मधाई तह त्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अंतेउरस्स अवदारेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया! पउमावई देवी सद्दावेइ।"

तए णं तेयलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्सियगं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"संदिसंतु णं देवाणुप्पिए! जं मए कायव्वं।"

तए णं पउमावई देवी तेयलिपुत्तं एवं वयासी—"एवं खलु कणगरहे राया-जाव-पुत्ते वियंगेइ। अहं च णं देवाणुप्पिया! दारगं पयाया। तं तुमं णं देवाणुप्पिया! एयं दारगं गेण्हाहि-जाव-तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्ति" कट्टु तेयलिपुत्तस्स हत्थे दलयइ। तए णं तेयलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ, उत्तरिज्जेणं पिहेइ, अंतेउरस्स रहस्सियगं अवदारेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिलं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया-जाव-पुत्ते वियंगेइ। अयं च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए। तं नं तुमं देवाणुप्पिए! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सियगं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवेहि य संवड्ढेहि य। तए णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ" त्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे निक्खिवइ, निक्खिवित्ता पोट्टिलाए पासाओ तं विणिहायमावण्णियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहेत्ता अंतेउरस्स अवदारेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ-जाव-पडिनिग्गए॥

दारियाए मयकिच्चं

१७१ तए णं तीसे पउमावईए देवीए अंगपडियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावण्णियं च दारियं पयायं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"एवं खलु सामी! पउमावई देवी मएल्लियं दारियं पयाया॥"

तए णं कणगरहे राया तीसे मएल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूइं लोगियाइं मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता कालेणं विगयसोए जाए॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमच्चपुत्तस्स जम्मुस्सवो कणगज्झयनामकरणं य

१७२ तए णं से तेयलिपुत्ते कल्लं कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चारगसोहणं करेह--जाव-ठिइपडियं दसदेवसियं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।"

तेवि तहेव करेंति, तहेव पच्चप्पिणंति।

जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउ णं दारए नामेणं कणगज्झए-जाव-अलंभोगसमत्थे जाए।

अमच्चस्स पोट्टिलं पइ विरागो

१७३ तए णं सा पोट्टिला अण्णया कयाइ तेयलिपुत्तस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था—नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा?

तए णं तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया। नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते मम नाम गोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा?" (ति कट्टु?) ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायइ।।

पोट्टिलाए दाणसालाकरणं

१७४ तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—"मा णं तुमं देवाणुप्पिए! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाहि। तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि।" तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ तुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असणपाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहरइ।।

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियाए आगमणं

१७५ तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ इरियासमियाओ-जाव-गुत्तबंभचारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ जणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति।

तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं-जाव-करेइ।
अडमाणीओ तेयलिस्स गिहं अणुपविट्ठाओ।।

पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा

१७६ तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—

"एवं खलु अहं अज्जाओ! तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पुव्विं इट्ठा-जाव-मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा-जाव-अमणामा जाया। नेच्छइ णं तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा? तं तुब्भे णं अज्जाओ बहुनायाओ बहुसिक्खियाओ बहुपढियाओ बहूणि-गामागर-जाव-आहिंडह, बहूणं राईसर-जाव-गिहाइं अणुपविसह। तं अत्थि याइं भे अज्जाओ! केइ कहिंचि चुण्णजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कंदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे, जेणाहं तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा-जाव-मणामा भवेज्जामि?"

अज्जा-संघाडगेण धम्मोवएसो

१७७ तए णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कण्णे ठएंति, ठवेत्ता पोट्टिलं एवं वयासी—"अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गंथीओ-जाव-गुत्तबंभचारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पगारं कण्णेहिं वि निसामित्तए, किमंग पुण उवदंसित्तए वा आयरित्तए वा? अम्हे णं तव देवाणुप्पिए! विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहिज्जामो।।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी—"इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए।" तए णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति।।

पोट्टिलाए साविया धम्मगहणं

१७८ तए णं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठा तुट्ठा एवं वयासी—"सद्दहामि णं अज्जाओ! निग्गंथं पावयणं-जाव-से जहेयं तुब्भे वयह। इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिए!

तए णं सा पोट्टिला ताहिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं-जाव-गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया-जाव-पडिलाभेमाणी विहरइ।।

पोट्टिलाए पव्वज्जागहणसंकप्पो

१७९ तए णं तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा-जाव-मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा-जाव-अमणामा जाया। नेच्छइ णं तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा? तं सेयं खलु ममं सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया पव्वइत्तए।।"

तेयलिपुत्तं पइ धम्मबोहकरणपडिबद्धाए पोट्टिलाए पव्वज्जागहणं देवलोगुववाओ य

१८० तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—"एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि। तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोगाओ आगम्म केवलिपण्णत्ते धम्मे बोहेहि, तोऽहं विसज्जेमि। अह णं तुमं ममं न संबोहेसि, तो ते न विसज्जेमि।।"

तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ।।

१८१ तए णं तेयलिपुत्ते विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ--जाव-सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पोट्टिलं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पुरिससहस्स-वाहिणीयं सीयं दुरुहित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहिनिग्घोसनाइय-रवेणं तेयलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पोट्टिलं पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा -जाव-मणामा। एस णं संसारभउव्विग्गा भीया जम्मण-जर-मरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं।"
अहासुहं, मा पडिबंधं करेहि।

तए णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं अज्जा! लोए एवं जहा देवाणंदा-जाव-एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणेणं छेएत्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा।।

कणगरहस्स मच्चू

१८२ तए णं से कणगरहे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते राईसर-जाव-नीहरणं करेंति, करेत्ता अण्णमण्णं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य-जाव-मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था। अम्हे णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा। अयं च णं तेयली अमच्चे कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था। तं सेयं खलु अम्हं तेयलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य-जाव-मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था। अम्हे णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा। तुमं च णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे रज्जधुराचिंतए होत्था। तं जइ णं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपण्णे अभिसेयारिहे तण्णं तुमं अम्हं दलाहि जण्णं अम्हे महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचामो।"

कणगज्झयस्स रायाभिसेओ

१८३ तए णं तेयलिपुत्ते तेसिं ईसरपभिईणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं-जाव-सस्सिरीयं करेइ, करेत्ता तेसिं ईसरपभिईणं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—"एस णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपण्णे, मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियगं संवड्ढिए। एयं णं तुब्भे महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह।" सव्वं च से उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ।

तए णं ते ईसरपभिइओ कणगज्झयं कुमारं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति॥

तए णं से कणगज्झए कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसार-जाव-रज्जं पसासेमाणे विहरइ॥

तेयलिपुत्तस्स सम्माणं

१८४ तए णं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एस णं पुत्ता ! तव रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य, तुमं च तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पभावेणं। तं तुमं णं तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि, इंतं अब्भुट्ठेहि, ठियं पज्जुवासेहि, वच्चंतं पडिसंसाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि, भोगं च से अणुवड्ढेहि।"

तए णं से कणगज्झए पउमावईए तहत्ति वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाइ परिजाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ, इंतं अब्भुट्ठेइ, ठियं पज्जुवासेइ, वच्चंतं पडिसंसाहेइ, अद्धासणेणं उवणिमंतेइ, भोगं च से अणुवड्ढेइ॥

तेयलिपुत्तस्स पोट्टिलदेवकओ धम्मसंबोहोवाओ

१८५ तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिक्खणं केवलिपण्णत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेयलिपुत्ते संबुज्झइ।

तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ-जाव-भोगं च से अणुवड्ढइ, तए णं से तेयलिपुत्ते अभिक्खणं-अभिक्खणं संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ। तं सेयं खलु मयं कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ।

तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभियओ पासंति ते तहेव आढायंति परियाणंति अब्भुट्ठेंति, अंजलिपग्गहं करेंति, इट्ठाहिं कंताहिं-जाव-वग्गूहिं आलवमाणा य संलवमाणा य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गतो य समणुगच्छंति॥

१८६ तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ।

तए णं से कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठेमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ।

तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अंजलिं करेइ। तओ य णं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तेयलिपुत्ते कणगज्झयं रायं विप्परिणयं जाणित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए एवं वयासी—"रुट्ठे णं मम कणगज्झए राया। हीणे णं मम कणगज्झए राया। अवज्झाए णं मम कणगज्झए राया। तं न नज्जइ णं मम केणइ कु-मारेण मारेहिइ" त्ति कट्टु भीए तत्थे-जाव-सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखंधं दुरूहइ, दुरुहित्ता तेयलिपुरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं तेयलिपुत्तं जे जहा ईसर-जाव-सत्थवाहपभियओ पासंति ते तहा नो आढायंति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठेंति नो अंजलि-पग्गह करेंति, इट्ठाइं-जाव-वग्गूहिं नो आलवंति नो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति।

तए णं तेयलिपुत्ते अमच्चे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। जा वि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा—दासे इ वा पेसे इ वा भाइल्लए इ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ। जा वि य से अब्भितरिया परिसा भवइ, तं जहा—पिया इ वा माया इ वा भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा सुण्हा इ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ॥

तेलियपुत्तस्स मरणचेट्ठाए विहलीकरणं

१८७ तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीइत्ता एवं वयासी—"एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ निग्गच्छामि तं चेव-जाव-अब्भितरिया परिसा नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भु-ट्ठेइ। तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ। से य विसे नो कमइ।

तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं खंधंसि ओहरइ। तत्थ वि य से धारा ओएल्ला।

तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए बंधइ, बंधित्ता रुक्खं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासगं रुक्खे बंधइ, बंधित्ता अप्पाणं मुयइ। तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना।

तए णं से तेयलिपुत्ते महइमहालियं सिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारम पोरिसीयंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ। तत्थ वि से थाहे जाए॥

तए णं से तेयलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अप्पाणं मुयइ। तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए।

तेयलिपुत्तस्स विम्हयकरणं

१८८ तए णं से तेयलिपुत्ते एवं वयासी—"सद्धेयं खलु भो! समणा वयंति। सद्धेयं खलु भो! माहणा वयंति। सद्धेयं खलु भो! समण-माहणा वयंति। अहं एगो असद्धेयं वयामि। एवं खलु—

अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते। को मेयं सद्दहिस्सइ?
सह मित्तेहिं अमित्ते। को मेयं सद्दहिस्सइ?
सह अत्थेणं अणत्थे। को मेयं सद्दहिस्सइ?
सह दारेणं अदारे। को मेयं सद्दहिस्सइ?
सह दासेहिं अदासे। को मेयं सद्दहिस्सइ?
सह पेसेहिं अपेसे। को मेयं सद्दहिस्सइ?
सह परिजणेणं अपरिजणे। को मेयं सद्दहिस्सइ?

एवं खलु तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं कणगज्झएणं रण्णा अवज्झाएणं समाणेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते। से वि य नो कमइ। को मेयं सद्दहिस्सइ? तेयलिपुत्तेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसि-कुसुमप्पगासे खुरधारे असी खंधंसि ओहरिए। तत्थ वि य से धारा ओएल्ला। को मेयं सद्दहिस्सइ?

तेयलिपुत्तेणं पासगं गीवाए बंधित्ता रुक्खं दुरूढे, पासगं रुक्खे बंधित्ता अप्पा मुक्के। तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना। को मेयं सद्दहिस्सइ?

तेयलिपुत्तेणं महइमहालियं सिलं गीवाए बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसीयंसि उदगंसि अप्पा मुक्के। तत्थ वि य णं से थाहे जाए। को मेयं सद्दहिस्सइ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेयलिपुत्तेणं सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पा झुसे। तत्थ वि य से अग्गी विज्झाए। को मेयं सद्दहिस्सइ?" —ओहयमणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए झियायइ ।।

पोट्टिलदेवस्स संवादो

१८९ तए णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता तेयलिपुत्तस्स अदूर-सामंते ठिच्चा एवं वयासी—
"हं भो तेयलिपुत्ता! पुरओ पवाए, पिट्ठओ हत्थिभयं दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति। गामे पलित्ते रण्णे झियाइ, रण्णे पलित्ते गामे झियाइ। आउसो तेयलिपुत्ता! कओ वयामो?"
तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलं देवं एवं वयासी—'भीयस्स खलु भो! पव्वज्जा सरणं, उक्कंठियस्स सदेसगमणं, छुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, भाइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्चं, परं अभिउंजिउकामस्स सहायकिच्चं। खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि न भवइ।।"
तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी—
"सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता! एयमट्ठं आयाणाहि" त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

तेयलिपुत्तस्स जाईसरणाणंतरं पव्वज्जागहणं

१९० तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाईसरणे समुप्पन्ने।।
तए णं तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावईए विजए पोंडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था। तए णं हं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवत्ताए उववण्णे। तए णं हं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए। तं सेयं खलु मम पुव्वुट्ठिाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए"—एवं संपेहेई संपेहेत्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ आरुहेत्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टयंसि सुहनिसण्णस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमण्णागयाइं।।

तेयलिपुत्ताणगारस्स केवलणाणं

१९१ तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे।
तए णं तेयलिपुरे नयरे अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुंदुहीओ समाहयाओ, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाइए, चेलुक्खेवे दिव्वे गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था।।

कणगज्झयस्स सावगधम्म-गहणं

१९२ तए णं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी—"एवं खलु तेयलिपुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए। तं गच्छामि णं तेयलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेमि"—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेयलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं च णं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेइ, खामेत्ता नच्चासण्णे-जाव-पज्जुवासइ।
तए णं से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णो तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ।
तए णं से कणगज्झए राया तेयलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे।।

तेयलिपुत्तकेवलिस्स सिद्धिगमणं

१९३ तए णं तेयलिपुत्ते केवली बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता-जाव-सिद्धे।।[1] णाया० सु० १, अ० १४।

---

१. वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

जाव न दुक्खं पत्ता, माणब्भंसं च पाणिणो पायं।
ताव न धम्मं गेण्हंति भावओ तेयलिसुय व्व।। १ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. पासनाहतित्थे समणीए कालीए कहाणगं

१९४ समणेणं भगवया महावीरेणं-जाव-संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पण्णत्ता तं जहा—

चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमे वग्गे।

बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो अग्गमहिसीणं बीए वग्गे।

असुरिंदवज्जियाणं दाहिणिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तईए वग्गे।

उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासि इंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थे वग्गे।

दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं पंचमे वग्गे।

उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं छट्ठे वग्गे।

चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमे वग्गे।

सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमे वग्गे।

सक्कस्स अग्गमहिसीणं नवमे वग्गे।

ईसाणस्स य अग्गमहिसीणं दसमे वग्गे।

१९५ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। चेल्लणा देवी। सामी समोसढे। परिसा निग्गया-जाव-परिसा पज्जुवासइ।।

चमरचंचाए कालीदेवी

१९६ तेणं कालेणं तेणं समएणं काली देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालिवडेंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महयरियाहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं कालिवडिंसय-भवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवादियरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी-आभोएमाणी पासइ।।

कालीदेवीए भगवओ महावीरस्स समीवे नट्टविही

१९७ एत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण-हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ, ईसिं पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयल परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

"नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं।

नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स।

वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगया, पासउ मे समणे भगवं महावीरे तत्थगए इहगयं" ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा।

१९८ तए णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—'सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए नमंसित्तए सक्कारित्तए सम्माणित्तए कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आभिओगिए देवे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे विहरइ एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ-जाव-दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।" ते वि तहेव करेत्ता-जाव-पच्चप्पिणंति, नवरं—जोयणसहस्स-वित्थिण्णं जाणं। सेसं तहेव। तहेव नामगोयं साहेइ, तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ--जाव-पडिगया।।

गोयमेण कालीदेवीए पुव्वभवपुच्छा

१९९ भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

"कालीए णं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभागे कहिं गए? कहिं अणुप्पविट्ठे?"

गोयमा! सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे। कूडागारसाला दिट्ठंतो।

अहो णं भंते! काली देवी महिड्ढिया महज्जुइया महब्बला महायसा महासोक्खा महाणुभागा।

कालीए णं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे? किण्णा पत्ते? किण्णा अभिसमण्णागए?

कालीदेवीए पुव्वभवो कालीनामेणं

२०० गोयमा! ति समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा नामं नयरी होत्था—वण्णओ। अंबसालवणे चेइए। जियसत्तू राया।

तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावई होत्था—अड्ढे-जाव-अपरिभूए।

तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी नामं भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया-जाव-सुरूवा।

तस्स णं कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली नामं दारिया होत्था—वड्ढा वड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी निव्विण्णवरा वरगपरिवज्जिया वि होत्था।।

कालीए पासदंसणं धम्मसवणं य

२०१ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टी अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधरे वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सव्वदरिसी नवहत्थुस्सेहे समचउरंस-संठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जल्लमल्लकलंकसेयरहियसरीरे सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धि-गइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे समोसढे। परिसा निग्गया-जाव-पज्जुवासइ।।

२०२ तए णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण-हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"एवं खलु अम्मयाओ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव आमल-कप्पाए नयरीए अंबसालवणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए।"

अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेहि।

तए णं सा काली दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरा चेडिया-चक्कवाल-परिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा।

तए णं सा काली दारिया धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा समाणी एवं जहा देवई तहा पज्जुवासइ।

तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं कहेइ।।

कालीए पव्वज्जासंकप्पो

२०३ तए णं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"सद्दहामि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं भंते! निग्गंथं पावयणं,-जाव-से जहेयं तुब्भे वयह। जं नवरं—देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।"
अहासुहं देवाणुप्पिए!

तए णं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हियया पासं अरहं वंदइ नमंसइ,

वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ,

दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ,

पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ,

पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

"एवं खलु अम्मयाओ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मे निसंते। से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तए णं अहं अम्मयाओ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मण-मरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेहि।

कालीपव्वज्जा

२०४ तए णं से काले गाहावई विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खाडावेइ,

उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ,

आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए-जाव-विपुलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ,

सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ कालिं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ,

ण्हावेत्ता सव्वालंकार-विभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ,

दुरूहेत्ता मित्तनाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ,

निग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थगराइसए पासइ, पासित्ता सीयं ठवेइ,

ठवेत्ता कालिं दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ।

तए णं तं कालिं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा-दाणीए तेणेव उवागच्छंति,

उवागच्छित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता-जाव-उंबरपुप्फं पिव दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए? एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं।"

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि।

तए णं सा काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ,

वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ,

अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ,

करेत्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"आलित्ते णं भंते ! लोए-जाव-तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वाविय-जाव-धम्म माइक्खियं ।
तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ ।
तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं कुमारिं सयमेव पव्वावेइ-जाव-धम्ममाइक्खइ ।
तए णं सा काली पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।
तए णं सा काली अज्जा जाया—इरियासमिया-जाव-गुत्तबंभयारिणी ।
तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।।

कालीए बाउसियत्तं

२०५ तए णं सा काली अज्जा अण्णया कयाइ सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था । अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराणि धोवेइ, कक्खंतराणि धोवेइ, गुज्झंतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा आसयइ वा, सयइ वा ।।

तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी—"नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिए ! समणीणं निग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए । तुमं च णं देवाणुप्पिए ! सरीरबाउसिया जाया अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवसि, पाए धोवसि, सीसं धोवसि, मुहं धोवसि, थणंतराणि धोवसि, कक्खंतराणि धोवसि, गुज्झंतराणि धोवसि, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा आसयसि वा सयसि वा । तं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि-जाव-पायच्छित्तं पडिवज्जाहि" ।
तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीया संचिट्ठइ ।
तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलेंति निंदंति खिंसंति गरहंति अवमन्नंति अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति ।।

कालीए पुढोविहारो

२०६ तए णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलिज्जमाणीए-जाव-निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था—"जया णं अहं अगारमज्झे वसित्था तया णं अहं सयंवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए, उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पाडिक्कयं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए, उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पाडिक्कयं उवस्सयं गेण्हइ । तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराणि धोवेइ, कक्खंतराणि धोवेइ, गुज्झंतराणि धोवेइ, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा आसयइ वा सयइ वा ।।

कालीए मच्चू देवीत्तं च

२०७ तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेइ, झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालिवडेंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जाइभागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवित्ताए उववण्णा ।
तए णं सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गच्छति ।
तए णं सा काली देवी चउण्हं सामाणिय-साहस्सीणं-जाव-सोलसण्हं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं कालिवडेंसगभवण-वासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं कारेमाणी-जाव-विहरइ ।
एवं खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।।

कालीदेवीए ठिई सिद्धी य

२०८ कालीए णं भंते ! देवीए केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।
काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ ।। णाया० सु० २, व० १, अ० १ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. पासनाहतित्थे राई-आईणं कहाणगाणि

राईकहाणगे राईदेवीए नट्टं

२०९ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया-जाव-पज्जुवासइ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव आगया, नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगया।।

राईदेवीए पुव्वभवो

२१० भंते! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा।

गोयमा! ति समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नयरी अंबसालवणे चेइए। जियसत्तू राया। राई गाहावई। राइसिरी भारिया। राई दारिया। पासस्स समोसरणं। राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता।
तए णं सा राई अज्जा जाया।
तए णं सा राई अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ।
तए णं सा राइ अज्जा अण्णया कयाइ सरीरबाउसिया जाया या वि होत्था।
तए णं सा राई अज्जा पासत्था तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए रायवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जाए भागमेत्ताए ओगाहणाए राईदेवित्ताए उववण्णा-जाव-अंतं काहिइ।।

णाया० सु० २ व० १ अ० २।

रयणीकहाणगं

२११ रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सामी समोसढे।
तेणं कालेणं तेणं समएणं रयणी देवी चमरचंचाए रायहाणीए। आगया।
भंते! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा।
गोयमा! ति समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नयरी अंबसालवणे चेइए। जियसत्तू राया। रयणे गाहावई। रयणसिरी भारिया। रयणी दारिया। सेसं तहेव-जाव-अंतं काहिइ।।

णाया० सु० २ व० १ ग० ३।

विज्जूकहाणगं

२१२ एवं विज्जू वि—आमलकप्पा नयरी। विज्जू गाहावई। विज्जूसिरी भारिया। विज्जू दारिया। सेसं तहेव।।

णाया० सु० २ व० १ अ० ४।

मेहाकहाणगं

२१३ एवं मेहा वि—आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई। मेहसिरी भारिया। मेहा दारिया। सेसं तहेव।

णाया० सु० २ व० १ अ० ५।

सुंभाकहाणयं

२१४ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया-जाव-पज्जुवासइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणं कालेणं तेणं समएणं सुंभा देवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुंभंसि सीहासणंसि विहरइ। कालीगमएणं-जाव-नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया।

पुव्वभवपुच्छा।

सावत्थी नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया। सुंभे गाहावई। सुंभसिरी भारिया। सुंभा दारिया। सेसं जहा कालीए नवरं अद्धट्ठाइं पलिओवमाइं ठिई।।

णाया० सु० २ व० २ अ० १।

निसुंभा-रंभा-निरंभा-मयणा कहाणगाणि

२१५ एवं--सेसा वि चत्तारि अज्झयणा। सावत्थीए। नवरं--माया पिया धूया-सरिनामया।।

णाया० सु० २ व० २ अ० २-५।

अलाकहाणगं

२१६ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया-जाव-पज्जुवासइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं अला देवी धरणाए रायहाणीए अलावडेंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं-जाव-नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया।

पुव्वभवपुच्छा।

वाणारसीए नयरीए कामगहावणे चेइए। अले गाहावई। अलसिरी भारिया। अला दारिया। सेसं जहा कालीए, नवरं--धरण-अग्गमहिसित्ताए उववाओ। साइरेगं अद्धपलिओवमं ठिई। सेसं तहेव।।

णाया० सु० २ व० ३ अ० १।

कमासतेरा-सोयामणी-इंदा-धणविज्जुया णं कहाणगाणि

२१७ एवं--कसा, सतेरा, सोयामणी, इंदा, घणविज्जुया वि सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ।

णाया० सु० २ व० ३ अ० २-६।

सेसदाहिणिल्लइंदअग्गमहिसीकहाणगसूयणा

२१८ एए छ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा।

णाया० सु० २ व० ३ अ० ७-१२।

२१९ एवं--हरिस्स अग्गिसिहस्स पुण्णस्स जलकंतस्स अमियगतिस्स वेलंबस्स घोसस्स वि एए चेव छ-छ अज्झयणा। एवमेते दाहिणिल्लाणं चउपण्णं अज्झयणा भवंति। सव्वाओ वि वाणारसीए कामगहावणे चेइए।

णाया० सु० २ व० ३ अ० १३-५४।

रूयाईणं उत्तरिल्लइंदअग्गमहिसीणं कहाणगाइं

२२० तेण कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव-परिसा पज्जुवासइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रूया देवी रूयाणंदा रायहाणी, रूयगवडेंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा, नवरं--पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया। सेसं तहेव, नवरं--भूयाणंदअग्गमहिसित्ताए उववाओ। देसूणं पलिओवमं ठिई।।

णाया० सु० २ व० ४ अ० १।

२२१ एवं--सुरूयावि, रूयंसा वि, रूयगावई वि, रूयकंता वि, रूयप्पभा वि।।

२२२ एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं वेणुदालिस्स हरिस्सहस्स अग्गिमाणवस्स विसिट्ठस्स जलप्पभस्स अमितवाहणस्स पभंजणस्स महाघोसस्स भाणियव्वाओ।।

णाया० सु० २ व० ४ अ० २-५४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाहिणिल्लपिसायकुमारिंदग्गमहिसीणं कमलाईणं कहाणगाणि

२२३ गाहाओ—— कमला कमलप्पभा चेव, उप्पला य सुदंसणा। रूववई बहुरूवा, सुरूवा सुभगा वि य ॥ १ ॥
पुण्णा बहुपुत्तिया चेव, उत्तमा भारिया वि य। पउमा वसुमती चेव, कणगा कणगप्पभा ॥ २ ॥
वडेंसा केउमई चेव, वइरसेणा रइप्पिया। रोहिणी नवमिया चेव, हिरीपुप्फवती ति य ॥ ३ ॥
भुयगा भुयगवई चेव, महाकच्छाऽपराइया। सुघोसा विमला चेव, सुस्सरा य सरस्सई ॥ ४ ॥

णाया० सु० २ व० ५ अ० ३२ ।

२२४ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव-परिसा पज्जुवासइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव, नवरं——पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स अंतिए निक्खंता। कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी। अद्धपलिओवमं ठिई।

णाया० सु० २ व० ५ अ० १ ।

२२५ एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं। भाणियव्वाओ सव्वाओ नागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे। मायापियरो धूया—सरिसनामया। ठिई अद्धपलिओवमं।

णाया० सु० २ व० ५ अ० २-३२ ।

महाकालाइ-उत्तरिल्लपिसाय-इंदग्गमहिसीणं कहाणगाणि

२२६ छट्ठो वि वग्गो पंचमवग्ग-सरिसो, नवरं——महाकालाईणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ। पुव्वभवे। सागेए नगरे। उत्तरकुरु-उज्जाणे। मायापियरो धूया——सरिनामया। सेसं तं चेव ॥

णाया० सु० २ व० ६ अ० १-३२ ।

सूरऽग्गमहिसीणं कहाणगाणि

२२७ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव-परिसा पज्जुवासइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि। सेसं जहा कालीए तहा, नवरं——पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया। सूरस्स अग्गमहिसी। ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं। सेसं जहा कालीए ॥

णाया० सु० २ व० ७ अ० १ ।

२२८ एवं——आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा। सव्वाओ अरक्खुरीए नयरीए ॥

णाया० सु० २ व० ७ अ० २-४ ।

चंदऽग्गमहिसीणं कहाणगाणि

२२९ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव-परिसा पज्जुवासइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि। सेसं जहा कालीए, नवरं——पुव्वभवो महुराए नयरीए चंदवडेंसए उज्जाणे। चंदप्पभे गाहावई। चंदसिरी भारिया। चंदप्पभा दारिया। चंदस्स अग्गमहिसी। ठिई अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्सेहिं अब्भहियं ॥ सेसं जहा कालीए।

णाया० सु० २ व० ८ अ० १ ।

२३० एवं——दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा। महुराए नयरीए। मायापियरो धूया-सरिसनामा ॥

णाया० सु० २ व० ८ अ० २-४ ।

पउमावइआईणं सक्कऽग्गमहिसीणं कहाणगाइं

२३१ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव-परिसा पज्जुवासइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएणं नायव्वा, नवरं—सावत्थीए दो जणीओ। हत्थिणाउरे दो जणीओ। कंपिल्लपुरे दो जणीओ। साएए दो जणीओ। पउमे पियरो विजया मायराओ। सव्वाओ वि पासस्स अंतियं पव्वइयाओ। सक्कस्स अग्गमहिसीओ। ठिई सत्त पलिओवमाइं। महाविदेहे वासे अंतं काहिंति॥

णाया० सु० २ व० ९ अ० १–८।

कण्हाआईणं ईसाणऽग्गमहिसीणं कहाणगाणि

२३२ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव-परिसा पज्जुवासइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए।

एवं अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएणं नायव्वा, नवरं—पुव्वभवो वाणारसीए नयरीए दो जणीओ। रायगिहे नयरे दो जणीओ। सावत्थीए नयरीए दो जणीओ। कोसंबीए नयरीए दो जणीओ। रामे पिया धम्मा माया। सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ। पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए। ईसाणस्स अग्गमहिसीओ। ठिई नवपलिओवमाइं। महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति॥

२३३ गाहा— कण्हा य कण्हराई, रामा तह रामरक्खिया। वसूया वसुगुत्ता वसुमित्ता, वसुंधरा चेव ईसाणे॥१॥

णाया० सु० २ व० १० अ० १-८।

---

६. पासनाहतित्थे भूयाईणं समणीणं कहाणगाणि।

२३४ १ सिरि २ हिरि ३ धिइ ४ कित्तीओ ५ बुद्धी ६ लच्छी, य होइ बोद्धव्वा। ७ इलादेवी ८ सुरादेवी ९ रसदेवी १० गंधदेवी य॥

महावीरसमोसरणे सिरिदेवीए नट्टविही

२३५ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। सामी समोसढे, परिसा निग्गया। तेणं कालेणं तेणं समएणं सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, सपरिवाराहिं जहा बहुपुत्तिया,-जाव-नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया। नवरं दारियाओ नत्थि। पुव्वभवपुच्छा॥

सिरिदेवीपुव्वभवे भूयाकहाणगं

२३६ तेणं कालेणं तेणं समयेणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, जियसत्तू राया। तत्थ णं रायगिहे नयरे सुदंसणो नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे-जाव-अपरिभूए। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स पिया नामं भारिया होत्था सोमाला। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स धूया, पियाए गाहावइणीए अत्तिया भूया नामं दारिया होत्था, बुड्ढा बुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी वरग-परिवज्जिया यावि होत्था॥

भूयाए पाससमोसरणे गमणं

२३७ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए-जाव-नवरयणीए वण्णओ सो चेव। समोसरणं। परिसा निग्गया।

तए णं सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव अम्मापियरो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी— "एवं खलु, अम्मताओ पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे-जाव-गणपरिवुडे विहरइ। तं इच्छामि णं, अम्मताओ, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवन्दिया गमित्तए।" "अहासुहं, देवाणुप्पिए!, मा पडिबन्धं करेह"।

तए णं सा भूया दारिया ण्हाया-जाव-सरीरा चेडीचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा भूया दारिया नियगपरिवारपरिवुडा रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता—जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थयराइसए पासइ, पासित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुभित्ता चेडीचक्कवाल-परिकिण्णा जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो-जाव-पज्जुवासइ ।।

तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए य महइ....। धम्मकहा। धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ० वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता० नमंसित्ता एवं वयासी—

"सद्दहामि णं, भन्ते निग्गन्थं पावयणं,-जाव-अब्भुट्ठेमि णं, भन्ते निग्गन्थं पावयणं, से जहेयं तुब्भे वयह, जं नवरं, भन्ते ! अम्मा-पियरो आपुच्छामि, तए णं अहं-जाव-पव्वइत्तए"। "अहासुहं देवाणुप्पिए"।

भूयाए पव्वज्जा

२३८ तए णं सा भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवरं-जाव-दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव रायगिहे नयरे, तेणेव उवागया। रायगिह नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागया। रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागया। करयल० जहा जमाली, आपुच्छइ। "अहासुहं, देवाणुप्पिए !"

तए णं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं-जाव-साइमं उवक्खडावेइ, मित्तनाइ आमन्तेइ, आमन्तित्ता-जाव-जिमियभुत्तुत्तरकाले सुइभूए निक्खमणमाणेत्ता कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—"खिप्पामेव, भो देवाणुप्पिया, भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह-जाव-उवट्ठवित्ता पच्चप्पिणह"। तए णं ते-जाव-पच्चप्पिणन्ति।

तए णं से सुदंसणे गाहावई भूयं दारियं ण्हायं विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता। मित्तनाइ-जाव-रवेणं रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं, जेणेव गुणसिलए चेइए, तेणेव उवागए छत्ताईए तित्थयराइसए पासइ, पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता भूयं दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ।

तए णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए, तेणेव उवागए तिक्खुत्तो वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! भूया दारिया अम्हं एगा धूया इट्ठा। एस णं, देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गा भीया-जाव-देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डा-जाव-पव्वयाइ। तं एयं णं, देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो। पडिच्छन्तु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं"। अहासुहं, देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह"।

तए णं सा भूया दारिया पासेणं अरहया...एवं वुत्ता समाणी हट्ठा उत्तरपुरत्थिमं सयमेव आभरणमल्लालंकारं उम्मुयइ, जहा देवाणन्दा, पुप्फचूलाणं अन्तिए-जाव-गुत्तबम्भयारिणी ।।

भूयाए निग्गंथिणीए सरीरपाओसियत्तं

२३९ तए णं सा भूया अज्जा अन्नया कयाइ सरीरपाओसिया जाया यावि होत्था। अभिक्खणं २ हत्थे धोवइ, पाए धोवइ, एवं सीसं धोवइ, मुहं धोवइ, थणगन्तराइं धोवइ, कक्खन्तराइं धोवइ, गुज्झन्तराइं धोवइ, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तत्थ तत्थ वि य णं पुव्वामेव पाणएणं अब्भुक्खेइ, तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ।

तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ भूयं अज्जं एवं वयासी—"अम्हे णं, देवाणुप्पिए, समणीओ निग्गन्थीओ इरियासमियाओ-जाव-गुत्तबम्भचारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरपाओसियाणं होत्तए। तुमं च णं, देवाणुप्पिए ! सरीरपाओसिया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि-जाव-निसीहियं चेएसि। तं णं तुमं, देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि" त्ति। सेसं जहा सुभद्दाए,-जाव-पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं सा भूया अज्जा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छन्दमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवइ-जाव-चेएइ ।।

भूयाए देवित्तं

२४० तए णं सा भूया अज्जा बहुहिं चउत्थछट्ठ० बहुइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कन्ता कालमासे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि-जाव-ओगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववन्ना पंच विहाए पज्जत्तीए-जाव-भासामणपज्जत्तीए पज्जत्ता । एवं खलु, गोयमा ! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता । एगं पलिओवमं ठिई । "सिरी णं, भन्ते, देवी-जाव-कहिं गच्छिहिइ ?" "महा विदेहेवासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।"

पुप्फचूलियाओ अ० १ ।

पासस्स समणीणं हिरि-आईणं कहाणगाणि

२४१ एवं सेसाण वि नवण्हं भाणियव्वं । सरिसनामा विमाणा । सोहम्मे कप्पे । पुव्वभवो नयरचेइयपियमाईणं अप्पणो य नामादि जहा संगहणीए । सव्वा पासस्स अन्तिए निक्खन्ता । ताओ पुप्फचुलाणं सिस्सिणीयाओ, सरीरपाओसियाओ सव्वाओ अणन्तरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिन्ति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिंति ।

पुप्फचूलियाओ अ० २–१०

---

७. पासत्थाए समणीसुभद्दाए कहाणयं

महावीरसमोसरणे बहुपुत्तियादेवीए नट्टविही

२४२ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । सामी समोसढे । परिसा निग्गया ।

तेणं कालेण तेणं समएणं बहुपुत्तिया देवी सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए बहुपुत्तियंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, जहा सूरियाभे,-जाव-भुज्जमाणी विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जम्बुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, पासित्ता समणं भगवं महावीरं, जहा सूरियाभो-जाव-नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा संनिसण्णा । आभियोगा जहा सूरियाभस्स, सूसरा घंटा, आभियोगियं देवं सद्दावेइ । जाणविमाणं जोयणसहस्सवित्थिण्णं । जाणविमाणवण्णओ । -जाव-उत्तरिल्लेणं निज्जाणमग्गेणं जोयणसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं आगया, जहा सूरियाभे । धम्मकहा समत्ता । तए णं सा बहुपुत्तिया देवी दाहिणं भुयं पसारेइ, पसारेत्ता देवकुमाराणं अट्ठसयं देवकुमारियाण य वामाओ भुयाओ अट्ठसयं, तयणन्तरं च णं बहवे दारगा य दारियाओ य डिम्भए य डिम्भियाओ य विउव्वइ । नट्टविहिं, जहा सूरियाभो, उवदंसित्ता पडिगए ।।

बहुपुत्तियादेवीपुव्वभवरूवं सुभद्दाकहाणयं

२४३ "भन्ते" त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ । कुडागारसाला । "बहुपुत्तियाए णं, भन्ते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी"....पुच्छा, "-जाव-अभिसमन्नागया ?" "एवं खलु, गोयमा !

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी, अम्बसालवणे चेइए । तत्थ णं वाणारसीए नयरीए भद्दे नामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे-जाव-अपरिभूए । तस्स णं भद्दस्स सुभद्दा नामं भारिया सुउमाला वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ।।

सुभद्दाए अप्पणो वंझत्ते चिंता

२४४ तए णं तीसे सुभद्दाए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले कुडुम्बजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––"एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयाया । तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं मणुयजम्मजीवियफले, जासिं मन्ने नियकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुल्लावगाणि सम्मणप्पजम्पियाणि थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणगाणि पण्हयन्ति, पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छङ्गनिवेसियाणि देन्ति, समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मम्मणप्पभणिए । अहं णं अधन्ना अपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता ।" ओहय-जाव-झियाइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जासमीवे पुत्तोवायपुच्छा

२४५ तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ अज्जाओ इरियासमियाओ-जाव-गुत्तबम्भयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी, तेणेव उवागयाओ। उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा विहरन्ति।

तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसीनयरीए उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे भद्दस्स सत्थवाहस्स गिहं अणुपविट्ठे। तए णं सुभद्दा सत्थवाही ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता। हट्ठ····खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वन्दइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाण-खाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु अहं, अज्जाओ, भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयायामि। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-एत्तो एगमवि न पत्ता। तं तुब्भे, अज्जाओ, बहुणायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागरनगर-जाव-संनिवेसाइं आहिण्डह, बहूणं राईसरतलवर-जाव-सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुपविसह, अत्थि से केइ कहिंचि विज्जापओए वा मन्तप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा बत्थिकम्मं वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धे, जेणं अहं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जा?"

अज्जाहिं धम्मकहणं

२४६ तए णं ताओ अज्जाओ सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी—"अम्हे णं, देवाणुप्पिए, समणीओ निग्गन्थीओ इरियासमियाओ-जाव-गुत्तबम्भयारीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं एयमट्ठं कण्णेहि वि निसामेत्तए किमंग पुण उद्दिसित्तए वा समायरित्तए वा। अम्हे णं, देवाणुप्पिए! नवरं तव विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेमो"।

सुभद्दाए गिहिधम्मगहणं

२४७ तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा ताओ अज्जाओ तिक्खुत्तो वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"'सद्दहामि णं अज्जाओ! निग्गन्थं पावयणं, पत्तियामि रोएमि णं अज्जाओ निग्गथं पावयणं एवमेयं तहमेयं अवितहमयं"-जाव-सावगधम्मं पडिवज्जइ। "अहासुहं, देवाणुप्पिए, मा पडिबंधं करेह"। तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अन्तिए-जाव-पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता ताओ अज्जाओ वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जइ। तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही समणोवासिया जाया-जाव-विहरइ॥

सुभद्दाए पव्वज्जासंकप्पो

२४८ तए णं तीसे सुभद्दाए समणोवासियाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं विउलाइं भोगभोगाइं-जाव-विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा....। तं सेयं मम खलु ममं कल्लं-जाव-जलन्ते भद्दस्स आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अन्तिए अज्जा भवित्ता अगाराओ-जाव-पव्वइत्तए," एवं संपेहेइ, संपेहित्ता जेणेव भद्दे सत्थवाहे तेणेव उवागया करयल-जाव-एवं वयासी—"एवं खलु अहं, देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं सद्धिं बहूहिं वासाइं विउलाइं भोगभोगाइं-जाव-विहरामि, नो चेव णं दारगं वा दारियं वा पयायामि। तं इच्छामि णं, देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी सुव्वयाणं अज्जाणं-जाव-पव्वइत्तए"।

तए णं से भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी—"मा णं तुमं, देवाणुप्पिए, मुण्डा-जाव-पव्वयाहि। भुंजाहि ताव, देवाणुप्पिए! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, तओ पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं-जाव-पव्वयाहि"।

तए णं सुभद्दा सत्थवाही भद्दस्स एयमट्ठं नो परियाणइ। दोच्चं पि तच्चं पि सुभद्दा सत्थवाही भद्दं सत्थवाहं एवं वयासी—"इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी-जाव-पव्वइत्तए।" तए णं से भद्दे सत्थवाहे, जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य, एवं पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा-जाव-विन्नवित्तए वा, ताहे अकामए चेव सुभद्दाए निक्खमणं अणुमन्नित्था॥

सुभद्दाए पव्वज्जा

२४९ तए णं से भद्दे सत्थवाहे विउलं असणं-जाव-साइमं उवक्खडावेइ। मित्तनाइ...तओ पच्छा भोयणवेलाए-जाव-मित्तनाइ····सक्कारेइ संमाणेइ। सुभद्दं सत्थवाहिं ण्हायं-जाव-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेइ। तओ सा सुभद्दा सत्थ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाही मित्तनाइ-जाव-संबन्धिसंपरिवुडा सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं वाणारसीनयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, सुभद्दं सत्थवाहिं सीयाओ पच्चोरुहेइ ।।

तए णं भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं पुरओ काउं जेणेव सुव्वया अज्जा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"एवं खलु, देवाणुप्पिया, सुभद्दा सत्थवाही ममं भारिया इट्ठा कन्ता-जाव-मा णं वाइया पित्तिया सिम्भिया संनिवाइया विविहा रोयातंका फुसन्तु । एस णं, देवाणुप्पिया, संसार-भउव्विग्गा, भीया जम्ममरणाणं, देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डा भवित्ता-जाव-पव्वयाइ । तं एयं अहं देवाणुप्पियाणं सीसिणिभिक्खं दलयामि । पडिच्छन्तु णं, देवाणुप्पिया! सीसिणिभिक्खं।" "अहासुयं, देवाणुप्पिया! मा पडिबन्धं करेह"।

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठासयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणेणं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"आलित्ते णं भंते?" जहा देवाणन्दा तहा पव्वइया-जाव-अज्जा जाया गुत्तबम्भयारिणी ।।

बाल-आसत्ताए सुभद्दाए निग्गंथिणीए विविहपयारेण बालकीलावणं

२५० तए णं सा सुभद्दा अज्जा अन्नया कयाइ बहुजणस्स चेडरूवे संमुच्छिया-जाव-अज्झोववन्ना अब्भङ्गणं च उव्वट्टणं च फासुयपाणं च अलत्तगं च कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेल्लणगाणि य खज्जलगाणि य खीरं च पुप्फाणि य गवेसइ, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारियाओ वा कुमारे य कुमारियाओ य डिम्भए डिम्भियाओ य, अप्पेगइयाओ अब्भङ्गेइ, अप्पेगइयाओ उव्वट्टेइ, एवं फासुयपाणएणं ण्हावेइ, पाए रयइ, ओट्ठे रयइ, अच्छीणि अञ्जेइ, उसुए करेइ, तिलए करेइ, दिगिंदलए करेइ, पन्तियाओ करेइ, छिज्जाइं करेइ, वण्णएणं समालभइ, चुण्णएणं समालभइ, खेल्लणगाइं दलयइ, खज्जलगाइं दलयइ, खीरभोयणं भुंजावेइ, पुप्फाइं ओमुयइ, पाएसु ठवेइ, जंघासु करेइ, एवं ऊरूसु उच्छङ्गे कडीए पिट्ठे उरसि खन्धे सीसे य करयलपुडेणं गहाय हलउलेमाणी २ आगयमाणी २ परिहायमाणी पुत्तपिवासं च धूयपिवासं च नत्तुयपिवासं च नत्तिपिवासं पच्चणुभवमाणी विहरइ ।

अज्जाणं सुभद्दं पइ बालकीलावणनिसेहकरणं

२५१ तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सुभद्दं अज्जं एवं वयासी—"अम्हे णं, देवाणुप्पिए, समणीओ निग्गन्थीओ इरियासमियाओ-जाव-गुत्तबम्भयारिणीओ । नो खलु अम्हं कप्पइ जातककम्मं करेत्तए। तुमं च णं, देवाणुप्पिए! बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया-जाव-अज्झोववन्ना अब्भङ्गणं-जाव-नत्तिपिवासं वा पच्चणुभवमाणी विहरसि । तं णं तुमं, देवाणुप्पिए, एयस्स ठाणस्स आलोएहि-जाव-पच्छित्तं पडिवज्जाहि"।।

तए णं सा सुभद्दा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ। तए णं ताओ समणीओ निग्गन्थीओ सुभद्दं अज्जं हीलेन्ति, निन्दन्ति, खिंसन्ति, गरहन्ति, अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेन्ति ।।

सुभद्दाए पुढोवासो

२५२ तए णं तीए सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गन्थीहिं हीलिज्जमाणीए-जाव-अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारिज्जमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"जया णं अहं अगारवासं वसामि, तया णं अहं अप्पवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुण्डा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तप्पभिइं च णं अहं परवसा, पुव्वि च समणीओ निग्गन्थीओ आढेन्ति, परिजाणेन्ति, इयाणिं नो आढाएन्ति नो परिजाणन्ति; तं सेयं खलु मे कल्लं-जाव-जलन्ते सुव्वयाणं अज्जाणं अन्तियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए," एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं-जाव-जलन्ते सुव्वयाणं अज्जाणं अन्तियाओ पडिनिक्खमइ, पाडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं सा सुभद्दा अज्जा अज्जाहिं अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छन्दमई बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया-जाव-अब्भङ्गणं च-जाव-नत्तिपिवासं च पच्चणुभवमाणी विहरइ ।।

सुभद्दाए संलेहणा बहुपुत्तियादेवीरूवेण उववादो

२५३ तए णं सा सुभद्दा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी संसत्ता संसत्त विहारी अहाछन्दा अहाछन्दविहारी बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं···तीसं भत्ताइं अणसणेणं छेइत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कन्ता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसन्तरिया अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्ताए ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववन्ना।

तए णं सा बहुपुत्तिया देवी अहुणोववन्नमेत्ता समाणी पज्जत्तिहाए पज्जत्तीए····-जाव-भासामणपज्जत्तीए। एवं खलु, गोयमा! बहुपुत्तियाए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी-जाव-अभिसमन्नागया।।

बहुपुत्तियत्ति णामरहस्सं

२५४ "से केणट्ठेणं, भन्ते, एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी २?" गोयमा! बहुपुत्तिया णं देवी जाहे जाहे सक्कस्स देविन्दस्स देवरन्नो उवत्थाणियणं करेइ, ताहे २ बहवे दारए य दारियाओ य डिम्भए डिम्भियाओ य विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सक्के देविन्दे देवराया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सक्कस्स देविन्दस्स देवरन्नो दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेइ। से तेणट्ठेणं, गोयमा! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी २"।।

बहुपुत्तिया देवीठिइकहणं भावीजम्मकहणं य

२५५ बहुपुत्तियाणं, भन्ते! देवीणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता?" "गोयमा चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता"।

"बहुपुत्तिया णं भन्ते! देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणन्तरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ?" "गोयमा, इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले वेभेलसंनिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिइ"।।

बहुपुत्तियादेवीए सोमाभवो

२५६ तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते-जाव-बारसेहिं दिवसेहिं वीइक्कंतेहिं अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति—"होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सोमा"।।

तए णं सोमा उम्मुकबालभावा विन्नयपरिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा-जाव-भविस्सइ।

तए णं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विन्नयपरिणयमेत्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूविएणं सुंकेणं पडिरूवएण नियगस्स भाइणेज्जस्स रट्ठकुडस्स भारियत्ताए दलयिस्सइ। सा णं तस्स भारिया भविस्सइ इट्ठा कन्ता-जाव-भंडकरण्डगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया चेलपेडा इव सुसंपरिहिया रयणकरण्डगो विय सुसारक्खिया सुसंगोविया, मा णं सीयं-जाव-विविहा रोगातंका फुसंतु।।

बत्तीसदारगकारणा सोमाए मणोपीडा

२५७ तए णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी संवच्छरे २ जुयलगं पयायमाणी सोलसेहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयायइ।

तए णं सोमा माहणी तेहिं बहूहिं दारगेहि य दारियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य डिम्भएहि य डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहि य अप्पेगइएहिं थणियाएहिं, अप्पेगइएहिं पीहगपाएहिं अप्पेगइएहिं परंगणएहिं, अप्पेगइएहिं परक्कममाणेहिं, अप्पेगइएहिं पक्खोलणएहिं अप्पेगइएहिं थणं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खीरं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खेल्लणयं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खज्जगं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं कूरं मग्गमाणेहिं, एवं पाणियं मग्गमाणेहिं हसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्कोसमाणेहिं अक्कुस्समाणेहिं हणमाणेहिं विप्पलायमाणेहिं अणुगम्ममाणेहिं रोवमाणेहिं कंदमाणेहिं विलवमाणेहिं कूदमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं निद्दायमाणेहिं पलवमाणेहिं दहमाणेहिं वममाणेहिं छेरमाणेहिं मुत्तमाणेहिं मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता मइलवसणपुव्वडा-जाव-अइसुबीभच्छा परमदुग्गन्धा नो संचाएइ रट्ठकुडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए।।

सोमाए वंझत्तपसंसा

२५८ तए णं तीसे सोमाए माहणीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरियमाणीए अयमेयारूवे-जाव-समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमेहिं बहूहिं दारगेहि य-जाव-डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहि य-जाव-अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं दुज्जम्मएहि हयविप्पहयभग्गेहिं एगप्पहारपडिएहिं जेणं मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता-जाव-परमदुब्भिगन्धा नो संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं-जाव-भुंजमाणी विहरित्तए। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-जीवियफले जाओ णं वंझाओ अवियाउरीओ जाणुकोप्परमायाओ सुरभिसुगंधगंधियाओ विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति। अहं णं अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं-जाव-विहरित्तए"।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमाए धम्मसवणं

२५९ तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ-जाव-बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं···जेणेव वेभेले संनिवेसे··· अहापडिरूवं उग्गहं-जाव-विहरंति। तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वेभेले संनिवेसे उच्चनीय-जाव-अडमाणे रट्ठकूडस्स गिहं अणुपविट्ठे।

तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठ-जाव-खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वन्दइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणं-जाव-साइमं पडिलाभेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु अहं, अज्जाओ रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं-जाव-संवच्छरे २ जुगलं पयामि, सोलसहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाया। तए णं अहं तेहिं बहूहिं दारएहि य-जाव-डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहिं-जाव-सुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं-जाव-नो संचाएमि ....विहरित्तए। तं इच्छामि णं अहं, अज्जाओ, तुम्हं अन्तिए धम्मं निसामेत्तए"। तए णं ताओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं-जाव-केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेंति॥

सोमाए पव्वज्जासंकप्पो

२६० तए णं सा सोमा माहणी तासिं अज्जाणं अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ-जाव-हियया ताओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"सद्दहामि णं, अज्जाओ, निग्गंथं पावयणं-जाव-अब्भुट्ठेमि णं, अज्जाओ, निग्गंथं पावयणं, एवमेयं, अज्जाओ--जाव-से जहेयं तुब्भे वयह। जं नवरं, अज्जाओ, रट्ठकूडं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए-जाव-मुण्डा पव्वयामि"। "अहासुहं, देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेह"।

तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ॥

रट्ठकूडेण पव्वज्जानिसेहो

२६१ तए णं सा सोमा माहणी जेणेव रट्ठकूडे, तेणेव उवागया करयल....एवं वयासी—"एवं खलु मए, देवाणुप्पिया! अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते। से वि य णं धम्मे इच्छिए-जाव-अभिरुइए। तए णं अहं, देवाणुप्पिया, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया सुव्वयाणं अज्जाणं--जाव-पव्वइत्तए"॥

तए णं से रट्ठकूडे सोमं माहणिं एवं वयासी—"मा णं तुमं, देवाणुप्पिए, इयाणिं मुण्डा भवित्ता-जाव-पव्वयाहि। भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए, मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं तओ पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए मुण्डा-जाव-पव्वयाहि"॥

सोमाए सावगधम्मगहणं

२६२ तए णं सा सोमा माहणी ण्हाया-जाव-सरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता वेभेलं संनिवेसं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ पज्जुवासइ। तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेंति जहा जीवा बज्झन्ति।

तए णं सा सोमा माहणी सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए-जाव-दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता। सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तए णं सा सोमा माहणी समणोवासिया जाया अभिगय-जाव-अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ वेभेलाओ संनिवेसाओ पडिनिक्खमंति, बहिया जणवयविहारं विहरंति॥

सोमाए पव्वज्जा

२६३ तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि-जाव-विहरंति। तए णं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ। ण्हाया तहेव निग्गया-जाव-वन्दइ, नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता धम्मं सोच्चा-जाव-नवरं "रट्ठकूडं आपुच्छामि, तए णं पव्वयामि"। "अहासुहं...।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा सोमा माहणी सुव्वयं अज्जं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सुव्वयाणं अन्तियाओ पडिनिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल तहेव आपुच्छइ-जाव-पव्वइत्तए। "अहासुहं, देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेह"। तए णं रट्ठकूडे विउलं असणं, तहेव-जाव-पुव्वभवे सुभद्दा-जाव-अज्जा जाया इरियासमिया-जाव-गुत्तबम्भयारिणी।।

सोमाए देवत्तं तयणंतरं सिद्धी य

२६४ तए णं सा सोमा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहुइं छट्ठट्ठमदसम-दुवालस-जाव-भावेमाणी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो सामाणियदेवत्ताए उववज्जिहिइ।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं सोमस्स वि देवस्स दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।
'से णं, भन्ते, सोमे देवे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं-जाव-चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?" "गोयमा ! महा-विदेहे वासे-जाव-अन्तं काहिहि"।।

पुप्फियाओ अ० ४।

---

८. महावीरतित्थे नंदाईणं कहाणगाणि

संगहणी गाहादुगं

२६५ १. नंदा तह २. नंदवई, ३. नंदुत्तर ४. नंदिसेणिया चेव। ५. मरुता ६. सुमरुता ७. महमरुता ८. मरुदेवा य अट्ठमा ।।१।।
९. भद्दा य १०. सुभद्दा य, ११. सुजाया १२. सुमणाइया। १३. भूयदिण्णा य बोधव्वा सेणियभज्जाण नामाइं ।।२।।

सेणियरण्णो नंदाइदेवीणं समणित्तं सिद्धी य

२६६ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया--वण्णओ।
तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नाम देवी होत्था--वण्णओ। सामी समोसढे। परिसा निग्गया।।

तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता जाणं दुरुहइ, जहा पउमावई-जाव-एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता वीसं वासाइं परियाओ-जाव-सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा।
एवं तेरस वि देवीओ नंदागमेण नेयव्वाओ।।

अंत० व० ७, अ० १–१३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. महावीरतित्थे कालीआइसमणीणं कहाणगाणि

संगहणी-गाहा

२६७ १. काली २. सुकाली ३. महाकाली, ४. कण्हा ५. सुकण्हा ६. महाकण्हा।
७. वीरकण्हा य बोधव्वा, ८. रामकण्हा तहेव य ।
९. पिउसेणकण्हा नवमी, दसमी १०. महसेणकण्हा य ।। १ ।।

कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली

२६८ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए।
तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया—वण्णओ।
तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया, काली नामं देवी होत्था—वण्णओ।

कालीए पव्वज्जा रयणावली तवो य

२६९ जहा नंदा-जाव-सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ। बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तए णं सा काली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एवं वयासी—"इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेहि।

तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं[1] तवं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

तए णं सा काली अज्जा रयणावली-तवोकम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं-जाव-आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-जाव-अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तए णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धण्णेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठिचम्मावणद्धा किडिकिडियाभूया किसा धमणिसंतया जाया यावि होत्था. जीवंजीवेण गच्छइ-जाव-सुहुयहुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं, तेएणं, तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी-उवसोहेमाणी चिट्ठइ ।।

कालीए संलेखणा सिद्धी य

२७० तए णं तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले अयमज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स चिंता-जाव-अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णायाए समाणीए संलेहणा-झूसणा-झूसियाए भत्तपाण-पडियाइक्खियाए कालं अणवकंखमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"इच्छामि णं अज्जो! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा-झूसणा-झूसियाए भत्तपाण-पडियाइक्खियाए कालं अणवकंखमाणीए विहरित्तए।"
अहासुहं।

---

१. रयणावलिआइतवविसेसाणं वित्थरो चरणाणुओगे दट्ठव्वो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणा संलेहणा-झूसणा-झूसिया-जाव-विहरइ।

तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्ण-परियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे-जाव-चरिमुस्सासेहिं सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा।

अंत० व० ८, अ० १।

सुकालीए कणगावलितवो सिद्धी य

२७१ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी। पुण्णभद्दे चेइए। कोणिए राया।

तत्थ णं सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया, सुकाली नामं देवी होत्था। जहा काली तहा सुकाली वि निक्खंता-जाव-बहूहिं-जाव-तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तए णं सा सुकाली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एवं वयासी--"इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी कणगावली-तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। नव वासा परियाओ-जाव-सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा॥

अंत० व० ८, अ० २।

महाकालीए खुड्डागसीहनिक्कीलियतवो सिद्धी य

२७२ एवं--महाकाली वि, नवरं--खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। सेसं तहेव-जाव-सिद्धा-जाव-सव्व-दुक्खपहीणा।

अंत० व० ८, अ० ३।

कण्हाए महासीहनिक्कीलियतवो सिद्धी य

२७३ एवं--कण्हा वि, नवरं--महासीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। सेसं तहेव-जाव-सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा।

अंत० व० ८, अ० ४।

सुकण्हाए भिक्खुपडिमा सिद्धी य

२७४ एवं--सुकण्हा वि, नवरं--सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।[1] एवं खलु दसदसमियं भिक्खुपडिमं एक्केणं राइं-दियसएणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासएहि अहासुत्तं-जाव-आराहेइ, आराहेत्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

२७५ तए णं सा सुकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं तवोकम्मेणं-जाव-सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा।

अंत० व० ८, अ० ५।

महाकण्हाए खुड्डागसव्वओभद्दपडिमा सिद्धी य

२७६ एवं--महाकण्हा वि, नवरं--खुड्डागं सव्वओभद्दं पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। सेसं तहेव-जाव-सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा।

अंत० व० ८, अ० ६।

वीरकण्हाए महालयसव्वओभद्दपडिमा सिद्धी य

२७७ एवं--वीरकण्हा वि, नवरं--महालयं सव्वओभद्दं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, सेसं तहेव-जाव-सिद्धा-जाव-सव्व दुक्खप्पहीणा।

अंत० व० ८, अ० ७।

रामकण्हाए भद्दोत्तरपडिमा सिद्धी य

२७८ एवं--रामकण्हा वि, नवरं--भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, सेसं-जाव-सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा॥

अंत० व० ८, अ० ८।

---

१. चरणाणुओगे पडिमावित्थरो दट्ठव्वो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिउसेणकण्हाए मुत्तावलितवो सिद्धी य

२७९ एवं—पिउसेणकण्हा वि, नवरं—मुत्तावलिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, सेसं-जाव-सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा।

अंत० व० ८, अ० ९।

महासेणकण्हाए आयंबिलवड्ढमाणतवो सिद्धी य

२८० एवं—महासेणकण्हा वि, नवरं—आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं चोद्दसहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं-जाव-आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं-जाव-सवेणं तेएणं तवतेय-सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी चिट्ठइ।

तए णं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले चिंता जहा खंदयस्स-जाव-अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छइ।

तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा-झूसणा-झूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया कालं अणवकंखमाणी विहरइ।

तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं सत्तरस वासाइं परियायं पालइत्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्ग-भावे-जाव-तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरिमउस्सासनिस्सासेहिं सिद्धा-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा॥

संगहणी-गाहा

२८१ अट्ठ य वासा आई, एक्कोत्तरयाए-जाव-सत्तरस। एसो खलु परियाओ, सेणियभज्जाण नायव्वो ॥ १ ॥

अंत० व० ८, अ० १।

१०. महावीरतित्थे जयन्तीकहाणयं

कोसंबीए उदयणादीणं धम्मसवणं

२८२ तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नगरी होत्था—वण्णओ। चंदोवतरणे चेइए—वण्णओ।

तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदयणे नामं राया होत्था—वण्णओ।

तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदयणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्था वण्णओ—सुकुमालपाणिपाया-जाव-सुरूवा समणोवासिया अभिगय-जीवाजीवा-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीयस्स रण्णो भगिणी, उदयणस्स रण्णो पिउच्छा, मिगावतीए देवीए णणंदा, वेसालियसावयाणं अरहंताणं पुव्वसेज्जातरी जयंती नामं समणोवासिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया-जाव-सुरूवा अभिगय-जीवाजीवा-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८३ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे-जाव-परिसा पज्जुवासइ।

तए णं से उदयणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नगरिं सब्भिंतर-बाहिरियं आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।" एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं-जाव-पज्जुवासइ।।

२८४ तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मिगावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिगावतिं देविं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे आदिगरे-जाव-सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं -जाव-सुहंसुहेणं विहरमाणे चंदोवतरणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए-जाव-एयं णे इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ"।

तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जयंतीए समणोवासियाए एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ।

तए णं सा मिगावती देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्त-जोइय -जाव-धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मिगावतीए देवीए एवं वुत्ता समाणा धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।।

तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं -जाव-चेडियाचक्कवालवरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा।

तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा समाणी नियगपरियालसंपरिवुडा जहा उसभदत्तो-जाव-धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ।

तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं जहा देवाणंदा-जाव-वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उदयणं रायं पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ।।

२८५ तए णं समणे भगवं महावीरे उदयणस्स रण्णो मिगावतीए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ-जाव-परिसा पडिगया, उदयणे पडिगए, मिगावती वि पडिगया।।

जयंतीपण्हसमाहाणं

२८६ तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"कहण्णं भंते! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति?"

जयंती! पाणाइवाएणं-जाव-मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति।।

२८७ कहण्णं भंते! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति?

जयंती! पाणाइवायवेरमणेणं-जाव-मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति।।

२८८ कहण्णं भंते! जीवा संसारं आउलीकरेंति?

जयंती! पाणाइवाएणं-जाव-मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती! जीवा संसारं आउलीकरेंति।

कहण्णं भंते! जीवा संसारं परित्तीकरेंति?

जयंती! पाणाइवायवेरमणेणं-जाव-मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती! जीवा संसारं परित्तीकरेंति।

कहण्णं भंते! जीवा संसारं दीहीकरेंति?

जयंती! पाणाइवाएणं-जाव-मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती! जीवा संसारं दीहीकरेंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहण्णं भंते ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेंति ?

जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं-जाव-मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं--एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेंति ।

कहण्णं भंते ! जीवा संसारं अणुपरियट्टंति ?

जयंती ! पाणाइवाएणं-जाव-मिच्छादंसणसल्लेणं--एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं अणुपरियट्टंति ।।

२८९ कहण्णं भंते ! जीवा संसारं वीतिवयंति ?

जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं-जाव-मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं--एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं वीतिवयंति ।।

२९० भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाणं किं सभावओ ? परिणामओ ?

जयंती ! सभावओ, नो परिणामओ ।

सव्वे वि णं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ?

हंता जयंती ! सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ।।

२९१ जइ णं भंते ! सव्वे भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

से केणं खाइणं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?

जयंति ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया--अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए-समए अवहीरमाणी-अवहीरमाणी अणंताहिं ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया । से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ--सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धिअविरहिए लोए भविस्सइ ।।

२९२ सुत्तत्तं भंते ! साहू ? जागरियत्तं साहू ?

जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ?

जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू । एए णं जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए-जाव-परियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति एएसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू ।

जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया-जाव-धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू । एए णं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं-जाव-सत्ताणं अदुक्खणयाए-जाव-अपरियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा जागरा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एए णं जीवा जागरा समाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति । एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू । से तेणट्ठेणं जयंती । एवं वुच्चइ--अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ।।

२९३ बलियत्तं भंते ! साहू ? दुब्बलियत्तं साहू ?

जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ।

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ--अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ?

जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया-जाव-अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू । एए णं जीवा दुब्बलिया समाणा नो बहूणं पाणाणं-जाव-सत्ताणं दुक्खणयाए-जाव-परियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा दुब्बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया-जाव-धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू। एए णं जीवा बलिया समाणा बहूणं पाणाणं-जाव-सत्ताणं अदुक्खणयाए-जाव-अपरियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू । से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ।।

२९४ दक्खत्तं भंते ! साहू ? आलसियत्तं साहू ?

जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू ?

जयंती। जे इमे जीवा अहम्मिया-जाव-अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू। एए णं जीवा आलसा समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए-जाव-परियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा अलसा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू।

जयंति ! जे इमे जीवा धम्मिया-जाव-धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू। एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूणं पाणाणं-जाव-सत्ताणं अदुक्खणयाए-जाव-अपरियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा दक्खा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं उवज्झायवेयावच्चेहिं थेरवेयावच्चेहिं तवस्सिवेयावच्चेहिं गिलाणवेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुलवेयावच्चेहिं गणवेयावच्चेहिं संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू। से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ —अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू ।।

२९५ सोइंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

जयंती ! सोइंदियवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, ह्रस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पए सग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ।

चक्खिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव-जाव-अणुपरियट्टइ।
घाणिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव-जाव-अणुपरियट्टइ।
जिब्भिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव-जाव-अणुपरियट्टइ ।।
फासिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव-जाव-अणुपरियट्टइ ।।

तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइया-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणा ।।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

भग० स० १२, उ० २ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थो खंधो

समणोवासगकहाणगाणि

अज्झयणा

१. पासतित्थे	सोमिलमाहणकहाणगं
२. पासतित्थे	पएसिकहाणगं
३. महावीरतित्थे	तुंगियाणगरिनिवासिणो समणोवासगा
४. महावीरतित्थे	नंदमणियारकहाणगं
५. महावीरतित्थे	आणंदगाहावइकहाणगं
६. महावीरतित्थे	कामदेवगाहावइकहाणगं
७. महावीरतित्थे	चुलणीपियगाहावइकहाणगं
८. महावीरतित्थे	सुरादेवगाहावइकहाणगं
९. महावीरतित्थे	चुल्लसययगाहावइकहाणगं
१०. महावीरतित्थे	कुंडकोलियगाहावइकहाणगं
११. महावीरतित्थे	सद्दालपुत्त-कुंभकारकहाणगं
१२. महावीरतित्थे	महासतयगाहावइकहाणगं
१३. महावीरतित्थे	नंदिणीपियगाहावइकहाणगं
१४. महावीरतित्थे	लेतियापियगाहावइकहाणगं
१५. महावीरतित्थे	इसिभद्दपुत्ताइणो समणोवासगा
१६. महावीरतित्थे	संखे पोक्खली य समणोवासगा
१७. महावीरतित्थे	वरुणे-नागनत्तुए समणोवासए
१८. महावीरतित्थे	सोमिलमाहणे समणोवासए
१९. महावीरतित्थे	भगवओ महावीरस्स समणोवासगाणं देवलोगट्ठिईए परूवणं
२०. महावीरतित्थे	कूणियस्स महावीरसमोसरणगमण-धम्मसवणपसंगो
२१. महावीरतित्थे	अम्मड-परिव्वायगकहाणयं
२२. महावीरतित्थे	उदाई भूयाणंदे य हत्थिराया
२३. महावीरतित्थे	मद्दुयसमणोवासयकहा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. पासतित्थे सोमिलमाहणकहाणगं

सुक्कमहग्गहदेवेण महावीरसमोसरणे नट्टविही

१ रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। तेणं कालेणं तेणं समएणं सुक्के महग्गहे सुक्कवडिंसए विमाणे सुक्कंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहेव चन्दो तहेव आगओ, नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ। "भन्ते" त्ति०। कूडागारसाला०। पुव्वभवपुच्छा। एवं खलु गोयमा–

सुक्कदेवस्स पुव्वभववण्णणे सोमिलमाहणकहाणगं

२ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं वाणारसी नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसइ अड्ढे-जाव-अपरिभूए रिउव्वेय-जाव-सुपरिनिट्ठिए। पासे समोसढे। परिसा पज्जुवासइ।

पासनाहसमीवे सोमिलस्स सावगधम्मगहणं

३ तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था "एवं पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्वि-जाव-अम्बसालवणे विहरइ। तं गच्छामि णं पासस्स अरहओ अन्तिए पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं०" जहा पण्णत्तीए। सोमिलो निग्गओ खण्डियविहुणो-जाव-एवं वयासी–"जत्ता ते, भन्ते? जवणिज्जं च ते?" पुच्छा "सरिसवया, मासा, कुलत्था, एगे भवं?"-जाव-संबुद्धे सावगधम्मं पडिवज्जित्ता पडिगए।

सोमिलस्स मिच्छत्तं

४ तए णं पासे णं अरहा अन्नया कयाइ वाणारसीओ नयरीओ अम्बसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ।

तए णं से सोमिले माहणे अन्नया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणयाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं परिवड्ढमाणेहिं सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहिं मिच्छत्तं च पडिवन्ने।।

सोमिलेण अम्बारामाइनिम्माणं

५ तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चन्तमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं, वेया य अहीया, दारा आहुया, पुत्ता जणिया, इट्ठीओ समाणीयाओ, पसुबन्धा कया, जन्ना जट्ठा, दक्खिणा दिन्ना, अतिही पूइया, अग्गी हूया, जूवा निक्खित्ता। तं सेयं खलु मम इयाणिं कल्लं-जाव-जलन्ते वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अम्बारामा रोवावित्तए एवं माउलिङ्गा बिल्ला कविट्ठा चिच्चा फुप्फारामा रोवावित्तए" एवं संपेहेइ। संपेहित्ता कल्लं-जाव-जलन्ते वाणारसीए नयरीए बहिया अम्बारामे-जाव-पुप्फारामे य रोवावेइ। तए णं बहवे अम्बारामा य-जाव-पुप्फारामा य अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा आरामा जाया किण्हा किण्होभासा-जाव-रम्मा महामेहनिकुरम्बभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सस्सिरीया सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठन्ति।।

नाणाविहतावसवण्णओ सोमिलस्स य दिसापोक्खियतावसत्तं

६ तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चन्तमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं-जाव-जूवा निक्खित्ता। तए णं मए वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अम्बारामा-जाव-पुप्फारामा य रोवाविया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं-जाव-चलन्ते सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तम्बियं तावसभण्डं घडावेत्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं....मित्तनाइ० आमन्तेत्ता तं मित्तनाइ-नियग० विउलेणं असण-जाव-संमाणेत्ता तस्सेव मित्त-जाव-जेट्ठपुत्तं कुटुम्बे ठवेत्ता तं मित्तनाइ-जाव-आपुच्छित्ता सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तम्बियं तावस-भण्डगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवन्ति, तं जहा––होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जन्नई सड्ढई थालई हुम्बउट्ठा दन्तुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा संपक्खालगा दक्खिणकुला उत्तरकुला संखधमा कुलधमा मियलुद्धया हत्थितावसा उद्दंडा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अम्बुभक्खिणो वायुभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कन्दाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकन्दमूलतयपत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकढिणगायभूया आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इङ्गालसोल्लियं कन्दुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरन्ति। तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसिं अन्तिए दिसापोक्खियत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि––"कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं--जाव-जलन्ते सुबहुं लोह-जाव-दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं-जाव-अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

दिसापोक्खियतावसचरिया

७ तए णं सोमिले माहणे रिसी पढमछट्ठक्खमणपारणंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयं गेण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसिं पुक्खेइ, "पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ, सोमिलं माहणरिसिं अभिरक्खउ। जाणि य तत्थ कन्दाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ" त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसिं पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कन्दाणि य-जाव-हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गिण्हित्ता किढिणसंकाइयगं भरेइ, भरित्ता दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च समिहाओ कट्ठाणि य गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयगं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ, वड्ढित्ता उवलेवणसंमज्जणं करेइ, करित्ता दब्भकलसहत्थगए जेणेव गंगा महाणई, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गंगं महाणइं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करित्ता जलकिड्डं करेइ, करित्ता जलाभिसेयं करेइ, करित्ता आयन्ते चोक्खे परमसुइभूए देवपिउ-कयकज्जे दब्भकलसहत्थगए गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भे य कुसे य वालुयाए य वेइं रएइ, रइत्ता सरयं करेइ, करित्ता अरणिं करेइ, करित्ता सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्कित्ता समिहाकट्ठाणि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालित्ता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे। तं जहा–

सकथं वक्कलं ठाणं सेज्जभण्डं कमण्डलुं। दंडदारुं तहप्पाणं अह ताइं समादहे ।।१।।

महुणा य घएण तन्दुलेहि य अग्गिं हुणइ, हुणित्ता चरुं साहेइ, साहित्ता बलिं वइस्सदेवं करेइ, करित्ता अतिहिपूयं करेइ, करित्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ।

तए णं सोमिले माहणरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं सोमिले माहणरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि, तं चेव सव्वं भाणियव्वं-जाव-आहारं आहारेइ। नवरं इमं नाणत्तं––"दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं माहणरिसिं, जाणि य तत्थ कन्दाणिय-जाव-अणुजाणउ" त्ति कट्टु दाहिणं दिसिं पसरइ।

एवं पच्चत्थिमेणं वरुणे महाराया-जाव-पच्चत्थिमं दिसिं पसरइ।

उत्तरेणं वेसमणे महाराया-जाव-उत्तरं दिसिं पसरइ। पुव्वदिसागमेणं चत्तारि वि दिसाओ भाणियव्वाओ-जाव-आहारं आहारेइ।

सोमिलस्स कट्ठमुद्दाए मुहबंधणेण महापत्थाणं

८ तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणरिसी अच्चन्तमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं-जाव-जूवा निक्खित्ता। तए णं मम वाणारसीए-जाव-पुप्फारामा रोविया। तए णं मए सुबहुं लोह-जाव-घडावेत्ता -जाव-जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता-जाव-जेट्ठपुत्तं आपुच्छित्ता सुबहुं लोह-जाव-गहाय मुंडे-जाव-पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे छट्ठंछट्ठेणं--जाव-विहरिए। तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं-जाव-जलन्ते बहवे तावसे दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य परियायसंगइए य आपुच्छित्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसमसंसियाणि य बहूइं सत्तसयाइं अणुमाणइत्ता वागलवत्थनियत्थस्स किढिणसंकाइयगहियसभंडोवगरणस्स कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महापत्थाणं पत्थावेत्तए" एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं-जाव-जलन्ते बहवे तावसे य दिट्ठाभट्ठे य पुव्व-संगइए य, तं चेव-जाव-कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ। मुहं बंधित्ता अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—"जत्थेव णं अम्हं जलंसि वा एवं थलंसि वा दुग्गंसि वा निन्नंसि वा पव्वतंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा पक्खलिज्ज वा पवडिज्ज वा, नो खलु मे कप्पइ पच्चुट्ठित्तए" त्ति अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ।

उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहपत्थाणं पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए, असोगवरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ, वड्ढित्ता उवलेवणसंमज्जणं करेइ, करित्ता दब्भकलसहत्थगए जेणेव गंगा महाणई, जहा सिवो-जाव-गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ। जेणेव असोगवरपायवे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए वेइं रएइ, रयित्ता सरगं करेइ, करित्ता-जाव-बलिं वइस्सदेवं करेइ, करित्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ। मुहंबंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ।।

'ते पव्वज्जा दुप्पव्वज्जा' इति देवकहणे वि सोमिलस्स असंबोहो

९ तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भूए। तए णं से देवे सोमिलमाहणं एवं वयासी—"हंभो सोमिलमाहणा! पव्वइया! दुप्पव्वइयं ते"।

तए णं से सोमिले तस्स देवस्स दोच्चं पि तच्चं पि वयमाणस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणाइ,-जाव-तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव-जाव-पडिगए। तए णं से सोमिले कल्लं -जाव-जलन्ते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयगहियग्गिहोत्तभण्डोवगरणे कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ, मुहं बंधित्ता उत्तराभिमुहे संपत्थिए। तए णं से सोमिले बिइयदिवसम्मि पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव सत्तिवण्णे तेणेव उवागए, सत्तिवण्णस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ, वड्ढित्ता जहा असोगवरपायवे-जाव-अंगं हुणइ, कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भूए। तए णं से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने जहा असोगवरपायवे-जाव-पडिगए। तए णं से सोमिले कल्लं-जाव-जलन्ते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं गेण्हइ, गिण्हित्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ, मुहं बंधित्ता उत्तर-दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

तए णं से सोमिले तइयदिवसम्मि पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ-जाव-गंगं महाणइं पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं रएइ, रयिता कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ, मुंह बंधिता तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तं चेव भणइ-जाव-पडिगए। तए णं से सोमिले-जाव-जलन्ते वागल-वत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं-जाव-कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ, मुहं बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।।

देवेण पुणो पुणो संबोहणे सोमिलेण अणुव्वयाइगहणं

तए णं से सोमिले चउत्थदिवसम्मि पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव वडपायवे तेणेव उवागए, वडपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं संठवेइ, संठवित्ता वेइं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवसंमज्जणं करेइ,-जाव-कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तं चेव भणइ-जाव-पडिगए। तए णं से सोमिले-जाव-जलन्ते वागलवत्थनियत्थे किढिण-संकाइयं,-जाव-कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ,...उत्तराए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

तए णं से सोमिले पंचमदिवसम्मि पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव उम्बरपायवे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उम्बरपायवस्स अहे किढि-णसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ-जाव-कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइ-जाव-तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे,-जाव-एवं वयासी—"हंभो सोमिला! पव्वइया, दुप्पव्वइयं ते," पढमं भणइ, तहेव तुसिणीए संचिट्ठइ। देवो दोच्चं पि तच्चं पि वयइ—"सोमिला! पव्वइया! दुप्पव्वइयं ते।"

सोमिलस्स संबोहो

१० तए णं से सोमिले तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे तं देवं एवं वयासी—"कहं णं, देवाणुप्पिया! मम दुप्पव्वइयं?" तए णं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासी—"एवं खलु, देवाणुप्पिया! तुमं पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अन्तियं पंचाणुव्वए सत्तसिक्खावए दुवाल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सविहे सावयधम्मे पडिवन्ने। तए णं तव अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडम्बजागरियं...-जाव-पुव्वचिन्तियं देवो उच्चारेइ-जाव-जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयं-जाव-तुसिणीए संचिट्ठसि। तए णं पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अन्तियं पाउब्भवामि, 'हंभो सोमिला! पव्वइया! दुप्पव्वइयं ते,' तह चेव देवो नियवयणं भणइ-जाव-पंचमदिवसम्मि पुव्वावरण्ह कालसमयंसि जेणेव उम्बरपायवे, तेणेव उवागए किढिणसंकाइयं ठवेसि वेइं वड्ढेसि, उवलेवणं करेसि करिता कट्ठमुद्दाए मुहं बन्धइसि, मुहं बंधिता तुसिणीए संचिट्ठसि। तं एवं खलु देवाणुप्पिया, तव दुप्पव्वइयं।"

तए णं से सोमिले तं देवं एवं वयासी–"कहं णं, देवाणुप्पिया, मम सुपव्वइयं?" तए णं से देवे सोमिलं एवं वयासी—"जइ णं तुमं, देवाणुप्पिया, इयाणिं पुव्वपडिवन्नाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरसि, तो णं तुज्झ इयाणि सुपव्वइयं भवेज्जा।" तए णं से देवे सोमिलं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं सोमिले माहणरिसी तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे पुव्वपडिवन्नाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ॥

सोमिलस्स संलेहणा, सुक्कमहागहदेवत्तं

११ तए णं से सोमिले बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम-जाव-मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कन्ते विराहियसम्मत्ते कालमासे कालं किच्चा सुक्कवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि-जाव-ओगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववन्ने।

सुक्कदेवलोगचवणाणंतरं सोमिलजीवस्स सिद्धिगमणपरूवणं

१२ तए णं से सुक्के महग्गहे अहुणोववन्ने समाणे-जाव-भासामणपज्जत्तीए.....। "एवं खलु, गोयमा! सुक्केणं सा दिव्वा-जाव-अभिसमन्नागया। एगं पलिओवमं ठिई।" "सुक्के णं, भन्ते, महग्गहे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं० कहिं गच्छिहिइ?" "गोयमा, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ॥"

पुप्फिया अ० ३।

---

२. पासतित्थे पएसिकहाणगं

आमलकप्पाए महावीरसमोसरणं

१३ तेणं कालेणं, तेणं समएणं आमलकप्पा नामं नयरी होत्था, रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा-जाव-पासादीया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा॥ तीसे णं आमलकप्पाए नयरीए बहिया उत्तर-पुरत्थिमे दिसी-भाए अम्बसालवणे नामं चेइए होत्था, चिरातीते-जाव-पडिरूवे॥ असोयवरपायवे-पुढविसिलापट्टयवत्तव्वया उववाइय-गमेणं नेया॥ सेओ राया, धारिणी देवी, सामी समोसढे, परिसा निग्गया-जाव-राया पज्जुवासइ॥

सूरियाभदेवस्स महावीरवंदणत्थं संकप्पो, उचियकज्जकरणट्ठं आभिओगियदेवपेसणं च

१४ तेणं कालेणं, तेणं समएणं सूरियाभे देवे सोहम्मे कप्पे, सूरियाभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सूरियाभंसि सिंहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं अग्ग-महिसीहिं स-परिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेव-साहस्सीहिं, अन्नेहिं बहूहिं सूरियाभ-विमाण-वासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे, महयाऽऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडु-प्पवाइय-रवेणं दिव्वाइं भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरइ, इमं च णं केवल-कप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे आभोएमाणे पासइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, आमलकप्पाए नयरीए, बहिया, अम्बसालवणे चेइए अहा-पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिए, पीइ-मणे, परम-सोमणस्सिए, हरिसवस-विसप्पमाण-हियए, वियसिय-वरकमल-णयणे, पयलिय-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड० कुडल-हार-विरायंत-रइय-वच्छे, पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसण-धरे ससंभमं तुरिय-चवलं सुरवरे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता, पाउयाओ ओमुयइ, ओमुयइत्ता एग-साडियं उत्तरासंगं करेइ, करित्ता तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठ-पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणि-तलंसि णिहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणि-तलंसि निमेइ, निमित्ता ईसिं पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता कडय-तुडिय-थंभिय-भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल-परिग्गहियं, दस-णहं, सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी– "णमोऽत्थु णं अरिहंताणं,-जाव-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स-जाव-संपाविउ-कामस्स, वंदामि णं भगवन्तं तत्थगयं इह-गए, पासइ मे भगवं तत्थ गए इह-गयं ति कट्टु वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता सीहासणवरगए पुव्वाभिमुहं सण्णिसण्णे ।।

१५ तए णं तस्स सूरियाभस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था ।

'एवं खलु–समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे, दीवे, भारहे वासे, आमलकप्पाणयरीए बहिया, अंबसालवणे उज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महा-फलं खलु तहा-रूवाणं भगवंताणं णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ?; एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए; किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि, णं समणं भगवं महावीरं वंदामि-जाव-पज्जुवासामि, एयं मे पेच्चा हियाए-जाव-आणुगामियत्ताए भविस्सइ-त्ति-" कट्टु एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता आभि-ओगे देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

'एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, आमलकप्पाए नयरीए बहिया, अम्बसालवणे चेइए अहा-पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं, भारहं वासं, आमलकप्पं णयरिं, अंबसालवणं चेइयं । समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेह, करेत्ता वंदह णमंसह, वंदित्ता णंमसिता साइं-साइं नाम-गोयाइं साहेह, साहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयण-परिमंडलं जं किंचि तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा असुइं अचोक्खं वा पूइअं दुब्भिगंधं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय एगंते एडेह, एडेत्ता णच्चोदगं, णाइमट्टियं, पविरल-पप्फुसियं, रय-रेणु-विणासणं, दिव्वं सुरभिगंधोदयवासं वासह, वासित्ता णिहय-रयं, णट्ठ-रयं, भट्ठ-रयं, उवसंत-रयं, पसंत-रयं करेह, करित्ता, जल-थलय-भासुर-प्पभूयस्स, बिंट-ट्ठाइस्स, दसद्ध-वण्णस्स कुसुमस्स जाणुस्सेह-पमाणमित्तं ओहिं वासं वासह, वासित्ता कालागुरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघंत-गंधुद्धुयाभिरामं, सुगंध-वर-गंधियं, गंधवट्टि-भूयं, दिव्वं, सुरवराभिगमण-जोग्गं करेह कारवेह य, करित्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह' ।

आभिओगियदेवकयं महावीरवंदणाइ

१६ तए णं ते आभिओगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा, हट्ठतुट्ठ-जाव-हिययया, करयल-परिग्गहियं दस-नहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु, एवं देवो तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, 'एवं देवो तह' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेत्ता उत्तर-पुरच्छिमं दिसि-भागं अवक्कमंति, उत्तर-पुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरन्ति, तं जहा–रयणाणं, वयराणं, वेरुलियाणं, लोहियक्खाणं, मसारगल्लाणं, हंसगब्भाणं, पुलगाणं, सोगंधियाणं, जोइरसाणं, अंजणाणं, अंजणपुलगाणं, रयणाणं, जायरूवाणं, अंकाणं, फलिहाणं, रिट्ठाणं अहा-बायरे पुग्गले परिसाडंति, परिसाडित्ता अहा-सुहुमे पुग्गले परियायंति, परियाइत्ता दोच्चंपि वेउविव्वय-समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता उत्तर-वेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा वीईवयमाणा जेणेव जंबुद्दावे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव आमलकप्पा णयरी, जेणेव अंबसालवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी–

'अम्हे णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स आभिओगा देवा देवाणुप्पियाणं वंदामो, णमंसामो, सक्कारेमो, सम्माणेमो, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामो' ।।

१७ देवा ! इ समणे भगवं महावीरे ते देवे एवं वयासी–

'पोराणमेयं देवा !, जीयमेयं देवा !, किच्चमेयं देवा !, करणिज्जमेयं देवा !, आइन्नमेयं देवा !, अब्भणुण्णायमेयं देवा ! जण्णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता, नमंसित्ता तओ साइं-साइं णामगोयाइं साहंति ! तं पोराणमेयं देवा !-जाव-अब्भणुण्णायमेयं देवा !' ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिओगियदेवकयं महावीरसमोसरणभूमिसंपमज्जणाइ

१८ तए णं ते आभिओगिया देवा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा, हट्ठ-जाव-हियया, समणं भगवं महावीरं वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता, णमंसित्ता उत्तर-पुरत्थिमं दिसी-भागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, तंजहा—रयणाणं-जाव-रिट्ठाणं अहा-बायरे पोग्गले परिसाडंति, परिसाडित्ता दोच्चं पि वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता, संवट्टय-वाए विउव्वंति, से जहा-नामए भइय-दारए सिया तरुणे, बलवं, जुगवं, जुवाणे अप्पायंके, थिर-संघयणे, थिरग्गहत्थे, दढ-पाणि-पाय-पिट्ठंतरोरु-संघाय-परिणए, घण-निचिय-वलिय-वट्ट-खंधे, चम्मेट्ठग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-गत्ते, उरस्स-बल-समन्नागए, तल-जमल-जुयल-फलिह-निभ-बाहू, लंघण-पवण-जवण-पमद्दण-समत्थे, छेए, दक्खे, पट्ठे, कुसले, मेहावी, णिउण-सिप्पोवगए एगं महं सलागा-हत्थगं वा दंड-संपुच्छणिं वा वेणु-सलाइयं वा गहाय, रायंगणं वा रायंतेउरं वा देवकुलं वा सभं वा पवं वा आरामं वा उज्जाणं वा अतुरियमचवलमसंभंते निरंतरं सुनिउणं सव्वओ समंता संपमज्जेज्जा, एवामेव तेऽवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा संवट्टय-वाए विउव्वंति, विउव्वित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयण-परिमण्डलं जं किंचि तणं वा पत्तं वा तहेव सव्वं आहुणिय आहुणिय एगंते एडेंति एडित्ता खिप्पामेव उवसमंति-उवसमेत्ता दोच्चं-पि वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता अब्भ-वद्दलए विउव्वंति।

से जहा-णामए भइग-दारए सिया, तरुणे-जाव-सिप्पोवगए, एगं महं दग-वारगं वादग-कुंभगं वा दग-थालगं वा दग-कलसगं वा गहाय, आरामं वा-जाव-पवं वा अतुरिय-जाव-सव्वओ समंता आवरिसेज्जा, एवामेव तेऽवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा अब्भ-वद्दलए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायन्ति, पतणतणायित्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयायित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयण-परिमंडलं णच्चोदगं, णाइमट्टियं तं पविरल-पप्फुसियं, रय-रेणुविणासणं, दिव्वं, सुरभि-गंधोदगं वासं वासंति, वासेत्ता णिहय-रयं, णट्ठरयं, भट्ठरयं, उवसंत-रयं, पसंत-रयं करेंति, करित्ता खिप्पामेव उवसामंति।

उवसामेत्ता पुप्फच्चरिसणं धूवोद्धूवणं च तच्चं पि वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता पुप्फ-वद्दलए विउव्वंति।

से जहा-णामए मालागार-दारए सिया तरुणे-जाव-सिप्पोवगए, एगं महं पुप्फ-छज्जियं वा पुप्फ-पडलगं वा पुप्फ-चंगेरियं वा गहाय रायंगणं वा-जाव-सव्वओ समंता कयग्गह-गहिय-करयल-पब्भट्ठ-विप्पमुक्केणं दसद्ध-वन्नेणं कुसुमेणं मुक्क-पुप्फ-पुंजोवयार-कलियं करेज्जा, एवामेव ते सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा पुप्फ-वद्दलए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायन्ति-जाव-जोयण-परिमण्डलं जल-थलय-भासुर-प्पभूयस्स बिंट-ट्ठाइस्स दसद्ध-वन्न-कुसुमस्स जाणुस्सेह-प्रमाण-मेत्तं ओहि-वासं वासंति वासित्ता कालागुरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघंत-गंधुद्धूयाभिरामं, सुगंध-वर-गंधियं, गंधविट्ट-भूयं, दिव्वं, सुरवराभिगमण-जोग्गं करंति कारयंति, करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव उवसामंति।

जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो-जाव-वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ अम्बसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-वीइवयमाणा वीइवयमाणा जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सूरियाभे विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव सूरियाभे देवे, तेणेव उवागच्छंति। सूरियाभं देवं करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।।

सूरियाभदेवादेसेणं तव्विमाणवासिदेव-देवीणं तस्संतियमागमणं

१९ तए णं से सूरियाभे देवे तेसिं आभिओगियाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए पायत्ताणियाहिवइं देवं सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सूरियाभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, मेघोघ-रसिय-गंभीर-महुर-सद्दं जोयण-परिमंडलं सुसर-घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयाहि—आणवेइ णं भो सूरियाभे देवे, गच्छइ णं भो सूरियाभे देवे जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, आमलकप्पाए णयरीए, अंबसालवणे वतिए समणं भगवं महावीरं अभिवंदए। तुब्भेऽवि णं भो देवाणुप्पिया! सव्विड्ढीए-जाव-णाइय-रवेणं, णियग-परिवाल-सद्धिं संपरिवुडा, साइं-साइं-जाण-विमाणाइं दुरूढा समाणा अकाल-परिहीणं चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह।"

तए णं से पायत्ताणियाहिवई देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए 'एवं देवा! तह' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सूरियाभे विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव मेघोघ-रसिय-गंभीर-महुर-सद्दा, जोयण-परिमंडला, सु-स्सरा घंटा, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं मेघोघ-रसिय-गंभीर-महुर-सद्दं, जोयण-परिमंडलं, सु-स्सरं घंटं तिखुत्तो उल्लालेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तीसे मेघोघ-रसिय-गंभीर-महुर-सद्दाए, जोयण-परिमंडलाए, सु-स्सराए घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालियाए समाणीए, से सूरियाभे विमाणे पासायविमाणणिक्खुडावडिय-सद्द-घंटा-पडिसुयासय-सहस्स-संकुले जाए यावि होत्था।

तए णं तेसिं सूरियाभ-विमाण-वासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंत-रइ-पसत्त-निच्च-प्पमत्त-विसय-सुह-मुच्छियाणं सुस्सर-घंटारव-विउल-बोल-तुरिय-चवल-पडिबोहणे कए समाणे, घोसण-कोउहल-दिन्न-कन्न-एगग्ग-चित्त-उवउत्त-माणसाणं से पायत्ताणियाहिवई देवे तंसि घंटा-रवंसि णिसंत-पसंतंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं वयासी–

'हंत सुणंतु भवंतो सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सूरियाभ-विमाण-वइणो वयणं हिय-सुहत्थं आणवेइ णं भो! सूरियाभे देवे, गच्छइ णं भो सूरियाभे देवे जंबुद्दीवं दीवं, भारहं वासं, आमलकप्पं नयरिं, अंबसालवणं चेइयं, समणं भगवं महावीरं अभिवंदए। तं तुब्भेऽवि णं देवाणुप्पिया! सव्विड्ढीए अकाल-परिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह' ।।

तए णं ते सूरियाभ-विमाण-वासिणो बहवे वेमाणिया देवा देवीओ य पायत्ताणियाहिवइस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, णिसम्म, हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियया, अप्पेगइया वंदण-वत्तियाए, अप्पेगइया नमंसण-वत्तियाए, अप्पेगइया सक्कार-वत्तियाए एवं संमाणव त्तियाए, कोउहल-वत्तियाए, अप्पे० 'असुयाइं सुणिस्सामो, सुयाइं अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं, कारणाइं, वागरणाइं पुच्छिस्सामो,' अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तमाणा अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो, अप्पेगइया सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो अप्पेगइया अन्नमन्नमणुयत्तमाणा, अप्पेगइया जिण-भत्ति-रागेणं, अप्पेगइया धम्मो त्ति, अप्पेगइया जीयमेयं ति कट्टु सव्विड्ढीए-जाव-अकाल-परिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवंति।

सूरियाभदेवाएसेणं आभिओगियदेवकयं दिव्वजाणविमाणनिम्माणं, दिव्वजाणविमाणवण्णओ य

२० तए णं से सूरियाभे देवे ते सूरियाभ-विमाण-वासिणो बहवे वेमाणिये देवे य देवीओ य अकाल-परिहीणे चेव अंतियं पाउब्भवमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए आभिओगियं देवं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेग-खंभ-सय-संनिविट्ठं, लील-ट्ठिय-सालभंजियागं, ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किंनर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्तं, खंभुग्गय-वर-वइर-वेइया-परिगयाभिरामं, विज्जाहर-जमल-जुयल-जंत-जुत्तं-पिव अच्ची-सहस्स-मालिणीयं, रूवग-सहस्स-कलियं, भिसमाणं, भिब्भिसमाणं, चक्खुल्लोयण-लेसं, सुह-फासं, सस्सिरीय-रूवं, घंटावलि-चलिय-महुर-मणहर-सरं, सुहं, कंतं, दरिसणिज्जं, णिउणोचिय-मिसिमिसिंत-मणि-रयण-घंटिया-जाल-परिक्खित्तं, जोयण-सय-सहस्स-वित्थिण्णं, दिव्वं गमण-सज्जं, सिग्घगमणं णाम दिव्वं जाण-विमाणं विउव्वाहि, विउव्वित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि' ।।
तए णं से आभिओगिए देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-जाव-हियए, करयल-परिग्गहियं-जाव-पडिसुणेइ, पडिसुणेता उत्तर-पुरच्छिमं दिसी-भागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं-जाव-अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणित्ता अणेग-खंभ-सय-सन्निविट्ठं-जाव-दिव्वं जाण-विमाणं विउव्विउं पवत्ते यावि होत्था।

तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाण-विमाणस्स ति-दिसिं ति-सोवाण-पडिरूवए विउव्वइ, तं जहा-पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, तेसिं ति-सोवाण-पडिरूवगाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा-वइरामया णिम्मा, रिट्ठामया पइट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्ण-रुप्पमया फलगा, लोहियक्खमईओ सूईओ, वयरामया संधी, णाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ य पासादीया-जाव-पडिरूवा।

तेसि णं ति-सोवाण-पडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणं पण्णत्तं।

तेसि णं तोरणाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा–तोरणा णाणा-मणिमया, णाणा-मणिमएसु खंभेसु उवनिविट्ठ-संनिविट्ठ-विविह-मुत्तंतरारूवोवचिया, विविह-तारारूवोवचिया-जाव-पडिरूवा।

तेसि णं तोरणाणं उप्पिं अट्ठट्ठ-मंगलगा पण्णत्ता, तं जहा-सोत्थिय-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा-जाव-पडिरूवा।

तेसिं च णं तोरणाणं उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झए-जाव-सुक्किल्लचामरज्झए अच्छे-जाव-पडिरूवे विउव्वइ।

तेसि णं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्ताइच्छत्ते, पडागाइपडागे, घंटाजुयले, उप्पलहत्थए, कुमुय-णलिण-सुभग-सोगंधिय-पोंडरीय-महापोंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-हत्थए, सव्व-रयणामए, अच्छे-जाव-पडिरुवे विउव्वइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाण-विमाणस्स अंतो बहु-सम-रमणिज्जं भूमि-भागं विउव्वइ । से जहा-णामए आलिंग-पुक्खरे इ वा मुइंग-पुक्खरे-इ वा सर-तले इ वा सर-तले इ वा चंद-मंडले इ वा सूर-मंडले इ वा आयंस-मंडले इ वा उरब्भ-चम्मे इ वा वसह-चम्मे इ वा वराह-चम्मे इ वा सीह-चम्मे इ वा वग्घ-चम्मे इ वा छगल-चम्मे इ वा दीविय-चम्मे इ वा अणेग-संकु-कीलग-सहस्सवियए, णाणाविह-पंच-वन्नेहिं मणीहिं उवसोभिए, आवड-पच्चावड-सेढि-पसेढि-सोत्थिय-सोवत्थिय-पूसमाणग-वद्ध-माणग-मच्छंडग-मगरंडग-जार-मार-फुल्लावलि-पउमपत्त-सागरतरंग-वसंतलय-पउमलय-भत्ति-चित्तेहिं, सच्छाएहिं, सप्पभेहिं, समरीइएहिं, सउज्जोएहिं, णाणाविह-पंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए, तं जहा–

किण्हेहिं, णीलेहिं, लोहिएहिं, हालिद्देहिं, सुक्किल्लेहिं;

तत्थ णं जे ते किण्हा मणी तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहा-नामए जीमूतए इ वा अंजणे इ वा खंजणे इ वा कज्जले इ वा गवले इ वा गवल-गुलिया इ वा भमरे इ वा भमरावलिया इ वा भमर-पतंग-सारे इ वा जंबू-फले इ वा अद्दारिट्ठे इ वा परहुए इ वा गए इ वा गय-कलभे इ वा किण्ह-सप्पे इ वा किण्ह-केसरे इ वा आगास-थिग्गले इ वा किण्हा-सोए इ वा किण्ह-कणवीरे इ वा किण्ह-बंधुजीवे इ वा, भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे। ओवम्मं समणाउसो ! ते णं किण्हा मणी इत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव वण्णेणं पण्णत्ता ।

तत्थ णं जे ते नीला मणी तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहा-नामए भिंगे इ वा भिंग-पत्ते इ वा सुए इ वा सुय-पिच्छे इ वा चासे इ वा चास-पिच्छे इ वा णीली इ वा णीली-भए इ वा णीली-गुलिया इ वा सामा इ वा उच्च-न्तगे इ वा वणराई इ वा हलधर-वसणे इ वा मोरग्गीवा इ वा अयसि-कुसुमे इ वा बाण-कुसुमे इ वा अंजणकेसिया-कुसुमे इ वा नीलुप्पले इ वा णीलासोगे इ वा णील-बंधुजीवे इ वा णील-कणवीरे इ वा, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । ते णं णीला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव-जाव-वण्णेणं पण्णत्ता ।

तत्थ णं जे ते लोहियगा मणी तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, स जहा-णामए उरब्भ-रुहिरे इ वा सस-रुहिरे इ वा नर-रुहिरे इ वा वराह-रुहिरे इ वा महिस-रुहिरे इ वा बालिंदगोवे इ वा बाल-दिवायरे इ वा संझब्भ-रागे इ वा गुंजद्ध-रागे इ वा जासुमण-कुसुमे इ वा किंसुय-कुसुमे इ वा पालियाय-कुसुमे इ वा जाइ-हिंगुलए इ वा सिल-प्पवाले इ वा पचाल-अंकुरे इ वा लोहियक्ख-मणी इ वा लक्खा-रसगे इ वा किमि-राग-कंबले इ वा चीण-पिट्ठरासी इ वा रत्तुप्पले इ वा रत्ता सोगे इ वा रत्त-कणवीरे इ वा रत्त-बंधुजीवे इ वा, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे। ते णं लोहिया मणी इत्तो इट्ठतराए चेव-जाव-वण्णेणं पण्णत्ता ।

तत्थ णं जे ते हालिद्दा मणी तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–से जहा-णामए चंपए इ वा चंप-छल्ली इ वा चंपग-भेए इ वा हलिद्दा इ वा हलिद्दा-भेए इ वा हलिद्दा-गुलिया इ वा हरियालिया इ वा हरियाल-भेए इ वा हरियाल-गुलिया इ वा चिउरे इ वा चिउरंगराए इ वा वर-कणगे इ वा वर-कणग-निघसे इ वा [सुवण्ण-सिप्पाए इ वा] वर-पुरिस-वसणे इ वा अल्लई-कुसुमे इ वा चंपा-कुसुमे इ वा कुहंडिया-कुसुमे इ वा तड-वडा-कुसुमे इ वा घोसेडिया-कुसुमे इ वा सुवण्ण-जूहिया-कुसुमे इ वा सुहिरण्ण-कुसुमे इ वा कोरंटग-वर-मल्ल-दामे इ वा बीयय-कुसुमे इ वा पीयासोगे इ वा पीय-कणवीरे इ वा पीय-बंधुजीवे इ वा, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे। ते णं हालिद्दा मणी एत्तो इट्ठतराए चेव-जाव-वण्णेणं पण्णत्ता।

तत्थ णं जे ते सुक्किल्ला मणी तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते। से जहा-नामए अंके इ वा संखे इ वा चंदे इ वा कुमुदोदक-दगरय-दहि-घणक्खीर-क्खीरपूरे इ वा कोंचावली इ वा हारावली इ वा हंसावली इ वा बलागावली इ वा चंदावली इ वा सारइय-बलाहए इ वा धंत-धोय-रुप्प-पट्टे इ वा सालि-पिट्ठ-रासी इ वा कुंद-पुप्फ-रासी इ वा कुमुय-रासी इ वा सुक्क-च्छिवाडी इ वा पिहुण-मिंजिया इ वा भिसे इ वा मुणालिया इ वा गय-दंते इ वा लवंग-दलए इ वा पोंडरिय-दलए इ वा सेयासोगे इ वा सेय-कणवीरे इ वा सेय-बन्धुजीवे इ वा, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । ते णं सुक्किल्ला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव-जाव-वन्नेणं पण्णत्ता ।

तेसि णं मणीणं इमेयारूवे गंधे पण्णत्ते, से जहा-नामए कोट्ठ-पुडाण वा तगर-पुडाण वा एला-पुडाण वा चोय-पुडाण वा चंपा-पुडाण वा दमणा-पुडाण वा कुंकुम-पुडाण वा चंदण-पुडाण वा उसीर-पुडाण वा मरुआ-पुडाण वा जाति-पुडाण वा जूहिया-पुडाण वा मल्लिया-पुडाण वा ण्हाण-मल्लिया-पुडाण वा केयइ-पुडाण वा पाडलि-पुडाण वा णोमालिया-पुडाण वा अगुरु-पुडाण वा लवंग-पुडाण वा वास-पुडाण वा कप्पूर-पुडाण वा अणुवायंसि वा ओभिज्जमाणाण वा कुट्टिज्जमाणाण वा भंजिज्जमाणाण वा उक्कि-रिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा परिभुज्जमाणाण वा परिभाइज्जमाणाण वा भंडाओ भंडं साहरिज्जमाणाण वा ओराला,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुण्णा, मणहरा घाण-मण-निव्वुइ-करा, सव्वओ समंता गंधा अभिनिस्सवंति, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव गंधेणं पन्नत्ता ।

तेसि णं मणीणं इमेयारूवे फासे पण्णत्ते, से जहा-नामए आइणेइ वा रूए इ वा बूरे इ वा णवणीए इ वा हंस-गब्भ-तूलिया इ वा सिरीस-कुसुम-निचए इ वा बाल-कुमुय-पत्त-रासी इ वा, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव-जाव-फासेणं पन्नत्ता ।

तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाण-विमाणस्स बहु-मज्झ-देस-भागे एत्थ णं महं पिच्छाघर-मंडवं विउव्वइ—अणेग-खंभ-सय-संनिविट्ठं अब्भुग्गय-सुकय-वर-वेइया-तोरण-वर-रइय-सालभंजियागं, सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-वेरुलिय-विमल-खंभं, णाणामणि-कणग-रयण-खचिय-उज्जल-बहु-सम-सुविभत्त-भूमिभागं, ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्तं, खंभुग्गयवरवइरवेइयापरिगयाभिरामं, विज्जाहर-जमल-जुयल-जत-जुत्तं पिव अच्चीसहस्स मालणीयं रूवगसहस्स-कलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचण-मणि-रयण-थूभियागं, णाणाविह-पंचवण्ण-घंटा-पडाग-परि-मंडियग्ग-सिहरं, चवलं, मरीइ-कवयं विणिम्मुयंतं, लाउल्लोइयमहियं, गोसीस-सरस-रत्तचंदण-दद्दर-दिन्न-पंचंगुलि-तलं, उवचिय-चंदण-कलसं, चंदण-घड-सुकय-तोरण-पडिदुवार-देस-भागं, आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्ल-दाम-कलावं, पंचवण्ण-सरस-सुरभि-मुक्क-पुप्फ-पुंजो वयार-कलियं, कालागुरु-पवर-कुंदरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघंत-गंधुद्धुयाभिरामं, सुगंध-वर-गंधियं, गंधवट्टि-भूयं, अच्छर-गण-संघ-संविकिण्णं, दिव्वं, तुडिय-सद्द-संपणाइयं, अच्छं-जाव-पडिरूवं ।

तस्स णं पिच्छाघर-मंडवस्स अंतो बहु-सम-र-मणिज्ज-भूमिभागं विउव्वइ-जाव-मणीणं फासो ।

तस्स णं पेच्छाघर-मंडवस्स उल्लोयं विउव्वइ पउमलय-भत्ति-चित्तं-जाव-पडिरूवं ।

तस्स णं बहु-सम-रमणिजस्स भूमिभागस्स बहु-मज्झ-देस-भाए एत्थ णं एगं महं वइरामयं अक्खाडगं विउव्ववइ ।

तस्स णं अक्खाडयस्स बहु-मज्झ-देस-भागे एत्थ णं महेगं मणिपेढियं विउव्वइ—अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्व-मणिमयं, अच्छं, सण्हं-जाव-पडिरूवं ।

तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगं सिंहासणं विउव्वइ, तस्स णं सीहासणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते-तवणिज्जमया चक्कला, रययामया सीहा, सोवण्णिया पाया, णाणा-मणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयमयाइं गत्ताइं, वइरामया संधी, णाणा-मणिमए वेच्चे । से णं सीहासणे ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्तं [सं]सार-सारोवचिय-मणि-रयण-पायवीढे, अहेरग-मिउ-मसूरग-णव-तयकुसंत-लिम्ब-केसर-पच्चत्थुयाभिरामे, आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूल-फास-मउए, सुविरइय-रयत्ताणे, उवचिय-खोम-दुगुल्ल-पट्ट-पडिच्छायणे, रत्तंसुय-संवुए, सुरम्मे, पासाईए-जाव-पडिरूवे ।

तस्स णं सिंहासणस्स उवरिं एत्थ णं महेगं विजय-दूसं विउव्वइ—संखंक-कुंद-दगरय-अमय- महिय-फेण-पुंज -संनिगासं, सव्व-रयणामयं, अच्छं, सण्हं, पासादीयं, दरिसणिज्जं, अभिरूवं पडिरूवं ।

तस्ण णं सीहासणस्स उवरिं विजय-दूसस्स य बहु-मज्झ-देस-भागे एत्थ णं महं एगं वयरामयं अंकुसं विउव्वइ ।

तस्सि च णं वयरामयंसि अंकुसंसि कुंभिक्कं मुत्ता-दामं विउव्वइ । से णं कुंभिक्के मुत्ता-दामे अन्नेहिं चउहिं अद्ध-कुंभिक्केहिं मुत्ता-दामेहिं तदद्धुच्चत्त-पमाणेहिं सव्वओ समंता संपरिखित्ते । ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा, सुवण्ण-पयरग-मंडियग्गा, णाणा-मणि-रयण विविह-हारद्धहार-उवसोभिय-समुदया ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता, वाएहिं पुव्वावर-दाहिणुत्तरागएहिं मंदायं-मंदायं एइज्जमाणाणि, एइज्जमाणाणि, पलंबमाणाणि पलंबमाणाणि, वंदमाणाणि वंदमाणाणि, उरालेणं, मणुन्नेणं, मणहरेणं, कण्ण-मण-णिव्वुइ-करेणं सद्देणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा आपूरेमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

तए णं से आभिओगिए देवे तस्स सिंहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तर-पुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स-देवस्स चउण्हं सामाणिय-साहस्सीणं चत्तारि भद्दासण-साहस्सीओ विउव्वइ ।

तस्स णं सीहासणस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं अग्ग-महिसीणं सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासण-साहस्सीओ विउव्वइ । तस्स णं सीहासणस्स दाहिण-पुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स अब्भितरपरिसाए अट्ठण्हं देव-साहसीणं अट्ठ भद्दासण-साहस्सीओ विउव्वइ ।

एवं दाहिणेणं मज्झिम-परिसाए दसण्हं देव-साहस्सीणं दस भद्दासण-साहस्सीओ विउव्वइ ।

दाहिण-पच्चत्थिमेणं बाहिर-परिसाए बारसण्हं देव-साहस्सीणं बारस भद्दासण-साहस्सीओ विउव्वइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सत्त भद्दासणे विउव्वइ ।

तस्स णं सीहासणस्स चउ-दिसिं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सोलसण्हं आयरक्ख-देव-साहस्सीणं सोलस भद्दासण-साहस्सीओ विउव्वइ, तं जहा–

पुरच्छिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ ।

तस्स दिव्वस्स जाण-विमाणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–से जहा-नामए अइरुग्गयस्स वा हेमंतिय-बालिय-सूरियस्स वा खयरि-गालाण वा रत्ति पज्जलियाण वा जवा-कुसुम-वणस्स वा किंसुय-वणस्स वा पारियाय-वणस्स वा सव्वओ समंता संकुसुमियस्स, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे ? तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स एत्तो इट्ठतराए चेव-जाव-वण्णेणं पण्णत्ते, गंधो य फासो य जहा मणीणं । तए णं से आभिओगिए देवे दिव्वं जाण-विमाणं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयल-परिग्गहियं-जाव-पच्चप्पिणइ ।।

सूरियाभस्स महावीरसमीवमागमणं, दिव्वविमाणारुहणाइवण्णओ य

२१ तए णं से सूरियाभे देवे आभिओगस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ-जाव-हियए दिव्वं जिणिंदाभिगमण-जोग्गं उत्तर-वेउव्विय-रूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता चउहिं अग्ग-महिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहिं अणीएहिं, तं जहा--

गंधव्वाणीएण य णट्टाणीएण य सद्धिं संपरिवुडे तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं ति-सोवाण-पडिरूवएणं दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव सीहासणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासण-वर-गए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणिय-साहस्सीओ तं दिव्वं जाण-विमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं ति-सोवाण-पडिरूवएणं दुरूहंति, दुरूहित्ता पत्तेयं--पत्तेयं पुव्व-णत्थेहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति, अवसेसा देवा य देवीओ य तं दिव्वं जाण-विमाणं-जाव-दाहिणिल्लेणं ति-सोवाण-पडिरूवएणं दुरूहंति, दुरूहित्ता पत्तेयं-पत्तेयं पुव्व-णत्थेहिं भद्दासणेहिं निसीयंति ।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स तं दिव्वं जाण-विमाणं दुरूढस्स समाणस्स अट्ठट्ठ मङ्गलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तं जहा--सोत्थिय-सिरिवच्छ-जाव--दप्पणा ।

तयणंतरं च णं पुण्ण-कलस-भिंगारा दिव्वा य छत्त-पडागा, सचामरा दंसण-रइया, आलोय-दरिसणिज्जा, वाउद्धुय-विजय-वेजयंती-पडागा ऊसिया, गगण-तलमणुलिहन्ती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तयणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमल-दण्डं, पलम्ब-कोरंट-मल्ल-दामोवसोभियं, चंद-मंडल-निभं, समुस्सियं, विमलमायवत्तं पवर-सीहासणं च मणि-रयण-भत्ति-चित्तं, सपायपीढं, सपाउया-जोय-समाउत्तं, बहु-किंकरामर-परिग्गहियं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थियं ।

तयणंतरं च णं वइरामय-वट्ट-लट्ठ-संठिय-सुसिलिट्ठ-परिघट्ठ-मट्ठ-सुपइट्ठिए, विसिट्ठे, अणेग-वर-पंचवण्ण-कुडभीसहस्सुस्सिए, परिमंडियाभिरामे, वाउद्धूय-विजय-वेजयंती-पडाग-च्छत्ताइच्छत्त-कलिए, तुंगे, गगणतलमणुलिहंत-सिहरे, जोयण-सहस्समूसिए, महइ-महालए महिंद-ज्झए पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिए ।

तयणंतरं च णं सुरूव-णेवत्थ-परिकच्छिया, सुसज्जा, सव्वालंकार-भूसिया, महया भड-चडगर-पहगरेणं पंच अणीयाहिवइणो पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तयणंतरं च णं बहवे अभिओगिया देवा देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं, सएहिं-सएहिं विसेसेहिं, सएहिं सएहिं विंदेहिं, सएहिं सएहिं णेज्जाएहिं, सएहिं सएहिं णेवत्थेहिं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तयणंतरं च णं सूरियाभ-विमाण-वासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं सूरियाभं देवं पुरओ पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति ।।

तए णं से सूरियाभे देवे तेणं पंचाणीय-परिखित्तेणं, वइरामय-वट्ट-लट्ठ-संठिएणं-जाव-जोयण-सहस्समूसिएणं, महइ-महालएणं महिंदज्झएणं पुरओ कड्ढिज्जमाणेणं, चउहिं सामाणिय-सहस्सेहिं-जाव-सोलसहिं आयरक्ख-देवसाहस्सीहिं, अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभ-विमाण-वासीहिं वेमाणिएहिं, देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे, सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं, सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं, तं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावं उवलालेमाणे-उवलालेमाणे, उवदंसेमाणे-उवदंसेमाणे, पडिजागरेमाणे-पडिजागरेमाणे, जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे, तेणेव उवागच्छइ, जोयण-सय-साहस्सिएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे, वीईवयमाणे ताए उक्किट्ठाए-जाव-तिरियं असंखिज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे-वीइवयमाणे, जेणेव नंदीसरवरे दीवे, जेणेव दाहिण-पुरत्थिमिल्ले रतिकर-पव्वए, तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता तं दिव्वं देविड्ढिं-जाव-दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरेमाणे पडिसाहरेमाणे, पडिसंखेवेमाणे पडिसंखेवेमाणे, जेणेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्बुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव आमलकप्पा नयरी, जेणेव अम्बसालवणं चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवन्तं महावीरं तेणं दिव्वेणं जाण-विमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणं, पयाहिणं करेइ, करित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स उत्तर-पुरत्थिमे दिसि-भाए तं दिव्वं जाण-विमाणं इसिं चउरंगुलमसंपत्तं धरणि-तलंसि ठवेइ, ठवित्ता चउहिं अग्ग-महिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहिं अणीएहिं–तं जहा--

गंधव्वाणिएण य णट्टाणिएण य, सद्धिं संपरिवुडे ताओ दिव्वाओ जाण-विमाणाओ पुरत्थिमिल्लेणं ति-सोवाण-पडिरूवएणं पच्चोरुहइ ।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणिय-साहस्सीओ ताओ दिव्वाओ जाण-विमाणाओ उत्तरिल्लेणं ति-सोवाण-पडिरूवएणं पच्चोरुहंति । अवसेसा देवा या देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाण-विमाणाओ दाहिणिल्लेणं ति-सोवाण-पडिरूवएणं पच्चोरुहन्ति ।

तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं अग्गमहिसीहिं-जाव-सोलसहिं आयरक्ख-देव-साहस्सीहिं, अण्णेहि य बहूहिं सूरियाभ-विमाणवासीहिं वेमाणिएहिं, देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे, सव्विड्ढीए-जाव-णाइयरवेणं जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--'अहं णं भंत्ते ! सुरियाभे देवे देवाणुप्पियाणं वंदामि, नमंसामि-जाव-पज्जुवासामि' ।।

सूरियाभा ! इ समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी--'पोराणमेयं सूरियाभा ! जीयमेयं सूरियाभा ! किच्चमेयं सूरियाभा ! करणिज्जमेयं सूरियाभा ! आइण्णमेयं सूरियाभा ! अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा ! जं णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ पच्छा साइं-साइं नाम-गोत्ताइं साहिंति, तं पोराणमेयं सूरियाभा ! –जाव–अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा !'

तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-जाव-समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे, नाइदूरे सुस्सूसमाणे , णमंसमाणे, अभिमुहे, विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।।

सूरियाभेण नट्टविहिस्स उवदंसणं

२२ तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभस्स देवस्स तीसे य महइ-महालियाए परिसाए-जाव-परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया ।।

तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा, निसम्म-हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हयहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

'अहं णं भंत्ते ! सूरियाभे देवे किं भव-सिद्धिए, अभव-सिद्धिए ? सम्म-दिट्ठी, मिच्छा-दिट्ठी ? परित्त-संसारिए, अणंतसंसारिए ? सुलभ-बोहिए, दुल्लभ-बोहिए ? आराहए विराहए ? चरिमे अचरिमे ?' ।।

सूरियाभाइ समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी––

सूरियाभा ! तुमं णं भव-सिद्धिए, नो अभव-सिद्धिए,-जाव-चरिमे, णो अचरिमे ।

तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिए परम-सोमणस्सिए, समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

'तुब्भे णं भंत्ते ! सव्वं जाणह, सव्वं पासह, सव्वओ जाणह, सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह, सव्वं कालं पासह, सव्वे भावे जाणह, सव्वे भावे पासह । जाणंति णं देवाणुप्पिया ! मम पुव्विं वा पच्छा वा मम एया-रूवं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावं लद्धं, पत्तं अभिसमण्णागयं ति । तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं-भत्ति-पुव्वगं, गोयमाइयाणं समणाणं, निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावं, दिव्वं बत्तीसइ-बद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए' ।।

तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे, सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।

तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवंतं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी –

'तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह-जाव-उवदंसित्तए त्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तर-पुरत्थिमं दिसी-भागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दण्डं निसिरइ, निसिरित्ता अहा-बायरे-पुग्गले परिसाडंति परिसाडित्ता-अहासुहुमे पुग्गले परियायंति, परियाइत्ता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोच्चं पि वेउव्विय-समुग्घाएणं-जाव-बहु-सम-रमणिज्जं भूमि-भागं विउव्वइ। से जहानामए आलिंग-पुक्खरे इ वा-जाव-मणीणं फासो। तस्स णं बहु-सम-रमणिज्जस्स भूमि-भागस्स बहु-मज्झ-देस-भागे पिच्छाघरमण्डवं विउव्वइ-अणेग-खंभ-सय-संनिविट्ठं वण्णओ। अन्तो बहु-सम-रमणिज्जं भूमि-भागं, उल्लोयं, अक्खाडगं च मणि-पेढियं च विउव्वइ।

तीसे णं मणि-पेढियाए उवरि सीहासणं सपरिवारं-जाव-दामा चिट्ठन्ति।

तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स आलोए पणामं करेइ, करित्ता 'अणुजाणउ मे भगवं ति' कट्टु सीहासणवरगए तित्थयराभिमुहे संणिसण्णे।

तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए नाना-मणि-कणग-रयण-विमल-महरिह-निउणोविय-मिसिमिसिंत-विरइय-महाभरण-कडग-तुडिय-वर-भूसणुज्जलं, पीवरं, पलम्बं, दाहिणं भुयं पसारेइ, तओ णं सरिसयाणं, सरित्तयाणं, सरिव्वयाणं, सरिस-लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं, एगाभरण--वसण-गहिय-णिज्जोयाणं, दुहओ संवेल्लियग्ग-णियत्थाणं, आविद्ध-तिलयामेलाणं, पिणिद्ध-गेविज्ज-कंचुयाणं, उप्पीलिय-चित्त-पट्ट-परियर-सफेणगावत्त-रइय-संगय-पलंब-वत्थंत-चित्त-चिल्ललग-नियंसणाणं, एगावलि-कण्ठ-रइय-सोभंत-वच्छ-परिहत्थ-भूसणाणं, अट्ठ-सयं णट्ट-सज्जाणं देव-कुमाराणं णिग्गच्छइ।

तयणंतरं च णं नाना-मणि-जाव-पीवरं, पलंबं वामं भुयं पसारेइ। तओ णं सरिसयाणं, सरित्तयाणं, सरिव्वयाणं, सरिस-लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं, एगाभरण-वसण-गहिअ-णिज्जोआणं, दुहओ संवेल्लियग्ग-णियत्थाणं आविद्ध-तिलयामेलाणं, पिणद्धगेवेज्ज-कुंचुईणं, नाना-मणि-रयण-भूसण-विराइयंगमंगाणं, चंदाणणाणं, चंदद्ध-सम-निलाडाणं, चंदाहिय-सोम-दंसणाणं, उक्का इव उज्जोवेमाणीणं, सिंगारा-गारचारुवेसाणं, हसियभणिय-चिट्ठिय-विलास-ललिय-संलख-निउण-जुत्तोवयारकुसलाणं, गहियाउज्जाणं अट्ठ-सयं नट्ट-सज्जाणं देव-कुमारियाणं णिग्गच्छइ।

तए णं से सूरियाभे देवे अट्ठ-सयं संखाणं विउव्वइ, अट्ठ-सयं संख-वायाणं विउव्वइ अट्ठसयं सिंगाणं विउव्वइ, अट्ठसयं सिंगवायाणं विउव्वइ, अट्ठसयं संखियाणं विउव्वइ, अट्ठसयं संखिय-वायाणं विउव्वइ, अट्ठसयं खरमुहीणं विउव्वइ, अट्ठसयं खरमुहिवायाणं विउव्वइ, अट्ठसयं पेयाणं विउव्वइ, अट्ठसयं पेया-वायगाणं विउव्वइ, अट्ठसयं पिरिपिरियाणं विउव्वइ, अट्ठसयं पिरिपिरिया-वायगाणं विउव्वइ।

एवमाइयाइं एगूणपण्णं आउज्ज-विहाणाइं विउव्वइ।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारियाओ य सद्दावेइ।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं सद्दाविया समाणा, हट्ठ-जाव-जेणेव सूरियाभे देवे, तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयल-परिग्गहियं-जाव-वद्धावित्ता एवं वयासी--

'संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जं अम्हेहिं कायव्वं'।

तए णं से सूरियाभे देवे ते बहवे देव-कुमारे य देव-कुमारीओ य एवं वयासी--

'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! समणं भगवंतं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेह, करित्ता वंदह नमंसह, वंदित्ता नमंसित्ता गोयमाइयाणं समणाणं निग्गंथाणं तं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावं, दिव्वं बत्तीसइ-बद्धं णट्ट-विहिं उवदंसेह उवदंसित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह'।

णट्टविहिवण्णओ

२३ तए णं ते बहवे देव-कुमारा देव-कुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-जाव-करयल-जाव-पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंत्ति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं-जाव-नमंसित्ता जेणेव गोयमाइया समणा निग्गंथा, तेणेव उवागच्छंति। तए णं ते बहवे देव-कुमारा देव-कुमारीओ य समामेव समोसरणं करेंति, करित्ता समामेव अवणमंति, अवणमित्ता समामेव उन्नमंति, एवं सहियामेव ओनमंति, एवं सहियामेव उन्नमंति, सहियामेव उण्णमित्ता, संगयामेव ओनमंति, संगयामेव उन्नमंति, उन्नमित्ता थिमियामेव ओणमंति, थिमियामेव उन्नमंति, समामेव पसरंति, पसरित्ता समामेव आउज्ज-विहाणाइं गेण्हंति, समामेव पवाएंसु, पगाइंसु, पणच्चिंसु। किं ते ?

उरेणं मंदं, सिरेण तारं, कंठेण वितारं ति-विहं, ति-समय-रेयग-रइयं, गुंजाऽवंक-कुहरोवगूढं, रत्तं, ति-ठाण-करण-सुद्धं, सकुहर-गुंजंत-वंस-तंती-तल-ताल-लय-गह-सुसंपउत्तं, महुरं, समं, सललियं, मणोहरं, मिउ-रिभिय-पय-संचारं, सुरइ-सुणइ-वर-चारु-रूवं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं पगीया वि होत्था। किं ते ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्धुमंताणं संखाणं, सिंगाणं, संखियाणं, खरमुहीणं, पेयाणं, पिरिपिरियाणं; आहम्मंताण पणवाणं, पडहाणं; अप्फालिज्जमाणाणं भंभाणं, होरंभाणं; तालिज्जंताणं भेरीणं, झल्लरीणं, दुंदुहीणं; आलवंताणं मुरयाणं, मुइंगाणं, नंदीमुइंगाणं; उत्तालिज्जंताणं आलिंगाणं, कुंतुंबाणं, गोमुहीणं, मद्दलाणं; मुच्छिज्जंताणं वीणाणं, विपंचीणं, वल्लईणं; कुट्टिज्जंताणं महंतीणं, कच्छभीणं, चित्तवीणाणं; सारिज्जंताणं बद्धीसाणं, सुघोसाणं; नंदिघोसाणं; कुट्टिज्जंतीणं भामरीणं, छब्भामरीणं, परिवायणीणं; छिप्पंतीणं तूणाणं, तुंबवीणाणं; आमोडिज्जंताणं आमोयाणं, झंझाणं, नउलाणं; अच्छिज्जंतीणं मुगुंदाणं, हुडुक्कीणं, विचिक्कीणं; वाइज्जंताणं करडाणं, डिंडिमाणं, किणियाणं, कडम्बाणं; ताडिज्जंताणं दद्दरिगाणं, दद्दरगाणं, कुतुंबाणं, कलसियाणं, मड्डुयाणं; आताडिज्जंताणं तलाणं, तालाणं, कंसतालाणं; घट्टिज्जंताणं रिंगिरिसियाणं, लत्तियाणं, मगरियाणं, सुंसुमारियाणं; फूमिज्जंताणं वंसाणं, वेलूणं, वालीणं, परिल्लीणं, बद्धगाणं ।

तए णं से दिव्वे गीए, दिव्वे वाइए, दिव्वे नट्टे एवं अब्भुए, सिंगारे, उराले, मणुन्ने, मणहरे गीए, मणहरे नट्टे, मणहरे वाइए, उप्पिंजलभूए, कहकहभूए दिव्वे, देव-रमणे पवत्ते यावि होत्था ।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स सोत्थिय-सिरिवच्छ-नंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पण-मंगल्ल-भत्ति-चित्तं णामं दिव्वं नट्ट-विहिं उवदंसेंति ।।१।।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारीओ य सममेव समोसरणं करेंति, करित्ता तं चेव भाणियव्वं-जाव-दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स आवड-पच्चावड-सेढि-पसेढि सोत्थिय-सोवत्थिय-पूसमाणव-वद्धमाणग-मच्छण्ड-मगरंडजार-मार-फुल्लावलि-पउम-पत्त-सागर-तरंग-वसंतलया-पउमलय-भत्तिचित्तं णाम दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२।।

एवं च एक्किक्कियाए णट्टविहीए समोसरणाइया एसा वत्तव्वया-जाव-दिव्वे देवरमणे पवत्त यावि होत्था । तए णं ते बहवे देव-कुमारा देव-कुमारियाओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्तं णामं दिव्वं णट्ट-विहिं उवदंसेंति ।।३।।

एगओ वंकं, दुहओ वंकं, एगओ खुहं, दुहओ खुहं, एगओ चक्कवालं, दुहओ चक्कवालं, चक्कद्धचक्कवालं णामं दिव्वं णट्ट-विहिं उवदंसंति ।।४।।

चदावलि-पविभत्ति च, सूरावलि-पविभत्ति च, वलियावलि-पविभत्ति च, हंसावलि-पविभत्ति च, एगावलि-पविभत्ति च, तारावलि-पविभत्ति च, मुत्तावलि-पविभत्ति च, कणगावलि-पविभत्ति च, रयणावलि-पविभत्ति च, णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।५।।

चंदुग्गमण-पविभत्ति च, सुरूग्गमण-पविभत्ति च, उग्गमणुग्गमण-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।६।।

चंदागमण-पविभत्ति च, सूरागमण-पविभत्ति च, आगमणागमण-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।७।।

चंदावरण-पविभत्ति च, सूरावरण-पविभत्ति च, आवरणावरण-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।८।।

चंदत्थमण-पविभत्ति च, सूरत्थमण-पविभत्ति च, अत्थमण-उत्थमण-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।९।।

चंदमंडल-पविभत्ति च, सूरमंडल-पविभत्ति च नागमंडल-पविभत्ति च, जक्खमंडल-पविभत्ति च, भूतमंडल-पविभत्ति च, रक्खस-महोरग-गंधव्वमंडल-पविभत्ति च, मंडल-मंडल-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।१०।।

उसभमंडल-पविभत्ति च, सीहमंडल-पविभत्ति च, हय-विलंबियं, गय-विलंबियं, हय-विलसियं, गय-विलसियं मत्तहय-विलसियं, मत्तगय-विलसियं, मत्तहय-विलंबितं, मत्तगय-विलंबियं, दुय-विलंबियं णामं दिव्वं नट्टविहिं उवदंसेंति ।।११।।

सागर-पविभत्ति च, नागर-पविभत्ति च, सागर-नागर-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।१२।।

णंदा-पविभत्ति च, चंपा-पविभत्ति च, नंदा-चंपा-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।१३।।

मच्छंडा-पविभत्ति च, मयरंडा-पविभत्ति च, जार-पविभत्ति च, मार-पविभत्त च, मच्छंडा-मयरंडा-जारा-मारा-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।१४।।

'क' त्ति ककार-पविभत्ति च, 'ख' त्ति खकार-पविभत्ति च, 'ग' त्ति गकार-पविभत्ति च, 'घ' त्ति घकार-पविभत्ति च, 'ङ' त्ति ङकार-पविभत्ति च, ककार-खकार-गकार-घकार-ङकार-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।१५।।

एवं चकारवग्गोऽपि ।।१६।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टकार-वग्गोऽपि ।।१७।।

तकार-वग्गोऽपि ।।१८।।

पकार-वग्गोऽपि ।।१९।।

असोय-पल्लव-पविभत्ति च, अंब-पल्लव-पविभत्ति च, जंबू-पल्लव-पविभत्ति च, कोसंब-पल्लव-पविभत्ति च, पल्लवपविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२०।।

पउमलया-पविभत्ति च-जाव-सामलया-पविभत्ति च लया-पविभत्ति च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२१।।

दुय-णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२२।।

विलंबिय-णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२३।।

दुय-विलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२४।।

अंचियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२५।।

रिभियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२६।।

अंचिय-रिभियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२७।।

आरभडं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२८।।

भसोलं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।२९।।

आरभड-भसोलं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।३०।।

उप्पय-निवय-पवत्तं, संकुचियं, पसारियं, रयारइयं भंतं संभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।३१।।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारीओ य समामेव समोसरणं करेंति-जाव-दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स पुव्व-भव-चरिय-णिबद्धं च चवण-चरिय-णिबद्धं च संहरण-चरिय-निबद्धं च जम्मण-चरिय-निबद्धं च अभिसेय-चरिय-निबद्धं च बाल-भाव-चरिय-निबद्धं च जोव्वण-चरिय-निबद्धं च काम-भोग-चरिय-निबद्धं च निक्खमण-चरिय-निबद्धं च तव-चरण-चरिय-निबद्धं च णाणुप्पाय-चरिय-निबद्धं च तित्थ-पवत्तण-चरिय-परिनिव्वाण-चरिय-निबद्धं च चरिम-चरिय-निबद्धं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ।।३२।।

नाडयस्स समत्ती, सुरियाभस्स पडिगमणं च

२४ तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारीओ य चउव्विहं वाइत्तं वाएंति। तं जहा-ततं, वितततं, घणं, झुसिरं।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारियाओ य चउव्विहं गेयं गायंति। तंजहा—उक्खित्तं, पायंतं, मंदायं, रोइयावसाणं च।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारियाओ य चउव्विहं णट्टविहिं उवदंसंति। तंजहा—अंचियं, रिभियं, आरभडं, भसोलं च।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारियाओ य चउव्विहं अभिणयं अभिणएंति। तंजहा—दिट्ठंतियं, पाडिंतियं, सामन्नोविणिवाइयं, अंतोमज्झावसाणियं च।

तए णं ते बहवे देव-कुमारा य देव-कुमारियाओ य गोयमाइयाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावं, दिव्वं बत्तीसइबद्धं नाडयं उवदंसित्ता, समणं भगवंतं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव सूरियाभे देवे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु, जएणं, विजएणं वद्धावेंति, वद्धावित्ता एवं आणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

तए णं से सूरियाभे देवे तं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावंपडिसाहरइ, पडिसाहरेत्ता खणेणं जाए एगे एगभूए। तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवंतं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता नियग-परिवाल-सद्धिं संपरिवुडे तमेव दिव्वं जाण-विमाणं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए ।।

सूरियाभदेवस्स देविड्ढिआईणं सरीरंतग्गयत्तनिरूवणं

२५ भंते! त्ति भयवं गोयमे समणं भगवंतं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी—

'सूरियाभस्स णं भंते! देवस्स एसा दिव्वा देविड्ढि, दिव्वा देवज्जुइ, दिव्वे देवाणुभावे, कहिं गए, कहिं अणुप्पविट्ठे' ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे ?

गोयमा ! से जहा नामए कूडागार-साला सिया दुहओ लित्ता, गुत्ता, गुत्त-दुवारा, णिवाया, णिवाय-गंभीरा । तीसे णं कूडागार-सालाए अदूर-सामंते एत्थ णं महेगे जण-समूहे चिट्ठइ, तए णं से जण-समूहे एगं महं अब्भ-वद्दलगं वा वास-वद्दलगं वा महा-वायं वा एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तं कूडागार-सालं अंतो अणुप्पविसित्ता णं चिट्ठइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सरीरं अणुप्पविट्ठे ।

सूरियाभविमाणस्स ठाणाईणं वित्थरओ निरूवणं

२६ कहिं णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे नामं विमाणे पन्नते ?

गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमि-भागाओ उड्ढं चंदिम-सूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं एवं सहस्साइं सयसहस्साइं बहुईओ जोयणकोडीओ जोयणसयकोडीओ जोयण-सहस्सकोडीओ बहुईओ जोयणसयसहस्सकोडीओ बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं वीईवइत्ता एत्थ णं सोहम्मे नामं कप्पे पन्नते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवण्णाभे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं एत्थ णं सोहम्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साइं भवंतीति मक्खायं । ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा ।

तेसिं णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसया पन्नता तंजहा—असोगवडिंसए सत्तवण्णवडिंसए चंपगवडिंसए चूयवडिंसए मज्झे सोहम्मवडिंसए ।

ते णं वडिंसगा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा । तस्स णं सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमेणं तिरियं असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे णामं विमाणे पण्णत्ते अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं अउणयालीसं च सयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अट्ठ य अडयालजोयणसए परिक्खेवेणं ।

से णं विमाणे एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । से णं पागारे तिण्णि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले एगं जोयणसयं विक्खंभेणं, मज्झे पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं उप्पिं पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं । मूले वित्थिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे-जाव-पडिरूवे ।

से णं पागारे णाणाविहपंचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोभिए तं जहा—कण्हेहि य नीलेहि य लोहिएहिं हालिद्देहिं सुक्किल्लेहिं कविसीसएहिं ।

ते णं कविसीसगा एगं जोयणं आयामेणं अद्धजोयणं विक्खंभेणं देसूणं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा । सूरियाभस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए दारसहस्सं दारसहस्सं भवतीति मक्खायं । ते णं दारा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्ता खंभुग्गय-वर-वयर-वेइया-परिगयाभिरामा विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्ता विव अच्चीसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा । वन्नो दाराणं तेसिं होइ तंजहा—वइरामया णिम्मा रिट्ठामया पइट्ठाणा वेरुलियमया खंभा जायरूवोवचियपवरपंचवन्नमणिरयणकोट्टिमतला हंस-गब्भमया एलुया गोमेज्जमया इंदकीला लोहियक्खमईओ चेडाओ जोईरसमया उत्तरंगा लोहियक्खमईओ सूईओ वयरामया संधी नाणामणिमया समुग्गया वयरामया अग्गला अग्गलपासाया रययामयाओ आवत्तणपेढियाओ अंकुत्तरपासगा निरंतरियघणकवाडा भित्तीसु चेव भित्तिगुलिया छप्पन्ना तिण्णि होंति गोमाणसिया तत्तिया णाणामणिरयणवालरूवगलीलट्ठियसालभंजियागा वयरामया कूडा रययामया उस्सेहा सव्वतवणिज्जमया उल्लोया णाणामणिरयणजालपंजरमणिवंसगलोहियक्खपडिवंसगरययभोमा अंकामया पक्खा पक्खबाहाओ जोईरसमया वंसा वंसकवेल्लुयाओ रययामईओ पट्टियाओ जायरूवमईओ ओहाडणीओ वइरामईओ उवरिपुंछणीओ सव्वसेयरययामए छायणे अंकमयकणगकूडतवणिज्जथूभियागा सेया संखतलविमलनिम्मलदहिघणगोखीरफेणरययणिगरप्पगासा तिलगर-यणद्धचंदचित्ता नाणामणिदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए सोलस सोलस चंदणकलसपरिवाडीओ पन्नत्ताओ । ते णं चंदणकलसा वरकमल-पइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा महया महया इंदकुंभसमाणा पन्नत्ता समणाउसो ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस णागदन्तपरिवाडीओ पन्नत्ताओ । ते णं णागदंता मुत्ताजालंतरुसियहेमजालगवक्खजालखिंखिणीघंटाजालपरिक्खित्ता अब्भुग्गया अभिणिसिट्ठा तिरियसुसंपरिग्गहिया अहेपन्नगद्धरूवा पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्ववयरामया अच्छा-जाव-पडिरूवा महया महया गयदंतसमाणा पन्नत्ता समणाउसो ।।

तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा णील० लोहिय०हालिद्द० सुक्किल्लसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा। ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवन्नपयरगमंडिया नाणाविहमणिरयणविविहहारउवसोभियसमुदया-जाव-सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति। तेसि णं णागदंताणं उवरिं अन्नाओ सोलस सोलस नागदंतपरिवाडीओ पन्नत्ता ते णं णागदंता तं चेव-जाव-गयदंतसमाणा पन्नत्ता समणाउसो ।।

तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पन्नत्ता, तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीओ पन्नत्ताओ। ताओ णं धूवघडीओ कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमणणिव्वुइकरेणं गंधेणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा आपूरेमाणा-जाव-चिट्ठंति।

तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस सालभंजियापरिवाडीओ पन्नत्ताओ, ताओ णं सालभंजियाओ लीलट्ठियाओ सुपइट्ठियाओ सुअलंकियाओ णाणाविहरागवसणाओ णाणामल्लपिणद्धाओ मुट्ठिगिज्झसुमज्झाओ आमेलगजमलजुयलवट्टियअब्भुन्नयपीणरइयसंठियपीवरपओहराओ रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिउविसयपसत्थलक्खणसंवेल्लियग्गसिरयाओ ईसिं असोगवरपायवसमुट्ठियाओ वामहत्थग्गहियग्गसालाओ ईसिं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठिएणं लूसमाणीओ विव चक्खुल्लोयणलेसेहि य अन्नमन्नं खिज्जमाणीओ विव पुढविपरिणामाओ सासयभावमुवगयाओ चन्दाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ चंदाहियसोमदंसणाओ उक्का विव उज्जोवेमाणाओ विज्जुघणमिरियसूरदिप्पंततेयअहिययरसन्निगासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ पासाइयाओ-जाव-चिट्ठंति। तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस जालकडगपरिवाडीओ पन्नत्ताओ। ते णं जालकडगगा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा।

तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए सोलस सोलस घंटापरिवाडीओ पन्नत्ताओ। तासि णं घंटाणं इमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते, तंजहा—जंबूणयामईओ घंटाओ वयरामयाओ लालाओ णाणामणिमया घंटापासा तवणिज्जमइयाओ संखलाओ रययामयाओ रज्जूओ। ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हंसस्सराओ कुंचस्सराओ सीहस्सराओ दुंदुहिस्सराओ णंदिस्सराओ णंदिघोसाओ मंजुस्सराओ मंजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सरघोसाओ उरालेणं मणुन्नेणं मणहरेणं कन्नमणनिव्वुइकरेणं सद्देणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणाओ आपूरेमाणाओ-जाव-चिट्ठंति।

तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस वणमालापरिवाडीओ पन्नत्ताओ। ताओ णं वणमालाओ णाणामणिमयदुमलयकिसलयपल्लवसमाउलाओ छप्पयपरिभुज्जमाणसोहंतसस्सिरीयाओ पासाईयाओ। तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस पगंठगा पन्नत्ता। ते णं पगंठगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पणवीसं जोयणसयं बाहल्लेणं सव्ववयरामया अच्छा-जाव-पडिरूवा। तेसिं णं पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं पासायवडेंसगा पन्नत्ता, ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसिया विव विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतपडागच्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलिय व्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपोंडरीयतिलगरयणद्धचंदचित्ता णाणामणिदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा-जाव-दामा।

तेसि णं दाराणं उभओ पासे सोलस सोलस तोरणा पन्नता, णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसन्निविट्ठा-जाव-पउमहत्थगा। तेसि णं तोरणाणं पत्तेयं पुरओ दो दो सालभंजियाओ पन्नत्ताओ, जहा हेट्ठा तहेव । तेसि णं तोरणाणं पुरओ नागदंता पन्नत्ता जहा हेट्ठा -जाव-दामा। तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयसंघाडा गयसंघाडा नरसंघाडा किन्नरसंघाड़ा पुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा, एवं पंतीओ वीही मिहुणाइं । तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो पउमलयाओ-जाव-सामलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा। तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो दिसासोवत्थिया पन्नत्ता सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा। तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो चंदणकलसा पन्नत्ता। ते णं चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा तहेव । तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो भिंगारा पण्णत्ता, ते णं भिंगारा वरकमलपइट्ठाणा-जाव-महया मत्तगयमुहागिइसमाणा पन्नत्ता। समणाउसो ! । तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो आयंसा पन्नत्ता तेसिं णं आयंसाणं इमेयारूवे वन्नावासे पन्नते, तंजहा—तवणिज्जमया पगंठगा अंकमया मंडला अणुग्घसियनिम्मलाए छायाए समणुबद्धा चंदमंडलपडिणिकासा महया महया अद्धकायसमाणा पन्नत्ता समणाउसो ! तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो वइरनाभथाला पन्नत्ता अच्छतिच्छडियसालितंदुलणहसंदिट्ठपडिपुन्ना इव चिट्ठंति सव्व-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबूणयमया-जाव-पडिरूवा महया महया रहचक्कवालसमाणा पन्नत्ता समणाउसो ! । तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो पाईओ पन्नत्ताओ। ताओ णं पाईओ सच्छोदगपरिहत्थाओ णाणाविहस्स फलहरियगस्स बहुपडिपुन्नाओ विव चिट्ठंति सव्वरयणामईओ अच्छाओ -जाव-पडिरूवाओ महया महया गोकलिंजरचक्कसमाणीओ पन्नत्ताओ समणाउसो ! । तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो सुपइट्ठा पन्नत्ता णाणाविहभंडविरइया इव चिट्ठंति सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा । तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो मणोगुलियाओ पन्नत्ताओ। तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवन्नरुप्पमया फलगा पन्नत्ता । तेसु णं सुवन्नरुप्पमएसु फलगेसु बहवे वयरामया नागदंतया पन्नत्ता । तेसु णं वयरामएसु णागदंतएसु बहवे वयरामया सिक्कगा पन्नत्ता । तेसु णं वयरामएसु सिक्कगेसु किण्हसुत्तसिक्कगवच्छिया णील-सुत्तसिक्कगवच्छिया लोहियसुत्तसिक्कगवच्छिया हालिद्दसुत्तसिक्कगवच्छिया सुक्किल्ल-सुत्तसिक्कगवच्छिया बहवे वायकरगा पन्नत्ता सव्ववेरुलियमया अच्छा-जाव-पडिरूवा। तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो चित्ता रयणकरंडगा पन्नत्ता, से जहा णामए रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चित्ते रयणकरंडए वेरुलियमणिफलिहपडलपच्चोयडे साए पहाए ते पएसे सव्वओ समंता ओभासइ उज्जोवेइ तवइ पभासइ एवामेव ते वि चित्ता रयणकरंडगा साए पभाए ते पएसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवंति पभासंति। तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयकंठा गयकंठा नरकंठा किन्नरकंठा किंपुरिसकंठा महोरगकंठा गंधव्वकंठा उसभकंठा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा। तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो पुप्फचंगेरीओ मल्लचंगेरीओ चुन्नचंगेरीओ गंधचंगेरीओ वत्थचंगेरीओ आभरणचंगेरीओ सिद्धत्थचंगेरीओ पन्नत्ताओ, सव्वरयणामयाओ अच्छाओ-जाव-पडिरूवाओ । तासु णं पुप्फचंगेरियासु-जाव-सिद्धत्थ-चंगेरीसु दो दो पुप्फपडलगाइं-जाव-सिद्धत्थपडलगाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं-जाव-पडिरूवाइं । तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो सीहासणा पण्णत्ता। तेसि णं सीहासणाणं वण्णओ-जाव-दामा। तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो रुप्पमया छत्ता पन्नत्ता । ते णं छत्ता वेरुलियविमलदंडा जंबूणयकन्निया वइरसंधी मुत्ताजालपरिगया अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा दद्दरमलयसुगंधिसव्वोउयसुरभिसीय-लच्छाया मंगलभत्तिचित्ता चंदागारोवमा। तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो चामराओ पन्नत्ताओ। ताओ णं चामराओ चंदप्प-भवेरुलियवयरनानामणिरयणखचियचित्तदण्डाओ सुहुमरययदीहवालाओ संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ सव्वरयणा-मयाओ अच्छाओ-जाव-पडिरूवाओ। तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो तेल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयगसमुग्गा तगर-समुग्गा एलासमुग्गा हरियालसमुग्गा हिंगुलयसमुग्गा मणोसिलासमुग्गा अंजणसमुग्गा सव्वरणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा ।।

सूरियाभे णं विमाणे एगमेगे दारे अट्ठसयं चक्कज्झयाणं अट्ठसयं मिगज्झयाणं गरूड़ज्झयाणं छत्तज्झयाणं पिच्छज्झयाणं सउणिज्झयाणं सीहज्झयाणं उसभज्झयाणं अट्ठसयं सेयाणं चउविसाणाणं नागवरकेऊणं एवामेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे एगमेगे दारे असीयं असीयं केउसहस्सं भवतीति मक्खायं ।

तेसिं णं दाराणं एगमेगे दारे पण्णट्ठिं पण्णट्ठिं भोमा पन्नत्ता। तेसि णं भोमाणं भूमिभागा उल्लोया य भाणियव्वा । तेसिं णं भोमाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं सीहासणे, सीहासणवन्नओ सपरिवारो, अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं पत्तेयं भद्दासणा पन्नत्ता। तेसिं णं दाराणं उत्तमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोहिया, तंजहा—रयणेहिं-जाव-रिट्ठेहिं। तेसिं णं दाराणं उप्पिं अट्ठट्ठ मंगलगा सज्झया-जाव-छत्ताइछत्ता एवामेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे चत्तारि दारसहस्सा भवंतीति मक्खायं।

सूरियाभस्स विमाणस्स चउद्दिसिं पंच जोयणसयाइं अबाहाए चत्तारि वणसंडा पन्नत्ता, तंजहा—असोगवणे, सत्तिवन्नवणे, चंपगवणे, चूयगवणे पुरत्थिमेणं असोगवणे दाहिणेणं सत्तिवन्नवणे पच्चत्थिमेणं चंपगवणे उत्तरेणं चूयगवणे। ते णं वणखंडा साइरेगाइं अद्ध-तेरसजोयणसयसहस्साइं आयामेणं पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पत्तेयं पत्तेयं पागारपरिखित्ता किण्हा किण्होभासा नीला नीलोभासा हरिया हरिओ० सीया सीओ० निद्धा निद्धो० तिव्वा तिव्वो० किण्हा किण्हच्छाया नीला नी० हरिया ह० सीया सी० निद्धा नि० घणकडितडियच्छाया रम्मा महामेहनिउरंबभूया । ते णं पायवा मूलमंतो वन्नओ ।।

तेसिं णं वणसंडाणं अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता से जहा नामए आलिंगपुक्खरे इ वा-जाव-णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहि य तणेहि य उवसोहिया, तेसिं णं गंधो फासो णेयव्वो जहक्कमं। तेसि णं भंते ! तणाण य मणीण य पुव्वावरदाहिणुत्तरा-गएहिं वाएहिं मंदायं मंदायं एइयाणं वेइयाणं कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं घट्टियाणं खोभियाणं उदीरियाणं केरिसए सद्दे भवइ ? गोयमा ! से जहानामए सीयाए वा संदमाणीए वा रहस्स वा सच्छत्तस्स सज्झयस्स सघंटस्स सपडागस्स सतोरणवरस्स सनंदि-घोसस्स सखिंखिणिहेमजालपरिखित्तस्स हेमवयचित्ततिणिसकणगणिज्जुत्तदारुयायस्स सुसंपिणद्धचक्कमंडलधुरागस्स कालायससुकयणे-मिजंतकम्मस्स आइण्णवरतुरगसुसंपउत्तस्स कुसलणरच्छेयसारहिसुसंपरिग्गहियस्स सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियस्स सकंकडावयंसगस्स सचावसरपहरणआवरणभरियजोहजुज्झसज्जस्स रायंगणंसि वा रायंतेउरंसि वा रम्मंसि वा मणिकुट्टिमतलंसि अभिक्खणं अभिक्खणं अभिघट्टिज्जमाणस्स वा नियट्टिज्जमाणस्स वा ओराला मणुण्णा मणोहरा कण्णमणनिव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिणिस्सवंति, भवेयारूवेसिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । से जहा णामए वेयालियवीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए अंके सुपइट्ठियाए कुसलनरनारिसुसंपरिग्गहियाए चंदणसारनिम्मियकोणपरिघट्टियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंमि मंदायं मंदायं वेइयाए पवेइयाए चालियाए घट्टियाए खोभियाए उदीरियाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओराला मणुण्णा मणहरा कण्णमणनिव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठ। से जहा नामए किन्नराण वा किंपुरिसाण वा महोरगाण वा गंधव्वाण वा भद्दसालवणगयाण वा नंदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाण वा पंडगवणगयाणं वा हिमवंतमलयमंदरगिरिगुहासमन्नागयाण वा एगओ सन्निहियाणं समागयाणं सन्निसन्नाणं समुवविट्ठाणं पमुइयपक्कीलियाणं गीयरइगंधव्वहसियमणाणं गज्जं पज्जं कत्थं गेयं पयबद्धं पायबद्धं उक्खित्तं पायंतं मंदायं रोइयावसाणं सत्तसरसमन्नागयं छद्दोसविप्पमुक्कं एक्कारसालंकारं अट्ठगुणोवचेयं, गुंजाऽवंककुहरोवगूढं रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं पगीयाणं, भवेयारूवे ? हंता सिया ।।

तेसिं णं वणसंडाणं तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहुईओ खुड्डाखुड्डियाओ वावियाओ पुक्खरिणीओ दीहियाओ गुंजालियाओ सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ समतीराओ वयरामयपासाणाओ तवणिज्जतलाओ सुवण्णसुज्झरययवालुयाओ वेरुलियमणिफालियपडलपच्चोयडाओ सुहोयारसुउत्ताराओ णाणामणितित्थसुबद्धाओ चउक्कोणाओ आणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजलाओ संछन्नपत्तभिसमुणालाओ बहुउप्पलकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपोंडरीयसयवत्तसहस्सपत्तकेसरफुल्लोवचियाओ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलाओ अच्छविमलसलिलपुण्णाओ पडिहत्थभमंतमच्छकच्छभअणेगसउणमिहुणगपविचरियाओ पत्तेयं पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खित्ताओ पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ अप्पेगइयाओ आसवोयगाओ अप्पेगइयाओ वारुणोयगाओ अप्पेगइयाओ खीरोयगाओ अप्पेगइयाओ घओयगाओ अप्पेगइयाओ खोदोयगाओ अप्पेगइयाओ पगईए उयगरसेणं पण्णत्ताओ पासाइयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ।

तासिं णं वावीणं-जाव-बिलपंतीणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तंजहा—वइरामया नेमा०, तोरणाणं झया छत्ताइछत्ता य णेयव्वा। तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं -जाव-बिलपंतियाणं तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे उप्पायपव्वयगा नियइपव्वयगा जगईपव्वयगा दारुइज्जपव्वयगा दगमंडवा दगमंचगा दगमालगा दगपासायगा उसडा खुड्डखुड्डगा अंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा।

तेसु णं उप्पायपव्वएसु-जाव-पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं कोंचासणाइं गरुलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं उसभासणाइं सीहासणाइं पउमासणाइं दिसासोवत्थियाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं-जाव-पडिरूवाइं ।

तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे आलियघरगा मालियघरगा कयलिघरगा लयाघरगा अच्छणघरगा पिच्छणघरगा मज्जणघरगा पसाहणघरगा गब्भघरगा मोहणघरगा सालघरगा जालघरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गंधव्वघरगा आयंसघरगा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा ।

तेसु णं आलियघरगेसु-जाव-आयंसघरगेसु तहिं तहिं घरएसु बहूइं हंसासणाइं-जाव-दिसासोवत्थिआसणाइं सव्वरयणामयाइं-जाव-पडिरूवाइं ।

तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे जाइमंडवगा जूहियामंडवगा मल्लियामंडवगा णवमालियामंडवगा वासंतिमंडवगा दहिवासुयमंडवगा सूरिल्लियमंडवगा तंबोलिमंडवगा मुद्दियामंडवगा णागलयामंडवगा अइमुत्तयलयामंडवगा अप्फोयामंडवगा मालुयामंडवगा अच्छा सव्वरयणामया-जाव-पडिरूवा ।

तेसु णं जाइमण्डवएसु-जाव-मालुयामंडवएसु बहवे पुढविसिलापट्टगा हंसासणसंठिया-जाव-दिसासोवत्थियासणसंठिया अण्णे य बहवे वरसयणासणविसिट्ठसंठाणसंठिया पुढविसिलापट्टगा पण्णत्ता समणाउसो ! आईणगरूयबूरणवणीयतूलफासा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा। तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति किट्टंति मोहेंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाण सुपरिक्कंताण सुभाण कडाण कम्माण कल्लाणाण कल्लाणं फलविवागं पच्चणुभवमाणा विहरंति ।।

तेसिं णं वणसंडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता । ते णं पासायवडेंसगा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसिया इव, तहेव बहुसमरमणिज्जभूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया-जाव-पलिओवमट्ठिइया परिवसंति, तंजहा—असोए सत्तपण्णे चंपए चूए ।

सूरियाभस्स णं देवविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, तंजहा—वणसंडविहूणे-जाव-बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति-जाव-विहरंति, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसे एत्थ णं महेगे उवगारियालयणे पण्णत्ते, एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसं जोयणसए तिन्नि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं, जोयणं बाहल्लेणं, सव्वजंबूणयामए अच्छे-जाव-पडिरूवे ।।

से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिखित्ते । सा णं पउमवरवेइया अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं उवयारियलेणसमा परिक्खेवेणं । तीसे णं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा—वयरामया०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवण्णरुप्पमया फलया नाणामणिमया कलेवरा णाणामणिमया कलेवर-संघाडगा णाणामणिमया रूवा णाणामणिमया रूवसंघाडगा अंकामया० उवरिपुञ्छणी सव्वरयणामए अच्छायणे। सा णं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं, एगमेगेणं गवक्खजालेणं, ए० खिखिणीजालेणं, ए० घंटाजालेणं, ए० मुत्ताजालेणं, ए० मणिजालेणं, ए० कणगजालेणं, ए० रयणजालेणं, ए० पउमजालेणं, सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता। ते णं जाला तवणिज्जलंबूसगा-जाव-चिट्ठंति। तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे हयसंघाडा-जाव-उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा पासाईया-जाव-वीहीओ पंतीओ मिहुणाणि लयाओ।

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–पउमवरवेइया पउमवरवेइया? गोयमा! पउमवरवेइयाए णं तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं वेइयासु वेइयाबाहासु य वेइयाफलएसु य वेइयापुडंतरेसु य, खंभेसु खंभबाहासु खंभसीसेसु खंभपुडंतरेसु, सूईसु सूईमुहेसु सूईफलएसु सूईपुडंतरेसु, पक्खेसु पक्खबाहासु पक्खपेरंतेसु पक्खपुडंतरेसु बहुयाइं उप्पलाइं पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पुंडरीयाइं महापुंडरीयाइं सयवत्ताइं सहस्सवत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं० पडिरूवाइं महया वासिक्कछत्तसमाणाइं पण्णत्ताइं समणाउसो! से एएणं अट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–पउमवरवेइया पउमवरवेइया।

पउमवरवेइया णं भंते! किं सासया असासया?

गोयमा! सिय सासया सिय असासया।

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–सिय सासया सिय असासया?

गोयमा! दव्वट्ठयाए सासया, वन्नपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया, से एएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ सिय सासया सिय असासया।

पउमवरवेइया णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! ण कयावि णासि ण कयावि णत्थि ण कयावि न भविस्सइ, भुविं च भवइ य भविस्सइ य, धुवा णियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवरवेइया।
सा णं पउमवरवेइया एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता।

से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं उवयारियालेणसमे परिक्खेवेणं वणसंडवण्णओ भाणियव्वो-जाव-विहरंति।
तस्स णं उवयारियालेणस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णओ, तोरणा झया छत्ताइच्छत्ता। तस्स णं उवयारियालयणस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते-जाव-मणीणं फासो।।

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगे मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते। से णं मूलपासायवडिंसए पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय० वण्णओ, भूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं, अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता।

से णं मूलपासायवडेंसगे अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं-जाव-वण्णओ।

ते णं पासायवडिंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडिंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता। ते णं पासायवडेंसया पणवीसं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसिय० वण्णओ, भूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं, अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता। ते णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता। ते णं पासायवडेंसगा बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं, वण्णओ, उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं पासाय० उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता।।

तस्स णं मूलपासायवडेंसयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं सभा सुहम्मा पण्णत्ता, एग जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खम्भेणं, बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेगखम्भ-जाव-अच्छरगण० पासाईया०।

सभाए णं सुहम्माए तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, तंजहा–पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अट्ठ जोयणाइं विक्खम्भेणं, तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ, [तेसि णं दाराणं उवरिं अट्ठट्ठ मङ्गलगा झया छत्ताइछत्ता] तेसि णं दाराणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मुहमण्डवे पण्णत्ते। ते णं मुहमण्डवा एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, वण्णओ, सभाए सरिसो, [तेसिं णं मुहमण्डवाणं तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, तंजहा–पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ। तेसिं णं मुहमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया, तेसि णं मुहमंडवाणं उवरिं अट्ठट्ठ मङ्गलगा झया छत्ताइच्छत्ता।]
तेसिं णं मुहमंडवाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पण्णत्ते, मुहमंडववत्तव्वया-जाव-दारा भूमिभागा उल्लोया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेसिं णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं पत्तेयं वइरामए अक्खाडए पण्णत्ते। तेसिं णं वयरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ-जाव-पडिरूवाओ।

तासिं णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं सीहासणे पण्णत्ते, सीहासणवण्णओ सपरिवारो, तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइछत्ता।

तेसिं णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ।

तासिं णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं महिंदज्झया पण्णत्ता। ते णं महिंदज्झया सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं उव्वेहेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, वइरामय० सिहरा पासादीया ४।

तेसिं णं महिंदज्झयाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइछत्ता।

तेसिं णं महिंदज्झयाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं नंदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ। ताओ णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छाओ-जाव-वण्णओ, एगइयाओ उदगरसेणं पण्णत्ताओ, पत्तेयं पत्तेयं पउमवरवेइयापरिखित्ताओ पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ।

तासिं णं णंदाणं पुक्खरिणीणं तिदिसिं तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, तिसोवाणपडिरूवगाणं वण्णओ, तोरणा झया छत्ताइछत्ता।

सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं मणोगुलिया-साहस्सीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पुरत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, दाहिणेणं अट्ठसाहस्सीओ, उत्तरेणं अट्ठसाहस्सीओ।

तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवन्नरुप्पमएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु किण्हसुत्तवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा चिट्ठंति। सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं गोमाणसियासाहस्सीओ पन्नत्ताओ, जहा मणोगुलिया-जाव-णागदंतगा।

तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु सिक्कगेसु बहवे वेरुलियामइयाओ धूवघडियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं धूवघडियाओ कालागुरुपवर-जाव-चिट्ठंति।

सभाए णं सुहम्माए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते-जाव-मणीहिं उवसोभिए, मणिफासो य उल्लोओ य।

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा-जाव-पडिरूवा।

तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे सीहासणे पण्णत्ते, सीहासणवण्णओ सपरिवारो।

तीसे णं विदिसाए एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते। तस्स णं देवसयणिज्जस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा—णाणामणिमया पडिपाया सोवन्निया पाया णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं जंबूणयामयाइं गत्तगाइं वइरामया संधी णाणामणिमए विच्चे रययामई तूली लोहियक्खमया विब्बोयणा तवणिज्जमया गंडोवहाणया। से णं सयणिज्जे सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णयगंभीरे गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए सुविरइयरयत्ताणे उवचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे आईणगरूयबूरणवणीय-तूलफासमउए रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे पासादीए० पडिरूवे।।

तस्स णं देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेणं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई-जाव-पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे खुड्डए महिंदज्झए पण्णत्ते, सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जोयणं विक्खंभेणं, वइरामए वट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठ-जाव-पडिरूवे, उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता।

तस्स णं खुड्डागमहिंदज्झयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चोप्पाले नाम पहरणकोसे पन्नत्ते सव्ववइरामए अच्छे-जाव-पडिरूवे। तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स फलिहरयणखग्गगयाधणुप्पमुहा बहवे पहरणरयणा संनिखित्ता चिट्ठंति, उज्जला निसिया सुतिक्खधारा पासादीया० सभाए णं सुहम्माए उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता।।

सभाए णं सुहम्माए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं महेगा उववायसभा पण्णत्ता० जहा सभाए सुहम्माए तहेव-जाव-मणिपेढिया, अट्ठ जोयणाइं० देवसयणिज्जं, तहेव सयणिज्जवण्णओ, अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइछत्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं महेगे हरए पण्णत्ते, एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, तहेव। से णं हरए एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते।

तस्स णं हरयस्स तिदिसं तिसोवाणपडिरूवगा पन्नत्ता। तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं महेगा अभिसेगसभा पण्णत्ता, सुहम्मागमएणं-जाव-गोमाणसियाओ मणिपेढिया सीहासणं सपरिवारं-जाव-दामा चिट्ठंति।

तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अभिसेयभंडे संनिखित्ते चिट्ठइ, अट्ठट्ठ मंगलगा तहेव।

तीसे णं अभिसेगसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं अलंकारियसभा पण्णत्ता, जहा सभा सुहम्मा, मणिपेढिया अट्ठ जोयणाइं सीहासणं सपरिवारं। तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अलंकारियभंडे संनिखित्ते चिट्ठइ, सेसं तहेव। तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं महेगा ववसायसभा पण्णत्ता, जहा उववायसभा-जाव-सीहासणं सपरिवारं मणिपेढिया अट्ठट्ठ मंगलगा०। तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स एत्थ महेगे पोत्थयरयणे सन्निक्खित्ते चिट्ठइ। तस्स णं पोत्थयरयणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा-रिट्ठामईओ कंबियाओ तवणिज्जमए दोरे नाणामणिमए गंठी रयणामयाइं पत्तगाइं वेरुलियमए लिप्पासणे रिट्ठामए छादणे तवणिज्जमई संकला रिट्ठामई मसी वइरामई लेहणी रिट्ठामयाइं अक्खराइं धम्मिए लेक्खे।

ववसायसभाए णं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा, तीसे णं ववसायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं नंदा पुक्खरिणी पण्णत्ता हरयसरिसा।

सूरियाभदेवस्स वित्थरओ अभिसेयवण्णणाइ

२७ तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे देवे अहुणोववण्णमित्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ, तंजहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाणपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए।

तए णं से सूरियाभे देवे सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता उववायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ। जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हरयं अणुपयाहिणीकरेमाणे अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पुरत्थिमिल्लेणं तिसो वाणपडिरूवएणं पच्चोरुइइ, पच्चोरुहित्ता जलावगाहं जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकिडुं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुईभूए हरयाओ पच्चोत्तरइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता अभिसेय-सभं अणुपयाहिणीकरेमाणे अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने।

तए णं सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! सूरियाभस्स देवस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह।

तए णं ते आभिओगिया देवा सामाणियपरिसोववन्नेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-जाव-हियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं देवो! तह' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं-जाव-दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणित्ता अट्ठसहस्सं सोवन्नियाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवन्नमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं भोमिज्जाणं कलसाणं, एवं भिंगाराणं आयंसाणं थालाणं पाईणं सुपइट्ठाणं वायकरगाणं रयणकरंडगाणं सीहासणाणं छत्ताणं चामराणं तेल्लसमुग्गाणं-जाव-अंजणसमुग्गाणं, झयाणं विउव्वंति, विउव्वित्ता ते साभाविए य वेउव्विए य कलसे य-जाव-झए य गिण्हंति, गिण्हित्ता सूरियाभाओ विमाणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए चवलाए -जाव-तिरियमसंखेज्जाणं-जाव-वीइवयमाणा वीइवयमाणा जेणेव खीरोदयसमुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता खीरोयगं गिण्हंति, गिण्हित्ता जाइं तत्थुप्पलाइं-जाव-सयसहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरोदयं गेण्हंति गिण्हित्ता जाइं तत्थुप्पलाइं-जाव-सयसहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव मागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हेत्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव गंगासिंधुरत्तारत्तवईओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति सलिलोदगं गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, मट्टियं गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता दगं गेण्हंति० सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पउमपुंडरीयदहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं-जाव-सयसहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव हेमवयएरवयाइं वासाइं जेणेव रोहियरोहियंसासुवण्णकूलरुप्पकूलाओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव सद्दावइवियडावइपरियागा वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे तहेव जेणेव महाहिमवंतरुप्पिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छन्ति, तहेव जेणेव महापउममहापुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गिण्हन्ति, तहेव जेणेव हरिवासरम्मगवासाइं जेणेव हरिकंतनारिकंताओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति० तहेव, जेणेव गंधावइमालवंतपरियाया वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव० तहेव, जेणेव णिसढणीलवंतवासधरपव्वया० तहेव, जेणेव तिगिच्छिकेसरिद्दहाओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तहेव जेणेव महाविदेहे वासे जेणेव सीयासीओयाओ महाणईओ तेणेव० तहेव, जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता सव्वंतरणईओ जेणेव सव्ववक्खारपव्वया तेणेव उवागच्छंति० सव्वतूयरे तहेव, जेणेव मंदरे पव्वए जेणेव भद्दसालवणे तेणेव उवागच्छंति० सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे-जाव-सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति० सव्वतूयरे-जाव-सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं च दिव्वं च सुमणदामं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे-जाव-सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं दिव्वं च सुमणदामं दद्दरमलयसुगंधियगन्धे गिण्हन्ति, गिण्हित्ता एगओ मिलायंति, मिलाइत्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव अभिसेयसभा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेंति।

तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ, चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ, तिन्नि परिसाओ, सत्त अणियाहिवइणो -जाव-अन्ने वि बहवे सूरियाभविमाणवासिणो देवा य देवीओ य तेहिं साभाविएहि य वेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहि य सुरभिवरवारिपडिपुन्नेहिं चंदणकयचच्चिएहिं आविद्धकंठेगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं सुकुमालकोमलकरयलपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं सोवन्नियाणं कलसाणं-जाव-अट्ठसहस्सेणं भोमिज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतूयरेहिं-जाव-सव्वोसहिसिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए-जाव-वाइएणं महया महया इंदाभिसेएणं अभिसिंचंति ।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स महया महया इंदाभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं नच्चोययं नाइमट्टियं पविरलफुसियरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगन्धोदगं वासं वासंति, अप्पेगइया देवा हयरयं नट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुइसंमट्ठरत्थंतरावणवीहियं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं मंचाइमंचकलियं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं णाणाविहरागोसियं झयपडागाइपडागमंडियं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितलं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं उवचियचंदणकलसं चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं पंचवण्णसुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेंति, अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासंति, सुवण्णवासं वासंति, रययवासं वासंति, वइरवासं०, पुप्फवासं०, फलवासं०, मल्लवासं०, गंधवासं०, चुण्णवासं०, आभरणवासं वासंति, अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं भाएंति, एवं सुवन्नविहिं भाएंति, रयणविहिं०, पुप्फविहिं०, फलविहिं०, मल्लविहिं०, चुण्णविहिं०, वत्थविहिं०, गंधविहिं०, तत्थ अप्पेगइया देवा आभरणविहिं भाएंति, अप्पेगइया चउव्विहं वाइत्तं वाइंति तं जहा–ततं विततं घणं झुसिरं, अप्पेगइया देवा चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा–उक्खित्तायं पायत्तायं मंदायं रोइयावसाणं, अप्पेगइया देवा दुयं नट्टविहिं उवदंसिंति अप्पेगइया विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेंति अप्पेगइया देवा दुयविलंबियं णट्टविहिं उवदंसेंति, एवं अप्पेगइया अंचियं नट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगइया देवा आरभडं भसोलं आरभडभसोलं उप्पायनिवायपवत्तं संकुचियपसारियं रियारियं भंतसंभंतणामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगइया देवा चउव्विहं अभिणयं अभिणयंति, तं जहा–दिट्ठंतियं पाडंतियं सामंतोवणिवाइयं लोगअंतोमज्झावसाणियं, अप्पेगइया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगइया देवा पीणेंति, अप्पेगइया० लासेंति, अप्पेगइया० हक्कारेंति, अप्पेगइया० विणंति, तंडवेंति, अप्पेगइया वग्गंति अप्फोडेंति, अप्पेगइया० अप्फोडेंति वग्गंति, अप्पे० तिवइं छिंदंति, अप्पेगइया० हयहेसियं करेंति, अप्पेगइया० हत्थिगुलगुलाइयं करेंति, अप्पेगइया० रहघण-घणाइयं करेंति, अप्पेगइया०, हयहेसियहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइयं करेंति, अप्पेगइया० उच्छलेंति, अप्पेगइया० पोच्छलेंति, अप्पेगइया० उक्किट्ठियं करेंति, अ० उच्छलेंति पोच्छलेंति, अप्पेगइया० तिन्नि वि, अप्पेगइया० ओवयंति, अप्पेगइया० उप्पयंति, अप्पेगइया० परिवयंति, अप्पेगइया० तिन्नि वि, अप्पेगइया० सीहनायंति, अप्पेगइया० दद्दरयं करेंति, अप्पेगइया० भूमिचवेडं दलयंति, अप्पे० तिन्नि वि, अप्पेगइया० गज्जंति, अप्पेगइया० विज्जुयायंति, अप्पेगइया० वासं वासंति, अप्पेगइया० तिन्नि वि करेंति, अप्पेगइया० जलंति, अप्पेगइया० तवंति, अप्पेगइया० पतवेंति, अप्पेगइया० तिन्नि वि, अप्पेगइया० हक्कारेंति, अप्पेगइया० थुक्कारेंति, अप्पेगइया० धक्कारेंति, अप्पेगइया० साइं साइं नामाइं साहेंति, अप्पेगइया० चत्तारि वि, अप्पेगइया देवा देवसन्निवायं करेंति, अप्पेगइया० देवुज्जोयं करेंति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पेगइया० देवुक्कलियं करेंति, अप्पेगइया० देवा कहकहगं करेंति, अप्पेगइया देवा दुहदुहगं करेंति, अप्पेगइया० चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगइया० देवसन्निवायं देवुज्जोयं देवुक्कलियं देवकहकहगं देवदुहदुहगं चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगइया० उप्पलहत्थगया-जाव-सयसहस्सपत्तहत्थगया, अप्पेगइया० कलसहत्थगया-जाव-झयहत्थगया हट्ठतुट्ठ-जाव-हियया सव्वओ समंता आहावंति परिधावंति।

तए णं तं सुरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ-जाव-सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य बहवे सूरियाभरायहाणिवत्थव्वा देवा य देवीओ य महया महया इंदाभिसेगेणं अभिसिंचंति अभिसिंचिता पत्तेयं पत्तेयं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–"जय जय नंदा! जय जय भद्दा! जय जय नंदा! भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि, जियमज्झे वसाहि इंदो इव देवाणं, चंदो इव ताराणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, भरहो इव मणुयाणं, बहूइं पलिओवमाइं बहूइं सागरोवमाइं बहूइं पलिओवम-सागरोवमाइं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं-जाव-आयरक्खदेवसाहस्सीणं सूरियाभस्स विमाणस्स अन्नेसिं च बहूणं सूरियाभविमाणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं-जाव-महया महया कारेमाणे पालेमाणे विहराहि" त्ति कट्टु जय जय सद्दं पउंजंति। तए णं से सूरियाभे देवे महया महया इंदाभिसेगेणं अभिसित्ते समाणे अभिसेयसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे अणुप्पयाहिणीकरेमाणे अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा अलंकारियभंडं उवट्ठवेंति।

तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ, लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वन्नफरिसजुत्तं हयलालापेलवाइरेगं धवलं कणगखचियन्तकम्मं आगासफालियसमप्पभं दिव्वं देवदूसजुयलं नियंसेइ, नियंसेत्ता हारं पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता अद्धहारं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता एगावलिं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता मुत्तावलिं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता रयणावलिं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता एवं अंगयाइं केऊराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं दसमुद्दाणंतगं वच्छसुत्तगं मुरविं कंठमुरविं पालंबं कुंडलाइं चूडामणिं मउडं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अप्पाणं अलंकियविभूसियं करेइ, करित्ता दद्दरमलयसुगंधगंधिएहिं गायाइं भुखंडेइ दिव्वं च सुमणदामं पिणद्धेइ।

तए णं से सूरियाभे देवे केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्थालंकारेण चउव्विहेण अलंकारेण अलंकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अलंकारियसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणवरए-जाव-सन्निसन्ने।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा पोत्थयरयणं उवणेंति।। तए णं से सूरियाभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हइ, गिण्हित्ता पोत्थयरयणं मुयइ, मुइत्ता पोत्थयरयणं विहाडेइ, विहाडित्ता पोत्थयरयणं वाएइ, पोत्थयरयणं वाएत्ता धम्मियं ववसायं ववसइ, ववसइत्ता पोत्थयरयणं पडिनिक्खिवइ, पडिनिक्खिवित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता ववसायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव नंदा पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता णंदापुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता हत्थपादं पक्खालेति, पक्खालित्ता आयंते चोक्खे परमसूइभूए एगं महं सेयं रययामयं विमलं सलिलपुण्णं मत्तगयमुहागितिकुंभसमाणं भिंगारं पगेण्हति, पगेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं-जाव-सतसहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हति, गेण्हित्ता णंदातो पुक्खरिणीतो पच्चुत्तरति, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ-जाव-सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अन्ने य बहवे सूरियाभविमाणवासिणो-जाव-देवीओ य, अप्पेगतिया देवा उप्पलहत्थगा-जाव-सयसहस्सपत्तहत्थगा सूरियाभं देवं पिट्ठतो पिट्ठतो समणुगच्छंति।

तए णं तं सूरियाभं देवं, बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य, अप्पेगतिया कलसहत्थगा-जाव-अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगा हट्ठतुट्ठ-जाव-सूरियाभं देवं पिट्ठतो समणुगच्छंति।

तए णं से सूरियाभे देवे चऊहिं सामाणियसाहस्सीहिं-जाव-अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं देवेहि य देवीहि सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-णातियरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिद्धायतणं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेति, करेत्ता लोमहत्थगं गिण्हति, गिण्हित्ता जिणपडिमाओ लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता जिणपडिमाओ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेइ, ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता सुरभिगंधकासाइएणं गायाणं लहेइ, लूहित्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूसजुयलाइं नियंसेइ, नियंसित्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं चुण्णारुहणं वन्नारुहणं वत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ, करित्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रियमल्लदामकलावं करेइ, मल्लदामकलावं करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवन्नेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयार-कलियं करेति, करित्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं अट्ठट्ठ मंगले आलिहइ, तं जहा—सोत्थिय -जाव-दप्पणं ।

तयणंतरं च णं चंदप्पभ-वइर-वेरुलियविमलदंडं कंचण-मणि-रयणभत्तिचित्तं कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क धूवमघमघंतगं धुत्तमाणुविद्धं व धूवव विणिम्मुयंतंट्ठिं वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहिय पयत्तेणं धूवं दाऊण जिणवराणं अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं संथुणइ, संथुणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुतो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ, निवाडेत्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

"नमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगं-धहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं विअट्ट-छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वा-बाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं ।"

वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ, आलिहित्ता कयग्गहगहिय०-जाव-पुंजोवयारकलियं करेइ, करित्ता धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणे दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडीओ य साल-भंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खित्ता, सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं मल्ला०-जाव-आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्त०-जाव-धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ, आलिहित्ता कयग्गहगहिय०-जाव-धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थि-मिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडीओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए० सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं-जाव-आभरणा-रुहणं करेइ, करित्ता आसत्तोसत्त० कयग्गहगहिय० धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव दाहिणिल्लमुहमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता थंभे य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता जहा चेव पच्चत्थिमिल्लस्स दारस्स-जाव-धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडीओ० तं चेव सव्वं। जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहि-णिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दारचेडीओ य० तं चेव सव्वं । जेणेव दाहिणिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स महुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अक्खाडगं च मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए०, सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं० आसत्तोसत्त०-जाव-धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छा-घरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे० । उत्तरिल्ले दारे तं चेव जं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव, दाहिणे दारे तं चेव । जेणेव दाहिणिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता० थूभं, मणिपेढियं च दिव्वाए दगधाराए अब्भु० सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारु० आसत्तो०-जाव-धूवं दलेइ, दलित्ता जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा० तं चेव । जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तं चेव सव्वं । जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणि-पेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ० तं चेव । दाहिणिल्ला मणिपेढिया दाहिणिल्ला जिणपडिमा० तं चेव। जेणेव दाहिणिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ० तं चेव । जेणेव महिंदज्झए जेणेव दाहिणिल्ला नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भु० सरसेणं गोसीसचंदणेणं० पुप्फारुहणं० आसत्तोसत्त० धूवं दलयइ, दलइत्ता सिद्धाययणं अणुपयाहि-णीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति० तं चेव । जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छति० । जेणेव उत्तरिल्ले चेइयथूभे० तहेव । जेणेव पच्चत्थिमिल्ला पेढिया० । जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा० तं चेव । उत्तरिल्ले पेच्छाघरमंडवे तेणेव उवागच्छति० । जा चेव दाहिणिल्लवत्तव्वया सा चेव सव्वा पुरत्थिमिल्ले दारे । दाहिणिल्ला खंभपंती० तं चेव सव्वं । जेणेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरिल्ले मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए० तं चेव सव्वं । पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव० । उत्तरिल्ले दारे दाहिणिल्ला खंभपंती० सेसं तं चेव सव्वं। जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे० तं चेव। जेणेव सिद्धायतणस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ० तं चेव। जेणेव पुरत्थिमिल्ले मुहमंडवे जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ० तं चेव। पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे० तं चेव। पुरत्थिमिल्ले दारे० तं चेव। जेणेव पुरत्थिमिल्ले पेच्छाघरमंडवे ०। एवं थूभे जिणपडिमाओ चेइयरुक्खा महिंदज्झया णंदा पुक्खरिणी० तं चेव-जाव-धूवं दलयइ०। जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव माणवए चेइयखंभे जेणेव वइरामए गोलवट्टसमुग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए पमज्जइ, पमज्जित्ता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेइ, विहाडेत्ता जिणसगहाओ लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चइत्ता धूवं दलयइ, दलइत्ता जिणसकहाओ वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिनिक्खिवइ, पडिनिक्खिवित्ता माणवगं चेइयखंभं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए० सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं-जाव-धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव सीहासणे० तं चेव। जेणेव देवसयणिज्जे० तं चेव। जेणेव खुड्डागमहिंदज्झए० तं चेव। जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता पहरणकोसं चोप्पालं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए० सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं० आसत्तोसत्त० धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता देवसयणिज्जं च मणिपेढियं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता-जाव-धूवं दलयइ, दलइत्ता जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे० तहेव अभिसेयसभासरिसं-जाव-पुरत्थिमिल्ला णंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालभंजियाओ य वालरूवए य० तहेव। जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ० तहेव सीहासणं च मणिपेढियं च० सेसं तहेव आययणसरिसं-जाव-पुरत्थिमिल्ला णंदा पुक्खरिणी, जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ० जहा अभिसेयसभा तहेव सव्वं । जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ० तहेव लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए० अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेति० मणिपेढियं सीहासणं च० सेसं तं चेव। पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालभंजियाओ य वालरूवए य० तहेव। जेणेव बलिपीढं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलिविसज्जणं करेति, करेत्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउमुहेसु महापहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु अरामेसु उज्जाणेसु वणेसु वणराईसु काणणेसु वणसंडेसु अच्चणियं करेह, अच्चणियं करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह।"

तए णं ते आभिओगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा-जाव-पडिसुणेत्ता सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउमुहेसु महापहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु वणेसु वणराईसु काणणेसु वणसंडेसु अच्चणियं करेंति, अच्चणियं करेत्ता जेणेव सूरियाभे देवे-जाव-पच्चप्पिणंति।

तए णं से सूरियाभे देवे जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नंदापुक्खरिणि पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता हत्थपाए पक्खालेति, पक्खालेत्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं-जाव-सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-नाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स अवरुत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं दिसिभाएणं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चउसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि अग्गमहिसीओ चउसु भद्दासणेसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भितरियपरिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ अट्ठसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणेणं मज्झिमाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ दससु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ बारससु भद्दासणसाहस्सीसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवइणो सत्तहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चउद्दिसिं सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ सोलसहिं भद्दासणसाहस्सीहिं णिसीयंति, तंजहा–पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि साहस्सीओ०, ते णं आयरक्खा सन्नद्धबद्धवम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्धगेविज्जा आविद्धविमलवरचिंधपट्टा गहियाउहप्पहरणा तिणयाणि तिसंधियाइं वयरामयकोडीणि धणूइं पगिज्झ पडियाइयकंडकलावा णीलपाणिणो पीयपाणिणो रत्तपाणिणो चावपाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो दंडपाणिणो खग्गपाणिणो पासपाणिणो नीलपीयरत्तचावचारुचम्मदंडखग्गपासधरा आयरक्खा रक्खोवगा गुत्ता गुत्तपालिया जुत्ता जुत्तपालिया पत्तेयं पत्तेयं समयओ विणयओ किंकरभूया चिट्ठन्ति ।।

सूरियाभदेव-तस्सामाणियदेवट्ठिइपरूवणं

२८ सूरियाभस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?

गोयमा चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

सूरियाभस्स णं भंते! देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?

गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

महिड्ढिए महज्जुइए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभागे सूरियाभे देवे, अहो णं भंते! सूरियाभे देवे महिड्ढिए-जाव-महाणुभागे।

पएसिराय-दढपतिण्णचरियं–सुरियाभदेवस्स पुव्वभव-अणंतरभवपरूवणं। पएसिराय-सूरियकंतादेवी-सूरियकंतकुमार-चित्तसारहि-नामनिरूवणं

२९ "सूरियाभेणं भन्ते! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवजुई से दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे किणा पत्ते किणा अभिसमन्नागए? पुव्वभवे के आसी? किंनामए वा, को वा गोत्तेणं? कयरंसि वा गामंसि वा-जाव-संनिवेसंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा किच्चा किं वा समायरित्ता? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अन्तिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जं णं सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी-जाव–देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए?"।

"गोयमा" इ समण भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमन्तेत्ता एवं वयासी––

"एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं, तेणं समएणं, इहेव जम्बुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, केइयअद्धे नामं जणवए होत्था, रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धे।

सव्वोउयफलसमिद्धे रम्मे नंदणवण-प्पगासे पासाईए-जाव-पडिरूवे।

तत्थ णं केइयअद्धे जणवए सेयविया नामं नयरी होत्था, रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा-जाव-पडिरूवा।

तीसे णं सेयवियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं मिगवणे नामं उज्जाणे होत्था–रम्मे, नन्दणवण-प्पगासे, सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे, सुभ-सुरभि-सीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे, पासादीए-जाव- पडिरूवे।

तत्थ णं सेयवियाए नयरीए पएसी नामं राया होत्था, महया हिमवन्त-जाव-विहरइ, अधम्मिए, अधम्मिट्ठे, अधम्म-क्खाई, अधम्माणुए, अधम्म-पलोई, अधम्म-पजणणे, अधम्म-सील-समुदायारे, अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे, हण-छिन्द-भिन्द-पवत्तए, पावे, चण्डे, रुद्दे, खुद्दे, लोहिय-पाणी, साहसिए, उक्कंचण-वंचण-माया-नियडि-कूड-कवड-साई-संपओग-बहुले, निस्सीले, निव्वए, निग्गुणे, निम्मेरे, निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासे, बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सिरीसिवाणं घायाए, वहाए, उच्छेयणाए अधम्म-केऊ समुट्ठिए, गुरूणं नो अब्भुट्ठेइ, नो विणयं पउञ्जइ, समणमाहणाणं····नो विणयं पउञ्जइ, सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभर-वित्तिं पवत्तेइ।

तस्स णं पएसिस्स रन्नो सूरियकन्ता नामं देवी होत्था–सुकुमाल-पाणि-पाया धारिणीवण्णओ, पएसिणा रन्ना सद्धिं अणुरत्ता, अविरत्ता, इट्ठे सद्दे, रूवे-जाव-विहरइ।

तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठे पुत्ते, सूरियकन्ताए देवीए अत्तए सूरियकन्ते नामं कुमारे होत्था–सुकुमाल-पाणिपाए-जाव-पडिरूवे। से णं सूरियकन्ते कुमारे जुवराया वि होत्था, पएसिस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अन्तेउरं च जणवयं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठे भाउय-वयंसए चित्ते नामं सारही होत्था, अड्ढे-जाव-बहु-जणस्स अपरिभूए, साम-दण्ड-भेय-उवप्पयाण-अत्थसत्थ-ईहा-मइ-विसारए, उप्पत्तियाए-जाव-पारिणामियाए--चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, पएसिस्स रन्नो बहूसु कज्जेसु य-जाव-ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे मेढी, पमाणं-जाव-रज्ज-धुरा-चिन्तए यावि होत्था ।।

पएसिरन्ना जियसत्तुरायसमीवे चित्तसारहिपेसणं

३० तेणं कालेणं, तेणं समएणं कुणाला नामं जणवए होत्था, रिद्ध-त्थि-मिय-समिद्धे-जाव-पडिरूवे।

तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नामं नयरी होत्था, रिद्ध-त्थि-मिय-समिद्धा-जाव-पडिरूवा।

तीसे णं सावत्थीए नयरीए बहिया उत्तर-पुरत्थिमे दिसी-भाए कोट्ठए नाम चेईए होत्था, पोराणे-जाव-पडिरूवे।

तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रन्नो अन्तेवासी जियसत्तू नामं राया होत्था, महया हिमवन्त-जाव-विहरइ।

तए णं से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्घं, महरिहं, विउलं, रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ, सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--

"गच्छ णं चित्ता ! तुमं सावत्थिं नयरिं । जियसत्तुस्स रन्नो इमं महत्थं-जाव-पाहुडं उवणेहि । जाइं तत्थ राय-कज्जाणि य राय-किच्चाणि य राय-नीईओ य राय-ववहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहि" त्ति कट्टु विसज्जिए ।

तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे, हट्ठ-जाव-पडिसुणेत्ता, तं महत्थं-जाव-पाहुडं गेण्हइ, गिण्हित्ता पएसिस्स रन्नो-जाव-पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सेयवियं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं-जाव-पाहुडं ठवेइ, ठवित्ता कोडुम्बिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं-जाव-चाउ-ग्घण्टं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह-जाव-पच्चप्पिणह"।

तए णं ते कोडुम्बिय-पुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं-जाव-जुद्ध-सज्जं चाउ-ग्घण्टं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेन्ति, तमाणत्तियं पच्चप्पिणन्ति।

तए णं से चित्ते सारही कोडुम्बिय-पुरिसाणं अन्तिए एयमट्ठं-जाव-हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते संनद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवए, उप्पीलिय-सरासण-पट्टिए, पिणद्ध-गेवेज्जे, बद्ध-आविद्ध-विमल-वर-चिंध-पट्टे, गहियाउह-पहरणे, तं महत्थं-जाव-पाहुडं गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव चाउ-ग्घण्टे आसरहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउ-ग्घण्टं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं संनद्ध-जाव-गहियाउह-पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे, सकोरिण्ट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं धरिज्जमाणेणं, महया, भड-चडगर-रह-पहकर-विन्द-परिक्खित्ते। साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सेयवियं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुहेहिं वासेहिं, पायरासेहिं, नाइविकिट्ठेहिं अन्तरावासेहिं वसमाणे वसमाणे केइयअद्धस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं, जेणेव कुणाला जणवए, जेणेव सावत्थी नयरी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव जियसत्तुस्स रन्नो गिहे, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण-साला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तं महत्थं-जाव-पाहुडं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव अब्भन्तरिया उवट्ठाण-साला, जेणेव जियसत्तू राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जियसत्तुं रायं करयल-परिग्गहियं-जाव-कट्टु, जएणं, विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं-जाव-पाहुडं उवणेइ।

तए णं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं-जाव-पाहुडं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता चित्तं सारहिं सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ, रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ।

तए णं से चित्ते सारही विसज्जिए समाणे, जियसत्तुस्स रन्नो अन्तियाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण-साला, जेणेव चाउग्घण्टे आस-रहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिनिक्खमित्ता चाउ-ग्घण्टं आस-रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता सावत्थिं नयरिं मज्झं-मज्झेणं, जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे, कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते, सुद्ध-प्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर-परिहिए, अप्प-महग्घाभरणालंकिय-सरीरे, जिमिय-भुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे, पुव्वावरण्ह-काल-समयंसि गन्धव्वेहि य नाडगेहि य उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे, उवगाइज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गन्धे पञ्च-विहे माणुस्सए काम-भोए पच्चणुभवमाणे विहरइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सावत्थिनयरीए केसिकुमारसमणागमणं

३१ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जाइ-संपन्ने, कुल-संपन्ने, बल-संपन्ने, रूव-संपन्ने, विणय-संपन्ने, नाण-संपन्ने, दंसण-संपन्ने, चरित्त-संपन्ने, लज्जा-संपन्ने, लाघव-संपन्ने, लज्जा-लाघव-संपन्ने, ओयंसी, तेयंसी, वच्चंसी, जसंसी जिय-कोहे जिय-माणे जिय-माए, जिय-लोहे, जिय-निद्दे, जिइन्दिए, जिय-परीसहे, जीवियास-मरणभय-विप्पमुक्के, तव-प्पहाणे, गुण-प्पहाणे, करण-प्पहाणे, चरण-प्पहाणे, निग्गह-प्पहाणे, निच्छय-प्पहाणे, अज्जव-प्पहाणे, मद्दव-प्पहाणे, लाघव-प्पहाणे, खन्ति-प्पहाणे, गुत्ति-प्पहाणे, मुत्ति-प्पहाणे, विज्ज-प्पहाणे, मन्त-प्पहाणे, बम्भ-प्पहाणे, वेय-प्पहाणे, नय-प्पहाणे, नियम-प्पहाणे, सच्च-प्पहाणे, सोय-प्पहाणे, नाण-प्पहाणे, दंसण-प्पहाणे, चरित्त-प्पहाणे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से चउदस-पुव्वी, चउ-नाणोवगए, पञ्चहिं अणगार-सएहिं सद्धिं संपरिवुडे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, सुहं-सुहेणं विहरमाणे, जेणेव सावत्थी नयरी, जेणेव कोट्ठए चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहा-पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हइ, उग्गिण्हित्ता संजमेणं, तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

विन्नायवुत्तंतस्स चित्तसारहिस्स केसिकुमारसमणवंदणट्ठा गमणं, धम्मसवणं, गिहत्थधम्मपडिवत्ती य

३२ तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग तिग-चउक्क-चच्चर-चउमुह-महापह-पहेसु महया जण-सद्दे इ वा जण-वूहे इ वा जण-कलकले इ वा जण-बोले इ वा जण-उम्मी इ वा जण-उक्कलिया इ वा जण-संनिवाए इ वा-जाव-परिसा पज्जुवासइ ।

तए णं तस्स सारहिस्स तं महा-जण-सद्दं च जण-कलकलं च सुणेत्ता य पासित्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था ।

किं णं अज्ज सावत्थीए नयरीए इन्द-महे इ वा खन्द-महे इ वा रुद्द-महे इ वा मउन्द-महे इ वा सिवमहे इ वा वेसमण-महे इ वा नाग-महे इ वा भूय-महे इ वा जक्ख-महे इ वा धूम-महे इ वा चेइयमहे इ वा रुक्ख-महे इ वा गिरि-महे इ वा दरि-महे इ वा अगड-महे इ वा नई-महे इ वा सर-महे इ वा सागर-महे इ वा, जं णं इमे बहवे उग्गा, भोगा, राइन्ना, इक्खागा, खत्तिया, नाया, कोरव्वा-जाव-इब्भा, इब्भपुत्ता ण्हाया, जहोववाइए-जाव-अप्पेगइया हय-गया, अप्पेगइया गय-गया, रह-गया सिविया-गया संदमाणिया-गया, अप्पेगइया, पाय-चार-विहारेणं महया महया वन्दावन्दएहिं निग्गच्छन्ति एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कञ्चुइज्ज-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

"किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इन्द-महे इ वा-जाव-सागर-महे इ वा जेणं इमे बहवे उग्गा भोगा-जाव-निग्गच्छन्ति"?

तए णं से कंचुइज्जपुरिसे केसिस्स कुमार-समणस्स आगमण-गहिय-विणिच्छए चित्तं सारहिं करयल-परिग्गहियं-जाव-वद्धावेत्ता एवं वयासी—

"नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इन्द-महे इ वा-जाव-सागर-महे इ वा, जेणं इमे बहवे-जाव-वन्दावन्दएहिं निग्गच्छन्ति। एवं खलु भो देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जाइ-संपन्ने-जाव-दूइज्जमाणे इहमागए-जाव-विहरइ, तेणं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा-जाव-इब्भा, इब्भपुत्ता अप्पेगइया वन्दणवत्तियाए-जाव-महया वन्दावन्दएहिं निग्गच्छन्ति"।

३३ तए णं से चित्ते सारही कंचुइज्ज-पुरिसस्स अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए कोडुम्बिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घण्टं आस-रहं जुत्तामेव उवट्ठवेह" -जाव-सच्छत्तं उवट्ठवेन्ति । तए णं से चित्ते सारही ण्हाए, सुद्ध-प्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए, अप्प-महग्घाभरणालंकिय-सरीरे, जेणेव चाउग्घण्टे आस-रहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घण्टं आस-रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता सकोरिण्ट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महया भडचडगरविन्द-परिक्खित्ते, सावत्थी-नयरीए मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए उज्जाणे, जेणेव केसी कुमार-समणे, तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता केसि-कुमार-समणस्स अदूरसामन्ते तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वन्दइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, नच्चासन्ने, नाइदूरे सुस्सूसमाणे, नमंसमाणे, अभिमुहे, पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ।

३४ तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे य महइ-महालियाए महच्च-परिसाए चाउ-ज्जामं धम्मं परिकहेइ। तं जहा— सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा महइ-महालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म, जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया।

तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा, निसम्म हट्ठ-जाव-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता केसिं कुमार-समणं तिक्खुत्तो आयाहिणं, पयाहिणं करेइ, करित्ता वन्दइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

"सद्दहामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं-जाव-सच्चे णं एसमट्ठे जं णं तुब्भे वयह" त्ति कट्टु वन्दइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, एवं वयासी—

"जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे उग्गा, भोगा-जाव-इब्भा, इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, एवं धन्नं, धणं, बलं, वाहणं, कोसं, कोट्ठागारं, पुरं, अन्तेउरं, चिच्चा, विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-सन्त-सार-सावएज्जं, विच्छड्डइत्ता, विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुण्डा भवित्ता, अगाराओ अणगारियं पव्वयन्ति, नो खलु अहं ता संचाएमि चिच्चा हिरण्णं तं चेव-जाव-पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पंचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइयं दुवालस-विहं गिहि-धम्मं..... पडिवज्जित्तए"।

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेहि"।

तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं-जाव-गिहि-धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं वन्दइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, जेणेव चाउग्घण्ट आस-रहे, तेणव पहारेत्थ गमणाए। चाउग्घण्टं आस-रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए।।

३५ तए णं से चित्ते सारही समणोवासए जाए अहिगय-जीवाजीवे, उवलद्ध-पुण्ण-पावे, आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बन्ध-मोक्ख-कुसले, असहिज्जे देवासुर-नाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-गरुल-गन्धव्व-महोरगाईहिं देवगणेहिं निग्गन्थाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गन्थे पावयणे निस्संकिए, निक्कंखिए, निव्वितिगिच्छे, लद्धट्ठे, गहियट्ठे, पुच्छियट्ठे, अहिगयट्ठे, विणिच्छियट्ठे, अट्ठि-मिञ्ज-पेम्माणुरागरत्ते, 'अयमाउसो ! निग्गन्थे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे', ऊसिय-फलिहे अवंगुय-दुवारे चियत्तन्तेउर-घर-प्पवेसे, चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे, समणे, निग्गन्थे, फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं, पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं, वत्थ-पडिग्गह-कम्बल-पायपुञ्छणेणं, ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे पडिलाभेमाणे, बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि य अप्पाणं भावेमाणे, जाइं तत्थ राय-कज्जाणि य-जाव-राय-ववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रन्ना सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ।।

सेयवियं नयरिं गच्छंतेणं चित्तसारहिणा केसिकुमारसमणं पइ सेयवियानयरिआगमणपत्थणा, केसिकुमार-समणाणुमई य

३६ तए णं से जियसत्तु-राया अन्नया कयाइ महत्थं-जाव-पाहुडं सज्जेइ, चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—"गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयवियं नयरिं। पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं-जाव-पाहुडं उवणेहि। मम पाउग्गं च णं जहाभणियं अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहि" त्ति कट्टु विसज्जिए।

तए णं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रन्ना विसज्जिए समाणे, तं महत्थं-जाव--गिण्हइ-जाव-जियसत्तुस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थी-नयरीए मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे, तेणव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं-जाव--ठवेइ । ण्हाए-जाव-सरीरे, सकोरेण्टमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरं-विंदपरिक्खित्ते पायचार-विहारेणं, महया पुरिस-वग्गुरा-परिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सावत्थी-नयरीए मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव केसी-कुमार-समणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसि-कुमार-समणस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा-जाव--हट्ठ-जाव-उट्ठाए-जाव एवं वयासी—

"एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रन्ना पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं-जाव-उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए। तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नयरिं। पासादीया णं भंते ! सेयविया नयरी। दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया नयरी । अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नयरी। पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नयरी। समोसरह णं भंते ! सेयवियं नयरिं"।

तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एवं खलु अहं भंते! जियसत्तुणा रन्ना पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं-जाव-विसज्जिए तं चेव-जाव-समोसरह णं भंते! तुब्भे सेयवियं नयरिं"।

तए णं केसी कुमार-समणे चित्तेणं सारहिणा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी--

"चित्ता! से जहा-नामए वण-सण्डे सिया किण्हे, किण्होभासे-जाव-पडिरूवे। से नूणं चित्ता! से वण-सण्डे बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरीसिवाणं अभिगमणिज्जे?"

"हंता अभिगमणिज्जे"।

तंसि च णं चित्ता! वण-संडंसि बहवे भिलुंगा नाम पाव-सउणा परिवसन्ति, जे णं तेसिं बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सिरीसिवाणं ठियाणं चेव मंस-सोणियं आहारेन्ति। से नूणं चित्ता! से वण-संडे तेसि णं बहूणं दुपय-जाव-सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे?"

"नो तिणट्ठे समट्ठे।"

"कम्हा णं?"

"भंते! सोवसग्गे"।

"एवामेव चित्ता! तुब्भं पि सेयवियाए नयरीए पएसी नामं राया परिवसइ, अहम्मिए-जाव-नो सम्मं कर-भर-वित्तिं पवत्तेइ। तं कहं णं अहं चित्ता! सेयवियाए नयरीए समोसरिस्सामि?"

तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं एवं वयासी--

"किं णं भंते! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं? अत्थि णं भंते! सेयवियाए नयरीए अन्ने बहवे ईसर-तलवर-जाव-सत्थवाह-प्पभिइओ, जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति-जाव-पज्जुवासिस्संति, विउलं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं पडिलाभेसंति, पाडिहारिएण पीढ-फलग-सेज्जासंथारेणं उवनिमन्तिस्सन्ति"।

तए णं से केसी कुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी--

"अवि याइ चित्ता! समोसरिस्सामो"।

चित्तसारहिस्स सेयवियानगरिआगमणं

३७ तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता केसिस्स कुमार-समणस्स अंतियाओ, कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थि णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउ-घंटं आस-रहं जुत्तामेव उवट्ठवेह"। जहा सेयवियाए नयरीए निग्गच्छइ तहेव-जाव-वसमाणे वसमाणे कुणालाजणवयस्स मज्झं-मज्झेणं, जेणेव केइयअद्धे जणवए, जेणेव सेयविया नयरी, जेणेव मियवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उज्जाण-पालए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--

"जया णं देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमार-समणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा, तया णं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिं कुमार-समणं वंदिज्जाह, नमंसिज्जाह, वंदित्ता नमंसित्ता अहा-पडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह। पाडिहारिएणं पीढ-फलग-जाव-उवनिमंतेज्जाह। एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह"।

तए णं ते उज्जाण-पालगा चित्तेण सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-जाव-हियया करयल-परिग्गहियं-जाव-एवं वयासी--"तह" त्ति। आणाए, विणएणं वयणं पडिसुणंति॥

३८ तए णं से चित्ते सारही जेणेव सेयविया नयरी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेयवियं नयरिं मज्झं-मज्झेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पएसिस्स रन्नो गिहे, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तं महत्थं-जाव-गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव पएसी राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पएसिं रायं करयल-जाव-वद्धावेत्ता तं महत्थं-जाव-उवणेइ।

तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं-जाव-पडिच्छइ, पडिच्छित्ता चित्तं सारहिं सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना विसज्जिए समाणे हट्ठ-जाव-हियए, पएसिस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव चाउग्घंटे आस-रहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आस-रहं दुरुहइ सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ तुरए निगिण्हइ रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए-जाव-उप्पिं पासाय-वर-गए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइ-बद्धएहिं नाडएहिं वर-तरुणी-संपउत्तेहिं उवनच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस-जाव-विहरइ।

उज्जाणपालनिवेइयवुत्तंताणुसारेणं चित्तसारहिस्स केसिकुमारसमणवंदणट्ठा गमणं धम्मसवणं च

३९ तए णं केसी-कुमार-समणे अन्नया कयाइ पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणित्ता सावत्थीओ नयरीओ, कोट्ठगाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पञ्चहिं अणगारसएहिं-जाव-विहरमाणे, जेणेव केइयअद्धे जणवए, जेणेव सेयविया नयरी, जेणेव मियवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहा-पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता, संजमेणं, तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

४० तए णं सेयवियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहेसु महया जणसद्दे इ वा-जाव-परिसा निग्गच्छइ।

तए णं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा, हट्ठतुट्ठ-जाव-हियया, जेणेव केसी कुमार-समणे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता केसिं कुमारसमणं वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता, अहा-पडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति, पाडिहारिएणं-जाव-संथारएणं उवनिमंतेन्ति, नामं गोयं पुच्छंति, ओधारेंति, एगन्तं अवक्कमन्ति, अन्नमन्नं एवं वयासी--

"जस्स णं देवाणुप्पिया! चित्ते सारही दंसणं कंखइ-जाव-दंसणं अभिलसइ जस्स णं नाम-गोयस्स वि सवणयाए हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए-भवइ, से णं एस केसी कुमार-समणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, इहमागए, इह संपत्ते, इह समोसढे, इहेव सेयवियाए नयरीए बहिया मियवणे उज्जाणे अहा-पडिरूवं-जाव-विहरइ। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेएमो, पियं से भवउ"।

अन्नमन्नस्स अन्तिए एयमट्ठं पडिसुणंति। जेणेव सेयविया नयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे, जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चित्तं सारहिं करयल-जाव-वद्धावेंति, एवं वयासी--

"जस्स णं देवाणुप्पिया! दंसणं कंखंति-जाव-अभिलसंति, जस्स णं नाम-गोयस्स वि सवणयाए हट्ठ-जाव-भवह, से णं अयं केसी कुमार-समणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहेव मिअवणे उज्जाणे समोसढे-जाव-विहरइ।।"

४१ तए णं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाण-पालगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठ-जाव-आसणाओ अब्भुट्ठेइ, पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एग-साडियं उत्तरासङ्गं करेइ। अंजलि-मउलियग्गहत्थे केसिकुमारसमणाभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--"नमोत्थु णं अरहंताणं-जाव-संपत्ताणं। नमोत्थु णं केसिस्स कुमार-समणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थ-गयं इहगए। पासउ मं भगवं तत्थगए इहगयं" ति कट्टु वंदइ, नमंसइ। ते उज्जाण-पालए विउलेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइ-दाणं दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आस-रहं जुत्तामेव उवट्ठवेह-जाव-पच्चप्पिणह"।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-खिप्पामेव सच्छत्तं, सज्झयं-जाव-उवट्ठवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

तए णं से चित्ते सारही कोडुंबिय-पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म, हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए, ण्हाए कयबलिकम्मेण सरीरे, जेणेव चाउग्घंटे-जाव-दुरुहित्ता, सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरेणं तं चेव-चाव-पज्जुवासइ धम्म-कहा-जाव-

तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ उट्ठाए तहेव एवं वयासी--

"एवं खलु भंते! अम्हं पएसी राया अधम्मिए-जाव-सयस्स वि णं जणवयस्स नो सम्मं कर-भर-वित्तिं पवत्तेइ। तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रन्नो, तेसिं च बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सिरीसिवाणं, तेसिं च बहूणं समण-माहण-भिक्खुयाणं। तं जइ णं देवाणुप्पिया! ० पएसिस्स बहुगुणतरं होज्जा, सयस्स वि य णं जणवयस्स"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मस्स अलाभ-लाभविसयाइं चत्तारि ठाणाइं

४२ तए णं केसी कुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी--

"एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए । तं जहा--आराम-गयं वा उज्जाण-गयं वा समणं वा माहणं वा नो अभिगच्छइ, नो वंदइ, नो नमंसइ, नो सक्कारेइ, नो संमाणेइ, नो कल्लाणं, मङ्गलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्ठाइं, हेऊइं पसिणाइं, कारणाइं, वागरणाइं पुच्छइ। एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलि-पन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।।१।।

उवस्सय-गयं समणं वा तं चेव-जाव-एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलि-पन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।।२।।
गोयरग्ग-गयं समणं वा माहणं वा-जाव-नो पज्जुवासइ, नो विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, नो अट्ठाइं-जाव-पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलि-पन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।।३।।

जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ, तत्थ वि य णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं-जाव-पुच्छइ, एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलि-पन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।।४।।

एएहिं च णं चित्ता! चउहिं ठाणेहिं जीवे केवलि-पन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।।

चउहिं ठाणेहिं चित्ता! जीवे केवली-पन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए। तं जहा--आराम-गयं वा उज्जाण-गयं वा समणं वा माहणं वा वंदइ, नमंसइ,-जाव-पज्जुवासइ, अट्ठाइं-जाव-पुच्छइ, एएण-जाव-लभइ सवणयाए । एवं उवस्सय-गयं गोयरग्ग-गयं समणं वा--जाव-पज्जुवासइ विउलेणं-जाव-पडिलाभेइ अट्ठाइं-जाव-पुच्छइ, एएण वि-जाव-लभइ सवणयाए। जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभि-समागच्छइ तत्थ वि य णं नो हत्थेण वा-जाव-आवरेत्ता णं चिट्ठइ, एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलि-पन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए।

तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया आराम-गयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं-जाव-अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ। तं कहं णं चित्ता! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो?"

तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं वयासी--

"एवं खलु भंते! अन्नया कयाइ कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया। ते मए पएसिस्स रन्नो अन्नया चेव उवणेया। तं एएणं खलु भंते! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतिए हव्वमाणेस्सामि। तं मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह। अगिलाए णं भंते! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खेज्जाह, छंदेणं भंते! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह"।

तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तं सारहिं एवं वयासी--

"अवि याइ चित्ता! जाणिस्सामो"।।

तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउ-घंटे आस-रहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउ-घंटं आस-रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए।।

आसपरिक्खट्ठं निग्गयस्स चित्तसारहिसहियस्स पएसिरन्नो केसिकुमारसमणसमीवागमणं

४३ तए णं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए, फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापण्डुरे पभाए कय-नियमावस्सए सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलन्ते, साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पएसिस्स रन्नो गिहे, जेणेव पएसी राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पएसिं रायं करयल-जाव-कट्टु जएणं, विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पियाणं कम्बोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया। ते य मए देवाणुप्पियाणं अन्नया चेव विणइया। तं एह णं सामी! ते आसे चिट्ठं पासह।"
तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी--
"गच्छाहि णं तुमं चित्ता! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं आस-रहं जुत्तामेव उवट्ठवेहि-जाव-पच्चप्पिणाहि" ।
तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए उवट्ठवेइ उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ।
तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-अप्प-महग्घाभरणालंकिय-सरीरे साओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव चाउ-ग्घण्टे आस-रहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउ-ग्घण्टं आस-रहं दुरुहइ दुरुहित्ता सेयवियाए नयरीए मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ।

तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ। तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रह-वाएणं परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी–

"चित्ता! परिकिलंते मे सरीरे, परावत्तेहि रहं।"

तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ, जेणेव मियवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पएसिं रायं एवं वयासी–

"एस णं सामी! मियवणे उज्जाणे, एत्थ णं आसाणं समं, किलामं सम्मं अवणेमो"।

तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी–"एवं होउ चित्ता!"

तए णं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे, जेणेव केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तुरए मोएइ, मोएत्ता पएसिं रायं एवं वयासी–

"एह णं सामी! आसाणं समं, किलामं सम्मं अवणेमो।"

तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ। चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाणं समं, किलामं सम्मं अवणेमाणे पासइ जत्थ केसी कुमार-समणे महइ-महालियाए महच्चपरिसाए मज्झ-गए महया महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं। पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-समुप्पज्जित्था––

"जड्डा खलु भो जड्डं पज्जुवासंति, मुंडा खलु भो मुंडं पज्जुवासंति, मूढा खलु भो मूढं पज्जुवासंति, अपंडिया खलु भो अपंडियं पज्जुवासंति, निव्विन्नाणा खलु भो निव्वन्नाणं पज्जुवासंति। से कीस णं एस पुरिसे जड्डे, मुंडे, मूढे, अपंडिए, निव्विन्नाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे।

एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ, किं परिणामेइ, किं खाइ, किं पियइ किं दलइ, किं पयच्छइ, जे णं एमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झ-गए महया महया सद्देणं बुयाए?"

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता चित्तं सारहिं एवं वयासी–

"चित्ता! जड्डा खलु भो जड्डं पज्जुवासंति-जाव-बुयाए। साए वि य णं उज्जाण-भूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए"।

तए णं से चित्ते सारही पएसी-रायं एवं वयासी–

"एस णं सामी! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जाइ-संपन्ने-जाव-चउ-नाणोवगए आहोहिए अन्न-जीवी।"

तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी–

"आहोहियं णं वयासि चित्ता! अन्न-जीवियं च णं वयासि चित्ता?"

"हन्ता सामी आहोहियं णं वयामि, अन्नजीवियं च णं वयामि"।

"अभिगमणिज्जे णं चित्ता! अहं एस पुरिसे?"

"हंता सामी! अभिगमणिज्जे"।

"अभिगच्छामो णं चित्ता! अम्हे एयं पुरिसं?"

"हंता सामी! अभिगच्छामो"॥

पएसिरायपडिबोहट्ठं केसिमुणिपरूवणाए पंचविहनाणनिरूवणं

४४ तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं जेणेव केसी कुमार-समणे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता केसिस्स कुमार-समणस्स अदूर-सामन्ते ठिच्चा एवं वयासी–

"तुब्भे णं भन्ते! आहोहिया, अन्न-जीविया?"

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी–

"पएसी! से जहा-नामए अंकवाणिया इ वा संख-वाणिया इ वा दन्त-वाणिया इ वा सुंकं भंसिउं-कामा नो सम्मं पंथं पुच्छइ, एवामेव पएसी! तुब्भेवि विणयं भंसेउ-कामो नो सम्मं पुच्छसि। से नूणं तव पएसी! ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-समुप्पज्जित्था–"जड्डा खलु भो जड्डं पज्जवासंति-जाव-पवियरित्तए"। से नूणं पएसी! अट्ठे समट्ठे?" "हंता अत्थि"।

तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"से केणट्ठेणं भंते! तुज्झ नाणे वा दंसणे वा जेणं तुब्भे मम एया-रूवं अज्झत्थियं-जाव-संकप्पं समुप्पन्नं जाणह, पासह?"
तए णं से केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी–

"एवं खलु पएसी! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे नाणे प० तं जहा–आभिणिबोहिय-नाणे, सुय-नाणे, ओहि-नाणे, मणपज्जव-नाणे, केवल-नाणे।

से किं तं आभिणिबोहिय-नाणे? आभिणिबोहिय-नाणे चउ-व्विहे पन्नत्ते, तं जहा–उग्गहो, ईहा, अवाए, धारणा।

से किं तं उग्गहे? उग्गहे दु-विहे पन्नत्ते जहा नंदीए-जाव-से तं आभिणिबोहियनाणे।

से किं तं सुय-नाणे? सुय-नाणे दु-विहे पण्णत्ते तं जहा-अङ्गपविट्ठं च अङ्ग-बाहिरं च, सव्वं भाणियव्वं-जाव-दिट्ठिवाओ।
ओहि-नाणं भव-पच्चइयं खओवसमियं जहा नंदीए।
मणपज्जव-नाणे दु-विहे पण्णत्ते तं जहा–उज्जुमई य विउलमई य।
तहेव केवल-नाणं सव्वं भाणियव्वं।

तत्थ णं जे से आभिणिबोहियनाणे से णं ममं अत्थि। तत्थ णं से जे सुय-नाणे से वि य ममं अत्थि। तत्थ णं जे से ओहि-नाणे से वि य ममं अत्थि। तत्थ णं जे से मणपज्जव-नाणे से वि य ममं अत्थि। तत्थ णं जे से केवल-नाणे से णं ममं नत्थि, से णं अरिहंताणं भगवन्ताणं। इच्चेएणं पएसी! अहं तव चउ-विहेणं छउमत्थेणं णाणेण इमेयारूवं अज्झत्थियं-जाव-समुप्पन्नं जाणामि पासामि"।

केसिकुमारसमणवत्तव्वे जीव-सरीराणं अन्नत्तपरूवणं–

१. अहुणोववन्न नेरइयस्स मणुस्सलोगागमणविसए निसेहपरूवगाइं चत्तारि ठाणाइं

४५ तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी–
"अहं णं भंते! इहं उवविसामि?"
"पएसी! एयाए उज्जाण-भूमीए तुमं सि चेव जाणए"।

तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमार-समणस्स अदूर-सामन्ते उवविसइ, उवविसित्ता केसिं कुमार-समणं एवं वयासी–

"तुब्भं णं भंते! समणाणं निग्गन्थाणं एसा सन्ना, एसा पइन्ना, एसा दिट्ठी, एसा रुई, एस हेऊ, एस उवएसे, एस संकप्पे, एसा तुला, एस माणे, एस पमाणे, एस समोसरणे, जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं?"
तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी–

"पएसी! अम्हं समणाणं निग्गन्थाणं एसा सन्ना-जाव-एस समोसरणे, जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं नो, तं जीवो नो, तं सरीरं"।
तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी–

"जइ णं भंते! तुब्भं समणाणं, निग्गंथाणं एसा सन्ना-जाव-समोसरणे, जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं, नो तं जीवो, नो तं सरीरं। एवं खलु ममं अज्जए होत्था, इहेव जम्बुद्दीवे दीवे, सेयवियाए नयरीए, अधम्मिए-जाव-सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं कर-भर-वित्तिं पवत्तेइ। से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पावं कम्मं कलि-कलुसं समज्जिणित्ता, कालमासे कालं किच्चा, अन्नयरेसु नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

तस्स णं अज्जगस्स अहं नत्तुए होत्था इट्ठे, कंते, पिए, मणुन्ने, थेज्जे, वेसासिए, संमए, बहुमए, अणुमए, रयण-करण्डग-समाणे, जीविउस्सविए, हियय-नन्दि-जणणे, उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे, सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए।

तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा–एवं खलु नत्तुया! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए-जाव-नो सम्मं कर-भर-वित्तिं पवत्तेमि। तए णं अहं सुबहुं पावं कम्मं कलि-कलुसं समज्जिणित्ता नरएसु उववन्ने। तं मा णं नत्तुया! तुमं पि भवाहि अधम्मिए-जाव-नो सम्मं कर-भर-वित्तिं पवत्तेहि। मा णं तुमं पि एवं चेव सुबहुं पाव-कम्मं-जाव-उववज्जिहिसि। तं जइ णं से अज्जए ममं आगन्तुं एवं वएज्जा, तो णं अहं सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोएज्जा, जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं, नो तं जीवो, तं सरीरं। जम्हा णं से अज्जए ममं आगन्तुं नो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो! जहा तं जीवो, तं सरीरं"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–

'.अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता नामं देवी ?"

"हंता अत्थि"।

"जइ णं तुमं पएसी ! तं सूरियकन्तं देविं ण्हायं-जाव-सव्वालंकार-विभूसियं केणइ पुरिसेणं सव्वालंकार-विभूसिएणं सद्धिं इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पञ्चविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणिं पासिज्जसि, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि ?"

"अहं णं भन्ते ! तं पुरिसं हत्थ-च्छिन्नगं वा पायच्छिन्नगं वा सूलाइयं वा सूल-भिन्नगं वा एगाहच्चं, कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा"।

"अह णं पएसी ! से पुरिसे तुमं एवं वएज्जा––"मा ताव मे सामी ! मुहुत्तगं हत्थ-च्छिन्नगं-जाव-जीवियाओ ववरोवेहि-जाव-तावाहं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबन्धि-परिजणं एवं वयामि–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! पावाइं कम्माइं समायरित्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि, तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे वि केइ पावाइं कम्माइं समायरउ, मा णं से वि एवं चेव आवइं पाविज्जिहिइ जहा णं अहं"।

तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ?"

"नो इणट्ठे समट्ठे"।

"कम्हा णं ?"

"जम्हा णं भन्ते ! अवराही णं से पुरिसे"।

"एवामेव पएसी ! तव वि अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए-जाव-नो सम्मं कर-भर-वित्तिं पवत्तेइ। से णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं-जाव-उववन्नो। तस्स णं अज्जगस्स तुमं नत्तुए होत्था इट्ठे, कन्ते-जाव-पासणयाए। से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववन्नए नरएसु, नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए–से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेएमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाइए हव्वमागच्छित्तए१।

अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए नरय-पालेहिं भुज्जो भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए २।

अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि, अवेइयंसि, अनिज्जिण्णंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ३।

एवं नरइए निरयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि, अवेइयंसि, अनिज्जिण्णंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ४।

इच्चेहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए। तं सद्दहाहि णं पएसी ! जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं, नो तं जीवो, तं सरीरं" ॥१॥

२. अहुणोववन्नदेवस्स मणुस्सलोगागमणविसए निसेहनिरूवगाइं चत्तारि ठाणाइं

४६ तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी–

"अत्थि णं भंते ! एसा पन्ना उवमा, इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ एवं खलु भंते ! मम अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया-जाव-वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगय-जीवाजीवा सव्वो वण्णओ-जाव-अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता काल-मासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना। तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था इट्ठे, कंते०-जाव-पासणयाए। तं जइ णं सा अज्जिया ममं आगन्तुं एवं वएज्जा–'एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया-जाव-वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया-जाव-विहरामि। तए णं अहं सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता-जाव-देवलोएसु उववन्ना। तं तुमं पि नत्तुया ! भवाहि धम्मिए-जाव-विहराहि। तए णं तुमं पि एवं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता-जाव-उववज्जिहिसि'। तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा, तो णं अहं सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोएज्जा, जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं, नो तं जीवो, तं सरीरं। जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतुं नो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइन्ना, जहा तं जीवो, तं सरीरं, नो अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं" ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं केसी कुमार-समणे पएसी-रायं एवं वयासी–

"जइ णं तुमं पएसी ! ण्हायं, कयबलिकम्मं कयकोउगमंगलपायच्छित्तं उल्ल-पड-साडगं, भिंगार-कडुच्छुय-हत्थ-गयं, देवकुलमणुपविसमाणं केइ पुरिसे वच्च-घरंसि ठिच्चा एवं वएज्जा–'एह ताव सामी ! इह मुहुत्तगं आसयह वा चिट्ठह वा निसीयह वा तुयट्टह वा। तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि ?"

"नो तिणट्ठे समट्ठे।"

"कम्हा णं ?"

"भंते ! असुइ असुइ सामन्तो"।

"एवामेव पएसी ! तव वि अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया-जाव-विहरइ। सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं-जाव-उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं नत्तुए होत्था इट्ठे-जाव-किमंगपुण पासणयाए। सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववन्ने देवे देव-लोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए अहुणोववन्ने देवे देव-लोएसु दिव्वेहिं काम-भोगेहिं मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने, से णं माणुसे भोगे नो आढाइ, नो परिजाणाइ, से णं इच्छिज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए १।

अहुणोववन्नए देवे देव-लोएसु दिव्वेहिं काम-भोगेहिं मुच्छिए-जाव-अज्झोववन्ने, तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्नए भवइ, दिव्वे पेम्मे संकंते भवइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए २।

अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं काम-भोगेहिं मुच्छिए-जाव-अज्झोववन्ने, तस्स णं एवं भवइ-इयाणिं गच्छं, मुहुत्तं गच्छं-जाव-इह अप्पाउया नरा काल-धम्मुणा संजुत्ता भवंति, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ३।

अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं-जाव-अज्झोववन्ने तस्स माणुस्सए उराले, दुग्गंधे, पडिकूले, पडिलोमे भवइ, उड्ढं पि य णं चत्तारि पंच जोयण-सयाइं असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ४।

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववन्ने देवे देव-लोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं, नो तं जीवो, तं सरीरं" ॥२॥

३-४. केसिकुमारसमणवत्तव्वे जीवस्स अप्पडियहयगईए समत्थणं

४७ तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—

"अत्थि णं भंते ! एसा पन्ना उवमा। इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ। एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाण-सालाए [अणेग-गणनायग-दण्डनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि। तए णं मम नगर-गुत्तिया सस्सक्खं सलोद्दं सगेवेज्जं अवओडय-बन्धण-बद्धं चोरं उवणेन्ति। तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अओकुंभीए पक्खिवावेमि, अओमएणं पिहाणएणं पिहावेमि, अएण य तउएण य आयावेमि, आय-पच्चइयएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि।

तए णं अहं अन्नया कयाइ जेणामेव सा अओकुंभी, तेणामेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता तं अओकुंभिं उग्गलच्छावेमि, उग्गलच्छावित्ता, तं पुरिसं सयमेव पासामि। नो चेव णं तीसे अओकुंभीए केइ छिड्डे इ वा विवरे इ वा अंतरे इ वा राई इ वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए। जइ णं भंते ! तीसे अओकुंभीए होज्जा केइ छिड्डे वा-जाव-राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए, तो णं अहं सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोएज्जा, जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं, नो तं जीवो, तं सरीरं। जम्हा णं भंते ! तीसे अओकुंभीए नत्थि केइ छिड्डे वा-जाव-निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइन्ना, जहा तं जीवो, तं सरीरं, नो अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं" ॥

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—

"पएसी ! से जहा-नामए कूडा-गार-साला सिया, दुहओ-लित्ता गुत्ता गुत्त-दुवारा निवाय-गम्भीरा। अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागार-सालाए अंतो अंतो अणुपविसइ, अणुपविसित्ता तीसे कूडागार-सालाए सव्वओ, समन्ता घण-निचिय-निरन्तर-निच्छिड्डाइं दुवार-वयणाइं पिहेइ। तीसे कूडागार-सालाए बहु-मज्झ-देस-भाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया महया सद्देणं तालेज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से नूणं पएसी ! से णं सद्दे अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ ?"

"हंता निग्गच्छइ"।

"अत्थि णं पएसी ! तीसे कूडागारसालाए केइ छिद्दे वा-जाव-राई वा जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया निग्गए ?"

"नो इणट्ठे समट्ठे"।

"एवामेव पएसी ! जीवे वि अप्पडिहय-गई पुढविं भिच्चा, सिलं भिच्चा, पव्वयं भिच्चा, अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! अन्नो जीवो, तं चेव"।।३।।

४८ तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी--

"अत्थि णं भंते ! एसा पन्ना उवमा। इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ। एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाण-सालाए-जाव-विहरामि। तए णं ममं नगर-गुत्तिया ससक्खं-जाव-उवणेंति। तए णं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि, ववरोवेत्ता अओकुंभीए पक्खिवामि, अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि-जाव-पच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि। तए णं अहं अन्नया कयाइ जेणेव सा कुंभी तेणेव उवागच्छामि, तं अउ-कुंभि उग्गलच्छावेमि। तं अउकुंभि किमि-कुंभि पिव पासामि। नो चेव णं तीसे अउ-कुंभीए केइ छिद्दे वा-जाव-राई वा, जओ णं ते जीवा बहियाहिंतो अंतो अणुपविट्ठा। जइ णं तीसे अउ-कुंभीए होज्ज केइ छिद्दे-जाव-अणुपविट्ठा, तए णं अहं सद्दहेज्जा जहा अन्नो जीवो तं चेव। जम्हा णं तीसे अउ-कुंभीए नत्थि केइ छिद्दे वा-जाव-अणुपविट्ठा तम्हा सुपइट्ठिया मे पइन्ना, जहा तं जीवो, तं सरीरं तं चेव"।।

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी--

"अत्थि णं तुमे पएसी ! कयाइ अए धंत-पुव्वे वा धमाविय-पुव्वे वा ?"

"हंता अत्थि"।

"से नूणं पएसी ! अए धंते समाणे सव्वे अगणि-परिणए भवइ ?"

"हंता भवइ"।

"अत्थि णं पएसी ! तस्स अयस्स केइ छिद्दे वा-जाव-राई इ वा, जेणं से जोई बहियाहिंतो अंतो अणुपविट्ठे ?"

"नो इणट्ठे समट्ठे"।

"एवामेव पएसी ! जीवो वि अप्पडिहय-गई पुढविं भिच्चा, सिलं भिच्चा, बहियाहिंतो अंतो अणुपविसइ। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! तहेव"।।४।।

५-६. केसिकुमारसमणवत्तव्वे जीव-सरीराणं अन्नत्तसमत्थणे अपज्जत्तोवगरणहेउनिरूवणं

४९ तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी--

"अत्थि णं भंते ! एसा पन्ना उवमा। इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ। अत्थि णं भंते ! से जहा-नामए केइ पुरिसे-तरुणे -जाव-सिप्पोवगए पभू पंच-कंडगं निसिरित्तए ?"

"हंता पभू"।

"जइ णं भंते ! सो चेव पुरिसे बाले-जाव-मंद-विन्नाणे पभू होज्जा पंच-कंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा, जहा अन्नो जीवो तं चेव। जम्हा णं भंते ! स चेव से पुरिसे-जाव-मंद-विन्नाणे नो पभू पंच-कंडगं निसिरित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइन्ना, जहा तं जीवो तं चेव"।।

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी--

"से जहा-नामए केइ पुरिसे तरुणे-जाव-सिप्पोवगए नवएणं धणुणा, नवियाए जीवाए, नवएणं उसुणा पभू पंच-कंडगं निसिरित्तए ?"

"हंता पभू"।

"सो चेव णं पुरिसे तरुणे-जाव-निउण-सिप्पोवगए कोरिल्लिएणं धणुणा, कोरिल्लियाए जीवाए, कोरिल्लिएणं उसुणा पभू पंच-कंडगं निसिरित्तए ?"

"नो इणट्ठे समट्ठे"।

"कम्हा णं ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"भंते! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति"।

"एवामेव पएसी! से चेव पुरिसे बाले-जाव-मंद-विन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, नो पभू पंच-कंडगं निसिरित्तए। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो तं चेव"॥५॥

५० तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी--

"अत्थि णं भंते! एसा पन्ना उवमा, इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ। भंते! से जहा-नामए केइ पुरिसे तरुणे-जाव-सिप्पोवगए पभू एगं महं अय-भारगं वा तउय-भारगं वा सीसग-भारगं वा परिवहित्तए?"

"हंता पभू"।

"सो चेव णं भंते! पुरिसे जुण्णे, जरा-जज्जरिय-देहे, सिढिल-वलित-यावि-णट्ठ-गत्ते, दण्ड-परिग्गहियग्गहत्थे, पविरल-परिसडिय-दंत-सेढी, आउरे, किसिए, पिवासिए, दुब्बले, किलंते, नो पभू एगं महं अय-भारगं वा-जाव-परिवहित्तए। जइ णं भंते! से चेव पुरिसे जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे-जाव-परिकिलंते पभू एगं महं अय-भारं वा-जाव-परिवहित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा०, तहेव। जम्हा णं भंते। से चेव पुरिसे जुण्णे-जाव-किलंते नो पभू एगं महं अय-भारं वा-जाव-परिवहित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइन्ना०, तहेव"॥
तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी--

"से जहा-नामए केइ पुरिसे तरुणे-जाव-सिप्पोवगए, नवियाए विहंगियाए, नवएहिं सिक्कएहिं नवएहिं पत्थिय-पिडएहिं पहू एगं महं अय-भारं-जाव-परिवहित्तए?"

"हंता पभू"।

"पएसी! से चेव णं पुरिसे तरुणे-जाव-सिप्पोवगए, जुण्णियाए, दुब्बलियाए, घुण-क्खइयाए विहंगियाए, दुब्बलएहिं, जुण्णएहिं, घुण्ण-क्खइएहिं, सिढिल-तया-पिणद्धएहिं सिक्कएहिं जुण्णएहिं, दुब्बलएहिं, घुणक्खइएहिं, पत्थिय-पिडएहिं पभू एगं महं अय-भारं वा-जाव-परिवहित्तए?"

"नो इणट्ठे समट्ठे"।

"कम्हा णं?"

"भंते! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं हवंति"।

"पएसी! से चेव से पुरिसे जुन्ने-जाव-किलंते जुण्णोवगरणे नो पभू एगं महं अय-भारं वा-जाव-परिवहित्तए। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं"॥६॥

७. केसिकुमारसमणवत्तव्वे जीवस्स अगुरुलहुयत्तं

५१ तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी--

"अत्थि णं भंते!-जाव-नो उवागच्छइ। एवं खलु भंते!-जाव-विहरामि। तए णं मम नगर-गुत्तिया चोरं उवणेंति। तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतगं चेव तुलेमि। तुलेत्ता छवि-च्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मयं तुलेमि। नो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स केइ आणत्ते वा नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लहुयत्ते वा। जइ णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स केइ अन्नत्ते वा-जाव-लहुयत्ते वा तो णं अहं सद्दहेज्जा, तं चेव। जम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवं-तस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ आणत्ते वा लहुयत्ते वा तम्हा सुपइट्ठिया मे पइन्ना जहा तं जीवो, तं चेव"०।

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी--

"अत्थि णं पएसी! तुमे कयाइ बत्थी धंत-पुव्वे वा धमाविय-पुव्वे वा?"

"हंता अत्थि"।

"अत्थि णं पएसी! तस्स बत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ अन्नत्ते वा-जाव-लहुयत्ते वा?"

"नो इणट्ठे समट्ठे"।

"एवामेव पएसी! जीवस्स अगुरु-लघुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ आणत्ते वा-जाव-लहुयत्ते वा। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! तं चेव"॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. केसिकुमारसमणवत्तव्वे कट्ठगयअगणिदिट्ठंतेण जीवस्स अदंसणीयत्तं

५२ तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी--

"अत्थि णं भंते! एसा-जाव-नो उवागच्छइ। एवं खलु भंते! अहं अन्नया-जाव-चोरं उवणेंति। तए णं अहं तं पुरिसं सव्वओ, समन्ता समभिलोएमि। नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि। तए णं अहं तं पुरिसं दुहा-फालियं करेमि, करित्ता सव्वओ, समन्ता समभिलोएमि। नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि। एवं तिहा, चउहा संखेज्जफालियं करेमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि। जइ णं भंते! अहं तम्मि पुरिसम्मि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियम्मि जीवं पासंतो, तो णं अहं सद्दहेज्जा नो०, तं चेव। जम्हा णं भंते! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियम्मि जीवं न पासामि, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइन्ना, जहा तं जीवो तं सरीरं०, तं चेव"॥

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी--

"मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ तुच्छतराओ"।

"के णं भंते! तुच्छतराए?"

"पएसी! से जहा-नामए केई पुरिसा वणत्थी, वणोवजीवी, वण-गवेसणयाए जोइं च जोइ-भायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा। तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए-जाव-किंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी--

"अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो। एत्तो णं तुमं जोइ-भायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि। अह तं जोइ-भायणे जोई विज्झवेज्जा एत्तो णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि त्ति कट्टु कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा।

तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तंतरस्स तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोइ-भायणे तेणेव उवागच्छइ, जोइ-भाइणे जोइं विज्झायमेव पासइ। तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठंतेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ, नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ।

तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ, फरसुं गिण्हइ, तं कट्ठं दुहा-फालियं करेइ, सव्वओ समन्ता समभिलोएइ, नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ। एवं-जाव-संखेज्ज-फालियं करेइ, सव्वओ समंता समभिलोएइ, नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ। तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहा-फालिए वा-जाव-संखेज्ज-फालिए वा जोइं अपासमाणे संते, तंते परितंते निव्विण्णे समाणे, परसुं एगंते एडेइ, परियरं मुयइ, एवं वयासी--

"अहो मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए" त्ति कट्टु ओहय-मण-संकप्पे, चिन्तासोग-सागर-संपविट्ठे, करयल-पल्हत्थ-मुहे, अट्टज्झाणोवगए, भूमि-गय-दिट्ठिए झियाइ।

तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति, जेणेव से पुरिसे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं पुरिसं ओहय-मण-संकप्पं-जाव-झियायमाणं पासंति, एवं वयासी--

"किं णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहय-मण-संकप्पे-जाव-झियायसि?"

तए णं से पुरिसे एवं वयासी--

"तुब्भे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा ममं एवं वयासी--

"अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं-जाव-पविट्ठा। तए णं अहं तत्तो मुहुत्तंतरस्स तुज्झं असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोई -जाव-झियामि"।

तए णं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए, दक्खे पत्तट्ठे-जाव-उवएसलद्धे, ते पुरिसे एवं वयासी--

"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! ण्हाया हव्वमागच्छेह, जा णं अहं असणं साहेमि।"

त्ति कट्टु परियरं बन्धइ, बंधित्ता परसुं गिण्हइ, सरं करेइ, सरेण अरणिं महेइ, जोइं पाडेइ, जोइं संधुक्खेइ, तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ। तए णं ते पुरिसा ण्हाया, जेणेव से पुरिसे, तेणेव उवागच्छंति। तए णं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासण-वर-गयाणं तं विउलं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं उवणेइ। तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं-जाव-साइमं आसाएमाणा, वीसाएमाणा-जाव-विहरंति। जिमिय-भुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता, चोक्खा, परम-सुइ-भूया तं पुरिसं एवं वयासी--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अहो णं तुमं देवाणुप्पिया! जड्डे मूढे, अपंडिए निव्विन्नाणे, अणुवएस-लद्धे, जे णं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा-फालियंसि वा० जोइं पासित्तए'।

से एएणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी ताओ तुच्छतराओ" ॥८॥

केसिकुमारसमणनिद्दिट्ठं पएसिरन्नो ववहारित्तणं

५३ तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—

"जुत्तए णं भंते! तुम्हं इय छेयाणं, दक्खाणं, बुद्धाणं, कुसलाणं, महा-मईणं, विणीयाणं, विन्नाण-पत्ताणं, उवएसलद्धाणं अहं इमीसाए महालियाए महच्चपरिसाए मज्झे उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए, एवं उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भच्छित्तए उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए?"

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—

"जाणासि णं तुमं पएसी! कइ परिसाओ पन्नत्ताओ?"

"भंते! जाणामि, चत्तारि परिसाओ पन्नत्ता। तं जहा-खत्तिय-परिसा, गाहावइ-परिसा, माहण-परिसा, इसि-परिसा"।

"जाणासि णं तुमं पएसी राया! एयासिं चउण्हं परिसाणं कस्स का दण्ड-नीई पन्नत्ता?"

"हंता जाणामि। जे णं खत्तिय-परिसाए अवरज्झइ से णं हत्थ-च्छिन्नए वा पाय-च्छिन्नए वा सीस-च्छिन्नए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ। जे णं गाहावइ-परिसाए अवरज्झइ से णं तएण वा वेढेण वा पलालेण वा वेढित्ता अगणि-काएणं झामिज्जइ। जे णं माहण-परिसाए अवरज्झइ से णं अणिट्ठाहिं अकंताहिं-जाव-अमणामाहिं, वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडिया-लंछणए वा सुणग-लंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ।

जे णं इसि-परिसाए अवरज्झइ से णं नाइ-अणिट्ठाहिं-जाव-नाइ-अमणामाहिं, वग्गूहिं उवालब्भइ"।

"एवं च ताव पएसी! तुमं जाणासि, तहा वि णं तुमं ममं वामं-वामेणं दंडं-दंडेणं, पडिकूलं-पडिकूलेणं, पडिलोमं-पडिलोमेणं विवच्चासं-विवच्चासेणं वट्टसि"।

तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—

"एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लएणं चेव वागरणेणं संलत्ते। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था-जहा-जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामं-वामेणं-जाव-विवच्चासं-विवच्चासेणं वट्टिस्सामि, तहा-तहा णं अहं नाणं च नाणोवलम्भं च करणं च करणोवलम्भं च दंसणं च दंसणोवलम्भं च जीवं च जीवोवलम्भं च उवलभिस्सामि। तं एएणं कारणेणं अहं देवाणुप्पियाणं वामंवामेणं-जाव-विवच्चा-संविवच्चासेणं वट्टिए"।

तए णं केसी कुमार-समणे पएसीरायं एवं वयासी—

"जाणासि णं तुमं पएसी। कइ ववहारगा पन्नत्ता?"

"हंता जाणामि, चत्तारि ववहारगा पन्नत्ता-देइ नामेगे, नो सन्नवेइ; सन्नवेइ, नामेगे नो देइ; एगे देइ वि, सन्नवेइ वि; एगे नो देइ, नो सन्नवेइ"।

"जाणासि णं तुमं पएसी! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी, के अव्ववहारी?"

"हंता जाणामि, तत्थ णं जे से पुरिसे देइ, नो सन्नवेइ, से णं पुरिसे ववहारी; तत्थ णं जे से पुरिसे नो देइ, सन्नवेइ, से णं पुरिसे ववहारी; तत्थ णं जे से पुरिसे देइ वि, सन्नवेइ वि से णं पुरिसे ववहारी; तत्थ णं जे से पुरिसे नो देइ, नो सन्नवेइ, से णं अववहारी"।

"एवामेव तुमं पि ववहारी, नो चेव णं तुमं पएसी! अववहारी" ॥

केसिकुमारनिद्दिट्ठं जीवस्य अंदसणीयत्तं

५४ तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—

"तुब्भे णं भंते! इय छेया, दक्खा-जाव-उवएसलद्धा। समत्था णं भंते! ममं करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ताणं उवदंसित्तए?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणं कालेणं, तेणं समएणं पएसिस्स रन्नो अदूर-सामंते वाउ-काए संवुत्ते, तण-वणस्सइ-काए एयइ, वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ।

तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी--

"पाससि णं तुमं पएसी राया! एयं तण-वणस्सइं एयंतं-जाव-तं तं भावं परिणमंते?"

"हंता पासामि"।

"जाणासि णं तुमं पएसी! एयं तण-वणस्सइ-कायं किं देवो चालेइ, असुरो वा चालेइ, नागो वा किन्नरो वा चालेइ, किंपुरिसो वा चालेइ, महोरगो वा चालेइ, गंधव्वो वा चालेइ?"

"हंता जाणामि, नो देवो चालेइ-जाव-नो गंधव्वो वा चालेइ, वाउ-काए चालेइ"।

"पाससि णं तुमं पएसी! एयस्स वाउ-कायस्स सरूविस्स, सकामस्स सरागस्स, समोहस्स, सवेयस्स सलेसस्स, ससरीरस्स रूवं"? "नो इणट्ठे समट्ठे"।

"जइ णं तुमं पएसी राया! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स-जाव-ससरीरस्स रूवं न पाससि, तं कहं णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि?"

एवं खलु पएसी! दस-ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्व-भावेणं न जाणइ, न पासइ, तं जहा--धम्मत्थिकायं १, अधम्मत्थिकायं २, आगासत्थिकायं ३, जीवं असरीरबद्धं ४, परमाणुपोग्गलं ५, सद्दं ६, गन्धं ७, वायं ८, अयं जिणे भविस्सइ नो वा भविस्सइ ९, अयं सव्व-दुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा नो वा करिस्सइ १०।

एयाणि चेव उप्पन्न-नाण-दंसण-धरे अरहा जिणे केवली सव्व-भावेणं जाणइ, पासइ। तं जहा--धम्मत्थिकायं-जाव-नो वा करिस्सइ। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो०, तं चेव"॥

केसिकुमारसमणनिद्दिट्ठं जीवपएसाणं सरीरपमाणावगाहित्तं

५५ तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी--

"से नूणं भंते! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे?"

"हंता पएसी! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे"।

"से नूणं भंते! हत्थीओ कुंथू अप्प-कम्मतराए चेव अप्प-किरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव, एवं आहार-निहार-उस्सासनीसा-सइड्ढीए अप्पतराए चेव, एवं च कुंथुओ हत्थी महा-कम्मतराए चेव महाकिरिय० तराए चेव?"

"हंता पएसी! हत्थीओ कुंथू अप्प-कम्मतराए चेव०, कुंथुओ वा हत्थी महा-कम्मतराए चेव० तं चेव"।
"कम्हा णं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे?"

"पएसी से जहा-नामए कूडागार-साला सिया-जाव-गम्भीरा। अह णं केइ पुरिसे जोइं वा दीवं वा गहाय तं कूडागार-सालं अंतो अंतो अणुपविसइ। तीसे कूडागार-सालाए सव्वओ समंता घण-निचिय-निरंतर-निच्छिड्डाइं दुवार-वयणाइं पिहेइ, पिहेत्ता तीसे कूडागार-सालाए बहु-मज्झ-देस-भाए तं पईवं पलीवेज्जा। तए णं से पईवे तं कूडागार-सालं अंतो अंतो ओभासइ, उज्जोवेइ, तवइ, पभासेइ, नो चेव णं बाहिं। अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्ढरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्ढरयं अंतो अंतो ओभासेइ -जाव-पभासइ, नो चेव णं इड्ढरगस्स बाहिं, नो चेव णं कूडागार-सालाए बाहिं। एवं किंलिजेणं, गंडमाणियाए, पत्थिय-पिडएणं, आढएणं, अद्धाढएणं, पत्थएणं, अद्ध-पत्थएणं, कुलवेणं, अद्ध-कुलवेणं, चाउ-ब्भाइयाए, अट्ठ-भाइयाए, सोलसियाए अंतो बत्तीसियाए, चउसट्ठियाए, दीव-चंपएणं। तए णं से पईवे दीव-चंपगस्स अंतो अंतो ओभासइ-जाव-पभासइ, नो चेव णं दीव-चंपगस्स बाहिं, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, नो चेव णं कूडागार-सालं, नो चेव णं कूडागार-सालाए बाहिं।
एवामेव पएसी! जीवे वि जं जारिसयं पुव्व-कम्म-निबद्धं बोंदिं निव्वत्तेइ, तं असंखेज्जेहिं जीव-पएसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा। तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो०, तं चेव"॥

केसिकुमारसमणवत्तव्वे अयहारयदिट्ठंतेण पच्छाणुतावनिसेहपरूवणं

५६ तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एवं खलु भंते! मम अज्जगस्स एसा सन्ना-जाव-समोसरणे, जहा तं जीवो, तं सरीरं, नो अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं। तयणंतरं च णं ममं पिउणो वि एसा सन्ना०। तयणंतरं मम वि एसा सन्ना-जाव-समोसरणे। तं नो खलु अहं बहु-पुरिस-परंपरागयं कुल-निस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि"।

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी--

"मा णं तुमं पएसी! पच्छाणुतावए भवेज्जासि जहा व से पुरिसे अय-हारए"।

"के णं भंते! से अय-हारए?"

"पएसी! से जहा-नामए केई पुरिसा अत्थत्थी, अत्थ-गवेसी, अत्थ-लुद्धगा, अत्थ-कंखिया, अत्थ-पिवासिया, अत्थ-गवेसणयाए विउलं पणिय-भंडमायाए सुबहुं भत्त-पाण-पत्थयणं गहाय, एगं महं अगामियं, छिन्नावायं, दीहमद्धं अडविं अणु-पविट्ठा। तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा, एगं महं अयागरं पासंति, अएणं सव्वओ समंता आइण्णं, वित्थिण्णं, सच्छडं, उवच्छडं, फुडं, गाढं, अवगाढं, पासंति, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियया अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी--

"एस णं देवाणुप्पिया! अय-भंडे इट्ठे, कंते-जाव-मणामे। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अय-भारए बंधित्तए"

त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता अय-भारं बंधंति, बंधित्ता अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए-जाव-अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति, तउएणं आइण्णं तं चेव-जाव-सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"एस णं देवाणुप्पिया! तउय-भंडे-जाव-मणामे। अप्पेणं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अय-भारए छड्डेत्ता तउय-भारए बंधित्तए"।

त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अय-भारं छड्डेन्ति, तउय-भारं बंधंति।

तत्थ णं एगे पुरिसे नो संचाएइ अय-भारं छड्डित्तए, तउय-भारं बंधित्तए। तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी--

"एस णं देवाणुप्पिया! तउय-भंडे-जाव-सुबहुं अए लब्भइ। तं छड्डेहि णं देवाणुप्पिया! अय-भारगं, तउय-भारगं बंधाहि'।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी--

'दूराहडे मे देवाणुप्पिया! अए; चिराहडे मे देवाणुप्पिया! अए; अइ-गाढ-बंधण-बद्धे मे देवाणुप्पिया! अए; असिलिट्ठ-बंधण-बद्धे मे देवाणुप्पिया! अए; धणिय-बंधण-बद्धे मे देवाणुप्पिया! अए; नो संचाएमि अय-भारगं छड्डेत्ता, तउय-भारगं बंधित्तए।

तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा, तया अहाणु-पुव्वीए संपत्थिया।

एवं तंबागरं, रुप्पागरं, सुवण्णागरं, रयणागरं, वइरागरं।

तए णं ते पुरिसा जेणेव सया सया जणवया, जेणेव साइं साइं नयराइं, तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता वइर-विक्कयणं करेंति, करेत्ता सुबहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलगं गिण्हंति, गेण्हित्ता अट्ठ-तलमूसिय-वंडिसगे कारावेंति। ण्हाया कयबलिकम्मा उप्पिं पासाय-वर-गया, फुट्टमाणेहिं मुइंग-मत्थएहिं, बत्तीसइ-बद्धएहिं नाडएहिं वर-तरुणी-संपउत्तेहिं उवनच्चिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा, इट्ठे सद्दफरिस-जाव-विहरंति।।

तए णं से पुरिसे अय-भारेण जेणेव सए नयरे तेणेव उवागच्छइ। अय-विक्किणणं करेइ, करेत्ता तंसि अप्प-मोल्लंसि निहियंसि झीण-परिव्वए ते पुरिसे उप्पिं पासाय-वर-गए-जाव-विहरमाणे पासइ, पासित्ता एवं वयासी--

'अहो णं अहं अधन्ने, अपुण्णे, अकयत्थे अकय-लक्खणे, हिरि-सिरि-वज्जिए, हीण-पुण्ण-चाउद्दसे, दुरंत-पंत-लक्खणे। जइ णं अहं मित्ताण वा नाईण वा नियगाण वा सुणेंतओ, तो णं अहं पि एवं चेव उप्पिं पासाय-वर-गए-जाव-विहरंतो'।

से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ--"मा णं तुमं पएसी! पच्छाणुतावए भवेज्जासि जहा व से पुरिसे अय-हारए"।।

पएसिरन्नो गिहिधम्मपडिवत्ती, रमणिज्ज-अरमणिज्जविसए वणसंडाइदिट्ठंता य

५७ एत्थ णं से पएसी राया संबुद्धे केसिं कुमार-समणं वंदइ एवं वयासी--

"नो खलु भंते! अहं पच्छाणुतावए भविस्सामि जहा व से पुरिसे अयहारए। तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलि-पन्नत्तं धम्मं निसामित्तए"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि"।

धम्मकहा जहा चित्तस्स, तहेव गिहि-धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता जेणेव सेयविया नयरी, तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी–

"जाणसि तुमं पएसी! कइ आयरिया पन्नत्ता?"

"हंता जाणामि, तओ आयरिया पन्नता। तं जहा–कलायरिए, सिप्पायरिए, धम्मायरिए।"

"जाणासि णं तुमं पएसी! तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणय-पडिवत्ती पउंज्जियव्वा?"

"हंता जाणामि, कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा, पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा, मज्जावेज्जा, मंडावेज्जा, भोयावेज्जा वा, विउलं जीवियारिहं पीइ-दाणं दलएज्जा, पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा। जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा, तत्थेव वंदेज्जा, नमंसेज्जा, सक्कारेज्जा, संभाणेज्जा, कल्लाणं, मङ्गलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासेज्जा, फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढफलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतेज्जा।"

"एवं च ताव तुमं पएसी! एवं जाणासि, तहा वि णं तुमं ममं वामं-वामेणं-जाव-वट्टित्ता ममं एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए"।

तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी–

"एवं खलु भंते! मम एया-रूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था–

"एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामं-वामेणं-जाव-वट्टिए, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउ-प्पभायाए रयणीए-जाव-तेयसा जलंते, अंतेउर-परियाल-सद्धिं संपरिवुडस्स देवाणुप्पिए वंदित्तए, नमंसित्तए, एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो सम्मं विणएणं खामित्तए"–

त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए।।

५८ तए णं से पएसी राया कल्लं पाउ-प्पभायाए रयणीए-जाव-तेयसा जलंते, हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए, जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ, अंतेउर-परियाल-सद्धिं संपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ, नमंसइ, एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो सम्मं विणएणं खामेइ।।

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिस्स रन्नो, सूरियकन्त-प्पमुहाणं देवीणं, तीसे य महइमहालियाए महच्चपरिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ। तए णं पएसी राया धम्मं सोच्चा, निसम्म उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता केसिं कुमार-समणं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव सेयविया नयरी, तेणेव पहारेत्थ गमणाए।।

तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी–

"मा णं तुमं पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता, पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा से वण-संडे इ वा नट्ट-साला इ वा इक्खु-वाडए इ वा खल-वाडए इ वा"।

"कहं णं भंते?"

'जया णं वण-संडे पत्तिए, पुप्फिए, फलिए, हरियग-रेरिज्जमाणे, सिरीए अईव अईव अवसोभेमाणे चिट्ठइ, तया णं वण-संडे रमणिज्जे भवइ। जया णं वण-संडे नो पत्तिए, नो पुप्फिए, नो फलिए, नो हरियग-रेरिज्जमाणे, नो सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ, तया णं जुण्णे, झडे, परिसडिय-पंडु-पत्ते, सुक्क-रुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ, तया णं वण-संडे नो रमणिज्जे भवइ।

जया णं नट्ट-साला वि गिज्जइ, वाइज्जइ, नच्चिज्जइ, हसिज्जइ, रमिज्जइ, तया णं नट्ट-साला रमणिज्जा भवइ। जया णं नट्ट-साला नो गिज्जइ-जाव-नो रमिज्जइ, तया णं नट्ट-साला अरमणिज्जा भवइ।

जया णं इक्खु-वाडे छिज्जइ, भिज्जइ, सिज्जइ, पिज्जइ, दिज्जइ, तया णं इक्खु-वाडे रमणिज्जे भवइ। जया णं इक्खु-वाडे नो छिज्जइ-जाव-तया णं इक्खु-वाडे अरमणिज्जे भवइ।

जया णं खल-वाडे उच्छुब्भइ, उड्डइज्जइ, मलइज्जइ, मुणिज्जइ, खज्जइ, पिज्जइ दिज्जइ, तया णं खल-वाडे रमणिज्जे भवइ। जया णं खल-वाडे नो उच्छुब्भइ-जाव-अरमणिज्जे भवइ।

से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ, मा णं तुमं पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता, पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा से वण-संडे इ वा।"

तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"नो खलु भंते! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता, पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि, जहा से वण-संडे इ वा-जाव-खल-वाडे इ वा। अहं णं सेयवियं-नयरी-पामोक्खाइं सत्त गाम-सहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि। एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि, एगं भागं कोट्ठागारे छुभिस्सामि, एगं भागं अंते-उरस्स दलइस्सामि, एगेणं भागेणं महइ-महालयं कूडागार-सालं करिस्सामि। तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्न-भइ-भत्त-वेयणेहिं विउलं असणं-जाव-साइमं-उवक्खडावेत्ता, बहूणं, समण-माहण-भिक्खुयाणं पन्थिय-पहियाणं परिभाएमाणे परिभाएमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासस्स-जाव-विहरिस्सामि"।

त्ति कट्टु जामेव दिसिं, पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥

तए णं से पएसी राया कल्लं-जाव-तेयसा जलंते सेयवियं-पामोक्खाइं सत्त गाम-सहस्साइं चत्तारि भाए करेइ। एगं भागं बलवाहणस्स दलइ-जाव-कूडागार-सालं करेइ, तत्थ णं बहूहिं पुरसेहिं-जाव-उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-जाव-परिभाएमाणे विहरइ॥

सूरियकंताकयविसप्पओगो, पएसिस्स समाहिमरणं, सूरियाभदेवत्तेण उववाओ य

५९ तए णं से पएसी राया समणोवासए जाए अभिगय-जीवाजीवे-जाव-विहरइ। जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ। तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था–

"जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए, तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च-जाव-अंतेउरं च ममं च जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ। तं सेयं खलु मे पएसिं रायं केण वि सत्थ-पओगेण वा अग्गि-पओगेण वा मन्त-प्पओगेण वा विस-प्पओगेण वा उद्दवेत्ता, सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता, सयमेव रज्ज-सिरिं कारेमाणीए, पालेमाणीए विहरित्तए"–

त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

"जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए, तप्पभिइं च णं रज्जं च-जाव-अंतेउरं च ममं च जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ। तं सेयं खलु तव पुत्ता! पएसिं रायं केणइ सत्थ-प्पओगेण वा-जाव-उद्दवित्ता सयमेव रज्ज-सिरिं कारेमाणे, पालेमाणे विहरित्तए"।

तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव- समुप्पज्जित्था––

"मा णं सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रन्नो इमं ममं रहस्स-भेयं करिस्सइ"

त्ति कट्टु पएसिस्स रन्नो छिद्दाणि य मम्माणि य रहस्साणि य विवराणि य अंतराणि य पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ। तए णं सूरियकंता देवी अन्नया कयाइ पएसिस्स रन्नो अंतरं जाणइ, जाणित्ता असणं-जाव-साइमं सव्व-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं विस-प्पओगं पउंजइ। पएसिस्स रन्नो ण्हायस्स, सुहासण-वर-गयस्स तं विस-संजुत्तं असणं-जाव-साइमं वत्थं-जाव-अलंकारं निसिरेइ, घायइ। तए णं तस्स पएसिस्स रन्नो तं विस-संजुत्तं असणं-जाव-साइमं आहारेमाणस्स सरीरगम्मि वेयणा पाउब्भूया उज्जला, विउला पगाढा, कक्कसा, कडुया, फरुसा, णिट्ठुरा, चंडा, तिव्वा, दुक्खा, दुग्गा, दुरहियासा, पित्त-जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कन्तिए यावि विहरइ॥

६० तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अत्ताणं संपलद्धं जाणित्ता, सूरियकंताए देवीए मणसा वि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसह-साला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसह-सालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपा-सवण-भूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भ-संथारगं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भ-संथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलिय-निसण्णे, करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं अञ्जलिं मत्थए कट्टु एवं वयासी––

'नमोत्थु णं अरहंताणं-जाव-संपत्ताणं। नमोत्थु णं केसिस्स कुमार-समणस्स मम धम्मोवएसगस्स, धम्मायरियस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थ-गयं इहगए। पासउ मं भगवं तत्थ-गए इह-गयं" त्ति कट्टु वंदइ, नमंसइ।

"पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए थूल-पाणाइवाए पच्चक्खाए-जाव-परिग्गहे। तं इयाणिं पि णं तस्सेव भगवओ अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि-जाव-परिग्गहं, सव्वं कोहं-जाव-मिच्छा-दंसण-सल्लं, अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि, चउ-व्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि, जं पि य मे सरीरं इट्ठं-जाव-फुसंतु त्ति एयं पि य णं चरिमेहिं ऊसास-निस्सासेहिं वोसिरामि"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, काल-मासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे, सूरियाभे विमाणे उववाय-सभाए-जाव-उववण्णो। तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए चेव समाणे पञ्चविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ। तं जहा—आहार-पज्जत्तीए सरीर-पज्जत्तीए इन्दिय-पज्जत्तीए आण-पाण-पज्जत्तीए भासा-मण पज्जत्तीए।

तं एवं खलु भो सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देव-जुई, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे, पत्ते, अभिसमन्नागए"।

सूरियाभदेवभवाणंतरं पएसिरायजीवस्स दढपइन्नभवे मोक्खगमणनिरूवणं

६१ "सूरियाभस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता?"

"गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता"।

"से णं सूरियाभे देवे ताओ देव-लोगाओ आउ-क्खएणं, भव-क्खएणं, ठिइ-क्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ?"

गोयमा! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं जहा—अड्ढाइं, दित्ताइं, विउलाइं, वित्थिण्ण-विपुल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइं, बहुधण-बहुजायरूव-रययाइं, आओग-पओग-संपउत्ताइं, विच्छड्डिय-पउर-भत्त-पाणाइं, बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूयाइं, बहु-जणस्स अपरिभूयाइं, तत्थ अन्नयरेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ।

तए णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्मा-पिऊणं धम्मे दढा पइन्ना भविस्सइ।

तए णं तस्स दारगस्स नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं, अद्धट्ठमाण राइंदियाणं, वीइक्कंताणं, सुकुमाल-पाणिपायं, अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरं, लक्खण-वंजण-गुणोववेयं, माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वङ्ग-सुंदरं, ससि-सोमाकारं, कंतं, पिय-दंसणं, सुरूवं दारयं पयाहिइ।

तए ण तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो पढमे दिवसे ठिइ-वडियं करेहिंति। तइय-दिवसे चंद-सूर-दंसणगं करिस्सन्ति। छट्ठे दिवसे जागरियं जागरिस्संति। एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते, संपत्ते, बारसाहे दिवसे, निव्वित्ते, असुइ-जाय-कम्म-करणे, चोक्खे, संमज्जिओवलित्ते, विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडा वेस्संति, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेत्ता, तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा-जाव-अलंकिया, भोयण-मंडवंसि सुहासण-वर-गया, तेण मित्त-नाइ-जाव-परिजणेण सद्धिं विउलं असणं-जाव-साइमं आसाएमाणा, विसाएमाणा, परिभुंजेमाणा, परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्संति। जिमिय-भुत्तत्तरागया वि य णं समाणा आयंता, चोक्खा, परम-सुइ-भूया तं मित्त-नाइ-जाव-परियणं विउलेणं वत्थ-गन्ध-मल्लालंकारेणं सक्कारेस्संति, संमाणिस्सन्ति, तस्सेव मित्त-जाव-परियणस्स पुरओ एवं वइस्संति—

जम्हा णं देवाणुप्पिया! इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइन्ना जाया, तं होउ णं अम्हं एयस्स दारयस्स दढपइन्ने नामेणं। तए णं तस्स दढपइन्नस्स दारगस्स अम्मा-पियरो नामधेज्जं करिस्संति—दढपइन्नो य दढपइन्नो य।

तए णं तस्स अम्मा-पियरो अणुपुव्वेणं ठिइ-वडियं च चंद-सूरिय-दरिसणं च धम्म-जागरियं च नामधेज्ज-करणं च पजेमणगं च पजंपणगं च पडिवद्धावणगं च पचंकमणगं च कण्ण-वेहणं च संवच्छर-पडिलेहणगं च चूलोवणयं च अन्नाणि य बहूणि गब्भाहाण-जम्मणाइयाइं महया इड्ढीसक्कार-समुदएणं करिस्संति॥

तए णं से दढपइन्ने दारए पंच-धाई-परिक्खित्ते—खीर-धाईए, मज्जण-धाईए, मंडण-धाईए, अंक-धाईए, कीलावणधाईए, अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं, चिलाइयाहिं, वामणियाहिं, वडभियाहिं, बब्बरीहिं, बउसियाहिं, जोण्हियाहिं, पण्णवियाहिं, ईसिगिणियाहिं, वारुणियाहिं, लासियाहिं, लउसियाहिं, दमिलीहिं, सिंहलीहिं, आरबीहिं, पुलिंदीहिं, पक्कणीहिं, बहलीहिं, मुरंडीहिं, सबरीहिं, पारसीहिं, नाणा-देसी-विदेस-परिमंडियाहिं, सदेस-नेवत्थ-गहिय-वेसाहिं, इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणाहिं, निउण-कुसलाहिं, विणीयाहिं चेडिया-चक्क-वाल-तरुणि-वंद-परियाल-परिवुडे, वरिसधर-कंचुइ-महयर-वंदपरिक्खित्ते, हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे, साहरिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे, अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे परिभुज्जमाणे उवगिज्झमाणे उवगिज्झमाणे उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवगूहिज्जमाणे उवगूहिज्जमाणे, अवयासिज्जमाणे अवयासिज्जमाणे परियंदिज्जमाणे परियंदिज्जमाणे, परिचुंबिज्जमाणे परिचुंबिज्जमाणे, रम्मेसु मणि-कोट्टिम-तलेसु परंगमाणे परंगमाणे, गिरि-कंदरमल्लीणे विव चंपग-वर-पायवे, निवाय-निव्वाघायंसि सुहं-सुहेणं परिवड्ढस्सइ।

तए णं तं दढपइन्नं दारगं अम्मा-पियरो साइरेग-अट्ठ-वास-जायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं सव्वालंकार-विभूसियं करेत्ता, महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं कलायरियस्स उवणेहिंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कलायरिए तं दढपइन्नं दारगं लेहाइयाओ गणिय-प्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य पसिक्खावेहिइ य सेहावेहिइ य। तं जहा—

लेहं, गणियं, रूवं, नट्टं, गीयं, वाइयं, सर-गयं, पोक्खर-गयं, सम-तालं, जूयं, जणवायं, पासगं, अट्ठावयं, पोरेकच्चं, दगमट्टियं, अन्नविहिं पाण-विहिं, वत्थ-विहिं, विलेवण-विहिं, सयण-विहिं, अज्जं, पहेलियं, मागहियं [निद्दाइयं], गाहं, गीइयं, सिलोगं, हिरण्ण-जुत्तिं, सुवण्ण-जुत्तिं, चुण्ण-जुत्तिं, आभरण-विहिं, तरुणी-पडिकम्मं, इत्थि-लक्खणं, पुरिस-लक्खणं, हय-लक्खणं, गय-लक्खणं, गोण-लक्खणं, कुक्कुड-लक्खणं, छत्त-लक्खणं, दण्ड-लक्खणं, असि-लक्खणं, मणि-लक्खणं, कागणि-लक्खणं, वत्थु-विज्जं, नगर-माणं, खन्धावारं, चारं, पडिचारं, वूहं, पडिवूहं, चक्कवूहं, गरुल-वूहं, सगड-वूहं, जुद्धं, निजुद्धं, जुद्धाइजुद्धं, लट्ठि-जुद्धं, मुट्ठि-जुद्धं, बाहु-जुद्धं, लया-जुद्धं, ईसत्थं, छरु-प्पवायं, धणु-व्वेयं, हिरण्ण-पागं, सुवण्ण-पागं, सुत्त-खेडुं, वट्ट-खेडुं, नालिया-खेडुं, पत्त-च्छेज्जं, कडग-च्छेज्जं, सज्जीवं, निज्जीवं, सउण-रुयमिति।

तए णं से कलायरिए तं दढपइन्नं दारगं लेहाइयाओ गणिय-प्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेत्ता, सेहावेत्ता अम्मा-पिऊणं उवणेहिइ।

तए णं तस्स दढपइन्नस्स दारगस्स अम्मा-पियरो तं कलायरियं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति, संमाणिस्संति, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, पडिविसज्जेहिंति।।

तए णं से दढपइन्ने दारए उम्मुक्क-बालभावे, विन्नयपरिणय-मेत्ते, जोव्वण-गमणुप्पत्ते, बावत्तरि-कला-पण्डिए, अट्ठारस-विह-देसि-प्पगार-भासा-विसारए, नवङ्ग-सुत्त-पडिबोहए, गीय-रई, गंधव्व-नट्ट-कुसले, सिंगारागार-चारुवेसे, संगय-गय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास-संलाव-निउण-जुत्तोवयार-कुसले, हय-जोही, गय-जोही, रह-जोही, बाहुजोही, बाहु-प्पमद्दी, अलं-भोग-समत्थे, साहसिए, वियाल-चारी यावि भविस्सइ।

तए णं तं दढपइन्नं दारगं अम्मा-पियरो उम्मुक्क-बालभावं-जाव-वियाल-चारिं च वियाणित्ता, विउलेहिं अन्न-भोगेहि य पाण-भोगेहि य लेण-भोगेहि य वत्थ-भोगेहि य सयणभोगेहि य उवनिमंतेहिंति। तए णं से दढपइन्ने दारए तेहिं विउलेहिं अन्न-भोगेहिं-जाव-सयणभोगेहिं नो सज्जिहिइ, नो गिज्झिहिइ, नो मुच्छिहिइ, नो अज्झोववज्जिहिइ।

से जहा-नामए पउमुप्पले इ वा पउमे इ वा-जाव-सय-सहस्स-पत्ते इ वा पंके जाए, जले संवुड्ढे नोवलिप्पइ पंकरएणं, नोवलिप्पइ जल-रएणं, एवामेव दढपइन्ने वि दारए कामेहिं जाए, भोगेहिं संवड्ढिए, नोवलिप्पिहिइ कामरएणं० मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं। से णं तहा-रूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता, अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ। से णं अणगारे भविस्सइ, इरियासमिए-जाव-सुहुय-हुयासणे इव तेयसा जलंते।

तस्स णं भगवओ अणुत्तरेणं नाणेणं एवं दंसणेणं, चरित्तेणं, आलएणं, विहारेणं, अज्जवेणं, मद्दवेणं, लाघवेणं, खंतीए, गुत्तीए, मुत्तीए, अणुत्तरेणं सव्व-संजम-तव-सुचरिय-फल-निव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स, अणंते अणुत्तरे, कसिणे, पडिपुण्णे, निरावरणे, निव्वाघाए, केवल-वर-नाण-दंसणे समुप्पज्जिहिइ।

तए णं से भगवं अरहा, जिणे, केवली भविस्सइ, सदेव-मणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणिहिइ। तं जहा—आगइं, गइं, ठिइं, चवणं, उववायं, तक्कं, कडं, मणोमाणसियं, खइयं, भुत्तं, पडिसेवियं, आवीकम्मं, रहोकम्मं—अरहा, अरहस्सभागी, तं तं मण-वय-काय-जोगे वट्टमाणाणं सव्व-लोए सव्व-जीवाणं सव्व-भावे जाणमाणे, पासमाणे विहरिस्सइ।

तए णं दढपइन्ने केवली एया-रूवेणं विहारेणं विहरमाणे, बहूइं वासाइं केवलि-परियागं पाउणित्ता, अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता, बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ, जस्सट्ठाए कीरइ जिण-रूप्प-भावे, थेर-रूप्प-भावे-मुण्ड-भावे, केस-लोए, बम्भचेर-वासे अण्हाणगं, अदंतवणं, अणुवाहणगं, भूमि-सज्जा, फलह-सेज्जा, परघर-पवेसो, लद्धावलद्धाइं, माणावमाणाइं, परेसिं हीलणाओ, निंदणाओ, खिंसणाओ, तज्जणाओ, ताडणाओ, गरहणाओ, उच्चावया विरूवरूवा बावीसं परीसहोवसग्गा, गाम-कंटगा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेहिइ, आराहेत्ता चरिमेहिं उस्सास-निस्सासेहिं सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्व-दुक्खाणमंतं करेहिइ"।।

"सेवं भंते! सेवं भंते" त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।

रायप्प०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. महावीरतित्थे तुंगियाणगरीनिवासिणो समणोवासगा

समणोवासगवण्णओ

६२ तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगिया नामं नयरी होत्था—वण्णओ।

तीसे णं तुंगियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे पुप्फवतिए नामं चेइए होत्था—वण्णओ।

तत्थ णं तुंगियाए नयरीए बहवे समणोवासया परिवसंति—अड्ढा दित्ता वित्थिण्णविपुलभवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णा बहुधण-बहुजायरूव-रयया आयोग-पयोगसंपउत्ता विच्छड्डियविपुलभत्तपाणा बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेल यप्पभूया बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्ण-पावा आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिकरणबंध-मोक्खकुसला असहेज्जदेवासुर-नाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगादिएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता 'अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे', ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउर-घरप्पवेसा चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा, समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं ओसह-भेसज्जेणं पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

तुंगियाए पासावच्चिज्जथेरागमणं

६३ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रूवसंपन्ना विणयसंपन्ना नाणसंपन्ना दंसण-संपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जिइंदिया जियपरीसहा जीवियास-मरण-भयविप्पमुक्का तवप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा निग्गहप्पहाणा निच्छयप्पहाणा मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा लाघवप्पहाणा खंतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जाप्पहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा चारुपण्णा सोही अणियाणा अप्पुस्सुया अबहिल्लेसा सुसामण्णरया अच्छिद्दपसिणवागरणा कुत्तियावणभूया बहुस्सुया बहुपरिवारा पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा अहाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव तुंगिया नगरी जेणेव पुप्फवइए चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

थेराणं समणोवासगेहिं पज्जुवासणा

६४ तए णं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु-जाव-एगदिसाभिमुहा निज्जायंति।

तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना -जाव-अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्य अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! थेरे भगवंते वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो। एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति" इति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइं-सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर-परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेलायंति, मेलायित्ता पायविहार-चारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फवतिए चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति, तं जहा—१. सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए २. अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं ४. चक्खुप्फासे अंजलिप्पग्गहेणं ५. मणसो एगत्तीकरणेणं; जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति।[1]

भग० स० २, उ० ५।

---

४. महावीरतित्थे नंदमणियारकहाणगं।

दद्दुरदेवेण महावीरसमोसरणे नट्टविही

६५ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। समोसरणं। परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सूरियाभ-जाव-दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे-जाव-नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए, जहा—सूरियाभे।

गोयमस्स पुच्छाए भगवंमहावीरपरूवियं दद्दुरदेवपुव्वभवनिबद्धं नंदमणियारकहाणयं

६६ 'भंते!' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"अहो णं भंते! दद्दुरे देवे महिड्ढिए महज्जुईए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभागे।

दद्दुरस्स णं भंते! देवस्स या दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गए? कहिं अणुपविट्ठे?"
"गोयमा! सरीरं गए सरीरं अणुपविट्ठे। कूडागारदिट्ठंतो।"

६७ "दद्दुरेणं भंते! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे? किणा पत्ते? किणा अभिसमण्णागए?"
"एवं खलु गोयमा! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया॥

तत्थ णं रायगिहे नंदे नामं मणियारसेट्ठी—अड्ढे दित्ते-जाव-अपरिभूए।

नंदस्स धम्मपडिवत्ती

६८ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! समोसढे। परिसा निग्गया। सेणिए वि निग्गए।
तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे पायविहारचारेणं-जाव-पज्जुवासइ।
नंदे मणियारसेट्ठी धम्मं सोच्चा समणोवासए जाए॥
तए णं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खंते बहिया जणवयविहारेणं विहरामि।

नंदस्स मिच्छत्तपडिवत्ती

६९ तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं-परिहायमाणेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं-परिवड्ढमाणेहिं मिच्छत्तं विप्पडिवण्णे जाए यावि होत्था।
तए णं नंदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ, परिगेण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी उम्मुक्क-मणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए विहरइ।

---

१. तुंगियासमणोवासगाणं पासवच्चिज्जेहिं थेरेहिं सह पण्हुत्तराइं संजाताइं। तंदट्ठं दट्ठव्वो चरणाणुयोगो दट्ठव्वा य भगवई स० २, उ० ५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदेण पोक्खरिणी-निम्माण

७० तए णं नंदस्स अट्ठममत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था–'धण्णा णं ते ईसरपभियओ, संपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयत्था णं ते ईसरपभियओ, कयपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयलक्खणा णं ते ईसरपभियओ कयविभवा णं ते ईसरपभियओ, जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरिणीओ दीहियाओ गुंजालियाओ सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ, जत्थ णं बहुजणो ण्हाइ य पियइ य पाणियं च संवहइ। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सेणियं रायं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढग-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेत्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पोसहं पारेइ, पारेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ-जाव-पाहुडं उवट्ठवेइ, उवट्ठवेत्ता एवं वयासी–'इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढग-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेत्तए'।

'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता वत्थुपाढय-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेउं पयत्ते यावि होत्था।।

तए णं सा नंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खम्ममाणा-खम्ममाणा पोक्खरणी जाया यावि होत्था––चाउक्कोणा समतीरा अणुपुव्वं सुजायवप्पसीयलजला संछन्न-पत्त-भिसमुणाला बहुउप्पल-पउम-कुमुद-नलिण-सुभग-सोगंधिय-पुंडरीय-महापुंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-पप्फुल्लकेसरोववेया परिहत्थ-भमंत-मत्तछप्पय-अणेग-सउणगण-मिहुण-वियरिय-सद्दुन्नइय-महुरसरनाइया पासाईया-जाव-पडिरूवा।

नंदेण वणसंडनिम्माणं

७१ तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी नंदाए पोक्खरिणीए चउदिसिं चत्तारि वणसंड रोवावेइ।

तए णं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्ज-माणा य वणसंडा जाया–किण्हा-जाव-महामेह-निउरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति।

नंदेण चित्तसभानिम्माणं

७२ तए णं नंदे मणियारसेट्ठी पुरत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं कारावेइ-अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं पासाईयं-जाव-पडिरूवं। तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य-जाव-सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि य चित्त-लेप्प-गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमाइं उवदंसिज्ज-माणाइं-उवदंसिज्जमाणाइं चिट्ठंति।

तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुय-पच्चत्थुयाइं चिट्ठंति।

तत्थ णं बहवे नडा य नट्टा य जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिया य दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तालायर-कम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति।

रायगिहविणिग्गओ एत्थ णं बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसण-सयणेसु सण्णि-सण्णो य संतुयट्टो य सुयमाणो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ।

नंदेणं महाणससालानिम्माणं

७३ तए णं नंदे मणियारसेट्ठी दाहिणिल्ले वणसंडे एगं महं महाणससालं कारावेइ––अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं-जाव-पडिरूवं। तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति, बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं परिभाएमाणा-परिभाएमाणा विहरंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदेण तिगिच्छियसालानिम्माणं

७४ तए णं नंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तिगिच्छियसालं कारावेइ—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं-जाव-पडिरूवं। तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं वाहियाण जय गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छकम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति। अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तेसिं बहूणं वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा विहरंति।।

नंदेण अलंकारियसभानिम्माणं

७५ तए णं नंदे मणियारसेट्ठी उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं कारावेइ—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं-जाव-पडिरूवं। तत्थ णं बहवे अलंकारिय-मणुस्सा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं समणाण य अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति।

बहुजणकया नंदस्स पसंसा नंदस्स पमोओ य

७६ तए णं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करोडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्ठहारा य—अप्पेगइया ण्हायंति अप्पेगइया पाणियं पियंति अप्पेगइया पाणियं संवहंति अप्पेगइया विसज्जियसेय-जल्ल-मल-परिस्सम-निद्दखुप्पिवासा सुहंसुहेणं विहरंति। रायगिहविणिग्गओ वि यत्थ बहुजणो 'किं ते जलरमण-विविहमज्जण-कयलिलयाहरय-कुसुम-सत्थरय-अणेगसउणगण-रुयरिभियसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो-अभिरममाणो विहरइ।

तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अण्णमण्णं एवं वयासी—'धण्णे णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियार-सेट्ठी, कयत्थे णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे, णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स? जस्स णं इमेयारूवा नंदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा-जाव-पडिरूवा-जाव-रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सण्णिसण्णो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ। तं धन्ने णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारसेट्ठी, कयत्थे णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स'।

तए णं रायगिहे सिंघाडग तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ धन्ने णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारसेट्ठी सो चेव गमओ-जाव-सुहंसुहेणं विहरइ।

तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहत-कलंबगं विव समूसवियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ।

नंदस्स रोगुप्पत्ती

७७ तए णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया। तं जहा—

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे।
अरिसा अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले अकारए।।
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू दउदरे कोढे।।१।।

नंदरोगाणं वेज्जकयतिगिच्छाए वि निप्फलत्तं

७८ तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया! नंदस्स मणियारस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया। तं जहा—सासे-जाव-कोढे। तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया! विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुअपुत्तो वा कुसलो वा कुसलपुत्तो वा नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, तस्स णं नंदे मणियारसेट्ठी विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह, घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तेवि तहेव पच्चप्पिणंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं रायगिहे नगरे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह-भेसज्जहत्थगया य सएहिंसएहिं गिहेहिंतो निक्खमंति, निक्खमित्ता रायगिहं मज्झंमज्झेणं जेणेव नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरं पासंति, पासित्ता तेसिं रोगायंकाणं नियाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहि य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि य अवण्हावणेहि य अणुवासणाहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य सिरावत्थीहि य तप्पणाहि य पुडवाएहि य छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए।

तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

नंदमणियारस्स दद्दुरभवो

७९ तए णं नंदे मणियारसेट्ठी तेहिं सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे नंदाए पुक्खरिणीए मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्धपए सिए अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए दद्दुरीए कुच्छिसि दद्दुरत्ताए उववण्णे।

तए णं नंदे दद्दुरे गब्भाओ विणिमुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते नंदाए पोक्खरिणीए अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ।

तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अण्णमण्णं एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! नंदे मणियारे, जस्स णं इमेयारूवा नंदा पुक्खरिणी—चाउक्कोणा-जाव-पडिरूवा।

दद्दुरस्स जाइस्सरणं सावगवयपालणं च

८० तए णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं-अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—'कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे निसंतपुव्वे' त्ति कट्टु सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्जमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णिपुव्वे जाईसरणे समुप्पण्णे, पुव्वजाइं सम्मं समागच्छइ।

तए णं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—'एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नयरे नंदे नामं मणियारे-अड्ढे-जाव-अपरिभूए, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। तए णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए—दुवालसविहे गिहिधम्मे पडिवण्णे। तए णं अहं अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण य—जाव—मिच्छत्तं विप्पडिवण्णे।

'तए णं अहं अण्णया कयाइं गिम्हकालसमयंसि-जाव-पोसहं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। एवं जहेव चिंता। आपुच्छणा। नंदापुक्खरिणी। वणसंडा। सभाओ। तं चेव सव्वं-जाव-नंदाए दद्दुरत्ताए उववण्णे। तं अहो णं अहं अधण्णे अपुण्णे अकयपुण्णे निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे। तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवण्णाइं पंचाणुव्वयाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।' एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पुव्वपडिवण्णाइं पंचाणुव्वयाइं आरुहेइ, आरुहेत्ता इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे नंदाए पोक्खरिणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणालोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए—इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

भगवओ रायगिहे समवसरणं

८१ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! गुणसिलए समोसढे। परिसा निग्गया।
तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अण्णमण्णं एवमाइक्खइ—एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो। एयं णे इहभवे परभवे य हियाए-जाव-आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दद्दुरस्स समवसरणं पइ गमणं

८२ तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु, समणे भगवं महावीरे समोसढे। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि'। एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता नंदाओ पोक्खरिणीओ सणियं-सणियं पच्चुत्तरेइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए दद्दुरगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

इमं च ण सेणिए राया भंभसारे ण्हाए-जाव-सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवर-चामरेहि य उद्धुव्वमाणेहिं महयाहय-गय-रह-भड-चडगर-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमा-गच्छइ।

दद्दुरस्स महव्वयगहणसंकप्पो

८३ तए णं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आसकिसोरएणं वामपारएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था।

तए णं से दद्दुरे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु एगंतमवक्कमइ, करयलपरिग्गहियं सिरसा-वत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"नमोत्थु णं अरहंताणं-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स-जाव-सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स। पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणा-इवाए पच्चक्खाए-जाव-थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए। तं इयाणिं पि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि-जाव-सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवं, सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं पच्चक्खामि जावज्जीवं। जं पि य इमं सरीर कंतं-जाव-मा णं विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु एयं पि य णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु।

दद्दुरस्स देवत्तं

तए णं से दद्दुरे कालमासे कालं किच्चा-जाव-सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववण्णे।

एवं खलु गोयमा! दद्दुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया"।

दद्दुरस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?

गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं दद्दुरे देवे ताओ देवलोगाओ कहिं गए? कहिं उववन्ने?

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइ।[1]

---

१. वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

संपन्नगुणो वि जओ, सुसाहु-संसग्गवज्जिओ पायं। पावइ गुणपरिहाणिं, दद्दुरजीवो व्व मणियारो ॥१॥

अथवा—

तित्थयर-वंदणत्थं, चलिओ भावेण पावए सग्गं। जह दद्दुरदेवेणं, पत्तं वेमाणिय-सुरत्तं ॥२॥

णाया० सु-१ अ० १३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. महावीरतित्थे आणंदगाहावइकहाणगं ।

संगहणी गाहा

आणंदे कामदेवे य, गाहावतिचुलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावइकुंडकोलिए ।।
सद्दालपुत्ते महासतए, नंदिणीपिया लेइयापिता ।।१।।

वाणियगामे आणंदो गाहावई

८४ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ ।

तस्स वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं दूइपलासए नामं चेइए होत्था ।

तत्थ णं वाणियगामे नयरे जियसत्तू राया होत्था—वण्णओ ।

तत्थ णं वाणियगामे नयरे आणंदे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे-जाव-अपरिभूए ।

तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।

से णं आणंदे गाहावई बहूणं राईसर तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।।

तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स सिवणंदा नामं भारिया होत्था—अहीण-जाव-सुरूवा, आणंदस्स गाहावइस्स इट्ठा, आणंदेणं गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।।

तस्स णं वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए, एत्थ णं कोल्लाए नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमिए-जाव-पासादिए-जाव-पडिरूवे ।

तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे आणंदस्स गाहावइस्स बहवे मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणे परिवसइ—अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए ।

महावीर-समवसरणं

८५ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-जेणेव वाणियगामे नयरे जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

परिसा निग्गया ।

कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ ।।

आणंदस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

८६ तए णं से आणंदे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव वाणियगामस्स नयरस्स बहिया दूइपलासए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महप्फलं-जाव-तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि-जाव-पज्जुवासामि"—एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ण्हाए-जाव-सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव दूइपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ-जाव-पज्जुवासइ।

तए णं समणे भगवं महावीरे आणंदस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ।

परिसा पडिगया, राया य गए।

आणंदस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

८७ तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए-जाव-एवं वयासी—"सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं-जाव-जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-मांडबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि"।

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि।

आणंदगाहावइगहियस्स सावगधम्मस्स विवरणं

८८ तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए तप्पढमयाए थूलयं पाणाइवायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा।

तयाणंतरं च णं थूलयं मुसावायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा।

तयाणंतरं च णं थूलयं अदिण्णादाणं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा।

तयाणंतरं च णं सदारसंतोसीए परिमाणं करेइ—नन्नत्थ एक्काए सिवनंदाए भारियाए, अवसेसं सव्वं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ।
तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणं करेमाणे—

(१) हिरण्ण-सुवण्णविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहिं, चउहिं वुड्ढिपउत्ताहिं, चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं अवसेसं सव्वं हिरण्ण-सुवण्णविहिं पच्चक्खाइ।

(२) तयाणंतरं च णं चउप्पयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ चउहिं वएहिं दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अवसेसं सव्वं चउप्पयविहिं पच्चक्खाइ।

(३) तयाणंतरं च णं खेत्त-वत्थुविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचहिं हलसएहिं नियत्तणसतिएणं हलेणं, अवसेसं सव्वं खेत्त-वत्थुविहिं पच्चक्खाइ।

(४) तयाणंतरं च णं सगडविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचहिं सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं, पंचहिं सगडसएहिं संवहणिएहिं, अवसेसं सव्वं सगडविहिं पच्चक्खाइ।

(५) तयाणंतरं च णं वाहणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ चउहिं वाहणेहिं दिसायत्तिएहिं, चउहिं वाहणेहिं संवहणिएहिं, अवसेसं सव्वं वाहणविहिं पच्चक्खाइ।

तयाणंतरं च णं उवभोग-परिभोगविहिं पच्चक्खायमाणे—

(१) उल्लणियाविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगाए गंधकासाईए, अवसेसं सव्वं उल्लणियाविहिं पच्चक्खाइ।
(२) तयाणंतरं च णं दंतवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं अल्ललट्ठीमहुएणं, अवसेसं सव्वं दंतवणविहिं पच्चक्खाइ।
(३) तयाणंतरं च णं फलविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं खीरामलएणं, अवसेसं सव्वं फलविहिं पच्चक्खाइ।
(४) तयाणंतरं च णं अब्भंगणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ सयपागसहस्स-पागेहिं तेल्लेहिं, अवसेसं सव्वं अब्भंगणविहिं पच्चक्खाइ।
(५) तयाणंतरं च णं उव्वट्टणाविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं सुरभिणा गंधट्टएणं, अवसेसं सव्वं उव्वट्टणाविहिं पच्चक्खाइ।
(६) तयाणंतरं च णं मज्जणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टिएहिं उदगस्स घडेहिं, अवसेसं सव्वं मज्जणविहिं पच्चक्खाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(७) तयाणंतरं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं खोमजुयलेणं, अवसेसं सव्वं वत्थविहिं पच्चक्खाइ ।

(८) तयाणंतरं च णं विलेवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ अगरु-कुंकुम-चंदणमादिएहिं, अवसेसं सव्वं विलेवणविहिं पच्चक्खाइ।

(९) तयाणंतरं च णं पुप्फविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदामेण वा, अवसेसं सव्वं पुप्फविहिं पच्चक्खाइ।

(१०) तयाणंतरं च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ मट्ठकण्णेज्जएहिं नाममुद्दाए य, अवसेसं सव्वं आभरणविहिं पच्चक्खाइ।

(११) तयाणंतरं च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ अगरु-तुरुक्क-धूवमादिएहिं, अवसेस सव्वं धूवणविहिं पच्चक्खाइ।

(१२) तयाणंतरं च णं भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे—

(क) पेज्ज-विहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगाए कट्ठपेज्जाए, अवसेसं सव्वं पेज्जविहिं पच्चक्खाइ।

(ख) तयाणंतरं च णं भक्खविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खंडखज्जएहिं वा, अवसेसं सव्वं भक्खविहिं पच्चक्खाइ।

(ग) तयाणंतरं च णं ओदणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ कलमसालिओदणेणं, अवसेसं सव्वं ओदणविहिं पच्चक्खाइ।

(घ) तयाणंतरं च णं सूवविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ कलायसूवेण वा मुग्गसूवेण वा माससूवेण वा, अवसेसं सव्वं-सूवविहिं पच्चक्खाइ।

(ङ) तयाणंतरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ सारदिएणं गोघय-मंडेणं, अवसेसं सव्वं घयविहिं पच्चक्खाइ।

(च) तयाणंतरं च णं सागविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ वत्थुसाएण वा तुंबसाएण वा सुत्थियसाएण वा मंडुक्कियसाएण वा, अवसेसं सव्वं सागविहिं पच्चक्खाइ।

(छ) तयाणंतरं च णं माहुरयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं पालंकामाहुरएणं, अवसेसं सव्वं माहुरयविहिं पच्चक्खाइ।

(ज) तयाणंतरं च णं तेमणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ सेहंबदालियंबेहिं अवसेसं सव्वं तेमणविहिं पच्चक्खाइ।

(झ) तयाणंतरं च णं पाणियविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं अंतलिक्खोदएणं, अवसेसं सव्वं पाणियविहिं पच्चक्खाइ।

(ञ) तयाणंतरं च णं मुहवासविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचसोगंधिएणं तंबोलेणं, अवसेसं सव्वं मुहवासविहिं पच्चक्खाइ। तयाणंतरं च णं चउव्विहं अणट्ठादंडं पच्चक्खाइ, तं जहा—१. अवज्झाणाचरितं २. पमायाचरितं ३. हिंसप्पयाणं ४. पाव-कम्मोवदेसे।

सम्मत्ताईणं अइयारा

८९ आणंदा ! इ समणे भगवं महावीरे आणंदं समणोवासगं एवं वयासी—

"एवं खलु आणंदा! समणोवासएणं अभिगयजीवाजीवेणं उवलद्धपुण्णपावेणं आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसलेणं असहेज्जेणं, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जेणं सम्मत्तस्स पंच अतियारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा तं जहा—१. संका २. कंखा ३. वितिगिच्छा ४. परपासंडपसंसा ५. परपासंडसंथवो।

तयाणंतरं च णं थूलयस्स पाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. बंधे २. वहे ३. छविच्छेदे ४. अतिभारे ५. भत्तपाणवोच्छेदे।

तयाणंतरं च ण थूलयस्स मुसावायवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा—१. सहसाभक्खाणे २. रहस्सब्भक्खाणे ३. सदारमंतभेए ४. मोसोवएसे ५. कूडलेहकरणे।

तयाणंतरं च णं थूलयस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. तेणाहडे २. तक्करप्पओगे ३. विरुद्धरज्जातिक्कमे ४. कूडतुल-कूडमाणे ५. तप्पडिरूवगववहारे।

तयाणंतरं च णं सदारसंतोसीए समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. इत्तरियपरिग्गहियागमणे २. अपरिग्गहियागमणे ३. अणंगकिड्डा ४. परवीवाहकरणे ५. कामभोगे तिव्वाभिलासे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. खेत्तवत्थुपमाणातिक्कमे २. हिरण्ण-सुवण्ण-पमाणातिक्कमे ३. धण-धण्णपमाणातिक्कमे ४. दुपयचउप्पयपमाणातिक्कमे ५. कुवियपमाणातिक्कमे ।

तयाणंतरं च णं दिसिवयस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. उड्ढदिसिपमाणातिक्कमे २. अहोदिसिपमाणातिक्कमे ३. तिरियदिसिपमाणातिक्कमे ४. खेत्तवुड्ढी ५. सतिअंतरद्धा ।

तयाणंतरं च णं उवभोगपरिभोगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भोयणओ कम्मओ य ।

भोयणओ समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. सचित्ताहारे २. सचित्तपडिबद्धाहारे ३. अप्पउलिओसहिभक्खणया ४. दुप्पउलिओसहिभक्खणया ५. तुच्छोसहिभक्खणया ।

कम्मओ णं समणोवासएणं पण्णरस कम्मादाणाइं जाणियव्वाइं, न समायरियव्वाइं, तं जहा—१. इंगालकम्मे २. वणकम्मे ३. साडीकम्मे ४. भाडीकम्मे ५. फोडीकम्मे ६. दंतवाणिज्जे ७. लक्खवाणिज्जे ८. रसवाणिज्जे ९. विसवाणिज्जे १०. केसवाणिज्जे ११. जंतपीलणकम्मे १२. निल्लंछणकम्मे १३. दवग्गिदावणया १४. सरदहतलागपरिसोसणया १५. असतीजणपोसणया ।

तयाणंतरं च णं अणट्ठादंडवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. कंदप्पे २. कुक्कुइए ३. मोहरिए ४. संजुत्ताहिकरणे ५. उवभोगपरिभोगातिरित्ते ।

तयाणंतरं च णं सामाइयस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. मणदुप्पणिहाणे २. वइदुप्पणिहाणे ३. कायदुप्पणिहाणे ४. सामाइयस्स सतिअकरणया ५. सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया ।

तयाणंतरं च णं देसावगासियस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. आणवणप्पओगे २. पेसवणप्पओगे ३. सद्दाणुवाए ४. रूवाणुवाए ५. बहियापोग्गलपक्खेवे ।

तयाणंतरं च णं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सिज्जासंथारे २. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सिज्जासंथारे ३. अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चारपासवणभूमी ४. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपासवणभूमी ५. पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ।

तयाणंतरं च णं अहासंविभागस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. सचित्तनिक्खेवणया २. सचित्तपिहणया ३. कालातिक्कमे ४. परववदेसे ५. मच्छरियया ।

तयाणंतरं च णं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाराहणाए, पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. इहलोगासंसप्पओगे २. परलोगासंसप्पओगे ३. जीवियासंसप्पओगे ४. मरणासंसप्पओगे ५. कामभोगासंसप्पओगे ।

आणंदस्स अभिग्गहे, सिवणंदं पइ गिहिधम्माणुपालणाविसइया पेरणा य

९० तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

"नो खलु मे भंते! कप्पइ अज्जप्पभिइं अण्णउत्थिए वा अण्णउत्थिय-देवयाणि वा अण्णउत्थिय-परिग्गहियाणि वा अरहंतचेइयाइं वंदित्तए वा नमंसित्तए वा, पुव्वं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकंतारेणं ।

कप्पइ मे समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए"—त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइं आदियइ, आदित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे, जेणेव सए गिहे जेणेव सिवणंदा भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिवणंदं भारियं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिए! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते। से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए! समणं भगवं महावीरं वंदाहि णमंसाहि सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिवणंदाए भगवंतवंदणट्ठगमणं धम्मसवणं च

९१ तए णं सा सिवणंदा भारिया आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामि!' त्ति आणंदस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ।

तए णं से आणंदे समणोवासए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्त-जोइयं समखुरवालिहाण सम-लिहियसिंगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्तपइविसिट्ठएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचियनत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घंटियाजाल-परिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइय-निम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धंम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह"।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामि!' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडि-सुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्तजोइयं-जाव-धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

तए णं सा सिवणंदा भारिया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं पंजलियडा पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे सिवणंदाए तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ।

सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिवत्ती

९२ तए णं सा सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परम-सोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--

"सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

'अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि'।

तए णं सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं--दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया, तामेव दिसं पडिगया।

आणंदपव्वज्जागहणविसए गोयमपुच्छाए भगवओ समाहाणं

९३ 'भंते!' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदिता णमंसित्ता एवं वयासी--"पहू णं भंते! आणंदे समणो-वासए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए?

नो इणट्ठे समट्ठे।

गोयमा! आणंदे णं समणोवासए बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता-जाव-सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं आणंदस्स वि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ जणवयविहारो

९४ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणियगामाओ नयराओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

आणंदस्स समणोवासग-चरिया

९५ तए णं से आणंदे समणोवासए जाए--अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ।

सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया

९६ तए णं सा सिवणंदा भारिया समणोवासिया जाया-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ।

आणंदस्स धम्मजागरिया गिहिवावारचागो य

९७ तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था--"एवं खलु अहं वाणियगामे नयरे बहूणं राईसर-जाव-सयस्स वि य णं कुडुंबस्स-जाव-आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं कल्लं-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता, जहापूरणो-जाव-जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता, तं मित्त-जाव-जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता, कोल्लाए सण्णिवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए" एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं-जाव-जलंते विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेइ, आमंतेत्ता ततो पच्छा ण्हाए-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए, तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं सद्धिं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे विसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए णं आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"एवं खलु पुत्ता! अहं वाणियगामे नयरे बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म-पण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए। तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुंबस्स मेढिं पमाणं आहारं आलंबणं चक्खुं ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं तुमं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए"।

तए णं से जेट्ठपुत्ते आणंदस्स समणोवासगस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति।

९८ तए णं से आणंदे समणोवासए तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेति, ठावेत्ता एवं वयासी--

--"मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे अज्जप्पभिइं केइ ममं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य कुडुंबेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा, ममं अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेउ वा उवक्करेउ वा"।

९९ तए णं से आणंदे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव नायकुले, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आणंदस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ती

१०० तए णं से आणंदे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ।

तए णं से आणंदे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ।

तए णं से आणंदे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए।

आणंदस्स अणसणं

१०१ तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--"एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धम्मणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे-जाव-य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा-जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए" --एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ।

आणंदस्स ओहिनाणुप्पत्ती

१०२ तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावर-णिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे--पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणइ पासइ। दक्खिणेणं लवण-समुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणइ पासइ। पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्त जाणइ पासइ। उत्तरेणं-जाव-चुल्ल-हिमवंतं वासधरपव्वयं जाणइ पासइ। उड्ढं-जाव-सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ। अहे-जाव-इमीसे रयणप्पभाइ पुढवीए लोलुय-च्चुतं नरयं चउरासीतिवाससहस्सट्ठितियं जाणइ पासइ।

गोयरचरियानिग्गयस्स गोयमस्स आणंदसमक्खं गमणं

१०३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए।

परिसा निग्गया-जाव-पडिगया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमसगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउ-रंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरत-वस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खितेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बिइयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं, पडिलेहेइ पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--"इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए [समाणे?] छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीच-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए"।

"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह"।

तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छइ, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ। बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—"एवं खलु देवाणुप्पिया! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम-मारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसिए, भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ"।

तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"तं गच्छामि णं आणंदं समणोवासयं पासामि"। एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणंदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ।

तए णं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए भगवं गोयमं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—"एवं खलु भंते! अहं इमेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउब्भवित्ताणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादे अभिवंदित्तए। तुब्भे णं भंते! इच्छाक्कारेणं अणभिओएणं इओ चेव एह, जेणं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि"।

तए णं से भगवं गोयमे जेणेव आणंदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ।

अवहिविसए आणंद-गोयम-संवादो

१०४ तए णं से आणंदे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—"अत्थि णं भंते! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ?"

"हंता अत्थि।"

"जइ णं भंते! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पंच जोयणसयाइं-जाव-लोलुयच्चुतं नरयं जाणामि पासामि"।

तए णं से भगवं गोयमे आणंदं समणोवासयं एवं वयासी—"अत्थि णं आणंदा! गिहिणो गिहमज्झावसंत ओहिणाणे समुप्पज्जइ। नो चेव णं एमहालए। तं णं तुमं आणंदा! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि"।

तए णं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एवं वयासी—"अत्थि णं भंते! जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ निंदिज्जइ गरिहिज्जइ विउट्टिज्जइ विसोहिज्जइ अकरणयाए अब्भुट्ठिज्जइ पडिक्कमिज्जइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिज्जइ?

"नो इणट्ठे समट्ठे"।

"जइ णं भंते! जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं नो आलोइज्जइ-जाव-तवोकम्मं नो पडिवज्जिज्जइ, तं णं भंते! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह पडिक्कमेह निंदेह गरिहेह विउट्टेह विसोहेह अकरणाए अब्भुट्ठेह अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेह"।

भगवया गोयमस्स संकानिराकरणं

१०५ तए णं से भगवं गोयमे आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छसमावण्णे आणंदस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दूइपलासे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता, भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

"एवं खलु भंते! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे वाणियगामे नयरे भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेमि, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छामि, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि। बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—'एवं खलु देवाणुप्पिया! समणस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए-भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ'।

तए णं मम बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—तं गच्छामि णं आणंदं समणोवासयं पासामि—एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणंदे समणोवासए तेणेव उवागच्छामि।

तए णं से आणंदे समणोवासए ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ममं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—'एवं खलु भंते! अहं इमेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउब्भवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादे अभिवंदित्तए। तुब्भे णं भंते! इच्छक्कारेणं अणभिओगेणं इओ चेव एह, जेणं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि'।

तए णं अहं जेणेव आणंदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छामि। तए णं से आणंदे समणोवासए ममं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—'अत्थि णं भंते! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ?' 'हंता अत्थि'।

'जइ णं भंते! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि। दक्खिणेणं लवणसमुद्दे पंच जोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि। पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दे पंच जोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि। उत्तरेणं-जाव-चुल्लहिमवंतं वासधरपव्वयं जाणामि पासामि। उड्ढं-जाव-सोहम्मं कप्पं जाणामि पासामि। अहे-जाव-इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीतिवाससहस्सट्ठितियं जाणामि पासामि'।

तए णं अहं आणंदं समणोवासयं एवं वइत्था—'अत्थि णं आणंदा! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ। नो चेव णं एमहालए। तं णं तुमं आणंदा! एयस्स ठाणस्स आलोएहि-जाव-अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि'।

तए णं से आणंदे ममं एवं वयासी—'अत्थि णं भंते! जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ-जाव-अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिज्जइ?' 'नो इणट्ठे समट्ठे'।

'जइ णं भंते! जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं नो आलोइज्जइ-जाव-अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं नो पडिवज्जिज्जइ, तं णं भंते! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह-जाव-अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेह'।

तए णं अहं आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छसमावण्णे आणंदस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमामि, पडिणिक्खमित्ता जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए। तं णं भंते! किं आणंदेणं समणोवासएणं तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं पडिक्कमेयव्वं निंदेयव्वं गरिहेयव्वं विउट्टेयव्वं विसोहेयव्वं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेयव्वं? उदाहु मए?

गोयमा! इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एव वयासी—"गोयमा! तुमं चेव णं तस्स ठाणस्स आलोएहि-जाव-अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि, आणंदं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि।"

गोयमस्स खमणा

१०६ तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहइ अकरणयाए अब्भुट्ठइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ, आणंदं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेइ।

भगवओ जणवयविहारो

१०७ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ बहिया जणवयविहारं विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आणंदस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

१०८ तए णं से आणंदे समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासग-परियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसगस्स महाविमाणस्स उत्तर-पुरत्थिमे णं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं आणंदस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

आणंदे णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ। उवासगदसाओ अ० १।

---

६. कामदेवगाहावइकहाणगं।

चंपाए कामदेवे गाहावई

१०९ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी। पुण्णभद्दे चेइए। जियसत्तू राया।

तत्थ णं चंपाए नयरीए कामदेवे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए।

तस्स णं कामदेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थ-रपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था।

से णं कामदेवे गाहावई बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था।

तस्स णं कामदेवस्स गाहावइस्स भद्दा नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा-जाव-माणुस्सए कामभोए पच्चणुभव-माणी विहरइ।

महावीरसमवसरणं

११० तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।
परिसा निग्गया।
कूणियराया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ।

कामदेवस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

१११ तए णं से कामदेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव चंपाए नयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निगच्छइ निग्गच्छित्ता जेणामेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ।

तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ।

परिसा पडिगया, राया य गए।

कामदेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

११२ तए णं कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी––

"सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं––दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि"।

"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि"।

तए णं से कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावयधम्मं पडिवज्जइ।

भगवओ जणवयविहारो

११३ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाए नयरीए पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ।

कामदेवस्स समणोवासग-चरिया

११४ तए णं से कामदेवे समणोवासए जाए––अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ।

भद्दाए समणोवासियाचरिया

११५ तए णं सा भद्दा भारिया समणोवासिया जाया––अभिगयजीवाजीवा-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथार एणं पडिलाभेमाणी विहरइ।

कामदेवस्स धम्मजागरिया गिहिवावारचागो य

११६ तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था––"एवं खलु अहं चंपाए नयरीए बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए"।

तए णं से कामदेवे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

कामदेवस्स पिसायरूव-कय-मारणंतिय-उवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

११७ तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे मायी मिच्छदिट्ठी अंतियं पाउब्भूए।

तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ। तस्स णं दिव्वस्स पिसायरूवस्स इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—सीसं से गोकिलंज-संठाण-संठियं, सालिभसेल्ल-सरिसा से केसा कविलतेएणं दिप्पमाणा उट्ठिया, कभल्ल-संठाण-संठियं निडालं, मंगुसपुच्छं व तस्स भुमकाओ फुग्गफुग्गाओ विगय-बीभच्छ-दंसणाओ, सीसघडिविणिग्गयाइं अच्छीणि विगय-बीभच्छ-दंसणाइं, कण्णा जह सुप्प-कत्तरं चेव विगय-बीभच्छ-दंसणिज्जा, उरब्भपुडसंनिभा से नासा, झुसिरा जमल-चुल्ली-संठाण-संठिया दो वि तस्स नासापुडया, घोडयपुच्छं व तस्स मंसूइं कविल-कविलाइं विगय-बीभच्छ-दंसणाइ, उट्ठा उट्टस्स चेव लंबा, फालसरिसा से दंता, जिब्भा जह सुप्प-कत्तरं चेव विगय-बीभत्स-दंसणिज्जा, हल-कुद्दाल-संठिया से हणुया, गल्ल-कडिल्लं व तस्स खडुं फुट्टं कविलं फरूसं महल्लं, मुइंगाकारोवमे से खंधे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे, कोट्ठिया-संठाण-संठिया दो वि तस्स बाहा, निसापाहाण-संठाण-संठिया दो वि तस्स अग्गहत्था, निसालोढ-संठाण-संठियाओ हत्थेसु अंगुलीओ, सिप्पि-पुडग-संठिया से नखा, ण्हाविय-पसेवओ व्व उरम्मि लंबंति दो वि तस्स थणया, पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं, पाण-कलंद-सरिसा से नाही, सिक्कग-संठाण-संठिए से नेत्ते, किण्णपुड-संठाण-संठिया दो वि तस्स वसणा, जमल-कोट्ठिया-संठाण-संठिया दो वि तस्स ऊरू, अज्जुण-गुट्ठं व तस्स जाणूइं कुडिल-कुडिलाइं विगय-बीभत्स-दंसणाइं, जंघाओ कक्खडीओ लोमेहिं उवचियाओ, अहरी-संठाण-संठिया दो वि तस्स पाया, अहरी-लोढ-संठाण-संठियाओ पाएसु अंगुलीओ, सिप्पि-पुडसंठिया से नखा। लडह-मडह-जाणुए, विगय--भग्ग-भुग्ग-भुमए, अवदालिय-वयण-विवर-निल्लालियग्गजीहे, सरड-कयमालियाए उंदुरमाला-परिणद्ध-सुकयचिंधे, नउल-कयकण्णपूरे, सप्प-कयवेगच्छे, अप्फोडंते, अभिगज्जंते, भीम-मुक्कट्टहासे, नाणाविह-पंचवण्णेहिं लोमेहिं उवचिए, एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुवियचंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासायं एवं वयासी—

"हंभो! कामदेवा! समणोवासया! अप्पत्थियपत्थिया! दुरंत-पंत-लक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसिया! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया! धम्मकामया! पुण्णकामया! सग्गकामया! मोक्खकामया! धम्मकंखिया! पुण्णकंखिया! सग्गकंखिया! मोक्खकंखिया! धम्मपिवासिया! पुण्णपिवासिया! सग्गपिवासिया! मोक्खपिवासिया! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि"।

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं, पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो! कामदेवा! समणोवासया! -जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं, पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।"

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ।

तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु कामदेवं समणोवासयं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडिं करेइ।

तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्स हत्थिरूव-कय-उवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

११८ तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता, पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ—सत्तंगपइट्ठियं सम्मं संठियं सुजातं पुरतो उदग्गं पिट्ठतो वराहं अयाकुच्छिं अलंबकुच्छिं पलंब-लंबोदराधरकरं अब्भुग्गय-मउल-मल्लिया-विमल-धवलदंतं कंचणकोसी-पविट्ठदंतं आणामिय-चाव-ललिय-संवेल्लियग्ग-सोंडं कुम्म-पडिपुण्णचलणं वीसतिनखं अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव गुलुगुलेतं मण-पवण-जइणवेगं, दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—

"हंभो! कामदेवा! समणोवासगा!-जाव-न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज सोंडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।"

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता, दोच्चं पि तच्चं पि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो! कामदेवा! समणोवासया!-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं सोंडाए गेण्हामि, गेण्हेत्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छेत्ता अहे धरणितलंसि तिखुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।"

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाण कामदेवं समणोवासयं सोंडाए गेण्हेति, गेण्हित्ता, उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ।

तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ।

कामदेवस्स सप्परूव-कय-उवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

११९ तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ-जाव-सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ—

उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाकायं मसीमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंज-निगरप्पगासं रत्तच्छं लोहियलोयणं जमलजुयल-चंचलचलंतजीहं धरणीयलवेणिभूयं उक्कड-फुड-कुडिल-जडिल-कक्कस-वियड-फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोसं अणागलियदिव्वपचंडरोसं दिव्वं सप्परूवं विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—

"हंभो! कामदेवा!-जाव-न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।"

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—

"हंभो! कामदेवा! समणोवासया!-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरस रस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं दोच्चं पि एवं वुत्त समाण अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं-जाव- पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवस्स सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ ।

तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ।

कयसाभावियरूवदेवकया कामदेवस्स पसंसा खामणा य

१२० तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ. पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ—

हार-विराइय-वच्छं कडग-तुडिय-थंभियभुयं अंगय-कुंडल-मट्ठ-गंड-कण्णपीढधारिं विचित्तहत्थाभरणं विचित्तमाला-मउलि-मउडं कल्लाणग-पवरवत्थपरिहियं कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणं भासुरबोंदिं पलंबवणमालधरं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं, दिव्वं देवरूवं विउव्वित्ता कामदेवस्स समणोवासयस्स पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सींखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिए कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—

"हंभो ! कामदेवा समणोवासया ! धण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! पुण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयलक्खणे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कऊ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीस-विमाण-सयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबर-वत्थधरे आलइय-मालमउडे नव-हेम-चारु-चित्त-चंचल-कुंडल-विलिहिज्जमाणगंडे भासुरबोंदी पलंबवणमाले सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सोहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि चउरासीईए सामाणियसाह-स्सीणं, तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं चउरासीणं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—'एवं खलु देवा ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी उम्मुक्क-मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । नो खलु से सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा'।

तए णं अहं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे इहं हव्वमागए।

"तं अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए"। तं दिट्ठा णं देवाणु-प्पियाणं इड्ढी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए।

तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया ! नाइं भुज्जो करणयाए" त्ति कट्टु पायवडिए पंजलिउडे एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए।

कामदेवस्स पडिमा-पारणं

१२१ तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ।

कामदेवकयं भगवओ पज्जुवासणं

१२२ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-जेणेव चंपा नयरी, जेणव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कामदेवे समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—'एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव चंपाए नयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।'

तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता ततो पडिणियत्तस्स पोसहं पारेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमित्ता चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ।

तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ।

भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरणं

१२३ कामदेवा! इ समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—

"से नूणं कामदेवा! तुब्भं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए।

तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय तुमं एवं वयासी—'हंभो! कामदेवा! समणोवासया!-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव, जीवियाओ ववरोविज्जसि।'

तुमं तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरसि।

तए णं से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि तुमं एवं वयासी—'हंभो! कामदेवा! समणोवासया!-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।'

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरसि।

तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु तुमं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडिं करेइ।

तए णं तुमे तं उज्जल-जाव-वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि।

तए णं से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ तुमं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एवं वयासी—

'हंभो! कामदेवा! समणोवासया!-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज सोंडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।'

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरसि।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि तुमं एवं वयासी—
'हंभो! कामदेवा! समणोवासया! -जाव- जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं सोंडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, निणित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरसि।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं-जाव- पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तुमं सोंडाए गेण्हति, गेण्हित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ।

तए णं तुमे तं उज्जल -जाव- वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं-जाव- पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएति निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमं, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एवं वयासी—'हंभो! कामदेवा! समणोवासया! -जाव- जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।'

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए -जाव- विहरसि।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं -जाव- पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि तुमं एवं वयासी—'हंभो! कामदेवा! समणोवासया! -जाव- जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।'

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए -जाव- विहरसि।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तुब्भं सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, वेढेत्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ।

तए णं तुमे तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ तुमं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-संणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए तुमं एवं वयासी—'हंभो! कामदेवा! समणोवासया! धण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया! पुण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थे सि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयलक्खणे सि णं तुमं देवाणुप्पिया! सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया।

एवं खलु देवाणुप्पिय! सक्के देविंदे देवराया-जाव-एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ 'एवं खलु देवा! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। नो खलु से सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा।'

तए णं अहं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे इहं हव्वमागए। तं अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! खमंतु णं देवाणुप्पिया! खंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया! नाइं भुज्जो करणयाए त्ति कट्टु पायवडिए पंजलिउडे एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए। से नूणं कामदेवा! अट्ठे समट्ठे?"

"हंता अत्थि"॥

भगवया कामदेवस्स पसंसा

१२४ अज्जो! ति समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गंथे य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी—"जइ ताव अज्जो! समणोवासगा गिहिणो गिहमज्झावसंता दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहंति खमंति तितिक्खंति अहियासेंति, सक्का पुणाइं अज्जो!

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहित्तए खमित्तए तितिक्खित्तए अहियासित्तए।"

ततो ते बहवे समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति।

कामदेवस्स पडिगमणं

१२५ तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ, अट्ठमादियइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए।

भगवओ जणवयविहारो

१२६ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाओ नयरीओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ती

१२७ तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ।

तए णं से कामदेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ।

तए णं से कामदेवे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए।

कामदेवस्स अणसणं

१२८ तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—'एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,-जाव-य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए' एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छि-ममारणंतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिइ कालं अणवकंखमाणे विहरइ।

कामदेवस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती, तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

१२९ तए णं से कामदेवे समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवास-गपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तर-पुरत्थिमे णं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। कामदेवस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

"से णं भंते! कामदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ? कहिं उवव-ज्जिहिइ?"

"गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।"

उवासगदसाओ अ० २।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. चुलणीपियगाहावइकहाणगं

वाराणसीए चुलणीपिया गाहावई

१३० तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी । कोट्ठए चेइए । जियसत्तू राया ।

तत्थ णं वाणारसीए नयरीए चुलणीपिता नामं गाहावई परिवसइ——अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए ।

तस्स णं चुलणीपियस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।

से णं चुलणीपिता गाहावई बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

तस्स णं चुलणीपियस्स गाहावइस्स सामा नामं भारिया होत्था——अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा-जाव-माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।

भगवओ महावीरस्स समवसरणं

१३१ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।
परिसा निग्गया ।

कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ ।

चुलणीपियस्स गाहावइस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

१३२ तए णं से चुलणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे——"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"

तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि——एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर-परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे चुलणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।
परिसा पडिगया, राया य गए ।

चुलणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

१३३ तए णं से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परम-सोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी——"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथ पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाण अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।"

तए णं से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावयधम्मं पडिवज्जइ ।

भगवओ जणवयविहारो

१३४ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया

१३५ तए णं से चुलणीपिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ।

सामाए समणोवासिया-चरिया

१३६ तए णं सा सामा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं आसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ।

चुलणीपियस्स धम्मजागरिया गिहिवाबारचागो य

१३७ तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा पट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेण वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।[1]

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

चुलणीपियस्स देवकयनियजेट्ठपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१३८ तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतिय पाउब्भूए ।

तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! -जाव-[2] न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।'

१. एत्थसंबंधाणुसंधाणं आणंदगाहावइकहाणयाओ णेयं ।

२. जाव' सद्दनिद्दिट्ठं अणुसंधाणं कामदेवकहाणगाओ णेयं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ । तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।'

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव विहरइ ।

तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलीणीपियस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

चुलणीपियस्स देवकयनियमज्झिमपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१३९ तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वेयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुड्डेसि न भंजसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता-जाव-(सु. १३८) जीवियाओ ववरोविज्जसि ।' तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया !-जाव-(सु. १३९) जीवियाओ ववरोविज्जसि ।'

तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

चुलणीपियस्स देवकयनियकणीयसपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१४० तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।'

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।'

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुलणीपियस्स देवकहियनियमायाभद्दामारणवयणसवण उवसग्गस्स असहणे कोलाहलकरणं, मायाविकुव्वयदेवस्स आगासे उप्पयणं च

१४१ तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता चउत्थं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया भद्दा सत्थवाही देवतं गुरु-जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेणं य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।'

तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ।

तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया !-जाव-ववरोविज्जसि।'

तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाण-भरियंसि, कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जा वि य णं इमा ममं माया भद्दा सत्थवाही देवतं गुरु-जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं पि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए—तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए" त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेणं च खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए।

भद्दाए पसिणो

१४२ तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुलणीपिया समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—"किण्णं पुत्ता ! तुमे महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?"

चुलणीपियस्स उत्तरं

१४३ तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी—'एवं खलु अम्मो ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुर-धारं असिं गहाय ममं एवं वयासी—'हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं-जाव-ववरोविज्जसि।'

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! -जाव-ववरोविज्जसि।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ।

तए णं अहं तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।
एवं मज्झिमं पुत्तं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।
एवं कणीयसं पुत्तं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।
तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता, ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया !-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया देवतं गुरु-जणणी-जाव-ववरोविज्जसि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि।
तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो! चुलणीपिया! समणोवासया! -जाव-ववरोविज्जसि।
तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—'अहो णं इमे पुरिसे अणारिए-जाव-समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ-जाव-आइंचइ, तुब्भे वि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए" त्ति कट्टु उद्धाविए। से वि य आगासे उप्पइए मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए।'

चुलणीपियस्स पायच्छित्तकरणं

१४४ तए णं सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—"नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे। तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि। तं णं तुमं पुत्ता! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि।" तए णं से चुलणीपिता समणोवासए अम्माए भद्दाए सत्थवाहीए 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्टेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ।

चुलणीपियस्स उवासगपडिमापडिवत्ती

१४५ तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।
तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ।
तए णं से चुलणीपिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ।
तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए।

चुलणीपियस्स अणसणं

१४६ तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इयेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बल वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,-जाव-य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए"। एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ।

चुलणीपियस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं च सिद्धिगमणनिरूवणं

१४७ तए णं से चुलणीपिता समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

उवासगदसाओ अ० ३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. सुरादेवगाहावइकहाणगं

वाराणसीए सुरादेवे गाहावई

१४८ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया।

तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सुरादेवे नामं गाहावइ परिसवइ––अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए।

तस्स णं सुरादेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था।

से णं सुरादेवे गाहावई बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था।

तस्स णं सुरादेवस्स गाहावइस्स धन्ना नामं भारिया होत्था––अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा-जाव-माणुस्सए कामभोए पच्चणुभव-माणी विहरइ।

भगवओ महावीरस्स समवसरणं

१४९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।
परिसा निग्गया।
कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ।

सुरादेवस्स गाहावइस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

१५० तए णं से सुरादेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे––एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

तं महप्फलं खलु भो! देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"। एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर-परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेणं वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सुरादेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ।
परिसा पडिगया, राया य गए।

सुरादेवस्स गिहिधम्मपडिवत्ती

१५१ तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमण-स्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ करेत्ता वंदइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी––"सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते। इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं––दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि"।

"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि"।

तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावयधम्मं पडिवज्जइ।

भगवओ जणवयविहारो

१५२ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

सुरादेवस्स समणोवासगचरिया

१५३ तए णं से सुरादेव समणोवासए जाए––अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ।

धन्नाए समणोवासियाचरिया

१५४ तए णं सा धन्ना भारिया समणोवासिया जाया––अभिगयजीवाजीवा-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असणपाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ।

सुरादेवस्स धम्मजागरिया गिहिवावारचागो य

१५५ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था––"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए०[1]।

तए णं सुरादेवे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसह-सालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

सुरादेवस्स देवकयनियजेट्ठपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१५६ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था।

तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पलगवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी––"हंभो! सुरादेवा! समणोवासया! अप्पत्थियपत्थिया! दुरंत-पंत-लक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसिया! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया! धम्मकामया! पुण्णकामया! सग्गकामया! मोक्खकामया! धम्मकंखिया! पुण्णकंखिया! सग्गकंखिया! मोक्खकंखिया! धम्मपिवासिया! पुण्णपिवासिया! सग्गपिवासिया! मोक्खपिवासिया! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया! सीलाइं वयाइं वेरम-णाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि,

१. एत्थ संबंधाणुसंधाणं आणंदगाहावइकहाणगाओ णेयं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि"।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि"।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ।

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ।

सुरादेवस्स देवकयनियमज्झिमपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१५७ तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि"।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ।

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि"।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ।।

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ। तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं -जाव-वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ।

सुरादेवस्स देवकयनियकणीयसपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१५८ तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि"।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।"

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं-जाव-वयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

सुरादेवस्स देवकहियरोगायंकउवसग्गस्स असहणे कोलाहलकरणं, मायाविकुव्वयदेवस्स य आगासे उप्पयणं

१५९ तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता चउत्थं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि, तं जहा—१. सासे २. कासे ३. जरे ४. दाहे ५. कुच्छिसूले ६. भगंदरे ७. अरिसए ८. अजीरए ९. दिट्ठिसूले १०. मुद्धसूले ११. अकारिए १२. अच्छिवेयणा १३. कण्णवेयणा १४. कडुए १५. उदरे १६. कोढे । जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।"

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि-जाव-जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।"

तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि, अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायंका, ते वि य इच्छइ मम सरीरंसि पक्खिवितए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए" त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ।

धन्नाए पसिणो

१६० तए णं सा धन्ना भारिया कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए, तेणव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—"किण्णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ? "

सुरादवस्स उत्तरं

१६१ तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्कए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय ममं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं न पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि" ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा !-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो-जाव-तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि" ।

तए णं अहं तेण पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ । तए णं अहं तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि । एवं कणीयस्सं पुत्तं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि-जाव-जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि" ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—"हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! -जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि -जाव-जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।"

तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए-जाव-तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ।

सुरादेवस्स पायच्छित्तकरणं

१६२ तए णं सा धन्ना भारिया सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—"नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं के वि पुरिसे सरीरंसि जमगसमगं सोलस रोगायंके पक्खिवइ, एस णं के वि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे । तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि" ।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नाए भारियाए 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ।

सुरादेवस्स उवासगपडिमापडिवत्ती

१६३ तए णं से सुरादेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।

तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरादेवस्स अणसणं

१६४ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,-जाव-य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए" । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

सुरादेवस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

१६५ तए णं से सुरादेवे समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवास-गपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणकंते विमाणे उववण्णे । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।

उवासगदसाओ अ० ४ ।

---

९. चुल्लसययगाहावईकहाणगं

आलभियाए चुल्लसयए गाहावई

१६६ तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नयरी । संखवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया ।

तत्थ णं आलभियाए नयरीए चुल्लसयए नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए ।

तस्स णं चुल्लसययस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।

से णं चुल्लसयए गाहावई बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

तस्स णं चुल्लसययस्स गाहावइस्स बहुला नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा-जाव-माणुस्सए कामभोए पच्चणुभ-वमाणी विहरइ ।

भगवओ महावीरस्स-समवसरणं

१६७ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-जेणेव आलभिया नयरी जेणेव संखवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

परिसा निग्गया ।

कुणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुल्लसययस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

१६८ तए णं से चुल्लसयए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव आलभियाए नयरीए बहिया संखवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।" तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहारचारेणं आलभियं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जणामेव संखवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे चुल्लसययस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।
परिसा पडिगया, राया य गए ।

चुल्लसययस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

१६९ तए णं चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—"सद्दहामि णं भंत्ते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंत्ते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंत्ते ! तहमेयं भंत्ते ! अवितहमेयं भंत्ते ! असंदिद्धमेयं भंत्ते ! इच्छियमेयं भंत्ते ! पडिच्छियमेयं भंत्ते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंत्ते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं, पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि" ।

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि" ।

तए णं से चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावयधम्मं पडिवज्जइ ।

भगवओ जणवयविहारो

१७० तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ आलभियाए नयरीए संखवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

चुल्लसययस्स समणोवासग-चरिया

१७१ तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ।

बहुलाए समणोवासिया-चरिया

१७२ तए णं सा बहुला भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ।

चुल्लसयय-धम्मजागरिया

१७३ तए णं तस्स चुल्लसययस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं आलभियाए नयरीए बहूणं--जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

१७४ तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता आलभियं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

चुल्लसयगस्स देवकयनियजेट्ठपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१७५ तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए ।

तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-सीलाइं-जाव-चालित्तए-जाव-परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो ते (अहं ?) अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि-जाव-ववरोविज्जसि ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।
तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

चुल्लसययस्स देवकयनियमज्झिमपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१७६ तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, -जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयया ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि,-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुल्लसययस्स देवकयनियकणीयसपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

१७७ तए णं से देवे चुल्लसययं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज ! सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि. नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसीमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

चुल्लसययस्स देवकहियनियसव्वहिरण्णकोडिविप्पकीरणरूवउवसग्गस्स असहणे कोलाहलकरणं मायाविकुव्वयदेवस्स य आगासे उप्पयणं

१७८ तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता चउत्थं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स तेणं देवणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेत्ता-जाव-सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता, सोणिएण य आइंचइ, जाओ वि य णं इमाओ ममं छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ वि य णं इच्छइ ममं साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिस गिण्हित्तए" त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ।

बहुलाए पसिणो

१७९ तए णं बहुला भारिया तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुल्लसयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुल्लसयगस्स उत्तरं

१८० तए णं चुल्लसयए समणोवासए बहुलं भारियं एवं वयासी--एवं खलु बहुले ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय ममं एवं वयासी--"हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

"तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि ।

"तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी--हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो-जाव-तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

"तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि ।

"तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

"तए ण अहं तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

"एवं मज्झिमं पुत्तं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि । एवं कणीयसं पुत्तं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि । तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी--हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

"तए णं अहं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि ।

"तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी--हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! -जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न भंजेसि तो-जाव-तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

"तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--'अहो णं इमे पुरिसे-जाव-एयं पुरिसं गिण्हित्तए' त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए" ।

चुल्लसयगकयपायच्छित्तं

१८१ तए णं सा बहुला भारिया चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी--"नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं के वि पुरिसे तव छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे, तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि" ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहुलाए भारियाए 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ।

चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा पडिवत्ती

१८२ तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

चुल्लसयगस्स अणसणं

१८३ तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासगस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,-जाव-य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए" एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

चुल्लसययस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

१८४ तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ, सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । चुल्लसयगस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । "से णं भंते ! चुल्लसयए ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?"

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।

उवासगदसाओ अ० ५ ।

---

१०. कुंडकोलियगाहावईकहाणयं

कंपिल्लपुरे कुंडकोलिए गाहावई

१८५ तेणं कालेणं तेणं समएणं कंपिल्लपुरे नयरे । सहस्संबवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया ।

तत्थ णं कंपिल्लपुरे नयरे कुंडकोलिए नामं गाहावई परिवसइ—अट्ठे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए ।

तस्स णं कुंडकोलियस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।

से णं कुंडकोलिए गाहावई बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

तस्स णं कुंडकोलियस्स गाहावइस्स पूसा नामं भारिया होत्था—अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा-जाव-माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ महावीरस्स समवसरणं

१८६ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

परिसा निग्गया ।

कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ ।

कुंडकोलियस्स गाहावइस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

१८७ तए णं से कुंडकोलिए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे--"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव कंपिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"

तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं-महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि--एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहारचारेणं कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव, समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।
परिसा पडिगया, राया य गए ।

कुंडकोलियस्स गिहिधम्मपडिवत्ती

१८८ तए णं कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं, भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं--दुवालसविहं सावग-धम्मं पडिवज्जिस्सामि ।"

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि" ।

तए णं से कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावयधम्मं पडिवज्जइ ।

भगवओ जणवयविहारो

१८९ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ कंपिल्लपुराओ नयराओ सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

कुंडकोलियस्स समणोवासग-चरिया

१९० तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए जाए--अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूसाए समणोवासिया-चरिया

१९१ तए णं सा पूसा भारिया समणोवासिया जाया--अभिगयजीवाजीवा-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थपडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ।

देवेण नियतिवाद-समत्थणं

१९२ तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया, जेणेव पुढविसिलापट्टए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नाममुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।

तए णं से देवे नाममुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी--"हंभो ! कुंडकोलिया ! समणोवासया ! सुंदरी णं देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती--नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा; मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती--अत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार--परक्कमे इ वा, अणियता सव्वभावा" ।

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसणं

१९३ तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी--"जइ णं देवाणुप्पिया ! सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती 'नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे, इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा'; मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती 'अत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इवा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, अणियता सव्वभावा'; तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे ? किणा पत्ते ? किणा अभिसमण्णागए ? किं उट्ठाणेणं कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ?"

देवेण नियतिवाद-समत्थणं

१९४ तए णं से देवे कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी--" एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए" ।।

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसणं

१९५ तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी--जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, ते किं न देवा ?

'अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्ठाणेणं कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कार-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि, सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती--नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, णियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-पण्णत्ती अत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा; तं ते मिच्छा ।

देवस्स पडिगमणं

१९६ तए णं देवे कुंडकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो संचाएइ कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि पमोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दगं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीर-समवसरणे कुंडकोलियस्स गमणं धम्मसवणं च

१९७ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ।

तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे--"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव कंपिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"

तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसित्ता ततो पडिणियत्तस्स पोसहं पारेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता ?] सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।

महावीरेण पुव्ववुत्तंत-परूवणं

१९८ कुंडकोलिया ! इ समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी--"से नूणं कुंडकोलिया ! कल्लं तुब्भं पच्चावरण्ह-कालसमयंसि असोगवणियाए एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।

"तए णं से देवे नाममुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइं पंचवण्णाइ वत्थाइं पवरपरिहिए तुमं एवं वयासी 'हंभो ! कुंडकोलिया ! समणोवासया ! सुंदरी णं देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती--नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती--अत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा' ।

"तए णं तुमं तं देवं एवं वयासी-'जइ णं देवाणुप्पिया ! सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती--नत्थि उट्ठाणे इ वा -जाव-पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती अत्थि उट्ठाणे इ वा-जाव-पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे ? किणा पत्ते ? किणा अभिसमण्णागए ? किं उट्ठाणेणं-जाव-पुरिसक्कार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्ठाणेणं-जाव-अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ?'

"तए णं से देवे तुमं एवं वयासी 'एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं-जाव-अपुरिसक्कार-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए' ।

"तए णं तुमं तं देवं एवं वयासी 'जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देविज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं-जाव-अपुरिसक्कार-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा-जाव-परक्कमे इ वा, ते किं न देवा ? अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढि दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्ठाणेणं-जाव-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती नत्थि उट्ठाणे इ वा-जाव-नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती अत्थि उट्ठाणे इ वा-जाव-अणियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा' ।

"तए णं से देवे तुमं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो संचाएइ तुब्भे किंचि पमोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दगं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए । से नूणं कुंडकोलिया ! अट्ठे समट्ठे ?"

"हंता अत्थि" ॥

महावीरेण कुंडकोलियस्स पसंसा

१९९ अज्जो ! समणे भगवं महावीरे समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी--"जइ ताव अज्जो ! गिहिणो गिहिमज्झावसंता अण्णउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिणवागरणे करेंति, सक्का पुणाइं अज्जो ! समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अण्णउत्थिया अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिणवागरणा करेत्तए" ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ।
तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठमादियइ, अट्ठमादित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।

भगवओ जणवयविहारो

२०० सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

कुंडकोलियस्स धम्मजागरिया

२०१ तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स बहींहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं कंपिल्लपुरे नयरे बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी -जाव- सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए" ।
तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ उवागिच्छत्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरूहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथा रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

कुंडकोलियस्स उवासगपडिमापडिवत्ती

२०२ तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।
तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।
तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।
तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

कुंडकोलियस्स अणसणं

२०३ तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, -जाव- य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावि रे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए [रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए" । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

कुंडकोलियस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

२०४ तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए बहींहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणज्झए विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।
"से णं भंते ! कुंडकोलिए ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहि ?"
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ । उवासगदसाओ अ० ६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. सद्दालपुत्ते-कुंभकारकहाणगं

पोलासपुरे सद्दालपुतो

२०५ तेणं कालेणं तेणं समएणं पोलासपुरं नामं नयरं । सहस्संबवणं उज्जाणं । जियसत्तू राया ।

तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुंभकारे आजीविओवासए परिवसइ । आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते । "अयमाउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ताओ एक्का हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ताओ, एक्का हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ताओ, एक्के वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नामं भारिया होत्था ।

तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पंच कुंभारावणसया होत्था ।

तस्स णं बहवे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लिं बहवे करए य वारए य पिहडए य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिंजरए य जंबूलए य उट्टियाओ य करेंति । अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लिं तेहिं बहूहिं करएहि य वारएहि य पिहडएहि य घडएहि य अद्धघडएहि य कलसएहि य अलिंजरएहि य जंबूलएहि य उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।

सद्दालपुत्तपुरओ देवकया महावीरपसंसा

२०६ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्के देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।

तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—"एहिइ णं देवाणुप्पिया ! कल्लं इहं महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणधरे तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कचहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे तच्च-कम्मसंपयासंपउत्ते । तं णं तुमं वंदेज्जाहि णमंसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतेज्जाहि" । दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।

सद्दालपुत्तस्स गोसालयवंदणसंकप्पो

२०७ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—"एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते, से णं महामाहणे उप्पण्ण-णाणदंसणधरे तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कचहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते, से णं कल्लं इह हव्वमागच्छिस्सति । तए णं तं अहं वंदिस्सामि णमंसिस्सामि सक्कारेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासिस्सामि पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतिस्सामि ।"

भगवओ महावीरस्स समवसरणं सद्दालपुत्तस्स धम्मसवणं च

२०८ तए णं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास—किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणे भगवं महावीरे-जाव-जेणेव पोलासपुरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

परिसा निग्गया ।

कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे--"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाण गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।" तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि--एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।

महावीरेण देवकयपसंसानिरूवणं

२०९ सद्दालपुत्ता ! इ समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी--"से नूणं सद्दालपुत्ता ! कल्लं तुमं पच्चावरण्ह-कालसमयंसि जेणेव असोगवणिया, तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं० विहरसि । तए णं तुब्भं एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।

"तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए तुमं एवं वयासी--हंभो ! सद्दालपुत्ता ! एहिइ णं देवाणुप्पिया ! कल्लं इहं महामाहणे-जाव-तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । तं णं तुमं वंदेज्जाहि णमंसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतेज्जाहि' । दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।

"तए णं तुब्भं तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे--"एवं खलु मम धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते, से णं महामाहणे-जाव-तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते, से णं कल्लं इह हव्वमागच्छिस्सति । तए णं तं अहं वंदिस्सामि णमंसिस्सामि सक्कारेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासिस्सामि, पाडिहारिएण पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतिस्सामि' । से नूणं सद्दालपुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?"

"हंता अत्थि" ।

तं नो खलु सद्दालपुत्ता ! तेणं देवेणं गोसालं मंखलिपुत्तं पणिहाय एवं वुत्ते ।

सद्दालपुत्तस्स निवेदणं

२१० तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे--"एस णं समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणधरे तीयप्पडुप्पण्णागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कचहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । तं सेयं खलु ममं समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसित्ता पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतेत्तए" । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--"एवं खलु भंते ! मम पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया पंच कुंभारावणसया । तत्थ णं तुब्भे पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं ओगिण्हित्ताणं विहरह" ।।

महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधणं

२११ तए णं से समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स अजीविओवासगस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पंचसु कुंभारावणसएसु फासु-एसणिज्जं पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं ओगिण्हित्ताणं विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ वाताहतयं कोलालभंडं अंतो सालहिंतो बहिया णीणेइ, णीणेत्ता आयवंसि दलयइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी--"सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभंडो कहं कतो ?"

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी--"एस णं भंते ! पुव्वि मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं तिम्मिज्जइ, तिम्मिज्जित्ता छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ, मीसिज्जित्ता चक्के आरुभिज्जति, तओ बहवे करगा य वारगा य पिहडगा य घडगा य अद्धघडगा य कलसगा य अलिंजरगा य जंबूलगा य उट्ट्रियाओ य कज्जंति" ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी--"सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभंडे किं उट्ठाणेणं कम्मेण बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कार-परक्कमेणं कज्जंति, उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं कज्जंति ?"

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी--"भंते ! अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं । नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी--"सद्दालपुत्ता ! जइ णं तुब्भं केइ पुरिसे वाताहतं वा पक्केल्लयं वा कोलालभंडं अवहरेज्ज वा विक्खिरेज्ज वा भिंदेज्ज वा अच्छिंदेज्ज वा परिट्ठवेज्ज वा, अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरेज्जा, तस्स णं तुमं पुरिसस्स कं दंडं वत्तेज्जासि ?"

"भंते ! अहं णं तं पुरिसं आओसेज्ज वा हणेज्ज वा बंधेज्ज वा महेज्ज वा तज्जेज्ज वा तालेज्ज वा निच्छोडेज्ज वा निब्भच्छेज्ज वा, अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जा" ।।

"सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्भं केइ पुरिसे वाताहतं वा पक्केल्लयं वा कोलालभंडं अवहरइ वा विक्खिरइ वा भिंदइ वा अच्छिंदइ वा परिट्ठवेइ वा; अग्गिमित्ताए भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ; नो वा तुमं तं पुरिसं आओसेसि वा हणेसि वा बंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निब्भच्छेसि वा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेसि, जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा । अह णं तुब्भं केइ पुरिसे वाताहतं वा पक्केल्लयं वा कोलालभंडं अवहरेइ वा विक्खिरेइ वा भिंदेइ वा अच्छिंदेइ वा परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, तुमं वा तं पुरिसं आओसेसि वा हणेसि वा बंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निब्भच्छेसि वा, अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेसि, तो जं वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा" ।

एत्थ णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए संबुद्धे ।

सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

२१२ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--इच्छामि णं भंते ! तुब्भ अंतिए धम्मं निसामेत्तए ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए, उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं--दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि" ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि" ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव पोलासपुरे नयरे, जेणेव सए गिहे, जेणेव अग्गिमित्ता भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिए ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते । से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं गच्छाहि णं तुमं समणं भगवं महावीरं वंदाहि णमंसाहि सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि ।

तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ ।

अग्गिमित्ताए महावीरवंदणट्ठा गमणं धम्मसवणं च

२१३ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्त-पइविसिट्ठएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचिय-नत्थपग्गहोग्गहिय-एहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घंटियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइयनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह" ।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामि !' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं-जाव-धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं माहावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं पंजलियाडा ठिइया चेव पज्जुवासइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे अग्गिमित्ताए तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।।

अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ती

२१४ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं-जाव-जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि" ।

"अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं करेहि" ।

तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया, तामेव दिसं पडिगया ।

भगवओ जणवयविहारो

२१५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पोलासपुराओ नगराओ सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्तस्स समणोवासग चरिया

२१६ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए--अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ।

अग्गिमित्ताए समणोवासिय-चरिया

२१७ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणोवासिया जाया--अभिगयजीवाजीवा-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ।

गोसालस्स आगमणं

२१८ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे--"एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमित्ता समणाणं निग्गंथाणं दिट्ठिं पवण्णे, तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निग्गंथाणं दिट्ठिं वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठिं गेण्हावित्तए" त्ति कट्टु--एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आजीवियसंघ-परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे, जेणेव आजीवियसभा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता कतिवएहिं आजीविएहिं सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाति नो परिजाणति, अणाढामाणे अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।

गोसालेण महावीरस्स गुणकित्तणं

२१९ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढिज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढ-फलग-सेज्जा-संथारट्ठयाए समणस्स भगवओ महावीरस्स गुणकित्तणं करेइ--"आगएणं देवाणुप्पिया ! इहं महामाहणे ?"

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी--"के णं देवाणुप्पिया ! महामाहणे ?"

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी--"समणे भगवं महावीरे महामाहणे ।"

"से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ--समणे भगवं महावीरे महामाहणे ?" एवं खलु सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणधरे तीयप्पडुप्पण्णागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ--समणे भगवं महावीरे महामाहणे" ।

"आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महागोवे ?"

"के णं देवाणुप्पिया ! महागोवे ?"

"समणे भगवं महावीरे महागोवे" ।

से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ--समणे भगवं महावीरे महागोवे ? एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे धम्ममएणं दंडेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे निव्वाणमहावाडं साहत्थिं संपावेइ । से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुच्चइ--समणे भगवं महावीरे महागोवे" ।

"आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महासत्थवाहे ?"

"के णं देवाणुप्पिया ! महासत्थवाहे ?"

"सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे" ।

से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ--समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ? एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे धम्ममएणं पंथेणं सारक्खमाणे निव्वाणमहापट्टणे साहत्थिं संपावेइ । से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुच्चइ--समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे" ।

"आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महाधम्मकही ?"

"के णं देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ।"

"से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ?"

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि संसारंसि बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छत्तबलाभिभूए अट्ठविहकम्म-तमपडल-पडोच्छण्णे बहूहिं अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिणवागरणेहि य चाउरंताओ संसारकंताराओ साहत्थिं नित्थारेइ । से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही" ।

"आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महानिज्जामए ?"

"के णं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ?"

"समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए" ।

"से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ?"

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुद्दे बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे बुड्डुमाणे निबुड्डुमाणे उप्पियमाणे धम्ममईए नावाए निव्वाणतीराभिमुहे साहत्थिं संपावेइ । से तेणट्ठेण देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए" ।

महावीरेण सह विवादकरणे गोसालस्स असामत्थं पडिगमणं च

२२० तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इयच्छेया इयदच्छा इयपट्ठा इयनिउणा इयनयवादी इयउवएसलद्धा इयविण्णाणपत्ता । पभू णं तुब्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए ?"

"नो इणट्ठे समट्ठे" ।

"से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—"नो खलु पभू तुब्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए ?"

"सद्दालपुत्ता ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरग्गहत्थे पडिपुण्णपाणि-पाए पिट्ठंतरोरुसंघायपरिणए घणनिचियवट्टवलियखंधे लंघण-वग्गण-जयण-वायाम-समत्थे चम्मेट्ठ-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगत्ते उरस्सबलसमन्नागए तालजमल-जुयलबाहू छेए दक्खे पत्तट्ठे निउणसिप्पोवगए एगं महं अयं वा एलयं वा सूयरं वा कुक्कुडं वा तित्तरं वा वट्टयं वा लावयं वा कवोयं वा कविंजलं वा वायसं वा सेणयं वा, हत्थंसि वा पायंसि वा खुरंसि वा पुच्छंसि वा पिच्छंसि वा सिंगंसि वा विसाणंसि वा रोमंसि वा जंहि-जंहि गिण्हइ, तंहि-तंहि निच्चलं निप्फंदं करेइ, एवामेव समणे भगवं महावीरे ममं बहूहिं अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य जंहि-जंहि गिण्हइ, तंहि-तंहि निप्पट्ठ-पसिणवागरणं करेइ । से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुच्चइ—नो खलु पभू अहं तव धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए" ।

तए णं से सद्दालपुत्ते ! समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—"जम्हा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे मम धम्मायरिस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं भावेहिं गुणकित्तणं करेह, तम्हा णं अहं तुब्भे पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतेमि, नो चेव णं 'धम्मो त्ति वा तवो त्ति वा' । तं गच्छह णं तुब्भे मम कुंभारावणेसु पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरह" ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कुंभारावणेसु पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं ओगिण्हित्ताणं विहरइ ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते परितंते पोलासपुराओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया

२२१ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्य चोद्दस संवच्छरा वीइक्कंता । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं पोलासपुरे णयरे बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए" ० ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता पोलासपुरं णयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता, दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

सद्दालपुत्तस्स देवरूवकयनियजेट्ठपुत्तमारणोवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

२२२ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।

तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पागासं खुरधारं असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि" ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि-जाव-चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

सद्दालपुत्तस्स देवकयनियमज्झिमपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

२२३ तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि" ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि" ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

सद्दालपुत्तस्स देवकयनियकणीयसपुत्तमारणरूवउवसग्गस्स सम्मं अहियासणं

२२४ तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ ण तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, -जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि" ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसीमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गोयं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

सद्दालपुत्तस्स देवकहियनियभज्जामारणरूवउवसग्गस्स असहणे कोलाहलकरणं, मायाविकुव्वियदेवस्स य आगासे उप्पयणं

२२५ तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता चउत्थं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरइ ।

तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं साओ गिहाओ, नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि-जाव-जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं, जे णं ममं मज्झिमयं पुत्तं, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जा वि य णं ममं इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं पि य इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता ममं अग्गओ घाएत्तए । तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए"त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण च खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गिमित्ताए पसिणो

२२६ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"किण्णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?"

सद्दालपुत्तस्स उत्तरं

२२७ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि । तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—"हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि । एवं कणीयसं पुत्तं-जाव-वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि । तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्म-सहाइया धम्मबिइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए-जाव-विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं-जाव-दोच्चं पि तच्चं पि ममं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया !-जाव-जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं-जाव-न छड्डेसि न भंजेसि, तो-जाव-तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठपुत्तं, जे णं ममं मज्झिमयं पुत्तं जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, तुमं पि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ।

सद्दालपुत्तकयपायच्छित्तं

२२८ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—"नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ, नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमयं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमं विदरिसणे दिट्ठे । तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं णं तुमं पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि" ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्ताए भारियाए 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ।

सद्दालपुत्तस्स उवासगपडिमापडिवत्ती

२२९ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ अराहेइ ।

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

सद्दालपुत्तस्स अणसणं

२३० तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए" । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

सद्दालपुत्तस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

२३१ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता-वीसं वासाइं-समणोवासग-परियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणच्चए विमाणे देवत्ताए उववण्णे । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।

उवासगदसाओ अ० ७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. महासतयगाहावइकहाणगं

रायगिहे महासतए गाहावई

२३२ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ।

तत्थ णं रायगिहे नयरे महासतए नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए ।

तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।

से णं महासतए गाहावई बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स रेवतीपामोक्खाओ तेरस भारियाओ होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीराओ-जाव-माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरंति ।

तस्स णं महासतयस्स रेवतीए भारियाए कोलहरियाओ अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था । अवसेसाणं बुवालसण्हं भारियाणं कोलहरिया एगमेगा हिरण्णकोडी, एगमेगे य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।

भगवओ महावीरस्स समवसरणं

२३३ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ।

परिसा निग्गया ।

कूणिए राया जहा, तहा सेणिओ निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ ।

महासतयस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

२३४ तए णं से महासतए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाण—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव रायगिहस्य नयरस्स बहिया गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।" "तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घा भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीर, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे महासतयस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।

परिसा पडिगया, राया य गए ।

महासतयस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

२३५ तए णं महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि" ।

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि" ।

तए णं से महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावयधम्मं पडिवज्जइ, नवरं—अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ। अट्ठ वया । रेवतीपामोक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ । इमं च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हति—कल्लाकल्लिं च णं कप्पइ मे बेदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए ।

महासतयस्स समणोवासग-चरिया

२३६ तए णं महासतए समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ।।

भगवओ जणवयविहारो

तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

भोगाभिलासिणीए रेवतीए चिंता

२३७ तए णं तीसे रेवतीए गाहावइणीए अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमासिं दुवालसण्हं सपत्तीणं विघातेणं नो संचाएमि महासतएणं समणोवासएणं सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए । तं सेयं खलु ममं एयाओ दुवालस वि सवत्तीओ अग्गिप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्ता एतासिं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं महासतएणं समणोवासएणं सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए" । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अंतराणि ये छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ।

रेवतीए सवत्ती-उद्दवणं

२३८ तए णं सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अंतरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं उद्दवेइ, छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ उद्दवेत्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरण्णकोडिं, एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जित्ता महासतएणं समणोवासएणं सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ।

रेवतीए मंस-मज्जाऽऽसेवणं

२३९ तए णं सा रेवती गाहावइणी मंसलोलुया मंसमुच्छिया मंसगढिया मंसगिद्धा मंसअज्झोववण्णा बहुविहेहिं मंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च मज्जं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ।

अमाघायघोसणाए वि रेवतीए मंस-मज्जाऽऽसेवणं

२४० तए णं रायगिहे नयरे अण्णदा कदाइ अमाघाए घुट्ठे यावि होत्था ।
तए णं सा रेवती गाहावइणी मंसलोलुया मंसमुच्छिया मंसगढिया मंसगिद्धा मंसअज्झोववण्णा कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—"तुब्भे देवाणुप्पिया ! ममं कोलहरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए, उद्दवेह, उद्दवेत्ता ममं उवणेह" ।
तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवतीए गाहावइणीए 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता रेवतीए गाहावइणीए कोलहरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए वहेंति, वहेत्ता रेवतीए गाहावइणीए उवणेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा रेवती गाहावइणी तेहिं गोणमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि सुरं च महुं च मेरगं च मज्जं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभंजेमाणी विहरइ ।

महासतगस्स धम्मजागरिया

२४१ तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वीइक्कंता । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं रायगिहे नयरे बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए" ।

तए णं से महासतए समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

महासतगस्स अणुकूलो रेवतीकओ उवसग्गो

२४२ तए णं सा रेवती गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी-विकड्ढमाणी जेणेव पोसहसाला जणव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्मायजणणाइं सिंगारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी-उवदंसेमाणी महासतयं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?"

तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—"हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?"

तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे विहरइ ।

तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

महासतगस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ती

२४३ तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।

तए णं से महासतए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ ।

तए णं से महासतए समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महासतगस्स अणसणं

२४४ तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासयगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धाधिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,-जाव-य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए"। एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ।

महासतगस्स ओहिनाणुप्पत्ती

२४५ तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स सुभेणं अज्झवसाणणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, दक्खिणेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ उत्तरेणं-जाव-चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं पव्वयं जाणइ, पासइ [उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ ?] अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ।

महासतगस्स पुणरवि रेवतीकओ अणुकूलो उवसग्गो

२४६ तए णं सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी-विकड्ढमाणी जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासतयं समणोवासयं एवं वयासी—"हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भंजमाणे नो विहरसि ?"

तए णं सेमहासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—"हंभो ! महासतया ! समणोवासया" ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?"

महासतगस्स विक्खेवो तेण य रेवतीए मरणाणंतरं नरयगमण कहणं

२४७ तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—"हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण्णचाउद्दसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि"।

तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी—"रुट्ठे णं ममं महासतए समणोवासए ! हीणे णं ममं महासतए समणोवासए ! अवज्झाया णं अहं महासतएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं अहं केणावि कु-मारेणं मारिज्जिस्सामि"—त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा चिंतासोगसागरसंपविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया झियाइ। तए णं सा रेवती गाहावइणी अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ महावीरस्स समवसरणं

२४८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ।
परिसा पडिगया ।

महासतगस्स अंतिए गोतम-पेसणं

२४९ गोयमा ! इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—"एवं खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे नयरे ममं अंतेवासी महासतए नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणंतियसंलेहणाए झूसियसरीरे भत्तपाण-पडियाइक्खिए, कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स रेवती गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी-विकड्ढमाणी जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्मायजणणाइं सिंगारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी-उवदंसेमाणी महासतयं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ? तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी० ।

तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण्णचाउद्दसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ।

नो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पियेहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरित्तए । तं गच्छ णं देवाणुप्पिया ! तुमं महासतयं समणोवासयं एवं वयाहि—नो खलु देवाणुप्पिया ! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम मारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पियेहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरित्तए तुमे य णं देवाणुप्पिया ! रेवती गाहावइणी संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पियेहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरिया । तं णं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि ।"

गोतमस्स महासतयपुरओ आगमणं

२५० तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव महासतगस्स समणोवासगस्स गिहे जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ।

महासतयकयं गोयमवंदणं

२५१ तए णं से महासतए समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए भगवं गोयमं वंदइ नमंसइ ।

महासतयपुरओ गोयमस्स पायच्छित्तकरणरूवं भगवंतकहणनिरूवणं

२५२ तए णं से भगवं गोयमे महासतयं समणोवासयं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणोवासगस्स अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं, अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पियेहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्तए । तुमे णं देवाणुप्पिया ! रेवती गाहावइणी संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरिया। तं णं तुमं देवाणुप्पिया। एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि" ।।

महासतगस्स पायच्छित्तकरणं

२५३ तए णं से महासतए समणोवासए भगवओ गोयमस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ।

गोयमस्स पडिणिक्खमणं

२५४ तए णं से भगवं गोयमे महासतगस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

भगवओ जणवयविहारो

२५५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

महासतगस्स देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

२५६ तए णं से महासतए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडेंसए विमाणे देवत्ताए उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

उवासगदसाओ अ० ८।

---

१३. नंदिणीपियागाहावइकहाणगं

सावत्थीए नन्दिणीपिया गाहावई

२५७ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया।

तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नंदिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए ।

तस्स णं नंदिणीपियस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।

से णं नंदिणीपिया गाहावई बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

तस्स णं नंदिणीपियस्स गाहावइस्स अस्सिणी नामं भारिया होत्था—अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा-जाव-माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ महावीरस्स समवसरणं

२५८ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे।
परिसा निग्गया।
कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ।

नंदिणीपियस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

२५९ तए णं से नंदिणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।"

तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छणपज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरा-परिखित्ते पादविहारचारेणं सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ।
तए णं समणे भगवं महावीरे नंदिणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ।
परिसा पडिगया, राया य गए।

नंदिणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

२६० तए णं से नंदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परम-सोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते। इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि"।

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि"।
तए णं से नंदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावयधम्मं पडिवज्जइ।

भगवओ जणवयविहारो

२६१ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जण-वयविहारं विहरइ।

नंदिणीपियस्स समणोवासगचरिया

२६२ तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ।

अस्सिणीए समणोवासियाचरिया

२६३ तए णं सा अस्सिणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदिणीपियस्स धम्मजागरिया

२६४ तए णं तस्स नंदिणीपियस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं सावत्थीए नयरीए बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेण वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।

२६५ तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधिपरिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।

नंदिणीपियस्स उवासगपडिमापडिवत्ती

२६६ तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्तेइ आराहेइ।

तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्तेइ आराहेइ।

तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए।

नंदणीपियस्स अणसणं

२६७ तए णं तस्स नंदिणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणसस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,-जाव-य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए"। एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ।

नंदणीपियस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

२६८ तए णं नंदिणीपिया समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। नंदिणीपियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

"से णं भंते ! नंदिणीपिया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?"

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

उवासगदसाओ अ० ९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. लेतियापियागाहावइकहाणगं

सावत्थीए लेतियापिया गाहावई

२६९ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी । कोट्ठए चेइए । जियसत्तू राया ।

तत्थ णं सावत्थीए नयरीए लेतियापिता नामं गाहावई परिवसइ––अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए ।

तस्स णं लेइयापियस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि, हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।

से णं लेइयापिता गाहावई बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

तस्स णं लेतियापियस्स गाहावइस्स फग्गुणी नामं भारिया होत्था––अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा-जाव-माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।

भगवओ महावीरस्स समवसरणं

२७० तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ।
परिसा निग्गया ।
कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ-जाव-पज्जुवासइ ।

लेतियापियस्स समवसरणे गमणं धम्मसवणं च

२७१ तए णं से लेतियापिता गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे––"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"

तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घा भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे लेतियापियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए-जाव-धम्मं परिकहेइ ।
परिसा पडिगया, राया य गए ।

लेतियापियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ती

२७२ तए णं से लेतियापिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमण परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी––"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं---दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि" ।

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि" ।

तए णं से लेतियापिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावयधम्मं पडिवज्जइ ।

भगवओ जणवयविहारो

२७३ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

लेतियापियस्स सामणोवासग-चरिया

२७४ तए णं से लेतियापिता समणोवासए जाए---अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण--पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएणं य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ।

फग्गुणीए समणोवासिया-चरिया

२७५ तए णं सा फग्गुणी भारिया समणोवासिया जाया---अभिगयजीवाजीवा-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ।

लेतियापियस्स धम्मजागरिया

२७६ तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था---"एवं खलु अहं सावत्थीए नयरीए बहूणं-जाव-आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडंबस्स मेढी-जाव-सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए"० ।

तए णं से लेतियापिता समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

लेतियापियस्स उवासगपडिमापडिवत्ती

२७७ तए णं से लेतियापिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

तए णं से लेतियापिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।

तए णं से लेतियापिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।

तए णं से लेतियापिता समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडि-किडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेतियापियस्स अणसणं

२७८ तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्के निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,-जाव-य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स, विहरित्तए" । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

लेतियापियस्स समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं च सिद्धिगमणनिरूवणं

२७९ तए णं से लेतियापिता समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । लेतियापियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । "से णं भंते ! लेतियापिता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गिमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?"

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सुव्वदुक्खाणमंतं काहिइ" ।

उवा. अ० १० ।

---

१५. इसिभद्दपुत्ताइणो समणोवासगा

आलभियाए इसिभद्दपुत्ताई समणोवासगा

२८० तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ । संखवणे चेइए—वण्णओ । तत्थ णं आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा-जाव-बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवा जीवा-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

देवठिइविसए विवादो

२८१ तए णं तेसिं समणोवासयाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं सहियाणं सण्णिविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—"देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?"

तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिती-गहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी—

"देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया-जाव-दससमयाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य" ।

तए णं ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स-जाव-एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ महावीरस्स समोसरणं

२८२ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे-जाव-समोसढे-जाव-परिसा पज्जुवासइ । तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा, हट्ठतुट्ठा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिया समणे भगवं महावीरे-जाव-आलभियाए नगरीए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"

तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ।

एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता, जेणेव सयाइं-सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति, मेलायित्ता पायविहारचारेणं आलभियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं-जाव-तिविहाए पज्जुवासणाए एवं जहा तुंगि उद्देसए (भग. श. २, उ. ५)-जाव-पज्जुवासंति । तए णं समणे भगवं महावीरे तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ-जाव-आणाए आराहए भवइ ।

महावीरेण समाहाणं

२८३ तए णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी--

"एवं खलु भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवमाइक्खइ--जाव-परूवेइ--देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेणं परं समयाहिया-जाव-तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।
से कहमेयं भंते ! एवं ?"

अज्जो ! ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी--

"जण्णं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भं एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ--देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया-जाव-तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य--सच्चे णं एसमट्ठे ।

अहं पि णं अज्जो ! एवमाइक्खामि-जाव-परूवेमि--देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया-जाव-दससमियाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य--सच्चे णं एसमट्ठे ।

तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति । तए णं ते समणोवासया पसिणाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, परियादियित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

इसिभद्दपुत्तविसए गोयमपण्हो महावीरस्स उत्तरं य

२८४ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"पभू णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिये मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते-समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति ।

"से णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?" गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे-जाव-अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ आलभियाओ नगरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

भग० स० ११, उ० १२ ।

१६. संखे पोक्खली य समणोवासया

सावत्थीए संखे, पोक्खली य

२८५ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ। कोट्ठए चेइए—वण्णओ।

तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे संखप्पामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा-जाव-बहुजणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा -जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था--सुकुमालपाणिपाया-जाव-सुरूवा, समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा -जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोक्खली नामं समणोवासए परिवसइ—अड्ढे, अभिगयजीवाजीवे-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

भगवओ महावीरस्स समोसरणं

२८६ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा-जाव-पज्जुवासइ । तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जहा आलभियाए–(भग० स० ११-उ० १२)-जाव-पज्जुवासंति। तए णं समणे भगवं महावीरे तीसे स महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ-जाव-परिसा पडिगया।

तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता पसिणाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, परियादियित्ता उट्ठाए, उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

संखस्स पोसहो

२८७ तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह। तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो।

तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति।

तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए–जाव–संकप्पे समुप्पज्जित्था––"नो खलु मे सेयं तं विपुलं असणं -जाव-साइमं अस्साएमाणस्स विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स ओमुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवण-भूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी -जाव-पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ।

संखकहणाणुसारेणं सावत्थीसमणोवासएहिं पोसहत्थं विउलअसणाईणं करणं

२८८ तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं-साइं गिहाइं, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति सद्दावेत्ता एवं वयासी––

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संखं समणोवासगं सद्दावेत्तए।

असणाइभोगत्थं पोक्खलिणा संखनिमंतणं

२८९ तए णं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी––

"अच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुय-वीसत्था, अहं णं संखं समणोवासगं सद्दावेमि" त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे।

तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता पोक्खलिं समणोवासगं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता एवं वयासी––

"संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ?"

तए णं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी––
"कहिण्णं देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए ?"
तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी––
"एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी-जाव-विहरइ।
तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव संखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता संखं समणोवासगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असणे-जाव-साइमे उवक्खडाविए, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं--जाव-साइमं अस्साएमाणा-जाव-पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरामो।

संखेण निवारणं

२९० तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी––

"नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं-जाव-साइमं अस्साएमाणस्स-जाव-पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स-जाव-पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुब्भे तं विउलं असणं-जाव-साइमं अस्साएमाणा-जाव-पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णेहिं समणोवासएहिं पोसहट्ठं असणाईणं भोगो

२९१ तए णं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते समणोवासए एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए-जाव-विहरइ, तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं-जाव-साइमं अस्साएमाणा-जाव-पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरह, संखे णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ"।

तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं-जाव-साइमं अस्साएमाणा-जाव-विहरंति।

संखेण पारणट्ठं महावीरपज्जुवासणं

२९२ तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता-जाव-पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति।

तए णं ते समणोवासगा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाया कयबलि-कम्मा-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति, मेलायित्ता पायविहारचारेणं सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए, चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं-जाव-तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति।

तए णं समणे भगवं महावीरे तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ-जाव-आणाए आराहए भवइ।

समणोवासएहिं संखहीलणा

२९३ तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता संखं समणोवासयं एवं वयासी—

"तुमं णं देवाणुप्पिया! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं-जाव-साइमं उवक्खडावेह-जाव-परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो। तए णं तुमं पोसहसालाए-जाव-पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरिए, तं सुट्ठु णं तुमं देवाणुप्पिया! अम्हे हीलसि।"

महावीरेण संखहीलणानिवारणं

२९४ अज्जो! ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—

"मा णं अज्जो! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह निंदह खिंसह गरहह अवमण्णह। संखे णं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए।"

महावीरकयं जागरियाविवरणं

२९५ भंते! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"कतिविहा णं भंते! जागरिया पण्णत्ता?"

"गोयमा! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया।

"केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्णनाणदंसणधरा अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी एए णं बुद्धा बुद्धजागरियं जागरंति ।

"जे इमे अणगारा भगवंतो रियासमिया-जाव-गुत्तबंभचारी-- एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति ।

"जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति--एए णं सुदक्खुजागरियं जागरंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ--तिविहा जागरियापण्णत्ता, तं जहा-बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया।"

कसायफलं कम्मबंधणं जाणित्ता समणोवासयाणं संखं पइ खमावणी

२९६ तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

कोहवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?"

"संखा ! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टइ" ।

"माणवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ" ?

"एवं चेव -जाव- अणुपरियट्टइ",।।

"मायवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ" ?

एवं चेव-जाव-अणुपरियट्टइ" ।

"लोभवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ" ?

"एवं चेव-जाव-अणुपरियट्टइ"।

तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता संखं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेंति । तए णं ते समणोवासगा पसिणाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, परियादियित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

संखस्स देवगई सिद्धी य–

२९७ भंते ! ति भगवं गोयमे समणं भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"पभू णं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? सेसं जहा (भग० स० ११ उ० १२) इसिभद्दपुत्तस्स -जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ।"

सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति-जाव-विहरइ ।"

भग० स० १२, उ० १ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. वरुणे नागनत्तुए समणोवासए

संगामे मरणे देवत्तविसए गोयमपण्हो

२९८ "बहुजणे णं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–एवं खलु बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से कहमेयं भंते ! एवं ?"

महावीरस्स उत्तरे वरुणकहाणयं

"गोयमा ! जण्णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ–एवं खलु बहवे मणुस्सा-जाव-देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि-जाव-परूवेमि–

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वेसाली नामं नगरी होत्था–वण्णओ। तत्थ णं वेसालीए नगरीए वरुणे नामं नागनत्तुए परिवसइ–अड्ढे-जाव-अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे-जाव-समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह- कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं ओसह-भेसज्जेणं पडिलाभेमाणे छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति।

वरुणस्स रहमुसलसंगामे गमणं

तए णं से वरुणे नागनत्तुए अण्णया कयाइ रायाभिओगेणं, गणाभिओगेणं, बलाभिओगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवट्टेति, अणुवट्टेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेह, हय-गय-रह-पवर-जोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं-जाव-चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेंति, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता-जाव-तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिपालसद्धिं संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे, महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाए।

संगामे वरुणस्स अभिग्गहो

तए णं से वरुणे नागनत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाए समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ–"कप्पति मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुव्वि पहणइ से पडिहणित्तए, अवसेसे नो कप्पतीति; अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ अभिगेण्हेत्ता रहमुसलं संगामं संगामेति।

तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए सरित्तए सरिव्वए सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वमागए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से पुरिसे वरुणं नागनत्तुयं एवं वदासी–पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया ! पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया !

तए णं से वरुणे नागनत्तुए तं पुरिसं एवं वदासी––नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया ! पुव्विं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव णं पुव्विं पहणाहि।

तए णं से पुरिसे वरुणेणं नागनत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठिच्चा आययकण्णायतं उसुं करेइ, करेत्ता वरुणं नागनत्तुयं गाढप्पहारीकरेइ।

तए णं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता आययकण्णायतं उसुं करेइ, करेत्ता तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ।

वरुणकयं संलेहणं

तए णं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ परावत्तेत्ता रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगंतमंतं अवक्कमइ अवक्कमित्ता तुरए निगिण्हइ निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तुरए मोएइ, मोएत्ता तुरए विसज्जेइ, विसज्जेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–"नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं-जाव-सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स-जाव-सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे से भगवं तत्थगए इहगयं" ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––"पुव्विं पि णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, एवं-जाव-थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिं पि णं अहं तस्सेव भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए-जाव-मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं––चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि-जावज्जीवाए। जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं-जाव-मा णं वाइयपित्तिय-सेंभिय-सण्णिवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयं पि णं चरिमेहिं ऊसास-नीसासेहिं वोसिरिस्सामि"त्ति कट्टु सण्णाहपट्टं मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ, करेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए।

वरुणनागनत्तुय-मित्तस्स वि वरुणानुसरणं

तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसलं संगामं संगामेमाणे एगेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु वरुणं नागनत्तुयं रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता जहा वरुणे-जाव-तुरए विसज्जेति, पडसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–"जाइं णं भंते ! मम पियबालवयंसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं, ताइ णं ममं पि भवंतु" त्ति कट्टु सण्णाहपट्टं मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ, करेत्ता आणुपुव्वीए कालगए।

वरुणमरणे देवकयवुट्ठं

तए णं तं वरुणं नागनत्तुयं कालगयं जाणित्ता अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं दिव्वे सुरभिगंधोदगवासे वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, दिव्वे य गीय-गंधव्वनिनादे कए यावि होत्था।

तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ -जाव- परूवेइ––एवं खलु देवाणुप्पिया ! बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति।"

वरुणस्स देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगइनिरूवणं च

२९९ "वरुणे णं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?" "गोयमा ! सोहम्मे कप्पे, अरुणाभे विमाणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवत्ताए उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता" ।

"से णं भंते! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?"

"गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति।

वरुणमित्तस्सवि सुकुलुप्पत्तिआइ

३०० वरुणस्स णं भंते! नागनत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववन्ने?
गोयमा! सुकुले पच्चायाते।

से णं भंते! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-अंतं काहिति।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

भग० श० ७, उ० ९।

---

१८. सोमिलमाहणे समणोवासए

वाणियगामे सोमिलमाहणे भ. महावीरस्स समोसरणं च

३०१ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होत्था–वण्णओ। दूतिपलासए चेइए–वण्णओ।
तत्थ णं वाणियगामे नगरे सोमिले नामं माहणे परिवसति अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए, रिव्वेद-जाव-सुपरिनिट्ठिए, पंचण्हं खंडियसयाणं, सयस्स य कुडुंबस्स आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ।
तए णं समणे भगवं महावीरे-जाव-समोसढे-जाव-परिसा पज्जुवासति।

सोमिलमाहणस्स समवसरणे गमणं

३०२ तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–"एवं खलु समणे नायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे इहमागए इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव वाणियगामे नगरे दूतिपलासए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं-जाव-वागरणाइं वागरेहिति ततो णं वंदीहामि नमंसीहामि-जाव-पज्जुवासीहामि, अह मे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं नो वागरेहिति तो णं एएहिं चेव अट्ठेहि य-जाव-वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामि" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमिलस्स जत्ताइपण्हाणं भगवओ समाहाणं

३०३ जत्ता ते भंते ? जवणिज्जं (ते भंते ?) ? अव्वाबाहं (ते भंते ?) ? फासुयविहारं (ते भंते ?)

सोमिला ! जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अव्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे।

किं ते भंते ! जत्ता ?

सोमिला ! जं मे तव-नियम-संजय-सज्झाय-झाणावस्सगमादीएसु जोगेसु जयणा, सेत्तं जत्ता।

किं ते भंते ! जवणिज्जं ?

सोमिला ! जवणिज्जे दुविहे पण्णते, तं जहा–इंदियजवणिज्जे य, नोइंदिय-जवणिज्जे य।

से किं तं इंदियजवणिज्जे ?

इंदियजवणिज्जे––जं मे सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, सेत्तं इंदियजवणिज्जे।

से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?

नोइंदियजवणिज्जे–जं मे कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा नो उदीरेंति, सेत्तं नोइंदियजवणिज्जे । सेत्तं जवणिज्जे ।

किं ते भंते ! अव्वाबाहं ?

सोमिला ! जं मे वातिय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइया विविहा रोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता नो उदीरेंति सेत्तं अव्वाबाहं।

किं ते भंते ! फासुयविहारं ?

सोमिला ! जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडगविवज्जियासु वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, सेत्तं फासुयविहारं।

सरिसवा ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सोमिला ! सरिसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–सरिसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

से नूणं भे सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा सरिसवा पण्णत्ता तं जहा––मित्तसरिसवा य, धन्नसरिसवा य।

तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवा ते तिविहा पण्णत्ता तं जहा––सहजायया, सहवड्ढियया, सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जे ते धन्नसरिसवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा––सत्थपरिणया य, असत्थपरिणया य। तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा––एसणिज्जा य, अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–जाइया य, अजाइया य। तत्थ णं जे ते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा––लद्धा य, अलद्धा य तत्थ णं जे ते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया। से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ––सरिसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

मासा ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सोमिला ! मासा मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ––मासा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

से नूणं भे सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा मासा पण्णत्ता, तं जहा––दव्वमासा य, कालमासा य।

तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालस पण्णत्ता, तं जहा––सावणे, भद्दवए, आसोए, कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फग्गुणे, चेत्ते, वइसाहे, जट्ठामूले, आसाढे। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जे ते दव्वमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा––अत्थमासा य, धण्णमासा य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं जे ते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुवण्णमासा य, रुप्पमासा य। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य, असत्थपरिणया य । एवं जहा धण्णसरिसवा-जाव-से तेणट्ठेणं-जाव-अभक्खेया वि।
कुलत्था ते भंते! किं भक्खेया? अभक्खेया?
सोमिला! कुलत्था मे भक्खेया वि अभक्खेया वि।
से केणट्ठेणं-जाव-अभक्खेया वि?
से नूणं भे सोमिला! बंभण्णएसु नएसु दुविहा कुलत्था पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिकुलत्था य, धण्णकुलत्था य।
तत्थ णं जे ते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कुलवधुया इ वा, कुलमाउया इ वा, कुलधुया इ वा। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जे ते धण्णकुलत्था, एवं जहा धण्णसरिसवा। से तेणट्ठेणं-जाव-अभक्खेया वि।
एगे भवं? दुवे भवं? अक्खए भवं? अव्वए भवं? अवट्ठिए भवं? अणेगभूयभाव-भविए भवं?
सोमिला! एगे वि अहं-जाव-अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं।
से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—एगे वि अहं—जाव-अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं?
सोमिला! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुविहे अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवयोग-ट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं। से तेणट्ठेणं-जाव-अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं।

सोमिलस्स सावगधम्मपडिवत्ती

एत्थ णं से सोमिले माहणे संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा खंदओ-जाव-से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भसेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ मुंडा भवित्ताणं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, नो खलु अहं तहा संचाएमि, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि-जाव-दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।
तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे-जाव-अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

सोमिलस्स देवगइ-सिद्धिगमणनिद्देसो

३०४ भंते! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए?
नो इणट्ठे समट्ठे जहेव संखे तहेव निरवसेसं-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति।
सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति-जाव-विहरइ।

भग० स० १८, उ० १०।

---

१९. भगवओ महावीरस्स समणोवासगाणं देवलोगट्ठिईए परूवणं

समणोवासगाणं सोहम्मे कप्पे ठिई

३०५ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स समणोवासगाणं सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि [पलिओवमाइं ठिई प०]।

[ठाण अ० ४ उ० ३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. कूणियस्स महावीरसमवसरणगमण-धम्मसवणपसंगो

चंपानयरी

३०६ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया आइण्णजणमणूसा हलसयसहस्ससंकिट्ठविकिट्ठ-लट्ठपण्णत्तसेउसीमा कुक्कुडसंडेयगामपउरा उच्छुजवसालिकलिया गो-महिस-गवेलग-प्पभूया आयारवंतचेइयजुवइविविहसण्णिविट्ठबहुला उक्कोडियगायगठिभेयग-भड-तक्कर-खंडरक्खरहिया खेमा णिरुवद्दवा सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा अणेगकोडिकुडुंबियाइण्णणिव्वुयसुहा णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग—कहग-पवग-लासग-आइक्खग-मंख-लंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायराणुचरिया आरामुज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणगुणोववेया नंदणवणसन्निभप्पगासा उव्विद्धविउलगंभीरखायफलिहा चक्क-गय-मुसुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलक-वाड-घणदुप्पवेसा धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ता कविसीसगवट्टरइयसंठियविरायमाणा अट्टालय-चरिय-दार-गोपुर-तोरण-समुण्णय-सुविभत्त-रायमग्गा छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीला विवणिवणिच्छित्तसिप्पियाइण्णणिव्वुयसुहा सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-पणियावण-विविहवत्थुपरिमंडिया सुरम्मा नरवइपविइण्णमहिवइपहा अणेगवरतुरग-मत्तकुंजर-रहपहकर-सीय-संदमाणी-आइण्ण-जाण-जुग्गा विमउल-णवणलिणिसोभियजला पंडुरवरभवणसण्णिमहिया उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

पुण्णभद्दे चेइए

३०७ तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नाम चेइए होत्था, चिराईए पुव्वपुरिसपण्णत्ते पोराणे सद्दिए वित्तिए (पाठान्तरे—'कित्तिए') णाए सच्छत्ते सज्झए सघंटे सपडागे पडागाइपडागमंडिए सलोमहत्थे कयवेयड्डिए लाउल्लोइयमहिए गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितले उवचियचंदणकलसे चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभाए आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-मल्लदामकलावे पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंध-गंधिए गंधवट्टिभूए णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-पवग-कहग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-भुयग-मागहपरिगए बहुजणजाणवयस्स विस्सुयकित्तिए बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे पाहुणिज्जे अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कार-णिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे जागसहस्स-भागपडिच्छए बहुजणो अच्चेइ आगम्म पुण्णभद्दचेइयं पुण्णभद्दचेइयं।

वणसंडो

३०८ से णं पुण्णभद्दे चेइए एक्केणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता परिक्खित्ते, से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीय-च्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए घणकडिअकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरंबभूए।

ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो फलमंतो बीयमंतो अणुपुव्वसुजायरुइल-वट्टभावपरिणया एक्कखंधा अणेगसाला अणेगसाहप्पसाहविडिमा अणेगनरवामसुप्पसारियअग्गेज्झघणविउलबद्धखंधा [वाचनान्तरे अधिकानि पदानि-पाईणपडीणायतसाला उदीणदाहिणविच्छिण्णा ओणयनयपणयविप्पहाइयओलंबपलंबलंबसाहप्पसाहविडिमा अवाईणपत्ता अणुद्दण्णपत्ता] अच्छिद्दपत्ता अवाईणपत्ता अवाईयपत्ता निद्धूयजरढपंडुपत्ता णवहरियभिसंतपत्तभारंधयारगंभीरदरिसणिज्जा उवणिग्ग-यणवतरुणपत्तपल्लवकोमलउज्जलचलंतकिसलयसुकुमालपवालसोहियवरंकुरग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं माइया णिच्चं लवइया णिच्चं थवइया णिच्चं गुलइया णिच्चं गोच्छिया णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया णिच्चं विणमिया णिच्चं पणमिया णिच्चं कुसुमिय-माइयलवइयथवइयगुलइयगोच्छियजमलियजुवलियविणमियपणमियसुविभत्तपिंडमंजरिवडिंसयधरा सुय—बरहिण—मयणसाल-कोइल कोभगक-भिंगारग—कोंडलग—जीवंजीवग-णंदीमुह-कविल—पिंगलक्खग—कारंड—चक्कवाय—कलहंस—सारस—अणेगसउणगणमिहुणविरइयस-द्दुण्णइयहुरसरणाइए सुरम्मे संपिंडियदरियभमरमहुयरिपहकरपरिलितमत्तछप्पयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमंतगुंजंतदेसभाए अब्भितर पुप्फ-फले बाहिरपत्तोच्छण्णे पत्तेहि य पुप्फेहि य ओछन्नपडिवलिच्छत्ते साउफले निरोयए अकंटए णाणाविहगुच्छ-गुम्म-मंडवग-रम्मसो-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिए विचित्तसुहकेउभूए वावी-पुक्खरिणी-दीहियासु य सुनिवेसियरम्मजालहरए पिंडिमणीहारिमं सुगंधि सुहसुराभिमणहरं च महया गंधद्धाणिं मुयंता णाणाविहगुच्छ-गुम्म-मंडवगघरगसुहसेउकेउबहुला अणेगरहजाणजुग्गसिबियपविमोयणा सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

असोगवरपायवे

३०९ तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते, [वाचनान्तरे अधिकः पाठः ——दूरोवगयकंदमूलवट्टल-ट्ठसंठियसिलिट्ठ-घणमसिणनिद्धसुजायनिरुवहयुच्चिद्धपवरखंधी अणेगनरपवरभुयागेज्झे कुसुमभरसमोणमंतपत्तलविसालसाले महुयरिभ-मरगणगुमगुमाइयनिलितउद्धुतसस्सिरीए णाणासउणगणमिहुणसुमहुरकण्णसुहपलत्तसद्दमहुरे] कुस-विकुसविसुद्धरुक्खमूले मूलमंते कंदमंते -जाव-परिमोयणे सुरम्मे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

से णं असोगवरपायवे अण्णेहिं बहूहिं तिलएहिं लउएहिं छत्तोवेहिं सिरीसेहिं सत्तवण्णेहिं दहिवण्णेहिं लोद्धेहिं धवेहिं चंद-णेहिं अज्जुणेहिं णीवेहिं कुडएहिं कलंबेहिं सव्वेहिं फणसेहिं दालिमेहिं सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पियएहिं पियंगूहिं पुरोवगेहिं रायरुक्खेहिं णंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते।

ते णं तिलया लउया-जाव-णंदिरुक्खा कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो, एएसिं वण्णओ भाणियव्वो-जाव-सिवियपरि-मोयणा सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

ते णं तिलया-जाव-णंदिरुक्खा अण्णेहिं बहूहिं पउमलयाहिं णागलयाहिं असोअलयाहिं चंपगलयाहिं चूयलयाहिं वणलयाहिं वासंतियल-याहिं अइमुत्तयलयाहिं कुंदलयाहिं सामलयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता।

ताओ णं पउमलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ-जाव-वडिंसयधराओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ।

[पुस्तकान्तरगतोऽधिकः पाठः—तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे अट्ठ अट्ठ मंगलया पण्णत्ता।
तं जहा—१. सोत्थिय-२. सिरिवच्छ—३. नंदियावत्त—४. वद्धमाणग—५. भद्दासण—६. कलस—७. मच्छ—८ दप्पण सव्वरयणामया अच्छा सण्हा मण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा समिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे किण्हचामरज्झया नीलचामरज्झया लोहियचामरज्झया सुक्किलचामरज्झया हालिद्दचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वयरामयदंडा जलयामलगंधिया सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे छत्ताइच्छत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थगा पउमहत्थगा कुमुयहत्थगा कुसुमहत्थगा नलिणहत्थगा सुभगहत्थगा सोगंधियहत्थगा पुंडरीयहत्थगा महापुंडरीयहत्था सयवत्तहत्था सहस्सपत्तहत्था सव्वरयणामया अच्छा-जाव-पडिरूवा।]

पुढविसिलापट्टओ

३१० तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसिं खंधसमल्लीणे एत्थ णं महं एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते, विक्खंभायामउस्सेहसुप्पमाणे किण्हे अंजणग-घण-कुवलय--हलहरकोसेज्जा-ऽऽगास--केस-कज्जलंगी--खंजण--सिंगभेद--रिट्ठय-जंबूफलअसणग-सणबंधणणीलुप्पलपत्तनिकर-अयसि-कुसुमप्पगासे मरगय-मसार-कलित्त-णयणकोयरासिवण्णे णिद्धघणे अट्ठसिरे आयंसयतलोवमे सुरम्मे ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालगकिण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्ते आईणगरूय-बूर-णवणीय-तूल-फरिसे सीहासणसंठिए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

[वाचनान्तरपाठः——अंजणग-घण-कुवलय-हलहरकोसेज्ज-सरिसे आगास-केस-कज्जल-कक्केयण-इंदणील-अयसिकुसुम-प्पगासे भिंगंजण-सिंगभेय-रिट्ठग-नील-गुलिया-गवल-इरेग-भमर-निकुरुंबभूए जंबूफल-सण--कुसुमबंधननीलुप्पलपत्त-निगरमरगया-ऽऽसासग-नयणकोया-रासिवण्णे निद्धे घणे अज्झुसिरे रूवगपडिरूवदरिसणिज्जे आयंसगतलोवमे सुरम्मे सीहासणसंठिए सुरूवे मुत्ताजालखइयंतकम्मे आईणग-रूय-बूर-नवणीयतूलफासे सव्वरयणामए अच्छे-जाव-पडिरूवे।]

चंपाए कोणिए राया

३११ तत्थ णं चंपाए णयरीए कोणिए णामं राया परिवसइ, महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे अच्चंतविसुद्धदीहरायकुलवंससुप्पसूए णिरंतरं रायलक्खणविराइयंगमंगे बहुजणबहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धाहिसित्ते माउपिउसुजाए दयपत्ते सीमंकरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए सेउकरे केउकरे णरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते वित्थिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूव-रयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डियपउरभत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूए पडिपुण्णजंतकोसकोट्ठागाराउधागारे बलवं दुब्बलपच्चामित्ते ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयसत्तुं निहयसत्तुं मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिक्खं मारि-भयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसंतडिंब-डमरं रज्जं पसासेमाणे विहरइ।

कोणियस्स धारिणी देवी

३१२ तस्स णं कोणियस्स रण्णो धारिणी णामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकारकंतपियदंसणा सुरूवा करयलपरिमियपसत्थतिवलीवलियमज्झा कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइयरयणियरविमलपडिपुण्णसोमवयणा सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललियसंलावणिउणजुत्तोवयारकुसला [प्रत्यन्तरपाठः—सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-विलासकलिया] पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, कोणिएणं रण्णा भंभसारपुत्तेण सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ।

कोणियस्स निरंतरं भगवंतपवित्तिनिवेयपुरिसे

३१३ तस्स णं कोणियस्स रण्णो एक्के पुरिसे विउलकयवित्तिए भगवओ पवित्तिवाउए भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेइ।
तस्स णं पुरिसस्स बहवे अण्णे पुरिसा दिण्णभतिभत्तवेदणा भगवओ पवित्तिवाउया भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेंति।

कोणियस्स सुहविहरणं

३१४ तेणं कालेणं तेणं समएणं कोणिए राया भंभसारपुत्ते बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगणणायग-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूयसंधिवालसद्धिं संपरिवुडे विहरइ।

भगवंतपवित्तिवावडपुरिसेण कोणियसमक्खं महावीरस्स चंपाए आगमणनिवेयणं

३१५ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे-जाव[1]-धम्मज्झएणं पुरओ पकड्ढिज्जमाणेणं चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे चंपाए नयरीए बहिया उवणगरग्गामं उवागए चंपं नगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे।

तए णं से पवित्तिवाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव कोणिए राया भिंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—

"जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं कंखंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पत्थंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं अभिलसंति जस्स णं देवाणुप्पिया णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठ-जाव-हियया भवंति, से णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे चंपाए नयरीए उवणगरग्गामं उवागए चंपं णगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे। तं एवं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमि, पियं ते भवउ।

भगवंतं पइ कोणियस्स नमोक्काराइ

३१६ तए णं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए धाराहयनीवसुरहिकुसुमं व चंचुमालइयऊसवियरोमकूवे वियसियवरकमलणयण-वयणे पयलियवरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइ-

१. यावत्करणात् सूचितः पाठ औपपातिकसूत्रादवगन्तव्यः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यवच्छे पालंबपलंबमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेरुलियवरिट्ठरिट्ठअंजणनिउणोवियमिसिमिसिंतमणिरयणमंडियाओ पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता अवहट्टु पंच रायककुहाइं तंजहा—१ खग्गं २ छत्तं ३ उप्फेसं ४ वाहणाओ ५ वालवीयणं, एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए अंजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, सत्तट्ठ पयाइ अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, वामं जाणुं अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ, निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडियथंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता करयल-जाव-कट्टु एवं वयासी—

"णमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं वियट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थगरस्स-जाव-संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं" ति कट्टु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अट्ठुत्तरं सयसहस्सं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी—"जया णं देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरिज्जा, इहेव चंपाए णयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा तया णं तुमं मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि"त्ति कट्टु विसज्जिए।

चंपाए भ० महावीरस्स समोसरणं

३१७ तए णं समणे भगवं महावीरे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिंमि दिणयरे तेयसा जलंते आगासगएणं चक्केणं-जाव-सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा णयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव वणसंडे, जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव पुढविसिलापट्टए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि पुरत्थाभिमुहे पलियंकनिसन्ने अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।[1]

चंपानयरीनिवासिजणाणं समवसरणगमणं पज्जुवासणा य

३१८ तए णं चंपाए णयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा [क्वचित्-बहुजणसद्दे इ वा जणवाए इ वा जणुल्लावे इ वा] जणवूहे इ वा जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मीइ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं माइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सयंसंबुद्धे पुरिसुत्तमे-जाव-संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए, इह संपत्ते, इह समोसढे, इहेव चंपाए णयरीए बहिं पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमंग उण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगल्लं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासामो, एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हिताए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ"त्ति कट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं इक्खागा नाया कोरव्वा] खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितयो, अप्पेगइया वंदणवत्तियं, अप्पेगइया पूयणवत्तियं, एवं सक्कारवत्तियं सम्माणवत्तियं दंसणवत्तियं कोऊहलवत्तियं, अप्पेगइया अट्ठविणिच्छयहेउं-अस्सुयाइं सुणेस्सामो, सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो; अप्पेगइया अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो, अप्पेगइया सव्वओ समंता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जिणभत्तिरागेणं, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता [क्वचित्-उच्छोलणपधोया] सिरसा कंठे मालकडा

१. एतदनन्तरगतो विस्तृतो ग्रन्थसन्दर्भ औपपातिकसूत्रादवगन्तव्यः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आविद्धमणिसुवण्णा कण्ठियहार-ऽद्धहार-तिसर-पालंब-पलंबमाणकडिसुत्तसुकयसोहाभरणा पवर वत्थपरिहिया [वाचनान्तरे–जाणगया जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया] चंदणोलित्तगायसरीरा, अप्पेगइया हयगया, एवं गयगया रहगया सिबियागया संदमाणियागया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता [क्वचित्–वग्गावग्गि गुम्मागुम्मि] महया उक्किट्ठसीहणायबोलकलकलरवेणं पक्खुब्भियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणा [क्वचित्–पायदद्दरेण भूमिं कंपेमाणा, अंबरतलं पिव फोडेमाणा एगदिसिं एगाभिमुहा] चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति, पासित्ता जाणवाहणाइं ठावयंति, [क्वचित्–विट्ठंभंति], ठावइत्ता जाण-वाहणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता [वाचनान्तरे–जाणाइं मुयंति, वाहणाइं विसज्जेंति, पुप्फ-तंबोलाइयं आउहमाइयं सचित्तालंकारं पाहणाओ य विसज्जेंति, एगसाडियं उत्तरासंगं करेंति, आयंता चोक्खा परमसुइभूया अभिगमेणं अभिगच्छंति, चक्खुफासे एगत्तीभावकरणेणं] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासणे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति। [वाचनान्तरे–तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति, काइयाए सुसमाहियपसंतसाहरियपाणिपाया अंजलिमउलियहत्था, वाइयाए एवमेयं भंते, अवितहमेयं असंदिद्धमेयं, इच्छियमेयं, पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं, सच्चे णं एस अट्ठे, माणसियाए––तच्चित्ता तम्मणा तल्लेसा तदज्झवसिया तत्तिव्वज्झवसाणा तदप्पियकरणा तदट्ठोवउत्ता तब्भावणाभाविया एगमणा अविमणा अणण्णमणा जिणवयणधम्माणुरागरत्तमणा वियसियवरकमलनयण-वयणा पज्जुवासंति। समोसरणाइं गवेसह आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा आएसणेसु वा आवसहेसु वा पणियगेहेसु वा पणियसालासु वा जाणगिहेसु वा जाणसालासु वा कोट्ठागारेसु वा सुसाणेसु वा सुण्णागारेसु वा परिहिंडमाणा परिघोलेमाणा।]

भगवंतपवित्तिवावडपुरिसेण कोणियस्स पुरओ भगवओ आगमणस्स निवेयणं

३१९ तए णं से पवित्तिवाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए ण्हाए-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमित्ता चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं०, जेणेव बाहिरिया, सा चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया-जाव-णिसीयइ, णिसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्धत्तेरस सयसहस्साइं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

कोणियस्स महावीरदंसणट्ठं संकप्पो सव्विड्ढिए समवसरणे गमणं पत्थाणं च

३२० तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते बलवाउयं आमंतेइ आमंतेत्ता एवं वयासि––"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रहपवरजोहकलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि, सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठवेहि, चंपं च णयरिं सब्भितरबाहिरियं [क्वचित्––आसियसम्मज्जिओवलित्तं सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु] आसित्त-सित्त-सुइसम्मट्ठरत्थंतरा-ऽऽवण-वीहियं मंचाइमंचकलियं णाणाविहरागउच्छियज्झयपडागाइपडागमंडियं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदण-जाव-गंधवट्टिभूयं करेहि य कारवेहि य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि। णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदिए।"

तए णं से बलवाउए कूणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामि'त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता एवं हत्थिवाउयं आमंतेइ आमंतेत्ता एवं वयासि––"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि"।

तए णं से हत्थिवाउए बलवाउयस्स एयमट्ठं सोच्चा आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता छेयायरियउवएसमइकप्पणाविकप्पेहिं सुणिउणेहिं उज्जलणेवत्थहत्थपरिवत्तियं सुसज्जं धम्मियसण्णद्धबद्धकवइयउप्पीलियकच्छवच्छगेवेयबद्धगलवरभूसणविरायंतं अग्गिननेयजुत्तं सललियवरकण्णपूरविराइयं पलंबओचूलमहुयरकयंधयारं चित्तपरिच्छेयपच्छयं पहरणावरणभरियजुद्धसज्जं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं सपडागं पंचामेलयपरिमंडियाभिरामं ओसारियजमलजुयलघंटं, विज्जुपिणद्धं व कालमेहं, उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं, मत्तं गुलगुलंतं मणपवणजइणवेगं भीमं संगामियाओज्जं आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेइ, पडिकप्पेत्ता हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेइ, सण्णाहित्ता जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ।

तए णं से बलवाउए जाणसालियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सुभद्दापमुहाणं देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठवेहि, उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से जाणसालिए बलवाउयस्स एयमट्ठं आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्तो जेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता जाणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चुवेक्खित्ता जाणाइं संपमज्जेइ, संपमज्जित्ता जाणाइं संवट्टेइ, संवट्टित्ता जाणाइं णीणेइ, णीणेत्ता जाणाणं दूसे पवीणेइ, पवीणइत्ता जाणाइं समलंकरेइं, समलंकरित्ता जाणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ करेत्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाहणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चुवेक्खित्ता वाहणाइं संपमज्जइ, संपमज्जित्ता वाहणाइं णीणेइ, णीणेत्ता वाहणाइं अप्फालेइ, अप्फालेत्ता दूसे पवीणेइ, पवीणइत्ता वाहणाइं समलंकरेइ, समलंकरित्ता वाहणाइं वरभंडमंडियाइं करेइ, करेत्ता वाहणाइं जाणाइं जोएइ, जोएत्ता पओयलट्ठिं पओयधरए य समं आडहइ, आडहेत्ता वट्टमग्गं गाहेइ; गाहेत्ता जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ।

तए णं से बलवाउए णयरगुत्तियं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी—'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चंपं णयरिं सब्भितरबाहिरियं आसित्त-जाव-कारवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि"।

तए णं से णयरगुत्तिए बलवाउयस्स एयमट्ठं आणाए विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भितरबाहिरियं आसित्त-जाव-कारवेत्ता य जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ।

तए णं से बलवाउए कोणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पियं पासइ हयगय-जाव-सण्णाहियं पासइ, सुभद्दापमुहाणं देवीणं पडिजाणाइं उवट्ठवियाइं पासइ, चंपं णयरिं सब्भितर-जाव-गंधवट्टिभूयं कयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे-जाव-हियए जेणेव कूणिए राया भंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-जाव-एवं वयासी—"कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरयणे, हयगय-जाव-पवरजोहकलिया य चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया, सुभद्दापमुहाणं च देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं चंपाणयरी सब्भितरबाहिरिया आसित्त-जाव-गंध-वट्टिभूया कया, तं णिज्जंतु णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं अभिवंदया।

तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते बलवाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अणेगवायामजोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते। सयपागसहस्सपागेहिं सुगंधतेल्लमाइएहि पीणणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भिगेहिं अब्भंगिए समाणे तेल्लचम्मंसि पडिपुण्णपाणि-पायसुउमालकोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणसिप्पोवगएहिं अब्भंगण-परिमद्दणुव्वलण-करणगुणणिम्माएहिं अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए संबाहणाए संबाहिए समाणे अवगयखेयपरिस्समे अट्टणसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्तजालाउलाभिरामे विचित्तमणिरयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणि-रयणभत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुद्धोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुहोदएहिं पुणो पुणो कल्लाणगपवरमज्जणविहीए मज्जिए।

तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हलसुकुमालगंधकासाइयलूहियंगे सरससुरहिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते अहयसुमहग्घदूसरयणसुसंवुए सुइमालावण्णगविलेवणे य आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाणकडिसुत्त-सुकयसोभे पिणद्धगेविज्ज-अंगुलिज्जग-ललियंगयललियकयाभरणे वरकडग-तुडियथंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए मुद्दियापिंगलंगुलीए कुंडलउज्जोवियाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थयसुकयरइयवच्छे पालंबपलंबमाणपडसुकयउत्तरिज्जे णाणामणि-कणग-रयणविमलमहरिहणिउणोवियमिसिमिसिंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठआविद्धवीरवलए, किं बहुणा ?

कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए णरवई सकोरंटमल्लदामेणं [वाचनान्तरे—"अब्भपडलपिंगलुज्जलेणं अविरलसमसहियचंदमंडलसमप्पभेणं मंगलसयभत्तिच्छेयचित्ति यखिखिणिमणिहेमजालविरइयपरिगयपेरंतकणगघंटियापयलिय किंणिकिंणितसुइसुहसुमहुरसद्दालसोहिएणं सप्पयरवरमुत्तदामलंबंतभूसणेणं नरिंदवामप्पमाणरूंदपरिमंडलेणं सीयायववायवरिसविसदोसनासणेणं तमरयमलबहलपडलधाडणपभाकरेणं उडुसुहसिवछायसमणुबद्धेणं वेरूलियदंडसज्जिएणं वइरामयवत्थिनिउणजोइयअट्ठसहस्सवरकंचणसलागनिम्मिएणं सुणिम्मलरययसुच्छएणं निउणोवियमिसिमिसिंतमणिरयणसूरमंडलवित्तिमिरकरनिग्गयग्गपडिहयपुणरविपच्चापडंतचंचलमिरिइकवयं विणिमुयंतेणं सपडिदंडेणं धरिज्जमाणेणं आयवत्तेणं विरायंते"] छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइयंगे [वाचनान्तरे—"चउहि य पवरगिरिकुहरविचरणसमुइयनिरूवहयचमरपच्छिमसरीरसंजायसंगयाहिं अमलियसियकमलविमलुज्जलियरययगिरिसिहरविमलससिकिरण—सरिसकलधोयनिम्मलाहिं पवणाहयचवललोलियतरंगहत्थनच्चंतवीइपसरियखीरोदगपवरसागरुप्पूरचंचलाहिं माणससरपरिसरपरिचियावासविसयवेसाहिं कणगगिरिसिहरसंसियाहिं ओवइयउप्पइयतुरियचवलजइणसिग्घवेगाहिं हंसवधूयाहिं चेव कलिए, णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं चिल्लियाहिं नरवइसिरिसमुदयपगासणकरीहिं वरपट्टणुग्गयाहिं समिद्धरायकुलसेवियाहिं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कवरवण्णवासगन्धुद्धुयाभिरामाहिं सललियाहिं उभओपासं उक्खिप्पमाणाहिं चामराहिं कलिए सुहसीयलवाय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीइयंगे] मंगलजयसद्दकयालोए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवलमहामेहाणिग्गए इव गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससि व्व पिअदंसणे णरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंजण-गिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे।

कूणियस्स समवसरणं पइ पयाणं

३२१ तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठ मंगलया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तं जहा—सोवत्थिय—सिरिवच्छ—णंदियावत्त—वद्धमाणग—भद्दासण—कलस—मच्छ—दप्पणा।

तयाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसणरइयआलोयदरिसणिज्जा वाउद्धूयविजयवेजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

तयाणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमण्डलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वरमणिरयणपादपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकरकम्मकर-पुरिसपायत्तपरिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं।

तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पयग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा चाडुकरा वादकरा कंदप्पकरा दवकरा कोक्कुइया किड्डुकरा य वायंता य गायंता य हसंता य णच्चंता य भासंता य सावेंता य रक्खंता य [क्वचित्—"रवेंता य"] आलोयं च करेमाणा जयसद्दं पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

[संग्रहगाथाश्च क्वचित्—

असिलट्ठिकुंतचावे चामरपासे य फलगपोत्थे य। वीणाकूयग्गाहे तत्तो य हडप्पगाहे य ॥१॥
दंडी मुंडि सिहंडी पिच्छी जडिणो य हासकिड्डा य। दवकारा चडुकारा कंदप्पियकुक्कुईगा य ॥२॥
गायंता वायंता नच्चंता तह हसंत हासेंता । सावेंता रावेंता आलोयजयं पउंजंति ॥३॥]

तयाणंतरं च णं जच्चाणं तरमल्लिहायणाणं हरिमेलामउल-मल्लियच्छाणं चंचुच्चियललियपुलियचलचवलचंचलगईणं लंघणवग्गण-धावण-धोरण-तिवई-जइणसिक्खियगईणं ललंत-लाम-गललाय-वरभूसणाणं मुहभंडग-ओचूलग-थासगमिहिलाणचामरगंडपरिमंडियकडीणं किंकरवरतरुणपरिग्गहियाणं अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं।

तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं ईसीउच्छंगविसालधवलदंताणं कंचणकोसीपविट्ठदंताणं कंचणमणि-रयणभूसियाणं वरपुरिसारोहगसंपउत्ताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं।

तयाणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं संणद्धघोसाणं सखिखिणीजाल-परिक्खित्ताणं हेमवयचित्त-तिणिसकणगणिज्जुत्तदारुयाणं कालयससुकयणेमिजंतकम्माणं सुसिलिट्ठवत्तमंडलधुराणं आइण्णवरतुरगसुसंपउत्ताणं कुसलनरच्छेयसार-हिसुसंपग्गाहियाणं [क्वचित्—"हेमजालगवक्खजालखिखिणीघंटजालपरिक्खित्ताणं"] बत्तीसतोणपरिमंडियाणं सकंकडवडेंसगाणं सचावसर-पहरणावरणभरियजुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयाणंतरं च णं असिसत्तिकुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडि-माल-धणुपाणिसज्जं पायत्ताणीयं ["सन्नद्धबद्धवम्मियकवयाणं उप्पीलियसरासणवट्टियाणं पिणद्धगेवेज्जविमलवरबद्धचिंधपट्टाणं गहिया उहप्पहरणाणं"] पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं।]

तए णं से कूणिए राया हारोत्थयसुकयरइयवच्छे कुंडलउज्जोवियाणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसहे मणुयराय-वसभकप्पे अब्भहियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे हत्थिक्खंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धूव्व-माणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं वेसमणे चेव णरवई अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स पुरओ महंआसा आसवरा उभओ पासिं णागा णागवरा पिट्ठओ रहसंगेल्लि।

तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहियतालयंटे ऊसवियसेयचछत्ते पवीइयवालवीयणीए सव्विड्ढीए सव्वजुतीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं [क्वचित्—"पगईहिं णायगेहिं तलायरेहिं सव्वोरोहेहिं"]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्दसण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमगप्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरव-मुअंग-दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ ।

तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया करोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं [वाचनान्तरे–"उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मियमहुरगंभीरगाहियाहिं अट्ठसइयाहिं अपुणरुत्ताहिं"] हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमंगलसएहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी–"जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! भद्दं ते अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि, जियमज्झे वसाहि। इंदो इव देवाणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं भरहो इव मणुयाणं बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं बहूइं वाससयसहस्साइं अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठे परमाउं पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसिं च बहूणं गामा गर-णयर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-संनिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुंइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि" त्ति कट्टु जय जय सद्दं पउंजंति ।

कूणियस्स समोसरणे आगमणं पज्जुवासणा य

३२२ तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिनंदिज्जमाणे [क्वचित्–"उन्नइज्जमाणे"] मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे कंतिसोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे बहूणं नरनारिसहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे मंजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे [वाचनान्तरे "संतीतलताल-तुडियगीयवाइयरवेणं महुरेणं महुरेणं जयसद्दघोसविसएणं मंजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे कंदरगिरिविवरकुहरगिरिवरपासादुड्ढघणभवणेसु-कूलसिंघाडगतिगचच्चरचउक्कआरामुज्जाणकाणणसमप्पवप्पदेसभागे पंडुसुयासयसहस्ससंकुलं करेंते हयहेसिय-हत्थिगुलगुलाइय-रहघण-घणसद्दमीसएणं महया कलकलरवेण य जणस्स महुरेणं पूरयंते सुगंधवरकुसुमचुण्णउव्विद्ध-वासरेणुकविलं नभं करेंते कालागुरुकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवनिवहेणं जीवलोगमिव वासयंते समंतओ खुभियचक्कवालं पउरजणबालवुड्ढयपमुइय-तुरियपहावियविउलाउलबोलबहुलं नभं करेंते"] चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ, पासित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ, ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायकउहाइं, तं जहा-खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तं जहा–१ सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए २ अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए ३ एगसाडियं उत्तरासंगकरणेणं ४ चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं [हत्थिखंधविट्ठंभणयाए] ५ मणसो एगत्तभावकरणेणं; समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासइ, तं जहा—काइयाए वाइयाए माणसियाए। काइयाए-ताव संकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ। वाइयाए–जं जं भगवं वागरेइ 'एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते। असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह अपडिकूलमाणे पज्जुवासइ। माणसियाए–महयासंवेगं जणइत्ता तिव्वधम्माणुरागरत्ते पज्जुवासइ ।

सुभद्दाइकूणियभज्जाणं समोसरणे आगमणं पज्जुवासणा य

३२३ तए णं ताओ सुभद्दप्पमुहाओ देवीओ अंतोअंतेउरंसि ण्हायाओ-जाव-पायच्छित्ताओ सव्वालंकारविभूसियाओ [वाचनान्तरे–"वाहुयसुभगसोवत्थि वद्धमाणगपूसमाणगजयविजयमंगलसएहिं अभिथुव्वमाणाओ कप्पाछेयायरियइयसिरसाओ महयागंधद्धणिं मुयंतीओ] बहुहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं वामणीहिं वडभीहिं बब्बरीहिं पउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणियाहिं चारुइणियाहिं लासियाहिं लउसियाहिं सिंहलीहिं दमिलीहिं आरबीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं बहलीहिं मरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं सदेसणेवत्थग्गहियवेसाहिं चेडियाचक्कवालवरिसधरकं चुइज्जमहत्तरवंदपरिक्खित्ताओ अंतेउराओ णिग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पाडियक्कजाणाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरूहंति, दुरूहित्ता णियगपरियालसद्धिं संपरिवुडाओ चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति, पासित्ता पाडियक्क-पाडियक्काइं जाणाइं ठवेंति, ठवित्ता जाणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं-जाव-परिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति। तं जहा–१ सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए २ अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए ३ विणओणयाए गायलट्ठीए ४ चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं ५ मणसो एगत्ति-भावकरणेणं; समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणपयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता कूणियरायं पुरओकट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिकडाओ पज्जुवासंति।

भगवओ महावीरस्स धम्मदेसणा

३२४ तए णं समणे भगवं महावीरे कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स सुभद्दापमुहाणं देवीणं तीसे य महतिमहालियाए परिसाए इसि-परिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरिवाराए ओहबले अइबले महब्बले अपरि-मियबलवीरियतेयमाहप्पकंतिजुत्ते सारयणवत्थणियमहुरगंभीरकोंचणिग्घोसदुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खरसण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ अरिहा धम्मं परिकहेइ।

तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्मं आइक्खइ।

सावि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ। तं जहा-अत्थि लोए, अत्थि अलोए, एवं जीवा अजीवा बंधे मोक्खे पुण्णे पावे आसवे संवरे वेयणा णिज्जरा अरिहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा नरगा णेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ माया पिया रिसओ देवा देवलोया सिद्धी सिद्धा परिणिव्वाणे परिणिव्वुया अत्थि पाणाइवाए-जाव-[1]आणाए आराहए भवति।

परिसाए धम्मपडिवत्ती, सगिहगमणं च

३२५ तए णं सा महतिमहालिया मणूसपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, अत्थेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं-दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवण्णा।

अवसेसा णं परिसा समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–"सुअक्खाए ते भंते! निग्गंथे पावयणे एवं सुपण्णत्ते सुभासिए सुविणीए सुभाविए, अणुत्तरे ते भंते! निग्गंथे पावयणे, धम्मं णं आइक्खमाणा तुब्भे उवसमं आइक्खह, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह, णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं?" एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

कूणियकयधम्मदेसणपसंसा सगिहगमणं च

३२६ तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–"सुय-क्खाए ते भंते! निग्गंथे पावयणे-जाव-किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं?" एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।

सुभद्दाईणं कूणियभज्जाणं धम्मदेसणापसंसा सगिहगमणं च

३२७ तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हिययाओ उट्ठाए उट्ठेंति उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–"सुयक्खाए णं भंते! निग्गंथे पावयणे-जाव-किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं?," एवं वदित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूयाओ तामेव दिसिं पडिगयाओ।

ओव० सु० १-३७।

---

१. यावत्करणान्निर्दिष्टो ग्रन्थसन्दर्भ औपपातिकसूत्रादवगन्तव्यः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. अम्मडपरिव्वायगकहाणयं

भगवइसुत्तम्मि अम्मडपरिव्वायगनिद्देसो

३२८ तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासीसया गिम्हकालसमयंसि एवं जहा उववाइए-जाव-आराहगा। बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ–"एवं खलु अम्मडे परिव्वायगे कंपिल्लपुरे नयरे घरसए० एवं जहा उववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया-जाव-दढप्पइण्णो अंतं काहइ।

भगवई श० १४ उ० ८।

अम्बड-अन्तेवासिकहाणयं

तेसि णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए पत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य णं दिण्णे णो चेवणं अदिण्णे, से वि य विवित्तए णो चेव णं हत्थपायचरुचमसपक्खालणट्ठाए सिणाइत्तए वा। तेसि णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे-जाव-णं अदिण्णे, से वि य हत्थपायचरुचमसपक्खालणट्ठयाए णो चेव णं पिबित्तए सिणाइत्तए वा।

ते णं परिव्वायगा एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, सेसं तं चेव।

सत्तण्हं सयाणं अम्मडसिस्साणं अडवीए संगहियउदगक्खओ

३२९ तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसयाइं गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानईए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ णयराओ पुरिमतालं णयरं संपट्ठिया विहाराए।

तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णोवायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे।

अदत्तअगहणव्वयं पालयाणं सत्तसयाणं परिव्वायगाणं संलेहणापुव्वं समाहिमरणं देवलोगुप्पत्ती य

३३० तए णं ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह इमीसे अगामिआए-जाव-अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से उदए-जाव-झीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए-जाव-अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करित्तए "त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए–जाव–अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेंति करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्चंपि अण्णमण्णं सद्दावेत्ति सद्दावेत्ता एवं वयासी–

"इहण्णं देवाणुप्पिया ! उदगदातारो णत्थि, तं णो खलु कप्पइ, अम्ह अदिण्णं गिण्हित्तए, [क्वचित्–अदिण्णं भुंजित्तए] अदिण्णं साइज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इमाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडयं कुडिआओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य पाउयाओ य धाउरत्ताओ एगंते एडित्ता गंगं महाणइं ओगाहित्ता वालुयासंथारए संथरित्ता संलेहणाझूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खियाणं पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए" त्ति कट्टु, अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तिदंडए य-जाव-एगंते एडेंति, एडेत्ता गंगं महाणइं ओगाहेंति ओगाहित्ता वालुआसंथारए संथरंति, संथरित्ता वालुआसंथारयं दुरुहंति, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयल-जाव-कट्टु एवं वयासी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"नमो त्थु णं अरहंताणं-जाव-संपत्ताणं, नमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स-जाव-संपाविउकामस्स, नमो त्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स। पुव्वि णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, एवं-जाव-सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं मायामोसं मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए। जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणाणं पेज्जं थेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइय-पित्तियसिंभियसंनिवाइयविविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु–त्ति कट्टु एयंपि णं चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि" त्ति कट्टु संलेहणाझूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया पाओवगया कालं अणवकंखमाणा विहरंति।

तए णं ते परिव्वाया बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा। तहिं तेसिं गई दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव।

अम्मडस्स घरसयवसहि-आहारनिरूवणं

३३१ बहुजणे णं भंते! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं परूवेइ—

"एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ, से कहमेयं भंते! एवं"! "गोयमा! जं णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ—'एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे-जाव-घरसए वसहिं उवेइ', सच्चे णं एसमट्ठे अहं पि णं गोयमा! एवमाइक्खामि–जाव-एवं परूवेमि 'एवं खलु अम्मडे परिव्वायए-जाव-वसहिं उवेइ।"

"से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए-जाव-वसहिं उवेइ?"

"गोयमा! अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए-जाव-विणीययाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं अन्नया कयाइ तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउं कंपिल्लपुरे णगरे घरसए-जाव-वसहिं उवेइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए-जाव-वसहिं उवेइ"।

अम्मडस्स समणोवासयत्तं

३३२ पहू णं भंते! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए?

णो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा! अम्मडे णं परिव्वायए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे-जाव-अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, णवरं 'ऊसिय-फलिहे अवंगुदुवारे चियत्तंतेउरघरदारपवेसी [क्वचित्-चियत्तघरंतेउरपवेसो]' एयं णं वुच्चइ।

अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए-जाव-परिग्गहे णवरं सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं पि जलं सयराहं उत्तरित्तए, णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं। अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा, एवं तं चेव भाणियव्वं-जाव-णण्णत्थ एगाए गंगामट्टियाए। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीसजाए इ वा अज्झोयरए इ वा पूइकम्मे इ वा कीयगडे इ वा पामिच्चे इ वा अणिसिट्ठे इ वा अभिहडे इ वा ठइत्तए वा रइत्तए वा कंतारभत्ते इ वा दुब्भिक्खभत्ते इ वा गिलाणभत्ते इ वा वद्दलियाभत्ते इ वा पाहुणगभत्ते इ वा भोत्तए वा पाइत्तए वा। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा-जाव-बीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा।

अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स चउव्विहे अणट्ठादंडे पच्चक्खाए जावज्जीवाए। तं जहा—अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे।

अम्मडस्स कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स पडिग्गाहित्तए–से वि य वहमाणए, णो चेव णं अवहमाणए-जाव-से वि य परिपूए, णो चेव णं अपरिपूए; से वि य 'सावज्जे' त्ति काऊं णो चेव णं अणवज्जे, से वि य 'जीवा' ति काउं णो चेव णं अजीव, से वि य 'दिण्णे' णो चेव णं अदिण्णे, से वि य हत्थपायचरुचमसपक्खालणट्ठयाए पिबित्तए वा, णो चेव णं सिणाइत्तए। अम्मडस्स कप्पइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए-जाव-णो चेव णं अदिण्णे, से वि य सिणाइत्तए णो चेव णं हत्थ-पायचरुचमसपक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा।

अम्मडस्स णो कप्पइ अण्णउत्थिया वा अण्णउत्थियदेवयाणि वा अण्णउत्थियपरिग्गहियाणि वा चेइयाइं वंदित्तए वा णमंसित्तए वा -जाव-पज्जुवासित्तए वा, णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा।

अम्मडस्स देवभवो

३३३ "अम्मडे णं भंते! परिव्वायए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?"

"गोयमा! अम्मडे णं परिव्वायए उच्चावएहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणो-वासयपरियायं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहि-पत्ते कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं अम्मडस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई।

अम्मडस्स दढप्पइण्णभवनिरूवणे दढप्पइण्णस्स जम्मो

३३४ "से णं भंते! अम्मडे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उव-वज्जिहिति?"

अम्मडस्स दढपइण्णभवो

गोयमा! महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं दित्ताइं वित्ताइं वित्थिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणजाय-रूवरययाइं आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्प-गोरसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिति।

तए णं तस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अम्मापिईणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ।

से णं तत्थ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपाए-जाव-ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे दारए पयाहिति।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं काहिंति, बिइयदिवसे चंदसूरदंसणियं काहिंति, छट्ठे दिवसे जागरियं काहिंति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे दिवसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणणि-प्फण्णं णामधेज्जं काहिंति--'जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भत्थंसि चेव समाणंसि धम्मे दढपइण्णा तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं'। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेहिंति 'दढपइण्णे' त्ति।

[पुस्तकान्तरगतोऽधिकः पाठः--तए णं तस्स दढपइण्णस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं चंदसूरदरिसणं च जागरियं नामधेज्ज-करणं परंगमणं च पचंकमणगं च पच्चक्खाणगं च जेमणगं च पिंडवद्धावणं च पजंपावणं च कण्णवेहणगं च संवच्छरपडिलेहणगं च चोलोवणयणं च उवणयणं च अण्णाणि य बहूणि गब्भादाणजम्मणमाइयाइं कोउयाइं महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं करिस्संति।

तए णं से दढपइण्णे दारए पंचधाइपरिक्खित्ते, तं जहा--खीरधाईए मज्जणधाईए मंडणधाईए अंकधाईए कीलावणधाईए अण्णाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं विदेसपरिमंडियाहिं सदेसनेवच्छगहियवेसाहिं विणीयाहिं इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं निउण-कुसलाहिं चेडियाचक्कवालवरतरुणिवंदपरियालसंपरिवुडे वरिसधरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे साहरिज्जमाणे, अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे परिभुज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवला-लिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवगूहिज्जमाणे उवगूहिज्जमाणे अवयासिज्जमाणे अवयासिज्जमाणे परियंदिज्जमाणे परियंदिज्जमाणे परिचुंबिज्जमाणे परिचुंबिज्जमाणे रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे परंगिज्जमाणे गिरिकंदरमल्लीणे विव चंपगवरपायवे निवायनिब्भाघायं सुहंसुहेणं परिवड्ढिस्सइ।]

दढप्पइण्णस्स कलागहणं

३३५ तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेहिंति। तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिकलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहाविहिति सिक्खाविहिति, तं जहा--लेहं गणियं रूवं णट्टं गीयं वाइयं सरगयं पुक्खरगयं समतालं जूयं जणवायं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासगं अट्ठावयं पोरेकच्चं दगमट्टियं अण्णविहिं पाणविहिं [वत्थविहिं विलेवणविहिं] सयणविहिं अज्जं पहेलियं मागहियं गाहं गीइयं सिलोयं हिरण्णजुत्ती सुवण्णजुत्ती गंधजुत्ती चुण्णजुत्ती आभरणविही तरुणीपडिकम्मं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं हयलक्खणं गयलक्खणं गोणलक्खणं कुक्कुडलक्खणं चक्कलक्खणं छत्तलक्खणं चम्मलक्खणं दंडलक्खणं असिलक्खणं मणिलक्खणं कागणिलक्खणं वत्थुविज्जं खंधारमाणं नगरमाणं वत्थुनिवेसणं वूहं पडिवूहं चारं पडिचारं चक्कवूहं गरुलवूहं सगडवूहं जुद्धं निजुद्धं जुद्धाइजुद्धं मुट्ठिजुद्धं बाहुजुद्धं लयाजुद्धं ईसत्थं छरुप्पवाहं धणुव्वेयं हिरण्णपागं सुवण्णपागं वट्टखेड्डं मुत्ताखेड्डं णालियाखेड्डं पत्तच्छेज्जं कडगच्छेज्जं सज्जीवं निज्जीवं सउणरुयमिति बावत्तरिकलाओ सेहावित्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिईणं उवणेहिति।

तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेहिति सम्माणेहिति, सम्माणित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसज्जेहिति।

पत्तजुव्वणस्स दढपइन्नस्स वेरग्गं

३३६ तए णं से दढपइण्णे दारए बावत्तरिकलापंडिए नवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसदेसीभासाविसारए गीयरई गंधव्वणट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी वियालचारी साहसिए अलंभोगसमत्थे यावि भविस्सइ।

तए णं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो बावत्तरिकलापंडियं-जाव-अलंभोगसमत्थं वियाणित्ता विउलेहिं अण्णभोगेहिं पाणभोगेहिं लेणभोगेहिं वत्थभोगेहिं सयणभोगेहिं कामभोगेहिं उवणिमंतेहिंति।

तए णं से दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं-जाव-सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति णो रज्जिहिति णो गिज्झिहिति णो मुज्झिहिति णो अज्झोववज्जिहिति।

से जहा णामए उप्पले इ वा पउमे इ वा कुमुदे इ वा नलिणे इ वा सुभगे इ वा सुगंधे इ वा पोंडरीए इ वा महापोंडरीए इ वा सयपत्ते इ वा सहस्सपत्ते इ वा सयसहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे णोवलिप्पिहिति कामरएणं णोवलिप्पिहिति भोगरएणं णोवलिप्पिहिति मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं।

दढप्पइन्नस्स पव्वज्जा-सिद्धिगमणनिरूवणं

३३७ से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झिहित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति।

से णं भविस्सइ अणगारे भगवंते ईरियासमिए-जाव-गुत्तबंभयारी।

तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जहिति।

तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ, सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणिहिति पासिहिति, तं जहा—आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं पच्छाकडं पुरेकडं मणो माणसियं खइयं भुत्तं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणोवयकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ।

तए णं से दढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसलोए बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लद्धावलद्धं [वित्तीए माणावमाणणाओ] परेहिं हीलणाओ खिंसणाओ निंदणाओ गरहणाओ तालणाओ तज्जणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठमाराहित्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति।

ओव० सु० ३९-४०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. उदायी हत्थिराया भूयाणंदे य

रायगिहे उदायी, हत्थिराया भूयाणंदे य

३३८ रायगिहे-जाव-एवं वयासी—उदायी णं भंते! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने?
गोयमा! असुरकुमारेहिंतो देवेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने।
उदायी णं भंते! हत्थिराया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?
गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठितियंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।
से णं भंते! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति।

हत्थिराया भूयाणंदे

३३९ भूयाणंदे णं भंते! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंदे हत्थिरायत्ताए उववन्ने? एवं जहेव उदायी-जाव-अंतं काहिति।

---

२३. मद्दुयसमणोवासयकहा

रायगिहे अन्नउत्थिया मद्दुओ समणोवासओ य

३४० तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था-वण्णओ गुणसिलए चेइए, वन्नओ-जाव-पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं गुणसिलयस्स चेतियस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई सेलोदाई एवं जहा सत्तमसए अन्नउत्थिउद्देसए-जाव-से कहमेयं मन्ने एवं?

भगवओ महावीरस्स रायगिहे समोसरणं

३४१ तत्थ णं रायगिहे नयरे मद्दुए नामं समणोवासए परिवसइ, अड्ढे-जाव-अपरिभूए अभिगयजीवाजीवे-जाव-विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ। पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे-जाव-समोसढे, परिसा-जाव-पज्जुवासइ।

समवसरणे गच्छमाणस्स मद्दुयस्स अन्नउत्थिएहिं सह अत्थिकायविसओ संलावो

३४२ तए णं मद्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए ण्हाए-जाव-सरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, सओ गिहाओ पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं रायगिहं नयरं-जाव-निग्गच्छइ, निगच्छित्ता तेसिं अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयइ।
तए णं ते अन्नउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासंति, पासित्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमा कहा अविउप्पकडा इमं च णं मद्दुए समणोवासए अम्हं अदूरसामंतेणं वीईवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं मद्दुयं समणोवासगं एयमट्ठं पुच्छित्तए" त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेत्ता जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मद्दुयं समणोवासगं एवं वयासी—
एवं खलु मद्दुया! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेइ जहा सत्तमे सए अन्नउत्थियउद्देसए-जाव-से कहमेयं मद्दुया! एवं?
तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—जइ कज्जं कज्जइ जाणामो पासामो, अह कज्जं न कज्जइ न जाणामो न पासामो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते अन्नउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी–केस णं तुमं मद्दुया ! समणोवासगाणं भवसि, जे णं तुमं एयमट्ठं न जाणसि न पाससि ?

तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अन्नउत्थिए एवं वयासी––अत्थि णं आउसो ! वाउयाए वाइ ?

हंता मद्दुआ ! वाइ ।

तुब्भे णं आउसो ! वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह ?

णो इणट्ठे समट्ठे ।

अत्थि णं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला ?

हंता अत्थि,

तुब्भे णं आउसो ! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह ?

णो इणट्ठे समट्ठे ।

अत्थि णं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाए ?

हंता अत्थि,

तुब्भे णं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ?

णो इणट्ठे समट्ठे ।

अत्थि णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं ?

हंता अत्थि,

तुब्भे णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह ?

णो इणट्ठे समट्ठे,

अत्थि णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ?

हंता अत्थि,

तुब्भे णं आउसो । देवलोगगयाइं रूवाइं पासह ?

णो इणट्ठे समट्ठे,

एवामेव आउसो । अहं वा तुब्भे वा अन्नो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणइ न पासइ तं सव्वं न भवइ एवं भे सुबहुए लोए ण भविस्सतीति कट्टु ते अन्नउत्थिए एवं पडिहणइ, एवं पडिहणित्ता जेणेव गुणसिलए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं-जाव-पज्जुवासइ ।

भगवया महावीरेण मद्दुयपसंसाकरणाइ

३४३ मद्दुया ! दि समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी–सुट्ठु णं मद्दुया ! तुमं ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, साहु णं मद्दुया ! तुमं ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, जे णं मद्दुया । अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अन्नायं अदिट्ठं अस्सुयं अमयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेइ पन्नवेइ-जाव-उवदंसेइ, से णं अरिहंताणं आसायणाए वट्टइ, अरिहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ, केवलीणं आसायणाए वट्टइ, केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ, तं सुट्ठु णं तुमं मद्दुया ! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं मद्दुया ! -जाव-एवं वयासी ।

तए णं मद्दुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने-जाव-पज्जुवासइ ।

३४४ तए णं समणे भगवं महावीरे मद्दुयस्स समणोवासगस्स तीसे य -जाव-परिसा पडिगया ।

३४५ तए णं मद्दुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स-जाव-निसम्म हट्ठतुट्ठे पसिणाइं पुच्छइ, पसिणाइं पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियइ, परियादिइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदिता नमंसित्ता-जाव-पडिगए ।

मद्दुयस्स अणंतरभवनिरूवणं

३४६ 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–पभू णं भंते । मद्दुए समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं-जाव-पव्वइत्तए ? णो इणट्ठे, समट्ठे एवं जहेव संखे तहेव अरुणाभे-जाव-अंतं काहिइ ।

भगवई० श० १८ उ० ७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमो खंधो

निण्हवकहाणगाणि

अज्झयणा

१. सत्तण्हं पवयण निण्हवाणं नाम-धम्मायरिय-नगरनिद्देसो
२. जमालिनिण्हवकहाणयं
३. आजीवियतित्थयर-गोसालयनिण्हवकहाणयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. सत्तण्हं पवयणनिण्हवाणं नाम-धम्मायरिय-नगरनिद्देसो

१ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयणनिण्हवा पन्नत्ता, तं जहा– १ बहुरता २ जीवपएसिया ३ अवत्तिता ४ सामुच्छेइता ५ दोकिरिता ६ तेरासिता ७ अबद्धिता ।

एएसि णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्त धम्मायरिया हुत्था, तं जहा– १ जमाली २ तीसगुत्ते ३ आसाढे ४ आसमित्ते ५ गंगे ६ छलुए ७ गोट्ठामाहिले ।

एएसि णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्तुप्पत्तिनगरा होत्था, तं जहा–
१ सावत्थी २ उसभपुरं ३ सेतविता ४ -५ मिहिलमुल्लगातीरं ६ पुरिमंतरंजि ७ वसपुर णिण्हगउप्पत्तिनगराइं ॥१॥

(ठाणंगसुत्त-सत्तमं ठाणं)

---

२. जमालिनिण्हवकहाणयं

खत्तियकुंडे जमालिकुमारो

२ तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमे णं एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नयरे होत्था––वण्णओ । तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारे परिवसइ––अड्ढे दित्ते-जाव-बहुजणस्स अपरिभूते, उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसतिबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवनच्चिज्जमाणे-उवनच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे–उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरद-हेमंत-वसंत-गिम्हपज्जंते छप्पि उऊ जहाविभवेणं माणेमाणे, कालं गालेमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ।

माहणकुंडे महावीरविहारो

३ तए णं खत्तियकुण्डग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु [महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा] बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ०, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे-जाव–सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंड-ग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए जहा ओववाइए–जाव–एगाभिमुहे खत्तियकुण्डग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए, तेणेव उवागच्छंति एवं जहा ओववाइए-जाव-तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासंति ।

४ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए–जाव–संकप्पे समुप्पज्जित्था––किण्णं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, खंदमहे इ वा, मुगुंदमहे इ वा, नागमहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा , नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रुक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जण्णं एते बहवे, उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया, कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता, जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय--कोडुंबिय--इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सेणावइपुत्ता-सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया कयबलिकम्मा जहा ओववाइए-जाव-खत्तियकुंडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेणं निग्गछंति ?—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कंचुइ-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वदासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा —जाव—निग्गच्छंति ?

तए णं से कंचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जमालिं खत्तियकुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा-जाव-निग्गच्छंति । एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगवं महावीरे आदिगरे-जाव-सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नयरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं एते बहवे उग्गा, भोगा-जाव-निग्गच्छंति ।

जमालिकुमारस्स महावीरपज्जुवासणा

५ तए णं से जमाली खत्तियकुमारे कंचुइ-पुरिसस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।

तए णं ते कोडंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे-जाव-चंदणुक्खित्तगायसरीरे सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महया भडचडकरपहकर-वंदपरिक्खित्ते खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फतंबोलाउहमादियं पाहणाओ य विसज्जेति, विसज्जेत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलिमउलियहत्थे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।

महावीरस्स धम्मकहा

६ तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए [मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबलवीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सर उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ] धम्मं परिकहेइ -जाव-परिसा पडिगया ।

जमालिकुमारस्स पव्वज्जासंकप्पो

७ तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए [णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण] हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, [पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते !]—से जहेयं तुब्भे वदह, जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंट मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरपहकरवंद परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकुंडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धा-वेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्मताओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए अभिरुइए ।

तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—धन्ने सि णं तुमं जाया ! कयत्थे सि णं तुमं जाया ! कयपुण्णे सि णं तुमं जाया ! कयलक्खणे सि णं तुमं जाया ! जण्णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य ते धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए अभिरुइए ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए । तए णं अहं अम्मताओ ! संसारभउव्विग्गे, भीते जम्मण-मरणेणं, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

अम्मापियरेहिं पव्वज्जागहणणिवारणं जमालिणा य समत्थणं

८ तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं अस्सुयपुव्वं गिरं सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलंतविलिणगत्ता, सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया दीणविमणवयणा, करयलमलिय व्व कमलमाला, तक्खणओलुग्ग-दुब्बलसरीरलायण्णसुन्नणिच्छाया, गयसिरीया पसिढिलभूसणपडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलय-पब्भट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावसणट्ठ-चेतगरुई, सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणियत्त व्व चंपगलया, निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वंगेहिं संनिवडिया ।

तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गय-सीयलजल-विमलधार-परिसिच्चमाण-निव्वावियगायलट्ठी, उक्खेवय-तालियंट-वीयणगजणियवाएणं, सफुसिएणं अंतेउरपरपरिजणेणं आसासिया समाणी रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालिखत्तियकुमारं एवं वयासी—"तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हियय-नंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग ! पुण पासणयाए ? तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! -जाव-ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—"तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे मम एवं वदह—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते तं चेव-जाव-पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीरमाणसपकामदुक्खवेयण-वसणसतोवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए संझब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे कुसग्गजलबिंदु-सन्निभे सुविणदंसणोवमे विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्वि गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

९ तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—"इमं च ते जाया ! सरीरगं पविसिट्ठरूवं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं उत्तमबल-वीरियसत्तजुत्तं विण्णाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमूसियं अभिजायमहक्खमं विविहवाहि-रोगरहियं, निरुवहय-उदत्त-लट्ठपंचिंदियपडुं पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं, तं अणुहोहि ताव जाया ! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—इमं च णं ते जाया ! सरीरगं तं चेव-जाव-पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं, विविहवाहिसयसंनिकेतं, अट्ठियकट्ठट्ठियं, छिराण्हारुजाल-ओणद्धसंपिणद्धं, मट्टियभंडं व दुब्बलं, असुइसंकिलिट्ठं, अणिट्ठविय-सव्वकालसंठप्पयं, जराकुणिम-जज्जरघरं व सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वं भविस्सइ । से केस ण जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

१० तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमाओ य ते जाया ! विपुलकुलबालियाओ कलाकुसल-सव्वकाल-लालिय-सुहोचियाओ, मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ, मंजुलमियमहुरभणिय-विहसिय-विप्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ, विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धण-पगब्भवयभाविणीओ, मणाणुकूलहियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ, निच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ । तं भुंजाहि ताव जाया ! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे मम एयं वदह—इमाओ ते जाया ! विपुलकुलबालियाओ-जाव-पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सगा कामभोगा उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय-समुब्भवा, अमणुण्णदुरुय-मुत्त-पूइय-पुरीसपुण्णा, मयगंधुस्सास-असुभनिस्सासउव्वेयणगा, बीभच्छा, अप्प-कालिया, लहुसगा, कलमलाहिवासदुक्खा बहुजणसाहारणा, परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा, अबुहजणणिसेविया, सदा साहुगरहणिज्जा, अणंतसंसारवद्धणा, कडुगफलविवागा चुडल्लि व्व अमुच्चमाणा, दुक्खाणुबंधिणो, सिद्धिगमणविग्घा । से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए ? के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

११ तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य, सुवण्णे य, कंसे य, दूसे य, विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे, अलाहित-जाव-आसत्त-माओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं, तं अणुहोहि ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवंस तंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—इमं च ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए-जाव-पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! हिरण्णे य, सुवण्णे य-जाव-सावएज्जे अग्गि-साहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइयसाहिए, अग्गिसामण्णे, चोरसामण्णे, रायसामण्णे, मच्चुसामण्णे, दाइयसामण्णे, अधुवे, अणितिए, असासए, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

१२ तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मताओ जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहिं बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य, आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा विण्णवेत्तए वा, ताहे विसय पडिकूलाहिं संजमभयुव्वेयणकरीहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी—

एवं खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहे अविसंधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिवायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ।

अहीव एगंतदिट्ठीए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निस्साए, गंगा वा महानदी पडिसोय-गमणयाए, महासमुद्दो वा भुयाहिं दुत्तरो, तिक्खं कमियव्वं, गरुयं लंबेयव्वं, असिधारगं वयं चरियव्वं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए इ वा, अज्झोयरए इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे, इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडेइ वा, कंतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलियाभत्ते इ वा, पाहुणगभत्ते इ वा, सेज्जायरपिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कंदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा ।

तुमं सि च णं जाया ! सुहसमुचिए नो चेव णं दुहसमुचिए, नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा, नालं चोरा, नालं वाला, नालं दंसा, नालं मसगा, नालं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए । तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! -जाव-ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए, वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी--तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह--एवं खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले तं चेव-जाव-पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगपरंमुहाणं विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थं किंचि वि दुक्करं करणयाए, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

अम्मापियरेहिं पव्वज्जाणुमोयणं

१३ तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा विण्णवेत्तए वा, ताहे अकामाइं चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमणं अणुमण्णित्था ।

पव्वज्जापुव्वकिच्चं

१४ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुंडग्गामं नयरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जहा ओववाइए-जाव-सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।

तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव -जाव-उवट्ठवेंति ।

तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं, अट्ठसएणं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णमणियमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए सव्व-जुतीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्द-सण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहिहुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं महया-महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचंति अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी--भण जाया ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? किणा व ते अट्ठो ?

१५ तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी--इच्छामि णं अम्मताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणियं, कासवगं च सद्दावियं ।

तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह, सयसहस्सेणं कासवगं सद्दावेह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गिण्हंति, गिण्हित्ता दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेंति, सयसहस्सेणं कासवगं सद्दावेंति ।

१६ तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं ?

तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ।

तए णं से कासवगे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपादे पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए पोत्तीए मुहं बंधइ, बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेइ ।

१७ तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेति, अच्चेत्ता सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवति, पक्खिवित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिण्णमुत्ता-वलिप्पगासाइं सुयविओगदूसहाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी एवं वयासी—एस णं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीति कट्टु ऊससगमूले ठवेति ।

१८ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, रयावेत्ता जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स सेया-पीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावेत्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति, अणुलिंपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्ण-फरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचितंतकम्मं महरिहं हंसलक्खणपडसाडगं परिहिंति, परिहित्ता हारं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता अद्धहारं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता एगावलिं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता मुत्तावलिं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता रयणावलिं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता एवं—अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तगं मुरविं कंठमुरविं पालंबं कुंडलाइं चूडामणिं चित्तं रयणसंकडुक्कडं मउडं पिणद्धेंति, किं बहुणा ? गंथिम-वेढिम पूरिम-संघातिमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेंति ।

१९ तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं, लीलट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ-जाव-मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं पुरिस-सहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पच्चप्पिणंति ।

२० तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं, वत्थालंकारेणं, मल्लालंकारेणं, आभरणालंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्था-भिमुहे सण्णिसण्णे ।

२१ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयबलिकम्मा-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया कयबलिकम्मा-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा रयहरणं पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलासकलिया सरदब्भ-हिम-रयय-कुमुद-कुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओधरेमाणी-ओधरेमाणी चिट्ठति ।

तए णं तस्स जमालिस्स [खत्तियकुमारस्स] उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास--सललिय--संलाव--निउणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथण-जघण-वयण--कर-चरण-नयण-लावण्ण--रूव-जोव्वण--विलास-कलियाओ नाणामणि-कणग-रयण-विमल-महरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चल्लियाओ, संखंक-कुंद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुंजसण्णिकासाओ धवलाओ चामराओ गहाय सलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठंति । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय--हसिय-भणिय--चेट्ठिय--विलास--सललिय-संलाव--निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास कलिया सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ ।

तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं गहाय चिट्ठइ ।

२३ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी---खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं, एगाभरणवसण-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-पडिसु-णेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं एगाभरण-वसण-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेंति ।

तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयबलि-कम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी---संदि-संतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं करणिज्जं ।

तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वयासी---तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगलपायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहेह ।

तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा-जाव-पडिसुणेत्ता ण्हाया-जाव-एगाभरण-वसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति ।

२४ तए णं तस्स जमालिस्स खतियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणु-पुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा---सोत्थिय-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा । तदणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं, दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा, वाउद्धुय-विजयवेजयंतीय ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणु-पुव्वीए संपट्ठिया ।

तदणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं, पवरं सीहासणं वरमणिरयणपाद-पीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।
तदणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूव-ग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

तदणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा दवकरा चाडुकरा कंदप्पिया कोक्कुइया किड्डकरा य वायंता य गायंता य णच्चंता य हसंता य भासंता य सासंता य सावेंता य रक्खंता य आलोयं च करेमाणा जय-जयसद्दं पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदणंतरं च णं बहवे उग्गा भोगा खत्तिया इक्खागा नाया कोरव्वा जहा ओववाइए-जाव-महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

२५ तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकार विभूसिए हत्थिक्खंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भडचडगरविंदपरिक्खित्ते जमालिं खत्तियकुमारं पिट्ठओ अणुगच्छइ ।

तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ महं आसा आसवरा, उभओ पासिं नागा नागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसंगेल्ली ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गतभिंगारे परिग्गहियतालियंटे ऊसवियसेतछत्ते पवीइयसेतचामरबालवीयणीए, सव्विड्ढीए -जाव-दुंदुहि-णिग्घोसणादितरवेणं खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए ।

तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमंगलसएहिं अणवरयं अभिनंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी---जय-जय नंदा ! धम्मेणं, जय-जय नंदा ! तवेणं, जय-जय नंदा ! भद्दं ते अभग्गेहिं नाण-दंसण-चरित्तेहिमुत्तमेहिं, अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं पालेहि समणधम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्झे, निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेणं धितिधणियबद्धकच्छे, महाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च धीर ! तेलोक्करंगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं च नाणं, गच्छ य मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धिमग्गेणं अकुडिलेणं हंता परीसहचमूं, अभिभविय गामकंटकोवसग्गा णं, धम्मे ते अविग्घमत्थु त्ति कट्टु अभिनंदंति य अभिथुणंति य ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे, हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे-अभिणंदिज्जमाणे, मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे, वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे, कंतिमोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे, बहूणं नरनारिसहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-मंजु-मंजुणा घोसेणं आपडिपुच्छमाणे-आपडिपुच्छमाणे, भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे-समइच्छमाणे खत्तियकुंडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिस-सहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ।

अम्मापियरेहिं भगवओ महावीरस्स सिस्सभिक्खादाणं

२६ तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी---एवं खलु भंते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग ! पुण पासणयाए ? से जहानामए उप्पले इ वा पउमे इ वा-जाव-सहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुडे नोवलिप्पति पंकरएणं, नोवलिप्पति जलरएणं, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए, भोगेहिं संवुड्ढे नोवलिप्पति कामरएणं, नोवलिप्पति भोगरएणं, नोवलिप्पति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गे भीए जम्मण-मरणेणं, इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । तं एयं णं देवाणुप्पियाणं अम्हे सीसभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसभिक्खं ।

जमालिस्स पव्वज्जा

२७ तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी---अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ।
तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ ।

तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी—जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएतव्वं ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडग-समाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइयविविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं ।।

२८ तए णं भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ-जाव-सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

जमालिणा जणपयविहारपत्थणा भगवओ महावीरस्स मोणं

२९ तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ।

तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।

तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ।

तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्चं पि, एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।

जमालिस्स जणवयविहारो सावत्थी-आगमणं च

३० तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था—वण्णओ, कोट्ठए चेइए—वण्णओ -जाव-वणसंडस्स । तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ । पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ-जाव-पुढविसिलापट्टओ ।

तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ महावीरस्स चंपाए आगमणं

३१ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

जमालिस्स रोगातंकपीडा सेज्जासंथरणे आणा य

३२ तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहि य, विरसेहि य अंतेहि य, पंतेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइक्कंतेहि य, पमाणाइक्कंतेहि य पाणभोयणेहिं अण्णया कयाइ सरीरगंसि विउले रोगातंके पाउब्भूए––उज्जले विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे । पित्तज्जरपरिगतसरीरे, दाहवक्कंतिए यावि विहरइ ।

तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सेज्जा-संथारगं संथरह ।

तए णं ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-संथारगं संथरंति ।

जमालि-तस्सिस्साणं सेज्जाकरणे 'कड-कज्जमाण'–विसए पण्हुत्तरं

३३ तए णं से जमाली अणगारे बलियतरं वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्चं पि समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––ममं णं देवाणुप्पिया ! सेज्जासंथारए किं कडे ? कज्जइ ?

तते णं ते समणा निग्गंथा जमालिं अणगारं एवं वयासी––नो खलु देवाणुप्पियाणं सेज्जा-संथारए कडे, कज्जइ ।

'चलमाणे चलिए' इच्चाइभगवंतपरूवणाए जमालिस्स विपरिणामणा

३४ तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था––जण्णं समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ––एवं खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे, छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, डज्झमाणे डड्ढे, मिज्जमाणे मए, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा । इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए । जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए तम्हा चलमाणे वि अचलिए-जाव-निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––जण्णं देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ––एवं खलु चलमाणे चलिए-जाव-निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा । इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए । जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए तम्हा चलमाणे वि अचलिए-जाव-निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे ।

जमालिपरूवणं असद्दहमाणाणं केसिंचि समणाणं भगवंतसमीवागमणं

३५ तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स-जाव-परूवेमाणस्स अंत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति । तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति । तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्माणा जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

जमालिणा चंपाए महावीरसमक्खं अप्पणो केवलित्तघोसणं

३६ तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंता, नो खलु अहं तहा छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंते, अहं णं उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते ।

गोयमकए लोग-जीवविसए पण्हे जमालिस्स तुसिणीयत्तं

३७ तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी—नो खलु जमाली ! केवलिस्स नाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवरिज्जइ वा निवारिज्जइ वा, जदि णं तुमं जमाली ! उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवलि भवित्ता केवलि-अवक्कमणेणं अवक्कंते, तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि—सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ? सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ?

तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावण्णे कलुससमावण्णे जाए यावि होत्था, नो संचाएति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खमाइक्खित्तए, तुसिणीए संचिट्ठइ ।

भगवंतपरूवियं लोग-जीवाणं सासयत्त-असासयत्तं

३८ जमालीति ! समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी—"अत्थि णं जमाली ! ममं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था, जे णं पभू एयं वागरणं वागरित्तए, जहा णं अहं, नो चेव णं एतप्पगारं भासं भासित्तए, जहा णं तुमं ।

"सासए लोए जमाली ! जं न कयाइ नासि, न कयाए न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे ।"

"असासए लोए जमाली ! जं ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ ।"

सासए जीवे जमाली ! जं न कयाइ नासि, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे ।

"असासए जीवे जमाली ! जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ।"

जमालिस्स असद्धहणं, मरणंते य लंतए देवकिब्बिसियत्तं

३९ तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स-जाव-एवं परूवेमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तयइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चं पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ।

४० तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

गोयमा ! दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे, से णं तदा ममं एवमाइक्खमाणस्स एवं भासमाणस्स एवं पण्णवेमाणस्स एवं परूवेमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे, दोच्चं पि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भा-वुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुप्पाएमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ।

देवकिव्विसियभेयाइनिरूवणं

४१ कतिविहा णं भंते ! देवकिब्बिसिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, तं जहा–तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ।
कहिं णं भंते ? तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।

गोयमा ! उप्पिं जोइसियाणं, हेट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।
कहिं णं भंत्ते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?

गोयमा ! उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं, हेट्ठिं सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।
कहिं णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?

गोयमा ! उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स, हेट्ठिं लंतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति ।
देवकिब्बिसिया णं भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति ?

गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, संघपडिणीया, आयरिय–उवज्झायाणं अयसकारा अवण्णकारा अकित्तिकारा, बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा––तिपलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा, तेरससागरोवमट्ठितिएसु वा ।

देवकिब्बिसिया णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठितिक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?

गोयमा !-जाव-चत्तारि पंच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता ताओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति, अत्थेगतिया अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति ।।

४२ जमाली णं भंते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी अंतजीवी पंतजीवी लूहजीवी तुच्छजीवी उवसंतजीवी पसंतजीवी विवित्तजीवी ?

हंता गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे विरसाहारे-जाव-विवित्तजीवी ।

जति णं भंते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे-जाव-विवित्तजीवी कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ?

गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ।

जमालिस्स अण्णे भवा सिद्धी य

४३ जमाली णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

भग० स० ९, उ० ३३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. आजीवियतित्थयर–गोसालयकहाणयं

सावत्थीए हालाहलाए कुंभकारावणंसि गोसालो

४४ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था––वण्णओ ।

तीसे णं सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, तत्थ णं कोट्ठए नामं चेइए होत्था––वण्णओ ।

तत्थ णं सावत्थीए नगरीए हालाहला नामं कुंभकारी आजीविओवासिया परिवसति––अड्ढा-जाव-बहुजणस्स अपरिभूया, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो ! आजीवियसमये अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउव्वीसवासपरियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

दिसाचराणं पुव्वगयनिज्जूहणं

४५ तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा अंतियं पाउब्भवित्था, तं जहा––साणे, कलंदे, कणियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे अज्जुणे गोमायुपुत्ते ।

तए णं ते छ दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सएहिं-सएहिं मतिदंसणेहिं निज्जूहंति, निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु ।

गोसालकयं छ अणइक्कमणाईणं परूवणं

४६ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा––

लाभं अलाभं सुहं दुक्खं, जीवियं मरणं तहा ।।

गोसालस्स जिणत्तं

४७ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ ।

तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ––"एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी, अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । से कहमेयं मन्ने एवं ?"

भगवओ महावीरसमोसरणं, गोयमस्स गोयरचरियागमणं च

४८ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे–जाव–परिसा पडिगया ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभनारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगंसि सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए" ।

"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ।"

तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ।

तए णं भगवं गोयमे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ-जाव-परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी-जाव-जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । से कहमेयं मन्ने एवं ?

गोयमस्स गोसालचरियजाणणत्थं पत्थणा

४९ तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे-जाव-समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गेण्हइ, गेण्हित्ता -जाव-जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे, पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खयरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ-जाव-परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी-जाव-जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । से कहमेयं भंते ! एवं ? तं इच्छामि णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपारियाणियं परिकहियं ।

महावीरेण गोयमचरियवण्णणं, गोसालचरियपुव्वभागो, मंखलिस्स भद्दाए भारियाए गुव्विणित्तं

५० गोयमा ! दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! से बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी-जाव-जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । तण्णं मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि-जाव-परूवेमि—एवं खलु एयस्स गोसालस्स मंखलीपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिता होत्था । तस्स णं मंखलिस्स मंखस्स भद्दा नामं भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया-जाव-पडिरूवा । तए णं सा भद्दा भारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी यावि होत्था ।

मंखलि-भद्दाणं गोसालाए निवासो

५१ तेणं कालेणं तेणं समएणं सरवणे नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे-जाव-नंदणवण-सन्निभप्पगासे, पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे । तत्थ णं सरवणे सण्णिवेसे गोबहुले नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेद-जाव-बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । तस्स णं गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था ।

तए णं से मंखली मंखे अण्णया कदायि भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धिं चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सण्णिवेसे जेणेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता सरवणे सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे अण्णत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंखलि-भद्दाहिं नियपुत्तस्स 'गोसाल'नामकरणं

५२ तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं-जाव-पडिरूवगं दारगं पयाया।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कंते-जाव-बारसमे दिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं गोसाले-गोसाले त्ति।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापितरो नामधेज्जं करेंति गोसाले त्ति।

गोसालस्स मंखचरिया

५३ तए णं से गोसाले दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पाडिएक्कं चित्तफलगं करेइ, करेत्ता चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

भगवओ नालंदाए तंतुसालाए विहरणं

५४ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मा-पिईहिं देवत्तगएहिं समत्तपइण्णे एवं जहा भावणाए-जाव-एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

तए णं अहं गोयमा! पढमं वासं अद्धमासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरवासं वासावासं उवागए। दोच्चं वासं मासंमासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हामि, ओगिण्हित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए।

तए णं अहं गोयमा! पढमं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि।

गोसलस्स वि तंतुसालाए आगमणं

५५ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता रायगिहे नगरे उच्चनीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे अण्णत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, जत्थेव णं अहं गोयमा!

भगवओ पढममासखमणपारणे पंच दिव्वाइं

५६ तए णं अहं गोयमा! पढम-मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-घर-जाव-अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे।

तए णं से विजए गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं, करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे।

तए णं तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे 'अहो दाणे अहो दाणे' त्ति घुट्ठे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग -जाव-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-पण्णवेइ एवं परूवेइ--धन्ने णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा--वसुधारा वुट्ठा-जाव-अहो 'दाणे अहो दाणे' त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, विजयस्स गाहावइस्स।

गोसालकयाए सिस्सत्तपत्थणाए भगवओ उदासीणया

५७ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च ण विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी--तुब्भे णं भंते ! ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी।

तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि।

भगवओ दोच्चमासखमणपारणे पंचदिव्वाइं

५८ तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्चं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि।

तए णं अहं गोयमा ! दोच्च-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे-जाव--अडमाणे आणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे।

तए णं से आणंदे गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ, एवं जहेव विजयस्स (सु. ५६)-जाव-वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलाए खज्जग-विहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभित्ते वि तुट्ठे।

तए णं तस्स आणंदस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं-जाव-(सु.५६) परूवेइ--धन्ने णं देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! आणंदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले आणंदस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा वसुधारा वुट्ठा-जाव-अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले आणंदस्स गाहावइस्स, अणंदस्स गाहावइस्स।

पुणो वि गोसालकयाए सिस्सत्तपत्थणाए भगवओ उदासीणया

५९ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते-जाव-(सु. ५७) जेणेव आणंदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ आणंदस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च णं आणंदस्स गाहावइस्स-जाव-(सु. ५७) तुसिणीए संचिट्ठामि।

भगवओ तच्चमासखमणपारणे पंचदिव्वाई

६० तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि,-जाव-(सु. ५८) उवागच्छित्ता तच्चं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि।

तए णं अहं गोयमा ! तच्च-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता-जाव-(सु.५६) भिक्खायरियाए अडमाणे सुणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे।

तए णं से सुणंदे गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ, एवं जहेव विजयस्स (सु. ५६)-जाव-वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं सव्वकाम-गुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे।

तए णं तस्स सुणंदस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं-जाव-(सु. ५६) परूवेइ--धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुणंदे गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! सुणंदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुणंदे गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! सुणंदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! सुणंदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, जस्स णं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा-जाव-अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, सुणंदस्स गाहावइस्स।

पुणो वि गोसालकयाए सिस्सत्तपत्थणाए भगवओ उदासीणया

६१ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते-जाव-(सु. ५७) जेणेव सुणंदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ—सुणंदस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं दसद्ध कुसुमं निवडियं, ममं च णं सुणंदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी तुब्भे णं भंते। ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी-जाव-(सु. ५७) तुसिणीए संचिट्ठामि।

भगवओ चउत्थमासखमण पारणे पंचदिव्वाइं

६२ तए णं अहं गोयमा! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि-जाव-(सु. ५८) उवागच्छित्ता चउत्थं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि।

तीसे णं नालंदाए बाहिरियाए अदूरसामंते, एत्थ णं कोल्लाए नामं सण्णिवेसे होत्था—सण्णिवेसवण्णओ। तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे बहुले नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेय-जाव-बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था।

तए णं से बहुले माहणे कत्तियचाउम्मासियपाडिवगंसि विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं माहणे आयामेत्था।

तए णं अहं गोयमा! चउत्थ-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे उच्च-नीय-जाव-(सु. ५६) अडमाणे बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे।

तए णं से बहुले माहणे ममं एज्जमाणं पासइ तहेव (सु. ५६)-जाव-वंदिता नमंसित्ता ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे।

तए णं तस्स बहुलस्स माहणस्स तेणं दव्वसुद्धेणं-जाव-(सु. ५६) परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कयत्थे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कया णं लोया देवाणुप्पिया! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूव साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा-जाव-अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स।

पुणो वि गोसालकयाए सिस्सत्तपत्थणाए भगवओ अणमुई, गोसालेण य सह विहरणं

६३ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं तंतुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सब्भिंतरबाहिरियाए ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ। ममं कत्थ वि सुतिं वा खुतिं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ य कुंडियाओ य वाहणाओ य चित्तफलगं च माहण आयामेइ, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठं भंडं कारेइ, कारेत्ता तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छइ।

तए णं तस्स कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स बहिया बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, -जाव-(सु. ६२) जीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स।

तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था—"जारिसिया णं ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, नो खलु अत्थि तारिसिया अण्णस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तं निस्संदिद्धं णं एत्थ ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविस्सतीति कट्टु कोल्लाए सण्णिवेसे सब्भितरबाहिरिए ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स बहिया पणियभूमीए मए सद्धिं अभिसमण्णागए।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हट्ठतुट्ठे ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"तुब्भे णं भंते! मम धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं अंतेवासी"।

तए णं अहं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेमि।

तए णं अहं गोयमा! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं पणियभूमीए छव्वासाइं लाभं अलाभं सुहं दुक्खं सक्कारमसक्कारं पच्चणुब्भवमाणे अणिच्चजागरियं विहरित्था।

तिलथंभयनिप्फत्तिविसए भगवओ वयणे गोसालस्स अस्सद्धा

६४ तए णं अहं गोयमा! अण्णया कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्मगामं नगरं संपट्ठिए विहाराए।

तस्स णं सिद्धत्थगामस्स नगरस्स कुम्मगामस्स नगरस्स य अंतरा, एत्थ णं महं एगे तिलथंभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंभगं पासइ, पासित्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"एस णं भंते! तिलथंभए किं निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ? एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता कहिं गच्छिहिंति? कहिं उववज्जिहिंति?"

तए णं अहं गोयमा! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—"गोसाला! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ। एते य सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाइस्संति।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं आइक्खमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, ममं पणिहाए 'अयं णं मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं तिलथंभगं सलेट्ठुयायं चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता एगंते एडेइ। तक्खणमेत्तं च णं गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणाति, खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णातिमट्टियं पविरलपफुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासति, जेणं से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्सेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाता।

गोसालवयणकुद्धेण वेसियायणबालतवस्सिणा गोसालस्सुवरिं तेयलेस्सानिसिरणं

६५ तए णं अहं गोयमा! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं जेणेव कुम्मग्गामे नगरे तेणेव उवागच्छामि।

तए णं तस्स कुम्मग्गामस्स नगरस्स बहिया वेसियायणे नामं बालतवस्सी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। आइच्चतेयतवियाओ य से छप्पदीओ सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, पाण-भूय-जीव-सत्तदयट्ठयाए च णं पडियाओ-पडियाओ तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चोरूभेइ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं पासइ, पासित्ता ममं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी—"किं भवं मुणी? मुणिए? उदाहु जूयासेज्जायरए?"

तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढाति, नो परियाणति, तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—"किं भवं मुणी? मुणिए? उदाहु जूयासेज्जायरए?" तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहण्णित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीरेण गोसालरक्खणत्थं सीयलेस्सानिसिरणं

६६ तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा तेयलेस्सा पडिहया।

तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी ममं सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिणं तेयलेस्सं पडिहयं जाणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता साउसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता ममं एवं वयासी––"से गतमेयं भगवं ! गत-गतमेयं भगवं !"

तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी––"किं णं भंते ! एस जूयासिज्जायरए तुब्भे एवं वयासी––से गतमेयं भगवं ! गत-गतमेयं भगवं ?"

तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी––"तुमं णं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सि पाससि, पासित्ता ममं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी–किं भवं मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठं नो आढाति, नो परिजाणति, तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी––किं भवं मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तुमं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते-जाव-पच्चोसक्कति, पच्चोसक्कित्ता तव वहाए सरीरगंसि तेयलेस्सं निस्सिरइ। तए णं अहं गोसाला ! तव अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा तेयलेस्सा पडिहया। तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी ममं सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिणं तेयलेस्सं पडिहयं जाणित्ता तव य सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता साउसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता ममं एवं वयासी––से गतमेयं भगवं ! गत-गतमेयं भगवं !"

तेउलेस्सासंपादणोवाया

६७ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––"कहण्णं भंते ! संखित्तविउलतेयलेस्से भवति ?"

तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी––जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। से णं अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेस्से भवइ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेति।

महावीरकहियं तिलथंभय-निप्फत्तिं जाणिऊण गोसालस्स अवक्कमणं

६८ तए णं अहं गोयमा ! अण्णदा कदायि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं कुम्मग्गामाओ नगराओ सिद्धत्थग्गामं नगरं संपट्ठिए विहाराए। जाहे य मो तं देसं हव्वमागया जत्थ णं से तिलथंभए, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी––"तुब्भे णं भंते ! तदा ममं एवमाइक्खह-जाव-परूवेह––'गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ। एते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाइस्संति' तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ––एस णं से तिलथंभए नो निप्फन्ने, अन्निप्फन्नमेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता नो एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया।"

तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी––"तुमं णं गोसाला ! तदा ममं एवमाइक्खमाणस्स-जाव-परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहसि, नो पत्तियसि, नो रोएसि, एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, ममं पणिहाए 'अयण्णं मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कसि, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तं तिलथंभगं सलेट्ठुयायं चेव उप्पाडेसि, उप्पाडेत्ता एगंतमंते एडेसि। तक्खणमेत्तं गोसाला ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणाति, खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णातिमट्टियं पविरलपफुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासंति, जेणं से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्दाइत्ता तस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। तं एस णं गोसाला! से तिलथंभए निप्फन्ने, नो अनिप्फन्नमेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभयस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। एवं खलु गोसाला! वणस्सइकाइया पउट्टपरिहारं परिहरंति"।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवमाइक्खमाणस्स-जाव-परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताओ तिलथंभयाओ तं तिलसंगलियं खुड्डइ, खुड्डित्ता करयलंसि सत्त तिले पप्फोडेइ।

तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-एवं खलु सव्वजीवा वि पउट्टपरिहारं परिहरंति--एस णं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे, एस णं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमणे पण्णत्ते।

गोसालस्स तेयलेस्सासंपत्ती

६९ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झियपगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेसे जाए।

महावीरकहियं गोसालस्स अजिणत्तं

७० तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा अंतियं पाउब्भवित्था, तं जहा-साणे, कलंदे, कणियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे, गोमायुपुत्ते। तए णं तं छ दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सएहिं-सएहिं मतिदंसणेहिं निज्जूहंति, निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा--

लाभं अलाभं सुहं दुक्खं, जीवियं मरणं तहा।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं नो खलु गोयमा! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी, अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ।

तए णं सा महतिमहालया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

गोसालस्स अमरिसो

७१. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ--जण्णं देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी-जाव-जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ तं मिच्छा। समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ--एवं खलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिता होत्था। तए णं तस्स मंखस्स एवं चेव तं सव्वं भाणियव्वं-जाव-अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं नो खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी-जाव-विहरइ, गोसाले मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी-जाव-विहरइ, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी-जाव-जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे एवं वावि विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोसालस्स आणंदथेरसमक्खं अत्थलुद्धवणियदिट्ठंतकहणपुव्वं अक्कोसपदंसणं

७२ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवाओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं थेरे पगइभद्दए-जाव-विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं से आणंदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, तहेव-जाव-उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीइवयइ ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—"एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं ओवमियं निसामेहि'।

तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ ।

७३ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा !

इत्तो चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया अत्थत्थी अत्थलुद्धा अत्थगवेसी अत्थकंखिया अत्थपिवासा अत्थगवेसणयाए नाणाविहविउलपणियभंडमायाए सगडीसागडेणं सुबहुं भत्तपाणं पत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा ।

तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे ।

तए णं ते वणिया झीणोदगा समाणा तण्हाए परब्भममाणा अण्णमण्णे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए-जाव-अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेत्तए' त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे णं अगामियाए-जाव-अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा एगं महं वणसंडं आसादेंति—किण्हं किण्होभासं-जाव-महामेहनिकुरंबभूयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ।

"तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगं वम्मीयं आसादेंति । तस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ, अभिनिसढाओ, तिरियं सुसंपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ, पासादियाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ।

"तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमीसे अगामियाए -जाव-अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणेहिं इमे वणसंडे आसादिए—किण्हे किण्होभासे । इमस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए। इमस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ, अभिनिसढाओ-जाव-पडिरूवाओ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पुं भिंदित्तए, अवि याइं ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो।'

"तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पुं भिंदंति। ते णं तत्थ अच्छं पत्थं जच्चं तणुयं फालियवण्णाभं ओरालं उदगरयणं आसादेंति।

तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा पाणियं पिबंति, पिबित्ता वाहणाइं पज्जेंति पज्जेत्ता भायणाइं भरेंति, भरेत्ता दोच्चं पि अण्णमण्णं एवं वदासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरणये अस्सादीए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवि याइं एत्थ ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेस्सामो।'

"तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदंति । ते णं तत्थ अच्छं जच्चं तावणिज्जं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेंति ।

तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता तच्चं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्ण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवि याइं एत्थं ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो।

तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिदंति । ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तलं निक्कलं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयणं अस्सादेंति।

तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता चउत्थं पि अण्णमण्णं एवं वयासी--'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पि ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स या चउत्थं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवि याइं उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं वइररयणं अस्सादेस्सामो।'

"तए णं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए ते वणिए एवं वयासी--'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं होउ अलाहि पज्जत्तं णे एसा चउत्थी वप्पू मा भिज्जउ, चउत्थी णं वप्पू सउवसग्गा यावि होत्था।'

"तए णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकामगस्स पत्थकामगस्स आणुकंपियस्स निस्सेसियस्स हिय-सुह-निस्सेसकामगस्स एवमाइक्खमाणस्स-जाव-परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, नो पत्तियंति, नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पुं भिंदंति।

ते णं तत्थ उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं अतिकायं महाकायं मसिमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंज-निगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुयलचंचलचलंतजीहं धरणितलवेणिभूयं उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल-कक्खड-विकड-फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोसं अणागलियचंडतिव्वरोसं समुहं तुरियं चवलं धमंतं दिट्ठीविसं सप्पं संघट्टेंति।

"तए णं से दिट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सणियं-सणियं उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं दुरुहति, दुरुहित्ता आदिच्चं निज्झाति, निज्झाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएति।

तए णं ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेणं सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासी कया यावि होत्था।

तत्थ णं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं आणुकंपियाए देवयाए सभंडमत्तोवगरणमायाए नियगं नगरं साहिए।

७४ "एवामेव आणंदा ! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं नायपुत्तेणं ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वंति, गुव्वंति, थुव्वंति--इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे । तं जदि मे से अज्ज किंचि वि वदति तो णं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेमि, जहा वा वालेणं ते वणिया। तुमं च णं आणंदा ! सारक्खामि संगोवामि जहा वा से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए-जाव-निस्सेसकामए आणुकंपियाए देवयाए सभंड मत्तोवगरणमायाए नियगं नगरं साहिए । तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि"।

आणंदथेरस्स भगवओ समक्खं गोसालवयणनिवेदणं भगवओ य समाहाणं

७५ तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे भीए-जाव-संजायभए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--"एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-जाव-अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीइवयामि, तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासित्ता एवं वयासी--एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं ओवमियं निसामेहि।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"तए णं अहं गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि ।

"तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी--एवं खलु आणंदा ! इओ चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया एवं तं चेव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं-जाव-नियगं नगरं साहिए। तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि ।"

"तं पभू णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए ? विसए णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए ? समत्थे णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए" ?

"पभू णं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए । विसए णं आणंदा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए । समत्थे णं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा" ।

"जावतिए णं आणंदा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवे तेए, एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अणगाराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अणगारा भगवंतो" ।

"जावइए णं आणंदा ! अणगाराणं भगवंताण तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए थेराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण थेरा भगवंतो" ।

"जावतिए णं आणंदा ! थेराणं भगवंताणं तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अरहंताणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अरहंता भगवंतो" ।

"तं पभू णं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए, विसए णं आणंदा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए समत्थे णं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा" ।

"तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि--'मा णं अज्जो ! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने" ।

महावीरसूइओ गोसालपडिचोयणानिसेहो

७६ "तए णं से आणंदे थेरे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोयमादी समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोयमा दी समणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वयासी--"एवं खलु अज्जो ! छट्ठक्खमणपारणगंसि समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं तं चेव सव्वं-जाव-गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि, तं मा णं अज्जो ! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणयाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने" ।

गोसालस्स भगवंतं पइ अक्कोसपुव्वं ससिद्धंतनिरूवणं

७७ 'जावं च णं आणंदे थेरे गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घं तुरियं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी--सुट्ठु णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी, साहू णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी--"गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी, गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी" ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"जे णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी से णं सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहण्णं उदाई नामं कुंडियायणीए अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि"।

"जे वि आइं आउसो कासवा ! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिंसु वा सिज्झंति वा सिज्झिस्संति वा सव्वे ते चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं, सत्त दिव्वे, सत्त संजूहे, सत्त सण्णिगब्भे, सत्त पउट्टपरिहारे, पंच कम्मणिसयसहस्साइं सट्ठिं च सहस्साइं छच्च सए तिण्णि य कम्मंसे अणुपुव्वेणं खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा"।

"से जहा वा गंगा महानदी जओ पवूढा, जंहिं वा पज्जुवत्थिया, एस णं अद्धा पंचजोयणसयाइं आयामेणं, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, पंच धणुसयाइं उव्वेहेणं। एएणं गंगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा। सत्त महागंगाओ सा एगा सादीणगंगा। सत्त सादीणगंगाओ सा एगा मदुगंगा। सत्त मदुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा। सत्त लोहियगंगाओ सा एगा आवतीगंगा। सत्त आवतीगंगाओ सा एगा परमावती। एवामेव सपुव्वावरेणं एगं गंगासयसहस्सं सत्तरस य सहस्सा छच्च अगुणपन्नं गंगासया भवंतीति मक्खाया।"

"तासिं दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तं जहा––सुहुमबोंदिकलेवरे चेव, बायरबोंदिकलेवरे चेव"।

"तत्थ णं जे से सुहुमबोंदिकलेवरे से ठप्पे"।

"तत्थ णं जे से बायरबोंदिकलेवरे तओ णं वाससए गए, वाससए गए एगमेगं गंगावालुयं अवहाय जावतिएणं कालेणं से कोट्ठे खीणे णीरए निल्लेवे निट्ठिए भवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे"।

एएणं सरप्पमाणेणं तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे।

"१. अणंताओ संजूहाओ जीवे चयं चइत्ता उवरिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जति। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता पढमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति"।
"२. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता दोच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।"
"३. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं-जाव-चइत्ता तच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति"।

"४. से णं तओहिंतो-जाव-उव्वट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं-जाव-चइत्ता चउत्थे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति"।

"५. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं-जाव-चइत्ता पंचमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति"।

"६. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं-जाव-चइत्ता छट्ठे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति"।

"७. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता––बंभलोगे नामं से कप्पे पण्णत्ते––पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिण्णे, जहा ठाणपदे -जाव-पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा––असोगवडेंसए-जाव-पडिरूवा––से णं तत्थ देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं-जाव-चइत्ता सत्तमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति"।

"से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालगब्भदलए मिउ-कुंडलकुंचिय-केसए मट्ठ-गंडतल-कण्णपीढए देवकुमारसप्पभए दारए पयाति"।

"से णं अहं कासवा! तए णं अहं आउसो कासवा! कोमारियपव्वज्जाए कोमारएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकण्णए चेव संखाणं पडिलभामि, पडिलभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, तं जहा––१. एणेज्जस्स २. मल्लरामस्स ३. मंडियस्स ४. रोहस्स ५. भारद्दाइस्स ६. अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स ७. गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स"।

"तत्थ णं जे से पढमे पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया मंडिकुच्छिंसि चेइयंसि उदाइस्स कुंडियायणस्स सरीरं विप्पजहासि, विप्पजहित्ता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता बावीसं वासाइं पढमं पउट्टपरिहारं परिहरामि"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"तत्थ णं जे से दोच्चे पउट्टपरिहारे से णं उद्दंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयरणंसि चेइयंसि एणेज्जगस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मल्लरामस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकवीसं वासाइं दोच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि"।

"तत्थ णं जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से णं चंपाए नगरीए बहिया अंगमंदिरंसि चेइयंसि मल्लरामस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता वीसं वासाइं तच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि"।

"तत्थ णं जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं वाणारसीए नगरीए बहिया काममहावणंसि चेइयंसि मंडियस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता रोहस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकूणवीसं वासाइं चउत्थं पउट्टपरिहारं परिहरामि"।

"तत्थ णं जे से पंचमे पउट्टपरिहारे से णं आलभियाए नगरीए बहिया पत्तकालगंसि चेइयंसि रोहस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता भारद्दाइस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता अट्ठारस वासाइं पंचमं पउट्टपरिहारं परिहरामि"।

"तत्थ णं जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से णं वेसालीए नगरीए बहिया कोंडियायणंसि चेइयंसि भारद्दाइस्स सरीरं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सत्तरस वासाइं छट्ठं पउट्टपरिहारं परिहरामि"।

"तत्थ णं जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं सीयसहं उण्हसहं खुहासहं विविहदंसमसगपरीसहोवसग्गसहं थिरसंघयणं ति कट्टु तं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सोलस वासाइं इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि"। "एवामेव आउसो कासवा! एगेणं तेत्तीसेणं वाससएणं सत्त पउट्टपरिहारा परिहरिया भवंतीति मक्खाया"।

"तं सुट्ठु णं आउसो कासवा! ममं एवं वयासी––साहू णं आउसो कासवा! ममं एवं वयासी––गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी, गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी"।

भगवया गोसालगवयणस्स पडियारो

७८ तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी––"गोसाला! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहिं परब्भमाणे-परब्भमाणे कत्थयि गड्डं वा दरिं वा दुग्गं वा णिण्णं वा पव्वयं विसमं वा अणस्सादेमाणे एगेणं महं उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपम्हेण वा तणसूएण वा अत्ताणं आवरेताणं चिट्ठेज्जा, से णं अणावरिए आवरियमिति अप्पाणं मण्णइ, अप्पच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाणं मण्णइ अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाणं मण्णइ, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मण्णइ, एवामेव तुमं पि गोसाला! अणण्णे संते अण्णमिति अप्पाणं उपलभसि, तं मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा"।

भगवंतं पइ गोसालस्स पुणो वि अक्कोसो

७९ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेति, उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी–"नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहिंतो सुहमत्थि"।

गोसालेण सव्वाणुभूतिमुणिस्स भासरासीकरणं

८० तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे विणीए धम्मायरियाणुरागेणं एयमट्ठं असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्ते एवं वयासी––"जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति, किमंग पुण तुमं गोसाला! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुंडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने? तं मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा"।

८१ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्ता दोच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ,-जाव-(सु. ७९) सुहमत्थि।

गोसालेण सुनक्खत्तमुणिस्स परितावणं

८२ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए धम्मायरियाणुरागेणं-जाव-(सु. ८०) सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेइ।

तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ, नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए।

गोसालं पइ भगवओ अणुसट्ठी, पडिकुद्धगोसालमुक्केण य निप्फलेण तेएण गोसालस्सेव अणुडहणं

८३ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेत्ता तच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ,-जाव-(सु. ७९) सुहमत्थि।

तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी--"जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला! तुमं मए चेव पव्वाविए, मए चेव मुंडाविए, मए चेव सेहाविए, मए चेव सिक्खाविए, मए चेव बहुस्सुतीकए, ममं चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने? तं मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा"। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तेयासमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहण्णित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ; पच्चोसक्कित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरति--से जहानामए वाउक्कलिया इ वा वायमंडलिया इ वा सेलंसि वा कुड्डंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवारिज्जमाणी वा निवारिज्जमाणी वा सा णं तत्थ नो कमति नो पक्कमति एवामेव गोसालस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि निसिट्ठे समाणे से णं तत्थ नो कमति नो पक्कमति अंचियंचि करेति, करेत्ता आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता उड्ढं वेहासं उप्पइए, से णं तओ पडिहए पडिनियत्तमाणे तमेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे-अणुडहमाणे अंतो-अंतो अणुप्पविट्ठे।

गोसाल-महावीराणं परोप्परं मरणकालमज्जायानिरूवणं

८४ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीरं एवं वयासी--तुमं णं आउसो कासवा! ममं तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि।

तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी--नो खलु अहं गोसाला! तव तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सामि, अहं णं अण्णाइं सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि। तुमं णं गोसाला! अप्पणा चेव सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि।

सावत्थीए जणपवादो

८५ तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-जाव-एवं परूवेइ--"एवं खलु देवाणुप्पिया! सावत्थीए नगरीए बहिया कोट्ठए चेइए दुवे जिणा संलवंति--एगे वदति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि, एगे वदति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि। तत्थ णं के पुण सम्मावादी? के मिच्छावादी?"

तत्थ णं जे से अहप्पहाणे जणे से वदति--"समणे भगवं महावीरे सम्मावादी, गोसाले मंखलिपुत्ते मिच्छावादी"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवंताऽऽदिट्ठनिग्गंथेहिं गोसालं पइ पडिचोयणा

८६ अज्जो ! ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी--"अज्जो ! से जहानामए तणरासी इ वा कट्ठरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुसरासी इ वा भुसरासी इ वा गोमयरासी इ वा अवकररासी इ वा अगणिझामिए अगणिझूसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए विणट्ठतेए जाए, एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते ममं वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरित्ता हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए, विणट्ठतेए जाए, तं छंदेणं अज्जो ! तुब्भे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेह, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेह"।

तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएंति, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेंति, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेंति, अट्ठेहि य हेऊहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेंति।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहि निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणे, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणे, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणे, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे नो संचाएति समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए, छविच्छेदं वा करेत्तए।

गोसालसंघस्स भेदो

८७ तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणं, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं कीरमाणं, आसुरुत्तं रुट्ठं कुवियं चंडिक्कियं मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति।

अत्थेगतिया आजीविया थेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति।

अंतोसमुब्भूयडाहस्स गोसालस्स मज्जपाणाइयाओ चेट्ठाओ

८८ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठं असाहेमाणे, रुंदाइं पलोएमाण, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाइं लुंचमाणे अवडुं कंडूयमाणे, पुयलिं पप्फोडेमाणे, हत्थे विणिद्धुणमाणे, दोहि वि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे हा हा अहो ! हओहमस्सि त्ति कट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणगं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे, सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचिण-उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ।

भगवंतपरूवियं गोसालतेयलेस्सासामत्थपुव्वं गोसालसिद्धंतसरूवं

८९ अज्जोति ! ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी-"जावतिए णं अज्जो ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं, तं जहा--१. अंगाणं २. वंगाणं ३. मगहाणं ४. मलयाणं ५. मालवगाणं ६. अच्छाणं ७. वच्छाणं ८. कोट्ठाणं ९. पाढाणं १०. लाढाणं ११. वज्जीणं १२. मोलीणं १३. कासीणं १४. कोसलाणं १५. अवाहाणं १६. सुंभुत्तराणं घाताए वहाए उच्छादणयाए भासीकरणयाए"।

"जं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं अट्ठ चरिमाइं पण्णवेइ, तं जहा--१. चरिमे पाणे २. चरिमे गेये ३. चरिमे नट्टे ४. चरिमे अंजलिकम्मे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. चरिमे पोक्खलसंवट्टए महामेहे ६. चरिमे सेयणए गंधहत्थी ७. चरिमे महासिलाकंटए संगामे ८. अहं च णं इमीसे ओसप्पिणिसमाए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे सिज्झिस्सं-जाव-अंतं करेस्सं"।

"जं पि य अज्जो! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणि उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ, तस्स वि णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं चत्तारि पाणगाइं चत्तारि अपाणगाइं पण्णवेति"।

"से किं तं पाणए"?

"पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा--१. गोपुट्ठए २. हत्थमद्दियए ३. आतवतत्तए ४. सिलापब्भट्ठए। सेत्तं पाणए"।

"से किं तं अपाणए"?

"अपाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा--१. थालपाणए २. तयापाणए ३. सिंबलिपाणए ४. सुद्धपाणए"।

"से किं तं थालपाणए"?

"थालपाणए--जे णं दाथालगं वा दावारगं वा दाकुंभगं वा दाकलसं वा सीतलगं उल्लगं हत्थेहिं परामुसइ, न य पाणियं पियइ। सेत्तं थालपाणए"।

"से किं तं तयापाणए"?

"तयापाणए--जे णं अंबं वा अंबाडगं वा जहा पओगपदे-जाव-बोरं वा तेंदुरुयं वा तरुणगं आमगं आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियइ। सेत्तं तयापाणए"।

"से किं तं सिंबलिपाणए"?

"सिंबलिपाणए–जे णं कलसंगलियं वा मुग्गसंगलियं वा माससंगलियं वा सिंबलिसंगलियं वा तरुणियं आमियं आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियति। सेत्तं सिंबलिपाणए"।

"से किं तं सुद्धपाणए"?

"सुद्धपाणए--जे णं छम्मासे सुद्धखाइमं खाइ--दो मासे पुढविसंथारोवगए, दो मासे कट्ठसंथारोवगए, दो मासे दब्भसंथारोवगए; तस्स णं बहुपडिपुण्णाणं छण्हं मासाणं अंतिमराईए इमे दो देवा महिड्ढिया-जाव-महेसक्खा अंतियं पाउब्भवंति, तं जहा--पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य। तए णं ते देवा सीयलएहिं उल्लएहिं हत्थेहिं गायाइं परामुसंति, जे णं ते देवे साइज्जति, से णं आसीविसत्ताए, कम्मं पकरेति, जे णं ते देवे नो साइज्जति तस्स णं संसि सरीरगंसि अगणिकाए संभवति, से णं सएणं तेएणं सरीरगं झामेति, झामेत्ता तओ पच्छा सिज्झति-जाव-अंतं करेति। सेत्तं सुद्धपाणए"।

आजीवियथेरेहिं अयंपुलस्स आजीवियउवासगत्ते थिरीकरणं अयंपुले-आजीवियओवासए

९० तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अयंपुले नामं आजीवियओवासए परिवसइ--अड्ढे, जहा हालाहला-जाव-आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीवियओवासगस्स अण्णया कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--"किसंठिया णं हल्ला पण्णत्ता?"

तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीवियओवासगस्स दोच्चं पि अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--"एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते उप्पन्ननाणदंसणधरे जिणे अरहा केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोसालं मंखलिपुत्तं वंदित्ता-जाव-पज्जुवासित्ता इमं एयारूवं वागरणं वागरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए कयबलिकम्मे-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगयं मज्जपाणगं पीयमाणं अभिक्खणं गायमाणं, अभिक्खणं नच्चमाणं, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणं सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणि-उदएणं गायाइं परिसिंचमाणं पासइ, पासित्ता लज्जिए विलिए विड्डे सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ"॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१ तए णं ते आजीविया थेरा अयंपुलं आजीवियोवासगं लज्जियं-जाव-पच्चोसक्कमाणं पासंति, पासित्ता एवं वयासी—"एहि ताव अयंपुला ! इतो"।

तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए आजीवियथेरेहिं एवं वुत्ते समाणे जेणेव आजीविया थेरा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आजीविए थेरे वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने-जाव-पज्जुवासइ।

अयंपुला ! ति आजीविया थेरा अयंपुलं आजीवियोवासगं एवं वयासी—"से नूणं ते अयंपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किंसंठिया णं हल्ला पण्णत्ता" ?

"तए णं तव अयंपुला ! दोच्चं पि अयमेयारूवे तं चेव सव्वं भाणियव्वं-जाव-सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए। से नूणं ते अयंपुला ! अट्ठे समट्ठे" ?

"हंता अत्थि"।

"जं पि य अयंपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए-जाव-अंजलिं करेमाणे विहरइ, तत्थ वि णं भगवं इमाइं अट्ठ चरिमाइं पण्णवेति, तं जहा—चरिमे पाणे-जाव-अंतं करेस्सति"।

"जं पि य अयंपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टिया पाणएणं आयंचणि-उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ, तत्थ वि णं भगवं इमाइं चत्तारि पाणगाइं, चत्तारि अपाणगाइं पण्णवेति"।

"से किं तं पाणए ? पाणए-जाव-तओ पच्छा सिज्झति-जाव-अंतं करेति"।

"तं गच्छ णं तुमं अयंपुला ! एस चेव तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते इमं एयारूवं वागरणं वागरेहिति"।

तए णं से अयंपुले आजीविओवासए आजीविएहिं थेरेहिं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंबकूणग-एडावणट्ठयाए एगंतमंते संगारं कुव्वंति।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आजीवियाणं थेराणं संगारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अंबकूणगं एगंतमंते एडेइ।

९२ तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं तिक्खुत्तो-जाव-पज्जुवासति।

अयंपुला ! दि गोसाले मंखलिपुत्ते अयंपुलं आजीवियोवासगं एवं वयासी—"से नूणं अयंपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि-जाव-जेणेव ममं अंतियं तेणेव हव्वमागए। से नूणं अयंपुला ! अट्ठे समट्ठे" ?

"हंता अत्थि"।

"तं नो खलु एस अंबकूणए, अंबचोयए णं एसे। किंसंठिया हल्ला पण्णत्ता ? वंसीमूलसंठिया हल्ला पण्णत्ता। वीणं वाएहि रे वीरगा ! वीणं वाएहि रे वीरगा"!

९३ तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं इमं एयारूवं वागरणं वागरिए समाणे हट्ठतुट्ठ वे चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पसिणांइ पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियइ, परियादिइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए"।

गोसालस्स अप्पणो मरणाणंतरं नीहरणनिद्देसो

९४ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, आभोएत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेह, ण्हाणेत्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेह, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपह, अणुलिंपित्ता महरिहं हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेह, नियंसेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेह, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेह, दुरुहेत्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाड-गतिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वदह—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी, अरहा अरहप्पलावी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे, सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे--इड्ढिसक्कारसमुदएणं मम सरीरगस्स नीहरणं करेह"।

तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमटठं विणएणं पडिसुणेंति।

गोसालस्स सम्मत्तपरिणामपुव्वं कालधम्मे

९५ तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्ध-सम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था--"नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी, अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरिते अहं णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहिं य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी, अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ।"

एवं संपेहेति, संपेहेत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता उच्चावय-सवह-साविय्ए पकरेति, पकरेत्ता एवं वयासी--"नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी-जाव-पगासेमाणे विहरिए। अहं णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए-जाव-दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी-जाव-जिणसद्दं पगासेमाण विहरइ, तं तुब्भं णं देवाणुप्पिया! ममं कालगयं जाणित्ता वामे पाए सुंबेणं बंधेह, बंधेत्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभेह, उट्ठुभेत्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आकड्ढ-विकड्ढि करेमाणा महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वदह--'नो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी-जाव-विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए-जाव-छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी-जाव-विहरइ'। महया अणिड्ढी-असक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स नीहरणं करेज्जाह"--एवं वदित्ता कालगए।

गोसालसरीरस्स नीहरणं

९६ तए णं आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं कालगयं जाणित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवाराइं पिहेंति, पिहेत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स बहुमज्झदेसभाए सावत्थिं नगरिं आलिहंति, आलिहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं वामे पदे सुंबेणं बंधंति, बंधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभंति, उट्ठुभित्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुहमहापह-पहेसु आकड्ढविकड्ढि करेमाणा णीयं-णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासी--"नो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्त जिणे जिणप्पलावी-जाव-विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए-जाव-छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी-जाव-विहरइ" सवह-पडिमोक्खणगं करेंति, करेत्ता दोच्चं पि पूया-सक्कार-थिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबं मुयंति, मुइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवार-वयणाइं अवंगुणंति, अवंगुणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति, तं चेव-जाव-महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरणं करेंति।

भगवओ देहे रोगायंक-पाउब्भवो

९७ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं मेंढियागामे नामं नगरे होत्था--वण्णओ।

तस्स णं मेंढियगामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं साणकोट्ठए नामं चेइए होत्था--वण्णओ-जाव-पुढविसिलापट्टओ।

तस्स णं साणकोट्ठगस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था--किण्हे किण्होभासे-जाव-महामेहनिकुरंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठति।

तत्थ णं मेंढियागामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति--अड्ढा-जाव-बहुजणस्स अपरिभूया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव मेंढियगामे नगरे जेणेव साणकोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ-जाव-परिसा पडिगया।

तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूए––उज्जले विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे, दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए यावि विहरति, अवि याइं लोहिय-वच्चाइं पि पकरेइ, चाउवण्णं च णं वागरेति––"एवं खलु समणे भगवं महावीरे गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए छउमत्थे चेव कालं करेस्सति।"

सीहमुणिस्स माणसियं दुक्खं

९८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सीहे नामं अणगारे––पगइभद्दए-जाव-विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरति।

तए णं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––"एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए––उज्जले-जाव-छउमत्थे चेव कालं करेस्सति, वदिस्संति य णं अण्णतित्थिया––छउमत्थे चेव कालगए"। इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अंतो-अंतो अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया-महया सद्देणं कुहुकुहुस्स परुण्णे।

भगवया सीहस्स आसासणं

९९ अज्जो! ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वयासी–"एवं खलु अज्जो! ममं अंतेवासी सीहे नामं अणगारे पगइभद्दए -जाव-विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरति। तए णं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था––एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अंतो-अंतो-जाव-कुहुकुहुस्स परुण्णे। तं गच्छह णं अज्जो! तुब्भे सीहं अणगारं सद्दाह"।

तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मालुयाकच्छए, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सीहं अणगारं एवं वयासी––"सीहा! धम्मायरिया सद्दावेंति"।

तए णं से सीहे अणगारे समणेहिं निग्गंथेहिं सद्धिं मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव साणकोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं-जाव-पज्जुवासति।

१०० सीहा! दि समणे भगवं महावीरे सीहं अणगारं एवं वयासी––"से नूणं ते सीहा! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए -जाव-कुहुकुहुस्स परुण्णे। से नूणं ते सीहा! अट्ठे समट्ठे?"

"हंता अत्थि।"

"तं नो खलु अहं सीहा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं अहं णं अद्ध सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तं गच्छ णं तुमं सीहा! मेंढियगामं नगरं, रेवतीए गाहावतिणीए गिहं, तत्थ णं रेवतीए गाहावतिणीए ममं अट्ठाए दुवे कवोय-सरीरा उवक्खडिया, ते हिं नो अट्ठो; अत्थि से अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए, तमाहराहि, एएणं अट्ठो"।

सीहमुणिणा रेवइसयाओ भेसज्जाणयणं

१०१ तए णं से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अतुरियमचवलमसंभंतं मुहपोत्तियं पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जिता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय-मचवलमसंभंतं जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव मेंढियगामे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव रेवतीए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रेवतीए गाहावतिणीए गिहं अणुप्पविट्ठे।

१०२ तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--"संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ?"

तए णं से सीहे अणगारे रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी--"एवं खलु तुमे देवाणुप्पिए ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए दुवे कवोय-सरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि ते अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए एयमाहराहि, तेणं अट्ठो"।

तए णं सा रेवती गाहावइणी सीहं अणगारं एवं वयासी--"केस णं सीहा। से नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणासि" ?

तए णं से सीहे अणगारे रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी--"एवं खलु रेवई ! ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं अहं जाणामि।

तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पत्तगं मोएति, मोएत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगंसि तं सव्वं सम्मं निसिरति।

१०३ तए णं तीए रेवतीए गाहावतिणीए तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं सीहे अणगारे पडि-लाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा--वसुधारा वुट्ठा दसद्ध-वण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे।

तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ--"धन्ना णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयत्था णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयपुण्णा णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयलक्खणा णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! रेवतीए गाहावतिणीए सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा--वसुधारा वुट्ठा-जाव-अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ना कयत्था कयपुण्णा कयलक्खणा, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए, रेवतीए गाहावतिणीए"।

१०४ तए णं से सीहे अणगारे रेवतीए गाहावतिणीए गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जहा गोयमसामी-जाव-भत्तपाणं पडिदंसेति, पडिदंसेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स पाणिंसि तं सव्वं सम्मं निस्सिरति।।

भगवओ आरोग्गं

१०५ तए णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवति।

तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहारं आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायंके खिप्पामेव उवसंते, हट्ठे जाए, अरोगे, बलियसरीरे। तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा सावया, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे--हट्ठे जाए समणे भगवं महावीरे, हट्ठे जाए समणे भगवं महावीरे।

सव्वाणुभूति-सुनक्खत्तमुणीणं देवलोगुप्पत्ती तयणंतरं सिद्धिगमणनिरूवणं च

१०६ भंते ! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए, से णं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकए समाणे कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकए समाणे उड्ढं चंदिम-सूरिय-जाव-बंभ-लंतक-महासुक्के कप्पे वीइवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सव्वाणुभूतिस्स वि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता"।

"से णं भंते ! सव्वाणुभूती देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति" ?

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति"।।

१०७ "एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए। से णं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परितावित्ए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?"

"एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए-जाव-विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परितावित्ए समाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदति, नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय-जाव-आणय-पाणयारणे कप्पे वीइवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स बाबीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता"।

"से णं भंते ! सुनक्खत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति" ?

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति"।

गोसालजीवस्स देवलोगुप्पत्ती

१०८ "एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते से णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने" ?

"एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते समणघायए-जाव-छउमत्थे चेव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय-जाव-अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं गोसालस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता"।

गोसालस्स महापउमभवे-जम्मो रज्जाभिसेओ य

१०९ "से णं भंते ! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति" ?

"गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे संमुतिस्स रण्णो भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं-जाव-सुरूवे दारए पयाहिति"।

जं रयणिं च णं से दारए जाइहिति, तं रयणिं च णं सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरिए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसमे दिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं काहिंति—जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरिए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महापउमे-महापउमे। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति महापउमे त्ति।

तए णं तं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि महया-महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचेहिंति। से णं तत्थ राया भविस्सति-महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ-जाव-विहरिस्सइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महापउमस्स देवसेण-विमलवाहणाभिधाणं नामदुगं

११० तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कदायि दो देवा महिड्ढिया-जाव-महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति, तं जहा--पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य।

तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता एवं वदेहिंति –

"जम्हा णं देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया-जाव-महेसक्खा सेणाकम्मं करेंति, तंजहा--पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य, तं होउ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दोच्चे नामधेज्जे वि देवसेणे-देवसेणे । तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति देवसेणे त्ति।

१११ तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेते संखतल-विमल-सन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ । तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतल-विमल-सन्निगासं चउद्दंतं हत्थिरयणं दूढे समाणे सयदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं अतिजाहिति य निज्जाहिति य। तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर-तलवर-मांडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ, सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता वदेहिंति--जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्य रण्णो सेते संखतल-विमल-सन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पन्ने, तं होउ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे विमलवाहणे। तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति विमलवाहणे त्ति।।

विमलवाहणस्स निग्गंथ-पडिकूलाचरणं

११२ तए णं से विमलवाहणे राया अण्णया कदायि समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जिहिति--अप्पेगतिए आओसेहिति, अप्पेगतिए अवहसिहिति, अप्पेगतिए निच्छोडेहिति, अप्पेगतिए निब्भच्छेहिति, अप्पेगतिए बंधेहिति, अप्पेगतिए निरुंभेहिति, अप्पेगतियाणं छविच्छेदं करेहिति, अप्पेगतिए पमारेहिति, अप्पगतिए उद्दवेहिति, अप्पेगतियाणं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं आच्छिंदिहिति विच्छिदिहिति भिंदिहिति अवहरिहिति, अप्पेगतियाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिति, अप्पेगतिए निन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिए निव्विसए करेहिति। तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर-तलवर- माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता एवं वदिहिंति--"एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने--अप्पेगतिए आओसति-जाव-निव्विसए करेति, तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं विमलवाहणस्स रण्णो सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा रट्ठस्स वा बलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अंतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं, जण्णं विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विण्णवेत्तए" त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेहिंति, पडिसुणेत्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छिहिंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेहिंति, वद्धावेत्ता एवं वदिहिंति--एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना अप्पेगतिए आओसंति-जाव-अप्पेगतिए निव्विसए करेंति, तं नो खलु एयं देवाणुप्पियाणं सेयं, नो खलु एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा-जाव-जणवयस्स वा सेयं, जण्णं देवाणुप्पिया ! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, तं विरमंतु णं देवाणुप्पिया ! एयस्स अट्ठस्स अकरणयाए"।

तए णं से विमलवाहणे राया तेहिं बहूहिं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्ठं विण्णत्ते समाणे नो धम्मो त्ति नो तवो त्ति, मिच्छा-विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेहिति ।

विमलवाहणकओ सुमंगलअणगारउवसग्गो

११३ तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सुभूमिभागे नामं उज्जाणे भविस्सइ--सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे, वण्णओ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए सुमंगले नामं अणगारे जाइसंपन्ने, जहा धम्मघोसस्स वण्णओ-जाव-संखित्त-विउलतेयलेस्से तिन्नाणोवगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरिस्सति ।

तए णं से विमलवाहणे राया अण्णदा कदायि रहचरियं काउं निज्जाहिति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहं आयावणभूमीए आयावेमाणं पासिहिति, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं नोल्लावेहिति।

तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहेति, उट्ठेत्ता दोच्चं पि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरिस्सति।

तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति।

तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता ओहिं पउंजेहिति, पउंजित्ता विमलवाहणस्स रण्णो तीतद्धं आभोएहिति, आभोएत्ता विमलवाहणं रायं एवं वइहिति—"नो खलु तुमं विमलवाहणे राया, नो खलु तुमं देवसेणे राया, नो खलु तुमं महापउमे राया, तुमं णं इओ तच्चे भवग्गहणे गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए-जाव-छउमत्थे चेव कालगए, तं जइ ते तदा सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं पभुणा वि होऊणं सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहियासियं, जइ ते तदा सुनक्खत्तेणं अणगारेणं पभुणा वि होऊणं सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहियासियं, जइ ते तदा समणेणं भगवया महावीरेणं पभुणा वि होऊणं सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहियासियं, तं नो खलु ते अहं तहा सम्मं सहिस्सं खमिस्सं तितिक्खिस्सं, अहियासिस्सं अहं ते नवरं—सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेज्जामि।

तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठ कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति।

सुमंगलमुणितेएण विमलवाहणस्स मरण

११४ तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहण्णिहिति, समोहण्णित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्किहिति, पच्चोसक्कित्ता विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेहिति।

सुमंगलमुणिस्स देवलोग–सिद्धिगमननिरूवणं

११५ "सुमंगले णं भंते! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं-जाव-भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति"?

"गोयमा! सुमंगले अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं-जाव-भासरासिं करेत्ता बहूहिं छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं, विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणेहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते उड्ढं चंदिम-जाव-गेविज्जविमाणावाससयं वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सुमंगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता"।

"से णं भंते! सुमंगले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति"?

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति।

गोसालजीवस्स विमलवाहणस्स अणगा दुक्खपउरा भवा, तयणंतरं देवभवा य

११६ "विमलवाहणे णं भंते! राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये-जाव-भासरासीकए समाणे कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति"?

गोयमा! विमलवाहणे णं राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये-जाव-भासरासीकए समाण अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झ दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाह वक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि उरएसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं भवंति, तं जहा—चम्मपक्खीणं, लोमपक्खीणं, समुग्गपक्खीणं, वियय-पक्खीणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं भुयपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तं जहा—गोहाणं, नउलाणं, जहा पण्णवणापए-जाव-जाहगाणं चउप्पाइयाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उदाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं उरपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तं जहा—अहीणं, अयगराणं, आसालियाणं, महोरगाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं चउप्पदविहाणाइं भवंति, तं जहा—एगखुराणं, दुखुराणं, गंडीपदाणं, सणहप्पदाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं जलयरविहाणाइं भवंति, तं जहा—मच्छाणं, कच्छभाणं-जाव-सुंसुमाराणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं चउरिंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा—अंधियाणं, पोत्तियाणं, जहा पण्णवणापदे-जाव-गोमयकीडाणं, तेसु अणेगसय सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं तेइंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा—उवचियाणं-जाव-हत्थिसोंडाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं बेइंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा—पुलाकिमियाणं-जाव-समुद्दलिक्खाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं वणस्सइविहाणाइं भवंति, तं जहा—रुक्खाणं, गुच्छाणं -जाव-कुहणाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं कडुयरुक्खेसु, कडुयवल्लीसु ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं वाउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पाईणवायाणं -जाव-सुद्धवायाणं तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं तेउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—इंगालाणं -जाव-सूरकंतमणिनिस्सियाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं आउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा-ओसाणं-जाव-खातोदगाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चाया इस्सइ—उस्सन्नं च णं खारोदएसु खत्तोदएसु ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं पुढविक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पुढवीणं, सक्कराणं--जाव-सूरकंताणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति—उस्सन्नं च णं खरबायर-पुढविक्काइएसु ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा रायगिहे नगरे बाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि रायगिहे नगरे अंतो खरियताए उववज्जिहिति ।

तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विझगिरिपायमूले बेभेले सण्णिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति ।

तए णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवएणं सुंकेणं, पडिरूवएणं विणएणं, पडिरूवयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्संति । सा णं तस्स भारिया भविस्सति—इट्ठा कंता-जाव-अणुमया, भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया, चेलपेडा इव सुसंपरिग्गहिया, रयणकरंडओ विव सुसारक्खिया, सुसंगोविया, मा णं सीयं, मा णं उण्हं-जाव-परिसहोवसग्गा फुसंतु । तए णं सा दारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी ससुरकुलाओ कुलघरं निज्जमाणी अंतरा दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति । तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति । तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं एवं एएणं अभिलावेणं दाहिणिल्लेसु सुवण्णकुमारेसु, एवं विज्जुकुमारेसु, एवं अग्गिकुमारवज्जं-जाव-दाहिणिल्लेसु थणियकुमारेसु ।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति । तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे जोइसिएसु देवेसु उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति । तत्थ वि य णं अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति। तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो एवं जहा सणंकुमारे तहा बंभलोए, महासुक्के, आणए, आरणे।

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य णं अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति।

गोसालजीवस्स दढपइण्णभवे सिद्धिगमणनिरूवणं

११७ से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति––अड्ढाइं-जाव-अपरिभूयाइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चायाहिति, एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया सच्चेव वत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा-जाव-केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जिहिति।

तए णं से दढप्पइण्णे केवली अप्पणो तीतद्धं आभोएहिइ, आभोएत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एवं वदिहिइ––एवं खलु अहं अज्जो! इओ चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था––समणघायए-जाव-छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलगं च णं अहं अज्जो अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिए, तं मा णं अज्जो! तुब्भं केयि भवतु आयरि पडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, मा णं से वि एवं चेव अणादीयं अण-य दग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिहिति, जहा णं अहं।

तए णं ते समणा निग्गंथा दढप्पइण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा दढप्पइण्णं केवलिं वंदिहिंति नमंसिहिंति, वंदित्ता नमंसित्ता तस्स ठाणस्स आलोएहिंति पडिक्कमिहिंति निंदिहिंति-जाव-अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिहिंति।

तए णं से दढप्पइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं जाणेत्ता भत्तं पच्चक्खाहिति, एवं जहा ओववाइए-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं काहिति।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति-जाव-विहरइ। भग० श० १५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठो खंधो

धम्मकहाणुओगे

पइण्णयकहाणगाणि

१ महावीरतित्थे	सेणिय-चेल्लणावलोयणेण साहु-साहुणीकयनियाणपसंगो
२ महावीरतित्थे	रहमुसलसंगामो
३ महावीरतित्थे	रहमुसलसंगामे कालाइ मरणकहा
४. महावीरतित्थे	महासिलाकंटयसंगामकहाणयं
५. महावीरतित्थे	विजयतक्करणायं
६. महावीरतित्थे	मयूरीअंडणायं
७. महावीरतित्थे	कुम्मणायं
८. महावीरतित्थे	रोहिणीणायं
९. महावीरतित्थे	आसणायं
१०. महावीरतित्थे	मियापुत्तकहाणयं
११. महावीरतित्थे	उज्झिययकहाणयं
१२. महावीरतित्थे	अभग्गसेणकहाणयं
१३. महावीरतित्थे	सगडकहाणयं
१४. महावीरतित्थे	बहस्सइदत्तकहाणयं
१५. महावीरतित्थे	नंदिवद्धणकुमारकहाणयं
१६. महावीरतित्थे	उंबरदत्तकहाणयं
१७. महावीरतित्थे	सोरियदत्तकहाणयं
१८. महावीरतित्थे	देवदत्ताकहाणयं
१९. महावीरतित्थे	अंजूकहाणयं
२०. महावीरतित्थे	पूरणबालतवस्सिकहाणयं
२१. महावीरतित्थे	महासुक्कदेवाणं भगवओ महावीरस्स समीवे आगमणपसंगो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. सेणिय-चेल्लणावलोयणेण साहु-साहुणीकयनियाणकरणपसंगो

रायगिहे सेणियराया

१ तेणं कालेणं, तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था। वण्णओ। गुणसिलए चेइए। वण्णओ। रायगिहे नयरे सेणिए राया होत्था। रायवण्णओ जहा उववाइए-जाव-चेलणाए सद्धिं० [भोगे भुंजमाणे] विहरइ।

भगवंतमहावीरागमणवुत्तंतजाणणट्ठा सेणियस्स कोडुंबियपुरिसे पइ आएसो

२ तए णं से सेणिए राया अण्णया कयाइ ण्हाए, कय-बलिकम्मे, कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते, सिरसा ण्हाए, कंठे मालकडे, आविद्ध-मणिसुवण्णे, कप्पिय-हारद्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्तय-सुकयसोभे, पिणद्ध-गेवेज्ज-अंगुलिज्जगे-जाव-कप्परुक्खए चेव सुअलंकियविभूसिए णरिंदे। सकोरंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं-जाव-ससि व्व पियदंसणे नरवई जेणेव बहिरिया उवट्ठाण-साला, जेणेव सिंहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिंहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--

"गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया! जाइं इमाइं रायगिहस्स णयरस्स बहिया आरामाणि य, उज्जाणाणि य आएसणाणि य, आयतणाणि य देवकुलाणि य, सभाओ य पवाओ य पणियगिहाणि य, पणियसालाओ य छुहा-कम्मंताणि य, वणियकम्मंताणि य कट्ठकम्मंताणि य, इंगालकम्मंताणि य वणकम्मंताणि य, दब्भकम्मंताणि य जे तत्थेव महत्तरगा आणत्ता चिट्ठंति ते एवं वदह-- एवं खलु देवाणु-प्पिया! सेणिए राया भंभसारे आणवेइ--जदा णं समणे भगवं महावीरे, आदिगरे, तित्थयरे-जाव-संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरेमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, सुहं सुहेण विहरमाणे, संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे इहमागच्छेज्जा, तया णं तुम्हे भगवओ महावीरस्स अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणह, अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेत्ता सेणियस्स रण्णो भंभसारस्स एयमट्ठं पियं णिवेदह।"

३ तए णं ते कोडुंबिय-पुरिसे सेणिएणं रन्ना भंभसारेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-जाव-हियया-जाव-"एवं सामी! तह" त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झं-मज्झेण निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जाइं इमाइं रायगिहस्स बहिया आरामाणि वा-जाव-जे तत्थ महत्तरगा आणत्ता चिट्ठंति, ते एवं वयंति-जाव-'सेणियस्स रन्नो एयमट्ठं पियं निवेदेज्जा, पियं भे भवतु' दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदंति, वइत्ता-जाव-जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

भगवाओ महावीरस्स समोसरणं

४ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थयरे-जाव-गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे-जाव-अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-एवं-जाव--परिसा निग्गया,-जाव--पज्जुवासइ।

महत्तरएहिं सेणियसमक्खं भगवंतआगमणनिवेयणं

५ तए णं महत्तरगा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदंति नमंसंति, वंदित्ता, नमंसित्ता नाम-गोयं पुच्छंति, नाम-गोयं पुच्छित्ता नाम-गोयं पधारेंति, पधारित्ता एगओ मिलंति, एगओ मिलित्ता एगंतम-वक्कमंति, एगंतमवक्कमित्ता एवं वयासी--

"जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया भंभसारे दंसणं कंखति, जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं पीहेति, जस्स णं देवाणु-प्पिया! सेणिए राया दंसणं पत्थेति, जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं अभिलसति, जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया नामगोत्तस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठे-जाव-भवति, से णं समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थयरे-जाव-सव्वण्णू सव्वदंसी, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेण विहरमाणे इह आगए, इह समोसढे, इह संपत्ते-जाव-अप्पाणं भावेमाणे सम्मं विहरति। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेमो--पियं भे भवतु" त्ति कट्टु अण्णमन्नस्स वयणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव रायगिहे णयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिह-नगरं मज्झंमज्झेण जेणेव सेणियस्स रन्नो गिहे, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता सेणियं रायं करयलपरिग्गहियं-जाव-जएणं विजएणं वद्धावेंति। वद्धावित्ता एवं वयासी--

"जस्स णं सामी! दंसणं कंखति-जाव-से णं समण भगवं महावीरे गुणसिले चेइए-जाव-विहरति। तस्स णं देवाणुप्पिया! पियं निवेदेमो। पियं भे भवतु।"

सेणियस्स रायगिहनगरसोभाकरणाऽऽएसो, जाणाइआणयणाएसो य

६ तए णं से सेणिए राया तेसिं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वंदति नमंसइ; वंदित्ता नमंसित्ता ते पुरिसे सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइ, दलइत्ता पडिविसज्जेति। पडिविसज्जित्ता नगरगुत्तियं सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायगिहं नगरं सब्भितर-बाहिरियं आसिय-संमज्जियोवलित्तं"-जाव-करित्ता पच्चप्पिणंति--
तए णं से सेणिए राया बलवाउयं सद्दावेइ-सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हय-गय-रह-जोह कलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह।"
--जाव--से वि पच्चप्पिणइ।
तए णं से सेणिए राया जाण-सालियं सद्दावेइ-जाव-जाण-सालियं सद्दावित्ता एवं वयासी--

"भो देवाणुप्पिया! खिप्पामेव धम्मियं जाण-पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि।"

तए णं से जाणसालिए सेणियरन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए जेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छइ; उवागच्छित्ता जाण-सालं अणुप्पविसइ; अणुप्पविसित्ता जाणगं पच्चुवेक्खइ; पच्चुवेक्खित्ता जाणं पच्चोरुभति, पच्चोरुभित्ता जाणगं संपमज्जति, संपमज्जित्ता जाणगं णीणेइ, णीणेत्ता जाणगं संवट्टेति, संवट्टेत्ता दूसं पवीणेति, पवीणेत्ता जाणगं समलंकरेइ, जाणगं समलंकरित्ता जाणगं वरमंडियं करेइ, करित्ता जेणेव वाहण-साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाहण-सालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता वाहणाइं पच्चुवेक्खइ, पच्चुवेक्खित्ता वाहणाइं संपमज्जइ, संपमज्जित्ता वाहणाइं अप्फालेइ, अप्फालेत्ता वाहणाइं णीणेइ, णीणेइत्ता दूसे पवीणेइ, पवीणेत्ता वाहणाइं समलंकरेइ, समलंकरित्ता वराभरणमंडियाइं करेइ, करेत्ता वाहणाइं जाणगं जोएइ, जोएत्ता वट्टमग्गं गाहेइ, गाहित्ता पओद-लट्ठिं पओद-धरे अ सम्मं आरोहेइ, आरोहइत्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता तए णं करयलं जाव एवं वयासी--

"जुत्ते ते सामी! धम्मिए जाण-पवरे आदिट्ठे, भद्दं तव, आरुहाहि।"

चेल्लणासहियस्स सेणियस्स समवसरणे गमणं भगवंतपज्जुवासणा य

७ तए णं सेणिए राया भंभसारे जाणसालियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे-जाव-मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता -जाव-कप्परुक्खे चेव अलंकिए विभूसिए णरिंदे-जाव-मज्जण-घराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणादेविं एवं वयासी--

"एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थयरे-जाव-पुव्वाणुपुव्विं चरेमाणे-जाव-संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं देवाणुप्पिए! तहारूवाणं अरहंताणं जाव--तं गच्छामो देवाणुप्पिए! समणं भगवं महावीरं वंदामो, ,नमंसामो, सक्कारेमो, सम्माणेमो, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामो। एतं णं इहभवे य परभवे य हियाए, सुहाए, खमाए निस्सेयसाए-जाव-अणुगामियत्ताए भविस्सति।"

८ तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा-जाव-पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव मज्जण-घरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाया, कयबलिकम्मा, कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता, किं ते? वर-पाय-पत्त-नेउरा, मणि-मेखला-हार-रइय-उवचिय-कडग-खड्डुग-एगावलि-कंठसुत्त-मरगय-तिसरय-वरवलय-हेमसुत्तय-कुंडल-उज्जोइयाणणा, रयण-विभूसियंगी, चीणंसुय-वत्थ-पवरपरिहिया, दुगुल्ल-सुकुमाल-कंत-रमणिज्ज-उत्तरिज्जा, सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुंदर-रचित-पलंब-सोहण-कंत-विकसंत-चित्तमाला, वर-चंदण-चच्चिया, वराभरण-विभूसियंगी, कालागुरु-धूव-धूविया, सिरि-समाण-वेसा, बहूहिं खुज्जाहिं चिलातियाहिं-जाव-महत्तर-गविंदपरिक्खित्ता, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण-साला, जेणेव सेणियराया, तेणेव उवागच्छइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९ तए णं से सेणिए राया चेल्लणादेवीए सद्धिं धम्मियं जाणपवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता सकोरेंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, उववाइग-मेणं णेयव्वं-जाव-पज्जुवासइ। एवं चेल्लणादेवी-जाव-महत्तरग-परिक्खित्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति-नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता सेणियं रायं पुरओ काउं ठितिया चेव-जाव-पज्जुवासति।

भगवओ धम्मदेसणा सेणियाइपरिसापडिगमणं च

१० तए णं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रण्णो भंभसारस्स, चेल्लणादेवीए, तीसे महइ-महालयाए परिसाए, इसि-परिसाए, जइ-परिसाए, मुणि-परिसाए, मणुस्स-परिसाए, देवपरिसाए, अणेग-सयाए-जाव-धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया। सेणियराया पडिगओ।

साहु-साहुणीणं नियाणकरणं

११ तत्थेगइयाणं निग्गंथाणं निग्गंथीणं य सेणियं रायं चेल्लणं च देविं पासित्ता णं इमे एयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"अहो णं सेणिए राया महिड्ढिए जाव—महासुक्खे जं णं ण्हाए, कयबलि-कम्मे, कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते, सव्वालंकार-विभूसिए, चेल्लणा देवीए सद्धिं उरालाइं माणुसगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति। न मे दिट्ठा देवा देवलोगंसि, सक्खं खलु अयं देवे। जइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियम-बंभचेर-गुत्तिवासस्स कल्लाणे फल-वित्ति-विसेसे अत्थि, तया वयमवि आगमेस्साइं इमाइं ताइं उरालाइं एयारूवाइं माणुसगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरामो।" से त्तं साहू।

"अहो णं चेल्लणादेवी महिड्ढिया जाव—महासुक्खा जा णं ण्हाया, कय-बलिकम्मा-जाव-कयकोउय-मंगलपायच्छित्ता-जाव-सव्वालंकार विभूसिया, सेणिएणं रण्णा सद्धिं उरालाइं-जाव-माणुसगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ। न मे दिट्ठाओ देवीओ देवलोगंसि, सक्खा खलु इमा देवी। जइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियम-बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्ति-विसेसे अत्थि, वयमवि आगमिस्साइं इमाइं एयारूवाइं उरालाइं-जाव-विहरामो।" से त्तं साहुणी।

भगवओ निदाणकरणनिसेहरूवं उवएसं सोच्चा साहु-साहूणीणं पायच्छित्ताइकरणं

१२ 'अज्जो' त्ति समणे भगवं महावीरे ते बहवे निग्गंथा निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी—

"सेणियं रायं चेल्लणादेविं पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुपज्जित्था—अहो णं सेणिए राया महिड्ढिए-जाव-से तं साहू; अहो णं चेल्लणा देवी महिड्ढिया सुंदरा-जाव-साहूणी। से णूणं अज्जो! अत्थे समट्ठे?"

"हंता, अत्थि।"

"एवं खलु समणाउसो! मए धम्मे पन्नत्ते, तं जहा—[1]जाव-एवं खलु समणाउसो! तस्स अणिदाणस्स इमेयारूवे कल्लाणफलविवागे जं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति-जाव-सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ।"

१३ तए णं ते बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता, नमंसित्ता तस्स ठाणस्स आलोएंति पडिक्कमंति-जाव-अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जंति॥

दसासुय १०।

---

१ 'जाव' इच्चेएण निद्दिट्ठं नियाणभेयाइनिरूवगं भगवंतवयणं दसासुयक्खंधाओ अवगंतव्वं, एत्थ आगमअणुओगगतचरणाणुओगे वि निदाणभेयाइ जाणियव्वं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. रहमुसलसंगामो

रहमुसले वज्जीणं 'जओ' त्ति निरूवणं

१४ नायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया---रहमुसले संगामे। रहमुसले णं भंते! संगामे वट्टमाणे के जइत्था? के पराजइत्था?

गोयमा! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था; नव मल्लई, नव लेच्छई पराजइत्था।

कूणियस्स जुद्धपत्थाणं

१५ तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्ठियं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भूयाणंदं हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया-जाव-मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामी! तह' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहिं सुनिउणेहिं उज्जलणेवत्थ-हव्वपरिवच्छियं सुसज्जं-जाव-भीमं संगामियं अओज्झं भूयाणंदं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेवेज्ज-विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीजियंगे, मंगलजयसद्दकयालोए-जाव-जेणेव भूयाणंदे हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भूयाणंदं हत्थिरायं दुरूढे।

कूणियस्स इंदसाहेज्जं

१६ तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे-जाव-सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुवमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ताणं चिट्ठइ। मग्गओ य से चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया एगं महं आयसं किढिणपडिरूपगं विउव्वित्ताणं चिट्ठइ। एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा---देविंदे य, मणुइंदे य, असुरिंदे य। एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए।

कूणियजयो

१७ तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई---कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंधद्धयपडागे किच्छपाणगए दिसोदिसिं पडिसेहित्था।

रहमुसलसंगामसरूवं

१८ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ---रहमुसले संगामे, रहमुसले संगामे?

गोयमा! रहमुसले णं संगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए, असारहिए, अणारोहए, समुसले महया जणक्खयं, जणवहं, जणप्पमद्दं, जणसंवट्टकप्पं रुहिरकद्दमं करेमाणे सव्वओ समंता परिधावित्था। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ---रहमुसले संगामे०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संगामे मणुयाणं मरणसंखा गई य

१९ रहमुसले णं भंते! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ? गोयमा! छण्णउतिं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ।
ते णं भंते! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया? कहिं उववन्ना?
गोयमा! तत्थ णं दससाहस्सीओ एगाए मच्छियाए कुच्छिंसि उववन्नाओ। एगे देवलोगेसु उववन्ने। एगे सुकुले पच्चायाए। अवसेसा उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना।

कूणियस्स इंदसाहेज्जे हेऊ

२० कम्हा णं भंते! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्जं दलइत्था?
गोयमा! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसंगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया परियायसंगतिए। एवं खलु गोयमा! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्जं दलइत्था।

भगवई श० ७ उ० ९।

---

३. रहमुसलसंगामे कालाइमरणकहा

कालाईणं दसण्हं नामुद्देसो

२१ काले सुकाले महाकाले कण्हे सुकण्हे तहा महाकण्हे वीरकण्हे य बोद्धव्वे।
रामकण्हे तहेव य पिउसेणकण्हे नवमे, दसमे महासेणकण्हे उ"॥

चंपाए सेणियपुत्ते काले

२२ तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बु द्दीवे दीवे भारहे वासे चम्पा नामं नयरी होत्था, रिद्ध०। पुण्णभद्दे चेइए।
तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कूणिए नामं राया होत्था, महया०।
तस्स णं कूणियस्स रन्नो पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाल-जाव-विहरइ।
तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नाम देवी होत्था, सोमाल जाव-सुरूवा। तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सोमाल-जाव-सुरूवे।

कूणियसहियस्स कालस्स रहमुसलसंगामगमणं

२३ तए णं से काले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं, तिहिं रहसहस्सेहिं, तिहिं आससहस्सेहिं, तिहिं मणुयकोडीहिं, गरुलवूहे एक्कारसमेणं खंडेणं कूणिएणं रन्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं ओयाए।

महावीरसमोसरणे कालीए पुच्छा

२४ तए णं तीसे कालीए देवीए अन्नया कयाइ कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था—"एवं खलु ममं पुत्ते कालकुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं-जाव-ओयाए। से, मन्ने, किं जइस्सइ? नो जइस्सइ? जीविस्सइ? नो जीविस्सइ? पराजिणिस्सइ? नो पराजिणिस्सइ? काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा?" ओहयमण-जाव-झियाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए। परिसा निग्गया।

तए णं तीसे कालीए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए,-जाव-समुप्पज्जित्था-"एवं खलु, समणे भगवं० पुव्वाणुपुव्वि-जाव-विहरइ। तं महाफलं खलु तहारूवणं-जाव-विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए। तं गच्छामि णं समणं-जाव-पज्जुवासामि, इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामि" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया, धम्मियं, जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह"। उवट्ठवित्ता-जाव-पच्चप्पिणंति।

तए णं सा काली देवी ण्हाया कयबलिकम्मा-जाव-अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं-जाव-महत्तरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता, नियगपरियालसंपरिवुडा चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ । छत्ताईए-जाव-धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं -जाव-विंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ। ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ।

२६ तए णं समणे भगवं-जाव-कालीए देवीए तीसे य महइमहालियाए०, धम्मकहा भाणियव्वा,-जाव-समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणा आणाए आराहए भवइ।

कालिपुच्छाए भगवया निरूवियं कालीपुत्त-कालकुमारस्स मरणं, कालीए सट्ठाणगमणं च

२७ तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म-जाव-हियया समणं भगवं० तिक्खुत्तो-जाव-एवं वयासी--"एवं खलु, भंते, मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं-जाव-रहमुसलं संगामं ओयाए, से णं, भंते, किं जइस्सइ? नो जइस्सइ-जाव-काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा?"।

२७ "काली" इ समणे भगवं कालिं देविं एवं वयासी--"एवं खलु काली! तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं-जाव-कूणिएणं रन्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहियपवरवीरघाइयणिवडियंचिधज्झयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रन्नो सपक्खं सपडिदिसिं रहेणं पडिरहं हव्वमागए। तए णं से चेडए राया कालं कुमारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता वइसाहं ठाणं ठाइ, ठाइत्ता, आययकण्णायतं उसुं करेइ, करित्ता कालं कुमारं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ। तं कालगए णं, काली, काले कुमारे, नो चेव णं तुमं कालं कुमारं जीवमाणं पासिहिसि"।

२८ तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी परसुनियत्ता विव चम्पगलया धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिया।

तए णं सा काली देवी मुहुत्तंतरेण आसत्था समाणी उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-"एवमेयं भंते, तहमेयं भंते, अवितहमेयं भंते, असंदिद्धमेयं भंते, सच्चे णं भंते, एसमट्ठे, जहेय तुब्भे वयह" त्ति कट्टु समणं भगवं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

कालस्स नरयगई

२९ "भंते"! त्ति भगवं गोयमे-जाव-वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--"काले णं, भंते, कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं-जाव-रहमुसलं संगामं संगामेमाणे चेडएणं रन्ना एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने?"।

"गोयमा!" इसमणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वयासी--"एवं खलु, गोयमा, काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने"।

"काले णं, भन्ते, कुमारे केरिसएहिं भोगेहिं केरिसएहिं आरम्भेहिं केरिसएहिं समारम्भेहिं केरिसएहिं आरम्भसमारम्भेहिं केरिसएहिं संभोगेहिं केरिसएहिं भोगसंभोगेहिं केरिसेण वा असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए-जाव-नेरइयत्ताए उववन्ने?" "एवं खलु, गोयमा!

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालकुमारनरयगइगमणहेउनिरूवगं कूणियचरियंतग्गयं भगवओ परूवणं

३० तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे०।

तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था, महया०।

तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था, सोमाला०-जाव-विहरइ।

तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था, सोमाले-जाव-सुरूवे, साम-दाम-भेय-दण्ड०-जहा-चित्तो--जाव-रज्जधुराए चिंतए यावि होत्था।

तस्स णं सेणियस्स रन्नो चेल्लणा नामं देवी होत्था, सोमाला-जाव-विहरइ।

चेल्लणाए सेणियमंसभक्खणदोहले सेणियस्स चिंता

३१ तए णं सा चेल्लणा देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसयंसि वासघरंसि-जाव-सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, जहा पभावई,-जाव-सुमिणपाढगा पडिविसज्जिया-जाव-चेल्लणा से वयणं पडिच्छित्ता जेणेव सए भवणे, तेणेव अणुपविट्ठा।

तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए--"धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-जम्मजीवियफले जाओ णं सेणियस्स रन्नो उयरवलीमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च-जाव-पसन्नं च आसाएमाणीओ-जाव-परिभाएमाणीओ दोहलं पविणेंति"।

तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा निस्तेया दीणविमणवयणा पंडुइयमुही ओमंथियनयणवयणकमला जहोचियं पुप्फवत्थगन्धमल्लालंकारं अपरिभुंजमाणी करतलमलिय व्व कमलमाला ओहयमण-संकप्पा-जाव-झियाइ।

तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अंगपडियारियाओ चेल्लणं देविं सुक्कं भुक्खं-जाव-झियायमाणिं पासंति, पासित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी--"एवं खलु, सामी, चेल्लणा देवी, न याणामो, केणइ कारणेणं सुक्का भुक्खा-जाव-झियाइ"।

तए णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे जेणेव चेल्लणा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणं देविं सुक्कं भुक्खं-जाव-झियायमाणिं पासित्ता एवं वयासी--'किं णं तुमं, देवाणुप्पिए, सुक्का भुक्खा-जाव-झियासि?'

तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रन्ना एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणाइ, तुसिणीया संचिट्ठइ।

तए णं से सेणिए राया चेल्लणं देविं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी--'किं णं अहं, देवाणुप्पिए, एयमट्ठस्स नो अरिहे सवणयाए, जं णं तुमं एयमट्ठं रहस्सी करेसि?'

तए णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रन्ना दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी सेणियं रायं एवं वयासी--'नत्थि णं, सामी! से केइ अट्ठे, जस्स णं तुब्भे अणरिहा सवणयाए, नो चेव णं इमस्स अट्ठस्स सवणयाए। एवं खलु, सामी! ममं तस्स ओरालस्स -जाव-महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए--धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, जाओ णं तुब्भं उयरवलिमंसेहिं सोल्लएहिं य-जाव-दोहलं विणेंति। तए णं अहं, सामी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा-जाव-झियामि'।

तए णं से सेणिए राया चेल्लणं देविं एवं वयासी--'मा णं तुमं, देवाणुप्पिए, ओहय०-जाव-झियाहि। अहं णं तहा जत्तिहामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ' त्ति कट्टु चेल्लणं देविं ताहिं इट्ठाहिं कन्ताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं मियमहुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता चेल्लणाए देवीए अंतियाओ पडि-णिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव सीहासणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्था-भिमुहे निसीयइ, तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं उवाएहिं य, उप्पत्तियाए य वेणइयाए य कम्मियाए य पारिणामियाए य परिणामेमाणे परिणामेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे-जाव-झियाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयकुमारजुत्तीए चेल्लणादोहदपूरणं

३२ इमं च णं अभए कुमारे ण्हाए-जाव-सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ओहय जाव-झियायमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—'अन्नया णं, ताओ! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ-जाव-हियया भवह, किं णं, ताओ, अज्ज तुब्भे ओहय-जाव-झियाह? तं जइ णं अहं, ताओ! एयमट्ठस्स अरिहे सवणयाए, तो णं तुब्भे मम एयमट्ठं जहाभूयमवितहं असंदिद्धं परिकहेह, जा णं अहं तस्स अट्ठस्स अंतगमणं करेमि'।

तए णं से सेणिए राया अभयं कुमारं एवं वयासी—'नत्थि णं, पुत्ता, से केइ अट्ठे, जस्स णं तुमं अणरिहे सवणयाए। एवं खलु, पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स-जाव-महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहु-पडिपुण्णाणं-जाव जाओ णं मम उयरवलीमंसेहिं सोल्लेहिं य-जाव-दोहलं विणेंति। तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का-जाव-झियाइ। तए णं अहं पुत्ता! तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं य-जाव-ठिइं वा अविंदमाणे ओहय०-जाव-झियामि'। तए णं से अभए कुमारे सेणियं रायं एवं वयासी—'मा णं, ताओ! तुब्मे ओहय०-जाव-झियाह, अहं णं, तहा जत्तिहामि, जहा णं मम चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ' त्ति कट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं-जाव-वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अब्भितरए रहस्सियए ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया, सूणाओ अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च गिण्हह'।

तए णं ते ठाणिज्जा पुरिसा अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-जाव-पडिसुणेत्ता अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिणिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सूणा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च गिण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव अभए कुमारे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० तं अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च उवणेंति।

तए णं से अभए कुमारे तं अल्लं मंसं रुहिरं अप्पकप्पियं करेइ, करेत्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं रहस्सिगयं सयणिज्जंसि उत्ताणयं निवज्जावेइ, निवज्जावइत्ता सेणियस्स उयरवलीसु तं अल्लं मंसं रुहिरं विरवेइ, विरवित्ता बत्थिपुडएणं वेढेइ, वेढेत्ता सवंतीकरणेणं करेइ, करेत्ता चेल्लणं देविं उप्पिं पासाए अवलोयणवरगयं ठवावेइ, ठवावित्ता चेल्लणाए देवीए अहे सपक्खं सपडिदिसिं सेणियं रायं सयणिज्जंसि उत्ताणगं निवज्जावेइ, सेणियस्स रन्नो उयरवलिमंसाइं कप्पणि-कप्पियाइं करेइ, करेत्ता से य भायणंसि पक्खिवइ।

तए णं से सेणिए राया अलियमुच्छियं करेइ, करेत्ता मुहुत्तंतरेण अन्नमन्नेण सद्धिं संलवमाणे चिट्ठइ।

तए ण से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो उयरवलिमंसाइं गिण्हेइ, गेण्हित्ता जेणेव चेल्लणा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणाए देवीए उवणेइ।

तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रन्नो तेहिं उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहिं-जाव-दोहलं विणेइ। तए णं सा चेल्लणा देवी संपुण्णदोहला एवं संमाणियदोहला विच्छिन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

चेल्लणाए गब्भपाडणपयत्ते निप्फलाऽऽयासो

३३ तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे-जाव-समुप्पज्जित्था—"जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाणि खाइयाणि, तं सेयं खलु मए एयं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा" एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहि य गब्भपाडणेहि य गब्भगालणेहि य गब्भविद्धंसणेहि य इच्छइतं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा। तए णं सा चेल्लणा देवी तं गब्भं जाहे नो संचाएइ बहूहिं गब्भसाडएहि य-जाव-गब्भविद्धंसणेहि य साडित्तए वा-जाव-विद्धंसित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणी अकामिया अवसवसा अट्टवसट्टदुहट्टा तं गब्भं परिवहइ।

चेल्लणाए उक्कुरुडियाए दारय-उज्झणं

३४ तए णं सा चेल्लणा देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं-जाव-सोमालं सुरूवं दारगं पयाया।

तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए इमे एयारूवे-जाव-समुप्पज्जित्था—"जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाइं खाइयाइं, तं न नज्जइ णं एस दारए संवड्ढमाणे अम्हं कुलस्स अंतकरे भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

याए उज्झावित्तए" एवं सपेहेइ संपेहित्ता दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"गच्छह णं तुमं, देवाणुप्पिए, एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि"।

तए णं सा दासचेडी चेल्लणाए देवीए एवं वुत्ता समाणी करयल०-जाव-कट्टु चेल्लणाए देवीए एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाइ। तए णं तेणं दारगेणं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिएणं समाणेणं सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था।

सेणियउवालंभियाए चेल्लणाए नियपुत्तसारक्खणं

३५ तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झियं पासेइ, पासित्ता आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चेल्लणा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणं देविं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ, आओसेत्ता उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेइ, एवं उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ, उद्धंसेत्ता एवं वयासी––"किस्स णं तुमं मम पुत्तं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेसि?" त्ति कट्टु चेल्लणं देविं उच्चावयसवहसावियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी––"तुमं णं, देवाणुप्पिए! एयं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेहि"।

तए णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विड्ढा करयलपरिग्गहियं सेणियस्स रन्नो विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेइ।

सेणिएणदारयस्स वेयणानिवारणं

३६ तए णं तस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अग्गंगुलिया कुक्कुडपिच्छएण दूमिया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं पूयं च सोणियं च अभिनिस्सावेइ।

तए णं से दारए वेयणाभिभूए समाणे महया महया सद्देण आरसइ। तए णं सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता अग्गंगुलियं आसयंसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूयं च सोणियं च आसएणं आमुसेइ।

तए णं से दारए निव्वुए निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ।

जाहे वि य णं से दारए वेयणाए अभिभूए समाणे महया महया सद्देणं आरसइ, ताहे वि य णं सेणिए राया, जेणेव से दारए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, तं चेव-जाव-निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ।

दारयस्स 'कूणिय' नामकरणं, कूणियस्स तारुण्णाइ य

३७ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो तइए दिवसे चन्दसूरदरिसणियं कारेंति-जाव-संपत्ते बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति––"जहा णं अम्हं इमस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अंगुलिया कुक्कुडपिच्छएणं दूमिया, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं कूणिए कूणिए"।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'कुणिय' त्ति।
तए णं तस्स कुणियस्स आणुपुव्वेणं ठिइवडियं च, जहा मेहस्स-जाव-उप्पिं पासायवरगए विहरइ। अट्ठओ दाओ।

सेणियं गुत्तिबंधणं करेत्ता कूणियस्स रज्जसिरीसंपत्ती

३८ तए णं तस्स कूणियस्स कुमारस्स अन्नया पुव्वरत्ता०-जाव-समुप्पज्जित्था––"एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो संचाएमि सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरित्तए, तं सेयं खलु मम सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता अप्पाणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सेणियस्स रन्नो अंतराणि य छिड्डाणि य विरहाणि य पडिजागरमाण विहरइ।

तए णं से कूणिए कुमारे सेणियस्स रन्नो अंतरं वा-जाव-मम्मं वा अलभमाणं अन्नया कयाइ कालाईए दस कुमारे नियघरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"एवं खलु, देवाणुप्पिया! अम्हे सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो संचाएमो सयमेव रज्जसिरिं करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च जणवयं च एक्कारसभाए विरचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणाणं पालेमाणाणं-जाव-विहरित्तए"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते कालाईया दस कुमारा कुणियस्स कूमारस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति।

तए णं से कूणिए कुमारे अन्नया कयाइ सेणियस्स रन्नो अन्तरं जाणइ, जाणित्ता सेणियं रायं नियलबंधणं करेइ, करेत्ता अप्पाणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेइ। तए णं से कुणिए कुमारे राया जाए महया महया०।

कूणियस्स चेल्लणासयासाओ अप्पाणं पइ सेणियस्स सिणेहावगमो

३९ तए णं से कूणिए राया अन्नया कयाइ ण्हाए-जाव-सव्वालंकारविभूसिए चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ तए णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं ओहय-जाव-झियायमाणिं पासइ, पासित्ता चेल्लणस्स देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता चेल्लणं देविं एवं वयासी—"किं णं, अम्मो! तुम्हं न तुट्ठी वा न ऊसए वा न हरिसे वा न आणंदे वा, जं णं अहं सयमेव रज्जसिरिं-जाव-विहरामि?"

तए णं सा चेल्लणा देवी कुणियं राय एवं वयासी—"कहं णं, पुत्ता! ममं तुट्ठी वा ऊसए वा हरिसे वा आणंदे वा भविस्सइ, जं णं तुमं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करित्ता अप्पाणं महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेसि?"

तए णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं वयासी—"घाएउकामे णं, अम्मो? ममं सेणिए राया, एवं मारेउ० बंधिउ० निच्छुभिउकामे णं अम्मो! ममं सेणिए राया। तं कहं णं, अम्मो! ममं सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते?"

तए णं सा चेल्लणा देवी कूणियं कुमारं एवं वयासी—"एवं खलु, पुत्ता। तुमंसि ममं गब्भे आभूए समाणे तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं ममं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए "धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-अंकपडिचारियाओ, निरवसेसं भाणियव्वं-जाव-जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभिभूए, महया-जाव-तुसिणीए संचिट्ठसि। एवं खलु, पुत्ता! सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते।"

कूणियस्स सेणियबंधणछेयणत्थं गमणं

४० तए णं से कूणिए राया चेल्लणाए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चेल्लणं देविं एवं वयासी—"दुट्ठु णं, अम्मो! मए कयं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं। तं गच्छामि णं सेणियस्स रन्नो सयमेव नियलाणि छिन्दामि" त्ति कट्टु परसुहत्थगए जेणेव चारगसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सेणियस्स तालपुडविसभक्खणं मरणं च

४१ तए णं सेणिए राया कूणियं कुमारं परसुहत्थगयं एज्जमाणं पासइ, एवं वयासी—"एस णं कूणिए कुमारे अपत्थियपत्थिए-जाव-सिरिहिरिपरिवज्जिए परसुहत्थगए इह हव्वमागच्छइ। तं न नज्जइ णं ममं केणइ कुमारेणं मारिस्सइ" त्ति कट्टु भीए-जाव-संजायभए तालपुडगं विसं आसगंसि पक्खिवइ। तए णं से सेणिए राया तालपुडगविसंसि आसगंसि पक्खित्ते समाणे मुहुत्तंतरेण परिणममाणंसि निप्पाणे निच्चेट्ठे जीवविप्पजढे ओइण्णे।

कूणियस्स सोगो सोगावगमो नियभाउएसु रज्जविभयणं च

४२ तए णं से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता सेणियं रायं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं ओइण्णं पासइ, पासित्ता महया पिइसोएणं अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चंपगवरपायवे धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए। तए णं से कूणिए कुमारे मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे विलवमाणे एवं वयासी—"अहो णं मए अधन्नेणं अपुण्णेणं अकयपुण्णेणं दुट्ठुकयं सेणियं रायं पियं देवयं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं। ममंमूलागं चेव णं सेणिए राया कालगए" त्ति कट्टु ईसरतलवर-जाव-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे ३ महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं सेणियस्स रन्नो नीहरणं करेइ।

तए णं से कूणिए कुमारे एएणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अन्नया कयाइ अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चंपानयरी, तेणेव उवागच्छइ, तत्थ वि णं विउलभोगसमिइसमन्नाए गए कालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कूणिए राया अन्नया कयाइ कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता रज्जं च-जाव-जणवयं च एक्कारसभाए विरिंचइ, विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ।

कूणियसहोयरस्स वेहल्लस्स सेयणयगंधहत्थिकीलाए वण्णवाओ

४३ तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कूणियस्स रन्नो सहोयरे कणीयसे भाया वेहल्ले नामं कुमारे होत्था, सोमाले-जाव-सुरूवे।

तए णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स सेणिएणं रन्ना जीवंतएणं चेव सेयणए गन्धहत्थी अट्ठारसवंके हारे पुव्वदिन्ने।

तए णं से वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा अंतेउरपरियालसंपरिवुडे चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अभिक्खणं अभिक्खणं गंगं महाणइं मज्जणयं ओयरइ।

तए णं सेयणए गंधहत्थी देवीओ सोंडाए गिण्हइ, गेण्हित्ता अप्पेगइयाओ पुट्ठे ठवेइ, अप्पेगइयाओ खंधे ठवेइ, एवं कुम्भे ठवेइ, सीसे ठवेइ, दंतमुसले ठवेइ, अप्पेगइयाओ सोंडागयाओ अंदोलावेइ, अप्पेगइयाओ दंतंतरेसु नीणेइ, अप्पेगइयाओ सीभरेणं ण्हाणेइ, अप्पेगइयाओ अणेगेहिं कीलावणेहिं कीलावेइ।

तए णं चंपाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरमहापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ-जाव-परूवेइ--"एवं खलु, देवाणुप्पिया! वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा अन्तेउर० तं चेव-जाव-अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया।"

नियभज्जापउमावइअणुरोहेण कूणियस्स वेहल्लसमक्खं पुणो पुणो हत्थीमगरणं हारमग्गणं च

४४ तए णं तीसे पउमावईए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे-जाव-समुप्पज्जित्था--"एवं खलु वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा-जाव-अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया। तं किं णं अम्हं रज्जेण वा-जाव-जणवएण वा, जइ णं अम्हं सेयणगे गंधहत्थी नत्थि, तं सेयं खलु ममं कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-जाव-एवं वयासी--"एवं खलु, सामी! वेहल्ले कुमारे सेयणएण गंधहत्थिणा-जाव-अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं किं णं अम्हं रज्जेण वा-जाव-जणवएण वा, जइ णं अम्हं सेयणए गंधहत्थी नत्थि?'

तए णं से कूणिए राया पउमावईए एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं सा पउमावई देवी अभिक्खणं अभिक्खणं कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवेइ।

तए णं से कूणिए राया पउमावईए देवीए अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं विन्नविज्जमाणे अन्नया कयाइ वेहल्लं कुमारं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायइ।

तए णं से वेहल्ले कुमारे कुणियं रायं एवं वयासी--"एवं खलु सामी! सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे दिन्ने। तं जइ णं, सामी! तुब्भे ममं रज्जस्स य-जाव-जणवयस्स य अद्धं दलयह, तो णं अहं तुब्भं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं दलयामि।"

तए णं से कुणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अभिक्खणं अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायइ।

कूणियभीयस्स वेहल्लस्स चेडगनिस्साए वेसालीए अवत्थाणं

४५ तए णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रन्ना अभिक्खणं अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं०। एवं अक्खिविउकामे णं, गिण्हिउकामे णं, उद्दालेउकामे णं ममं कूणिए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं। तं-जाव-न उद्दालेइ ममं कूणिए राया, ताव सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडस्स सभंडमत्तोवगरणमायाए चंपाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए– एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कूणियस्स रन्नो अंतराणि-जाव-पडिजागरमाणे पडिजागरमाणे विहरइ। तए णं से वेहल्ले कुमारे अन्नया कयाइ कूणियस्स रन्नो अंतरं जाणइ, सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जणेव वेसाली नयरी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

कूणिएण चेडगसमीवे सेयणयगंधहत्थिआइपेसणत्थं दूयपेसणं

४६ तए णं से कूणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे "एवं खलु वेहल्ले कुमारे ममं असंविदिएणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडे-जाव-अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तं सेयं खलु सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं आणेउं दूयं पेसित्तए" एवं संपेहेइ, संपेहित्ता दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी––"गच्छह णं तुमं, देवाणुप्पिया, वेसालिं नयरिं। तत्थ णं तुमं ममं अज्जं चेडगं रायं करयल० वद्धावेत्ता एवं वयासी––"एवं खलु, सामी! कूणिए राया विन्नवेइ–एस णं वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदिएणं सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय हव्वमागए। तए णं तुब्भ सामी! कूणियं रायं अणुगिण्हमाणा सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं च पेसह।"

४७ तए णं से दूए कूणिएणं० करयल-जाव-पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा–चित्तो-जाव-वद्धावेत्ता एवं वयासी––"एवं खलु, सामी! कुणिए राया विन्नवेइ––"एस णं वेहल्ले कुमारे, तहेव भाणियव्वं-जाव-वेहल्लं कुमारं पेसह।"

चेडएण वहेल्लट्ठं अद्धरज्जमग्गणं

४८ तए णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी––"जह चेव णं, देवाणुप्पिया! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, तहेव णं वेहल्ले वि कुमारे सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए। सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे पुव्वविइण्णे। तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य जणवयस्स य अद्धं दलयइ, तो णं अहं सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं च कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामि, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि।" तं दूयं सक्कारेइ संमाणेइ पडिविसज्जेइ।

तए णं से दूए चेडएणं रन्ना पडिविसज्जिए समाणे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता वेसालिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुभेहिं वसहीहिं पायरासेहिं-जाव-वद्धावेत्ता एवं वयासी–– "एवं खलु, सामी! चेडए राया आणवेइ–'जह चेव णं कूणिए राया। सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, तं चेव भाणियव्वं-जाव-वेहल्लं च कुमारं पेसिमि'। तं न देइ णं सामी! चेडए राया सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं च, वेहल्लं च नो पेसेइ"।

कूणिएण पुणो दूयपेसणं

४९ तए णं से कूणिए राया दोच्चं पि दूयं सद्दावेत्ता एवं वयासी––"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! वेसालिं नयरिं। तत्थ णं तुमं मम अज्जगं चेडगं रायं-जाव-एवं वयासी––"एवं खलु सामी! कूणिए राया विन्नवेइ––"जाणि काणि रयणाणि समुप्पज्जन्ति, सव्वाणि ताणि रायकुलगामीणि। सेणियस्स रन्नो रज्जसिरिं करेमाणस्स पालेमाणस्स दुवे रयणा समुप्पन्ना, तं जहा--सेयणए गंधहत्थी, अट्ठारसवंके य हारे। तं णं तुब्भे, सामी! रायकुलपरंपरागयं ठिइयं अलोवेमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं च कुमारं पेसेह"।

चेडगेण पुणो वि अद्धरज्जमग्गणं

५० तए णं से दूए कुणियस्स रन्नो, तहेव-जाव-वद्धावेत्ता एवं वयासी––"एवं खलु सामी! कूणिए राया विन्नवेइ–'जाणि काणि-जाव-वेहल्लं कुमारं पेसेह"। तए णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी––"जह चेव णं, देवाणुप्पिया, कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए, जहा पढमं-जाव-वेहल्लं च कुमारं पेसेमि"। तं दूयं सक्कारेइ संमाणेइ पडिविसज्जेइ।

तए णं से दूए-जाव-कूणियस्स रन्नो वद्धावेत्ता एवं वयासी––"चेडए राया आणवेइ–'जह चेव णं, देवाणुप्पिया! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए-जाव-वेहल्लं कुमारं पेसेमि।' तं न देइ णं, सामी! चेडए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं कुमारं नो पेसेइ"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संगामत्थं कूणिएण पुणो दूयपेसणं

५१ तए णं से कुणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे तच्चं दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालीए नयरीए चेडगस्स रन्नो वामेण पाएणं पायवीढं अक्कमाहि, अक्कमेत्ता कुंतग्गेणं लेहं पणावेहि, पणावित्ता आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु चेडगं रायं एवं वयासी—'हंभो ! चेडगराया ! अपत्थियपत्थिया, दुरन्त०जाव-परिवज्जिया एस णं कूणिए राया आणवेइ-पच्चप्पिणाहि णं कुणियस्स रन्नो सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं च कुमारं पेसेहि, अहव जुद्धसज्जो चिट्ठाहि। एस णं कुणिए राया सबले सवाहणे सखंधावारे णं जुद्धसज्जे हव्वमागच्छइ"।

तए णं से दूए करयल० तहेव-जाव-जेणेव चेडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल०-जाव-वद्धावेत्ता एवं वयासी—"एस णं, सामी ! ममं विणयपडिवत्ती। 'इयाणिं कूणियस्स रन्नो आण' त्ति चेडगस्स रन्नो वामेणं पाएणं पायवीढं अक्कमइ, अक्कमित्ता आसुरुत्ते कुंतग्गेण लेहं पणावेइ, तं चेव सबलखंधावारे णं इह हव्वमागच्छइ"।

चेडयस्स जुज्झसज्जत्तं

५२ तए णं से चेडए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निमस्स आसुरुत्ते-जाव-साहट्टु एवं वयासी—"न अप्पिणामि णं कुणियस्स रन्नो सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं, वेहल्लं च कुमारं नो पेसेमि, एस णं जुद्धसज्जे चिट्ठामि" तं दूयं असक्कारियं असंमाणियं अवद्दारेणं निच्छुहावेइ।

कूणियाइट्ठाणं कालाइकुमाराणं संगामत्थं सम्मीलणं

५३ तए णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसरुत्ते कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे ममं असंविदिएण सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं हारं अंतेउरं सभण्डं च गहाय चंपाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता वेसालिं अज्जगं-जाव-उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं मए सेयणगस्स गन्धहत्थिस्स अट्ठारसवंकस्स अट्ठाए दूया पेसिया। ते य चेडएण रन्ना इमेणं कारणेणं पडिसेहित्ता अदुत्तरं च णं ममं तच्चे दूए असक्कारिए असंमाणिए अवद्दारेणं निच्छुहावेइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं चेडगस्स रन्नो जुत्तं गिण्हित्तए"।
तए णं कालईया दस कुमारा कुणियस्स रन्नो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति।

५४ तए णं से कुणिए राया कालाईए दस कुमारे एवं वयासी—"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु सएसु रज्जेसु; पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया-जाव-पायच्छित्ता हत्थिखंधवरगया पत्तेयं पत्तेयं तिहिं दंतिसहस्सेहिं एवं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्वीड्ढिए-जाव-रवेणं सएहिंतो सएहिंतो नयरेहिंतो पडिनिक्खमह, पडिनिक्खमित्ता ममं अंतियं पाउब्भवह"।
तए णं ते कालाईया दस कुमारा कुणियस्स रन्नो एयमट्ठं सोच्चा सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया-जाव-तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं सएहिंतो सएहिंतो नयरेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अंगा जणवए, जेणेव चंपा नयरी, जेणेव कुणिए राया, तेणेव उवागया करयल-जाव-वद्धावेंति।

कालाइकुमारसहियस्स कूणियस्स जुज्झट्ठं वेसालिं पइ पत्थाणं

५५ तए णं से कुणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-जोह-चाउरंगिणिं सेणं संनाहेह, संनाहइत्ता ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह,"-जाव-पच्चप्पिणंत्ति।

तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ,-जाव-पडिनिग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-जाव-नरवई दुरूढे।

तए णं से कूणिए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं-जाव-रवेणं चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कालाईया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कालाईएहिं दसहिं कुमारेहिं सद्धिं एगओ मेलायंति।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं, तेत्तीसाए आससहस्सेहिं, तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं, तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं सुभेहिं वसहीहिं सुभेहिं पायरासेहिं नाइविगिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे वसमाणे अंगजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव विदेहे जणवए, जेणेव वेसाली नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्लइ-लेच्छइआइसहियस्स चेडयस्स जुज्झट्ठं नीयदेससीमाए अवत्थाणं

५६ तए णं से चेडए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो सद्दावेइ, एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदिएणं सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय इहं हव्वमागए। तए णं कुणिएणं सेयणगस्स अट्ठारसवंकस्स य अट्ठाए तओ दूया पेसिया । ते य मए इमेणं कारणेणं पडिसेहिया। तए णं से कुणिए ममं एयमट्ठं अपडिसुणमाणे चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुद्धसज्जे इहं हव्वमागच्छइ । तं किं णं देवाणुप्पिया ! सेयणगं अट्ठारसवंकं कुणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामो ? वेहल्लं कुमारं पेसेमो ? उदाहु जुज्झित्था ?" ।

५७ तए णं नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो चेडगं रायं एवं वयासी—"न एयं, सामी ! जुत्तं वा पत्तं वा रायसरिसं वा, जं णं सेयणगं अट्ठारसवंकं कुणियस्स रन्नो पच्चप्पिणिज्जइ, वेहल्ले य कुमारे सरणागए पेसिज्जइ । तं जइ कूणिए राया चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुद्धसज्जे इहं हव्वमागच्छइ, तए णं अम्हे कुणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झामो ।"

तए णं से चेडए राया ते नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो एवं वयासी—"जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे कूणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! सएसु सएसु रज्जेसु ण्हाया, जहा कालाईया-जाव-जएणं विजएणं वद्धावेंति ।

तए णं से चेडए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—आभिसेक्कं, जहा कूणिए-जाव-दुरूढे ।

५८ तए णं से चेडए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं, जहा कूणिए-जाव-वेसालिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निगच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो, तेणेव उवागच्छइ ।

तए णं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं, सत्तावन्नाए आससहस्सेहिं, सत्तावन्नाए रहस्सेहिं, सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं सुभेहिं वसहीहिं पायरासेहिं नाइविगिट्ठेहिं अंतरेहिं वसमाणे वसमाणे विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसपंते, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंधावार-निवेसणं करेइ, करेत्ता कुणियं रायं पडिवालेमाणे जुद्धसज्जे चिट्ठइ ।

कूणिय-चेडगाणं संगामो

५९ तए णं से कूणिए राया सव्विड्ढीए-जाव-रवेणं जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडयस्स रन्नो जोयणंतरियं खंधावार-निवेसं करेइ ।

६० तए णं ते दोन्नि वि रायाणो रणभूमिं सज्जावेन्ति, सज्जावित्ता रणभूमिं जयंति ।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं-जाव-मणुस्सकोडीहिं गरुलवूहं रएइ, रइत्ता गरुलवूहेणं रहमुसलं संगामं उवायाए । तए णं से चेडगे राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं-जाव-सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सगडवूहं रएइ, रइत्ता सगडवूहेणं रहमुसलं संगामं उवायाए ।

तए णं से दोण्ह वि राईणं अणीया संनद्ध-जाव-गहियाउहपहरणा मंगतिएहिं फलएहिं निकट्ठाहिं असीहिं अंसागएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं डावाहिं ओसारियाहिं ऊरुघंटाहिं छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठ-सीहनायबोलकलकलरवेणं समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सव्विड्ढीए-जाव-रवेण हयगया हयगएहिं, गयगया गयगएहिं, रहगया रहगएहिं, पायत्तिया पायत्तिएहि, अन्नमन्नेहिं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।

तए णं ते दोण्ह वि रायाणं अणीया नियगसामीसासणाणुरत्ता महया जणक्खयं जणवहं जणप्पमद्दं जणसंवट्टकप्पं नच्चंतकबंधवारभीमं रुहिरकद्दमं करेमाणा अन्नमन्नेणं सद्धिं जुज्झंति ।

संगामे कालमरणं

६१ तए णं से काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं-जाव-मणूसकोडीहिं गरुलवूहेणं एक्कारसमेणं खंधेणं कूणिएणं रन्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहिय०, जहा भगवया कालीए देवीए परिकहियं-जाव-जीवियाओ ववरोवेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरयभवाणंतरं कालस्स सिद्धिगमणनिरूवणं

६२ "तं एयं खलु गोयमा, ! काले कुमारे एरिसएहिं आरम्भेहिं-जाव-एरिसएणं असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने"।

"काले णं भन्ते ! कुमारे चउत्थीए पुढवीए...अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?"।
"गोयमा, महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवन्ति अड्ढाइं, जहा दढपइन्नो-जाव-सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ-जाव-अन्तं काहिइ"।

कालाणुसारेणं सुकालाईणं णवण्हं वत्तव्वयानिद्देसो

६३ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए । कूणिए राया । पउमावई देवी ।
तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कुणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था, सुकुमाला० ।
तीसे णं सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे होत्था सुकुमाले० ।
तए णं से सुकाले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं वंतिसहस्सेहिं० जहा कालो कुमारो, निरवसेसं तं चेव भाणियव्वं-जाव-महाविदेहे वासे.....अंतं काहिइ ।

६४ एवं सेसा वि अट्ठ अज्झयणा नेयव्वा पढमसरिसा, णवरं मायाओ सरिसनामाओ ।

निर० अ० २-१० ।

---

४. महासिलाकंटयसंगामकहाणयं

भगवया परूविओ कूणियस्स जओ

६५ नायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया---महासिलाकंटए संगामे । महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था ? गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते जइत्था, नव मल्लई, नव लेच्छई---कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो पराजइत्था ।

सक्कसहियस्स कूणियस्स संगामे आगमणं

६६ तए णं से कोणिए राया महासिलाकंटगं संगामं उवट्ठियं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी---खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया-जाव-मत्थए अंजलिं 'कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणिता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहिं सुनिउणेहिं उज्जलणेवत्थ-हव्व-परिवच्छियं सुसज्जं-जाव-भीमं संगामियं अओज्झं उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलि-कम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेवेज्ज-विमलवर-बद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीजियंगे मंगलजयसद्दकयालोए-जाव-जेणेव उदाई हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदाइं हत्थिरायं दुरूढे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६७ तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे-जाव-सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासिलाकंटगं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ताणं चिट्ठइ। एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य। एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए, एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए।

मल्लई-लेच्छईणं पराजयो

६८ तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटगं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइए-विवडियचिंध-द्धयपडागे किच्छपाणगए दिसोदिसिं पडिसेहित्था।

महासिलाकंटयसंगामस्स सद्दत्थो, संगामनिहयमणुस्साणं गई य

६९ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे, महासिलाकंटए संगामे? गोयमा! महासिलाकंटए णं संगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा कट्ठेण वा पत्तेण वा सक्कराए वा अभिहम्मति, सव्वे से जाणेइ महासिलाए अहं अभिहए। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे।

७० महासिलाकंटए णं भंते! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ? गोयमा! चउरासीइं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ। ते णं भंते! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया? कहिं उववण्णा?

गोयमा! उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववण्णा।

भगवई श० ७ उ० ९।

---

५. विजयतक्करणायं

रायगिहे धणसत्थवाहे भद्दा य भारिया

७१ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ।

तस्स णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेइए होत्था—वण्णओ।

तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगं जिण्णुज्जाणे यावि होत्था—विणट्ठदेवउल-परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-वच्छच्छाइए अणेग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था।

तस्स णं जिण्णुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे भग्गकूवे यावि होत्था।

तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हे किण्होभासे-जाव-रम्मे महामेहनिउरुंबभूए बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य तणेहि य कुसेहि य खाणुएहि य संछण्णे पलिच्छण्णे अंतो झुसिरे बाहिं गंभीरे अणेग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था।

७२ तत्थ णं रायगिहे नयरे धणे नामं सत्थवाहे—अड्ढे दित्ते वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए बहुधण-बहुजायरूवरयए आओग-पओग-संपउत्ते विच्छड्डिय-विउल-भत्तपाणे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था––सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमागार-कंत-पियदंसणा सुरूवा करयल-परिमिय-तिवलिय-वलियमज्झा कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइ-रयणियर-पडिपुण्ण-सोमवयणा-सिंगारागार-चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयार-कुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ।

तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पंथए नामं दासचेडे होत्था––सव्वंगसुंदरंगे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था ।

तए णं से धणे सत्थवाहे रायगिहे नयरे बहूणं नगर-निगम-सेट्ठि-सत्थवाहाणं अट्ठारसण्ह य सेणिप्पसेणीणं बहूसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य-जाव-चक्खुभूए यावि होत्था। नियगस्स वि य णं कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य-जाव-चक्खुभूए यावि होत्था ।

राहगिहे विजयतक्करे

७३ तत्थ णं रायगिहे नयरे विजए नामं तक्करे होत्था––पावचंडाल-रूवे भीमतररुद्दकम्मे आरुसिय-दित्त-रत्तनयण खरफरुस-महल्ल-विगय-बीभच्छदाढिए असंपुडियउट्ठे उद्धुय-पइण्ण-लंबंतमुद्धए भमर-राहुवण्णं निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निसंसइए निरणुकंपे, अहीव एगंतदिट्ठीए, खुरेव एगंतधाराए, गिद्धेव आमिसतल्लिच्छे, अग्गिमिव सव्वभक्खी, जलमिव सव्वग्गाही, उक्कंचणवंचण-मायानियडि-कूड-कवड-साइ-संपओग-बहुले चिरनगरविणट्ठ-दुट्ठसीलायारचरित्ते जूयप्पसंगी मज्जप्पसंगी भोज्जप्पसंगी मंसप्पसंगी दारुणे हिययदारए साहसिए संधिच्छेयए उवहिए विस्संभघाई आलीवग-नित्थभेय-लहुहत्थसंपउत्ते, परस्स दव्वहरणम्मि निच्चं अणुबद्धे, तिव्ववेरे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइगमणाणि य निग्गमणाणि य वाराणि य अवबाराणि य छिड्डीओ य खंडीओ य नगरनिद्धमणाणि य संवट्टणाणि य निव्वट्टणाणि य जूयखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागाराणि य तक्करट्ठाणाणि य तक्करघराणि य सिंघाडगाणि य तिगाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गमाणे गवेसमाणे, बहुजणस्स, छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जण्णेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहियस्स य दुहियस्स य विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्गं च छिद्दं च विरहं च अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरइ। बहिया वि य णं रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य उज्जाणेसु य वावि-पोक्खरिणि-दीहिय-गुंजालिय-सर-सरपंतिय-सरसरपंतियासु य जिण्णुज्जाणेसु य भग्गकूवेसु य मालुयाकच्छएसु य सुसाणेसु य गिरिकंदरेसु य लेणेसु य उवट्ठाणेसु य बहुजणस्स छिद्देसु य-जाव-अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरइ ।

भद्दाए संताणसंपत्तिमणोरहो

७४ तए णं तीसे भद्दाए भारियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था––

"अहं धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूणि वासाणि सद्द-फरिस-रस-गंध-रूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि। तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं, जासिं मण्णे नियगकुच्छिसंभूयाइं थणदुद्ध-लुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपयंपियाइं थणमूला कक्खदेसभागं अभिसरमाणाइं मुद्धयाइं थणयं पियंति, तओ य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंग-निवेसियाणि देंति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए। तं णं अहं अधण्णा अपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता। तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते धणं सत्थवाहं आपुच्छित्ता धणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी सुबहुं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नयरस्स बहिया नागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इंदाणि य खंदाणि य रुद्दाणि य सिवाणि य वेसमणाणि य, तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य-जाव-वेसमणपडिमाण य महरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता जन्नुपायपडियाए एवं वइत्तए––जइ ण हं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु उवाइयं उवाइत्तए। एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणामेव धणे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी––

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं-जाव-देंति समुल्लावए सुमहुरे पिए पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए। तं णं अहं अहण्णा अपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी विपुलं असणं -जाव-अणुवड्ढेमि उवाइयं करित्तए।

तए णं धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी--ममं पि य णं देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे--"कहं णं तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि ?"--भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठं अणुजाणइ।

भद्दाकया नागाईणं पूया

७५ तए णं सा भद्दा सत्थवाही धणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाण-हियया विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंधमल्लालंकारं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकीडं करेइ, करेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणामेव नागघरए य-जाव-वेसमणघरए य तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं नागपडिमाण य-जाव-वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ, ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता नागपडिमाओ य-जाव-वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता उदगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता पम्हल-सूमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ, लूहेत्ता महरिहं वत्थारुहणं च मल्लारुहणं च गंधारुहणं च वण्णारुहणं च करेइ, करेत्ता धूवं डहइ, डहित्ता जन्नुपायपडिया पंजलिउडा एवं वयासी--"जइ णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि तो णं अहं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमि" त्ति कट्टु उवाइयं करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी एवं च णं विहरइ। जिमिय भुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परम-सुइभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया।

अदुत्तरं च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता बहवे नागा य-जाव-वेसमणा य उवायमाणी नमंसमाणी-जाव-एवं च णं विहरइ।

भद्दाए दोहलपूरणं

७६ तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ केणइ कालंतरेणं आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था।

तए णं तीसे भद्दाए सत्थवाहीए दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए--

धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ -जाव-कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, जाओ णं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुबहुयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलियाहिं सद्धिं संपरिवुडाओ रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहित्ता ण्हायाओ कयबलिकम्माओ सव्वालंकार-विभूसियाओ विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणीओ विसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति।"

एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए--"धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-दोहलं विणेंति। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुबहुयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय-जाव-दोहलं विणित्तए।"

"अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेहि।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७ तए णं सा भद्दा धणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता-जाव-धूवं करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ।

तए णं ताओ मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-नगरमहिलाओ भद्दं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही ताहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-नगरमहिलियाहिं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी दोहलं विणेइ, विणेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही संपुण्णदोहल्ला-जाव-तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

पुत्तजम्मणं देवदिन्ने त्ति नामकरणं य

७८ तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं-जाव-दारगं पयाया।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जायकम्मं करेंति, तहेव-जाव-विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, तहेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए बहूणं नागपडिमाण य-जाव-वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे, तं होउ णं अम्हं इमे दारए देवदिन्ने नामेणं।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति देवदिन्ने त्ति।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेंति।

देवदिन्नस्स कीडा

७९ तए णं से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दारगं कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे अभिरमइ।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ देवदिन्नं दारयं ण्हायं कयबलिकम्मं कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता पंथयस्स दासचेडगस्स हत्थयंसि दलयइ।

तए णं से पंथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्नं दारगं कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, बहूहिं डिंभएहि य-जाव-कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेइ, ठावेत्ता बहूहिं डिंभएहि य-जाव-कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि विहरइ।

देवदिन्नस्स अपहारो विजयतक्करेण

८० इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि [अइगमणाणि य निग्गमणाणि य?] वाराणि य अववाराणि य तहेव -जाव-सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं सव्वालंकारविभूसियं पासइ, पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे पंथयं दासचेडयं पमत्तं पासइ, पासित्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता देवदिन्नं दारगं गेण्हइ, गेण्हित्ता कक्खंसि अल्लियावेइ, अल्लियावेत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहेत्ता सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं रायगिहस्स नगरस्स अवदारेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेइ, ववरोवेत्ता आभरणालंकारं गेण्हइ, गेण्हित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं भग्गकूवए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छयं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवसं खवेमाणे चिट्ठइ।

देवदिन्नस्स गवेसणा

८१ तए णं से पंथए दासचेडए तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ। देवदिन्नस्स दारगस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी—"एवं खलु सामी ! भद्दा सत्थवाही देवदिन्नं दारयं ण्हायं-जाव-सव्वालंकारविभूसियं मम हत्थंसि दलयइ। तए णं अहं देवदिन्नं दारयं कडीए गिण्हामि, गिण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमामि, बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेमि, ठावेत्ता बहूहिं डिंभएहि य-जाव-कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि विहरामि।

तए णं अहं तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमि। तं न नज्जइ णं सामी ! देवदिन्ने दारए केणइ नीते वा अवहिते वा अक्खित्ते वा"—पायवडिए धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं निवेदेइ।

तए णं से धणे सत्थवाहे पंथयस्स दासचेडगस्स एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूए समाणे परसु-णियत्ते व चंपगपायवे धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सण्णिवइए।

८२ तए णं से धणे सत्थवाहे तओ मुहुत्तंतरस्स आसत्थे पच्चागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महत्थं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव, उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नामं दारए इट्ठे-जाव-उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तए णं सा भद्दा देवदिन्नं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पंथगस्स हत्थे दलाइ-जाव-पायवडिए तं मम निवेदेइ। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं कयं।"

८३ तए णं ते नगरगोत्तिया धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टा गहियाउह-पहरणा धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं रायगिहस्स नगरस्स बहुसु अइगमणेसु य-जाव-पवासु य मग्गण-गवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो ! अकज्जमिति। कट्टु देवदिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेंति, धणस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयंति।

विजयतक्करस्स निग्गहो

८४ तए णं ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता विजयं तक्करं ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं जीवग्गाहं गेण्हंति, गेण्हित्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणुकोप्पर-पहार-संभग्ग-महिय-गत्तं करेंति, करेत्ता अवउडा बंधणं करेंति, करेत्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति, गेण्हित्ता विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति, बंधित्ता मालुयाकच्छगाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहं नयरं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु कसप्पहारे य छिवापहारे य लयापहारे य निवाएमाणा-निवाएमाणा छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पकिरमाणा-पकिरमाणा महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयंति—"एस णं देवाणुप्पिया ! विजए नामं तक्करे पावचंडालरूवे भीमतररुद्दकम्मे आरुसियदित्तरत्तनयण खरफरुस-महल्ल-विगय-बीभच्छदाढिए असंपुडियउट्ठे उद्धुय-पइण्ण-लंबंतमुद्धए भमर-राहुवण्णे निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निस्संसइए निरणुकंपे अहीव एगंतदिट्ठीए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिसतल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खी बालघायए बाल-मारए। तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केइ राया वा रायमच्चे वा अवरज्झइ, नन्नत्थ अप्पणो सयाइं कम्माइं अवरज्झंति" त्ति कट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हडिबंधणं करेंति, करेत्ता भत्तपाणनिरोहं करेंति, करेत्ता तिसंझं कसप्पहारे य छिवापहारे य लयापहारे य निवाएमाणा विहरंति।

देवदिन्नस्स नीहरणं

८५ तए णं से धणे सत्थवाहे मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स महया इड्ढीसक्कार-समुदएणं नीहरणं करेति, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयगकिच्चाइं करेति, करेत्ता केणइ कालंतरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणस्स निग्गहो

८६ तए णं से धणे सत्थवाहे अण्णया कयाइं लहुसयंसि रायावराहंसि संपलित्ते जाए यावि होत्था।

तए णं ते नगरगुत्तिया धणं सत्थवाहं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चारए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चारगं अणुप्पवेसंति, अणुप्पवेसित्ता विजएणं तक्करेणं सद्धिं एगयओ हडिबंधणं करेंति।

धणस्स घराओ आहाराणयणं

८७ तए णं सा भद्दा भारिया कल्लं पाउप्पभाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेइ, भोयणपिडयं करेइ, करेत्ता, भोयणाइं पक्खिवइ, लंछिय-मुद्दियं करेइ, करेत्ता एगं च सुरभि[वर]-वारिपडिपुण्णं दगवारयं करेइ, करेत्ता पंथयं दासचेडयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि।"

तए णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे तं भोयणपिडयं तं च सुरभिवरवारिपडिपुण्णं दगवारयं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता राहगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडयं ठवेइ, ठवेत्ता उल्लंछेइ, उल्लंछेत्ता भोयणं गेण्हइ, गेण्हित्ता भायणाइं ठावेइ, ठावित्ता हत्थसोयं दलयइ, दलइत्ता धणं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं परिवेसेइ।

विजयतक्करेण संविभागमग्गणं

८८ तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी--"तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं एयाओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेहि।"

धणस्स तन्निसेधो

८९ तए णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी--"अवि याइं अहं विजया! एयं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं कायाण वा सुणगाण वा दलएज्जा, उक्कुरुडियाए वा णं छड्डेज्जा, नो चेव णं तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेज्जामि।"

तए णं से धणे सत्थवाहे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ, तं पंथयं पडिविसज्जेइ।

तए णं से पंथए दासचेडए तं भोयणपिडगं गिण्हइ, गिण्हित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

आबाधितस्स धणस्स विजयतक्करावेक्खा

९० तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारियस्स समाणस्स उच्चार-पासवणे णं उव्वाहित्था। तए णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी--"एहि ताव विजया! एगंतमवक्कमामो जेणं अहं उच्चार-पासवणं परिट्ठवेमि"।

विजयतक्करेण तन्निसेधो

९१ तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी--"तुज्झं देवाणुप्पिया! विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा पासवणे वा, ममं णं देवाणुप्पिया! इमेहिं बहूहिं कसप्पहारेहि य छिवापहारेहि य लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परज्झमाणस्स नत्थि केइ उच्चारे वा पासवणे वा। तं छंदेणं तुमं देवाणुप्पिया! एगंते अवक्कमित्ता उच्चार-पासवणं परिट्ठवेहि।" तए णं से धणे सत्थवाहे विजएणं तक्करेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ।

धणेण पुणो कथिते विजएण संविभागमग्गणं

९२ तए णं से धणे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स बलियतरागं उच्चार-पासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे विजयं तक्करं एवं वयासी--"एहि ताव विजया! एगंतमवक्कमामो जेणं अहं उच्चार-पासवणं परिट्ठवेमि"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी—"जइ णं तुमं देवाणुप्पिया! ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेहि, तओ हं तुमेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि"।

तए णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी—"अहं णं तुब्भं ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करिस्सामि"।

तए णं से विजए तक्करे धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ।

तए णं से धणे सत्थवाहे विजएण तक्करेण सद्धिं एगंते अवक्कमइ, उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसंकमित्ताणं विहरइ।

धणेण विजयस्स संविभागदाणं

९३ तए णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेइ,-जाव-धणं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं परिवेसेइ।

तए णं से धणे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेइ।

पंथगेण भद्दाए तन्निवेदणं

९४ तए णं से धणे सत्थवाहे पंथगं दासचेडयं विसज्जेइ।

तए णं से पंथए भोयणपिडयं गहाय चारगाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव भद्दा सत्थवाही तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भद्दं [सत्थवाहिं?] एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! धणे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेइ।

भद्दाए कोवो

९५ तए णं सा भद्दा सत्थवाही पंथगस्स दासचेडगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणी धणस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जइ।

धणस्स चारमुत्ती

९६ तए णं से धणे सत्थवाहे अण्णया कयाइ मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सएण य अत्थसारेणं रायकज्जाओ अप्पाणं मोयावेइ, मोयावेत्ता चारगसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियकम्मं कारवेइ, कारवेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहधोयमट्ठियं गेण्हइ, गेण्हित्ता पोक्खरिणीं ओगाहइ, ओगाहित्ता जल-मज्जणं करेइ, करेत्ता पहाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए रायगिहं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

धणस्स सम्माणं

९७ तए णं तं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नयरे बहवे नगर-निगम-सेट्ठि-सत्थवाह-पभिइओ आढंति परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अब्भुट्ठेंति सरीरकुसलं पुच्छंति।

तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ।

जा वि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा—दासा इ वा पेस्सा इ वा भयगा इ वा भाइल्लगा इ वा, सा वि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पायवडिया खेमकुसलं पुच्छइ।

जा वि य से तत्थ अब्भंतरिया परिसा भवइ, तंजहा—माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भइणी इ वा, सा वि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, आसणाओ अब्भुट्ठेइ, कंठाकंठियं अवयासिय बाह-प्पमोक्खणं करेइ।

भद्दाए कोवोवसमपुव्वं सम्माणं

९८ तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मुही संचिट्ठइ।

९९ तए णं से धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी--"किण्णं तुज्झं देवाणुप्पिए! न तुट्ठी वा न हरिसो वा नाणंदो वा, जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जाओ अप्पा विमोइए"।

तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाहं एवं वयासी--"कहं णं देवाणुप्पिया! मम तुट्ठी वा हरिसो वा आणंदो वा भविस्सइ? जणं तुमं मम पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेसि"।

तए णं से धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी--"नो खलु देवाणुप्पिए! धम्मो त्ति वा तवो त्ति वा कय-पडिकया इ वा लोगजत्ता इ वा नायए इ वा घाडियए इ वा सहाए इ वा सुहि त्ति वा [विजयस्स तक्करस्स?] ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागे कए, नण्णत्थ सरीरचिंताए।

तए णं सा भद्दा धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया-जाव-हरिसवस-विसप्पमाणहियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कंठाकंठिं अवयासेइ खेमकुसलं पुच्छइ, पुच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ।

विजय-णायस्स निगमणं

१०० तए णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहि य वहेहि य कसप्पहारेहि य छिवापहारेहि य लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परज्झमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे।

से णं तत्थ नेरइए जाए काले कालोभासे गंभीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए परमकण्हे वण्णेणं।

से णं तत्थ निच्चं भीए निच्चं तत्थे निच्चं तसिए निच्चं परमऽसुहसंबद्धं नरगगतिवेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ।
से णं ताओ उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ।

धणनायस्स निगमणं

१०१ एवामेव जंबू! जो णं अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे विपुलमणिमोत्तिय-धण-कणग-रयणसारेणं लुब्भइ, सो वि एवं चेव।

रायगिहे थेरागमणं

१०२ तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा-जाव-पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा, जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

परिसा निग्गया धम्मो कहिओ।

धणस्स पव्वज्जा

१०३ तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--"एवं खलु थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा इहमागया इहसंपत्ता। तं गच्छामि? णं थेरे भगवंते वंदामि नमंसामि" [एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता?] ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए पायविहार-चारेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ।

तए णं थेरा भगवंतो धणस्स विचित्तं धम्ममाइक्खंति। तए णं से धणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा एवं वयासी--

"सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च्छियमेयं भंते! से जहेयं तुब्भे वयह" त्ति कट्टु थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता-जाव-पव्वइए-जाव-बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खाइत्ता, मासियाए संलेहणाए [अप्पाणं झोसेत्ता?], सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता काल-मासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तस्स णं धणस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई।

धणस्स महाविदेहे सिद्धी

१०४ से णं धणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-सव्व-दुक्खाणमंतं करेहिइ।

धणणायस्स पुणोनिगमणं

१०५ जहा णं जंबू! धणेणं सत्थवाहेणं नो धम्मो त्ति वा तवो त्ति वा कयपडिकया इ वा लोगजत्ता इ वा नायए इ वा घाडियए इ वा सहाए इ वा सुहि त्ति वा विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागे कए, नण्णत्थ सरीर-सारक्खणट्ठाए। एवामेव जंबू! जे णं अम्हं निग्गंथे वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे ववगय-ण्हाणुमद्दण-पुप्फ-गंध-मल्लालंकार-विभूसे इमस्स ओरालिय-सरीरस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारमाहारेइ, नण्णत्थ नाणदंसणचरित्ताणं वहणट्ठयाए, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे भवइ।

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से धणे सत्थवाहे।[1]

णायाधम्मकहाओ सु० १, अ० २।

---

६. मयूरीअंडणायं

चंपाए मयूरीए अंडसेवणं

१०६ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ।

तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे सुरम्मे नंदणवणे इव सुह-सुरभिसीयलच्छायाए समणुबद्धे।

तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ एगदेसम्मि मालुयाकच्छए होत्था—वण्णओ।

तत्थ णं एगा वणमयूरी दो पुट्ठे परियागए पिट्टंडी-पंडुरे निरुवहए भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए पसवइ, पसवित्ता सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संविट्ठेमाणी विहरइ।

---

१ वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

सिवसाहणेसु आहार-विरहियो जं न वट्टए देहो। तम्हा धणो व्व विजयं, साहू तं तेण पोसेज्जा ॥१॥

णायाधम्मकहाओ सु० १ अ० २।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंपाए जिणदत्तसागरदत्ता सत्थवाहदारगा

१०७ तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति, तं जहा––जिणदत्तपुत्ते य सागरदत्तपुत्ते य–सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अण्णमण्णमणुरत्तया अण्णमण्णमणुव्वयया अण्णमण्णच्छंदाणुवत्तया अण्णमण्णहिय-इच्छियकारया अण्णमण्णेसु गिहेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति ।

तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णिसण्णाणं सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था––'जण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तण्णं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा नित्थरियव्वं' ति कट्टु अण्णमण्णमेयारूवं संगारं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ।

चंपाए देवदत्ता गणिया

१०८ तत्थं णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ––अड्ढा दित्ता वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणा बहुधण जायरूव-रयया आओग-पओग-संपउत्ता विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणा चउसट्ठिकलापंडिया चउसट्ठि-गणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीस-रइगुणप्पहाणा बत्तीस-पुरिसोवयारकुसला नवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारा गारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलाससंलावुल्लाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्त-चामर-वालवीयणिया कण्णीरहप्पयाया वि होत्था ।

बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणी पालेमाणी महयाऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ।

सत्थवाहदारगाणं गणियाए सह उज्जाणकीडा

१०९ तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अण्णया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जिमियभुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं आयंताणं चोक्खाणं परमसुइभूयाणं सुहासणवरगयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था––'सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए -जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं धूव-पुप्फ-गंध-वत्थ-मल्लालंकारं गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणाणं विहरित्तए' त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"गच्छह णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेह, उवक्खडेत्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं धूव-पुप्फ-गंध-वत्थ-मल्लालंकारं गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता नंदाए, पोक्खरिणीए अदूरसामंते थूणामंडवं आहणह–आसियसम्मज्जिओवलित्तं पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभि-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवर-गंधगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह, करेत्ता अम्हे पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह"-जाव-चिट्ठंति ।

११० तए णं ते सत्थवाहदारगा दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी––खिप्पामेव [भो देवाणुप्पिया ! ?] लहुकरण-जुत्त-जोइयं समखुर-वालिहाण-समलिहिय-तिक्खग्गसिंगएहिं रययामय-घंट-सुत्तरज्जु-पवरकंचण-खचिय-नत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पल-कयामेलएहिं पवर-गोण-जुवाणएहिं नाना-मणि-रयण-कंचण-घंटियाजालपरिक्खित्तं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव पवहणं उवणेह । ते वि तहेव उवणेंति ।

तए णं ते सत्थवाहदारगा ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा पवहणं दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुप्पविसंति ।

१११ तए णं सा देवदत्ता गणिया ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ते सत्थवाहदारए एवं वयासी––"संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमिहागमणप्पओयणं ?"

तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्तं गणियं एवं वयासी––"इच्छामो णं देवाणुप्पिए ! तुमे सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरित्तए ।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा-जाव-सिरी-समाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव उवागया।

११२ तए णं ते सत्थवाहदारगा देवत्ताए गणियाए सद्धिं जाणं दुरुहंति, दुरुहित्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदा पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता नंदं पोक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेंति, करेत्ता जलकिड्डं करेंति, करेत्ता ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं [नंदाओ पोक्खरिणीओ?] पच्चुत्तरंति, जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता [थूणामंडवं?] अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सव्वालंकारभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा देवदत्ताए सद्धिं विपुलाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

तए णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे उज्जाणे बहूसु आलिघरएसु य कयलिघरएसु य लताघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य कुसुमघरएसु य उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरंति।

सत्थवाहदारगेहिं मयूरीअंडगाणयणं

११३ तए णं ते सत्थवाहदारगा जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं सा वणमयूरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता भीया तत्था महया-महया सद्देणं केकारवं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी मालुयाकच्छाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता एगंसि रुक्खडालयंसि ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छगं च अणिमिसाए दिट्ठीए पेच्छमाणी चिट्ठइ।

तए णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"जहा णं देवाणुप्पिया! एसा वणमयूरी अम्हे एज्जमाणे पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महया-महया सद्देणं केकारवं-जाव-रुक्खडालयंसि ठिच्चा अम्हे मालुयाकच्छयं च [अणिमिसाए दिट्ठीए?] पेच्छमाणी चिट्ठइ, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं" ति कट्टु मालुयाकच्छयं अंतो अणुप्पविसंति। तत्थ णं दो पुट्ठे परियागए-जाव-मयूरी-अंडए पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे वणमयूरी-अंडए साणं जातिमंताणं कुक्कुडियाणं अंडएसु पक्खिवावित्तए। तए णं ताओ जातिमंताओ कुक्कुडियाओ एए अंडए सए य अंडए सएणं पंखवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति। तए णं अम्हं एत्थं दो कीलावणगा मयूरी-पोयगा भविस्संति" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सए सए दासचेडए सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! इमे अंडए गहाय सगाणं जातिमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह"-जाव-ते वि पक्खिवेंति।

११४ तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरूढा समाणा जेणेव चंपा नयरी जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्ताए गिहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता देवदत्ताए गणियाए विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता देवदत्ताए गिहाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था।

सागरदत्तपुत्तेण संदेहवसेण अंडयविणासो उवणओ य

११५ तत्थ णं जे से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए से णं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव से वणमयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंसि मयूरी-अंडयंसि संकिए कंखिए वितिगिंछसमावण्णे भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे किण्णं ममं एत्थ कीलावणए मयूरी-पोयए भविस्सइ उदाहु नो भविस्सइ? त्ति कट्टु तं मयूरी-अंडयं अभिक्खणं-अभिक्खणं उव्वत्तेइ परियत्तेइ आसारेइ संसारेइ चालेइ फंदेइ घट्टेइ खोभेइ अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि टिट्टियावेइ।

तए णं से मयूरी-अंडए अभिक्खणं-अभिक्खणं उव्वत्तिज्जमाणे परियत्तिज्जमाणे आसारिज्जमाणे संसारिज्जमाणे चालिज्जमाणे फंदिज्जमाणे घट्टिज्जमाणे खोभिज्जमाणे अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाए यावि होत्था।

११६ तए णं से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अण्णया कयाइ जेणेव से मयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं मयूरी-अंडयं पोच्चडमेव पासइ, 'अहो णं ममं एत्थ कीलावणए मयूरी-पोयए न जाए' त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए झियाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११७ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचमहव्वएसु छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे संकिए कंखिए वितिगिंछसमावण्णे भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य बहूणि मुंडणाणि य बहूणि तज्जणाणि य बहूणि तालणाणि य बहूणि अंदुबंधणाणि य बहूणि घोलणाणि य बहूणि माइमरणाणि य बहूणि पिइमरणाणि य बहूणि भाइमरणाणि य बहूणि भगिणीमरणाणि य बहूणि भज्जामरणाणि य बहूणि पुत्तमरणाणि य बहूणि धूयमरणाणि य बहूणि सुण्हामरणाणि य, बहूणं दारिद्दाणं बहूणं दोहग्गाणं बहूणं अप्पियसंवासाणं बहूणं पियविप्पओगाणं बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं आभागी भविस्सति, अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ।

सद्धाजुत्तस्स जिणदत्तपुत्तस्स मयूरसंपत्ती उवणओ य

११८ तए णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंसि मयूरी-अंडयंसि निस्संकिए [निक्कंखिए निव्वितिगिंछे?] सुव्वत्तए णं मम एत्थ कीलावणए मयूरी-पोयए भविस्सइ त्ति [कट्टु तं मयूरी-अंडयं अभिक्खणं-अभिक्खणं नो उव्वत्तेइ नो परियत्तेइ नो आसारेइ नो संसारेइ नो चालेइ नो फंदेइ नो घट्टेइ नो खोभेइ अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि नो टिट्टियावेइ।
तए णं से मयूरी-अंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे-जाव-अटिट्टियाविज्जमाणे कालेणं समएणं उब्भिन्ने मयूरी-पोयए एत्थ जाए।
तए णं से जिणदत्तपुत्ते तं मयूरी-पोययं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे मयूर-पोसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमं मयूर-पोयगं बहूहिं मयूर-पोसण-पाओग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेह, नट्टुल्लगं च सिक्खावेह"।
तए णं ते मयूर-पोसगा जिणदत्तपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, तं मयूर-पोयगं गेण्हंति, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, तं मयूर-पोयगं बहूहिं मयूर-पोसण-पाओग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेंति, नट्टुल्लगं च सिक्खावेंति।
तए णं से मयूर-पोयए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्णपक्ख-पेहुणकलावे विचित्तपिच्छसतचंदए नीलकंठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाइं नट्टुल्लगसयाइं केकाइय-सयाणि य करेमाणे विहरइ।
तए णं ते मयूर-पोसगा तं मयूर-पोयगं उम्मुक्कबालभावं-जाव-केकाइयसयाणि य करेमाणं पासित्ताणं तं मयूर-पोयगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जिणदत्तपुत्तस्स उवणेंति।

११९ तए णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मयूर-पोयगं उम्मुक्कबालभावं-जाव-केकाइयसयाणि य करेमाणं पासित्ता हट्ठतुट्ठे तेसिं विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ।
तए णं से मयूर-पोयगे जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए नंगोला-भंग-सिरोधरे सेयावंगे ओयारिय-पइण्णपक्खे उक्खित्तचंदकाइय-कलावे केक्काइयसयाणि मुंचमाणे नच्चइ।

१२० तए णं से जिणदत्तपुत्ते तेणं मयूर-पोयएणं चंपाए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य पणिएहिं जयं करेमाणे विहरइ।

१२१ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचमहव्वएसु छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिंछे, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं साविया य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे भवइ,
परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं—हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ।[1]

णायाधम्मकहाओ सु० १ अ० ३।

---

१. वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जिणवरभासियभावेसु, भावसच्चेसु भावओ मइमं। नो कुज्जा संदेहं, संदेहो ऽणत्थहेउ त्ति ॥१॥
निस्संदेहत्तं पुण, गुणहेउं जं तओ तयं कज्जं। एत्थं दो सेट्ठिसुया, अंडयगाही उदाहरणं ॥२॥
कत्थइ मइदुब्बल्लेण, तव्विहायरियविरहओ वा वि। नेयगहणत्तणेणं, नाणावरणोदयेणं च ॥३॥
हेऊदाहरणासंभवे य सइ सुट्ठु जं न बुज्झेज्जा। सव्वण्णुमयमवितहं, तहावि इइ चिंतए मइमं ॥४॥
अणुवकय-पराणुग्गह-परायणा जं जिणा जगप्पवरा। जिय-राग-दोस-मोहा, य नन्नहावाइणो तेण ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. कुम्मणायं

वाराणसीए मयंगतीरद्दहसमीवे मालुयाकच्छतीरे पावसियालगा

१२२ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी होत्था---वण्णओ ।

तीसे णं वाणारसीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गंगाए महानईए मयंग-तीरद्दहे नामं दहे होत्था---अणुपुव्वसुजायवप्प-गंभीर-सीयलजले अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छण्णे संछण्ण-पत्त-पुप्फ-पलासे बहुउप्पल-पउम-कुमुय-नलिण-सुभग-सोगंधिय-पुंडरीय-महापुंडरीय सयपत्त-सहस्सपत्त-केसरपुप्फोवचिए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुंसुमाराण य सयाणि य सहस्साणि य सयसहस्साणि य जूहाइं निब्भयाइं निरुव्विग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणाइं-अभिरममाणाइं विहरंति ।

१२३ तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए होत्था---वण्णओ ।

तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति---पावा चंडा रुद्दा तल्लिच्छा साहसिया लोहियपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिसं गवेसमाणा रत्तिवियालचारिणो दिया पच्छन्नं चावि चिट्ठंति ।

मयंगतीरे कुम्म

१२४ तए णं ताओ मयंगतीरद्दहाओ अण्णया कयाइं सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलियाए संझभाए पविरलमाणुसंसि निसंत-पडिनिसंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा सणियं-सणियं उत्तरंति, तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वओ समंता परिघोलमाणा-परिघोलमाणा विंति कप्पेमाणा विहरंति ।

पावसियालगाणं आहारगवेसणं

१२५ तयाणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छगाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलमाणा-परिघोलमाणा विंति कप्पेमाणा विहरंति । तए णं ते पावसियालगा ते कुम्मए पासंति, पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

सियालगं दट्ठूणं कुम्माणं कायसंहरणं

१२६ तए णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया हत्थे य पाए य गीवाओ य सएहिं-सएहिं काएहिं साहरंति, साहरित्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति ।

तए णं ते पावसियालगा जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते कुम्मए सव्वओ समंता उव्वत्तेंति परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति फंदेंति खोभेंति नहेहिं आलुंपंति दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए ।

तए णं ते पावसियालगा ते कुम्मए दोच्चं पि तच्चं पि सव्वओ समंता उव्वत्तेंति-जाव-करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा सणियं-सणियं पच्चोसक्कंति, एगंतमवक्कमंति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति ।

सियालगेहिं अगुत्त-कुम्मस्स मारणं

१२७ तए णं एगे कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता सणियं-सणियं एगं पायं निच्छुभइ ।

तए णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं सणियं-सणियं एगं पायं नीणियं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइणं वेगियं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति दंतेहिं अवखोडेंति, तओ पच्छा मंसं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च सोणियं च आहारेंति, आहारेत्ता तं कुम्मगं सव्वओ समंता उव्वत्तेंति-जाव-नो चेव णं संचाएंति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए।

तए णं ते पावसियालगा तं कुम्मयं दोच्चं पि पच्च पि सव्वओ समंता उव्वत्तेंति-जाव-छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निविण्णा समाणा सणियं-सणियं पच्चोसक्कंति, दोच्चं पि एगंतमवक्कमंति।

एवं चत्तारि वि पाया।

१२८ तए णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता सणियं-सणियं गीवं नीणेइ।

तए णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं [सणियं सणियं] गीवं नीणियं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइणं वेगियं जेणेव से कुम्मए तेणव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं गीवं नहेहिं [आलुंपंति], दंतेहिं कवालं विहाडेंति, विहाडेत्ता तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता मंसं च सोणियं च आहारेंति।

अगुत्तकुम्मं पडुच्च उवणओ

१२९ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे, पंच य से इंदिया अगुत्ता भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं साविया य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य णं आगच्छइ--बहूणि दंडणाणि य बहूणि मुंडणाणि य बहूणि तज्जणाणि य बहूणि तालणाणि य बहूणि अंदुबंधणाणि य बहूणि घोलणाणि य बहूणि माइमरणाणि य बहूणि पिइमरणाणि य बहूणि भाइमरणाणि य बहूणि भगिणीमरणाणि य बहूणि भज्जामरणाणि य बहूणि पुत्तमरणाणि य बहूणि धूयमरणाणि य बहूणि सुण्हामरणाणि य, बहूणं दारिद्दाणं बहूणं दोहग्गाणं बहूणं अप्पियसंवासाणं बहूणं पियविप्पओगाणं बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं आभागी भविस्सति, अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ--जहा व से कुम्मए अगुत्तिंदिए।

गुत्तकुम्मस्स सोक्खं

१३० तए णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चे कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं कुम्मगं सव्वओ समंता उव्वत्तेंति-जाव-छविच्छेयं वा करेत्तए।

तए णं ते पावसियालगा तं कुम्मगं दोच्चं पि तच्चं पि उव्वत्तेंति-जाव-नो चेव णं संचायंति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

तए णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता सणियं-सणियं गीवं नीणेइ, नीणेत्ता दिसावलोयं करेइ, करेत्ता जमगसमग चत्तारि वि पाए नीणेइ, नीणेत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए जइणाए छेयाए कुम्मगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं अभिसमण्णागए यावि होत्था।

गुत्तकुम्मं पडुच्च उवणओ

१३१ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं समणो वा समणी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंच य से इंदियाइं गुत्ताइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं साविया य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे भवइ,

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ–जहा व से कुम्मए गुत्तिंदिए।[1]

णायाधम्मकहाओ सु० १ अ० ४।

---

१. वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा–

विसएसु इंदियाइं, रुंभंता राग-दोस-निम्मुक्का। पावेंति निव्वुइसुहं, कुम्मोव्व मयंगदहसोक्खं ॥१॥
इहरे उ अणत्थ-परंपराओ पावेंति पावकम्मवसा। संसार-सागरगया, गोमाउग्गसियकुम्मोव्व ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. रोहिणीणायं

राहगिहे धणसत्थवाहो

१३२ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था। सुभूमिभागे उज्जाणे।

तत्थ णं रायगिहे नयरे धणे नामं सत्थवाहे परिवसइ---अड्ढे-जाव-अपरिभूए। भद्दा भारिया---अहीणपंचिंदियसरीरा-जाव-सुरूवा।

तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा---धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए।

तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा---उज्झिया भोगवइया रक्खिया रोहिणिया।

धणसत्थवाकया चउण्हं सुण्हाणं परिक्खा

१३३ तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था---"एवं खलु अहं रायगिहे नयरे बहूणं ईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभितीणं सयस्स य कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणे चक्खू, मेढीभूते पमाणभूते आहारभूते आलंबणभूते चक्खूभूए सव्वकज्जवड्ढावए, तं न नज्जइ णं मए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंबस्स के मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सइ?,

तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पंच-पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किह वा सारक्खेइ वा? संगोवेइ वा? संवड्ढेइ वा?

एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ, तओ पच्छा ण्हाए भोयण-मंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसादेमाणे जाव-सक्कारेइ, सकारेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठं सुण्हं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी---"तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि" त्ति कट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ।

उज्झियाए सालीणं उज्झणं

१३४ तए णं सा उज्झिया धणस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता धणस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ' गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था---"एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं मम ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएसइ, तया णं अहं पल्लंतराओ अण्णे पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेइ, सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोगवइयाए सालीणं भोगो

१३५ एवं भोगवइयाए वि, नवरं––सा छोल्लेइ, छोल्लेत्ता अणुगिलइ, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था।

रक्खियाए सालीरक्खणं

१३६ एवं रक्खियाए वि, नवरं––गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था––"एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी––'तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि' त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ। तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं" ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेइ, ठावेत्ता तिसंझं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ।

रोहिणीए सालीरोहणं वड्ढणं च

१३७ तए णं से धणे सत्थवाहे तहेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता, चउत्थं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि,-जाव-गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था ––"एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी–'तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि' त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ। तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं। तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एए पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह, करेत्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्चं पि तच्चं पि उक्खय-निहए करेह, करेत्ता वाडिपक्खेवं करेह, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा आणुपुव्वेणं संवड्ढेह।

१३८ तए णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणेंति, ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति, अणुपुव्वेणं सारक्खंति, संगोवेंति।

तए णं कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, ते पंच सालिअक्खए वर्वंति, दोच्चं पि तच्चं पि उक्खय-निहए करेंति, वाडिपरिक्खेवं करेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति।

१३९ तए णं ते साली अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया––किण्हा किण्होभासा नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिव्वा तिव्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया तिव्वा तिव्वच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेहनिउरंबभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

तए णं ते साली पत्तिया वत्तिया गब्भिया पसूइया आगयगंधा खीराइया बद्धफला पक्का परियागया सल्लइय-पत्तइया हरिय-फेरंडा जाया यावि होत्था।

तए णं ते कोडुंबिया ते साली पत्तिए वत्तिए गब्भिए पसूइए आगयगंधे खीराइए बद्धफले पक्के परियागए सल्लइय-पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं नवपज्जणएहिं असिएहिं लुणंति, लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करेत्ता पुणंति। तत्थ णं चोक्खाणं सूइयाणं अखंडाणं अफुडियाणं छडछडापूयाण सालीणं मागहए पत्थए जाए।

तए णं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता ओलिंपंति, ओलिंपित्ता लंछिय-मुद्दिए करेंत्ति, करेत्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठावेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति।

१४० तए णं ते कोडुंबिया दोच्चंसि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि [समाणंसि?] खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, ते साली ववंति, दोच्चं पि उक्खाय-णिहए करेंति-जाव-असिएहिं लुणंति लुणित्ता चलणतलमलिए करेंति करेत्ता पुणंति। तत्थ णं सालीणं बहवे कुडवा जाया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति, पक्खिवित्ता ओलिंपंति ओलिंपित्ता लंछिए-मुद्दिए करेंति, करेत्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठावेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति।

१४१ तए णं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि [समाणंसि ?] केयारे सुपरिकम्मिए करेंति-जाव-असिएहिं लुणंति, लुणित्ता संवहंति, संवहित्ता खलयं करेंति, मलेंति, पुणंति। तत्थ णं सालीणं बहवे कुंभा जाया।

तए णं ते कोडुंबिया ते साली कोट्ठागारंसि पल्लंसि पक्खिवंति, पक्खिवित्ता ओलिंपंति, ओलिंपित्ता लंछिय-मुद्दिए करेंति, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति।

चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया।

पंचसंवच्छराणंत्तरं धणेण सालीमग्गणं

१४२ तए णं तस्स धणस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु मए इओ अतीते पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच-पंच सालिअक्खया हत्थे दिन्ना। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए-जाव-जाणामि ताव काए किह सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया व" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं-जाव-सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु अहं पुत्ता! इओ अतीते पंचमम्मि संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि। जया णं अहं पुत्ता! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि। से नूणं पुत्ता! अट्ठे समट्ठ ?"

"हंता अत्थि"।

"तं णं तुमं पुत्ता! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि"॥

उज्झियाए बाहिरपेसणकज्जकरणाएसो

१४३ तए णं सा उज्झिया एयमट्ठं धणस्स सत्थवाहस्स पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी—"एए णं ताओ! पंच सालिअक्खए" त्ति कट्टु धणस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयइ।

तए णं धणे सत्थवाहे उज्झियं सवह-साविय करेइ, करेत्ता एवं वयासी—"किण्णं पुत्ता! ते चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?" तए णं उज्झिया धणं सत्थवाहं एवं वयासी—"एवं खलु तुब्भे ताओ! इओ अतीए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दाविह, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। तए णं अहं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणेमि, ते पंच सालिअक्खए गेण्हामि, एगंतमवक्कमामि।

तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु तातांणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति तं जया णं मम ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएसइ, तया णं अहं पल्लंतराओ अण्णे पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि त्ति कट्टु एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेमि, सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि। तं नो खलु ताओ! ते चेव पंच सालिअक्खए, एए णं अण्णे।"

१४४ तए णं से धणे सत्थवाहे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे उज्झियं तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च संपुच्छियं च सम्मज्जियं च पाओवदाइयं च ण्हाणोवदाइयं च बाहिर-पेसणकारियं च ठवेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्झियं पडुच्च उवणओ

१४५ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविआण य हीलणिज्जे-जाव-चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ--जहा सा उज्झिया।

भोगवइए अब्भिंतरपेसणकज्जकरणाएसो

१४६ एवं भोगवइया वि, नवरं--छोल्लेमि, छोल्लित्ता अणुगिलेमि, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि। तं नो खलु ताओ! ते चेव पंच सालिअक्खए, एए णं अण्णे।
तए णं से धणे सत्थवाहे भोगवइयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे भोगवइं तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स कंडितियं च कोट्टेंतियं च पीसंतियं च एवं--रुंधंतियं रंधंतियं परिवेसंतियं परिभायंतियं अब्भितरियं पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ।

भोगवइं पडुच्च उवणओ

१४७ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं फालियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविआण य हीलणिज्जे-जाव-चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ--जहा व सा भोगवइया।

रक्खियाए भंडागाररक्खणाएसो

१४८ एवं रक्खियावि, नवरं--जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडेत्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालि-अक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालिअक्खए धणस्स हत्थे दलयइ।
तए णं से धणे सत्थवाहे रक्खियं एवं वयासी--"किं णं पुत्ता! ते चेव एए पंच सालिअक्खए उदाहु अण्णे?"
तए णं रक्खिया धणं सत्थवाहं एवं वयासी--"ते चेव ताओ! एए पंच सालिअक्खए, नो अण्णे"।
"कहण्णं? पुत्ता!"
एवं खलु ताओ! तुब्भे इओ अतीते पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर-वग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता ममं एवं वयासी--'तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गिण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि' त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयह। तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं ति कट्टु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधेमि, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेमि, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेमि, ठावेत्ता तिसंझं पडिजागरमाणी यावि विहरामि। तओ एएणं कारणेणं ताओ! ते चेव पंच सालिअक्खए, नो अण्णे"।

१४९ तए णं से धणे सत्थवाहे रक्खियाए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे तस्स कुल-घरस्स हिरण्णस्स य कंस-दूस-विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जस्स य भंडागारिणी ठवेइ।

रक्खियं पडुच्च उवणओ

१५० एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं रक्खियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं साविआण य अच्चणिज्जे-जाव-चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ--जहा व सा रक्खिया।

रोहिणीए सव्वाहिगारकरणाएसो

१५१ रोहिणीया वि एवं चेव, नवरं--तुब्भे ताओ! मम सुबहुयं सगडि-सागडं दलाह, जा णं अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडि-निज्जाएमि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणिं एवं वयासी—"कहं णं तुमं पुत्ता ! ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइस्ससि ?" तए णं सा रोहिणी धणं सत्थवाहं एवं वयासी—"एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ अतीते पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'तुमं णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि' त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयह। तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं। तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए-जाव-बहवे कुंभसया जाया तेणेव कमेण। एवं खलु ताओ ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाएमि।

तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुयं सगडि-सागडं दलाति।

तए णं से रोहिणी सुबहुं सगडि-सागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उब्भिंदइ, उब्भिंदित्ता सगडि-सागडं भरेइ, भरेत्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ।

तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णं एवमाइक्खइ—धण्णे णं देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणीया सुण्हा पंच सालिअक्खए सागडि-सागडेणं निज्जाएइ।

१५२ तए णं से धणे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं पडिपुच्छणिज्जं मेढिं पमाणं आहारं आलंबणं चक्खुं, मेढीभूयं पमाणभूयं आहारभूयं आलंबणभूयं चक्खुभूयं सव्वकज्ज वड्ढावियं पमाणभूयं ठवेइ।

रोहिणिं पडुच्च उवणओ

१५३ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंच से महव्वया संवड्ढिया भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे-जाव-चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व सा रोहिणीया।[1] णायाधम्मकहाओ सु० १ अ० ७।

---

१ वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सेट्ठी तह गुरुणो, जह नाइ-जणो तहा समणसंघो। जह बहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइं ॥१॥

उज्झिया—

जह सा उज्झियनामा, उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा। पेसणगारित्तेणं, असंखदुक्खक्खणी जाया ॥२॥
तह भव्वो जो कोई, संघसमक्खं [च] गुरु-विदिण्णाइं। पडिवज्जिउं समुज्झइ, महव्वयाइं महामोहा ॥३॥
सो इह चेव भवम्मि, जणाण धिक्कार-भायणं होइ। परलोए उ दुहत्तो, नाणा-जोणीसु संचरइ ॥४॥

भोगवती—

जह वा भोगवती, जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा। पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुहं चेव ॥५॥
तह जो महव्वयाइं, उवभुंजइ जीविय त्ति पालितो। आहाराइसु सत्तो, चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥६॥
सो एत्थ जहिच्छाए, पावइ आहारमाइ लिंगित्ता। विउसाण नाइपुज्जो, परलोयंसी दुही चेव ॥७॥

रक्खिया—

जह वा रक्खियवहुया, रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा। परिजणमण्णा जाया, भोगसुहाइं च संपत्ता ॥८॥
तह जो जीवो सम्मं, पडिवज्जित्ता महव्वए पंच। पालेइ निरइयारे, पमाय-लेसं पि वज्जेंतो ॥९॥
सो अप्पहिएक्करई, इहलोयम्मि वि विऊहिं पणयपओ। एगंतसुही जायइ, परम्मि मोक्खं पि पावेइ ॥१०॥

रोहिणी—

जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थमभिहाणा। वड्ढित्ता सालिकणे, पत्ता सव्वस्स सामित्तं ॥११॥
तह जो भव्वो पाविय, वयाइ पालेइ अप्पणा सम्मं। अण्णेसि वि भव्वाणं, देइ अणेगेसि हियहेउं ॥१२॥
सो इस संघपहाणो, जुगप्पहाणो त्ति लहइ संसद्दं। अप्पपरेसि कल्लाण-कारओ गोयमपहु व्व ॥१३॥
तित्थस्स वुड्ढिकारी, अक्खेवणओ कुतित्थियाईणं। विउस-नरसेविय-कमो, कमेण सिद्धिं पि पावेइ ॥१४॥

णायाधम्मकहाओ सु० १ अ० ७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. आसणायं

हत्थिसीसनगरे संजत्ता-नावावणिया

१५४ तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था--वण्णओ।

तत्थ णं कणगकेऊ नामं राया होत्था--वण्णओ।

तत्थ णं हत्थिसीसे नयरे बहवे संजत्ता-नावावाणियगा परिवसंति--अड्ढा-जाव-बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था।

संजत्ता-नावावणियाणं समुद्दमज्झे उवद्दवो

१५५ तए णं तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था--"सेयं खलु अम्हं गणिमं च धरिमं च मेज्जं च परिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहेत्तए" त्ति कट्टु जहा अरहन्नए--जाव-लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था।

तए णं तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूणि उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा--अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे कालियवाए य समुत्थिए।

तए णं सा नावा तेणं कालियवाएणं आहुणिज्जमाणी-आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी-संचालिज्जमाणी संखोहिज्जमाणी-संखोहिज्जमाणी तत्थेव परिभमइ।

नावानिज्जामयस्स मूढत्तं लद्धसन्नत्तं च

१५६ तए णं से निज्जामए नट्ठमईए नट्ठसुईए नट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था--न जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए झियायइ।

तए णं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावा-वाणियगा य जेणेव से निज्जामए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी--"किण्णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए झियायसि?"

तए णं से निज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य एवं वयासी--"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! नट्ठमईए नट्ठसुईए नट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था--न जाणामि कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिए त्ति कट्टु तओ ओहयमणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए झियामि।"

तए णं से कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य तस्स निज्जामयस्संतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ण्हाया कयबलिकम्मा कयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु बहूणं इंदाण य खंधाण य रुद्दाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइय-सयाणि उवायमाणा-उवायमाणा चिट्ठंति।

तए णं से निज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमईए लद्धसुईए लद्धसण्णे अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था।

१५७ तए ण से निज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्तानावावाणियगा य एवं वयासी--"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! लद्धमईए लद्धसुईए लद्धसण्णे अमूढदिसाभाए जाए। अम्हे णं देवाणुप्पिया! कालियदीवंतेणं संवूढा। एस णं कालियदीवे आलोक्कइ"।

संजत्तानावावणियाणं कालियदीवे आस-पेच्छणं

१५८ तए णं ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य तस्स निज्जामगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति। तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य, बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते?--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिरेणु-सोणिसुत्तग-सकविल-मज्जार-पायकुक्कुड-वोंडसमुग्गयसामवण्णा। गोहूमगोरंग-गोरपाडल-गोरा, पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ। तलपत्त-रिट्ठवण्णा य, सालिवण्णा य भासवण्णा य केइ। जंपिय-तिल-कीडगा य, सोलोय-रिट्ठगा य पुंड-पइया य कणगपिट्ठा य केइ। चक्कागपिट्ठवण्णा, सारसवण्णा य हंसवण्णा य केइ। केइत्थ अब्भवण्णा, पक्कतल-मेघवण्णा य बाहुवण्णा केइ। संझाणुरागसरिसा, सुयमुह-गुंजद्धराग-सरिसत्थ केइ। एलापाडल-गोरा, सामलया गवलसामला पुणो केइ। बहवे अण्णे अणिद्देसा, सामा कासीसरत्तपीया, अच्चंतविसुद्धा वि य णं आइण्णग-जाइ-कुल-विणीय-गयमच्छरा। हयवरा जहोवएस-कम्मवाहिणो वि य णं। सिक्खा विणीयविणया, लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई जईण-सिक्खिय-गई ॥१॥ किं ते? मणसा वि उव्विहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति।

१५९ तए णं ते आसा वाणियए पासंति, तेसिं गंधं आघायंति, आघाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति। ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति।

संजत्तियाणं वणियाणं पुणरागमणं

१६० तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा अण्णमण्णं एवं वयासी—"किण्णं अम्हं देवाणुप्पिया! आसेहिं? इमे णं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य। तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य कट्ठस्स य अन्नस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति, भरेत्ता पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तं हिरण्णं च सुवण्णं च रयणं च वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवहणाओ संचारेंति, संचारेत्ता सगडी-सागडं संजोएंति, जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेंति, करेत्ता सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता हत्थिसीसयं नयरं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव से कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं उवणेंति।

कणगकेउआएसेण आसाण आणयणं

१६१ तए णं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते संजत्ता-नावा-वाणियगे एवं वयासी—"तुब्भे णं देवाणुप्पिया! गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाइं आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खणं-अभिक्खणं पोयवहणेणं ओगाहेह। तं अत्थि याइं च केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे?" तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी—"एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव-जाव-कालियदीवंतेणं संवूढा। तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य, बहवे तत्थ आसे पासामो। किं ते? हरिरेणु-जाव-अम्हं गंधं आघायंति, आघाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति। तए णं सामी! अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे"।

१६२ तए णं से कणगकेऊ तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ते संजत्ता-नावावाणियए एवं वयासी—"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह"।

तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा 'एवं सामि!' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति।

तए णं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संजत्ता-नावावाणियएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह। ते वि पडिसुणेंति।

१६३ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य चित्तवीणाण य अण्णेसिं च बहूणं सोइंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहूणं किण्हाण य नीलाण य लोहियाण य हालिद्दाण य सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य चित्तकम्माण य पोत्थकम्माण य लेप्पकम्माण य गंथिमाण य वेढिमाण य पूरिमाण य संघाइमाण य अण्णेसिं च बहूणं चक्खिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहूणं कोट्ठपुडाण य पत्तपुडाण य चोयपुडाण य तगरपुडाण य एलापुडाण य हिरिवेरपुडाण य उसीरपुडाण य चंपगपुडाण य मरुयगपुडाण य दमग-पुडाण य जातिपुडाण य जुहियापुडाण य मल्लियापुडाण य वासंतियापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडलपुडाण य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णेसिं च बहूणं घाणिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तराए अण्णेसिं च जिब्भिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहूणं कोयवाण य कंबलाण य पावाराण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण य-जाव-हंसगब्भाण य अण्णेसिं च फासिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति, भरेत्ता सगडी-सागडं जोयंति, जोइत्ता जणेव गभोरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द-फरिस-रस-रूव गंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य-जाव-अण्णेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति, भरेत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता ताइं उक्किट्ठाइं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं, एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरेंति।

जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं-तहिं च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य-जाव-चित्तवीणाओ य अण्णाणि य बहूणि सोइंदिय-पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा-समुदीरेमाणा ठवेंति, तेसिं च परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा बहूणि किण्हाणि य नीलाणि य लोहियाणि य हालिद्दाणि य सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य-जाव-संघाइमाणि य अण्णाणि य बहूणि चक्खिंदिय-पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाण य -जाव-पाडलपुडाण य अण्णेसिं च बहूणं घाणिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करेंति, करेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा गुलस्स-जाव-पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसिं च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करेंति, करेत्ता वियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स बोरपाणगस्स अण्णेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरए भरेंति, भरेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं-तहिं च णं ते कोडुंबियपुरिसा बहवे कोयवया -जाव-सिलावट्टया अण्णाणि य फासिंदिय-पाउग्गाइं अत्थय-पच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

तए णं ते आसा जेणेव ते उक्किट्ठा सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा तेणेव उवागच्छंति।

अमुच्छिय-आसाणं सायत्त-विहारो

१६४ तत्थ णं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध त्ति कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु अमुच्छिया अगढिया अगिद्धा अणज्झोववण्णा तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं दूरंदूरेणं अववक्कमंति। ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति।

अमुच्छियआसे पडुच्च उवणओ

१६५ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोववज्झइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे-जाव-चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ।

मुच्छिय-आसाणं परायत्त विहारो

१६६ तत्थ णं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठा सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा तेणेव उवागच्छंति। तेसु उक्किट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था।

तए णं ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे आसेवमाणा तेहिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु व बज्झंति।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा ते आसे गिण्हंति, गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं पोयवहणे संचारेंति, कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य-जाव-अण्णेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६७ तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता ते आसे उत्तारेंति, उत्तारेत्ता जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति ते आसे उवणेंति।

१६८ तए णं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं उस्सुकं वियरइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं से कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

१६९ तए णं से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम आसे विणएह"।

तए णं ते आसमद्दगा 'तह' त्ति पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ते आसे बहूहिं मुहबंधेहि य कण्णबंधेहि य नासाबंधेहि य वालबंधेहि य खुरबंधेहि य कडगबंधेहि य खलिणबंधेहि य ओवीलणाहि य पडयाणेहि य अंकणाहि य वेत्तप्पहारेहि य लयप्पहारेहि य कसप्प-हारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति, विणइत्ता कणगकेउस्स रण्णो उवणेंति।

तए णं से कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

१७० तए णं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहि य-जाव-छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीर-माणसाइं दुक्खाइं पावेंति।

मुच्छियआसे पडुच्च उवणओ

१७१ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे-जाव-चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ।

समग्गदिट्ठंतस्स उवणयगाहाओ

१७२ कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु। सद्देसु रज्जमाणा, रमंति सोइंदिय-वसट्टा ॥१॥

सोइंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। दीविग-रुयमसहंतो, वहबंधं तित्तिरो पत्तो ॥२॥

थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु। रूवेसु रज्जमाणा, रमंति चक्खिंदिय-वसट्टा ॥३॥

चक्खिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं जलणंमि जलंते, पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥४॥

अगरुवर-पवरधूवण-उउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु रज्जमाणा, रमंति, घाणिंदिय-वसट्टा ॥५॥

घाणिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं ओसहिगंधेणं, बिलाओ निद्धावई उरगो ॥६॥

तित्त-कडुयं कसायं, महुरं बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु। आसायंमि उ गिद्धा, रमंति जिब्भिंदिय-वसट्टा ॥७॥

जिब्भिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं गललग्गुक्खित्तो, फुरइ थलविरेल्लिओ मच्छो ॥८॥

उउ-भयमाणसुहेसु य, सविभव-हिययमण-निव्वुइकरेसु। फासेसु रज्जमाणा, रमंति फासिंदिय-वसट्टा ॥९॥

फासिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥१०॥

कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु। सद्देसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ॥११॥

थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु। रूवेसु जे न रत्ता, वसट्टमरणं न ते मरए ॥१२॥

अगरुवर-पवर-धूवण-उउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ॥१३॥

तित्त-कडुयं कसायं महुरं बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु। आसायंमि न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ॥१४॥

उउ-भयमाणसुहेसु य, सविभव-हिययमण-निव्वुइकरेसु। फासेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ॥१५॥

सद्देसु य भद्दय-पावएसु सोयविसयमुवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ॥१६॥

रूवेसु य भद्दय-पावएसु चक्खुविसयमुवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ॥१७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंधेसु य भद्दय-पावएसु घाणविसयमुवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ।।१८।।
रसेसु य भद्दय-पावएसु जिब्भविसयमुवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ।।१९।।
फासेसु य भद्दय-पावएसु कायविसयमुवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ।।२०।।

१७३ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं-जाव-संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।[1]

--त्ति बेमि ।।

णायाधम्मकहाओ सु० १ अ० १७।

---

१. वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा–

जह सो कालियदीवो, अणुवमसोक्खो तहेव जइ-धम्मो। जह आसा तह साहू, वणिय व्वऽणुकूलकारिजणा ।।१।।
जह सद्दाइ-अगिद्धा, पत्ता नो पासबंधणं आसा। तह विसएसु अगिद्धा, बज्झंति न कम्मणा साहू ।।२।।
जह सच्छंदविहारो, आसाणं तह इहं वरमुणीणं। जर-मरणाइ-विवज्जिय सायत्ताणंदनिव्वाणं ।।३।।
जह सद्दाइसु गिद्धा, बद्धा आसा तहेव विसयरया। पावेंति कम्मबंधं, परमासुह-कारणं घोरं ।।४।।
जह ते कालियदीवा, णीया अण्णत्थ दुहगणं पत्ता। तह धम्म-परिब्भट्ठा, अधम्मपत्ता इहं जीवा ।।५।।
पावेंति कम्म-नरवइ-वसया संसारवाहियालीए। आसप्पमद्दएहिं व, नेरइयाईहिं दुक्खाइं ।।६।।

---

१०. मियापुत्तकहाणयं

मियग्गामे विजयराजपुत्ते मियापुत्ते

१७४ समणेणं भगवया महावीरेणं-जाव-संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा--

संगहणी-गाहा

१. मियउत्ते य २. उज्झियए, ३. अभग्ग ४. सगडे ५. बहस्सई ६. नंदी। ७. उंबर ८. सोरियदत्ते य, ९. देवदत्ता य १०. अंजू य ।।१।।

१७५ तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी--एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं मियग्गामे नामं नयरे होत्था--वण्णओ।

तस्स णं मियग्गामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए चंदणपायवे नामं उज्जाणे होत्था--सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे--वण्णओ।

तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था--चिराइए जहा पुण्णभद्दे।

तत्थ णं मियग्गामे नयरे विजए नामं खत्तिए राया परिवसइ--वण्णओ।

तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था--अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा--वण्णओ।

मियापुत्तस्स जातिअंधआइत्तं

१७६ तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए होत्था--जातिअंधे जातिमूए जातिबहिरे जातिपंगुले हुंडे य वायव्वे। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती आगितिमेत्ते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा मियादेवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तापाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ।

महावीरसमोसरणे गोयमस्स जाइअंधपुरिसविसए पुच्छा

१७७ तत्थ णं मियग्गामे नयरे एगे जाइअंधे पुरिसे परिवसइ । से णं एगेणं सचक्खुएणं पुरिसेणं पुरओ दंडएणं पकड्ढिज्जमाणे-पकड्ढिज्जमाणे फुट्ट-हडाहड-सीसे मच्छिया-चडगर-पहकरेणं अण्णिज्जमाणमग्गे मियग्गामे नयरे गेहे-गेहे कोलुण-वडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ।

१७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे मियग्गामे नयरे चंदणपायवे उज्जाणे समोसरिए । परिसा निग्गया ।

तए णं से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जहा कूणिए तहा निग्गए-जाव-पज्जुवासइ ।

१७९ तए णं से जाइअंधे पुरिसे तं महयाजणसद्दं च जणवूहं ए जणबोलं च जणकलकलं च सुणेत्ता तं पुरिसं एवं वयासी—"किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे इ वा खंदमहे इ वा उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जओ णं बहवे उग्गा भोगा एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति ?"

तए णं से पुरिसे तं जाइअंधं पुरिसं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे इ वा-जाव-गिरिजत्ता इ वा, जओ णं बहवे उग्गा भोगा एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति । एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव मियग्गामे नयरे चंदणपायवे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं एए-जाव-निग्गच्छंति ।

१८० तए णं से अंधे पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी—गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ।

तए णं से जाइअंधे पुरिसे तेणं पुरओ दंडएणं पुरिसेणं पकड्ढिज्जमाणे-पकड्ढिज्जमाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ-जाव-पज्जुवासइ ।

१८१ तए णं समणे भगवं महावीरे विजयस्स रण्णो तीसे य महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ । परिसा पडिगया विजए वि गए ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे-जाव-संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तए णं से भगवं गोयमे तं जाइअंधं पुरिसं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाय-संसए जायकोउहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोउहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—"अत्थि णं भंते ! केइ पुरिसे जाइअंधे जायअंधारूवे ?"

"हंता अत्थि" ।।

भगवया मियापुत्तसरूवनिरूवणं

१८२ "कहं णं भंते ! से पुरिसे जाइअंधे जायअंधारूवे ?"

"एवं खलु गोयमा ! इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए जाइअंधे जायअंधारूवे । नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती आगितिमेत्ते ।

तए णं सा मियादेवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ।

गोयमस्स मियापुत्तदंसणं

१८३ तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"इच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियापुत्तं दारगं पासित्तए ।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अहासुहं देवाणुप्पिया !"

१८४ तए णं से भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय मचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव मियग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव मियादेवीए गिहे तेणेव उवागच्छइ ।

१८५ तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण-हियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--"संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पगओयणं ?"

तए णं से भगवं गोयमे मियं देविं एवं वयासी--"अहं णं देवाणुप्पिए ! तव पुत्तं पासिउं हव्वमागए ।"

तए णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स अणुमग्गजायए चत्तारि पुत्ते सव्वालंकारविभूसिए करेइ, करेत्ता भगवओ गोयमस्स पाएसु पाडेइ, पाडेत्ता एवं वयासी--"एए णं भंते ! मम पुत्ते पासह" ।

१८६ तए णं से भगवं गोयमे मियं देविं एवं वयासी--"नो खलु देवाणुप्पिए ! अहं एए तव पुत्ते पासिउं हव्वमागए । तत्थ णं जे से तव जेट्ठे पुत्ते मियापुत्ते दारए जाइअंधे जायअंधारूवे, जं णं तुमं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरसि, तं णं अहं पासिउं हव्वमागए ।"

तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी--"से के णं गोयमा ! से तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं एसमट्ठे मम ताव रहस्सीकए तुब्भं हव्वमक्खाए, जओ णं तुब्भे जाणह ?"

१८७ तए णं भगवं गोयमे मियं देविं एवं वयासी--"एवं खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्मायरिए समणे भगवं महावीरे तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं एसमट्ठे तव ताव रहस्सीकए मम हव्वमक्खाते, जओ णं अहं जाणामि" । जावं च णं मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धिं एयमट्ठं संलवइ, तावं च णं मियापुत्तस्स दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था ।

१८८ तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी--"तुब्भे णं भंते ! 'एहं चेव' चिट्ठह, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि" त्ति कट्टु जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वत्थपरियट्टयं करेइ, करेत्ता कट्ठसगडियं गिण्हइ, गिण्हित्ता विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स भरेइ, भरेत्ता तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी-अणुकड्ढमाणी जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी--"एह णं भंते ! तुब्भे मए सद्धिं अणुगच्छइ, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि" । तए णं से भगवं गोयमे मियं देविं पिट्ठओ समणुगच्छइ ।

१८९ तए णं सा मियादेवी तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी-अणुकड्ढमाणी जेणेव भूमिघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चउप्पुडेणं वत्थेणं मुहं बंधमाणी भगवं गोयमं एवं वयासी--"तुब्भे वि णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बंधइ" ।

तए णं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधेइ ।

तए णं सा मियादेवी परंमुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ । तए णं गंधे निग्गच्छइ । जहानामए--अहिमडे इ वा गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे वा मणुस्समडे इ वा महिसमडेइ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवावण्ण-दुब्भिगंधे किमिजालाउलसंसत्ते । असुइ-विलीण-वगय-बीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ?

नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव गंधे पण्णत्ते ।

१९० तए णं से मियापुत्ते दारए तस्स विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स गंधेणं अभिभूए समाणे तंसि विउलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसएणं आहारेइ, आहारेत्ता खिप्पामेव विद्धंसेइ, विद्धंसेत्ता तओ पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य पारिणामेइ, तं पि य णं पूयं च सोणियं च आहारेइ ।

गोयमेण मियापुत्तस्स पुव्वभवपुच्छा

१९१ तए णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारगं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--"अहो णं इमे दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेदिति'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्ति कट्टु मियं देविं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--

"एवं खलु अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसामि, जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागए। तए णं सा मियादेवी ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठा, तं चेव सव्वं-जाव-पूयं च सोणियं च आहारेइ। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--अहो णं इमे दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि? किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ?"

मियापुत्तस्स एक्काइनामरट्ठकूडकहा

१९२ गोयमा! इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी--"एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं नयरे होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ।

तत्थ णं सयदुवारे नयरे धणवई नामं राया होत्था--वण्णओ।

तस्स णं सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए विजयवद्धमाणे नामं खेडे होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तस्स णं विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं आभोए यावि होत्था।

तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे एक्काई नामं रट्ठकूडे होत्था--अहम्मिए अधम्माणुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए दुप्पडियाणंदे।

से णं एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचण्हं गामसयाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ।

इक्काइनामस्स रट्ठकूडस्स पयापीडणं

१९३ तए णं से एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं बहूहिं करेहि य भरेहि य विद्धीहि य उक्कोडाहि य पराभवेहि य देज्जेहि य भेज्जेहि य कुंतेहि य लंछपोसेहि य आलीवणेहि य पंथकोट्टेहि य ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे विहम्मेमाणे-विहम्मेमाणे तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे निद्धणे करेमाणे-करेमाणे विहरइ।

तए णं से एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं, अण्णेसिं च बहूणं गामेल्लगपुरिसाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य गुज्झएसु य निच्छएसु य ववहारेसु य सुणमाणे भणइ 'न सुणेमि', असुणमाणे भणइ 'सुणेमि', पस्समाणे भणइ 'न पासेमि', अपस्समाणे भणइ 'पासेमि', भासमाणे भणइ 'न भासेमि।' अभासमाणे भणइ 'भासेमि', गिण्हमाणे, भणइ 'न गिण्हेमि', अगिण्हमाणे भणइ 'गिण्हेमि', जाणमाणे भणइ 'न जाणेमि', अजाणमाणे भणइ 'जाणेमि'।

तए णं से एक्काई रट्ठकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरइ।

इक्काइस्स असज्झरोगायंका

१९४ तए णं तस्स एक्काइस्स रट्ठकूडस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा--

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदले। अरिसा अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले अकारए। अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू उदरे कोढे ॥१॥

तए णं से एक्काई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विजयवद्धमाणे खेडे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह--इहं खलु देवाणुप्पिया! एक्काइस्स रट्ठकूडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा---सासे-जाव कोढे, तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा एक्काइस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रट्ठकूडस्स तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, तस्स णं एक्काई रट्ठकूडे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ। दोच्चं पि तच्चं पि उग्घोसेह, उग्घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

१९५ तए णं विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव एक्काई-रट्ठकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एक्काई-रट्ठकूडस्स सरीरगं परामुसंति, परामुसित्ता तेसिं रोगायंकाणं निदाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता एक्काई-रट्ठकूडस्स बहूहिं अब्भंगेहि य उव्वट्टणाहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणाहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणाहि य बत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरबत्थीहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए।

तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

इक्काइस्स निरयगमणं

१९६ तए णं एक्काई रट्ठकूडे वेज्ज-पडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्विण्णोसहभेसज्जे सोलसरोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य, पुरे य अंतउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे रज्जं च रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च आसाएमाणे पत्थेमाणे पीहेमाणे अभिलसमाणे अट्टदुहट्टवसट्टे अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे।

मियापुत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णणे मियाएदेवीए वेयणा गब्भसाडणवियारणा य

१९७ से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे।

तए णं तीसे मियाए देवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला कक्कसा पगाढा चंडा दुक्खा तिव्वा दुरहियासा, जप्पभिइं च णं मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववण्णे, तप्पभिइं च णं मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था।

१९८ तए णं तीसे मियाए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियाए जागरमाणीए इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा धेज्जा वेसासिया अणुमया आसि। जप्पभिइं च णं मम इमे गब्भे कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववण्णे तप्पभिइं च णं अहं विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था। नेच्छइ णं विजए खत्तिए मम नामं वा गोयं वा गिण्हित्तए, किमंग पुण दंसणं वा परिभोगं वा? तं सेयं खलु मम एयं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणाहि य पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा"—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता बहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गब्भसाडणाणि य पाडणाणि य गालणाणि य मारणाणि य खायमाणी य पियमाणी य इच्छइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा मरइ वा।

तए णं सा मियादेवी जाहे नो संचाएइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा ताहे संता तंता परितंता अकामिया असयंवसा तं गब्भं दुहंदुहेणं परिवहइ।

गब्भगयस्स मियापुत्तस्स रोगायंका

१९९ तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अट्ठ नालीओ अब्भिंतरप्पवहाओ, अट्ठ नालीओ बाहिरप्पवहाओ, अट्ठ पूयप्पवहाओ, अट्ठ सोणियप्पवहाओ, दुवे दुवे कण्णंतरेसु, दुवे दुवे अच्छिअंतरेसु, दुवे दुवे नक्कंतरेसु, दुवे दुवे धमणिअंतरेसु अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयं च सोणियं च परिसवमाणीओ-परिसवमाणीओ चेव चिट्ठंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अग्गिए नामं वाही पाउब्भए। जे णं से दारए आहारेइ, से णं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ, पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणमइ, तं पि य से पूयं च सोणियं च आहारेइ।

मियापुत्तस्स जातिअंधाइरूवं पासित्ता मियावईए उक्कुरुडियाए उज्झण-संकप्पो

२०० तए णं सा मियादेवी अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया––जातिअंधे जातिमूए जातिबहिरे जातिपंगुले हुंडे य वायव्वे। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती आगितिमेत्ते।

तए णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधारूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––गच्छह णं देवाणुप्पिया! तुमं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि।

२०१ तए णं सा अम्मधाई मियादेवीए 'तह'त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी––"एवं खलु सामी! मियादेवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया––जातिअंधे जातिमूए जातिबहिरे जातिपंगुले हुंडे य वायव्वे। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती आगितिमेत्ते।

तए णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधारूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विगा संजायभया ममं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि। तं संदिसह णं सामी! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि, उदाहु मा?"

मियापुत्तस्स भूमिघरे ठावणं

२०२ तए णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा तहेव संभंते उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियं देविं एवं वयासी––"देवाणुप्पिए! तुब्भं पढमे गब्भे। तं जइ णं तुमं एयं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झसि, तो णं तुब्भं पया नो थिरा भविस्सइ, तो णं तुमं एयं दारगं रहस्सिगंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहराहि, तो णं तुब्भं पया थिरा भविस्सइ।

तए णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स 'तह'त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ।

२०३ एवं खलु गोयमा! मियापुत्ते दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

मियापुत्तस्स आगामिभव-वण्णणं

२०४ "मियापुत्ते णं भंते! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?"

"गोयमा! मियापुत्ते दारए छव्वीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ सीहे भविस्सइ––अहम्मिए बहुनगरनिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणइ, समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिइ। तत्थ णं कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिइ। तत्थ वि कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवम ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ सीहेसु तुयाणंतरं चोत्थीए, उरगो, पंचमीए, इत्थीओ, छट्ठीए, मणुओ, अहेसत्तमाए।

तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छ-कच्छभ-गाह-मगर-सुंसुमाराईणं अड्ढतेरस जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्साइं, तत्थ णं एगमेगंसि जोणिविहाणंसि अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता चउपएसु उरपरिसप्पेसु भुयपरिसप्पेसु खहयरेसु चउरिंदिएसु तेइंदिएसु बेइंदिएसु वणप्फइ-कडुयरुक्खेसु कडुयदुद्धिएसु वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे नयरे गोणत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ उम्मुकबालभावे अण्णया कयाइ पढमपाउसंसि गंगाए महानईए खलीणमट्टियं खणमाणे तडीए पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्ठपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ।

से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ––इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी।

से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उव्ववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति––अड्ढाइं अपरिभूयाइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिंति। जहा दढपइण्णे-जाव-सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

विवाग० अ० १।

---

११. उज्झिययकहाणयं

वाणियगामे सत्थवाहपुत्तो उज्झियओ

२०५ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था––रिद्धत्थिमियसमिद्धे।

तस्स णं वाणियगामस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए दूइपलासे नामं उज्जाणे होत्था।

तत्थ णं दूइपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था।

तत्थ णं वाणियगामे नयरे मित्ते नामं राया होत्था––वण्णओ।

तस्स णं मित्तस्स रण्णो सिरी नामं देवी होत्था––वण्णओ।

२०६ तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया नामं गणिया होत्था––अहीण-पडिपुण्णपंचिंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकार-कंत-पिय-दंसणा सुरूवा बावत्तरिकलापंडिया चउसट्ठिगणियागुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी एक्कवीसरइगुणप्पहाणा बत्तीसपुरिसोवयारकुसला नवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा गीयरइगंधव्वणट्टकुसला संगय-गय-भणिय-हसिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-विलासकलिया ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्त-चामर-वालवीयणीया कण्णीरहप्पयाया यावि होत्था। बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगतं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणी पालेमाणी विहरइ।

२०७ तत्थ णं वाणियगामे विजयमित्ते नामं सत्थवाहे परिवसइ––अड्ढे०।

तस्स णं विजयमित्तस्स सुभद्दा नामं भारिया होत्था।

तस्स णं विजयमित्तस्स पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए उज्झियए नामं दारए होत्था––अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माणप्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ महावीरस्स समोसरणं

२०८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा निग्गया। राया निग्गओ, जहा कूणिओ निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया राया य गओ।

गोयमेण उज्झिययस्स पुव्वभवपुच्छा

२०९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमगोत्तेणं-जाव-संखित्तविउलतेयलेसे छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए"।

"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं"।।

२१० तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाढे।

तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए उप्पीलियकच्छे उद्दामियघंटे नाणामणिरयण-विविह-गेवेज्जउत्तरकुंचुइज्ज पडिकप्पिए झयपडागवर-पंचामेल-आरूढहत्थारोहे गहियाउहप्पहरणे।

अण्णे य तत्थ बहवे आसे पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए आविद्धगुडे ओसारियपक्खरे उत्तरकंचुइय-ओचूलामुहचंडाधर-चामर-थासग-परिमंडिय-कडीए आरूढअस्सारोहे गहियाउहप्पहरणे।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ-सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणद्धगेवेज्जे विमलवरबद्ध-चिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे। तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवओडयबंधणं उक्खित्तकण्णनासं नेहतुप्पियगत्तं वज्झ-करकडि-जुयनियच्छं कंठे-गुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडियगातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणं कागणिमंसाइं खावियंतं पावं खक्खरगसएहिं हम्ममाणं अणेगनर-नारी-संपरिवुडं चच्चरे-चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया! उज्झियगस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति।

२११ तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ" त्ति कट्टु वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ, गिण्हित्ता वाणियगामे नयरे मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपयलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव दूइपलासए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—"एवं खलु अहं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे वाणियगामे नयरे-जाव-तहेव सव्वं निवेएइ।

से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि? किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ?"

उज्झिययस्स गोत्तासभवकहाणगं

२१२ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुनंदे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे गोमंडवे होत्था--अणेगखंभसयसंनिविट्ठे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

तत्थ णं बहवे नगरगोरूवा सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरबलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य पउरतण-पाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसंति।

हत्थिणाउरे भीमे कूडग्गाहे

२१३ तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे भीमे नामं कूडग्गाहे होत्था--अहम्मिए-जाव-दुप्पडियाणंदे।

२१४ तस्स णं भीमस्स कूडग्गाहस्स उप्पला नामं भारिया होत्था--अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा।

तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णदा कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था।

भीमस्स भारियाए उप्पलाए मंसभक्खणदोहलो

२१५ तए णं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए--"धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति। तं जइ णं अहमवि बहूणं नगरगोरूवाणं-जाव-च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी दोहलं विणिज्जामि" त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुल्लइयमुही ओमंथिय-नयणवदणकमला जहोइयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकाराहारं अपरिभुंजमाणी करयलमलिय व्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा करतलपल्लहत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ।

२१६ इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी जेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता [उप्पलं कूडग्गाहिणिं ?] ओहयमणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी--"किं णं तुमं देवाणुप्पिए! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियासि ?"

तए णं सा उप्पला भारिया भीमं कूडग्गाहं एवं वयासी--"एवं खलु देवाणुप्पिया! ममं तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहले पाउब्भूए--धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति।

तए णं अहं देवाणुप्पिया! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुल्लइयमुही ओमंथिय-नयणवदणकमला जहोइयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकाराहारं अपरिभुंजमाणी करयलमलिय व्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियामि।"

भीमेण दोहलपूरणं

२१७ तए णं से भीमे कूडग्गाहे उप्पलं भारियं एवं वयासी--"मा णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाहि। अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ"। तायहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ।

तए णं से भीमे कूडग्गाहे अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणद्धगेवेज्जे विमलवरबद्ध-चिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता हत्थिणाउरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागए बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य--अप्पेगइयाणं ऊहे छिंदइ, अप्पेगइयाणं थणे छिंदइ, अप्पेगइयाणं वसणे छिंदइ, अप्पेगइयाणं छेप्पा छिंदइ, अप्पेगइयाणं ककुहे छिंदइ, वहे अप्पेगइयाणं छिंदइ, अप्पेगइयाणं कण्णे छिंदइ, अप्पेगइयाणं नासा छिंदइ, अप्पेगइयाणं जिब्भा छिंदइ, अप्पेगइयाणं ओट्ठे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छिंदइ, अप्पेगइयाणं कंबलए छिंदइ, अप्पेगइयाणं अण्णमण्णाइं अंगोवंगाइं वियंगेइ, वियंगेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलाए कूडग्गाहिणीए उवणेइ।

तए णं सा उप्पला भारिया तेहिं बहूहिं गोमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी तं दोहलं विणेइ।

तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी संपुण्णदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला संपण्णदोहला तं गब्भं सूहंसूहेणं परिवहइ।

दारयस्स जम्मो

२१८ तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पायाया।

तए णं तेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया-महया [चिच्ची ?] सद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए।

तए णं तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरबलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता विपलाइत्था।

दारयस्स गोत्तासनामकरणं

२१९ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति---जम्हा णं अम्हं इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया-महय। चिच्चीसद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए, तए णं एयस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा -जाव-नगरवसभा य भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता विपलाइत्था, तम्हा णं होउ अम्हं दारए गोत्तासे नामेणं।

तए णं से गोत्तासे दारए उम्मुक्कबालभावे जाए यावि होत्था।

भीममरणाणंतरं गोत्तासस्स कूडग्गाहत्तं

२२० तए णं से भीमे कूडग्गाहे अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते।

तए णं से गोत्तासे दारए बहूणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे भीमस्स कूडग्गाहस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहुइं लोइयमयकिच्चाइं करेइ।

तए णं से सुनंदे राया गोत्तासं दारयं अण्णया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्ताए ठवेइ।

तए णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहे जाए यावि होत्था---अहम्मिए-जाव-दुप्पडियाणंदे।

गोत्तासस्स मंसासणं नरयाइभवा य

२२१ तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे कल्लाकल्लिं अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए-जाव-गहियाउहप्पहरणे साओ गिहाओ निज्जाइ, निज्जाइत्ता जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य-जाव-वियंगेइ, वियंगेत्ता जेणेव सए गेहे तेणेव उवागए।

तए णं गोत्तासे कूडग्गाहे तेहिं बहूहिं गोमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता पंचवाससयाइं परमाउं पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे।

उज्झियस्स वत्तमाणभव-वण्णणं

२२२ तए णं सा विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नामं भारिया जायनिंदुया यावि होत्था---जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे दोच्चाए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणियगामे नयरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे।

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया।

दारयस्स उज्झियय नामकरणं

२२३ तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तं दारगं जायमेत्तयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेइ, उज्झावेत्ता दोच्चं पि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेइ।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडियं च चंदसूरदंसणं च जागरियं च महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करेंति।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते संपत्ते बारसाहे अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए उज्झियए नामेणं।

तए णं से उज्झियए दारए पंचधाईपरिग्गहिए, तं जहा—खीरधाईए मज्जणधाईए मंडणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए, जहा दढपइण्णे-जाव-निव्वाय-निव्वाघाय-गिरिकंदरमल्लीणे व्व चंपगपायवे सुहंसुहेणं विहरइ।

विजयमित्तस्स लवणसमुद्दे मरणं

२२४ तए णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च—चउव्विहं भंडं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेण उवागए।

तए णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निब्बुडुभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते।

तए णं तं विजयमित्तं सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सत्थवाहा लवणसमुद्दपोयविवत्तियं निब्बुडुभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेंति, ते तहा हत्थनिक्खेवं च बाहिरभंडसारं च गहाय एगंतं अवक्कमंति।

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुद्दपोयविवत्तियं निब्बुडुभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेइ, सुणेत्ता महया पइसोएणं अप्फुण्णा समाणी परसुनियत्ता इव चंपगलया 'धस' त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सन्निवडिया।

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्तंतरेणं आसत्था समाणी बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं परिवुडा रोयमाणी कंदमाणी विलवमाणी विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ।

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च सत्थविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचिंतेमाणी-अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता।

सुभद्दासत्थवाही मरणे उज्झिययस्स गिहाओ निक्कासणं

२२५ तए णं ते नगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उज्झियगं दारगं साओ गिहाओ निच्छुभेंति, निच्छुभेत्ता तं गिहं अण्णस्स दलयंति।

तए णं से उज्झियए दारए साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु जूयखलएसु वेसघरएसु पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढइ।

तए णं से उज्झियए दारए अणोहट्टए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोर-जूय-वेस-दारप्पसंगी जाए यावि होत्था।

उज्झियस्स गणियासहवासो

२२६ तए णं से उज्झियए अण्णया कयाइ कामज्झयाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे जाए यावि होत्था, कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

तए णं तस्स मित्तस्स रण्णो अण्णया कयाइ सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था, नो संचाएइ मित्ते राया सिरीए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए।

गणियासत्तेणं मित्तनामेणं रण्णा कया उज्झिययविडंबणा

२२७ तए णं से मित्ते राया अण्णया कयाइ उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता कामज्झयं गणियं अब्भितरियं ठवेइ ठवेत्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे कामज्झयाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अविंदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणाभाविए कामज्झयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से उज्झियए दारए अण्णया कयाइ कामज्झयाए गणियाए अंतरं लभेइ, लभेत्ता कामज्झयाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

इमं च णं मित्ते राया ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते जेणेव कामज्झयाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं उज्झियगं दारगं कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु उज्झियगं दारगं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्परपहार-संभग्ग-महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडग-बंधणं करेइ, करेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

उवसंहारो

२२८ एवं खलु गोयमा! उज्झियए दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

उज्झिययस्स आगामिभव-वण्णणं

२२९ उज्झियए णं भंते! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! उज्झियए दारए पणुवीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले वाणरकुलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिइ।

२३० से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे जाए-जाए वाणरपेल्लए वहेइ। तं एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे नयरे गणियाकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। तए णं तं दारयं अम्मापियरो जायमेत्तकं वद्धहिंति, नपुंसगकम्मं सिक्खावेहिंति।

तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेहिंति—होउ णं अम्हं इमे दारए पियसेणे नामं नपुंसए।

तए णं से पियसेणे नपुंसए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ।

तए णं से पियसेणे नपुंसए इंदपुरे नयरे बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभियओ बहूहि य विज्जाओगेहि य मंतपओगेहि य चुण्णपओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहिं आभिओगित्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ।

२३१ तए णं से पियसेणे नपुंसए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एक्कवीसं वाससयं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। ततो सिरीसिवेसु, संसारो तहेव जहा पढमे-जाव-वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए महिसत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ अण्णया कयाइ गोट्ठिल्लएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव चंपाए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ।
से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, अणगारे भविस्सइ, सोहम्मे कप्पे, जहा पढमे-जाव-अंतं काहिइ।

विवागसुयं सु० १ अ० २।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. अभग्गसेणकहाणयं

पुरिमताले चोरसेणावई-विजयपुत्ते अभग्गसेणे

२३२ तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धे।

तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं अमोहदंसी उज्जाणे।

तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स आययणे होत्था।

तत्थ णं पुरिमताले नयरे महब्बले नामं राया होत्था।

तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देसप्पंते अडवि-संसिया, एत्थ णं सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्था--विसमगिरिकंदर-कोलंब-संनिविट्ठा वंसीकलंक-पागारपरिक्खित्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा अब्भितरपाणीया सुदुल्लभजल-पेरंता अणेगखंडी विदियजणदिन्न-निग्गमप्पवेसा सुबहुस्स वि कुवियजणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था।

२३३ तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसइ--अहम्मिए अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोइ अधम्मपलज्जणे अधम्मसील-समुदायारे अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ--हण-छिंद-भिंद-वियत्तए लोहियपाणी बहुनयरनिग्गय-जसे सूरे दढप्पहारे साहसिए सद्दवेही असि-लट्ठि-पढममल्ले।

से णं तत्थ सालाडवीए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारे-माणे पालेमाणे विहरइ।

तए णं से विजए चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खंडपट्टाण य, अण्णेसिं च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहियाणं कुडंगे यावि होत्था।

तए णं से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे विहम्मेमाणे-विहम्मेमाणे तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे नित्थाणे निद्धणे निक्कणे करेमाणे विहरइ, महब्बलस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं कप्पायं गेण्हइ।

२३४ तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरी नामं भारिया होत्था--अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा।

तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स पुत्ते खंदसिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे नामं दारए होत्था--अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे।

२३५ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुरिमताले नयरे समोसढे। परिसा निग्गया। राया निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया य गओ।

महावीरसमोसरणे गोयमेण अभग्गसेणस्स पुव्वभवपुच्छा

२३६ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी गोयमे-जाव-रायमग्गंसि ओगाढे, तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ, अण्णे य तत्थ बहवे आसे पासइ, अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ-सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए। तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ--अवओडय बंधणं उक्खित्त-कण्ण-नासं नेहतुप्पियगत्तं वज्झकरकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडिय-गातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणं कागणिमंसाइं खावियंतं पावं खक्खरसएहिं हम्ममाणं अणेगनर-नारी-संपरिवुडं चच्चरे-चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं [इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ--नो खलु देवाणुप्पिया! अभग्गसेणस्स चोरसेणा-वइस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति?]।

तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा पढमंसि चच्चरंसि निसियावेंति, निसियावेत्ता अट्ठ चुल्लप्पिउए अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणं च पाएंति।

तयाणंतरं च णं दोच्चंसि चच्चरंसि अट्ठ चुल्लमाउयाओ अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा तासेमाणा-कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणं च पाएंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं तच्चे चच्चरे अट्ठ महापिउए, चउत्थे अट्ठ महामाउयाओ, पंचमे पुत्ते, छट्ठे सुण्हाओ, सत्तमे जामाउया, अट्ठमे धूयाओ, नवमे नत्तया, दसमे नत्तुईओ, एक्कारसमे नत्तुयावई, बारसमे नत्तुइणीओ, तेरसमे पिउस्सियपइया, चोद्दसमे पिउस्सियाओ, पण्णरसमे माउस्सियापइया, सोलसमे माउस्सियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अट्ठारसमे अवसेसं मित्त-नाइ-नियग-सयणसंबंधि-परियणं अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणं च पाएंति।

२३७ तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था––"अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ" त्ति कट्टु पुरिमताले नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरिमताले नयरे मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमइ-जाव-समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी––एवं खलु अहं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पुरिमताले नयरे -जाव-तहेव सव्वं निवेएइ।

अभग्गसेणस्स निन्नयभवकहा

२३८ से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसी? किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ?"

२३९ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पुरिमताले नामं नयरे होत्था––रिद्धत्थिमियसमिद्धे०। तत्थ णं पुरिमताले नयरे उदिओदिए नामं राया होत्था––महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे०।

तत्थ णं पुरिमताले निन्नए नामं अंडय-वाणियए होत्था––अड्ढे-जाव-अपरिभूए, अहम्मिए अधम्माणुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए दुप्पडियाणंदे।

निन्नयस्स अंडवाणिज्जं अंडाइअसणं निरयोववाओ य

२४० तस्स णं निन्नयस्स अंडय-वाणियस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लिं कुद्दालियाओ य पत्थियपिडए य गिण्हंति, गिण्हित्ता पुरिमतालस्स नयरस्स परिपेरंतेसु बहवे काइअंडए य घूइअंडए य पारेवइअंडए य टिट्टिभिअंडए य बगिअंडए य मयूरिअंडए य कुक्कुडिअंडए य, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमाईणं अंडाइं गेण्हंति, गेण्हित्ता पत्थियपिडगाइं भरेंति, भरेत्ता जेणेव निन्नए अंडवाणियए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता निन्नयस्स अंडवाणियस्स उवणेंति।

तए णं तस्स निन्नयस्स अंडवाणियगस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे काइअंडए य-जाव-कुक्कुडिअंडए य, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमाईणं अंडए तवएसु य कवल्लीसु य कंडुसु य भज्जणएसु य इंगालेसु य तलेंति भज्जेंति सोल्लेंति, तलेत्ता भज्जेत्ता सोल्लेत्ता य रायमग्गे अंतरावणंसि अंडयपणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

अप्पणा वि णं से निन्नयए अंडवाणियए तेहिं बहूहिं काइअंडएहि य-जाव-कुक्कुडिअंडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

तए णं से निन्नए अंडवाणियए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगं वाससहस्सं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं सत्तसागरोवमठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे।

अभग्गसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णणं

२४१ से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे।

खंदसिरीए दोहलो

२४२ तए णं तीसे खंदसिरीए भारियाए अण्णया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए––"धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं, अण्णाहि य चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया पुरिसनेवत्था सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवइया उप्पीलियसरासणपट्टीया पिणद्धगेवेज्जा विमलवरबद्ध-चिंधपट्टा गहियाउहप्प हरणावरणा भरिएहिं, फलएहिं, निक्कट्ठाहिं असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं, सज्जीवेहिं अंसागएहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं दामाहिं, ओसारियाहिं ऊरुघंटाहिं, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठसीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणीओ सालाडवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंता ओलोएमाणीओ-ओलोएमाणीओ आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणेंति । तं जइ अहं पि-जाव-दोहलं विणिएज्जामि" त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा-जाव-अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ ।

विजएण दोहलपूरणं

२४३ तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरिभारियं ओहयमणसंकप्पं-जाव-झियाय पासइ, पासित्ता एवं वयासी––किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा-जाव-भूमिगयदिट्ठीया झियासि ?

तए णं सा खंदसिरी विजयं चोरसेणावइं एवं वयासी––एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहले पाउब्भूए -जाव-भूमिगयदिट्ठीया झियामि ।

तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरीए भारियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म खंदसिरिभारियं एवं वयासी––'अहासुहं देवाणुप्पिए !' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ ।

तए णं सा खंदसिरिभारिया विजएणं चोरसेणावइणा अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठा बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलाहिं, अण्णाहि य बहूहिं चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया-जाव-विभूसिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागया पुरिसनेवत्था सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवइया-जाव-आहिंडमाणी दोहलं विणेइ ।

तए णं सा खंदसिरिभारिया संपुण्णदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला संपण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ।

२४४ तए णं खंदसिरी चोरसेणावइणी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ।

तए णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं दसरत्तं ठिइवडियं करेइ ।

दारयस्स अभग्गसेण-नामकरणं जोव्वणं च

२४५ तए णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता-जाव-तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ एवं वयासी––जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि समाणंसि इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए अभग्गसेणे नामेणं । तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए-जाव-परिवड्ढइ ।

तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे यावि होत्था । अट्ठ दारियाओ-जाव-अट्ठओ दाओ । उप्पिं० भुंजइ ।

विजयमरणे अभग्गसेणस्स चोरसेणावइत्तं

२४६ तए णं से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ।

तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता केणइ कालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था । तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अण्णया कयाइ अभग्गसेणं कुमारं सालाडवीए चोरपल्लीए महया-महया चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति । तए णं से अभग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाए अहम्मिए-जाव-महब्बलस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं कप्पायं गिण्हइ ।

तए णं ते जाणवया पुरिसा अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा बहुगामघायणाहिं ताविया समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहिं-जाव-निद्धणं करेमाणे विहरइ । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो एयमट्ठं विण्णवित्तए" ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महब्बलरण्णो अभग्गसेणजीवग्गाहगहणे आणा

२४७ तए णं ते जाणवया पुरिसा एयमट्ठं अण्णमण्णेणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे तेणेव उवागया महब्बलस्स रण्णो तं महत्थं-जाव-पाहुडं उवणेंति. उवणेत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं रायं एवं वयासी––"एवं खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभग्गसेणे चोरसेणावई अम्हे बहूहिं गामघाएहि य-जाव-निद्धणे करेमाणे विहरइ । तं इच्छामो णं सामी ! तुज्झं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसित्तए" त्ति कट्टु पायवडिया पंजलिउडा महब्बलं रायं एयमट्ठं विण्णवेंति ।

तए णं से महब्बले राया तेसिं जाणवयाणं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु दंडं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, विलुंपित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीव-गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि" ।

तए णं से दंडे 'तह' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ ।

२४८ तए णं से दंडे बहूहिं पुरिसेहिं सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवएहिं-जाव-गहियाउह-पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मगइएहिं फलएहिं, निक्कट्ठाहिं असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं, सज्जीवेहिं अंसागएहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं दामाहिं, ओसारियाहिं ऊरुघंटाहिं, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणे पुरिमतालं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

२४९ तए णं तस्स अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली, जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु अभग्गसेणं चोरसेणावइं एवं वयासी––"एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलेणं रण्णा महयाभडचडगरेणं दंडे आणत्ते––गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि तए णं से दंडे महयाभडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए" ।

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसिं चारपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म पंच चोरसयाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी––"एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलेणं रण्णा महयाभडचडगरेणं दंडे आणत्ते-जाव-तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तं दंडं सालाडविं चोरपल्लिं असंपत्तं अंतरा चेव पडिसेहित्तए" ।
तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स 'तह'त्ति एयमट्ठं पडिसुणेंति ।

२५० तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं ण्हाए कयबलिवक्कमे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते भोयणमंडवंसि तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्तुरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरुहइ, दुरुहित्ता सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवएहिं उप्पीलियसरासणपट्टीएहिं पिणद्धगेवेज्जेहिं विमलवरबद्ध-चिंधपट्टेहिं गहियाउहपहरणेहिं मगइएहिं-जाव-उक्किट्ठि-सीहनाय-बोल-कलकलरवेणं पच्चावरण्हकालसमयंसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए तं दंडं पडिवालेमाणे-पडिवालेमाणे चिट्ठइ ।

अभग्गसेणेण रायसेणानिवारणं

२५१ तए णं से दंडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ।

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तं दंडं खिप्पामेव हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंधधयपडागं दिसोदिसिं पडिसेहेति ।।

तए णं से दंडे अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंधधयपडागे दिसोदिसिं पडिसेहिए समाणे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं रायं एवं वयासी––"एवं खलु सामी ! अभग्गसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए, नो खलु से सक्का केण वि सुबहुएण वि आसबलेण वा हत्थिबलेण वा जोहबलेण वा रहबलेण वा चाउरंगेणं पि [सेण्णबलेणं ?] उरंउरेणं गिण्हित्तए । ताहे सामेण य भेएण य उवप्पयाणेण य विस्संभमाणेउं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवत्ते यावि होत्था । जे वि य से अब्भिंतरगा सीसगभमा, मित्त-नाइनियग-सयण-संबंधि-परियणं च विउलेणं धण-कणग-रयण-संतसार-सावएज्जेणं भिंदइ, अभग्गसेणस्स य चोरसेणावइस्स अभिक्खणं-अभिक्खणं महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं रायारिहाइं पाहुडाइं पेसेइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं वीसंभमाणेइ"।

तए णं से महब्बले राया अण्णया कयाइ पुरिमताले नयरे एगं महं महइमहालियं कूडागारसालं कारेइ--अणेगखंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं।

रण्णा दसरत्तपमोयघोसणं

२५२ तए णं से महब्बले राया अण्णया कयाइ पुरिमताले नयरे उस्सुक्कं उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिमकुदंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धयमुइंगं अमिलायमल्लदामं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं पमुइयपक्कीलियाभिरामं जहारिहं दसरत्तं पमोयं उग्घोसावेइ, उग्घोसावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सालाडवीए चोरपल्लीए। तत्थ णं तुब्भे अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयह--एवं खलु देवाणुप्पिया! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के-जाव-दसरत्ते पमोए उग्घोसिए। तं किं णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारे य इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था?"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा महब्बलस्स रण्णो करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामि!' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता नाइविकिट्ठेहिं अद्धाणेहिं सुहेहिं वसहिपाय-रासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--"एवं खलु देवाणुप्पिया! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के-जाव-दसरत्ते पमोए उग्घोसिए। तं किं णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारे य इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था?"

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी--"अहं णं देवाणुप्पिया! पुरिमतालं नयरं सयमेव गच्छामि"। ते कोडुंबियपुरिसे सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ।

अभग्गसेणस्स पुरिमताले रायअतिहित्तेण गमणं

२५३ तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं परिवुडे ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ।

तए णं से महब्बले राया अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, अभग्गसेणं चोरसे-णावइं सक्कारेइ सम्माणेइ विसज्जेइ, कूडागारसालं च से आवसहिं दलयइ।

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई महब्बलेणं रण्णा विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ।

तए णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स कूडागारसालाए उवणेह।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु-जाव-उवणेंति।

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं संपरिवुडे ण्हाए-जाव-सव्वालंकारविभूसिए तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे पमत्ते विहरइ।

रण्णा जीवग्गाहं अभग्गसेणगहणं

२५४ तए णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेह, पिहेत्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हह, गिण्हित्ता ममं उवणेह"॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामि !' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेंति, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हंति, गिण्हित्ता महब्बलस्स रण्णो उवणेंति ।

२५५ तए णं से महब्बले राया अभग्गसेणं चोरसेणावइं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ।

उवसंहारो

२५६ एवं खलु गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ ।

अभग्गसेणस्स आगामिभवकहा

२५७ अभग्गसेणे णं भंते ! चोरसेणावई कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई सत्ततीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलाभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता, एवं संसारो जहा पढमे-जाव-वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ।

तओ उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिइ । से णं तत्थ सोयरिएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावो, एवं जहा पढमे-जाव-अंतं काहिइ ।

विवागसुयं अ० ३ ।

१३. सगडकहाणयं

साहंजणीए सत्थवाहपुत्तो सगडो

२५८ तेणं कालेणं तेणं समएण साहंजणी नामं नयरी होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धा० ।

तीसे णं साहंजणीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देवरमणे नामं उज्जाणे होत्था ।

तत्थ णं अमोहस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था—पोराणे० ।

तत्थ णं साहंजणीए नयरीए महचंदे नामं राया होत्था—महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ।

तस्स णं महचंदस्स रण्णो सुसेणे नामं अमच्चे होत्था—साम-भेय-दंड-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नयविहिण्णू ।

तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुदरिसणा नामं गणिया होत्था—वण्णओ ।

तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुभद्दे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे० ।

तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा० ।

तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे० ।

महावीरसमोसरणे सगडस्स पुव्वभवकहा

२५९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए । परिसा राया य निग्गए । धम्मो कहिओ । परिसा गया ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी-जाव-रायमग्गं ओगाढे । तत्थ णं हत्थी, आसे, अण्ण य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहवे पुरिसे पासइ। तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं पासइ एगं सइत्थियं पुरिसं अवओडयबंधणं उक्खित्त-कण्णनासं-जाव-खंडपडहेण उग्घोसिज्जमाणं इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ––नो खलु देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति।

सगडस्स छन्नियछागलियभववण्णणं

२६० तए णं भगवओ गोयमस्स चिंता तहेव-जाव-भगवं वागरेइ––एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नामं नयरे होत्था।

तत्थ णं सीहगिरी नामं राया होत्था–महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे०।

२६१ तत्थ णं छगलपुरे नयरे छन्निए नामं छागलिए परिवसइ––अड्ढे-जाव-अपरिभूए, अहम्मिए-जाव-दुप्पडियाणंदे।

तस्स णं छन्नियस्स छागलियस्स बहवे अयाण य एलयाण य रोज्झाण य वसभाण य ससयाण य सूयराण य पसयाण य सिंहाण य हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयबद्धाणि सहस्सबद्धाणि य जूहाणि वाडगंसि संनिरुद्धाइं चिट्ठंति।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे अए य-जाव-महिसे य सारक्खमाणा संगोवेमाणा चिट्ठंति।

छन्नियस्स मंसासणं, मंसवाणिज्जंय

२६२ अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे अए य-जाव-महिसे य जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता मंसाइं कप्पणी-कप्पियाइं करेंति, करेत्ता छन्नियस्स छागलियस्स उवणेंति।

अण्णे य से बहवे पुरिसा ताइं बहुयाइं अयमंसाइं-जाव-महिसमंसाइ य तवएसु य कवल्लीसु य कंदुसु य भज्जणेसु य इंगालेसु य तलेंति य भज्जेंति य सोल्लेंति य, तलेत्ता य भज्जेत्ता य सोल्लेत्ता य तओ रायमग्गंसि विक्किं कप्पेमाणा विहरंति।

अप्पणा वि य णं से छन्निए छागलिए तेहिं बहूहिं अयमंसेहि य-जाव-महिस-मंसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

छन्नयस्स मरणं निरयोववाओ य

२६३ तए णं से छन्निए छागलिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता सत्त वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा चोत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे।

सगडस्स वत्तमाणभवकहा

२६४ तए णं सा सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा भारिया जायनिंदुया यावि होत्था––जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जंति।

तए णं से छन्निए छागलिए चोत्थीए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव साहंजणीए नयरीए सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया।

दारयस्स सगडनामकरणं गिहाओ निद्धाडणं वेसाइ वसणित्तं च

२६५ तए णं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्ठओ ठवेंति, दोच्चं पि गिण्हावेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवेंति संवड्ढेंति, जहा उज्झियए-जाव-जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव सगडस्स हेट्ठओ ठविए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सगडे नामेणं। सेसं जहा उज्झियए। सुभद्दे लवणसमुद्दे कालगए, माया वि कालगया। से वि साओ गिहाओ निच्छूढे।

२६६ तए णं से सगडे दारए साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे साहंजणीए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु जूय-खलएसु वेसघरएसु पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढइ।

तए णं से सगडे दारए अणोहट्टए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोर-जूय-वेस-दारप्पसंगी जाए यावि होत्था। तए णं से सगडे अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणियं अब्भितरियं ठवेइ, ठवेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

गणियागिहाओ निद्धाडियस्स सगडस्स अमच्चकया विडंबणा

२६७ तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणाभाविए सुदरिसणाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से सगडे दारए अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए अंतरं लभेइ, लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

२६८ इमं च णं सुसेणे अमच्चे ण्हाए-जाव-विभूसिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते जेणेव सुदरिसणाए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं दारयं सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते-जाव-मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु सगडं दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्पर-पहारसंभग्गं महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडयबंधणं करेइ, करेत्ता जेणेव महचंदे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महचंदं रायं एवं वयासी--"एवं खलु सामी! सगडे दारए मम अंतेउरंसि अवरद्धे"।

२६९ तए णं से महचंदे राया सुसेणं अमच्चं एवं वयासी--तुमं चेव णं देवाणुप्पिया! सगडस्स दारगस्स दंडं वत्तेहि।

तए णं से सुसेणे अमच्चे महचंदेणं रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे सगडं दारयं सुदरिसणं च गणियं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

उवसंहारो

२७० तं एवं खलु गोयमा! सगडे दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

सगडस्स आगामिभवकहा

२७१ सगडे णं भंते! दारए कालगए कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! सगडे णं दारए सत्तावण्णं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं महं अयोमयं तत्तं समजोइभूयं इत्थिपडिमं अवतासाविए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता रायगिहे नयरे मातंगकुलंसि जमलत्ताए पच्चायाहिइ।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करिस्संति--तं होउ णं दारए सगडे नामेणं, होउ णं दारिया सुदरिसणा नामेणं।

तए णं से सगडे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते भविस्सइ।

तए णं सा सुदरिसणा वि दारिया उम्मुक्कबालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा भविस्सइ।

तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे सुदरिसणाए भइणीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ।

तए णं से सगडे दारए अण्णया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सइ।

तए णं से सगडे दारए कूडग्गाहे भविस्सइ--अहम्मिए-जाव-दुप्पडियाणंदे, एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ, संसारो तहेव-जाव-वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्स-खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तत्थ मच्छबंधिएहिं वहिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। बोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। विवागसुयं सु० १ अ० ४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. बहस्सइदत्तकहाणयं

कोसंबीए पुरोहियपुत्ते बहस्सइदत्ते

२७२ तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नयरी होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धा०। बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे। सेयभद्दे जक्खे।

तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सयाणिए नामं राया होत्था--महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे०।
मियावई देवी।

तस्स णं सयाणियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदयणे नामं कुमारे होत्था--अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे जुवराया।
तस्स णं उदयणस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था।

तस्स णं सयाणियस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था--रिउव्वेय-यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले।

तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था।

तस्स णं सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए बहस्सइदत्ते नामं दारए होत्था--अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे०।

महावीरसमोरसणे गोयमेण बहस्सइदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा

२७३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे।

तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव-जाव-रायमग्गमोगाढे तहेव पासइ हत्थी, आसे, पुरिसमज्झे पुरिसं। चिंत्ता। तहेव पुच्छइ पुव्वभवं। भगवं वागरेइ--

बहस्सइदत्तस्स महेसरदत्तभवकहा

२७४ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे सव्वओभद्दे नामं नयरे होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धे०।
तत्थ णं सव्वओभद्दे नयरे जियसत्तू नामं राया होत्था।
तस्स णं जियसत्तुस्स रण्णो महेसरदत्ते नामं पुरोहिए होत्था--रिउव्वेय-यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले यावि होत्था।

महेसरदत्तकया संतिहोमे माहणादिदारयाणं हिंसा

२७५ तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रण्णो रज्जबलविवड्ढणट्ठयाए कल्लाकल्लिं एगमेगं माहणदारयं, एगमेगं खत्तियदारयं, एगमेगं वइस्सदारयं, एगमेगं सुद्ददारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउंडए गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेइ।

तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमीचाउद्दसीसु दुवे-दुवे माहण-खत्तिय-वइस्स-सुद्दे, चउण्हं मासाणं चत्तारि-चत्तारि, छण्हं मासाणं अट्ठ-अट्ठ, संवच्छरस्स सोलस-सोलस।

जाहे-जाहे वि य णं जियसत्तू राया परबलेणं अभिजुज्जइ, ताहे-ताहे वि य णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं, अट्ठसयं खत्तियदारगाणं, अट्ठसयं वइस्सदारगाणं, अट्ठसयं सुद्ददारगाणं पुरिसेहि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउंडियाओ गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेइ। तए णं से परबले खिप्पामेव विद्धंसेइ वा पडिसेहिज्जइ वा।

महेसरदत्तस्स निरयउववाओ

२७६ तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायरे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पंचमाए पुढवीए उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमट्ठिइए नरगे उववण्णे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहस्सइदत्तस्स वत्तमाणभववण्णणं

२७७ से णं तओ अणंतरं उवट्टित्ता इहेव कोसंबीए नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववण्णे ।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए बहस्सइदत्ते नामेणं ।

तए णं से बहस्सइदत्ते दारए पंचधाईपरिग्गहिए-जाव-परिवड्ढइ ।

तए णं से बहस्सइत्ते दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते होत्था । से णं उदयणस्स कुमारस्स पियबाल-वयंसए यावि होत्था सहजायए सहवड्ढियए सहपंसुकीलियए ।

तए णं से सयाणिए राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ।

तए णं से उदयणे कुमारे बहूहिं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिईहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सयाणियस्स रण्णो महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ ।

तए णं ते बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ उदयणं कुमारं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति ।

तए णं से उदयणे कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे० ।

बहस्सइदत्तस्स उदयणराण्णो रायमहिसीए भोगभुंजणं

२७८ तए णं से बहस्सइदत्ते दारए उदयणस्स रण्णो पुरोहियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु अंतेउरे य दिण्णवियारे जाए यावि होत्था ।

तए णं से बहस्सइदत्ते पुरोहिए उदयणस्स रण्णो अंतेउरं वेलासु य अवेलासु य कालेसु य अकालेसु य राओ य विआले य पविसमाणे अण्णया कयाइ पउमावईए देवीए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था । पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।

रायकया बहस्सइदत्तविडंबणा

२७९ इमं च णं उदयणे राया ण्हाए-जाव-विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहस्सइदत्तं पुरोहियं पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बहस्सइदत्तं पुरोहियं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्परपहार-संभग्ग-महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडगबंधणं करेइ, करेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ।

उवसंहारो

२८० एवं खलु गोयमा ! बहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसिसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ ।

बहस्सइदत्तस्स आगामिभवकहा

२८१ बहस्सइदत्ते णं भंते ! पुरोहिए इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! बहस्सइदत्ते णं पुरोहिए चोसट्ठिं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता, एवं संसारो जहा पढमे-जाव-वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मियत्ताए पच्चायाइस्सइ । से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । बोहिं, सोहम्मे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।

विवागसुयं सु० १ अ० ५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. नंदिवद्धणकुमारकहाणयं

महुराए नंदिवद्धणे कुमारे

२८२ तेणं कालेणं तेणं समएणं महुरा नामं नयरी। भंडीरे उज्जाणे। सुदरिसणे जक्खे। सिरिदामे राया। बंधुसिरी भारिया। पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारे--अहीणपडि-पुण्ण-पंचिंदियसरीरे जुवराया।

तस्स सिरिदामस्स सुबंधू नामं अमच्चे होत्था--साम-दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नयविहिण्णू।

तस्स णं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्तपुत्ते नामं दारए होत्था--अहीण-पडिपुण्ण पंचिंदियसरीरे।

तस्स णं सिरिदामस्स रण्णो चित्ते नामं अलंकारिए होत्था--सिरिदामस्स रण्णो चित्तं बहुविहं अलंकारियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिण्णवियारे यावि होत्था।

भगवओ महावीरस्स समवसरणे गोयमेण नंदिवद्धणस्स पुव्वभवपुच्छा

२८३ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा निग्गया, राया निग्गओ जाव परिसा पडिगया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी-जाव-रायमग्गमोगाढे। तहेव हत्थी, आसे, पुरिसे पासइ। तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ-जाव-नर-नारीसंपरिवुडं।

तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोइभूयंसि सीहासणंसि निवेसावेंति।

तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं बहूहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं, अप्पेगइया तंबभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं, अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति।

तयाणंतरं च तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयं संडासगं गहाय हारं पिणद्धंति। तयाणंतरं च णं अद्धहारं पिणद्धंति, तिसरियं पिणद्धंति, पालंबं पिणद्धंति, कडिसुत्तयं पिणद्धंति, पट्टं पिणद्धंति, मउडं पिणद्धंति। चिंता तहेव-जाव-वागरेइ--

नंदिवद्धणस्स दुज्जोहणभवकहा

२८४ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नामं नयरे होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धे०। तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था।

तस्स णं सीहरहस्स रण्णो दुज्जोहणे नामं चारगपाले होत्था--अहम्मिए-जाव-दुप्पडियाणंदे।

चारगपालो दुज्जोहणो

२८५ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था--

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे अयकुंडीओ--अप्पेगइयाओ तंबभरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसगभरियाओ, अप्पेगइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ--अगणिकायंसि अहिट्ठियाओ चिट्ठंति।

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे उट्टियाओ--अप्पेगइयाओ आसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ हत्थिमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ उट्टमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ गोमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ महिसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ अयमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ एलमुत्तभरियाओ--बहुपडिपुण्णाओ चिट्ठंति।

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे हत्थंडुयाण य पायंडुयाण य हडीण य नियलाण य संकलाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे वेणुलयाण य वेत्तलयाण य चिंचालयाण य छियाण य कसाण य वायरासीण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सिलाण य लउडाण य मोग्गराण य कणंगराण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे तंतीण य वरत्ताण य वागरज्जूण य वालयसुत्तरज्जूण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे असिपत्ताण य करपत्ताण य खुरपत्ताण य कलंबचीरपत्ताण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे लोहखीलाण य कडसक्कराण य चम्मपट्टाण य अलीपट्टाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सूईण य डंभणाण य कोट्टिल्लाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सत्थाण य पिप्पलाण य कुहाडाण य नहच्छेयणाण य दब्भाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ।

दुज्जोहणस्स चरिया

२८६ तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले सीहरहस्स रण्णो बहवे चोरे य पारदारिए य गंठिभेए य रायावकारी य अणहारए य बालघायए य विस्संभघायए य जूइगरे य संडपट्टे य पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता उत्ताणए पाडेइ, लोहदंडेणं मुहं विहाडेइ, विहाडेत्ता अप्पेगइए तत्ततंबं पज्जेइ, अप्पेगइए तउयं पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्लं पज्जेइ, अप्पेगइयाणं तेणं चेव अभिसेगं करेइ ।

अप्पेगइए उत्ताणए पाडेइ, पाडेत्ता आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थिमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए उट्टमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए गोमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए महिसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए अयमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए एलमुत्तं पज्जेइ ।

अप्पेगइए हेट्ठामुहए पाडेइ छडछडस्स वम्मावेइ, वम्मावेत्ता अप्पेगइए तेणं चेव ओवीलं दलयइ । अप्पेगइए हत्थंडुयाइं बंधावेइ, अप्पेगइए पायंडुए बंधावेइ, अप्पेगइए हडिबंधणं करेइ, अप्पेगइए नियलबंधणं करेइ, अप्पेगइए संकोडियमोडियए करेइ, अप्पेगइए संकलबंधणं करेइ, अप्पेगइए हत्थच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए पायच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए नक्कछिण्णए करेइ, अप्पेगइए उट्ठछिण्णए करेइ, अप्पेगइए जिब्भछिण्णए करेइ, अप्पेगइए सीसछिण्णए करेइ, अप्पेगइए सत्थोवाडियए करेइ ।

अप्पेगइए वेणुलयाहि य, अप्पेगइए वेत्तलयाहि य, अप्पेगइए चिंचालयाहि य, अप्पेगइए छियाहि य, अप्पेगइए कसाहि य, अप्पेगइए वायरासीहि य हणावेइ ।

अप्पेगइए उत्ताणए कारवेइ, कारवेत्ता उरे सिलं दलावेइ, दलावेत्ता तओ लउडं छुहावेइ, छुहावेत्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेइ० ।
अप्पेगइए तंतीहि य, अप्पेगइए वरत्ताहि य, अप्पेगइए वागरज्जूहि य, अप्पेगइए वालयसुत्तरज्जूहि य हत्थेसु य पाएसु य बंधावेइ, अगडंसि ओचूलं बोलगं पज्जेइ ।

अप्पेगइए असिपत्तेहि य, अप्पेगइए करपत्तेहि य, अप्पेगइए खुरपत्तेहि य अप्पेगइए कलंबचीरपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेणं अब्भंगावेइ । अप्पेगइयाणं निलाडेसु य अवदूसु य कोप्परेसु य जाणूसु य खलुएसु य लोहकीलए य कडसक्कराओ य दवावेइ अलिए भंजावेइ ।

अप्पेगइए सूईओ य डंभणाणि य हत्थंगुलियासु य पायंगुलियासु य कोट्टिल्लएहिं आउडावेइ, आउडावेत्ता भूमिं कंडुयावेइ ।

अप्पेगइए सत्थेहि य, अप्पेगइए पिप्पलेहि य, अप्पेगइए कुहाडेहि य, अप्पेगइए नहच्छेयणेहि य अंगं पच्छावेइ, दब्भेहि य कुसुहि य उल्लवद्धेहि य वेढावेइ, आयवंसि दलयइ, दलइत्ता सुक्के समाणे चडचडस्स उप्पाडेइ ।

तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगतीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदिवद्धणस्स वत्तमाणभवकहा

२८७ से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव महुराए नयरीए सिरिदामस्स रण्णो बंधुसिरीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे।

तए णं बंधुसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं-जाव-दारगं पयाया।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहे इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति—होउ णं अम्हं दारगे नंदिवद्धणे नामेणं।

तए णं से नंदिवद्धणे कुमारे पंचधाईपरिवुडे-जाव-परिवड्ढइ।

तए णं से नंदिवद्धणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते विहरइ-जाव-जुवराया जाए यावि होत्था।

नंदिवद्धणस्स पिउमारणे संकप्पो

२८८ तए णं से नंदिवद्धणे कुमारे रज्जे य-जाव-अंतेउरे य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ सिरिदामं रायं जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए।

तए णं से नंदिवद्धणे कुमारे सिरिदामस्स रण्णो बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से नंदिवद्धणे कुमारे सिरिदामस्स रण्णो अंतरं अलभमाणे अण्णया कयाइ चित्तं अलंकारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"तुमं णं देवाणुप्पिया! सिरिदामस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्स रण्णो अभिक्खणं अभिक्खणं अलंकारियं कम्मं करेमाणे विहरसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिया! सिरिदामस्स रण्णो अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि। तो णं अहं तुमं अद्धरज्जियं करिस्सामि। तुमं अम्हेहिं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि"।

तए णं से चित्ते अलंकारिए नंदिवद्धणस्स कुमारस्स वयणं एयमट्ठं पडिसुणेइ।

तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—"जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ठं आगमेइ, तए णं मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु-मारेणं मारिस्सइ" त्ति कट्टु भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदामं रायं रहस्सियगं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"एवं खलु सामी! नंदिवद्धणे कुमारे रज्जे य जाव-अंतेउरे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ, तुब्भे जीवियाओ ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए"।

रण्णा णंदिवद्धणस्स दंडो

२८९ तए णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु नंदिवद्धणं कुमारं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

उवसंहारो

२९० तं एवं खलु गोयमा! नंदिवद्धणे कुमारे पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फल-वित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

नंदिवद्धणस्स आगामिभवपरूवणं

२९१ नंदिवद्धणे कुमारे इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! नंदिवद्धणे कुमारे सट्ठिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोव-मट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव। तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तत्थ मच्छिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सेट्ठिकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। बोही, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइ।

विपाक० अ० ६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. उम्बरदत्तकहाणयं

पाडलिसंडे उंबरदत्तो

२९२ तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे नयरे। वणसंडे उज्जाणे। 'उंबरदत्ते जक्खे'।

तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया।

तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था--अड्ढे०। गंगदत्ता भारिया।

तस्स णं सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उंबरदत्ते नामं दारए होत्था--अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे।

भगवओ महावीरस्स समोसरणे गोयमेण उंबरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा

२९३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं-जाव-परिसा पडिगया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तत्थ णं पासइ एगं पुरिसं--कच्छुल्लं कोढियं दाओयरियं भगंदलियं अरिसिल्लं कासिल्लं सासिल्लं सोगिलं सूयमुहं सूयहत्थं सूयपायं सडियहत्थंगुलियं सडियपायंगुलियं सडियकण्णनासियं रसियाए य पूएण य थिविथिविंतं वणमुहकिमिउत्तुयंत-पगलंततपूयरुहिरं लालापगलंतकण्णनासं अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाणं कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं कूवमाणं मच्छियाचडगरपहकरेणं अण्णिज्जमाणमग्गं फुट्टहडाहडसीसं दंडिखंडवसणं खंडमल्लखंडघडहत्थगयं गेहे-गेहे देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं पासइ। तया भगवं गोयमे! उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ पाडलिसंडाओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ, समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बिलमिव पण्णगभूते अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

२९४ तए णं से भगवं गोयमे दोच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ-जाव-पाडलिसंडं नयरं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसइ, तं चेव पुरिसं पासइ--कच्छुल्लं तहेव-जाव-संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

२९५ तए णं से भगवं गोयमे तच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव-जाव-पाडलिसंडं नयरं पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ--कच्छुल्लं०।

२९६ तए णं से गोयमे चउत्थं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव-जाव-पाडलिसंडं नयरं उत्तरेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ--कच्छुल्लं०।

२९७ तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे--अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ त्ति कट्टु-जाव-समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--"एवं खलु अहं भंते! छट्ठक्खमणपारणगंसि-जाव-रियंते जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे। तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं-जाव-देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं।

तए णं अहं दोच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं तहेव।

तच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं तहेव।

तए णं अहं चोत्थछट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि, तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं-जाव-देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं। चिंता मम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि? किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फल-वित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ?"

उंबरदत्तस्स धण्णंतरिवेज्जभवकहा

२९८ गोयमा! इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी––एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नामं नयरे होत्था––रिद्धत्थिमियसमिद्धे०।

तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था।

तस्स णं कणगरहस्स रण्णो धण्णंतरी नामं वेज्जे होत्था––अट्ठंगाउव्वेयपाढए, तं जहा––१. कुमारभिच्चं २. सालागे ३. सल्लहत्ते ४. कायतिगिच्छा ५. जंगोले ६. भूयविज्जे ७. रसायणे ८. वाजीकरणे, सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे।

धण्णंतरिवेज्जेण मंसासणतेगिच्छं

२९९ तए णं से धण्णंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रण्णो अंतउरे य, अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं, अण्णेसिं च बहूणं दुब्बलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य सणाहाण य अणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खगाण य करोडियाण य कप्पडियाण य आउराण य––अप्पेगइयाणं मच्छमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं कच्छभ-मंसाइं, अप्पेगइयाणं गाहमंसाइं, अप्पेगइयाणं मगरमंसाइं, अप्पेगइयाणं सुंसुमारमंसाइं, अप्पेगइयाणं अयमंसाइं, एवं––एलय-रोज्झ-सूयर-मिग-ससय-गो-महिसमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं तित्तिरमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं वट्टक-लावक-कवोय-कुक्कुड-मयूर-मंसाइं उवदिसइ, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमाईणं मंसाइं उवदिसइ। अप्पणा वि णं से धण्णंतरी वेज्जे तेहिं बहूहिं मच्छमंसेहि य-जाव-मयूरमंसेहि य, अण्णेहि य बहूहिं जलयर-थलयर-खहयर-मंसेहि य, मच्छरसएहि य-जाव-मयूररसएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परि-भुंजेमाणे विहरइ।

निरयोववाओ

३०० तए णं से धण्णंतरी वेज्जे एयकम्मे एयप्पहाणे एवविज्जे एवसमायारे सुबहुं पावं कम्मं समज्जिणित्ता बत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे।

उंबरदत्तस्स वत्तमाणभवकहा

३०१ तए णं सा गंगदत्ता भारिया जायनिंदुया यावि होत्था––जाया-जाया दारगा विणिघायमावज्जंति।

तए णं तीसे गंगदत्ताए सत्थवाहीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयं अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे––"एवं खलु अहं सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूइं वासाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि। तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जासिं मण्णे नियगकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरस-मुल्लावगाइं मम्मणपजंपियाइं थणमूला कक्खदेसभागं अभिसरमाणयाइं मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे निवेसियाइं देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए।

अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगतरमवि न पत्ता। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छित्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं पाडलिसंडाओ नयराओ पडिनिक्खमित्ता बहिया जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छित्ता, तत्थ णं उंबरदत्तस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणं करेत्ता जाणुपायपडियाए ओयाइत्तए––जइ णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढिस्सामि त्ति कट्टु ओवाइयं ओवाइणित्तए"––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी-जाव-एत्तो एगमवि न पत्ता। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया-जाव-ओवाइणित्तए।

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्तं भारियं एवं वयासी—ममं पि णं देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे कहं णं तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि ? गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणइ ।

गंगदत्ताए उंबरदत्तजक्खपूया

३०२ तए णं सा गंगदत्ता भारिया सागरदत्तसत्थवाहेणं एयमट्ठं अब्भणुण्णाया समाणी सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडलिसंडं नयरं मज्झंमज्झेणं, निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकिडुं करेइ, करेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता तं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकार गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उंबरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणामं करेइ, करेत्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता उंबरदत्तं जक्खं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता पम्हल-सुकुमाल-गंधकासाइयाए गायलट्ठी ओलूहइ, ओलूहित्ता सेयाइं वत्थाइं परिहेइ, परिहेत्ता महरिहं पुप्फारुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं चुण्णारुहणं करेइ, करेत्ता धूवं डहइ, डहित्ता जण्णुपायवडिया एवं वयइ—"जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढिस्सामि" त्ति कट्टु ओवाइयं ओवाइणइ, ओवाइणित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।
तए णं से धण्णंतरी वेज्जे तओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे पाडलिसंडे नयरे गंगदत्ताए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे।

गंगदत्ताए दोहलो

३०३ तए णं तीसे गंगदत्ताए भारियाए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—"धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं परिवुडाओ तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय पाडलिसंडं नयरं मज्झं-मज्झेणं पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता ण्हायाओ कयबलिकम्माओ कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ताओ तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलाहिं सद्धिं आसाएंति वीसाएंति परिभाएंति परिभुंजेंति, दोहलं विणेंति"—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पयभायाए रयणीए -जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—"धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ-जाव-दोहलं विणेंति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया -जाव-दोहलं विणित्तए"।

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणइ ।

३०४ तए णं सा गंगदत्ता सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं परि-गेण्हावेइ, परिगेण्हावेत्ता बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ-जाव-धूवं डहेइ, डहेत्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ।

तए णं ताओ मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाओ गंगदत्तं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति।

तए णं सा गंगदत्ता भारिया ताहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलाहिं, अण्णाहि य बहूहिं नगरमहिलाहिं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परि-भुंजेमाणी दोहलं विणेइ, विणेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही संपुण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

दारयस्स उंबरदत्त-नामकरणं जोव्वणं च

३०५ तए णं सा गंगदत्ता भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया। ठिइवडिया-जाव-जम्हा णं अम्हं इमे दारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स ओवाइयलद्धए तं होउ णं दारए उंबरदत्ते नामेणं।

तए णं से उंबरदत्ते पंचधाईपरिग्गहिए परिवड्ढए।

पिइ-माइमरणाणंतरं उंबरदत्तस्स गिहाओ निद्धाडणं

३०६ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च––चउव्विहं भंडं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेण उवागए।

तए णं से सागरदत्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निब्बुड्डुभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते।

तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च सत्थविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचिंतेमाणी-अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता।

तए णं ते नगरगुत्तिया गंगदत्तं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उंबरदत्तं दारगं साओ गिहाओ निच्छुभंति, निच्छुभेत्ता तं गिहं अण्णस्स दलयंति।

तए णं तस्स उंबरदत्तस्स दारगस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा––सासे कासे -जाव-कोढे।

तए णं से उंबरदत्ते दारए सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कच्छुल्ले-जाव-देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ।

उवसंहारो

३०७ एवं खलु गोयमा! उंबरदत्ते दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फल-वित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

उंबरदत्तस्स आगामिभवपरूवणं

३०८ उंबरदत्ते णं भंते! दारए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! उंबरदत्ते दारए बावत्तरिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव।

तओ हत्थिणाउरे नयरे कुक्कुडत्ताए पच्चायाहिइ। से णं गोट्ठिल्लएहिं वहिए तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ। बोही। सोहम्मे कप्पे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

विवागसुयं सु० १ अ० ७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. सोरियदत्तकहाणयं

सोरियपुरे सोरियदत्ते

३०९ तेणं कालेणं तेणं समएणं सोरियपुरं नयरं। सोरियवडेंसगं उज्जाणं। सोरिओ जक्खो। सोरियदत्ते राया.

तस्स णं सोरियपुरस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं एगे मच्छंधपाडए होत्था।

तत्थ णं समुद्दत्ते नामं मच्छंधे परिवसइ---अहम्मिए-जाव-दुप्पडियाणंदे।

तस्स णं समुद्दत्तस्स समुद्दत्ता नामं भारिया होत्था---अहीण-पडिपुण्णपंचिंदियसरीरा०।

तस्स ण समुद्दत्तस्स मच्छंधस्स पुत्ते समुद्दत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्ते नामं दारए होत्था---अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे०।

भगवओ महावीरस्स समोसरणे गोयमेण सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा

३१० तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे-जाव-परिसा पडिगया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे सीसे-जाव-सोरियपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं [अडमाणे?] अहापज्जत्तं समुदाणं गहाय सोरियपुराओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तस्स मच्छंधपाडगस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे महइमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगयं पासइ एगं पुरिसं---सुक्कं भुक्खं निम्मंसं अट्ठिचम्मावणद्धं किडिकिडियाभूयं नीलसाडगनियत्थं मच्छकंटएणं गलए अणुलग्गेणं कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं उक्कूवमाणं अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था---"अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ'---एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। पुव्वभवपुच्छा-जाव-वागरणं।

सोरियदत्तस्स सिरीयभवकहा

३११ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे नंदिपुरे नामं नयरे होत्था। मित्ते राया।

तस्स णं मित्तस्स रण्णो सिरीए नामं महाणसिए होत्था---अहम्मिए-जाव-दुप्पडियाणंदे।

३१२ तस्स णं सिरीयस्स महाणसियस्स बहवे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया य दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लिं बहवे सण्हमच्छा य-जाव-पडागाइपडागे य, अए य-जाव-महिसे य, तित्तिरे य-जाव-मयूरे य जीवयाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति, अण्णे य से बहवे तित्तिरा य-जाव-मयूरा य पंजरंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति, अण्णे य बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा ते बहवे तित्तिरे य-जाव-मयूरे य जीवंतए चेव निप्पक्खेंति, निप्पक्खेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति।

३१३ तए णं से सिरीए महाणसिए बहूणं जलयर-थलयर-खहयराणं मंसाइं कप्पणी-कप्पियाइं करेइ, तं जहा---सण्हखंडियाणि य वट्टखंडियाणि य दीहखंडियाणि य रहस्सखंडियाणि य, हिमपक्काणि य जम्मपक्काणि य धम्मपक्काणि य मारुयपक्काणि य कालाणि य हेरंगाणि य महिट्ठाणि य आमलरसियाणि य मुद्दियारसियाणि य कविट्ठरसियाणि य दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तलियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता अण्णे य बहवे मच्छरसए य एणेज्जरसए य तित्तिररसए य-जाव-मयूररसए य, अण्णं च विउलं हरियसागं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्तस्स रण्णो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेति। अप्पणा वि णं से सिरीए महाणसिए तेसिं च बहूहिं जलयर-थलयर-खहयरमंसेहिं च रसिएहि य हरियसागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

३१४ तए णं से सिरीए महाणसिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता तेत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववण्णे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरियदत्तस्स वत्तमाणभवकहा

३१५ तए णं सा समुद्दत्ता भारिया निंदू यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणि घायमावज्जंति । जहा गंगदत्ताए चिंता, आपुच्छणा, ओवाइयं, दोहलो-जाव-दारगं पयाया-जाव-जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स ओवाइयलद्धए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियदत्ते नामेणं ।

तए णं से सोरियदत्ते दारए पंचधाईपरिग्गहिए-जाव-उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते यावि होत्था ।

तए णं से समुद्दत्ते अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ।

तए णं से सोरियदत्ते दारए बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे समुद्दत्तस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, अण्णया कयाइ सयमेव मच्छंधमहत्तरगत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

तए णं से सोरियदत्ते दारए मच्छंधे जाए अहम्मिए-जाव-दुप्पडियाणंदे ।

सोरियदत्तस्स दुच्चरिया

३१६ तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लिं एगट्ठियाहिं जउणं महाणइं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता बहूहिं दहगलणेहि य दहमलणेहि य दहमद्दणेहि य दहमहणेहि य दहवहणेहि य दहपवहणेहि य मच्छंधुलेहि य पयंचुलेहि य पंचपुलेहि य जंभाहि य तिसराहि य भिसराहि य घिसराहि य विसराहि य हिल्लिरीहि य भिल्लिरीहि य गिल्लिरीहि य झिल्लिरीहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य वक्कबंधेहि य सुत्तबंधेहि य बालबंधेहि य बहवे सण्हमच्छे-जाव-पडागाइपडागे य गेण्हंति एगट्ठियाओ भरेंति, भरेत्ता कूलं गाहेंति, गाहेत्ता मच्छखलए करेंति, करेत्ता आयवंसि दलयंति । अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा आयव-तत्तएहिं मच्छेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य रायमग्गंसि विंत्ति कप्पेमाणा विहरंति । अप्पणा वि णं से सोरियदत्ते बहूहिं सण्हमच्छेहि य-जाव-पडागाइपडागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ।

३१७ तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स अण्णया कयाइ ते मच्छे सोल्ले य तलिए य भज्जिए य आहारेमाणस्स मच्छकंटए गलए लग्गे यावि होत्था ।

तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे महयाए वेयणाए अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोरियपुरे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु य महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! सोरियदत्तस्स मच्छकंटए गले लग्गे । तं जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा सोरियदत्तस्स मच्छियस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विउलं अत्थ-संपयाणं दलयइ" ।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-उग्घोसंति ।

तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयारूवं उग्घोसणं निसामेंति, निसामेत्ता जेणेव सोरियदत्तस्स गेहे जेणेव सोरियदत्ते मच्छंधे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणा-परिणामेमाणा वमणेहि य छड्डणेहि य ओवीलणेहि य कवलग्गाहेहि य सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, नो संचाएंति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा ।

तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स मच्छकंटगं गलाओ नीहरित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे वेज्जपडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्विण्णोसहभेसज्जे तेणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे सुक्के भुक्खे -जाव-किमियकवले य वममाणे विहरइ।

उवसंहारो

३१८ एवं खलु गोयमा सोरियदत्ते पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

सोरियदत्तस्स आगामिभवपरूवणं

३१९ सोरियदत्ते णं भंते! मच्छंधे इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा! सत्तरिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव। हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तओ मच्छिएहिं जीवियाओ ववरोविए तत्थेव सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ। बोही। सोहम्मे कप्पे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

विवागसुयं सु०१ अ० ८।

---

१८. देवदत्ताकहाणयं

रोहीडए देवदत्ता

३२० तेणं कालेणं तेणं समएणं रोहीडए नामं नयरे होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धे०। पुढवीवडेंसए उज्जाणे। धरणो जक्खो। वेसमणदत्ते राया। सिरी देवी। पूसनंदी कुमारे जुवराया।

तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावई परिवसइ--अड्ढे। कण्हसिरी भारिया।

तस्स णं दत्तस्स धूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था--अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा०।

भगवओ महावीरस्स समोसरणे गोयमेण देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा

३२१ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे-जाव-परिसा पडिगया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव-जाव-रायमग्गमोगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ। तेसिं पुरिसाणं मज्झगयं पासइ एगं इत्थियं--अवओडयबंधणं उक्खित्त-कण्णनासं नेहतुप्पियगत्तं वज्झ-करकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडियगातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं सूले भिज्जमाणं पासइ, पासित्ता भगवओ गोयमस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, तहेव निग्गए-जाव-एवं वयासी--"एस णं भंते! इत्थिया पुव्वभवे का आसि०?"

देवदत्ताए सीहसेणभवकहा

३२२ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नामं नयरे होत्था--रिद्धत्थिमियसमिद्धे०। महासेणे राया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स णं महासेणस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था ।

तस्स णं महासेणस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे जुवराया ।

तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ पंच पासायवडेंसयसयाइं करेंति—अब्भुग्गयभूसियाइं० ।

तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ सामापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं एगदिवसे पाणिं गिण्हावेंसु । पंचसओ दाओ ।

तए णं से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खेहिं पंचहिं देवीसएहिं सद्धिं उप्पिं पासायवरगए-जाव-विहरइ ।

तए णं से महासेणे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते । नीहरणं । राया जाए ।

सीहसेणरायस्स सामाए मुच्छा

३२३ तए णं से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अवसेसाओ देवीओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ ।

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए—"एवं खलु सीहेसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे वहरइ । तं सेयं खलु अम्हं सामं देविं अग्गिपओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए"—एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ।

सामाए कोवघर-पवेसो

३२४ तए णं सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा सवणयाए—"एवं खलु ममं [एगूणगाणं ?] पंचण्हं सवत्तीसयाणं [एगूणाइं ?] पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए-जाव-पडिजागरमाणीओ विहरंति" तं न नज्जइ णं ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ ।

तए णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरए, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामं देविं ओहयमणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियासि ?

तए णं सा सामा देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा उप्फेणउप्फेणियं सीहसेणं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! ममं एगूणगाणं पंच सवत्तीसयाणं एगूणाइं पंच माइंसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए अण्णमण्णं सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ-जाव-अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति । तं न नज्जइ णं सामी ! ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संति कट्टु भीया-जाव-झियामि ।"

सीहसेणेण सामासवत्तीसयमाईणं अग्गिणा वहो

३२५ तए णं से सीहसेणे राया सामं देविं एवं वयासी—"मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा-जाव-झियाहि । अहं णं तह घत्तिहामि जहा णं तव नत्थि कत्तो वि सरीरस्स आबाहे वा पबाहे वा भविस्सइ" त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता तओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुपइट्ठस्स नयरस्स बहिया एगं महं कूडागारसालं—अणेगक्खंभसयसंनिविट्ठं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं करेह ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।

तए णं से कोडुंबियपुरिसा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामि !' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सुपइट्ठनयरस्स बहिया पच्चत्थिमे दिसीभाए एगं महं कूडागारसालं—अणेगक्खंभसयसंनिविट्ठं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं करेंति, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

तए णं से सीहसेणे राया अण्णया कयाइ एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं आमंतेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तासिं एगूणगाणं पंच देवीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं सीहसेणेणं रण्णा आमंतियाइ समाणाइं सव्वालंकारविभूसियाइं जहाविभवेणं जेणेव सुपइट्ठे नयरे, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवेंति।

तए णं से सीहसेणे राया एगूणपंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाणं पंचण्हं माइसयाणं कूडागारसालं आवासं दलयइ।

तए णं से सीहसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेह, सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च कूडागारसालं साहरह।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव-जाव-साहरंति।

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं सव्वालंकारविभूसियाइं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणाइं वीसाएमाणाइं परिभाएमाणाइं परिभुंजेमाणाइं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइं-उवगीयमाणाइं विहरंति।

तए णं से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयंसि बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेइ, पिहेत्ता कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयइ।

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंच माइसयाइं सीहसेणेणं रण्णा आलीवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं कंदमाणाइं विलवमाणाइं अत्ताणाइं असरणाइं कालधम्मुणा संजुत्ताइं।

सीहसेणस्स निरयोववाओ

३२६ तए णं से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे।

देवदत्तारूवेण वत्तमाण भवो

३२७ से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव रोहीडए नयरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववण्णे।

तए णं सा कण्हसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारियं पयाया—सूमालं सुरूवं०।

तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तदारसाहियाए विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता-जाव-मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ नामधेज्जं करेंति—होउ णं दारिया देवदत्ता नामेणं।

तए णं सा देवदत्ता दारिया पंचधाईपरिग्गहिया-जाव-परिवड्ढइ।

तए णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कबालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण जोव्वणेण लावण्णेण य अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

तए णं सा देवदत्ता दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया-जाव-विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं-जाव-परिक्खित्ता उप्पिं आगासतलगंसि कणगंतिदूसएणं कीलमाणी विहरइ।

वेसमणदत्तरण्णा जुवराजत्थं देवदत्तामग्गणं

३२८ इमं च णं वेसमणदत्ते राया ण्हाए-जाव-विभूसिए आसं दुरुहति, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे आसवाहणियाए निज्जायमाणे दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ।

तए णं से वेसमणे राया दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे देवदत्तं दारियं उप्पिं आगासतलगंसि कणगंतिदूसएणं कीलमाणिं पासइ, पासित्ता देवदत्ताए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—कस्स णं देवाणुप्पिया! एसा दारिया? किं च नामधेज्जेणं?

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा वेसमणरायं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एस णं सामी! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूया कण्हसिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा।

३२९ तए णं से वेसमणे राया आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! दत्तस्स धूयं कण्हसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेह, जइ वि य सा सयरज्जसुंका।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं सामि !' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ण्हाया-जाव-सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया संपरिवुडा जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागया।

तए णं से दत्ते सत्थवाहे ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चुग्गए आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता ते पुरिसे आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया। किं आगमणप्पओयणं ?

तए णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थवाहं एवं वयासी––"अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं कण्हसिरीए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेमो। तं जइ णं जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा, सरिसो वा संजोगो, विज्जउ णं देवदत्ता दारिया पूसनंदिस्स जुवरण्णो। भण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुंकं ?"

तए णं से दत्ते ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी––एवं चेव णं देवाणुप्पिया ! ममं सुंकं जं णं वेसमणे राया मम दारिया-निमित्तेणं अणुगिण्हइ। ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति, वेसमणस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेंति।

३३० तए णं से दत्ते गाहावई अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगल-पायच्छित्ते सुहासणवरगएणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि परियणं विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता देवदत्तं दारियं ण्हायं-जाव-सव्वालंकारविभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेइ, दुरुहेत्ता सुबहुमित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहिनिग्घोस-नाइयरवेणं रोहीडयं नयरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव वेसमणरण्णो गिहे, जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु वेसमणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेत्ता वेसमणस्स रण्णो देवदत्तं दारियं उवणेइ।

देवदत्ता-पूसनंदिजुवरायाणं पाणिग्गहणं

३३१ तए णं से वेसमणे राया देवदत्तं दारियं उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ-जाव-सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पूसनंदिं कुमारं देवदत्तं च दारियं पट्टयं दुरुहेइ, दुरुहेत्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता वरनेवत्थाइं करेइ, करेत्ता अग्गिहोमं करेइ, करेत्ता पूसनंदिं कुमारं देवदत्ताए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ।

तए णं से वेसमणदत्ते राया पूसनंदिकुमारस्स देवदत्तं दारियं सव्विड्ढीए-जाव-दुंदुहिनिग्घोस-नाइयरवेणं महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं पाणिग्गहणं कारेइ, कारेत्ता देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं च विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं से पूसनंदी कुमारे देवदत्ताए भारियाए सद्धिं उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धनाडएहिं उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ।

पिउणो मरणं पूसनंदिणो य रज्जं

३३२ तए णं से वेसमणे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। नीहरणं-जाव-राया जाए पूसनंदी।

तए णं से पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते यावि होत्था। कल्लाकल्लिं जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए पायवडणं करेइ, करेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगावेइ, अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए––चउव्विहाए संवाहणाए संवाहावेइ, संवाहावेत्ता सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टावेइ, उव्वट्टावेत्ता तिहिं उदएहिं मज्जावेइ, तं जहा–उसिणो-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दएणं सीओदएणं गंधोदएणं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं भोयावेइ, भोयावेत्ता सिरीए देवीए ण्हायाए कयबलिकम्माए कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ताए जिमियभुत्तुत्तरागयाए तओ पच्छा ण्हाइ वा भुंजइ वा, उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

देवदत्ताए पूसनंदिमाउणो मारणं

३३३ तए णं तीसे देवदत्ताए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे––"एवं खलु पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते-जाव-विहरइ। तं एएणं वक्खेवेणं नो संचाएमि अहं पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं सिरिदेविं अग्गि-पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवेत्ता पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए"––एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सिरीए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी विहरइ।

तए णं सा सिरी देवी अण्णया कयाइ मज्जाइया विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्ता जाया यावि होत्था।

इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिं देविं मज्जाइयं विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्तं पासइ, पासित्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोहदंडं परामुसइ, परामुसित्ता लोहदंडं तावेइ, तत्तं समजोइभूयं फुल्लकिंसुयसमाणं संडासएणं गहाय जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए अवाणंसि पक्खिवइ।

तए णं सा सिरी देवी महया-महया सद्देणं आरसित्ता कालधम्मुणा संजुत्ता।

तए णं तीसे सिरीए देवीए दासचेडीओ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्तं देविं तओ अवक्कममाणिं पासंति, पासित्ता जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सिरिं देविं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं पासंति, पासित्ता, हा हा! अहो! अकज्जमिति कट्टु रोयमाणीओ कंदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनंदी राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पूसनंदिं रायं एवं वयासी––एवं खलु सामी! सिरी देवी देवदत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया।

तए णं से पूसनंदी राया तासिं दासचेडीणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया माइसोएणं अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चंपगवरपायवे धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए।

पूसनंदिकओ देवदत्तादंडो

३३४ तए णं से पूसनंदी राया मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे बहूहिं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहेहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेण य सद्धिं रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सिरीए देवीए महया इड्ढीए नीहरणं करेइ, करेत्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे देवदत्तं देविं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

उवसंहारो

३३५ तं एवं खलु गोयमा! देवदत्ता देवी पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फल-वित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणी विहरइ।

देवदत्ताए आगामिभव परूवणं

३३६ देवदत्ता णं भंते! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ।

गोयमा! असीइं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

संसारो [तहेव-जाव-?] वणस्सई।

तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता गंगपुरे नयरे हंसत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव गंगपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ। बोही। सोहम्मे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

विवागसुयं सु० १ अ० ९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. अंजूकहाणयं

वड्ढमाणपुरे अंजू

३३७ तेणं कालेणं तेणं समएणं वड्ढमाणपुरे नामं नयरे होत्था। विजयवड्ढमाणे उज्जाणे। माणिभद्दे जक्खे। विजयमित्ते राया।

तत्थ णं धणदेवे नामं सत्थवाहे होत्था--अड्ढे०। पियंगू नामं भारिया। अंजू दारिया-जाव उक्किट्ठसरीरा। समोसरणं परिसा-जाव-गया।

अंजूए पुव्वभवपुच्छा

३३८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी-जाव-अडमाणे विजयमित्तस्स रण्णो गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे पासइ एगं इत्थियं--सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडियाभूयं अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं कूवमाणिं पासइ, पासित्ता चिंता तहेव-जाव-एवं वयासी--सा णं भंते! इत्थिया पुव्वभवे का आसि? वागरणं।

अंजूए पुढविसिरीभवकहा

३३९ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे। इंदपुरे नामं नयरे होत्था।

तत्थ णं इंददत्ते राया। पुढविसिरी नामं गणिया होत्था--वण्णओ।

तए णं सा पुढविसिरी गणिया इंदपुरे नयरे बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ बहूहि य विज्जापओगेहि य मंतपओगेहि य चुण्णप्पओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहिं आभिओगित्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ।

तए णं सा पुढविसिरी गणिया एयकम्मा एयप्पहाणा एयविज्जा एयसमायारा सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता पणवीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमट्ठिएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

अंजूए वत्तमाणभवकहा

३४० सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वड्ढमाणपुरे नयरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगुभारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववण्णा।

तए णं सा पियंगुभारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारियं पयाया। नामं अंजू। सेसं जहा देवदत्ताए।

तए णं से विजए राया आसवाहणियाए निज्जायमाणे जहा वेसमणदत्ते तहा अंजुं पासइ, नवरं--अप्पणो अट्ठाए वरेइ जहा तेयली -जाव-अंजूए भारियाए सद्धिं उप्पिं पासायवरगए-जाव-विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ।

३४१ तए णं तीसे अंजूए देवीए अण्णया कयाइ जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था।

तए णं से विजए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! वड्ढमाणपुरे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह--एवं खलु देवाणुप्पिया! विजयस्स रण्णो अंजूए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए। तं जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा अंजूए देवीए जोणीसूले उवसामित्तए तस्स णं वेसमणदत्ते राया विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ"।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव-उग्घोसेंति।

तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म जेणेव विजए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता उप्पत्तियाहिं वेणइयाहिं कम्मियाहिं पारिणामियाहिं बुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छंति अंजूए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए, नो संचाएंति उवसामित्तए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति अंजूए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

तए णं सा अंजू देवी ताए वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्का भुक्खा निम्मंसा कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं विलवइ।

उवसंहारो

३४२ एवं खलु गोयमा! अंजू देवी पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणी विहरइ।

अंजूए आगामिभवपरूवणं

३४३ अंजू णं भंते! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! अंजू णं देवी नउइं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। एवं संसारो जहा पढमे तहा नेयव्वं-जाव-वणस्सई।

सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सव्वओभद्दे नयरे मयूरत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सव्वओभद्दे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए पव्वइस्सइ। केवलं बोहिं बुज्झिहिइ। पव्वज्जा। सोहम्मे।

से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! महाविदेहे वासे जहा पढमे-जाव-सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

विवा० अ० १०।

---

२०. पूरणबालतवस्सिकहाणयं

बेभेलसण्णिवेसे पूरणे गाहावई

३४४ चमरेणं भंते! असुरिंदेणं असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे किणा लद्धे? पत्ते? अभिसमण्णागए?

एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था--वण्णओ।

तत्थ णं बेभेले सण्णिवेसे पूरणे नामं गाहावई परिवसइ--अड्ढे दित्ते-जाव-बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था।

पूरणस्स दाणामा पवज्जा

३४५ तए णं तस्स पूरणस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणे फलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किणं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं-जाव-कडाणं कम्माणं एगंतसोक्खयं उवेहमाणे विहरामि?

तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि-जाव-अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च णं मे मित्त-नाति-नियग-सयण-संबंधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहगं करेत्ता, विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं-उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं, वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता०, सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहगं गहाय मुंडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिगहगं गहाय बेभेले सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता जं मे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं पंथे पहियाणं दलइत्तए। जं मे दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं काग-सुणयाणं दलइत्तए। जं मे तच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं मच्छ-कच्छभाणं दलइत्तए। जं मे चउत्थे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं अप्पणा आहारं आहारेत्तए—त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं-जाव-जं से चउत्थे पुडए पडइ, तं अप्पणा आहारं आहारेइ।

तए णं से पूरणे बालतवस्सी तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं सुक्खे लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था।

पूरणस्स संलेहणा

३४६ तए णं तस्स पूरणस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे-जाव-धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते बेभेलस्स सण्णिवेसस्स दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता बेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता, पादुग-कुंडिय मादीयं उवगरणं चउप्पुडयं च दारुमयं पडिग्गहगं एगंते एडित्ता, बेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्प भायाए रयणीए-जाव-उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते बेभेले सण्णिवेसे दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता बेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुंडिय मादीयं उवगरणं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडेइ, एडेत्ता बेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणियमंडलं आलिहित्ता संलेहणा-झूसणाझूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे।

महावीरस्स छउमत्थकाले सुंसुमारपुरे विहारो

३४७ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सुंसुमारपुरे नगरे जेणेव असोयवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढवीसिलावट्टए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढवीसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि, दो वि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी अणिमिसनयणे ईसिपब्भारगएणं काएणं, अहापणिहिएहिं गत्तेहिं, सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जेत्ताणं विहरामि।

पूरणस्स चमरचंचाए असुरिंदत्ताए उववाओ

३४८ तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया यावि होत्था।

तए णं से पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए-जाव-इंदत्ताए उववण्णे।

तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तं जहा—आहारपज्जत्तीए-जाव-भास-मणपज्जत्तीए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चमरिंदस्स सक्किदभोगदंसणेण अमरिसो

३४९ तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गए समाणे उड्ढं वीससाए ओहिणा आभोएइ-जाव-सोहम्मो कप्पो, पासइ य तत्थ--सक्कं देविंदं देवरायं, मघवं पाकसासणं। सयक्कतुं सहस्सक्खं, वज्जपाणिं पुरंदरं-जाव-दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि-जाव-दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था--केस णं एस अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे ज णं ममं इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए दिव्वाए देवज्जुतीए दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए उप्पिं अप्पुस्सुए दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ--एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सामाणियपरिसोववण्णए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--

"केस णं एस देवाणुप्पिया! अपत्थियपत्थए-जाव-दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ?"

तए णं ते सामाणियपरिसोववण्णगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी--एस णं देवाणुप्पिया! सक्के देविंदे देवराया-जाव-दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववण्णगे देवे एवं वयासी--

अण्णे खलु भो! से सक्के देविंदे देवराया, अण्णे खलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो! से सक्के देविंदे देवराया, अप्पिड्ढीए खलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु उसिणे उसिणब्भए जाए यावि होत्था।

चमरिंदस्स महावीरनिस्साए सक्किन्दअच्चासायणाकरणं

३५० तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ममं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था--एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुंसुमारपुरे नयरे असोगवणसंडे उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं णीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता देवदूसं परिहेइ, परिहेत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फलिहरयणं परामुसइ, परामुसित्ता एगे अबीए फलिहरयणमायाए महया अमरिसं वहमाणे चमरचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता-जाव-उत्तरवेउव्वियं रूवं विकुव्वइ, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए-जाव-जेणेव पुढविसिलावट्टए जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता-जाव-नमंसित्ता एवं वयासी--इच्छामि णं भंते! तुब्भं नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमेइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोहणित्ता-जाव-दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ एगं महं घोरं घोरागारं भीमं भीमागारं भासुरं भयाणीयं गंभीरं उत्तासणयं कालड्ढरत्त-मास-रासिसंकासं जोयणसय-साहस्सीयं महाबोंदिं विउव्वइ, विउव्वित्ता अप्फोडेइ वग्गइ गज्जइ, हयहेसियं करेइ, हत्थिगुलगुलाइयं करेइ, रहघणघणाइयं करेइ, पायदद्दरगं करेइ, भूमिचवेडयं दलयइ, सीहणादं नदइ, उच्छोलेइ पच्छोलेइ, तिवतिं छिंदइ, वामं भुयं ऊसवेइ, दाहिणहत्थपदेसिणीए अंगुट्ठणहेण य वितिरिच्छं मुहं विडंवेइ, महया-महया सद्देण कलकलरवं करेइ एगे अबीए फलिहरयणमायाए उड्ढं वेहासं उप्पइए--खोभंते चेव अहेलोयं कंपेमाणे व मेइणीतलं साकड्ढंते व तिरियलोयं, फोडेमाणे व अंबरतलं, कत्थइ गज्जंते, कत्थइ विज्जुयायंते, कत्थइ वासं वासमाणे, कत्थइ, रयुग्घायं पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्कायं पकरेमाणे, वाणमंतरे देवे वित्तासेमाणे-वित्तासेमाणे, जोइसिए देवे दुहा विभयमाणे-विभयमाणे, आयरक्खे देवे विपलायमाणे-विपलायमाणे, फलिहरयणं अंबरतलंसि वियट्टमाणे-वियट्टमाणे विउब्भाएमाणे-विउब्भाएमाणे ताए उक्किट्ठाए-जाव-दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सोहम्मवडेंसए विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, एगं पायं पउमवरवेइयाए करेइ, एगं पायं सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेणं महया-महया सद्देणं तिक्खुत्तो इंदकीलं आउडेइ, आउडेत्ता एवं वयासी--

"कहि णं भो! सक्के देविंदे देवराया?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहि णं ताओ चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ ?
कहि णं ते तायत्तीसयतावत्तीसगा ?
कहि णं ते चत्तारि लोगपाला ?
कहि णं ताओ अट्ठ अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ ?
कहि णं ताओ तिण्णि परिसाओ ? कहि णं ते सत्त अणिया ?
कहि णं ते सत्त अणियाहिवई ?
कहि णं ताओ चत्तारि चउरासीईओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ ?
कहि णं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ ?
अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्ज वहेमि, अज्ज मम अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमंतु"त्ति कट्टु तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं फरुसं गिरं निसिरइ ।

सक्केण वज्ज-णिसिरणं

३५१ तए णं से सक्के देविंदे देवराया तं अणिट्ठं-जाव-अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासि—"हं भो ! चमरा ! असुरिंदा ! असुरराया ! अपत्थियपत्थया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हिरिसिरिपरिवज्जिया ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! अज्ज न भवसि, नाहि ते सुहमत्थो"त्ति कट्टु तत्थेव सीहासणवरगए वज्जं परामुसइ, परामुसित्ता तं जलंतं फुडंतं तडतडंतं उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणं-विणिम्मुयमाणं, जालासहस्साइं पमुंचमाणं-पमुंचमाणं, इंगालसहस्साइं पविक्खिरमाणं-पविक्खिरमाणं, फुलिंगजालामालासहस्सेहिं चक्खुविक्खेवदिट्ठि-पडिघातं पि पकरेमाणं हुयवहअइरेगतेयदिप्पंतं जइणवेगं फुल्लकिंसुयसमाणं महब्भयं भयंकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुरण्णो वहाए वज्जं निसिरइ ।

चमरिंदस्स भगवंतमहावीरपादपडणं

३५२ तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया तं जलंतं-जाव-भयंकरं वज्जमभिमुहं आवयमाणं पासइ, पासित्ता झियाइ पिहाइ, पिहाइ झियाइ, झियायित्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्गमउडविडवे सालंबहत्थाभरणे उड्ढंपाए अहोसिरे कक्खागयसेयं पिव विणिम्मुयमाणे-विणिम्मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए-जाव-तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जंबुदीवे दीवे-जाव-जेणेव असोगवर-पायवे जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भीए भयगग्गरसरे 'भगवं सरणं' इति बुयमाणे मम दोण्ह वि पायाणं अंतरंसि झत्ति वेगेणं समोवडिए ।

सक्किंदस्स वि भयवंतमहावीरसमीवे आगमणं वज्जपडिसाहरणं य

३५३ तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जित्था—"नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता--जाव-सोहम्मो कप्पो, नऽण्णत्थ अरहंते वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पणो नीसाए उड्ढं उप्पयइ-जाव-सोहम्मो कप्पो, तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं अणगाराण य अच्चासायणाए" त्ति कट्टु ओहिं पउंजइ, ममं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता 'हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि' त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए-जाव-दिव्वाए देवगईए वज्जस्स वीहिं अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं-जाव-जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरइ, अवि याइं मे गोयमा ! मुट्ठिवाएणं केसग्गे वीइत्था ।

सक्किंदेण खमाजायणं असुरिंदनिब्भयकरणं य

३५४ तए णं से सक्के देविंदे देवराया वज्जं पडिसाहरित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासि—एवं खलु भंते ! अहं तुब्भं नीसाए चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा सयमेव अच्चासाइए । तए णं मए परिकुविएणं समाणेणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो बहाए वज्जे निसट्ठे । तए णं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता-जाव-सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहंते वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भावि-अप्पाणो नीसाए उड्ढं उप्पइत्ता-जाव-सोहम्मो कप्पो, तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु ओहिं पउंजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता 'हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि' त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए -जाव-जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरामि, वज्जपडिसाहरणट्ठयाए णं इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया ! नाइभुज्जो एवं करणयाए त्ति कट्टु मम वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं विदलेइ, विदलेत्ता चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासि—मुक्को सि णं भो चमरा ! असुरिंदा ! असुरराया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं—नाहि ते दाणिं ममातो भयमत्थि त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

सक्काइगइविसयाणं गोयमपण्हाणं भगवया समाहाणं

३५५ भंते ! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए-जाव-महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेवं अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए ?

हंता पभू ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढीए-जाव-महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता णं गेण्हित्तए ?

गोयमा ! पोग्गले णं खित्ते समाणे पुव्वामेव सिग्घगई भवित्ता ततो पच्छा मंदगती भवति, देवे णं महिड्ढीए-जाव-महाणुभागे पुव्विं पि पच्छा वि सीहे सीहगती चेव तुरिए तुरियगती चेव। से तेणट्ठेणं-जाव-पभू गेण्हित्तए।

जइ णं भंते ! देवे महिड्ढीए-जाव-पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए, कम्हा णं भंते ! सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाइए साहत्थिं गेण्हित्तए ?

गोयमा ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गइविसए सीहे-सीहे चेव तुरिए-तुरिए चेव, उड्ढं, गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मंदे-मंदे चेव। वेमाणियाणं देवाणं उड्ढं गइविसए सीहे-सीहे चेव तुरिए-तुरिए चेव, अहे गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मंदे-मंदे चेव।

जावतियं खेत्तं सक्के देविंदे देवराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं, तं वज्जे दोहिं, जं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं। सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकंडए, अहेलोयकंडए संखेज्जगुणे।

जावतियं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे ओवयइ एक्केणं समएणं, तं सक्के दोहिं, जं सक्के दोहिं, तं वज्जे तीहिं। सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्ढलोयकंडए संखेज्जगुणे।

एवं खलु गोयमा ! सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाइए साहत्थिं गेण्हित्तए।

सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उड्ढं अहे तिरियं च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं सक्के देविंदे देवराया अहे ओवयइ एक्केणं समएणं तिरियं संखेज्जे भागे गच्छइ, उड्ढं संखेज्जे भागे गच्छइ।

चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो उड्ढं अहे तिरियं च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं, तिरियं संखेज्जे भागे गच्छइ, अहे संखेज्जे भागे गच्छइ।

वज्जस्स णं भंते ! उड्ढं अहे तिरियं च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं वज्जे अहे ओवयइ एक्केणं समएणं, तिरियं विसेसाहिए भागे गच्छइ, उड्ढं विसेसाहिए भागे गच्छइ।

सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उप्पयणकाले, ओवयणकाले संखेज्जगुणे ।

चमरस्स वि जहा सक्कस्स, नवरं--सव्वत्थोवे ओवयणकाले, उप्पयणकाले संखेज्जगुणे ।

वज्जस्स पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, ओवयणकाले विसेसाहिए ।

एयस्स णं भंते ! वज्जस्स, वज्जाहिवइस्स, चमरस्स य असुरिंदस्स असुररण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सक्कस्स य उप्पयणकाले, चमरस्स य ओवयणकाले--एए णं दोण्णि वि तुल्ला सव्वत्थोवा । सक्कस्स य ओवयणकाले, वज्जस्स य उप्पणकाले--एस णं दोण्ह वि तुल्ले संखेज्जगुणे । चमरस्स य उप्पयणकाले, वज्जस्स य ओवयणकाले--एस णं दोण्ह वि तुल्ले विसेसाहिए ।

चमरिंदस्स भगवंतमहावीरसमीवे पुणरागमणं

३५६ तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के, सक्केणं देविंदेणं, देवरण्णा महया अवमाणेणं अवमाणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि ओहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाति ।

तए णं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसंकप्पं-जाव-झियायमाणं पासंति, पासित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी--किं णं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा चिंतासोयसागरसंपविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियायह ?

तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ते सामाणियपरिसोववण्णए देवे एवं वयासी--"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए । तए णं तेणं परिकुविएणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसट्ठे । तं भद्दण्णं भवतु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्सम्हि पभावेणं अकिट्ठे अव्वहिए अपरितावि इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो-जाव-पज्जुवासामो" त्ति कट्टु चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं-जाव-सव्विड्ढीए-जाव-जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेत्ता वंदेता नमंसित्ता एवं वयासि"--एवं खलु भंते ! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए । तए णं तेणं परिकुविएणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसट्ठे । तं भद्दण्णं भवतु देवाणुप्पियाणं जस्सम्हि पभावेणं अकिट्ठे अव्वहिए अपरितावि इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इह अज्ज उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया ! नाइभुज्जो एवं करणयाए" त्ति कट्टु ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता-जाव-बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसेइ, उवदंसेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।

३५७ एवं खलु गोयमा ! चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । ठिई सागरोवमं महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ-जाव-अंतं काहिइ ।

३५८ किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति-जाव-सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! तेसि णं देवाणं अहुणोववण्णाण वा चरिमभवत्थाण वा इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-संकप्पे समुप्पज्जइ --अहो ! णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी-जाव-अभिसमण्णागए, जारिसियाणं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी-जाव-अभिसमण्णागए, तारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी-जाव-अभिसमण्णागए । जारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा-जाव-अभिसमण्णागए, तारिसिया णं अम्हेहि वि-जाव-अभिसमण्णागए । तं गच्छामो णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवामो पासामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं-जाव-अभिसमण्णागयं, पासउ ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया दिव्वं देविड्ढिं-जाव-अभिसमण्णागयं । तं जाणामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं-जाव-अभिसमण्णागयं, जाणउ ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया दिव्वं देविड्ढिं-जाव-अभिसमण्णागयं ।

एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति-जाव-सोहम्मो कप्पो ।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

भगवई स० ३ उ० २ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. महासुक्कदेवाणं भगवओ महावीरस्स समीवे आगमणपसंगो

देवाणं मणसा पण्हो महावीरेण य मणसा उत्तरं

३५९ तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणा विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया-जाव-महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया,

तए णं ते देवा समणं भगवं महावीरं मणसा चेव वंदंति नमंसंति वंदिता नमंसित्ता मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति-कइ णं भंते! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति-जाव-अंतं करेहिंति?

तए णं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे तेसिं देवाणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरे-एवं खलु देवाणुप्पिया! मम सत्त अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति-जाव-अंतं करेहिंति,

तए णं ते देवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा-जाव-हयहियया समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा-जाव-पज्जुवासंति।

३६० तेणं कालेणं तेणं समएणं गोयमकोऊहलं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे-जाव-अदूरसामंते उड्ढंजाणू-जाव-विहरइ,

तए णं तस्स भगवओ गोयमस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-समुप्पज्जित्था—"एवं खलु दो देवा महिड्ढिया-जाव-महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया तं नो खलु अहं ते देवे जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओ वा विमाणाओ वा कस्स वा अत्थस्स अट्ठाए इहं हव्वमागया?

तं गच्छामि णं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि-जाव-पज्जुवासामि इमाइं च णं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामि" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे-जाव-पज्जुवासइ।

महावीरेण गोयममणो गयकहणं

समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी—से णूणं तव गोयमा! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-जाव-जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए से णूणं गोयमा! अत्थे समत्थे? हंता! अत्थि, तं गच्छाहि णं गोयमा! एए चेव देवा इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति।

गोयमस्स देवसमीवे गमणं

३६१ तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं ते देवा भगवं गोयमं एज्जमाणं पासंति पासित्ता हट्ठा-जाव-हयहियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति अब्भुट्ठित्ता खिप्पामेव पच्चुवागच्छंति पच्चुवागच्छित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता-जाव-णमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु भंते! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणाओ विमाणाओ दो देवा महिड्ढियया-जाव-पाउब्भूआ तए णं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो—

कइ णं भंते! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति-जाव-अंतं करेहिंति? तए णं समणे भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्हं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया! मम सत्त अंतेवासिसयाइं-जाव-अंतं करेहिंति तए णं अम्हे समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा चेव पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो वंदित्ता नमंसित्ता-जाव-पज्जुवासामो त्ति कट्टु भगवं गोयमं वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

भगवई श० ५ उ० ४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

(शब्द सूची)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द - सूची

(अ)

अइबल १.१३८, १.१४३
अइमुत्त २.६६, २.६७, २.६८
अइमुत्तयलयामंडवग ४.२६०
अइर १.१३९
अइरा १.९५
अउज्झा १.१३९
अओकुंभी ४.२७८, ४.२७९
अंकधाई १.६७, ४.२८७, ४.३७४
अंकवाणिय ४.२७५
अंकावई १.१३८
अंकुस १.११४
अंग १.३०, २.७८, ५.४०७, ६.४३३
अंगजणवय ६.४३३
अंगमंदिर ५.४०५
अंगराय १.२७, १.२८, १.३१, १.३४, १.१०१, ३.१९१
अंगलोय १.१२२
अंगवंस २.१६४
अंगारक १.७९
अंचिय १.१७
अंजणगपव्वय १.२५
अंजणगिरि १.११६, १.१९१
अंजणगिरिकूड १.१२३, १.१३२, १.१३३, १.१३५, १.१३६
अंजू १.१०२, ६.४५९, ६.४९५-४९६
अंडअ १.९०
अंतकडभूमी १.५०, १.५३, १.८८
अंतकरभूमी १.२३, १.४८
अंतकुल १.५७, १.५८
अंतगड १.८५, १.८६
अंतजीवी ५.३९२
अंतरंजि १.८८
अंताहार ५.३९२
अंतोसल्लमरण २.१२६
अंदोलग ४.२६०
अंधगवण्हि २.२०, २.२१, २.४८
अंबड १.१०४
अंबयरुक्ख १.१०१
अंबसालवण ३.२२०, ३.२२१, ३.२२३, ३.२२८, ३.२४३, ४.२४६, ४.२४८, ४.२४९, ४.२५३
अकंपिय १.१११, १.११२, १.११३
अक्खीणमहाणसिय १.८२
अक्खेवणी १.८४
अक्खोभ २.२०, २.२१
अगडदद्दुर १.४०
अगडमह ४.२७०
अगणिकाय १ २४, १.२५, २.१६६, ३.२१७, ३.२१८
अगारधम्म १.७४
अग्गमहिसी १.१०, १.१२, १.१३, १.१५, १.५६, १.८०, ४.२४६ ४.२५१, ४.२५२, ४.२५३, ४.२६४, ४.२६७
अग्गि १.११४
अग्गिउत्त १.९४
अग्गिकुमार १.२४, १.२५, ५.४१७
अग्गिदत्त २.१७२
अग्गिप्पओग १.१२६, १.१२८
अग्गिभूई १.१११, १.११२, १.११३
अग्गिभूती १.१११
अग्गिमाणव ३.२२४
अग्गिमित्ता ४.३३२, ४.३३५, ४.३३६ ४.३३९, ४.३४०
अग्गिवेस १.८६, २.१७५
अग्गिवेसायण १.१११, १.११३, ५.३९३
अग्गिवेसायणगोत्त २.१७१
अग्गिसप्पभ १.१००
अग्गिसिह १.१४२, ३.२२४
अग्गिसेण १.९४
अग्गी १.१५, १.७९
अग्गुज्जाण ६.४५६
अग्गुज्जाण ६.३४५
अघाकम्मिअ १.९१
अङ्गई २.४९, २.५०
अङ्गपविट्ठ ४.२७६
अङ्गबाहिर ४.२७६
अचल १.२१
अचेल १.७२, १.७५
अचेलअ १.२०, १.९१
अचेलग १.९१
अच्च १.८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्चिमाली ३.२२५
अच्चुइंद १.१७
अच्चुय १.१६, १.२४, १.६८, २.९२, २.९७, २.१०९, २.१३०, २.१३१, ५.४१३
अच्चुयग १.१५
अच्चुयवई १.७९
अच्छ ५.४०७
अच्छणघरग ४.२६०
अच्छर १.८०
अच्छिद ५.३९३
अच्छोज्ज १.९१ ५.३८५
अच्छोरग १.११३
अजिण १.२२, १ ५०, १ ५२, १ ८३, १ ८७, १ १०६
अजित १ ९६-९७
अजितसेण १.४
अजिय १.९४-९५, १.९८, १.१०७-११०
जजियसेण १.९४, २.२२
अजीवकाय २.१६४-१६५
अजीवत्थिकाय २.१६५
अज्ज २.६१, २.७८, ४.३७५
अज्जइसिपालिय २.१७३
अज्जकुबेर २.१७३
अज्जकोट्टकिरिय १.३२
अज्जघोस १.५२, १.१११
अज्जचेडय २.१७२
अज्जजयंती २.१७१
अज्जतावसी २.१७१
अज्जदिण्ण १.५२
अज्जनाइल २.१७१
अज्जपोगिल २.१७१
अज्जवइर २.१७३
अज्जसेणिय २.१७३
अज्जसंपया १.१०५
अज्जियासंपदा १.५२
अज्जियासंपया १.२२, १.४७, १.८७
अज्जुण २.९४, २.१०८, ३.१९१, ५.३९३, ५.४०४
अज्जुणग ५.४०४-४०५
अज्जुणय २.९३-८६
अज्झोयरय १.९१, ४.३७३, ५.३८५
अट्टणसाला १.६२, १.६६, २ ६
अट्ठंगमहानिमित्त २.६
अट्ठकम्मपगडी २-३९
अट्ठकम्मसत्त २-८४
अट्ठचक्कवालेपतिट्ठाण १.१३१, १.१४१
अट्ठट्ठमंगल १-४६
अट्ठट्ठमंगलग ४-२४९
अट्ठणसाला २.८, ४.३६८
अट्ठभत्त १ ४९, १ ११७
अट्ठमंगल १.११६, १.१२३, १-१३५
अट्ठमंगलग १-१३२, १.१३६
अट्ठमभत्त १-२१–२२, १.४७, १,११८, १.१२०–१२३ १.१२६, १.१२८–१३१, १.१३३–१३४ १.१३६ २.२६, २.७५, २.१०६, ३.१९६, ३.१९९
अट्ठमभत्ति १.१३४
अट्ठमभत्तिय २.१०६
अट्ठावय १.१३७ २.७८ ४.३७५
अट्ठाहिय १.२५ १.४७–४८, १.११५–११६, १.११८ १.१२०–१२१, १.१२९, १.१३१
अट्ठाहिया १.११९–१२१, १.१२९–१३१
अट्ठिजुद्ध
अट्ठियगाम १.८५
अट्ठिसुह १.६२
अड्ढभरह २.१७५
अणंगसेण २.१७–१८, २.२०
अणंत १.९४–९६, १.९८–१००, १.१०९–११०
अणंतय १.९४
अणंतविजय १.९४, १.१०४
अणंतसेण १.४ २.२२
अणगारचिइगा १.२४–२५
अणगारधम्म १.७४
अणवण्णिय १.७९
अणाढिय २.४९–५०
अणाहिट्ठी २.२२
अणिंदिय १.६–७
अणिय १.१०, १.१५–१६, १.४५, १.५६, १.८०, ४.२४६
अणियट्टी १.१०४
अणियण १.४
अणियाहिवइ १.६, १.१०, १.१३, १.१५–१६, १.४५, १.५६, ३.२१९, ४.२४६, ४.२५२, ४.२६४, ४.२६८, ६.४९९
अणिरुद्ध ३.२०८
अणिसिट्ठ १.९१ ४.३७३, ५.३८५
अणिहयरिउ २.२२
अणीयस २.२२
अणुत्तर १.८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तरविमाण २.१३१
अणुत्तरोववाइयं १.२२, १.४७, १.५०, १.५३, १.८८, १.१०८
अणुत्तरोववाइयसंपया १.२२, १.१०८
अणुद्धरी १.८७
अणुराहा १.१००
अणुलोम १.२०, १.५२
अणुव्वय १,९१, २.३९, २.६४, ४.२४६
अणोज्जकोज्जय १.२८
अणोज्जा १.६८
अण्णलिंग १.१००
अण्णविहि २.७८, ४.३७५
अतिपास १.९४
अतिमुत्त २.६६, २.९२
अतियार ४.२९७–२९८
अतिराणी १.१०२
अतिसेस १.१०२
अत्थिकाय २.१६४–१६५
अथव्वणवेद २.५७
अथव्वणवेय १.५५, २.३८, ३.१७९ ६.४७९
अदिण्णदाण १.१०३–१०४
अदीणसत्तु १.२७–२८ १-३७–३९ १.९५, १.१०१, २.५१, २.५५, २.१०५–१०६
अद्दग २-६४–६६
अद्धभरह २.२०, ३.१९८
अद्धमागह ४.३७१
अद्धमागही १.१०२
अधम्मत्थिकाय २.१६४–१६५
अनिरुद्ध २.३४, ३.१९५
अनीहारिम २.१२७
अन्तरिज्जिया २.१७३
अन्नउत्थिय २.१६४–१६५
अन्नवालय २.१६४
अपइट्ठाण १.१४०, १.१४४
अपराइय १.१४२–१४३
अपराइया १.१४२, ३.२२५
अपराजिय १.४८, १.१०१, २.९८
अपराजिया १.७, १.१००, १.१३८–१३९
अपुट्ठवागरण १.८६
अप्पडिहयवरनाणदंसणधर १.१०, १.५६, १.८०, १.११२, ४.२६६
अप्फोयामंडवग ४.२६०
अबद्धित ४.३८१
अबद्धिय १.८८
अब्भितरपरिसा ४.२५१
अभक्खेय २.४१–४२
अभग्ग ६.४५९
अभग्गसेण ६.४७१–४७६
अभय २.६९, २.७६–७७, २.९७,–९८, ६.४२७
अभयकर १.१००
अभयकुमार २.७४–७५, ६.४२८
अभयदय १.१०, १.५६, १.८०, १.११२, ३.२२०, ४.२६६, ४.३६६
अभिइ १.२३
अभिग्गह १.७३, १.९०
अभिचन्द १.४, १.२१, १.२६
अभिजसंत २.१७३
अभिणंदण १.१०८
अभिणय १.१७, ४.२५६, ४.२६४
अभिनंदण १.९४–९६, १.९८, १.१०९
अभिसेगसभा ४.२६३
अभिसेय १.५५, १.५९
अभिसेयसभा ४.२६४–२६५, ४.२६७
अभिहड १.९१, ४.३७३, ५.३८५
अभीइ १.५
अभीयिकुमार २.१३८, २.१४०
अभीयी २.१३७
अभीयीदेव २.१४०
अमच्च ४.२७८, ४.३६५
अमम १.१०४, ३.२०९
अमयरस १.१०१
अमरवइ १.४७
अमरसेण १.४७
अमलकप्पा ३.२२१
अमितवाहण ३.२२४
अमियगति ३.२२४
अभियणाणि १.९४
अमोह ६.४७६
अमोहदंसी ६.४७१
अम्बुभक्खी ४.२४४
अम्मड ४.३७२–३७४
अम्मया १.१४२
अयंपुल ५.४०७
अयल १.२६, १.१४२–१४३, २.२०–२९
अयलपुर २.१७५
अयलभाया १.१११–११३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर १.९४–९६ १.९८–१००, १.१०९, १.१३९–१४०
अरक्खुरीय ३.२२५
अरया १.१३८
अरसजीवी ५.३९२
अरसाहार ५.३९२
अरहंत १.२७, १.३२, १.४४–४५, १.५६–५८, १.६४, १.९३,, १.१०३, २.५७, २.९१, २.९५, २.१२९, २.१३२, २.१३६, २.१७०, ३.१८०, ३.२०३, ३.२१९, ४.२६६, ४.३६६
अरहंतमातर १.६४
अरहंतवंस १.९२
अरहण्णग १.३१, १.३३–३४
अरहण्णय १ ३२–३३
अरहदत्त २.१७३
अरहदत्ता २.११०८
अरहदिन्न २.१७३
अरिट्ठ १.१०१
अरिट्ठणेमि २.१८–१९, २.२३–२७, २.३०–३३, २.४७, ३.२०८–२०९
अरिट्ठनेमि १.४९–५०, १.९५, १.९७–९८, १.१०५–१०६, १.११०, २.१५, २,१७–२३, २.२५, २.२७–३७, २.४०, २.४७–४८, ३,१७९, ३.२०६, ३.२०८, ३.२१०
अरिट्ठनेमिचरिय १.४८
अरिट्ठवरणेमि १.१००
अरिहंत १.३, १.१०, ४.२४७, ४.३७१
अरुणकील ४.३५२
अरुणज्झअ ४.३३१
अरुणप्पभ १.१००, ४.३१६
अरुणवडेंसअ ४.३४७
अरुणाभ ४.३०४, ४.३११, ४.३५४, ४.३५९, ४.३६२, ४.३७७
अरुविकाय २.१६४–१६५
अलंकारियसभा ४.२६३, ४.२६५, ४.२६७
अलंबुसा १.८
अलकापुरी २.२०
अलक्क २.६९, २.९२
अलसंड १.१२२
अलसिरी ३.२२४
अला ३.२२४
अलावडेंसथ ३.२२४
अवज्झा १.१३९
अवतित्त ४.३८१
अवत्तिय १.८८
अवधिनाणी १.१०७
अवरकंका १.११३, ३.१९५, ३.१९९–२००, ३.२०२–२०३, ३.२०५
अवरविदेहवास १.४३
अवराजिता १.१३८
अवाय ४.२७६
अवाह ५.४०७
अव्वत्तरूवपुरिस २.६५
अव्वाबाह २.४०, २.४५
असंजअ १.११३
असंजल १.९४
असह १.२३
असिणी १.९९
असिरयण १.१२६, १.१३२, १.१३६, १.१४१
असिलक्खण २.७८, ४.३७५
असिलोगभय १.९१
असुतिजातकम्म १.६६
असुर १.१५, १.४५, १.७०, १.१००, १.१३३, २.३०, २.८२, २.८२, २.१४, ४.२८३
असुरकन्ना १.३४, १.३७, १.४१
असुरकुमार १.७८, २.६२–६३, २.१४०, ३.२१९, ३.२२२, ५.४१७, ६.४२४–४२५, ६.५००–५०१
असुरवज्ज १.१५
असुरिद १.१५, १.२५, १.४६, १.७९, ३.२१९, ६.४२४–४२५, ६.४९९–५००
असोग १.१७, १.२०, १.२८, १.४७, १.४९, १.५२, १.६०, १.७२, १.१०१–१०२, २.२०, २.३५, २.३७, २.१०८, ४.२४५–२४६, ४.३६४, ४.३६६
असोगललिय १.१४२
असोगवडिंसय ४.२५७
असोगवण ४.२५९
असोगवणसंड ६.४९८
असोगवणिया १.२८, २.१६९, ३.१९७, ३.२१७, ४.३२९, ४.३३२, ६.४२९, ६.४९५
असोय ४.२४६, ६.४९७
असोयवणसंड ६.४९७
असोया १.१३८
अस्सगीव १.१४३
अस्ससेण १.१३९
अस्सिणी १.२८, १.४७, ४.३४७
अस्सीयबहुल १.४९
अहव्वणवेद १.३९, २.१२३
अहाछंद ३.२२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिच्छत्ता २.१५६, २.१५८
अहिभड १.२९, १.४३, २.५१–५२, २.१४३, ६.४६१
अहेसत्तमा १.१४०, ३.१८२

(आ)

आइगर १.१०–११, १.५६, १.८०, १.११२, २.१८, २.३५, २.४९, २.६७, २.७९, २.९०, ३.२२०, ४.३६६
आइच्च १.४५, १.११४
आइच्चजस १.१३८
आउकाय १.७५, १.१६६
आउहघरसाला १.११४–११६, १.११९–१२१, १.१२८–१३१, १.१३६
आगंतगार २.६४
आगंतार १.७६
आगर ६.४५६
आगारभाव १.३९
आगासत्थिकाय २.१६४–१६५
आणंद १.१०१, १.१४२–१४३, २.१०८, ४.२९५–३०४, ५.३९६, ५.४०१–४०३
आणंदा १.७
आणय १.७९, २.९२, २.९७, २.१०७, ५.४१८
आणयपाणकप्प १.१४
आणुओगिय २.१७५
आदिकर २.२१, २.९२
आदिगर १.५७, २.१२, २.१४, २.५७, २.१३२, २.१३६, ३.२३७, ४.२६६, ५.३८१
आवाड १.१२४
आभरणविहि २.७८, ४.३७५
आभिओग १.१६, १.१८–१९, १.२४, १.१३५
आभिओगिअ १.६, १.११, १.१३, १.४६, १.१३४, २.४९, ३.१८७, ३.२१४, ३.२१९, ४.२४७–२५२, ४.२६७
आभिणिबोहियनाण ४.२७६
आभियोग १.६, १.९, २.१२, ३.२२८
आमलकप्प ४.२४९
आमलकप्पा ३.२२०, ३.२२३, ४.२४६–२४८, ४.२५३
आभोसहि १.८२
आयंबिल २.१००
आयंबिलवड्ढमाण ३.२३६
आयंबिलवद्धमाण १.८३
आयंसघर १.१३७
आयंसधरग ४.२६०
आयरकूव १.१०, १.५६, १.८०, ३.२२२, ४.२५२
आयरक्खदेव १.६, १.१३, १.१५–१६, १.२४, १.४५, ३.२१९, ४.२४६, ४.२५२–२५३, ४.२६५, ४.२६७–२६८, ६.४९९
आयरक्खा १.१५
आयरिय १.३, १.८३, १.८५, २.१७०
आयवा ३.२२५
आयाणभंडमत्तणिक्खेणासमिय २.९९
आयार १.७३
आयारघर १.८४
आयावणभूमि २.६१, २.१३१, २.१३३–१३५, ४.२४४
आयावणा ४.२४४
आयावाअसुरकुमार २.१४०
आयावाय १.८३
आरण १.७९, २.९२, २.९७, २.१०७, ५.४१८
आरण्णिया २.१५३
आरब १.१२२
आरबी १.११५
आरभड १.१७
आरामगार १.७६, २.६४
आलंभिया १,८५, २.१३१–१३२
आलभिया ४.३२२–३२४, ४.३५२–३५४, ५.४०५
आलियधरग ४.२६०
आवत्त १.१३८
आवसहिया २.१५३
आवाडचिलाय १.१२५–१२६, १.१२८
आवीकम्म १.९०
आवेसणसभापव १.७६
आसकिसोरी २.१४१
आसपुर १.१३८
आसम ६.४५६
आसमड १.२९, ६.४६१
आसमपथ १.५२
आसभित्त १.८८, ५.३८१
आसरयण १.१२५, १.१३७, १.१४१
आसरह २.१९, २.७९–८०, २.१०५, ३.१९०, ३.१९३–१९४, ४.२६९–२७५
आसव ४.२७१
आससेण १.५१, १.९५
आसा १.८
आसाढ १.५०, १.५४–५५, १.८८, २.४२, ४.३६१, ४.३८१
आसाढपुण्णिमा २.४
आसाढबहुल १.५
आसाढा १.५ १.२० १.२२ १.१००
आसातणा १.९१
आसिणी १.१००
आसोत्थ १.१०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसोय २.४२, ४.३६१
आसोयबहुल १.५७, १.५९
आहाकम्मिय २.२९, २.८२, ४.३७३, ५.३८५
आहायकम्म २.६४

(इ)

इंद १.१५, १.३२, १.४४, १.१०२, १.१३३, २.३०, २.६१, २.८२, २.१३४, ३.२२४
इंदकुंभ १.२६
इंदज्झय १.१०२, १.११४
इंददत्त १.९५, १.१०१, ६.४९५
इंददिन्न २.१७१, २.१७३
इंदपुत्त २.१०८
इंदपुर २.१७३, ६.४७०, ६.४९५
इंदभूइ १.८६–८७, १.१११, १.११३, २.१०३, २.१०५, २.१३५, २.१६४, २.१७१, ४.३०१, ६.४६०, ६.५०२,
इंदभूति १.१०२, १.१११–११२, २.६६, ५.३९३
इंदमह २.१०–११, २.९९, ४.२७०, ५.३८१, ६.४६०
इक्खाग ४.२७०, ५.३८२, ५.३८८
इक्खागकुल १.५५, १.५७
इक्खागभूमि १.५
इक्खागराय १.२७–३०, १.१०१, २.१२०
इक्खुवाड ४.२८५
इङ्गालसोल्लिय ४.२४४
इतिहास १.३९, १.५५, २.१२३
इत्थिनामगोय १.२७
इत्थिरयण १.१३२, १.१३९, १.१४१
इत्थिलक्खण २.७८, ४.३७५
इत्थीतित्थ १.११३
इत्थीनामगोय १.४३
इत्थीरयण १.१२९, १.१३४–१३५, १.१३७
इब्भ २.६१, २.१०५–१०६, २.१३३, २.१३७–१३९, ३.१८७, ३.१९०, ३.१९६, २.२१६, ४.२७८, ४.२९५–२९६, ४.२९९, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४–३३५, ४.३४३, ४.३४८, ४.३५१, ४.३५८, ४.३६२, ४.३६९, ५.३८२, ५.४१४, ६.४५०, ६.४६९–४७०, ६.४८०, ६.४९४–४९५
इरियासमिइ १.५२, १.७२, १.९०
इरियासमिय १.८३, २.१३, २.१९–२०, २.२२, २.३०, २.३७, २.६७, २.८९, २.९२, २.१०४, २.१०७, २.१०९, २.१२८, ३.१८८, ३.२१०, ३.२१४, ३.२२२, ३.२२७, ३.२२९, ३.२३०, ३.२३२–२३३, ४.२८८
इलादेवी १.८, ३.२२६
इस २.१७३
इसिगुत्त २.१७२
इसिगोत्तिय २.१७३
इसिदत्त २.१७३
इसिदत्तिय २.१७३
इसिदास २.९८, २.१०४
इसिदिण्ण १.९४
इसिपरिसा ४.२८२, ६.४२३
इसिपालित २.१७३
इसिभद्दपुत्त ४.३५२–३५४
इसिवादिय १.७९
इसिवाल १.१४२
इहलोगभय १.९१
इहापूह १.४४

(ई)

ईरियासमिइ १.२०, २.९९
ईसत्थ २.७८
ईसर २.६१, ४.२७२, ४.३७५, ६.४५०, ६.४६९
ईसाण १.१४, १.१८, १.२४–२५, १.४६, १.७९, २.११–१२, २.२०, २.६०, २.६२–६३, २.९२, २.९७, २.१०९, २.१३१, ३.१८९, ३.२१९, ३.२२६, ५.३९२
ईसाणकप्प २.६३
ईसाणग १.१५
ईसाणदेविंद २.६२
ईसाणवडेंसय २.६०, २.६२
ईसाणिंद २.६२–६३
ईसिणिय १.११५
ईहा ४.२७६

(उ)

उंबर ६.४५९
उंबरदत्त ६.४८४–४८७
उक्खित्त १.१७
उग्ग ४.२७०–२७१, ५.३८२, ५.३८८, ६.४६०
उग्गकुल १.५७
उग्गसेण २.१७, २.२०, ३.१९०, ३.१९३
उग्गह ४.२७६
उग्गिहिअ १.९०
उच्चानागरी २.१७३
उच्चारपासवणखेलसिंघाणजजल्लपरिट्ठावणियासमिइ १.७२, २.९९
उज्जुवालिया १.७८
उज्जंतसेलसिहर ३.२०६–२०७
उज्जालिय ३.२०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जितसेलसिहर १.४९–५०
उज्जुमइ १.८२, ४.२७६
उज्जुमति २.१७२
उज्झयअ ६.४५९, ६.४६५–४६६, ६.४६८–४७०
उज्झया ६.४५०, ६.४५२–४५४
उडुकल्लाणिय १.१३२, १.१३५, १.१३७
उडुवाडियगण २.१७३
उण्णयासण ४.२६०
उत्तमपुरिस १.९३
उत्तमा ३.२२५
उत्तर १.९४, १.१७२
उत्तरकुरा १.४९, १.१००
उत्तरकुरु १.१६, ३.२२५
उत्तरकुरुउज्जाण २.१०८
उत्तरकुल ४.२४४
उत्तरखत्तियकुंडपुरसन्निवेस १.५७, १.६९–७०
उत्तरड्ढमरह १.१२४, १.१२६
उत्तरड्ठलोगाहिवइ १.१४,१.२४
उत्तरबलिस्सगण २.१७२
उत्तरभद्दव १.१००
उत्तरवेउव्विय १.१३, १.३३, १.४५, १.५८, १.१३६, २.६२, ४.२४७
उत्तरवेयड्ठ १.१२२
उत्तरा १.८
उत्तराभद्दवया १.९९
उत्तरासंग ४.२४७
उत्तरासाढा १.५, १.२१, १.१००
उदग २.१४८, २.१५५, २.१६३
उदगरयण २.५४
उदगसाला २.१४८
उदय १.१०४, २.१४८–१५०, २.१५५–१५६, २.१६४
उदयण ३.२३६–२३७, ६.४७९–४८०
उदह १.७९
उदही १.१५
उदाइ १.८८, ५.४०४, ६.४३५
उदायण २.१२०
उदायि ४.३७६
उदिओदिय ६.४७२
उदितोदितकुलवंस १.९५, १.१०२
उदुंबरिज्जिया २.१७२
उद्दंड ४.२४४
उद्दंडपुर ५.४०५
उद्दवाइयगण १.१११
उद्दायण १.८८, २.१४–१५, २.६९, २.१३७–३९
उद्देसिय १.९१, २.२९, २.८२, २.११४, ४.३७३, ५.३८५
उद्देहगण १.१११, २.१७२
उन्ना २.२०
उप्पत्तिणगर १.८८
उप्पयनिवय १.१७
उप्पल १.६०
उप्पला ३.२२५, ४.३५४–३५५, ६.४६७–४६८
उप्पायपव्वयग ४.२६०
उमा १.१४२
उम्बरपायव ४.२४५
उम्मग्गजला १.१२४
उम्मग्गनिमग्गजला १.१३०
उम्मुय ३.१९५
उल्लगच्छ २.१७२
उल्लगा १.८८
उल्लगातीर ५.३८१
उवज्झाय १.३, १.८५
उवट्ठाणसाला १.११४, १.११६–११९, १.१२१, १.१२९–१३०, १.१३४, १.१३६, २.६–७, २.२५, २.४३, २.५८, २.७०–७१, २.७४, २.७७, २.१३८, ३.१९०, ३.१९३, ३.२०९, ३.२२०–२२१, ३.२२६, ३.२३७, ४.२६९, ४.२७२, ४.३५८, ४.३६५, ४.३६७, ४.३६८–६९, ५.३८३, ६.४२१, ६.४२६–४२८, ६.४३३
उवनंदभद्द २.१७२
उवयालि २.३४, २.९७
उवलद्धपुव्व ३.१८७
उववायसभा २.१५, ३.२२३, २.२२८, ३.२३१, ४.२४६, ४.२६३, ४.२६७, ४.२८७, ४.२९४, ६.४९७
उवसंतजीवी ५.३९२
उवसग्ग १.२०, १.३२, १.५२, १.७६–७७, १.९०, १.११३, २.१२७
उवहाणपडिमा १.८३
उवासगपडिमा २.३९
उसडु ४.२६०
उसभ १.४–५, १.१९–२०, १.२२–२३, १.९४, १.९७–९८, १.१००–१०१, १.१०५, १.१०७–१०८, १.११०, १.१३९
उसभदत्त १.५५–५९, २.३, २.११ २.५६, २.५८–५९, २.१०७, २.१३२, २.१३९, ३.२३७
उसभपुर १.८८, २.१०७, ५ ३८१
उसभसिरि १.१०८
उसभसेण १.१०१ १.१०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसभासण ४.२६०
उसह १.५
उसहकूड १.१२९
उसहचरिय १.५
उसहतित्थयर १.४८
उसहदत्त २.५७
उसुयार २.१०७ २.१२०
उस्सपिणी १.३–४,
उस्सप्पिणी १.५७–५८, १.८९, १.९२–९४, १.१०४, १.१३९, १.१४३, ३.२०९

(ए)

एगसेलग २.१६७
एगिंदियरतण १.१४१
एगिंदियरयण १.१३२, १.१३६, १.१४१
एणिज्ज १.८८
एणेज्ज ५.४०४
एरवय १.४, १.९२–९३, १.९४, १.१०३, १.१३८–३९, १.१४३, ४.२६३
एरावण १.१०, १.५६
एरावणवाहण ४.३०८
एलावच्च २.१७५
एलावच्छ २.१७१–१७२
एसणासमिइ १.७२, २.९९

(ओ)

ओधस्सर १.१५
ओववाइय २.१३२
ओसत्त १.७०
ओसधी १.१३८
ओसन्न ३.२२२
ओसप्पिणी १.३–४, १.२२ १.५०, १.५३–५५ १.५७–५८, १.८५–८६ १.९२–९५, १.१०२, १.१२९, १.१३९, १.१४२
ओसह ३.१८७, ३.२१४, ३.२२९
ओहिणाणि १.२२
ओहिणाणि संपया १.२२
ओहिनाण ४.२७६
ओहिनाणि १.४७, १.५०, १.५२, १.८७, १.१०७
ओहिनाणिय १.१०७
ओहिनाणिय १.१०७
ओहिनाणिसंपया १.१०७

(क)

कंचुइज्जपुरिस ४.२७०
कंचुइपुरिस २.९९
कंडरीउ २.१७०
कंडरीय १.१६७–६९
कंतारभत्त १.९१, २.२९, २.८२, ४.३७३, ५.३८५
कंद ३.१८७, ३.२१४
कंदभोयण १.९१, २.२९, २.८२, ३.८५
कंदिय १.७९
कंपिल्ल १.१४०, २.१५, २.२०–२१, २.११८
कंपिल्लपुर १.३९–४०, ३.१८९–१९४, ३.२२६, ४.३२७–३२८, ४.३३०, ४.३७२–३७३
कंसकार १.१३२
कक्कसेण १.४
कच्चायण १.११३, २.१२३–१२५, २.१२७–१२८, २.१७१, २.१७५
कच्छ १.१२२, १.१३८
कच्छकर १.१३२
कच्छगावती १.१३८
कच्छुल्लनारय ३.१९५–१९६, ३.१९९
कट्ठमुद्दा ४.२४५–२४६
कडगछेज्ज ४.३७५
कडच्छेज्ज २.७८
कणगकेऊ २.१५६, २.१५८, ६.४५५–४५६, ६.४५८
कणगजाल ४.२६१
कणगज्झय ३.२१६–२१८
कणगपुर २.१०८
कणगप्पभा ३.२२५
कणगरह १.९२, ३.२११–२१६, ६.४८५
कणगवत्थु १.१४२
कणगा ३.२२५
कणगावलितवोकम्म १.७३
कणवीर १.१७, १.११६
कणियार ५.३९३
कणियारवण १.७०
कण्ण ३.१९१
कण्ह १.१०४, १.११३, १.१४२–१४४, २.१७–१८, २.२०, २.२४–२७, २.२९, २.३१–३७, ३.१९०–१९१, ३.१९७–२०५, ३.२०८–२११, ३.२२६, ६.४२५
कण्हराइ ३.२२६
कण्हवडेंसय ३.२२६
कण्हसह २.१७२
कण्हसिरि १.१३९ ६.४९० ६.४९२–४९३
कण्हा २.१०८ ३.२२६ ३.२३४–२३५
कण्हुइरहस्सिया २.१५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्तवीरिय १.१३९
कत्तिय १.१०४, २.१२–१३, २.४२, ४.३६१
कत्तियबहुल १.४८, १.८६
कत्तिया १.९९–१००
कन्दाहार ४.२४४
कन्दुसोल्लिय ४.२४४
कप्परुक्ख १.४, १.६३, १.७०, १.११५
कप्परुक्खग १.१७
कब्बड ६.४५६
कमल १.६०, ३.२२५
कमलप्पभा ३.२२५
कमलवडेंसय ३.२२५
कमलसिरी ३.२२५
कमला ३.२२५
कमेंलावइ २.१२०
कमा ३.२२४
कम्म १.१९
कम्मजोय ३.१८७
कम्मणजोय ३.१८७, ३.२१४
कम्मेंभूमिं १.६९
कम्मार १.७३
कम्मारपुत्तिय २.१४८
कयंगल २.१२८
कयंगला २.१२३–१२४
कयमाल १.१२१–१२२
कयमालग १.१३०
कयलिधरग ४.२६०
कयलिहरग १.९
कयवणमालपिय २.१०५
कयवणमालपियजक्खायण २.११६
कयवम्मा १.९५
करकंडु २.१२०
कलंद ५.३९३
कलस १.११६, ४.२६३
कलहंस १.६०
कला १.१९, २.७८, २.९९, २.११५
कलापंडिय २.७८
कलाय ३.२११–२१२
कलायरिय २.८, २.२२, २.७८, ३.२०५, ४.२८५, ४.२८७–२८८
कलिंग २.१२०
कल्लाण ४.२४७, ४.२७४, ४.२८५
कल्लाणफलविवाग १.८६
कविल १.५४, ३.२०२–२०३
कसाय १.९१
कहण्ण ३.२३८
कहा १.८४
काउड्डावण ३.१८७, ३.२१४
काउसग्ग २.४५
काउस्सग्ग २.९१, २.९७
काकंद २.१७३
काकंदग २.१७१
काकंदय २.१७३
काकंदिया २.१७३
काकंदी २.९८–१००, २.५०, २.१०४
काक २.६१
काकणिरयण १.१२४, १.१४१
कागंदय २.१४४
कागणिरयण १.१२४, १.१२९, १.१३२, १.१३७
कागणिलक्खण २.८७, ४.३७५
कादंबग १.६०
कामगम १.१४, १.७९–८०
कामगुण १.९१
कामज्झया ६.४६५, ६.४६९–४७०
कामड्ढिय २.१७३
कामड्ढियगण १.१११
कामदेव ४.२९५, ४.३०४–३११
काममहावण २.६९, ३.२२४, ५.४०५
कामिड्ढी २.१७२–१७३
कायंदी १.१४२, २.९७, २.१०३
कायगुत्त १.२०, १.७२, १.८३, २.४८, २.११०
कायदंड १.९१
कायबलिय १.८२
कायसमिइ १.२०, १.७२, २.९९
कारुअवण्ण १.१३२
काल १.१३१, २.३, २.१०८–१०९, ३.२२०–२२१, ३.२२५, ६.४२५–४२६, ६.४२९–४३१, ६.४३३, ६.४३५
कालकुमार ६.४२५, ६.४२७
कालकूड २.११४
कालग २.१७४
कालमुह १.१२२
कालसिरि ३.३२०
कालासवेसियपुत्त २.१४७, २.१६६
कालिंजर २.१५
कालियदीव ६.४५५–४५६, ६.४५९
कालियसुअ २.१७५
कालिवडिसय ३.२१९, ३.२२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालिवडेंसग ३.२१९, ३.२२२
काली २.१०८, ३.२१९–२२६, ३.२३४–२३५, ६.४२५–४२६, ६.४३४
कालोदाई २.१६४–१६६, ४.३७६
कासव १.५, १.५५, १.५६–५९, १.६८, १.७६–७७, १.१११, १.११३, २.८३, २.९२, २.९७, २.१७१–१७५
कासवअ २.८३
कासवग १.१३२
काससिज्जिया २.१७३
कासवी १.१०२
कासिभूमि २.१५
कासिराय १.२७–२८
कासिवद्धण १.८८
कासिराय २.१२०
कासी १.३६, १.८६, ५.४०७, ६.६२४, ६.४३४–४३६
कासीराय १.३६, १.१०१
किंकम २.९२
किंपुरिस १.३२, १.३९, १.७९, १.१०३, १.१२६, ३.१९७–१९८, ४.२६०, ४.२७१, ४.२८३, ४.३०८
किंसुय १.६०
किड्डिविया ३.१९३
किढिणसंकाइय ४.२४६
किढिणसंकाइयग ४.२४४
किडिणसंकाइयग ४.२४४
किढिणसंकाइयगहियसभंडोवगरण ४.२४५
किण्णर १.१२६, ३.१९७–१९८
कित्तविरय १.१३८
कित्ती ३.२२६
किन्नर १.३२–३३, १.३९, १.७९, १.१०३, ४.२६०, ४.२७१, ४.२८३, ४.३०८
किविणकुल १.५७
किसुय १.६२
कीअ १.९१
कीत ५.३८५
कीयग ३.१९१
कीयगड २.२९, २.८२, २.११४, ४.३७३
कीलावणधाइ ४.२८७, ४.३७४
कीव ३.१९१
कुंजर १.११४
कुंडकोलिअ ४.२९५
कुंडकोलिय ४.३२७–३३१
कुंडग्गाम १.५४, १.६३
कुंडपुर १.६६, १.७२
कुंडल १.११४
कुंडला १.१३८
कुंडियायण ५.४०४
कुंडिल २.१७३
कुंती ३.१९५
कुथु १.८७, १.९४–१००, १.१०७–११०, १.१३९–१४०, २.१२०
कुंद १.१७, १.११६
कुंदाइमुत्त १.६०
कुंभ १.२८, १.३४, १.३६–३७, १.४१, १.४४, १.४५–४७, १.५५, १.५९, १.९५, १.१०१–१०२, १.११४
कुंभकारवण ५.४०७, ५.४०९–४१०
कुंभग १.३४–३५, १.३७–३९, १.४१–४४, १.४६–४७
कुंभगाम ५.३९८
कुंभय १.३०
कुंभार १.१३२
कुक्कुडलक्खण २.७८, ४.३७५
कुचर १.७६
कुज्जक १.१७
कुडागारसाला ३.२२८
कुणाला १.३५, ४.२६९, ४.२७२
कुणालाधिपति १.१०१
कुणालाहिवइ १.२७–२८, १.३५
कुत्तियावण २.३०, २.८२–८३, २.१३९
कुबेर १.१३६, २.१७३
कुमारधम्म २.१७४
कुमारसमण ४.२७०–२८६
कुमुअ १.१३८
कुरु १.३७
कुरुजणवय १.३८, ३.१९८
कुरुमइ १.१३९
कुरुराय १.२७–२८, १.१०१
कुलकर १.४, १.८९
कुलगर १.३–५
कुलगरइत्थी १.४
कुलधर ६.४५४
कुलत्थ २.४१–४२
कुवदेवया १.१२६
कुलधम ४.२४४
कुलिग १.१००
कुवलय १.६०
कुसील ३.२२२
कुसुमघरग ४.२६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुहंड १.७९
कूडागार २.१२
कूडागारसाला २.४९–५०. २.६०, ३.२२०, ४.२४३, ४.२५७, ४.२७८-७९, ४.२८३, ४.२८६ ६.४७५, ६.४९१–७९२
कूणिय २.१८, २.१०५, २ १०८–१०९, २.१३९, २,१४०, ४.२९५, ४.३०४, ४.३१७, ४.३२२, ४.३२८, ४.३३३, ४.३४२, ४.३५०, ४.३६३, ४.३६९–३७१, ६.४२४–४२५, ६.४२९–४३६, ६.४६६
कूवद्ददुर १.४०
कूवमह ५.३८२
कूवय २.२२, २.३३
केइयअद्ध ४.२६८–२६९, ४.२७२–२७३
केउमइ ३.२२५
केकइ १.१४२
केलास १.१३६, २.९२, २.९७
केवल १.४७, २.६६, २.८४
केवलकप्प १.५६, १.११८, १.१२०, १.१३१, १.१३४, १.१३७, २.४९, ३.२१९, ३.२२८, ४.२९०
केवलणाण १.७८
केवलणाणी १.८२
केवलनाण १.५२, १.९०, १.१०२, ४.२७६
केवलनाणिसंपया १.८७
केवलनाणी १.४७, १.५०, १.५२, १.८७
केवलवरणाणदंसण १.७८, २.२१–२२, २.३१–३२
केवलवरनाणदंसण १.५, १.२१, १.४७, १.५१–५२, १.५४, १.७४, १.८६, १.९०–९१, १.९९–१००, १.१०२, १.१३७, २.४३, २.४६, ३.२०७, ३.२१८
केवलि १.३, १.२१, १.७४, १.७८, १.८१, १.९०–९१, १.९४, १.१०४, १.१३७–१३८, २.२९, २.४८, २.६६, २.८२, २.१२४, ३.२१८, ४.२८३, ४.२८८, ४.३५७, ४.३६६, ४.३७५, ४.३९१, ४.३९३, ५.४०८, ५.४१०, ५.४१२, ५.४१८
केवलिनाण १.१०८
केवलिपण्णत्त २.११, २.४२, २.५४, २.१२७, ३.१८७, ३.२१४–२१६, ३.२२९
केवलिपन्नत्त ३.२३२, ४.२७४, ४.२८४
केवलिपरियाग १.५०, १.८६, १.९२, ३.२०९, ४.२८८, ४.३७५
केवलिपरियाय १.२३, १.५३, १.१३८
केवलिय २.१५०–१५१
केसर २.११८
केसरि १.१४३, ४.२६४
केसलोय १.९१, २.२०, २.११६, २.१४७, ४.२८८, ४.३७५
केसव १.१४३, २.४७, ३.१९५
केसि २.१०–११, २.१८, २.१३७, ४.२७०–२८६
कोंडियायण ५.४०५
कोउगभूइकम्म १.६६
कोउयकम्मे ३.१८८, ३.२१४
कोउयमंगल २.४७
कोउयमंगलपायच्छित्त १.४२, १.४३, १.६३, १.६५, १.६७, १.१२१, १.१२३, १.१२८. २.३, २.९, २.२५, २.२६, २.६१, २.७२, २.७४, २.७६, –७७, २.८३, २.१३४, ३.१८५, ३.१९३–१९४, ३.२१६, ३.२२०, ४.२६९, ४.२७८
कोंचस्सर १.१५
कोंचासण ४.२६०
कोंत १.११४
कोंती ३.१९५, ३.१९८, ३.२०५
कोच्छि २.१७४
कोज्ज १.६०
कोज्जय १.११६
कोट्टकीरिय २.६१
कोट्टणी १.११९
कोट्ठ ५.४०७
कोट्ठग ४.२७३
कोट्ठबुद्धि १.८२
कोट्ठय २.४९, ३.२२४, ४.२६९, ४.२७१, ४.३१२–३१३, ४.३१७–३१८, ४.३४७–३४८, ४.३५०, ४.३५४ ४.३५६, ४.३८९, ५.३९३, ५.४०२, ५.४०६–४०७
कोट्ठागार २.१६८, ३.१९५–१९६, ३.२०८, ३.२१२–२१३, ३.२१६, ४.२६८, ४.२७१, ४.२८६
कोडवाणी २.१७२
कोडाल १.५५–५९
कोडिण्ण १.६८, ३.१९१
कोडिन्न १.१११, १.११३, २.१७२
कोडिय २.१७१
कोडियगण १.१११, २.१७३
कोडिवरिसिया २.१७२
कोडुंबिय २.६१, २.१०५–१०६, २.१३३, २.१३७–१३९, ३.१८७, ३.१९०, ३.१९६, ३.२१६, ४.२८७, ४.२९५–२९६, ४.२९९, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४, ४.३४८, ४.३५१, ४.३५८, ४.३६२, ४.३६५, ४.३६९, ५.३८२, ५.४१४, ६.४५०, ६.४७०, ६.४८०, ६.४९४–४९५
कोणिय २.६९, २.९९, ३.२३४–२३५, ४.२६४–२६५, ४.२६७–२६८
कोत्तिय ४.२४४
कोरंटक १.१७
कोरव्व १.१३९, ४.२७०, ५.३८२, ५.३८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोरिटं १.६०, १.६३
कोल्ल १.६०
कोल्लाअ ४.२९५, ४.३०३, ५.३९७–३९८
कोसंबवण ३.२०९
कोसंबिया २.१७२
कोसंबी १.१४०, १.१४२, २.१०८, २.११३, ३.२२६, ३.२३६–२३७, ६.४७९–४८०
कोसल १.८६, ५.४०७, ६.४२४, ६.४३४–४३६
कोसलजणवअ ५.४०६, ५.४१३
कोसला १.२९
कोसलिय १.१९, १.२२–२३, १.९७–९८, १.१०५, १.१०८, १.११०–१११
कोसिय १.६८, २.१७१–१७५
कोहकसाय १.९१

(ख)

खंडप्पवायगुहा १.१३०
खंद १.३२, २.६१
खंदग २.९२, २.९७
खंदमह ४.२७०, ५.३८१, ६.४६०
खंदय २.९७–९८, २.१०३, २.१२३–१३०, २.१३७ २.१६५, ३.१८१, ३.२३६
खंदसिरी ६.४७१–४७३
खंदिल २.१७५
खंदिलाययरिय २.१७५
खंधारमाण २.७८, ४.३७५
खग्गपाणि ४.२६८
खग्गपुर १.१३९
खग्गरयण १.१२५
खग्गी १.१३८
खत्तिय १.६, १.२०, १.४७–५९, १.६१–६३, १.६६, १.९५, १.१०१, २.६६, ४.२७०, ५.३८२
खत्तियकुंड ५.३८१
खत्तिय कुंडग्गाम १.५७–५९, १.६३, ५.३८१–३८३, ५.३८५, ५.३८८
खत्तियपुत्त ५.३८२
खत्तियकुल १.५७
खत्तियपरिसा ४.२८२
खत्तियाणी १.५७–५९, १.६१, १.६३–६७
खलवाड ४.२८५
खिखिणीजाल ४.२६१
खीणरथ १.९४
खीरधाइ १.६७. ४.२८७, ४.३७४
खीरासव १.८२
खीरोदगसमुद्द १.२४
खीरोदयसमुद्द ४.२६३
खीरोयसायर १.७१
खुज्जा १.११५
खुड्डग ४.२६०
खुड्डाग सीहनिक्कीलिय १.८३
खेड ६.४५६
खेमंकर १.४
खेमंधर १.४
खेमपुरी १.१३८
खेमय २.९२, २.९७
खेमलिज्जिया २.१७३
खेमा १.१३८
खेलोसहि १.८२
खेल्लावणधाइ १.६७
खीयरस १.१०१

(ग)

गइकल्याण १.२२
गंग १.८८
गंगदत्त १.१४२, २.१४–१५, २.९२
गंगदत्ता ६.४८४–४८७, ६.४८९
गंगपुर ६.४९४
गंगा १.५९, १.११६, १.१३०–१३१, २.२९, २.८२, २.८७–८८, २.१३४, ३.१९२, ३.२०४–२०५, ४.२४४–२४५, ४.२६३, ४.३७२, ५.३८१, ५.३८४, ५.४०४, ६.४४८, ६.४६५
गंगादेवीभवण १.१३०
गंगेय ३.१९१
गंछिय १.१३२
गंधजुत्ती ४.३७५
गंधदेवी ३.२२६
गंधव १.३९
गंधव्व १.३२–३३, १.१०३, १.१२६, १.१३२, ३.१९७-१९८, ४.२६० ४.२७१, ४.२८३, ४.३०८
गंधव्वकन्ना १.३४, १.३७, १.४१
गंधव्वधरम ४.२६०
गंधव्वणिकायगण १.७९
गंधार २.१२०
गंधारी ३.२०८
गंधावइ ४.२६४
गंधिलावती १.१३८
गंधिल्ल १.१३८
गंभीर २.२०–२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गङ्गदत्त २.४९–५०
गज ३.१९५
गजसुकुमाल २.२३
गण १.४७, १.५२, १.१११, २.२०
गणग ४.२७८, ४.३६५
गणधर १.९२
गणनायग २.१३३, २.१३९, ४.२७८, ४.३५८, ४.३६५, ४.३६९
गणराय १.८६, ६.४२४, ६.४३४, ६.४३६
गणहर १.२२, २.२४–२५, १.४७, १.४९, १.५२, १.८५, १.१११–११३, २.१७१
गणिपिडगधारग १.११३
गणिय २.७८, २.१७३, ४.३७४
गद्दतोया १.४५
गद्दभाल २.१२३–१२४
गद्दभालि २.११८–११९
गन्धव्वाणी १.१३
गन्धारी ३.१११
गब्भघर १.२९
गब्भघरग ४.२६०
गब्भहरण १.११३
गय १.५५, १.५९, २.२२
गयलक्खण २.७८, ४.३७५
गयसुकुमार २.२६–३३
गरुल १.७०, १.१००, १.१०३, ४.२७१
गरुलवूह २.७८, ४.३७५
गरुलासण ४.२६०
गवक्खजाल ४.२६१
गवेधूया २.१७२
गह १.७९, २.११, २.२०, २.९२, २.९७–९८
गहग्गंह ४.२४६
गागर १.११४
गाम ६.४५६
गामंतिय २.१५३
गामचिंतग १.५४
गामरक्ख १.७६
गाह २.७८, २.१०३, ४.३७५
गाहावइ २.१६४
गाहावइपरिसा ४.२८२
गाहावइरयण १.१२७, १.१३२, १.१३४, १.१३७
गाहावति १.१०४
गाहावतिरयण १.१४१
गिद्धपट्ठ २.१२६
गिरिपडण २.१२६
गिरिमह ४.२७०
गिरिवर १.११४
गिलाणभत्त १.९१, २.२९, २.८२, ४.३७३, ५.३८५
गिहत्थधम्म १.५२, १.७१
गिहिधम्म ४.२८५, ४.२९३, ४.३६६, ४.३७१
गिहिलिंग १.१००
गीइय २.७८, ४.३७५
गीथ २.७८, ४.३७४
गुआर १.१३२
गुणरयण २.२१
गुणसिल ६.४२२
गुणसिलय १.११२, २.४९, २.६९, २.७९, २.८४, २.८९,–९८, २.१०२, २.१०४, २.१२३, २.१६३–१६५, ३.२१९, ३.२२३–२२४, ३.२२६–२२८, ३.२३३, ४.२४३, ४.२९०, ४.३४२, ४.३७६, ६.४२१, ६.४३६, ६.४४३
गुणहमड ६.४६१
गुणिपरिसा ६.४२३
गुत्त १.२०, १.७२, १.८३, २.९९, २.११०, ४.२६८
गुत्तपालिय ४.२६८
गुत्तबंभचारिणी ३.१८७, ३.२१४, ३.२२७
गुत्तबंभयारि १.२०, १.७२, १.८३. १.९०, २.१३, २.१८–२०, २.३०, २.३७, २.४९–५०, २.६७, २.९९, २.१०४, २.१०७, २.१०९, २.१२८
गुत्तबंभयारिणी ३.१८८, ३.२१०, ३.२२२, ३.२२९–२३०, ३.२३३
गुत्तिदिय १.७२, १.८३, २.९९
गुत्ति १.२१, १.७३, १.९०
मुत्तिसेण १.९४
गुलिया ३.१८७, ३.२१४
गूढदंत १.१३९, २.९८
गेय १.१७, ४.२५६, ४.२६४
गेवेज्जविभाण २.२०, २.९२, २.९७, २.१०३, २.१३१
गोट्ठामाहिल १.८८' ५.३८१
गोणलक्खण २.७८, ४.३७५
गोतम १.५५, २.१७४, ४·३४६
गोथुम १·१०१
गोदास २.१७२
गोदासगण १.१११, २.१७२
गोदोहिया १.७८
गोबहुल ५.३९४
गोमड १.२९, २.५१, ६.४६१
गोमायुपुत्त ५.३९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयम १.८६' १.१११-११३, १.१३९, १.१४१, २.५, २,१२, २.१४-१५, २.२०-२२' २.३३-३४, २.४९-५०, २.५८, २.६०, २.६६-६७, २.९१-९२, २.९८, २.१००, २.१०३-१०६, २.१०९' २.११९, २.१२४, २.१३०-१३२, २.१३५, २.१४०, २.१४८-१५०, २.१५५-१५६, २.१६४-१६५, २.१७१-१७५, ३.१८०, ३.२०६, ३.२२०, ३.२२२-२२३, ३.२२८, ३.२३१, ४.२४६, ४.२५३, ४.२५६, ४.२५७, ४.२६१, ४.२६८, ४.२८७-२८८, ४.२९०, ४.२९३-२९४, ४.२९९, ४.३०१, ४.३०२, ४.३०४, ४.३४६-३४७, ४.३५३, ४.३५६-३६०, ४.३७४, ४.३७६-३७७, ५.३९१-३९५, ५.३९७-३९८, ५.४००-४०१, ५.४१३, ६.४२४, ६.४२६, ६.४३५, ६.४६०-४६३, ६.४६६, ६.४७१-७२, ६.४७६-७७, ६.४७९-८०, ६.४८४, ६.४८८, ६.४९० ६.४९४-९६, ६.५००-५०२,
गोयमगोत्तकुमार २.१७४
गोयमपुत्त ५.४०४-४०५
गोयमिज्जिया २.१७३
गोरी ३.२०८, ३.२१०
गोवग्ग १.७३-७४
गोवालिया ३.१८६-१८९
गोविंद २.१७५
गोसाल ३.१८२' ४.३२९-३३०, ४.३३२-३३३, ४.३३६,-३३७, ३.३९३' ५.४०४, ५.४०६-४११, ५.४१३, ५.४१५, ५.४१८
गोसालग २.६४

(घ)

घंटा ३.२२८, ४.२४९, ४.२५८
घंटाजाल ४.२६१
घण १.१७
घणविज्जूया ३.२२४
घणिला १.१०२
घणुद्धथ १.९२
घण्टा १.१४-१५, २.४९
घोस ३.२२४

(च)

चउद्दसपुव्वि १.२२, १.११३
चउद्दसपुव्विसंपया १.२२, १.१०६
चउरंगिणी २.४७
चंद १.७९, १.८६, १.११३, १.११४, २.३०, २.४९-५०, २.८२, २.१३४, ३.२१९, ३.२२५, ४.३७०
चंदकंता १.४
चंदकलस १.१६
चंदच्छाय १.२७-२८, १.३०, १.३४-३५, १.१०१
चंदजस १.४
चंदणकलस ४.२५७
चंदणपायव ६.४५९-४६०
चंदणा १.८७, १.१०२, २.५०, २.५९, ३.२३४-२३६
चंदनागरी २.१७२
चंदपडिमा १.८३
चंदप्पभ १.९६, १.९८-१००, ३.२२५
चंदप्पभा १.७०-७१, १.१००, ३.२२५
चंदप्पह १.९५, १.१०९-११०
चंदप्पहा १.७०
चंदवडिंसय २.४९
चंदवडेंसय ३.२२५
चंदाणण १.९४
चंदाय १.४
चंदसिरी ३.२२५
चंदिम २.११, २.१९, २.९२, २.९७-९८, २.१०३, २.१०९
चंदिमा २.९८
चंदोतरण ६.४७९
चंदोवतरण ३.२३६-२३७
चंदोचरण ५.४०५
चंपग १.१७, १.२८, १.६०, १.११६, २.२२
चंपगवडिंसय ४.२५७
चंपगवण १.७०, ४.२५९
चंपय १.१०१
चंपा १.३०-३१, १.३३-३४, १.८५, १.१४०, २.५१, २.१०८-१०९, २.११४, २.१३७-१३८, २.१४०, २.१४२, २.१४५-१४६, २.१५६-१५८, ३.१७९-१८३, ३.१८६-१८८, ३.१९१, ३.२०२, ३.२२४, ३.२३४-२३५, ४.३०४-३०५, ४.३०८, ४.३१०-३११, ४.३६३-३६८, ४.३७०-३७१, ५.३८९-३९०, ५.४०५, ६.४२५, ६.४३०-४३३, ६.४३५, ६.४४४-४४७, ६.४७०
चंपिज्जिया २.१७३
चक्क १.११४
चक्कपुर १.१३९
चक्करयण १.११४-१२१, १.१२३-१२५, १.१२८-१३३, १.१३६, १.१४१
चक्कलक्खण ४.३७५
चक्कवट्टि १.५७, १.९३, १.९५, १.१२४, १.१३१, १.१३९, १४१, २.१५, २.१२०, ३.२०३, ३.२०५, ४.३७१
चक्कवट्टिपियर १.१३९
चक्कवट्टिमायर १.६३, १.१३९
चक्कवट्टिवंस १.९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्कवट्टिविजय १.१६, १.१३८
चक्कवह ४.३७५
चक्कवूह २.७८
चक्कहर १.६४
चक्काउह १.१०१
चक्काग १.६०
चक्किक्त १.५४
चक्खुकंता १.४
चक्खुदय १.१०, १.५६, १.८०, १.११२, ३.२२०, ४.३६६
चक्खुम १.४
चमर १.१५, १.२५, १.४६, १.१०१, १.१३३, २.३०, २.८२, २.१३४, ३.२१९, ४.२६५, ४.३७०, ६.४२४–४२५, ६.४९७–५०१
चमरचंचा १:१५, ३.२१९, ३.२२२–२२३, ६.४९७, ६.५०१
चमरुप्पाअ १.११३
चम्मापाणि ४.२६८
चम्मयर १.१३२
चम्मरयण १.१२७, १.१३०, १.१३२, १.१३७, १.१४१
चम्मलक्खण ४.३७५
चरणाणुओग ३.२३४
चरमतित्थयर १.५७, १.८५
चाउज्जाम १.१०३–१०४, २.२७, २.४२, २.५४, २.१६९–१७०, २.२०८, ४.२७०
चाउज्जामधम्म २.१४७, २.१५६
चाउरंत १.७४
चाउरंत चक्कवट्टि १.६४, १.११४, १.११८, १.१२०, १.१२४, १.१२६–१२७, १.१२९, १.१३१, १.१३८, १.१४०–१४१
चाउव्वण्ण १.७४
चाउस्साल १.९
चाउस्सालग १.९
चामरूक्ख १.१८
चार २.७८, ४.३७५
चारअ १.४
चारगसाला ६.४३० ६.४४०–४४३
चारण १.८२
चारणगण १.१११ २.१७२
चारित्तबलिय १.८२
चारुपाणि ४.२६८
चावपाणि ४.२६८
चित्त १.१०० २.१५–१६ २.१७४, ४.२६९, ४.२७०–२७६, ४.२८५, ६.४८१, ६.४८३
चित्तउत्त १.१०४
चित्तंग १.४
चित्तकणगा १.८
चित्तगर सेणि १.३७–३८
चित्तगुत्ता १.८
चित्तधरग ४.२६०
चित्तबहुल १.५, १.१९, १.५१–६२
चित्तरस १.४
चित्ता १.८, १.४९–५०, १.९९–१००
चित्ताहि १.४९
चिलाइपुत्त २.१६४
चिलाय १.१२४, २.१५९, २.१६०–१६३
चिल्लणा १.११२
चुअमंजरि १.१७
चुण्णजुत्ति २.७८, ४.३७५
चुण्णजोय ३.१८७, ३.२१४
चुलणी १.१३९, २.१५, ३.१८९–१९२, ३.१८६
चुलणीपिता ४.३१३–३१६
कुलणीपिया ४.२९५, ४.३१२
चुल्लसयग ४.३२४, ४.३२६–३२७
चुल्लसयय ४.२९५, ४.३२२–३२३, ४.३२५
चुल्लहिमवंतगिरि १.१२९, १.१३३–१३४, १.१३७
चुल्लहिमसंतगिरिकुमार १.१२८-१२९
चुल्लाहिमवंत पव्वय १.१२८
चूअमंजरी १.११६
चूयगवण ५.२५९
चूयवडिंसय ४.२५७
चेइय १.७८
चेइयमह ४.२७०, ५.३८२
चेइयरूक्ख १.१०१, १.१०४
चेड ४.२७८, ४.३६५
चेडग ३.२३६, ६.४३३
चेडय ६.४२६, ६.४३२, ६.४३४
चेत्त १.५९, २.४२, २.४८, ४.३६१
चेत्तसुद्ध २.१७४
चेत्तासोयपुण्णिमा २.४
चेलणा ६.४२१
चेल्लणा २.९३, २.९८, ३.२१९, ६.४२२–४२३, ६.४२५, ६.४२७–४३२
चोक्खा १.३९–४०
चोद्दसपुव्व २.२२, २.३७, ३.२१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दसपुव्वि १.४७, १.५०, १.५२, १.८३, १.८७ १.१०६–१०७, १.२१२, २.१७१
चोद्दसमयत्त १.२३
चोद्दसरयणीसर १.१२८
चोप्पाल ४.२६२
चोरपल्ली २.१६०–१६२, ६.४७१, ६.४७३, –४७५
चोरसेणावइ २.१६०–१६२

(छ)

छउमत्थपरियाग १.५०, १.८६, १.९२
छउमत्थपरियाय १.२३, १.५३
छंद २.१२३
छगलपुर ६.४७७
छट्ठक्खमण ४.२४४
छट्ठभत्त १.२०, १.४९, १.५२, १.७०, १.७२, १.७८, १.८६
छत्त १.११४
छत्तग्गा १.५४
छत्तपलास २.१२८
छत्तपलासय २.१२३-१२४
छत्तरयण १.१२७, १.१३२, १.१३६, १.१४१
छत्तलक्खण २.७८, ४.३७५
छत्ताह १.१०१
छन्निय ६.४७७
छरूप्पवाय २.७८
छलुय १.८८, २.१७२, ५.३८१
छल्ली ३.१८७, ३.२१४
छविच्छेद १.४
छिप १.१३२

(ज)

जइपरिसा ६.४२३
जउव्वेय १.५५, ३.१७९
जंतपीलग १.१३२
जंबवई २.३४, ३.२०८, ३.२११
जंबु १.१०१, १.११३, २.१६३-१६४, २.१७१-१७२, २.१७४-१७५, ६.४५९, ६.४४३-४४४
जंबुद्दीव १.३-६, १.११, १.२३, १.२६-२८, १.३३, १.४३-४५ १.४८ १.५१, १.५४-५८ १.६९, १.८९, १.९२-९५, १.१०२, १.१०४, १.११८, १.१२०, १.१२६, १.१२९, १.१३८-१४३, २.१२, २.१४, २.१८, २.२०, २.४९, २.५०, २.६०, २.६२, २.६९, २.७५, २.८७, २.८९, २.१०५, २.१३६, २.१४४-१४५, २.१६७, ३.१८२, ३.१८९, ३.१९६-१९७, ३.१९९-२००, ३.२०२-२०३, ३.२०९, ३.२१८-२२०, ३.२२८, ३.२३१, ४.२४६-२४९, ४.२५३, ४.२५७, ४.२६८, ४.२७६, ४.२९०, ४.३०८, ४.३१०, ५.४१३, ५.४१७, ६.४२५, ६.४६२, ६.४६४, ६.४६६, ६.४७०, ६.४७२, ६.४७७, ६.४७९, ६.४८१, ६.४८५, ६.४८८, ६-४९०, ६.४९५–९६, ६.४९८
जंबुसिरी ६.४८३
जंभग १.१९, १.४५-४६
जंभियगाम १.७८
जक्ख १.३२-३३, १.३९, १.७९, १.१०३, २.१७-१८, २.३५, २.३७, २.९३–९५, २.१०५, २.१०७-१०८, २.११०-११२, २.१४४-१४६, ४.२७१, ४.३०८
जक्खकन्ना १.३४, १.३७. १.४१
जक्खदिन्ना २.१७२
जक्खमह ४.२७०, ५.३८२
जक्खा २.१७२
जक्खायतण २.२०
जक्खाययण २.१७, २.१८, २.३४-३५, २.३७, २.९३, २.९५, २.१०५, २.१०७, २.१४४
जक्खसिरी ३.१७९
जक्खिणी १.५०, १.१०२, ३.२१०
जगईपव्वयग ४.२६०
जजुव्वेद २.५७, २.१२३, २.१३१
जजुव्वेय २.३८
जट्ठामूल ४.३६१
जणवयकल्लाणिय १.१३२, १.१३५, १.१३७
जणवाय २.७८, ४.३७४
जण्ण ५.३८२
जण्णदत्त २.१७२
जत्ता २.४०
जन्नई ४.२४४
जम १.१४०, २.१३४, ४.२४४
जमालि १.८८, २.१०-११, २.१८-१९, २.९९, २.१०५, २.१३९ ३.२२७, ५.३८१,-३८७, ५.३८९-३९२
जयंत १.२७, १.१४३, २.२९८, २.१७१
जयंति १.७, १.१००, १.१३९, १.१४२, २.१७४, ३.२३६–२३९
जय १.१०१, १.१३९, २.१२०
जयद्दह ३.१९१
जया १.९५, १.१३९
जरासंध १.१४३
जरासंधसुय ३.१९१
जलकंत ३.२२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलणप्पवेस २.१२६
जलप्पभ ३.२२४
जलवासी ४.२४४
जलवीरिय १.१३८
जलाभिसेयकठिणगाभूय ४.२४४
जल्लोसहि १.८२
जवणदीव १.१२२
जवणिज्ज २.४०
जसंस १.६८
जस १.५२, १.१०१ १.१११
जसम १.४
जसभद्द १.११३, २.१७१–१७३, २.१७५
जसवंस २.१७५
जसवती १.६८, १.१३९
जसा २.१२०
जसोया १.६८
जसोहरा १.८
जाइ १.६०
जाइमंडवग ४.२६०
जाइसरण १.४४, २.८९
जाइस्सर २.१७१, २.१७३
जाईसरण २.८७, २.११५, २.१२०
जाणविमाण ४.२४९–२५३, ४.२५६
जाणसाला २.४४, २.१६८, ४.३६८, ६.४२२
जातकम्में ३.२३०
जातीसरण २.११
जायकम्में १.२८
जालंधर १.५५–५९
जालंधरायण १.५५, १.५७
जलधरग ४.२६०
जालघरय १.२९
जाला १.१३९
जालि २.३४, २.९७–९८, ३.२०८
जालीकुमार २.९८
जावय ४.२६६
जिण १.१०, १.२१–२२, १.५०, १.५२, १.५४, १.५६, १.७८, १.८०–८१, १.८३, १.८७, १.९०, १.९८, १.१०१, १.१०४, १.१०६, १.१०८, १.१११, १.११२, २.१२४, ४.२६६, ४.२८८
जिणधर ३.१९३
जिणधदत्त ३.१८२–१८५
जिणदत्तपुत्त ६.४४५, ६.४४७
जिणदास २.१०४, २.१०८
जिणपडिमा ४.२६५–२६७
जिणपालिय २.१४०, २.१४६–१४७
जिणमाया १.९५
जिणरक्खिय २.१४०, २.१४५–१४६
जिणवर १.६९–७०, १.९५, १.१००–१०२
जिणवरिंद १.१००–१०१, १.१०८
जिणवसह १.९४
जिणसासण २.११९
जिणिंद १.९८, १.१००, १.१०८
जिणिंदपण्णत २.१४७
जिणुज्जाण ६.४३६, ४.४३९–४४०
जिणेसर १.१०९
जियकप्पिय १.५१, १.७१
जियभय १.१०, १.५६
जियराग १.९४
जियसत्तु १.२७–२८, १.३९–४४, १.४७, १.९५, १.१०१, २.२२, २.५१–५५, २.९८,–९९, २.१०४, २.१०८, २.१५६, ३.२२०, ३.२३३–२२४, ३.२२६, ४.२६९, ४.२७१–२७२, ४.२९५, ४.३०४, ४.३१२, .३१७, ४.३२२, ४.३२७–३२८, ४.३३२–३३३, ४.३४७–३४८, ४.३५०, ६.४७९
जियारी १.९५
जीयकप्पित १.९०
जीयकप्पिय १.४९
जियधर २.१७५
जीव २.१२५, ३.२३८–२३९
जीवकाय २.१६४
जीवणिकाय १.२२, २.१६४
जीवदय १.१०, १.५६, १.८०, ३.२२०, ४.३६६
जीवनिकाय १.६८, १.९१
जीवनिकाय धम्में १.९१
जीवपएसिय १.८८, ५.३८१
जुग १.११४
जुगंतकडभूमि १.५०, १.८८
जुगंतकरभूमि १.२३, १.४८
जुगबाहु १.९५, २.१०७
जुण्णकुमोरी ३.२२०, ३.२२६
जुत्त ४.२६८
जुत्तपालिय ४.२६८
जुत्तिसेण १.९४
जुत्ती २.१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुद्ध २.७८, ४.३७५
जुद्धाइजुद्ध २.७८, ४.३७५
जुयंतकडभूमि १.५३
जुहिट्ठिल्ल ३.१९१, ३.१९८, ३.२००, ३.२०६–२०७, ३.२०९, ३.१९७
जूय १.११४, २.७८, ४.३७४
जूहिय १.६०
जूहियामंडवग ४.२६०
जेट्ठामूल २.४२, २.८६–८८
जेहिल २.१७४
जोइस १.१४, १.१९, १.२८, ४.२५३
जोइसराय २.४९
जोइसिय १.१५, १.१८, १.२४, १.४७, १.६५–६६, १.६९, १.७८–७९, २.२४७
जोणय १.१२२
जोणिय १.११५
जोतिसामयण २.१२३
जोतिसिय १.७४
जोह ५.३८२

(झ)

झय १.५५, १.५९
झस १.११४
झुसिर १.१७

(ठ)

ठइत्तय ४.३७३
ठविय २.२९, २.८२
ठिइकल्लाण १.२२

(ण)

णंगल १.११४
णंदण १.१४२
णंदणवण १.१६, १.२४, ४.२६४
णंदा १.७, ४.२६२
णंदापुक्खरिणि ४.२६५
णंदावत्त १.११४, १.११९
णंदिघोस १.१५
णंदियावत्त १.१४, १.७९, १.११६
णंदिवद्धण १.६८
णंदिवद्धणा १.७
णंदिस्सर १.१५
णंदीसक्ख १.१०१
णंदीसखर १.१३, १.२५
णंदुत्तरा १.७
णक्ख २.१७४
णक्खत्तदेवगण १.७९
णग्गोह १.१०१
णट्ट १.१७, ४.३७४
णट्टमालग १.१३०
णट्टाविहि १.१७, १.१३१, ४.२५४–२५६, ४.२६४
णन्दावत्ता १.१७
णमि १.९५, १.९७, १.९९, १.१२९
णमोकार १.३
णरिंदचंद १.११९
णलिण १.९२, १.१३८
णलिणगुम्म १.९२
णवणिहि १.१३०
णवणिहिवइ १.१३१
णवमालिय १.१७, १.६०, १.११६, १.१२५
णवमालियामंडवग ४.२६०
णवमिया १.८
णाग १.१५, १.७०
णागकुमार १.१२६–१२८
णागज्जुणायरिय २.१७५
णागदंत ४.२५८
णागदत्ता १.१००
णागपइ १.७९
णागरुक्ख १.१०१
णागलयामंडवग ४.२६०
णागासुर १.११७
णाणिंद १.७०
णाडग १.१३२, १ १३५, १.१३७
णाडगविहि १.१३१
णाणबलिय १.८२
णाभि १.४, १.५, १.९, १.९५
णामंकियसर १.११८
णामेहियंक १.११८, १.१२०
णायकुलविणिक्वत्त १.६८
णायपुत्त १.६८, २.६४, २.१६५
णायसंड १.७०
णायसंडवण १.७२
णाया ५.३८२
णायाधम्मेकहा ६.४४४, ६.४४७, ६.४४९, ६.४५९
णालंदा २.१४८
णालियाखेडु ४.३७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिक्कसा १.१०४
णिग्गोह १.२१
णिण्हग १.८८
णिमेंग्गजला १.१२४
णियंठ १.१०४
णियंठीपुत्त १.१०४
णिव्वुत्तिकरा १.१००
णिव्वेयणी १.८४
णिसठ २.२०, ४.२६४
णिस्संग १.१७
णिहिरयण १.१३०–१३१, १.१४१
णीरय १.१७
णीलपाणि ४.२६८
णीलवंत ४.२६४
णेमिंपास १.१११
णेमिं १.९७–९९
णेसप्प १.१३१–१३२

(त)

तंतुवायसाला ५.३९५–३९७
तंबोलिमंडवग ४.२६०
तंबोलिय १.१३२
तच्चा ६.४६४
तडागमेंह ५.३८२
तत १.१७
तत्तवइ २.१०८
तमो १.१४४
तथासुहा १.६२
तयाहार ४.२४४
तरुणीपडिकम्मं २.७८, ४.३७५
तरुणपडण २.१२६
तलवर २.६१, २.१०५–१०६, २.१३३, २.१३७–१३९, ३.१८७, ३.१९०, ३.१९६, ३.२१६, ४.२७२, ४.२७८, ४.२९५, ४.२९६, ४.२९९, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४–३३५, ४.३४३, ४.३५१, ४.३५८ ४.३६२, ४.३६५, ४.३६९ ५.३८२ ५.४१४ ६.४५० ६.४६९–४७० ६.४८०. ६.४९४–४९५
तवभवमेंरण २.१२६
तवसीलव्वयगुणवेरमेंणपच्चक्खाण १.३३
तस २.६४–६५, २.११३, २.११८, २.१४८–१५०, २.१५२, २.१५४–१५५
तसकाइय १.९१
तसकाय १.७५, २.१५३, २.१६६
तसजीव १.७५
तामरस १.६०
तामलि २.६०–६३
तामलित्तिया २.१७२
तामलित्ती २.६०–६३
तायत्तीस १.१५–१६, १.२४, ४.३०८, ६.४९९
तायत्तीसग १.१०, १.५६
तारय १.१०, १.५६, १.८०, १.१४३, ४.२६६
तारा १.७९, १.१३९, २.११, २.२०, २.३०, २.८२, २.९२, २.९७–९८, २.१०३, २.१३४
ताराइण २.५०
तालपिसाय १.३१, १.७३
तालपिसायरूव १.३२
तालपुडविस ६.४३०
तावत्तीस १.८०
तावस २.१७१, २.१७३
तिगिच्छ ४.२६४
तिगिछी २.१०८
तिगुत्तिगुत्त २.११४, २.११८
तिण्ण १.१०, १.८०, ४.२६६
तितालाउय ३.१७९-१८२
तित्थ १.६९, १.८८, १.९५
तित्थंकर १.९२
तित्थकर १.५५, १.९३–९५, १.१००
तित्थकरातिसय २.५८
तित्थगर १.६–७, १.२४, १.५४, १.५६, १.८०, १.८५, १.९४–९५, १.१०१–१०२, १.१०४, १.११२, २.३५, २.७९. २.९०, २.१३२, २.१३६, ३.२१९, ३.२२०, ४.२६६
तित्थगरचिइगा १.२४–२५
तित्थगरणामगोत्त १.८८
तित्थगराइसय २.१४, २.१३९, ३.२२१, ३.२२७
तित्थप्पवत्तय १.१०२
तित्थयर १.६–११, १.१३–१४, १.१८–१९, १.२३, १.२४, १.२७–२८, १.५५–५६, १.६९, १.९२, १.९४, १.९८, १.१००, १.१०२–१०३, १.१०८, १.१४०, २.१०७–१०८, ४.३६६
तित्थयरजन्माभिसेयमहिमा १.२८
तित्थयरजम्मणाभिसेय १.६६
तित्थयरनामगोथ १.२७
तित्थयरनामबंध १.४८
तित्थयरमाया १.६–९, १.१३, १.६१
तित्थयरामिमुह ४.२४७, ४.२५४
तित्थयराभिसेय १.१६, १.१८, १.४६, १.६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थाभिसेय १.३९–४०
तित्थाहिवत्त १.५४
तिदंडिवय १.५४
तिन्न १.५६
तिमिसगुहा १.१२१–१२५, १.१३०
तिरिक्खजोणिय १.५२, १.९०
तिरिथजंभग १.६४
तिलग १.११६
तिलय १.१७, १.६०, १.१०१, १.१४३
तिविट्ठ १.१४४
तिविट्ठु १.१४२–१४३
तिसला १.५७–५९, १.६१, १.६३–६८, १.९५
तीसगुत्त १.८८, ५.३८१
तीसभद्द २.१७२
तुंगिय २.१७५, ४.२८९–२९०
तुंगियायण १.११३, २.१७१
तुच्छकुल १.५७
तुच्छजीवी ५.३९२
तुच्छाहार ५.३९२
तुरगवर १.११४
तुसिया १.४५
तेउकाय १.७५, २.१६६
तेउलेस्सा ५.३९९
तेंदुग १.१०१
तेथलि ३.२१३, ३.२१६, ६.४९५
तेयलिपुत्त ३.२१२–२१८
तेयलिपुर ३.२११–२१२, ३.२१४, ३.२१७–२१८
तेथलेस्सा २.१६६
तेयवीरिय १.१३८
तेरासित ५.३८१
तेरासिय १.८८
तेलियापिया ४.३५०
तोअधारा १.१८
तोयधारा १.६–७, १.१८
तोरण ४.२४९, ४.२५८–२५९
थणिय १.१५, १.७९

(थ)

थमिअ २.२१
थवईरयण १.११९
थारुगिणिया १.११५
थालई ४.२४४
थावच्चा २.३५, २.३६–३७
थावच्चापुत्त २.३४, २.४०, २.४२–४३, २.९९, २.१०४
थावर १.७५, २.६४–६५, २.११३, २.११८, २.१४८–१५०, २.१५४–१५५
थिमिअ २.२०
थिरगुत्तखमासखमण २.१७४
थूभमह २.९९, ५.३८२
थूभकरंडउज्जाण २.१०७
थूलभद्द २.१७१–१७२, २.१७५
थेरावली २.१७१–१७२
थोव १.८६

(द)

दंड १.२९, १.९१, १.११४, ४.२६९, ६.४२७, ६.४८१
दंडनायग २.१३३, २.१३९, ४.२७८, ४.३५८, ४.३६५, ४.३६९
दंडनीति १.४
दंडपाणि ४.२६८
दंडरयण १.१२३, १.१३२, १.१३६, १.१४१
दंडलक्खण २.७८, ४.३७५
दंडवीरिय १.१३८
दसणबलिय १.८२
दक्ख १.१५
दक्खिणकुल ४.२४४
दगपासायग ४.२६०
दगमंचग ४.२६०
दगमंडव ४.२६०
दगमट्टिय २.७८, ४.३७५
दगमालग ४.२६०
दट्ठी विससप्प २.१४३
दढधणु १.४
दढनेमि २.३४, ३.२०८
दढपइन्न ४.२८८
दढरह १.४, १.९५, २.१७
दढाऊ १.१०४
दत्त १.४, १.१४२, १.१४४, २.४९–५०, २.१०८, ६.४९०, ६.४९२–४९३
दद्दर १.१६
दद्दुखडिसय ४.२९०, ४.२९४
दधिवण्ण १.१०१
दन्तवाणिय ४.२७५
दन्तुक्खालिय ४.२४४
दप्पण १.१७, १.११६
दमगपुरिस ३.१८५–१८६
दमघोससुय ३.१९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दमणग १.१७, १.२८
दमणय १.६०
दमदत ३.१९१
दमिली १.११५
दरिद्रदकुल १.५७
दरिमह ४.२७०
दव्वसोय २.३८
दसण्ण २.१५, २.१२०
दसण्णभद्द २.१२०
दसधणु १.४, २.१७
दसपुर १.८८, ५.३८१
दसरह १.४, २.१७
दसार २.१७, २.२०, २.३४–३५, २.४७, ३.१९०, ३.१९१, ३.१९३, ३.१९५, ३.१९९
दसारचक्क २.४७
दसारमडल १.१४२–१४३
दसारवंस १.९२
दहमह ५.३८२
दहिमुहग १.२५
दहिमुहगपव्वय १.२५
दहिवासुयमंडवग ४.२६०
दाणधम्म १.३९–४०, २.३८
दाणव १.३२–३३, १.३९, १.४५, १.१२६, ३.१९७–१९८, ४.३०८
दाणविद १.४६, १.९५, १.१४३
दाणसाला ३.१८६
दाम ६.४२७
दामदुग १.७३–७४
दारुअ १.१०४, २.२२, २.३३
दारुइज्जपव्वयग ४.२६०
दारुमड १.१०४
दासीखव्वडिया २.१७२
दाहिड्ढभरह २.६९, २.८७
दाहिणड्ढभरह १.५४, १.५६, १.१३५, २.१७, २.३४, २.७५, ३.२०५
दाहिणड्ढभरहवास ३.१९५, ३.१९९
दाहिड्ढलोगाहिवइ १.१०, १.५६, ४.३०८
दाहिणड्ढभरह १.५५
दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेस १.५४, १.५७
दाहिणवेयावलि ३.२०९
दिट्ठंतिय १.१७
दिणयर १.५५, १.५९, १.७३–७४
दिण्ण १.९५, १.१०१–१०२
दिन्न २.१७१, २.१७३
दिव्व २.५२, १.९०
दिसा १.१५
दिसाकुमार १.७९
दिसाकुमारी १.६–१०, १.१४, १.२८
दिसापोक्खियतावस ४.२४३
दिसापोक्खी ४.२४४
दिसासोवत्थिय १.५४
दीव १.१५, १.७९
दीवायण १.१०४, ३.२०९
दीविगमड १.२९, ६.४६१
दीहदंत ११३९, २.९७–९८
दीहबाहु १.९५
दीहमद्द २.१७२
दीहसेण २.९८
दीहासण ४.२६०
दुआउक्ख १.१०४
दुज्जोहण ३१९१, ६.४८१–४८२
दुतितिक्ख १.१०४
दुपय ३.१९६
दुपस्स १.१०४
दुब्भिक्खभत्त १.९१, २.२९, २.८२, ४.३७३, ५.३८५
दुम २.९८
दुमसेण १.१४२, २.९८
दुम्मुह २.२२, २.३३, २.१२०, ३.१९५
दुय १.१७
दुरणुचर १.१०४
दुवय ३.१८९–१९४' ३.२०७
दुविट्ठु १.१४२–१४३
दुव्विभज्ज १.१०४
दुसमदुसमा १.५०, १.८६
दुसमसुसमा १.५४
दुस्समसुसमा १.५५
दूइपलासय २.९७, २.९५' ४.२९९, ४.३००, ६.४६५
दूतिपलास २.३, ४.३६०
दूय २.१३३, ४.२७८, ४.३५८, ४.३६९
दूयसधिवाल ४.३६५
दूसगणि २.१७५
दूसमसूसमा १·१५३
देव १.३२, १.३९, १.४५, १.१००, १.१२६, १.१२८, ३.१९७–१९८, ४.२८३, ४.३०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवई १.१०४, १.१४२, २.२३–२६, २.२८, २.४७, ३.२०८
देवउत्त १.९४, १.१०४
देवकन्ना १.३४, १.३७, १.४१
देवकुमार ३.२२८, ४.२५४–२५६
देवकुमारिया ४.२५४
देवकुमारी ४.२५५–२५६
देवगुरू १.१००
देवकुल १.६४
देवड्ढिरवमासमण २.१७४, २.१७५
देवणिकाय १.६९
देवदत्ता ३.१८८, ६.४४५–४४६, ६.४५९, ६.४९०, ६.४९२–४९४
देवदिन्न ६.४३९–४४०
देवदूस १.२०, १.२४, १.४९, १.५२, १.७२, १.९०, २.१३, २.४९, २.६२, ३.२२२–२२३, ३.२३१, ४.२६५
देवपरिसा १.७१' ६.४२३
देवरमण २.१०८, ६.४७६
देवसम्म १.९४
देवसरिस २.५०
देवसेण १.८९–९०, २.२२, ५.४१४
देवाणंद १.९४
देवाणदा १.५५–५९, १.८६, २.२४, २.५७–५९, ३.२१५, ३.२२७, ३.२३७, ३.२३९
देवासुर १.१०३, ४.२७१
देविंद १.४६, १.८०, ६.४२५, ६.४३६
देवी १.९५
देवेसर १.९४
देवोववाय १.१०४
देसणा १.९१
देसावगासिय २.१५३
देसिगणिखमासमण २.१७४
देकिरित ५.३८१
दोकिरिय १.८८
दोच्चा ६.४६४, ६.४६९
दोण ३.१९१
दोणमुह ६.४५६
दोवई ३.१७९, ३.१८९–१९६, ३.१९८–२००, ३.२०२–२०३, ३.२०५–२०७
दोवारिय ४.२७८, ४.३६५
दोसबंधण १.९१
दोसिणाभा ३.२२५

(ध)

धट्टज्जुण ३.१९९, ३.१९२, ३.१९४
धट्टज्जुणकुमार ३.१९०–१९१
धण २.१५६–१५९, २.१६१–१६४, ६.४३६, ६.४३८–४४४, ६.४५०, ६.४५२, ६.४५४
धणगिरि २.१७३–१७४
धणगोव २.१५९, ६.४५०
धणड्ढ २.१७२
धणदेत्त १.१४२
धणदेव २.१५९, ६.४५०, ६.४९५
धणपाल २.१०८, २.१५९, ६.४५०
धणरक्खिय १.१५९, ६.४५०
धणवइ २.१०४, २.१०८, ६.३६२
धणावह २.१०७
धणु १.११४
धणुवेय २.७८
धणुव्वेय ४.३७५
धण्ण २.९८–१०४, २.१०६
धण्णंतरी ६.४८५
धन्न १.१०१
धन्ना ४.३१७–३१८, ४.३२०–३२१
धम्म १.३ १.२२ १.९४-९६ १.९८-१०० १.१०३-१०४ १.११२ २.३ २.११-१२ २.१६ २.१८ २.२१, २.२४ २.२७, २.३५-३६, २.३८-४०, २.४२-४३, २.४८-४९, २.५४-५५, २.५९, २.६४-६८, २.८०, २.९६, २.९९, २.१०२, २.१०५, २.१०७-१११, २.११४, २.१२१, २.१२७, २.१३१-१३२, २.१३५, २.१३७, २.१५०-१५१, २.१५८, २.१६३, २.१६५, २.१६७-१६९, २.१७४,-१७५, ३.२१४-२१६, ३.२२९, ३.२३२, ४.२७०, ४.२७४, ४.२८४,-२८५
धम्मकहा २.११, २.६९, २.८०, २.१०२, २.१०४, २.१२७, २.१३८, ३.२१९, ३.२२७-२२८, ४.२८५
धम्मघोस २.१०-११, २.१०५, २.१०८, ३.१७९-१८१
धम्मज्झय १.९४
धम्मणायग १.१०
धम्मतित्थ १.४६, १.७१, १.१०४
धम्मत्थिकाय २.१६४-१६५
धम्मदय १.१०, १.५६, ४.२६६, ४.३६६
धम्मदेसय १.१०, १.५६, १.११२, ४.२६६, ४.३६६
धम्मनायग १.५६, ४.२६६, ४.३६६
धम्ममित्त १.९५, १.१०१
धम्मरयण १.१२२
धम्मरुइ २.१०८, ३.१७९-१८१
धम्मवरचक्कवट्टि १.६४
धम्मवरचाउरतचक्कवट्टि १.१०, १.१७, १.५६ १.८०, १.११२, ३.२२०, ४.२६६, ४.३६६
धम्मवीरिय २.१०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मसारहि १.१०, १.५६, १.११२, ४.२६६, ४.३६६
धम्मसीह १.९५, १-०१, २.१०८
धम्मसेण १.१४२
धम्मा ३.२२६
धम्मायरिय १.८८, १.१४२-१४३, २.१६५, २.१७०, ४.२७३, ४.२८५-२८६
धम्मिया ३.२३७
धर १.९४-९५, ३.१९१
धरण १.२६, १.१३३, २.२१, २.३०, ३.२२४, ४.२६५, ४.३७०, ६.४९०
धरणि १.१०२, २.८२, २.१३४
धरणिधरा १.१०२
धाइयऊक्ख १.१०१
धायइसंड १.९३, २.१३६, ३.१९५, ३.२००, ३.२०२-२०३
धायइसंडदीव १.१३९, ३.१९९
धायति १.५२
धारणा ४.२८६
धारिणी १.२६, १.३९, १.१०२, २.२०-२१, २.३३-३४, २.५१, २-६९-७७, २.८०, २.८५, २.८९, २.९७-९८, २.१०५-१०६, २.१३३ ४.२४६, ४.३६५, ६.४९१
धिइ ३.२२६
धिइहर २.९२, २.९७
धिक्कार १.४
धीवर १.१३२
धूमकेतु १.७९
धूमप्पभा ५.४१६
धूममह ४.२७०

(न)

नईमह ४.२७०, ५.३८२
नउल ३.१९१
नंद १.४७, १.५०, १.१०४, १.१४३, ४.२९०, ४.२९२-२९३
नंदण १.५४, १.९५, १.१४३-१४४, २.६०, २.१०८, २.११३
नंदणभद्द २.१७२
नंदणवण २.१७, २·१९, २.२०–२१, २.३४–३५, २.३७, २.१०८, ३.२१०–२११, ४ २६०, ४ २६८
नंदमत्त १.१४३
नंदवई ३.२३३
नंदा १.९५, २.६९, २.९८, ३.२३३–२३४, ४.२६२-२६३, ४.२६६, ४.२९१–२९४, ६.४२७, ६.४४५–४४६
नंदापुक्खरिणि ४.२६७
नंदिज्ज २.१७२
नंदिणीपिया ४.२९५, ४.३४७–३४९
नंदिपुर ६.४८८
नंदिफल २.१५७–१५८
नंदिमित्त १·४७
नंदियावट्ट १.८०
नंदियावत्त २.८४
नंदिग्राय ३.१८१
नंदिलखवण २.१७५
नंदिल्ल २.१७५
नंदिवद्धण १.८६, ६.४८१, ६.४८३
नंदिसुत्त २.१८५
नंदिसेण १.९४
नंदिसेणिया ३.२३३
नंदी ४.२७६, ६.४५९
नंदीसर १.४७–४८
नंदीसरवर १.२५, ४.२५२
नंदीसरवरदीव १.२८
नंदुत्तर ३.२३३
नक्खत्त २.११, २.२०, २.९२, २.९७–९८, १.१०३, २.१७४–१७५
नगर ४.२७८, ४.३६५, ६.४४२
नगरगुत्तिय २.१६२, ४.२७८–२८०, ६.४४०–४४१
नगरमाण २.७८, ४.३७५
नग्गई २.१२०
नग्गोह १.२२
नट्ट २.७८
नट्टविहि २.१२, २.४९, २.५०, २.२६०, २.६२, ३.२२६, ३.२२८, ४.२४३, ४.२५३, ४.१६४, ६.५०१
नट्टसाला ४.२८५
नमि १.९४, १.१००, १.१०५ १.१०७, १.११०, २.५५–५७, २.१२०
नमिनाह १.१०९
नम्मुदय २.१६४
नरनाहत्त १.५४
नरिंद १.४५, १.६३
नलवण १.८३
नलिणिवण २.१६७–१६८
नलिणीगुम्म २.१०८
नलियाखेड्ड २.७८
नवमिया ३.२२५
नाइल २.१७१
माइलकुल २.१७५
नाइली २.१७४
नाग १.२८, १.३२, १.६०, १.८६, १.१००, १.१०३, १.१३३, २.२२, २.२४, २.२५, २.३०, २.८२, २.१३४, २.१७२, २.१७४, ४.२७१, ४.२८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नागकन्ना १.३४, १.३७, १.४१
नागघर १.२९–३०
नागजणय १.२९
नागज्जुण २.१७५
नागदत्त २.१०८
नागपुर ३.२२५
नागभूय २.१७२
नागमह ४.२७०, ५.३८१
नागमित्त २.१७२
नागसिरी ३.१७९–१८२, ३.२०७
नागहत्थि २.१७५
नागिंद १.४६
नाभि १.४–५
नामकरण १.२८
नामुदय २.१६४
नाय ४.२७०, ५.३८८
नायकुमार १.४७
नायकुल १.६४–६५
नायकुलचंद १.७१
नायपुत्त १.७१, २.१६४, ४.३६०, ५.४०३
नारय १.१०४
नारायण १.१४२
नारिकंता ४.२६४
नारूअ १.१३२
नालंदा १.८५, ५.३९५–९७
निक्खित्तसत्थ १.९४
निगम ४.२७८, ४.३६५, ६.४४२
निग्गंथ १.२२, १.२६, १.३२–३३, १.८२, १.८५, १.८७, १.९०–९२
निग्गंथा १.२२, १.८७
निघंटु १.३९, १.५५, २.१२३
निजुद्ध २.७८, ४.३७५
निज्जर ४.२७१
निज्जीव २.७८, ४.३७५
निन्नय ६.४७२
निप्पुला १.१०४
निब्बुड्डभंडसार ६.४६९
निमज्जग ४.२४४
निम्मम १.१०४
नियइपव्वयग ४.२६०
नियतिवाद ४.३२९
नियाग २.११४
नियाणकारण १.१४२–१४३
नियाणभूमि १.१४२–१४३
निरंभा ३.२२४
निरुत्त २.१२३
निवयउप्पय १.१७
निसढ १.२६, २.१७–१९, ३.१९५
निसुंभ १.१४३
निसुंभा ३.२२४
नीति १.२९
नीलवंत २.१६७
नीलासोग २.१०८
नीलासोय २.३८, २.४०, २.४३
नीहारिम २.१२७
नेमि १.९४, १.१००, १.१०९

(प)

पइट्ठ १.९५
पईव ३.१९५
पउम १.९१, १.९८, १.१०१, १.११४, १.१३९, १.१४२, –१४३, २.१०८–१०९, २.१७४, ३.२२६, ४.२६३
पउमगुम्म १.९२, २.१०८
पउमजाल ४.२६१
पउमद्धय १-९२
पउमनाभ ३.१९५, ३.१९६–१९७, ३.१९९–२०३
पउमनाह ३.२०४
पउमपभ १.९५–९६, १.१००, १.१०९
पउमप्पह १.९८
पउमभद्द २.१०८
पउमवडेसय ३.२२५
पउमसर १.५५, १.५९, १.७०, १.७३–७४
पउमसिरी १.१३९
पउमसेण २.१०८
पउमा १.९५, १.१०२, २.१७४, ३.२२५
पउमावई १.८, १.२९-३०, २.१८, २.३८, २.१०८-१०९, २.१६७, ३.२०८-२११, ३.२१३, ३.२१६, ३.२२५, ३.२३३, ६.४२५, ६.४३१, ६.४३५, ६.४७९-४८०
पउमावती २.४४, २.१३७-१३९
पउमासण ४.२६०
पउमुत्तर १.१३९
पउमुप्पल १.६०
पउमुप्पलपिहाणा १.२९, १.४३
पउर १.२८
पएसि ४.२६८-२६९, ४.२७१-२८६
पओप्पअ ५.४१४
पंकप्पभा ५.४१६, ६.४२६, ६.४३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचजम २.३८
पंचतिथकाय २.१६५
पंचनियम २.३८
पंचमहव्वय २.९२, २.११५, २.११८, २.१४७, २.१५६, ६.४४७
पंचमुट्ठि लोय १.७०
पंचवण्ण १.१००
पंचसमिअ २.११८
पंचाणुव्वय २.३८, २.५४, २.१०५-१०६, ३.१८७, ३.२१५, ३.२१८, ४.२४५, ४.२९३, ४.२९६, ४.२९८, ४.३१३, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४-३३५, ४.३४८, ४.३५१, ४.३६६, ४.३७१
पंचाल १.३९, २.१६, २.१२०, ३.१८९
पंचालजणवय ३.१९०-१९१
पंचालराय १.१०१, २.१६
पंचालाहिवइ १.२७-२८, १.३९
पंचासव २.६४
पंचिंदियरयण १.१३७
पंड ३.२०९
पंडगवण १.१६, १.१३५, ४.२६०
पंडव ३.१९३-१९६, ३.१९९-२०७, ३.२०९
पंडियमरण २.१२६
पंडु ३.१९४, ३.१९५, ३.१९७-१९८, ३.१९९, ३.२०३
पंडुभद्द २.१७२
पंडुमहुर ३.२०९
पंडुमहुरा ३.२०५-२०६
पंडुय १.३१, १.१३२
पंडुराय ३.१९१, ३.२०५
पंडुरायपुत्त ३.२०९
पंडुसेण ३.२०५-२०६
पंतकुल १.५७
पंतजीवी ५.३९२
पंताहार ५.३९२
पंथग २.३८, २.४३-४६
पंथय २.४५-४६, ६.४३७, ६.४३९-४१
पक्कणि १.११५
पक्खंदोलग ४.२६०
पक्खासण ४.२६०
पगय २.१७
पगास १.६०, १.६२
पज्जती ४.२६३
पज्जत्ती २.१५, २.४९, ४.२८७
पज्जुण्ण २.७, २.२०, ३.२०८
पज्जुन्न २.३४, ३.१९०, ३.१९५
पट्टइल्ल १.१३२
पट्टण ६.४५६
पडबुद्धि १.८२
पडाग १.११४
पडिचार २.७८, ४.३७५
पडिबंध १.२१, १.७२, १.८३, १.९०
पडिबुद्ध १.२७
पडिबुद्धि १.२८, १.३०, १.१०१
पडिमा १.४३, १.८३, २.९५
पडिरूव १.४
पडिलोम १.२०, १.५२
पडिवूह २.७८, ४-३७५
पडिसंलोणपडिमा १.८३
पडिसत्तु १.१४३
पडिसुत १.४
पडिसूइ १.४
पडिस्सुइ १.४
पढमकेवलि १.५
ढिमयजण १.५
पढमणरीसर १.१२८
पढमतित्थयर १.५
पढमधम्मवरचाउरंतचक्कवट्टि १.५
पढमभिक्खा १.१०१
पढमभिक्खाचर १.५
पढमभिक्खादायार १.१०१
पढमराय १.५, १.१२९
पढमसिस्सिणी १.१०२, १.१०४
पढमसीस १.१०१
पढमसीसा १.१०४
पणयासण ४.२६०
पणवण्णिय १.७९
पणियसाला १.७६
पणीयभूमि १.८५
पत्त १.१७, १.६०
पत्तच्छेज्ज २.७८, ४,३७५
पत्ताहार ४.२४४
पत्थिवगुण १.११४
पधाण १.८६
पन्नवाहणय २.१७३
पभंकरा १.१३८, ३.२२५
पभंजण ३.२२४
पभव १.११३, २.१७१, २.१७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पभावई १.२८, १.३०, १.३५–३६, १.३७, १.३८, १.४१, १.४४–४५, १.४७, १.९५, २.५–६
पभावती १.२८, २.५–८, २.१३७, २.१३९
पभास १.१११, ४.२६३
पभासतित्थ १.१२०
पभासतित्थोदग १.१२०
पमयवण ३.२११, ३.२१८
पम्ह १.१३८
पम्हगावती १.१३८
पम्हावई १.१३८
पयाणुसारी १.८२
पयावती १.१४२
परवाय १.८३
परिणिव्वण १.२५, १.४८
परिनिव्वाणमहिम १.२४
परिभास १.४
परियाअंतकरभूमि १.२३
परियांतकडभूमि १.८८
परियायंतकडभूमि १.५०, १.५३
परियायंतकरभूमि १.४८
परियायधम्म २.११५
परिव्वाइग १.३९
परिव्वइय १.३९–४०
परिव्वायगधम्म २.३८
परिसडियकन्दमूलतयपत्तपुप्फफलाहार ४.२४४
परिसा १.१५, १.१६, १.२०, १.२६, १.४५, १.४७–४९, १.५२, १.५६, १.७०–७१, १.८०, १.८८, १.११२, २.३, २.१०, २.१२, २.१४, २.१८–१९, २.२२, २.२७, २.३८, २.३९, २.४३–४४, २.४७, २.४९–५०, २.५७, २.६०, २.६७, २.६९, २.८०, २.९२, २.९६, २.९९, २.१०२–१०५, २.१०७, २.१०९, २.१२३, २.१२७, २.१२९, २.१३१, –१३२, २.१३५, २.१३७, २.१६४, २.१७९, ३.२०५, ३.२१०, ३.२१७–२२०, ३.२२३–२२६, ३.२२८, ३.२३३, ३.२३७, ४.२४३, ४.२४६, ४.२५३, ४.२६७, ४.२७०-२७१, ४.२७५, ४.२८२, ४.२८५, ६.४२३, ६.४२६, ६.४४२, ६.४६०, ६.४७६, ६.४८४, ६.४९५
परीसह १.२०, १.५४, १.७६–७७, २.११५, २.१२७
पलालपुंज १.७६
पलास १.६०
पलियट्ठाण १.७६
पल्हविया १.११५
पवण १.७९
पवयणणिण्हग १.८८
पवयणनिण्हवअ ५.३८१
पवर १.५४-५५
पव्ववयमह ५.३८२
पव्वयअ १.१४२
पसंतजीवी ५.३९२
पसत्थार ५.३८२
पसाहणघरग ४.२६०
पसिसा १.१०, ४.२४६
पसेणइ १.४, २.२०-२१
पहराय १.१४३
पहेलिय २.७८, ४.३७५
पाइण २.१७१–१७२
पाइत्तअ ४.३७३
पाइन्न २.१७५
पाओवगमन २.१२७
पाकसासण १.५६
पागसासण १.१०
पागहिय १.९०
पाडल १.१७, १.२८, १.६०, १.१०१, १.११६
पाडलिसंड ६.४८४
पाडिबुद्धि १.२९
पाडिस्सुइय १.१७
पाढ ४.४०७
पाण २.६१
पाणग १.१५
पाणय १.७९, २.९२, २.९७, २.१०९
पाणयकप्प १.५४
पाणविहि २.७८, ४.३७५
पाणाइवाय १.३९
पाणातिवाय १.१०३–१०४
पाणामा २.६१
पाणु १.८६
पामिच्च १.९१, ४.३७३, ५.३८५
पायअ ५.३८५
पायत्त १.१७
पायत्ताणियाहिवइ १.१४, १.५८, ४.२४८-२४९
पायत्ताणीयाहिवइ १.११, १.१५
पारसी १.११५
पारिट्ठावणिआसमिइ १.२०, १.८३
पारिहासिय २.१७२
पालग १.७९–८०
पालय १.१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पालयदेव १.१२
पालि २.११९
पालिय २.११४
पावफलविवाग १.८६
पावा १.८५–८६
पास १.५१–५३, १.९४–९५, १.९७–१०१, १.१०५–१११, २.४९–५०, ३.२०९, ३.२२०–२२३, ३.२२५–२२८, ४.२४३, ४.२४५
पासग ४.३७५
पासचरिय १.५१
पासत्थ ४.२६८
पासपाणि ४.२६८
पासमिअ २.१०८
पासय २.७८
पासायवडेंसग ४.२६१
पासावच्चिज्ज १.६८, १.१०४, ४.२८९
पाहुणगमत्त १.९१, ४.३७३, ४.३८५
पिउसेणकण्ह ६.४२५
पिउसेणकण्हा ३.२३४, ३.२३६
पिंगल १.१३१ज
पिंगलय २.१२३, २.१२५
पिक्खुर १.१२२
पिच्छणधरग ४.२६०
पिट्ठिचंपा १.८५
पिट्ठिमा २.९८
पियअ १.१०१
पियंगु १.६०, १.१०१, ६.४९५
पियकारिणी १.६८
पियगंथ २.१७३
पियचंद २.१०८
पियदंसणा १–६८
पियमित्त १.५४, १.१४२
पिया ३.२२६
पिलंखुरुक्ख १.१०१
पिलंगु १.४८
पिसाय १.७९
पिसायकुमारिंद ३.२२५
पिसायरूव १.३३
पीइगम १.१४, १.७९
पीइदाण २.९–१०, ३.१९४
पीठभद्द ४.३६५
पीठमह ४.२७८
पीतिगम १.८०
पीतिवद्धण १.८६
पीयपाणि ४.२६८
पुइकम्म ४.३७३
पुंड १.८९,५.४१३
पुंडरिगिणी २.१०७
पुंडरीगिणी १.१३८, २.१६७, २.१६९
पुंडरीय १.५४–५५, १.६०, २.४३, २.१६७–१७०, ४.२६३
पुंडरीयपव्वय २.४४,२.४६
पुंसकोइलग १.७३
पुक्खरगय ४.३७४
पुक्खरोदय ४.२६३
पुक्खल १.१३८
पुक्खलावई २.१६७
पुक्खलावती १.१३८
पुक्खरवरदीव १.९२–९३, १.१३९
पुग्गल १.५७, १.१३४, ४.२४७, ४.२५३
पुट्टिल १.१०४
पुढवि १.७५
पुढविकाइय १.९१
पुढविकाय २.१६६
पुढविसिरी ६.४९५
पुढविसिलापट्ट १.४७,१.१३७
पुढवी १.८९
पुढवीवडेंसय ६.४९०
पुणव्वसु १.१००–१०१, १.१४२
पुण्डरीया १.८
पुण्ण ३.२२४
पुण्णघोस १.९४
पुण्णचंद १.१०१
पुण्णजण २.६५
पुण्णभद्द १.८९, २.१७, २.४९–५१, २.९२–९३, २.९७, २.१०८–१०९, २.१३७–१३८, २.१४०, २.१५६, ३.२०२, ३.२२४, ३.२३५, ४.३०४–३०५, ४.३०८, ४.३६३, ४.३६५–३६७, ४.३७१, ५.३८९–३९१, ५.४१४, ६.४२५–४२६, ६.४३५
पुण्णभद्ददेव २.५०
पुण्णभद्दा ३.२३४
पुण्णसेण २.९८
पुण्णा ३.२२५
पुण्णाग १.६०, १.११६
पुन्न २.४९
पुन्नभद्द २.१७२
पुन्नाग १.१७,१.२८
पुप्फ १.१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुप्फकरंडय २.१०४, २.१०६
पुप्फकरंडयउज्जाण २.१०६–१०७
पुप्फकेउ १.९४
पुप्फग १.७९–८०
पुप्फचूला १.५२, १.१०२, २.१०५, ३.२२२–२२३, ३.२२६–२२८
पुप्फदंत १.९४, १.९६, १.९८–१००, २-१०७-१०९
पुप्फबलिकम्म १.३१
पुप्फमाला १.६–७
पुप्फवतिअ ४.२८९–२९०
पुप्फाराम २.९३
पुप्फाहार ४.२४४
पुप्फुत्तर १.५४–५५
पुरंदर १.१०,१.५६, २.१२, २.४८
पुरिमंतरंजि ५.३८१
पुरिमताल १.२१–२२, २.१५, ४.३७२, ६.४७१–४७५
पुरिसपुंडरीय १.१४२
पुरिसलक्खण २.७८, ४.३७५
पुरिसवरगंधहत्थि १.१०, १.५६, १.८०, १.११२, ३.२२०, ४.२६६, ४.३६६
पुरिसवरपुंडरीय १.१०, १.५६, १.८०, १.११२, ३.२२०, ४.२६६, ४.३६६
पुरिससीह १.१०, १.५६, १.८०, १.१४२, १.१४४, ३.२२०, ४.२६६
पुरिससेण २.३४, २.९७, ३.२०८
पुरिसादाणीय १.५१–५३, १.९९, १.१०५, १.१०७, १.१११, २.४९
पुरिसुत्तम १.१०, १.५६, १.८०, १.१२२, .१४२, ४.२६६, ४.३६६
पुरिसोत्तम १.१४४, ३.२२०
पुरोहितरयण १.१४१
पुरोहियरयण १.१३२, १.१३४, १.१३६– ३७
पुरिसोत्तम १.१४४, ३.२२०
पुलिंदी १.११५
पुव्व १.११०
पुव्वतित्थयर १.५७
पुव्वविदेह २.१६७
पुव्वासाढा १.९९
पुस्स १.१००-१०१
पुट्ठवी १.८, १.४२, १.९५, १.११४
पूइअ १.९१, ५.३८५
पूरण १.२६, २.२१, ६.४९६-४९७
पूस १.९९-१००
पूसनंदि ६.४९०, ६.४९३-४९४
पूसगिरि २.१७४
पूसमित्तेज्ज २.१७२
पूसा ४.३२७, ४.३२९
पेच्छाघरमंडव ४.२६१-२६२, ४.२६६
पेज्जबंधण १.८६, १.९१
पेढालपुत्त १.१०४, २.९८, २.१४८-१५०, २.२ १५५-१५६
पेल्लय २ ९८
पेस २.६६
पोंडरिगि १.८
पोंडरीगिणी २.१६८, ३.२१८
पोंडरीय २.१६९
पोंडवद्धिणिया २.१७२
पोक्खरगय २.७८
पोक्खलावई ३.२१८
पोक्खली ४.३५४-३५६
पोगिल २.१७१
पोग्गल १.५८, १.५९, १.६९, २.५२, २.५५, ४.२४९, ४.३७७
पोग्गलत्थिकाय २.१६४-१६५
पोग्गलपरिणाम १.४३
पोट्टिल १.५४, १.८८, १.१०४, २.९८, ३.२१८
पोट्टिला ३.२११-२१५
पोट्टिल्ल १.१०४, ३.२१६
पोत्तिय ४.२४४
पोथअ १.९०
पोयण १.१४२
पोयणपुर १.५४
पोरेकच्च ४.३७५
पोरेकव्व २.७८
पोलासपुर २.२४-२५, २.६६-६७, ४.३३२-३३३, ४.३३५, ४.३३८
पोस १.४७, २.४२, ४.३६१
पोसपुण्णिमा २.४
पोसबहुल १.५१-५२
पोसहसाला १.११७, १.१२०-१२३, १.१२९, १.१३१, १.१३३-१३४, २.१९, २.२६, २.७५, २.७७, २.१०६, २.१३८, ३.१९६, ३.१९९, ४.३०३, ४.३०६, ४.३०८-३१०, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२४, ४.३३८, ४.३४४, ४.३४६, ४.३४९, ४.३५१, ४.३५५-३५६
पोसहोपवास १.३२-३३, १.८६

(फ)

फग्गु १.१०२
फग्गुण १.२८, २.४२, ४.२६१
फग्गुणबहुल १.२१-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फग्गुणी ४.३५०-३५१
फग्गुमित्त २.१७४
फरिहोदग २.५२' २.५५
फरिहोदय २.५१-५२
फलभोयण १.९१, २.२९, २.८२, ५.३८५
फलाहार ४.२४४
फास १.९१

(ब)

बउल १.१७, १.१०१
बंध ४.२७१
बंधण १.९१
बंधुमई १.४७, २.९३
बंधुसिरी ६.४८१
बंधूपुप्फवती १.१०२
बंभ १.७९ १.१४२ २.९२, २.९७, २.१७२
बंभचारी १.१११
बंभचेरगुत्ति १.१९१
बंभदत्त १.१०१, १.१३९, -१४०, २.१५-१६
बंभदेवीया २.१७३
बंभद्दीवग २.१७५
बंभयारि १.५२, १.१११
बंभलिज्ज २.१७३
बंभलोग २.११९, ५.३९२
बंभलोय १.४५, २.११, २.१८-१९, २.१०७, २.१०९, २.१३१, ४.३७३-३७४
बंभलोयग १.१५
बंभी १.२२, १.१०२, १.१४०
बकुल १.११६
बत्तीसविमाणावाससयसहस्साहिवइ १.१०
बब्बर १.१२२
बब्बरी १.११५
बम्ह १.१३९
बल १.२६ १.१२१ २.५-६, २.८, २.११ २.४९ २.१०८
बलदेव १.५७ १.६४ १.९३, १.१०४ १.१३९, १.१४३-१४४, २.१७, २.१९-२०, २.३३, ३.१९०, ३.२०३, ३.२०५, ३.२०९, ४.३७१
बलदेवमाउ १.१४२-१४३
बलदेवमायर १.६४
बलदेवबासुदेवपिउ १.१४२-१४३
बलभद्द १.२६, १.१४३, २.११५
बलमित्त १.४७
बलवाहण ४.२८६
बलसिरी २.१०७, २.११५
बलायालोय १.१२२
बलाहग १.६०
बलाहगा १.६-७
बलि १.१५, १.२५, १.४६, १.१४३, ३.२१९
बलिकम्म १.४२-४३, १.६५, १.६७, १.१२०-१२१, १.१२३, १.१२८, २.३, २.८-९, २.१४, २.२५-२६, २.५१, २.६१, २.७२, २.७४, २.७६-७७, २.८३-८४, २.१३४, २.१६१, ३.१८५, ३.१९३-१९४, ३.१९८, ३.२१६, ३.२२०, ३.२३७, ४.२६९, ४.२७३, ४.२७८, ४.२८४, ४.२८७
बलिचंचा २.६२-६३, ३.२२४
बलिस्सह २.१७२ २.१७५
बहलि १.११५
बहस्सइ ६.४५९
बहस्सइदत्त ६.४७९-४८०
बहिद्धादाण १.१०४
बहुपुत्तिय २.४९ ३.२२८
बहुपुत्तिया ३.२२५, ३.२२८, ३.२३१
बहुमित्तपुत्त ६.४८१
बहुरत १.८८, ५.३८१
बहुरूवा ३.२२५
बहुल १.१०१, १.१७५, ५.३९७
बहुला ४.३२२-३२३, ४.३२५
बहुसालय २.५७-५८, ५.३८२, ५.३८८
बहुसाला ५.३८३
बाणमंतर १.२८
बाणमंतरिद ३.२२५
बारगा २.४७
बारगापुरि २.४७
बारवई १.४९, १.१००, २.१७-२५, २.२७, २.२९, २.३०-३१, २.३३-३६, ३.१९०-१९१, ३.१९७-१९९, ३.२०४-२०५, ३.२०८-२११
बारवती २.३४-३५, २.३७
बालतवस्सि २.६०-६३, ६.४९७
बालतवोकम्म २.६१
बालमरण २.१२६
बावत्तरिकला ४.३७५
बावत्तरिकलापंडिय २.१०५
बाहिरपरिसा ४.२५१
बाहुजुद्ध २.७८, ४.३७५
बाहुबलि १.१४०
बिलवासि ४.२४४
बीयमोयण १.९१, २.२९, २.८२, ५.३८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीयाहार ४.२४४
बुडढकुमारी ३.२२६
बुद्ध १.१०, १.१७, १.२३, १.५६, १.८०, १.८५-८६, १.९४, १.१०४, १.११२, २.६६, ४.२६६
बुद्धभिक्खु २.६५
बुद्धवयण १.८२
बुद्धाइसेस १.१०२
बुद्धि ३.२२६
बुह १.७९
बेमेल ५.४१७, ६.४९६-४९७
बोहय १.१०, १.५६, १.८०, १.११२, ४.२६६
बोहिदय १.१०, ४.२६६, ४.३६६

(भ)

भंडार ६.४८१
भंभसार ६.४२१
भंभसारपुत्त ४.३६५, ४.३६७-३६९, ४.३७१
भक्खेय २.४१-४२
भगवई ६.४३६
भगवत १.१०, १.३२, १.५६, २.१२९, २.१३२, २.१३६, २.१७०, ३.१८१, ४.२६६, ४.३६६
भड ५.३८२
भडपुत्त ५.३८२
भत्त १.२७, १.३२, १.६८
भत्तघर २.२३-२४, २.१०६, ३.१८०
भत्तपच्चक्खाण २.१२७
भत्तसाला १.११९
भद्द १.१४२-१४३, २.१०८, ३.२२८-२३०
भद्दगुत्त २.१७५
भद्दगुत्तिय २.१७३
भद्दगुत्तिय २.१७३
भद्दजस १.१११, २.१७२
भद्दजसिय २.१७३
भद्दतरपडिमा १.८३
भद्दनंदि २.१०४, २.१०७-१०८
भद्दपडिमा १.८३
भद्दबाहु २.१७१-७२, २.१७५
भद्दय २.१७४
भद्दवय २.४२, ४.३६१
भद्दवया १.१००
भद्दसण्णिवेस १.११९
भद्दसालवण १.१६, ४.२६०, ४.२६४,
भद्दसेण १.१५
भद्दा १.८, १.८९, १.१३९, १.१४२, २.९९, २.१०४, २.१०८, २.१११, २.१४०, २.१५९, २.१६१, ३.१८२-१८४, ३.१८६, ३.२११-२१२, ३.२१८, ३.२२३, ४.३०५, ४.३१५-३१६, ५.३९४-३९५, ५.४१३, ५.४३७-४४३, ६.४५०, ६.४७६-४७७
भद्दासण १.१७, १.११४, १.११६, ४.२६०
भद्दिज्जिया २.१७३
भद्दिया १.८५
भद्दिलपुर २.२२, २.२४-२५
भद्दोत्तरपडिमा ३.२३५
भयट्ठाण १.९१
भयाली १.१०४
भरणि १.४८ १.९९-१००
भरह १.२३ १.९२-९३, १.१०३-१०४, १.१११४-११७, १.११९-१३१, १.१३३-१४०, १.१४२, २.२४, २.३०, २.८२, २.१२०, २.१३४, ४.२६५, ४.३७०
भरहचक्कवट्टि १.५४, १.११४
भरहचक्कवट्टिचरिय १.११४
भरहवास १.१४९, २.१२०
भरहवासपढमवइ १.१२८
भरहाहिव १.१२३, १.१२९, १.१३३, १.१३७, १.१३९
भरहाहिवचक्कवट्टि १.१३१
भवणवइ १.६, १.१४, १.१८-१९, १.२४-२५, १.२८, १.४७, १.६५-६६, १.६९, १.७८, ४.२४७, ४.२५३
भवणवासि १.२४, १.७४, १.७९, ३.२१९, ३.२२२
भवणवासिइंद १.१५
भवणविमाण १.११४
भसोल १.१७
भाणु १.९५
भाणुमित्त १.४७
भारत १.२७
भारद्दाय १.१११, १.११३, २.१७२, ५.४०४-४०५
भारह १.३-५, १.२८, १.३३, १.४४-४५, १.४८, १.५१, १.५४, १.५५-५८, १.८९, १.९४-९५, १.१०२, १.११८, १.१२९, १.१४३, २.१२, २.१४, २.१८, २.५०, २.६०, २.६२-६३, २.६९, २.७५, २.८७, २.८९, २.१०५, २.१२०, २.१४४, २.१४५, ३.१८२, ३.१८९, ३.१९६-९७, ३.१९९-२००, ३.२०२-२०३, ३.२०९, ३.२१९-२०, ४.२४७-४९, ४.२५३, ४.२६८, ४.३०८, ४.३१०, ५.४१७, ६.४२५, ६.४६२, ६.४६४, ६.४६६, ६.४७०, ६.४७२, ६.४७७, ६.४८१, ६.४८५, ६.४८८, ६.४९०, ६.४९५,-४९६, ६.४९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारहवास १.५७-५८, ६.४७९
भावसोय २.३८
भाविधप्पा १.१०२
भासासमिइ १.७२, १.९०, २.९९
भिगा १.४
भिंगार १.११४
भिंभिसार १.८९
भिक्खायकुल १.५७-५८
भिक्खुपडिमा १.८३, २.२१, २.९०, २.९२, २.१२८, ३.२३५
भिलुंगा ४.२७२
भिल्ल १.१३२
भिसग १.४७
भिसय १.१०२
भिसिया १.३६, १.३९–४०
भीम १.१४३, ६.४६७–४६८
भीमसेण १.४, ३.१९१
भुत्तावलि ३.२३६
भुयगपइ १.७९
भुयगवइ ३.२२५
भुयगवरकन्नगा २.१४१
भुयगा ३.२२५
भुसल १.११४
भूइकम्म १.९, ३.१८७, ३.२१४
भूमिघर ६.४६१
भूय १.३२, १.७९
भूयदिण्णा ३.२३३
भूयादिन्न २.१७५
भूयादिन्ना २.१७२
भूयमह ४.२७०, ५.३८२
भूयवादिय १.७९
भूयसिरी ३.१७९
भूया २.१७२, ३.२२६–२२७
भूयाणंद ४.३७६, ६.४२४
भेय १.२९, ४.२६९, ६.४२७, ६.४८१
भेरी २.१८, २.३५
भेसगसुय ३.१९१
भेसज्ज ३.१८७, ३.२१४, ३.२२९
भोग ४.२७०–२७१, ५.३८२, ५.३८८, ६.४६०
भोगंकरा १.६
भोगकुल १.५७
भोगमालिणी १.६
भोगवइया ६.४५०–५१
भोगवई १.६, ६.४५३
भोगवती ६.४५४
भोत्तअ ४.३७३, ५.३८५

(म)

मउंदमह ४.२७०
मंगवलि ५.३९५, ५.४००
मंखलिपुत्त ४.३२९–३३०, ४.३३२–३३३, ४.३३६–३३७, ५.३९३–४०४, ५.४०६, ५.४०८–४११, ५.४१३, ५.४१५, ५.४१८
मंगलग १.१७, ४.२५२, ४.२६१–२६२
मंगलसुत्त १.३
मंगला १.९५
मंगलावती १.१३८
मंगलावत्त १.१३८
मंगलोवयार १.६३
मंगु २.१७५
मंजुघोस २.१५
मंजुस्सर १.१५
मंजूसा १.१३८
मंडणधाई ४.२८७, ४.३७४
मंडलबंध १.४
मंडलिय १.६४, २.७
मंडलियमायर १.६४, २.७
मंडलियराय १.९५, १.१३८
मंडावणधाई १.६७
मंडिकच्छ १.१११
मंडिय १.१११, ५.४०४-४०५
मंडियपुत्त १.११२-११३
मंडुय २.३८, २.४३-४६
मंतजोग ३.१८७, ३.२१४
मंतप्पओग १.१२६
मंतप्पओय ३.२२९
मंति ४.२७८, ४.३६५
मंदर १.१४-१७, १.७३-७४, १.९३, १.१०१, १.१३८, २.२०, २.४३, २.६९, २.८२, २.१०५, २.११६ २.१३३-१३४, २.१३७, २.१३९, ३.१८७, ३.१९५, ३.२०२, ३.२१६, ४.२५७, ४.२६४
मंदार १.६०
मंससुहा १.६२
मकाइ २.९२, २.९७
मक्कार १.४
मगरासण ४.२६०
मगह ५.४०७
मगहाहिव २.११२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मग्गदय १.१०, १.५६, १.८०, १.११२, ३.२२०, ४.२६६, ४.३६६
मग्गसर १.२८
मग्गसिर २.४२, ४.३६१
मग्गसिरबहुल १.६९-७१
मघवं १.१०, १.५६, १.१३९, १४०; २.१२०
मच्छ १.१७, २.११६
मज्जणघर १.११५-१२१, १.१२३, १.१२९, १.१३१, १.१३४–१३७, २.१८, २.७१, २.७६, ३.१९१, ३.१९३, ६.४२२, ६.४२४, ६.४३३, ६.४३५
मज्जणघरग ४.२६०
मज्जणधाई १.६७, ४.२८७, ४.३७४
मज्जारमड १.२९, ६.४६१
मज्झमिया २.१०८
मज्झिमरिसा ४.२५१
मज्झिमा १.८५-८६
मज्झिमिल्ला २.१७३
मडंब ६.४५६
मणग २.१७१
मणगपिया १-११३
मणगुत्त १ २०, १.७२, १.८३, २.४८, २.९९, २.११०
मणदंड १.९१
मणपज्जवणाण १.४७, १.७२
मणपज्जवनाण ४.२७६
मणपज्जवनाणि १.४७, १.१०७
मणबलिय १.८२
मणसमिइ १.२०, १.७२, २.९९
मणि ४.२५०
मणिजाल ४.२६१
मणिपुर २.१०८
मणिपेढिय १.२९
मणिभद्द २.१७२
मणियंग १.४
मणिरक्ख १.१२३, १.१२७, १.१३२ १.१३७, १.१४१
मणिलक्खण २.७८, ४.३७५
मणिवइया २.५०, २.१०८
मणुइंद ६.४२४, ६.४३६
मणुयपरिसा १.७१
मणुयरयण १.१३७
मणुस्सपरिसा ६.४२३
मणुस्समड १.२९, ६.४६१
मणोराम १.७९–८०
मणोरम १.१४,२.१९,२.१०७
मणोरमा १.१००
मणोहरा १.१००
मतंगय १.४
मतिपत्तिया २.१७२
मद्दुय ४.३७६–३७७
मननाणि १.१०७
मयंग २.१५
मयंगतीरद्दह ६.४४८–४९
मयणा ३.२२४
मयालि २.३४, २.९७, ३.२०८
मरण २.१२६
मरुता ३.२२३
मरुदेव १.४,१.९४
मरुदेवा १.९५,३.२३३
मरुदेवी १.४–५
मरुयग १.२८
मलय १.१६, २.२०, २.४३, २.६९, २.८२, २.१०५, २.१३३–१३४, २.१३७, २.१३९, ३.१९५, ३.२०२, ३.२१६, ५.४०७
मल्ल १.३०, १.६३, १.७०, १.११६
मल्लई १.८६, ५.३८२, ६.४२४. ६.४३४–४३६
मल्लदिन्न १.३७
मल्लराम ५ ४०४–४०५
मल्लि १.२८, १.३०, १.३४–४५, १.४७–४८, १.९४–९५, १.९७, १.९९, १.१०१, १.१०७, १.१०९–११०
मल्लिचरिय १.२६
मल्लिदिन्न १.३८–३९
मल्लिय १.१७, १.२८, १.११६
मल्लिया १.६०
मल्लियामंडवग ४.२६०
महंत ३.२१६
महग्गह ४.२४३
महचंद २.१०८, ६.४७६
महच्चंद २.१०४
महपउम १.१३१
महब्बल १.२६–२८, १.४३–४४, २.३, २.७–११, २.१८, २.२०,
महब्बल १.२६–२८, १.४३–४४, २.३, २.७–११, २.१८, २.२०, २.२२, २.३०, २.६८, २.९९, २.१०४–१०५, २.१०८, २.१२०,६.४७१, ६.४७३–४७६
महब्बलकहा २.५
महमरुता ३.२३३
महव्वय १.२२, १.९१, २.६४, २.९०–९१, २.११३, २.११६, २.१२९–१३०, ५.४१३, ६.४५३–४५४
महसिंह १.१४२
महसेण १.४७, १.९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महसेणकण्हा ३.२३४
महा १.१००
महाओहस्सर १.१५
महाकंदिय १.७९
महाकच्छ १.१३८, ३.२२५
महाकण्ह ६.४२५
महाकण्हा ३.२३४–२३५
महाकाल १.१३१, २.३०–३१, ३.२२५, ६.४२५
महाकाली ३.२३४–२३५
महागिरि २.१७१–१७२, २.१७५
महाघोस १.३, १.१४, १.९४, २.१०८, ३.२२४
महाचंद १.१९४
महाजस १.९४
महाणससाला १.४५
महाणिहअ १.१३३, १.१३७
महाणिहि १.१३१, १.१३२, १.१३७, १.१४१
महादुमसेण २.९८
महाधणु २.१७
महापउम १.८९–८२, १.१०४, १.१३१, १.१३९, २.१०८, २.१२०, २.१६७, ३.२१८, ४.२६४, ५.४१४, ५.४१५
महापउमचरिय १.८९
महापउमा २.१०९
महापम्ह १.१३८
महापालि २.११९
महापुंडरीय ४.२६४
महापुर १.१३८, २.१०८
महाबल १.४८, १.९४, १.१३८, १.१४३, २.१७–१८, २.१०९, २.१६७
महाबाहु १.१४३
महाभद्दपडिमा १.८३
महामीम १.१४३
महाभीमसेण १.४
महामंति ४.२७८,४.३६५
महायस २.४७
महावच्छ १.१३८
महावप्प १.१३८
महाविजय १.५४–५५
महाविदेह १.२६, १.९३, १.१०४, १.१३८, २.१५, २.२०, २.४८–५०, २.६३, २.९२, २.९८, २.१०३, २.१०४, २.१०७–१०९, २.१३०,२.१४०, २.१४७, २.१६३, २.१६७, २.१७०, ३.१८१, ३.२०७, ३.२१८, ३.२२२, ३.२२५–२२६, ३.२२८, ३.२३३, ४.२४६, ४.२६४ ४.२८७, ४.३०४, ४.३११, ४.३१३, ४.३१६, ४.३२७, ४.३३१, ४.३३५, ४.३४१, ४.३४७, ४.३४९, ४.३५२, ४.४५४, ४.३६०, ४.३७४, ४.३७६, ५.४१३, ५.४१५, ६.४४४ ६.४६५, ६.४७८, ६.४८०, ६.४८३, ६.४८७, ६.४८०, ६.४९४, ६.४९६, ६.५०१
महाविदेहवास १.६८
महावीर १.५४–५९, १.६४–७४, १.७७–८०, १.८२–८८, १.९१–९२, १.९७, १.९९–१००, १.१०५–१११ २.३, २.५, २.११–१२, २.१४, २.४९, २.५७–६०, २.६६–६९, २.७९–८२, २.८४–८६, २.८९–१००, २.१०२–१०९, २.११२–११५, २.१२०, २.१२३–१२५, २.१२७–१३३, २.१३६–१३८, २.१४०, २.१४७–१४८, २.१५६, २.१६३-१६६, २.१७१, ३.२१९–२२०, ३.२२३, ३.२२८, ३.२३७, ४.२४७–२४९, ४.२५३–२५६, ४.२६८, ४.२८८, ४.२९०, ४.२९३–२९६, ४.२९८–३०१, ४.३०३–३०५, ४.३०८–३१२, ४.३१७–३१८, ४.३२२–३२४, ४.३२७–३३८, ४.३४२–३४४, ४.३४६–३५१, ४.३५३–३५४, ४.३५६–३६०, ४.२६२–३६३, ४.३६५–३६६, ४.३६८, ४.३७०–३७१, ४.३७३, ४.३७६–३७७, ५.३८१–३८५, ५.३८८–३९१, ५.३९३–३९४, ५.३९७, ५.३९९–४०३, ५.४०५–४०७, ५.४१०–४१२, ६.४२१, ६.४२३, ६.४२५–४२६, ६.४५९–४६२, ६.४६६, ६.४७१, ६.४७६, ६.४७९, ६.४८४, ६.४८८, ६.४९०, ६.४९५, ६.४९७–५००, ६.५०२
महावीरचरिय १.५४, २.६४
महावीरतित्थ ४.२८९–२९०, ४.२९५
महावीरवद्धमाण १.१०८
महावीरसमवसरण २.७९
महावीरसमोसरण २.१२, २.६०, २.१२३, २.१३१, २.१३५, २.१३७, ३.२२६, ३.२२८, ४.२४६, ४.२४८
महावीरसच्च १.१३८
महासतग ४.३४४–३४७
महासतय ४.२९५, ४.३४२–४४३
महासतयपुर ४.३४६
महासामाण २.१५
महासिलासंकटसंगाम ६.४३५
महासीहनिक्कीलिय ३.२३५
महासीहसेण २.९८
महासुक्क १.७९, २.१५, २.९२, २.९७, २.१०७, २.१०९, ३.२१८, ५.४१८
महासुक्कय १.१५
महासुमिण १.२८, १.५५, १.५९, १.६१-६४, १.७३
महासुव्वया १.५०
महासेण १.९४, २.१७, २.२०, २.९८, २.१३७, ३.१९०, ६.४९०–४९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महासेणकण्ह ६.४२५
महासेणकण्हा ३.२३६,
महाहरि १.१३९
महाहिमंत ४.२६४
महिंदज्झअ २.४९
महिंदज्झय १.१५, ४.२६२, ४.२६६–२६७
महिंददत्त १.१०१
महिंदसार २.२०, २.४३, २.६९, २.८२, २.१०५, २.१३३–१३४, २.१३७, २.१३९, २.१९५, ३.२०२, ३.२१६
महिय १.८०
महिलागुण १.१९
महिसमड १.२९, ६.४६१
महकेढव १.१४३
महुँयासव १.८२
महुरस्सर १.१५
महुरा १.१४०, १.१४२, ३.१९१, ३.२२५, ६.४८१, ६.४८३
महेसरदत्त ६.४७९
महेसि १.७६–७७
महोरग १.३२–३३, १.३९, १.१०३, १.१२६, ३.१९७–१९८, ४.२६०, ४.२७१, ४.२८३, ४.३०८
माअणि २.१७
माकंदियदारग २.१४१–१४२, २.१४४
मागंदियदारय २.१४३, २.१४५
मागह १.४५, ४.२६३–२६४, ४.३७२, ४.३७४
मागहतित्थ १.११६–११८, १.१२८
मागहतित्थकुमार १.११७–११९
मागहतित्थाहिवइ १.११७–११८
मागहतित्थोदग १.११९
मागहिय २.७८,४.३७५
माडंबिय २.६१, २.१०५–१०६, २.१३३, २.१३७–१३९, ३.१८७, ३.१९०, ३.१९६, ३.२१६, ४.२७८, ४.२९५–२९६, ४.२९९, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४–३३५, ४.३४२, ४.३४८, ४.३५१, ४.३५८–३५९, ४.३६२, ४ ३६५, ५ ३८२, ५.४१४, ६.४५०, ६.४६९–४७०, ६.४८०, ६.४९४–४९५
माढर २.१७१–१७५
माणवग १.१३१
माणवगण १.१११,१.१७३
मणिदत्त २.१८
माणिमद्द १.८९, २.४९–५०, ५.४१४, ६.४९५
माणिमद्ददेव २.५०
माणुस १.५२, १.९०
माणुसधम्म १.४७
माणुसत्तुर १.७३–७४
मातंगकुल ६.४७८
मायंदी २.१४०
मारूय १.७६
मालवंत ४.२६४
मालवग ५.४०७
मालाकार १.१३२
मालागार १.२९, २.९३–९६
मालायार २.९३
मालिज्ज २.१७२
मालियघरग ४.२६०
माली १.१०१
मालुयाकच्छ ६.४४८
मालुयाकच्छय ५.४११, ६.४३६, ६.४३९–४४०, ६.४४४–४४६
माणुयामैडवग ४.२६०
मास २.४२
मासखमणपारणग २.१०५
मासद्धमासखमण १.२६–२७, २.११, २.१३, २.२०–२१, २.३७, २.४४, २.५९, २.८९–९०, २.१२८, ३.१८८, ३.२०६, ३.२१०, ३.२२२, ३.२३४–२३६, ४.२४६
मासपरियाय १.२३
मासपूरिया २.१७२
मासिअभत्त १.२६
माह २.४२, ४.३६१
माहण १.५५–५९, १.६७, १.७६–७७, २.२७, २.३१, २.५७–५९, २.६६
माहणकुंड ५ . ३८१
माहणकुंडग्गाम १.५५, १.५६-५९, २.५७–५८, ५.३८१–३८२, ५.३८८
माहणकुल १.५७, ५.४१७
माहणपरिसा ४.२८२
माहणरिसि ४.२४५–२४६
माहणी १.५५–५९, २.२७, २.५७–५८, ३.१८०–१८२
माहबहुल १.२३
माहिंद १.१५, १.७९, २.११, २.९२, २.९७, २.१०९, ५.३९२
माहिंदर १.९५
मिगाली १.१०४
मिगावती ३.२३६–२३७
मिच्छादंसणसल्ल १.३९, १.७२
मितकेसी १.८
मित्त ६.४६५, ६.४८८
मित्तदाम १.३
मित्तनंदि १.१०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मित्तवाहण १.४
मित्ती २.१०८
मियउत्त ६.४५९
मियग्गाम ६.४५९–४६३
मियलुद्धय ४.२४४
मियवण २.१३७–१३८, ४.२७२–२७३, ४.२७५
मियसीस १.१००
मिया ६.४५९
मियादेवी ६.४६०–४६४
मियापुत्त २.११५–११८, ६.४५९–४६४
मियावई १.१४२, ६.४७९
मिरिइ १.५४
मिस्सकेसि १.८
मिस्सजाअ ५.३८५
मिहिलपुरी १.१४२
मिहिला १.२८, १.३०, १.३४, १.३६–४३, १.४५–४६, १.८५, १.८८, १.१४०, २.५०, २.५५–५६, ५.३८१
मीसजअ ४.३७३
मीसज्जाय १.९१
भुगुदमह ५.३८१
मुट्ठिजुद्ध २.७८, ४.३७५
मुणिसुव्वय १.९४–९५, १.९७, १.९९–१००, १.१०४–१०५, १.११०, २.१२–१५, ३.२०२–२०३
मुत्त १.१०, १.५६, १.८०, १.८५–८६, १.११२, ४.२६६
मुत्तखंड ४.३७५
मुत्ताजाल ४.२६१
मुत्ति १.२१, १.९०
मुद्द २.२०
मुद्दियामंडवग ४.२६०
मुरुंडी १.११५
मुसावाप १.१०३
मुहमंडव ४.२६१, ४.२६६–२६७
मूया १.५४
मूल १.९९–१००, ३.१८७, ३.२१४
मूलदत्ता ३.२०८
मूलभोयण १.९१, २.२९, २.८२, ५.३८५
मूलसिसिर ३.२०८, ३.२११
मूलाहार ४.२४४
मूसगमड १.२९, ६.४६१
मूसियार ३.१११, ३.२१२
मेंढियगाम ५.४१०–४१२
मेघमालिणी १.७
मेघस्सर १.१५
मेच्छजाई १.१२२
मेतज्ज १.१११
मेरथ १.१४३
मेरु २.७५
मेरुगिरि १.६०–६१
मेरुप्पभ २.८७–८८
मेह १.९५, २.२१, १.३६–३७, २.४४, २.७७–८४, २.८६–९२, २.९७, २.१०५, २.१०९, ३.२२३
मेहंकरा १.७
मेहकुमार १.२५–२६, २.६९, २.८५
मेहगणि २.१७२
मेहमालिणी १.७
मेहमुह १.१२६–१२८
मेहरह १.९५, २.१०८
मेहलिज्जिया २.१७३
मेहवई १.७
मेहवण्ण २.१८
मेहसिरी ३.२२३
मेहा ३.२२३
मेहिय २.१७३
योक्खमग्ग १.२२
मोग्गरग १.६०
मोग्गरपाणि २.९२–९५
मोग्गल २.१३१–१३२
मोत्ति १.७३
मोयग १.१०, १.५६, ४.२६६
मोयपडिमा १.८३
मोयय १.८०, १.११२
मोया २.६०
मोरियपुत्त १.१११–११३, २.६०–६२
मोलि ५.४०७
मोहणघर १.२८
मोहणघरग ४.२६०

(य)

यजुव्वेद १.३९
यज्जुव्वेय ६.४७९
रइ १.१०२
रइकरगपव्वय १.१४–१५
रइत्तअ ४.३७३
रइप्पिया ३.२२५
रइय २.२९, २.८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(र)

रभा ३.२२४
रक्ख २.१७४
रक्खस १.३२–३३, १.३९, १.७९, १.१०३, ४.१७१
रक्खसेण ४.३०८
रक्खिय २.१७२, २.१७५
रक्खिया २.१०२, ६.४५०–४५१, ६.४५३–४५४
रक्खोवग ४.२६८
रज्जपालिय २.१७३
रज्जपालिय २.१७३
रज्जुगसभा १.८६
रज्जुगसहा १.८५
रट्ठकूड ३.२३२–२३३, ६.४६२–४६३
रतिकरपव्वय ४.२५२
रत्तपाअ २.१०८
रत्तपणि ४.२६८
रत्तरयण १.१३१
रत्तवई २.१०८ ४.२६३
रत्तवती २.१०८
रत्ता ४.२६३
रत्तासोग १.६० २.१०८
रत्तासोय १-६२
रमणिज्ज १.१३८
रम्म १.१३८
रम्मग १-१३८
रयण ३.२२३
रयणजाल ४.२६१
रयणदीव २.१४१ २.१४४
रयणदीवदेवया २.१४२–१४६
रयणदीवदेवी २.१४७
रयणप्पभा १.८९ २.१४० ३.१८२ ४.२५७, ५.४१६, ६.४६४, ६.४७०, ६.४७६, ६.४७८, ६.४८०, ६.४८३, ६.४८७, ६.४९०, ६.४९४, ६.४९६
रयणसंचया १.१३८
रयणसिरी ३.२२३
रयणी ३.२२३
रयणुच्चय १.५५, १.५९
रययकूड २.७०
रययगिरि २.८९
रसदेवी ३.२२६
रह १.११४, २.१७४
रहनेमि २.४७–४८
रहमुसल ६.४३४
रहमुहलसंगाम ४.३५८, ६.४२४–४२५
रहोकम्म १.९०
राइण्ण ५.३८२
राइण्णकुल १.५७
राइन्न ४.२७०
राइसिरी ३.२२३
राई ३.२२३
राईमई २.४७-४८
राईसर २.१०५–१०६, २.१३३, २.१३७–१३९, ३.१८७, ३.१९०, ३.१९६, ३.२१६, ४.२७८, ४.२९५–२९६, ४.२९९, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२८, ४.३३४–३३५, ४.३४३, ४.३४८, ४.३५१ ४.३५८, ४.३६२, ४.३६५, ४.३६९, ५.३८२, ५.४१४, ६.४७०, ६.४८०, ६.४९४–४९५
राजीमई २.४७
राढामणि २.११४
राम १.१०४, १.१४२–१४४, २.२४७, ३.१९५, ३.२०९, ३.२२६
रामकण्ह ६.४२५
रामकण्हा ३.२३४–२३५
रामगुत्त २.९८
रामरक्खिया ३.२२६
रामा १.९५,३.२२६
राय १.९५, २.६१
रायकन्ना १.३४, १.३७, १.४१
रायकुल १.२७
रायगिह १.८५, १.११२–११३, १.१४०, १.१४२, २.४९–५०, २.६०, २.६९, २.७१, २.७५–७७, २.७९, २.८२, २.८४, २.८९–९०, २.९२–९५, २.९७–९८, २.१०२, २.१०४, २.१२३, २.१२९, २.१४८, २.१५९–१६५, २.१७१, ३.१९१, ३.२१९, ३.२२३–२२८, ३.२३३, ४.२४३, ४.२९०–२९३, ४.३४२–३४४, ४.३४६–३४७, ४.३७६, ५.३९५–३९६, ५.४०४, ५.४१७, ६.४२१–४२२, ६.४२७, ६.४३०, ६.४३६, ६.४३८–४४०, ६.४४२–४४३, ६.४५०, ६.४५४, ६.४७८
रायग्गिह १.५४
रायपसेणइज्ज २.८, २.१२
रायप्पसेणइ १.१२
रायपिंड १.९२, ५.३८५
रायमइ २.४७
रायरिसि १.८८
रायलालिय १.१४२
रायवडिंसय ३.२२३
रावण १.१४३
राहु १.७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिउमई १.५३
रिउवेद २.१३१, ५.३९४
रिउव्वेय १.३९, १.५५, २.२७, २.३८, ३.१७९, ४.२४३, ५.३९७, ६.४७९
रिक्खा १.१००
रिट्ठ १.४५, १.१३९
रिट्ठपुरी १.१३८
रिट्ठा १.४५, १.१३८
रिव्वेद २.५७, २.१२३
रुक्खमह ४.२७०, ५.३८२
रुक्खमूल १.७६
रुक्खमूलिय ४.२४४
रुद्द १.३२, २.६१
रुद्दमह ४.२७०
रुद्दसमुद २.१४७
रुप्पकूला ४.२६३
रुप्पि १.२७, १.२८, १.३५, १.९५, १.१०१. ३.१९१, ४.२६४
रुप्पिणि २.१७, २.२०, २.३४, ३.२०८, ३.२११
रुयग १.७–२०
रुयगिद २.६२
रूआसिया १.९
रूय ४.३७५
रूयंसा ३.२२४
रूयकंता ३.२२४
रूयग ३.२२४
रूयगसिरी ३.२२४
रूयगविई १.९
रूयप्पभा ३.२२४
रूयवडेंसय ३.२२४
रूया १.९, ३.२२४
रूयाणंदा ३.२२४
रूव २.७८, ४.३७४
रूवंसा १.९ १.९
रूवकंता १.९
रूवप्पभा १.९
रूवबई १.९, ३.२२५
रूवा १.२
रूविकाय २.१६४–१६५
रेणा २.१७२
रेवइया १.१००
रेवई १.८७, १.१००, १.१०४, २.१७, २.१९, २.१७५
रेवतग २.३४
रेवतगपव्वय २.३५, २.३७
रेवती १.८८, १.९९, ४.३४२–३४७, ५.४१०–४१२
रेवय २.१७
रेवयउज्जाण १.४९
रेवयव २.२०, २.४७–४८, ३.२१०–२११
रोइयावणसाण १.१७
रोद्द १.१४२
रोमय १.१२२
रोममुहा १.६२
रोह ५.४०४–४०५
रोहगुत्त २.१७२
रोहण २.१७२
रोहिणिया ६.४५०
रोहिणी १.१००, १.१०४, १.१४२, २.४७, ३.२२५, ६.४५१, ६.४५३–३५४
रोहिय ४.२६३
रोहियंसा ४.२६३
रोहीडअ २.१८, ६.४९०, ६.४९२

(ल)

लउसिय १.११५
लंतअ २.१०९, ५.३९१–३९२
लंतग १.१५, १.७९, २.९२, २.९७
लक्खणा १.९५, ३.२०८, ३.२११
लच्छिमई १.८, १.१३९
लच्छिमती १.१४२
लच्छी ३.२२६
लट्ठदंत २.९७–९८
लट्ठबाहु १.९५
लपाधरग ४.२६०
लयाजुद्ध २.७८, ४.३७५
ललियमित्त १.१४२
ललिया २.९३, ३.१८८
लवणसमुद्द १.१.२६, १.३१, १.३३–३४, १.११७–११८, १.१२०, २.१३६, २.१४०–१४५, ३.१९५, ३.१९७, ३.१९९–२००, ३.२०२–२०५, ६.४५५–३५६, ६.४६९, ६.४७७, ६.४८७
लवणाहिवइ २.१४२–१४३, ३.२०४–२०५
लाढ १.७६–७७, ५.४०७
लासिय १.११५
लिच्छई १.८६
लूहजीवी ५.३९२
लूहाहार ५.३९२
लेइयापिता ४.२९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेच्छई ५.३८२, ६.४२४, ६.४३४–४३६
लेच्छईपुत्त ५.३८२
लेतियापिता ४.३५१–३५२
लेव २.१४८
लेह १.१९, २.७८, ४.३७४
लोगंतिय १.४५–४६, १.६९, १.७१, १.९०
लोगणाह १.१०, १.५६
लोगनाह १.११२, ४.२६६, ४.३६६
लोगपईव १.१०, १.५६, ४.२६६, ४.३६६
लोगपज्जोअगर ४.२६६
लोगपज्जोयगर १.१०, १.५६, १.११२, ४.३६६,
लोगपाल १.१०, १.१५–१६, १.२४–२५, १.५६, १.८०, ४.३०८. ६.३९९
लोगप्पदीव १.११२
लोगमज्झावसाणिय १.१७
लोगहिय १.१०, १.५६, ४.२६६, ४.३६६
लोगुत्तम १.३, १.६, १.१०, १.५६, १.११२, ४.२६६, ४.३६६
लोय १.२०, १.४७, १.४९, १.५२, १.७०–७२, १.१३७, २.१५ २.३७, २.४४, २.५९, २.८५, २.९६, २.९९, २.१२५, २.१३२, २.१३७, २.१३९, २.१६९, ३.२१०, ३.२१५, ३.२२१, ३.२३०
लोयंत १.८०
लोयंतिय १.४९, १.५१
लोहकसाय १.९१
लोहजंघ १.१४३
लोहिच्च २.१७५

(व)

वइगुत्त २.९९
वइर २.१७१, २.१७३–१७५
वइरजंभ १.१४३
वइरणाभ १.९५
वइरसेणा ३.२२५
वइरसेणिय २.१७४
वइरी २.१७३
वइरोयण ३.२१९
वइरोयणिंद ३.२१९
वइरोसभणारायणसंघयण २.१३२
वइसमिइ २.९९
वइसाह १.७८, १.१००, २.४२, ४.३६१
वउल १.६०
वउव्विय १.५३
वउसिया १.११५
बंग ५.४०७
वक्कवासी ४.२४४
वग्गू १.१३८
वग्घमड १.२९, ६.४६१
वग्घावच्च २.१७१, २.१७३
वच्छ १.११३, १.१३८, २.१७१, २.१७५, ५.४०७
वच्छगावती १.१३८
वच्छमित्ता १.६–७
वच्छलिज्ज २.१७२–१७३
वज्ज १.१७
वज्जणाभ १.१०१
वज्जनागरी २.१७२
वज्जपाणि १.१०, १.१८, १.५६, २.१२
वज्जभूमि १.७६–७७
वज्जरिसहनारायणसंघयण १.२३, १.४८, १.८१, १.११२, ३.२२०
वज्जरिसहसंघयण २.४७
बज्जसूलपाणि १.१६
वज्जी ५.४०७, ६.४२४
वट्ट ४.२६४
वट्टखेडु २.७८
वडपादप १.४९
पडपाथव ४.२४५
वडभी १.११५
वडैसा ३.२२५
वडुकुमारी ३.२२०
वड्ढइरयण १.११७, १.१२४, १.१३३–१३४, १.१४१
वड्ढमाण १.१०१
वड्ढमाणपरिसा २.५०
वड्माणपुर ६.४९५
वड्ढमाणसमोसरण २.५०
वड्ढरयण १.१३२, १.१३७
वणमाला ४.२५८
वणसंड १.७०, ६.४८४
वणस्सइकाय २.१६६
वणियग्गाम १.८५
वणियग्गाम २.१०४
वण्हि १.४५
वत्थविहि २.७८, ४.३७५
वत्थुनिवेसण ४.३७५
वत्थुविज्ज २.७८, ४.३७५
वद्दलियाभत्त १.९१, २.२९, २.८२, ४.३७३, ५.३८५
वद्धमाण १.१७, १.५४, १.६७–६८, १.९०, १.९४, –९५ १.९८, १.११९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वद्धमाणग १.११४, १.११६
वप्प १.१३८
वप्पगावती १.१३८
वप्पा १.९५, १.१३९
वमण ३.२२९
वम्मा १.५१
वयगुत्त १.७२, १.८३, २.४८, २.११०
वयबलिय १.८२
वयसमिइ १.२०, १.७२
वयहारि १.९४
वरकलस १.१७
वरदत्त १.४९, १.१०१–१०२, २.१८–१९, २.१०४, २.१०८
वरदाम ४.२६३–३६४
वरदामतित्थकुमार १.१२०
वरदामतित्थ १.११९–१२०
वरमउड १.११४
वरिसधर १.३५
वरुण १.४५, २.१३५, ४.२४४, ४.३५८–३६०
वलयमरण २.१२६
वल्ली ३.१८७, ३.२१४
ववसायसभा ४.२६३, ४.२६७
ववहाराग ४.२८२
वसट्टमरण २.१२६
वसह १.५५, १.५९
वसिट्ठ १.५२, १.१११
वसीकरण ३.१८७, ३.२१४
वसु १.२६
वसुंधरा १.८, १.१३९, ३.२६६
वसुगुत्ता ३.२२६
वसुदत्ता ६.४७९–४८०
वसुदेव १.१४२, २.२२–२४, २.३३–३४ २.४७
वसुपुज्ज १.९५, १.९८, १.१०९
वसुमती ३.२२५
वसुमित्ता ३.२२६
वसूया ३.२२५
वह २.१७
वहखड्ड ४.३७५
वाइ १.४७, १.५०, १.५३, १.८८, १.१०६
वाइत्त ४.२५६, ४.२६४
वाइय २.७८, ४.३७४
वाइसंपया १.८८, १.१०६
वाउ १.२५
वाउकाय १.७५, २.३६, २.१६६
वाउकुमार १.२५
वाउक्काय १.२५
वाउभूइ १.१११, १.११३
वागरण २.१२३
वागलवत्थनियत्थ ४.२४५
वाणपत्थ ४.२४४
वाणमंतर १.६, १.१४–१५, १.१८, १.१९, १.२४–२५, १.४७, १.६५–६६, १.६९, १.७४, १.७८–७९, ३.२१९, ४.२४७, ४.२५३
वाणारसी १.३६, १.५१, १.५२, २.६९, ३.२२४, ३.२२६, ३.२२८–२३०, ४.२४३–२४४, ५.४०५, ६.४७६, ६.४७८,
वाणिज्य २.१७३
वाणियगाम ४.२९५, ४.२९९–३०२, ४.३६०, ६.४६५–४६६, ६.४६९
वाणियग्गाम २.३, २.११, २.९७
वामणि १.११५
वामा १.९५
वायगवंसी २.१७५
वायुभक्खी ४.२४४
वायुमूति १.१११
वारत्त २.९२
वारत्तअ २.९७
वाराणसी १.१४०, ४.३१२–३१३, ३४.३१७–३१८, ६.४४८
वाराह १.१०१, १.१४२
वारिणी १.३५
वारिसेण १.९४, २.३४, २.९७, ३.२०८
वारिसेणा १.६–७
वासणि १.८,१.१०२
वालुयप्पभा १.१४४, ३.२०९, ५.४१६
वासंतिमंडवग ४.२६०-२
वासंतिय १.६०
वासधर १.११९
वासवदत्त २.१०८
वासिट्ठ १.५६–५९, १.६८, १.१११, १.११३ २.१२२, २.१७१, २.१७२–१७४
वासिट्ठिया २.१७३
वासुदेव १.५७, १.६४, १.९३–९४, १.१०४, १.१३९, १.१४३–१४४, २.१७–१८, २.२०, २.२४–२७, २.२९, २.३१–३७, २.४७, ३.१९०–१९५, ३.१९७–२०५, ३.२०८–२११, ४.३७१
वासुदेवत्त १.५४
वासुदेवमाउ १.१४२-१४३
वासुदेवमायर १.६४
वासुपुज्ज १.९४–९७, १.१०१, १.१०९–११०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाहणसाला ६.४२२
विअट्टच्छउम ४.२६६
विअत्त १.१११
विउलमइ १.२२, १.५३, १.८२, १.८७, ४.२७६
विउलमइसंपया १.८७
विउलमति १.५०
विउव्वणिड्ढि १.८२
विओसग्गपडिमा १.८३
विझगिरि २.८७–८८, ५.४१३
विझगिरिपाय ५.४१७, ६.४९६
विक्खेवणी १.८४
विगमड १.२९, ६.४६१
विचित्ता १.६–७
विजय १.७०–७१, १.७८, १.१०१. १.१०४, १.१३५–१३६, १.१३९, १.१४२–१४३, २.६६, २.९८, २.१०७, २.१२०, २.१६०, ५.३९५–३९६, ६.४३६, ६.४३९, ६.४३७, ६.४३९–४४४, ६.४५९-४६० ६.४६३-४६४ ६.४७१-४७३, ६.४९५
विजयपुत्त ६.४७१
विजयपुर २.१०८, २.१३८, ६.४८५
विजयमित्त ६.४६५, ६.४६९, ६.४९५
विजयवड्ढमाण ६.४९५
विजयवद्धमाण ६.४६२–४६३
विजयविमाण २.९७
विजया १.७, १.९५, १.१००, १.१३९, १.१४२, ३.२२६
विज्जकुमार ५.४१७
विज्जापओय ३.२२९
विज्जाहर १.८२, २.१७
विज्जाहरकन्नगा २.१४१
विज्जाहरगइ १.१२९
विज्जाहरगोवाल २.१७३
विज्जाहरचारण २.३५, २.३७, २.८०
विज्जाहरराइ १.१२९
विज्जाहरराय १.१२९
विज्जाहर सेठि १.१३७
विज्जाहरी २.१७३, ३.१९५
विज्जु १.७९, ३.२२३
विज्जूण १.१५
विज्जूसिरी ३.२२३
विणमि १.१२९
विणय २.३९
विणयमूल २.४०
विणीया १.२०, १.१००, १.११४–११६, १.१२३, १.१३१, १.१३३–१३७
विण्ण १.१०१
विण्ह १.९५, २.२०–२१, २.१७४
वितत १.१७
विदब्भ १.१०१
विदिशा ४.२६२
विदुर ३.१९१
विदेह १.३८, १.६८, १.७१, ६.४३३–४३४
विदेहजच्च १.६८, १.७१
विदेहजणवय १.३०, १.४२
विदेहदिण्ण १.६८
विदेहदिण्णा १.६८
विदेहदिन्न १.७१
विदेहपुत्त ६.४२४, ६.४३५
विदेहरायवरकण्णगा १.१०१
विदेहरायवरकन्ना १.२८, १.३०, १.३५, १.३७–४४
विदेहवररायकन्ना १.३४,१.३६
विदेहसुमाल १.६८,
विदेहसुमाल १.७१
विपुलवाहण १.१३९
विप्पोसहि १.८२
विभंगनाण २.१३१–१३२, २.१३५
विमल १.१४, १.७९–८०, १.९४–९६, १.९८, १.१००, १.१०४–१०५, १.१०९–११०, २.३, २.१०–११,५.४१४
विमलघोस १.३
विमलवाहण १.४, १.९०, १.९५, १.१३९, २.१०८, ५.४१४–४१५
विमला १.१००, ३.२२५
विमाणकारि १.१४–१५
विमाणभवण १.५५,१.५९
विमाणवासि १.६६, १.६९,१.८०
विमाणवासिदेव १.६५,१.६८
वियट्टच्छउम १.१०, १.५६, १.८०, १.११२
वियडावइ ४.२६४
वियत्त १.११३
विरमजीवी ५.३९२
विरसाहार ५.३९२
विराट ३.१९१
विरेयण ३.२२९
विलाइ १.११५
विलेवणविहि २.७८, ४.३७५
विवागसुयधर १.८४
विवित्तजीवी ५.३९२
विवेगपडिमा १.८३
विसनंदि १.१४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसभक्खण २.१२६
विसाल १.१००
विसालकित्ति २.१२०
विसाहा १.५१–५३, १.९९–१००, २.१·
विसाहु १.१००
विसिट्ठ ३.२२४
विसुद्धजातिकुलवंस १.५७–५८
विसुद्धपिइमाईवंस १.२७
विसुद्धवंस १.९५, १.१०२
विस्सभूइ १.५४,१.१४२
विस्सवाइयगण १.१११
विस्ससेण १.९५, १.१३९
विहार २.४०–४१
वीचिधम्मक २.१७२
वीतसोगा १.१३८
वीतीभय २.१३७–१३९
वीयणि १.११४
वीयबुद्धि १.८२
वीयसोगा १.२६
वीयीत्रय २.१३९
वीर १.६९, १.७६–७७, १.९७, १.१००, १.१०८–१०९, १.१११
वीरंगय १.८८, २.१८–१९
वीरकण्ह ६.४२५
वीरकण्हमित्त २.१०७
वीरकण्हा ३.२३४–२३५
वीरजस १.८८
वीरपुर २.१०७
वीरभद्द १.५२, १.१११, २.१०८
वीरसेण २.१७, २.२०, २.१०८
वीरिय १.१११
वीसतिम १.१०१
वीसयोगा १.४३
वीससेण १.१०१
वुड्ढ २.१७४
वूह २.७८,४.३७५
वेउविज्ज १.१६
वेउव्विय १.२२, १.४७, १.५०, १.१०६
वेउव्वियसंपया १.२२, १.१०६
वेउव्वियसमग्घाय १.७, १.१२, १.१६, १.४५–४६, १.५८, १.६९–७०, १.१२६, १.१३४–१३५, २.६२, २.७५, २.१४३–१४४, ३.२०२, ४.२४७–२४९, ४.२५३–२५४, ४.२६३
वेउव्विसंपया १.८७
वेजयत २.९८ज
वेजयती १.७, १.१००, १.१३८, १.१४२
वेडसिरुक्ख १.१०१
वेणा २.१७२
वेणुदालि ३.२२४
वेणुदेव ३.२२४
वेद २.१२३
वेदब्भी २.३४
वेत्तारागिरि २.७३–७६
वेमाणिय १.१०, १.१४, १.१८–१९, १.२४–२५, १.२८, १.४७, १.५६, १.६६, १.७४, ४.२४६–२४७, ४.२४९, ४.२५२–२५३, ४.२६०, ४.२६७
वेमाणियदेव १.११
वेयड्ढ १.१२१, ४.२६४
वेयड्ढगिरि १.८९, १.१३७, २.१७, २.३४, २.८६–८७, ६.४६४
वेयड्ढगिरिकुमार १.१२१
वेयड्ढपव्वय १.१२१, १.१२९
वेयणिज्जाउयनामगोत्त १.५०,१.५३
वेयवाइ २.६५
वेयावत्त १.७८
वेलंब ३.२२४
वेस २.६६
वेसमण १.१८–१९, १.२६, १.३२, १.४५, २.६१, २.१०८, २.१३५, २.२४४, ६.४९३
वेसमणकुंडधारी १.६४
वेसमणकुंडलधर १.६९
वेसमणदत्त ६.४९०, ६.४९२–४९३, ६.४९५
वेसमणभद्द २.१०८
वेसमणमह ४.२७०
वेसवाडियगण २.१७३
वेसालियसावय २.१२३–१२५
वेसाली १.८५, ४.३५८, ५.४०५, ६.४३१–४३४
वेसियायण ५.३९८–३९९
वेहल्ल २.९७–९८, २.१०४, ६.४३१–४३४
वेहाणस २.१२६
वेहायस २.९७–९८
वेहास २.१४५
वोक्कसियदोस १.९४

(स)

सउण ४.३७५
सउणरूत २.७८
सउणि ३.१९१
सएरा १.८
संकरिण १.१४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकुचियपसारिय १.१७
संख १.२७–२८, १.३६–३७, १.८७–८८, १.९५, १.१०१, १.१०४, १.११४, १.१३१–१३२, १.१३८, २.३८, २.१२३, २.१३८, ४.३५४–३५७
संखधम ४.२४४
संखपरिव्वायग २.६५
संखवण २.१३१–१३२, ४.३२२–३२३, ४.३५२–३५४
संखवाणिय ४.२७५
संखवालय २.१६४
संखसमय २.३८
संघपालिय २.१७४
संघवालिय २.१७४
संजय १.८८, २.१११–११२, २.११८–११९
संडिल्ल २.१७४–१७५
संति १.९४, १.९५–९७, १.९८–१००, १.१०५–१०६, १.१०८, १.१०९–११०, १.१३९–१४०, २.११२, २.१२०
संतिकम्प २.९
संतिसेणिय २.१७३
संधिपाल २.१३३, ४.३५८
संधिवाल ४.२७८, ४.३६९
संपक्खालग ४.२४४
संब २.१७, २.२०, २.३४, ३.१९५, ३.२०८, ३.२११
संबाह ६ ४५६
संभव १.९४–९८, १.१०८–१०९
संभिन्नसोय १.८२
संभूत १.१४२
सभूतिविजय २.१०८
संभूय २.१५, २.१७५
संभूयविजय २.१७१–१७२
संमुइ १.४, १.८९
संमुति १.४, ५.४१३
संलेहणा १.२७, १.१३७, २.११, २.१३, २.१५, २.१९–२२, २.४३, २.४६, २.४९–५०, २.५५, २.५९, २.६२, २.९०–९२, २.९६, २.१०३–१०४, २.१०७, २.१०९, २.१२९–१३०, २.१४०, २.१४७, २.१५३, २.१६३, ३.१८९, ३.२०७, ३.२१५, ३.२१८, ३.२२२, ३.२३०, ३.२३३–३२३६, ४.२४६, ४.३०४, ४.३१६, ४.३२२, ४.३२७, ४.३३१, ४.३४१, ४.३४७, ४.३४९, ४.३५२, ४.३५४ ४.३७२, ४.३७४–३७५, ५.३९१, ५.४१५, ६.४४४, ६.४९७
संवर १.९५, १.१०४, २.६४, ४.२७१
संवेयणी १.८४
संसत्त ३.२२२
संसारकंतार १.७४
सक्क १.१०, १.१५, १.१८–१९, १.२३–२५, १.३२–३३, १.४४–४६, १.५६–५९, १.६४, १.६९, १.७१, १.१२६, २.१२-१३, २.३६, २.५५, २.७५, २.१२०, ३.३.२१९, ३.२२६, ३.२३१, ३.२३३, ४.३०८, ६.४२५, ६.४९९, ६.५०१
सक्करप्पभा ५.४१६
सक्कवज्जा १.१५
सक्किंद ६.४९८
सगड ६.४५९, ६.४७६–४७८
सगडमुह १.२१–२२
सगडवूह २.७८, ४.३७५
सगर १.१३९–१४०
सचित्तकम्म १.५९
सच्चइ १.१०४
सच्चणेमि २.३४, ३.२०८
सच्चभामा ३.२०८, ३.२११
सच्चवयणाइसेस १.१०३
सच्चसेण १.९४
सज्जीव २.७८, ४.३७५
सट्ठितंत २.३८, २.१२३
सडंग २.१२३
सड्ढई ४.२४४
सणंकुमार १.७९, १.१३९–१४०, २.११, २.९२, २.९७, २.१०७, २.१०९, २.१२०, ५.३९२, ५.४१८
सणंकुमारग १.१५
सणिच्छर १.७९
सण्णिवेस ६.४५६
सतअ १.८८, १.१०४
सतक्कतु १.५६
सतदुवार १.८९–९०
सतधणु १.४
सतेरा १.८, ३.२२४
सत्तधणु २.१७
सत्तवण्णवडिसय ४.२५७
सत्तसिक्खावय २.५४, २.१०५–१०६, ३.१८७, ३.२१५, ३.२१८, ४.२४५, ४.२९३, ४.२९६, ४.२९८, ४.३०५, ४.३१३, ४.३२३, ४.३३४–३३५, ४.३४३, ४.३४८, ४.३५१, ४.३६६, ४.३७१
सत्तिवण्ण १.१०१
सत्तिवन्नवण ४.२५९
सत्तिहत्थ १.९६
सत्तुसेण २.२२
सत्थनायग १.८२
सत्थप्पओग १.१२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्थवाह २.६१, २.१०५–१०६, २.१३३, २.१३७–१४०, ३.१८७, ३.१९०, ३.१९६, ३.२१६, ४.२७२, ४.२७८, ४.२९५–२९६, ४.२९९, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४–४३५, ४.३४३, ४.३४८, ४.३५१, ४.३५८, ४.३६२, ४.३६५, ४.३६९, ५.३८२, ५.४१४, ६.४४२, ६.४५०, ६.४६९–४७०, ६.४८०, ६.४९४–४९५
सत्थवाहपुत्त २.९८
सत्थवाही २.९९, २.१०४
सद्द १.९१
सद्दालपुत्त ४.२९५, ४.३३२–३४१
सद्दावह ४.२६४
सप्पलय २.१७४
सप्पियासव १.८२
सबरी १.११५
समज्जग ४.२४४
समण १.१७, १.२०, १.२२–२३, १.६७–६८, १.७४, १.७७, १.८७, १.९०-९२
समणधम्म १.७१, १.९१, २.८४
समणपइ १.८०
समणसंघ १.७४
समणसंपया १.२२, १.४७, १.४९, १.५२, १.८७, १.१०५
समणोवासग १.२२, १.३३, १.५०, १.५२, १.६८, १.८७
समणोवासगपरियाग १.६८, २.१४०, ४.२४६
समणोवासगसंपया १.२२, १.५०, १.५२
समणोवासय १.३१–३३, १.४७
समणोवासिगा १.५२
समणोवासिया १.२२, १.८७
समणोवासियासंपया १.२२
समताल २७.८, ४.३७४
समवसरण २.३५, ४.३१७, ४.३२२–३२३, ४.३२८, ४.३३०, ४.३४२, ४.३४६, ४.३४८, ४.३५०, ४.३६३, ४.३६९
समाणिअ १.३१
समाहार १.८
समाहि १.१०४
समाहिमरण ३.१८०–१८१, ४.३२७, ४.३३१, ४.३४१, ४.३४९. ४.३७२
समिइ १.७३
समिय २.१७३
समुद्द १.१४२, २.२१, २.२२, २.१७५
समुद्ददत्त १.१४२, ६.४८८–४८९
समुद्ददत्ता ६.४८८-४८९
समुद्दपालं २.११४–११५
समुद्दविजय १.४८, १.९५, १.१३९, २.१७–१८, २.२०, २.३४–३५, २.४७–४८, ३.१९०–१९१
समोसरण १.१५, २.५०, २.९४, २.१०४, २.१०७, २.१२३, २.१२९, २.१३१, ४.२५४–२५५, ४.२८४, ४.३५३–३५४, ४.३६०, ४.३६६, ४.३७०, ४.३७६, ५.३९३, ६.४२१, ६.४२५, ६.४६०, ६.४६६, ६.४७१, ६.४७६, ६.४७९, ६.४७९, ६.४८४, ६.४८८, ६.४९०
सम्मा १.१०२
सम्मेय १.४८
सम्मेयसेलसिहर १.५३
सयजल १.४
सयपभ १.३–४, १.१०४
सयंभू १.१०१, १.१४२, १.१४४
सयंभूरमणसमुद्द २.१३६
सयंसंबुद्ध १.१०, १.५६, ४.२६६
सयणविहि २.७८, ४.३७५
सयदुवार २.१०८, ३.२०९, ५.४१३–४१४, ६.४६२
सयवणु १.४, २.१७
सयय १.९४
सयरह १.४
सयाउ १.४
सयाणीय ३.२३६, ६.४७९–४८०
सरगय २.७८, ४.३७४
सरण १.३
सरणदय १.१०, १.५६, १.८०, १.११२, ३.२२०, ४.२६६, ४.३६६
सरमह ४.२७०
सरवण ५.३९४
सरस्सई २.१०७, ३.२२५
सरिस १.७९, ३.२२८
सरीरसंलेहणा १.६८
सलिलावई १.२६
सलिलावती १.४३, १.१३८
सल्ल ३.१९१
सवट्टहठ १.५४
सवण १.९९, १.१३८
सवणी १.१००
सव्वओभद्द १.१४, १.७९–८०, ३.२२५, ६.४७९, ६.४९६
अव्वओभद्दपडिमा १.८३
सव्वक्खरसन्निवाइ १.८७, १.११२
सव्वगा १.८
सव्वट्ठसिद्ध १.५, १.८६, २.९८, २.१०३–१०४, २.१०७, ३.१८१, ५.४१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वट्ठसिद्धविमाण २.२०
सव्वण्णू १.१०, १.८७, १.८०, १.९०–९१, २.१४, २.५७, २.१२४, २.१३२, २.१३६, ३.२२०, ३.२३७, ४.३६६
सव्वदरिसी १.१०, १.२१, १.५६, १.८०, १.९०–९१, १.११२, २.१४, २.५७, २.१२४, २.१३२, २.१३६, ३.२२०, ३.२३७, ४.२६६, ४.३६६
सव्वन्नू १.२१, १.५६, १.११२, ४.२६६
सव्वभावदरिसी १.७८
सव्वरयण १.१३१
सव्वाणंद १.९४
सव्वाणुभूइ १.१०४
सव्वाणुभूति ५.४०५, ५.४१२–४१३
सव्वोसहि १.८२
ससि १.५५, १.५९, १.९४
ससिप्पह १.९८
सहकार १.६०
सहदेव ३.१९१
सहदेवी १.१३९
सहसंबवण २.१० -१२, २.१४, २.२३, २.२७, २.३०, २.९८–१००, २.१०३, २.१३३, २.१३६–१३७, ३.२१०, ३.२२५
सहसंबुद्ध १.८०, १.११२, ३.२२०
सहस्संबवण १.४७, २.५, २.१०५, ३.२०६–२०७, ४.३२७–३२८, ४.३३०, ४.३३२–३३३, ४.३३५
सहस्सक्ख १.१०, १.५६
सहस्साणीय ३.२३६
सहस्सार १.१५, १.५४, १.७८, २.९२, २.९७, २.१०९, ५.४१३
साइ १.८६, १.१०४, २.१७५
साएय १.१४०, २.९७, २.१०८, ३.२२६
साकेत २.१०४
सागर १.५५, १.५९, १.७३–७४, १.११४, १.१४२, २.२०–२१
सागरदत्त ३.१८२–१८८, ६.४४५, ६.४८४–४८६
सागरदत्तपुत्त ६.४४५–४४६
सागरदत्ता १.१००
सागरमह ४.२७०
सागरय ३.१८३–१८५, ३.१८७
सागार १.३२, १.७५
सागेय १.२९–३०, ३.२२५
साण २.६१, ५.३९३
साणकोट्ठअ ५.४१०–४११
साणकोट्ठग ५.४१२
साम १.२९, ४.२६९, ६.४२७, ६.४८१
सामकोट्ठ १.९४
सामचंद १.९४
सामज्ज २.१७५
सामण्णपरियाग १.२७, १.५४, १.९२, २.११, २.१३, २.२०–२१, २.४३, २.४६, २.४९, २.५५, २.५९, २.६८, २.९१–९२, २.९६–९७, २.१०७, २.१४७, २.१५८, २.१६७, ३.१८९, ३.२०७, ३.२१०, ३.२१५, ३.२१८, ३.२२२, ३.२३०, ३.२३३, ३.२३५, ५.३९२, ५.४१५, ६.४६४
सामण्णपरियाय १.२३, १.११२, १.१३८, २.२७, २.५०, २.९८, २.१०९
सामण्णोवणिवाइय १.१७
सामन्नपरियाग १.५०, १.८६
सामन्नपरियाय १.५३
सामवेद १.३९, २.५७, २.१२३
सामवेय १.५५, २.३८, ३.१७९, ६.४७९
सामा १.९५, ४.३१२, ६.४९१
सामाइय १.७१–७२, २.११, २.१३, २.१९, २.२१–२२, २.३७, २.४२, २.४४, २.४९–५०, २.५९, २.६८, २.८९, २.९१–९२, २.१००, २.१०७, २.१०९, २.१२८, २.१५३, २.१५८, ३.२०७, ३.२१०, ३.२१८, ३.२२२–२२३, ३.२३३–२३६
सामाइयचरित्त १.४७, १.७१
सामाग १.७८
सामाणिय १.६–७, १.१०, १.१२–१६, १.१८, १.२४, १.४५, १.५६, १.८०, २.४९–५०, ३.२१९, ३.२२२, ३.२२६, ३.२२८, ३.२३३, ४.२४३, ४.२४६, ४.२५१–२५३, ४.२६४-२६५, ४.२६७, ४.२९०, ४.३०८, ६.४९८–४९९
सामाणियपरिसोववण्णग ४.२६८
सामाणियपरिसोववन्नग ४.२६५
सामुच्छेइत ५.३८१
सामुच्छेइय १.८८
सामुद्ददुद्दुर १.४०
सामुद्दविजय ३.१९९
सारण २.२२, ३.१९५
सारस १.६०
सारस्सय १.४५
सारहि ४.२७१
साल १.१०१
सालधरग ४.२६०
सालभंजिया ४.२५८
सालरुक्ख १.७८
सालाडवी ६.४७१, ६.४७३–४७५
सावगधम्म १.९१, २.१८, २.१०७–१०९, ३.२१८, ४.२४३, ४.२९६, ४.२९८, ४.३०५, ४.३१३, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४–३३५, ४.३४३, ४.३४८, ४.३५१, ४.३६२
सावज्ज ४.३७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सावण १.४९, १.५३, २.४२, ४.३६१
सावत्थिया २.१७३
सावत्थी १.३५, १.८५, १.८८, १.१४०, १.१४२, २.४९–५०, २.९७, २.१२३–१२५, ३.२२४, ३.२२६, ४.२६९–२७०, ४.२७२–२७३, ४.३४७–३५१, ४.३५४–३५६, ५.३८१, ५.३८९, ५.३९३–३९४, ५.४००, ५.४०५–४०८, ५.४१०
सावय १.४७
सावयधम्म २.१८, २.५४, ४.२४६
सावियबुद्ध १.१०४
सावित्रा १.७४, १.८८
सावित्रासंपया १.१०६
सासयभिसा १.१००
साहंजण ६.४७६
साहंजणी ६.४८४
साहु १.३
सिंधु १.१२०-१२२, १.१२४, १.१२६, १.१२८, १.१३०, ४.२६३
सिंधु देवीभवण १.१२०
सिंधु सागरंत १.१२२
सिंधु सोवीर २.१३७–१३९
सिंहल १.१२२
सिंहली १.११५
सिक्खाकप्प २.१२३
सिक्खावय १.९१, २.२.३९, ४.३२८
सिज्जंभव १.११३, २.१७५
सिज्जंस १.९८
सिणायग २.६५
सिद्ध १.३, १.१७, १.२३, १.२७, १.४७, १.७१, १.८५–८६, २.११२, २.१२६
सिद्धत्थ १.१६, १.५४, १.५७–५९, १.६१–६४, १.६६, १.६८, १.९४–९५, १.१००, २.१८, ६.४८४
सिद्धत्थगाम ५.३९८
सिद्धत्थरायपुत्त १.५४
सिद्धत्थवण १.२०, १.७०
सिद्धत्था १.९५
सिद्धायतण ४.२६६–२६७
सिद्धायतन ४.२६५
सिद्धि २.१२६
सिप्प १.१९
सिप्पायरिय ४.२८५
सिबिया ३.२१०
सिबियारयण २.४७
सिया २.६०
सियाणगभोयण २.६५
सिरि १.८, २.१०७, ३.२२६
सिरिउत्त १.१३९
सिरिकंता १.४, १.१०८
सिरिगुत्त २.१७२
सिरिघर १.१३७
सिरिचंद १.९४
सिरिदाम ६.४८१, ६.४८३
सिरिदेवी १.१३९, २.१०७–१०८, ३.२२६
सिरिधर १.१११
सिरिभूइ १.१३९
सिरिया १.९५
सिरिवच्छ १.१४, १.७९-८०, १.११६, १.१२३, २.२३-२४, २.८४
सिरिवच्छा १.१७
सिरिवडिंसय ३.२२६, ३.२२८
सिरिवण २.२२, २.६६–६७
सिरिस १.१०१
सिरिसोम १.१३९
सिरिहर १.५२
सिरी २.६६, ६.४६५, ६.४६९, ६.४८८, ६.४९०, ६.४९३-४९४
सिरीस १.६०
सिलिया ३.१८७, ३.२१४
सिलोय २.७८, ४.३७५
सिव १.३२, १.८८, १.१४२, २.४९–५०, २.६१, २.१३३-१३७
सिवणंदा ४.२९५, ४.२९९–३००
सिवभद्द २.११, २.१३३–१३४
सिवभूइ २.१७४
सिवमह ४.२७०
सिवसेण १.९४
सिवा १.४८, १.९५, १.१०२, २.३४, २.४७
सिविया १.२४ १.५२ १.७० २.३७
सिसुपाल ३.१९१
सिंह १.५५
सिंहरी ४.२६३
सिंहि १.५९
सीअल १.९८
सीओदा १.२६
सीओया ४.२६४
सीतल १.९५ १.९७
सीता १.९३ १.१३८
सीतोया १.१३८
सीत्थिय १.११४
सीमंकर १.४
सीमंत १.८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीमंधर १.४
सीयल १.९४ १.९६ १.९९–१०० १.१०९–११०
सीया १.८ १.२० १.२६ १.४६–४७ १.४९ १.५२ १.७०–७२ १.१०० १.१४२, २.१३–१४, २.२.३७ २.४३–४४, २.४७, २.५५, २.८३–८४, २.९२, २.१६७, ३.१८३, ३.२०६, ३.२१०, ३.२१२, ३.२१५, ३.२३०
सीयामूह २.१६७
सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाण १.३२–३३
सीवग १.१३२
सीह १.५५, १.५९, १.९८, २.१७४–१७५, ५.४११–४१२
सीहगिरि १.९५, २.१७१, २.१७३, ६.४७७
सीहगुहा २.१६०–१६२
सीहनिक्कीलिय १.२७, १.८३, ३.२३५
सीहपुर १.१३८, ६.४८१
सीहमड १.२९, ६.४६१
सीहरह १.९५, ६.४८१
सीहसेण १.९५, १.१०१, २.९८, ६.४९१–४९२
सीहासण १.११४, ४.२६०
सुआइक्ख १.१०४
सुई १.१०२
सुंदर १.९५
सुंदरबाहु १.९५
सुंदरी १.२२, १.१४०
सुंभ १.५२, ३.२२४
सुंभवडेंसय ३.२२४
सुंभसरी ३.२२४
सुंभा ३.२२३–२२४
सुंभुत्तर ५.४०७
सुंसुम २.१६४
सुंसुमा २.१५९, २.१६१–१६३
सुंसुमारपुर ६.४९७–४९८
सुकच्छ १.१३८
सुकण्णा २.१०८
सुकण्ह ६.४२५
सुकण्हा ३.२३४–२३५
सुकाल २.१०८–१०९, ६.४२५, ६.४३५
सुकाली २.१०९, ३.२३४–२३५, ६.४३५
सुकोसल १.९४
सुक्क १.७९, २.४९, ४.२४३, ४.२४६
सुक्कवडिंसय ४.२४३, ४.२४६
सुग्गीव १.९५, १.१४३, २.११५
सुघोस १.३, १.१५, २.१०८
सुघोसा ३.२२५
सुचंद १.९४
सुजणकुलकन्नगा २.१४१
सुजसा १.९५
सुजाय २.१०४, २.१०७
सुजाया ३.२३३
सुट्ठिय २.१७१-१७३, ३.२००
सुट्ठियदेव ३.१९९
सुणंद १.१०१, ५.३९६-३९७
सुणंदा १.१३९
सुणक्खत्त २.९८, २.१०४
सुणहमड १.२९
सुण्णगार १.७६
सुतितिक्ख १.१०४
सुत्त २.७८
सुत्तखंड २.७८
सुदंसण १.१६, १.९५, १.११९, १.१३९, १.१४२-१४३, २.३, २.५, २.११-१२, २.३८-४०, २.९२, २.९४-९७, ३.३.२२७, २२७
सुदंसणा १.२०, १.६८, १.१००, १.१४२, ३.२२५
सुदत्त २.१०५-१०६
सुदरिसण ६.४८१
सुदरिसणा ६.४७६, ६.४७८
सुदाम १.३
सुद्धदंत १.१३९, २.९८
सुधम्म २.१०८
सुनंद १.५२, १.१०४, ६.४६६, ६.४६८
सुनंदा १.५२
सुनक्खत्त ५.४०६, ५.४१२-१३
सुनाभ ३.१९५
सुपइट्ठ २.४९-५०, २.९२, २.९७, ६.४९०, ६.४९२
सुपइट्ठपुर ६.४६५
सुपडिबद्ध २.१७१
सुपम्ह १.१३८
सुपस्स १.१०४
सुपास १.३, १.६८, १.८८, १.९४-९६, १.९८, १.१०४, १.१०६, १.१०९-११०
सुप्पइण्णा १.८
सुप्पडिबुद्ध २.१७२-१७३
सुप्पबुद्धा १.८
सुप्पभ १.४, १.९४, १.१४२-१४३
सुप्पभा १.१००, १.१४२
सुप्पसिद्धा १.१००
सुबंधु १.४, १.१४२, ६.४८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुबाहु १.३५, २.१०८
सुबाहुकुमार २.१०४-१०७
सुबुद्धि १.२९, १.३०, २.५१-५५
सुब्भभूमि १.७६
सुभ १.१११
सुभगा ३.२२५
सुभघोस १.१११
सुभद्द १.१४२, २.१०८, ६.४७६-४७७
सुभद्दपडिमा १.८३
सुभद्दा १.२२, १.१३७, १.१३९, १.१४२, २.१०८, ३.२२७,-२३०, ३.२३३, ४.३६८, ४.३७०-३७१, ६.४६५, ६.४६८-४६९
सुभा १.१३८
सुभूम १.४, १.१३९-१४०
सुभूमिभाग १.९०, २.३८, २.४३-४४, ३.१७९-१८१, ३.१८८. ५.४१४-४१५, ६.४४४-४४६, ६.४५०
सुभोगा १.६
सुमइ १.४, १.९६, १.९८, १.१०१, १.१०८-१०९
सुमंगल १.९४, ५.४१४-४१५
सुमंगला १.१३९
सुमणदाम १.१६
सुमणभद्द २.९२, २.९७
सुमणा १.१०२
सुमणाइया ३.२३३
सुमति १.९४-९५, १.१०८
सुमरुता ३.२३३
सुमिणभद्द २.१७२
सुमित्त १.४७, १.९५, १.१०१
सुमित्तविजय १.९५, १.१३९
सुमुह २.३३, २.१०५-१०६, ३.१९५
सुमेघा १.७
सुमेरुप्पभ २.८६-८७
सुमेहा १.७
सुय २.३८-४०, २.४२-४३
सुयनाण ४.२७६
सुयसागर १.९४
सुर १.४५, १.७०, १.९५
सुरग्गि ३.२०९
सुरट्ठाजणवय ३.१९०-१९१, ३.१९८, ३.२०६
सुरणुचर १.१०४
सुरप्पिय २.१७, २.२०, २.३४-३५, २.३७
सुरादेव ४.२९५, ४.३१७-३२१
सुरादेवी १.८, ३.२२६
सुरिद १.१०, १.१४, १.२४, १.४६, १.५६, २.४९
सुरिददत्त १.१०१
सुरिदवज्जिय १.१५
सुरियाभ २.१८, ४.२९०
सुरूआ १.९
सुरूव १.४
सुरूवा १.९, ३.२२५
सुलसा १.८७-८८, १.१०२, १.१०४, २.२२, २.२४-२५
सुलसाचरिय २.२५
सुवग्गु १.१३८
सुवच्छ १.१३८
सुवच्छा १.६-७
सुवण्ण १.१५, १.७९, १.१०३, १.११७, ४.२७१
सुवण्णकार १.१३२
सुवण्णकुमार ५.४१७
सुवण्णकूला ४.२६३
सुवण्णगारसेणि १.३५-३६
सुवण्णजुत्ति २.७८, ४.३७५
सुवण्णपाग २.७८, ४.३७५
सुवन्नपत्तिया २.१७२
सुवप्प १.१३८
सुवासव २.१०४, २.१०८
सुविभज्ज १.१०४
सुविहि १.९५-९६, १.१०८-११०
सुव्वत १.१०१
सुव्वय १.९४, १.९८, १.१०९, २.१७४
सुव्वया १.९५
सुसमदुसमा १.२३, १.५४
सुसमसुसमा १.५४–५५
सुसमा १.५५
सुसरघंटा ४.२४८
सुसाण १.७६
सुसाण १.७६
सुसीमा १.९५, १.१३८, ३.२०८, ३.२११
सुसेण १.१२१-१२३, १.१२६, १.१२८, १.१३०-१३१, ६.४७६, ६.४७८
सुस्सर १.१५, ३.२२५
सुस्सरणिग्घोस १.१५
सुहत्थि २.१६४, २.१७१, २.१७५
सुहपरिकम्मणा १.६२
सुहम्म १.१०१, १.१११, १.११३, २.१७१, २.१७५, ६.४५९, ६.४६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहम्मा १.१०–११, १.१५, १.२५, १.३३, १.५६, २.१८, २.३५, २.४९–५०, ३.१९०, ३.२२५–२२६, ३.२२८, ४.२४६, ४.२४८, ४.२६१–२६३, ४.२६७, ४.२९०, ६.४९८, ६.५०१
सुहावह १.२६
सुहुम १.४
सूमालिया ३.१८२–१८९, ३.२०७
सूय १.१३२, १.१३६
सूयगड १.७३
सूयार १.१३७
सूर १.७९, १.११३, १.१३९, २.४९–५०, २.९२, २.९७–९८, २.१०३, ३.२१९, ३.२२५
सूरदेव १.१०४
सूरप्पभ ३.२२५
सूरप्पभा ३.२२५
सूरप्पह १.१००
सूरसिरी १.१३९, ३.२२५
सूरसेण १.९४
सूरिय २.११, २.२०
सूरियकंत ४.२६८, ४.२८६
सूरियकंता ४.२६८, ४.२७७, ४.२८५–२८६
सूरियाभ २.४९–५०, ३.२००, ३.२२८, ४.२४६–२४९, ४.२५१–२५४, ४.२५६–२५७, ४.२५९–२६०, ४.२६२–२६५, ४.२६७–२६८, ४.२८७
सूरियाभविमाणवासि ४.२५२, ४.२६४, ४.२६७
सूरियाभरायहाणि ४.२६५
सूरिल्लियमंडवग ४.२६०
सूलपाणि १.१४, १.१८, १.२४
सूवकार १.१३२
सूसरा २.४९, ३.२२८
सेचणय ६.४३१
सेज्जंस १.२२, १.६८, १.९४–९६, १.९८, १.१०१, १.१०९–११०, २.१७१
सेज्जायरपिंड १.९२, ५.३८५
सेट्ठि २.६१, २.१०५–१०६, २.१३३, २.१३७–१३९, ३.१८७, ३.१९०, ३.१९६, ३.२१६, ४.२७८, ४.२९५–२९६, ४.२९९, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४–३३५, ४.३४३, ४.३४८, ४.३५१, ४.३५८, ४.३६२, ४.३६५, ४.३६९, ५.३८२, ५.४१४, ६.४४२, ६.४५०, ६.४६९, ६.४७०, ६.४८०, ६.४९४–४९५
सेणा १.३०, १.३५, १.४१, १.९५, १.११६–११७, १.११९, १.१२१–१२२, २.३५–३६, २.४७, २.७६, २.१७२, ३.१९१–१९४, ३.१९९-२०१, ३.२०५, ३.२१८
सेणावइ २.६१, २.१०५–१०६, २.१३३, २.१३७-१३९, ३.१८७, ३.१९०, ३.१९६, ३.२१६, ४.२७८, ४.२९५–२९६, ४.२९९, ४.३१३, ४.३१८, ४.३२३, ४.३२८, ४.३३४–३३५, ४.३४३, ४.३४८, ४.३५१, ४.३५८, ४.३६२, ४.३६५, ४.३६९, ५.३८२, ५.४१४, ६.४५०, ६.४७०, ६.४८०, ६.४९४, ६.४९५
सेणावइपुत्त ५.३८२
सेणावइरयण १.१३१, १.१३४–१३७
सेणावतिरयण १.१४१
सेणि १.३५–३८
सेणिपसेणि १.१३२
सेणिप्पसेणि १.४६, १.११६, १.१२०, १.११८, १.१३२, १.१३४, १.१३६–१३७, २.७७
सेणिय १.८८–८९, १.१०४ १.११२ २.४९–५०, २.६९–७७, २.८२–८५, २.८९, २.९२–९४, २.९७–९८, २.१०२–१०४, २.१०८–१०९, २.११२–११४, २.१७३, ३.२१९, ३.२२६, ३.२२८, ३.२३३, ३.२३५, ४.२४३, ४.२९०:२९१, ४.२९४, ४.३४२, ६.४२१–४२३, ६.४२५, ६.४२७, ६.४२७, ६.४३०–४३२, ६.४३५
सेतविति ५.३८१
सेत्तुंज २.२१–२२, २.३३–३४, ३.२०७
सेना १.४२
सेय १.८८
सेयंस १.१०९, १.१४२
सेयणग ६.४३२, ६.४३४
सेयभद्द ६.४७९
सेलग २.४३, २.४५–४६, २.१४४–१४७
सेलगपुर २.३८, २.४३–४४
सेलय २.३८, २.४३-४६, २.१४४
सेलवालय २.१६४
सेलोदाइ २.१६४, ४.३७६
सेवालभक्खि ४.२४४
सेवालोदाइ २.१६४
सेसदविया २.१४८
सेसवई १.८
सेसवती १.६८, १.१४२
सेसविया १.८८, ४.२६८–२६९, ४.२७१–२७३, ४.२७५–७८, ४.२८५–२८६
सोगंधिया २.३८–४०, २.४३, २.१०८
सोतित्तिया २.१७२
सोत्तिमई ३.१९१
सोत्थिय १.१७, १.११६, १.१२३
सोदामिणि १.८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोम १.५२, १.१११, १.१४२, २.३१, २.१३४, १.१७२, २.१७९
सोमणवण ४.२६४
सोमणस १.१४, १.१६, १.७९–८०
सोमणसवण ४.२६०
सोमदत्त १.१०१, २.१७२, ३.१७९, ६.४७९-४८०
सोमदेव १.१०१
सोमभूइ ३.१७९
सोमभूइय २.१७२
सोमसिरी २.२७, २.३१
सोमा १.१०२, २.२७, ३.२३१–२३३
सोमिल २.२७, २.३१, २.३३, ४.२४३–२४६, ४.३६०–३६२
सोय २.३८
सोयधम्म १.३९–४०, २.३८–३९
सोयमूलय २.३८–३९
सोयामणि १.८, ३.२२४
सोयासोय २.१०८
सोरट्ठिया २.१७३
सोरिय ६.४८८
सोरियदत्त ६.४५९, ६.४८८–४९०
सोरियपुर १.४८, २.४७, ६.४८८
सोरियवडसग ६.४८८
सोवण्णियकलस १.१६
सोवागकुल २.११०
सोवीरराय २.१२०
सोसलिअ १.२०
सोहम्म १.१०–११, १.१३, १.३३, १.५९, १.७९, २.११, २.१३, २.२०, २.५०, २.९२, २.९७, २.१०७, २.१०९, २.१३१, २.१४७, २.१६३, ३.२२५–२२६, ३.२२८, ३.२३१, ४.२४६, ४.२४८, ४.२५२, ४.२६४, ४.२८७, ४.२९०, ४.२९४, ४.३०४, ४.३०८, ४.३११, ४.३१६, ४.३२२, ४.३३१, ४.३४७, ४.३५२, ४.३५४, ४.३५९, ४.३६२, ५.३९२, ५.४१७, ६.४६५, ६.४७०, ६.४८०, ६.४८३, ६.४८७, ६.४९०, ६.४९४, ६.४९६, ६.४९८, ६.५००
सोहम्मकप्प १.५६, २.७५
सोहम्मकप्पवासि १.१०, १.२४, १.५६, २.७६
सोहम्मग १.१५
सोहम्मवडिंसग ४.३११, ४.३१६, ४.३३१
सोहम्मवडिंसय १.१०, १.३३, १.५६, ४.२५७
सोहम्मवडेंसग ४.३०४
सोहम्मवडेंसय २.१३, ४.३०८, ६.४९८
सोहम्मविडिंस १.५९

(ह)

हंसलक्खण १.४७, १.७०, २.३७, २.८३, २.८५ २.१३९
हंसस्सर १.१५
हंसासण ४.२६०
हक्कार १.४
हत्थ २.१७४
हत्थकप्प ३.२०६–२०७
हत्थि २.१७४
हत्थिजाय २.१४८
हत्थिणउर १.१४०
हत्थिणपुर १.१४२, २.७, २.१५–१६, २.५०, २.१०४
हत्थिणाउर १.३७–३८, २.१०५–१०६, ३.१९१, ३.१८३–१९५, ३.१९७–२००, ३.२०३–२०५, ३.२२६, ६.४६६–६.४८०, ६.४८३, ६.४८७, ६.४९०
हत्थिणापुर २.५, २.८, २.१०–१४, २.१३३–१३७
हत्थितावस ४.२४४
हत्थिमड १.२९, ६.४६१
हत्थिरयण १.८९–९०, १.११६–११७, १.११९, १.१२१–१२३, १.१३०, १.१३२–१३३, १.१३५–१३७, १.१४१, २.२७, २.३३, २.३६, २.८७, ३.१९१, ३.२०१
हत्थिराय २.८६–८७, ४.३७६
हत्थिलिज्ज २.१७२
हत्थिवाल १.८५–८६
हत्थिसीस २.१०४–१०६, २.१०७, ३.१९१, ६.४५५–४५६, ६.४५८
हत्थुत्तरा १.५४–५५, १.५७, १.५९, १.६५, १.६९–७०, १.७२, १.७८, १.१००
हम्बउट्ठ ४.२४४
हयलक्खण २.७८, ४.३७५
हरि ३.२२४
हरिएस २.११०
हरिएसबल २.११०
हरिकंता ४.२६४
हरिचंदण २.९२, २.९७
हरिणेगमेसि १.११, १.१५, १.५९, १.५९, २.२५–२६
हरियभोयण १.९१, २.२९, २.८२, ५.३८५
हरियायण १.१११, १.११३
हरिवंसकुल १.५५, १.५७–५८, १.११३
हरिसेण १.१३९–१४०, २.१२०
हरिस्सह ३.२२४
हल्ल २.९८
हारिय २.१७२, २.१७५
हारियमागलारी २.१७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हालाहला ५.३९३, ५.४००–४०३, ५.४०५, ५.४०७–४१०
हालिज्ज २.१७२
हासा १.८
हिमव २.१७५
हिमवंत २.२०–२१, २.४३, २.६९, २.८२, २.१०५, २.१३३–१३४, २.१३७, २. १३९, ३.१९५, ३.२०२, ३.२१६, ४.२६०, ४.२६८–२६९
हिमवाय १.७६
हियउड्डावण ३.१८७, ३.२१४
हिरण्णजुत्ति २.७८, ४.३७५
हिरण्णपाग २.७८, ४.३७५
हिरि १.८, ३.२२६
हिरिपुप्फवती ३.२२५
हेमजाल ४.२६१
हेमवय ४.२६३
होत्तिय ४.२४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

- धर्मकथानुयोग——उन विशिष्ट पुरुषों की जीवन-कथा, चरित्र तथा साधना का वर्णनात्मक संकलन है, जिनके जीवन में धर्म साकार रूप में प्रतिष्ठित हुआ। तप, त्याग, ध्यान, तितिक्षा, सेवा, समता, करुणा एवं निष्पृहता आदि उत्तम गुण जिनके चरित्र में प्रतिबिम्बित थे।
- जैन आगमों में यत्र-तत्र विकीर्ण रूप से ऐसे सैकड़ों चरित्र अंकित हैं, जिनका अध्ययन-अनुशीलन करने के लिए पाठक को अनेक आगमों का अनुसंधान करना पड़ता है, जो बहुत ही दुरूह और दुःशक्य कार्य है।
- आगम-गत उन समस्त चरित्रों का वर्गीकरण कर एकत्रपुस्तकाकार प्रकाशित करने की यह योजना——धर्मकथानुयोग नाम से पाठकों के हाथों में प्रस्तुत है।
- आगम अनुयोग का यह दुरूह, अत्यधिक श्रमसाध्य, मानसिक एकाग्रता तथा बौद्धिक परिश्रम का कार्य करने में संकल्पशील है—ज्ञानयोगी मुनि श्री कन्हैयालाल जी म० "कमल"।
- मुनि श्री जैन आगम, टीका, चूर्णि; भाष्य, आदि के गहन अभ्यासी, शोधन तथा विवेचना में अत्यन्त सुदक्ष हैं। सम्यग् ज्ञानाराधना ही आपके जीवन का विशिष्ट एक लक्ष्य है। आगमों की प्राचीन अनुयोग शैली को वर्तमान में सर्व सुलभ करने हेतु आप श्री धर्मकथानुयोग (प्रस्तुत,) गणितानुयोग (प्रकाशित), द्रव्यानुयोग (कार्याधीन) एवं चरणानुयोग (कार्याधीन) में क्रमशः समस्त आगम साहित्य को नवीन शैली में प्रस्तुत करने हेतु अहर्निश संलग्न हैं।
- इस महान् कार्य में सहयोगी हैं–सुप्रसिद्ध मनीषी, भारतीय तत्वविद्या के गहन अभ्यासी श्री दलसुखभाई मालवणिया, जिनकी विद्वत्ता, तटस्थ दृष्टि तथा मौलिक सूझ-बूझ देश-विदेश में सुविख्यात है।
- आगम अनुयोग ट्रस्ट, अहमदाबाद (पंजीकृत) इस महान् ज्ञानराशि को प्रकाशित, मुद्रित कर अल्प मूल्य में जिज्ञासुजनों को सुलभ कराने के लिए प्रयत्नशील है।
- यदि पाठक एक-एक स्वतन्त्र ग्रन्थ खरीदे तो सम्भवतः यह पूरा सेट १२००/–रुपये या १५००/–रुपये मूल्य से भी मंहगा पड़ेगा। किन्तु आगम अनुयोग ट्रस्ट ने उन जिज्ञासुओं को कम मूल्य में सुलभता से प्राप्त कराने के लिए अग्रिम सदस्यता योजना बनाई है।

  ५००/——रुपए देकर जो व्यक्ति सदस्यता ग्रहण करेंगे उनको क्रमशः प्रकाशित होने वाले सभी आगम ग्रन्थ निःशुल्क दिये जायेंगे। हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी–तीन भाषाओं में अलग-अलग अनुवाद के साथ प्रकाशित होने वाले किसी भी भाषा का एक सेट, आप अपनी रुचि के अनुसार सुरक्षित कर सकते हैं।

सम्पर्क करें:—

आगम अनुयोग ट्रस्ट

मन्त्री—श्री हिम्मतलाल एस० शाह

अमर निवास, सोहराबजी कम्पाउण्ड वाड़ज, अहमदाबाद——१३

ब्लॉक एव आवरण पृष्ठ के मुद्रक: 'कुलदीप प्रेस' आगरा

For Private & Personal Use Only